

तत्त्व-सिद्धि

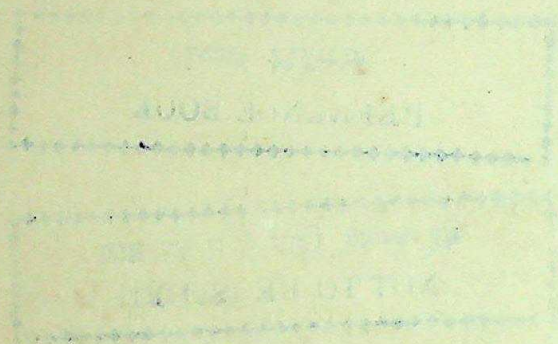
Acc. no. 39370

G.K.V. Lib.
Hardwar

(25)

सन्दर्भ ग्रन्थ
REFERENCE BOOK

यह पुस्तक वितरित न क' जाय
NOT TO BE ISSUED





39370

दैवत-संहिता ।

(५)

अश्विनौ-देवता ।

COMPILED

1973

संपादक

पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

साहित्यवाचस्पति, गीतालंकार

अध्यक्ष- स्वाध्याय-मण्डल.

COMPILED

[स्व. नारायणजी पुरुषोत्तम विश्वस्तनिधिके बंबई निवासी विश्वस्तोंने
संपूर्ण 'दैवत-संहिता' के मुद्रणके लिये १५०००) रु०
दिये, इस धनके भागसे यह विभाग मुद्रित हुआ है ।]

स्वा ध्या य म ण्ड ल, पार डी

संवत् २०१४, शक १८८०, सन् १९५८

प्रकाशक :

वसन्त श्रीपाद सातवळेकर, बी. ए.,

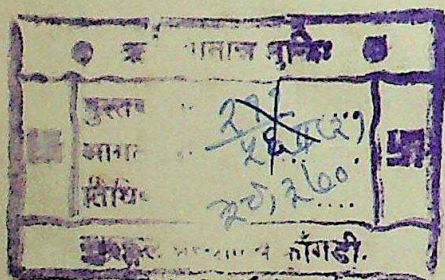
स्वाध्याय-मण्डल, भारत मुद्रणालय,

पोस्ट- ' स्वाध्याय मण्डल (पारडी) '

पारडी (जि. सुरत)

द्वितीय वार

मूल्य १२) रु.



मुद्रक :

वसन्त श्रीपाद सातवळेकर, बी. ए.,

स्वाध्याय-मण्डल, भारत मुद्रणालय,

पोस्ट- ' स्वाध्याय-मण्डल (पारडी) '

पारडी (जि. सुरत)

“ अश्विनौ ” देवता का स्वरूप ।

वेदों में “अश्विनौ” देवता है। इस देवताका मन्त्र-संग्रह इस भूमिका के साथ पाठकों के सामने रखा जाता है। इस संग्रह में ६८९ मन्त्र हैं। इनमें ऋग्वेद के ६३३, वा० यजुर्वेद के ७, सामका १, अथर्व के ११ मन्त्र हैं। सब मिलकर ६५२ मन्त्र हुए। शेष ३७ मन्त्र अश्विनसहचारी देवतागण के हैं। ये सब मिलकर ६८९ होते हैं। अन्य पुनरुक्त मन्त्रोंकी गणना यहां की नहीं है। इन देवतामन्त्रों के ऋषि ये हैं—

१ कक्षीवान् दैर्घतमसः	८३
२ वसिष्ठो मैत्रावरुणिः	५६
३ अगस्त्यो मैत्रावरुणिः	३९
४ ब्रह्मातिथिः काण्वः	३७
५ घोषा काक्षीवती	२८
६ प्रस्कण्वः काण्वः	२५
७ कुत्स आंगिरसः	२५
८ इयावाश्व आत्रेयः	२४
९ अथर्वा	२४
१० सध्वंसः काण्वः	२३
११ शशकर्णः काण्वः	२१
१२ प्रजापतिः [यजुः]	२१
१३ पौर आत्रेयः	२०
१४ विमना वैद्यश्वः	१९
१५ सोमरिः काण्वः	१८
१६ गोपवन आत्रेयः	१८
१७ पुरुमीळहाजमीळहौ सौहोत्रौ	१४
१८ हिरण्यस्तूप आंगिरसः	१२
१९ दीर्घतमा औचथ्यः	१२
२० गृत्समदः शौनकः	१२
२१ भरद्वाजो बार्हस्पत्यः	११
२२ भूतांशः काश्यपः	११
२३ भौमोऽत्रिः	११
२४ विश्वामित्रो गाथिनः	९
२५ वामदेवो गौतमः	९

२६ अवस्युरात्रेयः	९
२७ सप्तवधिरात्रेयः	९
२८ कृष्ण आंगिरसः	९
२९ प्रगाथः काण्वः	६
३० कृष्णो युष्मकी वासिष्ठः	६
३१ अत्रिः सांख्यः	६
३२ मेधातिथिः काण्वः	५
३३ कृष्णो विश्वको वा कार्ष्णिः	५
३४ जगदग्निर्भागवः	५
३५ मेध्यः काण्वः	४
३६ मधुच्छंदा वैश्वामित्रः	३
३७ शुनः शेष आजीगर्तिः	३
३८ गोतमो राहूगणः	३
३९ परुच्छेपो दैवोदासिः	३
४० नाभाकः काण्वः	३
४१ विमद ऐन्द्रः	३
४२ विश्वामित्रः	३
४३ सुहस्त्यो घौषेयः	२
४४ सुकीर्तिः काक्षीवतः	२
४५ हरिम्बिठिः काण्वः	१
४६ त्वष्टा प्राजापत्यः	१
४७ अश्विनौ वैवस्वतौ	१
४८ ब्रह्मा	१

इस तरह मन्त्रसंख्या ऋषियोंके द्वारा देखी मिलती है। अब अश्विनी देवता के विषय में ब्राह्मणग्रंथों में जो निर्वचन मिलता है, वह यहां देते हैं—

अश्विनौ देवता के विषय में ब्राह्मणवचन

अश्विनौ देवता के विषयमें ब्राह्मण-ग्रंथोंमें निम्नलिखित निर्वचन मिलते हैं, जो इस देवता-स्वरूप के बताने में सहायक हो सकते हैं—

इमे ह वै द्यावापृथिवी प्रत्यक्षं अश्विनौ, इमे हीदं सर्वं आशुवतां, पुष्करस्रजाविति अग्निरेवास्यै [पृथिव्यै]

पुष्करं आदित्योऽसुष्यै [दिवे] । [श० ब्रा० ४।१।५।१६]

श्रोत्रे अश्विनौ । [श० ब्रा० १२।१।१।१३]

नासिके अश्विनौ । [श० ब्रा० १२।१।१।१४]

तत्रो ह वा इमौ पुरुषाविवाक्ष्योः । एतावेवाश्विनौ ।

[श० ब्रा० १२।१।१।१२]

अश्विनावध्वर्युः । [ऐ० ब्रा० १।१८; श० ब्रा० १।१।२।१७;

३।१।४।३; तै० ब्रा० ३।२।२।१; गो० ब्रा० ७० २।६]

अश्विनौ वै देवानां भिषजौ ।

[ऐ० ब्रा० १।१८; कौ० ब्रा० १८।१]

मुख्यौ वा अश्विनौ [यज्ञस्य] । [श० ब्रा० ४।१।५।१९]

इयेताविव हि अश्विनौ । [श० ब्रा० ५।५।४।१]

स योनी वा अश्विनौ । [श० ब्रा० ५।३।१।८]

अश्विनाविव रूपेण [भूयासं] । [मं० ब्रा० २।४।१।४]

आश्विनं द्विकपालं पुरोडाशं निर्वपति ।

[श० ब्रा० ५।३।१।८]

आश्विनो द्विकपालः [पुरोडाशः] । तां० ब्रा० २।१।१०।२३]

वसन्तग्रीष्मावेषाभ्यां अश्विनाऽऽभ्यां [अवरुन्धे] ।

[श० ब्रा० १२।८।२।३४]

अश्विभ्यां धानाः । [तै० ब्रा० १।५।१।१३]

अथ यदेनं [अग्निं] द्वाभ्यां बाहुभ्यां द्वाभ्यामरण्यभ्यां
मन्यन्ति, द्वौ वा अश्विनौ, तदस्याश्विनं रूपम् ।

[ऐ० ब्रा० ३।४]

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे । अश्विनोर्बाहुभ्याम् ।

[तै० ब्रा० २।६।५।२]

गर्दभरथेनाश्विना उदजयताम् । [ऐ० ब्रा० ४।९]

तदश्विना उदजयतां रासमेन । [कौ० ब्रा० १८।१]

इममेव लोकमाश्विनेन [अवरुन्धे] ।

[श० ब्रा० १२।८।२।३२]

अश्विनमन्वाह तदमुं लोकं [दिवं] आप्नोति ।

[कौ० ब्रा० १।१।२।१८।२]

(१) सब का भक्षण करते हैं, इसलिये धावापृथिवी ये दोनों लोक अश्विनौ हैं, (२) दोनों कान, (३) दोनों नाक, (४) दोनों आंख अश्विनौ हैं, (५) दोनों अध्वर्यु अश्विनौ हैं, (६) ये दोनों देवों के वैद्य हैं, (७) एक ही स्थानसे ये दोनों उत्पन्न होते हैं, (८) गर्दभ के रथ से अश्विनी देव आते हैं ।

उक्त वचनोंसे जो निर्वचन मिलते हैं, वे ये हैं । 'बहुत खानेवाले, बहुत व्यापनेवाले' ये 'अश्' धातुके अर्थ हैं । ये ही यहां इन निर्वचनोंमें दीख रहे हैं । कान, नाक और आंख अपनी शक्तिसे विश्व को व्यापते हैं, आंख तो अपनी शक्ति से सब विश्व व्यापता है । इसलिये ये इंद्रिय अश्विनौ हैं । मनुष्यशरीरमें अश्विनौ के ये रूप हैं । वैद्य अपनी चिकित्सा से बीमारी को घेरता और उसका नाश करता है । अध्वर्यु यज्ञप्रक्रिया को व्यापते हैं । इस तरह इन निर्वचनों का तात्पर्य है । इन निर्वचनों को देखने के बाद अब निरुक्त के वचन देखिये—

अथातो युस्थाना देवताः । तासामश्विनौ प्रथमागामिनौ भवतः । अश्विनौ यद् व्यश्नुवाते सर्वं, रसेनान्यो, ज्योतिषान्यः । अश्वैरश्विनावित्यौर्णवाभः । तत् कावश्विनौ ? धावापृथिव्यावित्येके । अहोरात्रावित्येके । सूर्या-चन्द्रमसावित्येके । राजानौ पुण्यकृतावित्यैतिहासिकाः । तयोः काल ऊर्ध्वमधरात्रात् प्रकाशीभावस्यानुविष्टमभमनु, तमोभागो हि मध्यमः ज्योतिर्भाग आदित्यः ॥ १ ॥

तयोः समानकालयोः समानकर्मणोः संस्तुतप्राययोरसं-स्तवेनैषोऽद्धर्चा भवति-वासात्यो अन्य उच्यते, उषः पुत्रस्तवान्य इति ॥ २ ॥

इह चेह च जातौ संस्तूयते पापेनालिप्यमानतया तन्वा नामश्रि स्वैः । जिष्णुर्वामन्यः सुमहतो बलस्येरयिता मध्यमः, दिवो अन्यः सुभगः पुत्र ऊह्यत आदित्यः ॥ ३ ॥

प्रातर्युजा विबोधयाश्विनावेह गच्छताम् । [क्र. १।२२।१]

प्रातर्योगिनौ विबोधयाश्विनाविहागच्छताम् ।

[निरुक्त अ. १३।१]

सृण्येव जर्भरी तुर्फरीतु नैतौशेव तुर्फरी पर्फरीका ।

उदन्यजेव जेमना मदेरु ता मे जरायवजर्भ मरायु ॥

[क्र. १०।१०६।६]

सृण्येवेति द्विविधा सृणिर्भवति भर्ता च हन्ता च, तथा अश्विनौ चापि भर्तरी, जर्भरी भर्तारावित्यर्थः, तुर्फरीतु हन्तारौ । नैतौशेव तुर्फरी पर्फरीका- नितोशस्यापत्यं नैतोशं, नैतौशेव तुर्फरी क्षिप्रहन्तारौ । उदन्यजेव जेमना मदेरु- उदन्यजेवेत्युदकजे हव रत्ने सामुद्रे चान्द्रमसे वा । जेमने जयमाने, जेमना मदेरु । ता मे जरायवजर्भ

मरायु, एतज्जरायुजं शरीरं शरदं अजीर्णम् ॥ ५ ॥

[निरुक्त. १३।५]

अब छलोक की देवताओंकी व्याख्या करते हैं । इनमें अश्विदेव प्रथम जानेवाले होते हैं । वे सब व्यापते हैं, इनमें एक रस से व्यापता है और दूसरा प्रकाश से व्यापता है । और्णवाम ऋषि का मत है कि, अश्विदेवोंके पास बहुत घोड़े थे, घोड़े पास रखने के कारण उनका नाम अश्विनौ हुआ । कौन भला ये अश्विनौ हैं ? 'द्यु और पृथिवी' ऐसा कई मानते हैं, 'दिन और रात्री' ऐसा कई समझते हैं, 'सूर्य और चन्द्र' ऐसा कह्यों का मत है, ऐतिहासिक लोग मानते हैं कि, ये पुण्यकर्म करनेवाले दो राजा हुए थे । इनका समय आधीरात व्यतीत होनेके पश्चात् का है, जब प्रकाश फटने लगता है, तब इनका उदय होता है । इस काल में जो अन्धकार का भाग है, वह मध्यम देवता है और जो ज्योति का भाग है, वह आदित्य का भाग है । इस तरह अन्धकार और प्रकाश इस समय इकट्ठे रहते हैं, ये ही अश्विनौ हैं ।

ये दोनों देव एक ही काल में आते हैं, एक ही कर्म करते हैं । इनका वर्णन 'वसातिषु स्म०' आदि मन्त्र में किया है । इनमें से एक रात्री का और दूसरा उषा का पुत्र कहलाता है । अथवा इनमें से एक बड़े बल का प्रेरक है और दूसरा छलोक का पुत्र आदित्य है । ये प्रातःकाल में जानेवाले हैं, ऐसा [प्रातर्युजा०] मन्त्र में कहा है ।

[सृण्वेव०] जिस प्रकार दात्री पोषण करनेवाली और नाश करनेवाली अर्थात् दोनों प्रकार की होती है, वैसे ही अश्विनौ में से एक देव पोषक है और दूसरा नाशक है ।

इस तरह निरुक्त का अश्विनौ देवताओंके विषय में स्पष्टीकरण है । ब्राह्मणग्रन्थों के कथनों के अनुसार ही निरुक्तकारने अपना मत दिया है [१] द्यावा-पृथिवी, [२] सूर्य-चन्द्र, [३] अहो-रात्र, [४] पुण्यकर्म करनेवाले दो राजा, [५] अंधेरा-प्रकाश, तथा [६] पोषक-संहारक इतने स्वरूप बताने के कारण अश्विनौ के विषय में किसी तरह का निश्चय नहीं होता । इसलिये वेदके मंत्रों में अश्विनौ देवता के स्वरूप के विषय में अधिक खोज करना चाहिये । देखिये मंत्रों में क्या वर्णन आया है—

अश्विनौ देवता और 'तीन' संख्या

अश्विनौ देवता के वर्णन में 'तीन' [३] इस संख्या का महत्त्व विशेष दीखता है देखिये—

त्रिश्चिन्नौ अद्या भवतं नवेदसा । [१२; ऋ. १।३।४।१]

आज तीन वार तुम हमारे बनो ।

त्रयः पवयो मधुवाहने रथे० । त्रयः स्कंभासः० ।

त्रिर्नक्तं याथास्त्रिर्वश्विना दिवा ॥ [१३; ऋ. १।३।४।२]

हे अश्विदेवो ! तुम्हारे रथ के तीन चक्र हैं, तीन खंभे लगाये हैं । तुम दिन में तथा रात्रीमें तीन तीन वार जाते हो ।

समाने अहन् त्रिरवद्यगोहना त्रिरय यज्ञं मधुना मिमिक्ष-
तम् । त्रिर्वाजवतीरिषो अश्विना युवं दोषा अस्मभ्यं
उपसश्च पिन्वतम् । [१४; ऋ. १।३।४।३]

आज एक ही दिन में तीन वार आओ और आज भी तीन वार आकर मधुसिंचन करो । आप दिनमें तथा रात्रीमें तीन तीन वार आकर पुष्टिकारक अन्न प्रदान करो ।

त्रिर्वर्तिर्यातं त्रिरनुव्रते जने त्रिःसुप्राव्ये त्रेधैव शिक्षतम् ।
त्रिर्नान्यं वहतमश्विना युवं त्रिःपृक्षो अस्मे अक्षरेव
पिन्वतम् ॥ [१५; ऋ. १।३।४।४]

तुम हमारे पास तीन वार आओ, अपने भक्त के पास तीन वार जाओ, सुरक्षाके लिये तीन वार जाओ, तीन वार शिक्षा दो । हमारे पास तीन वार आनन्द लाओ तथा तीन वार अन्न प्रदान करो ।

त्रिर्नो रथिं वहतं अश्विना युवं त्रिर्देवताता त्रिरुतावतं
धियः । त्रिःसौभगत्वं त्रिरुत श्रवांसि नखिष्ठं वां सूरैः
दुहिता रुद्रद्रथम् । [१६; ऋ. १।३।४।५]

'हमारे पास तीन वार संपत्ति ले आओ, इस देवकर्म में तीन वार हमारी रक्षा करो, तीन वार हमें सौभाग्य देओ, तीन वार अन्न दो, तुम्हारे तीन स्थानवाले रथ पर सूर्य की पुत्री आरुढ़ हुई है ।

त्रिर्नो अश्विना दिव्यानि भेषजा त्रिःपार्थिवानि त्रिरु दस्त-
मद्भयः त्रिधातु शर्म वहतं शुभस्पती । [१७; ऋ. १।३।४।६]
हमें तीन वार दिव्य, पार्थिव और जलोद्भव औषधियाँ देते रहो; तथा तीनगुणा सुख हमें देते रहो ।

त्रिनो अश्विना यजता दिवेदिवे परि त्रिधातु पृथिवीम
शायतम् । त्रिन्नो नासत्या रथ्या परावत० ।

[१८; ऋ. १।३।४।७]

तीन वार प्रति दिन यज्ञ करते हैं । पृथ्वीके चारों ओर तुम
तीन वार घूमते हो । रथसे तीन वार तुम दूर जाते हो ।

क त्री चक्रा त्रिवृतो रथस्य क त्रयो बन्धुरो ये सनीलाः ।

[ऋ. १।३।४।९]

तुम्हारा त्रिकोणवाला रथ तीन चक्रोंवाला और तीन
बैठनेके स्थानों से युक्त है ।

आ नो नासत्या त्रिभिरेकादशैरिह देवेभिर्यातं मधुपेय-
माश्विना । प्रायुस्तारिष्टं नी रपांसि मृक्षतं सेधतं द्वेषो
भवतं सचाभुवा । [२२; ऋ. १।३।४।११]

हे अश्विदेवो ! ३३ देवों को साथ लेकर मधुर रस का
पान करने के लिये यहां आओ । हमारी आयु बढ़ाओ, रोग
दूर करो, शत्रु का नाश करो और हमारे सहायक बनो ।

त्रिबन्धुरेण त्रिवृता सुपेशसा रथेनायातमश्विना ।

[४०; ऋ. १।४।७।२]

तीन बैठकोंवाले त्रिकोणी सुंदर रथसे हे अश्विदेवो ! आओ ।

अर्वाङ् त्रिचक्रो मधुवाहनो रथो० त्रिबन्धुरो० ।

[१६५; ऋ. १।१५।७।३]

तं युञ्जाथो० त्रिबन्धुरो० यस्त्रिचक्रः ।

[२०२; ऋ. १।१८।३।१]

अश्विदेवों का रथ त्रिकोणी है, तीन चक्रों से युक्त है,
बैठने के तीन स्थान उस में हैं ।

इस तरह अश्विदेवों के वर्णन में 'तीन' संख्याका बड़ा
महत्त्व है ।

अश्विदेव वैद्य हैं

युवं ह स्थो भिषजा भेषजेभिः । [१६८; ऋ. १।१५।७।६]

'आप के पास औषधियां हैं, इसलिये आप वैद्य हैं ।'
इससे स्पष्ट हो जाता है कि, अश्विदेव बड़े वैद्य हैं, उनके
पास बहुत औषध हैं और वे रोगियों की चिकित्सा करते
हैं । इनके वैद्य होनेके विषय में हम कुछ और मन्त्र यहां
रखते हैं, पाठक इनका विशेष विचार करें ।

अश्विनौ देवताओं का चिकित्सक होना सर्वत्र प्रसिद्ध है ।
इस विषय में निम्नलिखित मन्त्र देखनेयोग्य है—

वृद्ध को तरुण बनाया

अश्विदेवों ने अति जीर्ण च्यवनऋषि को तरुण बनाया
था, यह कायाकल्प का प्रयोग अश्विदेवों ने किया था, यह
बात जैसी पुराणों में वैसी वेदमंत्रों में भी दीखती है—

जुजुरुषो नासत्योत वारिं प्रामुञ्चतं द्रापिमिव च्यवानात् ।

प्रातिरतं जहितस्यायुर्दस्त्रादित् पतिमकृणुतं कनीनाम् ।

[८६; ऋ. १।११।६।१०]

हे अश्विदेवो ! तुमने च्यवननामक एक वृद्ध के शरीर
से कवच जैसी खाल उतार कर [बुढ़ापा दूर किया और]
उस की आयु बढ़ायी और तरुण कन्याओंका पति बनाया ।

यहां कायाकल्प के प्रयोग का कुछ वर्णन है । [च्यव-
नात् जुजुरुषः वारिं द्रापिं इव प्रामुञ्चतं] वृद्ध च्यवन ऋषि
के शरीर से कवच के समान संपूर्ण बुढ़ापा दूर किया ।
शरीर से जैसा कोट या कुडता निकाल देते हैं, उस प्रकार
शरीर से खाल निकाल कर उसको तरुण बनाया । यहां
[द्रापिं प्रामुञ्चतं] चोगा उतारने का स्पष्ट उल्लेख है ।
सांप-नाग- भी अपने शरीर से चोगा उतारता है और
फिर तरुण बनता है । सब शरीर से चर्म ऊपर की पतली
त्वचा सांप के समान निकालने से शरीर पुनः तरुण हो
जाता है ऐसा यहां प्रतीत होता है । आर्यवैद्यक ग्रंथोंमें
जो कायाकल्प वर्णन किये हैं, उनमें भी कुटिरप्रवेशविधिसे
कायाकल्पों का सेवन करनेसे शरीर की चमड़ी उतर जाती
है और नवीन चमड़ी आती है, इस आशय के विधान हैं ।
इस विषय में सत्य क्या है, इसका विचार उत्तम वैद्यों को
करना उचित है ।

'च्यवनप्राश' अवलेह का वर्णन वैद्यक ग्रंथोंमें है, जो
च्यवन के पुनः तरुण बनने का स्मरण कराता है ।

इस मन्त्र में वृद्ध को 'दीर्घायु' करने का भी उल्लेख
है, तथा अनेक तरुणियों के साथ [कनीनां पतिं] विवाह
च्यवनने किया, ऐसा भी कहा है । वृद्ध को तरुण बनाया,
दीर्घायु बनाया और अनेक तरुणियों का पति भी बनाया
गया था । यह अश्विदेवोंने अपने कित्सा के बलसे
किया था । इस विषय में और मन्त्र देखिये—

युवं च्यवानं अश्विना जरन्तं पुनर्युवानं चक्रुः
शचीभिः ॥ [११४; ऋ. १।११।७।१३]

पुनश्च्यवानं चक्रथुः युवानम् ॥ [ऋ. १।११८।६]

विभिश्च्यवानं अश्विना नियाथः ॥ [ऋ. ५।७५।५]

प्र च्यवानाञ्जुजुरुषो वरिं अत्कं न मुञ्चथः ।

युवा यद्दी कृथः पुनरा कामं ऋष्वे वध्वः ॥

[२७२; ऋ. ५।७४।५]

उत त्यद्वां जुरते अश्विना भुच्यवानाय प्रतीत्यं हविर्दे ।

अधि यद्रूपं हत ऊती धरथः । [ऋ. ७।६८६]

युवं च्यवानं जरसोऽमुमुक्तं । [ऋ. ७।७१।५]

युनं च्यवानं सनयं यथा रथं पुनर्युवानं चरथाय तक्षथुः ।

[५८६; ऋ. १०।३९।४]

इन मन्त्रों का तात्पर्य यही है कि, अश्विदेव [च्यवानं नियाथः] च्यवन ऋषि के पास गये, उस वृद्ध ऋषि की चिकित्सा उन्होंने की, [वरिं अत्कं न मुञ्चथः] चोगे के समान सब खाल उतार दी, जिस से उस ऋषि का बुढ़ापा दूर हुआ, [पुनः युवानं चक्रथुः] फिर से उसको जवान बनाया, वार्धक्य से उस की मुक्तता की, जैसा पुराना रथ [यथा रथं] कारीगर दुरुस्त करके नया बनाते हैं, वैसा ही च्यवन ऋषि को फिर से तरुण बनाया, यह च्यवन ऋषि अश्विदेवों को हवि अर्पण करता था । यह सब कार्य [शचीभिः] अपनी अद्भुत चिकित्सा की शक्तियों से अथवा औषधिविशेषों के प्रयोग से उन्होंने ने किया था । जो च्यवन चलने-फिरने में भी असमर्थ था, वही [चरथाय] अच्छी तरह घूमने लगा और [वध्वः कामं] स्त्रीसम्बन्धका कामविकार उस में जाग्रत किया । अर्थात् यह ठीक तरह तरुण हुआ । इसी तरह वन्दनके विषयमें भी कहा है—

युवं वन्दनं निरुक्तं जरण्यया रथं न दत्ता करणा

समिन्वथः । [ऋ. १।११९।७]

उद् वन्दनं ऐरयतं स्वर्दशे । [ऋ. १।११२।५]

प्र दीर्घेण वन्दनस्तार्यायुषा । [ऋ. १।११९।६]

हे अश्विदेवो ! तुमने वन्दन को निकृष्ट वृद्धावस्था को पहुँचे वन्दन को, उत्तम दृष्टि देकर, रथ दुरुस्त करने के समान तरुण अथवा हृष्टपुष्ट बनाया और [दीर्घेण आयुषा प्र तारि] दीर्घायु बनाया ।

रथ दुरुस्त करने के समान इसका शरीर तुमने नाना औषधों के प्रयोग से ठीक बनाया । प्रसूतिकर्म में अश्वि-देवों की प्रवीणता थी, इस विषय में निम्नलिखित मन्त्र

में उल्लेख है—

क्षेत्रादा विप्रं जनयः ।

[ऋ. १।११९।७]

क्षेत्र से [अर्थात् माता के गर्भाशय से] ब्राह्मणपुत्रको जन्म दिया । अर्थात् प्रसूतिकर्म की प्रवीणता से पुत्र को जन्म देकर माता की मुक्तता प्रसूति-वेदनाओं से की । इस मन्त्र में अश्विदेवों की प्रसूतिकर्म में प्रवीणता बतायी है ।

घायल को दुरुस्त किया

त्रिधा ह श्यावं अश्विना विकस्तं उजीवसे ऐरयतं सुदानू ॥ [ऋ. १।११७।२४]

तीन स्थान पर कटे या जखमी हुए श्याव को पुनः जीवन देकर चलने-फिरने योग्य बना दिया ।

तीन स्थान पर जिस के करीब-करीब टुकड़े हो चुके थे, ऐसे जखमी के टूटे भागों को पुनः जोड़ दिया और उस को अच्छी तरह चलने-फिरने योग्य बना दिया ।

च्यवनऋषि की कथा शतपथब्राह्मण में निम्नलिखित प्रकार आ गयी है और उसमें अश्विदेवों का यही सम्बन्ध वर्णन किया गया है, वह कथा देखिये—

च्यवनो वा भार्गवः, च्यवनो वाङ्मिरसः, तदेव जीर्णिः कृत्यारूपो जहे ॥ १ ॥ शर्यातो ह वा इदं मानवो ग्रामेण चचार । स तदेव प्रतिवेशो निविविशे तस्य कुमाराः क्रीडन्त इमं जीर्णिं कृत्यारूपमनर्थं मन्यमाना लोष्टैर्विपिपिपुः ॥ २ ॥ स शर्यातेभ्यश्चुक्रोध । तेभ्योऽसंज्ञां चचार, पितैव पुत्रेण युयुधे, भ्राता भ्रात्रा ॥ ३ ॥ शर्यातो ह वा ईक्षां चक्रे । यत्किमकरं तस्मादिदमापदीति स गोपालांश्चाविपालांश्च संहयित्वा उवाच ॥ ४ ॥ स होवाच । को वो भयेह किंचिद्वाक्षीदिति, ते होचुः, पुरुष एवायं जीर्णिः कृत्यारूपः शेते, तमनर्थं मन्यमानाः कुमारा लोष्टैर्ग्याक्षिपादिति, स विदांचकार स वै च्यवन इति ॥ ५ ॥ स रथं युक्त्वा । सुकन्यां शर्यातीमुपाधाय प्रासिष्यन्द, स आजगाम, यत्रर्षिरास तत् ॥ ६ ॥ स होवाच । ऋषे नमस्ते यन्नावेदिषं तेनाहिसिषमियं सुकन्या तथा तेऽपह्नुवे संजानीतां मे ग्राम इति, तस्य ह तत एव ग्रामः संजज्ञे स ह तत एव शर्यातो मानव उयुयुजे नेदपरं हिनसानीति ॥ ७ ॥ अश्विनौ ह वा इदं भिषज्यन्तौ चेरतुः । तौ सुकन्यामुपेतुः, तस्यां मिथुनमीषाते, तन्न जज्ञौ ॥ ८ ॥ तौ होचतुः । सुकन्ये कमिमं जीर्णिं

कृत्यारूपमुपशेष आवामनुमेहीति, सा होवाच, यस्मै मां पितादाज्ञैवाहं तं जीवन्तं हास्यामीति, तद्वायमृषिराजज्ञौ ॥ ९ ॥ स होवाच । सुकन्ये किं त्वेतदवोचतामिति, तस्मा एतद्व्याचक्षे, स ह व्याख्यात उवाच, यदि त्वैतत्पुनर्ब्रुवतः सा त्वं ब्रूताञ्च वै सुसर्वाविव स्थो, न सुसमृद्धाविवाथ मे पतिं निन्दथ हति, तौ यदि त्वामवतः, केनावामसर्वौ स्वः, केनासमृद्धाविति, सा त्वं ब्रूतापतिं नु मे पुनर्युवाणं कुरुतमथ वां वक्ष्यामीति, तां पुनरुपेतुस्तां हैतदवोचतुः ॥ १० ॥ तौ होचतुः । एतं हृदमभ्यवहार, स येन वयसा कमिष्यते तेनोद्देश्यतीति, तं हृदमभ्यवजहार, स येन वयसा चक्रमे तेनोद्देश्यतीति ॥ १२ ॥ [श. ब्रा. ४।१।५।१-१२]

च्यवननामक एक ऋषि था, जो भृगुकुलका समझा जाता है, अथवा आंगीरसकुलका भी माना जाता है । वह अति जीर्ण होकर, मरियलसा होकर एक स्थान पर पड़ा था । उस स्थान पर मनुवंश का शर्याति राजा आया । उस राजा के लडके वहां खेलने लगे । उन लडकों ने उस अति जीर्ण ऋषिके मुँह जैसे शरीर पर पत्थर मारे । इससे ऋषि को क्रोध आया, जिससे राजा के राज्य में सब प्रजाजनों की बुद्धि नष्ट हुई, वे आपस में लड़ने लगे । पिता पुत्रसे और भाई भाईसे लड़ने लगा । राजा शर्याति सोचने लगा कि, मैंने ऐसा क्या बुरा कर्म किया कि, जिसके कारण यह ऐसी आपत्ति आ गयी । उसने गवालियों को बुलाकर पूछा कि तुमने यहां कुछ देखा है ? वे बोले कि, यह जो अति जीर्ण मुर्दासा पड़ा है, वह मरा है, ऐसा मान कर तुम्हारे कुमारीने उस पर पत्थर मारे, वह च्यवन ऋषि है, ऐसा उस राजाने जान लिया । पश्चात् अपनी कन्या को रथ पर बिठलाकर वह उस ऋषिके पास पहुँचा और उससे बोला कि 'हे ऋषि ! नमस्ते । मुझे तुम्हारा ज्ञान नहीं था, इसलिये तुमको बहुत कष्ट पहुँचे । क्षमा करो । यह मेरी पुत्री है, यह तुम्हारे लिये अर्पण करता हूँ । इसको प्राप्त करके सन्तुष्ट होओ । मेरे राज्य में जो बलवा उठा है, वह शान्त होवे ।' तब ऋषि सन्तुष्ट हुआ और राजा का बलवा शान्त हुआ । यह देखकर शर्याति राजाने प्रतिज्ञा की कि, मैं अब इसके बाद किसी को कष्ट नहीं दूंगा । उस ऋषि के आश्रम के पास अश्विदेव किसी की चिकित्सा करने

के लिये आये थे, उन्होंने सुकन्याको देखा और उस तरुणी की इच्छा की । पर उस कन्याने उसके प्रस्ताव का स्वीकार नहीं किया । तब वे उससे पूछने लगे कि, 'हे सुकन्ये 'तुम इस मुर्दा बने जीर्ण के पास क्यों रहती है ? तू हमारा स्वीकार कर ।' तब वह कन्या बोली कि- 'मेरे पिताने जिसको मेरा दान किया है, जब तक वह जीवित है, तब तक मैं उसे नहीं छोड़ूंगी ।' सुकन्या का यह भाषण ऋषिने जान लिया, तब वह उस स्त्रीसे बोले कि, जिस समय ये अश्विनी कुमार फिर से तुम्हें ऐसा भाषण करने लगेंगे, तब तुम उनसे कहना कि- 'तुम मेरे पति की निंदा करते हो, परन्तु तुम तो अपूर्ण और सौभाग्यहीन से हो । यदि तुम मेरे पतिको पुनः तरुण बनाओगे, तब सुपूर्ण तथा भाग्यसंपन्न बनाने का उपाय बताऊंगी ।' सुकन्याने ऐसा अश्विनीकुमारों से कहा, तब वे बोले कि यदि तुम्हारा पति इस तालाव में गोता लगावे, तब जिस आयुका स्मरण करके वह गोता लगावेगा, उसी आयु को ऊपर आनेके पूर्व प्राप्त करेगा ।' वैसा किया गया और च्यवन ऋषि उस तालावमें गोता लगाते ही तरुण बन गये । तब अश्विदेवोंने सौभाग्यसंपन्न बननेका मार्ग पूछा, तब उस ऋषिने यज्ञमें हविर्भाग प्राप्त करनेका उपाय बताया । अश्विनीकुमार मानवों में जाते हैं, हर किसी की चिकित्सा करते हैं, इसलिये हमारी पंक्ति में बैठ कर हविर्भाग सेवन नहीं कर सकेंगे, ऐसा हृन्त्रने निषेध किया, पर ऋषि के सामर्थ्य से इस समय से अश्विनी देवों को यज्ञमें हविर्भाग मिलने लगा ।'

संक्षेप से यह कथा शतपथ ब्राह्मण में है । यही कथा पुराणों में अधिक विस्तृत रूपवाली हो गयी है । इस कथा का संबंध वेद के पूर्वोक्त मंत्रों के साथ स्पष्ट है ।

अन्धे को आँख दिये

अश्विनी देवोंने अन्धे को आँख और पंगु को चलने योग्य पांव दिये, यह चमत्कार निम्नलिखित मंत्र में है—

याभिः शचीभिः वृषणा परावृजं प्रान्धं श्रोणं चक्षस एतवे कृत्यः ।

[५९; ऋ. १।११२।८]

अनेक अपनी शक्तियों के द्वारा परावृजका अन्धस्व दूर करके उत्तम दृष्टिसे युक्त तथा उसका लंगडेपन हटा के उस

को उत्तम चलने फिरनेवाला बना दिया । ऐसा ही वर्णन इन्द्र के लिये भी आया है—

नीचा सन्तमुदनयः परावृजं प्रान्धं श्रोणं श्रवयन्
स्वास्त्युक्थयः । [क्र. २।१३।१२]

अन्धे और लड़े परावृज को नीच अवस्था से उच्च बना कर (उत्तम दृष्टि से संपन्न और चलने फिरनेवाले बनाकर) कीर्तिमान और यशस्वी बना दिया ।

जैसी परावृजको दृष्टि दी, वैसी ही ऋज्राश्वको भी अश्वि-देवोंने दृष्टि दी, देखिये—

शतं मेषान् वृक्ष्ये चक्षदानं ऋज्राश्वं तं पितान्धं चकार ।
तस्मा अक्षी नासत्या विचक्ष आधत्त दत्ता भिषजाव-
नर्वन् । [९१; क्र. १।११६।१६]

शतं मेषान् वृक्ष्ये सामहानं तमः प्रणीतमश्वेन
पित्रा । आक्षी ऋज्राश्वे अश्विनावधत्तं ज्योतिरन्धाय
चक्रथुर्विचक्षे ॥ १७ ॥

शुनमन्धाय भरमह्यत्सा वृकीरश्विना धृषणा नरेति ।

जारः कनीन इव चक्षदानं ऋज्राश्वः शतमेकं च मेषान् ॥

[११८-११९; क्र० १।११७।१७-१८]

श्रुतं गायत्रं तकवानस्य ... आक्षी शुभस्पति दन् ।

[क्र० १।१२०।१६]

ऋज्राश्वने एकसौ एक मेष भेड़िये को खाने दिये, यह देख कर उसके पिताने उस ऋज्राश्व को अन्धा बना दिया । परन्तु अश्विदेवोंने इस ऋज्राश्वके आंख पुनः देखने योग्य बना दिये ।

कवि को आंख दिये

उतो कविं पुरुभुजा युवं ह कृपमाणमकृणुतं विचक्षे ।

[क्र. १।११६।१४]

'दृष्टि की इच्छा से प्रार्थना करनेवाले कवि को उत्तम आंख दिये ।' संभवतः यह दृष्टि कविकी क्रान्तदृष्टि होगी । बहुत करके इस स्थान पर की दृष्टि काव्य की दृष्टि है । तथापि पाठकों को ऐसे संश्यों का विशेष विचार करना चाहिए ।

मद्य के १०० घड़े

शतं कुम्भा असिञ्चतं सुरायाः । [क्र. १।११६।७]

शतं कुम्भा असिञ्चतं मधूनाम् । [क्र. १।११७।६]

२ [दै. अश्विनौ]

"सुरा के अथवा मधू के १०० घट तुमने भर दिये ।" यहाँ सुरा, आसव, मद्य, मधु, अरिष्ट आदि पद किस पदार्थ का बोध कराते हैं, इसका निर्णय वैद्यों को करना चाहिये । अश्विदेव वैद्य हैं, यह वेदमें सुप्रसिद्ध है । वैद्यों के पास आसव के १०० घट भर कर रहे, तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है । 'मधु' एक मीठा पेय है, यह मद्य नहीं है । 'सुरा' भाप से पुनः पानी बनाया जाता है, उसका नाम है (Distilled Water) शुंडायंत्रसे जो अर्क निकालते हैं, वह सुरा है । इसमें इस तरह जो मद्य बनता है, वह भी शामिल है, पर इसका केवल यही अर्थ है, यह बात नहीं है । वृष्टिउदक, भांपसे बना जल आदि भी इसके अर्थ हैं । अतः वैद्योंको इस सुरा तथा मधुके विषय में अधिक खोज करके निर्णय करना उचित है ।

विशपला को लोहेकी टांग लगाई

विशपलानामक राजपुत्री की एक टांग युद्ध में कट गयी थी । वह काटकर उस स्थानपर अश्विदेवोंने लोहेकी टांग लगा दी और उस स्त्रीको चलने फिरने योग्य बना दिया, यह बात निम्नलिखित मन्त्रों में है—

चरित्रं हि वेरिवाच्छेदि पणमाजा खेलस्य परितस्मयायाम् ।

सद्यो जंघामायसीं विशपलायै धने हिते सतवे प्रत्यधत्तम् ॥

[क्र. १।११६।१५]

सं विशपलां नासत्यारिणीतम् । [क्र. १।११७।११]

यामिर्विशपलां धनसामथर्यं सहस्रमीळ्द आजाव-

जिन्वतम् । [क्र. १।११२।१०]

प्रति जंघां विशपलाया अधत्तम् । [क्र. १।११८।८]

धियंजिन्वा धिषण्या विशपलावस् । [१।१८२।१]

युवं सद्यो विशपलामेतवे कृथः । [१०।३२।८]

अथर्ववेदी कुल में उत्पन्न (खेलस्य) खेल राजा की पुत्री विशपला (धने हिते) युद्ध में गयी थी । उसकी एक टांग टूट गयी । अश्विदेवोंने इस को लोहे की टांग (आयसीं जंघां) लगा दी । जिससे वह (सतवे) चलने फिरने योग्य बनी । इसकी यह जखम भी अश्वि-देवोंने ठीक बना दी, इसलिये अश्विदेवों को (विशपला वस्) विशपला को निवासयोग्य बनानेवाले इस अर्थ का नाम प्राप्त हुआ ।

दधीची ऋषि को घोड़े का सिर

दधीची ऋषि को घोड़े का सिर लगाने के उल्लेख वेद-मंत्रों में अनेक बार आ गये हैं देखिये—

दध्यङ् ह यन्मध्वायवर्णो वां अश्वस्य शीर्ष्णां प्र यदी-
मुवाच । [क्र. १।११६।१२]

आथर्वणायाश्विना दधीचेऽश्व्यं शिरः प्रत्यैरयतम् ।
[क्र. १।११७।२२]

अथर्वकुल में उत्पन्न दधीची ऋषि के लिये तुमने घोड़े का सिर लगाया । इस अश्व के मुख से उस ऋषिने तुम दोनों को मधुविद्या सिखायी ।

यहां अश्वका सिर ऋषि के मस्तक के स्थान पर लगा देने का उल्लेख है । मनुष्य के कण्ठ पर घोड़े का सिर लग नहीं सकता, इसलिये यह उल्लेख विशेष अलंकार का सूचक है । अध्यात्मविद्या के सम्बन्ध में यह खोज करनेयोग्य वर्णन है । मधुविद्या दधीची ऋषि के पास थी, इन्द्रने यह विद्या दधीची को सिखायी थी । दधीची से यह विद्या अश्वि-देवोंको प्राप्त हुई । इस सम्बन्ध की कथा-पुराणों में लंबी-चौड़ी है । यह सब वैदिक और पौराणिक सारस्वत एक-त्रित करके सब की मिलकर खोज करने का विचार है । स्वतंत्र लेखरूप से यह लेख प्रकाशित किया जायगा ।

रेभका वर्णन

रेभ के विषयमें अश्विदेवों की सहायता का वर्णन निम्न-लिखित मंत्रों में है—

याभी रेभं निवृतं सितं अद्भ्यः । [क्र. १।११२।५]
विप्रुतं रेभं उदनि प्रवृक्तं उञ्चिन्यथुः ।

[क्र. १।११६।२४]

अश्वं न गूळहं अश्विना दुरेवैः ऋषिं नरा वृषणा रेभमप्सु ।
संतं रिणीथो विप्रुतं दंसोभिः न वां जूर्यन्ति पूर्या
कृतानि ॥ [क्र. १।११७।४]

रेभ ऋषिको दुष्टोंने जलमी करके जल में डुबाया था । उसको आपने ऊपर निकाला और उसके अवयव फिर से ठीक कर दिये । यह अश्विदेवों का कर्म बड़ा प्रशंसनीय है और यह वैद्यकक्रिया के साथ संबंध रखता है । टूटे-फूटे अवयवों को पुनः ठीक करना यह कर्म वैद्यों का ही है ।

बंध्या गौको दुधारू बनाया

अश्विदेवोंने बंध्या गौको दुधारू बनाया है, इसका वर्णन अब देखिये—

याभिर्धेनुं अस्वं पिन्वथो नरा । [क्र. १।११२।३]
अधेनुं दस्त्रा स्तर्यं विषक्तां अपिन्वतं शयवे अश्विना गाम् ।
[क्र. १।११७।२०]

युवं शयोरवसं पिप्यथुर्गवि । [क्र. १।११९।६]

हे अश्विदेवो ! तुमने शयुके लिये बंध्या, कृश गौ को उपजाऊ और बहुत दूध देनेवाली बना दिया । यहां गौको पुष्ट करना, दुधारू बनाना और गर्भधारण के योग्य बनाने-का उल्लेख है । औषधिप्रयोग से बंध्या को गर्भधारण योग्य बनाना यह बड़ी भारी सफलताका चिन्ह है । तथा—

अश्विदेवोंने गाय में दूध उत्पन्न किया, इस विषय में निम्नलिखित मन्त्र देखने योग्य है—

युवं पथ उत्थियायां अधत्तं पक्कं आमायां अव पूर्य गोः ।
[क्र. १।१८०।३]

‘आपने गौ में दूध धारण किया और अपक्व गौ में परि-पक्व दूध उत्पन्न किया ।’ अश्विदेवों के यत्न से गौ में उत्तम दूध बना है ।

स्त्री का दान किया

अश्विदेवोंने कहर्योंको स्त्री देकर शादी कराई है देखिये—
याभिः पत्नीः विमदाय न्यूहथुः । [क्र. १।१०२।१९]
यावर्भगाय विमदाय जायां सेनाजुवा न्यूहसू रथेन ।

[क्र. १।११६।१]

युवं शचीभिः विमदाय जायां न्यूहथुः पुरुमित्रस्य
योषाम् ॥ [क्र. १।११७।२०]

युवं श्यावाय रुशतीमदत्तं । [क्र. १।११७।८]

विमद की शादी करने के लिये अश्विदेवोंने एक स्त्री उसको अर्पण की तथा श्याव के लिये एक गौर वर्ण की सुन्दर स्त्री दी ।

इस तरह अश्विदेव शादी करानेवाले दीखते हैं ।

स्त्री को पति दिया

घोषायै चित् पितृषदे दुरोणे पतिं जूर्यत्या अश्विनावदत्तम् ॥
[क्र. १।११७।७]

घोषा नामक एक स्त्री अपने पिताके घरमें रहकर बढती जाती थी। इसके लिये एक उत्तम पति अश्विदेवोंने दिया और घोषा के लिये सुख दिया ।

इस तरह पति को स्त्री और स्त्रीके लिये पति अश्विदेवोंने दिया है ।

अश्विदेवों का रथ

अश्विदेवों का रथ पक्षियों के समान आकाशमें उडता था, वह बात निम्नलिखित मन्त्रमें लिखी है—

वच्यन्ते वां ककुहासो जूर्णायामधि विष्टपि ।

यद् वां रथो विभिष्पतात् ॥ [२६; ऋ. १।४६।३]

जब आप का रथ पक्षियों के समान आकाश में उडता है, तब आपके घोड़े अन्तरिक्ष में गमन करते हैं। इनके आकाशगामी रथ को पक्षी जोते जाते थे। इस विषय में निम्नलिखित मन्त्र देखने योग्य है—

आ वां श्येनासो अश्विना वहन्तु रथे युक्तास आशवः

पतंगाः । ये अप्तुरो दिव्यासो न गृध्रा अभि प्रयो

नासत्या वहन्ति ॥ [१३०; ऋ. १।११८।४]

आपके रथ को (आकाशयान को, विमान को) शीघ्र-गामी पक्षी (आशवः पतंगाः युक्तासः) जोते गये हैं, वे श्येन पक्षी आप को इधर ले आवे। वे स्वराशील शीघ्र-गामी हैं।

इस से अश्वियों का रथ विमान जैसा आकाशगामी है यह बात सिद्ध होती है। इन का भूमिपर चलनेवाला भी रथ है। पर इन मंत्रों में उन के विमान का वर्णन है।

अश्विदेवों का रथ घोड़े जोतने का नहीं था, इसलिये उसको 'अनश्व रथ' कहा है, देखिये—

अनश्वं याभी रथमावतं जिषे । [६३; ऋ. १।११२।१२]

अश्विनोरसनं रथमनश्वं वाजिनीवतोः ॥

[१।१५७; ऋ. १२०।१०]

जिस को घोड़े जोते नहीं जाते, ऐसा अश्विदेवोंका (अनश्वः रथः) अश्वरहित रथ है। इस से इस को पक्षी जोते जाते थे और वह आकाश में उडता था, यह बात स्पष्ट हो सकती है।

रथ को जोड़े श्येन पक्षी

अश्विदेवों के रथों अर्थात् आकाशयानों को पक्षी जोते रहते थे, इस विषय में ये मन्त्र देखिये—

ॐ

आ वां श्येनासो अश्विना वहन्तु रथे युक्तास आशवः

पतंगाः । ये अप्तुरो दिव्यासो न गृध्रा अभि प्रयो

नासत्या वहन्ति । [१३०; ऋ. १।११८।४]

वेगवान् और उडनेवाले श्येन पक्षी तुम अश्विदेवों को वेग से यहां ले आवें। दिव्य गीधों के समान आकाश में उडनेवाले आप को हविष्यान्न के पास शीघ्र ले आवें।

यहां 'श्येनासः, पतंगाः, गृध्राः,' ये पद निःसंदेह पक्षीवाचक हैं। तथा 'आशवः, अप्तुरः' ये पद विशेष गति के वाचक हैं। 'दिव्यासः' पद आकाशगमन का सूचक है। 'रथे युक्ताः' पदोंसे ये पक्षी आकाशयान में जोड़े जाते थे, यह स्पष्ट हो जाता है। अर्थात् अश्विदेवोंके विमानों, हवाई जहाजों को गृध्र, श्येन आदि वेगवान् पक्षी जोते जाते थे, यह बात इससे सिद्ध होती है।

इनके रथों को घोड़े, गधे जोते जाते थे, इसका भी वर्णन अन्यत्र है।

उडनेवाली नौका = हवाई जहाज

युवमेतं चक्रथुः सिन्धुषु प्लवं आत्मन्वन्तं पक्षिणं तौग्या-य कम्। येन देवत्रा मनसा निरुहथुः सुपसनी पेतथुः क्षोदसो महः ॥ [१९८; ऋ. १।१८२।५]

आपने तुमपुत्रके लिये अपने सामर्थ्य से पंखयुक्त नौका महासागर में बनायी, वह पक्षीके समान थी। उस नौका से उत्तम प्रकार उडनेवाले तुम दोनों सहज हीसे समुद्र से उडकर ऊपर चले गये।

यहां उडनेवाली नौका अश्विदेवोंने बनायी थी, यह स्पष्ट वर्णन है। यह जलमें तो चरती ही थी, पर आकाश में पक्षी के समान भी उडती थी। यही आकाशयान अथवा हवाई जहाज है। इन का रथ आकाश में घूमता है, इस विषय में देखिये—

उरु वां रथः परि नक्षति छां । [२४८; ऋ. ४।४३।५]

आप का रथ आकाश में संचार करता है। अर्थात् यह हवाई जहाज है, इस में सन्देह नहीं है।

भुज्यु की सहायता

तुम एक सम्राट् था, उस का पुत्र भुज्यु बड़ा वीर था। वह एक बार मरु देश के किसी शत्रु से लडने के लिये अपनी सेना के साथ समुद्र मार्ग से नौकाओं के द्वारा गया था। वहां उस का पराभव हुआ। वहां से भुज्युने अश्वि-

देवों को सन्देश भेजा, अश्विदेव अपने विमानों से आकाश-मार्ग से आये, भुज्यु को तथा उस की सेना को अपने विमानों में डठाकर भुज्यु को घर पहुँचाया । इस तरह युद्धों में- दर्याई युद्धों में भी अश्विदेवोंने सहायता की है, इनके वर्णन देखिये-

वीलुपत्तमभिराशुहेमभिर्वा देवानां वा जूतिभिः ज्ञाश-दाना । तद्रासभो नासत्या सहस्रमाजा यमस्य प्रधने जिगाय ॥ [७८; ऋ. १।११६।२]

(वीलु-पत्तमभिः) बड़े वेग से उड़नेवाले, (आशु-हेमभिः) त्वरासे दौड़नेवाले, (देवानां जूतिभिः) दैवी शक्तियों से प्रेरित होनेवाले यानों से युक्त (नासत्या) अश्विदेव बड़े पराक्रम करनेवाले हैं । उनके वाहन से ही (आजा) इस युद्ध में (सहस्रं) हजारों शत्रु सैनिक (यमस्य प्रधने) यमराज के युद्ध में, सर्वस्वनाशक युद्ध में मारे जाकर (जिगाय) विजय मिला है ।

इस मंत्र में अश्विदेवों के वाहन बड़े प्रबल वेग से आकाश में उड़ते थे, ऐसा लिखा है ।

तुम्रो ह भुज्युं अश्विनोदमेवे रथिं न कश्चिन्ममृवां अवाहाः । तमूहथुः नौभिरात्मन्वतीभिः अन्तरिक्ष-प्रुक्षिरपोदकाभिः । [७९; ऋ. १।११६।३]

तुम्र नामक सम्राट्ने अपने भुज्युनामक पुत्रको (उदमेवे) समुद्र में- अर्थात् समुद्र के परतीरनिवासी शत्रु पर हमला करने के लिये- भेजा था । जैसा कोई (ममृवां) मरनेवाला (रथिं न) अपने धनकी आशा छोड़ता है, वैसे ही तुम्रने अपने पुत्र की आशा छोड़ कर उसे शत्रु पर भेजा था । पश्चात् भुज्यु का पराभव हुआ और वह समुद्र में डूब मरने लगा । उस राजकुमारको (आत्मन्वतीभिः नौभिः) सामर्थ्य-वाली नौकाओंद्वारा (अन्तरिक्षप्रुक्षिः) जो नौकाएं आकाश में भी उड़ती थीं और (अप-उदकाभिः) जल में से भी जाती थीं, अश्विदेवोंने उसके घर पहुँचाया ।

जो जहाज आकाश में उड़ते हैं, जल में जाते हैं और समय पर भूमि परसे भी जा सकते हैं, ऐसे जहाज अश्वि-देवों के थे ।

तिस्रः क्षपः त्रिरहातिवज्जिः नासत्या भुज्युं ऊहथुः पतंगैः । समुद्रस्य धन्वन्नार्द्रस्य पारे त्रिभी रथैः शतपद्भिः षडश्वैः । [८०; ऋ. १।११६।४]

(तिस्रः क्षपः) तीन रात्री और (त्रिः अहा) तीन दिन तक (अतिवज्जिः पतंगैः) अतिवेगसे दौड़नेवाले पक्षि-सदृश यानोंसे भुज्यु को- अर्थात् उसके साथियों के साथ- (ऊहथुः) आकाशमार्गसे वहन किया । (नार्द्रस्य समुद्रस्य धन्वन् पारे) जलमय समुद्र के परे रेतिले प्रदेश में रहनेवाले राजा पर आक्रमण करने के लिये भुज्यु गया था । वहाँ से उसको (त्रिभिः रथैः) तीन रथों से उसको घर पहुँचाया । जिन रथों की सैकड़ों चक्र लगे थे और छः घोड़े अर्थात् वहन-साधन लगे थे ।

तीन अहोरात्र चलनेवाले ये हवाई जहाज थे, ऐसा यहाँ कहा है । सैनिकों को लेकर ये वायुयान तीन दिन रात उड़ते हुए तुम्र के राज्य में पहुँचे ।

अनारम्भणे तदवीरयेथां अनास्थाने अग्रभणे समुद्रे । यदश्विना ऊहथुर्भुज्युमस्तं शतारित्रां नावमात-स्थिवांसम् ॥ [८१; ऋ. १।११६।५]

जिस समुद्र के (अनारम्भणे) आदि अन्त का पता नहीं लगता, (अनास्थाने) जिस समुद्र के मध्यमें ठहरने के लिये कोई स्थान नहीं है, और (अग्रभणे) जिस का ग्रहण भी नहीं हो सकता, ऐसे अथांग महासागरमें भुज्यु डूब रहा था । वहाँ अश्विदेव पहुँचे और उन्होंने अपने (शतारित्रां नाव) सौ बलियोंवाली नौकापर उस को (आतस्थिवांसं) बिठलाकर उस को (अस्तं ऊहथुः) अपने घर पहुँचा दिया ।

यहाँ कहा है कि अथांग समुद्र में अश्विदेवों के जहाज जाते थे । वे आकाश में भी उड़ते थे और अनेक सैनिकों को बिठला सकते थे ।

युवं तुप्राय पूर्व्यैभिरेवैः पुनर्मन्यावभवतं युवाना । युवं भुज्युं अर्णसो निः समुद्रात् विभिरूहथुः ऋज्रे-भिरश्वैः ॥ [११५; ऋ. १।११७।१४]

हे अश्विदेवों ! आप (तुप्राय) राजा तुम्र के लिये (पूर्व्यैभिः एवैः) पूर्व समय में की सहायताओं से प्रिय हो चुके थे ही, पर आप (पुनः) फिर भी (मन्यौ अम-वतं) मान्य हो गये हैं, क्योंकि (भुज्युं तुम्र के युवराज राजपुत्र भुज्युको (अर्णसः समुद्रात्) बड़े महासागर में से (ऋज्रेभिः अश्वैः) बड़े वेगवाले अपने (विभिः) पक्षि-सदृश वाहनोसे (ऊहथुः) ऊपर उठाया और घरको पहुँचाया ।

देवता ।

तीन दिन
ले पक्षि-
के साथ-
समुद्रस्य
प्रदेश में
गया था ।
सको घर
और छः

ऐसा यहां
दिन रात

समुद्र ।

मात-

११६।५]

का पता

में ठहरने

जिस का

रमें भुज्यु

दोंने अपने

उस को

ऊधुः)

के जहाज

सैनिकों

वाना ।

ऋज्रे-

११७।१४]

के लिये

नों से प्रिय

नन्यौ अम-

के युवराज

मागर में से

नः) पक्षि-

पहुंचाया ।

यहां बताया है कि, अश्विदेवों की पहले से ही मित्रता तुम के साथ थी । पर अब पुत्रको बचाने के कारण वह मित्रता सुदृढ़ हो गई है । पहले की अपेक्षा अब वह मित्रता अधिक बढ चुकी है ।

युवं भुज्युं भुरमाणं विभिर्गतं स्वयुक्तिभिर्निवहन्ता पितृभ्य आ । यासिष्ठं वर्तिवृषणा विजेन्यम् ॥

[१४१; ऋ० १।११९।४]

आपने (भुरमाणं भुज्यं) जलों में डूब मरनेवाले भुज्यु नामक राजपुत्रको (विभिः गतं) उडनेवाले पक्षियों जैसे यानोंसे उठाकर (स्वयुक्तिभिः) अपनी खास युक्तियों से (पितृभ्यः आ निवहन्ता) पिताके पास लाया । आप (वृषणा) बलवान् हैं और (विजेन्यं यासिष्ठं) अति दूर देशतक आप पहुंचे थे और भुज्युको आपने वहांसे लाया था ।

ता भुज्युं विभिरद्भ्यः समुद्रात्तुप्रस्य सूनुं ऊधथू रजोभिः । अरेणुभिर्योजनेभिर्भुजन्ता पतत्रिभिः अर्णसो निरुप-स्थात् ॥

[१११; ऋ० ६।६२।६]

(तुमस्य सूनुं भुज्युं) राजा तुम के पुत्र भुज्यु को (निरुपस्थात् अर्णसः समुद्रात् अद्भ्यः) अथांग महासागर के बड़े जलोंसे (अरेणुभिः रजोभिः) जहां धूली नहीं है, ऐसे अन्तरिक्षसे- आकाशमार्गसे- (ऊधथुः) उठाकर (योजनेभिः) विविध प्रकारकी योजनाओंसे युक्त (विभिः) पक्षियों जैसे (पतत्रिभिः) पक्षिरूप यानों से तुमने उसके घर पहुंचाया ।

युवं भुज्युं अवविद्धं समुद्र ऊधथुरर्णसो अस्त्रिधानैः ।

पतत्रिभिरश्रमैरव्यथिभिर्दसनाभिः अश्विना पारयन्ता ॥

[३।१३; ऋ० ७।६९।७]

आपने [समुद्रे अवविद्धं भुज्युं] समुद्र में जखमी होकर पड़े हुए भुज्यु को (अस्त्रिधानैः) जिनमें कुछ भी न्यूनता नहीं है, सब सुखसाधनों से जो परिपूर्ण हैं, (अश्रमैः) जिनमें बैठनेवालोंको बिल्कुल श्रम नहीं होते, (अव्यथिभिः) जिनमें किसी को व्यथा नहीं होती, ऐसे (पतत्रिभिः) पक्षि जैसे यानों से (अर्णसः उत् ऊधथुः) समुद्र से ऊपर उठा कर अनेकानेक युक्तियोंसे (पारयन्ता) समुद्र के पार करके घर पहुंचा दिया ।

युवं भुज्युं समुद्र आ रजसः पार ईखितम् ।

यातमच्छा पतत्रिभिः नासत्या सातये कृतम् ।

[६३१; ऋ० १०।१४३।५]

उत् त्वं भुज्युमश्विना सखायो मध्ये जहुर्दुरेवासः समुद्रे ।

निरीं पर्षदरावा यो युवाकृः । [३४४; ऋ० ७।६८।७]

आपने डूबनेवाले भुज्युको समुद्र से उठा कर (रजसः) अन्तरिक्ष के मार्ग से पार पहुंचा दिया । आप (पतत्रिभिः) पक्षी जैसे आकाश-यानों से वेगसे वहां पहुंचे थे ।

आपने समुद्र के बीच में कठिन अवस्था में पड़ा था, उस भुज्यु को मित्रभावसे उठा कर सुरक्षित घर पहुंचाया ।

इन मंत्रों से पता लगता है कि अश्विदेवों के पास पक्षियों के सदृश आकाश में उडनेवाले आकाश-यान थे । वे तीन अहोरात्र अतिवेग से चलाये जाते थे और उन में सैनिकों को बिठलाना और इष्ट स्थान पर पहुंचाने का कार्य किया जाता था ।

अश्विदेवों की यह विद्या मननपूर्वक आलोचना करने-योग्य है ।

इस तरह अश्विदेवों के कर्तृत्व का वर्णन वेद-मंत्रों में है । अश्विदेवता के सब मंत्रों का मननपूर्वक अध्ययन करने पर तथा इनका जो वर्णन पुराणों में है वह देखने के बाद, तथा दोनों की संगति लगाने के बाद अश्विदेवोंके संबंध में ठीक-ठीक पता लग सकता है ।

ये देवता उषाके पूर्व आकाश में तारकारूप से उगते हैं, ऐसा भी वर्णन है । ये दो साथ-साथ रहते हैं । अस्तु । दैवत-संहितांतर्गत अश्विनौ देवताका अध्ययन होनेके लिये यह मंत्रसंग्रह सहायक होगा, ऐसी हमें आशा है ।

वैदिक राज्यशासनमें आरोग्यमंत्रांकी

कार्य और व्यवहार

वेदमें देवताओंके राज्यका वर्णन है । सर्वोपरि ब्रह्म और प्रकृति है । ब्रह्म निष्क्रिय है और सब कुछ प्रकृति करती है । यह लोकशाही राज्यव्यवस्थाका आदर्श है । इसीको वैदिक भाषामें 'जानराज्य' कहते हैं । सब जनोंद्वारा जिसका राज्यशासन होता रहता है, वही जानराज्य है । इसमें 'ब्रह्म' सबके ऊपर है पर वह कुछ भी करता नहीं, 'प्रकृति' सब करती है । प्रकृतिका अर्थ 'प्रजाजन'

है । ब्रह्म सबसे श्रेष्ठ, सबका आधार, सबका आश्रयस्थान है, पर वह कुछ करता नहीं । आजके लोकराज्यके राष्ट्रपति जैसे रहते हैं, वे सबके ऊपर हैं, पर उनको कुछ भी करनेका अधिकार नहीं, वैसा ही यहाँ 'ब्रह्म' है । प्रकृति अर्थात् प्रजा सब करती है, उसी तरह लोकराज्यमें प्रजानियुक्त मंत्री ही सब करते हैं । यह ब्रह्म और प्रकृतिके वर्णनसे बताया है । यह पूर्ण लोकराज्यका ही उत्तम स्वरूप है ।

देवताएं विश्वराज्यके मंत्री

बृहस्पति, ब्रह्मणस्पति, इन्द्र, सूर्य, चन्द्र, वायु, अग्नि आदि देव, जो प्रकृतिसे उत्पन्न हुए हैं वे इस जगत्का सब व्यवहार करते हैं । येही विश्वराज्यके विविध मंत्री हैं—

वेदमंत्रोंमें प्रायः विश्वरूपी विश्वराज्यका तथा विश्वराज्यके संचालक शक्तियोंका वर्णन है । विश्वराज्यकी संचालक शक्तियां ही इन्द्र, वायु, सूर्य, अग्नि आदि हैं । ये शक्तियां जैसी विश्वमें हैं वैसी ही मनुष्यमें भी हैं । इसलिये कहा है कि—

ये पुरुषे ब्रह्म विदुः ।

ते विदुः परमेष्ठिनम् ॥

[अथर्व. १०।७।१७]

' जो मनुष्य शरीरमें ब्रह्म जानते हैं वे परमेष्ठीको जानते हैं । ' वेदका गूढ़ आशय जाननेकी यह चाबी है । विश्व इतना बड़ा है, उसका आकलन करना कठिन है । इसलिये पिण्ड शरीरमें वही व्यवस्था है, उसको जाननेसे विश्वव्यवस्थाका ज्ञान हो सकता है ।

पिण्ड-ब्रह्माण्डकी व्यवस्था

ब्रह्माण्ड	पिण्ड	पिण्ड समूह (राष्ट्र)
विश्व	शरीर	समूह शरीर, समाज
ब्रह्म (परमात्मा)	आत्मा	संघात्मा
शिव	जीव	जीवसंघ
देवगण	इन्द्रियगण	शासकवर्ग

यहाँ विदित हो सकता है कि जो विश्वमें है वही जीवके शरीरमें है और जो जीवके शरीरमें है वही समष्टि शरीर अर्थात् व्यावहारिक अर्थमें राष्ट्रमें है । यह ठीक तरह समझमें आगया, तो वेदका रहस्य समझमें आगया ऐसा समझना योग्य है ।

ब्रह्म, परब्रह्म, आत्मा, परमात्मा, ईश, ईश्वर आदि नाम एक विशाल विश्वव्यापक शक्तिके हैं । वैसा ही जीव-आत्मा शरीरमें है । परमात्मा 'दावानल' है तो जीवात्मा 'चिनगारी' है । परमात्मा विश्वमें है तो जीवात्मा शरीरमें है । परमात्माको जानना कठिन है, पर जीवात्माको जानना उससे सुगम है, इसलिये कहा है कि—

दावानल और चिनगारी

' जो पुरुषमें— मनुष्य शरीरमें ब्रह्म देखते हैं, अर्थात् जीवात्माको जानते हैं वे परमात्मा, परब्रह्मको जानते हैं । जो चिनगारीको जानते हैं वे दावानलको जानते हैं । ' विश्वको जाननेके लिये शरीरको जानना चाहिये । विश्वकी सब शक्तियां शरीरमें हैं । विश्वमें पूर्णरूपसे जो शक्तियां हैं वे ही शक्तियां अंशरूपसे शरीरमें हैं । इसलिये कहा है कि 'पिण्डका यथार्थ ज्ञान होनेसे ब्रह्माण्डका ज्ञान होता है । '

विश्वमें और व्यक्तिमें पंचभूत

यह तब समझनेके लिये संपूर्ण विश्व पंचभूतोंका बना है और यह मानव शरीर भी पंचभूतोंका ही बना है । इसलिये कहा है कि मानव शरीरमें पंचभूतोंको जाननेसे विश्वके पंचभूत जाने जा सकते हैं ।

यही दूसरे शब्दोंमें ऐसा कहा जा सकता है कि यह विश्व ३३ देवताओंका बना है, वैसा ही यह शरीर भी ३३ देवताओंका बना है । जो विश्वमें है वही शरीर में भी है । विश्वमें जैसी ३३ देवताएं हैं वैसी शरीरमें भी ३३ देवताएं अंशरूपसे हैं । अतः शरीरमें ३३ देवताओंका ज्ञान हुआ तो विश्वके ३३ देवताओंका ज्ञान हो सकता है ।

पुरुषमें ब्रह्म

ये पुरुषे ब्रह्म विदुः ।

ते विदुः परमेष्ठिनम् ॥

[अथर्व. १०।७।१७]

' जो पुरुष में ब्रह्म जानते हैं वे परमेष्ठीको जानते हैं ' इसका भाव यह है । इस तरह व्यक्ति और विश्वमें समानता है यही हमने देखा । एक व्यक्तिमें जो तरव हैं वे ही व्यक्ति समूहमें होते हैं, इस कथनका विरोध कोई कर नहीं सकता । देखिये व्यक्तिके मस्तकमें ज्ञान, बाहुओंमें बल और शौर्य, मध्यमें वीर्य और पांवोंमें गति है । ये ही

गुण समाजमें भी होते हैं। समाजमें ज्ञानी, शूर, धनी और कर्मचारी रहते हैं। ये ही समाज शरीरके चार अवयव हैं जिनको ज्ञानी, शूर, व्यापारी और कर्मचारी कहते हैं। व्यक्तिमें जो गुण हैं वे ही समाजमें गुणी करके प्रसिद्ध होते हैं। इस रीतिसे व्यक्ति, समाज या राष्ट्र और विश्वका संबंध है यही जानना चाहिये। वेदका रहस्य अर्थ जाननेके लिये यह संबंध ठीक तरह जानना अत्यंत आवश्यक है, अन्यथा वेदका रहस्य अर्थ समझमें नहीं आ सकता। इसकी सारिणी यह है—

विश्व-राष्ट्र-व्यक्तिका सम्बन्ध

विश्वमें देवता	राष्ट्रमें शासक	व्यक्तिमें इंद्रिय
विश्व	राष्ट्र	शरीर
ब्रह्म	राष्ट्रपति	जीव-आत्मा
प्रकृति	प्रजा	शरीर
इन्द्र	सेनापति	मन
मरुत्	सैनिक	इंद्रियगण
वायु	रक्षक	प्राण
सूर्य	दर्शनकार	नेत्र
चन्द्र	मननशील	मन
अग्नि	वक्ता	वाणी

इस रीतिसे विश्वकी देवताएं व्यक्तिमें किस रूपमें हैं और राष्ट्रमें किस रूपमें रहती हैं यह जाना जा सकता है। इस तरह विश्वशक्ति, राष्ट्रशक्ति और व्यक्तिशक्ति परस्पर सम्बन्धमें किस रीतिसे रहती है, यह जाननेसे सब वेदमंत्रोंका रहस्य स्पष्ट हो जाता है। पर इसका निश्चय तब तक नहीं होता, जब तक वेदमंत्र समझमें आना अशक्य है। इसलिये यह परस्पर सम्बन्ध जानना अत्यंत आवश्यक है।

शरीरमें इन्द्र शक्ति

शरीरमें इन्द्रशक्ति उत्पन्न होती है इस विषयमें उपनिषद्का यह प्रमाण है—

अन्तरेण तालुके। य एष स्तन इव अवलंबते।

सा इन्द्र योनिः।

[तै. उ. १।६।२]

'तालुपर जो स्तन जैसा लटकता है, यह इन्द्र शक्ति उत्पन्न करनेका स्थान है।'

शरीरमें इन्द्र शक्ति तालुके ऊपर रही इन्द्र ग्रंथीसे उत्पन्न होती है। इसी तरह शरीरमें ३३ देवताओंके स्थान हैं वहांसे ३३ शक्तियां मनुष्यको प्राप्त होती हैं और उनसे यह शरीर कार्यक्षम रहता है। इन केन्द्रोंपर मनका संयम करनेसे वे शक्तियां प्राप्त होती हैं। शरीरमें जो प्रकृति है उसमें वे शक्तियां हैं। इनसे शरीर व्यापार ठीक चलता है।

राष्ट्रमें जो प्रजारूप प्रकृति है उसमेंसे इसी तरह शासक वर्ग उत्पन्न होता है। ये शक्तिकेन्द्र प्रजाकी शक्ति लेकर ऊपर आते हैं और राष्ट्राका शासन करते हैं।

इस तरह विश्वमें, राष्ट्रमें और व्यक्तिमें समान रूपमें कार्य हो रहा है। प्रायः वेदमंत्रोंमें विश्वशक्तियोंका वर्णन है, इसको देखकर व्यक्तिके शरीरके नियम तथा राष्ट्रसंचालनके बोध प्राप्त करने चाहिये। वैदिक ऋषि इस दृष्टिसे विश्वकी ओर, राष्ट्रीकी ओर और व्यक्तिकी ओर देखते थे। उसी दृष्टिसे हमने वेदमंत्रोंको देखना चाहिये।

अश्विनौ देवताका विचार

इन्द्र, मरुत्, सूर्य, वायु, चन्द्र, अग्नि आदि ३३ मुख्य देव हैं। उनमें 'अश्विनौ' भी एक देवता है। यह दो हैं और दोनों मिलकर साथ-साथ रहते हैं और दोनों मिलकर कार्य करते हैं। रोग दूर करना, आरोग्य बढ़ाना, दीर्घायु देना आदि कार्य इनके हैं।

(१) देवानां भिषजौ। [वा. य. २।१।५३]

(२) दैव्यौ भिषजौ। [ऋ. ८।१।८।८]

(३) भिषजौ। [ऋ. १।१।१६।१६]

ये इनके नाम हैं, ये नाम इनके वैद्य होनेकी सूचना देते हैं। यदि ये वैद्य हैं तो इनको विश्वराज्यमें वैद्यकीय कार्य मिलना चाहिये। इसीलिये हमने इनको 'आरोग्यमंत्री' कहा है। इनका मंत्रीमंडल इस प्रकार है—

परब्रह्म	राष्ट्रपति
प्रकृति	प्रजासमिति, राष्ट्रसंसद
इन्द्र, मरुत्	युद्ध मंत्री और उनके सैनिक
ब्रह्मणस्पति	शिक्षा मंत्री
बृहस्पति	„ „ (सहायक)
अश्विनौ	आरोग्यमंत्री (शस्त्रकर्म और चिकित्सा करनेवाले)

अग्नि	प्रचार मंत्री
वायु	वाहन मंत्री,
यम	धर्म मंत्री
पूषा	पोषण मंत्री, अन्न मंत्री
अर्यमा	न्याय मंत्री

इस तरह यह मंत्रीमंडल ३३ देवोंका है। इनमें ३ मुख्य हैं और ३० गौण हैं। इनमें भी १०।१० के तीन गण हैं।

वेदमंत्रोंमें देवोंके वर्णन हैं। देवोंने क्या किया था, या देव क्या करते थे, यह वर्णन है। यह किस लिये है यह प्रश्न महत्त्वका है। शतपथ ब्राह्मणमें कहा है कि “यत् देवा अकुर्वन्, तत् करवाणि” जो देव करते रहे वह मैं करूंगा। देव जगत्का हित करते रहते हैं। ‘देवो, दानाद्वा द्योतनाद्वा’ देव दान देता है और प्रकाश देता है। जो दान देता है, जो प्रकाश देता है वे ही देव हैं। जो दान देकर आवश्यकता दूर करता है, जो प्रकाश देकर मार्गदर्शन करता है वह देव है। दूसरोंको ऐसी सहायता देव करते हैं। मनुष्य भी ऐसी सहायता देनेका, प्रकाश बतानेका कार्य करें।

यहां अश्विनौ देव नीरोगिता उत्पन्न करते हैं, रोगियोंके

रोग दूर करते हैं, आरोग्यका रक्षण करते हैं, आरोग्यके संरक्षणका मार्ग बताते हैं। हम वैसा करते रहें, यह मनुष्योंके लिये मार्गदर्शन यहां मिलता है।

+ + +

इस दैवत-संहिता के द्वितीय विभाग में आये सब देव-ताओं की उपमासूची, विशेषणसूची आदि अनेक उपयुक्त सूचियां श्री. पं. अनन्त दिनकर रास्ते, वाई (जि. सातारा) निवासीने बड़ी मेहेनत से तथा विशेष प्रयत्नपूर्वक बनायी हैं, इसलिये स्वाध्याय-मण्डल उन के विषय में अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता है।

+ + +

इस दैवत-संहिता के मुद्रण और प्रकाशन के व्यय के लिये मुंबई विश्वविद्यालय (University of Bombay) में जो सहायता दी और जो उक्त विश्व-विद्यालय से सम्पादक को मिली है, उस के लिये सम्पादक उक्त विश्वविद्यालयका बड़ा ऋणी है।

निवेदनकर्ता,

श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

अध्यक्ष- स्वाध्याय-मण्डल



दैवत-संहिता ।

(ऋग्यजुःसामाथर्वणां संहितानां सर्वान् मन्त्रान् दैवतानुसारेण संगृह्य निर्मिता ।)

५ अश्विनौ-देवता ।

॥ १ ॥ (ऋ. १।३।१-३)

(१-३) मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री ।

अश्विना यज्वरीरिषो	द्रवत्पाणी शुभस्पती ।	पुरुभुजा चनस्यतम्	१
अश्विना पुरुदंससा	नरा शवीरया धिया ।	धिण्या वनतं गिरः	२
दत्ता युवाकवः सुता	नासत्या वृक्तवर्हिषः ।	आ यातं रुद्रवर्तनी	३ ३

॥ २ ॥ (ऋ. १।६।५।११)

(४-८) मेधातिथिः काण्वः । (ऋतुसहितौ) । गायत्री ।

अश्विना पिबतं मधु	दीर्घग्री शुचिव्रता ।	ऋतुना यज्ञवाहसा	११
-------------------	-----------------------	-----------------	----

॥ ३ ॥ (१।२२।१-४)

प्रातर्युजा वि बोधया—	अश्विनावेह गच्छताम् ।	अस्य सोमस्य पीतये	१ ५
या सुरथा रथीतमो—	भा देवा दिविस्पृशा ।	अश्विना ता हवामहे	२
या वां कशा मधुमत्य—	अश्विना सूनृतावती ।	तया यज्ञं मिमिक्षतम्	३
नहि वामस्ति दूरके	यत्रा रथेन गच्छथः ।	अश्विना सोमिनो गृहम्	४ ८

॥ ४ ॥ (ऋ. १।३०।१७-१९)

(९-११) शुनःशेष आजीगर्तिः स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः ।

अश्विनावश्वावत्ये—	पा यातं शवीरया ।	गोमदं दत्ता हिरण्यवत्	१७
समानयोजनो वि वां	रथो दत्तावमर्त्यः ।	समुद्रे अश्विनेयते	१८
न्यधन्यस्य मूर्धनि	चक्रं रथस्य येमथुः ।	परि द्यामन्यदीयते	१९ ११

१ [दै. अश्विनौ]

॥ ५ ॥ (क्र. १३४।१-१२)

(१२-२३) हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । जगती; ९, १२ त्रिष्टुप् ।

त्रिंशन् नो अद्या भवतं नवेदसा विभुर्वा याम उत रातिरश्विना ।	
युवोर्हि यन्त्रं हिम्येव वासंसो ऽभ्यायसेन्या भवतं मनीषिभिः	१
त्रयः पवयो मधुवाहने रथे सोमस्य वेनामनु विश्व इद् विदुः ।	
त्रयः स्कम्भासः स्कमितास आरभे त्रिर्नक्तं याथस्त्रिर्वाश्विना दिवा	२
समाने अहन् त्रिरवद्यगोहना त्रिरद्य यज्ञं मधुना मिमिक्षतम् ।	
त्रिर्वाजवतीरिषो अश्विना युवं दोषा अस्मभ्यमुषसश्च पिन्वतम्	३
त्रिर्वर्तिर्यातं त्रिरनुव्रते जने त्रिः सुप्राव्ये त्रेधेवं शिक्षतम् ।	
त्रिर्नान्द्यं वहतमश्विना युवं त्रिः पृक्षो अस्मे अक्षरेव पिन्वतम्	४ १५
त्रिर्नो रयिं वहतमश्विना युवं त्रिर्देवताता त्रिरुतावतं धियः ।	
त्रिः सौभगत्वं त्रिरुत श्रवांसि न स्त्रिष्ठं वां सूरं दुहिता रुहद् रथम्	५
त्रिर्नो अश्विना दिव्यानि भेषजा त्रिः पार्थिवानि त्रिरु दत्तमद्भ्यः ।	
ओमानं शंयोर्ममकाय सूनवे त्रिधातु शर्म वहतं शुभस्पती	६
त्रिर्नो अश्विना यजता दिवेदिवे परि त्रिधातु पृथिवीमशायतम् ।	
तिस्रो नासत्या रथ्या परावत आत्मेव वातः स्वसराणि गच्छतम्	७
त्रिरश्विना सिन्धुभिः सप्तमातृभिस्त्रय आहावास्त्रेधा हविष्कृतम् ।	
तिस्रः पृथिवीरुपरि प्रवा दिवो नाकं रक्षेथे द्युभिरक्तुभिर्हितम्	८
क्व त्री चक्रा त्रिवृतो रथस्य क्व त्रयो बन्धुरो ये सनीळाः ।	
क्वदा योगो वाजिनो रासभस्य येन यज्ञं नासत्योपयाथः	९ २०
आ नासत्या गच्छतं हूयते हविर्मध्वः पिबतं मधुपेभिरासभिः ।	
युवोर्हि पूर्वं सवितोषसो रथमृताय चित्रं घृतवन्तमिष्यति	१०
आ नासत्या त्रिभिरेकादुशैरिह देवेभिर्यातं मधुपेयमश्विना ।	
प्रायुस्तारिष्ठं नी रपांसि मृक्षतं सेधतं द्वेषो भवतं सचाभुवा	११
आ नो अश्विना त्रिवृता रथेना ऽर्वाश्च रयिं वहतं सुवीरम् ।	
शृण्वन्तां वामवसे जोहवीमि वृधे च नो भवतं वाजसातौ	१२ २३

॥ ६ ॥ (क्र. १४६।१-१५)

(१४-४८) प्रस्कण्वः काण्वः । गायत्री ।

एषो उषा अपूर्व्या	व्युच्छति प्रिया दिवः ।	स्तुषे वामश्विना बृहत्	१
या दुस्त्रा सिन्धुमातरा	मनोतरा रयीणाम् ।	धिया देवा वसुविदा	२ २५
वच्यन्ते वां ककुहासो	जूर्णायामधि विष्टपि ।	यद् वां रथो विभिष्यतात्	३
हविषा जारो अपां	पिपतिं पपुर्निरा ।	पिता कुटस्य चर्षणिः	४
आदारो वां मतीनां	नासत्या मतवचसा ।	पातं सोमस्य घृष्णुया	५
या नः पीपरदश्विना	ज्योतिष्मती तमस्तिरः ।	तामस्मे रासाथामिषम्	६
आ नो नावा मतीनां	यातं पाराय गन्तवे ।	युञ्जाथामश्विना रथम्	७ ३०
अरित्रं वां दिवस्पृथु	तीर्थे सिन्धूनां रथः ।	धिया युयुज्ज इन्दवः	८
दिवस्कण्वास इन्दवो	वसु सिन्धूनां पदे ।	स्वं वृत्रि कुहं धित्सथः	९
अभूदु मा उ अंशवे	हिरण्यं प्रति सूर्यः ।	व्यख्यजिह्वयासितः	१०
अभूदु पारमेतवे	पन्थां क्रतस्य साधुया ।	अदर्शि वि सुतिर्दिवः	११
तत् तदिदुश्विनोरवो	जरिता प्रति भूषति ।	मदे सोमस्य पिप्रतोः	१२ ३५
वावसाना विवस्वति	सोमस्य पीत्या गिरा ।	मनुष्वच्छंभू आ गतम्	१३
युवोरुषा अनु श्रियं	परिज्मनोरुपाचरत् ।	क्रता वनथो अक्तुभिः	१४
उमा पिबतमाश्विनो	भा नः शर्म यच्छतम् ।	अविद्रियाभिरुतिभिः	१५

॥ ७ ॥ (क्र. १४७।१-१०)

प्रगाथः = (विषमा) बृहती, (समा) सतो बृहती ।

अयं वां मधुमत्तमः	सुतः सोमं क्रतावृधा ।	
तमश्विना पिबतं तिरोऽह्वयं	धत्तं रत्नानि दाशुषे	१
त्रिवन्धुरेण त्रिवृता सुपेशसा	रथेना यातमाश्विना ।	
कण्वासो वां ब्रह्म कण्वन्त्यध्वरे	तेषां सु शृणुतं हवम्	२ ४०
अश्विना मधुमत्तमं	पातं सोममृतावृधा ।	
अथाद्य दस्त्रा वसु विभ्रता रथे	दाश्वासमुप गच्छतम्	३
त्रिषधस्थे बर्हिषि विश्ववेदसा	मध्वा युजं मिमिक्षतम् ।	
कण्वासो वां सुतसौमा अभिद्यवो	युवां हवन्ते अश्विना	४ ४२

याभिः कण्वमभिष्टिभिः प्रावतं युवमश्विना ।	
ताभिः ष्वस्मौ अवतं शुभस्पती पातं सोममृतावृधा	५
सुदासे दस्त्रा वसु विभ्रता रथे पृक्षो वहतमश्विना ।	
रयि समुद्रादुत वा दिवस्पत्यसे धत्तं पुरुस्पृहम्	६
यन्नासत्या परावति यद् वा स्थो अधि तुर्वशे ।	
अतो रथेन सुवृता न आ गतं साकं सूर्यस्य रश्मिभिः	७ ४५
अर्वाञ्चा वां सप्तयोऽध्वरश्रियो वहन्तु सवनेदुष ।	
इषं पृश्नन्ता सुकृते सुदानव आ बर्हिः सीदतं नरा	८
तेन नासत्या गतं रथेन सूर्यत्वचा ।	
येन शश्वद्दूहयुर्दुशुषे वसु भध्वः सोमस्य पीतये	९
उक्थेभिरर्वागवसे पुरुवसू अकैश्च नि ह्वयामहे ।	
शश्वत् कण्वानां सदसि प्रिये हि कं सोमं पपथुरश्विना	१० ४८

॥ ८ ॥ (ऋ. १।९२।१६-१८)

(४९-५१) गोतमो राहूगणः । उष्णिक् ।

अश्विना वर्तिरस्मदा गोमद् दस्त्रा हिरण्यवत् । अर्वाग्रथं समनसा नि यच्छतम्	१६
यावित्था श्लोकमा दिवो ज्योतिर्जनाय चक्रथुः । आ न उर्जं वहतमश्विना युवम्	१७
एह देवा मयोभुवा दस्त्रा हिरण्यवर्तनी । उपर्बुधो वहन्तु सोमपीतये	१८ ५१

॥ ९ ॥ (ऋ. १।११२।१-२५)

(५२-७६) कुत्स आङ्गिरसः । १ (आद्यपादस्य) द्यावापृथिव्यौ, १ (द्वितीयपादस्य) अग्निः,
१ (उत्तरार्धस्य) अश्विनौ; २-२५ अश्विनौ । जगती; २४-२५ त्रिष्टुप् ।

ईळे द्यावापृथिवी पूर्वचित्तये ऽग्निं घर्मं सुरुचं यामन्निष्टये ।	
याभिर्भरे कारमंशाय जिन्वथ स्ताभिरु पु ऊतिभिरश्विना गतम्	१
युवोर्दानाय सुभरा असश्चतो रथमा तस्थुर्वचसं न मन्तवे ।	
याभिर्धियोऽवथः कर्मन्निष्टये ताभिरु पु ऊतिभिरश्विना गतम्	२
युवं तासां दिव्यस्य प्रशासने विशां क्षयथो अमृतस्य मज्जना ।	
याभिर्धेनुमस्वं पिन्वथो नरा ताभिरु पु ऊतिभिरश्विना गतम्	३
याभिः परिज्मा तनयस्य मज्जना द्विमाता तूष्णं तरणिर्विभूषति ।	
याभिस्त्रिमन्तुरभवंद् विचक्षण स्ताभिरु पु ऊतिभिरश्विना गतम्	४ ५५

मन्त्राः ४३-६९]

	याभी रेभं निर्वृत्तं सितमद्भ्य उद् वन्दनमैरयतं स्वर्दृशे ।	
	याभिः कण्वं प्र सिषासन्तमावतं ताभिरु षु ऊतिभिरश्विना गतम्	५
	याभिरन्तकं जसमानमारणे भुज्युं याभिरव्यथिभिर्जिजिन्वथुः ।	
	याभिः कर्कन्धुं व्यथं च जिन्वथु—स्ताभिरु षु ऊतिभिरश्विना गतम्	६
	याभिः शुचन्ति धनसां सुषंसदं तप्तं घर्ममोम्यावन्तमत्रये ।	
४५	याभिः पृश्निगुं पुरुकुत्समावतं ताभिरु षु ऊतिभिरश्विना गतम्	७
	याभिः शचीभिर्वृषणा परावृजं प्रान्धं श्रोणं चक्षस एतवे कृथः ।	
	याभिर्वर्तिकां ग्रसिताममुञ्चतं ताभिरु षु ऊतिभिरश्विना गतम्	८
	याभिः सिन्धुं मधुमन्तमसञ्चतं वसिष्ठं याभिरजरावर्जिन्वतम् ।	
	याभिः कुत्सं श्रुतयं नयमावतं ताभिरु षु ऊतिभिरश्विना गतम्	९ ६०
	याभिर्विंशपलां धनसामथर्व्यं सहस्रमीळह आजवर्जिन्वतम् ।	
४८	याभिर्विशमश्च्यं प्रेणिमावतं ताभिरु षु ऊतिभिरश्विना गतम्	१०
	याभिः सुदानू औशिजाय वणिजे दीर्घश्रवसे मधु कोशो अक्षरत् ।	
	कक्षीवन्तं स्तोतारं याभिरावतं ताभिरु षु ऊतिभिरश्विना गतम्	११
	याभी रसां क्षोदसोदः पिपिन्वथु—रन्ध्रं याभी रथमावतं जिषे ।	
	याभिस्त्रिशोकं उस्त्रिया उदाजत ताभिरु षु ऊतिभिरश्विना गतम्	१२
५१	याभिः सूर्यं परियाथः परावर्ति मन्धातारं क्षेत्रपत्येष्वावतम् ।	
	याभिर्विंशं प्र भरद्वाजमावतं ताभिरु षु ऊतिभिरश्विना गतम्	१३
	याभिर्महामतिथिग्वं कशोजुवं दिवोदासं शम्बरहत्य आवतम् ।	
	याभिः पूभिद्ये त्रसदस्युमावतं ताभिरु षु ऊतिभिरश्विना गतम्	१४ ६५
	याभिर्विंशं विपिपानमुपस्तुतं कलिं याभिर्वित्तजानिं दुवस्यथः ।	
	याभिर्व्यश्चमुत पृथिमावतं ताभिरु षु ऊतिभिरश्विना गतम्	१५
	याभिर्नरा शयवे याभिरत्रये याभिः पुरा मनवे गातुमीषथुः ।	
	याभिः शारीराजतं स्यूमरश्मये ताभिरु षु ऊतिभिरश्विना गतम्	१६
	याभिः पठर्वा जठरस्य मज्जना—ग्रिर्नादीदेक्षित इद्धो अज्जन्ना ।	
	याभिः शर्यातमवथो महाधने ताभिरु षु ऊतिभिरश्विना गतम्	१७
५५	याभिरङ्गिरो मनसा निरण्यथो—ऽग्रं गच्छथो विवरे गोअर्णसः ।	
	याभिर्मनुं शूरमिषा समावतं ताभिरु षु ऊतिभिरश्विना गतम्	१८ ६९

याभिः पत्नीर्विमदाय न्युहथु—रा घं वा याभिररूणीरशिक्षतम् ।	
याभिः सुदास ऊहथुः सुदेव्यं ताभिरू पु ऊतिभिरश्विना गतम्	१९ ७९
याभिः शंतांती भवथो ददाशुषे भुज्यं याभिरवथो याभिराग्निगुम् ।	
ओम्यावतीं सुभरामृतस्तुभं ताभिरू पु ऊतिभिरश्विना गतम्	२०
याभिः कृशानुमसने दुवस्यथो जवे याभिर्यूनो अर्वन्तमावतम् ।	
मधु प्रियं भरथो यत् सरडभ्य—स्ताभिरू पु ऊतिभिरश्विना गतम्	२१
याभिर्नरं गोपुयुधं नृषाह्ये क्षेत्रस्य साता तनयस्य जिन्वथः ।	
याभी रथा अवथो याभिरवत—स्ताभिरू पु ऊतिभिरश्विना गतम्	२२
याभिः कुत्समार्जुनेयं शतक्रतु प्र तुर्वीति प्र च दुभीतिमावतम् ।	
याभिर्ध्वंसन्ति पुरुषन्तिमावतं ताभिरू पु ऊतिभिरश्विना गतम्	२३
अमस्वतीमश्विना वाचमसे कृतं नो दस्त्रा वृषणा मनीषाम् ।	
अद्युत्येऽवसे नि ह्वये वां वृधे च नो भवतं वाजसातौ	२४
द्युभिरक्तुभिः परि पातमस्मा—नरिष्टेभिरश्विना सौभगेभिः ।	
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता—मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः	२५ ७६

॥ १० ॥ (ऋ. १।११६।१-२५)

(७७-१५९) कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । त्रिष्टुप् ।

नासत्याभ्यां वहिरिव प्र वृञ्जे स्तोमा इयम्यभ्रियेव वातः ।	
यावमैगाय विमदाय जायां सैनाजुवा न्युहतु रथेन	१
वीळपत्नीभिराशुहेमभिर्वा देवानां वा जूतिभिः शाशदाना ।	
तद् रासभो नासत्या सहस्र—माजा यमस्य प्रधाने जिगाय	२
तुग्रो ह भुज्यमश्विनोदमेधे रथिं न कश्चिन्ममूवाँ अवाहाः ।	
तमूहथुनोभिरात्मन्वतीभि—रन्तरिक्षप्रुद्धिरपोदकाभिः	३
तिस्रः क्षपस्त्रिरहातिव्रजद्धि—नासत्या भुज्युमूहथुः पतङ्गैः ।	
समुद्रस्य धन्वन्तरिदस्य पारे त्रिभी रथैः शतपङ्क्तिः षळश्वैः	४ ८०
अनारम्भणे तदवीरयेथा—मनास्थाने अग्रभणे समुद्रे ।	
यदश्विना ऊहथुर्भुज्युमस्तं शतारित्रां नावमातस्थिवांसम्	५
यमश्विना ददथुः श्वेतमश्व—मघाश्वाय शश्वदित् स्वस्ति ।	
तद् वां द्वात्रं महिं कीर्तेन्यं भूत् पैदो वाजी सद्रामिद्वयो अर्यः	६ ८२

मन्त्राः ७०-९६]

अश्विना देवता ।

युवं नरा स्तुवते पञ्जियाय कक्षीवते अरदतं पुरंधिम् ।	
कारोतराच्छुफादश्वस्य वृष्णः शतं कुम्भाँ असिञ्चतं सुरायाः	७
हिमेनाग्निं घंसमवारयेथां पितुमतीमूर्जमस्मा अधत्तम् ।	
ऋवीसे अत्रिमश्विनावनीत—मुन्निन्यथुः सर्वगणं स्वस्ति	८
परावतं नासत्यानुदेथा—मुच्चावुधं चक्रथुर्जिह्वारम् ।	
क्षरन्नापो न पायनाय राये सहस्राय तृष्यते गोतमस्य	९ ८१
जुजुरुषो नासत्योत वत्रिं प्रामुञ्चतं द्रापिमिव च्यवानात् ।	
प्रार्तिरतं जहितस्यायुर्दस्त्रा—दित् पतिमकृणुतं कनीनाम्	१०
तद् वां नरा शंस्यं राध्यं चा—भिष्टिमन्नासत्या वरूथम् ।	
यद् विद्वांसां निधिमिवापगूळह—मुद् दर्शतादूपथुर्वन्दनाय	११
तद् वां नरा सनये दंसं उग्र—माविष्कृणोमि तन्यतुर्न वृष्टिम् ।	
दुध्यङ् ह यन्मध्वाथर्वणो वा—मश्वस्य शीर्णां प्र यदीमुवाच	१२
अजोहवीन्नासत्या कुरा वां महे यामन् पुरुभुजा पुरंधिः ।	
श्रुतं तच्छासुरिव वध्रिमत्या हिरण्यहस्तमश्विनावदत्तम्	१३
आस्नो वृकस्य वर्तिकामभीके युवं नरा नासत्यामुमुक्तम् ।	
उतो कविं पुरुभुजा युवं ह कृपमाणमकृणुतं विचक्षे	१४ ९०
चरित्रं हि वेरिवाच्छेदि पर्ण—माजा खेलस्य परितक्म्यायाम् ।	
सद्यो जङ्घामायसीं विष्पलायै धने हिते सतैवे प्रत्यधत्तम्	१५
शतं मेषान् वृक्यै चक्षुदान—मृज्राश्वं तं पितान्धं चकार ।	
तस्मा अक्षी नासत्या विचक्ष आधत्तं दस्त्रा भिषजावनर्वन्	१६
आ वां रथं दुहिता सूर्यस्य कार्भ्वेवातिष्ठदर्वता जयन्ती ।	
विश्वे देवा अन्वमन्यन्त हृद्भिः समु श्रिया नासत्या सचेथे	१७
यदयातुं दिवोदासाय वर्ति—भरद्वाजायाश्विना हयन्ता ।	
रेवदुवाह सचनो रथो वां वृषमश्वं शिशुमारंश्च युक्ता	१८
रयि सुक्षत्रं स्वपत्यमायुः सुवीर्यं नासत्या वहन्ता ।	
आ जहावीं समनसोप वाजै—स्त्रिरहो भागं दधतीमयातम्	१९
परिविष्टं जाहुषं विश्वतः सीं सुगेभिर्नक्तमूहथू रजोभिः ।	
विभिन्दुना नासत्या रथेन वि पर्वताँ अजर्यू अयातम्	२० ९६

एकस्या वस्तोरावतं रणाय वशमश्विना सनये सहस्रा ।	
निरहतं दुच्छुना इन्द्रवन्ता पृथुश्रवसो वृषणावरातीः	२१
शरस्य चिदार्चत्कस्यावतादा नीचादुच्चा चक्रथुः पातवे वाः ।	
शयवे चिन्नासत्या शचीभिर्जसुरये स्तये पिप्यथुर्गाम्	२२
अवस्यते स्तुवते कृष्णिनाय ऋजूयते नासत्या शचीभिः ।	
पशुं न नष्टमिव दर्शनाय विष्णाप्वं ददथुर्विश्वकाय	२३
दश रात्रीरश्विनेना नव द्यू नवनद्वं शथितमप्स्वन्तः ।	
विप्रुतं रेभमुदनि प्रवृक्तमुन्निन्यथुः सोममिव सुवेण	२४ १००
प्र वां दंसास्यश्विनाववोचमस्य पतिः स्यां सुगवः सुवीरः ।	
उत पश्यन्नश्वन् दीर्घमायुरस्तमिवेज्जरिमाणं जगम्याम्	२५

॥ ११ ॥ (ऋ. १।११७।१-२५)

मध्वः सोमस्याश्विना मदाय प्रतो होता विवासते वाम् ।	
बर्हिष्मती रातिविश्रिता गीरिषा यातं नासत्योप वाजैः	१
यो वामश्विना मनसो जवीयान् रथः स्वश्वो विश आजिगाति ।	
येन गच्छथः सुकृतो दुरोणं तेन नरा वर्तिरसभ्यं यातम्	२
ऋषिं नरावहंसः पाञ्चजन्यमृवीसादग्निं मुञ्चथो गणेन ।	
मिनन्ता दस्योरश्विष्य माया अनुपूर्वं वृषणा चोदयन्ता	३
अश्वं न गूळहर्मश्विना दुरेवैर्ऋषिं नरा वृषणा रेभमुप्सु ।	
सं तं रिणीथो विप्रुतं दंसाभिर्न वां जूर्यन्ति पूर्या कृतानि	४ १०५
सुषुप्त्वांसं न निरुक्तेरुपस्थे सूर्यं न दंसा तमसि क्षियन्तम् ।	
शुभे रुक्मं न दर्शतं निखातमुदपथुरश्विना वन्दनाय	५
तद् वां नरा शंस्यं पज्जियेणं कक्षीवता नासत्या परिज्मन् ।	
शफादश्वस्य वाजिनो जनाय शतं कुम्भां असिञ्चतु मधूनाम्	६
युवं नरा स्तुवते कृष्णिनाय विष्णाप्वं ददथुर्विश्वकाय ।	
घोषायै चित् पितृषदे दुरोणे पतिं जूर्यन्त्या अश्विनावदत्तम्	७
युवं श्यावाय रुशतीमदत्तं महः क्षोणस्याश्विना कण्वाय ।	
प्रवाच्यं तद् वृषणा कृतं वां यन्नापिदाय श्रवो अध्वधत्तम्	८ १०९

मन्त्राः ९७-१२३]

पुरु वर्षीस्यश्विना दधाना नि पेदव ऊहथुराशुमश्वम् ।

सहस्रसां वाजिनमप्रतीत—महिहनं श्रवस्यं तुरुत्रम्

९ ११०

एतानि वां श्रवसां सुदानु ब्रह्माङ्गुषं सदनं रोदस्योः ।

यद् वां पञ्चासौ अश्विना हवन्ते यातमिषा च विदुषे च वाजम्

१०

सुनोर्मनैनाश्विना गृणाना वाजं विप्राय भुरणा रदन्ता ।

अगस्त्ये ब्रह्मणा वावृधाना सं विष्पलां नासत्यारिणीतम्

११

कुह यान्तां सुष्टुतिं काव्यस्य दिवो नपाता वृषणा श्युत्रा ।

हिरण्यस्येव कलशं निखात—मुदूपथुर्दशमे अश्विनाहनं

१२

युवं च्यवानमश्विना जरन्तं पुनर्युवानं चक्रथुः शचीभिः ।

युवो रथं दुहिता सूर्यस्य सह श्रिया नासत्यावृणीत

१३

युवं तुग्राय पूर्येभिरेवैः पुनर्मन्यावभवतं युवाना ।

युवं भुज्यमर्णसो निः समुद्राद् विभिरूहथुर्ऋजेभिरश्वैः

१४ ११५

अजोहवीदश्विना तौग्रयो वां प्रोळ्हः समुद्रमव्यथिर्जगन्वान् ।

निष्टमूहथुः सुयुजा रथेन मनोजवसा वृषणा स्वस्ति

१५

अजोहवीदश्विना वर्तिका वा—मास्नो यत् सीममुश्वतं वृकस्य ।

वि जयुषा ययथुः सान्वद्रे—र्जातं विष्वाचो अहतं विषेणं

१६

शतं मेपान् वृक्ये मामहानं तमः प्रणीतमश्विनेन पित्रा ।

आक्षी ऋज्राश्वे अश्विनावधत्तं ज्योतिरन्धाय चक्रथुर्विचक्षे

१७

शुनमन्धाय भरमह्वयत् सा वृकीरश्विना वृषणा नरेति ।

जारः कनीन इव चक्षदान ऋज्राश्वः शतमेकं च मेपान्

१८

मही वामूतिरश्विना मयोभू—रुत स्नामं धिष्ण्या सं रिणीथः ।

अथा युवामिदह्वयत् पुरंधि—रागच्छतं सीं वृषणाववोभिः

१९ १२०

अधेनुं दस्त्रा स्तर्यं विषक्ता—मपिन्वतं श्यवे अश्विना गाम् ।

युवं शचीभिर्विमदाय जायां न्यूहथुः पुरुमित्रस्य योषाम्

२०

यवं वृकेणाश्विना वपन्ते—षं दुहन्ता मनुषाय दस्त्रा ।

अभि दस्युं वकुरेणा धमन्तो—रु ज्योतिश्चक्रथुरार्याय

२१

आथर्वणायाश्विना दधीचे ऽश्व्यं शिरः प्रत्यैरयतम् ।

स वां मधु प्र वोचदतायन् त्वाष्टं यद् दस्त्रावपिकृक्ष्यं वाम्

२२ १२३

२ [दै० अश्विनौ]

सदा कवी सुमतिमा चंके वां विश्वा धियो अश्विना प्रावतं मे ।
 अस्मे रयि नासत्या बृहन्तं मपत्यसाचं श्रुत्यै रराथाम् २३
 हिरण्यहस्तमश्विना रराणा पुत्रं नरा वधिमत्या अदत्तम् ।
 त्रिधा ह श्यावमश्विना विकस्तं मुञ्जीवसं ऐरयतं सुदानू २४ १२५
 एतानि वामश्विना वीर्याणि प्र पूर्याण्यायवोऽवोचन् ।
 ब्रह्म कृण्वन्तो वृषणा युवभ्यां सुवीरांसो विदथमा वंदेम २६

॥ १२ ॥ (क्र. १।११८।१-११)

आ वां रथो अश्विना श्येनपत्वा सुमृलीकः स्ववां यात्वर्वाङ् ।
 यो मर्त्यस्य मनसो जवीयान् त्रिवन्धुरो वृषणा वातरंहाः १
 त्रिवन्धुरेण त्रिवृता रथेन त्रिचक्रेण सुवृता यातमर्वाक् ।
 पिन्वतं गा जिन्वतमर्वतो नो वर्धयतमश्विना वीरमस्मे २
 प्रवद्यामना सुवृता रथेन दस्त्राविमं शृणुतं श्लोकमद्रेः ।
 किमङ्ग वां प्रत्यवर्ति गमिष्ठा—हुविप्रांसो अश्विना पुराजाः ३
 आ वां श्येनासो अश्विना वहन्तु रथे युक्तासं आशवः पतङ्गाः ।
 ये अप्तुरो दिव्यासो न गृध्रा अभि प्रयो नासत्या वहन्ति ४ १२०
 आ वां रथं युवतिस्तिष्ठदत्र जुष्टी नरा दुहिता सूर्यस्य ।
 परि वामश्वा वपुषः पतङ्गा वयो वहन्त्वरुषा अभीके ५
 उद् वन्दनमैरतं दुंसनाभि—रुद्रेभं दस्त्रा वृषणा शचीभिः ।
 निष्टीग्न्यं पारयथः समुद्रात् पुनश्च्यवानं चक्रथुर्युवानम् ६
 युवमत्रयेऽवनीताय तप्त—मूर्जमोमानमश्विनावधत्तम् ।
 युवं कणायापिरिप्ताय चक्षुः प्रत्यधत्तं सुष्टुतिं जुंजुषाणा ७
 युवं धेनुं शयवै नाधिताया—पिन्वतमश्विना पूर्याय ।
 अमुञ्चतं वर्तिकामहंसो निः प्रति जङ्घां विष्पलाया अधत्तम् ८
 युवं श्वेतं पेदव इन्द्रजूत—महिहनमश्विनादत्तमश्वम् ।
 जोहूत्रमर्यो अभिभूतिमुग्रं सहस्रसां वृषणं वीङ्मङ्गम् ९
 ता वां नरा स्ववसे सुजाता हवामहे अश्विना नाधमानाः ।
 आ न उप वसुमता रथेन गिरो जुषाणा सुविताय यातम् १० १२६

आ इयेनस्य जवसा नूतनेना—स्मे यातं नासत्या सजोषाः ।

हवे हि वामश्विना रातहव्यः शश्वत्तमाया उपसो व्युष्टौ

११

॥ १३ ॥ (क्र. १।११९।१-१०) जगती ।

आ वां रथं पुरुमायं मनोजुवं जीराश्वं यज्ञियं जीवसे हवे ।

सहस्रकेतुं वनिनं शतद्वंसं श्रुष्टीवानं वरिवोधामभि प्रयः

१

ऊर्ध्वा धीतिः प्रत्यस्य प्रयाम—न्यधायि शस्मन्त्समयन्त आ दिशः ।

स्वदामि घर्मं प्रति यन्त्युतय आ वामूर्जानी रथमश्विनारुहत्

२

सं यन्मिथः पस्पृधानासो अगमत शुभे मखा अमिता जायवो रणे ।

युवोरहं प्रवणे चैकिते रथो यदश्विना वहथः सूरिमा वरम्

३

युवं भुज्यं भुरमाणं विभिर्गतं स्वयुक्तिभिर्निवहन्ता पितृभ्य आ ।

यासिष्टं वतिष्ठपणा विजेन्यं दिवोदासाय महि चेति वामवः

४

युवोरश्विना वपुषे युवायुजं रथं वाणीं येमतुरस्य शर्ध्यम् ।

आ वां पतित्वं सुख्याय जग्मुषी योषावृणीत जेन्या युवां पती

५

युवं रेभं परिषूतेरुह्यथो हिमेन घर्मं परितप्तमत्रये ।

युवं शयोरवसं पिप्यथुर्गवि प्रदीर्घेण वन्दनस्तार्यायुषा

६

युवं वन्दनं निरुतं जरण्यया रथं न दसा करणा समिन्वथः ।

क्षेत्रादा विप्रं जनथो विपन्यया प्र वामत्र विधते दुंसनां भुवत्

७

अगच्छतं कृपमाणं परावति पितुः स्वस्य त्यजसा निवाधितम् ।

स्वर्वतीरित ऊतीर्युवोरहं चित्रा अभीकै अभवन्नभिष्टयः

८

उत स्या वां मधुमन्मक्षिकारप—न्मदे सोमस्यौशिजो हुवन्यति ।

युवं दधीचो मन आ विवासथो ऽथा शिरः प्रति वामश्व्यं वदत्

९

युवं पेदवे पुरुवारमश्विना स्पृधां श्वेतं तरुतारं दुवस्यथः ।

शयैरभिद्युं पृतनासु दुष्टरं चर्कृत्यमिन्द्रमिव चर्षणीसहम्

१०

॥ १४ ॥ (क्र. १।१२०।१-१२)

(१२ दुःस्वप्नाशनम्) । १ गायत्री, २ ककुप्, ३ का-विराट्,

४ नष्टरूपी, ५ तनुशिरा, ६ उष्णिक्, ७ विष्टार-वृहती,

८ कृतिः, ९ विराट्, १०-१२ गायत्री ।

का राधद्वोत्राश्विना वां को वां जोष उभयोः । कथा विधात्यप्रचेताः १

विद्वांसविद् दुरः पृच्छे—दविद्वानिस्थापरो अचेताः । नू चिनु मते अक्रौ २ १४९

ता विद्वांसां हवामहे वां ता नो विद्वांसा मन्म वोचेतमद्य । प्रार्चद् दयमानो युवाकुः ३ १५०
 वि पृच्छामि पाक्याः न देवान् वर्षत्कृतस्याद्भुतस्य दत्ता । पातं च सद्यसो युवं च रभ्यसो नः ४
 प्र या घोषे भृगवाणे न शोभे यया वाचा यजति पञ्जियो वाम् । प्रैषयुर्न विद्वान् ५
 श्रुतं गायत्रं तक्वानस्याहं चिद्वि रिरिभाश्विना वाम् । आक्षी शुभस्पती दन् ६
 युवं ह्यास्तं महो रन् युवं वा यन्निरतंतसतम् । तानो वसु सुगोपा स्यातं पातं नो वृकादघायोः ७
 मा कस्मै धातमभ्यमित्रिणे नो माकुत्रा नो गृहेभ्यो धेनवो गुः । स्तनाभुजो अश्विश्च ८ १५१
 दुहीयन् मित्रधितये युवाकु राये च नो मिमीतं वाजवत्यै । इषे च नो मिमीतं धेनुमत्यै ९
 अश्विनोरसनं रथं मनश्च वाजिनीवतोः । तेनाहं भूरि चाकन १०
 अयं समह मा तनू ह्याते जना अनु । सोमपेयं सुखो रथः ११
 अध स्वप्नस्य निर्विदे ऽभुञ्जतश्च रेवतः । उभा ता वस्त्रि नश्यतः १२ १५२

॥ १५ ॥ (क्र. १।१३९।३-५)

(१६०-१६२) परुच्छेपो देवोदासिः । अत्यष्टिः, ५ वृहती ।

युवां स्तोमेभिर्देवयन्तो अश्विना ऽऽश्रावयन्त इव श्लोकमायवो युवां हव्याभ्याऽयवः ।
 युवोर्विश्वा अधि श्रियः पृक्षश्च विश्ववेदसा ।
 पुषायन्ते वां पवयो हिरण्यये रथे दत्ता हिरण्यये ३ १६०
 अचेति दत्ता व्युनाकमृण्वथो युञ्जते वां रथयुजो दिर्विष्टिष्वध्वस्मानो दिर्विष्टिषु ।
 अधि वां स्थाम वन्धुरे रथे दत्ता हिरण्यये ।
 पथेव यन्तावनुशासता रजो ऽञ्जसा शासता रजः ४
 शचीभिर्नः शचीवसू दिवा नक्तं दशस्यतम् ।
 मा वां रातिरुप दसत् कदा चना स्मद् रातिः कदा चन ५ १६१

॥ १६ ॥ (क्र. १।१५७।१-६)

(१६३-१७३) दीर्घतमा औचथ्यः । जगती, ५-६ त्रिष्टुप् ।

अवोभ्यग्निर्ज्म उदेति सूर्यो व्युषाश्चन्द्रा मह्यो अर्चिषा ।
 आयुक्षातामश्विना यातवे रथं प्रासावीद् देवः सविता जगत् पृथक् १
 यद् युञ्जथे वृषणमश्विना रथं घृतेन नो मधुना क्षत्रमुक्षतम् ।
 अस्माकं ब्रह्म पृतेनासु जिन्वतं वयं धना शूरसाता भजेमहि २
 अर्वाङ् त्रिचक्रो मधुवाहनो रथो जीराश्वो अश्विनोर्यातु सुष्टुतः ।
 त्रिवन्धुरो मधवा विश्वसौभगः शं न आ वक्षद् द्विपदे चतुष्पदे ३ १६५

आ न ऊर्जं वहतमश्विना युवं मधुमत्या नः कशया मिमिक्षतम् ।
 प्रायुस्तारिष्टं नी रपांसि मृक्षतं सेधतं द्वेषो भवतं सचाभुवा ।
 युवं ह गर्भं जगतीषु धत्थो युवं विश्वेषु भुवनेष्वन्तः ।
 युवमग्निं च वृषणावपश्च वनस्पतीरश्विनवैरयेथाम् ।
 युवं ह स्थो भिषजा भेषजेभि रथो ह स्थो रथ्याश्च राथ्येभिः ।
 अथो ह क्षत्रमग्निं धत्थ उग्रा यो वां हविष्मान् मनसा ददाश

॥ १७ ॥ (क. १।१५८।१-६) त्रिष्टुप्, ६ अनुष्टुप् ।

वसू रुद्रा पुरुमन्तू वृधन्ता दशस्यतं नो वृषणावभिष्टौ ।
 दक्षा ह यद् रेक्ण औच्यथो वां प्र यत् सस्राथे अकवाभिरूती ।
 को वां दाशद् सुमतये चिदस्यै वसू यद् धेये नमसा पदे गोः ।
 जिगृतमस्मे रेवतीः पुरंधीः कामप्रेणेव मनसा चरन्ता ।
 युक्तो ह यद् वां तौग्याय पेरुर्वि मध्ये अर्णसो धायि पञ्चः ।
 उप वामवः शरणं गमेयं शरो नाज्म पतयद्भिरेवैः ।
 उपस्तुतिरौच्यमुर्गुये न्मा मामिमे पतत्रिणी वि दुग्धाम् ।
 मा मामेधो दशतयश्चितो धाक् प्र यद् वां बद्धस्मनि खादति क्षाम् ।
 न मा गरन् नद्यो मातृतमा दासा यद्वीं सुसमुब्धमवाधुः ।
 शिरो यदस्य त्रैतनो वितक्षत् स्वयं दास उरो अंसावपि ग्ध ।
 दीर्घतमा मामतेयो जुजुर्वान् दशमे युगे ।
 अपामर्थं यतीनां ब्रह्मा भवति सारथिः

॥ १८ ॥ (क. १।१८०।१-१०)

(१७५-२१३) अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । त्रिष्टुप् ।

युवो रजांसि सुयमांसो अश्वा रथो यद् वां पर्यर्णांसि दीयत् ।
 हिरण्यया वां पुवयः प्रुषायन् मध्वः पिबन्ता उषसः सचेथे ।
 युवमत्यस्याव नक्षथो यद् विपत्मनो नर्यस्य प्रयज्योः ।
 स्वसा यद् वां विश्वगूर्ती भराति वाजायेद्वै मधुपाविषे च ।
 युवं पयं उन्नियायामधत्तं पक्वमायामव पूव्य गोः ।
 अन्तर्यद् वनिनो वामृतम् ह्वारो न शुचिर्यजते हविष्मान्

युवं ह घर्मं मधुमन्तमत्रये ऽपो न क्षोदोऽवृणीतमेवे ।	
तद् वां नरावश्विना पश्वइष्टी रथ्येव चक्रा प्रति यन्ति मध्वः	४
आ वां दानाय ववृतीय दस्त्रा गोरोहेण तौग्न्यो न जिब्रिः ।	
अपः क्षोणी संचते माहिना वां जुणो वामक्षुरंहसो यजत्रा	५
नि यद् युवेथे नियुतः सुदान् उप स्वधार्मिः सुजयः पुरंधिम् ।	
प्रेषद् वेषद् वातो न सूरि—रा महे देदे सुव्रतो न वाजम्	३ १८०
वयं चिद्धि वां जरितारः सत्या विपन्यामहे वि पणिर्हितावान् ।	
अधा चिद्धि ष्माश्विनावनिन्धा पाथो हि ष्मा वृषणावन्तिदेवम्	७
युवां चिद्धि ष्माश्विनावनु द्यून् विरुद्रस्य प्रसवणस्य सातौ ।	
अगस्त्यो नरां नृषु प्रशस्तः काराधुनीव चितयत् सहस्रैः	८
प्र यद् वहेथे महिना रथस्य प्र स्पन्द्रा याथो मनुषो न होता ।	
धत्तं सूरिभ्य उत वा स्वश्व्यं नासत्या रथिषाचः स्याम	९
तं वां रथं वयमद्या हुवेम स्तोमैरश्विना सुविताय नव्यम् ।	
अरिष्टनेमिं परि धार्मियानं विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्	१०

॥ १९ ॥ (क्र. १।१८१।१-९)

कदु प्रेष्ठाविषां रथीणा—मध्वर्यन्ता यदुन्निनीथो अपाम् ।	
अयं वां यज्ञो अकृत प्रशस्ति वसुंधिती अवितारा जनानाम्	१ १८५
आ वामश्वासः शुचयः पयस्पा वातरंहसो दिव्यासो अत्याः ।	
मनोजुवो वृषणो वीतप्रेष्ठा एह स्वराजो अश्विना वहन्तु	२
आ वां रथोऽवनिर्न प्रवत्वा—न्तसुप्रवन्धुरः सुविताय गम्याः ।	
वृष्णः स्थातारा मनसो जवीया—नहंपूर्वो यजतो धिष्ण्या यः	३
इहेह जाता समवावशीता—मरेपसा तन्वाइ नामभिः स्वैः ।	
जिष्णुर्वामन्यः सुमखस्य सूरि—र्दिवो अन्यः सुभगः पुत्र ऊहे	४
प्र वां निचेरुः कंकुहो वशो अनु पिशङ्गरूपः सदनानि गम्याः ।	
हरीं अन्यस्य पीपयन्त वाजै—र्मथा रजांस्यश्विना वि घोषैः	५
प्र वां शरद्वान् वृषभो न निष्पाट् पूर्वीरिषश्चरति मध्व इष्णन् ।	
एवैरन्यस्य पीपयन्त वाजै—र्वेषन्तीरुध्वा नद्यो न आगुः	६ १९०

असर्जि वां स्थविरा वेधसा गी—र्वाळहे अश्विना त्रेधा क्षरन्ती ।
 उपस्तुतावतं नाधमानं यामन्नयामञ्छृणुतं हवै मे ७
 उत स्या वां रुशतो वप्ससो गी—स्त्रिबर्हिषि सदसि पिन्वते नृन् ।
 वृषां वां मेघो वृषणा पीपाय गोर्न सेके मनुषो दशस्यन् ८
 युवां पुषेवाश्विना पुरंधि—रग्निमुषां न जरते हविष्मान् ।
 हुवे यद् वां वरिवस्या गृणानो विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ९

॥ २० ॥ (क्र. १।१८२।१-८) जगती; ३, ८ त्रिष्टुप् ।

अभूदिदं वयुनमो पु भूषता रथो वृषण्वान् मदता मनीषिणः ।
 धियंजिन्वा धिष्ण्या विष्पलावस्र दिवो नपाता सुकृते शुचित्रता १
 इन्द्रतमा हि धिष्ण्या मरुत्तमा दत्ता दंसिष्ठा रथ्या रथीतमा ।
 पूर्णं रथं वहथे मध्व आचितं तेन दाश्वासमुप याथो अश्विना २ १९५
 किमत्र दत्ता कृणुथः किमासाथे जनो यः कश्चिदहविर्महीयते ।
 अति क्रमिष्टं जुरतं पणेरसुं ज्योतिर्विप्राय कृणुतं वचस्यवै ३
 जम्भयंतमभितो रायतः शुनो हतं मृधो विदथुस्तान्यश्विना ।
 वाचंवाचं जरित् रत्निनीं कृत—मुभा शंसं नासत्यावतं मम ४
 युवमेतं चक्रथुः सिन्धुषु प्लव—मात्मन्वन्तं पक्षिणं तौग्याय कम् ।
 येन देवत्रा मनसा निरूहथुः सुपत्नी पतथुः क्षोदसो महः ५
 अवविद्धं तौग्यमप्स्व—न्त—रनारम्भणे तमसि प्रविद्धम् ।
 चतस्रो नावो जठलस्य जुष्टा उदश्विभ्यामिषिताः पारयन्ति ६
 कः स्विद् वृक्षो निष्ठितो मध्ये अर्णसो यं तौग्यो नाधितः पर्यषस्वजत् ।
 पूर्णा मृगस्य पतरोरिवारभ उदश्विना ऊहथुः श्रोमताय कम् ७ २००
 तद् वां नरा नासत्यावन्तु ष्याद् यद् वां मानास उचथमवोचन् ।
 अस्मादुद्य सदसः सोम्यादा विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ८

॥ २१ ॥ (क्र. १।१८३।१-६)

तं युञ्जाथां मनसो यो जवीयान् त्रिवन्धुरो वृषणा यस्त्रिचक्रः ।
 येनोपयाथः सुकृतो दुरोणं त्रिधातुना पतथो विर्न पूर्णैः १
 सुवृद् रथो वर्तते यन्नभि क्षां यत् तिष्ठथः क्रतुमन्तानुं पृक्षे ।
 वपुर्वपुष्या संचतामियं गी—दिवो दुहित्रोवसां सचेथे २ २०३

आ तिष्ठतं सुवृत्तं यो रथो वा—मनु व्रतानि वर्तते हविष्मान् ।
 येन नरा नासत्येष्वयं वृत्तिर्याथस्तनयाय त्मने च ३
 मा वां वृको मा वृकीरा दधर्षी—न्मा परि वर्त्तमुत माति धक्तम् ।
 अयं वां भागो निहित इयं गी—र्दस्त्राविमे वां निधयो मधूनाम् ४ २०५
 युवां गोतमः पुरुमीळ्हो अत्रि—र्दस्त्रा हवतेऽवसे हविष्मान् ।
 दिशं न दिष्टामृजुयेव यन्ता मे हवं नासत्योप यातम् ५
 अतारिष्म तमसस्पा रमस्य प्रति वां स्तोमो अश्विनावधायि ।
 एह यातं पथिभिर्देवयानै—र्विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ६

॥ २२ ॥ (क्र. १।१८४।१-६)

ता वामद्य तावपरं हुवेमो—च्छन्त्यामुषसि वह्निरुक्थैः ।
 नासत्या कुहं चित् सन्तावर्यो दिवो नपाता सुदास्तराय १
 अस्मे ऊ पु वृषणा मादयेथा—मुत् पूर्णहितमूर्स्या मदन्ता ।
 श्रुतं मे अच्छोक्तिभिर्मतीना—मेष्टा नरा निचैतारा च कर्णेः २
 श्रिये पूषन्निषुकृतेव देवा नासत्या वहतुं सूर्यायाः ।
 वच्यन्ते वां ककुहा अप्सु जाता युगा जुणेव वरुणस्य भूरैः ३ २१०
 अस्मे सा वां माध्वी रातिरस्तु स्तोमं हिनोतं मान्यस्य कारोः ।
 अनु यद् वां श्रवस्या सुदानू सुवीर्याय चर्षणयो मदन्ति ४
 एष वां स्तोमो अश्विनावकारि मानेभिर्मघवाना सुवृक्ति ।
 यातं वृत्तिस्तनयाय त्मने चा—गस्त्ये नासत्या मदन्ता ५
 अतारिष्म तमसस्पा रमस्य प्रति वां स्तोमो अश्विनावधायि ।
 एह यातं पथिभिर्देवयानै—र्विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ६ २१३

॥ २३ ॥ (क्र. २।३७।५)

(२१४-२२५) गृत्समदः (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पाश्चाद्) भार्गवः शौनकः । (ऋतुसहितौ) । जगती ।
 अर्वाश्चमद्य ययं नृवाहणं रथं युञ्जाथामिह वां विमोचनम् ।
 पृङ्क्तं हवींषि मधुना हि कै गत—मथा सोमं पिबतं वाजिनीवसू ५

॥ २४ ॥ (क्र. २।३९।१-८) त्रिष्टुप् ।

ग्रावाणेव तदिदर्थं जरेथे गृध्रेव वृक्षं निधिमन्तमच्छ ।
 ब्रह्माणेव विदथे उक्थशासा दूतेव हव्या जन्या पुरुत्रा १ २१५

प्रातर्यावाणा रथ्येव वीरा ऽजेव यमा वरमा संचेथे ।
मेने इव तन्वाङ्गे शुम्भमाने दम्पतीव क्रतुविदा जनेषु
शृङ्गेव नः प्रथमा गन्तमर्वाक् छुफाविव जम्भेराणा तरोभिः ।
चक्रवाकेव प्रति वस्तोरुह्ना ऽर्वाञ्चा यातं रथ्येव शक्रा
नावेव नः पारयतं युगेव नभ्येव न उपधीव प्रधीव ।
श्वानेव नो अरिषण्या तनूनां खगलेव विस्रसः पातमस्मान्
वातेवाजुर्या नद्येव रीति रक्षी इव चक्षुषा यातमर्वाक् ।
हस्ताविव तन्येङ्गे शंभविष्ठा पादेव नो नयतं वस्यो अच्छ
ओष्ठाविव मध्वास्ने वदन्ता स्तनाविव पिप्यतं जीवसे नः ।
नासेव नस्तन्वो रक्षितारा कर्णाविव सुश्रुता भूतमस्मे
हस्तेव शक्तिमभि सैन्दवी नः क्षामेव नः समजतं रजांसि ।
इमा गिरो अश्विना युष्मयन्तीः क्षणोत्रेणैव स्वधितिं सं शिशीतम्
एतानि वामश्विना वर्धनानि ब्रह्म स्तोमं गृत्समदासो अक्रन् ।
तानि नरा जुजुषाणोप यातं बृहदू वदेम विदथे सुवीराः

॥ २५ ॥ (ऋ. २।४।१७-९) गायत्री ।

गोमदूषु नास्त्या ऽश्वावद् यातमश्विना । वर्ती रुद्रा नृपाय्यम्
न यत् परो नान्तर आदुधर्षद् वृषण्वस्र । दुःशंसो मर्त्यो रिपुः
ता न आ वोळ्हमश्विना रयि पिशङ्गसंदृशम् । धिण्या वरिवोविदम्

॥ २६ ॥ (ऋ. ३।५।८।१-९)

(२२६-२३४) गाथिनो विश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

धेनुः प्रत्नस्य काम्यं दुहाना ऽन्तः पुत्रश्चरति दक्षिणायाः ।
आ द्यौतानि वहति शुभ्रयासो षसः स्तोमो अश्विनावजीगः
सुयुग् वहन्ति प्रति वामुतेनो ऽर्वा भवन्ति पितरेव मेधाः ।
जरेथामस्मद् वि पणेर्मनीषां युवोरवश्चक्रमा यातमर्वाक्
सुयुग्भिरश्वैः सुवृता रथेन दस्त्राविमं शृणुतं श्लोकमद्रैः ।
किमङ्ग वां प्रत्यवर्ति गर्मिष्ठा ऽऽहुर्विप्रासो अश्विना पुराजाः
आ मन्येथामा गतं कच्चिदेवैर्विश्वे जनासो अश्विना हवन्ते ।
इमा हि वां गोक्रंजीका मयूनि प्र मित्रासो न ददुरुसो अग्रे

३ [दे० अश्विनौ]

त्रिरः पुरु चिदश्विना रजां—स्याङ्गुषो वां मघवाना जनेषु ।
 एह यातं पथिभिर्देवयानै—र्दसाविमे वां निधयो मधूनाम्
 पुराणमोकः सख्यं शिवं वां युवोर्नैरा द्रविणं जह्वाव्याम् ।
 पुनः कृष्णानाः सख्या शिवानि मध्वा मदेम सह नू समानाः
 अश्विना वायुना युवं सुदक्षा नियुजिष्व सजोषसा युवाना ।
 नासत्या तिरोअह्वयं जुषाणा सोमं पिबतमसिधा सुदानू
 अश्विना परि वामिषः पुरुची—रीयुर्गीर्भिर्यतमाना अमृधाः ।
 रथो ह वामृतजा अद्रिजूतः परि द्यावापृथिवी याति सद्यः
 अश्विना मधुपुत्तमो युवाकुः सोमस्तं पातमा गतं दुरोणे ।
 रथो ह वां भूरि वर्षः करिंक्रत् सुतावतो निष्कृतमार्गमिष्टः

५ १३०

६

७

८

९ २३४

॥ २७ ॥ (क्र. ४१५१९-१०)

(२३५-२४३) वामदेवो गौतमः । गायत्री ।

एष वां देवावश्विना कुमारः साहदेव्यः । दीर्घायुरस्तु सोमकः
 तं युवं देवावश्विना कुमारं साहदेव्यम् । दीर्घायुषं कृणोतन

९ २३५

१०

॥ २८ ॥ (क्र. ४१५११-७) जगती, त्रिष्टुप् ।

एष स्य भानुरुदियति युज्यते रथः परिज्मा दिवो अस्य सानवि ।
 पृक्षासो अस्मिन् मिथुना अधि त्रयो दृतिस्तुरीयो मधुनो वि रंशते
 उद् वां पृक्षासो मधुमन्त ईरते रथा अश्वास उषसो व्यष्टिषु ।
 अपोर्णवन्तस्तम आ परीवृतं स्वर्णं शुक्रं तन्वन्त आ रजः
 मध्वः पिबतं मधुपेभिरासभि—रुत प्रियं मधुने युञ्जाथां रथम् ।
 आ वर्तन्ति मधुना जिन्वथस्पथो दृतिं बहेथे मधुमन्तमश्विना
 हंसासो ये वां मधुमन्तो अस्तिधो हिरण्यपर्णा उहुवं उषर्बुधः ।
 उदुमुतो मन्दिनो मन्दिनिस्पृशो मध्वो न मक्षः सर्वनानि गच्छथः
 स्वध्वरासो मधुमन्तो अग्रयं उस्त्रा जरन्ते प्रति वस्तोरश्विना ।
 यन्निक्रहस्तस्तरणिर्विचक्षणः सोमं सुषाव मधुमन्तमद्रिभिः
 आकेनिपासो अहर्भिर्दविध्वतः स्वर्णं शुक्रं तन्वत आ रजः ।
 स्रश्चिदश्वान् युयुजान ईयते विश्वा अनु स्वधया चेतथस्पथः

१

२

३

४ २४०

५

६ २४१

प्र वामवोचमश्विना धियंधा रथः स्वश्वो अजरो यो अस्ति ।
येन सद्यः परि रजोसि याथो हविष्मन्तं तरणिं भोजमच्छ

७ २४३

॥ २९ ॥ (ऋ. ४।४३।१-७)

(२४४-२५७) पुरुमीळहाजमीळहौ सौहोत्रौ । त्रिष्टुप् ।

क उ श्रवत् कतमो यज्ञियांनां वन्दारु देवः कतमो जुषाते ।
कस्येमां देवीममृतेषु प्रेष्ठां हृदि श्रेषाम सुष्टुतिं सुहव्याम्
को मृळाति कतम आगमिष्ठो देवानामु कतमः शंभविष्ठः ।
रथं कर्माहुर्द्रवदश्वमाशुं यं सूर्यस्य दुहितावृणीत
मक्षू हि ष्मा गच्छथ ईर्वतो द्यू—निन्द्रो न शक्तिं परितक्म्यायाम् ।
दिव आजाता दिव्या सुपर्णा कया शचीनां भवथः शचिष्ठा
का वां भूदुर्पमातिः कया न आश्विना गमथो हूयमाना ।
को वां महश्चित् त्यजसो अभीक उरुष्यत माध्वी दस्त्रा न ऊती
उरु वां रथः परि नक्षति द्या—मा यत् समुद्रादुभि वर्तते वाम् ।
मध्वा माध्वी मधुं वां प्रुषायन् यत् सीं वां पृक्षो भुरजन्त पक्वाः
सिन्धुर्ह वां रसया सिञ्चदश्चान् घृणा वयोऽरुषासः परि गमन् ।
तदू षु वामजिरं चेति यानं येन पती भवथः सूर्यायाः
इहेह यदू वां समना पपृक्षे सेयमस्मे सुमतिर्वाजरत्ना ।
उरुष्यतै जरितारं युवं ह श्रितः कामो नासत्या युवद्रिक्

१

२ २४५

३

४

५

६

७ २५०

॥ ३० ॥ (ऋ. ४।४४।१-७)

तं वां रथं वयमद्या हुवेम पृथुजयमश्विना संगतिं गोः ।
यः सूर्या वहति वन्धुरायु—र्गिर्वाहसं पुरुतमं वसूयुम्
युवं श्रियमश्विना देवता तां दिवो नपाता वनथः शचीभिः ।
युवोर्वपुर्भि पृक्षः सचन्ते वहन्ति यत् ककुहासो रथे वाम्
को वामद्या करते रातहव्य ऊतये वा सुतपेयाय वाकैः ।
ऋतस्य वा वनुषे पृथ्याय नमो येमानो अश्विना वर्तत
हिरण्ययेन पुरुभू रथेने—मं यज्ञं नासत्योप यातम् ।
पिबाथ इन्मधुनः सोम्यस्य दधथो रत्नं विधते जनाय

१

२

३

४ २५४

आ नो यातं दिवो अच्छा पृथिव्या हिरण्ययेन सुवृता रथेन ।
 मा वामन्ये नि यमन् देवयन्तः सं यद् ददे नाभिः पूर्या वाम्
 नू नो रयिं पुरुवीरं बृहन्तं दत्त्वा मिमाथामुभयैष्वस्मे ।
 नरो यद् वामश्विना स्तोममावन्त्सधस्तुतिमाजसीळहासो अगमन्
 इहेह यद् वां समना पपृक्षे सेयमस्मे सुमतिर्वाजरता ।
 उरुष्यतं जरितारं युवं ह श्रितः कामो नासत्या युवद्विक्

५ २५५

६

७ २५७

॥ ३१ ॥ (क्र. ५१७३१-१०)

(२५८-२७७) पौर आत्रेयः । अनुष्टुप् ।

यदद्य स्थः परावति यदर्वावत्याश्विना । यद् वां पुरू पुरुभुजा यदन्तरिक्ष आ गतम् १
 इह त्या पुरुभूतमा पुरू दंसांसि विभ्रता । वरस्या याम्यग्निगू हुवे तुविष्टमा भुजे २
 ईर्मान्यद् वपुषे वपुश्चक्रं रथस्य येमथुः । पर्यन्या नाहुषा युगा मद्वा रजांसि दीयथः ३ २६०
 तदु पु वामेना कृतं विश्वा यद् वामनु एव । नानां जातावरेपसा समस्मे बन्धुमेयथुः ४
 आ यद् वां सूर्या रथं तिष्ठद् रघुष्यदं सदा । परिं वामरुषा वयो घृणा वरन्त आतपः ५
 युवोरत्रिश्चिकेतति नरा सुमेन चेतसा । घर्मं यद् वामरेपसं नासत्यास्ता भुरण्यति ६
 उग्रो वां ककुहो ययिः शृण्वे यामेषु संतनिः । यद् वां दंसांभिरश्विना ऽत्रिर्नराववर्तति ७
 मध्वं उषु मधूयुवा रुद्रा सिषक्ति पिप्युषी । यत् समुद्राति पथिथः पृक्षाः पृक्षो भरन्त वाम् ८ २६५
 सत्यमिद् वा उ अश्विना युवामाहुर्मयोभुवा । ता यामन् यामहूतमा यामन्ना मृळ्यत्तमा ९
 इमा ब्रह्माणि वर्धना ऽश्विभ्यां सन्तु संतमा । या तक्षाम रथौ इवा—ऽवोचाम बृहन्नमः १०

॥ ३१ ॥ (क्र. ५१७४१-१०) अनुष्टुप्, ८ निचृत् ।

कृष्टो देवावश्विना ऽद्या दिवो मनावस । तच्छ्रवथो वृषण्वसू अत्रिर्वामा विवासति १
 कुह त्या कुह नु श्रुता दिवि देवा नासत्या । कस्मिन्ना यतथो जने को वां नदीनां सचा २
 कं याथः कं ह गच्छथः कमच्छा युजाथे रथम् । कस्य ब्रह्माणि रण्यथो वयं वामुश्मसीष्ट्ये ३ २७०
 पौरं चिद्वयदुद्रुतं पौरं पौराय जिन्वथः । यदीं गृभीततातये सिंहमिव द्रुहस्पदे ४
 प्र च्यवानाञ्जुजुषो वत्रिमत्कं न मुञ्चथः । युवा यदीं कृथः पुनरा काममृण्वे वध्वः ५
 अस्ति हि वामिह स्तोता सासि वां संदशि श्रिये । नू श्रुतं म आ गतमवोभिर्वाजिनीवसू ६
 को वामद्य पुरूणा—मा वहे मर्त्यानाम् । को विप्रो विप्रवाहसा को यज्ञैर्वाजिनीवसू ७
 आ वां रथो रथानां येषो यात्वश्विना । पुरू चिदस्मयुस्तिर आङ्गुषो मर्त्येष्व ८ २७५

२५५

शम पु वां मधूयुवा ऽस्माकमस्तु चकृतिः । अर्वाचीना विचेतसा विमिः श्येनेव दीयतम् ९
अश्विना यद्ध कर्हि चिच्छ्रुयातमिमं हवम् । वस्वीरू पु वां भुजः पृञ्चन्ति सु वां पृचः १० २५७

॥ ३३ ॥ (ऋ. ५।७।१-९)

(२७८-२८६) अवस्युरात्रेयः । पङ्क्तिः ।

२५७

प्रति प्रियतमं रथं वृषणं वसुवाहनम् ।
स्तोता वामश्विनावृषिः स्तोमेन प्रति भूषति माध्वी मम श्रुतं हवम् १

अत्यायातमश्विना तिरो विश्वा अहं सना ।

दस्त्रा हिरण्यवर्तनी सुष्ठुज्ञा सिन्धुवाहसा माध्वी मम श्रुतं हवम् २

आ नो रत्नानि बिभ्रता वश्विना गच्छतं युवम् ।

रुद्रा हिरण्यवर्तनी जुषाणा वाजिनीवसू माध्वी मम श्रुतं हवम् ३ २८०

सुष्ठुभौ वां वृषण्वसू रथे वाणीच्याहिता ।

उत वां ककुहो मृगः पृक्षः कृणोति वापुषो माध्वी मम श्रुतं हवम् ४

बोधिन्मनसा रथे पिरा हवनश्रुता ।

विभिश्चयवानमश्विना नि याथो अद्रयाविनं माध्वी मम श्रुतं हवम् ५

आ वां नरा मनोयुजो ऽश्वासः प्रुषितप्सवः ।

वयो वहन्तु पीतये सह सुम्नेभिरश्विना माध्वी मम श्रुतं हवम् ६

अश्विनावेह गच्छतं नासत्या मा वि वैनतम् ।

तिरश्चिदर्यया परि वर्तियातमदाभ्या माध्वी मम श्रुतं हवम् ७

अस्मिन् युज्ञे अदाभ्या जरितारं शुभस्पती ।

अवस्युमश्विना युवं गुणन्तमुप मूषथो माध्वी मम श्रुतं हवम् ८

अभृदुषा रुशत् पशु रागिरंधाययृत्विषः ।

अयोजि वां वृषण्वसू रथो दस्त्रावर्मत्यो माध्वी मम श्रुतं हवम् ९ २८६

॥ ३४ ॥ (ऋ. ५।७।१-५)

(२८७-२९६) भौमोऽत्रिः । त्रिष्टुप् ।

आ मात्यगिरुषसामनीक मुद् विप्राणां देवया वाचो अस्थुः ।

अर्वाश्वा नूनं रथ्येह यातं पीपिवासमश्विना घर्ममच्छ १

न संस्कृतं प्र मिमीतो गमिष्ठा ऽन्ति नूनमश्विनोपस्तुतेह ।

दिवाभिपित्वेऽवसागमिष्ठा प्रत्यवर्ति दाशुषे शंभविष्ठा २ २८८

उता यातं संगवे प्रातरहो मध्यंदिन उदिता सूर्यस्य ।
 दिवा नक्तमवसा शतमेन नेदानीं पीतिरश्विना ततान ३
 इदं हि वां प्रदिवि स्थानमोक इमे गृहा अश्विनेदं दुरोणम् ।
 आ नो दिवो बृहतः पर्वतादा ऽश्वो यातमिषमूर्जं वहन्ता ४ २९
 समश्विनोरवसा नूतनेन मयोभुवा सुप्रणीती गमेम ।
 आ नो रयि बृहतमोत वीराना विश्वान्यमृता सौभगानि ५

॥ ३५ ॥ (क्र. ५।७।१-५)

प्रातर्यावाणा प्रथमा यजध्वं पुरा गृध्रादररुषः पिबातः ।
 प्रातर्हि यज्ञमश्विना दुधाते प्र शंसन्ति कवयः पूर्वभाजः १
 प्रातर्यजध्वमश्विना हिनोत न सायमस्ति देव्या अजुष्टम् ।
 उतान्यो अस्मद् यजते वि चावः पूर्वःपूर्वो यजमानो वनीयान् २
 हिरण्यत्वङ्मधुवर्णो घृतस्नुः पृक्षो वहन्ना रथो वर्तते वाम् ।
 मनोजवा अश्विना वार्तरहा येनातिथ्यथो दुरितानि विश्वा ३
 यो भूर्यिष्ठं नासत्याभ्यां विवेष चनिष्ठं पित्वो ररते विभागे ।
 स लोकमस्य पीपरच्छमीभि रनूर्ध्वभासः सद्रामित् तुतुर्यात् ४
 समश्विनोरवसा नूतनेन मयोभुवा सुप्रणीती गमेम ।
 आ नो रयि बृहतमोत वीराना विश्वान्यमृता सौभगानि ५ २९

॥ ३६ ॥ (क्र. ५।७।१-९)

(२९७-३०५) सप्तवधिरात्रेयः । (५-९ गर्भस्थाविष्युपनिषद्) । अनुष्टुप्,
 १-३ उष्णिक्, ४ त्रिष्टुप् ।

अश्विनावेह गच्छतं नासत्या मा वि वेनतम् । हंसाविव पततमा सुतां उप १
 अश्विना हरिणाविव गौराविवानु यवसम् । हंसाविव पततमा सुतां उप २
 अश्विना वाजिनीवस्र जुषेथां यज्ञमिष्ट्यै । हंसाविव पततमा सुतां उप ३
 अत्रिर्यद् वामवरोहन्नुवीस मजोहवीन्नाधमानेव योषा ।
 श्येनस्य चिज्जवसा नूतनेना ऽऽगच्छतमश्विना शतमेन ४ ३०

वि जिहीष्व वनस्पते योनिः स्वयन्त्या इव । श्रुतं मे अश्विना हवं सप्तवधे च मुञ्चतम् ५
 भीताय नाधमानाय ऋपये सप्तवधये । मायाभिरश्विना युवं वृक्षं सं च वि चाचथः ६ ३०

यथा वातः पुष्करिणीं समिद्भयति सर्वतः । एवा ते गर्भे एजतु निरैतु दशमास्यः ७
 यथा वातो यथा वनं यथा समुद्र एजति । एवा त्वं दशमास्य सहावेहि जरायुणा ८
 दश मासाञ्छशयानः कुमारो अधि मातरि । निरैतु जीवो अक्षतो जीवो जीवन्त्या अधि ९३०५

॥ ३७ ॥ (ऋ. ६।६२।१-११)

(३०६-३२७) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

स्तुपे नरां दिवो अस्य प्रसन्ता ऽश्विना हुवे जरमाणो अर्केः ।
 या सद्य उक्षा व्युषि ज्मो अन्तान् युयूषतः पर्युरू वरांसि १
 ता यशमा शुचिभिश्चक्रमाणा रथस्य भानुं रुरुचू रजोभिः ।
 पुरू वरांस्यमिता मिमाना ऽपो धन्वान्यति याथो अजान् २
 ता ह त्यद् वतिर्यदरध्रमुग्रे—त्था धिय ऊहयुः शश्वदश्वैः ।
 मनोजवेभिरिषिरैः शयध्वै परि व्यथिर्दाशुषो मर्त्यस्य ३
 ता नव्यसो जरमाणस्य मन्मो—प भूषतो युयुजानसप्ती ।
 शुभं पृक्षमिपमूर्जं वहन्ता होता यक्षत् प्रतो अधुग् युवाना ४
 ता वल्गू दुस्त्रा पुरुशाकतमा प्रता नव्यसा वचसा विवासे ।
 या शंसते स्तुवते शम्भविष्ठा बभूवतुर्गृणते चित्रराती ५ ३१०
 ता भुज्यं विभिरद्भ्यः संमुद्रात् तुग्रस्य सनुमूहयू रजोभिः ।
 अरेणुभिर्योजनेभिर्भुजन्ता पतत्रिभिरर्णसो निरुपस्थात् ६
 वि ज्युषां रथ्या यातमद्रिं श्रुतं हवै वृषणा वधिमत्याः ।
 दशस्यन्ता शयवै पिप्यथुर्गामिति च्यवाना सुमतिं भुरण्यू ७
 यद् रोदसी प्रदिवो अस्ति भूमा हेळो देवानामुत मर्त्यत्रा ।
 तदादित्या वसवो रुद्रियासो रक्षोयुजे तपुरधं दधात ८
 य ई राजानावृतुथा विदधद् रजसो मित्रो वरुणश्चिकेतत् ।
 गम्भीराय रक्षसे हेतिमस्य द्रोघाय चिद् वचस आनवाय ९
 अन्तरैश्चक्रैस्तनयाय वति—र्धुमता यातं नवता रथेन ।
 सनुत्येन त्यजसा मर्त्यस्य वनुष्यतामपि शीर्षा ववृक्तम् १०
 आ परमाभिरुत मध्यमाभि—नियुद्धिर्यातमवमाभिरर्वाक् ।
 हृळहस्य चिद् गोमतो वि व्रजस्य दुरो वर्त गृणते चित्रराती ११ ३१६

॥ ३८ ॥ (क्र. ६६३।१-११) त्रिष्टुप्, १ विराट्, ११ एकपदा त्रिष्टुप् ।

क्र०	त्या वल्गू पुरुहुताद्य दूतो न स्तोमोऽविदुन्नमस्वान् ।	
	आ यो अर्वाङ् नासत्या वर्त प्रेष्ठा ह्यसथो अस्य मन्मन्	१
	अरं मे गन्तं हवनायासै गृणाना यथा पिबथो अन्धः ।	
	परि ह त्यद् वर्तिर्याथो रिषो न यत् परो नान्तरस्तुतुर्यात्	२
	अकारि वामन्धसो वरीमन्नस्तारि बर्हिः सुप्रायणतमम् ।	
	उत्तानहस्तो युवयुर्ववन्दा ऽऽ वां नक्षन्तो अद्रय आजन्	३
	उध्वो वामभिरध्वरेष्वस्थात् प्र रातिरेति जुर्णिनी घृताची ।	
	प्र होता गूर्तमना उरणो ऽयुक्त यो नासत्या हवीमन्	४ ३२०
	अधि श्रिये दुहिता सूर्यस्य रथं तस्थौ पुरुभुजा शतोतिम् ।	
	प्र मायाभिर्मयिना भूतमत्र नरा नृतू जनिमन् यज्ञियानाम्	५
	युवं श्रीभिर्दशताभिराभिः शुभे पुष्टिमूहयुः सूर्यायाः ।	
	प्र वां वयो वपुषेऽनुं पप्तुन् नक्षद् वाणी सुष्टुता धिषण्या वाम्	६
	आ वां वयोऽश्वासो वहिष्ठा अभि प्रयो नासत्या वहन्तु ।	
	प्र वां रथो मनोजवा असर्जीपः पृक्ष इषिधो अनुं पूर्वीः	७
	पुरु हि वां पुरभुजा देष्णं धेनुं न इषं पिन्वतमसक्राम् ।	
	स्तुतश्च वां माध्वी सुष्टुतिश्च रसाश्च ये वामनुं रातिमग्मन्	८
	उत म ऋजे पुरयस्य रध्वी सुमीळहे शतं पैरुके च पक्वा ।	
	शाण्डो दाद्विरणिनः स्मर्हिष्टीन् दश वशासो अभिषाच ऋष्वान्	९ ३२५
	सं वां शता नासत्या सहस्रा ऽश्वानां पुरुषन्था गिरे दात् ।	
	भरद्वाजाय वीर नू गिरे दाद्विता रक्षीसि पुरुदंससा स्युः	१०
	आ वां सुम्ने वरिभन्तसूरिभिः व्याम्	११ ३२७

॥ ३९ ॥ (क्र. ७६७।१-१०) त्रिष्टुप् ।

(३२८-३८३) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

	प्रति वां रथं नृपती जरध्वै हविष्मता मनसा यज्ञियेन ।	
	यो वां दूतो न धिषण्यावजीगृच्छां सूनूर्न पितरां विवक्त्रिम	१
	अशोच्यग्निः समिधानो अस्मे उपो अदृश्नन् तमसश्चिदन्ताः ।	
	अचेति केतुरुपसः पुरस्ताच्छ्रिये दिवो दुहितुर्जायमानः	२ ३२९

अभि वाँ नूनमश्विना सुहोता स्तोमैः सिपक्ति नासत्या विवृक्कान् ।

पूर्वाभिर्यातं पथ्याभिरर्वाक् स्वर्विदा वसुमता रथेन

अवोर्वाँ नूनमश्विना युवाकुर्ह्वे यद् वाँ सुते माध्वी वसुयुः ।

आ वाँ वहन्तु स्थविरासो अश्वाः पिवाथो अस्मे सुषुता मधूनि

प्राचींस्तु देवाश्विना धियं मे ऽमृधां सातये कृतं वसुयुम् ।

विश्वा अविष्टं वाज आ पुरंधी—स्ता नः शक्तं शचीपती शचीभिः

अविष्टं धीष्वश्विना न आसु प्रजावद् रेतो अहयं नो अस्तु ।

आ वाँ तोके तनये तूतुजानाः सुरत्तासो देववीति गमेम

एष स्य वाँ पूर्वगत्वेव सख्ये निधिर्हितो माध्वी रातो अस्मे ।

अहेळता मनसा यातमर्वा—गश्नन्ता हव्यं मानुषीषु विश्व

एकस्मिन् योगे भुरणा समाने परि वाँ सप्त स्रवतो रथो गात् ।

न वायन्ति सुभ्वो देवयुक्ता ये वाँ धूर्षु तरणयो वहन्ति

असश्वाता मध्वद्भ्यो हि भूतं ये राया मध्वदेयं जुनन्ति ।

प्र ये बन्धुं सूनृताभिस्तिरन्ते गव्या पृश्नन्तो अश्व्या मघानि

नू मे हवमा शृणुतं युवाना यासिष्टं वृतिरश्विनाविरावत् ।

धत्तं रत्नानि जरतं च सूरिन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

॥ ४० ॥ (ऋ. ७।६८।१-९) विराट् ; ८-९ त्रिष्टुप् ।

आ शुभ्रा यातमश्विना स्वश्वा गिरो दत्ता जुजुषाणा युवाकौः ।

हव्यानि च प्रतिभृता वीतं नः

प्र वामन्धांसि मद्यान्यस्थु—रं गन्तं हविषो वीतये मे ।

तिरो अयो हवनानि श्रुतं नः

प्र वाँ रथो मनोजवा इयति तिरो रजांस्यश्विना शतोतिः ।

अस्मभ्यं सूर्यावसू इयानः

अयं ह यद् वाँ देवया उ अद्रि—रुध्वो विवक्ति सोमसुद् युवभ्याम् ।

आ वल्गू विप्रो ववृतीत हव्यैः

चित्रं ह यद् वाँ भोजनं न्वस्ति न्यत्रये महिष्वन्तं युयोतम् ।

यो वामोमानं दधते प्रियः सन्

४ [दे० अश्विनौ]

उत त्यद् वां जुरते अश्विना भू—च्छयवानाय प्रतीत्यं हविर्दे ।
 अधि यद् वर्षं इत ऊति धत्थः
 उत त्वं भुज्युमश्विना सखायो मध्ये जहुर्दुरेवासः समुद्रे ।
 निरीं पर्षदरावा यो युवाकुः
 वृकाय चिज्जसमानाय शक्त—मुत श्रुतं शयवे हूयमाना ।
 यावद्वन्यामपिन्वतमपो न स्तयं चिच्छक्त्यश्विना शचीभिः
 एष स्य कारुर्जरते सूक्तै—रग्रे बुधान उपसां सुमन्मा ।
 इषा तं वर्धद्वन्या पयोभि—र्युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

॥ ४१ ॥ (ऋ. ७।६९।१-८) त्रिष्टुप् ।

आ वां रथो रोदसी बद्धधानो हिरण्ययो वृषभिर्यात्वश्वैः ।
 घृतवर्तनिः पविर्भी रुचान इषां वोळ्हा नृपतिर्वाजिनीवान्
 स पप्रथानो अभि पञ्च भूमा त्रिवन्धुरो मनसा यातु युक्तः ।
 विशो येन गच्छथो देवयन्तीः कुत्रा चिद् याममश्विना दधाना
 स्वश्वा यशसा यातुमवाग् दत्ता निधि मधुमन्तं पिबाथः ।
 वि वां रथो वध्वाइयादमानो ऽन्तान् दिवो बाधते वर्तनिभ्याम्
 युवोः श्रियं परि योषावृणीत सूरौ दुहिता परितक्म्यायाम् ।
 यद् देवयन्तमवथः शचीभिः परि प्रंसमोमना वां वयो गात्
 यो ह स्य वां रथिरा वस्त उस्ता रथो युजानः परियाति वर्तिः ।
 तेन नः शं योरुषसो व्युष्टौ न्यश्विना वहतं यज्ञे अस्मिन्
 नरा गौरेव विद्युतै तृषाणा ऽस्माकमद्य सवनोप यातम् ।
 पुरुत्रा हि वां मतिभिर्हवन्ते मा वामन्ये नि यमन् देवयन्तः
 युवं भुज्युमवविद्धं समुद्र उदहथुरणसो अस्त्रिधानैः ।
 पतत्रिभिरश्रमैरव्यथिभिर्दुसनाभिरश्विना पारयन्ता
 नू मे हवमा शृणुतं युवाना यासिष्टं वर्तिरश्विनाविरावत् ।
 धत्तं रत्नानि जरतं च सूरिन् युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

॥ ४२ ॥ (ऋ. ७।७०।१-७)

आ विश्ववाराश्विना गतं नः प्र तत् स्थानमवाचि वां पृथिव्याम् ।
 अश्वो न वाजी शुनपृष्ठो अस्था—दा यत् सेदधुर्ध्रुवसे न योनिम्

सिषंक्ति सा वां सुमतिश्चनिष्ठा ऽतापि घर्मो मनुषो दुरोणे ।

यो वां समुद्रान्तसरितः पिपत्ये—तग्वा चिन्न सुयुजा युजानः

यानि स्थानान्यश्विना दुधार्थे दिवो यद्वाष्वावधीषु विश्वु ।

नि पर्वतस्य मूर्धनि सदन्ते—षं जनाय दाशुषे वहन्ता

चनिष्टं देवा ओषधीष्वप्सु यद् योग्या अश्ववैथे ऋषीणाम् ।

पुरुणि रत्ना दधतौ न्यस्मे अनु पूर्वाणि चरुयथुर्युगानि

शुश्रुवांसां चिदश्विना पुरुष्य—भि ब्रह्माणि चक्षार्थे ऋषीणाम् ।

प्रति प्र यातं वरमा जनाया—ऽस्मे वामस्तु सुमतिश्चनिष्ठा

यो वां यज्ञो नासत्या हविष्मान् कृतब्रह्मा समर्योऽ भवाति ।

उप प्र यातं वरमा वसिष्ठ—मिमा ब्रह्माण्यच्यन्ते युवभ्याम्

इयं मनीषा इयमश्विना गी—रिमां सुवृक्ति वृषणा जुषेथाम् ।

इमा ब्रह्माणि युवयून्यग्मन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

॥ ४३ ॥ (क्र. ७।७।१-६)

अप स्वसुरुषसो नग्जिहीते रिणक्ति कृष्णीररुषाय पन्थाम् ।

अश्वामघा गोमघा वां हुवेम दिवा नक्तं शरुमस्मद् युयोतम्

उपायातं दाशुषे मर्त्याय रथेन वाममश्विना वहन्ता ।

युयुतमस्मदनिराममीवां दिवा नक्तं माध्वी त्रासीथां नः

आ वां रथमवमस्यां व्युष्टौ सुम्रायवो वृषणो वर्तयन्तु ।

स्यमगमस्तिमृतयुग्मिरश्चै—राश्विना वसुमन्तं वहेथाम्

यो वां रथो नृपती अस्ति वोळ्हा त्रिवन्धुरो वसुमां उस्त्रयामा ।

आ न एना नासत्योप यात—मभि यद् वां विश्वप्स्यो जिगाति

युवं व्यवानं जरसोऽमुमुक्तं नि पेदव ऊहथुराशुमश्वम् ।

निरंहसस्तमसः स्पर्तमत्रि नि जाहुषं शिथिरे धातमन्तः

इयं मनीषा इयमश्विना गी—रिमां सुवृक्ति वृषणा जुषेथाम् ।

इमा ब्रह्माणि युवयून्यग्मन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

॥ ४४ ॥ (क्र. ७।७।१-५)

आ गोमता नासत्या रथेना—ऽश्ववता पुरुश्वन्द्रेण यातम् ।

अभि वां विश्वा नियुतः सचन्ते स्पर्हया श्रिया तन्वा शुभाना

आ नो देवेभिरुप यातमर्वाक् सजोषसा नासत्या रथेन ।
 युवोहि नः सख्या पित्र्याणि समानो बन्धुरुत तस्य वित्तम् २
 उदु स्तोमासो अश्विनोरबुध्रञ्जामि ब्रह्माण्युषसश्च देवीः ।
 आविवांसन् रोदसी धिष्ण्येमे अच्छा विप्रो नासत्या विवक्ति २ ३५
 वि चेदुच्छन्त्यश्विना उपासः प्र वां ब्रह्माणि कारवो भरन्ते ।
 ऊर्ध्वं भानुं सविता देवो अश्रेद् बृहदुग्रयः समिधा जरन्ते ४
 आ पश्चातान्नासत्या पुरस्तादाश्विना यातमधरादुदक्तात् ।
 आ विश्वतः पाञ्चजन्येन राया यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५

॥ ४५ ॥ (क्र. ७७३।१-५)

अतारिष्म तमसस्परमस्य प्रति स्तोमं देवयन्तो दधानाः ।
 पुरुदंसा पुरुतमा पुराजा ऽमर्त्या हवते अश्विना गीः १
 न्यु प्रियो मनुषः सादि होता नासत्या यो यजते वन्दते च ।
 अश्रीतं मध्वो अश्विना उपाक आ वां वोचे विदथेषु प्रयस्वान् २
 अहेम यज्ञं पथामुराणा इमां सुवृक्ति वृषणा जुषेथाम् ।
 श्रुष्टीवैव प्रेषितो वामवोधि प्रति स्तोमैर्जरमाणो वसिष्ठः ३ ३७
 उप त्या वही गमतो विशं नो रक्षोहणा संभृता वीळुपाणी ।
 समन्धास्यग्मत मत्सराणि मा नो मर्धिष्टमा गतं शिवेन ४
 आ पश्चातान्नासत्या पुरस्तादाश्विना यातमधरादुदक्तात् ।
 आ विश्वतः पाञ्चजन्येन राया यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५

॥ ४६ ॥ (क्र. ७७४।१-६) प्रगाथः = (विषमा बृहती, समा सतोबृहती)

इमा उ वां दिविष्टय उस्त्रा हवन्ते अश्विना ।
 अयं वामहेऽवसे शचीवसू विशंविशं हि गच्छथः १
 युवं चित्रं ददधुर्भोजनं नरा चोदैथां सूनृतावते ।
 अर्वाग् रथं समनसा नि यच्छतं पिवतं सोम्यं मधु २
 आ यातमुप भूषतं मध्वः पिवतमश्विना ।
 दुग्धं पयो वृषणा जेन्यावसू मा नो मर्धिष्टमा गतम् ३
 अश्वासो ये वामुप दाशुषो गृहं युवां दीयन्ति विभ्रतः ।
 मधुपुभिर्नरा हर्योभिरश्विना ऽऽदेवा यातमस्मू ४ ३८

अथा ह यन्तो अश्विना पृक्षः सचन्त सूरयः ।

ता यंसतो मघवद्भ्यो ध्रुवं यथा—इन्द्रिस्मभ्यं नासत्या

प्र ये युयुरवृकासो रथा इव नृपातारो जनानाम् ।

उत स्वेन शवसा शशुवुर्नर उत क्षियन्ति सुक्षितिम्

॥ ४७ ॥ (क्र. ८।५।१-३७)

(३८४-४२०) ब्रह्मातिथिः काण्वः । (३७ पूर्वार्धः) । गायत्री; ३७ बृहती ।

५	दूरादिहेव यत् स—त्यरुणसुरशिश्चित्	। वि भानुं विश्वधातनत्	१
२	नृवद् दस्रा मनोयुजा रथेन पृथुपाजसा	। सचैथे अश्विनोपसम्	२ ३८५
३	युवाभ्यां वाजिनीवसू प्रति स्तोमा अदक्षत	। वाचं दूतो यथोहिषे	३
१	पुरुप्रिया ण उतये पुरुमन्द्रा पुरुवसू	। स्तुपे कण्वासो अश्विना	४
२	महिष्ठा वाजसातमे—पयन्ता शुभस्पती	। गन्तारा दाशुषो गृहम्	५
३	ता सुदेवाय दाशुषे सुमेधामवितारिणीम्	। घृतैर्गव्यैर्मुक्षतम्	६
४	आ नः स्तोममुप द्रवत् तूयं श्येनेभिराशुभिः	। यातमश्वैर्भिरश्विना	७ ३९०
५	येभिस्तिष्ठः परावतो दिवो विश्वानि रोचना	। त्रैरक्तून् परिदीयथः	८
६	उत नो गोमतीरिष उत सातीरहर्विदा	। वि पथः सातये सितम्	९
७	आ नो गोमन्तमश्विना सुवीरं सुरथं रयिम्	। वोळ्हमश्वावतीरिषः	१०
८	वावृधाना शुभस्पती दस्रा हिरण्यवर्तनी	। पिबतं सोम्यं मधु	११
९	अस्मभ्यं वाजिनीवसू मघवद्भ्यश्च सप्रथः	। छर्दिर्यन्तमदाभ्यम्	१२ ३९५
१०	नि पु बह्व जनानां याविष्टं तूयमा गतम्	। मो ष्वान्यां उपांरतम्	१३
११	अस्य पिबतमश्विना युवं मदस्य चारुणः	। मध्वो रातस्य धिष्ण्या	१४
१२	अस्मे आ वहतं रयि शतवन्तं सहस्रिणम्	। पुरुक्षुं विश्वधायसम्	१५
१३	पुरुत्रा चिद्धि वा नरा विह्वयन्ते मनीषिणः	। वाघद्भिरश्विना गतम्	१६
१४	जनासो वृक्तबर्हिषो हविष्मन्तो अरंकृतः	। युवां हवन्ते अश्विना	१७ ४००
१५	अस्माकमुद्य वांमयं स्तोमो वाहिष्ठो अन्तमः	। युवाभ्यां भूत्वश्विना	१८
१६	यो ह वां मधुनो दति—राहितो रथर्षणे	। ततः पिबतमश्विना	१९
१७	तेन नो वाजिनीवसू पथे तोकाय शं गवे	। वहतं पीवरीरिषः	२०
१८	उत नो दिव्या इष उत सिन्धूरहर्विदा	। अप द्वारेव वर्षथः	२१ ४०४

कदा वां ताग्र्यो विधत् समुद्रे जहितो नरा । यद् वां रथो विभिष्यतात् २२	४०५
युवं कण्वाय नासत्या ऽपिरिप्ताय हर्म्ये । शश्वदूतीर्दिशस्यथः २३	
ताभिरा यातमूतिभिर्नव्यसीभिः सुशस्तिभिः । यद् वां वृषण्वस्र हुवे २४	
यथा चित् कण्वमावतं प्रियभैषमुपस्तुतम् । अत्रिं शिञ्जारमश्विना २५	
यथोत कृत्वये धने—ऽशुं गोष्वगस्त्यम् । यथा वाजेषु सोभरिम् २६	
एतावद् वां वृषण्वस्र अतो वा भूयो अश्विना । गृणन्तः सुम्रमीमहे २७	४१०
रथं हिरण्यवन्धुरं हिरण्याभीशुमश्विना । आ हि स्थाथो दिविस्पृशम् २८	
हिरण्ययीं वां रभि—रीषा अक्षो हिरण्ययः । उभा चक्रा हिरण्यया २९	
तेन नो वाजिनीवस्र परावर्तश्चिदा गतम् । उपेमां सुष्टुतिं मम ३०	
आ वहैथे पराकात् पूर्वीरश्वन्तावश्विना । इषो दासीरमर्त्या ३१	
आ नो धूमैरा श्रवोभि—रा राया यातमश्विना । पुरुश्वन्द्रा नासत्या ३२	४१५
एह वां प्रुषितप्सवो वयो वहन्तु पणिनः । अच्छा स्वध्वरं जनम् ३३	
रथं वामनुगायसं य इषा वर्तते सह । न चक्रमभि बाधते ३४	
हिरण्ययेन रथेन द्रवत्पाणिभिरश्वैः । धीज्वना नासत्या ३५	
युवं मृगं जागृवांसं स्वदथो वा वृषण्वस्र । ता नः पृङ्क्तमिषा रयिम् ३६	
ता मे अश्विना सनीनां विद्यातं नवानाम् । (पूर्वार्धः) ३७	४२०

॥ ४८ ॥ (क्र. ८।८।१-२३)

(४२१-४४३) सध्वंसः काण्वः । अनुष्टुप् ।

आ नो विश्वाभिरूतिभि—रश्विना गच्छतं युवम् ।	
दस्त्रा हिरण्यवर्तनी पिवतं सोम्यं मधुं १	
आ नूनं यातमश्विना रथेन सूर्यत्वचा ।	
भुजी हिरण्यपेशसा कवी गम्भीरचेतसा २	
आ यातं नहुषस्पर्या ऽऽन्तरिक्षात् सुवृक्तिभिः ।	
पिवाथो अश्विना मधु कण्वानां सर्वने सुतम् ३	
आ नो यातं दिवस्पर्या ऽन्तरिक्षादधप्रिया ।	
पुत्रः कण्वस्य वामिह सुषाव सोम्यं मधुं ४	
आ नो यातमुपश्रु—त्यश्विना सोमपीतये ।	
स्वाह स्तोमस्य वर्धना प्र कवी धीतिभिर्नरा ५	४२५

४०५

यच्चिद्वि वां पुर ऋषयो जुहुरेऽवसे नरा ।

आ यातमश्विना गत—सुपेमां सुष्टुतिं मम

६

दिवश्चिद् रोचनाद—ध्या नो गन्तं स्वर्विदा ।

धीभिर्वत्सप्रचेतसा स्तोमैर्भिर्हवनश्रुता

७

किमन्ये पर्यासते ऽस्मत् स्तोमैभिरश्विना ।

पुत्रः कण्वस्य वामृषि—र्गीभिर्वत्सो अवीवृधत्

८

आ वां विप्रं इहावसे ऽह्वत् स्तोमैभिरश्विना ।

अरिप्रा वृत्रहन्तमा ता नो भूतं मयोभुवा

९

आ यद् वां योषणा रथ—मतिष्ठद् वाजिनीवसू ।

विश्वान्यश्विना युवं प्र धीतान्यगच्छतम्

१० ४३०

अतः सहस्रनिर्णिजा रथेना यातमश्विना ।

वत्सो वां मधुमद् वचो ऽशंसीत् काव्यः कविः

११

पुरुमन्द्रा पुरुवसू मनोतरा रयीणाम् ।

स्तोमै मे अश्विनाविम—मभि वह्नीं अनूषाताम्

१२

आ नो विश्वान्यश्विना धत्तं राधांस्यहया ।

कृतं न ऋत्विषावतो मा नो रीरधतं निदे

१३

यन्नासत्या परावति यद् वा स्थो अध्यम्बरे ।

अतः सहस्रनिर्णिजा रथेना यातमश्विना

१४

यो वां नासत्यावृषि—र्गीभिर्वत्सो अवीवृधत् ।

तस्मै सहस्रनिर्णिज—मिषं धत्तं घृतश्रुतम्

१५ ४३५

प्रास्मा ऊर्जं घृतश्रुत—मश्विना यच्छतं युवम् ।

यो वां सुम्रायं तुष्टवद् वसूयाद् दानुनस्पती

१६

आ नो गन्तं रिशादसे—मं स्तोमै पुरुभुजा ।

कृतं नः सुश्रियो नरे—मा दातमभिष्टये

१७

आ वां विश्वाभिरूतिभिः प्रियमेधा अहूषत ।

राजन्तावध्वराणा—मश्विना यामहूतिषु

१८

आ नो गन्तं मयोभुवा ऽश्विना शंभुवा युवम् ।

यो वां विपन्यू धीतिभि—र्गीभिर्वत्सो अवीवृधत्

१९ ४३९

४१५

४२०

४२५

याभिः कण्वं मेधातिथिं याभिर्विशं दशत्रजम् ।	
याभिर्गोशर्यमावतं ताभिर्नोऽवतं नरा	२० ४४०
याभिर्नरा त्रसदस्यु—मावतं कृत्वये धने ।	
ताभिः ष्वस्माँ अश्विना प्रावतं वाजसातये	२१
प्र वां स्तोमाः सुवृक्तयो गिरौ वर्धन्त्वश्विना ।	
पुरुत्रा वृत्रहन्तमा ता नो भूतं पुरुस्पृहा	२२
त्रीणि प्रदान्यश्विनो—राविः सान्ति गुहा परः ।	
कवी ऋतस्य पत्माभि—र्वाग् जीवेभ्यस्परि	२३ ४४३

॥ ४९ ॥ (ऋ. ८।९।१-२१)

(४४४-४६४) शशकर्णः काण्वः । अनुष्टुप्; १,४,६ १४-१५, बृहती; २-३, २०-२१ गायत्री;
५ ककुप्; १० त्रिष्टुप्; ११ विराट्; १२ जगती ।

आ नूनमश्विना युवं वत्सस्य गन्तुमवसे ।	
प्रास्मै यच्छतमवृक् पृथु च्छर्दि—युयुतं या अरातयः	१
यदुन्तरिक्षे यद् दिवि यत् पञ्च मानुषाँ अनु । नृम्णं तद् धत्तमश्विना	२ ४४५
ये वां दंसाँस्यश्विना विप्रासः परिमामृशुः । एवेत् काण्वस्य बोधतम्	३
अयं वाँ घर्मो अश्विना स्तोमैन् परि पिच्यते ।	
अयं सोमो मधुमान् वाजिनीवसू येन वृत्रं चिकेतथः	४
यदुप्सु यद् वनस्पतौ यदोषधीषु पुरुदंससा कृतम् ।	
तेन माविष्टमश्विना	५
यन्नासत्या भुरण्यथो यद् वाँ देव भिषज्यथः ।	
अयं वाँ वत्सो मृतिभिर्न विन्धते हविष्मन्तं हि गच्छथः	६
आ नूनमश्विनोऽर्कपिः स्तोमै चिकेत वामया ।	
आ सोमं मधुमत्तमं घर्मं सिञ्चादथर्वणि	७ ४५०
आ नूनं रघुवर्तनि रथं तिष्ठाथो अश्विना ।	
आ वां स्तोमा इमे मम नभो न चुच्यवीरत	८
यदुद्य वाँ नासत्यो—कथैराचुच्युवीमहि ।	
यद् वा वाणीभिरश्विने—वेत् काण्वस्य बोधतम्	९ ४५२

यद् वां कक्षीवाँ उत यद् व्यश्च ऋषिर्यद् वां दीर्घतमा जुहावे ।

पृथी यद् वां वैन्यः सादनेष्वे—वेदतो अश्विना चेतयेथाम् १०

यातं छर्दिष्पा उत नः परस्पा भूतं जगत्पा उत नस्तनूपा ।

वर्तिस्तोकाय तनयाय यातम् ११

यदिन्द्रेण सरथं याथो अश्विना यद् वां वायुना भवथः समोकसा ।

यदादित्येभिर्ऋभुभिः सजोषसा यद् वा विष्णोर्विक्रमणेषु तिष्ठथः १२ ४५५

यदुद्याश्विनावहं हुवेय वाजसातये ।

यत् पृत्सु तुर्वणे सह—स्तच्छेषमश्विनोरवः १३

आ नूनं यातमश्विने—मा हव्यानि वां हिता ।

इमे सोमासो अधि तुर्वशे यदा—विमे कर्णेषु वामथ १४

यन्नासत्या पराके अर्वाके अस्ति भेषजम् ।

तेन नूनं विमदाय प्रचेतसा छर्दिर्वत्साय यच्छतम् १५

अभुत्स्यु प्र देव्या साकं वाचाहमश्विनोः ।

व्यावर्देव्या मतिं वि रातिं मर्त्येभ्यः १६

प्र बोधयोषो अश्विना प्र देवि स्रुते महि ।

प्र यज्ञहोतरानुषक् प्र मदाय श्रवो बृहत् १७ ४६०

यदुषो यासि भानुना सं सूर्येण रोचसे ।

आ हायमश्विनो रथो वर्तिर्याति नृपाय्यम् १८

यदापीतासो अंशवो गावो न दुह ऊर्धभिः ।

यद् वा वाणीरनूषत प्र देवयन्तो अश्विना १९

प्र द्युम्नाय प्र शर्वसे प्र नृषाह्याय शर्मणे । प्र दक्षाय प्रचेतसा २०

यन्नूनं धीभिराश्विना पितुर्गोना निषीदथः । यद् वा सुम्नेभिरुक्थ्या २१ ४६४

॥ ५० ॥ (क्र. ८।१०।१-६)

(४६५-४७०) प्रगाथो (घौरः) काण्वः । १ बृहती, २ मध्येज्योतिः, ३ अनुष्टुप्, (पिगलमतेन-शंकुमती)

४ आस्तारपङ्क्तिः, ५-६ प्रगाथः = (५ बृहती+ ६ सतोबृहती)

यत् स्थो दीर्घप्रसन्नानि यद् वादो रोचने दिवः ।

यद् वा समुद्रे अध्याकृते गृहे ऽतु आ यातमश्विना १ ४६५

५ [दे. अश्विनौ]

यद् वा यज्ञं मनवे संमिमिक्षथुं रेवेत् काण्वस्य बोधनम् ।	
बृहस्पतिं विश्वान् देवाँ अहं हुव इन्द्राविष्णू अश्विनावाशुहेषसा	२
त्या न्वश्विना हुवे सुदंससा गृभे कृता ।	
ययोरस्ति प्र णः सख्यं देवेष्वध्याप्यम्	३
ययोरधि प्र यज्ञा असूरे सन्ति सुरयः ।	
ता यज्ञस्याध्वरस्य प्रचेतसा स्वधाभिर्या पिवतः सोम्यं मधु	४
यदद्याश्विनावपाग् यत् प्राक् स्थो वाजिनीवसू ।	
यद् द्रुह्यव्यनवि तुर्वशे यदौ हुवे वामथ मा गतम्	५
यदन्तरिक्षे पतथः पुरुभुजा यद् वेमे रोदसी अनु ।	
यद् वा स्वधाभिरधितिष्ठथो रथमत आ यातमश्विना	६ ४७०

॥ ५१ ॥ (क्र. ८१८८)

(४७१) हरिम्बिडिः काण्वः । उष्णिक् ।

उत त्या दैव्यां भिषजा शं नः करतो अश्विना । युयुयातामितो रपो अप सिधः ८	४७१
---	-----

॥ ५२ ॥ (क्र. ८१२११-१८)

(४७२-४८९) सोभरिः काण्वः । १-६ प्रगाथः = (विषमा बृहती+समा सतोबृहती),

७ बृहती, ८ अनुष्टुप्, ११ ककुप्, १२ मध्येज्योतिः, प्रगाथः =

(९, १३, १५, १७, ककुप्; १०, १४, १६, १८ सतोबृहती)

ओ त्यमह आ रथमद्या दंसिष्ठमृतये ।	
यमश्विना सुहवा रुद्रवर्तनी आ सूर्यायै तस्थथुः	१
पूर्वापुषं सुहवं पुरुस्पृहं भुज्युं वाजेषु पूर्व्यम् ।	
सचनावन्तं सुमतिभिः सोभरे विद्वेषसमनेहसम्	२
इह त्या पुरुभूतमा देवा नमोभिरश्विना ।	
अर्वाचीना स्वर्वासे करामहे गन्तारा दाशुषो गृहम्	३
युवो रथस्य परि चक्रमीयत ईर्मान्यद् वामिषण्यति ।	
अस्माँ अच्छाँ सुमतिवी शुभस्पती आ धेनुर्विवावतु	४
रथो यो वाँ त्रिवन्धुरो हिरण्याभीशुरश्विना ।	
परि द्यावापृथिवी भूषति श्रुतस्तेन नासत्या गतम्	५ ४७६

मन्त्राः ४६६-४९३]

दुःस्यन्ता मनवे पुर्व्य दिवि यवं वृकैण कर्षथः ।	
ता वामद्य सुमतिभिः शुभस्पती अश्विना प्र स्तुवीमहि	६
उप नो वाजिनीवसू यातमृतस्य पृथिभिः ।	
येभिस्तृक्षि वृषणा त्रासदस्यवं महे क्षत्राय जिन्वथः	७
अयं वामद्रिभिः सुतः सोमो नरा वृषण्वसू ।	
आ यातं सोमपीतये पिवतं दाशुषो गृहे	८
आ हि रुहतमश्विना रथे कोशे हिरण्यये वृषण्वसू । युञ्जाथां पीवरीरिषः	९ ४८०
यामिः पक्थमवथो याभिरधिगुं याभिर्वधुं विजोषसम् ।	
ताभिर्नो मक्षू तूर्यमश्विना गतं भिषज्यतं यदातुरम्	१०
यदधिगावो अधिगू इदा चिदहो अश्विना हवामहे । वयं गीभिर्विपन्यवः	११
ताभिरा यातं वृषणोप मे हवै विश्वसुं विश्ववार्यम् ।	
इषा मंहिष्ठा पुरुभूतमा नरा यामिः क्रिवि वावृधुस्ताभिरा गतम्	१२
ताविदा चिदहानां तावश्विना वन्दमान् उप ब्रुवे । ता ऊ नमोभिरीमहे	१३
ताविद् दोषा ता उषसि शुभस्पती ता यामन् रुद्रवर्तनी ।	
मा नो मर्तीय रिषवे वाजिनीवसू परो रुद्रावति ख्यतम्	१४ ४८५
आ सुगम्याय सुगम्यं प्राता रथेनाश्विना वा सक्षणी । हुवे पितेव सोमरी	१५
मनोजवसा वृषणा मदच्युता मक्षुंगमभिस्तृतिभिः ।	
आरात्ताच्चिद् भूतमस्मे अवसे पूर्वीभिः पुरुभोजसा	१६
आ नो अश्वावदश्विना वर्तिर्यासिष्टं मधुपातमा नरा । गोमद् दस्त्रा हिरण्यवत्	१७
सुग्रावर्ग सुवीर्य सुष्ठु वार्य—मनाधृष्टं रक्षस्विना ।	
अस्मिन्ना वामायाने वाजिनीवसू विश्वा वामानि धीमहि	१८ ४८९

॥ ५३ ॥ (क्र. ८।२६।१-१९)

(४९०-५०८) विश्वमना वैयश्वः, व्यश्वो वाङ्गिरसः । उष्णिक्; १६-१९ गायत्री ।

युवोरु पू रथं हुवे सुधस्तुत्याय सूरिषु	। अतूर्तदक्षा वृषणा वृषण्वसू	१ ४९०
युवं वरो सुषाम्णे महे तने नासत्या	। अवोभिर्याथो वृषणा वृषण्वसू	२
ता वामद्य हवामहे हव्येभिर्वाजिनीवसू	। पूर्वीरिष इषयन्तावति क्षपः	३
आ वां वाहिष्ठो अश्विना रथो यातु श्रुतो नरा । उप स्तोमान् तुरस्य दर्शथः श्रिये	४	४९३

जुहुराणा चिदश्विना ऽऽमन्येथां वृषण्वसू । युवं हि रुद्रा पर्षथो अति द्विषः ५	
दुस्त्रा हि विश्वमानुषङ् मक्षूभिः परिदीयथः । धियंजिन्वा मधुवर्णा शुभस्पती ६	४९५
उप नो यातमश्विना राया विश्वपुषा सह । मघवाना सुवीरावनपच्युता ७	
आ मे अस्य प्रतीव्यः—मिन्द्रनासत्या गतम् । देवा देवेभिरद्य सचनस्तमा ८	
वयं हि वां हवामह उक्षण्यन्तो व्यश्ववत् । सुमतिभिरुप विप्राविहा गतम् ९	
अश्विना स्वृषे स्तुहि कुवित ते श्रवतो हवम् । नेदीयसः कूळयातः पर्णीरुत १०	
वैयश्वस्य श्रुतं नरो—तो मे अस्य वेदथः । सजोषसा वरुणो मित्रो अर्यमा ११	५००
युवादत्तस्य धिण्या युवानीतस्य सूरिभिः । अहरहर्वृषा मह्यं शिक्षतम् १२	
यो वां यज्ञेभिरावृतो ऽधिवस्त्रा वधूरिव । सपर्यन्ता शुभे चक्राते अश्विना १३	
यो वामुरुव्यचस्तमं चिकेतति नृपाय्यम् । वर्तिरश्विना परि यातमस्मयु १४	
अस्मभ्यं सु वृषण्वसू यातं वर्तिर्नृपाय्यम् । विषुद्रुहेव यज्ञमूहधुगिरा १५	
वाहिष्ठो वां हवानां स्तोमो दूतो हुवन्नरा । युवाभ्यां भूत्वश्विना १६	५०५
यदुदो दिवो अर्णव इषो वा मदथो गृहे । श्रुतमिन्मे अमर्त्या १७	
उत स्या श्वेतयावरी वाहिष्ठा वां नदीनाम् । सिन्धुर्हिरण्यवर्तनिः १८	
स्मदेतया सुकीर्त्या ऽश्विना श्वेतया धिया । वहथे शुभ्रयावाना १९	५०८

॥ ५४ ॥ (ऋ. ८।३।१-२४)

(५०९-५३२) इयावाश्व आत्रेयः । उपरिष्टाज्ज्योतिः (त्रिष्टुप्), २२, २४ पङ्क्तिः, २३ महावृहती ।

अग्निनेन्द्रेण वरुणेन विष्णुना ऽऽदित्यै रुद्रैर्वसुभिः सचाभुवा ।	
सजोषसा उपसा सूर्येण च सोमं पिबतमश्विना	१
विश्वाभिर्धीभिर्भुवनेन वाजिना दिवा पृथिव्याद्रिभिः सचाभुवा ।	
सजोषसा उपसा सूर्येण च सोमं पिबतमश्विना	२ ५१०
विश्वेदेवेस्त्रिभिरेकादशैरिहा—ऽद्भिर्मरुद्भिर्भृगुभिः सचाभुवा ।	
सजोषसा उपसा सूर्येण च सोमं पिबतमश्विना	३
जुषेथां यज्ञं बोधतं हवस्य मे विश्वेह देवौ सवनाव गच्छतम् ।	
सजोषसा उपसा सूर्येण च—षं नो वोळ्हमश्विना	४
स्तोमं जुषेथां युवशेव कन्यनां विश्वेह देवौ सवनाव गच्छतम् ।	
सजोषसा उपसा सूर्येण च—षं नो वोळ्हमश्विना	५ ५११

मन्त्राः ४९४-५२७]

नो-देवता ।

	गिरो जुषेथामध्वरं जुषेथां विश्वेह देवौ सवनावं गच्छतम् ।	
४९५	सजोषसा उपसा सूर्येण च—पं नो वोळ्हमश्विना	६
	हारिद्रवेवं पतथो वनेदुप सोमं सुतं महिषेवावं गच्छथः ।	
	सजोषसा उपसा सूर्येण च त्रिर्वर्तिर्यातमश्विना	७ ५१५
	हंसाविव पतथो अध्वगाविव सोमं सुतं महिषेवावं गच्छथः	
	सजोषसा उपसा सूर्येण च त्रिर्वर्तिर्यातमश्विना	८
५००	श्येनाविव पतथो हव्यदातये सोमं सुतं महिषेवावं गच्छथः ।	
	सजोषसा उपसा सूर्येण च त्रिर्वर्तिर्यातमश्विना	९
	पिवंतं च तृष्णुतं चा चं गच्छतं प्रजां च धत्तं द्रविणं च धत्तम् ।	
	सजोषसा उपसा सूर्येण चो—र्जं नो धत्तमश्विना	१०
	जयतं च प्र स्तुतं च प्र चावतं प्रजां च धत्तं द्रविणं च धत्तम् ।	
५०५	सजोषसा उपसा सूर्येण चो—र्जं नो धत्तमश्विना	११
	हतं च शत्रून् यतंतं च मित्रिणः प्रजां च धत्तं द्रविणं च धत्तम् ।	
	सजोषसा उपसा सूर्येण चो—र्जं नो धत्तमश्विना	१२ ५२०
५०८	मित्रावरुणवन्ता उत धर्मवन्ता मरुत्वन्ता जरितुर्गच्छथो हवम् ।	
	सजोषसा उपसा सूर्येण चा—ऽऽदित्यैर्यातमश्विना	१३
	अङ्गिरस्वन्ता उत विष्णुवन्ता मरुत्वन्ता जरितुर्गच्छथो हवम् ।	
इती ।	सजोषसा उपसा सूर्येण चा—ऽऽदित्यैर्यातमश्विना	१४
	ऋभुमन्ता वृषणा वाजवन्ता मरुत्वन्ता जरितुर्गच्छथो हवम् ।	
	सजोषसा उपसा सूर्येण चा—ऽऽदित्यैर्यातमश्विना	१५
	ब्रह्म जिन्वतमुत जिन्वतं धियो हतं रक्षांसि सेधतममीवाः ।	
५१०	सजोषसा उपसा सूर्येण च सोमं सुन्वतो अश्विना	१६
	क्षत्रं जिन्वतमुत जिन्वतं नृन् हतं रक्षांसि सेधतममीवाः ।	
	सजोषसा उपसा सूर्येण च सोमं सुन्वतो अश्विना	१७ ५२५
	धेनूर्जिन्वतमुत जिन्वतं विशो हतं रक्षांसि सेधतममीवाः ।	
	सजोषसा उपसा सूर्येण च सोमं सुन्वतो अश्विना	१८
	अत्रैरिव शृणुतं पूर्व्यस्तुतिं श्यावाश्वस्य सुन्वतो मदच्युता ।	
५११	सजोषसा उपसा सूर्येण चा—ऽश्विना तिरोअह्वयम्	१९ ५२७

सर्गा इव सृजतं सुष्ठुतीरुपं श्यावाश्वस्य सुन्वतो मदच्युता ।
 सजोषसा उपसा सूर्येण चा—ऽश्विना तिरोअहचम् २०
 रश्मीरिव यच्छतमध्वराँ उपं श्यावाश्वस्य सुन्वतो मदच्युता ।
 सजोषसा उपसा सूर्येण चा—ऽश्विना तिरोअहचम् २१
 अर्वाग् रथं नि यच्छतं पिबतं सोम्यं मधु ।
 आ यातमश्विना गत—मवस्युर्वीमहं हुवे धत्तं रत्नानि दाशुषे २२ ५३०
 नमोवाके प्रस्थिते अध्वरे नरा विवक्षणस्य पीतये ।
 आ यातमश्विना गत—मवस्युर्वीमहं हुवे धत्तं रत्नानि दाशुषे २३
 स्वाहाकृतस्य तृप्पतं सुतस्य देवावन्धसः ।
 आ यातमश्विना गत—मवस्युर्वीमहं हुवे धत्तं रत्नानि दाशुषे २४ ५३१

॥ ५५ ॥ (क्र. ८१४१४-६)

(५३३-५३५) नाभाकः काण्वः, अर्चनाना आत्रेयो वा । अनुष्टुप् ।

आ वां ग्रावाणो अश्विना धीभिर्विप्रा अचुच्युवुः ।
 नासत्या सोमपीतये नभन्तामन्यके संमे ४
 यथा वामत्रिरश्विना गीभिर्विप्रो अजोहवीत् ।
 नासत्या सोमपीतये नभन्तामन्यके संमे ५
 एवा वामह ऊतये यथाहुवन्त मोर्धिराः ।
 नासत्या सोमपीतये नभन्तामन्यके संमे ६ ५३५

॥ ५६ ॥ (क्र. ८१५७ [९ बाल०] १-४)

(५३६-५३९) मेध्यः काण्वः । त्रिष्टुप् ।

युवं देवा ऋतुना पूर्व्येण युक्ता रथेन तविषं यजत्रा ।
 आगच्छतं नासत्या शचीभि—रिदं तृतीयं सर्वनं पिवाथः १
 युवां देवास्त्रय एकादशासः सत्याः सत्यस्य ददशे पुरस्तात् ।
 असाकं यज्ञं सर्वनं जुषाणा पातं सोममश्विना दीर्घग्री २
 पनाय्यं तदश्विना कृतं वां वृषभो दिवो रजसः पृथिव्याः ।
 सहस्रं शंसा उत ये गर्विष्टौ सर्वा इत् ताँ उपं याता पिबध्वै ३
 अयं वां भागो निहितो यजत्रे—मा गिरौ नासत्योपं यातम् ।
 पिबतं सोमं मधुमन्तमस्मे प्र दाश्वांसमवतं शचीभिः ४ ५३९

॥ ५७ ॥ (ऋ. ८।७३।१-१८)

(५४०-५५७) गोपवन आत्रेयः सप्तवध्विर्वा । गायत्री ।

०	उदीराथामृतायते	युञ्जाथामश्विना रथम्	। अन्ति षड्रूतु वामवः	१	५४०
१	निमिषश्चिज्जवीयसा	रथेना यातमश्विना	। अन्ति षड्रूतु वामवः	२	
२	उप स्तृणीतमत्रये	हिमेन घर्ममश्विना	। अन्ति षड्रूतु वामवः	३	
३	कुह स्थः कुह जग्मथुः	कुह श्येनेव पेतथुः	। अन्ति षड्रूतु वामवः	४	
४	यदद्य कर्हि कर्हि चि	च्छ्रूयातमिमं हवम्	। अन्ति षड्रूतु वामवः	५	
५	अश्विना यामहूतमा	नेदिष्ठं याम्याप्यम्	। अन्ति षड्रूतु वामवः	६	५४५
६	अवन्तमत्रये गृहं	कृणुतं युवमश्विना	। अन्ति षड्रूतु वामवः	७	
७	वरंथे अग्निमातपो	वदते वल्गवत्रये	। अन्ति षड्रूतु वामवः	८	
८	प्र सप्तवध्विराशसा	धारांमधेरशायत	। अन्ति षड्रूतु वामवः	९	
९	इहा गतं वृषण्वसू	शृणुतं म इमं हवम्	। अन्ति षड्रूतु वामवः	१०	
१०	किमिदं वां पुराणव	जरंतोरिव शस्यते	। अन्ति षड्रूतु वामवः	११	५५०
११	समानं वां सजात्यै	समानो बन्धुरश्विना	। अन्ति षड्रूतु वामवः	१२	
१२	यो वां रजांस्यश्विना	रथो वियाति रोदसी	। अन्ति षड्रूतु वामवः	१३	
१३	आ नो गव्यैभिरश्व्यैः	सहस्रैरुप गच्छतम्	। अन्ति षड्रूतु वामवः	१४	
१४	मा नो गव्यैभिरश्व्यैः	सहस्रैभिरति ख्यतम्	। अन्ति षड्रूतु वामवः	१५	
१५	अरुणप्सुरुषा अभू	दकज्योतिर्ऋतावरी	। अन्ति षड्रूतु वामवः	१६	५५५
१६	अश्विना सु विचाकेशद्	वृक्षं परशुमां इव	। अन्ति षड्रूतु वामवः	१७	
१७	पुरं न धृष्णवा रुज	कृष्णया बाधितो विशा	। अन्ति षड्रूतु वामवः	१८	५५७

॥ ५८ ॥ (ऋ. ८।८५।१-९)

(५५८-५६६) कृष्ण आङ्गिरसः । गायत्री ।

१	आ मे हवं नासत्या	ऽश्विना गच्छतं युवम्	। मध्वः सोमस्य पीतये	१	
२	इमं मे स्तोममश्विने	मं मे शृणुतं हवम्	। मध्वः सोमस्य पीतये	२	
३	अयं वां कृष्णो अश्विना	हवते वाजिनीवसू	। मध्वः सोमस्य पीतये	३	५६०
४	शृणुतं जरितुहवं	कृष्णस्य स्तुवतो नरा	। मध्वः सोमस्य पीतये	४	
५	छर्दिन्तमदाभ्यं	विप्राय स्तुवते नरा	। मध्वः सोमस्य पीतये	५	
६	गच्छतं दाशुषो गृह	मित्था स्तुवतो अश्विना	। मध्वः सोमस्य पीतये	६	५६३

युञ्जाथां रासंभं रथे वीङ्गङ्गे वृषण्वसू । मध्वः सोमस्य पीतये ७
 त्रिवन्धुरेण त्रिवृता रथेना यातमश्विना । मध्वः सोमस्य पीतये ८
 नू मे गिरो नासत्या ऽश्विना प्रावतं युवम् । मध्वः सोमस्य पीतये ९ ५३

॥ ५३ ॥ (ऋ. ८।८६।१-५)

(५६७-५७१) कृष्ण आङ्गिरसः, विश्वको वा कार्ष्णिः । जगती ।

उभा हि दुस्त्रा भिषजां मयोभुवो—भा दक्षस्य वचसो बभूवथुः ।
 ता वां विश्वको हवते तनूकृथे मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम् १
 कृथा नूनं वां विमना उप स्तव—द्युवं धियं ददथुर्वस्यइष्टये ।
 ता वां विश्वको हवते तनूकृथे मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम् २
 युवं हि ष्मा पुरुभुजेममैधतुं विष्णाप्ये ददथुर्वस्यइष्टये ।
 ता वां विश्वको हवते तनूकृथे मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम् ३
 उत त्वं वीरं धनसामृजीषिणं दूरे चित् सन्तमवसे हवामहे ।
 यस्य स्वादिष्टा सुमतिः पितुर्यथा मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम् ४
 ऋतेन देवः संविता शमायत ऋतस्य शृङ्गमुर्विया वि पंप्रथे ।
 ऋतं सासाह महि चित् पृतन्यतो मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम् ५ ५७१

॥ ६० ॥ (ऋ. ८।८७।१-६)

(५७१-५७७) कृष्ण आङ्गिरसो वासिष्ठो वा द्युम्नीकः, प्रियमेध आङ्गिरसो वा ।

प्रगाथः = (विषमा बृहती+समा सतोबृहती)

द्युम्नी वां स्तोमो अश्विना क्रिविर्न सेक आ गतम् ।
 मध्वः सुतस्य स दिवि प्रियो नरा पातं गौराविवेरिणे १
 पिबतं घर्म मधुमन्तमश्विना ऽऽ बर्हिः सीदतं नरा ।
 ता मन्दसाना मनुषो दुरोण आ नि पातं वेदसा वयः २
 आ वां विश्वाभिरूतिभिः प्रियमेधा अहूषत ।
 ता वर्तियीतमुप वृक्तवर्हिषो जुष्टं यज्ञं दिविष्टिषु ३
 पिबतं सोमं मधुमन्तमश्विना ऽऽ बर्हिः सीदतं सुमत् ।
 ता बवृधाना उप सुष्टुतिं दिवो गन्तं गौराविवेरिणम् ४
 आ नूनं यातमश्विना ऽश्वेभिः प्रुषितसुभिः ।
 दस्त्रा हिरण्यवर्तनी शुभस्पती पातं सोममृतावृधा ५ ५७६

वयं हि वां हवामहे विपन्यवो विप्रांसो वाजसातये ।
ता वल्गू दुस्त्रा पुरुदंससा धिया ऽश्विना श्रुष्ट्या गतम्

६ ५७७

॥ ६१ ॥ (ऋ. ८।१०१।७-८)

(५७८-५७९) जमदग्निर्भागवः । प्रगाथः = (विषमा वृहती, समा सतोवृहती) ।

आ मे वचांस्युद्यता द्युमत्तमानि कर्त्वी ।
उभा यातं नासत्या सजोषसा प्रति हव्यानि वीतये
राति यद् वामरक्षसं हवामहे युवाभ्यां वाजिनीवसू ।
प्राचीं होत्रां प्रतिरन्तावितं नरा गृणाना जमदग्निना

७

८ ५७९

॥ ६२ ॥ (ऋ. १०।२४।४-६)

(५८०-५८२) पेन्द्रो विमदः, प्राजापत्यो वा, वासुक्रो वसुकृद्वा । अनुष्टुप् ।

युवं शक्रा मायाविना समीची निरमन्थतम् ।
विमदेन यदीलिता नासत्या निरमन्थतम्
विश्वे देवा अकृपन्त समीच्योर्निष्प्रतन्त्योः ।
नासत्यावब्रुवन् देवाः पुनरा वहतादिति
मधुमन्मे परायणं मधुमत् पुनरायनम् ।
ता नो देवा देवतया युवं मधुमतस्कृतम्

४

५

६ ५८२

॥ ६३ ॥ (ऋ. १०।३९।१-१४)

(५८३-६१०) काक्षीवती घोषा । जगती, १४ त्रिष्टुप् ।

यो वां परिज्मा सुवृदश्विना रथो दोषामुषासो हव्यो हविष्मता ।
शश्वत्तमासस्तमु वामिदं वयं पितुर्न नाम सुहवं हवामहे
चोदयतं सूनृताः पिन्वतं धिय उत् पुरंधीरीरयतं तदुश्मसि ।
यशसं भागं कृणुतं नो अश्विना सोमं न चारुं मघवत्सु नस्कृतम्
अमाजुरश्विद् भवथो युवं भगो ऽनाशोश्विदवितारापमस्य चित् ।
अन्धस्य चिन्नासत्या कृशस्य चिद् युवामिदाहुर्भिषजा रुतस्य चित्
युवं च्यवानं सनयं यथा रथं पुनर्युवानं चरथाय तक्षथुः ।
निष्ठौग्यमृहथुरद्भ्यस्परि विश्वेत् ता वां सर्वनेषु प्रवाच्या
पुराणा वां वीर्याऽऽ प्र ब्रवा जने ऽथो हासथुर्भिषजा मयोभुवा ।
ता वां नु नव्यावर्षसे करामहे ऽयं नासत्या श्रदुरिर्यथा दधत्

१

२

३ ५८५

४

५ ५८७

६ [दे० अश्विनौ]

इयं वामह्वे शृणुतं मे अश्विना पुत्रार्येव पितरा मय्यं शिक्षतम् ।	
अनापिरज्ञा असजात्यामतिः पुरा तस्या अभिशस्तेरव स्पृतम्	६
युवं रथेन विमदाय शुन्ध्युवं न्यूहथुः पुरुमित्रस्य योषणाम् ।	
युवं हवै वधिमत्या अगच्छतं युवं सुपुतिं चक्रथुः पुरंधये	७
युवं विप्रस्य जरणामुपेयुषः पुनः कलेरकृणुतं युवद् वयः ।	
युवं वन्देनमृश्यदादुदूपथु—युवं सद्यो विष्पलमेतवे कथः	८ ५१०
युवं ह रेभं वृषणा गुहा हित—मुदैरयतं ममवांसमश्विना ।	
युवमुवीसमुत तप्तमत्रय ओमन्वन्तं चक्रथुः सप्तवधये	९
युवं श्वेतं पेदवैऽश्विनाश्वं नवभिर्वाजैर्नवती च वाजिनम् ।	
चर्कृत्य ददथुर्द्रव्यत्सखं भगं न नृभ्यो हव्यं मयोभुवम्	१०
न तं राजानावदिते कुतश्चन नाहो अश्रोति दुरितं नर्किर्भयम् ।	
यमश्विना सुहवा रुद्रवर्तनी पुरोरथं कृणुथः पत्न्या सह	११
आ तेन यातं मनसो जवीयसा रथं यं वामभवंश्चक्रुरश्विना ।	
यस्य योगे दुहिता जायते दिव उभे अहनी सुदिने विवस्वतः	१२
ता वर्तिर्यातं जयुषा वि पर्वत—मर्पिन्वतं शयवै धेनुमश्विना ।	
वृकस्य चिद् वर्तिकामन्तरास्याद् युवं शचीभिर्गसिताममुश्वतम्	१३ ५१५
एतं वां स्तोममश्विनावकृमा—तक्षाम भृगवो न रथम् ।	
न्यमृक्षाम योषणां न मर्ये नित्यं न सूनुं तनयं दधानाः	१४

॥ ६४ ॥ (क्र. १०१४०१-१४)

रथं यान्तं कुह को ह वां नरा प्रति द्युमन्तं सुविताय भूषति ।	
प्रातर्यावाणं विश्वं विशेविशे वस्तोर्वस्तोर्वहमानं धिया शर्मि	१
कुहं स्विद् दोषा कुह वस्तोरश्विना कुहाभिपित्वं करतः कुहोषतुः ।	
को वां शयुत्रा विधवैव देवरं मर्यं न योषा कृणुते सधस्थ आ	२
प्रातर्जरेथे जरणेव कार्पया वस्तोर्वस्तोर्यजता गच्छथो गृहम् ।	
कस्य ध्वसा भवथः कस्य वा नरा राजपुत्रैव सवनाव गच्छथः	३
युवां मृगेव वारणा मृगण्यवो दोषा वस्तोर्हविषा नि ह्वयामहे ।	
युवं होत्रामृतुथा जुह्वते नरे—षं जनाय वहथः शुभस्पती	४ ६००

युवां ह घोषा पर्यश्विना यती	राज्ञ ऊचे दुहिता पृच्छे वां नरा ।	
भूतं मे अहं उत भूतमकतवे	ऽश्ववते रथिने शक्तमवते	५
युवं कवी छः पर्यश्विना रथं	विशो न कुत्सो जरितुर्नशायथः ।	
युवोर्ह मक्षा पर्यश्विना मध्वा	सा भरत निष्कृतं न योषणा	६
युवं ह भुज्यु युवमश्विना वशं	युवं शिञ्जारमुशनामुपारथुः ।	
युवो ररावा परि सख्यमासते	युवोरहमवसा सुम्नमा चके	७
युवं ह कृशं युवमश्विना शयुं	युवं विधन्तं विधवांमुरुष्यथः ।	
युवं सनिभ्यः स्तनयन्तमश्विना	ऽप व्रजमूर्णथः सप्तास्यम्	८
जनिष्ठ घोषा पतयत् कनीनको	वि चारुहन् वीरुधो दंसना अनु ।	
आस्मै रीयन्ते निवनेव सिन्धवो	ऽस्मा अहं भवति तत् पतित्वनम्	९ ६०५
जीवं रुदन्ति वि मयन्ते अध्वरे	दीर्घामनु प्रसिति दीधियुर्नरः ।	
वामं पितृभ्यो य इदं समेरिरे	मयः पतिभ्यो जनयः परिश्वजे	१०
न तस्य विञ्च तद्गु पु प्र वोचत	युवां ह यद् युवत्याः क्षेति योनिषु ।	
प्रियोस्त्रियस्य वृषभस्य रतिनो	गृहं गमेमाश्विना तदुश्मसि	११
आ वामगन्तुमुतिर्वाजिनविसू	न्यश्विना हत्सु कामा अयंसत ।	
अभूतं गोपा मिथुना शुभस्पती	प्रिया अर्यम्णो दुर्या अशीमहि	१२
ता मन्दसाना मनुषो दुरोण आ	धत्तं रथि सहवीरं वचस्यवे ।	
कृतं तीर्थं सुप्रपाणं शुभस्पती	स्थाणुं पथेष्टामप दुर्मतिं हतम्	१३
कं स्विदुध कतमास्वाश्विना	विश्व दुस्त्रा मादयेते शुभस्पती ।	
क ई नि येमे कतमस्य जगमु	विप्रस्य वा यजमानस्य वा गृहम्	१४ ६१०

॥ ६५ ॥ (क्र. १०१४११-३)

(क्र. ६११-६१३) सुहस्त्यो घौषेयः । जगती ।

समनमु त्वं पुरुहूतमुक्थ्यं	रथं त्रिचक्रं सर्वना गनिगमतम् ।	
परिज्मानं विदुथ्यं सुवृक्तिभि	र्वयं व्युष्टा उषसो हवावहे	१
प्रातर्युजं नासत्याधि तिष्ठथः	प्रातर्यावाणं मधुवाहनं रथम् ।	
विशो येन गच्छथो यज्वरीनरा	कीरेश्विद् यज्ञं होतमन्तमश्विना	२
अध्वर्यु वा मधुपाणिं सुहस्त्य	मग्निधं वा धृतदक्षं दमूनसम् ।	
विप्रस्य वा यत् सर्वनानि गच्छथो	ऽत आ यातं मधुपेयमश्विना	३ ६१३

॥ ६६ ॥ (क्र. १०१०६१-११)

(६१४-६२४) भूतांशः काश्यपः । त्रिष्टुप् ।

उभा उ नूनं तदिदर्थयेथे वि तन्वाथे धियो वस्त्रापसेव ।	
सध्रीचीना यातवे प्रेमजीगः सुदिनेव पृक्ष आ तसयेथे	१
उष्टारेव फर्वरेषु श्रयेथे प्रायोगेव श्वात्र्या शासुरेथः ।	
दूतेव हि द्यो यशसा जनेषु मापं स्थातं महिषेवावपानात्	२ ६१५
साकंयुजा शकुनस्येव पक्षा पश्वेव चित्रा यजुरा गमिष्टम् ।	
अग्निरिव देवयोर्दीद्विवांसा परिज्मानेव यजथः पुरुत्रा	३
आपी वो अस्मे पितरेव पुत्रो—ग्रेव रुचा नृपतीव तुर्यै ।	
इर्येव पुष्ट्यै किरणेव भुज्यै श्रुष्टीवानेव हवमा गमिष्टम्	४
वंसगेव पूष्या शिम्वाता मित्रेव क्रता शतरा शातपन्ता ।	
वाजेवोच्चा वयसा घर्म्येष्टा मेषेवेषा सपर्याङ् पुरीषा	५
सृण्येव जर्मरीं तुर्फरीतू नैतोशेव तुर्फरीं पर्फरीका ।	
उदन्यजेव जेर्मना मदेरू ता मै जराय्वजरं मरायु	६
पञ्जेव चर्चरं जारं मरायु क्षत्रेवार्थेषु तर्तरीथ उग्रा ।	
क्रभू नापत् खरमज्रा खरज्जु—र्वायुर्न पर्फरत् क्षयद् रयीणाम्	७ ६२०
घर्मेव मधु जठरं सनेरू भगैविता तुर्फरी फारिवारंप् ।	
पतरेव चचरा चन्द्रनिर्णिङ् मनक्रङ्गा मनन्याङ् न जग्मी	८
बृहन्तेव गुम्भरेषु प्रतिष्ठा पादेव गाधं तरते विदाथः ।	
कर्णेव शासुरनु हि स्मराथो—ऽश्वेव नो भजतं चित्रपद्मः	९
आरङ्गरेव मध्वरेयेथे सारधेव गवि नीचीनवारि ।	
कीनारेव स्वेदमासिष्विद्वाना क्षामेवोर्जा सूयवसात् संचेथे	१०
क्रध्याम स्तोमं सनुयाम वाज—मा नो मन्त्रं सुरथेहोपं यातम् ।	
यशो न पक्कं मधु गोष्वन्त—रा भूतांशो अश्विनोः काममप्राः	११ ६२४

॥ ६७ ॥ (क्र. १०१२१४-५)

(६२५-६२६) सुकीर्तिः काक्षीवतः । ४ अनुष्टुप्, ५ त्रिष्टुप् ।

युवं सुराममश्विना नमुचावासुरे सचा । विपिपाना शुभस्पती इन्द्रं कर्मस्वावतम् ४ ६२५

पुत्रमिव पितरावश्विनोभेन्द्रावथुः काव्यैर्दुसनाभिः ।
यत् सुरामं व्यपिबः शचीभिः सरस्वती त्वा मघवन्नभिष्णक्

५ ६२६

॥ ६८ ॥ (क्र. १०।१४३।१-६)

(६२७-६३२) अत्रिः सांख्यः । अनुष्टुप् ।

त्यं चिदत्रिमृतजुरमर्थमश्वं न यातवे ।
कक्षीवन्तं यदी पुना रथं न कृणुथो नवम्
त्यं चिदश्वं न वाजिनमरेणवो यमलत ।
हृहं ग्रन्थि न विष्यतमत्रिं यविष्ठमा रजः
नरा दंसिष्ठावत्रये शुभ्रा सिषासतं धियः ।
अथा हि वां दिवो नरा पुनः स्तोमो न विशसे
चिते तद् वां सुराधसा रातिः सुमतिराश्विना ।
आ यन्नः सदनै पृथौ समने पर्वथो नरा
युवं भुज्युं समुद्र आ रजसः पार ईह्णितम् ।
यातमच्छा पतत्रिभिर्नासत्या सातये कृतम्
आ वां सुमैः शंयू इव मंहिष्ठा विश्ववेदसा ।
समस्मे भूषतं नरोत्सं न पिप्युषीरिषः

१

२

३

४ ६३०

५

६ ६३२

॥ ६९ ॥ (क्र. १०।१८४।३)

(६३३) त्वष्टा गर्भकर्ता, विष्णुर्वा प्राजापत्यः । अनुष्टुप् ।

हिरण्ययी अरणी यं निर्मन्थतो अश्विना ।
तं ते गर्भं हवामहे दशमे मासि स्रतवे

३ ६३३

॥ ७० ॥ (६३४-६३८) (वा. य. १४।१-५)

ध्रुवक्षितिर्ध्रुवयोनिर्ध्रुवासि ध्रुवं योनिमासीद साधुया ।
उर्यस्य केतुं प्रथमं जुषागाश्विनाध्वर्यु सादयतामिह त्वा
कुलायिनी घृतवती पुरान्धिः स्योने सीदु सदनै पृथिव्याः ।
अभि त्वा रुद्रा वसवो गृणन्त्विमा ब्रह्म पीपिहि सौमगायाश्विनाध्वर्यु
सादयतामिह त्वा

१

२ ६३५

स्वैर्दक्षैर्दक्षपितेह सीद देवानां सुमे बृहते रणाय ।

पितेवैधि सूनवऽआ सुशेवा स्वावेशा तन्वा संविशस्वाश्विनाध्वर्यु सादयतामिह त्वा ३

पृथिव्याः पुरीषमस्यप्सो नाम तां त्वा विश्वेऽअभिगृणन्तु देवाः ।

स्तोमपृष्ठा घृतवतीह सीद प्रजावदस्मे द्रविणायजस्वाश्विनाध्वर्यु सादयतामिह त्वा ४

अदित्यास्त्वा पृष्ठे सादयाम्यन्तरिक्षस्य धृत्रीं विष्टम्भनीं दिशामधिपत्नीं भुवनानाम् ।

ऊर्मिर्द्रप्सोऽअपामसि विश्वकर्मा तऽऽक्रषिरश्विनाध्वर्यु सादयतामिह त्वा ५

॥ ७१ ॥ (६३९-६४०) (वा. य. ३८।१०, १३)

विश्वाऽआशा दक्षिणसद् विश्वान् देवानयादिह ।

स्वाहाकृतस्य घर्मस्य मधोः पिबतमश्विना १०

अपातामश्विना घर्ममनु द्यावापृथिवीऽअमसाताम् ।

इहैव रातयः सन्तु १३

॥ ७२ ॥ (साम० ३०५)

(६४१) अश्विनौ वैवस्वतौ । बृहती ।

कुष्ठः को वामश्विना तपानो देवा मर्त्यः ।

मता वामश्मया क्षयमाणोऽशुनेत्थमु आद्वन्यथा ३

॥ ७३ ॥ (अथर्व २।२९।६)

(६४२-६४५) अथर्वा । त्रिष्टुप् ।

शिवाभिष्टे हृदयं तर्पयाम्यनमीवो मौदिषीष्ठाः सुवर्चाः ।

सवासिनौ पिबतां मन्थमेतमश्विनौ रूपं परिधाय मायाम् ६

॥ ७४ ॥ (अथर्व० ६।५०।१-३)

अथर्वा (अभयकामः) । १ विराड् जगती, २-३ पथ्यापङ्क्तिः ।

हृतं तर्द समङ्कमाखुमश्विना छिन्तं शिरो अपि पृष्टीः शृणीतम् ।

यवाभेददानपि नह्यतं मुखमथार्भयं कृणुतं धान्याय १

तर्द है पतङ्ग है जभ्य हा उपक्वस ।

ब्रह्मेवासंस्थितं हविरनेदन्त इमान्यवानहिसन्तो अपोदित २

तदीपते वर्धापते तृष्टजम्भा आ शृणोत मे ।

य आरुण्या व्यद्विरा ये के च स्थ व्यद्विरास्तान्त्सर्वान् जम्भयामसि

॥ ७५ ॥ (अथर्व० २।३०।२)

(६४६) प्रजापतिः । अनुष्टुप् ।

सं चेन्नयाथो अश्विना कामिना सं च वक्षथः ।

सं वां भर्गासो अग्मत सं चित्तानि समु व्रता

॥ ७६ ॥ (अथर्व० ६।१०२।१-३)

(६४७-६४९ जदग्निः । अनुष्टुप्)

यथायं वाहो अश्विना समैति सं च वर्तते । एवा मामभि ते मनः समैतु सं च वर्तताम् १

आहं खिदामि ते मनो राजाश्वः पृष्ट्यामिवा रेष्मच्छिन्नं यथा तृणं मयि ते वेष्टतां मनः २

आञ्जनस्य मधुर्घस्य कुष्ठस्य नलदस्य च । तुरो भर्गस्य हस्ताभ्यामनुरोधं नमुद्धरे ३ ६४९

॥ ७७ ॥ (अथर्व० ६।१४१।१-३)

(६५०-६५२) विश्वामित्रः । अनुष्टुप् ।

वायुरेनाः समाकर्तु त्वष्टा पोषाय ध्रियताम् । इन्द्र आभ्यो अर्धं ब्रवद् रुद्रो भूम्ने चिकित्सतु १

लोहितेन स्वधितिना मिथुनं कर्णयोः कृधि । अकर्तामश्विना लक्ष्म तदस्तु प्रजया बहु २

यथा चक्रुर्देवासुरा यथा मनुष्या उत । एवा सहस्रपोषाय कृणुत लक्ष्माश्विना ३ ६५२

अश्विसहचारी-देवगणः ।

(१) अश्विसरस्वतीन्द्राः ।

+ ॥ ७८ ॥ (६५३-६६९) (वा य. १९।३३-३५)

यस्ते रसः सम्भृतऽओषधीषु सोमस्य शुष्मः सुरया सुतस्य ।

तेन जित्वा यजमानं मदेन सरस्वतीमश्विनाविन्द्रमग्निम् ३३

यमश्विना नमुचैरासुरादधि सरस्वत्यसुनोदिन्द्रियाय ।

इमं तं शुक्रं मधुमन्तमिन्दुं सोमं राजानमिह भक्षयामि ३४

यदत्र रिप्तं रसिनः सुतस्य यदिन्द्रोऽपिबच्छचीभिः ।

अहं तदस्य मनसा शिवेन सोमं राजानमिह भक्षयामि ३५ ६५५

+ वा० य० २०।५५-६६; २१।२२-४० । दै० [अग्निः] २०२५-२०३६; २०४८-२०५९

वा० य० १९।३२, ८०-५९; २०।७३-७७, ८०, ९० । दै० [इन्द्रः] २९३७-२९५३; २९५७-२९६३ ।

॥ ७९ ॥ (वा. य. २०।६७-६९)

अश्विना हविरिन्द्रियं नमुचेर्धिया सरस्वती ।

आ शुक्रमासुराद्वसु मघमिन्द्राय जभ्रिरे

६७

यमश्विना सरस्वती हविषेन्द्रमवर्धयन् ।

स विभेद वलं मघं नमुचावासुरे सचा

६८

तमिन्द्रं पशवः सचाश्विनोभा सरस्वती ।

दधानाऽअभ्यनूषत हविषा युञ्जऽइन्द्रियैः

६९

॥ ८० ॥ (वा. य. २१।४८-५८)

देवं बर्हिः सरस्वती सुदेवमिन्द्रेऽअश्विना ।

तेजो न चक्षुरक्षयोर्बर्हिषा दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज

४८

देवीर्द्वारोऽअश्विना भिषजेन्द्रे सरस्वती ।

प्राणे न वीर्यं नसि द्वारो दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज

४९

देवीऽउपासावश्विना सुत्रामेन्द्रे सरस्वती ।

बलं न वाचमास्यऽउपाभ्यां दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज

५०

देवी जोष्टी सरस्वत्याश्विनेन्द्रमवर्धयन् ।

श्रोत्रं न कर्णयोर्यशो जोष्टीभ्यां दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज

५१

देवीऽऊर्जाहुती दुधे सुदुधेन्द्रे सरस्वत्याश्विना भिषजावतः ।

शुक्रं न ज्योति स्तनयोराहुती धत्तऽइन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज

५२

देवा देवानां भिषजा होताराविन्द्रमश्विना ।

वषट्कारैः सरस्वती त्विषिं न हृदये मतिः होतृभ्यां दधुरिन्द्रियं

वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज

५३

देवीस्तिष्ठस्तिष्ठो देवीरश्विनेडा सरस्वती ।

शूषं न मध्ये नाभ्यामिन्द्राय दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज

५४

देवऽइन्द्रो नराशस्त्रिवरुथः सरस्वत्याश्विभ्यामीयते रथः ।

रेतो न रूपममृतं जनित्रमिन्द्राय त्वष्टा दधदिन्द्रियाणि वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज

देवो देवैर्वनस्पतिर्हिरण्यपर्णोऽअश्विभ्यां सरस्वत्या सुपिप्पलऽइन्द्राय पच्यते मधु ।

ओजो न जूतिर्ऋषभो न भामं वनस्पतिर्नो दधदिन्द्रियाणि

वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज

५६

देवं बृहिवारितीनामध्वरे स्तीर्णमश्विन्यामूर्णप्रदाः सरस्वत्या स्योनमिन्द्र ते सदैः ।
 ईशायै मन्थुः राजानं बृहिषा दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यजं ५७
 देवोऽग्निः स्विष्टकृद् देवान् यक्षद् यथायथः होतारविन्द्रमश्विना वाचा वाचः सरस्वती-
 मग्निः सोमः स्विष्टकृत् स्विष्टऽइन्द्रः सुत्रामा सविता वरुणो भिषगिष्ठो देवो वनस्पतिः स्विष्टा
 देवाऽआज्यपाः स्विष्टोऽग्निरग्निना होता होत्रे स्विष्टकृद् यज्ञो न दधदिन्द्रियमूर्जमर्पचितिः
 स्वधां वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यजं ५८ ६६३

(२) अश्विसूर्यादयः ।

॥ ८१ ॥ (वा० य० ३८।१२)

अश्विना घर्म पातः हाद्वीनमहर्दिवाभिरुतिभिः ।

तन्त्रायिणे नमो द्यावापृथिवीभ्याम्

१२ ६७०

(३) अश्विनौ, बृहस्पतिः ।

॥ ८२ ॥ (अथर्व० ५।२६।१२)

(६७१) ब्रह्मा । परातिशक्वरी चतुष्पदा गायत्री ।

अश्विना ब्रह्मणा यातमर्वाश्चौ वषट्कारेण यज्ञं वर्धयन्तौ ।

बृहस्पते ब्रह्मणा याह्यर्वाह् यज्ञो अयं स्वरिदं यजमानाय स्वाहा

१२ ६७१

(४) इयेनः, अश्विनौ ।

॥ ८३ ॥ (अथर्व० ३।३।४)

(६७२-६८८) अथर्वा । त्रिष्टुप् ।

इयेनो हव्यं नयत्वा परस्मादन्यक्षेत्रे अपरुद्धं चरन्तम् ।

अश्विना पन्थां कृणुतां सुगं त इमं सजाता अभिसंविशध्वम्

४

(५) अश्विनौ, द्यौष्पिता ।

॥ ८४ ॥ (अथर्व० ६।४।३) त्रिपदा विराड् गायत्री ।

धिये समश्विना प्रावतं न उरुष्या न उरुज्मन्नप्रयुच्छन् ।

द्यौष्पितर्यावय दुच्छुना या

५ ६७३

७ [दै. अश्विनौ]

(६) बृहस्पतिः, अश्विनौ ।

॥ ८५ ॥ (अथर्व० ६।६९।१-३) अनुष्टुप् ।

गिरावरगराटेषु हिरण्ये गोषु यद्यशः । सुरायां सिच्यमानायां क्रीलाले मधु तन्मयि १
 अश्विना सारघेण मा मधुनाङ्क्तं शुभस्पती । यथा भर्गस्वतीं वाचं—मावदानि जनां अनु २ ६७५
 मयि वर्चो अथो यशो—ऽथो यज्ञस्य यत् पर्यः । तन्मयि प्रजापति—दिवि घामिव दंहतु ३

(७) सांमनस्यं, अश्विनौ ।

॥ ८६ ॥ (अथर्व० ७।५१।१-२) १ ककुम्भत्यनुष्टुप्, २ जगती ।

संज्ञानं नः स्वेभिः संज्ञानमरणेभिः ।
 संज्ञानमश्विना युवमिहास्मासु नि यच्छतम् १
 सं जानामहै मनसा सं चिकित्वा मा युष्महि मनसा दैव्येन ।
 मा घोषा उत्स्युर्बहुले विनिर्हते मेषुः पद्मदिन्द्रस्याहन्यागते २

(८) घर्मः, अश्विनौ ।

॥ ८७ ॥ (अथर्व० ७।७३।१-५, ८) १, ४ जगती, २ पथ्यावृहती, ३, ५, ८ त्रिष्टुप् ।

समिद्धो अग्निर्वृषणा रथी दिवस्तप्तो घर्मो दुह्यते वामिषे मधु ।
 वयं हि वां पुरुदमांसो अश्विना हवामहे सधमादेषु कारवः १
 समिद्धो अग्निरश्विना तप्तो वां घर्म आ गतम् ।
 दुहन्ते नूनं वृषणेह धेनवो दत्ता मदन्ति वेधसः २ ६८०
 स्वाहाकृतः शुचिर्देवेषु यज्ञो यो अश्विनोश्चमसो दैवपानः ।
 तमु विश्वे अमृतांसो जुषाणा गन्धर्वस्य प्रत्यास्ना रिहन्ति ३
 यदुस्त्रियास्वाहुतं घृतं पयोऽयं स वामश्विना भाग आ गतम् ।
 माध्वी धर्तारा विदथस्य सत्पती तप्तं घर्म पिबतं रोचने दिवः ४
 तप्तो वां घर्मो नक्षतु स्वहोता प्र वामध्वर्युश्चरतु पर्यस्वान् ।
 मधोर्दुग्धस्याश्विना तनाया वीतं पातं पर्यस उस्त्रियोयाः ५
 हिङ्कृण्वती वसुपत्नी वसूनां वत्समिच्छन्ती मनसा न्यागन् ।
 दुहामश्विभ्यां पर्यो अद्भ्येयं सा वर्धतां महते सौमगाय ८ ६८४

(९) मधु, अश्विनौ ।

॥ ८८ ॥ (अथर्व० ९।१।११, १३-१७, १९) अनुष्टुप्, १७ उपरिष्ठाद्विराड् बृहती ।

यथा सोमः प्रातःसवने अश्विनोर्भवति प्रियः ।

एवा मे अश्विना वर्च आत्मनि ध्रियताम्

११ ६८५

यथा मधु मधुकृतः संभरन्ति मधावधि ।

एवा मे अश्विना वर्च आत्मनि ध्रियताम्

१६

यथा मक्षा इदं मधु न्यञ्जन्ति मधावधि ।

एवा मे अश्विना वर्चस्तेजो बलमोजश्च ध्रियताम्

१७

अश्विना सारघेण मा मधुनाङ्क्तं शुभस्पती ।

यथा वर्चस्वती वाच मावदानि जनां अनु

१९ ६८८

(१०) सिनीवालीसरस्वत्यश्विनः ।

॥ ८९ ॥ (ऋ. १०।१८४।१)

(६८९) त्वष्टा गर्भकर्ता, विष्णुर्वा प्राजापत्यः । अनुष्टुप् ।

गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति ।

गर्भं ते अश्विनौ देवा वा धत्तां पुष्करस्रजा

२ ६८९

अश्विनौ-देवता-पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

- [५] १।२१।१ (मेधातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
 अश्विनावेह गच्छताम् ।
 अस्य सोमस्य पीतये ।
 (२८४) ५।७५।७ (अवस्युरात्रेयः । अश्विनौ)
 अश्विनावेह गच्छतं ।
 (२९७) ५।७८।१ (सप्तधिरात्रेयः । अश्विनौ)
 (इन्द्रः ३२१३) १।२३।२ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रवायू)
 —हवामहे ।
 अस्य सोमस्य पीतये ।
 (इन्द्रः ३३२१) ४।४९।५ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रावृहस्पती)
 ५।७१।३ (बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
 अस्य... ।
 (इन्द्रः ३०५५) ६।५९।१० (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)
 अस्य... ।
 (इन्द्रः ६३३) ८।७६।६ (कुरुसुतिः काण्वः । इन्द्रः)
 अस्य... ।
 (मरुतः ४०४-६) ८।९४।१०-१२ (बिन्दुः पूतदक्षो
 वा आङ्गिरसः । मरुतः)
 [६] १।२१।२ (मेधातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
 उभा देवा दिविस्पृशा । ...हवामहे ।
 (इन्द्रः ३२१३) १।२३।२ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रवायू)
 उभा देवा दिविस्पृशेन्द्रवायू हवामहे ।
 [७] १।२१।३ तथा यज्ञं मिमिक्षतम् ।
 (४२) १।४७।३ मध्वा यज्ञं मिमिक्षतम् ।
 [१०] १।३०।१८ (शुनःशेष आजीगर्तिः । अश्विनौ)
 समानयोजनो हि वां रथो दद्यावमर्त्यः ।
 (२८६) ५।७५।९ (अवस्युरात्रेयः । अश्विनौ)
 अयोजि वां वृषण्वसू रथो दद्यावमर्त्यः ।
 [११] १।३०।१९ (शुनःशेष आजीगर्तिः । अश्विनौ)
 चक्रं रथस्य येमथुः । परि द्यामन्यदीयते ।
 (२६०) ५।७३।३ (पौर आत्रेयः । अश्विनौ)
 ईमान्यद् वपुषे वपुश्चक्रं रथस्य येमथुः ।
 पर्यन्याः...दीयथः ।

- [२१] १।३४।१० (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । अश्विनौ)
 मध्वः पिबतं मधुपेभिरासभिः ।
 ...रथम् ।
 (२३५) ४।४५।३ (वामदेवो गौतमः । अश्विनौ)
आ रजः । —रथम् ।
 [२२] १।३४।११ आ नासत्या त्रिभिरेकादशैः ।
 (५११) ८।३५।३ (श्यावाश्व आत्रेयः । अश्विनौ)
 विश्वेदेवैस्त्रिभिरेकादशैः ।
 [२२] १।३४।११ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । अश्विनौ)
 प्रायुस्तारिष्टं नी रपांसि मृक्षतं सेधतं द्वेणे
 भवतं सचाभुवा ।
 (१६६) १।१५७।४ (दीर्घतमा औचथ्यः । अश्विनौ)
 [२३] १।३४।१२ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । अश्विनौ)
 वामवसे जोहवीमि वृधे च नो भवतं वाजसातौ ।
 [७५] १।११२।२३ (कुत्स आङ्गिरसः । अश्विनौ)
 अवसे नि ह्वये वां वृधे च नो भवतं वाजसातौ ।
 [२५] १।३६।२ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
 मनोतरा रयीणाम् ।
 (४३२) ८।८।१२ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
 [२६] १।४६।३ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
 यद् वां रथो विभिष्पतात् ।
 (४०५) ८।५।२२ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
 [३०] १।४६।७ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
 युजाथामश्विना रथम् ।
 (५४०) ८।७३।१ (गोपवन आत्रेयः सप्तधिरिवा । अश्विनौ)
 [३९] १।४७।१ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
 अयं वां मधुमत्तमः सुतः सोम ऋतावृधा ।
 २।४१।४ (गुत्समदः शौनकः । मित्रावरुणौ)
 अयं वां मित्रावरुणा सुतः सोम ऋतावृधा ।
 [४०] १।४७।२ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
 रथेना यातमश्विना ।
 (४३१) ८।८।११ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
 अतः सहस्रनिर्णिजा रथेना यातमश्विना ।

(४३४) ८।८।१४ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
अतः— ।

[४१] १।४७।३ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
पातं सोममृतावृधा ।

—दाश्वांसमुप गच्छतम् ।

(४३) १।४७।५ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
पातं— ।

३।६१।१८ (विश्वामित्रो गायिनः, जमदग्निर्वा । मित्रावरुणौ)
पातं— ।

७।६३।१९ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मित्रावरुणौ)
पातं— ।

(५७६) ८।८७।५ (कृष्ण आजिरसो युष्मोको वा वासिष्ठः,
प्रियमेध आजिरसो वा । अश्विनौ)
पातं— ।

(इन्द्रः ३२२४) ४।४६।५ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)
दाश्वांसमुप गच्छतम् ।

[४१; ४४] १।४७।३, ६ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
अथाद्य (६ सुदासे) दक्षा वसु विभ्रता ।

[४२] १।४७।४ मध्वा यज्ञं मिमिक्षतम् ।
(७) १।२२।३ तथा यज्ञं— ।

[४२] १।४७।४ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
युवां हवन्ते अश्विना ।

(४००) ८।५।१७ ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)

[४३] १।४७।५ ताभिः प्व१स्मा अवतं शुभस्पती ।
(इन्द्रः ३२०४) ८।५९ (वाल० ११) ।३
(सुपर्णः काण्वः । इन्द्रावरुणौ)

ताभिर्दाश्वासमवतं शुभस्पती ।

[४५] १।४७।७ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)

यन्नासत्या परावति यद् वा स्थो अघि तुर्वशे ।
अतो रथेन सुवृता न आ गतं साकं सूर्यस्य
रश्मिभिः ॥

(४३४) ८।८।१४ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)

यन्नासत्या परावति यद् वा स्थो अध्यम्बरे ।
अतः सहस्रनिर्णिजा रथेना यातमश्विना ।

१।१३७।२ (परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)

साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ।

५।७९।८ (सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः)

साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ।

८।१०१।२ (जमदग्निर्भागवः । मित्रावरुणौ)

साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ।

[४६] १।४७।८ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)

अर्वाञ्चा वां सप्तयोऽध्वरश्रियो वहन्तु
सवनेदुप ।

इषं पृच्छन्ता सुकृते सुदानव आ बर्हिःसीदतं नरा॥

(इन्द्रः २४२) ८।४।१४ (देवातिथिः काण्वः । इन्द्रः)

अर्वाञ्चं त्वा सप्तयोऽध्वरश्रियो— ।

१।९२।३ (गोतमो राहुगणः । उषाः)

इषं वहन्तीः सुकृते सुदानवे ।

(५७३) ८।८७।२ (कृष्ण आजिरसो युष्मोको वा वासिष्ठः,
प्रियमेध आजिरसो वा । अश्विनौ)

आ बर्हिः सीदतं नरा ।

(५७५) ८।८७।४ (कृष्ण आङ्गिरसो... । अश्विनौ)

आ बर्हिः सीदतं नरा ।

[४७] १।४७।९ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)

तेन नासत्या गतं रथेन सूर्यत्वचा ।

(४७६) ८।२२।५ (सोभरिः काण्वः । अश्विनौ)

...तेन नासत्या गतम् ।

(४२२) ८।८।२ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)

रथेन सूर्यत्वचा ।

[४७] १।४७।९ मध्वः सोमस्य पीतये ।

(५५८-५६६) ८।८५।१-९ (कृष्ण आजिरसः । अश्विनौ)

[४९] १।९२।१३ (गोतमो राहुगणः । अश्विनौ)

अर्वाग् रथं समनसा नि यच्छतम् ।

(३७३) ७।७४।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)

(५३०) ८।३५।२२ (श्यावाश्व आत्रेयः । अश्विनौ)

अर्वाग् रथं नि यच्छतं ।

[५०] १।९२।१७ (गोतमो राहुगणः । अश्विनौ)

आ न ऊर्जे वहतमश्विना युवम् ।

(१६६) १।१५७।४ (दीर्घतमा औचथ्यः । अश्विनौ)

[५१] १।९२।१८ (गोतमो राहुगणः । अश्विनौ)

दक्षा हिरण्यवर्तनी ।

(२७९) ५।७५।२ (अवस्युरात्रेयः । अश्विनौ)

(३९४) ८।५।११ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)

(४२१) ८।८।१ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)

(५७६) ८।८७।५ (कृष्ण आजिरसो युष्मोको वा वासिष्ठः,
प्रियमेध आजिरसो वा । अश्विनौ)

[५१] १।९२।१८ उषर्बुधो वहन्तु सोमपीतये ।

(इन्द्रः ११०) ८।१।२४ (मेधातिथि-मेघ्यातिथी
काण्वौ । इन्द्रः)

[५२-७४] १।११२।१-२३ (कुत्स आङ्गिरसः । अश्विनौ)

ताभिरू पु ऊतिभिरश्विना गतम् ।

[५६] १।११२।५ (कुत्स आङ्गिरसः । अश्विनौ)

याभी रेभं निवृत्तं सितमद्भ्य उद्वन्दनमैरयतं स्वर्दशे ।
(१३२) १।११८।६ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः ।
अश्विनौ)

उद्वन्दनमैरयतं दंसनाभिरुद् रेभं ।

[५९] १।११२।८ याभिर्वर्तिकां ग्रसिताममुञ्चतं ।

(५९५) १०।३९।१३ (काक्षीवती घोषा । अश्विनौ)

वर्तिकां... युवं शचीभिर्ग्रसिताममुञ्चतम् ।

[७१] १।११२।२० (कुत्स आङ्गिरसः । अश्विनौ)

भुज्यं याभिरवथो याभिराघिगुम् ।

(४८१) ८।२१।१० (सोभरिः काण्वः । अश्विनौ)

याभिः पक्थमवथो याभिराघिगुम् ।

[७५] १।११२।२४=(२३) १।३४।१२ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः ।
अश्विनौ)

वृधे च नो भवतं वाजसातौ ।

[७६] १।११२।२५ तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ताम-
दितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ।

= (अग्निः २७१) १।९४।१६ ; (१८७८) १।२५।११ ;

(१८७८) १।९६।९ ; (१७२६) १।९८।३

= (इन्द्रः ९७५) १।१००।१९ ; (८२७) १।१०१।११ ;

(८३८) १।१०२।११ ; (८४६) १।१०३।८ ; (३०२०)

१।१०८।१३ ; (३०२८) १।१०९।८

= १।१०५।१९ (त्रित आप्त्यः कुत्स आङ्गिरसो वा । विश्वे देवाः)

= १।१०६।७=१।१०७।३ (कुत्स आङ्गिरसः । विश्वे देवाः)

= १।११०।९=१।१११।५ (कुत्स आङ्गिरसः । ऋभवः)

= १।११३।२० (कुत्स आङ्गिरसः । उषाः)

= १।११४।११ (कुत्स आङ्गिरसः । रुद्रः)

= १।११५।६ (कुत्स आङ्गिरसः । सूर्यः)

(सोमः ९१४) ९।९७।५८ (कुत्स आङ्गिरसः । सोमः)

[८३] १।११६।७ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)

युवं नरा स्तुवते पञ्जियाय कक्षीवते ।

कारोतरच्छपादश्वस्य वृष्णः शतं कुम्भां असि-

ञ्चतं सुरायाः ।

(१०८) १।११७।७ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)

युवं नरा स्तुवते कृष्णियाय ।

(१०७) १।११७।६ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)

तद् वां नरा शंसं पञ्जियेण कक्षीवता... ।

शफादश्वस्य वाजिनो जनाय शतं कुम्भां

असिञ्चतं मधूनाम् ।

[९२] १।११६।१६ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)

शतं मेषान् वृक्ये चक्षदानमृज्जाश्वं तं
पितान्धं चकार ।

तस्मा अक्षी नासत्या विचक्ष आधत्तं ।

(११८) १।११७।१७ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः ।
अश्विनौ)

शतं मेषान् वृक्ये मामहानं तमः... पित्रा

आक्षी ऋज्जाश्वे अधिनावधत्तं... विचक्षे

(११९) १।११७।१८ चक्षदानं ऋज्जाश्वः शतमे-
षं मेषान्

[१०३] १।११७।२ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)

यो वामश्विना मनसो जवीयान् ।

येन गच्छथः सुकृतो दुरोणं ।

(२०२) १।१८३।१ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)

मनसो यो जवीयान् ।

येनोपयाथः सुकृतो दुरोणं ।

[१०७] १।११७।६=(८३) १।११६।७ (कक्षीवान् औशिजो
दैर्घतमसः । अश्विनौ)

शतं कुम्भां असिञ्चतं मधूनाम् (७ सुरायाः)

[१०८] १।११७।७=(८३) १।११६।७ युवं नरा स्तुवते
कृष्णियाय (७ पञ्जियाय)

[११०] १।११७।९ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)

पेदव ऊहथुराशुमश्वम् ।

(३६६) ७।७।५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)

[११८] १।११७।१७=(९२) १।११६।१६ शतं मेषान्
वृक्ये मामहानं (१६ चक्षदानम्) ।

[१२१] १।११७।२० (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)

युवं शचीभिर्विमदाय जायां न्यूहथुः पुरु-

मित्रस्य योषणाम् ।

(५८९) १०।३९।७ (काक्षीवती घोषा । अश्विनौ)

युवं रथेन विमदाय शुन्ध्युवं न्यूहथुः पुरु-

मित्रस्य योषणाम् ।

[१२२] १।११७।२१ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)

अभि दस्युं वकुरेणा धमन्तोरु ज्योतिश्चक्र-

रायाय ।

(अग्निः १७९९) ७।५।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । वैश्व-
नरोऽग्निः)

त्वं दस्यूरोकसो अग्न आज उरु ज्योतिर्जनय-

[११४] १।११७।२३ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)
अपत्यसाचं श्रुत्यं रराथाम् ।

(इन्द्रः ३२७५) ६।७१।१ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । इन्द्रासोमौ)
—श्रुत्यं रराथे ।

[११६] १।११७।२५ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)
एतानि वामश्विना वीर्याणि...

ब्रह्म कृण्वन्तो...सुवीरासो विदथमा वदेम ।

(२२२) २।३९।८ (गृत्समदः शौनकः । अश्विनौ)

एतानि वामश्विना वर्धनानि ब्रह्म...अकन् ।

.....वदेम विदथे सुवीराः ।

(इन्द्रः ११३६) २।१२।१५ (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)

सुवीरासो विदथमा वदेम ।

(सोमः ११४८) ८।४८।१४ (प्रगाथो घौरः काण्वः । सोमः)

सुवीरासो विदथमा वदेम ।

[११७] १।११८।१=१।३५।१० (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । सविता)
सुमृळीकः स्वर्वा यात्वर्वाङ् ।

[११७] १।११८।१ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)
यो मर्त्यस्य मनसो जवीयान् त्रिवन्धुरो
वृषणा वातरंहाः ।

(१०९) १।१८३।१ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)

मनसो यो जवीयान् त्रिवन्धुरो वृषणा
यस्त्रिचक्रः ।

[११९] १।११८।३ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)
प्रवथामना सुवृता रथेन दस्त्राविमं शृणुतं
श्लोकमद्रेः ।

किमङ्ग वां प्रत्यवर्ति गमिष्ठाहुर्विप्रासो
अश्विना पुराजाः ॥

(२२८) ३।५८।३ (विश्वामित्रो गाथिनः । अश्विनौ)
सुगुग्मिरश्चैः सुवृता रथेन... ।

किमङ्ग वां प्रत्यवर्ति...अश्विना हवन्ते ॥

[१३०] १।११८।४ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)
आ वां श्येनासो अश्विना वहन्तु... ।

...अभि प्रयो नासत्या वहन्ति ॥

(३२३) ६।६३।७ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । अश्विनौ)

आ वां वयोऽथासो वहिष्ठा अभि प्रयो
नासत्या वहन्तु ।

[१३२] १।११८।३=(५६) १।११२।५ उद् वन्दनमैरतं
दंसनाभिः (५ स्वर्दशे) ।

[१३५] १।११८।९ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)
युवं श्वेतं पेदव इन्द्रजुतमहिह्नमश्विना-

दत्तमश्वम् ।

जोहुत्रमर्थो... ।

(५९२) १०।३९।१० (काक्षीवती घोषा । अश्विनौ)

युवं श्वेतं पेदवेऽश्विनाश्वं ।

चर्कृत्यं ददथुः ।

[१६०] १।१३९।३ युवोर्विश्वा अधि श्रियः ।

(इन्द्रः २८१६) ८।९२।२० (श्रुतकक्षः सुकक्षो
वा आङ्गिरसः । इन्द्रः)

यस्मिन् विश्वा अधि श्रियः ।

[१६३] १।१५७।१ (दीर्घतमा औचथ्यः । अश्विनौ)

आयुक्षातामश्विना यातवे रथं ।

१०।३५।६ (लुशो धानाकः । विश्वे देवाः)

आयुक्षातामश्विना तूतुजि रथं ।

[१६६] १।१५७।४=(५०) १।९२।१७

आ न ऊर्जं वहतमश्विना युवम् ।

[१६६] १।१५७।५=(२२) १।३४।११

प्रायुस्तारिष्टं नी रपांसि मृक्षतं सेधतं
द्वेषो भवतं सचाभुवा ।

[१८४] १।१८०।१० (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)

तं वां रथं वयमद्या हुवेम ।

(२५१) ४।४४।१ (पुरुमीळ्हाजमीळ्हा सौहोत्रौ । अश्विनौ)

[१९९] १।१८२।६ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)

अनारम्भणे तमसि प्रविद्धम् ।

(इन्द्रः ३२८०) ७।१०४।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः [रक्षोघ्नं] ।
इन्द्रासोमौ)

—प्र विध्यतम् ।

[२०२] १।१८३।१=(१२७) १।११८।१

त्रिवन्धुरो वृषणा यस्त्रिचक्रः (१ वातरंहाः) ।

[२०४] १।१८३।३ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)

यो रथो... ।

येन नरा नासत्येषयध्वै वर्तिर्याथस्तन-
याय त्मने च ।

(२१२) १।१८४।५ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)

यातं वर्तिस्तनयाय त्मने च ।

६।४९।५ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)

...यो रथो...

येन नरा— ।

[२०५] १।१८३।४ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)

अयं वां भागो निहित इयं गीर्दस्त्राविमे
वां निधयो मधूनाम् ।

(५६)

(५३९) ८।५७ (बाल० ९) । १४ (मेघ्यः काण्वः । अश्विनौ)

अयं वां भागो निहितो यजत्रा ।

(२३०) ३।५८।५ (विश्वामित्रो गायिनः । अश्विनौ)

दस्त्राविमे वां निधयो मधूनाम् ।

[२०६] १।१८३।५ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)

मे हवं नासत्योप यातम् ।

(५५८) ८।८५।१ (कृष्ण आङ्गिरसः । अश्विनौ)

आ मे हवं नासत्या ।

[२०७] १।१८३।६ = (२१३) १।१८४।६ = (३७३) ७।७३।१

अतारिष्म तमसस्पारमस्य ।

१।९२।६ (गोतमो राङ्गणः । उषाः)

अतारिष्म तमसस्पारमस्य ।

[२०७] १।१८३।६ = (२१३) १।१८४।६ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः ।

अश्विनौ)

अतारिष्म तमसस्पारमस्य प्रति वां
स्तोमो अश्विनावधायि ।एह यातं पथिभिर्देवयानैर्विद्यामेवं वृजन्
जीरदानुम् ॥

(२३०) ३।५८।५ (विश्वामित्रो गायिनः । अश्विनौ)

एह यातं पथिभिर्देवयानैः ।

[२०९] १।१८४।२ अस्मे ऊ पु वृषणा मादयेधाम् ।

(अग्निः ७४८) ४।१४।४ अस्मिन् यज्ञे वृषणा ।

[२१२] १।१८४।५ = (२०४) १।१८३।३

यातं वर्तिस्तनयाय तमने च ।

६।४९।५ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)

येन नरा...वर्तिर्यथास्तनयाय... ।

[२१३] १।१८४।६ = (२०७) १।१८३।६

ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

[२२२] २।३९।८ = (१२६) १।११७।२५

एतानि वामश्विना वर्धनानि (२५ वीर्याणि) ।

[२२४] २।४१।८ (गृत्समदः शौनकः । अश्विनौ)

न यत् परो नान्तर... ।

दुःशंसो मर्त्यो रिपुः ।

(३१८) ६।६३।२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अश्विनौ)

न यत् परो नान्तरस्तुतुर्यात् ।

८।१८।१४ (इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः)

दुःशंसं मर्त्यं रिपुम् ।

ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

[२२८] ३।५८।३ = (१२९) १।११८।३

[२३०] ३।५८।५ = (२०७) १।१८३।६ = (२१३) १।१८४।६

(अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)

[२३०] ३।५८।५ = (२०५) १।१८३।४

[२३३] ३।५८।८ (गायिनो विश्वामित्रः । अश्विनौ)

परि द्यावापृथिवी याति सद्यः ।

१।११५।३ (कृत्स आङ्गिरसः । सूर्यः)

परि द्यावापृथिवी यान्ति सद्यः ।

ऋग्वेदस्य चतुर्थं मण्डलम् ।

[२५०] ४।४३।७ = (२५७) ४।४४।७

(पुरुमीळहाजमीळहौ सौहोत्रौ । अश्विनौ)

इहेह यद् वां समना पृथ्वे सेयमस्मे
सुमतिर्वाजरत्ना ।उरुष्यतं जरितारं युवं ह श्रितः कामो
नासत्या युवद्रिक् ॥

[२५१] ४।४४।१ = (१८४) १।१८०।१०

तं वां रथं वयमद्या हुवेम ।

[२५४] ४।४४।४ (पुरुमीळहाजमीळहौ सौहोत्रौ । अश्विनौ)

दधथो रत्नं विधते जनाय ।

७।७५।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । उषाः)

दधाति रत्नं विधते जनाय ।

[२५५] ४।४४।५ हिरण्येन सुवृता रथेन ।

१।३५।२ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । सविता)

[२५५] ४।४४।५ (पुरुमीळहाजमीळहौ सौहोत्रौ । अश्विनौ)

—यातं— ।

मा वामन्ये नि यमन् देवयन्तः ।

(३५२) ७।६९।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)

...यातम् ।

मा वामन्ये नि यमन् देवयन्तः ।

- [२५६] ४।४४।६ नू नो रयि पुरुवीरं वृद्धन्तं
(अग्निः ९९९) ६।६।७ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । वैश्वानरोऽग्निः)
चन्द्रं रयि— ।
- [२५७] ४।४४।७ = (२५०) ४।४३।७
[२३८] ४।४५।२ (वामदेवो गौतमः । अश्विनौ)
उद् वां पृक्षासो मधुमन्त ईरते ।
७।६०।४ (वसिष्ठो मित्रावरुणिः । मित्रावरुणौ)
—मधुमन्तो अस्थुः ।
- [२३८] ४।४५।२ (वामदेवो गौतमः अश्विनौ)

- रथा अश्वास उषसो व्युष्टिषु ।
(अग्निः ७४८) ४।१४।४ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
—उषसो व्युष्टौ ।
- [२३८] ४।४५।२ = (२४२) ४।४५।६
स्वर्णं शुक्रं तन्वन्त आ रजः ।
- [२३९] ४।४५।३ = (२१) १।३४।१०
मध्वः पिबतं मधुपेभिरासभिः ।
- [२४१] ४।४५।५ सोमं सुषाव मधुमन्तमद्रिभिः ।
(सोमः १०००) ९।१०७।१ सुषाव सोममद्रिभिः

ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलम् ।

- [२५८] ५।७३।१ (पौर आत्रेयः । अश्विनौ)
यदन्तरिक्ष आ गतम् ।
(इन्द्रः ९८०) ८।९७।५ (रेभः काश्यपः । इन्द्रः)
— आ गहि
- [२५९] ५।७३।२ (पौर आत्रेयः । अश्विनौ)
इह त्या पुरुभूतमा ।
(४७४) ८।२२।३ सौभरिः काण्वः । अश्विनौ)
[२६०] ५।७३।३ = (११) १।३०।१९ चक्रं रथस्य येमथुः ।
[२६२] ५।७३।५ (पौर आत्रेयः । अश्विनौ)
आ यद् वां सूर्या रथं तिष्ठत् ।
(४३०) ८।८।१० (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
आ यद् वां योषणा रथमतिष्ठत् ।
- [२६७] ५।७३।१० इमा ब्रह्माणि वर्धना ।
(इन्द्रः ५६९) ८।६२।४ (प्रगाथो घौरः काण्वः । इन्द्रः)
इन्द्र ब्रह्माणि वर्धना ।
- [२७७] ५।७४।१० (पौर आत्रेयः । अश्विनौ)
अश्विना यद् कर्हि चिच्छुश्रूयातमिमं हवम् ।
(५४४) ८।७३।५ (गोपवन आत्रेयः सप्तवध्रिर्वा ।
अश्विनौ)
- यद्य कर्हि कर्हि चिच्छुश्रूयातमिमं हवम् ।
[२७८-८६] ५।७५।१-२ (अवस्युरात्रेयः । अश्विनौ)
माध्वी मम श्रुतं हवम् ।
- [२७९] ५।७५।२ = (५१) १।९१।१८ = (४२१) ८।८।१
दत्ता हिरण्यवर्तनी ।
- [२८०] ५।७५।३ (अवस्युरात्रेयः । अश्विनौ)
आ नो... अश्विना गच्छतं युवम् ।
८ [दै. अश्विनौ]

- रुद्रा हिरण्यवर्तनी ।
(४२१) ८।८।१ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
आ नो... अश्विना गच्छतं युवम् ।
दत्ता हिरण्यवर्तनी ।
- (५५८) ८।८५।१ (कृष्ण आत्रिः । अश्विनौ)
आ मे... अश्विना गच्छतं युवम् ।
- [२८४] ५।७५।७ = (५) १।२२।१ = (२९७) ५।७८।१
अश्विनावेह गच्छतं १।२२।१ गच्छताम् ।
- [२८४] ५।७५।७ (अवस्युरात्रेयः । अश्विनौ)
नासत्या मा वि वेनतम् ।
- (२९७) ५।७८।१ (सप्तवध्रिरात्रेयः । अश्विनौ)
- [२८६] ५।७५।९ = (१०) १।३०।१८ रथो दत्तावमर्त्यः ।
- [२८९] ५।७६।३ मध्यदिनं उदिता सूर्यस्य ।
५।६९।३ (उरुचक्रिरात्रेयः । मित्रावरुणौ)
- [२९०] ५।७६।४ आ नो दिवो वृद्धतः पर्वतादा ।
५।४३।११ (भौमोऽग्निः । विश्वे देवाः)
- [२९१] ५।७६।५ = ५।४२।१८ = ५।४३।१७
(भौमोऽग्निः । विश्वे देवाः)
- [२९६] ५।७७।५ = ५।४२।१८ = (२९१) ५।७६।५
- [२९७] ५।७८।१ = (५) १।२२।१ = (२८४) ५।७५।७
- [२९९] ५।७८।१-३ हंसविष पततमा सुतौ उप ।
- [२९९] ५।७८।३ जुषेयां यज्ञमिष्टये ।
५।७९।३ (बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
- [३०४] ५।७८।८ यथा वातो यथा वनम् ।
१०।२३।४ धूनेति वातो यथा वनम् ।

ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

[३०८] ६।६२।३ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । अश्विनौ)

तां ह त्वद् वर्तिर्यद्वरधः..... ।

.....परि... ।

(३१८) ६।६३।२ परि ह त्वद् वर्तिर्याथो... यत्... ।

[३१०] ६।६२।५ बभूवुर्गृणते चित्रराती ।

(३१६) ६।६२।११ दुरो वर्तं गृणते चित्रराती ।

[३१८] ६।६३।२ = (२२४) २।४१।८ न यत् परो नान्तरः ।

[३२०] ६।६३।४ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । अश्विनौ)

प्र रातिरेति जूर्णिनी घृताची ।

(अग्निः ६८४) ४।६।३ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)

यता सुजूर्णि रातिनी घृताची ।

[३२३] ६।६३।७ = (१३०) १।११।८।४

अग्निं प्रयो नासत्या वहन्तु (४ वहन्ति) ।

[३२३] ६।६३।७ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । अश्विनौ)

—प्र वां रथो मनोजवा जघर्जि ।

(३४०) ७।६८।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)

...मनोजवा इयति ।

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

[३३३] ७।६७।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)

आ वां तोके तनये तूतुजानाः सुरत्नासो

देववीति गमेम ।

(इन्द्रः ३१९६) ७।८४।५ = (इन्द्रः ३२०१) ७।८५।५

(वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रावरुणौ)

प्रावत् तोके तनये तूतुजाना ।

सुरत्नासो देववीति गमेम ।

[३३७] ७।६७।१० = (३५४) ७।६९।८ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)

नू मे हवमा शृणुतं युवाना यासिष्टं वर्तिरश्विना-

विरावत् ।

धत्तं रत्नानि जरतं च सूरिन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥

[३४०] ७।६८।३ = (३२३) ६।६३।७

[३४८] ७।६९।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)

विशो येन गच्छथो देवयन्तीः ।

(६१२) १०।४१।२ (सुहस्त्यो घौषेयः । अश्विनौ)

गच्छथो यज्वरीर्नरा ।

[३५२] ७।६९।६ = (२५५) ४।४४।५

मा वामन्ये नि यमन् देवयन्तः ।

[३५४] ७।६९।८ = (३३७) ७।६७।१० = (३४६) ७।६८।२

= (३६१) ७।७०।७ = (३६७) ७।७१।६ = (३७२, ३७७)

७।७२-७३।५ यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।

(अग्निः १११२) ७।१।२०, २५; (११३३)

७।३-४।१०; (११४८) ७।७-८।७; (११६०) ७।९।६;

(११७०) ७।११।५; (११७३) ७।१२-१३।३; (११७६)

७।१४।३; (१६८२) १०।१२२।८ ।

(इन्द्रः २१५०) ७।१९।११; (२१६०) २०।१०;

(२१७०) २१।१०; (२१७९) २२।९; (२१८५)

२३।६; (२१९१) २४।६ (२१९७) २५।६

(२२०२) २६।५; (२२०७) २७।५; (२२१२) २८।५;

(२२१७) २९।५; (२२२२) ३०।५; (३०७८)

२३।८; (३१९६) ८४।५; (३२०१) ८५।५; (३२३५)

९०।७; (३२४०) ९१।७; (३३२५) ९७-९८।१०, ७

(सोमः ८०५) ९।९०।६; (८५९, ८६२) ९७।३, ६

(मरुतः ३६९) ७।५६।२५; (३७६) ५७।७; (३८२)

५८।६। (विश्वे देवाः) ७, ३४, २५; ३५, १५; ३६, ९

३७, ८; ३९-४१, ७; ४२, ६; ४३, ५। ४८, ४

१०, ६५-६६, १५ । (सविता ७।४५।४ (रुद्रः)

७।४६।४। (आपः) ७।४७।४। (आदित्याः) ७।५१।३

(यावापृथिवी) ७।५३।३ (वास्तोष्पतिः) ७।५४।३

(मित्रावरुणौ) ७।६०।१२; ६१, ७; ६२-६३, ६

६४-६५, ५। (उषाः) ७।७५।८; ७६, ७; ७७, ६

७८-७९।५, ८०, ३ (वरुणः) ७।८६।८; ८७-८८,

७। (वायुः) ७।९२।५। (सरस्वती) ७।९५।६

(विष्णुः) ७।९९-१००।७। (पर्जन्यः) ७।१०१।६

[३५९] ७।७०।५ प्रति प्र यातं वरमा जनाय ।

७।६५।४ (मैत्रावरुणिवसिष्ठः । मित्रावरुणौ)

प्रति वामत्र वरमा जनाय ।

[३५९] ७।७०।५ अस्मे वामस्तु सुमतिश्चनिष्ठा ।

(मरुतः ३७३) ७।५७।४ (वसिष्ठो मैत्रा० । मरुतः)

[३६१] ७।७०।७ = (३६७) ७।७१।६

(वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)

इयं मनीषा इयमश्विना गीरिमां सुवृकिं वृषणा जुषेयाम् ।

इमा ब्रह्माणि युवयूय्यगमन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥

नौ देवता ।

। अग्निः

न्ति) ।

नौ)

श्विनौ)

(२१८५)

) २५१६

२) २८१५

३०७८

३) ३२३५

४) ३८१०, ७

५) ४३१३, ६

६) ४८२२

७) ५३३१

८) ५८४०

९) ६३४९

१०) ६८५८

११) ७३६७

१२) ७८७६

१३) ८३८५

१४) ८८९४

१५) ९४०३

१६) ९९१२

१७) १००२१

१८) १०१३०

१९) १०२३९

२०) १०३४८

२१) १०४५७

२२) १०५६६

२३) १०६७५

२४) १०७८४

२५) १०८९३

२६) ११००२

२७) १११११

२८) ११२२०

२९) ११३२९

३०) ११४३८

(३७५) ७७३१३ इमां सुवृत्तिं वृषणा जुषेथाम् ।

[३६६] ७७१५ = (११०) १११७९

नि वेदव ऊहथुराशुमश्वम् ।

[३६७] ७७१६ = (३६१) ७७०१७

[३७१] ७७२१४ ऊर्ध्वं भानुं सविता देवो अश्रेद् ।

(अग्निः ६८३) ४६१२ ऊर्ध्वं भानुं सवितेवाश्रेद् ।

(अग्निः ७४१) ४१३१२ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)

(अग्निः ७४६) ४१४१२ ऊर्ध्वं केतुं सविता देवो अश्रेद् ।

[३७२] ७७२१५ = (३७) ७७१७३५

(वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)

आ पश्चातान्नासत्या पुरस्तादाश्विना यातमधरादुदक्तात् ।

आ विश्वतः पाञ्चजन्येन राया यूयं पात स्वस्तिभिः

सदा नः ।

[३७३] ७७३११ = ११९२१६ = (२०७) ११८३१६
= (२१३) ११८४१६

[३७५] ७७३१३ = (३६१) ७७०१७

[३७६] ७७३१४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)

मा नो मर्धिष्टमा गतं शिवेन ।

(३८०) ७७४१३ मा नो मर्धिष्टमा गतम् ।

[३७७] ७७३१५ = (३७२) ७७२१५

[३७९] ७७४१२ = (४९) ११९२१६

अर्वाग् रथं समनसा नि यच्छतम् ।

[३७९] ७७४१२ = (४२१) ८१८११ पिबतं सोम्यं मधु ।

(इन्द्रः ३०७०) ६१६०१५

(बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । इन्द्राग्नी)

[३८०] ७७४१३ = (३७६) ७७३१४

ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम् ।

[३८५] ८१५१२ = (इन्द्रः ३२२४) ४१४६५

(वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)

[३८७] ८१५१४ ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)

पुरुमन्दा पुरुवसू ।

(४३२) ८१८१२ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)

[३८८] ८१५१५ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)

गन्तारा दाशुषो गृहम् ।

(इन्द्रः ३३०) ८१३१० (नारदः काण्वः इन्द्रः)

— गृहं नमस्विनः ।

(४७४) ८१२१३ (सोमरिः काण्वः । अश्विनौ)

[३८९] ८१५१६ धृतैर्गव्युत्तिमुक्षतम् ।

३६२१६ (गायिनो विश्वामित्रः, जमदग्निर्वा । मित्रावरुणौ)

[३९०] ८१५१७ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)

आ नः स्तोममुप द्रवत् ।

(३९०) ८१४९ (वाल० १) ५ (प्रस्कण्वः काण्वः । इन्द्रः)

[३९२] ८१५१९ उत नो गोमतीरिषः ।

(सोमः ४४१) ९१६२१४ (जमदग्निर्मर्गिवः ।

पवमानः सोमः)

५७२१८ (सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः)

[३९४] ८१५११ = (५१) ११९२१८ दक्षा हिरण्यवर्तनी ।

[३९४] ८१५११ पिबतं सोम्यं मधु ।

(इन्द्रः ३०७०) ६१६०१५

(बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । इन्द्राग्नी)

*

[३९५] ८१५१२ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)

उर्ध्व्यन्तमदाभ्यम् ।

(५६२) ८१८१५ (कृष्ण आङ्गिरसः । अश्विनौ)

[३९८] ८१५१५ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)

अस्मे आ वहतं रयिं

पुरुक्षुं विश्वधायसम् ।

(मरुतः ५८) ८१७१३ (पुनर्वसुः काण्वः । मरुतः)

आ नो रयिं मदच्युतं पुरुक्षुं विश्वधायसम् ।

[४००] ८१५१७ = ३१५९१९ (गायिनो विश्वामित्रः । मित्रः)

[४००] ८१५१७ हविष्मन्तो अरंकृतः ।

११४१५ (मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः)

[४००] ८१५१७ = (४२) ११४७१४ युवां हवन्ते अश्विना ।

[४०१] ८१५१८ = (इन्द्रः २०८९) ६१४५३०

स्तोमो वाहिष्ठो अन्तमः ।

[४०१] ८१५१८ (ब्रह्मातिथिः काण्वः अश्विनौ)

स्तोमो वाहिष्ठो...

युवाभ्यां भूत्वश्विना ।

(५०५) ८१६१६ (विश्वमना नैयडवः

व्यडवो वाङ्गिरसः । अश्विनौ)

वाहिष्ठो.....स्तोमो ।

युवाभ्यां भूत्वश्विना ।

[४०३] ८१५२० = (४१३) ८१५३० तेन नो वाजिनीवसू

[४०५] ८१५२२ = (२६) ११४६३३

यद् बां रथो विभिष्यताम् ।

- [४११] ८।५।२८ = (इन्द्रः ३२२३) ४।४६।४
(वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)
- [४११] ८।५।२८ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
रथं हिरण्यवन्धुरं हिरण्याभीशुमश्विना ।
आ हि स्थाथो दिविस्पृशम् ।
(४७६) ८।२१।५ (सोमरिः काण्वः । अश्विनौ)
रथो...त्रिवन्धुरो हिरण्याभीशुरश्विना ।
...थावापृथिवी... ।
(इन्द्रः ३२२३) ४।४६।४ रथं हिरण्यवन्धुरम्... ।
आ हि स्थाथो दिविस्पृशम् ।
- [४१३] ८।५।३० (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
उपेमां सुष्टुतिं मम ।
(४२६) ८।८।६ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
- [४१८] ८।५।३५ हिरण्ययेन रथेन ।
१।३५।२ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । सविता)
हिरण्ययेन...रथेना ।
- [४२१] ८।८।१ आ नो विश्वामिरुतिभिः ।
(इन्द्रः २१८९) ७।२४।४ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । इन्द्रः)
(४३८) ८।८।१८ = (५७४) ८।८।७।३
आ वां विश्वामिरुतिभिः ।
- [४२१] ८।८।१ = (२८०) ५।७।५।३ (अवस्युरात्रेयः । अश्विनौ)
- [४२१] ८।८।१ = (५१) १।९।१।१८
(गौतमो राहुगणः । अश्विनौ)
- [४२१] ८।८।१ = (इन्द्रः ३०७०) ६।६।०।१५
(बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । इन्द्राग्नी)
- [४२२] ८।८।२ (सध्वंसः काण्वः अश्विनौ)
आ नूनं यातमश्विना ।
(४५७) ८।९।१४ (शशकर्णः काण्वः । अश्विनौ)
(५७६) ८।८।७।५ कृष्ण (आङ्गिरसो बुध्नो वा वासिष्ठः
प्रियमेध आङ्गिरसो वा । अश्विनौ)
- [४२२] ८।८।२ = (४७) १।४७।९
- [४२४] ८।८।४ = (४२८) ८।८।८
पुत्रः कण्वस्य वामिह (८ वामुषिः) ।
- [४२५] ८।८।५ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
आ नो यातमुपश्रुति ।
(इन्द्रः ४३५) ८।३४।११ (नीगातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
आ नो यादुपश्रुति ।
- [४२५] ८।८।५ अश्विना सोमपीतये ।
(५३५) ८।४२।६ नासत्या सोमपीतये ।
(इन्द्रः ३०९७-३०९९) ८।३८।७-९

- (शावाश्व आत्रेयः । इन्द्राग्नी)
इन्द्राग्नी सोमपीतये ।
- [४२६] ८।८।६ जुहुरेऽवसे नरा ।
१।४८।१४ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
जुहुरेऽवसे महि ।
- [४२६] ८।८।६ = (५३०-५३२) ८।३५।२२-२४
आ यातमश्विना गतम् ।
- [४२६] ८।८।६ = (४१३) ८।५।३० उपेमां सुष्टुतिं मम ।
- [४२७] ८।८।७ दिवश्चिद् रोचनादधि ।
१।४९।१ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
- [४२७] ८।८।७ स्तोमेभिर्हवन्श्रुता ।
(इन्द्रः ३०५५) ८।५९।१०
(बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । इन्द्राग्नी)
- [४२८] ८।८।८ = (४३५) ८।८।१५ = (४३९) ८।८।११
गीर्भिवंसो अवीवृधन् ।
- [४३०] ८।८।१० = (२६२) ५।७३।५
आ यद् वां योषणा (५ सूर्या) रथमतिष्ठत् ।
- [४३१] ८।८।११ = (४०) १।४७।२ रथेना यातमश्विना ।
- [४३२] ८।८।१२ = (३८७) ८।५।४ पुरुमन्दा पुरुवसु
- [४३२] ८।८।१२ = (२५) १।४६।२ मनोतरा रथीणाम् ।
- [४३३] ८।८।१३ = ७।९।४।३ मा नो रीरधतं निदे ।
(इन्द्रः ३०८१) ७।९।४।३ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । इन्द्राग्नी)
- [४३४] ८।८।१४ = (४५) १।४७।७
(प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
- [४३४] ८।८।१४ = (४०) १।४७।२
- [४३६] ८।८।१६ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
वसूयाद् दानुनस्पती ।
१।३३६।३ (परच्छेपो देवोदासिः । मित्रावरुणौ)
आदिस्था दानुनस्पती ।
२।४१।६ (गृत्समदः शौनकः । मित्रावरुणौ)
आदिस्था..... ।
- [४३७] ८।८।१७ आ नो गन्तं रिशादसा ।
५।७१।१ (बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
- [४३८] ८।८।१८ = (५७३) ८।८।७।३ =
(४२१) ८।८।१ = (इन्द्रः २१८९) ७।२४।४
वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्राग्नी)
आ वां (८।८।१, ७।२४।४ नो) विश्वामिरुतिभिः ।
- [४३८] ८।८।१८ = (५७४) ८।८।७।३ =
(अग्निः १०३) १।४५।४ (प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः)
प्रियमेधा बहुषत् ।

- [४३८] ८।८।१८ राजन्तावध्वराणाम् ।
 (अग्निः ८:१०३) १।१।८; १।४१।४ राजन्तमध्वराणाम् ।
 (अग्निः ३८) १।२७।१ सत्राजन्तमध्वराणाम् ।
 [४४४] ८।९।१ प्रास्यै यच्छतमवृकं पृथु च्छर्दिः ।
 १।४८।१५ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
 प्र नो यच्छतादवृकं पृथु च्छर्दिः ।
 [४४६] ८।९।३=४५२) ८।९।९ शशकर्णः काण्वः । अश्विनौ)
 एवेत् काण्वस्य बोधतम् ।
 (४६६) ८।१०।२ (प्रगाथो घोरः काण्वः । अश्विनौ)
 [४५६] ८।९।१३ हुवेथ वाजसातये ।
 (इन्द्रः २७९) ८।६।३७; (इन्द्रः ४२८) ८।३४।४;
 (इन्द्रः १७४१) ५।३५।६ हवन्ते वाजसातये ।
 (इन्द्रः ३३३०) ६।५७।१ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः ।
 इन्द्रावृषणौ)
 हुवेम वाजसातये ।
 (५७७) ८।८७।६ विप्रासो वाजसातये ।
 [४५७] ८।९।१४=(४२२) ८।८।२=(५७६) ८।८७।५
 आ नूनं यातमश्विना ।
 [४६१] ८।९।१८ (शशकर्णः काण्वः । अश्विनौ)
 सं सूर्येण रोचसे ।
 (सोमः १६।९।२।६)मेधातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)
 ... रोचते ।
 [४६६] ८।१०।२=(४४६) ८।९।३=(४५२) ८।९।९
 [४६७] ८।१०।३ देवेष्वध्याप्यम् ।
 १।१०५।१३ (त्रित आप्यः कुत्स आङ्गिरसो वा । विश्वे देवाः)
 देवेष्वध्याप्यम् ।
 [४७२] ८।२२।१ (सोमरिः काण्वः । अश्विनौ)
 यमश्विना सुहवा रुद्रवर्तनी ।
 (५९३) १०।३९।११ (काक्षीवति घोषा । अश्विनौ)
 [४७३] ८।२२।२ (सोमरिः काण्वः । अश्विनौ)
 मुज्युं वाजेषु पूर्यम् ।
 (इन्द्रः १८३६) ८।४६।२० (वशोऽश्व्यः । इन्द्रः)
 [४७४] ८।२२।३=(२५९) ५।७३।२ इह त्या पुरुभूतमा ।
 [४७४] ८।२२।३ अर्वाचीना स्ववसे करामहे ।
 (इन्द्रः २५४४) १०।३८।८ (मुष्कवानिन्द्रः । इन्द्रः)
 अर्वाक्षिमिन्द्रमवसे करामहे ।
 [४७४] ८।२२।३=(३८८) ८।५।५=(इन्द्रः ३३०) ८।१३।१०
 गन्तारा वाशुषो गृहम् ।
 [४७६] ८।२२।५=(४११) ८।५।२८
 (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)

- [४७६] ८।२२।५=(४७) १।४७।९ तेन नासत्या गतम् ।
 [४७९] ८।२२।८ आ यातं सोमपीतये ।
 (इन्द्रः ३२२८) ४।४७।३ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)
 [४७९] ८।२२।८ पिबतं दाशुषो गृहे ।
 (इन्द्रः ३२२५) ४।४६।६ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)
 [४८०] ८।२२।९ रथे कोशे हिरण्यये..... ।
 (मरुतः ८९) ८।२०।८ (सोमरिः काण्वः । मरुतः)
 [४८१] ८।२२।१०=(७१) १।१२।२०
 (कुत्सः आङ्गिरसः । अश्विनौ)
 [४८५] ८।२२।१४ (सोमरिः काण्वः । अश्विनौ)
 मा नो मर्ताय रिपवे वाजिनीवसू ।
 (अग्निः १३९३) ८।३०।८ (भर्गः प्रागाथः । अग्निः)
 ... रिपवे रक्षस्विने ।
 [४८९] ८।२२।१८ विश्वा वामानि धीमहि ।
 ५।८२।६ (श्यावाश्व आत्रेयः । सविता)
 (अग्निः १२६१) ८।१०३।५ (सोमरिः काण्वः । अग्निः)
 [४९८] ८।२६।९ (विश्वमना वैयश्वः व्यश्वो वाङ्गिरसः । अश्विनौ)
 वयं हि वां हवामहे ।
 (५७७) ८।८७।६ (कृष्ण आङ्गिरसो युग्रीको वा
 वासिष्ठः, प्रियमेध आङ्गिरसो वा । अश्विनौ)
 [५००] ८।२६।१२ सजोषसा वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 १।४०।५ (कण्वो घोरः । ब्रह्मणस्पतिः)
 यस्मिञ्चिन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 ७।६६।१२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । आदित्यः)
 यदोहते वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 (इन्द्रः ३१८१; ३१९१) ७।८२।१०; ८३।१०
 (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रावरुणौ)
 अस्मे इन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 (अग्निः १२३९) येन चष्टे वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 १०।३६।१ (लुशो धानाकः । विश्वे देवाः)
 यावाक्षामा वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 १०।६५।१,२ (वसुकर्णो वासुकः । विश्वे देवाः)
 अग्निरिन्द्रो (९ इन्द्रवायू) वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 १०।९२।६ (शार्यातो मानवः । विश्वे देवाः)
 तेभिश्चष्टे वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 [५०५] ८।२६।१६=(४०१) ८।५।१८
 युवाभ्यां भूवश्विना ।
 [५०९] ८।३५।१ आदित्यै रुद्रैर्वसुभिः सचाभुवा ।
 २।३१।१ (गृत्समदः शौनकः । विश्वे देवाः)
 [५०९-२९] ८।३५।१-२१ सजोषसा उषसा सूर्येण च ।

- [५०९-११] ८।३५।१-३ सोमं पिबतमश्विना ।
 [५११] ८।३५।३ = (२२) १।३४।११
 (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । अश्विनौ)
 [५१२-१४] ८।३५।४-६ विश्वेह देवौ सवनाव गच्छतम् ।
 [५१२-१४] ८।३५।४-६ इषं नो वोळ्हमश्विना ।
 [५१५-१७] ८।३५।७-९ सोमं सुतं महिषेवाव गच्छथः ।
 [५१५-१७] ८।३५।७-९ त्रिवर्तिर्यातमश्विना ।
 [५१८-२०] ८।३५।१०-१२ प्रजां च धत्तं द्रविणं च धत्तम् ।
 [५१८-२०] ८।३५।१०-१२ ऊर्जं नो धत्तमश्विना ।
 [५२१-२३] ८।३५।१३-१५ मरुवन्ता जरितुर्गच्छथो हवम् ।
 [५२१-२३] ८।३५।१३-१५ आदिर्यैर्यातमश्विना ।
 [५२४-२६] ८।३५।१६-१८ हतं रक्षांसि सेधतममीवाः ।
 [५२४-२६] ८।३५।१६-१८ सोमं सुन्वतो अश्विना ।
 [५२७-२९] ८।३५।१९-२१ श्यावाश्वस्य सुन्वन्तो मदच्युता ।
 [५२७-२९] ८।३५।१९-२१ अश्विना तिरोअह्वयम् ।
 [५३०] ८।३५।२२ = (४९) १।९२।१६ = (३७९) ७।७४।२
 अर्वाग्रयं (१।९२।१६; ७।७४।२ समनसा) नि यच्छतम् ।
 [५३०] ८।३५।२२ = (३७९) ७।७४।२ = (३९४) ८।५।११
 = (४२१) ८।८।१ पिबतं सोम्यं मधु ।
 (इन्द्रः ३०७०) ६।६०।१५ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । इन्द्राग्नी)
 (इन्द्रः १८०२) ८।२४।१३ (विश्वमना वैश्वः । इन्द्रः)
 पिबति सोम्यं मधु ।
 [५३०-३२] ८।३५।२२-२४ = (४२६) ८।८।६
 = (३९) १।४७।१ आ यातमश्विना
 गतमवस्युर्वामहं हुवे धत्तं रत्नानि दाशुषे ।
 [५३३] ८।३५।२३ विवक्षणस्य पीतये ।
 (इन्द्रः ११) ८।१।२५ (मेधातिथि-मेघ्यातिथौ काण्वौ । इन्द्रः)
 [५३३-३५] ८।४२।४-६ = (४२५) ८।८।५
 नासत्या (८।८।५ अश्विना) सोमपीतये ।
 (इन्द्रः ३०९७-९९) ८।३८।७-९ इन्द्राग्नी सोमपीतये ।
 [५३५] ८।४२।६ (नामाकः काण्वः, अर्चनाना आत्रेयो वा ।
 अश्विनौ)
 एवा वामह ऊतये यथाहुवन्त मेधिराः ।
 नासत्या सोमपीतये ॥
 (इन्द्रः ३०९३) (श्यावाश्व आत्रेयः । इन्द्राग्नी)
 एवा वामह ऊतये यथाहुवन्त मेधिराः ।
 इन्द्राग्नी सोमपीतये ॥
 [५३७] ८।५७ (बाल० ९) । २ युवां देवास्त्रय एकादशासः ।
 (सोमः ८१५) ९।९२।४ (कश्यपो मारीचः । सोमः)
 विश्वे देवास्त्रय एकादशासः ।

- [५३९] ८।५७ (बाल० ९) । ४ अयं वां भागो निहितो यजत्र
 (२०५) १।१८३।४ अयं वां भागो निहित इयं गो [५७९]
 [५४०] ८।७३।१ = (३०) १।४६।७ युञ्जामाश्विना रय [५७९]
 [५४०-५७] ८।७३।१-१८ अन्ति षड्भूतु वामवः । [५७९]
 [५४४] ८।७३।५ = (२७७) ५।७४।१० (पौरः आत्रेयः । अश्वि [५७९]
 [५४९] ८।७३।१० शृणुतं म इमं हवम् । [५७९]
 २।४१।१३ (गृत्समदः शौनकः । विश्वे देवाः)
 = ६।५२।७ (ऋजिश्वाः भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
 शृणुता म इमं हवम् । [५७९]
 (५५९) ८।८५।२ इमं मे शृणुतं हवम् । [५७९]
 (इन्द्रः ३०७०) ६।६०।१५ इन्द्राग्नी शृणुतं हवम् [५७९]
 [५५३] ८।७३।१४ = (इन्द्रः ३०६९) ६।६०।१४ [५७९]
 आ नो गव्येमिरश्च्यैः । [५७९]
 [५५७] ८।७३।१८ पुरं न घृष्णवा रुज ।
 (सोमः १०३१) ९।१०८।६ वर्माव घृष्णवा रुज । [५७९]
 [५५८] ८।८५।१ = (२०६) १।१८३।५ [५७९]
 आ मे हवं नासत्योप यातम् । [५७९]
 [५५८] ८।८५।१ = (२८०) ५।७५।३ = (४२१) ८।८ [५७९]
 अश्विना गच्छतं युवम् । [५७९]
 [५५८-६६] ८।८५।१-९ = (४७) १।४७।९ [५७९]
 मध्वः सोमस्य पीतये । [५७९]
 [५५९] ८।८५।२ = (५४९) ८।७३।१० = [५७९]
 (विश्वे देवाः) २।४१।१३ = (विश्वे देवाः) ६।५२।७ [५७९]
 [५६१] ८।८५।४ शृणुतं जरितुर्हवम् । [५७९]
 (इन्द्रः ३२७) ८।१३।७ शृणुथी — । [५७९]
 (इन्द्रः ३०८०) ७।९४।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्राग्नी) [५७९]
 [५६२] ८।८५।५ = (३९५) ८।५।१२ छर्दियन्तमदाभ्य [५७९]
 [५६३] ८।८५।६ = (३८८) ८।५।५ = (४७४) ८।१२ [५७९]
 [५६७-६९] ८।८६।१-३ ता वां विश्वको हवते तनूक [५७९]
 [५६७-७१] ८।८६।१-५ मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम् [५७९]
 [५७३] ८।८७।१ (कृष्ण आङ्गिरसो युन्नीको वा वासिष्ठः प्रियमे [५७९]
 आङ्गिरसो वा । अश्विनौ
 पिबतं धर्मं मधुमन्तमश्विना बर्हिः सीदतं नरा ।
 ता मन्दसाना मनुषो दुरोण आ ।
 (५७५) ८।८७।४ पिबतं सोमं... सीदतं सुमत ।
 (६०९) १।०।४०।१३ (काक्षीविति घोषा । अश्विनौ
 ता मन्दसाना मनुषो दुरोण आ ।
 [५७३] ८।८७।२ = (४६) १।४७।८ आ बर्हिः सीदतं नरा [५७९]
 [५७४] ८।८७।३ = (इन्द्रः २१८९) ७।९४।४ [५७९]
 = (४२१) ८।८।१ = (४३८) ८।८।१८ [५७९]

- [५७४] ८१८७३ = (अग्निः १०३) ११४५१४ =
(४३८) ८१८१८ प्रियमेधा अहूषत ।
[५७५] ८१८७४ = (४६) ११४७८ = (५७३) ८१८७२
= (अग्निः १९२४) ११४२१७
[५७६] ८१८७५ = (४२२) ८१८१२ = (४५७) ८१९१४
आ नूनं यातमश्विना ।
[५७६] ८१८७५ = (इन्द्रः ३३१) ८१३१११
अश्वेभिः प्रुषितप्सुभिः ।
[५७६] ८१८७५ = (५१) ११९११८ = (२७९) ५१७५१२
= (३९४) ८१५१११ = (४२१) ८१८११
[५७६] ८१८७५ = (४१) ११४७३ =

- (मित्रावरुणौ) ३१६२१८ = (मित्रावरुणौ) ७१६१६९
[५७७] ८१८७६ = (५९८) ८१९६१९ वयं हि वां हवामहे ।
[५७८] ८१२०१७ प्रति हव्यानि वीतये ।
८१२०११० (जमदग्निर्भागवः । वायुः)
[५७९] ८१२०१८ गृणाना जमदग्निना ।
३१६२१८ (विश्वामित्रो गायिनः, जमदग्निर्वा । मित्रावरुणौ)
७१९६१३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । सरस्वती)
गृणाना जमदग्निवत् ।
(सोमः ४४१) ९१६२१४ गृणानो जमदग्निना ।
(सोमः ५३२) ९१६५१२५ ऋगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भागवो
वा । पवमानः सोमः)

ऋग्वेदस्य दशमं मण्डलम् ।

- [५८६] १०३९१४ = (इन्द्रः ७५७) ११५११३
= (इन्द्रः ९९६) ८११००६
विश्वेत् ता वां (ते) सवनेषु प्रवाच्या ।
[५८९] १०३९१७ = (१२१) ११११७२०
न्यूहथुः पुरुमित्रस्य योषणाम् (२० योषाम्) ।
[५९२] १०३९११० = (१३५) ११११८१९
(कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)
[५९३] १०३९१११ = (४७२) ८१२२११
यमश्विना सुहवा रुद्रवर्तनी ।

- [५९५] १०३९११३ = (५९) ११११२१८
(कुत्स आङ्गिरसः । अश्विनौ)
[५९६] १०३९११४ अतक्षाम ऋगवो न रथम् ।
(इन्द्रः १४८६) ४११६१२० (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
ब्रह्मकर्मा ऋगवो न रथम् ।
[६०९] १०४०११३ = (५७३) ८१८७२
ता मन्दसाना मनुषो दुरोण आ ।
[६१२] १०४०११२ विशो येन गच्छथो यज्वरीर्नरा ।
(३४८) ७१६९१३ विशो येन गच्छतो देवयन्तीः ।

“ अश्विनौ-देवता-”

मन्त्रान्तर्गतानां उपमानां सूची ।

— १९९९९९ —

अंशा हव १०,१०६,९; ६२२ नः भजतं चित्रमग्रः ।
 अक्षरा हव १,३४,४; १५ त्रिः पृक्षो अस्मे पिन्वतम् ।
 अक्षी हव २,३९,५; २१९ चक्षुषा यातमर्वाक् ।
 अग्निर्न चित हवः १,११२,१७; ६८ जठरस्य मज्जना पठवां ।
 अग्निरिव देवयोः १०,१०६,३; ६१६ दीदिवांसा ।
 अग्निम् उषाम् न १,१८१,९; १९३ जरते हविष्मान् ।
 अजा हव २,३९,२; २१६ यमा परमा सचेये ।
 अरुक् न ५,७४,५; २७२ वविं प्र मुञ्चथः ।
 (यथा) अग्निः ८,४२,५; ५३४ विप्रः अजोहवीत् ।
 अग्नेः हव ८,३५,१९; ५२७ पूर्वस्तुतिं शृणुतम् ।
 अध्वगौ हव ८,३५,८; ५१६ सुतं सोमं पतथः ।
 अपः न १,१८०,४; १७८ क्षोदोऽवृणीतमेपे ।
 अपः न स्तयम् ७,६८,८; ३४५ अघ्न्याम् अपिन्वतम् ।
 अपसा हव वस्त्रा १०,१०६,१; ६१४ धियः वि तन्वाथे ।
 अग्निषा हव वातः १,११६,१; ७७ सोमान् ह्यमिं ।
 अवनिः न १,१८१,३; १८७ प्रवत्वान् सुविताय गम्याः ।
 अश्वम् न १,११७,४; १०५ गूळहम् रेमं सं रिणीथः ।
 अश्वम् न १०,१४३,१; ६२७ अग्निं अर्थं यातवे कृणुथः ।
 अश्वम् न वाजिनम् १०,१४३,२; ६२८ अरेणवो यमन्त ।
 अस्तम् हव १,११६,२५; १०१ जरिमाणं जगम्याम् ।
 आत्मा हव वातः १,३४,७; १८ तिस्रः [वेदीः] गच्छतम् ।
 आरुक्ता हव १०,१०६,१०; ६२३ मधु परयेथे ।
 ह्य्या हव १०,१०६,४; ६१७ पुष्ट्यै ।
 इन्द्रो न शक्तिम् ४,४३,३; २४६ इंवतो ह्यन् ।
 इन्द्रमिव चर्षणीसहम् १,११९,१०; १४७ शरैरभिधुं चर्कृत्यम् ।
 उग्रा हव रुचा १०,१०६,४; ६१७ हवम् आ गमिष्टम् ।
 उरसं न १०,१४३,६; ६३२ समस्ते भूषतम् ।
 उदन्यजा हव १०,१०६,६; ६१९ जेमना मदेरु ।
 उपधी हव २,३९,४ २१८ नः पारयतम् ।
 उधारा हव १०,१०६,२; ६१५ फर्वरेषु श्रयेथे ।
 ऋम् न १०,१०६,७; ६२० खरमज्रा ।

एतत्वा चित् न ७,७०,२; ३५६ समुद्रान् सरितः पिप
 ओष्ठौ हव २,३९,६; २२० आस्ने मधु वदन्ता ।
 कूनीन हव जारः १,११७,१८; ११९ चक्षदानः शतमेकं
 कर्णा हव १०,१०६,९; ६२२ शासुः अनु हि स्मराथः ।
 कर्णौ हव २,३९,६; २२० सुश्रुता भूतमस्ते ।
 काराधुनी हव १,१८०,८; १८२ प्रशस्तः चितयस्सह
 कर्णम् हव १,११६,१७; ९३ अतिष्ठद्वैता जयन्ती ।
 किरणा हव १०,१०६,४; ६१७ भुज्यै (भवथः ।)
 कीनारा हव १०,१०६,१०; ६२३ स्वेदं आसिष्विदाम्
 कुत्सः न १०,४०,६; ६०२ जरितुर्नशायथः ।
 क्रिविः न सेके ८,८७,१; ५७२ स्तोमः आ गतम् ।
 क्ष्वा हव १०,१०६,७; ६२० मरायु अर्थेषु तर्तरीथः ।
 क्षामा हव २,३९,७; २२१ नः रजांसि समजतम् ।
 क्षामा हव सूयवसात् १०,१०६,१०; ६२३ ऊर्जा सचेये
 क्षोत्रेण हव २,३९,७; २२१ गिरः स्वधितिं सं शिशीव
 खृगला हव २,३९,४; २१८ विस्त्रसः अस्मान् पातम् ।
 गावः न ऊधमिः ८,९,१९; ४६२ अंशवः (ऊधमिः)
 गृध्रा हव वृक्षम् २,३९,१; २१५ निधिमन्तम् अञ्च ।
 गोः न सेके १,१८१,८; १९२ पीपाय मनुषो दशस्यन् ।
 गौरा हव विद्युतम् ७,६९,६; ३५२ तृषाणा सवनोप यात
 (यवसम् अनु) गौरौ हव ५,७८,२; २९८ आगच्छतम्
 गौरौ हव ईरिणे ८,८७,१; ५७१ मध्वः सुतस्य पातम् ।
 गौरौ हव ईरिणम् ८,८७,४; ५७५ सुष्टुतिम् उप गन्तम्
 (इळ्ळं) ग्रन्थिम् न १०,१४३,२; ६२८ अत्रिम् वि ष्यतम्
 प्रावाणा हव २,३९,१; २१५ तत् अर्थं जरयेथे ।
 घर्मा हव १०,१०६,८; ६२१ जठरे मधु सनेरु ।
 चक्रवाका हव २,३९,३; २१७ वस्तोः प्रति अर्वाञ्चा यातम्
 (कापया) जरणा हव १०,४०,३; ५९९ वस्तोः वस्तोः प्रा
 जरतोः हव पुराणवत् ८,७३,११; ५५० अन्ति षद्भूतम्
 (युगा) जूर्णा हव १,१८४,३; २१० वच्यन्ते वां ककु
 तन्यतुः न वृष्टिम् १,११६,१२; ८८ सनये दंस उग्रम् ।

(रिपमच्छिन्नं यथा) तृणम् अथ० ६, १०२, २; ६४८ मनः मयि ।
 दम्पती इव २, ३९, २; २१६ क्रतुविदा जनेषु ।
 दिव्यासः न गुप्ताः १, ११८, ४; १३० अप्तुरः अभि प्रयः ।
 दिशं न दिष्टाम् ऋजुयेव १, १८३, ५; २०६ मे हवं उपयातम् ।
 दूतः न ६, ६३, १; ३१७ स्तोमोऽविद्वज्मस्वान् ।
 दूतः न ७, ६७, १; ३२८ रथः अजीगः ।
 (यथा) दूतः ८, ५, ३; ३८६ तथा वाचम् ऊहिषे ।
 दूता इव २, ३९, १; २१५ हव्या जन्त्या पुरुत्रा ।
 दूता इव १०, १०६, २; ६१५ जनेषु यशसा स्थः ।
 (यथा चक्रुः) देवासुराः अथ० ६, १४१, ३; ६५२ सहस्रपोषाय ।
 (दिवि) ग्राम इव अथ० ६, ६९, ३; ६७६ तत् (वर्चः) मयि ।
 द्वापिम् इव १, ११६, १०; ८६ वार्तिं प्रामुञ्चतं च्यवानात् ।
 द्वारा इव ८, ५, २१; ४०४ अप वर्षथः ।
 धेनुः इव ८, २२, ४; ४७५ सुमतिः अस्मान् अच्छ ।
 ध्रुवसे न योनिम् ७, ७०, १; ३५५ यत् (अश्वं) आ सेदथुः ।
 नद्या इव २, ३९, ५; २१९ युवां रीतिः ।
 नभः न ८, ९, ८; ४५१ स्तोमाः वां आ चुच्यवीरत ।
 नभ्या इव २, ३९, ४; २१८ नः पारयतम् ।
 नावा इव २, ३९, ४; २१८ नः पारयतम् ।
 नासा इव २, ३९, ६; २२० नः तन्वो रक्षितारा भूतम् ।
 नित्यं न सूनुम् १०, ३९, १४; ५९६ वां स्तोमं न्यमृक्षाम् ।
 निधिम् इव अपगूल्हम् १, ११६, ११; ८७ उद् दर्शतः दूपथुः ।
 निवना इव सिन्धवः १०, ४०, ९; ६०५ आस्मै रीयन्ते ।
 निष्कृतम् न योषणा १०, ४०, ६; ६०२ मधु आसा भरत ।
 नृपती इव १०, १०६, ४; ६१७ तुयै ।
 नेतोशा इव १०, १०६, ६; ६१९ तुर्करी पर्फरीका ।
 पञ्चा इव १०, १०६, ७; ६२० चर्चरम् ।
 पतरा इव १०, १०६, ८; ६२१ चचरा ।
 (वृक्षे) परशुमान् इव ८, ७३, १७; ५५६ अश्विना— ।
 परिजमाना इव १०, १०६, ३; ६१६ पुरुत्रा यजथः ।
 पर्णा मृगस्य पतरोः इव १, १८२, ७; २०० श्रोमताय कम् ।
 पशुं न नष्टमिव १, ११६, २३; ९९ दर्शनाय विष्णाप्वं ददथुः ।
 पश्या इव १०, १०६, ३; ६१६ चित्रा यजुः आ गमिष्टम् ।
 पादा इव २, ३९, ५; २१९ तन्वे शम्भविष्टा ।
 पादा इव १०, १०६, ९; ६२२ गाधं तरते ।
 पिता इव ८, २२, १५; ४८६ हुवे ।
 पितरा इव ३, ५८, २; २२७ मेधाः ऊर्ध्वा भवन्ति ।
 पितरा इव पुत्रा १०, १०६, ४; ६१७ आपी वो अस्मे ।
 (यथा) पितुः ८, ८६, ४; ५७० सुमतिः स्वादिष्टा ।
 पितुः न नाम १०, ३९, १; ५८३ सुहवं हवामहे ।
 १ [दै. अश्विनौ]

पुत्रम् इव पितरौ १०, १३१, ५; ६२६ अवथुः काव्यैः ।
 पुत्राय पितरा इव १०, ३९, ६; ५८८ मह्यं शिक्षतम् ।
 पुरम् न ८, ७३, १८; ५५७ आ रुज ।
 पूर्वगत्वा इव सख्ये ७, ६७, ७; ३३४ निधिर्हितः माध्वी ।
 पूषा इव १, १८१, ९; १९३ पुरन्धिः हविष्मान् जरते ।
 प्रधी इव २, ३९, ४; २१८ नः पारयतम् ।
 प्रवृक्तम् १, ११६, २४; १०० विप्रतं रेभं उद्गनि उन्नियथुः ।
 प्रायोगा इव १०, १०६, २; ६१५ श्वान्या शासुः आ इथः ।
 वर्हिः इव १, ११६, १; ७७ प्र वृज्जे स्तोमान् ।
 वृद्धन्ता इव १०, १०६, २; ६२२ गम्भरेषु प्रतिष्ठाम् ।
 ब्रह्मा इव अथ० ६, ५०, २; ६४४ स्थितं हविः ।
 ब्रह्माणा इव २, ३९, १; २१५ (युवां) विद्ये उक्थशासा ।
 भृगवः न १०, ३९, १४; ५९६ रथम् अतक्षाम् ।
 भक्षः मध्वः न ४, ४५, ४; २४० सवनानि गच्छथः ।
 (यथा) मक्षा इदं अथ० ९, १, १७; ६८७ वर्चः तेजः ।
 (यथा) मधु मधुकृतः अथ० ९, १, १६; ६८६ वर्चः ।
 मनन्या न १०, १०६, ८; ६२१ मनःकृष्णा जग्मी ।
 मनुषः न होता १, १८०, ९; १८३ प्र स्पन्द्रा याथः ।
 मनुष्वत् १, ४६, १३; ३६ शम्भू आ गतम् ।
 (यथा चक्रुः) मनुष्याः अथ० ६, १४१, ३; ६५२ सहस्रपोषाय ।
 मयं न योषा १०, ४०, २; ५९८ कृणुते सधस्य आ ।
 महिषा इव ८, ३५, ७-९; ५१५-११७ सुतं सोमं अव गच्छथः ।
 महिषा इव अवपानात् १०, १०६, २; ६१५ पानात् मा ।
 मित्रा इव ऋता १०, १०६, ५; ६१८ शतरा शातपन्ता ।
 मित्रासः न ३, ५८, ४; २१९ प्र ददुः उन्नो अग्रे ।
 मृगा इव वारणा १०, ४०, ४; ६०० दोषा वस्तोर्द्विषा ।
 (यथा) मेधिराः आहुवन्त ८, ४२, ६; ५३५ एवा वामहे ।
 मेने इव २, ३९, २; २१६ तन्वा शुम्भमाने ।
 मेषा इव १०, १०६, ५; ६१८ हषा सपर्या पुरीषा ।
 युगा इव २, ३९, ४; २१८ नः पारयतम् ।
 युवशा इव कन्यनाम् ८, ३५, ५; ५१३ इह स्तोमं जुषेथाम् ।
 योनिः सूख्यन्त्याः इव ५, ७८, ५; ३०१ वि जिहीष्व वनस्पते ।
 (नाधमाना इव) योषा ५, ७८, ४; ३०० अत्रियर्द्व वाम० ।
 योषणां न मयै १०, ३९, १४; ५९६ न्यमृक्षाम स्तोमं वाम् ।
 रथाः इव ७, ७४, ६; ३८३ प्र ये ययुः अवृकासः ।
 रथम् न १, ११९, ७; १४४ वन्दनं निर्ऋतं जरण्यया ।
 रथम् न १०, १४३, १; ६२७ अत्रिं नवं कृणुथः ।
 रथान् इव ५, ७३, १०; २६७ ब्रह्माणि तक्षाम् ।
 रथ्या इव २, ३९, २; २१६ वीरा वरं आ सचेथे ।
 रथ्या इव २, ३९, ३; २१७ शक्ता अर्वाञ्चा यातम् ।

रथ्या हव चक्रा १,१८०,४; १७८ प्रति यन्ति मध्वः ।
 रथि न कश्चित् १,११६,३; ७९ तुम्रो भुज्युं ममृवान् ।
 रश्मीन् हव ८,३५,२१; ५२९ अध्वरान् उप सृजतम् ।
 राजपुत्राः हव १०,४०,३; ५२९ सवना अव गच्छथः ।
 राजाश्वः पृष्ट्यामिव अथ० ६,१०२,२; ६४८ खिदामिते ।
 (शुभे) रुक्मं न १,११७,५; १०६ दर्शतं निस्त्रातम् उदूपथुः ।
 वंसगा हव पूष्या १०,१०६,५; ६१८ पूष्या शिम्बाता ।
 वचसं न मन्तवे १,११२,२; ५३ सुभरा रथमा तस्थुः ।
 (अधिवस्त्रा) वधूः हव ८,२६,१३; ५०२ यः यज्ञेभिः आवृतः ।
 (यथा वचस्वती) वाचं अथ० ९,१,१९; ६८८ सारवेण मा ।
 (यथा भर्गस्वती) वाचं अथ० ६,६९,२; ६७५ साधरेण मा ।
 वाजा हव १०,१०६,५; ६१८ उच्चा वयसा धर्म्येष्ठा ।
 वातः न १,१८०,६; १८० सूरिः प्रेषत् वेष्ट ।
 (यथा) वातः पुष्करिणीं ५,७८,७; ३०३ एवा ते दशमास्यः ।
 (यथा) वातः वनम् ५,७८,८; ३०४ एवा त्वं दशमास्य ।
 वाता हव २,३९,५; २१९ युवम् अजुष्या ।
 वायुः न १०,१०६,७; ६२० पर्फरत् ।
 (यथायं) वाहः समैति अथ० ६,१०२,१; ६४७ एवा मामभि ।
 विः न पणैः १,१८३,२; २०२ सुकृतः त्रिधातुना उपयायः ।
 विधवा हव देवरम् १०,४०,२; ५२८ को वां शयुत्रा ।
 विषुद्वा हव ८,२६,१५; ५०४ गिरा यज्ञम् उदथुः ।
 वृषभः न १,१८१,६; १९० निष्ठा पूर्वः इषः प्र चरति ।
 वेः हव अच्छेदि पर्णम् १,११६,१५; ९१ आजा खेलस्य ।
 शायू हव १०,१४३,६; ६३२ मंहिष्ठा ।
 शकुनस्य हव पक्षा १०,१०६,३; ६१६ साकंयुजा ।
 शफौ हव २,३९,३; २१७ जर्मुराणा तरोभिः ।
 शासुः हव १,११६,१३; ८९ वधिमत्याः तत् श्रुतम् ।
 शूरो न अजम पतयन्तिः १,१५८,३; १७१ उष वाम्...गमेयम् ।
 शृङ्गा हव २,३९,३; २१७ नः प्रथमा गन्तमर्वाक् ।
 श्येना हव ८,७३,४; ५४३ कुह पेतथुः ।
 श्येना हव ५,७४,९; २७६ विचेतसा विभिः दीयतम् ।

श्येनौ हव ८,३५,९; ५१७ सुतं सोमं पतथः ।
 श्रुष्टीवा हव प्रेषितः ७,७३,३; ३७५ प्रेषितः वां अबोधि ।
 श्रुष्टीवाना हव १०,१०६,४; ६१७ हवम् आ गमिष्टम् ।
 श्वाना हव २,३९,४; २१८ नः अरिषण्या तनूनाम् ।
 (यथा) समुद्रः एजति ५,७८,८; ३०४ एवा त्वं...अवेहि ।
 सर्गान् हव ८,३५,२०; ५२८ सुष्टुतीः उप सृजतम् ।
 सारवा हव १०,१०६,१०; ६२३ नीचीनबारे गवि मधु ।
 सिंहम् हव दुहस्पदे ५,७४,४; २७१ यदीं...जिन्वथः ।
 सुदिना हव पृक्षः १०,१०६,१; ६१४ पृक्ष आ तंसयेथे ।
 सुवतः न १,१८०,६; १८० सूरिः वाजं महे आ ददे ।
 सुपुष्पांस् न निरुतेरुपस्थे १,१७,५; १०६ तमसि क्षियन्तम् ।
 सूनुः न पितरा ७,६७,१; ३२८ वां अच्छा विवक्षिम् ।
 (पिता) सूनवे हव । वा०य० १४,३; ६३६ त्वं सुशेवा एधि ।
 सूर्यम् न १,११७,५; १०६ तमसि क्षियन्तं वन्दनाय ।
 सृण्या हव जर्भरी १०,१०६,६; ६१९ जर्भरी तुर्फरीत् ।
 सोमं हव स्रुवेण १,११६,२४; १०० उदनि... उन्नियथुः ।
 सोमम् न १०,३९,२; ५८४ मघवत्सु...कृतम् ।
 (यथा) सोमः प्रातःसवने अथ० ९,१,११; ६८५ एवा मे वचः ।
 स्तनौ हव २,३९,६; २२० नः जीवसे पिप्यतम् ।
 स्वरं ११,४५,२; २३८ शुक तन्वन्त आ रजः ।
 स्वरं ११,४५,६; २४२ शुक तन्वन्त आ रजः ।
 हंसौ हव ५,७८,१-३; २९७-२९९ सुतान्...आ पततम् ।
 हंसौ हव ८,३५,८; ५१६ सोमम् पतथः ।
 हरिणौ हव अनु यवसम् ५,७८,२; २९८ सुतान्...आ पततम् ।
 हस्ता हव २,३९,७; २२१ शक्तिं अभि संददी नः ।
 हस्तौ हव २,३९,५; २१९ तन्वे शम्भविष्ठा ।
 हारिद्रवा हव वना इत् ८,३५,७; ५१५ सुतं सोमं उप पतथः ।
 हिम्या हव वाससः १,३४,१; १२ युवोः दि यन्त्रम् ।
 हिरण्यं प्रति १,४६,१०; ३३ सूर्यः व्यख्यत् ।
 हिरण्यस्य हव कलशम् १,११७,१२; ११३ कूपे...उदूपथुः ।
 ह्यारः न १,१८०,३; १७७ शुचिर्यजते हविष्मान् ।

अश्विनौ-देवताया गुणबोधक-पदमूची ।

[' अश्विना-नौ ' इति द्विवचनान्तं पदम्, अतस्तद्वोधकपदान्यपि द्विवचनान्तानि वर्तन्ते ।]

नौ देवता

वां अबोधि
मिष्टम् ।

ताम् ।

...अवेहि

जतम् ।

गवि मधु

जन्वथः ।

तंसयेधे ।

भा ददे ।

श्वियन्तम्

वकिम् ।

शेवा एधि

नाय ।

पुर्फरीत् ।

उन्निन्यथुः

।

वा मे वचः

म् ।

रजः ।

रजः ।

आ पततम्

।

आ पततम्

नः ।

।

उप पततम्

यन्त्रम् ।

...उदूपयुः

।

।

अङ्गिरस्वन्ता ८,३५,१४; ५२२

अजरौ १,११२,९; ६०

अतूर्तदक्षा ८,२६,१; ४९०

अदाभ्या ५,७५,७-८; २८४-२८५

अघप्रिया ८,८,४; ४२४

अग्निगू ५,७३,२; २५९ । ८,२२,११; ४८२

अध्वर्यन्ता १,१८१,१; १८५

अनपच्युता ८,२६,७; ४९६

अनिन्या १,१८०,७; १८१

अनुशासिता १,१३२,४; १६१

अभ्याययंसेन्या १,३४,१; १२

अमर्त्या ८,२६,१७; ५०६

अरिप्रा ८,८,९; ४२९

अरेपसा १,१८१,४; १८८ । ५,७३,४; २६१

अर्वाचीना ५,७४,९; २७६ । ८,२२,३; ४७४

अवद्यगोहना १,३४,३; १४

अवितारा जनानाम् १,१८१,१; १८५

अश्रन्तौ ८,५,३१; ४१४

अश्वामघा ७,७१,१; ३६२

अस्मयू ७,७४,४; ३८१ । ८,२६,१४; ५०३

अस्त्रिधा ३,५८,७; २३२

अहर्विदा ८,५,९,२१; ३९२,४०४

आजाता दिवः ४,४३,३; २४६

आशुह्वेषसा ८,१०,२; ४६६

इन्द्रतमा १,१८२,२; १९५

इष्यन्ता ८,५,५; २६,३; ३८८,४९२

ईकिता विमदेन १०,२४,४; ५८०

उमा १,१५७,६; १६८ । ६,६२,३; ३०८ ।

१०,१०६,७; ६२०

उपस्तुता १,१८१,७; १९१

उमा १,४६,१५; १२०,१२; ३८,१५९ । ८,८६,१;

१०१,७; १३१,५; ५६७,५७८,६२६

उसा २,३९,३; २१७

कृतप्सू १,१८०,३; १७७

कृतावृषा १,४७,१,३,५; ३९,४१,४३ । ८,८७,५; ५७६

कृमुमन्ता ८,३५,१५; ५२३

कवी १,११७,२३; १२४ । ८,८,२,५,२३; ४२२,४२५, ४४३ । १०,४०,६; ६०२

कृतुमन्ता १,१८३,२; २०३

कृतुविदा २,३९,२; २१६

गन्तारा दाशुषो गृहम् ८,५,६; २२,३; ३८८,४७४

गम्भीरचेतसा ८,८,२; ४२२

गृणाना जमदग्निना ८,१०१,८; ५७९

गोपा १०,४०,१२; ६०८

गोमघा ७,७१,१; ३६२

चक्रमाणा यज्ञम् आ ६,६२,७; ३०७

चरन्ता कामप्रेणेव मनसा १,१५८,२; १७०

चित्रराती ६,६२,५,११; ३१०,३१६

व्यवाना ६,६२,७; ३१२

छर्दिष्पौ ८,९,११; ४५४

जगत्पौ ८,९,११; ४५४

जर्भुराणा २,३९,३; २१७

जाता अप्सु १,१८४,३; २१०

जाता इहेह १,१८१,४; १८८

जुषाणा गिरः ७,६८,१; ३३८

जुषाणा ब्रह्म स्तोमम् २,३९,८; २२२

जुषाणा ५,७५,३; २८०

जुषाणा उख्यस्य केतुं प्रथमम् वा० य० १४,१; ६३४

जुषाणा गिरः १,११८,१०; १३६

जुषाणा तिरोबह्वयम् ३,५८,७; २३२

जुषाणा सुष्टुतिम् १,११८,७; १३३

जुहुराणा आ ८,२६,५; ४९४

जेन्यावसू ७,७४,३; ३८०

तनूपा ८,९,११; ४४९

तिरोबह्वयं जुषाणा ३,५८,७; २३२

तृषाणा विद्युतम् ७,६९,६; ३५२

दंष्टिष्ठा १,१८२,२; १९५ । १०,१४३,३; ६२९

दक्षपिता वा० य० १४,३; ६३६

दधाना यामम् ७,६९,२; ३४८

दशस्यन्ता ६,६२,७; ३१२ । ८,२२,६; ४७७

दक्षा १,३,३; ३ । ३०,१७-१८; ९-१०।४६,२; २५।४७,

३,६; ४१,४४। ९२,१८; ५१। ११६,१०,१६; ८६,९२।

१, ११७, ५, २०-२२; १०६, १२१-१२३ । ११८, ३, ६;
१२९, १३२ । १९९, ७; १४४ । १२०, ४; १५१ ।
१३९, ३-४, १६०-१६१ । १५८, १; १६९ ।
१८२, २-३; १९५-१९६ । १८३, ४-५; २०५-२०६ ।
३, ५८, ३, ५; २२८, २३० । ४, ४३, ४; २४७ । ४४, ६;
२५६ । ५, ७५, २, ९; २७९-२८६ । ६, ६२, ५; ३१० ।
७, ६८, १; ३३८ । ६९, ३; ३४९ । ८, ५, २, ११; ३८५,
३९४ । ८, १; ४२१ । २२, १७; ४८८ । २६, ८; ४९७ ।
८६, १; ५६७ । ८७, ५-६; ५७६-५७७ । १०, ४४,
१४; ६१०

दामुनस्पती ८, ८, १६; ४३६

दिवः आजाता ४, ४३, ३; २४६

दिवि स्पृशा १, २२, २; ६

दिवो नपाता १, ११७, १२; ११३ । १८२, १; १९४ । १८४,
१; २०८ । ४, ४४, २; २५२

दिवो नरा १०, १४३, ३; ६२२

दिव्या ४, ४३, ३; २४६

वीथमी १, १५, ११; ४ । ८, ५७, २; ५३७

देव ८, ९, ६; ४४९ । (छान्दसः ह्रस्वः)

देवा-वौ १, २२, १; ६२४, २; २५ । १८४, ३; २१० । ४,
१५, ९-१०; २३५-२३६ । ५, ७४, १-२; २६८-२६९ ।
७, ६७, ५; ३३२ । ७४, ४; ३८१ । ८, २२, ३; ४७४ ।
५७, १; ५३६ । १०, २४, ६; ५८२ । साम० ३०५;
६४१ । वा० य० २१, ५३; ६६४

देवौ १०, १८४, २; ६८७ । ८, ३५, ४-६; ५१२-५१४

द्रवत्पाणी १, ३, १

धर्तारा विदधस्य अथर्व ७, ७३, ४; ६८२

धर्मवन्ता ८, ३५, १३; ५२१

धियंजिन्वा १, १८२ १; १९४ । ८, २६, ६; ४२५

धिष्ण्या १, ३, २; २ । १८२, १-२; १९४-१९५ । २, ४१, ९;
२२५ । ५, ६३, ६; ३२२ । ७, ६७, १; ३२८ । ७२, ३;
३७० । ८, ५, १४; ३९७ । २६, १२; ५०१

धीजवना ८, ५, ३५; ४१८

नपाता दिवः ४, ४, २; २५२

नरा १, ३, २; २, ४६, ४; २७ । ४७, ८; ४६ । ११२, ३,
१६; ५४, ६७ । ११६ ७, ११, १२, ८३, ८७-८८ । ११७,
३ ४६-७, १८, २४; १०४ १०५, १०७-१०८, ११९, १२५ ।
११८, ५, १०; १३१, १३६ । १८२, ८; २०१ । १८३,
३; २०४ । १८४, २; २०९ । २, ३९, ६; २२२ । ३, ५८
६; २३१ । ५, ७३, ६-७; २६३-२६४ । ५, ७५, ६; २८३ ।

६, ६२, १; ३०६ । ६३, ५; ३२१ । ६, ६३; ३५२,
७४, २, ४; ३७२, ३८१ । ८, ५, १६, २२; ३९९, ४०५ ।
८, ८, ५-६, १७, २०-२१; ४२५-४२६, ४३७, ४४०,
४४१ । २२, ८, १२, १७; ४७२, ४८३, ४८८ । २६, ४, ११
१६; ४९३, ५००, ५०५ । ३५, २३; ५३१ । ८५, ४-५,
५६१-५६२ । ८७, १-२; ५७२-५७३ । १०१, ८; ५७२
१०, ४०, १, ३-५; ५९७, ५९९-६०१ । ४१, २; ६१२ ।
१४३, ३-४, ६; ६२९-६३०, ६३२

नवेदसा १, ३४, १; १२

नव्यौ १०, ३९, ५; ५८७

नाना जातौ ५, ७३, ४; २६१

नासत्या १, ३, ३; ३ । ३४, ७, २-१०; १८, २०-२१
४६, ५; २८ । ४७, ७, ९; ४५, ४७ । ११६ १-२, ४, ९-१०
१३, १६-१७, १९-२०, २२ २३; ७७-७८, ८०, ८५, ८६
८९, ९२-९३, ९५-९६, ९८-९९ । ११७, १, १३, २३
१०२, ११४, १२४ । ११८, ४, ११; १३०, १३७ । १८०,
९; १८३ । १८२, ८; २०१ । १८३, ३, ५; २०४,
२०६ । १८४, १, ३, ५; २०८, २१०, २१२ । २, ४१, ७
३२३ । ३, ५८, ७; २३२ । ४, ४३, ७; २५० । ४४,
४, ७ २५४, २५७ । ५, ७३, ६-७; २६३-२६४ ।
७५, ६; २८३ । ६, ६२, १; ३०६ । ६३, ५; ३२१ ।
७, ६९, ६; ३५२ । ७४, २, ४; ३७२, ३८१ । ८, ५, १६,
२२; ३९२, ४०५ । ८, ५, ६, १७, २०-२१; ४२५-४२६
४३७, ४४०-४४१ । २२, ८, १२, १७; ४७२, ४८३
४८८ । २६, ४, ११, १६; ४९३, ५००, ५०५ । ३५, २३;
५३१ ।

नासत्या-त्यौ ५, ७४, २; २६२ । ७५, ७; २८४ । ७८, १
२९७ । ६, ६३, १, ४, ७, १०; ३१७, ३२०, ३२३, ३२६
७, ६७, ३; ३३० । ७०, ६; ३६० । ७१, ४; ३६५ । ७१,
२-३, ५; ३६९-३७०, ३७२ । ७३, २, ५; ३७४ ३७५
७४, ५; ३८१ । ८, ५, २३, ३२, ३५; ४०६, ४१५ ४१८ ।
८, १४-१५; ४३४-४३५ । ९, ६, ९, १५; ४४९, ४५१,
४५८ । २२, ५; ४७६ । २६, २, ८; ४९१, ४९७ । ४१,
४-६; ५३३-५३५ । ५७, १, ४; ५३६, ५३९ । ८५, १,
९, ५५८, ५६३ । १०१, ७; ५७८ । १०, २४, ४-५; ५८०
५८१ । ३३, ३, ५; ५८५, ५८७ । १४३, ५; ६३१

निचेतारा १, १८४, २; २०९

नृपती ७, ६७, १; ३२८ । ७१, ४; ३६५

परस्पा ८, ९, ११; ४५४

परिज्मानौ १, ४६, १४; ३७

२०-२१।

2, 8, 9-10,

०, ८९, ८९
१ १३ १३

91 260

२०४,

२,४१,७१

90188,
3-250

३२३।

2, 4, 8, 16

374-806

७९, ४८३,
३११, २३१

1 १५,११

8. 96, 97

२३, ३९६।

३६५।७९,

98 ३५७।
१० ७३८।

३४९.४५९,

२७। ४२,

8164, 8

8-4; 460
E 29

६२३

This image shows a blank, aged, cream-colored page, likely an endpaper or flyleaf of a book. The paper has a slightly textured appearance with some faint smudges and discoloration, characteristic of old paper. There is no text or other markings on the page.

100

भुजी ८, ८, २; ४२२
 भुरणा ७, ६७, ८; ३३५
 भुरण्यू ६, ६२, ७; ३१२
 मंदिष्टा ८, ५, ५; ३८८। २२, १२; ४८३। १०, १४३, ६; ६३२
 मधवाना १, १८४, ५; २१२। ३, ५८, ५; २३०। ८, २६, ७; ४९६
 मद्च्युता ८, २२, १६; ४८७। ३५, १९-२१; ५२७-५२९
 मदन्ता १, १८४, २, ५ २०२, २१२
 मधुपौ १, १८०, २; १७६,
 मधुपातमा ८, २२, १७; ४८८। ३५, २०-२१; ५२८-५२९
 मधुमत् १, ११९, २; १४६
 मधुवर्णा ८, २६, ६; ४९२
 मधुयुवा ५, ७३, ८; २६५। ७४, ९; २७६
 मनावसू ५, ७४, १; २६८
 मनोजवषा १, ११७, १५; ११६। ८, २२, १६; ४८७
 मनोतरा रयीणाम् १, ४६, २; २५। ८, ८, १२; ४३२
 मन्दसाना ८, ८७, २; ५७३। १०, ४०, १३; ६०९
 मयोभुवा १, ९२, १८; ५१। ५, ७३, ९; २६६। ८, ८९, १९;
 ४२९-४३९। ८६, १; ५६७। १०, ३९, ५; ५८७
 मरुतमा १, १८२, २; १९५
 मरुत्वन्ता ८, ३५, १३-१५; ५२१-५२३
 मर्त्यत्रा ६, ६२, ८; ३१३
 मायाविना १०, २४, ४; ५८०
 मायिना ६, ६३, ५; ३२१
 मित्रावरुणवन्ता ८, ३५, १३; ५२१
 मिथुता १०, ४०, १२; ६०८
 मिमाना पुरु वरांसि अमिता ६, ६२, २; ३०७
 यज्ञत्रा १, १८०, ५, १७९। ८, ५७, १, ४; ५३६, ५३९
 यज्ञवाहसा १, १५, ११; ४
 यन्तौ पथा इव रजः १, १३९, ४; १६१
 यमा २, ३९, २; २१६
 यामहूतमा ८, ७३, ६; ५४५
 यावाणा प्रातः २, ३९, २; २१६। ५, ७७-१; २९२
 युयुजानसप्ती ६, ६२, ४; ३०९
 युवाना १, ११७ १४; ११५। ३, ५८, ७, २१२। ६, ६२, ४;
 ३०९। ७, ६७, १०; ३३७। ६९, ८; ३५४
 रक्षितारा २, ३९, ६; २२०
 रक्षोहणा ७, ७३, ४; ३७३
 रत्नानि बिभ्रतौ ५, ७५, ३; २८०
 रथी अथर्व० ७, ७१, १; ६७९
 रथीतमा १, २२, २; ६। १८२, २; १९५

रथ्या १,३४,७; १८ । १५७,६; १६८ । १८२,२; १९५
 ५,७५,५; २८२ । ६,६२,७; ३१२
 रथिरा ७,६९,५; ३५१
 रराणा १,११७,२४ १२५
 राजन्तौ अश्वराणां ८,८१८; ४३८
 राजानौ ६,६२,२; ३१४। १०,३९,११, ५९३
 रिशादसा ८,८,१७; ४३७
 रुद्रवर्तनी १,३,३; ३ । ८,२२ १,१४; ४७२,४८५ । १०,
 ३९,११, ५९३
 रुद्रा १,१५८,१; १६९ । २,४१,७; २२३ । ५,७३,८;
 २६५ । ७५,३; २८१। ८,२६,५; ४९४
 वसप्रचेतसा ८,८,७; ४२७
 वर्धना ८,८,५; ४२५
 वल्गू ६,६२,५; ३१० । ६३,१; ३१७ । ७,६८,४; ३४१
 ८,८७,६; ५७७
 वसुधिती १,१८१,१; १८५
 वसुविदा धिया १,४६,२; २५
 वसू १,१५८,१-२, १६९.१७०
 वल्ली ८,८,१२; ४३२
 वाजयन्ता ८,३५,१५; ५२३
 वाजसातमा ८,५,५; ३८८
 वाजिनीवन्तौ १,१२०,१०; १५७
 वाजिनीवसू २,३७,५, २१४ । ५७४,६-७; २७३-२७४ ।
 ७५,३; २८० । ७८,३; २९९ । ८,५,३,१२,२०,३०;
 ३८६,३९५,४०३,४१३ । ८,१०; ४३० । ९,४; ४४७
 १०,५; ४६९ । २२,७,१४,१८; ४७८,४८५,४८९ ।
 २६,३; ४९२ । ८५,३; ५६० । १०७,८; ५७९ । १०
 ४०,१२; ६०८
 वावसाना विवस्वति १,४६ १३; ३६
 वावृधाना ८,५,११; ३९४ । ८७,४, ५७९
 विचेतसा ५,७४,९; २७६
 विद्रासा सौ १,११६,११; ८७ । १२०,२-३; १४२-१५०
 विपन्यू ८,८,१९; ४३२
 विप्रौ ८,२६,९; ४३८
 विप्रवाहसा ५,७४,७; २७४
 विपिपाना १०,१३१,४; ६२५
 विशपलावसू १,१८२,१, १९४
 विश्वगूर्ता १,१८० २; १७६
 विश्ववारा ७,७०,१; ३५५
 विश्ववेदसा १,४७,४; ४२ । १३९,३; १६० । १०,१४३,
 ६; ६३२

विश्वा ५,७३,४; २६१
 विष्णुवन्ता ८,३५,१४; ५२२
 वीरा २,३९,२; २१६
 वीळुपाणी ७,७३,४; ३७६
 वृत्रहन्तमा ८,८,९,२२; ४२९,४४२
 वृधन्ता १,१५८,१; १६९
 वृषणा-णौ १,११२,८,२३; ५९,७४ । ११६,२१; ९९
 ११७,३-४,८,१२,१५,१८-१९; १०४-१०५,१
 ११३,११६,११९-१२० । ११८,६; १३२ । ११९
 १४१ । १५७,५; १६७ । १५८,१; १६९ । १८०
 १८१ । १८१,८; १९२ । १८३,१; २०२ । १८४,
 २०२ । ६,६२,७; ३१२ । ७,७०,७; ३६१ । ७१,
 ३६७ । ७३,३; ३७५ । ७४,३; ३८० । ८,२२,७,१
 १६; ४७८,४८३,४८७ । २६,१-२,१२; ४२०-४२१
 ५०१ । ३५,१५; ५२३ । १०,३९,२; ५९१ । अथ
 ७,७३,१; ६७९
 वृषण्वसू २,४१,८; २२४ । ५,७४,१; २६८ । ७५,४
 २८१,२८६ । ८,५,२४,२७,३६; ४०७,४१०,४११
 २२,८-९; ४७३-४८० । २६,१-२,५,१५; ४९
 ४२,१,४२४,५०४ । ७३,१०; ५४९ । ८५,७; ५६४
 शक्रा २,३९,३; २१७ । १०,२७,४; ५८० ।
 शचिष्ठा ४,४३,३; २४६ ।
 शचीपती ७,६७,५,३३२
 शचीवसुः १,१३९,५; १६२ । ७,७४,१; ३७८
 शतक्रतू १,११२,२३; ७४
 शम्भविष्ठा २,३९,५; २९९ । ५,७६,२; २८८ । ६,६१,
 ३१०
 शम्भुवा ८८,१२; ४३९
 शम्भू १,४६,१३; ३६
 शयुत्रा १,११७,१२; ११३ । १०,४०,२; ५९८
 शासता अञ्जसा रजः १,१३९,४; १६१
 शुचित्रता १,१५,११; ४ । १८२,१; १९४ ।
 शुभरूपती १,३१; १ । ३४,६; १७ । ४७,५; ४३ । ११
 ६; १५३ । ५,७५,८; २८५ । ८,५,५,११; ३८८,३९४
 २२,४,६,१४; ४७५,४७७,४८५ । २६,६; ४९५
 ८७,५; ५७३ । १०,४०,४,१२-१४; ६००,६०८-६१०
 १३१,४; ६२५
 शुभाना स्पर्द्धया श्रिया ७,७१,१; ३६८
 शुभ्रा ७,६८,१, ३३८

शुभ्रयावाना ८,२६,१९; ५०८
 शुभ्रमानि तन्वा २,३९,२; २१६
 शुभ्रवांसा पुरुणि ब्रह्माणि ७,७०,४; ३५८
 श्रुसाता १,१५७,२; १६४
 शृण्वन्ता स्तुतिम् १,३४,१२; २३
 सक्षणी ८,२२,१५; ४८६
 सचनस्तमा ८,२६,८; ४९७
 सचाभुवा १,३४,११; २२। १५७,४; १६६
 सजोषसा ३,५८,७; २३२। ७,७२,२; ३६९। ८,९,१२;
 ४५५। १०७,७; ५७८
 सप्तती विदथस्य अथर्व० ७,७३,४; ६८२
 सत्या १,१८०,७; १८१
 सध्रोचीना यातवे १०,१०६,१; ६१४
 सन्तौ १,१८४,१; २०८
 सपर्यन्ता ८,२६,१३; ५०२
 समनसा १,९२,१६; ४९। ७,७४,२; ३७९
 सम्मृता ७,७३,४; ३७६
 सवासिनौ अथर्व० २,२९,६; ६४२
 सिन्धुमातरा १,४६,२; २५
 सुगोषा १,१२०,७; १५४
 सुजाता १,११८,१०; १३६

सुदंससा ८,१०,३; ४३७
 सुदक्षा ३,५८,७; २३२
 सुदानू १,११२,११; ६२। ११७,२०,२४; १२१,१२५।
 १८०,६; १८०। १८४,४; २११। ३,५८,७, २३२
 सुपर्णा ४,४३,३; २४६
 सुयुजा ७,७०,२; ३५६
 सुरथा १,२२,२; ६
 सुवीरा ८,२६,७; ४९६
 सुश्रुता २,३९,६; २२०
 सुष्टुता ६,६३,६; ३२२
 सुहवा ८,२२,९; ४७२। १०,३९,११; ५९३
 सूर्यावसू ७,६८,३; ३४०
 स्थविरा १,१८१,७; १९१
 स्थातारा १,१८१,३; १८७
 स्वर्विदा ८,८,७; ४२७
 स्वश्वा ७,६८,१; ३३८। ६०,३; ३४९
 हवनश्रुता ५,७५,५; २८२। ८,८,७; ४२७
 हिरण्यपेशसा ८,८,२; ४२२
 हिरण्यवर्तनी १,९२,१८; ५१। ५,७५,२-३; २७९-२८०।
 ८,५,११; ३९४। ८,१; ४२१। ८७,५; ५७६
 होतारा देवानाम् वा० य० २१,५३,६६४

(१) सुरथा अश्विनौ । [अश्विनोः रथः ।]

अक्षः हिरण्ययः यस्य ८,५,२९; ४१२
 अजरः ४,४५,७; २४३
 अत्यः १,१८०,२; १७६
 अद्रिजुत ३,३९,८; २३३
 अनक्षः १,१२०,१०; १५७
 अनुगायस् ८,५,३४; ४१७
 अनेहस् ८,२२,२; ४७३
 अमर्त्यः ५,७५,९; २८६
 अरिष्टनेमिः १,१८०,१०; १८४
 अथः ७,७०,१; ३५५
 अश्वासः ४,४५,२; २३८
 अश्वावत् ७,७२,१; ३६८
 असनः १,१२०,१०; १५७
 अहंपूर्वः १,१८१,३; १८७
 आचितः १,१८२,२; १९५
 आशुः ४,४३,२; २४५

इयानः अस्मभ्यम् ७,६८,३; ३४०
 इयानः वाम् १,१८०,१०; १८४
 इषा वर्तते सह ८,५,३४; ४१७
 इषां वोळ्हा ७,६९,१; ३४७
 ईषा हिरण्ययी रभिः ८,५,२९; ४१२
 उक्थयः १०,१४१,१; ६११
 उग्रः ५,७३,७; २६४
 उद्ययामः ७,७१,४; ३६५
 उद्याः वस्ते ७,६९,५; ३५१
 ऋतः २,५८,२; २२७
 ऋतजाः ३,३९,८; २३३
 ककुहः १,१८१,५; १८९। ५,७३,७; २६४
 करिकत् भूरि वर्षः ३,५८,९; २३४
 क्षाम् अभियन् १,१८३,२; २०३
 गिर्वाहस् ४,४४,१; २५१
 गोमान् ७,७२,१; ३६८

गोः संगतिः ४,४४,१; २५१
 घृतवर्तनिः ७,६९,१; ३४७
 घृतस्तुः ५,७७,३; २७४
 चक्रा उमा हिरण्यया ८,५,२९; ४१२
 चक्रा त्री रथस्य १,३४,९; २०
 चक्रैः अन्तरैः युक्तः ६,६२,१०; ३१५
 जयुस् १,११७,१६; ११७। १०,३९,१३; ५९५
 जवीयान् निमिषश्चित ८,७३,२; ५४१
 जवीयान् मनसः १,११७,२; १०३। १०,३९,१२; ५९४
 जीराश्वः १,११९,१; १३८। १५७,३; १६५
 तमः अपोर्णुवन ४,४५,२; २३८
 त्रिचक्रः १,११८,२; १२८। १८३,१; २०२। १०,४१,१; ६११
 त्रिधातुः १,१८३,१; २०२
 त्रिवन्धुरः १,४७,२; ४०। ११८,१-२; १२७-१२८। १८३, १; २०२। ७,६९,२; ३४८। ७१,४; ३६५। ८,२२, ५; ४७६। ८५,८; ५६५
 त्रिवृत् १,३४,९,१२; २०,२३। ४७,२; ४०। ११८,२; १२८। ८,८५,८; ५६५
 त्रिष्ठः १,२४,५; १६
 दंसिष्ठः ८,२२,१; ४७२
 दिविस्पृक् ८,५,३५; ४१८
 दृतिः तुरीयः मधुनः ४,४५,१; २३७
 द्युमान् ६,६२,१०; ३१५। १०,४०,१; ५९७
 द्रवत्पाणिः ८,५,३५; ४१८
 द्रवदश्वः ४,४३,२; २४५
 नयैः १,१८०,२; १७६
 नव्यः १,१८०,१०; १८४
 निचेरुः १,१८१,५; १८९
 निष्पाट् १,१८१,६; १९०
 नूतनः ५,७८,४; ३०२
 नृपतिः ७,६९,१; ३४७
 नृवान् ६,६१,१०; ३१५
 नृवाहणः २,३७,५; २१४
 पप्रथानः पञ्च भूम ७,६९,२; ३४८
 परिज्मन् १०,३९,१; ५८३। ४१,१; ६११
 पवयः त्रयः तस्य १,३४,२; १३। १५७,३; १६५। १०, ४१,२; ६१२
 पवयः प्रुषायन्ते १,१३९,३; १६०
 पविभिः रुचानः ७,६९,१; ३४७

पिशङ्गरूपः १,१८१,५; १८९
 पुरुतमः ४,४४,१; २५१
 पुरुषुष्-ट् ८,२२,२; ४७७
 पुरुमायः १,११९,१; १३८
 पुरुश्चन्द्रः ७,७२,१; ३६८
 पुरुस्पृहः ८,२२,२; ४७३
 पुरुहृतः १०,४१,२; ६११
 पूर्वापुष ८,२२,२; ४७३
 पूर्यः वाजेषु ८,२२,२; ४७३
 पृक्षः वहन ५,७७,३; २९४
 पृक्षासः ४,४५,२; २३८
 पृक्षासः अस्मिन् मिथुना अधि त्रयः ४,४५,१; २३७
 पृथुत्रयः ४,४४,१; २५१
 पृथुपाजस् ८,५,२; ३८५
 प्रयज्युः १,१८०,२; १७६
 प्रवस्वान् १,१८१,३; १८७
 प्रवयामन् १,११८,३; १२९
 प्रातर्यावान् १०,४०,१; ५९७। ४१,२; ६१२
 प्रातर्युज् १०,४१,२; ६१२
 प्रियतमः ५,७५,१; २७८
 चक्रधानः रोदसी ७,६९,१; ३४७
 वाधते न चक्रममि ८,५,३४,४१७
 भुज्युः ८,१२,२; ४७३
 मघवान् १,१५७,३; १६५
 मधुमन्तः ४,४५,२; २३८
 मधुवर्णः ५,७७,३; २९४
 मधुवाहनः १,३४,२; १३। १५७,३; १६५। १०,४१,२; ६११
 मध्वः पूर्णः १,१८२,२; १९५
 मनसः जवीयान् १,११७,२ १०३। १८३,१; २०२। १०,३९,१२; ५९४
 मनसः जवीयान् मर्त्यस्य १,११८,१; १२७
 मनसः जवीयान् वृष्णः १,१८१,३; १८७
 मनसा युक्तः ७,६९,२; ३४८
 मनोजवाः १,११७,१५; ११६। ५,७७,३; २९४। ६,६१ ७; ३२३। ७,६८,३; ३४०
 मनोज्ञः १,११०,१; १३८
 मनोयुज्-क् ८,५,२; ३८५
 यज्ञियः १,११९,१; १३८
 ययिः ५,७३,७; २६४
 यय्यः २,३७,५; २१०

यात् १०,४०,१; ५९७
 याम: १,३४,१; १२
 युक्त: मनसा ७,६९,२; ३४८
 युजान: ७,६९,५; ३५१
 युवायुजम् (द्वितीया) १,११९,५; १३२
 रघुवर्तनि: ८,९,८; ४५१
 रघुस्य-ध्य द् ५,७३,५; २६२
 रज: शुक्रं तन्वन्त: ४,४५,२; २३८
 रथानां येष्ठ: ५,७४,८; २७५
 राति: १,३४,१; १२
 वनिन् (नी) १,११९,१; १३८
 वन्धुरायु: ४,४४,१; २५१
 वर्ष: करिकत् भूरि ३,५८,९; २३४
 वसुमान् १,११८,१०; १३६। ७,६७,३; ३३०। ७१,३४;
 ३६४-३६५
 वसुवाहन: ५,७५,१; २७८
 वसूयु: ४,४४,१; २५१
 वस्त उखा: ७,६९,५; ३५१
 वहमान: विशेषे विशेषे वस्तो वस्तो: १०,४०,१; ५९७
 वाजिनीवान् ७,६९,१; ३४७
 वाजी ७,७०,१; ३५५
 वाजेषु पूर्य: ८,२२,२; ४७३
 वातरंहा १,११८,१; १२७। ५,७७,३; २९४
 वाहिष्ठ: ८,२६,४; ४७३
 विदथ्य: १०,४१,१; ६११
 विद्वेषस: ८,२२,२; ४७३
 विपत्सन् १,१८०,२; १७६
 विभिन्दुना (तृतीया) १,११६,२०; ९६
 विभु: १,३४,१; १२
 विभ्व: १०,४०,१; ५९७
 विमोचन: वाम् २,३७,५; २१४
 विश्वप्स्य: ७,७१,४; ३६५
 विश्वसौभग: १,१५७,३; १६५
 वीज्वङ्ग: ८,८५,७; ५६४
 वृक्ष: निष्ठित: १,१८२,७; २००
 वृषण:णम् १,२५७,२; १६४। ५,७५,१; २७८
 वृषण्वान् १,१८२,१; १९४
 वृषभि: अश्वै: युक्त: ७,६९,१; ३४७
 वोळ्हा ७,७१,४; ३६५
 वोळ्हा इषाम् ७,६९,१; ३४७
 व्रतानि अनु वर्तते य: १,१८३,३; २०४
 १० [द्वै. अधिनौ]

शतद्वसु: १,११९,१; १३८
 शतोति: ६,६३,५; ३२१। ७,६८,३; ३४०
 शन्तम: ५,७८,४; ३००
 शरद्वान् १,१८१,६; १९०
 शुनपृष्ठ: ७,७०,१; ३५५
 श्येनपत्वा १,११८,१; १२७
 श्येनस्य चित् जवसा (श्येन) ५,७८,४; ३००
 श्रुत: ८,२२,५; ४७६। २६,४; ४२३
 शुष्ठीवान् १,११९,१; १३८
 सचन: १,११६,१८; ९४
 सचनावान् सुमतिभि: ८,२२,२; ४७३
 सन्तनि: ५,७३,७; २६४
 समान: १०,४१,१; ६११
 समानयोजन: १,३०,१८; १०
 सहस्रकेतु: १,११९,१; १३८
 सहस्रनिर्णिक् ८,८,११,१४; ४३१,४३४
 सुख: १,१२०,११; १५८
 सुपेशस् (शा:) १,४७,२; ४०
 सुमतिभि: सचनावान् ८,२२,२; ४७३
 सुमृळीक: १,११८,१; १२७
 सुयुज् १,११७,१५; ११६
 सुवृत् १,४७,७; ४१। ११८,२-३; १२८-१२९। १८३;
 २-३; २०३ २०४। ३,५८,३; २२८। ४,४४,५;
 २५५। १०,३९,१; ५८३
 सुष्टुत: १,११७,३; १६५
 सुहव: ८,२२,२; ४७३
 सूर्यत्वक् १,४७,२; ४७। ८,८,२; ४२२
 सूर्या य: वहति ४,४४,१; २५१
 सप्रवन्धुर: १,१८१,३; १८७
 सेनाजू: [जुवा-तृतीया] १,११६,१; ७७
 स्कम्भास: (यस्य) त्रय: स्कमितास: १,३४,२; १३
 स्यूमगभस्ति: ७,७१,३; ३६४
 खर्विद् ७,६७,३; ३३०
 खवान् १,११८,१; १२७
 स्वश्व: १,११७,२; १०३। ४,४५,७; २४३
 ह्यविष्मान् १,१८३,३; २०४
 हिरण्यत्वक् ५,७७,३; २२४
 हिरण्यय: १,१३९,३४; १६०-१६१। ४,४४,४-५; २५४-
 २५५। ७,६९,१; ३४७। ८,५,३५; ४१८। ८,२२,९; ४८०
 हिरण्यवन्धुर: ८,५,२८; ४११
 हिरण्यामीशु: ८,५,२८; ४११। २२,५; ४७६

(२) स्वश्वौ अश्विनौ । [अश्विनोः अश्वः ।]

अज्जाः ६, ६२, २; ३०७
 अत्याः १, १८१, २; १८६
 अध्वरश्रियः १, ४७, ८; ४६
 अप्तुरः १, ११८, ४; १३०
 अरुषाः-षासः १, ११८, ५; १३१ । ४, ४३, ६; २४९
 अवमाभिः (तृतीया) ६, ६२, ११; ३१६
 अश्वः-श्वः १, ११८, ५; १३१ । ६, ६३, ७; ३२३ । ८, ५, ७
 ३९०
 अस्त्रिधः ४, ४५, ४; २४०
 अहभिः दविध्वतः ४, ४५, ६; २४२
 आकेनिपासः ४, ४५, ६; २४२
 आशवः १, ११८, ४; १३० । ८, ५, ७; ३९०
 आशुहेमानः १, ११६, २; ७८
 इषिराः ६, ६२, ३; ३०८
 उदप्रुतः ४, ४५, ४; २४०
 उषर्बुधः १, ९२, १८; ५१ । ४, ४५, ४; २४०
 उहुवः ४, ४५, ४; २४०
 ऋतयुजः ७, ७१, ३; ३६४
 एवाः १, १८१, ६; १२०
 ककुहासः ४, ४४, २; २५२
 तरणयः ७, ६७, ८; ३३५
 दिव्यासः १, १८१, २; १८६
 दिव्यासी न गृध्राः १, ११८, ४; १३०
 देवयुक्ताः ७, ६७, ८; ३३५
 द्रवत्पाणयः ८, ५, ३५; ४१८
 नियुतः ६, ६२, ११; ३१६
 पतज्ञाः १, ११८, ४-५; १३०-१३१
 पयस्पाः १, १८१, २; १८६
 परमाभिः (तृतीया) ६, ६२, ११; ३१६
 पर्णिनः ८, ५, ३३; ४१६
 शुषितस्वः ८, ५, ३३; ४१६ । ८७, ५; ५७६
 मक्ष्णवः ७, ७४, ४; ३८१

मधुमनाः ४, ४५, ४; २४०
 मध्यमाभिः (तृतीया) ६, ६२, ११; ३१६
 मनोजवसः ६, ६२, ३; ३०८
 मनोजुवः १, १८१, २; १८६
 मन्दिनः ४, ४५, ४; २४०
 मन्दिनिस्पृशः ४, ४५, ४; २४०
 युक्ता वृषभश्च शिशुमारश्च १, ११६, १८; ९४
 युक्तासः रथे १, ११८, ४; १३०
 रजः शुक्रं आतन्वन्तः ४, ४५, ६; २४२
 रजांसि सुयमासः १, १८०, १; १७५
 रासभः १, ११६, २; ७८ । ८, ८५, ७; ५६३
 वपुषः १, ११८, ५; १३१
 वयः १, ११८, ५; १३१ । ४, ४३, ६; २४९ । ६, ६३, ७
 ३२२-३२३ । ८, ५, ३३; ४१६
 वहिष्ठाः ६, ६३, ७; ३२३
 वाजाः १, १८१, ६; १९०
 वातरंहसः १, १८१, २; १८६
 वीतपृष्ठाः १, १८१, २; १८६
 वील्लपत्मानः १, ११६, २; ७८
 वृषणः १, १८१, २; १८६ । ७, ६९, १; ३४७ । ७१, ३; ३६१
 शुचयः १, १८१, २; १८६
 श्येनासः १, ११८, ४; १३० । ८, ५, ७; ३९०
 सप्तयः १, ४७, ८; ४६
 सुभ्वः ७, ६७, ८; ३३५
 सुम्नायवः ७, ७१, ३; ३६४
 सुयमासः रजांसि १, १८०, १; १७५
 सुयुजः ३, ५८, २-३; २२७-२२८
 स्थविरासः ७, ६७, ४; ३३१
 स्वराजः १, १८१, २; १८६
 हंसासः ४, ४५, ४; २४०
 हयाः ७, ७४, ४; ३८१
 हरी १, १८१, ५; १८९
 हिरण्यपर्णाः ४, ४५, ४; २४०

(३) अश्विनोः सञ्चारः ।

(१) पृथिव्याम् ।

- ४,४५,७; १४३ येन (रथेन) सद्यः परि रजांसि यायः ।
 ५,७३,३; १६० ईमान् यद् वपुषे वपुः चक्रं रथस्य येमथुः ।
 पर्यन्या नाहुषा युगा महा रजांसि दीयथः॥
 ७,६९,१; ३४८ स [रथः] पप्रथानः अधि पञ्च भूमा ।

(२) दिवि ।

- १,११९,३; १४० युवोरह प्रवणे चेकिते रथः ।
 १,१३९,४; १६१ अचेति दस्त्रा व्युनाकमृण्वथः युञ्जते वां
 रथयुजो दिविष्टिषु पथेव यन्ताः***रजः ।

- १,१८०,१०; १८४ तं वा रथं वयमद्या हुवेम***द्यामियानम् ।
 ८,९,११; ४६४ यन्नूनं धीभिरश्विना पितुर्योना निषादथः॥
 ८,१९,४; ४७५ युवो रथस्य परि चक्रमीयते ईमान् यद्वां
 इषण्यति ।

- ८,८३,७; ४२७ दिवश्चिद्रोचनादाधि आ नो गन्तं स्वर्विदा ।

- १,१८३,६; २०७ एह यातं पथिभिर्देवयानैः ।
 १,१८३,६; २१३
 ३,५८,५; २३०

- ७,७०,३; ३५७ यानि स्थानानि अश्विना दधाते दिवो यही-
 ष्वोषधीषु विक्षु । नि पर्वतरथ मूर्धनि सदन्त ॥

(३) द्यावापृथिव्योः ।

- १,३४,८; १९ तिस्रः पृथिवीरुपरि प्र वा दिवो नाकं रक्षेथे
 युभिरक्तुभिर्हितम् ।

- ३,५८,८; २३३ रथो ह वां ऋतजा अद्रिजुतः परि द्यावा-
 पृथिवी याति सद्यः ।

- ४,४५,५; २५५ आ नो यातं दिवो अच्छा पृथिव्या हिरण्य-
 येन सुवृता रथेन ।

- ८,१०,६; ६७० यदन्तरिक्षे पतथः पुरुभुजो यद्वेमे रोदसी
 अनु । यद्वा स्वधाभिरयतिष्ठथो रथे ...
 अत आयातमश्विना ॥

- ८,१०,५; ४७६ [वां रथः] परि द्यावापृथिवी भूषति श्रुतः ।

- ८,७३,१३; ५५२ यो वां रजांस्यश्विना रथो वि याति रोदसी ।

- ८,८३,३; ४२३ आ यातं नहुषस्परि आन्तरिक्षात् सुवृक्तिभिः ।

- ८,८३,४; ४२४ आ नो यातं दिवस्परि अन्तरिक्षादथ प्रिया ।

(४) परावति ।

- १,३४,७; १८ परि त्रिधातु पृथिवीमशायतम् । तिस्रो
 नासत्या रथ्या परावत आत्मेव वातः
 स्वसराणि गच्छतम् ॥

- १,४७,७; ४५ यज्ञासत्या परावति यद्वा स्थो अधि तुर्वशे ।
 अतो रथेन सुवृता न आ गतं साकं सूर्यस्य
 रश्मिभिः ॥

- ५,७३,१; २५८ यदद्य स्थः परावति यदर्वावति अश्विना ।
 यद्वा पुरु पुरुभुजा यदन्तरिक्ष आ गतम् ॥

- ८,५,८; ३९१ येभिस्त्रिः परावतो दिवो विश्वानि रोचना ।
 त्रौरक्तून् परि दीयथः ॥

- ८,८,१४; ४३४ यज्ञासत्या परावति यद्वा स्थो अध्यम्बरे ।

(५) जले ।

- १,३०,१८; १० समानयोजनो हि वां रथः***समुद्रे अश्विने
 यते ।

- ५,७३,८; २६५ यत् समुद्राति पर्षथः ।

- ६,६२,२; ३०७ पुरु वरांसि अमिता मिमाना अपो धन्वा-
 न्यति याथो अज्जान् ।

- ७,६७,८; ३३५ परि वां सप्त स्रवतो रथो गात् ।

- ४,४३,६; २३९ सिन्धुर्ह वां रसया सिञ्चदश्वान् घृणा वयो-
 ऽरुषासः परि गमन् ।

(६) दिवि जले च ।

- १,४६,८; ३१ अरित्रं वा दिवस्पृथु तीर्थे सिन्धूनां रथः ।

- १,१८०,१; १७५ युवो रजांसि सुयमासो अश्वा रथो यद्वां
 परि अर्णांसि दीयत् ।

- ४,४३,५; २४८ उरु वां रथः परि नक्षति द्यामा यत् समुद्रा-
 दभि वर्तते वाम् ।

- ५,७६,४; २९० आ नो दिवो बृहतः पर्वतात् आ अद्भयः
 यातम् ।

- ८,२६,१७; ५०६ यददो दिवो अर्णव इषो वा मदथो गृहे ।

- ८,१०,१; ४६५ यत् स्थो दीर्घपसम्नानि यद्वादो रोचने दिवः ।
 यद्वा समुद्रे अध्याकृते गृहेऽत आ यात-
 मश्विना ॥

(७) सर्वदिक्षु ।

- ७,७२,५; ३७२ } आ पश्चाताज्ञासत्या पुरस्तात् अश्विना
 ७,७३,५; ३७७ } यातमधरादुदक्तात् ।

- ८,१०,५; ४६९ यदद्याश्विनावपाग् यत् प्राक् स्थो वाजि-
 नीवस् । यद् दुह्यवि अनवि तुर्वशे यदौ हुवे
 वा गतम् ॥

(८) अन्यदेवैः सह ।

८,९,१३; ४५५ यदिन्द्रेण सरथं याथो अश्विना
यद्वा वायुना भवथः समोक्षसा ।
यदादित्येभिर्कर्मभुभिः सजोषसा
यद्वा विष्णोर्विक्रमणेषु तिष्ठथः ॥

(९) आशातः ।

१,२२,४; २८ न हि वामस्ति दूरके यत्रा रथेन गच्छथः ।

५,७५,७; २८४ तिरश्चिदर्यया परि वर्तिर्यातमदाभ्या ।
५,७४,१; २६८ कूष्ठो देवावश्विनाऽद्या दिवो मनावसू ?
५,७४,२; २३९ कुह त्या कुह तु श्रुता दिवि देवा नासत्या
८,७३,४; ५४३ कुह स्थः ? कुह जग्मथुः ? कुह श्येनेव पेतथुः
८,७३,५; ५४४ यदद्य कर्हि कर्हिचित् शुश्रूयातमिमं हवम् ।
१०,४०,२; ५९८ कुह स्विद् दोषा ? कुह वस्तोरश्विना ?
कुहामिपित्वं करतः ? कुहोषतुः ? ।

(४) अश्विनोः आवाहनकालः ।

१,११८,११; १३७ हवे हि वामश्विना रातहव्यः शश्वत्तमाया
उषमो व्युष्टौ ।
७,६८,९; ३४६ अग्रे बुधानः उषसां सुमन्मा ।
७,६९,५; ३५१ तेन नः शंयोरुषसो व्युष्टौ न्यश्विना वहतं
यज्ञेऽस्मिन् ।
७,७१,३; ३६४ आ वां रथमवमस्यां व्युष्टौ ... वर्तयन्तु ।
७,७१,४; ३६५ यो वां रथः ... उखयामा ।
७,७२,४; ३७१ विचेदुच्छन्ति उषासः प्र वां ब्रह्माणि कारवो
भरन्ते ।
१०,४१,१; ६११ वयं व्युष्टौ उषसो हवामहे ।
५,७६,१; २८७ आ मात्यगिरुषसामनीकं अर्वाञ्चा ... नूनं
रथ्येह यातम् ।
५,७६,२; २८८ दिवाभिपित्वेऽवसागमिष्ठा ।
१,११२,२४; ७९ अद्युत्येऽवसे नि ह्वये वाम् ।
२,३९,२; २१६ प्रातर्यावाणा ।
५,७७,१; २९२ प्रातर्यावाणा ।
५,७७,१; २९२ प्रातर्हि यज्ञमश्विना दधाते ।
५,७७,२; २९३ प्रातर्ह्यजध्वमश्विना ।
८,२२,१५; ४८६ आ सुग्मयाय ... प्राता रथेनाश्विना हुवे ।
१०,४०,१; ५९७ प्रातर्यावाणं रथम् ।
१०,४०,३; ५९९ प्रातर्जरेथे जरणेव कापया ।

१०,४१,२; ६१२ प्रातर्युजं नासत्याधि तिष्ठथः प्रातर्यावाणं
रथम् ।
८, २,११; ४८२ इदा चिदहो हवामहे ।
८,२२,१३; ४८४ ताविदा चिददानाम् ... वन्दमान उप ब्रुवे
८,२२,१४; ४८५ तावित् दोषा ता उषसि शुभस्पती त
यामन् [हवामहे] ।
१०,३९,२; ५८३ यो वां रथो दोषामुषासो हव्यः ...
वामिदं वयं सुहवं हवामहे ।
१०,४०,४; ६०० दोषा वस्तोर्द्विषा नि ह्वयामहे ।
७,७१,२; ३६३ उपायातं दाशुषे ... ।
दिवा नक्तं माध्वी त्रासीथां नः ॥
१,११२,२५; ७६ ब्रुभिः अकतुभिः परि पातमस्मान् ।
१,३४,१; १२ त्रिश्चिन्नो अद्या अवतम् ।
१,३४,३; १४ समाने अहन् त्रिरवयगोहना त्रिरथ
मधुना मिमिक्षतम् ।
१,३४,४; १५ त्रिर्वर्तिर्यातम् ।
८,३५,७-९; ५१५-५१७ विवर्तिर्यातम् ।
८,२३,३; ४९२ ता वामद्य हवामहे ... अति क्षपः ।
८,७३,६; ५४५ अश्विना यामहूतमा नेदिष्ठं याम्याप्यम् ।
१,४६,१४; ३७ ऋता वनथो अकतुभिः ।
५,७६,३; २८९ उता यातं संगत्रे प्रातरहो मध्यन्दिन उक्षि
सूर्यस्य । दिवा नक्तमवसा शंतमेन ॥

(५) अश्विनोः भिषकर्म ।

(१) भिषजा ।

भिषजा १,११३,१६; ९२ । १५७,६; १६८ । ८,८६,१;
५६७ । १०,३३,५; ५८७ । वा० य० २०,५२, ६६३
भिषजा स्तस्य चित् ११,३१,३; ५८५ अन्धस्य चित्...
कृशस्य चित् ... ।

भिषजा देवानाम् वा० य० २१,५३; ६६४

भिषजा देव्या ८,१८,८; ४७१

(२) भिषकर्म ।

१,३४,६; १७ त्रिर्नो अश्विना दिव्यानि भेषजा त्रिः
वानि त्रिषदत्तमद्भ्यः ।

१,१५७,६; १६८ युवं ह स्थः भिषजा भेषजेभिः ।
८,९,६; ४४९ यन्नासत्या भुरण्यथः यद् वा देव भिषज्यथः ।
८,९,१५; ४५८ यन्नासत्या पराके अर्वाके अस्ति भेषजम् ।
तेन नूनं विमदाय प्रचेतसा छर्दिर्वत्साय
यच्छतम् ।
८,२२,१०; ४८१ तामिनो मक्षू तूगमश्विना गतं भिषज्यतं
यदातुम् ॥

८,२५,१६-१८; ५२४-५२६ सेधतममीवाः ।
७,७०,३; ३५७ यानि स्थानानि अश्विना दधाथे दिवो यद्वापु
ओषधीषु विक्षु ।
७,७०,४; ३५८ चनिष्टं देवा ओषधीष्वप्सु
१,१५७,५; १६७ युवं हि गर्भं जगतीषु धत्थः युवं विश्वेषु
भुवनेषु अन्तः । युवमग्निं च वृषणावपश्च
वनस्पतीरश्विना वैरयेथाम् ॥
७,७१,२; ३६१ युयुतमस्मदनिराममीवान् ।

(६) अश्विनोः सूर्याग्न्युषसां च सम्बन्धः ।

१,४६,१; २४ एषो उषा अपूर्व्या व्युच्छति प्रिया दिवः ।
स्तुषे वामश्विना बृहत् ॥
१,४६,१०; ३३ अभूदु भा उ अंशवे हिरण्यं प्रति सूर्यः ।
व्यख्यज्जिह्यासित ॥ (तत्तदिदश्विनोरवः)
१,४६,१४; ३७ युवोरुषा अनु त्रियं परिज्मनोरुपाचरत ।
१,१५७,१; १६३ अबोध्यामिज्म उदेति सूर्यः व्युषाश्चन्द्रा
मह्यावो अर्चिषा । आयुक्षातामश्विना यातवे
रथं प्रासावीद् देवः सविता जगत् पृथक् ॥
१,१८०,१; १७१ मध्वः पिबन्ता उषसः सचेथे ।
१,१८३,२; २०३ दिवो दुहित्रा उषसा सचेथे ॥
३,५८,१; २२६ धेनु प्रत्नस्य काम्यं दुहानाऽन्तः पुत्रश्चरति
दक्षिणायाः । आ द्योतनिं वहति शुभ्रयामा
उषसः स्तोमो अश्विनावजीगः ॥
३,५८,४; २९९ इमा हि वां गोकृजीका मधूनि प्र मित्रासो
न ददुस्त्रो अग्ने ।
४,४५,१-२; २३७-२३८ एष स्य भानुसुदियतिं युज्यते रथः
परिज्मा दिवो अस्य सानवि । पृक्षासो
अस्मिन् मिथुना अधि त्रयो दतिस्तुगीयो
मधुनो वि रण्शते ॥
उद्वां पृक्षासो मधुमन्त ईरते रथा अश्वास
उषसो व्युष्टिषु । अपोर्ण्वन्तस्तम आ परी-
वृतं खर्ण शुक्रं तन्वन्त आ रजः ॥
१,१२,१८; ५१ (अश्विनोः अश्वासः) उषर्बुधः ।
४,४५,४; २४० अभूदुषा रशत् पशुराग्निरधायृत्वियः ।
५,७१,१; २८६ अयोजि वां वृषण्वसू रथः ।

५,७६,१; २८७ आ भात्यामिषसामनीकम् उद् विप्राणां
देवया वाचो अस्थुः । अर्वाश्चा नूनं रथेह
यातम् ।
६,६२,१; ३०६ या सद्य उसा व्युषि ज्मो अन्तान् युयूषतः
पर्युह वरांसि ॥
६,६३,६; २२२ युवं श्रीभिर्दर्शताभिराभिः शुभे पुष्टिमूहयुः
सूर्यायाः ।
७,६७,२-३; ३२९-३३० अशोच्यग्निः समिधानो अस्मे उपो अदृशन्
तमसश्चिदन्ताः । अचेति केतुषसः पुर-
स्तात् त्रिये दिवो दुहितुर्जायमानः ॥
अभि वां नूनमश्विना मुहोता स्तोमैः सिषक्ति
नासत्या विवकान् ।
७,७२,३; ३७० जामि ब्रह्माणि उषसश्च देवीः ।
७,७२,४; ३७१ वि चेदुच्छन्त्यश्विना उषासः प्र वां ब्रह्माणि
कारवो भरन्ते । ऊर्ध्वं भानुं सविता देवो
अश्रेत् बृहदमयः समिधा जरन्ते ॥
८,५,२; ३८५ रथेन पृथुपाजसा । सचेथे अश्विनोषसम् ।
८,८,२; ४२२ आ नूनं यातमश्विना रथेन सूर्यत्वचा ॥
८,९,१६-१८; ४५९-४६१ अभुस्त्यु प्र देव्या साकं वाचाहमश्विनोः ।
व्यावर्देव्या मतिं वि रार्ति मर्त्येभ्यः ॥
प्र बोधयोषो अश्विना प्र देवि सूतृते महि ।
प्र यज्ञोत्तरानुषक् प्र मदाय श्रवो बृहत् ॥
यदुषो यासि भानुना सं सूर्येण रोचसे ।
आ हायमश्विनो रथो वर्तिर्योति नृपाय्यम् ॥

८,३५,१-३; ५०९-५११ सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं
पिवतमश्विना ॥
४-६; ५१२-५१५ सजोषसा इषं नो वोळ्हमश्विना ॥
७-९; ५१५-५१७ सजोषसा त्रिर्वीर्यातमश्विना ॥
१०-१२; ५१८-५२० सजोषसा ऊर्जं नो धत्तमश्विना ॥
१३-१५; ५२१-५२३ सजोषसा आदित्यैर्यातमश्विना ॥
१६-१८; ५२४-५२६ सजोषसा सोमं सुन्वतो अश्विना ॥

८,३९,१९-२१; ५२७-५२९ सजोषसा अश्विना तिरोअहयम्
८,७३,१६-१७; अरुणप्सुषा अभूदकज्योतिर्ऋतावरि
५५५-५५६ अन्ति षद्भूतु वामवः ॥
अश्विना सुविचाकशत वृक्षं परशुमौ
अन्ति षद्भूतु वामवः ॥
१०,३९,१२; ५९४ यस्य [रथस्य] योगे दुहिता जायते
उभे अदनी सुदिने विवस्वतः ॥

(७) अश्विनोः मन्त्रेषु व्यक्तिनामानि ।

अंशुः स्तोता । ८,५,२६; ४०९
अगस्त्यः स्तोता । १,१८०,८; १८२ । १८४,५; २१२ ।
८,५,२६; ४०९
अघश्वः अवितः । (पेदुनामा राजर्षिः) १,११६,६; ८२
अङ्गिराः स्तोता । १,११२,१८; ६९
अत्रिः द्रष्टा । ५,५३,६-७; २६३-२६४ । ७४,१; २६८ ।
१०,१४३,१-३; ६२७-६२९ । (अवितः) १,११२,७,१६;
५८,६७ । ११६,८; ८४ । ११७,३; १०४ । ११८,७;
१३३ । ११९,६; १४३ । १८०,४; १७८ । १८३,
५; २०६ । ७,६८,५; ३४२ । ७१,५; ३६६ । ८,५,
२५; ४०८ । ३५,१९; ५२७ । (स्तोता) ८,४२,५;
५३४ । ७३,३,७-८; ५४२,५४६-५४७ । १०,३९,९;
५९१ । ५,७८,४; ३००
अग्निगुः राजा । १,११२,२०; ७१ । ८,२२,१०; ४८१
अनुः स्तोता । ८,१०,५; ४६९
अन्तकः राजर्षिः अवितः । १,११२,६; ५७
अवस्युः द्रष्टा । ५,७५,८; २८५
आजमीन्हासः द्रष्टारः । ४,४४,६; २१६
आर्चकः शरः अवितः । १,११६,२२; २८
आर्जुनेयः कुत्सः अवितः । १,११२,२३; ७४
उपस्तुतः अवितः । १,११२,१५; ६६ । ८,५,२५; ४०८
ऋज्जवः १,११६,१६; ९२ । ११७,१७-१८; ११८-११९ ।
१२०,६; १५३
ऋतस्तुम् १,११२,२०; ७१
औचथ्यः मन्त्र-द्रष्टा । १,१५८,१,४; १६९,१७२
औशिजः द्रष्टा । १,१०९,९; १४६
औशिजः कक्षीवान् (दीर्घतमसः पत्नी उशिक् तस्याः पुत्रः
दीर्घश्रवाः) अवितः । १,११२,११; ६२
कक्षीवान् १,११२,११; ६२ । ११६,७; ८३ । ११७,६;
१०७ । १२०,५; १५२ । (स्तोता) ८,९,१०; ४५३
कण्वः, कण्वस्य पुत्रः, कण्वासः वा द्रष्टारः । १,१०६,६; ११२,११९,४,८; १४१,१४५

४७,२,४-५, ०; ४०,४२-४३,४८ । ८,५,४-५, १
२५; ३८७-३८८,४०६,४०८ । ८,३; ४२३ । ९,१
४५७ । १०,२; ४६६
कण्वः अवितः । १,११२,५; ५६ । ११७,८; १०९ । १
७; १३३ । ८,८,२०; ४४०
कर्कन्धुः अवितः । १,११२,६; ५७
कलिः अवितः । १,११२ १५; ६६ । ११३,९,८; ५९०
कविः अवितः । १,११६,१४; २१ । ११९,७; १४४
काण्वः द्रष्टा । ८,९,३,९; ४४६,४५२
काव्यः स्तोता । १,११७,१२; ११३
कुत्सः अवितः । १,११२,९; ६० । ११२,२३; ७३ । १
४०,६; ६०२
कृशः अवितः । १०,४०,८; ६०४
कृशातुः अवितः । १,११२,२१; ७२
कृष्णः द्रष्टा । ८,८५,३-४; ५६०-५६१
कृष्णियः विश्वक्रः अवितः । १,११६,२३; ९९
गृत्समदासः द्रष्टारः । २,३९,८; २२२
गोतमः अवितः । १,११६,९; ८५ । (स्तोता) १,१८३,५; २०
घोषः स्तोता । १,१२०,५; १५२
घोषा अविता । १,११७,७; १०८
घोषा द्रष्टी । १०,४०,५; ६०१
चयवानः अवितः । १,११६,१०; ८६ । ११७,१३; ११४
११८,६; १३२ । ५,७४,५; २७२ । ७५,५; २८१ । ७
६८,६; ३४३ । ७२,५; ३६६ । १०,३९,४; ५८६
जमदग्निः द्रष्टा । ८,१०१,८; ५७९
जहावी अवितः । १,११६,१९; २५ । ३,५८,६; २३१
जाहुषः अवितः । १,११६,२०; ९६ । ७,७१,५; ३६६
तुग्रः अवितः । १,११७,१४; ११९
तुग्रस्य सूनुः तौग्न्यः भुज्यु अवितः । १,११२,६; ५७
११२,२०; ७१ । ११६,३-५, ७२-८१ । ११६,१४-१५
११७,११९,४,८; १४१,१४५

१,११२,१९; २५
१९
६९
१४
तुर्वशः
तुर्वीतिः
तृक्षिः
त्रसदस्युः
त्रिमन्तुः
त्रिशोकः
त्रैतनः
दधीचिः
११९
दमीतिः
दशव्रजः
दिवोदासः
११९
दीर्घतमा
दीर्घतमा
दीर्घश्रवा
दुष्मः स्तो
ध्वसन्ति
नर्यः आ
नार्षदः
एकथः अ
पञ्जासः र
पञ्जियः र
पठर्वा आ
परावृज्
११४
पुरयः दा
पुरुत्सः
पुरुषन्याः
पुरुषित्रः
पुरुषीन्हः
पुरुषन्तिः
पृथिः अवि
पृथी (वैन्
पृथुश्रवाः
पृथियुः आ

भिन्नौ देवता

तिरो अहय

तिर्नावरी

वामवः ॥

परशुमौ

वामवः ॥

जायते वि

विवस्वतः ॥

५, ४-५, ४

२३ । १०, १०

१०९ । १०

८; ५९०

१४४

७३ । १०

८३, ५; १०

१३; ११४

५; २८१

४; ५८६

६; २३१

५; ३६६

६; ५७

१६, १४-१५

१४१, १४५

१, १५८, ३; १७१ । १८०, ५; १७२ । १८२, ५७;
 १९८-२०० । ६, ६२, ६; ३११ । ७, ६८, ७; ३४३ ।
 ६९, ७; ३५२ । १०, ३९, ४; ५८५ । ४०, ७; ६०३ ।
 १४३, ५; ६३१
 तुर्वशः स्तोता । ८, ९, १४; ४५७ । १०, ५; ४६९
 तुर्वीतिः अवितः । १, ११२, २३; ७४
 तृक्षिः त्रासदस्यवः स्तोता । ८, २२, ७; ४७८
 त्रसदस्युः अवितः । १, ११२, १४; ६५; ८, ८, २१; ४४१
 त्रिमन्तुः (कक्षीवान्) अवितः । १, ११२, ४; ५५
 त्रिशोकः अवितः । १, ११२, १२, ६३
 त्रैतनः (दासः) १, १५८, ५; १७३
 दधीचिः अवितः । १, ११६, १२; ८८ । ११७, २२; १२३ ।
 ११९, ९; १४६
 दधीतिः अवितः । १, ११२, २३; ७४
 दशव्रजः अवितः । ८, ८, २०; ४४०
 दिवोदासः अवितः । १, ११२, १४; ६५ । ११६, १८; ९४ ।
 ११९, ४; १४१
 दीर्घतमाः स्तोता । ८, ९, १०; ४५३
 दीर्घतमाः मामतेयः द्रष्टा । १, १५८, ६; १७४
 दीर्घश्रवाः (औशिजः) अवितः । १, ११२, ११; ६२
 द्रुमुः स्तोता । ८, १०, ५; ४६९
 ध्वसन्तिः अवितः । १, ११२, २३; ७४
 नर्यः अवितः । १, ११२, २; ६०
 नार्पदः अवितः । १, ११७, ८; १०९
 पक्थः अवितः । ८, २२, १०; ४८१
 पञ्जासः स्तोता । १, ११७, १०; १११
 पञ्जियः स्तोता । १, १२०, ५; १५२
 पठर्वा अवितः । १, ११२, १७; ६८
 परावृज् अवितः । १, ११२, ८; ५९ । [(इन्द्रः) २, १३, १२, ११४८ । २, १५, ७; ११६८]
 पुरयः दाता । ६, ६३, ९; ३२५
 पुरुक्त्सः अवितः । १, ११२, ७; ५८
 पुरुषन्थाः दाता । ६, ६३, १०; ३२६
 पुरुषेजः । १०, ३२, ७; ५८९
 पुरुषीन्द्रः स्तोता । १, १८३, ५; २०६
 पुरुषन्तिः अवितः । १, ११२, २३; ७३
 पृथिः अवितः । १, ११२, १५; ६६
 पृथी (वैन्यः) स्तोता । ८, ९, १०; ४५३
 पृथुश्रवाः अवितः । १, ११६, २१; ९७
 पृथियुः अवितः । १, ११२, ७; ५८

पेदुः अवितः । १, ११६, ६; ८२ । ११७, ९; ११० । ११८, २, १३५ । ११९, १०; १४७ । ७, ७१, ५; ३६६ । १०, ३९, १०; ५९२
 पेरुकः दाता । ६, ६३, ९; १२५
 पौरः स्तोता । ५, ७४, ४; २७१
 प्रियमेधः अवितः । ८, ५, २५; ४०८ । स्तोता ८, ८७, ३; ५७४
 बभ्रुः अवितः । ८, २२, १०; ४८१
 भरद्वाजः अवितः । १, ११२, १३; ६४ । द्रष्टा ६, ६३, १०; ३२६
 भुज्युः द्रष्टव्यं— ' तुष्टस्य सूनुः तौरग्यः ' ।
 भृगवाणः स्तोता । १, १२०, ५; १५२
 मनुः अवितः । १, ११२, १६, १८; ६७, ६९ । ८, २२, ६; ४७७
 मनुः स्तोता । ८, १०, २; ४६६
 मन्धाता अवितः । १, ११२, २३; ६४
 मेधातिथिः अवितः । ८, ८, १०; ४४०
 यदुः स्तोता । ८, ९, १४; ४५८ । १०, ५; ४६९
 रेभः अवितः । १, ११२, ५; ५६ । ११६, २४; १०० ।
 ११७, ४, १२; १०५, ११३ । ११८, ६; १३२ । ११९, ६; १४३ । १०, ३२, ९; ५९१
 वत्सः स्तोता । ८, ८, १५, १९; ४३५, ४३९ । ९, १, ६, १५; ४४४, ४४९, ४५८
 वध्रिमती अविता । १, ११६, १३; ८२ । ११७, २४; १२५ ।
 ६, ६२, ७; ३१२ । १०, ३९, ७; ५८९
 वन्दनः अवितः । १, ११२, ५; ५६ । ११६, ११; ८७ ।
 ११७, ५; १०६ । ११८, ६; १३२ । ११९, ६-७; १४३-१४४ । १०, ३९, ८; ५९०
 वम्रः अवितः । १, ११२, १५, ६६
 वध्यः अवितः । १, ११२, ३; ५७ । [(इन्द्रः) १, ५४, ६, ७९१ । २, १३, १२, ११४८ । ४, १९, ६; १५९७]
 वरुः ८, २६, २; ४९१
 वशः अवितः । १, ११२, १०; ६१
 वसिष्ठः अवितः । १, ११२, ९; ६० । स्तोता ७, ७०, ६; ३६० । ७३, ३; ३७५
 विधवा (वध्रिमती) अविता । १०, ४०, ८; ६०४
 विमदः अवितः । १, ११२, १९; ७० । ११६, १; ७७ ।
 ११७, २०; २१ । ८, ९, १५; ४५८ । १०, ३९, ७; ५८३
 द्रष्टा । १०, २४, ४; ५८०
 विमनाः स्तोता । ८, ८६, २; ५६८
 विस्पला अविता । १, ११२, १०; ६१ । ११६, १५; ९१ ।
 ११७, ११; ११२ । ११८, ८; १३४ । १८२, १; ६९४ ।
 १७, १९, ८; ५९०

(८०)

विश्वकः द्रष्टा । ८, ८३, १-३; ५६७-५६९
विष्णवाप्तः अवितः । ८, ८६, ३; ५६९
विष्वाचः (षष्ठी)-ध्वक् असुरः १, ११७, १६; ११७
वैन्यः (पृथी) अवितः । ८, ९, १०; ४१३
वैयश्वः द्रष्टा । ८, २६, ११; ५००
व्यश्वः अवितः । १, ११२, १५; ६३ । स्तोता ८, ९, १०;
४५३ । २६, ९; ४९८
शंयुः १, ३४, ६; १७
शयुः अवितः । १, ११२, ३, १६; ५४, ६७ । ११५; २२;
९८ । ११७, १२, २०; ११३, १२१ । ११८, ८; १३४ ।
११९, ६; १४३ । ६, ६२, ७; ३१२ । ७, ६८, ८; ३४५ ।
१०, ३९, १३; ५९५ । ४०, ८; ६०४
शरः (आर्चकः) अवितः । १, ११६, २२; ९८
शर्यातः अवितः । १, ११२, १७; ६८
शाण्डः दाता । ६, ६३, ९; ३२५
शुचन्तिः अवितः । १, ११२, ७; ५८
शुन्ध्युः अवितः । १०, ३२, ७; ५८९

श्यावः अवितः । १, ११७, ८, २४; १०९, १२५
श्यावाश्वः द्रष्टा । ८, ३५, १२-२१; ५२७-५२९
श्रुतयः अवितः । १, ११२, ९; ६०
सप्तवध्रिः द्रष्टा । ५, ७८, ५-६; ३०१-३०२
सप्तवध्रिः अवितः । ८, ७३, ९; ५४८ । १०, ३९, ९; ५९
साहदेव्यः द्रष्टा । ४, १५, १०; २३६
साहदेव्यः सोमकः द्रष्टा । ४, १५, ९; २३५
सुदाः अवितः । १, ४७, ६; ४४ । ११२, १९; ७०
सुमीळहः दाता । ६, ६३, ९; ३२५
सुषामा अवितः । ८, २६, २; ४९१
सुहस्यः द्रष्टा । १०, ४१, ३; ६१३
सोभरिः स्तोता । ८, ५, २६; ४०२ । द्रष्टा ८, २२, १;
४७३, ४८६
सोमकः साहदेव्यः द्रष्टा । ४, १५, ९; २३५
स्यूमरश्मिः अवितः । १, ११२, १६; ६७
हिरण्यहस्तः अवितः । १, ११७, २४; १२५

अश्विनौ-देवता-मन्त्रेषु अन्याः-देवताः ।

अभिः १, ११२, १ (द्वितीयः पादः) ५२ । ५, ७५, ९; २८६ ।
७६, १; २८७ । ७, ६७, २; ३२९, १ । ७२, ४; ३७१ ।
८, ३५, १; ५०९
अङ्गिराः ८, ३५, १३; ५२१
अदितिः १, ११२, २५; ७३
अग्निः ८, ३५, २; ५१०
अर्यमा ८, २६, ११; ५००
अश्वः (अश्विनोः) १, १८१, २; १८६
अश्विरयः १, ११९, १-३; १३८-१४० । १२०, १०-११;
१५७-१५८ । १५७, ३; १६५ । १८०, १०; १८४ ।
१८१, ३; १८७ । ४, ४३, २; २४५ । १०, ४१, १; ६११
आदित्यः १, ४६, ४; २७
आदित्याः ६, ६२, ८; ३१३ । ८, ३५, १; ५०९
आपः ८, ३५, ३; ५११
इन्द्रः ८, ३५, १; ५०९
इन्द्राविष्णू ८, १०, २; ४६६
इष्टका वा० य० १४, १-५; ६३४-६३८
ऋतु- (संहिता) १, १५, ११; ४
उषाः १, ४६, १, १४; २४, २७ । ५, ७५, ९; २८६ । ७६, १;
२८७ । ७, ७२, ३-४; ३००-३०१ । ८, ५, १; २८६

९, १६-१८; ४५९-४६१ । ७३, १६; ५५५
उषः सूर्यसंहितौ अश्विनौ ८, ३५, १-२१; ५०९-५२९
ऋभवः ८, ३५, १५; ५२३
ऋः ४, ४३, १; २४३
चन्द्रादित्यौ १, १८१, ४; १८८
तपाः २, ३७, ५; २१४
दीर्घतमाः १, १५८, ६; १७४
देवाः (त्रयस्त्रिंशत्) १, ३४, ११; २२
द्यौः १, ११२, २५; ७६ । ८, ३५, २; ५१०
द्यावापृथिव्यौ १, ११२, १ (प्रथमः पादः); ५२ । ६, ६१,
३१३ । ७, ७२, ३; ३७०
धर्मः ८, ३५, १३; ५२१
धियः विश्वाः ८, ३५, २; ५१०
पतयः १०, ४०, १०; ६०९
पृथिवी १, ११२, २५; ७६ । ८, ३५, २; ५१०
प्रजापतिः वा० य० २०, ६७-६९; ६५६-६५८ । ११, ४८-५०
६५९-६६९
बृहस्पतिः ८, १०, २; ४६६
भुवनम् ८, ३५, २; ५१०

मरुतः ६, ६२, ८; ३१३ । ८, ३५, ३, १३-१५; ५११, ५२१-
५२३

मित्रः १, ११२, २५; ७६ । ६, ६२, ३; ३१४ । ८, २६, ११;
५००

मित्रावरुणौ ८, ३५, १३; ५२६

रथः अश्विनोः-द्रष्टव्यः 'अश्विरथः'

रुद्राः ८, ३५, १; ५०९

रुद्रियाः ६, ६२, ८; ३१३

रोदसी ६, ६२, ८; ३१३

वरुणः १, ११२, २५; ७६ । ६, ६२, ३; ३१४ । ८, २६, ११;
५०० । ३५, १; ५०९

वसवः ६, ६२, ८; ३१३ । ८, ३५, १; ५०९

(१) निर्विशेषितत्वेन* वर्णितं अश्विनोः अवनकर्म ।

अग्निः ८, ५, २५; ४०८ । [द्रष्टव्यम् ' (५) परकृतविविधा-
पद्मयः अवनम् । ']

अग्निगुः १, ११२, २०; ७१ । ८, २२, १०; ४८१

उपस्तुतः १, ११२, १५; ६६ । ८, ५, २५; ४०८

कक्षीवान् (स्तोता) १, ११२, ११; ६२

कण्वः (प्रसिषासन्) ८, ५, २५; ४०८ । ८, २०; ४४० ।

[द्रष्टव्यम् ' (५) परकृतविविधापद्मयः अवनम् ']

कर्कन्धुः १, ११२, ६; ५७

कलिः (वित्तजानिः) १, ११२, १५; ६६ । [द्रष्टव्यम्
' (६) भिषकर्मणा अवनम् । ']

कुत्सः १, ११२, ९; ६०

कुत्सः आञ्जनेयः १, ११२, २३; ७४

कृशः १०, ४०, ८; ६०४

गोशर्यः ८, ८, २०; ४४०

तुर्वीतिः १, ११२, २३; ७४ ×

दभीतिः १, ११२, २३; ७४

घसन्तिः १, ११२, २३; ७४

नर्यः १, ११२, ९; ६० ×

पक्वः ८, २२, १०; ४८१

पुष्कुरसः १, ११२, ७; ५८

पुरुषन्तिः १, ११२, २३; ७४

विश्वः धियः ८, ३५, २; ५१०

विश्वे देवाः ८, १०, २; ४६६ । ३५, ३; ५११

विष्णुः ८, ३५, १, १३; ५०९, ५२१

सप्तवाग्निः ८, ७३, १८; ५५७

सरस्वती वा० य० २०, ६७-६९; ६५६-६५८ । २१, ४८-५८;
६५९-६६९

सिन्धः १, ११२, २५; ७६

सविता १, १५७, १; १६३ । ७, ७२, ५; ३०१

सूर्यः ७, ६७, २; ३२९

सूर्यसहितौ उषसा च ८, ३५, १-२१; ५०९-५२९

सोमः वा० य० १९, ३४; ६५४

सोमरसः वा० य० १९, ३५; ६५५

पृथिः १, ११२, १५; ६६

पृथिगुः १, ११२, ७; ५८

प्रियमेघः ८, ५, २५; ४०८

बभ्रुः (विजोषस्) ८, २२, १०; ४८१

भरद्वाजः (विप्रः) १, ११२, १३; ६४

भुज्युः १०, ४०, ७; ६०३ । [द्रष्टव्यम् ' (५) परकृतविविधा-
पद्मयः अवनम् । ']

मेधातिथिः ८, ८, २०; ४४०

वम्रः (विपिपानः) १, ११२, १५, ६६

वय्यः १, ११२, ६; ५७ ×

वशः अश्व्यः (प्रेणिः) १, ११२, १०; ६१

वशः दशमजः ८, ८, २०; ४४०

वशः १०, ४०, ७; ६०३

वसिष्ठः १, ११२, ९; ६०

विधवा १०, ४०, ८; ६०४

व्यश्वः १, ११२, १५; ६६

शयुः १०, ४०, ८; ६०४ । [द्रष्टव्यम् ' (७) अन्येषां प्राणिनां
अवनम् । ']

शिञ्जारः ८, ५, २५; ४०८+ । १०, ४०, ७; ६०३

श्रुतयः १, ११२, ९; ६०

* ' यथा चित्कण्वमावतम् ' ' याभिर्व्यश्ममुत पृथिमावतम् ' इति एतादृशमन्त्रैः वर्णितम् ।

× द्रष्टव्यम् ' त्वमाविथ नर्यं तुर्वशं यदुं त्वं तुर्वीति वय्यं शतक्रतो । ' (इन्द्रः०) १, ५४, ६; ७९१ ' अरमयः सरपसस्ताराय
कं तुर्वीतये च वययाय च सुतिम् । ' (इन्द्रः०) २, १३, १२; ११४८ ' त्वं महीमवर्णि विश्वधेनां तुर्वीतये वययाय क्षरन्तीम् ।
अरमयो नमसैजदर्णः सुतरणो अकृणोरिन्द्र सिन्धून् । ' (इन्द्रः०) ४, १९, ६; १५२७ ।

+ अत्र सायनाचार्याः ' शिञ्जारः ' इति शब्दस्य शब्दयन्, स्तुवन् इत्यर्थं दत्त्वा अयं शब्दः अत्रेर्विशेषणं इति मन्यन्ते ।

११ [दै. अश्विनौ]

(२) इष्टवस्तुप्रदानेन अवनम् ।

धनम् ।

अंशुः	८,५,२६;	४०९	यथोत कृष्ये धने अंशुम् (आवतम्) ।
त्रासदस्युः	८,८,२१;	४४१	याभिर्नरा त्रासदस्युं आवतं कृष्ये धने ।
त्रासदस्यवः तृक्षिः	८,२२,७;	४७८	येभिः (ऋतस्य पाथिभिः) तृक्षि वृषणा त्रासदस्यवं महे क्षत्राय जिन्वथः ।
दिवोदासः	१,११६,१८;	९४	यदयातं दिवोदासाय वर्तिः भरद्वाजायाश्विना हयन्ता । रेवदुवाह सचनो रथो वां वृषभश्च शिशुमारश्च युक्ता ॥
विमनाः	८,८६,२;	५६८	कथा नूनं वां विमना उप स्तवद् युवं धियं ददथुः वस्य इष्टये ।
विष्णापूः	८,८६,३;	५६९	युवं हि ष्मा पुरुमुजा इमं एधतुं विष्णाप्वे ददथुः वस्य इष्टये ।
सुदाः	१,११२,१९;	७०	याभिः सुदासे ऊहथुः सुदेव्यम् ।
सुषामा	८,२६,२;	४९१	युवं वरो सुषाम्णे महे तने नासत्या ।
वशः	१,११२,१०;	६१	याभिर्वशमदभ्यं प्रेणि आ- वतम् ।
	१,११६,२१;	९७	एकस्या वस्तोः आवतं रणाय वशमश्विना सनये सहस्रा ।
	८,८,२०;	४४०	याभिः वशं दशत्रजं ... आवतं कृष्ये धने ।
जहावी	१० ४०,७;	६०३	युवमश्विना वशं...उपारथुः ।
	३,५८,६;	२३१	युवोर्नरा द्रविणं जहाव्याम् ।
	१,११६,१९;	९५	रथि सुक्षत्रं स्वपत्यं आयुः सुवीर्यं नासत्या वहन्ता । आ जहावीं समनसोप वाजैः त्रिरहो भागं दधतीमयातम् ।

अन्नम् ।

मनुः	१,११२,१६;	६७	मनवे पुरा गातुमीषथुः ।
	१,११२,१८;	६८	मनुं यथा हविः समानम् ।

१,११७,२१; १२२	इषं दुहन्ता मनुषाय ददा
	यवं वृकेणाश्विना वपन्ता
८,२२,६; ४७७	दशस्यन्ता मनवे पूर्यं नि
	यवं वृकेण कर्षथः ।
८,१०,२; ४६६	यद् वा यज्ञं मनवे संभिः
	क्षथुः ।
१,११७,११; ११२	सूनोर्मनिन अश्विना गृणा
	वाजं विप्राय भुरणा रदन्त
८,५,२६; ४०९	यथा वाजेषु सोभिः
	(आवतम्) ।

सदः ।

शुचन्तिः	१,११२,७;	५८	याभिः शुचन्ति धनं सुषंसदम् ।
----------	----------	----	---------------------------------

क्षेत्रपतित्वादि ।

मन्धाता	१,११२,१३;	६४	मन्धातारं क्षेत्रपत्येषु आ- तम् ।
जाहुषः	७,७१,५;	३३६	नि जाहुषं शिथिरं धातमन्त
	१,११६,२०;	९६	परिविष्टं जाहुषं विश्वतः सुगेभिर्नक्तमूहथू रजोभिः

स्त्री ।

कलिः	१,११२,१५;	६६	याभिः कलिं वित्तं वि- दुवस्यथः ।
	१०,३९,८;	५२०	युवं विप्रस्य जरणामुपेयु पुनः कलेरकृणुतं युवद् वयं
श्यावः	१,११७,८;	१०९	युवं श्यावाय रुशतीं अदन्त
	१,११७,२४;	१२५	त्रिधा ह श्यावमश्विना वि- कस्तमुज्जीवस ऐरयतं सुदन्त
विमदः	१,११२,१९;	७०	याभिः पत्नीर्विमदाय न्यूहथुः
	१,११६,१;	७७	यावर्मगाय विमदाय जा- सेनाजुवा न्यूहथू रथेन ।
	१,११७,२०;	१२१	युवं शचीभिर्विमदाय जा- न्यूहथुः पुरुमित्रस्य योषाम्
	१०,३९,७;	५८९	युवं रथेन विमदाय न्यूहथुः पुरुमित्रस्य योषाम्
	८,९,१५;	४५८	यज्ञासत्या पराके अन्तं अस्ति भेषजम् । तेन वृ- विमदाय प्रचेतसा छवि- त्साय यच्छतम् ॥

विमदः

घोषा

कृष्णय

वभिर्मती

अन्तःकः

वप्रः

शरः

अंशः

विमदः (मन्त्रद्रष्टा) १०, २४, ४; ५८० युवं शका मायाविना समीची
निरमन्थतम् । विमदेन
यदीळिता नासत्या निरम-
न्थतम् ॥

पतिः ।

योषा १, ११७, ७; १०८ घोषायै चित् पितृषदे दुरोणे
पतिं जूर्यन्त्या अश्विनावदत्तम् ।
१०, ४०, ९; ६०५ जनिष्ट योषा पतयत् कनी-
नको वि चारुहन् वीरुधो
दंसना अनु । आस्मै रीयन्ते
निवनेव सिन्धवोऽस्मा अहे
भवति तत् पतित्वनम् ॥

पुत्रः ।

कृष्णियः १, ११६, २३; ९९ अवस्यते स्तुवते कृष्णियाय
ऋजूयते नासत्या शचीभिः ।
पशुं न नष्टमिव दर्शनाय
विष्णाप्वं ददथु विश्वकाय ॥
१, ११७, ७; १०८ युवं नरा स्तुवते कृष्णियाय
विष्णाप्वं ददथुः विश्वकाय ।
वधिमती १, ११६, १३; ८९ अजोहवीक्षासत्या करा वां
महे यामन् पुरुभुजा पुरन्धिः ।
श्रुतं तत् शासुरिव वधिमत्या
हिरण्यहस्तमश्विनावदत्तम् ॥
१, ११७, २४; १२५ हिरण्यहस्तमश्विना रराणा
पुत्रं नरा वधिमत्या अदत्तम् ।
६, ६२, ७; ३१२ श्रुतं हवं वृषणा वधिमत्याः ।
१०, ३९, ७; ५८९ युवं हवं वधिमत्या अगच्छतं
युवं सुष्ठुति चक्रथुः पुरन्धये ।

(३) क्षुद्र-पीडानिवारणम् ।

गावः ।

अगस्त्यः ८, ५, २६; ४०९ यथा गोषु अगस्त्यम्
(आवतम् ।)

त्रिशोकः १, ११२, १२; ६३ यामिः त्रिशोकः उस्त्रिया
उदाजत ।

अश्वः ।

पेदुः १, ११६, ६; ८२ यदश्विना ददथुः श्वेतमश्वं
अघाश्वाय शश्वदित् स्वस्ति ।
तद् वां दात्रं महि कीर्तेन्यं भूत्
पैदो वाजी सदमिद्वयो अर्यः ॥

१, ११७, ९; ११० पुरु वर्षास्यश्विना दधाना
नि पेदव ऊहथुराशुमश्वम् ।
सहस्रसां वाजिनमप्रतीत-
महिहन् श्रवस्यं तरुतम् ॥

१, ११८, ९; १३५ युवं श्वेतं पेदव इन्द्रजुत-
महिहन्मश्विनादत्तमश्वम् ।
जोहूत्रमर्यो अभिभूतिमुग्रं
सहस्रसां वृषणं वीड्वङ्गम् ॥

१, ११९, १०; १४७ युवं पेदवे पुरुवारमश्विना
स्पृधां श्वेतं तरुतारं दुव-
स्यथः । शरैरभिधुं पृतनासु
दुष्टरं चर्कृत्यमिन्द्रमिव चर्ष-
णीसहम् ॥

७, ७१, ५; ३६६ नि पेदव ऊहथुराशुमश्वम् ।

१०, ३९, १०; ५९२ युवं श्वेतं पेदवेऽश्विनाश्वं
नवभिर्वाजैर्वती च वाजिनम् ।
चर्कृत्यं ददथुर्द्रावयत्सखं भगं
न नृभ्यो हव्यं मयोभुवम् ॥

अन्तकः

१, ११२, ६; ५७ यामिः अन्तकं जसमानं
आऽरणे... जिजिन्वथुः ।

वध्रः

१, ११२, १५; ६६ यामिः वध्रं विपिपानं...
दुवस्यथः ।

शरः

१, ११६, २२; ९८ शरस्य चिद् आर्चत्कस्याव-
तादा नीचादुच्चा चक्रथुः
पातवे वाः ।

अंशः

१, ११२, १; ५५ यामिः अंशे कारं अंशाय
जिजिन्वथुः ।

ऋतस्तुम् १, ११२, २०; ७१ ओम्यावती सुतरा ऋत-
स्तुमम् ।

ददाशुः १, ११२, २०; ७१ यामिः शन्ताती भवथः
ददाशुषे ।

धीः-प्रवृत्तिः १, ११२, २, ५३ यामिः धियः अवथः कर्म-
क्षिष्टये ।

त्रिमन्तुः १, ११२, ४; ५५ यामिः त्रिमन्तुः अभवत्
विचक्षणः ।

(४) संग्रामे शत्रुहननेन रक्षणम् ।

आर्यः १,११७,२१; १२२ अभि दस्युं बकुरेणा धमन्ता
उरु ज्योतिश्चक्रुः आर्याय ।
कृशानुः १,११२,२१; ७२ याभिः कृशानुं असने
दुवस्यथः ।
त्रसदस्युः १,११२,१४; ६५ याभिः पूर्विये त्रसदस्युं
आवतम् । [धनप्रदानं-
द्रष्टव्यं । ८,८,२१; ४४१]
दिवोदासः १,११२,१४; ६५ याभिः दिवोदासं शम्बरहल्य
आवतम् ।
नरः १,११२,२२; ७३ याभिः नरं गोषुयुधं नृषाह्ये
क्षेत्रस्य साता तनयस्य
जिन्वथः ।
याभी रथान् अवयुः याभिः
अर्वतः ।

पठर्वा १,११२,१७; ६८ याभिः पठर्वा जठर
मज्जनाग्निर्नादोदेक्षित
अज्मन्ता ।
पृथुश्रवाः १,११६,२१; ९७ निरहतं दुच्छुना इन्द्रव
पृथुश्रवसो वृषणावरातीः ।
शर्यातः १,११२,१७; ६८ याभिः शर्यातं अवयः महाव
स्यूमरश्मिः १,११२,१६; ६७ याभिः शारीः आजतं स्यू
श्मये ।
१,११६,२; ७८ वीळुपत्तमभिः आशुहेमभिः
देवानां वा जूतिभिः शाशदा
तद् रासभो नासत्या स
आजा यमस्य प्रधने जिगाय
१,११७,१६; ११७ जातं विष्वाचो अहतं विषे
१,११२,१२; ६३ अनश्वं याभी रथामावर्तं वि

(५) परकृतविविधापद्मयः अवनम् ।

अग्निः १,११२,७; ५८ याभिः ...तप्तं घर्ममोम्याव-
न्तमत्रये...आवतम् ।
१,११२,१६; ६७ याभिर्नरा ... अत्रये.....
गातुमीषयुः ।
१,११६,८; ८४ हिमेनाग्निं प्रंसमवारयेथां
पितुमतीमूर्जमस्मा अधत्तम् ।
ऋवीसे अत्रिमाश्विनावनीत-
मुन्नियथुः सर्वगणं स्वस्ति ॥
१,११७,३; १०४ ऋषिं नरावंहसः पाञ्चजन्य-
मृषीसादत्रिं मुञ्चथो गणेन ।
मिनन्ता दस्योरशिवस्य माया
अनुपूर्वं वृषणा चोदयन्ता ॥
१,११८,७; १३३ युवमत्रयेऽवनीताय तप्तमूर्ज-
मोमानमाश्विनावधत्तम् ।
१,११९,६; १४३ युवं ... उरुष्यथः हिमेन
घर्मं परितप्तमत्रये ।
१,१८०,४; १७८ युवं ह घर्मं मधुमन्तमत्रये-
ऽपो न क्षोदोऽवृणीतमेवे ।
१,१८३,५; २०६ युवां गोतमः पुरुमीळ्हो
अत्रिर्दक्षा हवतेऽवसे हवि-
ष्मान् ।

५,७३,६; २६३ युवोरत्रिश्चिकेतति नरा सुते
चेतसा । घर्मं यद् वामर
नासत्यान्ना भुरण्यति ।
५,७३,७; २६४ उग्रो ह वां ककुहो य
शृण्वे यामेषु सन्ततिः
यद् वां दंसोभिरश्विनाऽत्रि
रावर्तति ॥
५,७४,१; २६८ अत्रिर्वामा विवासति ।
७,६८,५; ३४२ चित्रं ह यद्वां भोजनं न्वरि
न्यत्रये महिष्वन्तं युयोतम्
यो वामोमानं दधते श्रि
सन् ॥
७,७१,५; ३६६ निरेहसस्तमसः स्पर्तमत्रिम्
८,५,२५; ४०८ यथा चित्कण्वमावर्तं प्रियमेध
मुपस्तुतम् । अत्रिं शिवा
मश्विना ॥
श्यावाश्व ८,३५,१९; ५२७ अत्रेरिव शृणुतं पूर्व्यस्तुति
(आत्रेयः)
श्यावाश्वस्य सुन्वतो
च्युता ।
अर्चनाना ८,४२,५; ५३४ यथा वामत्रिरश्विना
(आत्रेयः)
विप्रा अजोहवीत ।

गोपवन ८,७३,३; ५४१ उप स्तृणीतमत्रये हिमेन
(आत्रेयः) धर्ममश्विना । अन्ति षड्भूतु
वामवः ॥

८,७३,७; ५४६ अवन्तमत्रये गृहं कृणुतं
युवमश्विना । अन्ति षड्भूतु
वामवः ॥

८,७३,८; ५४७ वरेथे अग्निमातपो वदते
वल्गवत्रये । अन्ति ० ... ॥

५,७८,४; ३०० अत्रिर्यद् वामवरोहन्तृबीस-
मजोहवीन्नाधमानेव योषा ।
श्येनस्य चिज्जवसा नूतनेना-
ऽऽगच्छतमश्विना शन्तमेन ॥

१०,३९,९; ५९१ युवमृवीसमुत तप्तमत्रय
ओमन्वन्तं चक्रधुः सप्त
वध्रये ।

अग्निः सांख्यः १०,१४३,१; ६२७ ल्यं चिदत्रिमृतजुरमर्थमथं
न यातवे ।

१०,१४३,२; ६२८ ल्यं चिदथं न वाजिनमरे-
णवो यमन्तत । दृढं प्रान्थि
न वि ष्यतमत्रि यविष्ठमा
रजः ॥

१०,१४३,३; ६२९ नरा दंसिष्ठावत्रये शुभ्रा
सिषासतं धियः ।

कण्वः १,४७,५; ४३ याभिः कण्वमभिष्टिभिः
प्रावतं युवमश्विना ।

१,११२,५; ५३ याभिः कण्वं प्र सिषासन्त-
मावतम् ।

१,११७,८; १०९ युवं ... अदत्तं महः क्षोण-
स्याश्विना कण्वाय ।

१,११८,७; १३३ युवं कण्वायापिरिताय चक्षुः
प्रत्यधत्तं सुण्डुति जुजुषाणा ।

८,५,२३; ४०६ युवं कण्वाय नासत्याऽपिरि-
ताय हर्म्ये । शश्वदूतीर्द-
शस्यथः ॥

८,५,२५; ४०८ यथा चित् कण्वमावतम् ।

८,८,२०; ४४० याभिः कण्वं मेधातिथि ...
आवतम् ।

१,११६,२०; ९३ परिविष्टं जाहुषं विश्वतः सी
सुगेभिर्नक्तं ऊऽधुः रजोभिः ।

७,७१,५; ३६६ नि जाहुषं विश्वतः सी

दीर्घतमा १,१५८,४; १७२ उपस्तुतिरौचथ्यमुख्येत् मा
(औचथ्यः) मामिमे पतत्रिणी वि दुग्धाम् ।

मा मामेधो दशतयश्चितो
धाक् प्र यद् वा बद्धस्त्वानि
खादति क्षाम् ॥

१,१५८,५; १७३ न मा गरन् नद्यो मातृतमा
दासा यर्दो सुसमुन्धमवाधु ।
शिरो यदस्य त्रैतनो वितक्षत्
स्वयं दास उरो अंसावपि
ग्ध ॥

रेमः १,११२,५; ५६ याभी रेभं निवृत्तं सित-
मद्भयः ... । तामिह पु
ऊतिभिरश्विना गतम् ।

१,११६,२४; १०० दश रात्रीरशिवेना नव द्यून-
वनद्धं श्रथितमप्स्वन्तः ।

विप्रुतं रेभमुदनि प्रवृत्त-
मुन्नियथुः सोममिव स्त्रुवेण ॥

१,११७,४; १०५ अथं न गूढमश्विना दुरेवै-
र्ऋषिं नरा वृषणा रेभमप्सु ।
सं तं रिणीथो विप्रुतं
दंसोभिर्न ... ॥

१,११७,१२; ११३ हिरण्यस्येव कलशं निखात-
मुदूपथुर्दशमे अश्विनाहन् ॥

१,११८,६; १३२ उद् रेभं दत्ता वृषणा
शचीभिः ।

१,११९,६; १४३ युवं रेभं परिपूतेरुष्पथः ।

१०,३९,९; ५९१ युवं ह रेभं वृषणा गुहा-
हितमुदैरयतं ममृवांसम-
श्विना ॥

वन्दनः १,११२,५; ५६ याभिः [ऊतिभिः] उद्
वन्दनमैरयतं स्वर्दशे ।

१,११६,११; ८७ तद् वां नरा शंस्य राध्यं
चाभिष्टिमन्नासत्या वरूथम् ।
यद् विद्वांसा निधिमिवापगृ-
ह्णमुद् दर्शतादूपथुर्वन्दनाय ॥

१,११७,५; १०३ सुषुप्वांसं न निर्ऋतेरुपस्थे
सूर्यं न दत्ता तमसि क्षियन्तम् ।
शुभे रुक्मं न दर्शतं निखा-
तमुदूपथुरश्विना वन्दनाय ॥

१,११८,६; १३२ उद् वन्दनमैरतं दंसनाभिः ।

(८६)

देवत-संहितायाम्

१,११९,६; १४३ प्र दीर्घेण वन्दनस्तार्यायुषा ॥

१,११९,७; १४४ युवं वन्दनं निरुतं जरण्यया
रथं न दत्ता करणा समिन्वथः ॥

१०,३२,८; ५९० युवं वन्दनमृश्यदादुदूषथुः ।

भुज्युः तौग्न्यः १,११२,६; ५७ भुज्युं याभिः [ऊतिभिः]
अव्यथिभिर्जिजिन्वथुः ।१,११२,२०; ७१ भुज्युं याभिः (ऊतिभिः)
अवथः ।१,११६,३-५; ७९-८१ तुग्रो ह भुज्युमश्विनोदमेघे
रयि न कश्चिन्ममृवाँ अवाहाः ।
तमूहथुर्नौभिरात्मन्वतीभि
रन्तरिक्षप्रुद्धिरपोदकाभिः ॥
तिस्रः क्षपस्त्रिरहातिवज्रि-
र्नासत्या भुज्युमूहथुः पतङ्गैः ।
समुद्रस्य धन्वन्नाद्रस्य पारे
त्रिभौ रथैः शतपङ्क्तिः षळ-
श्वैः ॥ अनारम्भणे तदवी-
रयेथामनास्थाने अग्रभणे
समुद्रे । यदश्विना ऊहथुर्भुज्यु-
मस्तं शतारित्रां नावमात-
स्थिवांसम् ॥१,११७,१४; ११५ युवं भुज्युमर्णसो निः समुद्राद्
विभिरूहथुर्भ्रजेभिरश्वैः ॥१,११७,१५; ११६ अजोहवीदश्विना तौग्न्यो वां
प्रोळ्हः समुद्रमव्यथिर्जग-
न्वान् ।निष्ठमूहथुः सुयुजा रथेन
मनोजवसा वृषणा स्वस्ति ॥

१,११८,६; १३२ निष्टौग्न्यं पारयथः समुद्रात् ।

१,११९,४; १४१ युवं भुज्युं भुरमाणं विभिर्गतं
स्वयुक्तिभिर्निवहन्ता पितृभ्य
आ । यासिष्टं वर्तिवृषणा
विजेयम्... ।१,११९,८; १४५ अगच्छतं कृपमाणं परावति
पितुः स्वस्य त्यजसा निवा-
धितम् ।१,१५८,३; १७१ युक्तो ह यद् वा तौग्न्याय
पेरुर्वि मध्ये अर्णसो धायि पञ्जः ।१,१८०,५; १७९ आ वा दानाय ववृतीय दत्ता
गोरोहेण लौक्योऽयम् ।

१,१८२,५-७; १९८-२०० युवमेतं चक्रथुः सिन्धुः

लवमात्मन्वन्तं पक्षिणं

ग्न्याय कम् । येन देवैः

मनसा निरूहथुः सुयुजः

पेतथुः क्षोदसो महः ॥

विद्धं तौग्न्यमप्स्वन्तर

म्भणे तमसि प्रविद्धः

चतस्रो नावो जठलस्य

उदश्विभ्यामिषिताः पतङ्गैः

न्ति ॥ कः सिद्धः

निष्ठितो मध्ये अर्णसो

तौग्न्यो नाधितः पर्येष

जत् । पर्णा मृगस्य पत

रिवारभ उदश्विना ऊ

श्रोमताय कम् ॥

६,६२,६; ३११ ता भुज्युं विभिरूहथुः

द्रात् तुग्रस्य सूनुमूहथुः

भिः । अरेणुभिर्योजनेभि

जन्ता पतत्रिभिरर्णसो नि

पस्थात् ॥

७,६८,७; ३४४ उत त्वं भुज्युमश्विना सखि

मध्ये जहुर्दुरवासः समुद्रे ।

निरौ पर्षदरावा यो युवाङ्ग

७,६९,७; ३५३ युवं भुज्युमवविद्धं

उदूहथुरर्णसो अलिधानैः ।

पतत्रिभिरश्रमैरव्यथिभिर्द

नाभिरश्विना पारयन्ता ॥

८,५,२२; ४०१ कदा वां तौग्न्यो वि

समुद्रे जहितो नरा ।

वां रथो विभिर्वपतात् ॥

१०,३९,४; ५८६ निष्टौग्न्यमूहथुरूहथुः

१०,४०,७; ६०३ युवं ह भुज्युं...उपारथुः ।

१०,१४३,५,६३१ युवं भुज्युं समुद्र आ रव

पार ईङ्खितम् । यात

च्छा पतत्रिभिर्नासत्या सात

कृतम् ॥

सप्तवाधिः ५,७८,५; ३०१ वि जिहीष्व वनस्पते यो

सूष्यन्त्या इव । श्रुतं

अश्विना हवं सप्तवाधि

मुञ्चतम् ॥

५,७८६; ३०२ भीताय नाधमानाय ऋषये
सप्तवध्रये । मायाभिरश्विना
युवं वृक्षं सं च वि चाचथः ॥
८,७३,२; ५४८ प्र सप्तवध्रिराशसा धाराममे-

रशायत ।

१०,३९९; ५९१ ओमन्त्रन्तं चक्रयुः सप्तवध्रये ।
८,९२,१२; ४८३ ' याभिः किवि वावृधुः ' ।
[वन्दनपीडानिवारणार्थ एतत् कर्म इति केचित्]

(६) भिवक्कर्मणा अवनम् ।

प्रत्यधत्तम् ।

सामः १,११७,१९; १२० मही वामूतिरश्विना मयोभूः
उत सामं धिष्ण्या सं रिणीथः ।
नार्षदः १,११७,८; १०९ प्रवाच्यं तद् वृषणा कृतं वां
यन्नार्षदाय श्रवो अध्यधत्तम् ।
परावृज् १,११२,८; ५९ याभिः शचीभिः वृषणा परा-
वृजं प्रान्धं श्रोणं चक्षस
एतवे कृथः । +
कविः १,११६,१४; ९० उतो कविं पुरुभुजा युवं ह
कृपमाणं अकृणुतं विचक्षे ।
ऋज्राश्वः १,११६,१६; ९२ शतं मेषान् वृक्ये चक्षदान-
मृज्राश्वं तं पितान्धं चकार ।
तस्मा अक्षी नासत्या विचक्ष
आधत्तं दद्या भिषजावनर्वन् ।
१,११७,१७; ११८ शतं मेषान् वृक्ये मामहानं
तमः प्रणीतमशिवेन पित्रा ।
आक्षी ऋज्राश्वे अश्विना-
वधत्त ज्योतिरन्धाय चक्र
शुर्विचक्षे ॥
१,११७,१८; ११९ शुनमन्धाय भरमहयत् सा
वृकीरश्विना वृषणा नरेति ।
जारः कनीन इव चक्षदान
ऋज्राश्वः शतमेकं च मेषान् ॥
१,१२०,६; १५३ श्रुतं गायत्रं तक्रवानस्याहं
चिद्धि रिरिभाश्विना वाम् ।
आक्षी शुभस्पती दन् ॥
१,११२,१०; ६१ याभिर्विशपलां धनसामथर्व्यं
सहस्रमीलह आजवाजिन्व-
तम् ।
१,११६,१५; ९१ चरित्रं हि वेरिवाच्छेदि पर्ण-
माजा खेलस्य परितकम्या-
याम् । सद्यो जङ्गामायसीं
विशपलायै धने हिते सतवे

१,११७,११; ११२ सं विशपलां नासत्यारिणी-
तम् ।
१,११८,८; १३४ प्रति जङ्गा विशपलाया अध-
त्तम् ।
१,१८२,१; १९४ विशपलावसू दिवो नपाता ।
१०,३९,८; ५९० युवं सद्यो विशपलामेतवे कृथः ।
१,११६,१२; ८८ तद् वां नरा सनये दंस उग्रं
आविष्कृणोमि तन्यतुनं वृष्टिम् ।
दध्यङ् ह यन्मध्वार्थवणो
वामश्वस्य शीर्ष्णां प्र यदी-
मुवाच ॥
१,११७,२२; १२३ आथर्वणायाश्विना दधोचेड-
श्व्यं शिरः प्रत्यैरयतम् । स
वां मधु प्र वोचहतायन् त्वाष्ट्रं
यद् दद्यावपिकक्ष्यं वाम् ।
१,११९,९; १४६ युवं दधोचो मन आ विवा-
सद्योऽथा शिरः प्रति वामश्व्यं
वदत् ।
च्यवनः १,११६,१०; ८६ जुजुरुषो नासत्योत वत्रि
प्रामुद्यतं द्रापिमिव च्यवानात् ।
प्रातिरतं जरितस्यायुर्दद्या-
दित पतिमकृणुतं कनीनाम् ॥
१,११७,१३; ११४ युवं च्यवानमश्विना जरन्तं
पुनर्युवानं चक्रयुः शचीभिः ।
१,११८,६; १३२ पुनश्च्यवानं चक्रयुर्वुवानम् ॥
५,७४,५; २७२ प्र च्यवानाज्जुजुरुषो वत्रि-
मत्कं न मुञ्चथः । युवा यदी
कृथः पुनरा काममृण्वे वध्वः ॥
५,७५,५; २८२ विभिश्च्यवानमश्विना नि
याथो अद्वयाविनं माध्वी
मम श्रुतं हवम् ॥

+ द्रष्टव्यम् - ' नीचा सन्तमुदनयः परावृजं प्रान्धं श्रोणे श्रवयन्त्सास्युकथ्यः (इन्द्रः) । २,१३,१२; ११४८ । स विद्वो अपगोहं

कनीनामाविर्भवन्नुदतिष्ठन् परावृक् । प्रतिश्रोणः स्याद् व्यनगचष्ट सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार ।' (इन्द्रः) २,१५,७; ११३८ ।

७,६८,६; ३४३ उत त्यद् वां जुरते अश्विना
भूच्यवानाय प्रतीत्यं हविर्दे ।
अधि यद् वर्ष इत ऊति धत्थः ॥
७,७१,५; ३६६ युवं च्यवानं जरसोऽमुमुक्तम् ।
१०,३९,४; ५८६ युवं च्यवानं सनयं यथा रथं
पुनर्युवानं चरथाय तक्षथुः ।
कलिः १०,३९,८; ५९० युवं विप्रस्य जरणां उपेयुषः
पुनः कलेरकृणुतं युवद् वयः ।

१,११२,१५; ६६ याभिः कलिं विन्त
दुवस्यथः ।
श्यावाश्वः १,११७,२४; १२५ त्रिधा ह श्यावं अश्वि
विकस्तं उज्जीवस एष
सुदानू ।
१,११७,८; १०९ युवं श्यावाय रुशतो अदत्त
विप्रः १,११९,७; १४४ क्षेत्राद् आ विप्रं ज
विपन्यया ।

(७) अन्येषां प्राणिनामवनम् ।

अर्वा १,११२,२१; ७२ जवे याभिः यूनः अर्बन्तं
आवतम् ।
गावः १,११२,१९; ७० आ घ वा याभिः अरुणाः
अशिक्षतम् ।
१,११२,१८; ६९ अग्रं गच्छथः विवरे गो-
अर्णसः ।
१,११२,३; ५४ याभिः [ऊतिभिः] धेनुं
अस्वं पिन्वथो नरा ।
शयुः १,११२,१६; ६७ याभिः [ऊतिभिः] नरा
शयवे... गातुमीषथुः ।
१,११६,२२; ९८ शयवे चिन्नासत्या शचीभि-
र्जसुरये स्तयं पिप्यथुर्गाम् ।
१,११७,२०; १२१ अधेनुं दद्या स्तयं विषक्ताम-
पिन्वतं शयवे अश्विना गाम् ।
१,११७,१२; ११३ दिवो नपाता वृषणा शयुत्रा ।
१,११८,८; १३४ युवं धेनुं शयवे नाधिताया-
पिन्वतमश्विना पूर्याय ।
१,११९,६; १४२ युवं शयोरवसं पिप्यथुर्गवि ।
६,६२,७; ३१२ दशस्यन्ता शयवे पिप्यथुर्गाम्
७,६८,८; ३४५ उत श्रुतं शयवे हूयमाना ।

यावध्न्यामपिन्वतमपो
स्तयं चिच्छकलश्वि
शचीभिः ।
१०,३९,१३; ५९५ अपिन्वतं शयवे धेनुमश्वि
१०,४०,८; ६०४ युवमश्विनः शयुं युवं
उरुष्यथः ।
मक्षिका १,११२,२१; ७२ मधु प्रियं भरथः
सरड्भ्यः ।
१,११९,९; १४६ उत स्या वां मधुमन्म
कारपत् ।
वर्तिका १,११२,८; ५९ याभिर्वर्तिकां प्रसित
मुञ्चतम् ।
१,११६,१४; ९० आस्नो वृकस्य वर्तिकामश्वि
युवं नरा नासत्यामुमुक्तम् ।
१,११७,१६; ११७ अजोहवीदश्विना वर्तिका
माहो यत् सीममुञ्चतं वृकस्य
१,११८,८; १३४ अमुञ्चतं वर्तिकामहसो नि
१०,३९,१३; ५९५ वृकस्य चिद् वर्तिकामन्त
स्याद् युवं शचीभिर्प्रसित
मुञ्चतम् ।

(८) अतिमानुषाणि कर्माणि ।

१,११६,२०; ९६ विभिन्दुना नासत्या रथेन
वि पर्वतो अजरयू अया-
तम् ।
१,११७,१६; ११७ वि जयुषा ययथुः सान्वद्रेः ।
१,११६,९; ८५ परावतं नासत्यानुदेशाम् ।

क्षरजापो न पायनाय
सहस्राय तृष्यते
मस्य ।
१,११६,७; ८३ कारोतराच्छफादश्वस्य
शतं कुम्भा अस्मिन्तं
याः ।

१,११७,६; १०७ शफादध्वस्य वाजिनो जनाय
शतं कुम्भान् असिञ्चतं
मधूनाम् ॥

१,११२,१२; ६३ याभी रसां क्षोदसोद्वः पिपि-
न्वथुः ।

१,११२,९; ६० याभिः सिन्धुं मधुमत्तम-
सश्चतम् ।

१,११२,११; ६२ याभिः सुदानू औशिजाय
वणिजे दीर्घश्रवसे मधु
कोशो अक्षरत् ।

१,११२,४; ५५ याभिः परिज्मा तनयस्य
मज्जना द्विमाता तूर्ध्व तरणि-
र्विभूषति ।

१,११२,१३; ६४ याभिः सूर्यं परियाथः परा-
वति ।

सूर्यस्य दुहिता १,३४,५; १६ त्रिष्ठं वां सूर्ये दुहिता रुहद्
रथम् ।

१,११६,१७; ९३ आ वां रथं दुहिता सूर्यस्य
कार्मन्वातिष्ठदर्वता जयन्ती ।
विश्वे देवा अन्वमन्यन्त
हङ्गिः समु श्रिया नासत्या
सचेथे ॥

१,११७,१३; ११४ युवो रथं दुहिता सूर्यस्य
सह श्रिया नासत्यावृणीत ॥

१,११८,५; १३१ आ वां रथं युवतिस्त्रिष्ठदत्र
जुष्ट्वी नरा दुहिता सूर्यस्य ।

१,११९,२; १३२ आ वामूर्जानी रथमश्विना-
रुहत् ॥

१,११९,५; १४२ युवोरश्विना वपुषे युवायुजं
रथं वाणी येमतुरस्य शर्धम् ।
आ वां पतित्वं सख्याय
जग्मुषी योषावृणीत जेन्या
युवां पती ॥

१,१८४,३; २१० श्रिये पूषन्निषुक्तेव देवा
नासत्या वहतुं सूर्यायाः ।
वच्यन्ते वां ककुहा अप्सु
जाता युगा जूर्णेव वरुणस्य
भूरेः ॥

५,७३,५, २६२ आ यद् वां सूर्या रथं
तिष्ठद् रघुष्यदं सदा । परि
वामरुषा वयो घृणा वरन्त
आतपः ॥

६,६३,५; ३२१ अधि श्रिये दुहिता सूर्यस्य
रथं तस्थौ पुरुभुजा शतो-
तिम् ।

७,६९,३; ३४३ वि वां रथो वच्चा याद-
मानोऽन्तान् दिवो बाधते
वर्तनिभ्याम् ।

७,६९,४; ३५० युवोः श्रियं परि योषावृणीत
सूरो दुहिता परितक्म्यायाम् ।

८,८,१०; ४३० आ यद् वां योषणा रथ-
मतिष्ठद् वाजिनीवसू ।
विश्वान्यश्विना युवं प्र धीता-
न्यगच्छतम् ॥

अश्विनो-देवताया गुणबोधक-सामासिक-पदानां उत्तरपद-सूची ।

दीदि - अमी १,१५,११; ४
रिश - अदसा ८,८,१७; ४३७
अन् - अपच्युता ८,२७,६; ४९६
न - असत्या १,३,३; ३
सु - अश्वा ७,६८,१; ३३८
शत - क्रतू १,११२,२३; ७४
स - क्षणी ८,२२,१५; ४८६
अग्नि - गू ५,७३,२; २५९
विश्व - गूर्ती १,१८०,२; १७६
सु - गोपा १,१२०,७; १५४
अवय - गोहना १,३४,३; १४
१२ [दे. अश्विनो]

पुरु (श्व) - चन्द्रा ८,५,३२; ४१५
गम्भीर - चेतसा ८,८,२; ४२२
वत्स-प्र - चेतसा ८,८,७; २९७
वि - चेतसा ५,७४,९; २७६
मद - च्युता ८,२२,१६; ४८७
अ - जरौ १,११२,९; ६०
धी - जवना ८,५,३५; ४१८
मनो - जवसा १,११७,१५; ११६
पुरा - जा ७,७३,१; ३७३
सु - जाता १,११८,१०; १३६
धियं - जिन्वा १,१८२,१; १२४

स - जोषसा ३, ५८, ७; २३२
 सचनस् - तमा ८, २६, ८; ४९७
 मनस् (नो) - तरा १, ४६, २; २५
 अ - तूर्तदक्षा ८, २६, १, ४९०
 पुरु - त्रा २, ३९, १; २१५
 मर्त्य - त्रा ६, ६२, ८; ३१३
 शयु - त्रा १, ११७, १२; ११३
 पुरु - दंसा ७, ७३, १; ३७३
 पुरु - दंससा १, ३, २; २
 सु - दंससा ८, १०, ३; ४६७
 अतूर्त - दक्षा ८, २६, १; ४९०
 सु - दक्षा ३, ५८, ७; २३२
 सु - दानू १, ११२, ११; ६२
 अ - दाभ्या ५, ७५, ७; २८४
 वसु - धिती १, १८१, १; १८५
 दिवो (वः) - नपाता १, ११७, १२; ११३
 दिवो (वः) - नरा १०, १४३, ३; ६२९
 अ - निन्या १, १८०, ७; १८१
 दानुनः (स्) - पती ८, ८, १६; ४३६
 नृ - पती ७, ६७, १; ३२८
 शची - पती ७, ६५, ५; ३३२
 शुभ् (स्) - पती १, ३, १; १
 सत् - पती अथर्वे ७, ७३, ४; ३७६
 पुरु - पन्था ६, ६३, १०; ३२६
 सु - पर्णा ४, ४३, ३; २४६
 तनू - पा ८, ९, ११; ४४९
 पर (स्) - पा ८, ९, ११; ४४९
 सु-गो - पा १, १२०, ७; १५४
 छर्दिस् - पौ ८, ९, ११; ४४९
 जगत् - पौ ८, ९, ११; ४४९
 मधु - पौ १, १८०, २; १७६
 द्रवत् - पाणी १, ३, १; १
 वीळु - पाणी ७, ७३, ४; ३७६
 मधु - पातमा ८, २२, १७; ४८८
 दक्ष - पिता वा० य० १४, ३; ६३६
 हिरण्य - पेशसा ८, ८, २; ४२२
 वत्स - प्रचेतसा ८, ८, ७; ४२७
 अरि - प्रा ८, ८, ९; ४२९
 अध - प्रिया ८, ८, ४; ४२४
 पुरु - प्रिया ८, ५, ४; ३८५

ऋत - प्सू १, १८०, ३; १७७
 पुरु - भुजा १, ३, १; १
 पुरु - भू ४, ४४, ४; २५४
 मयस् (यो) - भुवा १, २२, १८; ५१
 शम् - भू १, ४६, १३; ३६
 शम् - भुवा ८, ८, १९; ४३९
 शम् - भविष्ठा २, ३२, ५; २१९
 सचा - भुवा १, ३४, ११; २२
 पुरु - भोजसा ८, २२, १६; ४८७
 अश्व (श्वा) - मघा ७, ७१, १; ३६२
 गो - मघा ७, ७१, १; ३६२
 पुरु - मन्तू १, १५८, १; १६९
 पुरु - मन्द्रा ८, ५, ४; ३८७
 पुनर् - मन्यौ १, ११७, १४; ११५
 अ - मर्त्या ८, २६, १७; ५०६
 सिन्धु - मातरा १, ४३, २; २५
 प्रिय - मेधा ८, ८, १८; ४३८
 प्रातर - यावाणा २, ३२, २; २१६
 शुभ्र - यावाना ८, २६, १९; ५०८
 प्रातर - युजा १, २२, १; ५
 सु - युजा ७, ७०, २; ३५६
 मधु (धू) - युवा ५, ७३, ८; २६५
 सु - रथा १, २२, २; ६
 चित्र - राती ६, ६२, ५; ३१०
 अ - रेपसा १, १८१, ४; १८८
 मधु - वर्णा ८, २६, ६; ४९२
 रुद्र - वर्तनी १, ३, ३; ३
 हिरण्य - वर्तनी १, २२, १; ५१
 जेन्या - वसू ७, ७४, ३; ३८०
 पुरु - वसू १, ४७, १०; ४८
 मना - वसू ५, ७४, १; २६८
 वाजिनी - वसू २, ३७, ५; २१४
 विरपला - वसू १, १८२, १; १९४
 वृषन् (ण) - वसू २, ४१, ८; २२४
 शची - वसू १, ६७, ५; ३३२
 सूर्या - वसू ७, ६८, ३; ३४०
 विश्व - वारा ७, ७०, १; ३५५
 यज्ञ - वाहसा १, १५, ११; ४
 विप्र - वाहसा ५, ७४, ७; २७४
 अहर् - विदा ८, ५, २; ३९२
 ऋतु - विदा २, ३९, २; २१६

वसु - विदा	१,४६,२; २५
स्वर - विदा	८,८,७; ४२७
सु - वीरा	८,२६,७; ४९६
ऋत (ता) - वृधा	१,४७,१; ३९
न - वेदसा	१,३४,१; १२
विश्व - वेदसा	१,४७,४; ४२
शुचि - व्रता	१,१५,११; ४
पुरु - शाकतमा	६,६२,५; ३१०
सु - श्रुता	२,३९,६; २२०
हवन - श्रुता	५,७५,५; २८२
न - अ-सत्या	१,३,३; ३
ययुजान - सप्ती	६,६२,४; ३०९

वाज - सातमा	८,५,५; ३८८
शूर - साता	१,१५७,२; १६४
सु - स्तु [दृ] ता	६,६३,६; ३२२
दिवि - स्पृशा	१,२२,२; ६
पुरु - स्पृहा	८,८,२२; ४४२
अ - सिधा	३,५८,७; २३२
रक्षः (क्षो) - हना (णा)	७,७३,४; ३७६
वृत्र - हन्तमा	८,८,९; ४२९
सु - हवा	८,२२,१; ४७२
पुरु - हृता	६,६३,१; ३१७
याम - हृतमा	८,७३,६; ५४५
आशु - हेषसा	८,१०,२; ४६६

अश्विनौ-देवतामन्त्राणां वर्णानुक्रमसूची ।

अकारि वामन्धसो	३१९	अभुत्सु प्र देव्या साकं	४५९	अश्वं न गूढहमाश्विना	१०५
अगच्छतं कृपमाणं	१४५	अभूदंद वयुनमो	१९४	अश्वीसो ये वामुप	३८१
अग्निनेन्द्रेण वरुणेन	५०९	अभूदु पारमेतवे	३४	अश्विना घर्म पात२	६७०
अङ्गिरस्वन्ता उत	५२२	अभूदु भा उ अंशवे	३३	अश्विना परि वामिषः	२३३
अचेति दक्षा व्युनाकम्	१६१	अभूदुषा रुशत पशुः	२८६	अश्विना पिबतं मधु	४
अजोहवीदश्विना तौग्न्यो	११६	अमाजुरश्विद् भवथो	५८५	अश्विना पुरुदंससा	२
अजोहवीदश्विना वर्तिका	११७	अयं वां कृष्णो अश्विना	५६०	अश्विना ब्रह्मणा यातम्	६७१
अजोहवीजासत्या	८९	अयं वां घर्मो अश्विना	४४७	अश्विना मधुमत्तमं	४१
अतः सहस्रनिर्णिजा	४३१	अयं वामद्विभिः सुतः	४७९	अश्विना मधुपुत्तमो	२३४
अतारिष्म तमसः २०७; २१३; ३७३		अयं वां भागो निहितो	५३९	अश्विना यज्वरीरिषो	१
अत्यायातमश्विना	२७९	अयं वां मधुमत्तमः	३९	अश्विना यद्ध कर्हि	२७७
अत्रिर्धेद् वामवरोहन्	३००	अयं समह मा तनूहि	१५८	अश्विना यामहृतमा	५४५
अत्रेरिव शृणुतं	५२७	अयं ह यद् वां देवया	३४१	अश्विना वर्तिरस्मदा	४९
अदित्यास्त्वा पृष्ठे सादयामि	६३८	अरं मे गन्तं हवनाय	३१८	अश्विना वाजिनीवसू	२९२
अथ स्वप्रस्य निर्विदे	१५९	अरित्रं वां दिवस्पृथु	३१	अश्विना वायुना युवं	२३२
अथा ह यन्तो अश्विना	३८२	अरुणप्सुरुषा अभूद्	५५५	अश्विनावेह गच्छतं	२८४; २९७
अधि श्रिये दुहिता	३२१	अर्वाग् रथं नि यच्छतं	५३०	अश्विना सारघेण मा	६७५; ६८८
अधेनुं दक्षा स्तर्यं विषक्तां	१२१	अर्वाङ् त्रिचक्रो मधु०	१६५	अश्विना सु विचाकशद्	५५६
अध्वर्युं वा मधुपाणिं	६१३	अर्वाञ्चमय ययं	२१४	अश्विना स्वृषे स्तुहि	४९२
अनारम्भेण तदवीरयेथाम्	८१	अर्वाञ्चा वां सप्तयो	४६	अश्विना हरिणाविव	२९८
अन्तरैश्चक्रेस्तनयाय	३१५	अवन्तमत्रये गृहं	५४६	अश्विना हविरिन्द्रियं	६५६
अप स्वसुरसो	३६२	अवविद्धं तौग्न्यम्	१९९	अश्विनोरसनं रथम्	१५७
अपातामश्विना घर्मम्	६४०	अवस्पते स्तुवते	९९	असर्जि वां स्थविरा	१९१
अप्रस्वतीमश्विना	७५	अविष्टं धीवश्विना	३३३	असश्चता मघवद्भयो	३३६
अबोध्यभिर्जम् उदेति	१६३	अवोर्वा नूनमश्विना	३२१	अस्ति हि वामिह स्तोता	२७३
अभि वां नूनमश्विना	३३०	अशोच्यभिः समिधानो	३२९	असभ्यं वाजिनीवसू	३९५

अस्मभ्यं सु वृषण्वसू	५०४	आपी वो अस्मे पितरेव	६१७	इदं हि वां प्रदिवि	२९
अस्माकमय वामयं	४०१	आ मात्यमिषसाम्	२८७	इन्द्रतमा हि धिष्ण्या	१९
अस्मिन् यज्ञे अदाभ्या	२८५	आ मन्येथामा गतं	२२२	इमं मे स्तोममश्विना	५५
अस्मे आ वहतं रथिं	३९८	आ मे अस्य प्रतीव्यम्	४२७	इमा ल वां दिविष्टय	३७
अस्मे ऊ पु वृषणा	२०९	आ मे वचांस्युयता	५७८	इमा ब्रह्माणि वर्धना	२६
अस्मे सा वां माध्वी रातिः	२११	आ मे हवं नासत्या	५५८	इयं मनीषा इयमश्विना	३६१; ३६
अस्य पिबतमश्विना	३९७	आ यद् वां योषणा	४३०	इयं वामहे शृणुतं	५८
अहेम यज्ञं पथा०	३७५	आ यद् वां सूर्या रथं	२६२	इह त्या पुरुभूतमा	२५२; ४७
आकेनिपासो अहभिः	२४२	आ यातं नहुषस्पर्या	४२३	इहा गतं वृषण्वसू	५४
आ गोमता नासत्या	३६८	आ यात मुप भूषतं	३८०	इहेह जाता समवाव०	१८
आञ्जनस्य मदुघस्य	६४९	आरङ्गरेव मध्वेरयेथे	६२३	इहेह यद् वां समना	२५०; २५
आ तिष्ठतं सुवृतं	२०४	आ वहेथे पराकात्	४१४	ईळे यावापृथिवी	५
आ तेन यातं मनसो	५९४	आ वां रथं युवतिः	१३१	ईमान्यद् वपुषे वपुः	२६
आथर्वणायाश्विना	१२३	आ वां रथं दुहिता	९३	उक्थेभिरर्वागवसे	४८
आदारो वां मतीनां	२८	आ वां रथमवमस्यां	३६४	उग्रो वां ककुहो ययिः	२६
आ न ऊर्जं वहतम्	१६६	आ वां रथं पुरुमायं	१३८	उत ल्यं वीरं धनसाम्	५७
आ नः स्तोममुप द्रवत्	३९०	आ वां रथो अश्विना	१२७	उत ल्यद् वां जुरते	३४
आ नासत्या गच्छतं	२१	आ वां रथो रथानां	२७५	उत ल्यं भुज्युमश्विना	३४
आ नासत्या त्रिमिरेकादशैः	२२	आ वां रथो रोदसी	३४७	उत त्या दैव्या भिषजा	४७
आ नूनं यातमश्विना ४२२; ४५७; ५७६		आ वां रथोऽवनिर्न	१८७	उत नो गोमतीरिष	३९
आ नूनं रघुवर्तनिं	४५१	आ वां वयोऽश्वासो	३२३	उत नो दिव्या इष	४०
आ नूनमश्विना युवं	४४४	आ वां वाहिष्ठो अश्विना	४९३	उत म ऋज्रे पुरयस्य	३२
आ नूनमश्विनोऽक्रषिः	४५०	आ वां विप्र इहावसे	४२९	उत स्या वां मधुमत	१८
आ नो अश्ववदश्विना	४८८	आ वां विश्वाभिरुतिभिः ४३८; ५७४		उत स्या वां रुशतो	१९
आ नो अश्विना त्रिवृता	२३	आ वां श्येनासो अश्विना	१३०	उत स्या श्वेतयावरी	५०
आ नो गन्तं मयोभुवा	४३९	आ वां सुग्रे वरिमन्	३२७	उता यातं संगवे	२८
आ नो गन्तं रिशादसा	४३७	आ वां सुग्रेः शंयू इव	६३२	उदीराथामृतायते	५४
आ नो गव्येभिरश्व्यैः	५५३	आ वां प्रावाणो अश्विना	५३३	उदु स्तोमासो अश्विनोः	३७
आ नो गोमन्तमश्विना	३२३	आ वां दानाय ववृतीय	१७९	उद् वन्दनमैरतं	११
आ नो देवेभिरुप	३६२	आ वां नरो मनोयुजो	२८३	उद् वां पृक्षासो मधुमन्तः	२३
आ नो शुभ्रैरा श्रवोभिः	४१५	आ वामगन्तसुमतिः	६०८	उप त्या वर्ही गमतो	३७
आ नो नावा मतीनां	३०	आ वामश्वासः शुचयः	१८६	उप नो यातमश्विना	४९
आ नो यातं दिवस्पर्या	४२४	आ विश्ववाराश्विना गतं	३५५	उप नो वाजिनीनसू	४७
आ नो यातं दिवो अच्छा	२५५	आ शुभ्रा यातमश्विना	३३८	उपस्तुतिरौचथ्यम्	१७
आ नो यातमुपश्रुति	४२५	आ श्येनस्य जवसा	१३७	उप स्तृणीतमत्रये	५४
आ नो रत्नानि विभ्रतौ	२८०	आश्विनावश्वावती	९	उपायातं दाशुषे मर्त्ययि	३६
आ नो विश्वान्यश्विना	४३३	आ सुग्म्याय सुग्म्य	४८६	उभा उ नूनं तदिदर्थ०	४१
आ नो विश्वाभिरुतिभिः	४२१	आस्तो वृकस्य वर्तिका०	९०	उभा पिबतमश्विना	५७
आ परमाभिस्त	३१६	आहं खिदामि ते मनो	६४८	उभा हि दद्या भिषजा	२४
आ पश्वाताज्ञासत्या	३७२; ३७७	आ हि रुहतमश्विना	४८०	उरु वां रथः परि	६१

१:

दशस्यन्ता मनवे	४७७
दसा युवाकवः सुता	३
दसा हि विश्वमानुषङ्	४९५
दिवश्चिद् रोचनादध्या	४९७
दिवस्त्वप्वास इन्दवो	३२
दीर्घतमा मामतेयो	१७४
दुहीयन् मित्रधितये	१५६
दूरादिदेव यत्	३८४
देव इन्द्रो नराशंसः	६६६
देवं बर्हिर्वीरितीनां	६६८
देवं बर्हिः सरस्वती	६५९
देवा देवानां भिषजा	६६४
देवी उषासावश्विना	६६१
देवी ऊर्जाहुती दुधे	६६३
देवी जोष्टी सरस्वती	६६२
देवीद्वारो अश्विना	६६०
देवीस्तिष्ठास्तिष्ठो देवीः	६६५
देवो अग्निः स्विष्टकृद्	६६९
देवो देवैर्वनस्पतिः	६६७
द्युभिरकतुभिः परि	७६
द्युम्नी वां स्तोमो अश्विना	५७२
द्यौये समश्विना प्रावतं	६७३
धेनुः प्रतनस्य कामं	१२६
धेनूर्जिन्वतमुत	५२६
ध्रुवक्षितिर्ध्रुवयोनिः	६३४
न तं राजानावदिते	५९३
न तस्य विश्व तदु	६०७
न मा गरन् नद्यो	१७३
नमोवाके प्रस्थिते	५३१
न यत् परो नान्तर	२२३
नरा गौरैव विद्युतं	३५२
नरा दंसिष्ठावत्रये	६२९
न संस्कृतं प्र मिर्मातो	२८८
नहि वामस्ति दूरके	८
नावेव नः पारयतं	२१८
नासत्याभ्यां बर्हिर्विव	७७
निमिषश्चिज्जीयसा	५४१
नि यद् युवेये नियुतः	१८०
नि पु ब्रह्म जनानां	३९६
नू नो रयिं पुरुवीरं	२५६

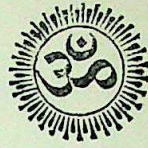
नू मे गिरो नासत्या	५६६
नू मे हवमा शृणुतं	३३७; ३५४
नृवद् दसा मनोयुजा	३८५
न्यघ्न्यस्य मूर्धनि चक्रं	११
न्यु प्रियो मनुषः सादि	३७४
पनायं तदस्विना	५३८
पज्जैव चर्चरं जारं	६२०
परावतं नासत्यान्	८५
परिविष्टं जाहुषं	९६
पिबतं सोमं मधुमन्तं	५७५
पिबतं घर्मं मधुमन्तं	५७३
पिबतं च तृष्णुतं चा	५१८
पुत्रमिव पितरौ	६२६
पुरं न धृषणवा रुज	५५७
पुराणमोकः सख्यं	२३१
पुराणा वां वीर्या प्र	५८७
पुरुत्रा चिद्धि वां नरा	३९९
पुरुप्रिया ण ऊतये	३८७
पुरुमन्द्रा पुरुवसू	४३२
पुरु हि वां पुरुभुजा	३२४
पुरु वर्षास्यश्विना	११०
पूर्वापुषं सुहवं	४७३
पृथिव्याः पुरीषमस्यप्सो	६३७
पौरं चिद्धयुदपुतं	२७१
प्र च्यवानाञ्जुजुषो	२७२
प्रति प्रियतमं रथं	२७८
प्रति वां रथं नृपती	३२८
प्र युम्नाय प्र शवसे	४६३
प्र बोधयोषो अश्विना	४६०
प्र यद् वहेथे महिना	१८३
प्र या घोषे भृगवाणे	१५२
प्र ये ययुरवृकासो	३८३
प्रवद्यामना सुवृता	१२९
प्र वां रथो मनोजवा	३४०
प्र वां शरद्वान् वृषभो	१९०
प्र वां स्तोमाः सुवृक्तयो	४४२
प्र वां दंसांस्यश्विनावोचम्	१०१
प्र वां निचेरुः ककुहो	१८९
प्र वामन्धांसि मद्यान्यस्थुः	३३९
प्र वामवोचमश्विना	२४३

प्र सप्तवधिराशसा	५२
प्राचीमु देवाश्विना	३३
प्रातर्जरेथे जरणेव	५१
प्रातर्जयध्वमश्विना	२५
प्रातर्यावाणा प्रथमा	२१
प्रातर्यावाणा रथ्येव	२१
प्रातर्युजं नासत्याधि	६१
प्रातर्युजा वि बोधय	११
प्रास्मा ऊर्जं घृतश्चुतम्	४३
बृहन्तेव गम्भरेषु	६३
बोधिन्मनसा रथ्येषिरा	२८
ब्रह्म जिन्वतमुत	५१
भतीय नाधमानाय	३०
मक्षू हि ष्मा गच्छथ	२४
मधुमन्मे परायणं	५८
मध्व ऊ षु मधूयुवा	१३
मध्व पिबतं मधुपोभिः	२३
मध्वः सोमस्याश्विना	१०
मनोजवसा वृषणा	४८
मथि वर्चो अथो यशो	६४
मंहिष्ठा वाजसातमा	३८
मही वामूतिरश्विना	११
मा कस्मै धातमभ्यमित्रिणे	१५
मा नो गव्येभिरश्नैः	५५
मा वां वृकौ मा वृकीरा	२०
मित्रावरुणवन्ता उत	५१
य ई राजानावृतुथा	३१
यच्चिद्धि वां पुर ऋषयो	४१
यत् स्थो दीर्घप्रसन्नानि	४१
यथा चक्रुर्देवासुरा	६५
यथा चित् कण्वमावतं	४०
यथा मक्षा इदं मधु	६८
यथा मधु मधुकृतः	६८
यथायं वाहो अश्विना	३०
यथा वातः पुष्करिणीं	३०
यथा वातो यथा वनं	५१
यथा वामत्रिरश्विना	६८
यथा सोमः प्रातःसवने	४०
यथोत कृत्वये धनेशुं	४०
यदत्र रिप्ति रसिनः	६५

यददो दिवो अर्णवः	५०६	याभिः परिज्मा तनयस्य	५५	युवं ह्यास्तं महो रन्	१५३
यदय कर्हि कर्हि चित्	५४४	याभिः शर्चाभिर्वृषणा	५९	युवं कण्वाय नासत्या	४०६
यदय वा नासत्या	४५२	याभिः शन्ताती मवधो	७१	युवं कवी छः पर्यश्विना	६०२
यदय स्थः परावति	२५८	याभिः शुचन्ति धनसां	५८	युवं चित्रं ददथुः	३७९
यदयाश्विनावपाग्	४६९	याभिः सिन्धुं मधुमन्तम्	६०	युवं च्यवानं सनयं	५८६
यदयाश्विनावहं	४५६	याभिः सुदानू औशिजाय	६२	युवं च्यवानं जरसो	३३६
यदभिगावो अधिगू	४८२	याभिः सूर्य परियाथः	६४	युवं च्यवानमश्विना	११४
यदन्तरिक्षे पतयः	४७०	याभिरङ्गिरो मनसा	६९	युवं तासां दिव्यस्य	५४
यदन्तरिक्षे यद् दिवि	४४५	याभिरन्तकं जसमानं	५७	युवं तुप्राय पूर्वभिः	११५
यदप्सु यद् वनस्पतौ	४४८	याभिर्नरं गोषुयुधं	७३	युवं देवा क्रतुना	५३६
यदयातं दिवोदासाय	९४	याभिर्नरा त्रसदस्युं	४४१	युवं धेनुं शयवे	१३४
यदापीतासो अंशवो	४६२	याभिर्नरा शयवे	६७	युवं नरा स्तुवते	८३; १०८
यदिन्द्रेण सरथं	४५५	याभिर्महामतिथिवं	६५	युवमत्यस्याव नक्षथो	१७६
यदुषो यासि भानुना	४६१	याभिर्वमं विपिपानम्	६६	युवमत्रयेऽवनीताय	१३३
यदुस्त्रियास्वाहुतं घृतं	६८२	याभिर्विदपलां धनसा	६१	युवमेतं चक्रयुः	१९८
यद् युजाथे वृषणम्	१६४	याभी रसां क्षोदसोद्गः	६३	युवं पय उस्त्रियायाम्	१७७
यद् रोदसी प्रदिवो	३१३	याभी रेभं निवृतं	५६	युवं पेदवे पुरुवार०	१४७
यद् वा कक्षीवाँ उत्त	४५३	या वां कशा मधुमती	७	युवं भुज्युं समुद्र आ	६३१
यद् वा यज्ञं मनवे	४६६	यावित्था श्लोकमा दिवो	५०	युवं भुज्युमवविद्धं	३५३
यज्ञासत्या पराके	४५८	या सुरथा रथीतमा	६	युवं भुज्युं भुरमाणं	१४१
यज्ञासत्या परावति	४५; ४३४	युक्तोह यद् वां तौग्न्याय	१७१	युवं मृगं जागृवांसं	४१९
यज्ञासत्या भुरण्यथो	४४२	युजाथां रासभं रथे	५६४	युवां स्तोमेभिर्देवयन्तो	१६०
यन्तुनं धीभिरश्विना	४६४	युवं रथेन विमदाय	५८९	युवां ह घोषा पर्यश्विना	६०१
यमश्विना ददथुः	८२	युवं रेभं परिषूते	१४३	युवां गोतमः पुरुमीळ्हो	२०६
यमश्विना नमुचेरासुरादधि	६५४	युवं वन्दतं निर्ऋतं	१४४	युवां चिद्धिष्माश्विनौ	१८२
यमश्विना सरस्वती	६५७	युवं वरो सुषाम्णे	४९१	युवादत्तस्य धिष्ण्या	५०१
ययोरधि प्र यज्ञा	४६८	युवं विप्रस्य जरणाम्	५२०	युवा देवास्त्रय एका०	५३७
यवं वृक्षेणाश्विना	१२२	युवं शक्रा मायाविना	५८०	युवाभ्यां वाजिनीवसू	३८६
यस्ते रसः सम्मृत	६५३	युवं श्यावाय रुशतीम्	१०९	युवां पूषेवाश्विना	१२३
याते छर्दिष्णा उत्त नः	४५४	युवं श्रियमश्विना	२५२	युवां मृगेव वारणा	६००
या दद्या सिन्धुमातरा	२५	युवं श्रीभिर्दर्शताभिः	३२२	युवोः श्रियं परि योषा०	३५०
या नः पीपरदाश्विना	२९	युवं श्वेतं पेदवे	२३५; ५९१	युवो रजांसि सुयमासो	१७५
यानि स्थानान्यश्विना	३५७	युवं सुराममाश्विना	६२५	युवोरन्निश्चिकेतति	२६३
याभिः कण्वमभिष्टिभिः	४३	युवं ह कृशं युवमश्विना	६०४	युवो रथस्य परि	४७५
याभिः कण्वं मेधातिथि	४४०	युवं ह गर्भं जगतीषु	१६७	युवोरश्विना वगुषे	१४२
याभिः कुत्समार्जुनेयं	७४	युवं ह घर्मं मधुमन्तं	१७८	युवोरुषा अतु श्रियं	३७
याभिः कृशानुमसने	७२	युवं ह भुज्युं युवमश्विना	६०३	युवोरुषा भू रथं हुवे	४९०
याभिः पक्थमवधो	४८१	युवं ह रेभं वृषणा	५९१	युवोर्दानाय सुभरा	५३
याभिः पठ्वा जठरस्य	६८	युवं ह स्थो भिषजा	१६८	येभिस्तिष्ठः परावतो	३९१
याभिः पत्नीर्विमदाय	७०	युवं हिष्मा पुरुभुजा	५६९	ये वां दंसास्यश्विना	४४६

(९६)

यो भूयिष्ठ नासत्याभ्यां	२९५	विश्वा आशा दक्षिणसद्	६३९	सर्गाँ इव सृजतं	५१
यो वां यज्ञेभिरावृते	५०१	विश्वाभिर्धोभिर्भुवनेन	५१०	साकंयुजा शकुनस्य	६१
यो वां यज्ञो नासत्या	३६०	विश्वे देवा अकृपन्त	५८१	सिन्धुर्ह वां रसया	७१
यो वां रजांस्यश्विना	५५२	विश्वेदेवैस्त्रिभिरेका०	५११	सिषक्ति सा वां सुमतिः	८१
यो वां रथो नृपती	३६५	वील्लपत्मभिराशुहमभिः	७८	सुदासे दत्ता वसु	९१
यो वां नासत्यावृषिः	४३५	वृक्राय चिज्जसमानाय	३४५	सुप्रावर्गं सुवीर्यं	१०१
यो वामश्विना मनसो	१०३	वैयश्वस्य श्रुतं नरोतो	५००	सुयुग्भिरश्वैः सुवृता	१११
यो वामसुख्यचस्तमं	५०३	शचीभिर्नः शचीवसू	१६२	सुयुग् वहन्ति प्रति	१२१
यो वां परिज्मा सुवृद्	५८३	शतं मेघान् वृक्ये	९२; ११८	सुवृद् रथो वर्तते	१३१
यो ह वां मधुनो दृति०	४०२	शमू पु वां मधूयुवा	२७६	सुषुप्वांसं न निर्ऋतेः	१४१
यो ह स्य वां रथिरा	३५१	शरस्य चिदाचतकस्य	९८	सुषुभो वां वृषण्वसू	१५१
रथं यान्तं कुह को ह	५९७	शिवाभिष्टे हृदयं	६५२	सूनोर्मनेनाश्विना	१६१
रथं वामनुगायसं	४१७	शुनमन्धाय भरमहयत्	११९	सुण्येव जर्भरी तुर्फरीत्	१७१
रथं हिरण्यवन्धुरं	४११	शुश्रुवांसा चिदश्विना	३५९	स्तुषे नरा दिवो अस्य	१८१
रथो यो वां त्रिवन्धुरो	४७६	शृङ्गेव नः प्रथमा	२१७	स्तोभं जुषेथां युवशेव	१९१
रथि सुक्षत्रं स्वपत्य०	९५	शृणुतं जरितुर्हवं	५६१	स्मदेतया सुकीर्त्या	२०१
रश्मीरिव यच्छतम्	५२२	इयेनाविव पतथो	५१७	स्व ध्वरासो मधुमन्तो	२११
रातिं यद् वामरक्षसं	५७९	इयेनो हव्यं नयत्वा	६७२	स्वश्वा यशसा यातम्	२२१
लोहितेन स्वधितिना	६५१	श्रिये पूषन्निपुक्तेव	२१०	स्वाहाकृतः शुचिर्देवेषु	२३१
चंसगेव पूषया	६१८	श्रुतं गायत्रं तकवानस्य	१५३	स्वाहाकृतस्य तृम्पतं	२४१
वच्यन्ते वां ककुहासो	२६	सं यन्मिथः परस्पृधानासो	१४०	स्वैर्देक्षैर्दक्षपितेह	२५१
वयं हि वां हवामहे	४९८; ५७७	सं वां शता नासत्या	३२६	हंसाविव पतयो	२६१
वयं चिद्धि वां जरितारः	१८१	सं चेज्जयाथो अश्विना	६३६	हंसासो ये वां मधुमन्तो	२७१
वरेथे अभिमातपो	५४७	सं जानामहे मनसा	६७८	हतं च शत्रून् यततं	२८१
वसू रुद्रा पुरुमन्तू	१६२	संज्ञानं नः स्वेभिः	६७७	हतं तर्दं समङ्कमाखं	२९१
वातेवाजुर्या नयेव	२१२	सत्यामिद् वा उ अश्विना	२६६	हविषा जारो अपां	३०१
वायुरेनाः समाकरत्	६५०	सदा कवी सुमतिमा	१२४	हस्तेव शक्तिमभि	३११
वावसाना विवस्वति	३६	स पप्रथानो अभि	३४८	हारिद्रवेव पतथो	३२१
वावृधाना शुभस्पती	३९४	समश्विनोरवसा	२९१; २९६	हिङ्कृण्वती वसुपत्नी	३३१
वाहिष्ठो वां हवानां	५०५	समानं वां सजात्यं	५५१	हिमेनाग्निं प्रंसम०	३४१
वि चेदुच्छन्त्यश्विना	३७१	समानमु ल्यं पुरुहूतम्	६११	हिरण्यवल्मधुवर्णो	३५१
वि जयुषा रथ्या यात०	३१२	समानयोजनो हि वां	१०	हिरण्ययी अरणो यं	३६१
वि जिहीष्व वनस्पते	३०१	समाने अहन् त्रिरवय०	१४	हिरण्ययी वां रभिरीषा	३७१
विद्रासाविद् दुरः	१४२	समिद्धो अभिरश्विना	६८०	हिरण्ययेन पुरुभू	३८१
वि पृच्छामि पाक्या	१५१	समिद्धो अग्निर्वृषणा	६७९	हिरण्ययेन रथेन	३९१
				हिरण्यहस्तमश्विना	४०१



दैवत-संहिता ।

(६)

आयुर्वेद--प्रकरण

संपादक

पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर
साहित्यवाचस्पति, गीतालंकार
अध्यक्ष- स्वाध्याय-मण्डल.

[स्व. नारायणजी पुरुषोत्तम विश्वस्तनिधिके बंबई निवासी विश्वस्तोंने
संपूर्ण 'दैवत-संहिता' के मुद्रणके लिये १५०००) रु०
दिये, इस धनके भागसे यह विभाग मुद्रित हुआ है ।]

स्वा ध्या य म ण्ड ल, पा र डी

संवत् २०१४, शक १८८०, सन् १९५८

प्रकाशक :

वसन्त श्रीपाद सातवलेकर, बी. ए.,

स्वाध्याय-मण्डल, भारत मुद्रणालय,

पोस्ट- 'स्वाध्याय मण्डल (पारडी)'

पारडी (जि. सुरत)

द्वितीय वार

मूल्य ५) रु.

मुद्रक :

वसन्त श्रीपाद सातवलेकर, बी. ए.,

स्वाध्याय-मण्डल, भारत मुद्रणालय,

पोस्ट- 'स्वाध्याय-मण्डल (पारडी)'

पारडी (जि. सुरत)

आयुर्वेद-प्रकरण

चारों वेदोंमें आयुर्वेद-विषयक मन्त्र इधर उधर बिखरे हैं। इन सब को इस प्रकरण में इकट्ठा किया है। इनमें करीब ७५ ऋषियों के देखे मन्त्र हैं और ये मन्त्र करीब ८२ शीर्षकों में विभक्त हुए हैं। इनका व्यौरा देखिये—

आयुर्वेद-प्रकरण के ऋषि क्रमानुसार मन्त्र

ऋषि	सूक्तसंख्या	मन्त्रसंख्या
१ अथर्वी	५८	५९८
२ ब्रह्मा	४२	२७२
३ यमः	१३	१६७
४ ऋगुः	१०	१४७
५ ऋग्विगिराः	१९	११८
६ शुक्रः (यजुः)	७	७५
७ गरुमान्	७	५९
८ शन्तातिः	१२	५९
९ चातनः	७	४४
१० मृगारः	६	४२
११ विश्वामित्रः (गाथिनः)	६	४१
१२ वसिष्ठः (मैत्रावरुणिः)	१०	४१
१३ बृहस्पतिः	१	३५
१४ मानुषामा	२	३५
१५ प्रस्कण्वः (काण्वः)	८	३३
१६ प्रत्यङ्गिराः	१	३२
१७ अथर्वङ्गिराः	६	२७
१८ अगस्त्यो (मैत्रावरुणिः)	२	२७
१९ भिषग् (आथर्वणः)	१	२३
२० देवधवाः (यामायनः) (मथितश्च)	३	२२
२१ त्रिशिराः (स्वाष्टः)		
सिन्धुद्वीप (आंबरीषः)	५	२०
२२ उन्मोचनः	२	२०

ऋषि	सूक्तसंख्या	मन्त्रसंख्या
२३ कवष (ऐलूषः)	१	१५
२४ ऋभुः	२	१४
२५ भरद्वाजो (बार्हस्पत्यः)	१	१४
२६ सविता	१	१४
२७ अंगिराः (प्रचेताः)	४	१४
२८ शंखो (यामायनः)	१	१३
२९ सर्पः (काद्वेय आर्बुदिः)	१	१४
३० यमो यमी च	१	१४
३१ विवृहा (काश्यपः)	२	१३
३२ बादरायणिः	२	१३
३३ शौनकः	४	११
३४ शुनःशेषः	३	११
३५ अत्रिः (भौमः)	१	१०
३६ सप्तवृद्धिः (आत्रेयः)	१	९
३७ भिक्षुः (आंगिरसः)	१	९
३८ मेधातिथिः (काण्वः)	१	८
३९ संकुसुको (यामायनः)	१	८
४० सर्प (ऐरावतो जारस्कणः)	१	८
४१ भगः	२	८
४२ वामदेवः	२	८
४३ कुमारो (यामायनः)	१	७
४४ प्रजापतिः	१	७
४५ रक्षोहा	१	६
४६ अंगिराः	१	६
४७ वीतहव्यः	२	६
४८ हविर्धान (आंगिः)	१	५
४९ यक्ष्मनाशनः	१	५
५० शंभुः	१	५
५१ ऋषभो (वैराजः)	१	५
५२ सूर्या (सावित्री)	२	४
५३ द्रविणोदाः	१	४
५४ मनुः (वैवस्वतः)	१	४
५५ ऊर्ध्वग्रावा (आर्बुद्रिः)	१	४
५६ गृत्समद (आंगिरसः)	२	४

ऋषि	सूक्तसंख्या	मन्त्रसंख्या	मंत्र-संख्या
५७ कबंधः	१	४	अपामार्ग २७
५८ भागलिः	१	३	अरुंधती ३
५९ जाटिकायनः	१	३	कुष्ठ औषधि ३
६० बभ्रुपिंगलः	१	३	कुष्ठनाशनी २०
६१ वरुणः	१	३	पिप्पली ३
६२ कौशिकः	१	३	पृश्निपर्णी ८
६३ गोतमो (राहुगणः)	३	३	रोहिणी ८
६४ मधुच्छंदा (वैश्वामित्रः)	१	३	लक्षा ९
६५ उपरिबभ्रवः	१	३	केशवर्धनी ९
६६ शिशिबिठिः	१	२	अक्षिरोगनाशनी ४
६७ इन्द्राणी	१	२	मधुघनस्पति ५
६८ प्रजावान् (प्राजापत्यः)	१	२	रामायणी १
६९ कौरुपथिः	१	२	अजशृंगी १२
७० कक्षीवान् (दैर्घतमसः)	२	२	४ पापनाशनं १२८
७१ कण्वो (घौरः)	१	२	आस्त्रावभेषजं ६
७२ कूर्मो (गार्त्समदः)	१	१	रक्तस्रावनिवृत्तये धमनीबंधनं ४
७३ वसुक्रः (पेंद्रः)	१	१	निर्ऋतिनाशनं ४
७४ दीर्घतमा (औचथ्यः)	१	१	हृद्रोग-कामिका-नाशनं ४
७५ गार्ग्यः	१	१	कासनाशनं (बलासनाशनं) ६

आयुर्वेद-प्रकरण के मंत्रों की विषयानुसार गणना

आयुर्वेद-प्रकरण में नाना विषयों के शीर्षकों के नीचे जो मंत्र इकट्ठे किये गये हैं उनकी विषयानुसार गणना इस प्रकार है—

	मंत्र-संख्या
१ दीर्घ-आयुष्य की प्राप्ति	१६०
अरिष्टानि भंगानि	२
सुमंगलौ दन्तौ	३
२ यक्ष्मनाशन	१५०
३ ओषधिवनस्पतयः	७७
अन्न	३
सोम	४
वनस्पतिसूर्यगावः	३
वनस्पतयः	२

छ्दीबत्वनाशनं	५
सौभाग्यवर्धनं	५
सपत्नीबाधनं	७
ज्वरनाशनं (तक्मनाशनं)	१८
गण्डमाला-चिकित्सा	१०
श्वेतकुष्ठनाशनं	८
रोगात् उन्मोचनं	३
रोगनिवारणं	२५
स्वापनं	७
मूत्रमोचनं	९
सूर्यः	३
५ इष्टुनिष्कासनं	३
६ अञ्जनं	३३
ईर्ष्याविनाशनं	४
उन्मत्ततामोचनं	४
७ विषनाशनं	८६

-संख्या

मन्त्रसंख्या

मन्त्रसंख्या

२७	८ किमिनाशनं	८३
३	(यातुधा, रक्ष, पिशाच, असुर	
३	आदीनां नाशनं)	
२०	९ कृत्यादूषणं	५७
३	दस्थुनाशनं	६
८	बंधमोचनं	२
८	मन्याविनाशनं	३
९	शापमोचनं	६
९	अरातिनाशनं	१०
४	अरिष्टनाशनं	१२
५	दुःखमोचनं	३४
१	अलक्ष्मीनाशनं	६
१२	१० दुष्पन्ननाशनं	९८
२८	सुखप्राप्तिः	१
६	मन्युशमनं	३
४	वृषरोगशमनं	११
४	११ जलचिकित्सा	२४८
४	१२ मणिधारणं	१५५
४	१३ अन्नं	२२४
६	१४ वाजीकरणं	१४
५	गर्भाधानं	१६
५	गर्भहृणं	४
७	गर्भरोगनिवारणं	२६
१८	गर्भसंज्ञावः	२५
१०	सुखप्रसूतिः	११
८	मेधाजननं	१२
३	१५ धर्मः यज्ञः	५
२५	धर्मः	५
७	नवशालायां घृतहोमः	१०
९	पितृमेघः	२९४
३	यज्ञः यजमानः वेदी	१७
३	यूपः	१७
३३	हविर्धाने	५
४	ऊल्लूखलमुसले	४
४	प्रावाणः	२६
८६	अन्नदानं	९

गोष्ठः

५

अग्निः

१

आयुर्वेद-प्रकरण के २३३५ मन्त्रों का यह व्यौरा है। यहां यज्ञ-प्रकरण के अत्यावश्यक मन्त्र ही लिये हैं। यज्ञके विषय में कहा है—

ऋतुसंधिषु वै व्याधिर्जायते ।

ऋतुसंधिषु यज्ञाः क्रियन्ते ॥

(गो. ब्रा. उ. १।१९; कौ. ब्रा. ५।१)

अर्थात् ऋतु के संधिकाल में व्याधियां उत्पन्न होती हैं, अतः उनके शमन के लिये यज्ञ क्रिये जाते हैं। यह प्रक्रिया वैदिक ग्रन्थों में दीखती है। इस प्रक्रिया के अनुसार यज्ञ-विषयक जितने मन्त्र लेनेकी आवश्यकता थी, उतने ही मन्त्र यहां लिये हैं। यज्ञ-प्रकरण के अन्य मन्त्र और अन्य यज्ञविधिका मन्त्र-संग्रह अन्यत्र किया जायगा।

दीर्घ आयु की प्राप्ति के मन्त्र यहां सबसे प्रथम दिये हैं। क्योंकि आयुर्वेद की उत्पत्ति इसी इच्छा से ही हुई है। दीर्घ आयु का उपभोग करने की प्रबल इच्छा प्रत्येक मानव में रहती है और यही इच्छा आयुर्वेद की उत्पत्ति और उन्नति करती रहती है।

दीर्घ आयु की इच्छा का घात करनेवाला यक्ष्म है। यक्ष्म का अर्थ नाना प्रकार के क्षयरोग हैं। मुख्य यक्ष्म का नाम क्षयरोग है, परन्तु सभी रोग क्षय उत्पन्न करते हैं, इसलिये गौण दृष्टि से सभी रोग यक्ष्म ही कहलाते हैं। दीर्घ आयु चाहिये, तो यक्ष्म का दूर करना अत्यावश्यक ही है।

इसी कार्य के लिये नाना प्रकार की औषधियों की खोज हो गयी। वेद में जो औषधियां मिलती हैं, वे सोम, अपा-मार्ग, अरुंधती, कुष्ठ, पिप्पली, पृश्निपर्णी, रोहिणी, काक्षा, केशवर्धनी, मधुला, रामायणी, अजशृंगी इत्यादि हैं। इनके अतिरिक्त यज्ञप्रकरण में ऋषभ, तारके, वचः आदि भी औषधियां मिलती हैं। इन औषधियों के वर्णन पाठक इन सूक्तों में देख सकते हैं। ये वर्णन पढ़ने से निश्चयपूर्वक हम कह सकते हैं कि इन औषधियों का अनुभव इस समय हो चुका था।

औषधिवनस्पतियों के विषयमें ब्राह्मण ग्रन्थों में निम्न लिखित प्रकार वर्णन मिलते हैं—

३९ तेजो ह वा एतद्वनस्पतीनां यद्वाह्या शकलः,
तस्माद्यदा बाह्याशकलमपतक्षुवन्यथ शुष्यन्ति ।
(श. ३।७।१।८)

४० वनस्पतयो हि यक्षिया, न हि मनुष्या
यजेरन् यद्वनस्पतयो न स्युः । (श. ३।२।२।९)

४१ अग्निर्वै वनस्पतिः । (कौ. ब्रा. १०।६)

४२ प्राणो वनस्पतिः । (कौ. १२।७)

४३ स (वनस्पतिः) उ वै पयोभाजनः ।
(कौ. १०।६)

४४ यद् भेषजं तदमृतम् । (गो. पू. ३।४)

४५ शान्तिर्वै भेषजमापः ।
(कौ. ३।६, ७, ८, ९। गो. उ. १।२५)

ये ओषधिवनस्पतियोंके संबंध में ब्राह्मणग्रंथोंके वचन हैं, अब इस आयुर्वेद-प्रकरण में आयुके सम्बन्ध के ब्राह्मण-वचन देखने योग्य हैं, वे ये हैं—

१ वरुण एव आयुः । (श. ४।१।४।१०)

२ अग्निर्वा आयुः । (श. ६।७।३।७; ७।२।१।१५)

३ अग्निर्वा आयुष्मानायुष ईष्टे । (श. १३।८।४।८)

४ संवत्सर आयुः । (श. ४।१।४।१०; ४।२।४।४)

५ यज्ञो वा आयुः । (तां. ६।४।४)

६ असौ लोकः (= द्युलोकः) आयुः । (ऐ. ४।१५)

७ असावुत्तमः (लोकः) आयुः । (तां. ४।१।७)

८ अन्नमु वा आयुः । (श. ९।२।३।१६)

९ आयुर्वा उद्गाता । आयुः क्षत्तसंगृहीतारः ।
(तै. ३।८।५।४)

१० प्राणो वा आयुः । (ऐ. २।३८)

११ यो वै प्राणः स आयुः । (श. ५।२।४।१०)

१२ आयुर्वा उष्णिक् । (ऐ. १।५)

१३ स यो हैवं विद्वान् सायंप्रातराशी भवति,
सर्वं हैवायुरेति । (श. २।४।२।६)

१४ य एवं विद्वान्, स्यात् न मृण्मये भुञ्जीत ।

तथा हास्य आयुर्न रिष्येत तेजश्च । (आर्वेय ब्रा. १।१)

१५ आयुर्वै दीर्घम् । (तां. १३।११।१२)

आयु के सम्बन्ध में ये वचन ब्राह्मण ग्रंथोंमें हैं । अब

ओषधियोंके नामनिर्देश से जो वचन ब्राह्मण ग्रंथोंमें आते

हैं, उन्हें देखिये—

अपामार्ग औषधि ।

१ अपामार्गैरपमृज्यते । (श. १३।८।४।४)

२ अपामार्गहोमं जुहोति । अपामार्गैर्वै देवा
दिक्षु नाष्टा रक्षांसि अपामृजत, ते व्यज्यन्त ।
(श. ५।२।४।१४)

३ यदपामार्ग होमो भवति, रक्षसामपहत्यै ।
(तै. १।७।१।८)

४ प्राचीनफलो वा अपामार्गः ।
(श. ५।२।४।२)

रोहिणी

१ तत ऊर्ध्वाऽरोहत् । सा रोहिण्यभवत् ।
तद्रोहिण्यै रोहिणित्वम् । (तै. १।१।१०।६)

२ ततौ वै ते सर्वान्रोहानरोहन् तद्रोहिण्यै
रोहिणित्वम् । (तै. १।१।२।२)

इस आयुर्वेद-प्रकरण के कुछ विषयों के विषय में ब्राह्मण वचन ये हैं । ये आयुर्वेद-प्रकरण की बातें विशेषसी खोलते नहीं हैं । इनका आशय प्रायः स्पष्ट है, अतः इन सब का अर्थ यहां देनेकी आवश्यकता नहीं है । अब आयुर्वेद-प्रकरण में आए अनेक विषयों के सम्बन्ध में थोडासा वर्णन करके परिचय कराना आवश्यक प्रतीत होता है—

दीर्घ आयुष्य

सब से प्रथम ' दीर्घायुष्य ' का प्रकरण है, इसमें करीब १६० मन्त्र हैं । इनमें दीर्घायुष्य की कामना मुख्य विषय है । पहिले ही सूक्त में ' मनु ' अर्थात् क्रोध आदि मनो-विकार आयु की क्षीणता करते हैं, उन से बचने की सूचना मुख्य है । द्वितीय सूक्त में बोध प्रतिबोध (ज्ञान-विज्ञान), निद्रा और जाग्रति, ये सब मनुष्य को सुरक्षित रखें ऐसा कहा है, वह बड़े महत्त्व का विषय है । क्योंकि मनुष्य का ज्ञान ही उस को ऐसे फंदे में फंसाता है कि जो उसकी आयु क्षीण करता है । अतः मानव का ज्ञान तथा व्यवसाय उस की आयु क्षीण न करें । यह सूचना बड़ी महत्त्वपूर्ण है ।

पञ्चम सूक्त में ' दाक्षायण सुवर्ण ' आयुष्य बढ़ाने-वाला है, ऐसा कहा है । इस सुवर्ण की सिद्धता किस तरह करना चाहिये, यह एक बड़ा महत्त्वपूर्ण खोज का विषय है । आर्य वैद्यक में सुवर्ण विषम है और हृदय का बल बढ़ाता

है ऐसा कहा है। इस से सुवर्ण दीर्घायु देनेवाला है, ऐसा हम अनुमान कर सकते हैं। निःसन्देह दीर्घायु देनेवाले धातुओं में सुवर्ण की प्रमुखता से गणना हो सकती है।

सप्तम सूक्त में जंगिडमणि के धारण से दीर्घायु की प्राप्ति होने का वर्णन है। यह अरण्य से लाया और कृषिके रसों से बना मणि है (मं. ५)। इस का विचार करके इस का प्रयोग सिद्ध करना चाहिये।

अष्टम सूक्त में हवन से दीर्घ जीवन का विषय पाठक देख सकते हैं। हवन से राजयक्ष्मा, ज्वर तथा अन्यान्य रोग दूर हो जाते हैं। घृतके हवन से वायुकी शुद्धता होती और वहां के रोगबीज दूर होते हैं। नाना प्रकार की ओषधियों के हवन करने से उन के सूक्ष्म अणु, नासिका, मुख आदि स्थान से शरीर में जाते, और वहां बड़ा प्रभाव करते तथा मानव की नीरोगता सिद्ध करते हैं। हवन से जैसे रोग दूर होते हैं वैसे बुरे पदार्थों के हवन से रोग उत्पन्न भी होते हैं। चरक ग्रन्थ में अतिसार-चिकित्सा में कहा है कि गौका मेघ करने की प्रथा पृषधरा राजाने अपनी इच्छा से शुरू की, पहिले नहीं थी। उस यज्ञ से ' अतिसार ' की उत्पत्ति हुई। वह अतिसार रोग अब तक जनता को सता रहा है। पृषधरा राजा के पूर्व गोमेघ नहीं था, अतः अतिसार भी नहीं था। यह उस कथा का तात्पर्य है। बुरे यज्ञों का यह कुप्रभाव है। शत्रु के राज्यों में ऐसे कुयज्ञ करके नाना प्रकार के रोगों का फैलाव शत्रु देशों में करने के भी विधान कई ग्रन्थों में हैं। ये बुरे यज्ञ हैं, इसी तरह अच्छे यज्ञ करने से जनता को आरोग्य प्राप्त होकर उनकी दीर्घायुता भी सिद्ध हो सकती है। यह बड़ा शास्त्र है और खोज करने योग्य यह विषय है।

नवम सूक्त में ' दशवृक्ष ' का वर्णन है। ये दशवृक्ष नाम से दस वनस्पतियां हैं, जो दीर्घकालीन रोग को दूर करती हैं और मानव को दीर्घजीवी बना देती हैं।

तेरहवें सूक्त में अंगस्थ ज्वरों का वर्णन है। इस सूक्त में विशेषतः रोगी मनुष्य के मनको विश्वास दिलाकर आरोग्य-प्राप्ति में सहायता करने का विधान है। ' हे रोगी मानव ! ज्ञान, विज्ञान तथा निद्रा और जाग्रति ये सब तेरे प्राणों की रक्षा कर रहे हैं। यह अग्नि (यहां हवन कुण्ड में) जल रहा है, यह सूर्य उदय को प्राप्त हो रहा है। ये तेरी रक्षा

करें, इनकी सहायता से तू गंभीर मृत्यु से अब ऊपर है, (अब तेरी मृत्यु नहीं होगी;) (मन्त्र १०-११)। तरह रोगी को विश्वास दिलाया जाता है। इस मन्त्रप्राप्ति विश्वास रखनेवाला रोगी इस से लाभ उठा सकता है।

पंद्रहवें सूक्त में ' सौ वर्षों से भी अधिक जीवन ' इच्छा धारण करने की सूचना है। इस पृथ्वीपर मनुष्य वर्षोंसे भी अधिक जीवित रहे, यह वैदिक विचारधारा आगे पच्चीसवें सूक्त तक सूक्तों में दीर्घायुप्राप्ति के प्राप्ति समेत अनेक उपयोगी निर्देश हैं। विशेषकर चोवीसवें सूक्त में उत्तम अवयवों की धारणा और पच्चीसवें सूक्त में स्वच्छ दांतों का होना दीर्घायु के लिये अत्यंत आवश्यक है। ऐसा जो कहा है, वह विशेष रीतिसे द्रष्टव्य है। दांत बिगडनेसे शरीर का स्वास्थ्य बिगडता है और उसके बिगडनेसे आयुष्य का नाश होता है। इस तरह इन सूक्तों में जो रोगोक्त निर्देश हैं, उन का विचार पाठकों को करना चाहिये।

यक्ष्म-नाशन

यक्ष्म-नाशन इस आयुर्वेद-प्रकरण का दूसरा विभाग है। इस में करीब करीब डेढ़ सौ मन्त्र हैं। छब्बीसवें सूक्तसे प्रकरण का प्रारंभ होता है। छब्बीसवें सूक्त में शरीर में नाना अवयवों का उल्लेख करके प्रत्येक अवयव से यक्ष्म रोग दूर करने का विषय है। मानस-चिकित्सा का यह सूक्त दीखता है। चिकित्सक रोगी को विश्वास दिलाता है कि इस प्रयोग से तेरा यक्ष्मरोग निःसन्देह दूर होगा और निर्दोष होगा। इस सूक्त से यह बात सिद्ध हो जाती है कि यक्ष्मरोग शरीरके प्रत्येक अवयव में हो सकता है और वहां वहां से हटाना चाहिये। इस सूक्त का ' अङ्गादङ्गा लोम्नो लोम्नो ' यह मन्त्र अन्तिम है, वह मन्त्र प्राचीन काल से मृत्तिकास्नान के समय बोलने की परिपाटी में राष्ट्र में तथा दक्षिण भारत में श्रावणी पर्व के समय में अच्छी स्वच्छ मिट्टी जिस में खाद आदि कुछ भी मिला नहीं, ऐसी शुद्ध मृत्तिका जल में मिलाकर शरीरपर लगायी जाती है और शरीरपर लेप देकर कुछ देरके बाद स्वच्छ जल से स्नान किया जाता है। इस मिट्टी में खाद, मूत्र, अथवा कंकर आदि कुछ भी नहीं रहना चाहिये। यह मिट्टी स्वच्छ शुद्ध मलरहित मक्खन जैसी मृदु रहनी चाहिये। खादवाली मिट्टी हानिकारक होती है। खेत की मिट्टी के

हो तो, एक हाथ के] नीजे की लेनी उचित है। अन्यथा जहां खेती नहीं होती, वहां से शुद्ध मिट्टी ली जाय तो वह इस प्रयोग के लिये अच्छी है। मिट्टी के प्रयोग से नाना रोगबीज शरीरसे दूर हो जाते हैं। अन्तिम मन्त्रका उपयोग मिट्टी शरीरपर मलने के लिये करते हैं। इस से हम अनुमान कर रहे हैं कि यह सब सूक्त मृत्तिका से यक्ष्म-दोष हटाने के लिये होना संभव है। पाठक इस का अधिक विचार करें।

आगे का सताईसवां सूक्त भी इसी दृष्टि से विचार करने योग्य है। इस सूक्तका अन्तिम ग्यारहवां मन्त्र पर्जन्य की वृष्टि से प्राप्त जल का उपयोग करके अ-मृत अर्थात् नीरोग बनने के कार्य के लिये स्पष्ट है। सब पाप, सब यक्ष्म और सब प्रकार के मरणकारक रोग-बीज वृष्टिजल के प्रयोग से दूर होते हैं। पर्जन्य के पहिले नक्षत्रों की वृष्टि होनेके पश्चात् उस वृष्टि से वायु पवित्र होनेके पश्चात् की वृष्टि का जल लेना उचित है। प्रायः हस्त, चित्रा, स्वाती नक्षत्रों की वृष्टि का जल लेकर घड़े भरकर घरमें अच्छी तरह बंद करके रख देनेसे, यह वृष्टि-जल सालभर इस प्रयोग के लिये मिलता रहता है। ख्याल इस बात का रखना चाहिये कि प्रथम वृष्टि होकर शुद्ध वायु में जो वृष्टि होगी, उसी का जल लेना चाहिये। नहीं तो वायु के दोष जल में आवेंगे और वैसे जल का परिणाम ठीक नहीं निकलेगा। यह जल पीनेसे भी अंदर की शुद्धता होती है। उपवास या लंघन में यह वृष्टि-जल पीनेसे बहुत ही लाभ होते हैं। वृष्टि का जल घड़ों में भर कर रख देना और सालभर पीनेके लिये बर्तना, इससे लाभ होगा, परन्तु अच्छी युक्ति से जल लेना चाहिये।

अठाईसवें सूक्त में तक्मा नामक ज्वर का उल्लेख है। जिस ज्वर में बड़ी रूक्षता होती है, वह तक्मा ज्वर है। इस ज्वर से कामिला (हरिमा) होती है, पण्डुरोग का यह एक प्रकार है। इस रोग के निवारण के लिये कई औषधियाँ हो सकती हैं। रक्त की क्षीणता करनेवाला यह ज्वर है। यह ज्वर (अ-व्रत) नियमरहित व्यवहार करनेवाले को अधिक कष्ट देता है। पाठक इस सूचना का विचार अवश्य करें।

उनतीसवें सूक्त में 'वृत्र' नाम आता है। पसीना न छोड़नेवाला यह ज्वर है। जिसमें ज्वर आता है, पर पसीना १ दे. (आयुर्वेद०)

नहीं आता, इस तरह के ज्वर को दूर करने के लिये अग्नि का ही प्रयोग कहा है। (वृत्रः आपः तस्मिन्) वृत्र जल-प्रवाह को रोकता है, वैसे यह ज्वर पसीने को रोकता है, इस कारण रोगी ज्वरमुक्त नहीं होता। इस यक्ष्म को दूर करने के लिये (वैश्वानरेण अग्निना वारये) वैश्वानर अग्नि का प्रयोग कहा है। इस प्रयोग का पता हमें अभी तक लगा नहीं, परन्तु भांप से शरीर को सेक देकर पसीना निकालने का यह प्रयोग होगा। द्वितीय मन्त्र में (वाचा यक्ष्मं वारयामहे) मन्त्र-प्रयोग से रोग दूर करने का भी विधान है।

आगे के तीसवें सूक्तमें रक्तयुक्त कफमिश्रित खांसी अर्थात् कफक्षय-नामक रोगों का उल्लेख है। इसमें (पिशितं) रक्त-दोष, (हृदयामय) हृदय का रोग इसी तरह अन्यान्य रोगों का उल्लेख है। (वेदाहं तस्य भेषजं) उन रोगों की दवा मैं जानता हूं, ऐसा भी यहां कहा है। मन्त्रों का विचार करके विशेष खोजपूर्वक इस सूक्त के प्रत्येक पद का विचार करना उचित है। तब रोगनिवृत्ति के उपाय का पता लगना संभव है।

इकत्तीसवें सूक्त में हवन-चिकित्सा दीखती है। बत्तीसवें सूक्त में हरिण के सिर में उगनेवाले सींगसे रोगविशेष की चिकित्सा लिखी है। आजकल सिर की गर्मी हटानेके लिये सिर पर हरिण के सींग को पत्थर पर विसकर उससे उत्पन्न विलेपन का लेप करते हैं। इससे सिर की गर्मी हटती है, मस्तक शान्त होता है। चतुर्थ मन्त्र में 'तारके' नामकी दो औषधियाँ कहीं हैं।

'तारके' नामक दो औषधियाँ इकट्ठी सेवन की जाती हैं। इस के नंतर जल को सब रोग निवारण करनेवाला बताया है। क्षेत्रिय रोग अर्थात् वंशपरंपरासे प्राप्त रोग और इसी शरीर में उत्पन्न ऐसे दोनों प्रकार के रोगों को हटाने के लिये जल उपयोगी है। इस तरह जल-चिकित्सा का वर्णन यहां है। अगले (३३ वें) सूक्त में भी जल का वर्णन बड़े प्रभावी शब्दों से किया है।

तैंतीसवें सूक्त में अष्टायोग और षड्योग से उत्पन्न यव का उपयोग लिखा है। अष्टायोग और षड्योग का आज समझा जानेवाला अर्थ आठ बैल जोतने योग्य और छः बैल जोतने योग्य हल से उत्पन्न जव। परन्तु यदि वैद्यकीय

परिभाषा ली जाय, तो भाठ अथवा छः वनस्पतियों के योग से सिद्ध किया औषध। इस विषय में निश्चय वैद्यों को विचारपूर्वक करना चाहिये।

चौतीसवें सूक्त में सुगंधवाली गुल्गुलु औषधिका वर्णन है। अरुंधति, गुल्गुलु आदि औषधियों के प्रयोगसे चिकित्सा होती है। अरिष्टताति अर्थात् नीरोगता की वृष्टि करने के ये उपाय इस सूक्तमें हैं।

पैंतीसवें सूक्त में हवन-चिकित्सा से यक्ष्म, राजयक्ष्म, पुराना रोग आदि सब दूर होते हैं, ऐसा कहा है। मृत्युके पाश से मुक्त करके रोगी को शतायुषी करता हूं, ऐसा निश्चयपूर्वक यहां कहा है। हवन-चिकित्साका विचार करने के समय यह सूक्त अधिक विचार करने योग्य है। पुनः नवीन शरीर देने का अर्थात् मृत्यु से पुनरुत्थान होने का यहां का वर्णन देखने योग्य है।

छत्तीसवें सूक्त में शरीर के प्रत्येक अंगसे रोग को दूर करने का उल्लेख है। छब्बीसवें सूक्तके साथ इस छत्तीसवें सूक्त का विचार करना योग्य है। ये दोनों सूक्त कुछ पाठ-भेद के साथ एक जैसे ही हैं। एक ऋग्वेद का है, दूसरा अथर्ववेद का है। अथर्ववेद के सूक्त में एक मन्त्र अधिक है और पदोंके क्रम में पर्याप्त भिन्नता है। अतः पाठक इन दो सूक्तों का विचार हकट्टा करें। आगे उनचालीसवां सूक्त भी यहीं से पुनरुक्त हुआ है। केवल ऋषि की और देवताकी भिन्नता है। इस सूक्त की चन्द्रमा देवता सर्वानुक्रमणीकार देते हैं। मन्त्रों से वह देवता हमें प्रतीत नहीं होती। तथापि भिन्न देवता और भिन्न ऋषि होने से ही केवल यह सूक्त यहां पुनः लिया है। हमारे विचार से इसका देवता केवल यक्ष्मनाशन ही है। चन्द्रमा का कोई सम्बन्ध हमें यहां प्रतीत नहीं होता। परन्तु अथर्ववेद की बृहत्सर्वानुक्रमणी में जहां तहां 'चन्द्रमा' देवता लिखी मिलती है। कदाचित् कोई अपूर्वता उस में हो, ऐसी कल्पना करके यहां देवता-भेद के कारण यह सूक्त पुनः लिया है। वास्तव में इसके यहां पुनः लेनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। विद्वान् पाठक इस का विचार करें।

सैंतीस और अठत्तीस ये दो सूक्त नाना प्रकार के शरीर-स्थ रोग दूर करने के दिये हैं। मृत्यु से पुनर्जीवन प्राप्त होनेतक वर्णन यहां पाठक देख सकते हैं। अठत्तीसवें सूक्त

में सिरकी पीडा का विशेष वर्णन देखने योग्य है।

इस तरह यह यक्ष्मनाशन विभाग यहां समाप्त होता है। शरीरसे यक्ष्म दूर होने से दीर्घ जीवन मिलता है, यह इस प्रकरण का पूर्व प्रकरण से सम्बन्ध है। अब रोग करने के लिये औषधियों का उपयोग करने के विषय तीसरा विभाग है, उसे अब देखिये—

औषधि वनस्पतियाँ

चालीसवें सूक्तसे करीब दो सौ मन्त्र औषधिवनस्पतियों के हैं। चालीसवां और इक्यालीसवां दोनों सूक्त सामान्यतः सर्वसाधारण औषधियों का वर्णन करने के लिये हैं। पहिला सूक्त ऋग्वेद का है और दूसरा अथर्ववेद का है। जिनके पास औषधियाँ सिद्ध रहती हैं उसको भिष्क् कहते हैं (मं. ६), वह वैद्य रोज बीजरूप राक्षसों का नाश करता है और आमसे उत्पन्न सब रोगोंको दूर करता है। इस सूक्त में 'रक्षः' पद रोगक्रिमियों का वाचक है। रक्षः, राक्षस ये पद रोगजन्तुओं के लिये वेद में आते हैं। मन्त्र २२ औषधियों की प्रतिज्ञा लिखी है, वह यह है कि जिस रोग को औषधियाँ दी जाती हैं, वह रोगमुक्त हो जाता है। निःसन्देह आरोग्य प्राप्त करता है।

इक्यालीसवें सूक्त में अंशुमती, जीवला, काण्डिनी आदि रोगोंका उल्लेख है। गौओं के तथा मनुष्यों के रोग औषधियों से दूर होते हैं, ऐसा भी १५ वें मन्त्र में कहा है। पशु चिकित्साका इस तरह यहां मूल है। यमके पाश से रोग को मुक्त करने की प्रतिज्ञा औषधियाँ करती हैं, यह विषय इस सूक्त के अन्त में पाठक देख सकते हैं।

छियालीसवें सूक्त में अन्न का विषय है। अन्नसे बल बढ़े बलवीर्य से वीर संतान उत्पन्न होनेका विषय इस सूक्त में देखनेयोग्य है। आगे सूक्त ५५ तक वनस्पतियों का ही सामान्य वर्णन है। किसी विशेष वनस्पति का वर्णन नहीं है, तथापि सर्वसाधारणतः वनस्पतियों के प्रभाव का वर्णन यहां है।

छप्पन्नवें सूक्तसे उनसाठ सूक्ततकके चार सूक्तोंमें अपामा वनस्पति का वर्णन है। इस को औषधियों में मुख्य कहा है। हजारहां दवाइयां इस से बनती हैं। अनेक रोगोंमें उन का उपयोग होता है। क्षुधा की न्यूनता, वृष्णाके

पुत्र न होना इन सब दोषोंपर इस औषधि का प्रयोग किया जाता है। कृत्वा नामक मारक प्रयोग के हटाने के लिये, गौके रोग दूर करने के लिये, इस औषधिका उपयोग होता है।

आगे के सूक्तों में अरुन्धती, पिप्पली, पृश्नीपर्णी, रोहिणी, लक्षा, कुष्ठ, कुष्ठनाशनी, यक्ष्मनाशनी, केशवर्धनी, नितम्बी, अक्षिरोगनाशनी, शमी, सोम, मधु इन वनस्पतियों का क्रमशः वर्णन है। यहां यह औषधि-प्रकरण समाप्त होता है। दश वृक्ष, तारके आदि अनेक औषधियों के प्रयोग छोड़ दिये जायं, तो शेष सब प्रयोग एक एक औषधिके ही हैं। इसके पश्चात् रोग-चिकित्सा-विभाग शुरू होता है—

रोगोंकी चिकित्सा

नाना प्रकार के रोगों का नाम लेकर उनकी चिकित्सा कई सूक्तों में कही है। वे सूक्त इस विभाग में संग्रहित हुए हैं, करीब करीब २१० मन्त्र इस विभागमें संग्रहित हुए हैं।

सत्तरवां सूक्त इस प्रकरण का प्रथम सूक्त है। कफ, बलगम, कास, श्वास का यहां प्रथम स्थान है। उनासीवें सूक्त में हृद्रोग, हृदय का रोग और कामिलाका विचार हुआ है। आनुवंशिक क्षेत्रिय रोग को दूर करने का विचार अस्सीवें सूक्त में हुआ है। आगे एकासीवें सूक्तसे क्रमपूर्वक क्षेत्रिय रोग, क्लीबस्व, गण्डमाला, श्वेतकुष्ठ, ज्वर, रुधिरस्ताव, साव, सूत्र-प्रतिबन्ध आदि रोगों की चिकित्सा ९६ सूक्त तक है। बीच में ८४ वे सूक्त में रोहिणी, रामायणी आदि औषधियों का भी वर्णन है।

इसके नंतर १०२ सूक्त तक 'अंजन' का विषय है। नेत्र का सुधार, दृष्टिके दोष को दूर करना आदि अंजन का विषय सुप्रसिद्ध है। साथ साथ अंजन के अन्यान्य गुण भी इन सूक्तों में देखने योग्य हैं।

सूक्त १०३ में निद्रानाश को दूर करके उत्तम निद्रा-प्राप्ति होने के लिये मन्त्रयोग हैं। १०४ सूक्त में शरीर से बाण को निकालने का विषय है, आगे ७ सूक्तोंमें दुष्ट स्वप्न न होनेके लिये मन्त्रयोग लिखा है। ११३ वें सूक्त में क्रोध का शमन करने का विषय है। क्रोध का शमन भी आरोग्य-दायी है।

११४ वें सूक्त में बैल के रोग का शमन है। आगे के सूक्त में मधुला वनस्पति का वर्णन है। ११९ वें सूक्त में

सौभाग्यवर्धन का विषय है। १२० वें सूक्त में ईर्ष्याविनाशन और १२२ वें सूक्त में उन्मत्तता-निवारण है। इस तरह यह विभाग इस सूक्त के साथ समाप्त होता है।

रोगक्रिमी का नाश

इस विभाग में रोग उत्पन्न करनेवाले क्रिमियों का नाश करने के विषय का विवेचन है। इस विवेचनके लिये करीब ८० मन्त्र हैं। रक्षः, राक्षस, यातुधान, पिशाच, गन्धर्व, अप्सरस्, आदि अनेक नाम रोगक्रिमियोंके यहां दिये हैं। प्रत्येक नाम का अर्थ रोगक्रिमि का विशेष लक्षण बताता है। अतः यह विषय बड़ा महत्वपूर्ण है।

ये रोग के कृमी (अ-दृष्ट) न दीखनेवाले होते हैं और कई दीखनेवाले (दृष्ट) भी होते हैं, इन सब को दूर करना चाहिये। ये रोग आंतों में, सिरमें, फेंफड़ों में, पीठ की रीठमें, हड्डियोंमें होते हैं। ये कीड़े पर्वतों, वनों, ओषधियों, पशुओं, तथा हमारे शरीरों में भी होते हैं। इन सब को दूर करना चाहिये और आरोग्य की सिद्धता करनी चाहिये (सूक्त १२३)।

ये कृमी आंखों, नाकों, दांतों में रहकर कष्ट देते हैं, अतः इनका नाश करना आवश्यक है। ये कृमी नाना प्रकार के रंगरूप और आकारोंके होते हैं। सूर्य के प्रकाश से इन का नाश होता है (सूक्त १२४)।

ये कृमि सूर्य-किरण से नष्ट होते हैं। अन्धकारमें इनकी वृद्धि होती है, इसलिये सूर्य उदय से कृमियों का नाश होता है (सू० १२५)।

अजश्रृंगी औषधि इन राक्षसों अर्थात् रोगकृमियों का नाश करती है। राक्षस, पिशाच, गन्धर्व, अप्सरस् इन सब कृमियों का नाश इस वनस्पति से होता है। अश्वत्थ, न्यग्रोध (वट) ये वृक्ष भी इन रोगकृमियों का नाश करते हैं। जिन से क्षीणता होती है, वे रक्षस् हैं, जो खून खाते उन को पिशाच कहा है, जो जल के आश्रय से रहते हैं उनको अप्सरस् कहते हैं, तथा जो मिट्टी में बढते हैं, वे गन्धर्व हैं। ये सब मनुष्य के आरोग्य को दूर करते हैं, इस लिये इन का नाश करना चाहिये (सू० १२६)।

अग्नि भी इन कृमियों का नाश करता है, अग्निमें विशिष्ट द्रव्यों का दहन करने से और अधिक लाभ होता है। घृत के दहन से सब रोगबीज नष्ट हो जाते हैं। अग्नि में नाना

औषधियाँ, घृत आदि के हवन से सूर्य प्रकाश से, केवल अग्नि से भी ये रोग-कृमि नष्ट होते हैं ।

विष को दूर करना

आगे करीब करीब ८० मन्त्र विषनाशन के हैं । १३६ वां सूक्त सर्पविष दूर करने के लिये है । मन्त्र के जाप से विष दूर होता है, ऐसा इस का वर्णन है, परन्तु इस के लिये जाप करके सिद्धि प्राप्त करना चाहिये । हकीस मोरनियाँ सर्पका विष दूर करती हैं, ऐसा यहां (मं० १४ में) कहा है । इस विषय में महाराष्ट्र में अनुभव यह है कि नाग सर्प का जहां दंश होता है, उस स्थान पर जीवित मुर्गी को पकड़कर उस का गुदद्वार लगाया जाता है । मुर्गी विष खींचती है और मर जाती है । इस तरह लगातार एक के पीछे दूसरी ऐसी लगाते जाना चाहिये । विष के प्रमाण के अनुसार मुर्गियाँ मरती हैं । जब मुर्गी की गुदा वहां लगानेपर मुर्गी न मरेगी, तो समझना चाहिये कि वहां विष रहा नहीं है और रोगी ठीक नीरोग हुआ है । इस मन्त्र में २४ मोरनियाँ विष दूर करती हैं, ऐसा कहा है । सम्भव है मुर्गियाँ न्यून वा अधिक लगती हों । यह प्रयोग करके देखना चाहिये । महाराष्ट्र में सर्वत्र यह कहते हैं कि मुर्गी के योग से विष हटता है । बिच्छू के विष के विषयमें इसी सूक्त में कुछ कहा है (सू० १३६) । सर्प के विषय में निम्नलिखित मन्त्र बड़ा देखने योग्य है—

यथा नकुलो विच्छिद्य संदधात्यहिं पुनः ।

(अथर्व. ६।१३९।५)

‘नेवला सांपको काटता है और फिर से उसको जोड़ता है ।’ यह अथर्ववेदका मन्त्र है । क्या यह सत्य हो सकता है ? महाराष्ट्र के पिण्ड पिण्ड में यह विश्वास है, परन्तु इसपर हमारा विश्वास नहीं बैठता । निःसन्देह यह खोजका विषय है । नेवला सांप को पकड़ता और काटता है, परन्तु फिर जोड़ देता है, यह मानना कठिन है ।

जलचिकित्सा

इसके पश्चात् करीब अठारह सौ मन्त्र जलका वर्णन करने-वाले हैं । इनमें कुछ जल-चिकित्सा के भी हैं । जल में अनेक औषधिगुण हैं । जलप्रयोग से बहुत से रोग दूर हो जाते हैं । जलप्रयोगसे रोग-बीज शरीरसे बह जाते हैं ।

जल वृष्टि से मिलता है, कूबा खोदकर जल प्राप्त होता है, स्वयं निर्झर से जल मिलता है, नदीका भी जल प्राप्ति है, जल सुख देनेवाला और दोष दूर करनेवाला है ।

आवर्तन, निवर्तन, न्ययन, परायण, अभिषिचन, प्रक्षिचन, उपक्षिचन आदि जल के प्रयोग हैं, जिन से जल-चिकित्सा होती है ।

हिमालयपर्वत से जो जल आता है, वह बर्फ का बननेसे वह बड़ा ही शुद्ध रहता है । गंगानदी का जल इसी कारण अतिपवित्र है । इसी तरह हिमालय से चलनेवाली सब नदियों का जल उत्तम है ।

सूर्य के किरणों से जल की भाँप बनकर वह ऊपर जाती है । उसके मेघ बनते हैं । मेघों से वृष्टि होती है । वृष्टि जल दिव्य जल कहा जाता है । सचमुच यह दिव्य आरोग्य देनेवाला जल है । इस कारण पर्जन्य को पिता कहते हैं, क्योंकि वही सब प्राणी और वृक्षवनस्पतियों का पालन करता है ।

सब नदियाँ वृष्टि से ही भरती और चलती हैं । वृष्टि न हुई तो नदी चलेगी नहीं । केवल हिमालय से चलनेवाली नदियाँ गर्मी से बर्फ पिघल कर चलती हैं । इसलिये इन नदियों को महापूर गर्मी के दिनों में आता है ।

अन्न

इसके आगे करीब सवा दो सौ मन्त्र अन्न के वर्णन के लिये हैं । अन्न सब विश्वरूप में हमारे सम्मुख है । सभी अन्न है और सभी अन्न खानेवाले हैं । ओदन सूक्त (२०० २१४ तक) पाठक देख सकते हैं । अन्न का महत्त्व जितना इन सूक्तोंमें बताया है, उतना सबका सब मननके योग्य है ।

वाजीकरण तथा गर्भाधान

आगे ये विषय हैं—गर्भधारणा होने के पश्चात् ‘गर्भदोष-निवारण’ सूक्त २२३ में है । ‘गर्भस्त्राव’ का उपाय सू० २२३ में पाठक देख सकते हैं । ‘सुख-प्रसूति’ का विषय सू० २२६ में है । आगे के ४ सूक्तों में ‘मेधाजनन’ का महत्त्वपूर्ण विषय है, जो बालक के हित होने के लिये अत्यंत आवश्यक है ।

मणिधारण

आगे दस सूक्तों में ‘मणिधारण’ का विषय है । प्रतिसर,

वरण, काल, दर्भ, औदुम्बर, जंगिड, शतवार, अस्तृत ये मणि यहां वर्णन किये हैं। जैसे ताबीज बांधते हैं, वैसे ही ये मणि हैं। इनके वर्णन में अन्यान्य विषय भी बड़े मनोरंजक हैं। किस को किसने यह मणि बांधा था, यह भी यहां इन सूक्तों में बताया है। किसी किसी मणि में सैकड़ों सामर्थ्य हैं, ऐसा भी वर्णन है। ये मणि कैसे बनाये और धारण किये जाते हैं, यह बड़ी खोज का विषय है। इस कार्य के लिये अथर्ववेदके वेदाङ्ग ग्रन्थों का तथा तदंगभूत विविध ग्रन्थों की खोज करनी चाहिये। भाष्य में जो इस समय लिखा मिलता है, उस से हमारे हाथ में कुछ भी विशेष बात नहीं पड़ती।

इसके पश्चात् अरिष्टनिवारण, पापनाशन, कृत्यादूरीकरण, यज्ञादि विषय के मन्त्र हैं। इससे इस प्रकरण की समाप्ति होती है। इस आयुर्वेद-प्रकरण के कुल मन्त्र २३४५ हैं। करीब करीब सवा दो हजार हैं। आयुर्वेद का यह वैदिक

मूल है। इस मूलका विस्तार आयुर्वेद है, जो चरक सुश्रुत के रूप में आज हमें उपलब्ध है।

इस सवा दो हजार के मन्त्रसंग्रह में आयुर्वेद के अनेक विषय हैं। इस का विचार करते समय पद पद का सूक्ष्म और खोजपूर्ण विचार करना चाहिये और आयुर्वेदके ग्रन्थों के साथ इन वेदमन्त्रों का मिलान करना चाहिये। तब जाकर इस विषय का समझने योग्य विवरण हो सकता है।

इस भूमिका में इस आयुर्वेद-प्रकरण के साथ पाठकों का केवल परिचय ही कराना था। वह इतने छेख से किया है। आशा है कि पाठक आयुर्वेद के इस मूल का कहां कैसा विस्तार हो गया है, इसका विचार करेंगे और लाभ उठावेंगे।

निवेदनकर्ता

श्रीपाद दामोदर सातवलेकर
अध्यक्ष- स्वाध्याय-मंडल

आयुर्वेद-प्रकरण की विषयसूची

	सूक्त	मन्त्र	पृष्ठ		सूक्त	मन्त्र	पृष्ठ
दीर्घायुष्यं	१-२४	१-१५८	१-१३	यक्ष्मनाशनं	८०	४९३-४९७	३७
सुमंगलौ दन्तौ	२५	१५९-१६१	१३	क्षेत्रिय	८०	४९३-४९७	३७
यक्ष्मनाशनं	२६-३९	१६२-३००	१३-२३	ह्रीवत्स	८१	४९८-५०२	३७
ओषधि-				गण्डमालाचिकित्सा	८२-८३	५०३-१२	७३
वनस्पतयः	४०-७६	३०१-४०२	२३-३६	रोहिणी	८४	५१३-१६	३८
ओषधयः	४०-४५	३०१-३५८	२३-२७	रामायणी	८४	५१३-१६	३८
अन्नं	४६	३८५-३६१	२७	असिक्विनः	८५	५१७-२०	३८
वातसिन्धो-				श्वेतकुष्ठनाशनं	८५-८६	५१७-२४	३८
पथयः	४७	३६२	२७	आसुरी	८६	५२१-२४	३९
सूर्यमरीचयः	४८	३६३	२७	ज्वरनाशनं	८७-८८	५२५-३१	३९
वनस्पतिः	४९-५५	३६४-३८९	२७-२९	यक्ष्मनाशनोऽग्निः	८७	५२५-२८	३९
अपामार्गः	५६-५९	३८०-४०६	२९-३०	तक्मनाशनं	८९	५३१-४४	३९
अरुंधती	६०	४०७-४०९	३१	रोगघ्नं	९०	५४५-४७	४०
कुष्ठः	६१	४१०-४१२	३१	रोगनिवारणं	९१	५४८-५४	४१
पिप्पली	६२	४१३-४१५	३१	धमनीबन्धनं	९२	५५५-५८	४१
पृश्निपर्णी	६३	४१६-४२०	३१	रोगनाशनं	९३	५५९-६१	४१
रोहिणी	६४	४२१-४२७	३१-३२	सूर्यगौभेषजं	९४	५६२-६४	४२
लाक्षा	६५	४२८-४३६	३२	आस्त्रावभेषजं	९५	५६५-७०	४२
कुष्ठः	६६-६७	४३७-४५६	३३-३४	मूत्रमोचनं	९६	५७१-७९	४२
केशवर्धनी	६८	४५७-४५९	३४	त्रैकाकुदमाञ्जनं	९७	५८०-८९	४३
नितरुनी	६९	४६०-४६२	३४	अञ्जनं	९८-१०२	५९०-६१२	४४
केशवर्धनं	६९	४६०-४६२	३४	स्त्रापनं	१०३	६१३-१९	४५
केशवर्धनं	७०	४६३-४६५	३५	हृष्टुनिष्कासनं	१०४	६२०-२२	४६
अक्षिरोगभेषज्यं	७१	४६६-४६९	३५	दुष्पित्तनाशनं	१०५-११	६२३-३७	४६
शमी	७२	४७०-४७२	३५	सुखं	११२	६३८	४७
वनस्पतिसूर्यगावः	७३	४७३	३५	मन्युशमनं	११३	६३९-४१	४७
सोमः	७४-७५	४७४-७७	३५-३६	वृषरोगशमनं	११४	६४२-५२	४८
मधुवनस्पतिः	७६	४७८-८२	३६	मधुला	११५	६५३-६३	४८
रोगचिकित्सा	७७-१२२	४८३-६९०	३६-५०	शरः	११६	६६४-६७	४८
बलासनाशनं	७७	४८३-४८५	३६-५०	शापमोचनं	११७	६६८-७२	४९
कासा	७८	४८३-४८८	३६-५०	अलक्ष्मीनाशनं	११८	६७३-७६	४९
हृद्रोगकामिला-				सौभाग्यवर्धनं	११९	६७७-८१	४९
नाशनं	७९	४८९-४९२	३७	ईर्ष्याविनाशनं	१२०	६८२-८४	५०

	सूक्त	मन्त्र	पृष्ठ		सूक्त	मन्त्र	पृष्ठ
ईर्ष्याऽपनयनं	१२१	६८५-८६	५०	स्वगौदनः	२१४	१२७२-१३३१	२७-१०९
उन्मत्ततामोचनं	१२२	६८७-९०	५०	वाजीकरणं	२१५-१७	१३३१-४५	१०१-२
क्रिमिनाशनं	१२३-३५	६९१-७७३	५०-५६	गर्भाधानं	२१८-३९	१३४६-१४२९	१०२-८
क्रिमिजम्भनं	१२३	६९१-९५	५०-५१	योनिगर्भः	२१८	१३४६-५८	१०१-१०३
क्रिमिघ्नं	१२४-१२५	६९५-७१४	५१-५२	गर्भाधानं	२१९	१३५२-६०	१०३
अजशृङ्गी	१२६	७१५-२६	५२-५३	गर्भद्वंद्वं	२२०	१३६१-१३६५	१०३
यातुधाननाशनं	१२७-२८	७२७-३३	५३	आत्मा	२२१	१३६६	१०३
रक्षोघ्नं	१२१-३१	७३४-५३	५३-५५	गर्भदोषनिवारणं	२२२	१३६७-१३९२	१०४-१०५
विशाचक्षयणं	१३२	७५४-६२	५५	,, संज्ञावः	२२३	१३९३-१३९८	१०५-१०६
असुर	१३३-३४	७६३-६६	५६	,, स्त्राविणी	२२४	१३९९-१४०१	१०६
यातुधाननाशनं	१३५	७६७-७३	५६	,, धारणं	२२५	१४०३	१०६
विषनाशनं	१३६-४५	७७४-८५९	५७-६२	सुखप्रसूतिः	२२६	१४०५-१४१०	१०६-१०७
विषघ्नं	१३६-३७	७७४-९७	५७-५८	मेधा	२२७	१४११-१४१४	१०७
,, नाशनं	१३८	७२८-८०४	५८-५९	,, जननं	२२८	१४१५-१४१८	१०७
,, दूषणं	१३९	८०५-७	५९	,, वर्धनं	२२९	१४१९-२३	१०७-८
,, दूरीकरणं	१४०	८०८-३३	५९-६०	मणिधारणं	२३०-४१	१४२४-१५७८	१०८-११९
सर्पविषनाशनं	१४१-४३	८३४-४८	६०-६१	शंखः	२३०	१४२४-१४३०	१०८
सर्पभ्यो रक्षणं	१४४	८४९-५१	६२	प्रतिसरः	२३१	१४३१-१४५२	१०८-११०
विषभैषज्यं	१४५	८५२-५२	६२	वरणः	२३२	१४५३-१४७७	११०-११२
जलचिकित्सा	१४६-२०२	८६०-११०७	६२-८३	फालः	२३३	१४७८-१५१२	११२-११४
आपः	१४६-६५	८६०-९५५	६२-६९	दर्भः	२३४-२३६	१५१३-१५३६	११५-११६
दिग्वा आपः	१४६-१६७	९५६-६२	७०	आदुम्बरः	२३७	१५३७-१५५०	११६-११७
अपां भेषजं	१६८-७२	९६३-७३	७०-७१	जंगिः	२३८-२३९	१५५१-१५६५	११७-११८
पर्जन्यः	१७३-७९	९७४-१०२१	७१-७५	शतवारः	२४०	१५६६-१५७१	११८-११९
नद्यः	१८०-८२	१०२२-४४	७५-७७	अस्तुतः	२४१	१५७२-१५७८	११९
सरस्वान्	१८३-८५	१०४५-५०	७७-७८	अरिष्टनाशनं	२४२-२४५	१५७९-१५९०	११९-२०
सरस्वती	१८६-२७	१०५१-९२	७८-८१	,, क्षयणं	२४२-२४५	१५७९-१५९०	११९-२०
आपः	१९८-२०२	१०२३-११०७	८१-८३	कृत्यादूषणं	२४६-२४८	१५९१-१६५३	१२१-२५
अग्नादिकं	२०३-१४	११०८-१३३१	८३-१०१	,, परिहरणं	२४६-२४७	१५९१-१६१५	१२१-२२
अग्निः	२०३-६	११०८-२६	८३-८४	,, दूषणं	२४८	१६१६-१६४७	१२२-२४
गौदनः	२०७	११२७-८२	८४-८९	दस्युनाशनं	२४९	१६४८-१६५३	१२४-२५
पञ्चगौदनः	२०८	११८३-१२२०	८९-९२	पापादिनाशनं	२५०-२९३	१६५४-१९१७	१२५-४३
मन्त्रगौदनं	२०९-१९	१२२१-६५	९३-९६	पापमोचनं	२५०-२५५	१६५४-१६७९	१२५-२७
मधुमदघ्नं	२११	१२६६-१२६८	९६	बन्ध	२५६	१६८०-१६८२	१२७
शासः	२१२-१३	१२६९-१२७१	९६	मन्याविनाशनं	२५७	१६८२-१६८४	१२७-२८

(१६)

दैवत-संहिता

[विषयसूचिका]

	सूक्त	मन्त्र	पृष्ठ		सूक्त	मन्त्र	पृष्ठ
पापमोचनं	२५८-२६८	१६८५-१७५५	१२८-३३	पितरः	३०४	१९८७-२०००	१४८-४१
„ नाशनं	२६९-२७५	१७५७-१७७६	१३३-३५	पितृमेघः	३०५-७	२००१-२१५०	१४९-५३
अराति „	२७६	१७७६-१७८६	१३५	यमः पितरः	३०८	२१५१-२२३९	१६१-५३
एनो „	२७७	१७८७-१७८९	१३६	यज्ञः	३०९-१४	२२४०-५३	१६६-५३
निर्ऋतिमोचनं	२७८	१७९०-१७९३	१३६	वेदी	३१५-२०	२२५७-७३	१६८-५३
अमोचनं	२७९	१७९४-१७९६	१३६	हविः	३२१	२२७४	१७०
दुरितनाशनं	२८०	×	×	हविर्धाने	३२२	२२७५-७३	१७०
दुःखनाशनं	२८१	१७९७-१८०२	१३६-३७	उल्लुखलमुल्ले	३२३	२२८०-८३	१७०
„ मोचनं	२८२-२८५	१८०३-१८३२	१३७-३८	ग्रावाणः	३२४-२७	२२८४-२३१०	१७०-४३
दुःस्वप्ननाशनं	२८६-२९३	१८३५-१९१७	१३९-४३	धनाज्ञदानं	३२८	२३११-२३१९	१७१
अवनं	२९४	×	×	गावः	३२९	२३२०-२३२५	१७३-७३
यज्ञादिकं	२९५-३३७	१९१८-२३२३	१४३-७६	अग्निः	३३०	२३२६	१७४
घर्मः	२९५	१९१९-१९२०	१४३	दीर्घायुष्यं	३३१-३३	२३२७-२३३५	१७४-७३
अग्निः	२९६	१९२१-२२	१४३	दम्पत्योर्यक्ष्म-			
वर्मः	२९७-३८	१९२३-३७	१४३-४४	नाशनं	३३४	२३३६	१७५
घृतहोमः	२९९	१९३८-४५	१४५	अलक्ष्मीघ्नं	३३५	२३३७-२३३८	१७५
पितृमेघः	३००	१९४६-५३	१४५-४६	सपत्नघ्नं	३३६-३७	२३३९-२३४५	१७५-७३
यमः	३०१-३	१९५४-८६	१४६-४८				

शम्भुः



दैवत-संहिता ।

(ऋग्यजुःसामाथर्वणां संहितानां सर्वान् मन्त्रान् विषयानुसारेण संगृह्य निर्मितम् ।)

६ आयुर्वेद-प्रकरणम् ।

दीर्घायुष्यम् । (१-१५१)

॥ १ ॥ (अथर्व० २।२८।१-५)

शम्भुः । १, ३ जरिमा, आयुः; २ मित्रावरुणौ; ३-५ द्यावापृथिव्यादयो देवाः । त्रिष्टुप्, १ जगती, ५ भुरिक् ।

तुभ्यमेव जरिमन् वर्धतामयं मेममन्ये मृत्यवो हिंसिषुः शतं ये ।

मातेव पुत्रं प्रमेना उपस्थे मित्र एनं मित्रियात् पात्वंहसः १

मित्र एनं वरुणो वा रिशादा जरामृत्युं कृणुतां संविद्वानौ ।

तदुग्रिहोता व्युनानि विद्वान् विश्वा देवानां जनिमा विवक्ति २

त्वमीशिषे पशूनां पार्थिवानां ये जाता उत वा ये जनित्राः ।

मेमं प्राणो हासीन्मो अपानो मेमं मित्रा वधिषुर्मो अमित्राः ३

द्यौश्चा पिता पृथिवी माता जरामृत्युं कृणुतां संविद्वाने ।

यथा जीवा अदितेरुपस्थे प्राणापानाभ्यां गुपितः शतं हिमाः ४

इममग्र आयुषे वर्चसे नय प्रियं रेतो वरुण मित्रराजन् ।

मातेवास्मा अदिते शर्म यच्छ विश्वे देवा जरदष्टिर्यथासत् ५

॥ २ ॥ (अथर्व० ८।१।१-२१)

ब्रह्मा । आयुः । त्रिष्टुप्; १ पुरोबृहती त्रिष्टुप्; २-३, १७-२१ अनुष्टुप्; ४, ९, १५-१६ प्रस्तरपङ्क्तिः; ७ त्रिपदा विराङ्गायत्री; ८ विराट्पथ्यावृहती; १२ ज्यवसाना पञ्चपदा जगती; १३ त्रिपदाभुरिङ्महावृहती; १४ एकावसाना द्विपदा साम्नी भुरिङ्महावृहती ।

अन्तर्काय मृत्यवे नमः प्राणा अपाना इह ते रमन्ताम् ।

इहायमस्तु पुरुषः सहासुना सूर्यस्थ भागे अमृतस्य लोके १

उदेनं भगो अग्रभीदुदेनं सोमो अंशुमान् ।

उदेनं मरुतो देवा उदिन्द्राग्नी स्वस्तये २

इह तेऽसुरिह प्राण इहायुरिह ते मनः ।

उत त्वा निर्रक्त्याः पार्श्वेभ्यो दैव्या वाचा भरामसि ३

१ हे. [आयुर्वेद०]

उत् क्रामातः पुरुष माव पत्था मृत्योः पङ्क्तिं शमवमुश्चमानः ।
 मा च्छित्था अस्माल्लोकादग्नेः सूर्यस्य सदृशः ४
 तुभ्यं वातः पवतां मातरिश्वा तुभ्यं वर्षन्त्वमृता न्यापः ।
 सूर्यस्ते तन्वेडे शं तपाति त्वां मृत्युर्दयतां मा प्र मेष्टाः ५
 उद्यानं ते पुरुष नावयानं जीवातुं ते दक्षताति कृणोमि ।
 आ हि रोहेमममृतं सुखं रथमथ जिर्विर्विदथमा वंदासि ६
 मा ते मनस्तत्र गान्मा तिरो भून्मा जीवेभ्यः प्र मदो मानु गाः पितृन् ।
 विश्वे देवा अभि रक्षन्तु त्वेह ७
 मा गतानामा दीधीथा ये नयन्ति परावतम् ।
 आ रोह तमसो ज्योतिरेह्या ते हस्तौ रभामहे ८
 इयामश्च त्वा मा शबलश्च प्रेषितौ यमस्य यौ पथिरक्षी श्वानौ ।
 अर्वाङ्गेहि मा वि दीर्घ्यो मात्र तिष्ठः पराङ्मनाः । ९
 मैतं पन्थामनु गा भीम एष येन पूर्वं नेयथ तं ब्रवीमि ।
 तम एतत् पुरुष मा प्र पत्था भयं परस्तादभयं ते अर्वाक् १०
 रक्षन्तु त्वाग्रयो ये अप्सवेऽन्ता रक्षतु त्वा मनुष्याडे यमिन्धते ।
 वैश्वानरो रक्षतु जातवेदा दिव्यस्त्वा मा प्र धाग् विद्युता सह ११
 मा त्वां क्रव्यादुभि मंस्तारात् संकसुकाच्चर ।
 रक्षतु त्वा द्यौ रक्षतु पृथिवी सूर्यश्च त्वा रक्षतां चन्द्रमाश्च ।
 अन्तरिक्षं रक्षतु देवहेत्याः १२
 बोधश्च त्वा प्रतीबोधश्च रक्षतामस्वप्नश्च त्वानवद्राणश्च रक्षताम् ।
 गोपायश्च त्वा जागृविश्च रक्षताम् १३
 ते त्वा रक्षन्तु ते त्वा गोपायन्तु तेभ्यो नमस्तेभ्यः स्वाहा १४
 जीवेभ्यस्त्वा समुदे वायुरिन्द्रो धाता दधातु सविता त्रायेमाणः ।
 मा त्वा प्राणो बलं हासीदसुं तेऽनु ह्वयामसि १५
 मा त्वा जम्भः संहनुर्मा तमो विदुन्मा जिह्वा बर्हिः प्रमयुः कथा स्याः ।
 उत् त्वादित्या वसवो भरन्तुर्दिन्द्राग्नी स्वस्तये १६
 उत् त्वा द्यौरुत् पृथिव्युत् प्रजापतिरग्रभीत् । उत् त्वा मृत्योरोषधयः सोमराज्ञीरपीपरन् १७
 अयं देवा इहैवास्त्वयं मामुत्र गादितः । इमं सहस्रवीर्येण मृत्योरुत् पारयामसि १८

उत् त्वा मृत्योरपीपरं सं धमन्तु वयोधसः । मा त्वा व्यस्तकेश्योरे मा त्वाघरुदो रुदन् १९
आहार्षमविदं त्वा पुनरागाः पुनर्णवः । सर्वाङ्गं सर्वं ते चक्षुः सर्वमायुश्च तेऽविदम् २० २५

व्यवात् ते ज्योतिरभूदप त्वत् तमो अक्रमीत् ।

अप त्वन्मृत्युं निर्रतिमप यक्ष्मं नि दध्मसि

२१

॥ ३ ॥ (अथर्व० ८।२।१-२८)

ब्रह्मा । आयुः । त्रिष्टुप् ; १-२, ७ भुरिक् ; ३, २६ आस्तारपङ्क्तिः, ४ प्रस्तारपङ्क्तिः, ६, १५
पथ्यापङ्क्तिः, ८ पुरस्ताज्ज्योतिष्मती जगती ; ९ पञ्चपदा जगती ; ११ विष्टारपङ्क्तिः, १२, २२, २८
पुरस्ताद्बृहती ; १४ व्यवसाना षट्पदा जगती ; १९ उपरिष्टाद्बृहती ; २१ सतः पङ्क्तिः ;
५, १०, १६-१८, २०, २३-२५, २७ अनुष्टुप् (१७ त्रिपाद्) ।

आ रमस्वेमाममृतस्य श्रुष्टिमच्छिद्यमाना जरदष्टिरस्तु ते ।

असुं त आयुः पुनरा भरामि रजस्तमो मोष गा मा प्र मेष्टाः १

जीवतां ज्योतिरभ्येह्यर्वाङ्गा त्वा हरामि शतशारदाय ।

अवमुञ्चन् मृत्युपाशानशस्तिं द्राघीय आयुः प्रतरं ते दधामि २

वातात् ते प्राणमविदं सूर्याचक्षुरहं तव ।

यत् ते मनस्त्वयि तद् धारयामि सं वित्स्वाङ्गैर्वद जिह्वयाल्पन् ३

प्राणेन त्वा द्विपदां चतुष्पदामग्निमिव जातमभि सं धमामि ।

नमस्ते मृत्यो चक्षुषे नमः प्राणाय वेऽकरम् ४ ४०

अयं जीवतु मा मृतेमं समीरयामसि ।

कृणोम्यसौ भेषजं मृत्यो मा पुरुषं वधीः ५

जीवलां नधारिषां जीवन्तीमोषधीमहम् ।

त्रायमाणां सहमानां सहस्वतीमिह हुवेऽस्मा अरिष्टतातये । ६

अधि ब्रूहि मा रभथाः सृजेमं तवैव सन्तसर्वहाया इहास्तु ।

भवाश्रवौ मुडतं शर्म यच्छतमपसिध्यं दुरितं धत्तमायुः ७

अस्मै मृत्यो अधि ब्रूहीमं दयस्वोदितोऽयमेतु ।

अरिष्टः सर्वाङ्गः सुश्रुज्जरसां शतहायन आत्मना भुजमश्रुताम् ८

देवानां हेतिः परि त्वा वृणक्तु पारयामि त्वा रजस उत् त्वा मृत्योरपीपरम् । ९

आरादुग्निं क्रव्यादं निरूहं जीवातवे ते परिधिं दधामि

यत् ते नियानं रजसं मृत्यो अनवधर्ष्यम् ।

पथ इमं तस्माद् रक्षन्तो ब्रह्मास्मै वर्मं कृण्मसि १० ३६

*

कृणोमि ते प्राणापानौ जरां मृत्युं दीर्घमायुः स्वस्ति ।

११

वैवस्वतेन प्रहितान् यमदूतांश्चरतोऽप्येधामि सर्वान्
आरादरातिं निर्कृतिं पुरो ग्राहिं कृव्यादः पिशाचान् ।

१२

रक्षो यत् सर्वं दुर्भूतं तत् तम इवाप हन्मसि

अग्नेष्टे प्राणममृतादायुष्मतो वन्वे जातवेदसः ।

१३

यथा न रिष्या अमृतः सज्जरसस्तत् ते कृणोमि तदु ते समृध्यताम्

शिवे ते स्तां द्यावापृथिवी असंतापे अभिश्रियौ ।

शं ते सूर्य आ तपतु शं वातो वातु ते हृदे ।

शिवा अभि क्षरन्तु त्वापो दिव्याः पर्यस्वतीः

१४

शिवास्ते सन्त्वोषधय उत त्वाहार्षमधरस्या उत्तरां पृथिवीमभि ।

तत्र त्वादित्यौ रक्षतां सूर्याचन्द्रमसावुभा

१५

यत् ते वासः परिधानं यां नीविं कृणुषे त्वम् ।

शिवं ते तन्वेहे तत् कृणुमः संस्पर्शेऽद्रूक्ष्णमस्तु ते

१६

यत् क्षुरेण मर्चयता सुतेजसा वप्ता वपसि केशश्मश्रु ।

शुभं मुखं मा न आयुः प्र मोषीः

१७

शिवौ ते स्तां व्रीहियवावबलासावदोमधौ ।

एतौ यक्ष्मं वि बाधेते एतौ मुञ्चतो अहंसः

१८

यदश्रासि यत् पिबसि धान्यं कृष्याः पर्यः ।

यदाद्यं यदनाद्यं सर्वं ते अन्नमविषं कृणोमि

१९

अहं च त्वा रात्रये चोभाभ्यां परि ददासि ।

अरायेभ्यो जिघत्सुभ्य इमं मे परि रक्षत

२०

शतं तेऽयुतं हायनान् द्वे युगे त्रीणि चत्वारि कृणुमः ।

इन्द्राग्नी विश्वे देवास्तेऽनु मन्यन्तामहंणीयमानाः

२१

शरदे त्वा हेमन्ताय वसन्ताय ग्रीष्माय परि ददासि ।

वर्षाणि तुभ्यं स्योनानि येषु वर्धन्त ओषधीः

मृत्युरीशे द्विपदां मृत्युरीशे चतुष्पदाम् । तस्मात् त्वां मृत्योर्गोपतेरुद्धरामि स मा विभेः २३

सोऽरिष्टं न मरिष्यसि न मरिष्यसि मा विभेः । न वै तत्र म्रियन्ते नो यन्त्यधमं तमः २४

सर्वो वै तत्र जीवति गौरश्चः पुरुषः पशुः । यत्रेदं ब्रह्म क्रियते परिधिर्जीवनाय कम् २५

मंत्राः ३७-६२]

परि त्वा पातु समानेभ्योऽभिचारात् सर्वन्धुभ्यः ।

अमग्निर्भवामृतोऽतिजीवो मा ते हासिपुरसंवः शरीरम्

ये मृत्यव एकशतं या नाष्टा अतिताप्याः ।

मुञ्चन्तु तस्मात् त्वां देवा अग्नेर्वैश्वानरादधि

अग्नेः शरीरमसि पारयिष्णु रक्षोहासि सपत्नहा ।

अथो अमीवचातनः पूतुर्दुर्नाम भेषजम्

॥४॥ (अथर्व० १।३०।१-४)

अथर्वा (आयुष्कामः) । विश्वे देवाः (१ वसवः, आदित्याः, १-४ देवाः) ।

त्रिष्टुप्, ३ शाकरगर्भो विराड्जगती ।

विश्वे देवा वसवो रक्षतेममुतादित्या जागृत यूयमस्मिन् ।

मेमं सनाभिरुत वान्यनाभिर्मेमं प्रापत् पौरुषेयो वधो यः

ये वो देवाः पितरो ये च पुत्राः सचेतसो मे शृणुतेदमुक्तम् ।

सर्वेभ्यो वः परि ददाम्येतं स्वस्त्येनिं जरसे बहाथ

ये देवा दिवि षु ये पृथिव्यां ये अन्तरिक्ष ओषधीषु पशुष्वप्स्वन्तः ।

ते कृणुत जरसमायुरस्मै शतमन्यान् परि वृणक्तु मृत्यून्

येषां प्रयाजा उत वानुयाजा हुतभागा अहुथादश्च देवाः ।

येषां वः पञ्च प्रदिशो विभक्तास्तान् वो अस्मै सत्रसदः कृणोमि

॥५॥ (अथर्व० १।३५।१-४)

अथर्वा (आयुष्कामः) हिरण्यम्, इन्द्राग्नी, विश्वे देवाः । जगती, ४ अनुष्टुप्गर्भा
चतुष्पदा त्रिष्टुप् ।

यदावधन् दाक्षायुणा हिरण्यं शतानीकाय सुमनस्यमानाः ।

तत् ते बध्नाभ्यायुषे वर्चसे बलाय दीर्घायुत्वाय शतशरदाय

नैनं रक्षांसि न पिशाचाः सहन्ते देवानामोजः प्रथमजं ह्येदुतत् ।

यो विभर्ति दाक्षायुणं हिरण्यं स जीवेषु कृणुते दीर्घमायुः

अपां तेजो ज्योतिरोजो बलं च वनस्पतीनामुत वीर्याणि ।

इन्द्रं इवेन्द्रियाण्याधि धारयामो अस्मिन् तद् दक्षमाणो विभरद्विरण्यम्

समानां मासामृतभिर्द्वा वयं सैवत्सरस्य पयसा पिपर्मि ।

इन्द्राग्नी विश्वे देवास्तेऽनु मन्यन्तामहणीयमानाः

॥६॥ (अथर्व० ६।४।१-३)

ब्रह्मा । चन्द्रमाः, २ सरस्वती, ३ दैव्या क्रपयः । अनुष्टुप्, १ भुरिक्, ३ त्रिष्टुप् ।
 मनसे चेतसे धिय आकूतय उत चित्तये । मत्स्यै श्रुताय चक्षसे विधेम हविषा वयम् १
 अपानाय व्यानाय प्राणाय भूरिधायसे । सरस्वत्या उरुव्यचै विधेम हविषा वयम् २
 मा नो हासिषुर्ऋषयो दैव्या ये तनूपा ये नस्तन्वस्तिनूजाः ।
 अमर्त्या मर्त्या अभि नः सचध्वमार्युर्धत्त प्रतरं जीवसे नः ३

॥७॥ (अथर्व० २।४।१-६)

अथर्वा । (चन्द्रमाः,) जङ्गिडः । अनुष्टुप्, १ विराट् प्रस्तारपङ्क्तिः ।
 दीर्घायुत्वाय बृहते रणायारिष्यन्तो दक्षमाणाः सदैव ।
 मणिं विष्कन्धदूषणं जङ्गिडं विभृमो वयम् १
 जङ्गिडो जम्भाद् विश्राद् विष्कन्धादभिशोचनात् ।
 मणिः सहस्रवीर्यः परि णः पातु विश्वतः २
 अयं विष्कन्धं सहतेऽयं बाधते अत्त्रिणः ।
 अयं नो विश्वभेषजो जङ्गिडः पात्वंहसः ३
 देवैर्दत्तेन मणिना जङ्गिडेन मयोभुवा ।
 विष्कन्धं सर्वा रक्षांसि व्यायामे संहामहे ४
 शणश्च मा जङ्गिडश्च विष्कन्धादभि रक्षताम् ।
 अरण्यादन्य आभृतः कृष्या अन्यो रसेभ्यः ५
 कृत्यादूर्षिरयं मणिरथो अरातिदूषिः ।
 अथो सहस्वान् जङ्गिडः प्र ण आयूषि तारिषत् ६

॥८॥ (अथर्व० ३।११।१-८)

ब्रह्मा, भृग्वङ्गिराश्च । इन्द्राग्नी, आयुष्यं, यक्षमनाशनम् । त्रिष्टुप्, ४ शक्करीगर्भा जगती,
 ५-६ अनुष्टुप्, ७ उष्णिग्वृहतीगर्भा पथ्यापङ्क्तिः, ८ व्यवसाना षट्पदा बृहतीगर्भा जगती ।
 मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय कर्मज्ञातयक्षमादुत राजयक्षमात् ।
 ग्राहिर्जग्राह यद्येतदेनं तस्या इन्द्राग्नी प्र मुमुक्तमेनम् १
 यदि क्षितायुर्यदि वा परेतो यदि मृत्योरन्तिकं नीत एव ।
 तमा हरामि निर्ऋतेरुपस्थादस्पर्शमेनं शतशारदाय २
 सहस्राक्षेण शतवीर्येण शतायुषा हविषाहार्षमेनम् ।
 इन्द्रो यथैनं शरदो नयात्यति विश्वस्य दुरितस्य पारम् ३

मन्त्राः ६३-८५]

शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं हेमन्तान् छतमु वसन्तान् ।
 शतं त इन्द्रो अग्निः सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषाहार्षमेनम्
 प्र विशतं प्राणापानावनद्धाहाविव व्रजम् ।
 व्यन्ये यन्तु मृत्यवो यानाहुरितरान् छतम्
 इहैव स्तं प्राणापानौ मापं गातमितो युवम् ।
 शरीरमस्याङ्गानि जरसे वहतं पुनः
 जरायै त्वा परि ददामि जरायै नि धुवामि त्वा ।
 जरा त्वा भद्रा नैष्ट व्यन्ये यन्तु मृत्यवो यानाहुरितरान् छतम्
 अभि त्वा जरिमाहितं गामुक्षणमिव रज्ज्वा ।
 यस्त्वा मृत्युरभ्यर्धत्त जायमानं सुपाशया ।
 तं ते सत्यस्य हस्ताभ्यामुदमुञ्चद् बृहस्पतिः

४

१९५

५

६

७

८

॥३॥ (अथर्व० २।२।१-५)

भृग्वङ्गिराः । वनस्पतिः, यक्षमनाशनम् । अनुष्टुप् १ विराट् प्रस्तारपङ्क्तिः ।

दशवृक्ष मुञ्चेमं रक्षसो ग्राह्या अधि यैनं जग्राह पर्वसु ।
 अथो एनं वनस्पते जीवानां लोकमुन्नय
 आगादुदगादयं जीवानां व्रातमप्यगात् ।
 अभूद पुत्राणां पिता नृणां च भगवत्तमः
 अधीतीरध्यगादयमधि जीवपुरा अंगन् ।
 शतं ह्यस्य भिषजः सहस्रमुत वीरुधः
 देवास्ते चीतिमविदन् ब्रह्माणं उत वीरुधः ।
 चीति ते विश्वे देवा अविदुन भूम्यामधि
 यश्चकार स निष्करत् स एव सुभिषक्तमः ।
 स एव तुभ्यं भेषजानि कृणवद् भिषजा शुचिः

१

८०

२

३

४

५

॥१०॥ (अथर्व० ६।११०।१-३)

अथर्वा । अग्निः । त्रिष्टुप्, १ पङ्क्तिः ।

प्रतो हि कमीड्यो अध्वरेषु सनाच्च होता नव्यश्च सत्सि ।
 स्वां चामि तन्वं पिप्रायस्वास्मभ्यं च सौमगमा यजस्व

१

८५

ज्येष्ठ्यां जातो विचृतोर्यमस्य मूलवर्हणात् परि पाद्येनम् ।

अत्येनं नेषद् दुरितानि विश्वा दीर्घायुत्वाय शतशारदाय २

व्याघ्रेऽह्वयजनिष्ठ वीरो नक्षत्रजा जायमानः सुवीरः ।

स मा वधीत् पितरं वर्धमानो मा मातरं प्र मिनीजनित्रीम् ३

॥ ११ ॥ (अथर्व० ६।४७।१-३)

अङ्गिराः प्रचेताः । १ अग्निः, २ विश्वे देवाः, ३ सुधन्वा । त्रिष्टुप् ।

अग्निः प्रातःसवने पात्वस्मान् वैश्वानरो विश्वकृद् विश्वशैभूः ।

स नः पावको द्रविणे दधात्वायुष्मन्तः सहभक्षाः स्याम १

विश्वे देवा मरुत इन्द्रो अस्मानस्मिन् द्वितीये सवने न जह्युः ।

आयुष्मन्तः प्रियमेषां वदन्तो वयं देवानां सुमतौ स्याम २

इदं तृतीयं सर्वनं कवीनामृतेन ये चमसमैरयन्त ।

ते सौधन्वनाः स्वर्गानशानाः स्विष्टिं नो अभि वस्यो नयन्तु ३

॥ १२ ॥ (अथर्व० २।२९।१-७)

अथर्वा । १ अग्निः, सूर्यः, बृहस्पतिः, २ जातवेदाः सविता, ३ इन्द्रः, ४-५ द्यावापृथिवी, विश्वे देवाः,

मरुतः, आपः, ६ अश्विनौ, ७ इन्द्रः । त्रिष्टुप्, १ अनुष्टुप्,

४ पराबृहती निचृत्प्रस्तारपङ्क्तिः ।

पार्थिवस्य रसे देवा भगस्य तन्वोऽ बले ।

आयुष्यमस्मा अग्निः सूर्यो वर्च आ धाद् बृहस्पतिः १

आयुरस्मै धेहि जातवेदः प्रजां त्वष्टरधिनिधेह्यस्मै ।

रायस्पोषं सवितरा सुवास्मै शतं जीवाति शरदुस्तवायम् २

आशीर्ण ऊर्जमुत सौप्रजास्त्वं दक्षं धत्तं द्रविणं सचेतसौ ।

जयं क्षेत्राणि सहसायमिन्द्र कृण्वानो अन्यानधेरान्तसपत्नान् ३

इन्द्रेण दुत्तो वरुणेन शिष्टो मरुद्भिरुग्रः प्रहितो न आगन् ।

एष वां द्यावापृथिवी उपस्थे मा क्षुधन्मा तृषत् ४

ऊर्जमस्मा ऊर्जस्वती धत्तं पयो अस्मै पयस्वती धत्तम् ।

ऊर्जमस्मै द्यावापृथिवी अधातां विश्वे देवा मरुत ऊर्जमारपः ५

शिवाभिष्टे हृदयं तर्पयाम्यनमीवो मौदिषीष्ठाः सुवर्चाः ।

सवासिनौ पिबतां मन्थमेतमश्विनौ रूपं परिधाय मायाम् ६

मन्त्राः ८६-११४]

इन्द्रं एतां संसृजे विद्धो अग्रं ऊर्जां स्वधामजरां सा त एषा ।
तया त्वं जीव शरदः सुवर्चा मा त आ सुसोद् भिषजंस्ते अक्रन्

॥ १३ ॥ (अथर्व० ५।३०।१-१७)

उन्मोचनः (आयुष्कामः) । आयुष्यम् । अनुष्टुप् ; १ पद्यापङ्क्तिः, ९ भुरिक्, १२ चतुष्पदा
विराड्जगती, १४ विराट्प्रस्तारपङ्क्तिः, १७ त्र्यवसाना षट्पदा जगती ।

आवर्तस्त आवर्तः परावर्तस्त आवर्तः ।

इहैव भव मा नु गा मा पूर्वाननु गाः पितृनसुं बध्नामि ते दृढम् १
यत् त्वाभिचेरुः पुरुषः स्वो यदरणो जनः । उन्मोचनप्रमोचने उभे वाचा वदामि ते २
यद् दुद्रोहिथ शेपिषे स्त्रियै पुंसे अचिन्था । उन्मोचनप्रमोचने उभे वाचा वदामि ते ३ १००
यदेनसो मातृकृताच्छेषे पितृकृताच्च यत् । उन्मोचनप्रमोचने उभे वाचा वदामि ते ४
यत् ते माता यत् ते पिता जामिर्भाता च सजैतः । प्रत्यक् सैवस्व भेषजं जरदंष्ट्रिं कृणोमि त्वा ५
इहैधि पुरुष सर्वेण मनसा सह । दूतौ यमस्य मानु गा अर्धि जीवपुरा इहि ६
अनुहृतः पुनरोहि विद्वानुदयनं पथः । आरोहणमाक्रमणं जीवतो जीवतोऽयं नम ७
मा विभेर्न मरिष्यसि जरदंष्ट्रिं कृणोमि त्वा । निरवोचमहं यक्ष्ममङ्गैभ्यो अङ्गज्वरं तव ८ १०५
अङ्गभेदो अङ्गज्वरो यश्च ते हृदयामयः । यक्ष्मः श्येन इव प्रापसद् वाचा साढः परस्तराम् ९
क्षपी बोधप्रतीबोधावस्वमो यश्च जागृविः । तौ ते प्राणस्य गोप्सारौ दिवा नक्तं च जागृताम् १०
अयमग्निरुपसर्ग इह सूर्य उदैतु ते । उदेहि मृत्योर्गम्भीरात् कृष्णाच्चित् तमसस्परि ११
नमो यमाय नमो अस्तु मृत्यवे नमः पितृभ्य उत ये नयन्ति ।
उत् पारणस्य यो वेदु तमग्निं पुरो दधेऽस्मा अरिष्टतातये १२
एतु प्राण एतु मन एतु चक्षुरथो बलेम् । शरीरमस्य सं विंदां तत् पञ्चचां प्रति तिष्ठतु १३ ११०
प्राणेनाग्ने चक्षुषा सं सृजेमं समीरय तन्वा रे सं बलेन ।
वेत्थामृतस्य मा नु गान्मा नु भूमिगृहो भुवत् १४
मा ते प्राण उप दसन्मो अपानोऽपि धायि ते । सूर्यस्त्वाधिपतिर्भृत्योरुदायच्छतु रश्मिभिः १५
इयमन्तर्वेदति जिह्वा बद्धा पानिष्पदा । त्वया यक्ष्मं निरवोचं शतं रोपीश्च त्वमनः १६
अयं लोकः प्रियतमो देवानामपराजितः । यस्मै त्वमिह मृत्यवे दिष्टः पुरुष जज्ञिषे
स च त्वानु ह्वयामसि मा पुरा जरसो मृथाः १७ ११४
१ रे. [आयुर्वेद०]

॥ १४ ॥ (अथर्व० १९।१४।१-४)

ब्रह्मा । अग्निः (दीर्घायुत्वम्) । अनुष्टुप् ।

अग्ने॑ स॒मिध॒माहा॑रिं बृ॒हते॑ जा॒तवे॑दसे । स मे॑ श्र॒द्धां च॑ मे॒धां च॑ जा॒तवे॑दाः प्र य॑च्छतु १
 इ॒ध्मेन॑ त्वा जा॒तवे॑दः स॒मिधा॑ वर्धयामसि । तथा॑ त्वम॒स्मान् वर्ध॑य प्र॒जया॑ च॒ धने॑न च २
 यद॑ग्ने या॒नि का॒नि चि॒दा ते॑ दा॒रूणि॑ दु॒ध्मसि॑ । सर्वं॑ तद॒स्तु मे॑ शि॒वं तज्जु॑षस्व यवि॒ष्य ३
 ए॒तास्ते॑ अग्ने स॒मिध॒स्त्वमि॒द्रः स॒मिद्ध॑व । आ॒युर॒स्मासु॑ धे॒ह्यमृ॑त॒त्वमा॑चा॒र्यायि॑ ४

॥ १५ ॥ (अथर्व० १९।६७।१-८)

ब्रह्मा । सूर्यः (दीर्घायुत्वम्) । प्रजापत्या गायत्री ।

प॒र्ये॑म श॒रदः॑ श॒तम् १	जी॒वे॑म श॒रदः॑ श॒तम् २
बु॒ध्ये॑म श॒रदः॑ श॒तम् ३	रो॒हे॑म श॒रदः॑ श॒तम् ४
पू॒र्वे॑म श॒रदः॑ श॒तम् ५	भ॒वे॑म श॒रदः॑ श॒तम् ६
भू॒ये॑म श॒रदः॑ श॒तम् ७	भू॒यसीः॑ श॒रदः॑ श॒तात् ८

॥ १६ ॥ (अथर्व० ५।२८।१-१४)

अथर्वा । त्रिवृत्, अग्न्यादयः (दीर्घायुः) । त्रिष्टुप्, ६ पञ्चपदातिशकरीः
 ७, ९, १०, १२ ककुम्मत्यनुष्टुप् ; १३ पुरउष्णिक् ।

नव॑ प्रा॒णान् नव॑भिः सं मि॒मीते॑ दी॒र्घायु॑त्वाय॒ शत॑शार॒दाय॑ ।
 हरि॑ते त्रीणि र॒जते॑ त्री॒ण्यय॑सि त्रीणि तप॒सावि॑ष्टितानि १
 अ॒ग्निः सूर्य॑श्चन्द्र॒मा भूमि॑रापो द्यौर॒न्तरि॑क्षं प्र॒दिशो॑ दि॒शश्च॑ ।
 आ॒र्त॒वा क्रु॑तुभिः संवि॒द्वाना॑ अ॒नेन॑ मा त्रि॒वृता॑ पारयन्तु २
 त्रयः॑ पोषा॒स्त्रिवृ॑तिं श्रयन्ताम॒नक्तु॑ प॒षा प॑यसा घृ॒तेन॑ ।
 अ॒न्नस्य॑ भू॒मा पु॒रुष॑स्य भू॒मा भू॒मा प॑शूनां त इ॒ह श्र॑यन्ताम् ३
 इ॒ममा॑दि॒त्या वसु॑ना॒ समु॑क्षतेम॒मते॑ वर्धय वावृ॒धानः॑ ।
 इ॒ममि॑न्द्र सं सृ॒ज वी॒र्ये॑णा॒सिन् त्रि॑वृच्छ्रयतां पोषयि॒ष्णु ४
 भूमि॑द्वा पातु हरि॑तेन विश्व॒भृद॑ग्निः पि॒प॒र्त्यसा॑ स॒जोषाः॑ ।
 वी॒रु॒द्धि॒ष्टे अ॒र्जुनं॑ संवि॒द्वानं॑ दक्षं दधातु सुम॒नस्य॑मानम् ५
 त्रे॒धा जा॑तं जन्म॒नेदं॑ हि॒र॒ण्यम॑ग्नेरेकं प्रि॒यत॑मं बभूव सोम॒स्यैकं॑ हि॒सित॑स्य परा॒पत॑त् ।
 अ॒पामे॑कं वे॒धसां॑ रेत॑ आहुस्तत् ते हि॒र॒ण्यं त्रि॑वृदुस्त्वायु॒षे ६

मन्त्राः ११५-१४३]

ज्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य ज्यायुषम् ।

त्रेधा मृतस्य चक्षुषं त्रीण्यायुषि तेऽकरम् ७

त्रयः सुपर्णास्त्रिवृता यदायन्नेकाक्षरमभिसंभूय शक्राः ।

प्रत्यौहन् मृत्युममृतेन साकर्मन्तर्दधाना दुरितानि विश्वा ८

द्वित्रस्त्वा पातु हरितं मध्यात् त्वा पात्वर्जुनम् ।

भूम्या अयस्मयं पातु प्रागाद् देवपुरा अयम् ९ १३५

इमास्तिस्रो देवपुरास्तास्त्वा रक्षन्तु सर्वतः ।

तास्त्वं विभ्रद् वर्चस्व्युत्तरो द्विषतां भव १०

पुरं देवानाममृतं हिरण्यं य आग्नेधे प्रथमो देवो अग्ने ।

तस्मै नमो दश प्राचीः कृणोम्यनु मन्यतां त्रिवृदाबर्ध मे ११

आ त्वा चृतत्वर्यमा पूषा बृहस्पतिः ।

अहर्जातस्य यन्नाम तेन त्वाति चृतामसि १२

ऋतुभिर्घातवैरायुषे वर्चसे त्वा ।

संवत्सरस्य तेजसा तेन संहनु कृणमसि १३

घृतादुल्लुप्तं मधुना समकतं भूमिर्दहमच्युतं पारयिष्णु ।

भिन्दत् सपत्नानधरांश्च कृण्वदा मा रोह सहते सौमगाय १४ १४०

॥ १७ ॥ (अथर्व० ७।३२।१)

ब्रह्मा । आयुः । अनुष्टुप् ।

उपे प्रियं पनिमृतं युवानमाहुतीवृधम् ।

अगन्म विभ्रतो नमो दीर्घमायुः कृणोतु मे १

॥ १८ ॥ (अथर्व० ७।३३।१)

ब्रह्मा । मरुतः, पूषा, बृहस्पतिः, अग्निः, (दीर्घायु) । पथ्यापङ्क्तिः ।

सं मा सिञ्चन्तु मरुतः सं पूषा सं बृहस्पतिः ।

सं मायमग्निः सिञ्चतु प्रजया च धनेन च दीर्घमायुः कृणोतु मे १

॥ १९ ॥ (अथर्व० ७।५३।१-७)

ब्रह्मा । आयुः, बृहस्पतिः अश्विनौ च । त्रिष्टुप्, ३ भुरिक्, ४ उष्णिग्गर्भाषी

पङ्क्तिः, ५-७ अनुष्टुप् ।

अमुत्रभूयादधि यद् यमस्य बृहस्पतेरभिर्शस्तेरमुञ्चः ।

प्रत्यौहतामश्विना मृत्युमस्मद् देवानामग्ने भिषजा शचीभिः १ १४३

*

सं क्रामतं मा जहीतं शरीरं प्राणापानौ ते सयुजाविह स्ताम् ।

शतं जीव शरदो वर्धमानोऽग्निष्टे गोपा अधिपा वसिष्ठः २

आयुर्यत् ते अतिहितं पराचैरपानः प्राणः पुनरा ताविताम् ।

अग्निष्टदाहानिर्कैतरुपस्थात् तदात्मनि पुनरा वैश्यामि ते ३ १४५

मेमं प्राणो हासीन्मो अपानोविहाय परा गात् ।

सप्तर्षिभ्य एनं परि ददामि त एनं स्वस्ति जरसे वहन्तु ४

प्र विंशतं प्राणापानावनद्धाहाविव ब्रजम् । अयं जरिम्णः शैवधिररिष्ट इह वर्धताम् ५

आ ते प्राणं सुवामसि परा यक्षमे सुवामि ते । आयुर्नो विश्वतो दधद्वयमग्निर्वरेण्यः ६

उद्वयं तमसस्पारि रोहन्तो नाकमुत्तमम् । देवं देवत्रा सूर्यमगन्म उपोतिरुत्तमम् ७

॥ २० ॥ (अथर्व० ६।७६।१-४)

कवन्धः । सान्तपनाग्निः (आयुष्यम्) । अनुष्टुप्, ३ ककुम्भती ।

य एनं परिषीदन्ति समादधति चक्षसे । संप्रेद्धौ अग्निर्जिह्वाभिरुदेतु हृदयादधि १ १५०

अग्नेः सान्तपनस्याहमायुषे पदमा रभे । अद्वातिर्यस्य पश्यति धूममुद्यन्तमास्यत २

यो अस्य समिधं वेदं क्षत्रियेण समाहिताम् । नाभिह्वारे पदं नि दधाति स मृत्यवे ३

नैनं घ्नन्ति पर्यायिणो न सन्ना अव गच्छति । अग्नेर्यः क्षत्रियो विद्वान् नाम गृह्णात्यायुषे ४

॥ २१ ॥ (अथर्व० १९।६३।१)

ब्रह्मा । ब्रह्मणस्पतिः (आयुर्वर्धनम्) । विराडुपरिष्ठाद्बृहती ।

उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवान् यज्ञेन बोधय । आयुः प्राणं प्रजां पशून् कीर्तिं यजमानं च वर्धय १

॥ २२ ॥ (अथर्व० १९।६१।१)

ब्रह्मा । ब्रह्मणस्पतिः (सर्वमायुः) । विराट् पथ्याबृहती ।

तनूस्तन्वा मे सहे दतः सर्वमायुरशीय । स्योनं मे सीद पुरुः पृणस्व पवमानः स्वर्गे १

॥ २३ ॥ (अथर्व० १९।७०।१)

ब्रह्मा । इन्द्रसूर्यादयः (सर्वमायुः) । गायत्री ।

इन्द्र जीव सूर्य जीव देवा जीवा जीव्यासमहम् । सर्वमायुर्जीव्यासम् १ १५१

अरिष्टानि अज्ञानि । (१५७-१६१)

॥ २४ ॥ (अथर्व० १९।६०।१-२)

ब्रह्मा । वाक्, अज्ञानि च । १ पथ्याबृहती; २ ककुम्भती पुरउष्णिक् ।

वाङ् म आसन्नसोः प्राणश्चक्षुरक्ष्णोः श्रोत्रं कर्णयोः ।

अपलिताः केशा अशोणा दन्ता बहु बाहोर्वलम् १ १५२

ऊर्वोरोजो जङ्घयोर्जवः पादयोः । प्रतिष्ठा अरिष्टानि मे सर्वात्मानिभृष्टः २

सुमङ्गलौ दन्तौ ।

॥ २५ ॥ (अथर्व० ६।१४०।१-३)

अथर्वा । ब्रह्मणस्पतिः, दन्ताः । (अनुष्टुप् ?) १ उरोबृहती, २ उपरिष्ठाज्ज्योतिष्मती
त्रिष्टुप्, ३ आस्तारपङ्क्तिः ।

यौ व्याघ्राववरूढौ जिघत्सतः पितरं मातरं च ।

यौ दन्तौ ब्रह्मणस्पते शिवौ कृणु जातवेदः १

ब्रीहिमत्तं यवमत्तमथो माषमथो तिलम् ।

एष वां भागो निहितो रत्नधेयाय दन्तौ मा हिंसिष्टं पितरं मातरं च २

उपहूतौ सयुजौ स्योनौ दन्तौ सुमङ्गलौ ।

अन्यत्र वां घोरं तन्वः परेतु दन्तौ मा हिंसिष्टं पितरं मातरं च ३ १६१

यक्ष्म-नाशनम्

(१६२-३००) ॥ २६ ॥ (ऋ० १०।१६३।१-६)

विवृहा काश्यपः । यक्ष्मनाशनम् । अनुष्टुप् ।

(अथर्व० २०।९६)

अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां छुबुकादधि ।

यक्ष्मं शीर्षण्यं मस्तिष्का-ज्जिह्वाया वि वृहामि ते १

ग्रीवाभ्यस्त उणिहाभ्यः कीकसाभ्यो अनुक्यात् ।

यक्ष्मं दोषण्यं मेसाभ्यां बाहुभ्यां वि वृहामि ते २

आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठोर्हृदयादधि ।

यक्ष्मं मत्स्राभ्यां यक्नः प्लाशिभ्यो वि वृहामि ते ३

ऊरुभ्यां ते अष्टीवज्ज्यां पाणिभ्यां प्रपदाभ्याम् ।

यक्ष्मं श्रोणिभ्यां भासदा-ज्जंससो वि वृहामि ते ४ १६५

मेहनादनकरणा-ल्लोमभ्यस्ते नखेभ्यः ।

यक्ष्मं सर्वसादात्मन-स्तमिदं वि वृहामि ते ५

अङ्गदङ्गाल्लोमोलोमो जातं पर्वणिपर्वणि ।

यक्ष्मं सर्वसादात्मन-स्तमिदं वि वृहामि ते ६ १६७

॥ २७ ॥ (अथर्व० ३।३।१-११)

ब्रह्मा । पाप्महाः १ अग्निः, २ शक्रः, ३ पशवः, ४ द्यावापृथिवी, ५ त्वष्टा, अग्निः, इन्द्रः, ७ देवाः, सूर्यः, ८-१० आयुः, ११ पर्जन्यः (यक्षमनाशनम्) । अनुष्टुप्, ४ भुक्, ५ विराट् प्रस्तारपङ्क्तिः ।

वि देवा जरसावृतन् वि त्वमग्ने अरात्या ।

व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्षमेण समायुषा १

व्यार्त्या पवमानो वि शक्रः पापकृत्या ।

व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्षमेण समायुषा २

वि ग्राम्याः पशव आरण्यैर्व्यापिस्तृष्णासरन् ।

व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्षमेण समायुषा ३

वीक्षुमे द्यावापृथिवी इतो वि पन्थानो दिशदिशम् ।

व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्षमेण समायुषा ४

त्वष्टा दुहित्रे वहतुं युनक्तीतीदं विश्वं भुवनं वि याति ।

व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्षमेण समायुषा ५

अग्निः प्राणान्तसं दधाति चन्द्रः प्राणेन संहितः ।

व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्षमेण समायुषा ६

प्राणेन विश्वतोर्वीर्यं देवाः सूर्यं समैरयन् ।

व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्षमेण समायुषा ७

आयुष्मतामायुष्कृतां प्राणेन जीव मा मृथाः ।

व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्षमेण समायुषा ८

प्राणेन प्राणतां प्राणेहैव भव मा मृथाः ।

व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्षमेण समायुषा ९

उदायुषा समायुषोदोषधीनां रसेन ।

व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्षमेण समायुषा १०

आ पर्जन्यस्य वृष्ट्योदस्थामामृता वयम्

व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्षमेण समायुषा ११

॥ २८ ॥ (अथर्व० ६।२०।१-३)

भृगवङ्गिराः । यक्षमनाशनम् । १ जगती, २ ककुम्भती प्रस्तारपङ्क्तिः, ३ सतः पङ्क्तिः ।

अग्नेरिवास्य दहत एति शुष्मिण उतेव मत्तो विलपन्नपायति ।

अन्यमस्मदिच्छतु कं चिद्व्रतस्तपूर्वधाय नमो अस्तु तुकमने

मन्त्राः १६८-१९१]

नमो रुद्राय नमो अस्तु त्वमने नमो राज्ञे वरुणाय त्विषीमते ।

नमो दिवे नमः पृथिव्यै नम ओषधीभ्यः

अयं यो अभिशोचयिष्णुर्विश्वा रूपाणि हरिता कृणोषि ।

तस्मै तेऽरुणाय वभ्रवे नमः कृणोमि वन्याय त्वमने

॥ २९ ॥ (अथर्व० ६।८५।१-३)

अथर्वा । वनस्पतिः (यक्षमनाशनम्) । अनुष्टुप् ।

वरुणो वारयाता अयं देवो वनस्पतिः । यक्ष्मो यो अस्मिन्नाविष्टस्तमु देवा अवीवरन् १

इन्द्रस्य वचसा वयं मित्रस्य वरुणस्य च । देवानां सर्वेषां वाचा यक्ष्मं ते वारयामहे २

यथा वृत्र इमा आपस्तस्तम्भं विश्वधा यतीः ।

एवा ते अग्निना यक्ष्मं वैश्वानरेण वारये ३

॥ ३० ॥ (अथर्व० ६।१२७।१-३)

भृग्वङ्गिराः । यक्षमनाशनम्, वनस्पतिः । अनुष्टुप्, ३ ज्यवसाना षट्पदा जगती ।

विद्रुषस्य बलासस्य लोहितस्य वनस्पते । विसर्पकस्योषधे मोच्छिषः पिशितं चन १ १८५

यौ ते बलास तिष्ठतः कक्षे मुष्कावपश्रितौ । वेदाहं तस्य भेषजं चीपुद्रुरभिचक्षणम् २

यो अङ्गयो य कर्ण्यो यो अक्ष्योर्विसर्पकः । वि वृहामो विसर्पकं विद्रुधं हृदयामयम् ।

परा तमज्ञातं यक्ष्ममधराञ्च सुवामसि ३

॥ ३१ ॥ (अथर्व० १।१२।१-४)

भृग्वङ्गिराः । यक्षमनाशनम् । जगती (त्रिष्टुप् ?), ४ अनुष्टुप् ।

जरायुजः प्रथम उत्सियो वृवा वार्तभ्रजा स्तनयन्नेति वृष्ट्या ।

स नो मृडाति तन्व ऋजुगो रुजन् य एकमोर्जस्त्रेधा विचक्रमे १

अङ्गेअङ्गे शोचिषा शिश्रियाणं नमस्यन्तस्त्वा हविषा विधेम ।

अङ्गान्तसमङ्गान् हविषा विधेम यो अग्रभीता पर्वीस्या ग्रभीता २

मुश्च शीर्षक्या उत कास एनं परुष्परुराविवेशा यो अस्य ।

यो अभ्रजा वातजा यश्च शुष्मो वनस्पतीन्तसचतां पर्वतांश्च ३

शं मे परस्मै गात्राय शमस्त्ववराय मे ।

शं मे चतुर्भ्यो अङ्गेभ्यः शमस्तु तन्वेऽ मम ४ १३१

॥ ३२ ॥ (अथर्व० ३।७।१-७)

भृग्वङ्किराः । १-३ हरिणः, ४ तारके, ५ आपः, ६-७ यक्षमनाशनम् । अनुष्टुप्, ६ भुरिक् ।

हरिणस्य रघुष्यदोऽधि शीर्षणिं भेषजम् ।

स क्षेत्रियं विषाणया विषूचीनमनीनशत् १

अनु त्वा हरिणो वृषा पद्भिश्चतुर्भिरक्रमीत् ।

विषाणे वि ष्य गुप्पितं यदस्य क्षेत्रियं हृदि २

अदो यदवरोचते चतुष्पक्षमिव च्छदिः ।

तेना ते सर्वे क्षेत्रियमङ्गैभ्यो नाशयामसि ३

अमू ये दिवि सुभगे विचृतौ नाम तारके ।

वि क्षेत्रियस्य मुञ्चतामधमं पाशमुत्तमम् ४

आप इद् वा उ भेषजीरापो अमीवचातनीः ।

आपो विश्वस्य भेषजीस्तास्त्वा मुञ्चन्तु क्षेत्रियात् ५

यदासुतेः क्रियमाणायाः क्षेत्रियं त्वा व्यानशे ।

वेदाहं तस्य भेषजं क्षेत्रियं नाशयामि त्वत् ६

अपवासे नक्षत्राणामपवास उपसामुत ।

अपास्मत् सर्वं दुर्भूतमप क्षेत्रियमुच्छतु ७

॥ ३३ ॥ (अथर्व० ६।९।१-३)

भृग्वङ्किराः । यक्षमनाशनम्, ३ आपः । अनुष्टुप् ।

इमं यवमष्टायोगैः षड्योगैर्भिरचर्कषुः । तेना ते तन्वोऽरपोऽपाचीनमप व्यये १

न्यग् वातो वाति न्यक् तपति सूर्यः । नीचीनमध्या दुहे न्यग् भवतु ते रपः २

आप इद् वा उ भेषजीरापो अमीवचातनीः ।

आपो विश्वस्य भेषजीस्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् ३

॥ ३४ ॥ (अथर्व० १९।३८।१-३)

अथर्वा । गुल्गुलुः (यक्षमनाशनम्) । अनुष्टुप्, २ चतुष्पदा उष्णिक्, ३ एकावसाना प्राजापत्यानुष्टुप्

न तं यक्ष्मा अरुन्धते नैनं शपथो अश्नुते ।

यं भेषजस्य गुल्गुलोः सुरभिर्गन्धो अश्नुते १

विष्वश्चस्तस्माद् यक्ष्मा मृगा अश्वा इवेरते ।

यद् गुल्गुलु सैन्धवं यद् वाण्यासि समुद्रियम् २

उभयोरग्रमं नामास्मा अरिष्टतातये ३

मन्त्रः १९२-२१६]

॥ ३५ ॥ (अथर्व० २०।९६।६-१०)

यक्षमनाशनः । यक्षमनाशनम् । त्रिष्टुप् ।

मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय कर्मज्ञातयक्षमादुत राजयक्षमात् ।

ग्राहिर्जग्राह यद्येतदेनं तस्या इन्द्राग्नी प्र मुमुक्तमेनम्

६ २०५

यदि क्षितायुर्यदि वा परेतो यदि मृत्योरन्तिकं नीति एव ।

तमा हरामि निर्ऋतेरुपस्थादस्पर्शमेनं शतशरदाय

७

सहस्राश्वेण शतवीर्येण शतायुषा हविषाहर्षमेनम् ।

इन्द्रो यथैनं शरदो नयात्यति विश्वस्य दुरितस्य पारम्

८

शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं हेमन्तान् छतमु वसन्तान् ।

शतं त इन्द्रो अग्निः सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषाहर्षमेनम्

९

आहर्षमविदं त्वा पुनरागाः पुनर्णवः । सर्वाङ्ग सर्वे ते चक्षुः सर्वमायुश्च तेऽविदम् १०

॥ ३६ ॥ (अथर्व० २०।९६।१७-२३)

विवृहाः । यक्षमनाशनम् । अनुष्टुप् ।

अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां छुबुकादधि ।

यक्ष्मं शीर्षण्यं मस्तिष्काज्जिह्वाया वि वृहामि ते

१७ २१०

ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः कीकसाभ्यो अनुकयात् ।

यक्ष्मं दोषण्यं मंसाभ्यां बाहुभ्यां वि वृहामि ते

१८

हृदयात् ते परि क्लोमो हलीक्षणात् पार्श्वभ्याम् ।

यक्ष्मं मतस्त्राभ्यां प्लीहो यक्नस्ते वि वृहामसि

१९

आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठोरुदरादधि ।

यक्ष्मं कुक्षिभ्यां प्लाशेनाभ्या वि वृहामि ते

२०

ऊरुभ्यां ते अष्टीवद्भ्यां पार्श्विभ्यां प्रपदाभ्याम् ।

यक्ष्मं भसद्यं श्रोणिभ्यां भासदं भंसो वि वृहामि ते

२१

अस्थिभ्यस्ते मज्जभ्यः स्नावभ्यो धमनिभ्यः ।

यक्ष्मं पाणिभ्यामङ्गुलिभ्यो नखेभ्यो वि वृहामि ते

२२ २१५

अङ्गैरङ्गे लोमिलोमि यस्ते पर्वणिपर्वणि ।

यक्ष्मं त्वचस्यं ते वयं कश्यपस्य वीवर्हेण विश्वञ्च वि वृहामसि

२३ २१६

३ दै. [आयुर्वेद०]

॥ ३७ ॥ (अथर्व० १२।२।१-५५)

भृगुः । अग्निः; मन्त्रोक्ताः; २१-३३ मृत्युः (यक्षमरोगनाशनम्) । त्रिष्टुप्; २, ५, १२-२०, ३४-३६; ३८-४०
 ४३, ५१, ५४ अनुष्टुप् (१६ ककुम्भती परावृहती, १८ निचृत्, ४० पुरस्तात्ककुम्भती);
 ३ आस्तारपङ्क्तिः; ६ भुरिगार्घी पङ्क्तिः; ७, ४५ जगती; ८, ४८-४९ भुरिग्;
 ९ अनुष्टुब्गर्भा विपरीतपादलक्ष्मा पङ्क्तिः; ३७ पुरस्ताद्वृहती; ४२ त्रिप०
 एकाव० भुरिगार्घी गायत्री, ४४ एकाव० द्विप० आर्ची वृहती;
 ४६ एका० द्विप० साम्नी त्रिष्टुप्; ४७ पञ्चपदा बार्हतवैराजगर्भा
 जगती; ५० उपरिष्ठाद्विराड् वृहती; ५२ पुरस्ताद्विराड्
 वृहती; ५५ वृहतीगर्भा ।

नडमा रोह न ते अत्र लोक इदं सीसं भागधेयं त एहि ।

यो गोषु यक्षमः पुरुषेषु यक्षमस्तेन त्वं साकमधराड् परेहि १

अघशंसदुःशंसाम्यां करेणानुकरेण च । यक्षमं च सर्वं तेनेतो मृत्युं च निरंजामसि २
 निरितो मृत्युं निर्रक्तिं निरंरतिमजामसि ।

यो नो द्वेष्टि तमद्वयग्रे अक्रव्याद्यमु द्विष्मस्तमु ते प्र सुवामसि ३

यद्यग्निः क्रव्याद् यदि वा व्याघ्र इमं गोष्ठं प्रविवेशान्योकाः ।

तं माषाज्यं कृत्वा प्र हिणोमि दूरं स गच्छत्वप्सुषदोऽप्यग्नीन् ४

यत् त्वां क्रुद्धाः प्रचक्रुर्मन्युना पुरुषे मृते । सुकल्पमग्रे तत् त्वया पुनस्त्वोदीपयामसि ५
 पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः पुनर्ब्रह्मा वसुनीतिरग्रे ।

पुनस्त्वा ब्रह्मणस्पतिराधाद् दीर्घायुत्वाय शतशारदाय ६

यो अग्निः क्रव्यात् प्रविवेश नो गृहमिमं पश्यन्नितरं जातवेदसम् ।

तं हरामि पितृयज्ञाय दूरं स घर्ममिन्धां परमे सधस्थे ७

क्रव्यादमग्निं प्र हिणोमि दूरं यमराज्ञो गच्छतु रिप्रवाहः ।

इहायमितरो जातवेदा देवो देवेभ्यो हव्यं वहतु प्रजानन् ८

क्रव्यादमग्निमिषितो हरामि जनान् दृहन्तं वज्रेण मृत्युम् ।

नि तं शास्मि गार्हपत्येन विद्वान् पितॄणां लोकेऽपि भागो अस्तु ९

क्रव्यादमग्निं शंशमानमुक्थ्यं प्र हिणोमि पृथिभिः पितृयाणैः ।

मा देवयानैः पुनरा गा अत्रैवैधि पितृषु जागृहि त्वम् १०

समिन्धते संकसुको स्वस्तये शुद्धा भवन्तः शुचयः पावकाः ।

जहाति रिप्रमत्येन एति समिद्धो अग्निः सुपुना पुनाति ११

देवो अग्निः संकसुको दिवस्पृष्ठान्यारुहत् । मुच्यमानो निरेणसोऽमो गस्माँ अशस्त्याः १२

मन्त्राः २१७-२४३]

अस्मिन् वयं संकसुके अग्नौ रिप्राणि मृज्महे ।

अभूम यज्ञियाः शुद्धाः प्र ण आयूषि तारिषत्

१३

संकसुको विकसुको निर्ऋथो यश्च निस्वरः । ते ते यक्ष्मं सर्वेदसो दूराद् दूरमनीनश्न १४ २३०

यो नो अश्वेषु वीरेषु यो नो गोष्वजाविषु ।

ऋव्यादं निर्णुदामसि यो अग्निर्जनयोपनः

१५

अन्येभ्यस्त्वा पुरुषेभ्यो गोभ्यो अश्वेभ्यस्त्वा ।

निः ऋव्यादं नुदामसि यो अग्निर्जीवितयोपनः

१६

यस्मिन् देवा अमृजत् यस्मिन् मनुष्या उत ।

तस्मिन् घृतस्तावो मृष्ट्वा त्वमग्ने दिवं रुह

१७

समिद्धो अग्न आहुत स नो माभ्यपक्रमीः ।

अत्रैव दीदिहि द्यवि ज्योक् च सूर्यं दृशे

१८

सीसे मृड्ढ्वं नडे मृड्ढ्वमग्नौ संकसुके च यत् ।

अथो अव्यां रामायां शीर्षक्तिमुपबर्हणे

१९

सीसे मलं सादयित्वा शीर्षक्तिमुपबर्हणे । अव्यामसिकन्यां मृष्ट्वा शुद्धा भवत यज्ञियाः २० २३५

परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्त एष इतरो देवयानात् ।

चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमीहेमे वीरा बहवो भवन्तु

२१

इमे जीवा वि मृतैरावृत्रन्नभूद् भद्रा देवहूतिर्नो अद्य ।

प्राञ्चो अगाम नृतये हसय सुवीरासो विदथमा वदेम

२२

इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि मैषां नु गादपरो अर्थमेतम् ।

शतं जीवन्तः शरदः पुरुचीस्तिरो मृत्युं दधतां पर्वतेन

२३

आ रोहतायुर्जरसं वृणाना अनुपूर्वं यतमाना यति स्थ ।

तान्वस्त्वष्टां सुजनिमा सजोषाः सर्वमायुर्नयतु जीवनाय

२४

यथाहान्यनुपूर्वं भवन्ति यथर्तव ऋतुभिर्यन्ति साकम् ।

२४०

यथा न पूर्वमपरो जहात्येवा धातरायूषि कल्पयैषाम्

२५

अश्मन्वती रीयते सं रभध्वं वीरयध्वं प्र तरता सखायः ।

अत्रा जहीत ये असन्दुरेवा अनमीवानुत्तरेमाभि वाजान्

२६

उत्तिष्ठता प्र तरता सखायोऽश्मन्वती नदी स्यन्दत इयम् ।

अत्रा जहीत ये असन्नशिवाः शिवान्तस्योनानुत्तरेमाभि वाजान् ।

२७

२४३

- वैश्वदेवीं वचंस आ रभध्वं शुद्धा भवन्तः शुचयः पावकाः ।
 अतिक्रामन्तो दुरिता पदानि शतं हिमाः सर्ववीरा मदेम २८
 उदीचीनैः पथिभिर्वायुमद्भिरतिक्रामन्तोऽवरान् परेभिः ।
 त्रिः सप्त कृत्व ऋषयः परेता मृत्युं प्रत्यौहन् पदयोपनेन २९
 मृत्योः पदं योपयन्त एत द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः ।
 आसीना मृत्युं नुदता सधस्थेऽथ जीवासौ विदथमा वदेम ३०
 इमा नारीरविधवाः सुपत्नीराञ्जनेन सर्पिषा सं स्पृशन्ताम् ।
 अनश्रवो अनमीवाः सुरत्ना आ रोहन्तु जनयो योनिमग्रे ३१
 व्याकरोमि हविषाहमेतौ तौ ब्रह्मणा व्यहं कल्पयामि ।
 स्वधां पितृभ्यो अजरां कृणोमि दीर्घेणायुषा समिमान्तसृजामि ३२
 यो नो अग्निः पितरो हृत्स्वन्तराविवेशामृतो मर्त्येषु ।
 मय्यहं तं परि गृह्णामि देवं मा सो अस्मान् द्विक्षत मा वयं तम् ३३
 अपावृत्य गहिपत्यात् क्रव्यादा प्रेतं दक्षिणा ।
 प्रियं पितृभ्य आत्मने ब्रह्मभ्यः कृणुता प्रियम् ३४
 द्विभागधनमादाय प्र क्षिणात्यवर्त्या । अग्निः पुत्रस्य ज्येष्ठस्य यः क्रव्यादनिराहितः ३५
 यत् कुपते यद् वनुते यच्च वस्त्रेन विन्दते । सर्वं मर्त्यस्य तन्नास्ति क्रव्याच्चेदनिराहितः ३६
 अयज्ञियो हतवर्चा भवति नैनैन हविरत्तवे । छिनत्ति कृष्या गोर्धनाद्यं क्रव्यादनुवर्तते ३७
 सुहुर्गृध्रैः प्र वदत्यार्तिं मर्त्यो नीत्य । क्रव्याद्यानग्निरन्तिकार्दनुविद्वान् वितावर्ति ३८
 ग्राह्या गृहाः सं सृज्यन्ते स्त्रिया यन्म्रियते पतिः ।
 ब्रह्मैव विद्वानेष्योऽत्र यः क्रव्यादं निरादधत् ३९
 यद् रिप्रं शर्मलं चकृम यच्च दुष्कृतम् ।
 आपो मा तस्माच्छुम्भन्त्वग्नेः संकसुकाच्च यत् ४०
 ता अधरादुदीचीराववृत्रन् प्रजानतीः पथिभिर्देवयानैः ।
 पर्वतस्य वृषभस्याधि पृष्ठे नवांश्चरन्ति सरितः पुराणीः ४१
 अग्रे अक्रव्यान्निः क्रव्यादं नुदा देवयजनं वह ४२
 इमं क्रव्यादा विवेशायं क्रव्यादुमन्वगात् । व्याघ्रौ कृत्वा नानानं तं हरामि शिवापुरम् ४३
 अन्तर्धिर्देवानां परिधिर्मनुष्याणामग्निर्गहिपत्य उभयानन्तरा श्रितः ४४

मन्त्राः १४४-१७५]

जीवानामायुः प्र तिर् त्वमग्ने पितॄणां लोकमपि गच्छन्तु ये मृताः ।

सुगर्हपत्यो वितपन्नरातिमुषामुषां श्रेयसीं धेह्यस्मै

४५

सर्वानग्ने सहमानः सपत्नानेषामूर्जं रयिमस्मासु धेहि

४६

इममिन्द्रं वह्निं प्रप्रिमन्वारभध्वं स वो निर्वक्षद् दुरितादवद्यात् ।

तेनाप हत शर्मापतन्तं तेन रुद्रस्य परिं पातास्ताम्

४७

अनुद्धाहं प्लवमन्वारभध्वं स वो निर्वक्षद् दुरितादवद्यात् ।

आ रोहत सवितुर्नावमेतां पृङ्भिरुर्वीभिरमर्तिं तरेम

४८

अहोरात्रे अन्वेपि विश्रत् क्षेम्यस्तिष्ठन् प्रतरणः सुवीरैः ।

अनातुरान्तसुमनसस्तल्प विश्रज्ज्योगेव नः पुरुषगन्धिरेधि

४९

२६५

ते देवेभ्य आ वृश्चन्ते पापं जीवन्ति सर्वदा ।

क्रव्याद्यानग्निरन्तिकादश्च इवानुवपते नडम्

५०

येऽश्रद्धा धनक्राम्या क्रव्यादां समासते । ते वा अन्येषां कुम्भीं पर्यादधति सर्वदा ५१

प्रेवपिपतिषति मनसा मुहुरा वर्तते पुनः । क्रव्याद्यानग्निरन्तिकादनुविद्वान् वितावति ५२

अविः कृष्णा भागधेयं पशूनां सीसं क्रव्यादपि चन्द्रं त आहुः ।

माषाः पिष्टा भागधेयं ते हव्यमरण्यान्या गह्वरं सचस्व

५३

इषीकां जरतीमिष्टा तिलिपञ्जं दण्डनं नडम् । तमिन्द्र इध्मं कृत्वा यमस्याग्निं निरादधौ ५४

२७०

प्रत्यश्चर्मकं प्रत्यर्पयित्वा प्रविद्वान् पन्थां वि ह्य विवेश ।

परामीषामसन्न दिदेश दीर्घेणायुषा समिमान्तसृजामि

५५

॥ ३८ ॥ (अथर्व० ९।८।१-२२)

भृग्वहिराः । सर्वशीर्षामयाद्यपाकरणम् (यक्षमनिवारणम्) । अनुष्टुप् ; १२ अनुष्टुग्भा ककुम्मती
चतुष्पदोष्णिक् ; १५ विराडनुष्टुप् ; २१ विराट् पथ्याबृहती ;
२२ पथ्यापङ्क्तिः ।

शीर्षं शीर्षामयं कर्णशूलं विलोहितम् । सर्वं शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे १

कर्णाम्यां ते कङ्कूपेभ्यः कर्णशूलं विसर्पकम् ।

सर्वं शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे

२

यस्य हेतोः प्रच्यवते यक्ष्मः कर्णत आस्यतः ।

सर्वं शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे

३

यः कृणोति प्रमोतमन्धं कृणोति पूरुषम् । सर्वं शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे ४

२७५

अङ्गभेदमङ्गज्वरं विश्वाङ्ग्यं विसर्पकम् ।
सर्वं शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे ५
यस्य भीमः प्रतीकाश उद्वेपयति पूरुषम् । त्वमानं विश्वशारदं बहिर्निर्मन्त्रयामहे ६
य ऊरू अनुसर्पत्यथो एति गवीनिके । यक्षमे ते अन्तरङ्ग्यो बहिर्निर्मन्त्रयामहे ७
यदि कामादपकामाद्दृढयाज्जायते परि । हृदो बलासमङ्ग्यो बहिर्निर्मन्त्रयामहे ८
हरिमाणं ते अङ्गभ्योऽप्यामन्तरोदरात् । यक्षमो धामन्तरात्मनो बहिर्निर्मन्त्रयामहे ९ १८०
आसौ बलासो भवतु मूत्रं भवत्वामयत् । यक्षमाणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत् १०
बहिर्विलं निर्द्रवतु काहाबाहं तत्रोदरात् । यक्षमाणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत् ११
उदरात् ते क्लोमो नाभ्या हृदयादधि । यक्षमाणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत् १२
याः सीमानं विरुजन्ति मूर्धानं प्रत्यर्षणीः । अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्विलम् १३
या हृदयमुपपन्त्यनुतन्वन्ति कीकसाः ।
अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्विलम् १४ १८५
याः पार्श्वे उपपन्त्यनुनिक्षन्ति पृष्ठीः ।
अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्विलम् १५
यास्तिरश्चरुपपन्त्यर्षणीर्विक्षणासु ते ।
अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्विलम् १६
या गुदा अनुसर्पन्त्यान्त्राणि मोहयन्ति च ।
अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्विलम् १७
या मज्जो निर्धयन्ति पूरुषं विरुजन्ति च ।
अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्विलम् १८
ये अङ्गानि मुदयन्ति यक्षमासो रोपणास्तव ।
यक्षमाणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत् १९ २१०
विसर्पस्य विद्रुधस्य वातीकारस्य बालजेः ।
यक्षमाणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत् २०
पादाभ्यां ते जानुभ्यां श्रोणिभ्यां परि भंससः ।
अनूकादर्पणीरुष्णिहाभ्यः शीर्ष्णो रोगमनीशम् २१
सं ते शीर्ष्णः कपालानि हृदयस्य च यो विधुः ।
उद्यन्नादित्य रश्मिभिः शीर्ष्णो रोगमनीशोऽङ्गभेदमशीशमः २२ २११

॥ ३९ ॥ (अथर्व० २।३१।१-७)

ब्रह्मा । यक्षमविबर्हणं, चन्द्रमाः, आयुष्यम् । अनुष्टुप्, ३ ककुम्भती, ४ चतुष्पदा भुरिगुणिक, ५ उपरिष्ठाद्विराड्वृहती, ६ उष्णिग्गर्भा निचृदनुष्टुप्, ७ पथ्यापङ्क्तिः ।

अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां छुबुकादधि ।

यक्ष्मं शीर्षण्यं मस्तिष्काज्जिह्वाया वि वृहामि ते

१

ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः कीकसाभ्यो अनुक्यात् ।

२

२९५

यक्ष्मं दोषण्यं मंसाभ्यां बाहुभ्यां वि वृहामि ते

हृदयात् ते परि क्लोमो हलीक्षणात् पार्श्वभ्याम् ।

३

यक्ष्मं मत्तस्नाभ्यां ग्रीहो यक्नस्ते वि वृहामसि

आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठोरुदरादधि ।

४

यक्ष्मं कुक्षिभ्यां प्लाशेर्नाभ्या वि वृहामि ते

ऊरुभ्यां ते अष्टिवद्भ्यां पार्णिभ्यां प्रपदाभ्याम् ।

५

यक्ष्मं भसर्द्यं श्रोणिभ्यां भासदं भंससो वि वृहामि ते

अस्थिभ्यस्ते मज्जभ्यः स्नावभ्यो धमनिभ्यः ।

६

यक्ष्मं पाणिभ्यामङ्गुलिभ्यो नखेभ्यो वि वृहामि ते

अङ्गैरङ्गे लोमिलोमि यस्ते पर्वणिपर्वणि ।

यक्ष्मं त्वचस्यं ते वयं कश्यपस्य वीवर्हेण विष्वञ्चं वि वृहामसि

७

३००

ओषधिवनस्पतयः । (३०१-४८१)

॥ ४० ॥ (ऋ० १०।९७।१-२३)

आथर्वणो भिषग् । ओषधयः । अनुष्टुप् ।

या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा ।

मनै नु वभ्रूणामहं शतं धामानि सप्त च

१

शतं वो अम्बु धामानि सहस्रमुत वो रुहः ।

अथ शतक्रत्वो यूयमिमं मे अगदं कृत

२

ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः ।

अथ इव सजित्वरी वीरुधः पारयिष्णवः

३

ओषधीरिति मातरस्तद् वो देवीरुपं ब्रुवे ।

एनेयमश्वं गां वास आत्मानं तव पूरुष

४

३०४

अश्वत्थे वो निषदनं पुणे वो वसतिष्कृता ।
 गोभाज इत् किलासथ यत् सनवथ पूरुषम् ५ ३०५
 यत्रौषधीः समगमन्त राजानः समिताविव ।
 विप्रः स उच्यते भिषग् रक्षोहामीवचातेनः ६
 अश्वावतीं सोमावती—मूर्जयन्तीमुदोजसम् । अविस्ति सर्वा ओषधी—रस्मा अरिष्टतातये ७
 उच्छुष्मा ओषधीनां गावो गोष्ठादिवेरते । धनं सनिष्यन्तीना—मात्मानं तव पूरुष ८
 इष्कृतिर्नाम वो माता स्थो यूयं स्थ निष्कृतीः ।
 सीराः पतत्रिणीः स्थन् यदामयति निष्कृथ ९
 अति विश्वाः परिष्ठाः स्तेन इव व्रजमक्रमुः । ओषधीः प्राचुच्यवु—र्यत् किं च तन्वोऽरुपः १० ३१०
 यद्विमा वाजयन्तह—मोषधीर्हस्ते आदधे । आत्मा यक्ष्मस्य नश्यति पुरा जीवगृभो यथा ११
 यस्यौषधीः प्रसर्पथा—ङ्गमङ्गं परुषपरुः । ततो यक्ष्मं वि बाधध्व उग्रो मध्यमशीरिव १२
 साकं यक्ष्मं प्र पत चापेण किकिदीविना ।
 साकं वातस्य ध्राज्या साकं नश्य निहाकया १३
 अन्या वो अन्यामव—त्वन्यान्यस्या उपावत ।
 ताः सर्वाः संविदाना इदं मे प्रावता वचः १४
 याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।
 बृहस्पतिप्रसूता—स्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः १५ ३१५
 मुञ्चन्तु मा शपथ्याऽ—दथो वरुण्यादुत ।
 अथो यमस्य पड्वीशात् सर्वस्माद् देवकिल्बिषात् १६
 अवपतन्तीरवदन् दिव ओषधयस्परि । यं जीवमश्रवामहे न स रिष्याति पूरुषः १७
 या ओषधीः सोमराज्ञी—वृद्धीः शतविचक्षणाः । तासां त्वमस्युत्तमा—रं कामाय शं हृदे १८
 या ओषधीः सोमराज्ञी—विष्टिताः पृथिवीमनु । बृहस्पतिप्रसूता अस्यै सं दत्त वीर्यम् १९
 मा वो रिषत् खनिता यस्मै चाहं खनामि वः । द्विपचतुष्पदस्माकं सर्वमस्त्वनातुरम् २० ३२०
 याश्चेदमुपशृण्वन्ति याश्च दूरं परागताः । सर्वाः संगत्य वीरुधो ऽस्यै सं दत्त वीर्यम् २१
 ओषधयः सं वदन्ते सोमेन सह राज्ञा । यस्मै कृणोति ब्राह्मण—स्तं राजन् पारयामसि २२
 त्वमुत्तमास्योषधे तव वृक्षा उपस्तयः ।
 उपस्तिरस्तु सोऽस्माकं यो अस्मां अभिदासति २३ ३२३

॥ ४१ ॥ (अथर्व० ८।७।१-२८)

अथर्वा । भैषज्यं, आयुष्यं, ओषधयः । अनुष्टुप्; १ उपरिष्ठाद्भुरिगृहती; ३ पुर उष्णिक्; ४ पञ्चपदा
परातुष्टुबतिजगती; ५-६, १०, २५ पथ्यापङ्क्तिः (६ विराड्गर्भा भुरिक्); ९ द्विपदार्ची
भुरिगनुष्टुप्; ११ पञ्चपदा विराडतिशकरी; १४ उपरिष्ठान्निचृद्गृहती;
२६ निचृत्; २८ भुरिक् ।

या बभूवो याश्च शुक्रा रोहिणीरुत पृथ्वयः ।

असिक्नीः कृष्णा ओषधीः सर्वा अच्छावदामसि

१

त्रायन्तामिमं पुरुषं यक्ष्माद् देवेषितादधि ।

पासां दौष्पिता पृथिवी माता समुद्रो मूलं वीरुधां बभूव

२

३२५

आपो अग्रं दिव्या ओषधयः । तास्ते यक्ष्ममेनस्य मङ्गादङ्गादनीनशन

३

प्रतनुती स्तम्बिनीरेकशुङ्गाः प्रतन्वतीरोषधीरा वदामि ।

अमुतीः काण्डिनीया विशाखा ह्वयामि ते वीरुधां वैश्वदेवीरुग्राः पुरुषजीवनीः

४

यद्वा सहः सहमाना वीर्यं यच्च वो बलम् ।

तेनेमस्माद् यक्ष्मात् पुरुषं मुञ्चतौषधीरथो कृणोमि भेषजम्

५

जीवलां नवारिषां जीवन्तीमोषधीमहम् ।

अरुन्तीमुन्नयन्ती पुष्पां मधुमतीमिह हुवेऽस्मा अरिष्टतातये

६

ह्ययन्तु प्रचेतसो मेदिनीर्वचसो मम । यथेमं पारयामसि पुरुषं दुरितादधि

७

३३०

वृषोऽसो अपां गर्भो या रोहन्ति पुनर्णवाः ।

भृशः सहस्रनाम्नीर्भेषजीः सन्त्वाभृताः

८

अरुक्त्वा उदकात्मान ओषधयः । व्यृषन्तु दुरितं तीक्ष्णशृङ्ग्यः

९

अमुञ्चन्तीर्विरुणा उग्रा या विषदूषणीः ।

अपो बलासनाशनीः कृत्यादूषणीश्च यास्ता इहा यन्त्वोषधीः

१०

अपकीताः सहीयसीर्वीरुधो या अभिष्टुताः । त्रायन्तामस्मिन् ग्रामे गामश्च पुरुषं पशुम्

११

अमुञ्चन्तं मधुमदग्रमासां मधुमन्मध्यं वीरुधां बभूव ।

अमुञ्चन्तं पुष्पमासां मधोः संभक्ता अमृतस्य भक्षो घृतमन्नं दुहतां गोपुङ्गवम्

३३५

अपकीताः किर्यतीश्चैमाः पृथिव्यामध्योषधीः । ता मां सहस्रपण्यो मृत्योर्मुञ्चन्त्वंहसः

१३

अपकीताः मणिर्वीरुधां त्रायमाणोऽभिषस्तिपाः । अमीवाः सर्वा रक्षांस्यप हन्त्वधि दूरमस्मत

१४

अपकीताः स्तनयोः सं विजन्तेऽग्रेरिव विजन्त आभृताभ्यः ।

अपकीताः पुरुषाणां वीरुद्धिरतिनुत्तो नाव्या एत स्रोत्याः

१५

३३८

४२. [आयुर्वेद०]

मुमुक्षुना ओषधयोऽग्नेर्वैश्वानरादधि । भूमिं संतन्वतीरितं यासां राजा वनस्पतिः १६
 या रोहन्त्याङ्गिरसीः पर्वतेषु समेषु च । ता नः पर्यस्वतीः शिवा ओषधीः सन्तु शं हृदे १७ ३३०
 याश्चाहं वेदं वीरुधो याश्च पश्यामि चक्षुषा । अज्ञाता जानीमश्च या यासुं विद्य च संभृतम् १८
 सर्वाः समग्रा ओषधीर्वोधन्तु वचसो मम । यथेमं पारयामसि पुरुषं दुरितादधि १९
 अश्वत्थो दुर्मो वीरुधां सोमो राजामृतं हविः । त्रीहिर्यवश्च भेषजौ दिवस्पुत्रावमृत्यौ २०
 उज्जिहीध्वे स्तनयत्यभिक्रन्दत्योषधीः । यदा वः पृश्निमातरः पर्जन्यो रेतसावति २१
 तस्यामृतस्येमं बलं पुरुषं पाययामसि । अथो कृणोमि भेषजं यथासंछतहायनः २२ ३३१
 वराहो वेदं वीरुधं नकुलो वेदं भेषजीम् । सर्पा गन्धर्वा या विदुस्ता अस्मा अवसे हुवे २३
 याः सुपर्णा आङ्गिरसीर्दिव्या या रघटो विदुः । वयांसि हंसा या विदुर्याश्च सर्वे पतत्रिणः ।
 मृगा या विदुरोषधीस्ता अस्मा अवसे हुवे २४
 यावतीनामोषधीनां गावः प्राश्नन्त्यथ यावतीनामजावयः ।
 तावतीस्तुभ्यमोषधीः शर्म यच्छन्त्वाभृताः २५
 यावतीषु मनुष्या भेषजं भिषजौ विदुः । तावतीर्विश्वभेषजीरा भरासि त्वामभि २६
 पुष्पवतीः प्रसूमतीः फलिनीरफला उत । संमातर इव दुहामस्मा अरिष्टतातये २७ ३३०
 उत त्वाहार्पं पञ्चशलादथो दशशलादुत । अथो यमस्य षड्विंशाद् विश्वस्माद् देवकिल्विषात् २८

॥ ४२ ॥ (अथर्व० ६।९६।१-३)

भृग्वङ्गिराः । वनस्पतिः (चिकित्सा), ३ सोमः । अनुष्टुप् , ३ त्रिपदा विराणनाम गायत्री ।
 या ओषधयः सोमराजीर्बिह्वीः शतर्विचक्षणाः । बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः १
 मुञ्चन्तु मा शपथ्याइदथो वरुण्यादुत ।
 अथो यमस्य षड्विंशाद् विश्वस्माद् देवकिल्विषात् २
 यच्चक्षुषा मनसा यच्च वाचोपारिम जाग्रतो यत् स्वपन्तः ।
 सोमस्तानि स्वधया नः पुनातु ३

॥ ४३ ॥ (वा० य० ४।१; ५।४२; ६।१५)

(ओषधयः ।)

ओषधे त्रायस्व स्वधिते मैत्रं हिंसीः १ ३५५

॥ ४४ ॥ (वा० य० ११।४७-४८)

(ओषधयः ।)

ओषधयः प्रतिमोदध्वमग्निमेतं शिवमायन्तमभ्यत्रं युष्माः ४७ ३५६

नस्पतयः ।

अज्ञाः ३३९-३६८]

ओषधयः प्रतिगृह्णीत पुष्पवतीः सुपिप्पलाः ।
अयं वो गर्भे ऽ ऋत्विग्यः प्रत्नः सधस्थमासदत्

४८

॥ ४५ ॥ (वा० य० १२।७९; ३५।४)
(ओषधिः ।)

अश्वत्थे वो निषदनं पुणो वो वसतिष्कृता ।
गोमाज् ऽ इत्किलासथ यत् सनवथ पूरुषम्

७९

॥ ४६ ॥ (वा० य० १८।३२-३४)
(अन्नम् ।)

वाजो नः सप्त प्रदिशश्चतस्रो वा परावतः ।

वाजो नो विश्वेदेवैर्धनसाताविहावतु

३२

वाजो नो ऽ अद्य प्रसुवाति दानं वाजो देवाँऽ ऋतुभिः कल्पयति ।

वाजो हि मा सर्ववीरं जजान विश्वा ऽ आशा वाजपतिर्जयेयम्

३३

३६०

वाजः पुरस्तादुत मध्यतो नो वाजो देवान् हविषा वर्धयाति ।

वाजो हि मा सर्ववीरं चकार सर्वा ऽ आशा वाजपतिर्भवेयम्

३४

॥ ४७ ॥ (ऋ० १।९०।६)

गोतमो राहूगणः । विश्वे देवाः (वातसिन्ध्वोषधयः) । गायत्री ।

मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः

६

॥ ४८ ॥ (ऋ० ३।५७।३)

गायिनो विश्वामित्रः । विश्वे देवाः (ओषधयः सूर्यमरीचयो वा) । त्रिष्टुप् ।

या जामयो वृष्ण इच्छन्ति शक्तिं नमस्यन्तीर्जानते गर्भमस्मिन् ।

अच्छा पुत्रं धेनवो वावशाना महश्चरन्ति विभ्रतं वपूषि

३

॥ ४९ ॥ (अथर्व० ३।१८।१-६)

अथर्वा । वनस्पतिः । अनुष्टुप्, ४ अनुष्टुग्गर्भा चतुष्पदा उष्णिक्, ६ उष्णिग्गर्भा पथ्यापङ्क्तिः ।

इमां खनाम्योषधिं वीरुधां बलवत्तमाम् । यया सपत्नीं वाधते यया संविन्दते पतिम् १

उत्तानपुणो सुभगे देवजूते सहस्वति । सपत्नीं मे परां पुद पतिं मे केवलं कृधि २

नहि ते नाम जग्राह नो अस्मिन् रमसे पतौ । परामेव परावतं सपत्नीं गमयामसि ३

उत्तराह्युत्तर उत्तरेदुत्तराभ्यः । अधः सपत्नी या ममाधरा साधराभ्यः ४

अहमस्मि सहमानाथो त्वमसि सासहिः । उमे सहस्वती भूत्वा सपत्नीं मे सहावहे ५

३६५

३६८

अभि तेऽधां सहमानामुप तेऽधां सहीयसीम् ।
मामनु प्र ते मनो वत्सं गौरिव धावतु पथा वारिव धावतु

६

॥ ५० ॥ (वा० य० ५।४२-४३)

(वनस्पतिः ।)

अत्यन्याँऽऽ अगां नान्याँऽऽ उपागामर्वाक् त्वा परेभ्योऽविदं पुरोऽवरेभ्यः ।
तं त्वा जुषामहे देव वनस्पते देवयज्यायै देवास्त्वा देवयज्यायै जुषन्तां विष्णवे त्वा ।
ओषधे त्रायस्व स्वधिते मेनं हिंसीः

४२ ३७०

धां मा लेखीरन्तरिक्षं मा हिंसीः पृथिव्या सम्भवं ।

अयं हि त्वा स्वधितिस्तेतिजानः प्रणिनायं महते सौभगाय ।

अतस्त्वं देव वनस्पते शतवल्शो विरोह सहस्रवल्शा वि वयं रुहेम

४३

॥ ५१ ॥ (वा० य० २०।४५)

(वनस्पतिः ।)

वनस्पतिरवसृष्टो न पाशैस्त्वमन्या समञ्जच्छमिता न देवः ।

इन्द्रस्य हव्यैर्जठरं पूणानः स्वदाति यज्ञं मधुना घृतेन

४५

॥ ५२ ॥ (वा० य० २१।२१)

(वनस्पतिः ।)

शमिता नो वनस्पतिः सविता प्रसुवन् भगम् ।

ककुप् छन्दऽ इहेन्द्रियं वशा वेहद् वयो दधुः

२१

॥ ५३ ॥ (वा० य० २७।२१)

(वनस्पतिः ।)

वनस्पतेऽव सृजा रराणस्त्वना देवेषु । अग्निर्हव्यं शमिता सूदयाति

२१

॥ ५४ ॥ (वा० य० २८।१०, ३३, ४३)

(वनस्पतिः ।)

होता यक्षद् वनस्पतिं शमितारं शतक्रतुं धियो जोष्टारमिन्द्रियम् ।

मध्वा समञ्जन् पृथिभिः सुगेभिः स्वदाति यज्ञं मधुना घृतेन वेत्वाज्यस्य होतर्यजं १०

३७५

होता यक्षद् वनस्पतिं शमितारं शतक्रतुं हिरण्यपर्णमुक्थिनं रशनां बिभ्रतं

वशिं भगमिन्द्रं वयोधसम् ।

ककुभं छन्दऽ इहेन्द्रियं वशां वेहतं गां वयो दधद् वेत्वाज्यस्य होतर्यजं

३३

३७६

नस्पतिः ।

११९-१८९]

देवो वनस्पतिर्देवमिन्द्रं वयोधसं देवो देवमवर्धयत् ।

द्विपदा छन्दसेन्द्रियं भगमिन्द्रे वयो दधद् वसुवने वसुधेयस्य वेतु यज

४३

॥ ५५ ॥ (वा० २९।१०, ३५)

(वनस्पतिः ।)

अथो घृतेन त्मन्या समकतः ऽ उप देवाँः ऽ क्रतुशः पार्थ ऽ एतु ।

वनस्पतिर्देवलोकं प्रजानन्नग्निना हव्या स्वदितानि वक्षत्

१०

उपावसुज त्मन्यां समञ्जन् देवानां पार्थ ऽ क्रतुथा हवींषि ।

वनस्पतिः शमिता देवो ऽ अग्निः स्वदन्तु हव्यं मधुना घृतेन

३५

॥ ५६ ॥ (अथर्व० ४।१७।१-८)

शुक्रः । अपामार्गो वनस्पतिः । अनुष्टुप् ।

ईशानां त्वा भेषजानामुज्जैष आ रभामहे । चक्रे सहस्रवीर्यं सर्वस्मा ओषधे त्वा १

३८०

सत्यजितं शपथयावर्नीं सहमानां पुनः सराम् ।

सर्वाः समह्वयोषधीरितो नः पारयादिति

२

या शशाप शपनेन याधं मूरमादधे । या रसस्य हरणाय जातमारेभे तोकमत्तु सा ३

यां तं चक्रामे पात्रे यां चक्रुर्नीललोहिते ।

आमे मासे कृत्यां यां चक्रुस्तया कृत्याकृतौ जहि

४

दौष्वन्यं दौर्जीवित्यं रक्षो अश्वमिराय्यः ।

दुर्गाम्नीः सर्वा दुर्वाचस्ता अस्मन्नाशयामसि

५

क्षुधामारं तृष्णामारमगोतामनपत्यताम् । अपामार्ग त्वया वयं सर्वं तदपं मृज्महे ६

३८५

तृष्णामारं क्षुधामारमथो अक्षपराजयम् । अपामार्ग त्वया वयं सर्वं तदपं मृज्महे ७

अपामार्ग ओषधीनां सर्वासामेक इद् वशी । तेन ते मृज्म आस्थितमथ त्वमगदश्चर ८

॥ ५७ ॥ (अथर्व० ४।१८।१-८)

शुक्रः । अपामार्गो वनस्पतिः । अनुष्टुप्, ६ बृहतीगर्भा ।

समं ज्योतिः सूर्येणाह्वा रात्रीं समावर्ती ।

कृणोमि सत्यमृतयेऽरसाः संन्तु कृत्वरीः

१

यो देवाः कृत्यां कृत्वा हरादविदुषो गृहम् ।

मृतो धारिव मातरं तं प्रत्यगुपं पद्यताम्

२ ३८९

अमा कृत्वा पाप्मानं यस्तेनान्यं जिघांसति ।
 अश्मानस्तस्यो दुग्धायां बहुलाः फट् करिकति ३ ३९०
 सहस्रधामन् विशिखान् विप्रीवां छायाया त्वम् ।
 प्रति स्म चक्रुषे कृत्यां प्रियां प्रियावते हर ४
 अयाहमोषध्या सर्वाः कृत्या अदूदुषम् ।
 यां क्षेत्रे चक्रुर्या गोषु यां वा ते पुरुषेषु ५
 यश्चकार न शशाक कर्तुं शश्रे पादमङ्गुरिम् । चकार भद्रमस्मभ्यमात्मने तपनं तु सः ६
 अपामार्गोऽप माष्टु क्षेत्रियं शपथश्च यः । अपाह यातुधानीरप सर्वा अराध्यः ७
 अपमृज्य यातुधानानप सर्वा अराध्यः । अपामार्ग त्वया वयं सर्वं तदप मृज्महे ८ ३९५

॥ ५८ ॥ (अथर्व० ४।१९।१-८)

शुक्रः । अपामार्गो वनस्पतिः । अनुष्टुप्, २ पथ्यापङ्क्तिः ।

उतो अस्यबन्धुकुदुतो असि नु जामिकृत् ।
 उतो कृत्याकृतः प्रजां नडमिवा छिन्धि वार्षिकम् १
 ब्राह्मणेन पर्युक्तसि कण्ठेन नार्पदेन ।
 सेनैवैपि त्विपीमती न तत्र भयमस्ति यत्र प्राप्नोष्योषधे २
 अग्रमेष्योषधीनां ज्योतिषेवाभिदीपयन् । उत त्रातासि पाकस्यार्थो हन्तासि रक्षसः ३
 यदुदो देवा असुरांस्त्वयाग्रे निरकुर्वत । तत्स्त्वमध्योषधेऽपामार्गो अजायथाः ४
 विभिन्दती शतशाखा विभिन्दन् नाम ते पिता ।
 प्रत्यग् वि भिन्धि त्वं तं यो अस्मां अभिदासति ५ ४००
 असद् भूम्याः समभवत् तद् यामैति महद् व्यचः ।
 तद् वै ततो विधुपार्यत् प्रत्यक् कर्तारमृच्छतु ६
 प्रत्यङ् हि सैवभूविथ प्रतीचीनफलस्त्वम् । सर्वान् मच्छपथां अधि वरीयो यावया वधम् ७
 शतेन मा परि पाहि सहस्रेणाभि रक्ष मा । इन्द्रस्ते वीरुधां पत उग्र ओजमान्मा दधत् ८

॥ ५९ ॥ (अथर्व० ७।६५।१-३)

शुक्रः । अपामार्गवीरुत् (दुरितनाशनम्) । अनुष्टुप् ।

प्रतीचीनफलो हि त्वमपामार्ग रुरोहिथ । सर्वान् मच्छपथां अधि वरीयो यावया इतः १
 यद् दुष्कृतं यच्छमलं यद् वा चेरिम पापया । त्वया तद् विश्वतोमुखापामार्गप मृज्महे २
 श्यावदता कुन्विना बण्डेन यत् सहासिम । अपामार्ग त्वया वयं सर्वं तदप मृज्महे ३

॥ ६० ॥ (अथर्व० ६।५९।१-३)

अथर्वा । रुद्रः, अरुन्धती औषधिः । अनुष्टुप् ।

अनुष्टुप्स्त्वं प्रथमं धेनुभ्यस्त्वमरुन्धति । अर्धेनवे वयसे शर्म यच्छ चतुष्पदे १
शर्म यच्छत्वोषधिः सह देवीररुन्धती । करत् पर्यस्वन्तं गोष्ठमयक्ष्माँ उत पूरुषान् २
विषरूपां सुभगामुच्छावदामि जीबलाम् । सा नो रुद्रस्यास्तां हेति दूरं नयतु गोभ्यः ३

॥ ६१ ॥ (अथर्व० ६।९५।१-३)

भृगवङ्गिराः । वनस्पतिः (कुष्ठौषधिः) । अनुष्टुप् ।

अथत्यो देवसदनस्तृतीयस्यामितो दिवि । तत्रामृतस्य चक्ष्णं देवाः कुष्ठमवन्वत १ ४१०
हिरण्ययी नौरचरद्विरण्यबन्धना दिवि । तत्रामृतस्य पुष्पं देवाः कुष्ठमवन्वत २
गर्भो अस्थोषधीनां गर्भो हिमवतामुत । गर्भो विश्वस्य भूतस्येमं मे अगदं कृधि ३

॥ ६२ ॥ (अथर्व० ६।१०९।१-३)

अथर्वा । पिप्पली-भेषज्यं, आयुः । अनुष्टुप् ।

पिप्पली क्षिप्तभेषज्युडुतातिविद्धभेषजी । तां देवाः समकल्पयन्नियं जीवित्वा अलम् १
पिप्पल्यः समवदन्तायतीर्जननादधिं । यं जीवमश्रवामहै न स रिष्याति पूरुषः २
असुरास्त्वान्यखनन् देवास्त्वोदवपुन् पुनः । वातीकृतस्य भेषजीमर्थो क्षिप्तस्य भेषजीम् ३ ४१५

॥ ६३ ॥ (अथर्व० १।२५।१-५)

चातनः । पृश्निपर्णी वनस्पतिः । अनुष्टुप्, ४ भुरिक् ।

शं नो देवी पृश्निपर्ण्यं निरुक्त्या अकः ।
उग्रा हि कण्वजस्मनी तामभक्षि सहस्वतीम् १
सहमानेयं प्रथमा पृश्निपर्ण्यजायत । तयाहं दुर्णाम्नां शिरो वृश्चामि शकुनेरिव २
आयमसृक् पावानं यश्च स्फाति जिहीर्षति ।
गर्भदं कण्वं नाशय पृश्निपर्णि सहस्व च ३
गिरिमेनो आ वैशय कण्वान् जीवितयोपनान् ।
तास्त्वं देवि पृश्निपर्ण्यगिरिवानुदहन्निहि ४
प्राच एनान् प्रणुद कण्वान् जीवितयोपनान् ।
तमसि यत्र गच्छन्ति तत् क्रव्यादो अजीगमम् ५ ४२०

॥ ६४ ॥ (अथर्व० ४।१२।१-७)

कमुः । रोहणी वनस्पतिः । अनुष्टुप्, १ त्रिपदा गायत्री, त्रिपदा यवमध्या
भुरिगायत्री, ७ बृहती ।

रोहण्यसि रोहण्युश्चक्षिन्नस्य रोहणी । रोहयेदमरुन्धति १ ४२१

यत् ते रिष्टं यत् ते द्युत्तमस्ति पेष्टं त आत्मनि ।
 धाता तद् भद्रया पुनः सं दधत् परुषा परुः २
 सं ते मज्जा मज्जा भवतु समु ते परुषा परुः ।
 सं ते मांसस्य विस्रस्तं समस्थ्यपि रोहतु ३
 मज्जा मज्जा सं धीयतां चर्मणा चर्म रोहतु ।
 असृक् ते अस्थि रोहतु मांसं मांसेन रोहतु ४
 लोम लोम्रा सं कल्पया त्वचा सं कल्पया त्वचम् ।
 असृक् ते अस्थि रोहतु च्छिन्नं सं धेहोषधे ५ ४१५
 स उत् तिष्ठ प्रेहि प्र द्रव रथः सुचक्रः सुपविः सुनाभिः । प्रति तिष्ठोर्ध्वः ६
 यदि कर्त पतित्वा संश्रे यदि वाश्मा ग्रहतो जघान ।
 ऋभू रथस्येवाङ्गानि सं दधत् परुषा परुः ७

॥ ६५ ॥ (अथर्व० ५।५।१-९)

अथर्वा । लाक्षा । अनुष्टुप् ।

रात्री माता नमः पितार्यमा ते पितामहः ।
 सिलाची नाम वा असि सा देवानामसि स्वसा १
 यस्त्वा पिबति जीवति त्रायसे पुरुषं त्वम् ।
 भर्त्री हि शश्वतामसि जनानां च न्यञ्जनी २
 वृक्षवृक्षमा रोहसि वृषण्यन्तीव कन्यला । जयन्ती प्रत्यातिष्ठन्ती स्पर्णी नाम वा असि ३ ४१०
 यद् दुण्डेन यदिष्वा यद् वारुहर्सा कृतम् ।
 तस्य त्वमसि निष्कृतिः सेमं निष्कृधि पूरुषम् ४
 भद्रात् प्लक्षान्निस्तिष्ठस्यश्चत्थात् खदिरान्द्रवात् ।
 भद्रान्यग्रोधात् पूर्णात् सा न एह्यरुन्धति ५
 हिरण्यवर्णे सुभगे सूर्यवर्णे वपुष्टमे । रुतं गच्छासि निष्कृते निष्कृतिर्नाम वा असि ६
 हिरण्यवर्णे सुभगे शुष्मे लोमशवक्षणे । अपामसि स्वसा लाक्षे वातो हात्मा बभूव ते ७
 सिलाची नाम कानीनोऽज्ज्वभ्रु पिता तव ।
 अश्वो यमस्य यः श्यावस्तस्य हास्त्रास्युक्षिता ८ ४१५
 अश्वस्यास्त्रः संपतित्वा सा वृक्षा अभि सिष्यदे ।
 सुरा पतत्रिणी भूत्वा सा न एह्यरुन्धति ९ ४१६

॥ ६६ ॥ (अथर्व० ५।४।१-१०)

भृग्वह्मिगिराः । कुष्ठो, यक्ष्मनाशनम् (कुष्ठतकमनाशनम्) । अनुष्टुप्, ५ भुरिक्, ६ गायत्री,
१० उष्णिग्गर्भा निचृत् ।

यो गिरिष्वजायथा वीरुधां बलवत्तमः । कुष्ठेहि तकमनाशन त्कमानं नाशयन्नितः १

सुपर्णसुवने गिरौ जातं हिमवतस्परि । धनैरभि श्रुत्वा यन्ति विदुर्हि तकमनाशनम् २

अथत्थो देवसदनस्तृतीयस्यामितो दिवि । तत्रामृतस्य चक्षुषं देवाः कुष्ठमवन्वत ३

हिरण्ययी नौरचरद्विरण्यबन्धना दिवि । तत्रामृतस्य पुष्पं देवाः कुष्ठमवन्वत ४ ४४०

हिरण्ययाः पन्थान आसन्नरित्राणि हिरण्यया ।

नवो हिरण्ययीरासन् याभिः कुष्ठं निरावहन् ५

इमं मे कुष्ठं पूरुषं तमा वह तं निष्कुरु । तमु मे अगदं कृधि ६

देवेभ्यो अधि जातोऽसि सोमस्यासि सखा हितः ।

स प्राणाय व्यानाय चक्षुषे मे अस्मै मृड ७

उदङ् जातो हिमवतः स प्राच्यां नीयसे जनम् ।

तत्र कुष्ठस्य नामान्युत्तमानि वि भेजिरे ८

उत्तमो नाम कुष्ठास्युत्तमो नाम ते पिता ।

यक्ष्मं च सर्वं नाशये त्कमानं चारसं कृधि ९ ४४५

शीर्षमयमुपहृत्यामक्षयोस्तन्वोऽङ्गं रपः । कुष्ठस्तत् सर्वं निष्करद्दैवं समह वृष्ण्यम् १०

॥ ६७ ॥ (अथर्व० १९।३९।१-१०)

भृग्वह्मिगिराः । कुष्ठः (कुष्ठनाशनम्) । अनुष्टुप्; १, ३ त्र्यवसाना पद्यापङ्क्तिः; ४ षट्पदा
जगती; ५ सप्तपदा शकरी, ६-८ अष्टिः (५-८ चतुरवसाना) ।

एतं देवस्त्रायमाणः कुष्ठो हिमवतस्परि । त्कमानं सर्वं नाशये सर्वाश्च यातुधान्यः १

श्रीणि ते कुष्ठ नामानि नद्यमारो नद्यारिषः । नद्यायं पूरुषो रिषत् ।

यस्मै परिव्रवीमि त्वा सायंप्रातरथो दिवा २

जीवला नाम ते माता जीवन्तो नाम ते पिता । नद्यायं पूरुषो रिषत् ।

यस्मै परिव्रवीमि त्वा सायंप्रातरथो दिवा ३

उत्तमो अस्योषधीनामनृद्धान् जगतामिव व्याघ्रः श्वपदामिव । नद्यायं पूरुषो रिषत् ।

यस्मै परिव्रवीमि त्वा सायंप्रातरथो दिवा ४ ४५०

दे. [आयुर्वेद०]

त्रिः शम्बुभ्यो अङ्गिरभ्यस्त्रिरादित्येभ्यस्परि । त्रिर्जातो विश्वदेवेभ्यः ।
 स कुष्ठो विश्वभेषजः साकं सोमेन तिष्ठति ।
 तुक्मानं सर्वं नाशय सर्वाश्च यातुधान्यः ५
 अश्वत्थो देवसदनस्तृतीयस्यामितो दिवि । तत्रामृतस्य चक्षुणं ततः कुष्ठो अजायत ।
 स कुष्ठो विश्वभेषजः साकं सोमेन तिष्ठति ।
 तुक्मानं सर्वं नाशय सर्वाश्च यातुधान्यः ६
 हिरण्ययी नौरचरद्विरण्यबन्धना दिवि । तत्रामृतस्य चक्षुणं ततः कुष्ठो अजायत ।
 स कुष्ठो विश्वभेषजः साकं सोमेन तिष्ठति ।
 तुक्मानं सर्वं नाशय सर्वाश्च यातुधान्यः ७
 यत्र नावप्रभंशनं यत्र हिमवतः शिरः । तत्रामृतस्य चक्षुणं ततः कुष्ठो अजायत ।
 स कुष्ठो विश्वभेषजः साकं सोमेन तिष्ठति ।
 तुक्मानं सर्वं नाशय सर्वाश्च यातुधान्यः ८
 यं त्वा वेद पूर्व इक्ष्वाको यं वा त्वा कुष्ठ काम्यः
 यं वा वसो यमात्स्यस्तेनासि विश्वभेषजः ९
 शीर्षलोके तृतीयके सदुन्दिर्यश्च हायनः । तुक्मानं विश्वधावीर्याधराञ्च परा सुव १०

॥ ६८ ॥ (अथर्व० ६।२१।१-३)

शन्तातिः । चन्द्रमाः (केशवर्धनी औषधिः) । अनुष्टुप् ।

इमा यास्तिस्रः पृथिवीस्तासां ह भूमिरुत्तमा ।
 तासामधि त्वचो अहं भेषजं समु जग्रभम् १
 श्रेष्ठमसि भेषजानां वसिष्ठं वीरुधानाम् । सोमो भगं इव यामेषु देवेषु वरुणो यथा २
 रेवतीरनाधृषः सिषासवः सिषासथ । उत स्थ केशदंहणीरथो ह केशवर्धनीः ३

॥ ६९ ॥ (अथर्व० ६।१३६।१-३)

वीतहव्यः । नितली वनस्पतिः (केशदंहणम्) । अनुष्टुप्, २ एकावसाना द्विपदा साम्नी बृहती ।

देवी देव्यामधि जाता पृथिव्यामस्योषधे ।
 तां त्वा नितली केशेभ्यो दंहणाय खनामसि १
 दंहं प्रत्नान् जनयाजातान् जातानु वर्षीयसस्कृधि २
 यस्ते केशोऽवुपद्यते समूलो यश्च वृश्चते । इदं तं विश्वभेषज्याभि विश्वामि वीरुधा ३

॥ ७० ॥ (अथर्व० ६।१३७।१-३)

वीतहव्यः । वनस्पतिः (केशवर्धनम्) । अनुष्टुप् ।

वा जमदग्निरेवन्द दुहित्रे केशवर्धनीम् । तां वीतहव्य आभरदसितस्य गृहेभ्यः १
 वमीयुना मेया आसन् व्यामेनानुमेयाः । केशा नडा इव वर्धन्तां शीर्ष्णस्ते असिताः परि २
 ह्य मूलमात्रं यच्छ वि मध्यं यामयौषधे । केशा नडा इव वर्धन्तां शीर्ष्णस्ते असिताः परि ३ ४६५

॥ ७१ ॥ (अथर्व० ६।१६।१-४)

शौनकः । चन्द्रमाः, मन्त्रोक्तदेवताः (अक्षिरोगभैषजम्) । अनुष्टुप्, १ निवृत्तित्रिपदा गायत्री;
 ३ बृहतीगर्भा ककुम्भत्यनुष्टुप्, ४ त्रिपदा प्रतिष्ठा ।

आवयो अनावयो रसस्त उग्र आवयो । आ ते कर्मभमञ्जसि १
 विहो नाम ते पिता मदावती नाम ते माता । स हि न त्वमसि यस्त्वमात्मानमावयः २
 तौर्विलिकेऽवेलयावायमैलव ऐलयीत् । बभ्रुश्च बभ्रुकर्णश्चापेहि निराल ३
 अलसालसि पूर्वा सिलाञ्जालास्युत्तरा । नीलागलसाला ४

॥ ७२ ॥ (अथर्व० ६।३०।१-३)

उपरिवभ्रवः । शमी (पापशमनम्) । जगती, १ त्रिष्टुप्, ३ चतुष्पाच्छंकुमत्यनुष्टुप् ।

देवा इमं मधुना संयुतं यवं सरस्वत्यामधि मणावचर्कषुः ।
 इन्द्र आसीत् सीरपतिः शतक्रतुः कीनाशा आसन् मरुतः सुदानवः १ ४७०
 यस्ते मदोऽवकेशो विकेशो येनाभिहस्यं पुरुषं कृणोषि ।
 आरात् त्वदन्या वनानि वृक्षि त्वं शमि शतवल्शा वि रोह २
 बृहत्पलाशे सुभगे वर्षवृद्ध क्रतावरि । मातेव पुत्रेभ्यो मृड केशेभ्यः शमि ३

॥ ७३ ॥ (ऋ० १।९०।८)

गोतमो राहूगणः विश्वे देवाः (वनस्पतिसूर्यगावः) । गायत्री ।
 मधुमात्रो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः ८

॥ ७४ ॥ (ऋ० १।०।८५।२-४)

सावित्री सूर्या ऋषिका । सोमः । अनुष्टुप् ।

सोमेनादित्या बलिनः सोमेन पृथिवी मही ।
 अयो नक्षत्राणामेषा मुपस्थे सोम आहितः २
 सोमं मन्यते पपिवान यत् संपिषन्त्योषधिम् ।
 सोमं यं ब्रह्माणो विदुर्न तस्याश्नाति कश्चन ३ ४७५

आच्छद्विधानैर्गुपितो बर्हितैः सोम रक्षितः ।

ग्राण्णामिच्छुण्वन् तिष्ठसि न ते अश्नाति पार्थिवः

४

॥ ७५ ॥ (ऋ० १।९।१६)

गोतमो राहूगणः । सोमवनस्पतिः । गायत्री ।

त्वं च सोम नो वशो जीवातुं न मरामहे । प्रियस्तोत्रो वनस्पतिः

६

॥ ७६ ॥ (अथर्व० १।३४।१-५)

अथर्वा । मधुवनस्पतिः (मधुविद्या) । अनुष्टुप् ।

इयं वीरुन्मधुजाता मधुना त्वा खनामसि ।

मधोरधि प्रजातासि सा नो मधुमतस्कृधि

१

जिह्वाया अग्रे मधु मे जिह्वामूले मधूलकम् ।

ममेदह कृतावसो मम चित्तमुपायसि

२

मधुमन्मे निक्रमणं मधुमन्मे परायणम् ।

वाचा वदामि मधुमद् भूयासं मधुसंदशः

३

मधोरस्मि मधुतरो मदुघान्मधुमत्तरः ।

मामित् किल त्वं वनाः शाखां मधुमतीमिव

४

परिं त्वा परितलुनेक्षुणागामविद्विषे । यथा मां कामिन्यसो यथा मन्नापंगा असः

५

रोगचिकित्सा । (४८३-६८०)

॥ ७७ ॥ (अथर्व० ६।१४।१-३)

बधुपिङ्गलः । बलासः (बलासनाशनम्) । अनुष्टुप् ।

अस्थिस्रंसं परुस्रंसमास्थितं हृदयामयम् । बलासं सर्वं नाशयाङ्ग्रेष्ठा यश्च पर्वसु

१

निर्वलासं बलासिनः क्षिणोमि मुष्करं यथा । छिनद्वयस्य बन्धनं मूलमुर्वावा इव

२

निर्वलासेतः प्र पताशुंगः शिशुको यथा । अथो इष्टे इव हायनोप द्राह्यवीरहा

३

॥ ७८ ॥ (अथर्व० ६।१०५।१-३)

उन्मोचनः । कासा (कासशमनम्) । अनुष्टुप् ।

यथा मनो मनस्केतैः परापतत्याशुमत् । एवा त्वं कासे प्र पत मनसोऽनु प्रवाय्यम्

१

यथा बाणः सुसंशितः परापतत्याशुमत् । एवा त्वं कासे प्र पत पृथिव्या अनु संवतम्

२

यथा सूर्यस्य रश्मयः परापतत्याशुमत् । एवा त्वं कासे प्र पत समुद्रस्यानु विश्वरम्

३

॥ ७९ ॥ (अथर्व० १।२२।१-४)

ब्रह्मा । सूर्यो, हरिमा हृद्रोगश्च (हृद्रोग-कामिला-नाशनम्) । अनुष्टुप् ।

अनु सूर्यमुदयतां हृद्योतो हरिमा च ते ।

गो रोहितस्य वर्णेन तेन त्वा परि दध्मसि १

परि त्वा रोहितैर्वर्णैर्दीर्घायुत्वाय दध्मसि । यथायमरपा असदथो अहरितो भुवत् २ ४९०

या रोहिणीर्देवत्याः गावो या उत रोहिणीः ।

रूपं वयोवयस्ताभिष्ट्वा परि दध्मसि ३

शुक्लेषु ते हरिमाणं रोपणाकासु दध्मसि । अथो हारिद्रवेषु ते हरिमाणं नि दध्मसि ४

॥ ८० ॥ (अथर्व० २।८।१-५)

शुक्लिः । वनस्पतिः, यक्षमनाशनम् (क्षेत्रियरोगनाशनम्) । अनुष्टुप्, ३ पथ्यापङ्क्तिः, ४ विराट्, ५ निचृत्पथ्यापङ्क्तिः ।

उदगातां भगवती विचृतौ नाम तारकै । वि क्षेत्रियस्य मुञ्चतामधमं पाशमुत्तमम् १

अपेयं राज्यच्छत्वपोच्छन्त्वभिकृत्वर्यः । वीरुत् क्षेत्रियनाशन्यप क्षेत्रियमुच्छतु २

वधोरक्षेनकाण्डस्य यवस्य ते पलाल्या तिलस्य तिलपिङ्गया ।

वीरुत् क्षेत्रियनाशन्यप क्षेत्रियमुच्छतु ३ ४३५

नमस्ते लाङ्गलेभ्यो नम ईषायुगेभ्यः । वीरुत् क्षेत्रियनाशन्यप क्षेत्रियमुच्छतु ४

नमः सनिस्तस्येभ्यो नमः संदेश्येभ्यः ।

नमः क्षेत्रस्य पतये वीरुत् क्षेत्रियनाशन्यप क्षेत्रियमुच्छतु ५

॥ ८१ ॥ (अथर्व० ६।१३।१-५)

अथर्वा । वनस्पतिः (क्लीबत्वम्) । अनुष्टुप्, ३ पथ्यापङ्क्तिः ।

ते वीरुतां श्रेष्ठतमाभिभ्रुतास्योषधे । इमं मे अद्य पूरुषं क्लीबमोपशिनं कृधि १

श्रेष्ठं कृष्योपशिनमथो कुरीरिणं कृधि । अथास्येन्द्रो ग्रावभ्यामुभे भिनत्वाण्ड्यौ २

श्रेष्ठं क्लीवं त्वाकरं वध्रे वध्रि त्वाकरमरसारसं त्वाकरम् ।

श्रेष्ठस्य शीर्षणि कुम्भं चाधिनिदध्मसि ३ ५००

ते ते भिनन्ति शर्म्ययामुष्या अधि मुष्कयोः ४

एवा भिनन्ति ते शेपोऽमुष्या अधि मुष्कयोः ५

॥ ८२ ॥ (अथर्व० ७।७४।१-४)

अथर्वाङ्गिराः । मन्त्रोक्ताः, ४ जातवेदाः (गण्डमालाचिकित्सा) । अनुष्टुप् ।

लोहिनीनां कृष्णा मातेति शुश्रुम । मुनेर्देवस्य मूलेन सर्वा विध्यामि ता अहम् १ ५०३

विध्याम्यासां प्रथमां विध्याम्युत मध्यमाम् । इदं जघन्यामासामा च्छिनन्ति स्तुकांमिव २
 त्वाष्ट्रेणाहं वचसा वि ते ईर्ष्याममीमदम् । अथो यो मन्युष्टे पते तस्य ते शमयामसि ३
 व्रतेन त्वं व्रतपते समक्तो विश्वाहां सुमना दीदिहीह ।
 ते त्वा वयं जातवेदः समिद्धं प्रजावन्त उप सदेम सर्वे ४

॥ ८३ ॥ (अथर्व० ७।७६।१-६)

अथर्वा । १, २ अपचिद्वैषज्यं, ३-६ जायान्यः, इन्द्रः, (गण्डमालाचिकित्सा) । अनुष्टुप्, १ विराट्,
 २ परोष्णिक्, ४ त्रिष्टुप्, ५ भुरिगनुष्टुप् ।

आ सुस्रसः सुस्रसो असतीभ्यो असत्तराः । सेहोररसतरा लवणाद् विक्लेदीयसीः १
 या ग्रैव्या अपचितोऽथो या उपपक्ष्याः । विजाम्नि या अपचितः स्वयंस्रसः २
 यः कीकसाः प्रशृणाति तलीद्यमिवतिष्ठति । निर्हास्तं सर्वं जायान्यं यः कश्च ककुदिं श्रितः ३
 पक्षी जायान्यः पतति स आ विशति पूरुषम् । तदक्षितस्य भेषजमुभयोः सुक्षतस्य च ४
 विन्न वै ते जायान्य जानं यतो जायान्य जायसे । कथं ह तत्र त्वं हनो यस्य कृण्मो हविर्गृहे ५
 धृपत् पिब कलशे सोममिन्द्र वृत्रहा शूर समरे वसूनाम् ।
 माध्यन्दिने सर्वेन आ वृष्टस्व रयिष्ठानो रयिमस्मासु धेहि ६

॥ ८४ ॥ (अथर्व० ६।८३।१-४)

भगः । १ सूर्यः चन्द्रमाः, २ रोहिणी, ३ रामायणी (भैषज्यम्) । अनुष्टुप्, ४ एकावसाना
 द्विपदा निचृदाच्यनुष्टुप् ।

अपचितः प्र पतत सुपर्णो वसतेरिव । सूर्यः कृणोतु भेषजं चन्द्रमा वोऽपोच्छतु १
 एन्येका इयेन्येका कृष्णैका रोहिणी द्वे । सर्वसामग्रभं नामावीरघ्नीरपेतन २
 अस्मृतिका रामायण्यपचित् प्र पतिष्यति ।
 ग्लौरितः प्र पतिष्यति स गलुन्तो नशिष्यति ३
 वीहि स्वामाहुति जुषाणो मनसा स्वाहा मनसा यदिदं जुहोमि ४

॥ ८५ ॥ (अथर्व० १।२३।१-४)

अथर्वा । वनस्पतिः [असिक्तिः] (श्वेतकुष्ठनाशनम्) । अनुष्टुप् ।

नक्तंजातास्योषधे रामे कृष्णे असिक्नि च ।
 इदं रजनि रजय किलासं पलितं च यत् १
 किलासं च पलितं च निरितो नाशया पृषत् ।
 आ त्वा स्वो विशतां वर्णः परा शुक्लानि पातय २
 असितं ते प्रलयेनमास्थानमसितं तव । असिक्न्यस्योषधे निरितो नाशया पृषत् ३

अस्थिजस्य किलासस्य तनूजस्य च यत् त्वचि ।

दृष्या कृतस्य ब्रह्मणा लक्ष्मं श्वेतमनीनशम्

॥ ८६ ॥ (अथर्व० १।२४।१-४)

ब्रह्मा । आसुरी वनस्पतिः (श्वेतकुष्ठनाशनम्) । अनुष्टुप्, २ निचृत्पथ्यापङ्क्तिः ।

सुपर्णो जातः प्रथमस्तस्य त्वं पित्तमासिथ ।

तदासुरी युष्मा जिता रूपं चक्रे वनस्पतीन्

आसुरी चक्रे प्रथमेदं किलासभेषजमिदं किलासनाशनम् ।

अनीनशत् किलासं सरूपामकरत् त्वचम्

सरूपा नाम ते माता सरूपो नाम ते पिता ।

सरूपकृत् त्वमोषधे सा सरूपमिदं कृधि

श्यामा सरूपंकरणी पृथिव्या अद्ध्युद्धता । इदम् पु प्र साधय पुनां रूपानि कल्पय

॥ ८७ ॥ (अथर्व० १।२५।१-४)

भृगुहिराः । यक्षमनाशनोऽग्निः (तक्ष्म-नाशनम्) । त्रिष्टुप्, २-३ विराड्गर्भा, ४ पुरोऽनुष्टुप् ।

यद्विरापो अदेहत् प्रविश्य यत्राकृण्वन् धर्मधृतो नमांसि ।

तत्रे त आहुः परमं जनित्रं स नः संविद्वान् परि वृड्ग्धि तक्ष्मन्

यद्यर्चिर्यदि वासिं शोचिः शकल्येषि यदि वा ते जनित्रम् ।

हृदुर्नामांसि हरितस्य देव स नः संविद्वान् परि वृड्ग्धि तक्ष्मन्

यदि शोको यदि वाभिः शोको यदि वा राज्ञो वरुणस्यासि पुत्रः ।

हृदुर्नामांसि हरितस्य देव स नः संविद्वान् परि वृड्ग्धि तक्ष्मन्

नमः शीतार्य तक्ष्मने नमो रुरार्य शोचिषे कृणोमि ।

यो अन्येद्युरुभयद्युरभ्येति तृतीयकाय नमो अस्तु तक्ष्मने

॥ ८८ ॥ (अथर्व० ७।११६।१-२)

भृगुहिराः । चन्द्रमाः (ज्वर-नाशनम्) । १ पुरोष्णिक्, २ एकावसाना द्विपदा आर्च्यनुष्टुप् ।

नमो रुरार्य च्यवनाय नोदनाय धूष्णवे । नमः शीतार्य पूर्वकामकृत्वेन

या अन्येद्युरुभयद्युरभ्येतीमं मण्डूकमभ्येत्त्वव्रतः

॥ ८९ ॥ (अथर्व० ५।२२।१-१४)

भृगुहिराः । तक्ष्मनाशनः । अनुष्टुप्, १ भुरिक् त्रिष्टुप्, २ त्रिष्टुप्, ५ विराट् पथ्याबृहती ।

अस्ति तक्ष्मानमप वाधतामितः सोमो ग्रावा वरुणः पूतदक्षाः ।

देवैर्देहिः समिधः शोशुचाना अप द्वेषांस्यमुया भवन्तु

अयं यो विश्वान् हरितान् कृणोष्युच्छोचयन्नग्निरिवाभिदुन्वन् ।
 अधा हि तत्कमन्नरसो हि भूया अधा न्यङ्कुधराड् वा परैहि २
 यः परुषः पारुषेयोऽवध्वंस इवारुणः । तत्कमानं विश्वधावीर्याधराञ्च परां सुव ३
 अधराञ्च प्र हिणोमि नमः कृत्वा तत्कमने । शक्रम्भरस्य मुष्टिहा पुनरेतु महावृषान् ४
 ओको अस्य मूर्जवन्त ओको अस्य महावृषाः ।
 यावज्जातस्तत्कमंस्तावानसि बलिहकेषु न्योचरः ५
 तत्कमन् व्यलि वि गदु व्यङ्गि भूरि यावय ।
 दासीं निष्टकरीमिच्छ तां वज्रेण समर्पय ६
 तत्कमन् मूर्जवतो गच्छ बलिहकान् वा परस्तराम् ।
 शूद्रामिच्छ प्रफर्व्य तां तत्कमन् वीवि धूनुहि ७
 महावृषान् मूर्जवतो बन्ध्वद्धि परेत्य । प्रैतानि तत्कमने ब्रूमा अन्यक्षेत्राणि वा इमा ८
 अन्यक्षेत्रे न रमसे वशी सन्मृडयासि नः ।
 अभूदु प्रार्थस्तत्कमा स गमिष्यति बलिहकान् ९
 यत् त्वं शीतोऽथो रूरः सह कासावेषयः ।
 भीमास्ते तत्कमन् हेतयस्ताभिः स्म परि वृङ्ग्धि नः १०
 मा स्मेतान्त्सखीन् कुरुथा बलासं कासमुद्युगम् ।
 मा स्मातोऽर्वाडैः पुनस्तत् त्वां तत्कमन्नुप ब्रुवे ११
 तत्कमन् भ्रात्रा बलासेन स्वस्रा कासिकया सह ।
 पाप्मा भ्रातृव्येण सह गच्छामुमरणं जनम् १२
 तृतीयकं वितृतीयं सदुन्दिमुत शरदम् ।
 तत्कमानं शीतं रूरं ग्रैष्मं नाशय वार्षिकम् १३
 गन्धारिभ्यो मूर्जवद्भ्योऽङ्गैभ्यो मगधैभ्यः ।
 प्रैष्यन् जनमिव शेवधि तत्कमानं परि दत्तासि १४

॥ ९० ॥ (ऋ० १।५०।११-१३)

प्रस्कण्वः काण्वः । सूर्यः (रोगघ्न्य उपनिषदः, १३ अन्त्योऽर्धर्वः द्विषद्भश्च) । अनुष्टुप् ।

उद्यन्नद्य मित्रमह आरोहन्नुत्तरां दिवं । हृद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय ११
 शुकैषु मे हरिमाणं रोपणाकासु दध्मसि । अथो हारिद्रवेषु मे हरिमाणं नि दध्मसि १२
 उदगादुद्यमादित्यो विश्वेन सहसा सह । द्विषन्ते मह्यं रुन्धयन् मो अहं द्विषते रधम् १३

गचिक्त्वा ।

अनु० ५३२-५६१]

॥ ९१ ॥ (अथर्व० ४।१३, १-७)

जन्ताति । चन्द्रमाः, विश्वे देवाः, १ देवाः, २-३ वातः, ४ मरुतः, ६-७ हस्तः, (रोगनिवारणम्) । अनुष्टुप् ।

उत देवा अवहितं देवा उन्नयथा पुनः । उतागंश्चक्रुषं देवा देवा जीवयथा पुनः १

द्वाविमौ वातौ वात आ सिन्धोरा परावतः ।

दक्षं ते अन्य आवातु व्य॑न्यो वातु यद् रपः २

आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद् रपः ।

त्वं हि विश्वभेषज देवानां दूत ईर्यसे ३ ५५०

त्रायन्तामिमं देवास्त्रायन्तां मरुतां गुणाः । त्रायन्तां विश्वा भूतानि यथायमरपा असत् ४

आ त्वागमं शतातिभिरथो अरिष्टतातिभिः ।

दक्षं त उग्रमाभारिषं परा यक्षम सुवामि ते ५

अयं मे हस्तो भगवानयं मे भगवत्तरः । अयं मे विश्वभेषजोऽयं शिवाभिमर्शनः ६

हस्ताभ्यां दशशाखाभ्यां जिह्वा वाचः पुरोगवी ।

अनामयितुभ्यां हस्ताभ्यां ताभ्यां त्वाभि मृशामसि ७ ५५४

॥ ९२ ॥ (अथर्व० १।१७।१-४)

ब्रह्मा । योषितः धमन्यश्च (रुधिरस्त्रावनिवृत्तये धमनीवन्धनम्) । अनुष्टुप्, १ भुरिगनुष्टुप्, ४ त्रिपदार्षी गायत्री ।

अमूर्या यन्ति योषितो हिरा लोहितवाससः ।

अभ्रातर इव जामयस्तिष्ठन्तु हतवर्चसः १ ५५५

तिष्ठावरे तिष्ठ पर उत त्वं तिष्ठ मध्यमे ।

कनिष्ठिका च तिष्ठति तिष्ठादिद्धमनिर्मही २

शतस्य धमनीनां सहस्रस्य हिराणां । अस्थुरिन्मध्यमा इमाः साकमन्ता अरंसत ३

परि वः सिकतावती धनुर्वृहत्यक्रिमीत् । तिष्ठतेलयता सु कम् ४ ५५८

॥ ९३ ॥ (अथर्व० ६।४४।१-३)

विश्वामित्रः । वनस्पतिः (रोगनाशनम्) । अनुष्टुप्, ३ त्रिपदा महावृहती ।

अस्थाद् धौरस्थात् पृथिव्यस्थाद् विश्वमिदं जगत् ।

अस्थर्वृक्षा ऊर्ध्वस्वमास्तिष्ठाद् रोगो अयं तव १

शतं या भेषजानि ते सहस्रं संगतानि च । श्रेष्ठमास्त्रावभेषजं वसिष्ठं रोगनाशनम् २ ५६०

ह्रस्वस्य सूत्रमस्यमृतस्य नाभिः ।

विषाणका नाम वा असि पितृणां मूलादुत्थिता वातीकृतनाशनी ३ ५६१

६ दे. [आयुर्वेद०]

॥ ९४ ॥ (अथर्व० ६।५२।१-३)

भागलिः । १ सूर्यः, २ गावः, ३ भेषजम् । अनुष्टुप् ।

उत् सूर्यो दिव एति पुरो रक्षांसि निजूर्ध्वम् । आदित्यः पर्वतेभ्यो विश्वदृष्टो अदृष्टहा १
 नि गावो गोष्ठे असदुन् नि मुगासो अविक्षत । न्यूर्ध्वमयो नदीनां न्युदृष्टो अलिप्तत २
 आयुर्देदै विपश्चितं श्रुतां कर्षस्य वीरुधम् । आभारिषं विश्वभेषजीमस्यादृष्टान् नि शमयत् ३ ५६४

॥ ९५ ॥ (अथर्व० २।३।१-६)

अङ्गिराः । भेषज्यं, आयुः, धन्वन्तरिः, (आस्त्रावस्य भेषजम्) । अनुष्टुप्, ६ त्रिपदा
 स्वराडुपरिष्ठान्महावृहती ।

अदो यद्वधावत्यवत्कमधि पर्वतात् ।
 तत् ते कृणोमि भेषजं सुभेषजं यथासंसि १ ५६५
 आदुङ्गा कुविदुङ्गा शते या भेषजानि ते ।
 तेषामसि त्वमुत्तममनास्त्रावमरोगणम् २
 नीचैः खनन्त्यसुरा अरुस्त्राणमिदं महत् ।
 तदास्त्रावस्य भेषजं तदु रोगमनीनशत् ३
 उपजीका उद् भरन्ति समुद्रादधि भेषजम् ।
 तदास्त्रावस्य भेषजं तदु रोगमशीशमत् ४
 अरुस्त्राणमिदं महत् पृथिव्या अभ्युद्धृतम् ।
 तदास्त्रावस्य भेषजं तदु रोगमनीनशत् ५
 शं नो भवन्त्वप ओषधयः शिवाः ।
 इन्द्रस्य वज्रो अप हन्तु रक्षसं आराद् विसृष्टा इषवः पतन्तु रक्षसाम् ६ ५७०

॥ ९६ ॥ (अथर्व० १।३।१-९)

अथर्वा । १ पर्जन्यः, २ मित्रः, ३ वरुणः, ४ चन्द्रः, ५ सूर्यः, (सूत्रमोचनम्) । अनुष्टुप्,
 १-५ पथ्यापङ्क्तिः ।

विद्या शरस्य पितरं पर्जन्यं शतवृण्यम् ।
 तेना ते तन्वेडु शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्टे अस्तु बालिति १
 विद्या शरस्य पितरं मित्रं शतवृण्यम् ।
 तेना ते तन्वेडु शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्टे अस्तु बालिति २
 विद्या शरस्य पितरं वरुणं शतवृण्यम् ।
 तेना ते तन्वेडु शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्टे अस्तु बालिति ३ ५७१

गच्छि कित्वा ।

५१२-५८९ ।

१

२

३

४

५

६

७

८

९

१०

११

१२

१३

१४

१५

१६

१७

१८

१९

२०

२१

२२

२३

२४

२५

२६

२७

२८

२९

३०

३१

३२

३३

३४

विद्या शरस्य पितरं चन्द्रं शतवृण्यम् ।

तेना ते तन्वेष्टुं शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्टुं अस्तु बालिति ४

विद्या शरस्य पितरं सूर्यं शतवृण्यम् ।

तेना ते तन्वेष्टुं शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्टुं अस्तु बालिति ५ ५७५

यदान्त्रेषु गवान्योर्यद्वस्तावधि संश्रुतम् । एवा ते मूत्रं मुच्यतां बहिर्बालिति सर्वकम् ६

प्र ते मिनश्चि मेहनं वत्रै वेशन्त्या इव ।

एवा ते मूत्रं मुच्यतां बहिर्बालिति सर्वकम् ७

विषितं ते वस्तिविलं समुद्रस्योदधेरिव ।

एवा ते मूत्रं मुच्यतां बहिर्बालिति सर्वकम् ८

यथेषुका परापतदवसृष्टाधि धन्वनः ।

एवा ते मूत्रं मुच्यतां बहिर्बालिति सर्वकम् ९ ५६९

॥ ९७ ॥ (अथर्व० ४।९।१-१०)

भृगुः । त्रैकाकुदाञ्जनम् । अनुष्टुप्, २ ककुम्भती, ३ पथ्यापङ्क्तिः ।

एहि जीवं त्रायमाणं पर्वतस्यास्यक्ष्यम् । विश्वेभिर्देवैर्दत्तं परिधिर्जीवनाय कम् १ ५८०

परिपाणं पुरुषाणां परिपाणं गवामसि । अश्वानामर्वातां परिपाणाय तस्थिषे २

उतासि परिपाणं यातुजम्भनमाञ्जन ।

उतामृतस्य त्वं वेत्थाथो असि जीवभोजनमथो हरितभेषजम् ३

यसाञ्जनं प्रसर्पस्यङ्गमङ्गं परुष्परुः । ततो यक्ष्मं वि बाधस उग्रो मध्यमशीरिव ४

नैतं प्राप्नोति शपथो न कृत्या नाभिश्चोचनम्

नैतं विष्कन्धमश्नुते यस्त्वा विभेर्त्याञ्जन ५

असन्मन्त्राद् दुष्पन्थाद् दुष्कृताच्छमलादुत ।

तुर्हादिश्वशुषो घोरात् तस्मान्नः पाह्याञ्जन ६ ५८५

एदं विद्वानाञ्जन सत्यं वक्ष्यामि नानृतम् । सनेयमश्वं गामहमात्मानं तवं पूरुष ७

प्रयो दासा आञ्जनस्य त्वमा बलास आदहिः ।

गोषिः पर्वतानां त्रिकुक्नाम ते पिता ८

यदाञ्जनं त्रैककुदं जातं हिमवतस्परि । यातूश्च सर्वाञ्जम्भयत् सर्वाश्च यातुधान्यः ९

यदि वासि त्रैककुदं यदि यामुनमुच्यसे ।

उमे ते भद्रे नाम्नी ताभ्यां नः पाह्याञ्जन १० ५८९

॥ ९८ ॥ (अथर्व० ७।३०।१)

भृगुङ्गिराः । द्यावापृथिवी, मित्रः, ब्रह्मणस्पतिः, सविता च (अञ्जनम्) । बृहती ।
स्वाक्तं मे द्यावापृथिवी स्वाक्तं मित्रो अकरयम् ।

स्वाक्तं मे ब्रह्मणस्पतिः स्वाक्तं सविता करत्

॥ ९९ ॥ (अथर्व० ७।३६।१)

अथर्वा । अक्षि, मनः (अञ्जनम्) । अनुष्टुप् ।

अक्षयौ नौ मधुसंकाशे अनीकं नौ समञ्जनम् ।

अन्तः कृणुष्व मां हृदि मन इन्नौ सहासति

॥ १०० ॥ (अथर्व० १९।४५।१-१०)

भृगुः । आञ्जनम्, मन्त्रोक्तदेवताः । १-२ अनुष्टुप्; ३, ५ त्रिष्टुप्; ६-१० एकावसाना
महाबृहती (६ विराट्, ७-१० निचृत्) ।

कृणादृणमिव संनयन् कृत्यां कृत्याकृतो गृहम् ।

चक्षुर्मन्त्रस्य दुर्हादिः पृथीरपि शृणाञ्जन

यदुस्मासु दुष्पन्न्यं यद् गोषु यच्च नो गृहे ।

अनामगुस्तं च दुर्हादिः प्रियः प्रति मुञ्चताम्

अपामूर्ज ओजसो वावृधानमग्नेर्जातमधि जातवेदसः ।

चतुर्वीरं पर्वतीयं यदाञ्जनं दिशः प्रदिशः करदिच्छिवास्ते

चतुर्वीरं वष्यत आञ्जनं ते सर्वा दिशो अभयास्ते भवन्तु ।

ध्रुवस्तिष्ठासि सवितेव चार्यं इमा विशो अभि हरन्तु ते बलिम्

आक्ष्वैकं मणिमेकं कृणुष्व स्नाह्येकेना पिवैकमेषाम् ।

चतुर्वीरं नैर्ऋतेभ्यश्चतुर्भ्यो ग्राह्यां वन्धेभ्यः परिं पात्वस्मान्

अग्निर्माभिनावतु प्राणायानायायुषे वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा

इन्द्रो मेन्द्रियेणावतु प्राणायानायायुषे वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा

सोमो मा सौम्येनावतु प्राणायानायायुषे वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा

भर्गो मा भर्गेनावतु प्राणायानायायुषे वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा

मरुतो मा गणैरवन्तु प्राणायानायायुषे वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा १०

॥ १०१ ॥ (अथर्व० १९।४८।१-१०)

भृगुः । आञ्जनम्, ८-९ वरुणः (भेषज्यम्) । अनुष्टुप्; ४ चतुष्पदा शकुमती उष्णिक्; ५ निचृद्विषमा

त्रिपदा गायत्री ।

आयुषोऽसि प्रतरणं विप्रं भेषजमुच्यसे । तदाञ्जनं त्वं शताते शमापो अभयं कृतम् १

१	५१०	यो हिमा जायान्योऽङ्गभेदो विसर्पकः । सर्वे ते यक्षमङ्गभ्यो वहिर्निहन्त्वाञ्जनम् २	
		जाञ्जनं पृथिव्यां जातं भद्रं पुरुषजीवनम् । कृणोत्वग्रमायुकं रथजूतिमनागसम् ३	
		प्राणं प्राणं त्रायस्वासो असेवे मृड । निर्यते निर्यत्या नः पार्श्वभ्यो मुञ्च ४ ६०५	
		मित्रोर्मौऽसि विद्युतां पुष्पम् । वातः प्राणः सूर्यश्चक्षुर्दिवस्पयः ५	
		देवाञ्जनं त्रैलोक्यं परि मा पाहि विश्वतः । न त्वा तरन्त्योर्षधयो बाह्याः पर्वतीया उत ६	
		वीरुदं मध्यमवास्पद् रक्षोहामीव चातनः । अमीवाः सर्वाश्चातयन् नाशयदभिभा इतः ७	
१	५११	वीरुदं राजन् वरुणानृतमाह पूरुषः । तस्मात् सहस्रवीर्यं मुञ्च नः पर्यहसः ८	
		वरापो अघ्ना इति वरुणेति यदुचिम । तस्मात् सहस्रवीर्यं मुञ्च नः पर्यहसः ९ ६१०	
		मित्रं त्वा वरुणश्चानुप्रेयतुराञ्जन । तौ त्वानुगत्य दूरं भोगाय पुनरोदतुः १० ६११	

॥ १०२ ॥ (वा० य० ४।३)

(अञ्जनम् ।)

वृत्रस्यासि कनीनकश्चक्षुर्दा ऽ असि चक्षुर्मे देहि ३

॥ १०३ ॥ (अथर्व० ४।१।१-७)

ब्रह्मा । स्वापनं, वृषभः । अनुष्टुप्, २ भुरिक्, ७ पुरस्ताज्ज्योतिस्त्रिष्टुप् ।

१	५१५	सहस्रमृज्जो वृषभो यः समुद्रादुदाचरत् । तेना सहस्येना वयं नि जनान्त्स्वापयामसि १	
		न भूमिं वातो अतिं वाति नातिं पश्यति कश्चन । स्त्रियश्च सर्वाः स्वापय शुनश्चेन्द्रसखा चरन् २	
		श्रोष्ठेश्यास्तल्पेशया नारीर्या वं ह्यशीवरीः । स्त्रियो याः पुण्यगन्धयस्ताः सर्वाः स्वापयामसि ३ ६१५	
		एजदेजदजग्रभं चक्षुः प्राणमजग्रभम् । अज्ञान्यजग्रभं सर्वा रात्रीणामतिश्वरे ४	
	६००	य आस्ते चश्चरति यश्च तिष्ठन् विपश्यति । तेषां सं देह्यो अक्षीणि यथेदं हर्म्य तथा ५	
१०	६०१	स्वमु माता स्वमु पिता स्वमु श्वा स्वमु विहपतिः । स्वपन्त्वस्यै ज्ञातयः स्वप्त्वयमभितो जनः ६	
		स्वम स्वमाभिकरणेन सर्वं नि प्वापया जनम् । ओत्सूर्यमन्यान्त्स्वापयाव्युपं जागृतादहमिन्द्र इवारिष्ठो अक्षितः ७ ६१९	

॥ १०४ ॥ (अथर्व० ६।९०।१-३)

अथर्वा । रुद्रः (इषुनिष्कासनम्) । अनुष्टुप्, ३ आर्षी भुरिगुणिक् ।

यां ते रुद्र इषुमास्यदङ्गैभ्यो हृदयाय च । इदं तामद्य त्वद् वयं विषूचीं वि वृहामसि १ ६२०
 यास्ते शतं धमनयोऽङ्गान्यनु विष्टिताः । तासां ते सर्वासां वयं निर्विषाणि ह्वयामसि २
 नमस्ते रुद्रास्यते नमः प्रतिहितायै । नमो विसृज्यमानायै नमो निपतितायै ३ ६२१

॥ १०५ ॥ (क्र० १।१२०।१२)

कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । अश्विनौ (दुःष्वप्ननाशनम्) । गायत्री ।

अध स्वप्नस्य निर्विदे ऽभुञ्जतश्च रेवतः । उभा ता वसि नश्यतः १२

॥ १०६ ॥ (क्र० १।१८।१०)

कूर्मो गार्त्समदो गृत्समदो वा । वरुणः (दुःष्वप्ननाशिनी) । त्रिष्टुप् ।

यो मे राजन् युज्यो वा सखा वा स्वप्ने भयं भीरवे मद्यमाह ।
 स्तेनो वा यो दिप्सति नो वृको वा त्वं तस्माद् वरुण पाह्यस्मान् १०

॥ १०७ ॥ (क्र० १०।१६४।१-५)

प्रचेता आङ्गिरसः । दुःष्वप्ननाशनम् । अनुष्टुप्, ३ त्रिष्टुप्, ५ पङ्क्तिः ।

अपेहि मनसस्पते ऽपं काम परश्चर ।
 परो निर्येत्या आ चक्ष्व बहुधा जीवतो मनः ×१ ६२५
 भद्रं वै वरं वृणते भद्रं युञ्जन्ति दक्षिणम् ।
 भद्रं वैवस्वते चक्षुर्बहुत्रा जीवतो मनः २
 यदाशसा निःशसाभिःशसौ पारिम जाग्रतो यत् स्वपन्तः ।
 अग्निर्विश्वाभ्यपं दुष्कृता न्यजुष्टान्यारे अस्मद् दधातु ३
 यदिन्द्र ब्रह्मणस्पते ऽभिद्रोहं चरामसि ।
 प्रचेता न आङ्गिरसो द्विषतां पात्वंहसः ४
 अजैष्माद्यासनाम् चाऽभूमानागसो वयम् ।
 जाग्रत्स्वप्नः संकल्पः पापो यं द्विष्मस्तं स क्रच्छतु यो नो द्वेष्टि तमृच्छतु ५ ६२९

॥ १०८ ॥ (अथर्व० ६।४५।१-३)

अङ्गिराः प्रचेता यमश्च । दुःष्वप्ननाशनम् । १ पथ्यापङ्क्तिः, २ भुरिक् त्रिष्टुप्, ३ अनुष्टुप् ।

परोऽपेहि मनस्पाप किमशस्तानि शंससि ।

परेहि न त्वां कामये वृक्षां वनानि सं चर गृहेषु गोषु मे मनः १ ६३०

× अथर्व० १०, ९६, २४ ।

चिकित्सा ।

अथ १२०-६४१]

अवशसा निःशसा यत् पराशसोपारिम जाग्रतो यत् स्वपन्तः ।

अग्निर्विश्वान्यप दुष्कृतान्यजुष्टान्यारे अस्मद् दधातु

यदिन्द्र ब्रह्मणस्पतेऽपि मृषा चरामसि । प्रचेता न आजिरसो दुरितात् पात्वंहंसः ३

॥ १०३ ॥ (अथर्व० ६।४६।१-३)

अजिराः प्रचेता यमश्च । दुःष्वप्ननाशनम् । १ विष्टारपङ्क्तिः, २ ज्यवसाना शक्करीगर्भा पञ्चपदा जगती, ३ अनुष्टुप् ।

यो न जीवोऽसि न मृतो देवानाममृतगर्भोऽसि स्वप्न ।

वृक्षणी ते माता यमः पितारुरुर्नामासि

विद्य ते स्वप्न जनित्रं देवजामीनां पुत्रोऽसि यमस्य करणः ।

अन्तकोऽसि मृत्युरसि । तं त्वा स्वप्न तथा सं विद्म स नः स्वप्न दुष्वप्न्यात् पाहि २

यथा कलां यथा शफं यथर्णं संनयन्ति । एवा दुष्वप्न्यं सर्वं द्विषते सं नयामसि ३

॥ ११० ॥ (अथर्व० ७।१००।१)

यमः । दुःष्वप्ननाशनम् । अनुष्टुप् ।

पर्यावर्ते दुष्वप्न्यात् पापात् स्वप्न्यादभूत्याः ।

ब्रह्माहमन्तरं कृष्वे परा स्वप्नमुखाः शुचः

॥ १११ ॥ (अथर्व० ७।१०१।१)

यमः । दुःष्वप्ननाशनम् । अनुष्टुप् ।

तत् स्वप्ने अन्नमश्रामि न प्रातरधिगम्यते ।

सर्वं तदस्तु मे शिवं नहि तद् दृश्यते दिवा

॥ ११२ ॥ (अथर्व० ७।६९।१)

शन्तातिः । सुखम् । पथ्यापङ्क्तिः ।

शं नो वातो वातु शं नस्तपतु सूर्यः ।

अहानि शं भवन्तु नः शं रात्री प्रति धीयतां शमुषा नो व्युच्छितु

॥ ११३ ॥ (अथर्व० ६।४३।१-३)

भृग्वरुगिराः (परस्परचित्तैकीकरणकामः) । मन्युशमनम् । अनुष्टुप् ।

अयं दुर्भो विमन्युकः स्वाय चारणाय च । मन्योर्विमन्युकस्यायं मन्युशमन उच्यते १

अयं यो भूरिमूलः समुद्रमवतिष्ठति । दुर्भः पृथिव्या उत्थितो मन्युशमन उच्यते २

वि ते हनुव्यां शरणि वि ते मुख्यां नयामसि ।

पथावशो न वार्दिषो मम चित्तमुपायसि

३ ६४१

॥ ११४ ॥ (अथर्व० ५।१५।१-११)

विश्वामित्रः । एकवृषः (वृषरोगशमनम्) । एकावसानं द्वैपदम् ; १, ४, ५, ७-१० साम्नी उष्णिक् ;
२, ३, ६ आसुरी अनुष्टुप् ; ११ आसुरी गायत्री ।

यद्येकवृषोऽसिं सृजार्सोऽसि	१	यदि द्विवृषोऽसिं सृजार्सोऽसि	२
यदि त्रिवृषोऽसिं सृजार्सोऽसि	३	यदि चतुर्वृषोऽसिं सृजार्सोऽसि	४
यदि पञ्चवृषोऽसिं सृजार्सोऽसि	५	यदि षड्वृषोऽसिं सृजार्सोऽसि	६
यदि सप्तवृषोऽसिं सृजार्सोऽसि	७	यद्यष्टवृषोऽसिं सृजार्सोऽसि	८
यदि नववृषोऽसिं सृजार्सोऽसि	९	यदि दशवृषोऽसिं सृजार्सोऽसि	१०
यद्येकादशोऽसिं सोऽपौदकोऽसि	११		

॥ ११५ ॥ (अथर्व० ५।१५।१-११)

विश्वामित्रः । मधुला वनस्पतिः (रोगोपशमनम्) । अनुष्टुप्, ४ पुरस्ताद्वृहती ; ५, ७-९ भुरिक् ।

एकां च मे दशं च मेऽपवृत्तारं ओषधे । ऋतं जातं ऋतावरि मधु मे मधुला करः १
द्वे च मे विश्वं मेऽपवृत्तारं ओषधे । ऋतं जातं ऋतावरि मधु मे मधुला करः २
तिस्रश्च मे त्रिशच्च मेऽपवृत्तारं ओषधे । ऋतं जातं ऋतावरि मधु मे मधुला करः ३
चतस्रश्च मे चत्वारिंशच्च मेऽपवृत्तारं ओषधे । ऋतं जातं ऋतावरि मधु मे मधुला करः ४
पञ्च च मे पञ्चाशच्च मेऽपवृत्तारं ओषधे । ऋतं जातं ऋतावरि मधु मे मधुला करः ५
षट् च मे षष्टिश्च मेऽपवृत्तारं ओषधे । ऋतं जातं ऋतावरि मधु मे मधुला करः ६
सप्त च मे सप्ततिश्च मेऽपवृत्तारं ओषधे । ऋतं जातं ऋतावरि मधु मे मधुला करः ७
अष्ट च मेऽशीतिश्च मेऽपवृत्तारं ओषधे । ऋतं जातं ऋतावरि मधु मे मधुला करः ८
नव च मे नवतिश्च मेऽपवृत्तारं ओषधे । ऋतं जातं ऋतावरि मधु मे मधुला करः ९
दशं च मे शतं च मेऽपवृत्तारं ओषधे । ऋतं जातं ऋतावरि मधु मे मधुला करः १०
शतं च मे सहस्रं चापवृत्तारं ओषधे । ऋतं जातं ऋतावरि मधु मे मधुला करः ११

॥ ११६ ॥ (अथर्व० १।२।१-४)

अथर्वा । पर्जन्यः, (१, ४ पृथिवी, ३ इन्द्रः, [चन्द्रमाश्र]) (रोगोपशमनम्) । अनुष्टुप्,
३ त्रिपदा विशण्णनाम गायत्री ।

विद्वा शरस्य पितरं पर्जन्यं भूरिधायसम् । विद्वां व्वस्य मातरं पृथिवीं भूरिर्वपसम् १
ज्याकिं परिं णो नमाश्मानं तन्वं कृधि । वीडुर्वरीयोऽरातीरप द्वेषांस्या कृधि २
वृक्षं यद् गावः परिपस्वजाना अनुस्फुरं शरमर्चन्त्यृभुम् । शरुमसद्यावय दिद्युभिन्द्र ३

चिकित्सा ।

यथा द्यां च पृथिवीं चान्तस्तिष्ठति तेजसम् ।
एवा रोगं चास्रावं चान्तस्तिष्ठतु मुञ्ज इत्

४ ६६७

॥ ११७ ॥ (अथर्व० २।७।१-५)

अथर्व । भैषज्यं, आयुः, वनस्पतिः (शापमोचनम्) । अनुष्टुप्, १ भुरिक्, ४ विराडुपरिष्ठाद् बृहती ।

अथद्विष्टा देवजाता वीरुच्छपथयोपनी ।

आपो मलमिव प्राणैक्षीत् सर्वान् मच्छपथां अधि

१

यथ सापन्नः शपथो जाम्याः शपथश्च यः ।

ब्रह्मा यन्मन्युतः शपात् सर्वं तन्नो अधस्पदम्

२

दिवो मूलमवततं पृथिव्या अभ्युत्ततम् । तेन सहस्रकाण्डेन परि णः पाहि विश्वतः ३ ६७०

परि मां परि मे प्रजां परि णः पाहि यद्वनम् ।

अरातिनो मा तारीन्मा नस्तारिषुरभिमातयः

४

शसारमेतु शपथो यः सुहार्त् तेन नः सह । चक्षुर्मन्त्रस्य दुर्हर्दिः पृष्टीरपि शृणीमसि ५ ६७२

॥ ११८ ॥ (अथर्व० १।१८।१-४)

विषोदाः । १ विनायकः, (२ सविता, वरुणः, मित्रः, अर्यमा, देवाः, ३ सविता) (अलक्ष्मीनाशनम्)
१ विराडुपरिष्ठाद् बृहती, २ निचृज्जगती, ३ विराडास्तारपङ्क्तिस्त्रिष्टुप्, ४ अनुष्टुप् ।

निरिक्ष्म्यं ललाम्यं१ निरशानि सुवामसि ।

अथ या भद्रा तानि नः प्रजाया अरातिं नयामसि

१

निराणि सविता साविषक् पुदोर्निहस्तयोर्वरुणो मित्रो अर्यमा ।

निरसभ्यमनुमती रराणा प्रेमां देवा असाविषुः सौभगाय

२

यत् त आत्मनि तन्वा घोरमस्ति यद् वा केशेषु प्रतिचक्षणे वा ।

सर्वं तद्वाचापं हन्मो वयं देवस्त्वा सविता सुदयतु

३

रिश्यदीं वृषदतीं गोषेधां विधुमामुत । विलीढ्यं ललाम्यं१ ता अस्मन्नाशयामसि ४ ६७६

॥ ११९ ॥ (अथर्व० ६।१३९।१-५)

अथर्व । वनस्पतिः (सौभाग्यवर्धनम्) । अनुष्टुप्, १ त्र्यवसाना षट्पदा विराड् जगती ।

सुहृन्मोहो हृदयं सुभगं करणी मम । शतं तव प्रतानास्त्रयस्त्रिंशन्नितानाः ।

१

हृदयं शोषयामि ते

हृदयमथो शुष्यत्वास्यम् । अथो नि शुष्य मां कामेनाथो शुष्कास्या चर २

कल्याणि सं नुद । अमुं च मां च सं नुद समानं हृदयं कृधि ३ ६७९

यथोदुकमपपुषोऽपशुष्यत्यास्यम् । एवा नि शुष्य मां कामेनाथो शुष्कास्या चर ४ ६८०
यथा नकुलो विच्छिद्य संदधत्यहिं पुनः । एवा कामस्य विच्छिन्नं सं धेहि वीर्यावति ५ ६८१

॥ १२० ॥ (अथर्व० ६।१८।१-३)

अथर्वा । ईर्ष्याविनाशनम् । अनुष्टुप् ।

ईर्ष्याया ध्राजिं प्रथमां प्रथमस्या उतापरां । अग्निं हृदय्यं१ शोकं तं ते निर्वीपयामसि १
यथा भूमिर्मृतमना मृतान्मृतमनस्तरा । यथोत मम्रुषो मन एवेर्ष्यमृतं मनः २
अदो यत् ते हृदि श्रितं मनस्कं पतयिष्णुकम् ।
ततस्त ईर्ष्या मुञ्चामि निरूमाणं हतैरिव ३ ६८३

॥ १२१ ॥ (अथर्व० ७।४५।१-२)

प्रस्कण्वः, २ अथर्वा । ईर्ष्यापनयनं, भेषजम् । अनुष्टुप् ।

जनाद् विश्वजनीनात् सिन्धुतस्पर्याभृतम् । दूरात् त्वां मन्य उद्धृतमीर्ष्याया नाम भेषजम् १ ६८५
अग्नेरिवास्य दहतो दावस्य दहतः पृथक् । एतामेतस्येर्ष्यामुद्राग्निमिव शमय २ ६८६

॥ १२२ ॥ (अथर्व० ६।१११।१-४)

अथर्वा । अग्निः (उन्मत्ततामोचनम्) । अनुष्टुप्, १ परानुष्टुप् त्रिष्टुप् ।

इमं मे अग्ने पुरुषं मुमुग्ध्ययं यो बद्धः सुयतो लालपीति ।
अतोऽधि ते कृणवद् भागधेयं यदानुन्मदितोऽसति १
अग्निष्टे नि शमयतु यदि ते मन उद्युतम् । कृणोमि विद्वान् भेषजं यथानुन्मदितोऽसति २
देवैर्नसादुन्मदितमुन्मत्तं रक्षस्परिं । कृणोमि विद्वान् भेषजं यदानुन्मदितोऽसति ३
पुनस्त्वा दुरप्सरसः पुनरिन्द्रः पुनर्भगः । पुनस्त्वा दुर्विश्वे देवा यथानुन्मदितोऽसति ४ ६९०

किमिनाशनम् । (६९१-७७३)

॥ १२३ ॥ (अथर्व० १।३१।१-५)

काण्वः । मही, चन्द्रमाः (किमिजम्भनम्) । अनुष्टुप्; २, ४ उपरिष्ठाद्विराड् वृहती, ३, ५ आर्षी त्रिष्टुप् ।
इन्द्रस्य या मही दृषत् क्रिमेर्विश्वस्य तर्हणी ।
तया पिनष्मि सं क्रिमीन् दृषदा खलवाँ इव १
दृष्टमदृष्टमदृष्टमथो कुरुरुमदृष्टम् ।
अलगण्डुन्तसर्वान् छलनान् क्रिमीन् वचसा जम्भयामसि २
अलगण्डून् हन्मि महता वधेन दूना अदूना अरसा अभूवन् ।
शिष्टानशिष्टान् नि तिरामि वाचा यथा क्रिमीणां नकिरुच्छिषातै ३ ६९१

मेनाशनम् ।

[६०-७०८]

६८०

६८१

अन्वान्यं शीर्षण्यं मथो पार्थेयं क्रिमीन् ।

अवस्कवं व्यध्वरं क्रिमीन् वचसा जम्भयामसि

४

ये क्रिमयः पर्वतेषु वनेष्वोषधीषु पशुष्वप्यन्तः ।

ये अस्माकं तन्वमाविविशुः सर्वं तद्धन्मि जनिम क्रिमीणां

५ ६९५

॥ १२४ ॥ (अथर्व० ५।२३।१-१३)

कण्वः । इन्द्रः (क्रिमिघ्नम् । अनुष्टुप्, १३ विराट् ।

ओते मे द्यावापृथिवी ओता देवी सरस्वती ।

ओतौ म इन्द्रश्चाग्निश्च क्रिमिं जम्भयतामिति

१

अस्येन्द्र कुमारस्य क्रिमीन् धनपते जहि । हता विश्वा अरातय उग्रेण वचसा मम

यो अक्षयौ परिसर्पति यो नासे परिसर्पति ।

दतां यो मध्यं गच्छति तं क्रिमिं जम्भयामसि

३

सरूपौ द्वौ विरूपौ द्वौ कृष्णौ द्वौ रोहितौ द्वौ ।

वभ्रुश्च वभ्रुकर्णश्च गृध्रः कोकश्च ते हताः

४

ये क्रिमयः शितिकक्षा ये कृष्णाः शितिबाहवः ।

ये के च विश्वरूपास्तान् क्रिमीन् जम्भयामसि

५ ७००

उत् पुरस्तात् सूर्य एति विश्वदृष्टो अदृष्टहा ।

दृष्टाश्च घ्नन्नदृष्टाश्च सर्वाश्च प्रमृणन् क्रिमीन्

६

येवापासुः कर्कषास एजत्काः शिपवितुकाः ।

दृष्टश्च हन्यतां क्रिमिरुतादृष्टश्च हन्यताम्

७

हतो येवापः क्रिमीणां हतो नदनिमोत । सर्वान् नि मण्मषाकरं दृषद्वा खलवाँ इव

त्रिशीर्षाणि त्रिकुदं क्रिमिं सारङ्गमर्जुनम् । शृणाम्यस्य पृष्टीरपि वृश्चामि यच्छिरः

अन्निवद् वः क्रिमयो हन्मि कण्ववज्रमदग्निवत् ।

अगस्त्यस्य ब्रह्मणा सं पिनष्म्यहं क्रिमीन्

१० ७०५

हतो राजा क्रिमीणामुतैषां स्थपतिर्हतः । हतो हतमाता क्रिमिर्हतभ्राता हतस्वसा

हतसो अस्य वेशसो हतासुः परिवेशसः ।

अथो ये क्षुल्लका इव सर्वे ते क्रिमयो हताः

१२

सर्वेषां च क्रिमीणां सर्वासां च क्रिमीणाम् ।

भिनद्यन्मना शिरो दहाम्यग्निना मुखम्

१३ ७०८

*

॥ १२५ ॥ (अथर्व० २।३२।१-६)

काण्वः । आदित्यः (क्रिमिनाशनम्) । अनुष्टुप्, १ त्रिपदा भुरिगायत्री, ६ चतुष्पदा निचृदुष्णिक् ।

उद्यन्नादित्यः क्रिमीन् हन्तु निम्रोचन् हन्तु रश्मिभिः ।

ये अन्तः क्रिमयो गवि

१

विश्वरूपं चतुर्क्षं क्रिमिं सारङ्गमर्जुनम् । शृणाम्यस्य पृथीरपि वृश्चामि यच्छिरः

२ ७१०

अत्तिवद् वः क्रिमयो हन्मि कण्ववज्रमदग्निवत् ।

अगस्त्यस्य ब्रह्मणा सं पिनष्म्यहं क्रिमीन्

३

हतो राजा क्रिमीणामुतैषां स्थपतिर्हतः । हतो हतमाता क्रिमिर्हतभ्राता हतस्वसा ४

हतासौ अस्य वेशसौ हतासुः परिवेशसः ।

अथो ये क्षुल्लका इव सर्वे ते क्रिमयो हताः

५

प्र ते शृणामि शृङ्गे याभ्यां वितुदायसि । भिनन्नि ते कुषुम्भं यस्ते विषधानः

६ ७१४

॥ १२६ ॥ (अथर्व० ४।३७।१-१२)

वादरायणिः । अजशृङ्गीः १ अप्सरसः, १-२, ६, १० औषधी अजशृङ्गीः ३-५ अप्सरसः, ७-१२ गन्धर्वाप्सरसः

(क्रिमिनाशनम्) । अनुष्टुप्, ३ त्र्यवसाना षट्पदा त्रिष्टुप्, ५ प्रस्तारपङ्क्तिः,

७ परोष्णिक्, ११ षट्पदा जगती, १२ निचृत् ।

त्वया पूर्वमथर्वाणो जुघ्नू रक्षांस्योषधे ।

त्वया जघान कश्यपस्त्वया कण्वो अगस्त्यः

१ ७१५

त्वया वयमप्सरसो गन्धर्वाश्चातयामहे । अर्जशृङ्गयजु रक्षः सर्वान् गन्धेन नाशय २

नदीं यन्त्वप्सरसोऽपां तारमवश्वसम् ।

गुल्गुलः पीलो नलद्यौऽक्षगन्धिः प्रमन्दुनी ।

तत् परेताप्सरसः प्रतिबुद्धा अभूतन

३

यत्राश्चत्था न्यग्रोधा महावृक्षाः शिखण्डिनः ।

तत् परेताप्सरसः प्रतिबुद्धा अभूतन

४

यत्र वः प्रेक्षा हरिता अर्जुना उत यत्राघाटाः कर्कर्युः संवदन्ति ।

तत् परेताप्सरसः प्रतिबुद्धा अभूतन

५

एयमगन्धोर्षधीनां वीरुथं वीर्यावती । अजशृङ्गयराट्की तीक्ष्णशृङ्गी व्यृषितु

६ ७२०

आनृत्यतः शिखण्डिनो गन्धर्वस्याप्सरापतेः । भिनन्नि मुष्कावपि यामि शेषः

७

भीमा इन्द्रस्य हेतयः शतमृष्टीरयस्सीः । तामिर्हविरदान् गन्धर्वानवकादान् व्यृषितु ८

७२१

७०५-७३४]

भीमा इन्द्रस्य हेतयः शतमृष्टीर्हिरेण्ययीः ।

तार्भिर्विरिदान् गन्धर्वानवकादान् व्यृषितु

अवकादानमिशोचान्पु ज्योतय मामकान् ।

पिशाचान्सर्वानोषधे प्र मृणीहि सहस्व च

श्वैकैः कपिरिवैकैः कुमारः सर्वकेशकः ।

त्रियो दृश इव भूत्वा गन्धर्वः सचते स्त्रियस्तमितो नाशयामसि ब्रह्मणा वीर्याविता ११ ७२५

जाया इद्वौ अप्सरसो गन्धर्वाः पतथो यूयम् ।

अप धावतामर्त्या मर्त्यान् मा सचध्वम्

१२ ७२६

॥ १२७ ॥ (अथर्व० १।८।१-४)

चातनः । १-२ बृहस्पतिः, अग्नीषोमौ च; ३-४ अग्निः [जातवेदाः] (यातुधाननाशनम्) । १-३ अनुष्टुप्, ४ बार्हतगर्भा त्रिष्टुप् ।

इदं हविर्यातुधानान् नदी फेनमिवा वहत् ।

य इदं स्त्री पुमानकंरिह स स्तुवतां जनः

अयं स्तुवान् आगमदिमं स्म प्रति हर्षत । बृहस्पते वशे लब्ध्वाग्नीषोमा वि विध्यतम् १

यातुधानस्य सोमप जहि प्रजां नयस्व च । नि स्तुवानस्य पातय परमक्ष्युतावरम् २

यत्रैषामग्रे जनिमानि वेत्थ गुहां सतामत्त्रिणां जातवेदः ।

तांस्व ब्रह्मणा वाधृधानो जह्येषां शततर्हमग्रे

४ ७३०

॥ १२८ ॥ (अथर्व० ६।३२।१-३)

चातनः; ३ अथर्वी । १ अग्निः, २ रुद्रः, ३ मित्रावरुणौ (यातुधानक्षयणम्) । त्रिष्टुप्, २ प्रस्तारपङ्क्तिः ।

अन्तर्द्वि जुहुता स्वेतद यातुधानक्षयणं घृतेन ।

आराद रक्षांसि प्रति दह त्वमग्रे न नो गृहाणामुप तीतपासि

रुद्रो वौ ग्रीवा अशरैत् पिशाचाः पृष्टीर्वोऽपि शृणातु यातुधानाः ।

शीरुद् वौ विश्वतोवीर्या यमेन समजीगमत्

अमये मित्रावरुणाविहास्तु नोऽर्चिषात्त्रिणां जुदवं प्रतीचः ।

मा ज्ञातारं मा प्रतिष्ठां विदन्त मिथो विज्ञाना उप यन्तु मृत्युम्

३ ७३३

॥ १२९ ॥ (अथर्व० १।२८।१-४)

चातनः । १-२ अग्निः, ३-४ यातुधानीः (रक्षोघ्नम्) । अनुष्टुप्, ३ विराट्पथ्यावृहती, ४ पथ्यापङ्क्तिः ।

उप प्रागाद् देवो अग्नी रक्षोहामीवचातनः ।

दृक्ष्य इयाविनो यातुधानान् किमीदिनः

१ ७३४

(५४)

प्रति दह यातुधानान् प्रति देव किमीदिनः ।

प्रतीचीः कृष्णवर्तने सं दह यातुधान्यः ।

या शशाप शपनेन याधं मूरमादुधे । या रसस्य हरणाय जातमरिभे तोकमन्तु सा ३

पुत्रमन्तु यातुधानीः स्वसारमुत नृत्यम् ।

अघा मिथो विकेश्योऽ वि घ्नतां यातुधान्योऽ वि तुह्यन्तामरायः ।

॥ १३० ॥ (अथर्व० ५।२९।१-१५)

चातनः । जातवेदाः, मन्त्रोक्ताः (रक्षोघ्नम्) । त्रिष्टुप्; ३ त्रिपदा विराणनाम गायत्री, ५ पुरोऽति-
जगती विराड्जगती; १२-१५ अनुष्टुप् (१२ भुरिक्; १४ चतुष्पदा परावृहती ककुम्भती) ।

पुरस्ताद् युक्तो वह जातवेदोऽग्रे विद्धि क्रियमाणं यथेदम् ।

त्वं भिषग् भेषजस्यासि कर्ता त्वया गामश्च पुरुषं सनेम

तथा तदग्रे कृणु जातवेदो विश्वेभिर्देवैः सह संविदानः ।

यो नो दिदेव यतमो जघास यथा सो अस्य परिधिष्पताति

यथा सो अस्य परिधिष्पताति यथा तदग्रे कृणु जातवेदः ।

विश्वेभिर्देवैः सह संविदानः

अक्षयौरे नि विध्य हृदयं नि विध्य जिह्वां नि तुन्धि प्र दतो मृणीहि ।

पिशाचो अस्य यतमो जघासाग्रे यविष्ठ प्रति तं शृणीहि

यदस्य हृतं विहृतं यत् पराभृतमात्मनो जग्धं यतमत् पिशाचैः ।

तदग्रे विद्वान् पुनरा भर त्वं शरीरे मांसममुमेरयामः

आमे सुपक्वे श्वले विपक्वे यो मा पिशाचो अशने दुदम्भं ।

तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदोऽयमस्तु

क्षीरे मा मन्थे यतमो दुदम्भाकृष्टपच्ये अशने धान्येऽयः ।

तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदोऽयमस्तु

अपां मा पाने यतमो दुदम्भं क्रव्याद् यातूनां शयने शयानम् ।

तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदोऽयमस्तु

दिवा मा नक्तं यतमो दुदम्भं क्रव्याद् यातूनां शयने शयानम् ।

तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदोऽयमस्तु

क्रव्यादमग्रे रुधिरं पिशाचं मनोहनं जहि जातवेदः ।

तमिन्द्रो वाजी वज्रेण हन्तु छिनत्तु सोमः शिरो अस्य धृष्णुः

मिनाशनम् ।

सूत्रः ७३५-७६०]

२ ७३५

३

४ ७३७

५ ७३८

६ ७३९

७ ७४०

८ ७४१

९ ७४२

१० ७४३

११ ७४४

१२ ७४५

१३ ७४६

१४ ७४७

१५ ७४८

१६ ७४९

१७ ७५०

सनादमे मृणसि यातुधानान् न त्वा रक्षांसि पृतनासु जिग्युः ।

सहस्राननु दह क्रव्यादो मा ते हेत्या मुक्षत दैव्यायाः

११

समाहर जातवेदो यद्रुतं यत् पराभृतम् ।

गान्धर्वस्य वर्धन्तामशुरिवा प्यायतामयम्

१२

सोमस्येव जातवेदो अंशुरा प्यायतामयम् ।

अग्रे विरश्निनं मेध्यमयक्ष्मं कृणु जीवतु

१३ ७५०

एतास्ते अग्रे समिधः पिशाचजम्भनीः ।

तास्त्वं जुषस्व प्रति चैना गृहाण जातवेदः

१४

तार्क्षीधीरे समिधः प्रति गृह्णाह्यर्चिषा ।

जहातु क्रव्याद् रूपं यो अस्य मांसं जिहीर्षति

१५ ७५२

॥ १३१ ॥ (वा० य० ५।२२)

(रक्षोघ्नम् ।)

इदमहं रक्षांसां ग्रीवा ऽ अपि कृन्तामि

२२ ७५३

॥ १३२ ॥ (अथर्व० ४।२०।१-९)

मातनामा । मातनामा (पिशाचक्षयणम्) । अनुष्टुप्; १ स्वराट्, ९ भुरिक् ।

आ पश्यति प्रति पश्यति परा पश्यति पश्यति ।

दिवमन्तरिक्षमाद् भूमिं सर्वं तद् देवि पश्यति

१

तिस्रो दिवस्तिष्ठः पृथिवीः षट् चेमाः प्रदिशः पृथक् ।

तथाहं सर्वा भूतानि पश्यानि देव्योषधे

२ ७५५

दिव्यस्य सुपर्णस्य तस्य हासि कर्नीनिका ।

सा भूमिमा रुरोहिथ वह्नं श्रान्ता बधूरिव

३

तां मे सहस्राक्षो देवो दक्षिणे हस्त आ दधत ।

तथाहं सर्वं पश्यामि यश्च शूद्र उतार्यः

४

आविष्कृणुष्व रूपाणि मात्मानमप गूहथाः ।

अथो सहस्रचक्षो त्वं प्रति पश्याः किमीदिनः

५

दुर्षय मा यातुधानान् दुर्षय यातुधान्यः ।

पिशाचान्तसर्वान् दर्शयेति त्वा रंभ ओषधे

६

कुक्ष्यस्य चक्षुरसि शुन्याश्च चतुरक्ष्याः ।

शीघ्रे दृश्यमिव सर्पन्तं मा पिशाचं तिरस्करः

७ ७६०

उदग्रमं परिपाणाद् यातुधानं किमीदिनम् ।
 तेनाहं सर्वं पश्याम्युत शुद्रमुतार्यम्
 यो अन्तरिक्षेण पतति दिवं यश्चातिसर्पति ।
 भूमिं यो मन्यते नाथं तं पिशाचं प्र दर्शय

॥ १३३ ॥ (अथर्व० ६।७।१-३)

अथर्वा । सोमः, अदितिः, ३ देवाः (असुरक्षयणम्) । गायत्री, १ निचृत् ।

येन सोमादितिः पथा मित्रा वा यन्त्यद्रुहः । तेना नोऽवसा गहि १
 येन सोम साहन्त्यासुरान् रन्धयासि नः । तेना नो अधि वोचत २
 येन देवा असुराणामोजांस्यवृणीध्वम् । तेना नः शर्म यच्छत ३

॥ १३४ ॥ (अथर्व० १२।६६।१)

ब्रह्मा । जातवेदाः सूर्यो वज्रश्च (असुरक्षयणम्) । अतिजगती ।

अयोजाला असुरा मायिनोऽयस्यैः पाशैरङ्गिनो ये चरन्ति ।
 तांस्ते रन्धयामि हरसा जातवेदः सहस्रं ऋषिः सपत्नान् प्रमृणन् पाहि वज्रः १

॥ १३५ ॥ (अथर्व० १।७।१-७)

चातनः । अग्निः (जातवेदा), ३ अग्नीन्द्रौ (यातुधाननाशनम्) । अनुष्टुप्, ५ त्रिष्टुप् ।

स्तुवानमग्र आ वह यातुधानं किमीदिनम् ।
 त्वं हि देव वन्दितो हन्ता दस्योर्विभूविथ १
 आज्यस्य परमेष्ठिन् जातवेदस्तनूवशिन् ।
 अग्रे तौलस्य प्राशान यातुधानान् वि लापय २
 वि लपन्तु यातुधाना अत्रिणो ये किमीदिनः ।
 अथेदमग्रे नो हविरिन्द्रश्च प्रति हर्षतम् ३
 अग्निः पूर्वं आ रभतां प्रेन्द्रौ नुदतु बाहुमान् ।
 ब्रवीतु सर्वो यातुमानयमस्मीत्येत्य ४
 पश्याम ते वीर्यं जातवेदः प्र णो ब्रूहि यातुधानान् नृचक्षः ।
 त्वया सर्वे परितप्ताः पुरस्तात् त आ यन्तु प्रब्रुवाणा उपेदम् ५
 आ रभस्व जातवेदोऽस्माकार्थीय जज्ञिषे ।
 दूतो नो अग्रे भूत्वा यातुधानान् वि लापय ६
 त्वमग्रे यातुधानानुपवद्रौ इहा वह ।
 अथैषामिन्द्रो वज्रेणापि शीर्षाणि वृश्चतु ७

विषनाशनम् । (७७३-८५९)

॥ १३६ ॥ (ऋ० १।१९१।१-१६)

अणस्यो मैत्रावरुणिः । अण्णसूर्याः (विषघ्नोपनिषद्) । अनुष्टुप्; १०-१९ महापङ्क्तिः; १३ महावृहती ।

७६३	कङ्कतो न कङ्कतो ऽथो सतीनकङ्कतः ।	
७६३	द्वाविति प्लुषी इति न्यष्टृष्टा अलिप्सत	१
७६३	अदृष्टान् हन्त्याय—त्यथो हन्ति परायती ।	
७६३	अथो अवधन्ती ह—न्त्यथो पिनाष्टि पिंपुती	२ ७७५
७६५	शरासः कुशरासो दुर्भासः सूर्या उत ।	
७६५	मौञ्जा अदृष्टा वैरिणाः सर्वे साकं न्यलिप्सत	३
७६५	नि गावो गोष्ठे असदन् नि मृगासो अविक्षत ।	
७६५	नि केतवो जनानां न्यष्टृष्टा अलिप्सत	४
७६५	एत उ त्पे प्रत्यदृष्टन् प्रदोषं तस्करा इव ।	
७६५	अदृष्टा विश्वदृष्टाः प्रतिबुद्धा अभूतन	५
७६५	धौर्वैः पिता पृथिवी माता सोमो आतादितिः स्वसा ।	
७६५	अदृष्टा विश्वदृष्टा—स्तिष्ठतेलयता सु कम्	६
७६५	ये अस्या ये अङ्गयाः सूचीका ये प्रकङ्कताः ।	
७६५	अदृष्टाः किं चनेह वः सर्वे साकं नि जस्यत	७ ७८०
७६५	उत् पुरस्तात् सूर्य एति विश्वदृष्टो अदृष्टहा ।	
७६५	अदृष्टान्तसर्वाङ्गमय—न्तसर्वाश्च यातुधान्यः	८
७६५	उदपमदुसौ सूर्यः पुरु विश्वानि जूर्वन् ।	
७६५	आदित्यः पर्वतेभ्यो विश्वदृष्टो अदृष्टहा	९
७६५	सो विषमा संजामि हति सुरावतो गृहे ।	
७६५	यो विष्णु न मराति नो वयं मरामाऽऽरे अस्य योजनं हरिष्ठा मधु त्वा मधुला चकार १०	
७६५	यो विष्णु न मराति नो वयं मरामाऽऽरे अस्य योजनं हरिष्ठा मधु त्वा मधुला चकार ११	
७६५	यो विष्णु न मराति नो वयं मरामाऽऽरे अस्य योजनं हरिष्ठा मधु त्वा मधुला चकार १२	७८५

[आयुर्वेद०]

नवानां नवतीनां विषस्य रोपुषीणाम् ।	
सर्वासामग्रभं नामा—ऽऽरे अस्य योजनं हरिष्ठा मधु त्वा मधुला चंकार	१३
त्रिः सप्त मयूर्यैः सप्त स्वसारो अग्रुवः ।	
तास्ते विषं वि जञ्जिर उदुकं कुम्भिनीरिव	१४
इयत्तकः कुषुम्भक—स्तकं भिनङ्गयश्मना ।	
ततो विषं प्र वावृते पराचीरनु संवतः	१५
कुषुम्भकस्तदब्रवीद् गिरेः प्रवर्तमानकः ।	
वृश्चिकस्यारसं विष—मरसं वृश्चिक ते विषम्	१६ ७८९

॥ १३७ ॥ (अथर्व० ४।६।१-८)

गरुत्मान् । तक्षकः, १ ब्राह्मणः; २ द्यावापृथिवी, सप्तसिन्धवः, ३ सुपर्णः; ४-८ विषम् (विषघ्नम्) । अनुष्टुप् ।

ब्राह्मणो जज्ञे प्रथमो दशशीर्षो दशास्यः ।	
स सोमं प्रथमः पपौ स चंकारारसं विषम्	१ ७९०
यावती द्यावापृथिवी वरिम्णा यावत् सप्त सिन्धवो वितष्टिरे ।	
वाचं विषस्य दूषणीं तामितो निरवादिषम्	२
सुपर्णस्त्वा गरुत्मान् विषं प्रथममावयत् ।	
नामीमदो नारुरुप उतास्मा अभवः पितुः	३
यस्तु आस्यत् पञ्चाङ्गुरिर्वक्राच्चिदधि धन्वनः ।	
अपस्कम्भस्य शल्यानिर्वोचमहं विषम्	४
शल्याद् विषं निर्वोचं प्राञ्जनादुत पर्णधेः ।	
अपाष्ठाच्छृङ्गात् कुलमलानिर्वोचमहं विषम्	५
अरसस्त इषो शल्योऽथो ते अरसं विषम् । उतारसस्य वृक्षस्य धनुष्टे अरसारसम्	६ ७९१
ये अपीषन् ये अदिहन् य आस्यन् ये अवासृजन् ।	
सर्वे ते वध्रयः कृता वध्रिर्विषगिरिः कृतः	७
वध्रयस्ते खनितारो वध्रिस्त्वमस्योषधे ।	
वध्रिः स पर्वतो गिरिर्यतो जातमिदं विषम्	८ ७९२

॥ १३८ ॥ (अथर्व० ४।७।१-७)

गरुत्मान् । वनस्पतिः (विषनाशनम्) । अनुष्टुप्, ४ स्वराद् ।

वारिदं वारयातै वरणावत्यामधि । तत्रामृतस्यासिक्तं तेनां ते वारये विषम्

विषनाशनम् ।	अरसं प्राच्यं विषमरसं यदुदीच्यम् । अथेदमधराच्यं करम्भेण वि कल्पते २
३	करम्भं कृत्वा तिर्यं पीवस्पाकमुदारथिम् ।
४	धुधा किल त्वा दुष्टनो जक्षिवान्त्स न रूरुपः ३ ८००
५	वि ते मदं मदावति शरमिव पातयामसि ।
६	प्र त्वा चरुमिव येषन्तं वचसा स्थापयामसि ४
७	परि ग्राममिवाचितं वचसा स्थापयामसि ।
८	तिष्ठा वृक्ष इव स्थामन्यभिखाते न रूरुपः ५
९	पुनस्तैस्त्वा पर्यक्रीणन् दूर्शेभिरजिनैरुत । प्रक्रीरसि त्वमोषधेऽभिखाते न रूरुपः ६
१०	अनात्ता ये वः प्रथमा यानि कर्माणि चक्रिरे ।
११	वीरान् नो अत्र मा दभन् तद् व एतत् पुरो दधे ७ ८०४

॥ १३९ ॥ (अथर्व० ६।१००।१-३)

गरुत्मान् । वनस्पतिः (विषदूषणम्) । अनुष्टुप् ।

१	देवा अदुः सूर्यो अदाद् द्यौरदात् पृथिव्यदात् ।
२	तिस्रः सरस्वतीरदुः सचित्ता विषदूषणम् १ ८०५
३	यद् वो देवा उपजीका आसिञ्चन् धन्वन्युदकम् ।
४	तेन देवप्रसूतेनेदं दूषयता विषम् २
५	असुराणां दुहितासि सा देवानामसि स्वसा ।
६	दिवस्पृथिव्याः संभूता सा चकथारसं विषम् ३ ८०७

॥ १४० ॥ (अथर्व० १०।४।१-२६)

गरुत्मान् । तक्षकः (सर्पविषदूरीकरणम्) । अनुष्टुप् ; १ पथ्यापाङ्क्तिः ; २ त्रिपदा यवमध्या गायत्री ;
 १-४ पथ्यावृहती ; ८ उष्णिगगर्भा परा त्रिष्टुप् ; १२ भुरिगगायत्री ; १६ त्रिपदा प्रतिष्ठा गायत्री ;
 २१ ककुम्भती ; २३ त्रिष्टुप् ; २६ त्र्यवसाना षट्पदा वृहतीगर्भा ककुम्भती
 भुरिक् त्रिष्टुप् ।

७	प्रथमो रथो देवानामपरो रथो वरुणस्य तृतीय इत् ।
८	द्वितीयमा रथं स्थाणुमारदथार्षत् १
९	देवो योचिस्तरुणकमश्वस्य वारं परुषस्य वारं । रथस्य वन्धुरम् २
१०	के येत पदा जेहि पूर्वैण चापरेण च । उदुष्टुतमिव दार्वहीनामरसं विषं वारुग्रम् ३ ८१०
११	निमज्जोन्मज्ज्य पुनरब्रवीत् । उदुष्टुतमिव दार्वहीनामरसं विषं वारुग्रम् ४
१२	दि हन्ति कसणलिं पैद्वः श्वित्रमुतासितम् । पैद्वो रथव्याः शिरः सं बिभेद पृदाकाः ५ ८१२

पैद्व प्रेहिं प्रथमोऽनु त्वा वयमेमसि । अहीन् व्यस्यतात् पथो येन स्मा वयमेमसि	६
इदं पैद्वो अजायतेदमस्य परायणम् । इमान्यर्वतः पदाहिभ्यो वाजिनीवतः	७
संयतं न वि ष्वर्द् व्यात्तं न सं यमत् । अस्मिन् क्षेत्रे द्रावही स्त्री च पुमांश्च तावुभावरसा	८ ८१५
अरसास इहाहयो ये अन्ति ये च दूरके । घनेन हन्मि वृश्चिकमहिं दुण्डेनागतम्	९
अघाश्वस्येदं भेषजमुभयोः स्वजस्य च । इन्द्रो मेऽहिमघायन्तमहिं पैद्वो अरन्धयत्	१०
पैद्वस्य मन्महे वयं स्थिरस्य स्थिरधाम्नः । इमे पश्चा पृदाकवः प्रदीध्यत आसते	११
नष्टासवो नष्टविषा हता इन्द्रेण वज्रिणा । जघानेन्द्रो जग्निमा वयम्	१२
हतास्तिरश्चिराजयो निषिष्टासः पृदाकवः । दर्वि करिकतं श्वित्रं दुर्भेषसितं जहि	१३ ८९०
कैरातिका कुमारिका सका खनति भेषजम् । हिरण्ययीभिरभिभिर्गिरीणामुषु सानुषु	१४
आयमगन् युवा भिषक् पृश्निहापराजितः । स वै स्वजस्य जम्भेन उभयोर्वृश्चिकस्य च	१५
इन्द्रो मेऽहिमरन्धयन्मित्रश्च वरुणश्च । वातापर्जन्योऽश्वा भा	१६
इन्द्रो मेऽहिमरन्धयत् पृदाकुं च पृदाकम् । स्वजं तिरश्चिराजिं कसर्णालं दशोनसिम्	१७
इन्द्रो जघान प्रथमं जनितारमहे तव । तेषामु तूह्यमाणानां कः स्वित् तेषामसद् रसः	१८ ८१५
सं हि शीर्षाण्यग्रमं पौञ्जिष्ठ इव कर्वरम् । सिन्धोर्मध्यं परेत्य व्य निजमहेर्विषम्	१९
अहीनां सर्वेषां विषं परा वहन्तु सिन्धवः । हतास्तिरश्चिराजयो निषिष्टासः पृदाकवः	२०
ओषधीनामहं वृणु उर्वरीरिव साधुया । नयाम्यर्वतीरिवाहं निरैतु ते विषम्	२१
यदग्रौ सूर्ये विषं पृथिव्यामोषधीषु यत् । कान्दुविषं कनकं निरैत्वैतु ते विषम्	२२
ये अग्निजा ओषधिजा अहीनां ये अप्सुजा विद्युत आवभूवुः ।	
येषां जातानि बहुधा महान्ति तेभ्यः सर्वेभ्यो नमसा विधेम	२३ ८१०
तौदी नामासि कन्या धृताची नाम वा असि । अधस्पदेन ते पदमा ददे विषदूषणम्	२४
अङ्गादङ्गात् प्र च्यावय हृदयं परि वर्जय । अधा विषस्य यत् तेजोऽवाचीनं तदेतु ते	२५
आरे अभूद् विषमरौद् विषे विषमप्रागपि । अग्निर्विषमहेनिरधात् सोमो निरणयीत् ।	
दुष्टारमन्वगाद् विषमहिरमृत	२६ ८११

॥ १४१ ॥ (अथर्व० ५।१३।१-११)

गरुत्मान् । तक्षकः (सर्पविषनाशनम्) । जगती, २ आस्तापङ्क्तिः, ४, ७-८ अनुष्टुप्, ५ त्रिष्टुप्,
६ पथ्यापङ्क्तिः, ९ भुरिक, १०-११ निचृद्वायजो ।

दुदिहिं मह्यं वरुणो दिवः कृविर्वचोभिरुग्रैर्नि रिणामि ते विषम् ।

खातमखातमुत सुक्तमग्रभमिरेव धन्वन् नि जजास ते विषम्

१

विषनाशनम् ।

८१३-८४८]

६

७

८

९

१०

११

१२

१३

१४

१५

१६

१७

१८

१९

२०

२१

२२

२३

२४

२५

२६

२७

२८

२९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

यत् ते अपौदकं विषं तत् त एतास्वग्रभम् ।
 गृह्णामि ते मध्यममुत्तमं रसमुत्तमं भियसा नेशदादु ते
 वृषा मे खो नभसा न तन्यतुरुग्रेण ते वचसा बाध आदु ते ।
 अहं तमस्य नृभिर्ग्रभं रसं तमस इव ज्योतिरुदेतु सूर्यः
 चक्षुषा ते चक्षुर्हन्मि विषेण हन्मि ते विषम् ।
 अहं भ्रियस्व मा जीवीः प्रत्यगभ्येतु त्वा विषम्
 कैरात पृश्न उपतृण्य वभ्र आ मे शृणुतासिता अलीकाः ।
 मा मे सख्युः स्तामानमपि घाताश्रावयन्तो नि विषे रमध्वम्
 असितस्य तैमातस्य बभ्रोरपौदकस्य च ।
 सात्रासाहस्याहं मन्योरव ज्यामिव धन्वनो वि मुञ्चामि रथा इव
 आलिगी च विलिगी च पिता च माता च ।
 विष वः सर्वतो बन्ध्वरसाः किं करिष्यथ
 उरुगूलाया दुहिता जाता दास्यसि कन्या ।
 प्रतङ्गं दद्रुषीणां सर्वासामरसं विषम्
 कर्णा श्वावित् तदब्रवीद् गिरिरवचरन्तिका ।
 या काश्चेमाः खनित्रिमास्तासामरसतमं विषम्
 ताबुवं न ताबुवं न घेत् त्वमसि ताबुवं । ताबुवेनारसं विषम्
 तस्तुवं न तस्तुवं न घेत् त्वमसि तस्तुवं । तस्तुवेनारसं विषम्

२ ८३५

३

४

५

६

७ ८४०

८

९

१०

११ ८४४

॥ १४२ ॥ (अथर्व० ७।८८।१)

गरुत्मान् । तक्षकः (सर्पविषनाशनम्) । ज्यवसाना वृहती ।
 अपेक्षारिरस्यर्वा असि । विषे विषमपृक्था विषमिद् वा अपृक्थाः ।
 अहिमेवाभ्यपेहि तं जहि

१ ८४५

॥ १४३ ॥ (अथर्व० ६।११।१-३)

गरुत्मान् । तक्षकः (सर्पविषनिवारणम्) । अनुष्टुप् ।

गृह्णामि त्वयोऽहीनां जनिमागमम् ।
 त्वो जगदीशान्यदंसात् तेना ते वारये विषम्
 त्वो जगदीशान्यदंसात् तेना ते वारये विषम्
 त्वो जगदीशान्यदंसात् तेना ते वारये विषम्

१

२

३

८४८

॥ १४४ ॥ (अथर्व० ६।५६।१-३)

शन्तातिः । १ विश्वे देवाः, २-३ रुद्रः (सर्पेभ्यो रक्षणम्) । १ उष्णिग्गर्भां पथ्यापङ्क्तिः,
२ अनुष्टुप्, ३ निचृत्

मा नो देवा अहिर्वधीत् सतोकान्तसहपूरुषान् ।

संयतं न वि स्परद् व्यात्तं न सं यमन्नमो देवजनेभ्यः ।

नमोऽस्त्वसिताय नमस्तिरश्चिराजये । स्वजाय वभ्रवे नमो नमो देवजनेभ्यः ।

सं ते हन्मि दुता दुतः समु ते हन्वा हन् ।

सं ते जिह्वया जिह्वां सम्वास्ताह आस्यम् ।

॥ १४५ ॥ (अथर्व० ७।५६।१-८)

अथर्वा । वृश्चिकादयः, २ वनस्पतिः, ४ ब्रह्मणस्पतिः (विषभैषज्यम्) । अनुष्टुप्, ४ विराट्प्रस्तारपङ्क्तिः

तिरश्चिराजेरसितात् पृदाक्रोः परि संभृतम् । तत् कङ्कपर्वणो विषमियं वीरुदनीनशत् ।

इयं वीरुन्मधुजाता मधुश्चुन्मधुला मधूः । सा विहृतस्य भेषज्यथो मशकजम्भनी ।

यतो दष्टं यतो धीतं ततस्ते निर्ह्वयामसि । अर्भस्य तृप्रदंशिनो मशकस्यारसं विषम् ।

अयं यो वक्रो विपरुर्व्यङ्गो मुखानि वक्रा वृजिना कृणोषि ।

तानि त्वं ब्रह्मणस्पत इषीकामिव सं नमः ।

अरसस्य शर्कोटस्य नीचीनस्योपसर्पतः । विषं ह्यस्यादिष्यथो एनमजीजभम् ।

न ते बाह्वोर्बलमस्ति न शीर्षे नोत मध्यतः । अथ किं पापयामुया पुच्छे विभर्ष्यर्भकम् ।

अदन्ति त्वा पिपीलिका वि वृश्चन्ति मयूर्यः । सर्वे भल ब्रवाथ शार्कोटमरसं विषम् ।

य उभाभ्यां प्रहरसि पुच्छेन चास्येन च । आस्येन न ते विषं किमु ते पुच्छधावसत् ।

जलचिकित्सा । (८६०-१११९)

॥ १४६ ॥ (अथर्व० ६।५७।१-३)

शन्तातिः । रुद्रः । १-२ अनुष्टुप्, ३ पथ्यावृहती ।

इदमिद् वा उं भेषजमिदं रुद्रस्य भेषजम् ।

येनेषुमेकतेजनां शतशल्यामपब्रवत् ।

जालापेणाभि पिश्रवत जालापेणोप सिश्रवत ।

जालापमुग्रं भेषजं तेन नो मृड जीवसे ।

शं च नो मयश्च नो मा च नः किं चनाममत् ।

क्षमा रपो विश्वं नो अस्तु भेषजं सर्वं नो अस्तु भेषजम् ।

[६४९-८७७]

॥ १४७ ॥ (क्र० १।२३।१६-२३)

मेधातिथिः काण्वः । आपः, २३ आपः अग्निश्च । १६-१८ गायत्री, १९ पुर उष्णिक्, २१ प्रतिष्ठा ।
२०, २२-२३ अनुष्टुप् ।

अनयो यन्त्यध्वभिर्जामयो अध्वरीयताम् । पृञ्चतीर्मधुना पर्यः १६
अमृषा उप सूर्ये यामिर्वा सूर्यः सह । ता नो हिन्वन्त्वध्वरम् १७
अपो देवीरुप द्वये यत्र गावः पिबन्ति नः । सिन्धुभ्यः कर्त्तव्यं हविः १८ ८६५
अमृतं न्तरमृतमप्सु भेषजं मपामुत प्रशस्तये । देवा भवन्त वाजिनः १९
अमृतमेसोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा । अग्निं च विश्वशंभुव मापश्च विश्वभेषजीः २०
आपः पृणीत भेषजं वरूथं तन्वेदे मम । ज्योक् च सूर्यं दृशे २१
इदमापः प्रवहन्त यत् किं च दुरितं मयि । यद् वाहमभिद्रोह यद् वा शेष उतानृतम् २२
आपो अद्यान्वचारिषं रसेन समगस्महि । पर्यस्वानग्ना आ गहि तं मा सं सृज वर्चसा २३ ८७०

॥ १४८ ॥ (क्र० ७।४७।१-४)

वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । आपः । त्रिष्टुप् ।

आपो यं वः प्रथमं देवयन्तं इन्द्रपानं मूर्मिमकृण्वतेलः ।
तं वो वयं शुचिमरिप्रमद्य घृतप्रुषं मधुमन्तं वनेम १
तमूर्मिमापो मधुमत्तमं वो ऽपां नपादवत्वाशुहेमा ।
यस्मिन्निन्द्रो वसुभिर्मादयाति तमश्याम देवयन्तो वो अद्य २
शतपवित्राः स्वधया मदन्तीर्देवीर्देवानामपि यन्ति पार्थः ।
ता इन्द्रस्य न मिनन्ति व्रतानि सिन्धुभ्यो हव्यं घृतवज्रुहोत ३
याः सूर्यो रश्मिभिराततान् याम्य इन्द्रो अरदद् गातुमूर्मिम् ।
ते सिन्धवो वरिवो धातना नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ४ ८७४

॥ १४९ ॥ (क्र० ७।४९।१-४)

वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । आपः । त्रिष्टुप् ।

समुद्रज्येष्ठाः सलिलस्य मध्यात् पुनाना यन्त्यनिविशमानाः ।
इन्द्रो या वज्री वृषभो रराद ता आपो देवीरिह मामवन्तु १ ८७५
या आपो दिव्या उत वा स्रवन्ति खनित्रिमा उत वा याः स्वयंजाः ।
समुद्रार्था याः शुचयः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु २
यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानुते अवपश्यज्जनानाम् ।
मधुश्रुतः शुचयो याः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु ३ ८७७

यासु राजा वरुणो यासु सोमो विश्वे देवा यासुर्जं मदन्ति ।
वैश्वानरो यास्वग्निः प्रविष्ट—स्ता आपो देवीरिह मामवन्तु

४ ८७८

+ ॥ १५० ॥ (ऋ० १०।९।१-२)

त्रिशिरास्त्वाष्टः, सिन्धुद्वीप आम्बरीषो वा । आपः । गायत्री, ५ वर्धमाना गायत्री,
७ प्रतिष्ठा गायत्री, ८-९ अनुष्टुप् ।

आपो हि ष्ठा मयोभुव—स्ता न ऊर्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे १
यो वः शिवर्तमो रस—स्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव मातरः २ ८८०
तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयायु जिन्वथ । आपो जनयथा च नः ३
शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शं योरभि सवन्तु नः ४
ईशाना वार्याणां क्षयन्तीश्वर्षणीनाम् । अपो यांचामि भेषजम् ५
अप्सु मे सोमो अब्रवी—दन्तर्विश्वानि भेषजा । अग्निं च विश्वशंभुवम् ६
आपः पृणीत भेषजं वरूथं तन्वेष्टे मम । ज्योक् च सूर्यं दृशे ७ ८८१
इदमापः प्र वहत यत् किं च दुरितं मयि ।
यद् वाहमभिदुद्रोह यद् वा शेष उतानृतम् ८
आपो अद्यान्वचारिषं रसेन समगस्महि ।
पर्यस्नानम् आ गहि तं मा सं सृज वर्चसा ९ ८८२

॥ १५१ ॥ (ऋ० १०।१७।१०-१४)

देवश्चवा-यामायनः । १०-१४ आपः; ११-१३ सोमो वा । त्रिष्टुप्, १३-१४ अनुष्टुप्,
(१३ पुरस्ताद्बृहती वा ।)

आपो अस्मान् मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु ।
विश्वं हि रिप्रं प्रवहन्ति देवी—रुदिदाभ्यः शुचिरा पूत एमि १०
द्रप्सश्चस्कन्द प्रथमां अनु धू—निमं च योनिमनु यश्च पूर्वैः ।
समानं योनिमनु संचरन्तं द्रप्सं जुहोम्यनु सप्त होत्राः ११
यस्ते द्रप्सः स्कन्दति यस्ते अंशु—र्बाहुच्युतो धिषणाया उपस्थात् ।
अध्वर्योर्वा परि वा यः पवित्रात् तं ते जुहोमि मनसा वषट्कृतम् १२
यस्ते द्रप्सः स्कन्नो यस्ते अंशु—रवश्च यः परः सुचा ।
अयं देवो बृहस्पतिः सं तं सिञ्चतु राधसे १३ ८८३

+ ऋ. १०, ९, १-४, वा० य० ११, ५०-५२; ३६, १२, १४-१६ ।

लचिकित्सा ।

कृष्ण ८७८-९०३]

पर्यस्वतीरोषधयः पर्यस्वन्मामकं वचः ।

अपां पर्यस्वदित् पयस्तेन मा सह शुन्धत

॥ १५२ ॥ (ऋ० १०।१९।१-८)

मधितो यामायनः, भृगुर्वारुणिर्वा, च्यवनो भार्गवो वा । आपः, गावो वा, १ उत्तरार्धर्चस्य
अग्नीषोमौ । अनुष्टुप्, ६ गायत्री ।

नि वर्तध्वं मानु गाता—ऽस्मान्तिसपत्न रेवतीः ।

अग्नीषोमा पुनर्वसु अस्मे धारयतं रयिम्

पुनरेता नि वर्तय पुनरेता न्या कुरु ।

इन्द्र एणा नि यच्छ—त्वग्निरेना उपाजतु

पुनरेता नि वर्तन्ता—मस्मिन् पुष्यन्तु गोपतौ ।

इहैवाये नि धारये—ह तिष्ठतु या रयिः

यन्नियानं न्ययनं संज्ञानं यत् परायणम् ।

आवर्तनं निवर्तनं यो गोपा अपि तं हुवे

य उदानङ् व्ययनं य उदानट् परायणम् ।

आवर्तनं निवर्तनं—मपि गोपा नि वर्तताम्

आ निवर्त नि वर्तय पुनर्न इन्द्र गा देहि । जीवाभिर्भुनजामहे

परि वो विश्वतो दध ऊर्जा घृतेन पर्यसा ।

ये देवाः के च यज्ञिया—स्ते रुच्या सं सृजन्तु नः

आ निवर्तन वर्तय नि निवर्तन वर्तय ।

भूस्याश्चतस्रः प्रदिश—स्ताभ्य एना नि वर्तय

॥ १५३ ॥ (ऋ० १०।३०।१-१५)

कवष पेलूषः । आपः, अपां नपात् वा । त्रिष्टुप् ।

प्र देवत्रा ब्रह्मणे गातुरे—त्वपो अच्छा मनसो न प्रयुक्ति ।

मूर्ति मित्रस्य वरुणस्य धासि पृथुञ्जयसे रीरधा सुवृक्तिम्

अचर्यवो हविष्मन्तो हि भूता—ऽच्छाप इतोशतीरुशन्तः ।

अव याश्चष्टे अरुणः सुपर्ण—स्तमास्यध्वमूर्मिमद्या सुहस्ताः

अचर्यवोऽप इता समुद्र—मपां नपातं हविषा यजध्वम् ।

स वो दददुर्मिमद्या संपूतं तस्मै सोमं मधुमन्तं सुनोत

१ दे. [आयुर्वेद०]

यो अ॒नि॒ध्मो दी॒दय॒दु॒स्व॒न्त—र्यं वि॒प्रा॒स ई॒ळते॒ अध्व॒रेषु॑ ।
 अपां॑ न॒पान्मधु॑मती॒रपो॒ दा या॒भिरिन्द्रो॑ वावृ॒धे वी॒र्याय॑ ४
 या॒भिः सोमो॑ मो॒दते॒ हर्ष॑ते च क॒ल्याणी॑भिर्यु॒वतिभि॑र्न म॒र्यः ।
 ता अ॒ध्वर्यो॑ अ॒पो अ॒च्छा परे॑हि यदा॑सिञ्चा ओष॒धीभिः॑ पुनी॒तात् ५ १०५
 ए॒वेद्य॒ने यु॒वतयो॑ नमन्त॒ यदी॑मु॒शन्नु॒शती॑रत्य॒च्छ ।
 सं जा॑नते म॒नसा॑ सं चि॒कित्रे॑ ऽध्व॒र्यवो॑ धि॒षणा॑पश्च दे॒वीः ६
 यो वो॑ वृ॒ताभ्यो॑ अ॒कृणो॑दु लो॒कं यो वो॑ म॒ह्या अ॒भि॒शस्ते॑रमु॒ञ्चत् ।
 तस्मा॑ इन्द्रा॒य मधु॑मन्तमूर्मि॒ दे॒वमा॑द॒नं प्र हि॑णोतनापः ७
 प्रा॒स्मै हि॒नोत॑ मधु॒मन्तमूर्मि॑ ग॒र्भो यो वः॑ सि॒न्धवो॑ मध्व॒ उत्सः॑ ।
 घृ॒तपृ॑ष्ठमी॒ढ्यमध्व॑रेष्वा—ऽऽपो॑ रेवतीः शृ॒णुता॑ हवै मे
 तं सि॒न्धवो॑ मत्स॒रमिन्द्र॑पानं—मूर्मि॑ प्र हे॒त य उ॒भे इ॒यति॑ ।
 म॒दुच्यु॑तमौ॒शानं॑ न॒भोजां॑ परि॒ त्रित॑न्तुं वि॒चर॑न्तमु॒त्सम् ९
 आ॒वर्ष॑तती॒रध॒ नु द्वि॒धारां॑ गोषु॒युधो॑ न नि॒यवं च॑रन्तीः ।
 ऋ॒षे जनि॑त्रीभु॒वैनस्य॑ पत्नी—रपो॑ वे॒न्दस्व॑ स॒वृधः॑ स॒योनीः १० ११०
 हि॒नोता॑ नो अध्व॒रं दे॒वय॑ज्या हि॒नोत॑ ब्रह्मं स॒नये॑ धना॒नाम् ।
 ऋ॒तस्य॑ योगे वि॒ ष्यध्व॑मू॒धः श्रु॒ष्टीव॑रीभू॒तना॒स्मभ्य॑मापः ११
 आपो॑ रेवतीः क्षय॑था हि वस्वः॒ क्रतुं॑ च भ॒द्रं बि॑भृथामृ॒तं च ।
 रा॒यश्च॑ स्थ स्व॒पत्य॑स्य पत्नीः स॒रस्व॑ती तद् गृ॒णते॑ वयो॒ धात् १२
 प्र॒ति यदा॑पो अ॒दृश्र॑माय॒ती—घृ॒तं प॒यांसि॑ बि॒भ्रती॑र्मधू॒नि ।
 अ॒ध्वर्यु॑भिर्म॒नसा॑ संवि॒द्वाना॑ इन्द्रा॒य सोमं॑ सुषु॒तं भर॑न्तीः १३
 ए॒मा अ॒गमन्॑ रेवती॒र्जीव॑ध॒न्या अ॒ध्वर्य॑वः सा॒दय॑ता सखायः ।
 नि वृ॒हिषि॑ ध॒त्तन॑ सोम्या॒सो ऽपां॑ न॒प्रां संवि॑द्वानासं ए॒नाः १४
 आ॒गम॑न्नापं उ॒शती॑र्वि॒हिरे॑दं न्य॒ध्वरे॑ अ॒सदन्॑ दे॒वय॑न्तीः ।
 अ॒ध्वर्य॑वः सु॒नुतेन्द्रा॑य सोम—म॒भूदु॑ वः सु॒शका॑ दे॒वय॑ज्या १५ ११५

॥ १५३ ॥ (अथर्व० १।३३।१-४)

शन्तातिः । (चन्द्रमाः) आपः (च) । त्रिष्टुप् ।

हि॒र॒ण्यव॑र्णाः शु॒चयः॑ पाव॒का यासु॑ जा॒तः सं॒वि॒ता या॒स्वप्रिः॑ ।
 या अ॒ग्निं ग॒र्भं द॒धिरे॑ सुव॒र्णास्ता॑ न॒ आपः॑ शं स्यो॒ना भ॑वन्तु

[१०४-१२९]

अचिकित्सा ।

यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यन् जनानाम् ।

या अग्निं गर्भं दधिरे सुवर्णास्ता न आपः शं स्योना भवन्तु २

यासां देवा दिवि कृण्वन्ति भक्षं या अन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति ।

या अग्निं गर्भं दधिरे सुवर्णास्ता न आपः शं स्योना भवन्तु ३

शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापः शिवया तन्वोप स्पृशत त्वचं मे ।

घृतश्रुतः शुचयो याः पावकास्ता न आपः शं स्योना भवन्तु ४ ११९

॥ १५५ ॥ (अथर्व० ३।१३।१-७)

श्रुतः । वरुणः, सिन्धुः, आपः; २-३ इन्द्रः । अनुष्टुप्, १ निचृत्, ५ विराड्जगती, ६ निचृदनुष्टुप् ।

यदुदः संप्रयतीरहाहनदता हते ।

तस्मादा नद्योऽु नाम स्थ ता वो नामानि सिन्धवः १ १२०

यत् प्रेषिता वरुणेनाच्छीमं समवलगत ।

तदाप्रोदिन्द्रो वो यतीस्तस्मादापो अनुं घ्न २

अपकामं स्यन्दमाना अवीवरत वो हि कम् ।

इन्द्रो वः शक्तिभिर्देवीस्तस्माद् वार्नाम वो हितम् ३

एको वो देवोऽप्यतिष्ठत् स्यन्दमाना यथावशम् ।

उदानिषुर्गहीरिति तस्मादुदकमुच्यते ४

आपो भद्रा घृतमिदापं आसन्नग्रीषोमौ विभ्रत्याप इत् ताः ।

तीव्रो रसो मधुपृचामरंगम आ मा प्राणेन सह वर्चसा गमेत् ५

आदित् पश्याम्युत वा शृणोम्या मा घोषो गच्छति वाङ् मांसाम् ।

मन्ये भेजानो अमृतस्य तर्हि हिरण्यवर्णा अर्तपं यदा वः ६ १२५

इदं व आपो हृदयमयं वत्स ऋतावरीः । इहेत्थमेतं शक्नीर्यत्रेदं वेश्यामि वः ७ १२६

॥ १५६ ॥ (अथर्व० ७।३९।१)

प्रस्कण्वः । आपः, सुपर्णः, वृषभः । त्रिष्टुप् ।

दिव्यं सुपर्णं पयसं बृहन्तमपां गर्भं वृषभमोषधीनाम् ।

अमीपतो वृष्ट्या तर्पयन्तमा नो गोष्ठे रयिष्ठां स्थापयाति १ १२७

॥ १५७ ॥ (अथर्व० १२।२।१-५)

सिन्धुद्वीपः । आपः । अनुष्टुप् ।

ये तु आपो हैमवतीः शमु ते सन्तुत्स्याः । शं ते सनिष्यदा आपः शमु ते सन्तु धृष्याः १

ये तु आपो धन्वन्वाहः शं ते सन्तवनूप्याः । शं ते खनित्रिमा आपः शं याः कुम्भेभिराभृताः २ १२९

अनभ्रयः खनमाना विप्रा गम्भीरे अपसः ।

भिषग्भ्यो भिषक्तरा आपो अच्छा वदामसि

३ ११०

अपामहं दिव्यानिमपां स्रोतस्यानिम ।

अपामहं प्रणेज्जनेऽश्वा भवथ वाजिनः

४

ता अपः शिवा अपोऽयक्ष्मंकरणीरपः । यथैव तृप्यते मयस्तास्त आ दत्त भेषजीः ५ १११

॥ १५८ ॥ (अथर्व० १९।६९।१-४)

ब्रह्मा । आपः । १ आसुर्यनुष्टुप्; २ साम्यनुष्टुप्; ३ आसुरी गायत्री; ४ साम्ययुष्णिक् ।

जीवा स्थ जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम्

१

उपजीवा स्थोप जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम्

२

संजीवा स्थ सं जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम्

३ १३५

जीवला स्थ जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम्

४ १३६

॥ १५९ ॥ (वा० य० १।१२-१३, २१, ३१)

(आपः ।)

सवितुर्वैः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।

देवीरापो अग्रेगुवो अग्रेपुवोऽग्र इममद्य यज्ञं नयताग्रे यज्ञपतिं सुधातुं

यज्ञपतिं देवयुवंम्

१२

युष्मा इन्द्रोऽवृणीत वृत्रतूर्ये यूयमिन्द्रमवृणीध्वं वृत्रतूर्ये प्रोक्षिता स्थ

१३

समाप ओषधीभिः समोषधयो रसेन ।

सं रेवतीर्जगतीभिः पृच्यन्तां सं मधुमतीर्मधुमतीभिः पृच्यन्ताम्

२१

सवितुर्वैः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः

३१ १४०

॥ १६० ॥ (वा० य० २।२, ३४)

(आपः ।)

अदित्यै व्युन्दनमसि

२

ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः क्रीलालं परिसृतम् । स्वधा स्थं तर्पयत मे पितृन् ३४ १४१

॥ १६१ ॥ (वा० य० ४।१, १२)

(आपः ।)

इमा आपः शम्भु मे सन्तु देवीः

१

श्वात्राः पीता भवत यूयमापो ऽ अस्माकमन्तरुदरे सुशेवाः

ता अस्मभ्यमयक्ष्मा अनमीवा अनागसः स्वदन्तु देवीरमृतां क्रतावृधः

१२ १४४

॥ १६२ ॥ (वा० य० ५।११)
(आपः ।)

१३० इन्द्रं तप्तं वार्षहिर्धा यज्ञानिः सृजामि

११ ९४५

॥ १६३ ॥ (वा० य० ६।१०, १३, ३०-३१)
(आपः ।)

१३१ आपो देवीः स्वदन्तु स्वात्तं चित्सद् देवहविः

१०

देवीरापः शुद्धा वोढ्वः सुपरिविष्टा देवेषु सुपरिविष्टा वयं परिवेष्टारो भूयास्म

१३

मित्राभ्यां स्य देवश्रुतस्तुर्पयत मा

३०

मनो मे तर्पयत वाचं मे तर्पयत प्राणं मे तर्पयत चक्षुर्मे तर्पयत श्रोत्रं मे तर्पयतात्मानं मे

१३५ तर्पयत प्रजां मे तर्पयत पशून् मे तर्पयत गणान् मे तर्पयत गणा मे मा वितुषन्

३१ ९४९

॥ १६४ ॥ (वा० य० ६।१७, २१, २४, २७-२८)
(आपः ।)

१३६ इदमेषः प्रवहतावद्यं च मलं च यत् ।

तच्चभिदुद्रोहान्तं यच्च श्लेपे अभीरुणम् ।

आपो मा तस्मादेनसः पर्वमानश्च मुञ्चतु

आपो मोषधीर्हिंसीः ।

१७ ९५०

१३७ मृगविद्या न आप ओषधयः सन्तु । युोऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः

२२

१३८ देवेषां देवानां भागधेयीं स्थ । येषां देवानां भागधेयीं स्थ मित्रावरुणयोर्भागधेयीं स्थ

१३९ सूर्योऽप सूर्यो याभिर्वा सूर्यः सह । ता नो हिन्वन्त्वध्वरम्

२४

१४० तेषां अपां नपाद्यो व ऊर्मिर्हविष्य इन्द्रियावान् मदन्तमः ।

१४१ देवेषां देवेषां दत्त शुक्रपेभ्यो येषां भाग स्थ स्वाहा

२७

१४२ मृतस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि । समापो अद्भिरगमत् समोषधीभिरोषधीः

२८ ९५४

॥ १६५ ॥ (वा० य० ८।२६)
(आपः ।)

१४३ तेषां एष वो गर्भस्तः सुप्रीतः सुभृतं विभृत ।

१४४ तेषां तेषां लोकस्तस्मिञ्छं च वक्ष्व परि च वक्ष्व

२६ ९५५

॥ १६६ ॥ (अथर्व० ६।१२४।१-३)

अथर्वा । दिव्या आपः (निर्ऋत्यपस्तरणम्) । त्रिष्टुप् ।

दिवो नु मां बृहतो अन्तरिक्षादुपां स्तोको अभ्यपसद् रसेन ।
 समिन्द्रियेण पर्यसाहमये छन्दोभिर्यज्ञैः सुकृतो कृतेन १
 यदि वृक्षादभ्यपसत् फलं तद् यद्यन्तरिक्षात् स उ वायुरेव ।
 यत्रास्पृक्षत् तन्वोऽयं यच्च वासस आपो नुदन्तु निर्ऋतिं पराचैः २
 अभ्यञ्जनं सुरभि सा समृद्धिर्हिरण्यं वर्चस्तदु पृत्रिममेव ।
 सर्वा पवित्रा वितताभ्यस्मत् तन्मा तारीर्निर्ऋतिर्मो अरातिः ३ १५०

॥ १६७ ॥ (अथर्व० ७।८९।१-४)

सिन्धुद्वीपः । अग्निः (दिव्या आपः) । अनुष्टुप् । ४ त्रिपदा निचृत् परोष्णिक् ।

अपो दिव्या अचायिषं रसेन समपृक्षमहि ।
 पर्यस्वानग्र आगमे तं मा सं सृज वर्चसा १
 सं माग्ने वर्चसा सृज सं प्रजया समायुषा ।
 विद्युर्मै अस्य देवा इन्द्रो विद्यात् सह ऋषिभिः २ १६०
 इदमापः प्र बृहतावद्यं च मलं च यत् । यच्चाभिदुद्रोहानृतं यच्च श्रेपे अभीरुणम् ३
 एघ्रोऽस्येधिषीय समिदसि समेधिषीय । तेजोऽसि तेजो मयि धेहि ४ १६१

॥ १६८ ॥ (अथर्व० १।४।४)

सिन्धुद्वीपः । आपः (अपां भेषजम्) । पुरस्ताद्वृहती ।

अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजम् ।
 अपामुत प्रशस्तिभिरश्वा भवथ वाजिनो गावो भवथ वाजिनीः ४ १६२

॥ १६९ ॥ (अथर्व० १।६।४)

सिन्धुद्वीपः (अथर्वा कृतिर्वा) । आपः (अपां भेषजम्) । पथ्यापङ्क्तिः ।

शं न आपो धन्वन्याऽऽः शमु सन्त्वनूप्याः ।
 शं नः खनित्रिमा आपः शमु याः कुम्भ आभृताः शिवा नः सन्तु वार्षिकीः ४ १६३

॥ १७० ॥ (अथर्व० ६।२२।१-३)

शन्तातिः । १ आदित्यरश्मिः, २-३ मरुतः (भेषज्यम्) । त्रिष्टुप्, २ चतुष्टुपदा भुरिज्जगती ।

कृष्णं नियानं हरयः सुपर्णा अपो वसाना दिवमुत् पतन्ति ।
 त आववृत्रन्तसर्दना हृतस्यादिद धृतेन पृथिवीं व्युदुः १ १७०

जलचिकित्सा ।
अङ्कः १५६-१७७]

पयस्वतीः कृणुथाप ओषधीः शिवा यदेजथा मरुतो रुक्मवक्षसः ।

ऊर्जं च तत्र सुमतिं च पिन्वत यत्रा नरो मरुतः सिञ्चथा मधु २

उदुप्रतो मरुतस्तां इयर्त वृष्टिर्या विश्वा निवतस्पृणार्ति ।

एजाति गृहा कन्येवि तुन्नैरुं तुन्दाना पत्येव जाया ३ ९६७

॥ १७१ ॥ (अथर्व० ६।२३।१-३)

शन्तातिः । आपः (अपां भैषज्यम्) । १ अनुष्टुप्, २ त्रिपदा गायत्री, ३ परोष्णिक् ।

ससृषीस्तदुपसो दिवा नक्तं च ससृषीः । वरेण्यक्रतुरहमपो देवीरुप ह्वये १

ओता आपः कर्मण्या मुञ्चन्तिवतः प्रणीतये । सद्यः कृण्वन्त्वेतैवे २

देवस्य सवितुः सवे कर्म कृण्वन्तु मानुषाः । शं नो भवन्त्वप ओषधीः शिवाः ३ ९७०

॥ १७२ ॥ (अथर्व० ६।२४।१-३)

शन्तातिः । आपः (अपां भैषज्यम्) । अनुष्टुप् ।

हिमवतः प्र संवन्ति सिन्धौ समह संगमः ।

आपो ह महं तद् देवीर्ददन् हृदयोतभेषजम् १

यन्मै अक्षयोरादिद्योत पाण्योः प्रपदोश्च यत् ।

आपस्तत् सर्वं निष्करन् भिषजां सुभिषक्तमाः २

सिन्धुपत्नीः सिन्धुराज्ञीः सर्वा या नद्यः स्थनं ।

दत्त नस्तस्य भेषजं तेना वो भुनजामहे ३ ९७३

॥ १७३ ॥ (क्र० पाट३।१-२०)

भौमोऽग्निः । पर्जन्यः । त्रिष्टुप्, २-४ जगती, ९ अनुष्टुप् ।

अच्छा वद त्वसं गीर्भिराभिः स्तुहि पर्जन्यं नमसा विवास ।

कर्भिकदद् वृषभो जीरदान् रेतो दधात्योषधीषु गर्भम् १

वि वृक्षान् हन्त्युत हन्ति रक्षसो विश्वं विभाय भुवनं महावधात् ।

उतानागा ईषते वृण्यावतो यत् पर्जन्यः स्तनयन् हन्ति दुष्कृतः २ ९७५

रूपीय कश्याश्वा अभिक्षिपन्नाविर्दूतान् कृणुते वृष्याँ इ अहं ।

दूरात् सिंहस्य स्तनथा उदीरते यत् पर्जन्यः कृणुते वृष्याँ नभः ३

प्र वाता वान्ति पतयन्ति विद्युत उदोषधीर्जिहते पिन्वते स्वः ।

इरा विश्वस्मै भुवनाय जायते यत् पर्जन्यः पृथिवीं रेतसारवति ४ ९७७

यस्य व्रते पृथिवी ननमीति यस्य व्रते शफवज्रधुरीति ।
 यस्य व्रत ओषधीर्विश्वरूपाः स नः पर्जन्य महि शर्म यच्छ ५
 दिवो नो वृष्टिं मरुतो ररीध्वं प्र पिन्वत वृष्णो अश्वस्य धाराः ।
 अर्वाङ्गतेन स्तनयितुनेह्यपो निषिञ्चन्नसुरः पिता नः ६
 अभि क्रन्द स्तनय गर्भमा धा उदन्वता परि दीया रथेन ।
 दृति सु कर्ष विषितं न्यञ्च समा भवन्तद्वतो निपादाः ७ १८०
 महान्तं कोशमुदचा नि विश्व स्यन्दन्तां कुल्या विषिताः पुरस्तात् ।
 घृतेन द्यावापृथिवी व्युन्धि सुप्रपाणं भवत्वध्याभ्यः ८
 यत् पर्जन्य कनिकदत् स्तनयन् हंसि दुष्कृतः ।
 प्रतीदं विश्वं मोदते यत् किं च पृथिव्यामधि ९
 अवर्षावर्षमुदू पू गृभायाऽकृधन्वान्यत्येतवा उ ।
 अजीजन ओषधीर्भोजनाय कमुत प्रजाभ्योऽविदो मनीषां १० १८१

॥ १७४ ॥ (क्र० १०१७।१६)

पेन्द्रो वसुकः । इन्द्रः (पर्जन्यः) । त्रिष्टुप् ।

दुशानामेकं कपिलं समानं तं हिन्वन्ति क्रतवे पार्याय ।
 गर्भं माता सुधितं वक्षणास्ववेनन्तं तुषयन्ती विभर्ति १६ १८४

॥ १७५ ॥ (क्र० ७।१०१।१-६)

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः (वृष्टिकामः), कुमार आग्नेयो वा । पर्जन्यः । त्रिष्टुप् ।

तिम्रो वाचः प्र वंदु ज्योतिरग्रा या एतद् दुहे मधुदोषमूधः ।
 स वत्सं कृण्वन् गर्भमोषधीनां सद्यो जातो वृषभो रोरवीति १ १८५
 यो वर्धन ओषधीनां यो अपां यो विश्वस्य जगतो देव ईशे ।
 स त्रिधातुं शरणं शर्म यंसत् त्रिवर्तु ज्योतिः स्वमिष्टचस्मे २
 स्तरीरु त्वद् भवति सूत उ त्वद् यथावशं तन्व चक्र एषः ।
 पितुः पयः प्रति गृभ्णाति माता तेन पिता वर्धते तेन पुत्रः ३
 यस्मिन् विश्वानि भुवनानि तस्थुस्तिस्त्रो द्यावस्त्रेधा ससुरारपः ।
 त्रयः कोशास उपसेचनासो मध्वः श्रोतन्त्यभितो विरप्शम् ४ १८६

[१७८-१००१]

लचिकिरसा ।

इदं वचः पर्जन्याय स्वराजं हृदो अस्त्वन्तरं तज्जुजोषत् ।
मयोयुवो वृष्टयः सन्त्वस्मे सुपिप्पला ओषधीर्देवगोपाः

५

स रेतोषा वृषभः शश्वतीनां तस्मिन्नात्मा जगतस्तस्थुषश्च ।

तन्म कृतं पातु शतशारदाय यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

६ ९१०

॥ १७६ ॥ (ऋ० ७।१०२।१-३)

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः (वृष्टिकामः), कुमार आग्नेयो वा । पर्जन्यः । गायत्री, २ पादनिवृत् ।

पर्जन्याय प्र गायत दिवस्पुत्राय मीळहुषे । स नो यवसमिच्छतु

१

यो गर्भमोषधीनां गवां कृणोत्यर्धताम् । पर्जन्यः पुरुषीणाम्

२

तस्मा इदास्ये हविर्जुहोता मधुमत्तमम् । इत्तां नः संयतं करत्

३ ९१३

॥ १७७ ॥ (ऋ० ७।१०३।१-१०)

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मण्डूकाः (पर्जन्यः) । त्रिष्टुप्, १ अनुष्टुप् ।

संवत्सरं शश्याना ब्राह्मणा व्रतचारिणः ।

वाचं पर्जन्यजिन्वितां प्र मण्डूका अवादिषुः

१

दिव्या आपो अभि यदेनमायन् दृतिं न शुष्कं सरसी शयानम् ।

गवामह न मायुर्वत्सिनीनां मण्डूकानां वसुरत्रा समेति

२ ९१५

यदीमेतां उशतो अभ्यवर्षीत् तृष्यावतः प्रावृष्यागतायाम् ।

अस्वलीकृत्या पितरं न पुत्रो अन्यो अन्यमुप वदन्तमेति

३

अन्यो अन्यमनु गृभ्णात्येनो—रपां प्रसर्गे यदमन्दिषाताम् ।

मण्डूको यदुभिवृष्टः कनिष्कन् पृश्निः संपृङ्क्ते हरितेन वाचम्

४

यदेषामन्यो अन्यस्य वाचं शाक्तस्यैव वदति शिक्षमाणः ।

सर्वं तदेषां समृधेव पर्व यत् सुवाचो वदथनाध्यप्सु

५

गोमायुरेको अजमायुरेकः पृश्निरेको हरित एक एषाम् ।

समानं नाम विभ्रतो विरूपाः पुरुत्रा वाचं पिपिशुर्वदन्तः

६

ब्राह्मणासो अतिरात्रे न सोमे सरो न पूर्णमभितो वदन्तः ।

संवत्सरस्य तदहः परि ष्ठ यन्मण्डूकाः प्रावृषीणं बभूव

७ १०००

ब्राह्मणासः सोमिनो वाचमक्रत ब्रह्म कृण्वन्तः परिवत्सरीणम् ।

अध्वर्यवो धर्मिणः सिध्विदाना आविर्भवन्ति गुह्या न के चित्

८ १००१

१० दै. [आयुर्वेद०]

देवर्हिंति जुगुपुर्द्वादशस्य ऋतुं नरो न प्र मिनन्त्येते ।

संवत्सरे प्रावृष्यागतायां तप्ता घर्मा अश्रुवते विसुर्गम्

९

गोमायुरदादुजमायुरदात् पृश्निरदाद्वरितो नो वसन्ति ।

गवां मण्डूका ददतः शतानि सहस्रसावे प्र तिरन्त आयुः

१० १००३

॥ १७८ ॥ (अथर्व० ४।१५।१-१६)

अथर्वा । १ दिशः, २-३ वीरुधः, ४ मरुत्पर्जन्यौ, ५-१० मरुतः आपः, ११ प्रजापतिः स्तनयितुः,

१२ वरुणः, १३-१५ मण्डूकाः पितरश्च, १६ वातः (वृष्टिः) । त्रिष्टुप्, १-२, ५ विराट्

जगती, ४ विराट् पुरस्ताद्बृहती, ७, १३ अनुष्टुप्, ९ पथ्यापङ्क्तिः, १० भुरिक्,

१२ पञ्चपदानुष्टुग्गर्भा भुरिक्, १५ शंकुमत्यनुष्टुप् ।

समुत्पतन्तु प्रदिशो नभस्वतीः समभ्राणि वातजृतानि यन्तु ।

महऋषभस्य नदतो नभस्वतो वाश्रा आपः पृथिवीं तर्पयन्तु

१

समीक्ष्यन्तु तविषाः सुदानवोऽपां रसा ओषधीभिः सचन्ताम् ।

वर्षस्य सर्गीं महयन्तु भूमिं पृथग् जायन्तामोषधयो विश्वरूपाः

२ १००५

समीक्ष्यस्व गायतो नभोऽस्यपां वेगासः पृथगुद् विजन्ताम् ।

वर्षस्य सर्गीं महयन्तु भूमिं पृथग् जायन्तां वीरुधो विश्वरूपाः

३

गणास्त्वोष गायन्तु मरुताः पर्जन्य घोषिणः पृथक् ।

सर्गीं वर्षस्य वर्षतो वर्षन्तु पृथिवीमनु

४

उदीरयत मरुतः समुद्रतस्त्वेषो अर्को नभ उत पातयाथ ।

महऋषभस्य नदतो नभस्वतो वाश्रा आपः पृथिवीं तर्पयन्तु

५

अभि क्रन्द स्तनयार्दयोदुधि भूमिं पर्जन्य पयसा समङ्ग्धि ।

त्वया सृष्टं बहुलमैतु वर्षमाशारैषी कृशगुरेत्वस्तम्

६

सं वोऽवन्तु सुदानव उत्सा अजगरा उत ।

मरुद्भिः प्रच्युता मेघा वर्षन्तु पृथिवीमनु

७ १०१०

आशामाशां वि द्यौततां वाता वान्तु दिशोदिशः ।

मरुद्भिः प्रच्युता मेघाः सं यन्तु पृथिवीमनु

८

आपो विद्युदभ्रं वर्षं सं वोऽवन्तु सुदानव उत्सा अजगरा उत ।

मरुद्भिः प्रच्युता मेघाः प्रावन्तु पृथिवीमनु

९

अपामग्निस्तनूभिः संविदानो य ओषधीनामधिपा बभूव ।

स नो वर्षं वनुतां जातवेदाः प्राणं प्रजाभ्यो अमृतं दिवस्पतिं

१० १०१३

लक्षिकेतिहा ।

वर्षा १००२-१०२६]

९

० १००३

१००३

१

२ १००५

३

४

५

६

७ १०१०

८

९

० १०११

प्रजापतिः सलिलादा समुद्रादाप इरयन्नुदधिर्मर्दयाति ।

प्र प्यायतां वृष्णो अश्वस्य रेतोऽर्वाङ्गितेन स्तनयितुनेहि ११

अपो निषिञ्चन्नसुरः पिता नः श्वसन्तु गर्गरा अपां वरुणाव नीचीरपः सृज ।

वदन्तु पृथिवीहवो मण्डूका इरिणानु १२ १०१५

संवत्सरं शशयाना ब्राह्मणा व्रतचारिणः ।

वाचं पर्जन्यं जिन्वितां प्र मण्डूकां अवादिषुः १३

उपप्रवद मण्डूकि वर्षमा वद तादुरि । मध्ये हृदस्य प्लवस्व विगृह्य चतुरः पदः १४

खण्डखा ३३ खेमखा ३३ मध्ये तदुरि । वर्षं वनुध्वं पितरो मरुतां मन इच्छत १५

महान्तं कोशमुदचाभि पिञ्च सविद्युतं भवतु वातु वातः ।

तन्वतां यज्ञं बहुधा विसृष्टा आनन्दिनीरोपधयो भवन्तु १६ १०१९

॥ १७९ ॥ (अथर्व ७।१८।१-२)

अथर्वा । पृथिवी, पर्जन्यः (वृष्टिः) । १ चतुष्पदा भुरिगुणिक्, २ त्रिष्टुप् ।

प्र नभस्व पृथिवि भिन्द्वा ३३ दिव्यं नभः ।

उदो दिव्यस्य नो धातरीशानो वि ष्या दृतिम् १ १०२०

न प्रस्वताप न हिमो जघान प्र नभतां पृथिवी जीरदानुः ।

आपश्चिदस्मै घृतमित क्षरन्ति यत्र सोमः सद्रुमित तत्र भद्रम् २

॥ १८० ॥ (ऋ ३।३३।१-१३)

गाथिनो विश्वामित्रः; ४, ६, ८, १० नद्यः ऋषिकाः । नद्यः; ४, ८, १० विश्वामित्रः;

६, ७ इन्द्रः । त्रिष्टुप्, १३ अनुष्टुप् ।

प्र पर्वतानामुशती उपस्था—दश्चै इव विषिते हासमाने ।

गावैव शुभ्रे मातरां रिहाणे विपाद्लुतुद्री पर्यसा जवेते १

इन्द्रैषिते प्रसवं मिक्षमाणे अच्छा समुद्रं रथ्यैव याथः ।

समाराने ऊर्मिभिः पिन्वमाने अन्या वामन्यामप्येति शुभ्रे २

अच्छा सिन्धुं मारुतमामयासं विपाशमुर्वी सुभगामगन्म ।

वत्समिव मातरां संरिहाणे समानं योनिमनु संचरन्ती ३

एना वयं पर्यसा पिन्वमाना अनु योनिं देवकृतं चरन्तीः ।

न वतैवे प्रसवः सर्गैतक्तः कियुर्विप्रौ नद्यौ जोहवीति ४ १०२५

रमध्वं मे वचसे सोम्याय क्रतावरीरुप मुहूर्तमेवैः ।

प्र सिन्धुमच्छा बृहती मनीषा ऽवस्युरहे कुशिकस्य सनुः ५ १०२६

इन्द्रो अस्माँ अरदुद् वज्रवाहु—रपाहन् वृत्रं परिधिं नदीनाम् ।
 देवोऽनयत् सविता सुपाणि—स्तस्य वयं प्रसवे याम उर्वीः
 प्रवाच्यं शश्वधा वीर्यं त—दिन्द्रस्य कर्म यदहिं विवृश्वत् ।
 वि वज्रेण परिषदो जघाना—ऽऽयन्नापोऽयनमिच्छमानाः
 एतद् वचो जरितर्मापि मृष्टा आ यत् ते घोषानुत्तरा युगानि ।
 उक्थेषु कारो प्रति नो जुषस्व मा नो नि कः पुरुषत्रा नमस्ते
 ओ पु स्वसारः कारवे शृणोत ययौ वो दूरादनसा रथेन ।
 नि पू नमध्वं भवता सुपारा अधोअक्षाः सिन्धवः स्रोत्याभिः
 आ ते कारो शृणवामा वचांसि ययार्थं दूरादनसा रथेन ।
 नि ते नसै पीष्यानेव योषा मर्यायेव कन्या शश्वचै ते
 यदुङ्ग त्वा भरताः संतरेयु—र्गव्यन् ग्रामं इषित इन्द्रजितः ।
 अर्षादहं प्रसवः सर्गतक्त आ वो वृणे सुमतिं युज्ञियानाम्
 अतारिषुर्भरता गव्यवः स—मभक्त विप्रः सुमतिं नदीनाम् ।
 प्र पिन्वध्वमिषयन्तीः सुराधा आ वक्षणाः पृणध्वं यात शीभम्
 उद् व ऊर्मिः शम्या ह—न्त्वापो योक्त्राणि मुञ्चत ।
 मादुष्कृतौ व्येनसा—ऽघ्न्यौ शूनमारताम्

६

७

८

९ १०३०

१०

११

१२

१३ १०३४

॥ १८१ ॥ (क्र० ७१५०४)

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । नद्यः । अतिजगती शकरी वा ।

याः प्रवतो निवते उद्वते उदुन्वतीरनुदकाश्च याः ।
 ता असभ्यं पर्यसा पिन्वमानाः शिवा देवीरंशिपदा भवन्तु
 सर्वा नद्यो अशिमिदा भवन्तु

४ १०३५

॥ १८२ ॥ (क्र० १०१७५१-९)

सिन्धुक्षित् प्रेयमेघः । नद्यः । जगती ।

प्र सु व आपो महिमानमुत्तमं कारुर्वीचाति सदर्ने विवस्वतः ।
 प्र सप्तसप्त त्रेधा हि चक्रमुः प्र सृत्वंरीणामति सिन्धुरोजसा
 प्र तेऽरदुद् वरुणो यार्तवे पथः सिन्धो यद् वाजो अभ्यद्रवस्त्वम् ।
 भूम्या अधि प्रवता यासि सानुना यदैषामग्रं जगतामिरज्यसि

१

२ १०३६

[१०१०-१०४९]

लाचिकेरा ।

दिवि स्वनो यतते भूम्योप-र्यनन्तं शुभमुदियति भानुना ।

अभ्रादिव प्र स्तनयन्ति वृष्टयः सिन्धुर्यदेति वृषभो न रोरुवत् ३

अभि त्वा सिन्धो शिशुमिन्न मातरो वाश्वा अर्षन्ति पर्यसेव धेनवः ।

राजैव युष्वा नयसि त्वमित् सिचौ यदासामग्रं प्रवतामिनक्षसि ४

इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रि स्तोमं सचता परुण्या ।

असिकन्या मरुद्वधे वितस्तया-ऽऽर्जीकीये शृणुह्या सुषोमया ५ १०४०

तृष्टामया प्रथमं यातवे सज्रः सुसर्त्वा रसर्था श्वेत्या त्या ।

त्वं सिन्धो कुम्भया गोमतीं क्रुमुं मेहत्त्वा सरथं याभिरीयसे ६

ऋजीत्येनी रुशती महित्वा परि जयांसि भरते रजांसि ।

अदब्धा सिन्धुरपसोमपस्तमा-ऽश्वा न चित्रा वपुषीव दर्शता ७

स्वश्वा सिन्धुः सुरथा सुवासा हिरण्ययी सुकृता वाजिनीवती ।

ऊर्णीवती युवतिः सीलमाव-त्युताधि वस्ते सुभगा मधुवृधम् ८

सुखं रथं युयुजे सिन्धुराश्विनं तेन वाजं सनिषदस्मिन्नाजौ ।

महान् ह्यस्य महिमा पेनस्यते ऽदब्धस्य स्वयंशसो विरप्तिनः ९ १०४४

॥ १८३ ॥ (ऋ० ७।९।५।३)

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सरस्वान् । त्रिष्टुप् ।

स वावृधे नर्यो योषणासु वृषा शिशुर्वृषभो यज्ञियासु ।

स वाजिनं मघवद्भ्यो दधाति वि सातये तन्वं मामृजीत ३ १०४५

॥ १८४ ॥ (ऋ० ७।९।४-६)

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सरस्वान् । गायत्री ।

जनीयन्तो न्वग्रवः पुत्रीयन्तः सुदानवः । सरस्वन्तं हवामहे ४

ये ते सरस्व ऊर्मयो मधुमन्तो घृतश्रुतः । तेभिर्नोऽविता भव ५

पीषिवांसं सरस्वतः स्तनं यो विश्वदर्शतः । भक्षीमहिं प्रजामिषम् ६ १०४८

॥ १८५ ॥ (अथर्व० ७।४०।१-२)

प्रस्कणवः । सरस्वान् । १ भुरिक, २ त्रिष्टुप् ।

यस्य व्रतं पशवो यन्ति सर्वे यस्य व्रत उपतिष्ठन्त आपः ।

यस्य व्रते पुष्टपतिर्निविष्टस्तं सरस्वन्तमवसे हवामहे १ १०४९

आ प्रत्यञ्चं दाशुषे दाश्वंसं सरस्वन्तं पुष्टपतिं रयिष्ठाम् ।

रायस्पोषं श्रवस्युं वसाना इह हुवेम सदनं रयीणाम्

२ १०५०

॥ १८६ ॥ (क्र० १।३।१०-१२)

मधुच्छन्दावैश्वामित्रः । सरस्वती । गायत्री ।

पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती । यज्ञं वष्टु धियावसुः

१०

चोदयित्री सूनृतांनां चेतन्ती सुमतीनाम् । यज्ञं दधे सरस्वती

११

महो अर्णः सरस्वती प्र चेतयति केतुना । धियो विश्वा वि राजति

१२ १०५३

॥ १८७ ॥ (क्र० १।१६४।४९)

दीर्घतमा औचथ्यः । सरस्वती । त्रिष्टुप् ।

यस्ते स्तनः शशयो यो मयोभूयेन विश्वा पुष्यसि वार्याणि ।

यो रत्नधा वसुविद् यः सुदध्रः सरस्वति तमिह धातवे कः

४९ १०५४

× ॥ १८८ ॥ (क्र० २।३०।८ [पूर्वार्धः])

गृत्समदः (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद् भार्गवः) शौनकः । सरस्वती । त्रिष्टुप् ।

सरस्वति त्वमस्माँ अविड्ढि मरुत्वती धृषती जैषि शत्रून्

८ १०५५

॥ १८९ ॥ (क्र० २।४१।१६-१८)

गृत्समदः (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद् भार्गवः) शौनकः । सरस्वती । अनुष्टुप्, १८ बृहती ।

अम्बितमे नदीतमे देवितमे सरस्वति ।

अप्रशस्ता इव स्मसि प्रशस्तिमम्ब नस्कृधि

१६

त्वे विश्वा सरस्वति श्रितायूषि देव्याम् ।

शुनहोत्रेषु मत्स्व प्रजां देवि दिदिड्ढि नः

१७

इमा ब्रह्म सरस्वति जुषस्व वाजिनीवति ।

या ते मन्म गृत्समदा क्रतावरि प्रिया देवेषु जुह्वति

१८ १०५८

॥ १९० ॥ (क्र० ६।६१।१-१४)

बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । सरस्वती । गायत्री, १-३, १३ जगती; १४ त्रिष्टुप् ।

इयमददाद् रभसमृणच्युतं दिवोदासं वध्र्यश्वायं दाशुषे ।

या शश्वन्तमाच्छादावसं पणिं ता ते दात्राणि तविषा सरस्वति

१

इयं शुष्मेभिर्विसखा इवारुजत् सानुं गिरीणां तविषेभिर्मिभिः ।

पारावतघ्नीमवसे सुवृक्तिभिः सरस्वतीमा विवासेम धीतिभिः

२ १०६०

× दे० [इन्द्रः] १२३३।

मन्त्रः १०५०-१०५७]

अचिकित्सा ।

१०५०

१०५३

१०५४

१०५५

हती ।

६

७

१०५६

१

१०५७

२

सरस्वति देवनिद्रो नि बर्हय प्रजां विश्वस्य बृसंस्य मायिनः ।

उत क्षितिभ्योऽवनीरविन्दो विषमैभ्यो अस्रवो वाजिनीवति

प्र जो देवी सरस्वती वाजैभिर्वाजिनीवती । धीनामवित्र्यवतु

यस्त्वा देवि सरस्वत्युपब्रूते धने हिते । इन्द्रं न वृत्रतूर्ये

त्वं देवि सरस्वत्यवा वाजेषु वाजिनि । रदां पूषेव नः सनिम्

उत स्या नः सरस्वती घोरा हिरण्यवर्तनिः । वृत्रघ्नी वष्टि सुष्टुतिम्

यस्या अनन्तो अहुतस्त्वेषश्चरिणुरर्णवः । अमश्चरंति रोरुवत्

सा नो विश्वा अति द्विषः स्वसृरन्या क्रतावरी । अतन्नहेव सूर्यः

उत नः प्रिया प्रियासु सप्तस्वसा सुजुष्टा । सरस्वती स्तोम्या भूत्

आपप्रुषी पार्थिवा न्युरु रजो अन्तरिक्षम् । सरस्वती निदस्पातु

त्रिषधस्या सप्तधातुः पश्च जाता वर्धयन्ती । वाजैवाजे हव्या भूत्

प्र या महिम्ना महिनासु चेकिते द्युम्नेभिरन्या अपसामपस्तमा ।

रथ इव बृहती विभ्वने कृतो पस्तुत्या चिकितुषा सरस्वती

सरस्वत्यभि नो नेषि वस्यो माप स्फरीः पर्यसा मा न आ धक् ।

जुषस्व नः सख्या वेश्या च मा त्वत् क्षेत्राण्यरणानि गन्म

॥ १११ ॥ (ऋ० ७।३।५।१-२, ४-६)

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सरस्वती । त्रिष्टुप् ।

प्र क्षोदसा धार्यसा सप्त एषा सरस्वती धरुणमार्यसी पूः ।

प्रवाचाना रथ्येव याति विश्वा अपो महिना सिन्धुरन्याः

एकचित् सरस्वती नदीनां शुचिर्यती गिरिभ्य आ समुद्रात् ।

रायश्चेतन्ती भुवनस्य भूरैर्घृतं पर्यो दुदुहे नाहुषाय

उत स्या नः सरस्वती जुषाणो प श्रवत् सुभगा यज्ञे अस्मिन् ।

मितुर्भुभिर्मस्यैरियाणा राया युजा चिदुत्तरा सखिभ्यः

इमा जुह्वाना युष्मदा नमोभिः प्रति स्तोमै सरस्वति जुषस्व ।

तव शर्मन् प्रियतमे दधाना उप स्थेयाम शरणं न वृक्षम्

अपमृते सरस्वति वसिष्ठो द्वा रावृतस्य सुभगे व्यावः ।

वै शुभ्रे स्तुवते रासि वाजान् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

३

४

५

६

७ १०६५

८

९

१०

११

१२ १०७०

१३

१४ १०७२

१

२

४ १०७५

५

६ १०७७

॥ १९२ ॥ (ऋ० ७।९।१-३)

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सरस्वती । १-२ प्रगाथः- (१ बृहती, २ सतो बृहती), ३ प्रस्तारपङ्क्तिः ।

बृहदु गायिषे वचो ऽसुर्या नदीनाम् ।

सरस्वतीमिन्महया सुवृक्तिभिः स्तोमैर्वसिष्ठ रोदसी १

उभे यत् ते महिना शुभ्रे अन्धसी अधिक्षियन्ति पूरवः ।

सा नो बोध्यवित्री मरुत्सखा चोद राधो मघोनाम् २

भद्रमिद् भद्रा कृणवत् सरस्वत्यर्कवारी चेतति वाजिनीवती ।

गृणाना जमदग्निवत् स्तुवाना च वसिष्ठवत् ३ १०८०

॥ १९३ ॥ (ऋ० १०।१७।१-२, ७-९)

देवश्रवा यामायनः । १-२ सरण्यूः, ७-९ सरस्वती । त्रिष्टुप् ।

त्वष्टा दुहित्रे बहंतु कृणोतीतीदं विश्वं भुवनं समैति ।

यमस्य माता पर्युह्यमाना महो जाया विवस्वतो ननाश १

अपांगूहन्नमृतां मर्त्येभ्यः कृत्वी सर्वर्णामददुर्विवस्वते ।

उताश्विनावभरद् यत् तदासीदजहादु द्वा मिथुना सरण्यूः २

सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने ।

सरस्वतीं सुकृतो अह्वयन्त सरस्वती दाशुषे वार्यं दात् ७

सरस्वति या सरथं ययार्थं स्वधाभिर्देवि पितृभिर्मदन्ती ।

आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयस्वाऽनमीवा इष आ धेह्यस्मे ८

सरस्वतीं यां पितरो हवन्ते दक्षिणा यज्ञमभिनक्षमाणाः ।

सहस्रार्धमिळो अत्र भागं रायस्पोषं यजमानेषु धेहि ९ १०८१

॥ १९४ ॥ (अथर्व० ७।१०।१)

शौनकः । सरस्वती । त्रिष्टुप् ।

यस्ते स्तनः शशयुर्यो मयोभूर्यः सुम्रयुः सुहवो यः सुदत्रः ।

येन विश्वा पृष्यसि वार्याणि सरस्वति तमिह धातवे कः १ १०८२

॥ १९५ ॥ (अथर्व० ७।११।१)

शौनकः । सरस्वती । त्रिष्टुप् ।

यस्ते पृथु स्तनयिलुर्ग ऋवो दैवः केतुर्विश्वमाभूवतीदम् ।

मा नो वधीर्विद्युता देव सस्यं भोत वधी रश्मिभिः सूर्यस्य १ १०८३

॥ १९६ ॥ (अथर्व० ७।५७।१-२)

वामदेवः । सरस्वती । जगती ।

यदाशसा वदतो मे विचुक्षुभे यद् याचमानस्य चरतो जनां अनु ।

यदात्मनि तन्वो मे विरिष्टं सरस्वती तदा पृणद् घृतेन

सप्त क्षरन्ति शिशवे मरुत्वते पित्रे पुत्रासो अप्यवीवृतन्नृतानि ।

उभे इदस्योभे अस्य राजत उभे यतैते उभे अस्य पुष्यतः

॥ १९७ ॥ (अथर्व० ७।६८।१-३)

शन्तातिः । सरस्वती । १ अनुष्टुप्, २ त्रिष्टुप्, ३ गायत्री ।

सरस्वति व्रतेषु ते दिव्येषु देवि धामसु । जुषस्व हव्यमाहुतं प्रजां देवि सरस्व नः १ १०२०

इदं ते हव्यं घृतवत् सरस्वतीदं पितॄणां हविरास्यं यत् ।

इमानि त उदिता शंतमानि तेभिर्वयं मधुमन्तः स्याम

श्रिया नः शंतमा भव सुमृडीका सरस्वति । मा ते युयोम संदशः

॥ १९८ ॥ (वा० य० १०।१-४, ६, १९)

(आपः ।)

यो देवा मधुमतीरगृभ्णन्नूर्जस्वती राजम्बुश्रितानाः ।

यामिर्वावरुणावभ्यषिञ्चन् यामिरिन्द्रमनयन्नत्यरातीः

वृष्ण ऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृष्ण ऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रमुष्मै देहि वृषसेनोऽसि

वृषा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृषसेनोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रमुष्मै देहि

वृषेत् स राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहार्थेत् स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रमुष्मै दत्तौजस्वती स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं

दत्त स्वाहौजस्वती स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रमुष्मै दत्तापः परिव्राहिणीं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहापः

पतिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहापां पतिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रमुष्मै देहि ३ १०९५

सूर्यत्वचस स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा सूर्यत्वचस स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रमुष्मै दत्त सूर्यवर्चस स्थ

सूर्यवर्चस स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा सूर्यवर्चस स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रमुष्मै दत्त मान्दा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त

मान्दा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रमुष्मै दत्त व्रजक्षितं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा व्रजक्षितं स्थ

व्रजक्षितं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा व्रजक्षितं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रमुष्मै दत्त

शकवरी स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा शकवरी स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रमुष्मै दत्त

शकवरी स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा शकवरी स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रमुष्मै दत्त जनभृतं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा

जनभृतं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा जनभृतं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रमुष्मै दत्त

जनभृतं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा जनभृतं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रमुष्मै दत्त

जनभृतं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा जनभृतं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रमुष्मै दत्त

जनभृतं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा जनभृतं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रमुष्मै दत्त

जनभृतं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रमुष्मै दत्त विश्वभृतं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा विश्वभृतं स्थ राष्ट्रदा
 राष्ट्रमुष्मै दत्तापः स्वराजं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रमुष्मै दत्त । मधुमतीर्मधुमतीभिः पृच्यन्तां महि क्षत्रं
 क्षत्रियाय वन्वाना अनाधृष्टाः सीदत सहौजसो महि क्षत्रं क्षत्रियाय दधतीः ४

सवितुर्वैः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।

अनिभृष्टमसि वाचो बन्धुस्तपोजाः सोमस्य दात्रमसि स्वाहा राजस्वः ६

प्र पर्वतस्य वृषभस्य पृष्ठान्नावश्वरन्ति स्वसिचं इयानाः ।

ता आववृत्रन्नधरागुदक्ता अहिं बुध्न्यमनु रीयमाणाः १९ १०९८

॥ १९९ ॥ (वा० य० ११।३८)

(आपः ।)

अपो देवीरुपसृज मधुमतीरयक्ष्माय प्रजाभ्यः ।

तासामास्थानादुज्जिहतामोषधयः सुपिप्पलाः ३८ १०९९

॥ २०० ॥ (वा० य० १२।३५, ५५)

(आपः ।)

आपो देवीः प्रतिगृभ्णीत भस्मैतत् स्योने कृणुध्वः सुरभा उं लोके ।

तस्मै नमन्तां जनयः सुपत्नीर्मातेवं पुत्रं विभृताप्स्वेनत् ३५ ११००

ता अस्य स्रददोहसः सोमः श्रीणन्ति पृश्नयः ।

जन्मन् देवानां विशस्त्रिष्वा रौचने दिवः ५५ ११०१

॥ २०१ ॥ (वा० य० १४।८)

(आपः ।)

अपः पिन्वौषधीर्जिन्व द्विपादव चतुष्पात् पाहि दिवो वृष्टिमेरय ८ ११०२

॥ २०२ ॥ (वा० य० २०।१८-२०, २२-२३)

(आपः ।)

यदापो अघ्न्या इति वरुणेति शपांमहे ततो वरुण नो मुञ्च ।

अवभृथ निचुम्पुण निचेरुरसि निचुम्पुणः ।

अव देवैर्देवकृतमेनोऽयक्षयव मर्त्यैर्मर्त्यकृतं पुरुराव्णो देव रिषस्पाहि १८

समुद्रे ते हृदयमप्स्वन्तः सं त्वा विशन्त्वोषधीरुतापः ।

सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः १९

द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव ।

पूतं पवित्रेणैवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनेसः २० ११०५

जलचक्रिका । १०९६-११२१]

थ राष्ट्रदा
महि क्षत्रं
४

अथो अद्यान्वचारिषु रसेन समसृक्षमहि ।

तस्मान्न आगमं तं मा सः सृज वर्चसा प्रजया च धनेन च
एषोऽस्थेधिषीमहि समिदंसि तेजोऽसि तेजो मयि धेहि

२२

२३ १०१७

अन्नादिकम् । (११०८-१३३१)

॥ २०३ ॥ (ऋ० १।१८७।१-११)

अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अन्नं । १ अनुष्टुप्गर्भा उष्णिक्; ३, ५-७, ११ अनुष्टुप्; (११ बृहती वा);
२, ४, ८-१० गायत्री ।

९ १०९८

पितु स्तोत्रं महो धर्माणं तविषीम् । यस्य त्रितो व्योजसा वृत्रं विपर्वमर्दयत्+ १

सादो पितो मधो पितो वयं त्वा ववृमहे । अस्माकमविता भव २

नः पितवा चर शिवः शिवाभिरूतिभिः । मयोभुरद्विषेण्यः सखा सुशेवो अर्द्धयाः ३ १११०

८ १०९९

सु त्वे पितो रसा रजांस्यनु विष्टिताः । दिवि वाता इव श्रिताः ४

सु त्वे पितो ददत स्तव स्वादिष्ट ते पितो । प्रस्वाद्भानो रसानां तुविग्रीवा इवेरते ५

ते पितो महानां देवानां मनो हितम् । अकारि चारुकेतुना तवाहिमवसावधीत् ६

५ ११००

रुरो पितो अर्जगन् विवस्व पर्वतानाम् । अत्रा चिन्नो मधो पितो ऽरं भूक्षायं गम्याः ७

रुगमोषीनां परिशमारिशमहे । वातापे पीव इद् भव ८ १११५

५ ११०१

सु ते सोम गवाशिरो यवाशिरो भजामहे । वातापे पीव इद् भव ९

सम ओषधे भव पीवो वृक उदारथिः । वातापे पीव इद् भव १०

८ ११०२

ता वयं पितो वचोभिर्गावो न हव्या सुषूदिम ।

विमस्वा सधमाद मस्मभ्यं त्वा सधमादम् ११ १११८

॥ २०४ ॥ (अथर्व० ६।७१।१-३)

ब्रह्मा । अग्निः, ३ वैश्वानरः, देवाः (अन्नम्) । जगती, ३ त्रिष्टुप् ।

यदन्नमग्निं बहुधा विरूपं हिरण्यमश्वमुत गामजामविम् ।

यदेव किं च प्रतिजग्रहाहमग्निष्टदोता सुहुतं कृणोत १

यन्मा हुतमहुतमाजगाम दुत्तं पितृभिरनुमतं मनुष्यैः ।

यस्मान्मे मनु उदिव रारजीत्यग्निष्टदोता सुहुतं कृणोत २

यदन्नमद्वयनृतेन देवा दास्यन्नदास्यन्नत सैगुणामि ।

वैश्वानरस्य महतो महिम्ना शिवं मध्यं मधुमदस्त्वन्नम् ३ ११२१

१० ११०५

१. १. १. ८७. १; वा० य० ३४, ७; काण्व ३३, २ ।

॥ २०५ ॥ (अथर्व० ७।५८।१-२)

कौरुपथिः । इन्द्रावरुणौ (अन्नम्) । १ जगती, २ त्रिष्टुप् ।

इन्द्रावरुणा सुतपाविमं सुतं सोमं पिवतं मध्वं धृतव्रतौ ।

युवो रथो अध्वरो देववीतये प्रति स्वसंरमुषं यातु पीतये १

इन्द्रावरुणा मधुमत्तमस्य वृष्णः सोमस्य वृष्णा वृषेथाम् ।

इदं वामन्धः परिपिक्तमासद्यास्मिन् बर्हिषि मादयेथाम् २ ११२३

॥ २०६ ॥ (अथर्व० ६।१४२।१-३)

विश्वामित्रः । वायुः (अन्नसमृद्धिः) । अनुष्टुप् ।

उच्छ्रयस्व बहुर्भुव स्वेन महसा यव । मृणीहि विश्वा पात्राणि मा त्वा दिव्याशनिर्वधीत् १

आशृण्वन्तं यव देवं यत्र त्वाच्छावदामसि । तदुच्छ्रयस्व द्यौरिव समुद्र इवैध्यक्षितः २ ११२५

अक्षितास्त उपसदोऽक्षिताः सन्तु राशयः । पूणन्तो अक्षिताः सन्त्वत्तारः सन्त्वक्षिताः ३ ११२६

॥ २०७ ॥ (अथर्व० ११।३।१-५६)

[प्रथमः पर्यायः । १-३१]

अथर्वा । ओदनः (वार्हस्पत्यौदनः) ।

१, १४ आसुरी गायत्री; २ त्रिपदा समविषमा गायत्री; ३, ६, १० आसुरी पङ्क्तिः;

४, ८ साम्यनुष्टुप्; ५, १३, १५, २५ साम्यगुणिक; ७, १९-२२ प्राजापत्या-

ऽनुष्टुप्; ९, १७-१८ आसुर्यनुष्टुप्; ११ भुरिगार्च्यनुष्टुप्; १२ याजुषी

जगती; १६, २३ आसुरी बृहती; २४ त्रिपदा प्राजापत्या बृहती;

२६ आर्च्युणिक; २७-२९ साम्नी बृहती (२८-२९ भुरिक्);

३० याजुषी त्रिष्टुप्, ३१ अल्पशः पङ्क्तिरुत याजुषी ।

तस्यौदनस्य बृहस्पतिः शिरो ब्रह्म मुखम् १

द्यावापृथिवी श्रोत्रे सूर्याचन्द्रमसावर्क्षिणी सप्तऋषयः प्राणापानाः २

चक्षुर्मुसलं कामं उल्लखलम् । ३ । दितिः शूर्पमदितिः शूर्पग्राही वातोऽपाविनक् ४ ११३०

अश्वाः कणा गावस्तण्डुला मशकास्तुषाः ५

कव्रुं फलीकरणाः शरोऽभ्रम् ६

श्याममयोऽस्य मांसानि लोहितमस्य लोहितम् ७

त्रपु भस्म हरितं वर्णः पुष्करमस्य गन्धः ८

खलः पात्रं स्फयावंसावीपे अनुकये । ९ । आन्त्राणि जत्रवो गुदा वरत्राः १०

इयमेव पृथिवी कुम्भी भवति राध्यमानस्यौदनस्य द्यौरपिधानम् ११

सीताः पर्शवः सिकता ऊवध्यम् । १२ । ऋतं हस्तावनेजनं कुल्योपिसेचनम् १३ ११३१

अक्षादिकम् ।

अध्यायः ११२२-११५८]

१

२ ११२३

१

२ ११२५

३ ११२६

१

२

४ ११२७

५

६

७

८

९

१०

११

१२

क्रुवा कुम्भ्यधिहितात्विज्येन प्रेषिता

१४ ११४०

ब्रह्मणा परिगृहीता साम्ना पर्युढा । १५ । बृहदायवनं रथन्तरं दर्विः

१६

क्रुतवः पक्तरं आर्तवाः समिन्धते । १७ । चरुं पञ्चविलमुखं घर्मोऽभीन्धे

१८

ओदुनेन यज्ञवचः सर्वे लोकाः समाप्याः

१९ ११४५

यस्मिन्समुद्रो द्यौर्भूमिस्त्रयोऽवरपरं श्रिताः

२०

यस्य देवा अकल्पन्तोच्छिष्टे षडशीतयः

२१

तं त्वौदनस्य पृच्छामि यो अस्य महिमा महान्

२२

स य ओदनस्य महिमानं विद्यात्

२३

नाल्प इति ब्रूयन्नानुपसेचन इति नेदं च किं चेति

२४ ११५०

यार्वाद् दाताभिमनस्येत तन्नाति वदेत्

२५

ब्रह्मवादिनो वदन्ति परांश्चमोदनं प्राशीः प्रत्यश्चाऽमिति

२६

त्वमोदनं प्राशीःस्त्वामोदनाऽ इति

२७

परांश्च चैनं प्राशीः प्राणास्त्वा हास्यन्तीत्येनमाह

२८

प्रत्यश्च चैनं प्राशीरपानास्त्वा हास्यन्तीत्येनमाह

२९ ११५५

नैवाहमोदनं न मामोदनः । ३० । ओदन एवौदनं प्राशीत्

३१ ११५७

[द्वितीयः पर्यायः । ३२-४९]

मन्त्रोक्ताः । ३२, ३८, ४१ (प्रथमा), ३२-४९ (सप्तमी) साम्नी त्रिष्टुप्; ३२, ३५, ४२ (द्वितीया),

३२-४९ (तृतीया), ३३-३४, ४४-४८ (पञ्चमी) एकपदाऽऽसुरी गायत्री; ३२, ४१, ४३, ४७ दैवी

जगती; ३८, ४४, ४६ (द्वि०), ३२, ३५-४३, ४९ (पञ्चमी) एकपदाऽऽसुर्यनुष्टुप्; ३२-४९ (षष्ठी)

साम्यनुष्टुप्; ३३-४९ (प्र०) आर्च्यनुष्टुप्; ३७ (प्र०) साम्नी पङ्क्तिः; ३३, ३६, ४०,

४७-४८ (द्वि०) आसुरी जगती; ३४, ३७, ४१, ४३, ४५ (द्वि०) आसुरी पङ्क्तिः;

३४ (चतुर्थी) आसुरी त्रिष्टुप्; ३५, ४३, ४८ (च०) याजुषी गायत्री;

३६-३७, ४० (च०) दैवी पङ्क्तिः; ३८-३९ (च०) प्राजापत्या गायत्री;

३९ (द्वि०) आसुर्युष्णिक्; ४२, ४५, ४९ (चतुर्थी) दैवी त्रिष्टुप्;

४९ (द्वि०) एकपदा भुरिक्साम्नी बृहती ।

ततश्चैनमन्येन शीर्ष्णा प्राशीर्येन चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्रन् । १ ।

ज्येष्ठतस्ते प्रजा मरिष्यतीत्येनमाह । २ ।

तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यश्चम् । ३ ।

बृहस्पतिना शीर्ष्णा । ४ । तेनैनं प्राशिषं तेनैनमजीगमम् । ५ ।

एष वा ओदनः सर्वाङ्गः सर्वपुरुः सर्वतनूः । ६ ।

सर्वाङ्ग एव सर्वपुरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद । ७ ।

३२ ११५८

ततश्चैनमन्याभ्यां श्रोत्राभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् । १।
 वधिरो भविष्यसीत्येनमाह । २। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् । ३।
 द्यावापृथिवीभ्यां श्रोत्राभ्याम् । ४। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम् । ५।
 एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः । ६।
 सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद । ७। ३३

ततश्चैनमन्याभ्यामक्षीभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् । १।
 अन्धो भविष्यसीत्येनमाह । २। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् । ३।
 सूर्याचन्द्रमसाभ्यामक्षीभ्याम् । ४। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम् । ५।
 एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः । ६।
 सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद । ७। ३४ ११६०

ततश्चैनमन्येन मुखेन प्राशीर्येन चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् । १।
 मुखतस्ते प्रजा मरिष्यतीत्येनमाह । २। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् । ३।
 ब्रह्मणा मुखेन । ४। तेनैनं प्राशिषं तेनैनमजीगमम् । ५।
 एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः । ६।
 सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद । ७। ३५

ततश्चैनमन्यया जिह्वया प्राशीर्यया चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् । १।
 जिह्वा तै मरिष्यतीत्येनमाह । २। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् । ३।
 अग्नेजिह्वया । ४। तयैनं प्राशिषं तयैनमजीगमम् । ५।
 एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः । ६।
 सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद । ७। ३६

ततश्चैनमन्यैर्दन्तैः प्राशीर्यैश्चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् । १।
 दन्तास्ते श्तस्यन्तीत्येनमाह । २। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् । ३।
 क्रतुभिर्दन्तैः । ४। तैरेनं प्राशिषं तैरेनमजीगमम् । ५।
 एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः । ६।
 सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद । ७। ३७ ११६१

ततश्चैनमन्यैः प्राणापानैः प्राशीर्यैश्चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् । १।
 प्राणापानास्त्वा हास्यन्तीत्येनमाह । २। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् । ३।

अथ ११५९-११६९]

सप्तविंशतिः प्राणापानैः । ४। तेनैतं प्राशिषं तेनैतमजीगमम् । ५।

एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपुरुः सर्वतनूः । ६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपुरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद । ७।

३८

ततश्चैनमन्येन व्यचसा प्राशीर्येन चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् । १।

राजयक्ष्मस्त्वा हनिष्यतीत्येनमाह । २। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् । ३।

अन्तरिक्षेण व्यचसा । ४। तेनैतं प्राशिषं तेनैतमजीगमम् । ५।

एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपुरुः सर्वतनूः । ६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपुरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद । ७।

३९ ११६५

ततश्चैनमन्येन पृष्ठेन प्राशीर्येन चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् । १।

विद्युत् त्वा हनिष्यतीत्येनमाह । २। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् । ३।

दिवा पृष्ठेन । ४। तेनैतं प्राशिषं तेनैतमजीगमम् । ५।

एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपुरुः सर्वतनूः । ६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपुरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद । ७।

४०

ततश्चैनमन्येनोरसा प्राशीर्येन चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् । १।

कृष्या न रात्स्यसीत्येनमाह । २। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् । ३।

पृथिव्योरसा । ४। तेनैतं प्राशिषं तेनैतमजीगमम् । ५।

एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपुरुः सर्वतनूः । ६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपुरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद । ७।

४१

ततश्चैनमन्येनोदरेण प्राशीर्येन चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् । १।

उदरदारस्त्वा हनिष्यतीत्येनमाह । २। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् । ३।

सुत्येनोदरेण । ४। तेनैतं प्राशिषं तेनैतमजीगमम् । ५।

एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपुरुः सर्वतनूः । ६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपुरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद । ७।

४२ ११६८

ततश्चैनमन्येन वस्तिना प्राशीर्येन चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् । १।

असु मरिष्यसीत्येनमाह । २। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् । ३।

समुद्रेण वस्तिना । ४। तेनैतं प्राशिषं तेनैतमजीगमम् । ५।

एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपुरुः सर्वतनूः । ६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपुरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद । ७।

४३

ततश्चैनमन्याभ्यामुरुभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् । १।

ऊरू ते मरिष्यत इत्येनमाह । २। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् । ३।

मित्रावरुणयोरुरुभ्याम् । ४। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम् । ५।

एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपुरुः सर्वतनूः । ६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपुरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद । ७।

४४ ११७०

ततश्चैनमन्याभ्यामष्टीवद्भ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् । १।

सामो भविष्यसीत्येनमाह । २। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् । ३।

त्वष्टुरष्टीवद्भ्याम् । ४। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम् । ५।

एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपुरुः सर्वतनूः । ६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपुरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद । ७।

४५

ततश्चैनमन्याभ्यां पादाभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् । १।

बहुचारी भविष्यसीत्येनमाह । २। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् । ३।

अश्विनोः पादाभ्याम् । ४। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम् । ५।

एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपुरुः सर्वतनूः । ६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपुरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद । ७।

४६

ततश्चैनमन्याभ्यां प्रपदाभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् । १।

सर्पस्त्वा हनिष्यतीत्येनमाह । २। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् । ३।

सवितुः प्रपदाभ्याम् । ४। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम् । ५।

एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपुरुः सर्वतनूः । ६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपुरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद । ७।

४७

ततश्चैनमन्याभ्यां हस्ताभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् । १।

ब्राह्मणं हनिष्यसीत्येनमाह । २। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् । ३।

ऋतस्य हस्ताभ्याम् । ४। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम् । ५।

एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपुरुः सर्वतनूः । ६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपुरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद । ७।

४८ ११७१

अथः ११६९-११८४]

ततश्चैनमन्यया प्रतिष्ठया प्राशीर्यया चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् । १।

अप्रतिष्ठानोऽनायतनो मरिष्यसीत्येनमाह । २।

तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यश्चम् । ३।

सत्ये प्रतिष्ठाय । ४। तयैनं प्राशिषं तयैनमजीगमम् । ५।

एष वा औदुनः सर्वाङ्गः सर्वपुरुः सर्वतनूः । ६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपुरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद । ७।

४९ ११७५

[तृतीयः पर्यायः । ५०-५६]

मन्त्रोक्ताः । ५० आसुर्यनुष्टुप्; ५१ आच्युष्णिक्; ५२ त्रिपदा भुरिक् साम्नी
त्रिष्टुप्; ५३ आसुरी बृहती; ५४ द्विपदा भुरिक् साम्नी बृहती; ५५ साम्युष्णिक्;
५६ प्राजापत्या बृहती ।

एतद् वै ब्रध्नस्य विष्टपं यदौदुनः

ब्रध्नलोको भवति ब्रध्नस्य विष्टपि श्रयते य एवं वेद

एतस्माद् वा औदुनात् त्रयस्त्रिंशतं लोकान् निरमिमीत प्रजापतिः

तेषां प्रज्ञानाय यज्ञमसृजत

स य एवं विदुष उपद्रष्टा भवति प्राणं रुणद्धि

न च प्राणं रुणद्धि सर्वज्यानि जीयते

न च सर्वज्यानि जीयते पुरैनं जरसः प्राणो जहाति

५०

५१

५२

५३

५४ ११८०

५५

५६ ११८२

॥ २०८ ॥ (अथर्व० ९.५१-२८)

श्रुः । पञ्चौदनोऽजः; मन्त्रोक्ताः । त्रिष्टुप्; ३ चतुष्पदा पुरोऽतिशकरी जगती, ४, १०
जगती; १४, १७, २७-३० अनुष्टुप् (३० ककुम्भती); १६ त्रिपदाऽनुष्टुप्; १८, ३७ त्रिपदा
विराड् गायत्री; २३ पुर उष्णिक्; २४ पञ्चपदाऽनुष्टुबुष्णिग्गर्भोपरिष्ठाद्विराड् जगती;
२०-२२, २६ पञ्चपदाऽनुष्टुबुष्णिग्गर्भोपरिष्ठाद्विराड् भुरिक्; ३१ सप्तपदाऽष्टिः;
३२-३५ दशपदा प्रकृतिः; ३६ दशपदाऽऽकृतिः; ३८ एकावसाना
द्विपदा साम्नी त्रिष्टुप् ।

आ नैतमा रभस्व सुकृतां लोकमपि गच्छतु प्रजानन् ।

तीर्त्वा तमांसि बहुधा महान्त्यजो नाकमा क्रमतां तृतीयम् ।

इन्द्राय भागं परि त्वा नयाम्यस्मिन् यज्ञे यजमानाय सूरिम् ।

११ दे. [आयुर्वेद०]

१

२ ११८४

प्र पदोऽव नेनिग्धि दुश्चरितं यच्चचारं शुद्धैः शैफैरा क्रमतां प्रजानन् ।
 तीर्त्वा तमांसि बहुधा विपश्यन्नजो नाकमा क्रमतां तृतीयम् ३ ११८५
 अनुं च्छद्य श्यामेन त्वचमेतां विशस्तर्यथापूर्वसिना माभि मैस्थाः ।
 माभि दुहः परुशः कल्पयैनं तृतीये नाके अधि वि श्रयैनम् ४
 ऋचा कुम्भीमध्यग्रौ श्रयास्या सिञ्चोदकमव धेहेनम् ।
 पर्याधत्ताग्निना शमितारः शृतो गच्छतु सुकृतां यत्र लोकः ५
 उत् क्रामातः परि चेदतस्तस्माच्चरोरधि नाकं तृतीयम् ।
 अग्नेरग्निरधि सं बभूविथ ज्योतिष्मन्तमभि लोकं जयैतम् ६
 अजो अग्निरजमु ज्योतिराहुरजं जीवता ब्रह्मणे देयमाहुः ।
 अजस्तमांस्यप हन्ति दूरमस्मिन्लोके श्रद्धानेन दत्तः ७
 पञ्चौदनः पञ्चधा वि क्रमतामाक्रंस्यमानस्त्रीणि ज्योतींषि ।
 ईजानानां सुकृतां प्रेहि मध्यं तृतीये नाके अधि वि श्रयस्व ८ ११९०
 अजा रोह सुकृतां यत्र लोकः शरभो न चत्तोऽति दुर्गाण्येषः ।
 पञ्चौदनो ब्रह्मणे दीयमानः स दातारं तृप्त्या तर्पयाति ९
 अजस्त्रिनाके त्रिदिवे त्रिपृष्ठे नाकस्य पृष्ठे ददिवान्सं दधाति ।
 पञ्चौदनो ब्रह्मणे दीयमानो विश्वरूपा धेनुः कामदुघास्येका १०
 एतद् वो ज्योतिः पितरस्तृतीयं पञ्चौदनं ब्रह्मणेऽजं ददाति ।
 अजस्तमांस्यप हन्ति दूरमस्मिन्लोके श्रद्धानेन दत्तः ११
 ईजानानां सुकृतां लोकमीप्सन् पञ्चौदनं ब्रह्मणेऽजं ददाति ।
 स व्याप्तिमभि लोकं जयैतं शिवोऽस्मभ्यं प्रतिगृहीतो अस्तु १२
 अजो ह्यग्निरजनिष्ट शोकाद् विप्रो विप्रस्य सहसो विपश्चित् ।
 इष्टं पूर्तमभिपूर्तं वर्षट्कृतं तद् देवा क्रतुशः कल्पयन्तु १३ ११९५
 अमोतं वासो दद्याद्विरण्यमपि दक्षिणाम् ।
 तथा लोकान्तसमाप्नोति ये दिव्या ये च पार्थिवाः १४
 एतास्त्वाजोप यन्तु धाराः सोम्या देवीर्धृतपृष्ठा मधुश्रुतः ।
 स्तभान प्रथिवीमुत द्यां नाकस्य पृष्ठेऽधि सप्तरश्मौ १५
 अजोऽस्यजं स्वर्गोऽसि त्वया लोकमङ्गिरसः प्राजानन् । तं लोकं पुण्यं प्र ज्ञैषम् १६
 येना सहस्रं वहसि येनाग्ने सर्ववेदसम् । तेनेमं यज्ञं नो वह स्व दिवेषु गन्तवे १७ ११९९

संज्ञा: ११८५-१२१४]

आदिकम् ।

अजः पक्कः स्वर्गे लोके दधाति पञ्चौदनो निर्ऋतिं बाधमानः ।

तेन लोकान्स्वर्यवतो जयेम

१८ १२००

यं ब्राह्मणे निदुधे यं च विश्वु या विप्रुष ओदनानामजस्य ।

सर्वं तदग्रे सुकृतस्य लोके जानीतान्नः संगमने पथीनाम्

१९

अजो वा इदमग्रे व्यक्रिमतु तस्योर इयमभवद् द्यौः पृष्ठम् ।

अन्तरिक्षं मध्यं दिशः पार्श्वे समुद्रौ कुक्षी

२०

सत्यं चतुर् च चक्षुषी विश्वं सत्यं श्रद्धा प्राणो विराट् शिरः ।

एष वा अपरिमितो यज्ञो यदुजः पञ्चौदनः

२१

अपरिमितमेव यज्ञमाप्नोत्यपरिमितं लोकमव रुन्धे ।

योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति

२२

नास्यास्थीनि भिन्द्यान्न मज्ज्ञो निर्धयेत् । सर्वमेनं समादायेदमिदं प्र वैशयेत्

२३ १२०५

इदमिदमेवास्य रूपं भवति तेनैनं सं गमयति ।

इषं मह ऊर्जमसौ दुहे योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति

२४

पञ्च रुक्मा पञ्च नवानि वस्त्रा पञ्चास्मै धेनवः कामदुघा भवन्ति ।

योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति

२५

पञ्च रुक्मा ज्योतिरस्मै भवन्ति वर्म वासांसि तन्वे भवन्ति ।

स्वर्गं लोकमश्नुते योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति

२६

या पूर्वं पतिं विच्चाथान्यं विन्दतेऽपरम् । पञ्चौदनं च तावजं ददातो न वि योषतः २७

समानलोको भवति पुनर्भुवापरः पतिः । योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति २८ १२१०

अनुपूर्ववत्सां धेनुमन्द्वाहंसुपवर्हेणम् । वासो हिरण्यं दुच्चा ते यन्ति दिवमुत्तमाम् २९

आत्मानं पितरं पुत्रं पौत्रं पितामहम् । जायां जनित्रीं मातरं ये प्रियास्तानुप ह्वये ३०

यो वै नैदाघं नामर्तु वेद । एष वै नैदाघो नामर्तुर्यदुजः पञ्चौदनः ।

निरेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना ।

योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति

३१

यो वै कुर्वन्तं नामर्तु वेद । कुर्वतीकुर्वतीमेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियमा दत्ते ।

एष वै कुर्वन्नामर्तुर्यदुजः पञ्चौदनः ।

निरेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना ।

योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति

३२ १२१४

यो वै संयन्तं नामर्तु वेद । संयतीसंयतीमेवाप्रियस्य आर्तव्यस्य श्रियमा दत्ते ।

एष वै संयन्नामर्तुर्यदुजः पञ्चौदनः ।

निरेवाप्रियस्य आर्तव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना ।

योऽंजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति

३३ १११५

यो वै पिन्वन्तं नामर्तु वेद । पिन्वतीपिन्वतीमेवाप्रियस्य आर्तव्यस्य श्रियमा दत्ते ।

एष वै पिन्वन्नामर्तुर्यदुजः पञ्चौदनः ।

निरेवाप्रियस्य आर्तव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना ।

योऽंजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति

३४

यो वा उद्यन्तं नामर्तु वेद । उद्यतीमुद्यतीमेवाप्रियस्य आर्तव्यस्य श्रियमा दत्ते ।

एष वा उद्यन्नामर्तुर्यदुजः पञ्चौदनः ।

निरेवाप्रियस्य आर्तव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना ।

योऽंजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति

३५

यो वा अभिभुवं नामर्तु वेद ।

अभिभवन्तीमभिवन्तीमेवाप्रियस्य आर्तव्यस्य श्रियमा दत्ते ।

एष वा अभिभूर्नामर्तुर्यदुजः पञ्चौदनः ।

निरेवाप्रियस्य आर्तव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना ।

योऽंजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति

३६

अंजं च पचत पञ्च चौदनान् ।

सर्वा दिशः संमनसः सध्रीचीः सान्तर्देशाः प्रति गृह्णन्तु त एतम्

३७

तास्ते रक्षन्तु तत्र तुभ्यमेतं ताभ्य आज्यं हविरिदं जुहोमि

३८ १११०

॥ २०९ ॥ (अथर्व० ४।३४।१-८)

अथर्वा । ब्रह्मौदनम् । त्रिष्टुप्, ४ उत्तमा भुरिक्, ५ ज्यवसाना सप्तपदा कृतिः;

६ पञ्चपदातिशकरी, ७ भुरिक् शकरी, ८ जगती ।

ब्रह्मास्य शीर्षं बृहदस्य पृष्ठं वामदेव्यमुदरमोदुनस्य

छन्दांसि पक्षौ मुखमस्य सत्यं विष्टारी जातस्तपसोऽधि यज्ञः

१

अनस्थाः पृताः पवनेन शुद्धाः शुचयः शुचिमपि यन्ति लोकम् ।

नैषां शिश्रं प्र दहति जातवेदाः स्वर्गे लोके बहु स्त्रैणमेवाम्

२

विष्टारिणमोदुनं ये पचन्ति नैनानवर्तिः सचते कदा चन ।

आस्ते यम उप याति देवान्सं गन्धर्वैर्मदते सोम्येभिः

३ १११३

१११५-११३१]

शादिकम् ।

विष्टारिणमोदुनं ये पचन्ति नैनान् यमः परिं मुष्णाति रेतः ।

रथी ह भूत्वा रथयानं ईयते पक्षी ह भूत्वाति दिवः समेति

४

एष यज्ञानां विततो वहिष्ठो विष्टारिणं पक्त्वा दिवमा विवेश ।

आण्डीकं कुष्ठं सं तनोति विसं शालूकं शफको मुलाली ।

एतास्त्वा धारा उप यन्तु सर्वाः स्वर्गे लोके मधुमत् पिन्वमाना

उप त्वा तिष्ठन्तु पुष्करिणीः समन्ताः

५ १११५

वृत्तं मधुकूलाः सुरोदकाः क्षीरेण पूर्णा उदुकेन दुधा ।

एतास्त्वा धारा उप यन्तु सर्वाः स्वर्गे लोके मधुमत् पिन्वमाना

उप त्वा तिष्ठन्तु पुष्करिणीः समन्ताः

६

चतुराः कुम्भाश्चतुर्धा ददामि क्षीरेण पूर्णा उदुकेन दुधा ।

एतास्त्वा धारा उप यन्तु सर्वाः स्वर्गे लोके मधुमत् पिन्वमाना

उप त्वा तिष्ठन्तु पुष्करिणीः समन्ताः

७

इममोदुनं नि दधे ब्राह्मणेषु विष्टारिणं लोकजितं स्वर्गम् ।

स मे मा क्षेष्ट स्वधया पिन्वमानो विश्वरूपा धेनुः कामदुधा मे अस्तु

८ ११२८

॥ २१० ॥ (अथर्व० ११।१।१-३७)

आ. ओदनः (ब्रह्मौदनम्) । त्रिष्टुप्; १ अनुष्टुप्गर्भा भुरिक्पङ्क्तिः; २ बृहतीगर्भा विराट्; ३ चतुष्पदा

शाकरगर्भा जगती; ४, १५-१६, २१, ३१ भुरिक्; ५ बृहतीगर्भा विराट्; ६ उष्णिक्; ८ विराट् गायत्री;

१ शाकरातिजागतगर्भा जगती; १० विराट् पुरोऽतिजगती विराड्जगती; ११ जगती;

१७, २१, २४-२६, ३७ विराट् जगती; १८ अतिजागतगर्भा परातिजागता विराड्जगती;

२० अतिजागतगर्भा परा शाकरा चतुष्पदा भुरिजगती;

२७ अतिजागतगर्भा जगती; ३१ चतुष्पदा

ककुम्मत्युष्णिक्; ३६ पुरोविराट्

(व्याघ्रादिष्ववगन्तव्या)

अये जायस्वादितिर्नाथितेयं ब्रह्मौदनं पंचति पुत्रकामा ।

सप्तकृपयो भूतकृतस्ते त्वा मन्थन्तु प्रजया सहैह

कृणुत धूमं वृषणः सखायोऽद्रोघाविता वाचमच्छं ।

अयमग्निः प्रतनाषाट् सुवीरो येन देवा असहन्त दस्युन्

अग्नेऽर्जनिष्ठा महते वीर्यायि ब्रह्मौदुनाय पक्तवे जातवेदः ।

सप्तकृपयो भूतकृतस्ते त्वाजीजनन्स्यै रयिं सर्ववीरं नि यच्छ

१

२ ११३०

३ ११३१

समिद्धो अग्ने समिधा समिध्यस्व विद्वान् देवान् यज्ञियाँ एह वंशः ।
 तेभ्यो हविः श्रपयं जातवेद उत्तमं नाकमधि रोहयेमम् ४
 प्रेधा भागो निहितो यः पुरा वो देवानां पितृणां मर्त्यानाम् ।
 अंशान् जानीध्वं वि भजामि तान् वो यो देवानां स इमां पारयाति ५
 अग्ने सहस्वानभिभूरभीदसि नीचो न्युज्ज द्विषतः सपत्नान् ।
 इयं मात्रा मीयमाना मिता च सजातांस्तै बलिहृतः कृणोतु ६
 साकं सजातैः पर्यसा सहैध्युदुज्जैनां महते वीर्यायि ।
 ऊर्ध्वो नाकस्याधि रोह विष्टपं स्वर्गो लोक इति यं वदन्ति ७ ११३१
 इयं मही प्रति गृह्णातु चर्म पृथिवी देवी सुमनस्यमाना ।
 अथ गच्छेम सुकृतस्य लोकम् ८
 एतौ ग्रावाणौ सयुजा युङ्ग्धि चर्मणि निर्भिन्ध्यंश्न यजमानाय साधु ।
 अवघ्नती नि जहि य इमां पृतन्यव ऊर्ध्वं प्रजामुद्धरन्त्युदह ९
 गृहाण ग्रावाणौ सकृतौ वीर हस्त आ तै देवा यज्ञियां यज्ञमगुः ।
 त्रयो वरा यतमांस्त्वं वृणीषे तास्ते समृद्धीरिह राधयामि १०
 इयं तै धीतिरिदमु ते जनित्रं गृह्णातु त्वामदितिः शूरपुत्रा ।
 परा पुनीहि य इमां पृतन्यवोऽस्यै रयि सर्ववीरं नि यच्छ ११
 उपश्वसे द्रुवये सीदता यूयं वि विच्यध्वं यज्ञियासस्तुपैः ।
 श्रिया समानानति सर्वान्त्स्यामाधस्पदं द्विषतस्पादयामि १२ ११४०
 परेहि नारि पुनरेहि क्षिप्रमपां त्वा गोष्ठोऽध्यरुक्षद् भराय ।
 तासां गृह्णीताद् यतमा यज्ञिया असन् विभाज्य धीरीतरा जहीतात् १३
 एमा अगुर्योषितुः शुम्भमाना उत्तिष्ठ नारि त्वसं रभस्व ।
 सुपत्नी पत्या प्रजया प्रजावत्या त्वागन् यज्ञः प्रति कुम्भं गृभाय १४
 ऊर्जो भागो निहितो यः पुरा व ऋषिप्रशिष्टाप आ भरैताः ।
 अयं यज्ञो गातुविन्नाथवित् प्रजाविदुग्रः पशुविद् वीरविद् वो अस्तु १५
 अग्ने चरुर्यज्ञियस्त्वाध्यरुक्षच्छुचिस्तपिष्ठस्तपसा तपैनम् ।
 आर्षेया देवा अभिसंगत्य भागमिमं तपिष्ठा क्रतुभिस्तपन्तु १६
 शुद्धाः पूता योषितो यज्ञिया इमा आपश्चरुमव सर्पन्तु शुभ्राः ।
 अदुः प्रजां बहुलान् पशून् नः पक्तौदनस्य सुकृतामेतु लोकम् १७ ११४१

अज्ञादिकम् ।	१२३२-१२५९]	ब्रह्मणा शुद्धा उत पूता घृतेन सोमस्यांशवस्तण्डुला यज्ञिया इमे ।	१८
४		अपः प्र विशतु प्रति गृह्णातु वश्चरुरिमं पक्त्वा सुकृतामेत लोकम्	१९
५		उरुः प्रथस्व महता महिम्ना सहस्रपृष्ठः सुकृतस्य लोके ।	२०
६		पितामहाः पितरः प्रजोपजाहं पक्ता पञ्चदशस्ते अस्मि	२१
७	१२३१	सहस्रपृष्ठः शतधारो अक्षितो ब्रह्मोदनो देवयानः स्वर्गः ।	२२
८		अमृतं आ दधामि प्रजयां रेपयैनान् बलिहाराय मृडतान्मह्यमेव	२३
९		उदेहि वेदिं प्रजयां वर्धयैनां नुदस्व रक्षः प्रतरं धेहेनाम् ।	२४
१०		श्रिया समानानति सर्वान्त्स्यामाधस्पदं द्विषत्स्पादयामि	२५
११		अभ्यावर्तस्व पशुभिः सहैनां प्रत्यङ्मैनां देवताभिः सहैधि ।	२६
१२	१२४०	मा त्वा प्रापच्छपथो मामिचारः स्वे क्षेत्रे अनमीवा वि राज	२७
१३		कृतेन तष्टा मनसा हितैषा ब्रह्मोदनस्य विहिता वेदिरग्रे ।	२८
१४		अंसद्री शुद्धामुप धेहि नारि तत्रौदनं सादय देवानाम्	२९
१५		अदितेर्हस्तां सुचमेतां द्वितीयां सप्तऋषयो भूतकृतो यामकृण्वन् ।	३०
१६		सा गात्राणि विदुष्योदनस्य दर्विवेद्यामध्येनं चिनोतु	३१
१७		शतं त्वा हव्यमुप सीदन्तु देवा निःस्पृह्याग्नेः पुनरेनान् प्र सीद ।	३२
१८		सोमेन पूतो जुठरे सीद ब्रह्मणामार्षेयास्ते मा रिषन् प्राशितारः	
१९		सोमं राजन्संज्ञानमा वपैभ्यः सुब्राह्मणा यतमे त्वोपसीदान् ।	
२०		ऋषीनार्षेयांस्तपसोऽधि जातान् ब्रह्मोदने सुहवां जोहवीमि	
२१		शुद्धाः पूता योषितो यज्ञिया इमा ब्रह्मणां हस्तेषु प्रपृथक् सादयामि ।	
२२		यत्काम इदमभिषिञ्चामि वोऽहमिन्द्रो मरुत्वान्त्स ददादिदं मे	
२३		इदं मे ज्योतिरमृतं हिरण्यं पक्वं क्षेत्रात् कामदुर्घा म एषा ।	
२४		इदं धनं नि दधे ब्राह्मणेषु कृण्वे पन्थां पितृषु यः स्वर्गः	
२५		अथौ तुष्टाना वप जातवेदसि परः कम्बूकां अप मृड्ढि दूरम् ।	
२६		एतं शुश्रुम गृहराजस्य भागमथो विन्न निर्ऋतेर्भागधेयम्	
२७		श्राम्यतः पचतो विद्धि सुन्वतः पन्थां स्वर्गमधि रोहयैनम् ।	
२८		येन रोहात् परमापद्य यद् वयं उत्तमं नाकं परमं व्योमि	
२९		बृध्रेष्वयो मुखमेतद् वि मृड्ढ्याज्याय लोकं कृणुहि प्रविद्वान् ।	
३०		घृतेन गात्रान् सर्वा वि मृड्ढि कृण्वे पन्थां पितृषु यः स्वर्गः	

वभ्रे रक्षः समदुमा वपैभ्योऽब्राह्मणा यतमे त्वोपसीदान् ।
 पुरीषिणः प्रथमानाः पुरस्तादार्पेयास्ते मा रिपन् प्राशितारः
 आर्पेयेषु नि दध ओदन त्वा नानार्पेयाणामप्यस्त्यत्र ।
 अग्निर्मे गोप्ता मरुतश्च सर्वे विश्वे देवा अभि रक्षन्तु पक्वम्
 यज्ञं दुहानं सदमित् प्रपीनं पुमांसं धेनुं सदनं रयीणाम् ।
 प्रजामृतत्वमुत दीर्घमायू रायश्च पोषैरुप त्वा सदेम
 वृषभोऽसि स्वर्गं ऋषीनार्पेयान् गच्छ ।
 सुकृतां लोके सीद तत्र नौ संस्कृतम्
 समाचिनुष्वानुसंप्रयाहमे पथः कल्पय देवयानान् ।
 एतैः सुकृतैरनु गच्छेम यज्ञं नाके तिष्ठन्तुमतिं सुसरश्मौ
 येन देवा ज्योतिषा द्यामुदायन् ब्रह्मादनं पक्त्वा सुकृतस्य लोकम् ।
 तेन गेष्म सुकृतस्य लोकं स्वशिरोहन्तो अभि नाकमुत्तमम्

॥ २११ ॥ (अथर्व० ६।११६।१-३)

जाटिकायनः । विवस्वान् (मधुमदन्नम्) । जगती, १ त्रिष्टुप् ।

यद् यामं चक्रुर्निखनन्तो अग्रे कार्षीवणा अन्नविदो न विद्यया ।
 वैवस्वते राजनि तज्जुहोम्यथ यज्ञियं मधुमदस्तु नोऽन्नम्
 वैवस्वतः कृणवद् भागधेयं मधुभागो मधुना सं सृजाति ।
 मातुर्यदेन इषितं न आगन् यद् वा पितापराद्धो जिहीडे
 यदीदं मातुर्यदि वा पितुर्नः परि भ्रातुः पुत्राच्चेतस एन आगन् ।
 यावन्तो अस्मान् पितरः सचन्ते तेषां सर्वेषां शिवो अस्तु मन्युः

॥ २१२ ॥ (अथर्व० ७।३७।१)

अथर्वा । वासः । अनुष्टुप् ।

अभि त्वा मनुजातेन दधामि मम वाससा ।
 यथासो मम केवलो नान्यासां कीर्तियाश्चन

॥ २१३ ॥ (वा० य० ४।२, १०)

(वासः ।)

दीक्षातपसोस्तनुरसि तां त्वां शिवाः शग्मां परिदधे भद्रं वर्णं पुष्यन्
 विष्णोः शर्मासि शर्म यजमानस्येन्द्रस्य योनिरसि सुस्रयाः कृषीस्कृधि

॥ २१४ ॥ (अथर्व० १२।३।१-६०)

यमः । स्वर्गः, ओदनः, अग्निः (स्वर्गोदनः) । त्रिष्टुप् ; १, ४२-४३, ४७ भुरिक् ; ८, १२, २१-२२, २४ जगती ; १३, १७ स्वराडाधी पङ्क्तिः ; ३४ विराड्गर्भा ; ३९ अनुष्टुप्गर्भा, ४४ पराबृहती, ५५-६० व्यवसाना सप्तपदा शङ्कुमत्यतिजागतशाकराति-
शाकरधात्यगर्भातिधृतिः (५५, ५७-६० कृतिः, ५६ विराट् कृतिः) ।

पुमान् पुंसोऽधि तिष्ठ चर्मेहि तत्र ह्वयस्व यतमा प्रिया ते ।

यार्वन्तावग्रै प्रथमं समेयथुस्तद् वां वयो यमराज्ये समानम् १

तावद् वां चक्षुस्तति वीर्याणि तावत् तेजस्ततिधा वार्जिनानि ।

अग्निः शरीरं सचते यदैधोऽधा पक्कान्मिथुना सं भवाथः २

समस्मिहोके समु देवयाने सं स्मां समेतं यमराज्येषु ।

पुतौ पवित्रैरुप तद्भवेथां यद्यद् रेतो अधि वां संबभूव ३

आपस्पृशासो अभि सं विशध्वमिमं जीवं जीवधन्याः समेत्य ।

तासां भजध्वममृतं यमाहुर्यमोदनं पचति वां जनित्री ४ १२७५

यं वां पिता पचति यं च माता रिप्रान्निर्मुक्त्यै शर्मलाच वाचः ।

स ओदनः शतधारः स्वर्ग उभे व्यापि नभसी महित्वा ५

उभे नभसी उभयांश्च लोकान् ये यज्वनामभिर्जिताः स्वर्गाः ।

तेषां ज्योतिष्मान् मधुमान् यो अग्रे तस्मिन् पुत्रैर्जरसि सं श्रयेथाम् ६

प्राचीप्राचीं प्रदिशमा रभेथामेतं लोकं श्रद्धाणाः सचन्ते ।

यद् वां पक्कं परिविष्टमग्नौ तस्य गुप्तये दंपती सं श्रयेथाम् ७

दक्षिणां दिशमभि नक्षमाणौ पर्यावर्तेथामभि पात्रमेतत् ।

तस्मिन् वां यमः पितृभिः संविद्वानः पक्काय शर्म बहुलं नि यच्छात ८

प्रतीचीं दिशामियमिद् वरं यस्यां सोमो अधिपा मृडिता च ।

तस्यां श्रयेथां सुकृतः सचेथामधा पक्कान्मिथुना सं भवाथः ९ १२८०

उत्तरं राष्ट्रं प्रजयोत्तरावद् दिशामुदीची कृणवन्नो अग्रम् ।

पाङ्क्तं छन्दः पुरुषो बभूव विश्वैर्विश्वाङ्गैः सह सं भवेम १०

ध्रुवेयं विराणमो अस्त्वस्यै शिवा पुत्रेभ्य उत मर्त्यमस्तु ।

सा नो देव्यदिते विश्ववार इर्य इव गोपा अभि रक्ष पक्कम् ११

पितेव पुत्रानभि सं स्वजस्व नः शिवा नो वाता इव वान्तु भूमौ ।

यमोदनं पचतो देवते इह तं नस्तप उत सत्यं च वेत्तु १२ १२८३

१३ ६० [आयुर्वेद०]

यद्यत् कृष्णः शकुन एह गत्वा त्सरन् विषक्तं बिलं आससाद ।
 यद् वा दास्याद्द्रव्यं तस्मात् समङ्क्त उल्लखलं मुसलं शुम्भतापः
 अयं ग्रावा पृथुवृद्धो वयोधाः पूतः पवित्रैरपं हन्तु रक्षः ।
 आ रोह चर्म महि शर्म यच्छ मा दंपती पौत्रमधं नि गाताम्
 वनस्पतिः सह देवैर्न आगन् रक्षः पिशाचाँ अपवाधमानः ।
 स उच्छ्रयति प्र वदाति वाचं तेन लोकाँ अभि सर्वान् जयेम
 सप्त मेधान् पशवः पर्यगृह्णन् य एषाँ ज्योतिष्माँ उत यश्चक्रे ।
 त्रयस्त्रिंशद् देवतास्तान्तसंचन्ते स नः स्वर्गमभि नैष लोकम्
 स्वर्गं लोकमभि नो नयासि सं जायया सह पुत्रैः स्याम ।
 गृह्णामि हस्तमनु मैत्वत्र मा नस्तारीन्निर्कृतिर्मो अरातिः
 ग्राहिँ पाप्मानमति ताँ अयाम तमो व्यस्य प्र वदासि वल्गु ।
 वानस्पत्य उद्यतो मा जिहिँसीर्मा तण्डुलं वि शरीर्देवयन्तम्
 विश्वव्यचा घृतपृष्ठो भविष्यन्तस्यौनिलोकमुप याह्येतम् ।
 वर्षवृद्धमुप यच्छ शूर्पं तुषं पलावानप तद् विनक्तु
 त्रयो लोकाः संमिता ब्राह्मणेन द्यौरेवासौ पृथिव्यन्तरिक्षम् ।
 अंशून् गृभीत्वान्वारभेथामा प्यायन्तां पुनरा यन्तु शूर्पम्
 पृथग् रूपाणि बहुधा पशूनामेकरूपो भवसि सं समृद्ध्या ।
 एताँ त्वचं लोहिनीँ ताँ नुदस्व ग्रावाँ शुम्भाति मलग इव वज्राँ
 पृथिवीँ त्वाँ पृथिव्यामा वेशयामि तनूः समानी विकृता त एषा ।
 यद्यद् द्युतं लिखितमर्पणेन तेन मा सुस्रोत्रह्यणापि तद् वपामि
 जनित्रीव प्रति हर्यासि सूनुं सं त्वाँ दधामि पृथिवीँ पृथिव्या ।
 उखा कुम्भी वेद्याँ मा व्यथिष्ठा यज्ञायुधैराज्येनातिषक्ता
 अग्निः पचन् रक्षतु त्वा पुरस्तादिन्द्रो रक्षतु दक्षिणतो मरुत्वान् ।
 वरुणस्त्वा दंहाद्धरुणे प्रतीच्या उत्तरात् त्वा सोमः सं ददातै
 पूताः पवित्रैः पचन्ते अब्राद् दिवै च यन्ति पृथिवीँ च लोकान् ।
 ता जीवला जीवधन्याः प्रतिष्ठाः पात्र आसिक्ताः पर्यग्निरिन्धाम्
 आ यन्ति दिवः पृथिवीँ संचन्ते भूम्याः सचन्ते अध्यन्तरिक्षम् ।
 शुद्धाः सतीस्ता उ शुम्भन्त एव ता नः स्वर्गमभि लोकं नयन्तु

१३

१४ ११८१

१५

१६

१७

१८

१९ ११९०

२०

२१

२२

२३

२४ ११९१

२५

२६ ११९२

१२८४-१३११]

अभाविहम् ।

२३

१४ ११८५

१५

१६

१७

१८

१९ ११९०

२०

२१

२२

२३

२४ ११९५

२५

२६ ११९६

उत्तेवं प्रभ्वीरुत संमितास उत शुक्राः शुचयश्चामृतासः ।
ता ओदुनं दंपतिभ्यां प्रशिष्टा आपः शिक्षन्तीः पचता सुनाथाः ।
संख्याता स्तोकाः पृथिवीं संचन्ते प्राणापानैः संमिता ओषधीभिः ।
असंख्याता ओप्यमानाः सुवर्णाः सर्वं व्यापुः शुचयः शुचित्वम्
उद्योषन्त्यभि वल्गन्ति तप्ताः फेनमस्थन्ति बहुलांश्च बिन्दून् ।
योषेव दृष्ट्वा पतिमृत्विष्यायैतैस्तण्डुलैर्भवता समापः
उत्थापय सीदतो बुध एनानाद्भिरात्मानमाभि सं स्पृशन्ताम् ।
अमासि पात्रैरुदकं यदेतन्मितास्तण्डुलाः प्रदिशो यदीमाः
प्र यच्छ पशुं त्वरया हरौषमहिंसन्त ओषधीर्दान्तु पर्वन् ।
यासां सोमः परि राज्यं बभूवामन्युता नो वीरुधो भवन्तु
नवं बहिरोदनाय स्तृणीत प्रियं हृदश्चक्षुषो वल्ग्वस्तु ।
तस्मिन् देवाः सह द्वैवीर्विशन्तिवसं प्राशन्त्वृतुभिर्निषद्य
वनस्पते स्तीर्णमा सीद बहिर्गृहिष्टोभैः संमितो देवताभिः ।
त्वष्टैव रूपं सुकृतं स्वधित्यैना एहाः परि पात्रे ददृश्राम्
पृथ्यां शरत्सु निधिपा अभीच्छात् स्वः पक्वेनाभ्यश्रवातै ।
उपै न जीवान् पितरश्च पुत्रा एतं स्वर्गं गमयान्तमग्नेः
धर्ता प्रियस्व धरुणे पृथिव्या अच्युतं त्वा देवताश्च्यावयन्तु ।
तं त्वा दंपती जीवन्तौ जीवपुत्रावुद वासयातुः पर्याग्निधानात्
सर्वान्समागां अभिजित्य लोकान् यावन्तः कामाः समतीतपुस्तान् ।
वि गाहेथामायवनं च दर्विरेकस्मिन् पात्रे अध्युद्धरैनम्
उपे स्तृणीहि प्रथये पुरस्ताद् घृतेन पात्रमभि धारयैतत् ।
वाश्रवोसा तरुणं स्तनस्युमिमं देवासो अभिहिङ्कृणोत
उपास्तरीरकरो लोकमेतमुरुः प्रथतामसमः स्वर्गः ।
तस्मिन्नुयातै महिषः सुपुणो देवा एनं देवताभ्यः प्र यच्छान्
यद्यज्ञाया पचन्ति त्वत् परःपरः पतिर्वा जाये त्वत् तिरः ।
सं तत् संजेषां सह वां तदस्तु संपादयन्तौ सह लोकमेकम्
यावन्तो अस्याः पृथिवीं संचन्ते अस्मत् पुत्राः परि ये संबभूवुः ।
सर्वान्तां उप पात्रे ह्वयेथां नाभिं जानानाः शिशवः समर्थान्

२७

२८

२९ १३००

३०

३१

३२

३३

३४ १३०५

३५

३६

३७

३८

३९ १३१०

४० १३११

वसोर्या धारा मधुना प्रपीना घृतेन मिश्रा अमृतस्य नाभयः ।
 सर्वास्ता अव रुन्धे स्वर्गः पृष्ट्यां शरत्सु निधिपा अभीच्छात् ४१
 निधिं निधिपा अभ्येनिमिच्छादनीश्वरा अभितः सन्तु येऽन्ये ।
 अस्माभिर्दत्तो निहितः स्वर्गस्त्रिभिः काण्डैस्त्रीन्तस्वर्गानरुक्षत् ४२
 अग्री रक्षस्तपतु यद् विदेवं क्रव्यात् पिशाच इह मा प्र पास्त ।
 नुदाम एनमप रुध्मो अस्मदादित्या एनमङ्गिरसः सचन्ताम् ४३
 आदित्येभ्यो अङ्गिरोभ्यो मध्विदं घृतेन मिश्रं प्रति वेदयामि ।
 शुद्धहस्तौ ब्राह्मणस्यानिहत्यैतं स्वर्गं सुकृतावपीतम् ४४ १३१५
 इदं प्रापमुत्तमं काण्डमस्य यस्माल्लोकात् परमेष्ठी समाप ।
 आ सिञ्च सर्पिर्घृतवत् समङ्गध्येष भागो अङ्गिरसो नो अत्र ४५
 सत्याय च तपसे देवताभ्यो निधिं शैवधिं परि दत्त एतम् ।
 मा नो द्यूतेऽव गान्मा समित्यां मा स्मान्यस्मा उत् सृजता पुरा मत् ४६
 अहं पंचाम्यहं ददामि ममेदु कर्मन् करुणेऽधि जाया ।
 कौमारो लोको अजनिष्ट पुत्रोऽन्वारभेथां वय उत्तरावत् ४७
 न किल्बिषमत्र नाधारो अस्ति न यन्मित्रैः समममान एति ।
 अनूनं पात्रं निहितं न एतत् पृक्तारं पक्वः पुनरा विंशति ४८
 प्रियं प्रियाणां कृणवाम तमस्ते यन्तु यतमे द्विषन्ति ।
 धेनुरनृद्वान् वयोवय आयदेव पौरुषेयमप मृत्युं नुदन्तु ४९ १३२०
 समग्रयो विदुरन्यो अन्यं य ओषधीः सचैते यश्च सिन्धून् ।
 यावन्तो देवा दिव्याऽतपन्ति हिरण्यं ज्योतिः पचतो बभूव ५०
 एषा त्वचां पुरुषे सं बभूवानग्राः सर्वे पशवो ये अन्ये ।
 क्षत्रेणात्मानं परि धापयाथोऽमोतं वासो मुखमोदुनस्य ५१
 यदुक्षेपु वदा यत् समित्यां यद् वा वदा अनृतं वित्तकाम्या ।
 समानं तन्तुमभि संवसानौ तस्मिन्तस्व शमलं सादयाथः ५२
 वर्ष वनुष्वपि गच्छ देवांस्त्वचो धूमं पर्युत् पातयासि ।
 विश्वव्यं चा घृतपृष्ठो भविष्यन्तस्योनिलोकमुप याह्येतम् ५३
 तन्वं स्वर्गो बहुधा वि चक्रे यथा विद आत्मन्नयवर्णाम् ।
 अपाजैत् कृष्णां रुशतीं पुनानो या लोहिनी तां ते अग्री जुहोमि ५४ १३२५

अजादिकम् ।

अथा १३१२-१३३६]

प्रतीच्यै त्वा दिशेऽग्नेयेऽधिपतयेऽसिताय रक्षित्र आदित्यायेषुमते ।

एतं परि दद्वस्तं नो गोपायतास्माकमैतौः ।

दिष्टं नो अत्र जरसे नि नैषजरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्केन सह सं भवेम ५५

दक्षिणायै त्वा दिशे इन्द्रायाधिपतये तिरश्चिराजये रक्षित्रे यमायेषुमते ।

एतं परि दद्वस्तं नो गोपायतास्माकमैतौः ।

दिष्टं नो अत्र जरसे नि नैषजरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्केन सह सं भवेम ५६

प्रतीच्यै त्वा दिशे वरुणायाधिपतये पृदाकवे रक्षित्रेऽन्नायेषुमते ।

एतं परि दद्वस्तं नो गोपायतास्माकमैतौः ।

दिष्टं नो अत्र जरसे नि नैषजरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्केन सह सं भवेम ५७

उदीच्यै त्वा दिशे सोमायाधिपतये स्वजाय रक्षित्रेऽश्विन्या इषुमत्यै ।

एतं परि दद्वस्तं नो गोपायतास्माकमैतौः ।

दिष्टं नो अत्र जरसे नि नैषजरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्केन सह सं भवेम ५८

ध्रुवायै त्वा दिशे विष्णवेऽधिपतये कल्माषग्रीवाय रक्षित्र ओषधीभ्य इषुमतीभ्यः ।

एतं परि दद्वस्तं नो गोपायतास्माकमैतौः ।

दिष्टं नो अत्र जरसे नि नैषजरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्केन सह सं भवेम ५९ १३३०

ऊर्ध्वायै त्वा दिशे बृहस्पतयेऽधिपतये श्वित्राय रक्षित्रे वर्षायेषुमते ।

एतं परि दद्वस्तं नो गोपायतास्माकमैतौः ।

दिष्टं नो अत्र जरसे नि नैषजरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्केन सह सं भवेम ६० १३३१

वाजीकरणम् । (१३३२-१३४५)

॥ २१५ ॥ (अथर्व० ४।४।१-८)

अथवा । वनस्पतिः; १-२ सूर्यः, प्रजापतिः; ४ इन्द्रः; ५ आपः, सोमः; ६ अग्निः सरस्वती, ब्रह्मणस्पतिः (वाजीकरणम्) । अनुष्टुप्, ४ पुर उष्णिक्, ६-७ भुरिक् ।

यां त्वा गन्धर्वो अखनद् वरुणाय मृतभ्रजे ।

तां त्वा वयं खनामस्योषधिं शेपहर्षणीम्

उदुपा उदु सूर्य उदिदं मामकं वचः । उदैजतु प्रजापतिर्वृषा शुष्मेण वाजिनां १

यथा स्म ते विरोहतोऽभितप्तमिवानति । ततस्ते शुष्मवत्तरमियं कृणोत्वोषधिः २

तच्छुष्मौषधीनां सारं ऋषभाणाम् । सं पुंसामिन्द्र वृष्ण्यमस्मिन् धेहि तनूवाशिन् ३ १३३५

अपां रसः प्रथमजोऽथो वनस्पतीनाम् । उत सोमस्य भ्रातास्युतार्शमसि वृष्ण्यम् ४ १३३६

(१०२)

अद्यात्रै अद्य संवितरद्य देवि सरस्वति । अद्यास्य ब्रह्मणस्पते धनुरिवा तानया पसः ६
 आहं तनोमि ते पसो अधि ज्यामिव धन्वनि ।
 क्रमस्वर्श इव रोहितमनवग्लायता सदा ७
 अश्वस्याश्वतरस्याजस्य पेत्यस्य च ।
 अथ ऋषभस्य ये वाजास्तानस्मिन् धेहि तनूवशिन् ८ १३३९

॥ २१६ ॥ (अथर्व० ६।७२।१-३)

अथर्वाङ्गिराः । शेषोऽर्कः (वाजीकरणम्) । १ जगती, २ अनुष्टुप्, ३ भुरिक् ।
 यथासितः प्रथयते वशां अनु वपैषि कृष्वन्नसुरस्य मायया ।
 एवा ते शेषः सहसायमर्कोऽङ्गनाङ्गं संसमकं कृणोत १ १३४०
 यथा पसस्तायादुरं वातेन स्थूलभं कृतम् ।
 यावत् परस्वतः पसस्तावत् ते वर्धतां पसः २
 यावदुङ्गीनं पारस्वतं हास्तिनं गर्दिभं च यत् ।
 यावदश्वस्य वाजिनस्तावत् ते वर्धतां पसः ३ १३४१

॥ २१७ ॥ (अथर्व० ६।१०१।१-३)

अथर्वाङ्गिराः । ब्रह्मणस्पतिः (वाजीकरणम्) । अनुष्टुप् ।
 आ वृषायस्व श्वसिहि वर्धस्व प्रथयस्व च । यथाङ्गं वर्धतां शेषस्तेन योषितमिजं हि १
 येन कृशं वाजयन्ति येन हिन्वन्त्यातुरम् । तेनास्य ब्रह्मणस्पते धनुरिवा तानया पसः २
 आहं तनोमि ते पसो अधि ज्यामिव धन्वनि ।
 क्रमस्वर्श इव रोहितमनवग्लायता सदा ३ १३४२

गर्भाधानम् । (१३४६-१४२३)

॥ २१८ ॥ (अथर्व० ५।२५।१-१३)

ब्रह्मा । योनिगर्भः, पृथिव्यादयो देवताः । अनुष्टुप्, १३ विराट्पुरस्ताद्बृहती ।
 पर्वताद् दिवो योनेरङ्गादङ्गात् समाभृतम् । शेषो गर्भस्य रेतोधाः सरौ पूर्णमिवा दधत् १
 यथेयं पृथिवी मही भूतानां गर्भमादधे । एवा दधामि ते गर्भं तस्मै त्वामवसे हुवे २
 गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति । गर्भं ते अश्विनोमा धत्तां पुष्करस्रजा ३
 गर्भं ते मित्रावरुणौ गर्भं देवो बृहस्पतिः । गर्भं त इन्द्रश्चाग्निश्च गर्भं धाता दधातु ते ४
 विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिशतु । आ सिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते ५
 यद् वेद राजा वरुणो यद् वा देवी सरस्वती । यदिन्द्रो बृत्रहा वेद तद् गर्भकरणं पिव ६ १३४३

[१३३७-१३६८]

गर्भाधानम् ।

६

७

८ १३३९

३ १३४१

१

२

३ १३४५

१

२

३

४

५ १३५०

६ १३५१

गर्भो अखोषधीनां गर्भो वनस्पतीनाम् । गर्भो विश्वस्य भूतस्य सो अग्ने गर्भमेह धाः ७

गर्भो स्कन्द वीर्यस्व गर्भमा धेहि योन्याम् । वृषांसि वृष्यावन् प्रजायै त्वा नयामसि ८

वि जिहीष्व बर्हिस्सामे गर्भस्ते योनिमा शयाम् । अदुष्टे देवाः पुत्रं सोमपा उभयाविनम् ९

धातुः श्रेष्ठेन रूपेणास्या नार्या गवीन्योः । पुमांसं पुत्रमा धेहि दशमे मासि स्रतवे १० १३५५

त्वष्टः श्रेष्ठेन रूपेणास्या नार्या गवीन्योः । पुमांसं पुत्रमा धेहि दशमे मासि स्रतवे ११

वसिष्ठः श्रेष्ठेन रूपेणास्या नार्या गवीन्योः । पुमांसं पुत्रमा धेहि दशमे मासि स्रतवे १२

प्रजापते श्रेष्ठेन रूपेणास्या नार्या गवीन्योः । पुमांसं पुत्रमा धेहि दशमे मासि स्रतवे १३ १३५८

॥ २१९ ॥ (अथर्व० ६।८।१-३)

अथर्वा । आदित्यः, ३ त्वष्टा (गर्भाधानम्) । अनुष्टुप् ।

१ १३४०

२

३ १३४१

गन्तासि यच्छसे हस्तावप रक्षांसि सेधसि । प्रजां धनं च गृह्णानः परिहस्तो अभूदयम् १

परिहस्तं वि धारय योनिं गर्भाय धातवे । मर्यादे पुत्रमा धेहि तं त्वमा गर्भयागमे २ १३६०

यं परिहस्तमविभ्रादितिः पुत्रकाम्या । त्वष्टा तमस्या आ बध्नाद् यथा पुत्रं जनादिति ३ १३६१

॥ २२० ॥ (अथर्व० ६।१७।१-४)

अथर्वा । गर्भदंष्ट्रणम्, पृथिवी । अनुष्टुप् ।

रूपेण पृथिवी मही भूतानां गर्भमादधे । एवा ते ध्रियतां गर्भो अनु स्रतुं सवितवे १

रूपेण पृथिवी मही दाधारेमान् वनस्पतीन् । एवा ते ध्रियतां गर्भो अनु स्रतुं सवितवे २

रूपेण पृथिवी मही दाधार पर्वतान् गिरीन् । एवा ते ध्रियतां गर्भो अनु स्रतुं सवितवे ३

रूपेण पृथिवी मही दाधार विष्टितं जगत् । एवा ते ध्रियतां गर्भो अनु स्रतुं सवितवे ४ १३६५

॥ २२१ ॥ (अथर्व० ७।११।१)

ब्रह्मा । वृषभः (आत्मा) । पराबृहती त्रिष्टुप् ।

प्रसू कुक्षिरसि सोमधानं आत्मा देवानामुत मानुषाणाम् ।

ए प्रजा जनय यास्तं आसु या अन्यत्रेह तास्तै रमन्ताम् १ १३६२

॥ २२२ ॥ (अथर्व० ८।६।१-२६)

पूतना । मन्त्रोक्ताः, मातृनामा, १५ ब्रह्मणस्पतिः (गर्भदोषनिवारणम्) । अनुष्टुप्, २ पुरस्ताद्बृहती, १० ज्यवसाना षट्पदा जगती, ११-१२, १४, १६, पथ्यापङ्क्तिः, १५ ज्यवसाना सप्तपदा शकरी,

तो ते मातोन्ममार्जं जातायाः पतिवेदनौ । दुर्णामा तत्र मा गृध्रदुलिंशं उत वत्सपः १

जातानुपुलाली शकुं कोकं मलिस्तुलुचं पलीजकम् ।

युधेयं त्रिवीर्यसमृद्धं ग्रीवं प्रसीलिनम् २ १३६८

- मा सं वृतो मोषं सृप ऊरू मावं सृपोऽन्तरा ।
 कृणोम्यस्यै भेषजं वज्रं दुर्णामिचातनम् ३
 दुर्णामां च सुनामां चोभा संवृतमिच्छतः । अरायानपं हन्मः सुनामा स्त्रैणमिच्छताम् ४ १३००
 यः कृष्णः केश्यसुर स्तम्बज उत तुण्डिकः ।
 अरायानस्या मुष्काभ्यां भंससोषं हन्मासि ५
 अनुजिघ्रं प्रमृशन्तं कव्यादमुत रैरिहम् ।
 अरायांल्लुकिष्किणो वज्रः पिङ्गो अनीनशत् ६
 यस्त्वा स्वप्ने निपद्यते भ्राता भुत्वा पितेव च ।
 वज्रस्तान्त्सहतामितः क्लीवरूपांस्तिरीटिनः ७
 यस्त्वा स्वपन्तीं त्सरति यस्त्वा दिप्सति जाग्रतीम् ।
 छायामिव प्र तान्त्सूर्यः परिक्रामन्ननीनशत् ८
 यः कृणोति मृतवत्सामवतो कामिमां स्त्रियम् ।
 तमोषधे त्वं नाशयास्याः कमलमञ्जिवम् ९ १३०५
 ये शालाः परिनृत्यन्ति सायं गर्दभनादिनः ।
 कुक्षला ये च कुक्षिलाः ककुभाः करुमाः सिमाः ।
 तानोषधे त्वं गन्धेन विषूचीनान् वि नाशय १०
 ये कुकुन्धाः कुरूरभाः कृत्तीर्दुर्शानि विभ्रति ।
 क्लीबा इव प्रनृत्यन्तो वने ये कुर्वते घोषं तानितो नाशयामसि ११
 ये सूर्यं न तितिक्षन्त आतपन्तममुं दिवः ।
 अरायान् वस्तवासिनो दुर्गन्धील्लोहितास्यान् मर्ककान् नाशयामसि १२
 य आत्मानमतिमात्रमंस आधाय विभ्रति स्त्रीणां श्रौणिप्रतोदिन इन्द्र रक्षोसि नाशय १३
 ये पूर्वे वध्वोऽं यान्ति हस्ते शृङ्गाणि विभ्रतः ।
 आपाकेष्ठाः प्रहासिन स्तम्बे ये कुर्वते ज्योतिस्तानितो नाशयामसि १४ १३००
 येषां पश्चात् प्रपदानि पुरः पाष्णीः पुरो मुखा ।
 खलजाः शकधूमजा उरुण्डा ये च मट्मटाः कुम्भमुष्का अयाशवः ।
 तानस्या ब्रह्मणस्पते प्रतीबोधेन नाशय १५
 पर्यस्ताक्षा अप्रचङ्कशा अस्त्रेणाः संन्तु पण्डगाः ।
 अव भेषज पादय य इमां संविष्टस्यपतिः स्वपतिं स्त्रियम् १६ १३०५

अध्यायः १३६९-१३९७]

गर्भाधानम् ।

उद्धर्षिणं मुनिकेशं जम्भयन्तं मरीमृशम् । उपेषन्तमुदुम्बलं तुण्डेलमुत शालुडम्

पदा प्र विध्य पाषण्यां स्थालीं गौरिव स्पन्दना

१७

यस्ते गर्भं प्रतिमुशाज्जातं वा मारयाति ते ।

पिङ्गस्तमुग्रधन्वा कृणोतु हृदयाविधम्

१८

ये अग्नौ जातान् मारयन्ति स्रुतिका अनुशरन्ते ।

स्त्रीभागान् पिङ्गो गन्धर्वान् वार्ष्णेयान् अभ्रमिवाजतु

१९ १३८५

परिसृष्टं धारयतु यद्वितं माव पादि तत् ।

गर्भं त उग्रौ रक्षतां भेषजौ नीविभार्यौ

२०

पवीनसात् तङ्गल्वाङ्गच्छायकादुत नम्रकात् ।

प्रजायै पत्यै त्वा पिङ्गः परि पातु किमीदिनः

२१

द्यास्याच्चतुरक्षात् पञ्चपादादनङ्गुरेः । वृन्तादुभि प्रसर्पतः परि पाहि वरीवृतात्

२२

य आम् मांसमदन्ति पौरुषेयं च ये क्रविः ।

गर्भान् खादन्ति केशवास्तानितो नाशयामसि

२३

ये सूर्यात् परिसर्पन्ति स्नुषेव श्वशुरादधि ।

वज्रश्च तेषां पिङ्गश्च हृदयेऽधि नि विध्यताम्

२४ १३९०

पिङ्ग रक्ष जायमानं मा पुमांसं स्त्रियं क्रन् ।

आण्डादो गर्भान् मा दधन् बाधस्वेतः किमीदिनः

२५

अप्रजास्त्वं मार्तिवत्समाद् रोदमघमावयम् । वृक्षादिव स्रजं कृत्वाप्रिये प्रति मुञ्च तत्

२६ १३९२

॥ २२३ ॥ (अथर्व० २०।९६।११-१६)

रक्षोहा । गर्भसंस्त्रावः । अनुष्टुप् ।

ब्रह्मणाग्निः संविदुनो रक्षोहा बाधतामितः ।

अमीवा यस्ते गर्भं दुर्णामा योनिमाशये

११

यस्ते गर्भममीवा दुर्णामा योनिमाशये । अग्निष्टं ब्रह्मणा सह निष्क्रव्यादमनीनशत्

१२

यस्ते हन्ति पतयन्तं निषत्सुं यः सरीसृपम् ।

जातं यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि

१३ १३९५

यस्त ऊरु विहरत्यन्तरा दम्पती शयै । योनि यो अन्तरारेलिह तमितो नाशयामसि

१४

प्रजा यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि

१५ १३९७

१४ दे० । आयुर्वेद०]

यस्त्वा स्वप्नेन तमसा मोहयित्वा निषद्यते ।
प्रजां यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि

१६ १३९८

॥ २२४ ॥ (ऋ० ५।७८।५-९)

सप्तवधिरात्रेयः । अश्विनौ (गर्भस्त्राविण्युपनिषद्) । अनुष्टुप् ।

वि जिहीष्व वनस्पते योनिः सूर्यन्त्या इव ।

श्रुतं मे अश्विना हवै सप्तवधिं च मुञ्चतम्

५

भीताय नाधमानाय कर्षये सप्तवध्रये ।

मायाभिरश्विना युवं वृक्षं सं च वि चाचथः

६ १४००

यथा वातः पुष्करिणीं समिद्ध्यति सर्वतः । एवा ते गर्भं एजतु निरैतु दशमास्यः ७

यथा वातो यथा वनं तथा समुद्र एजति ।

एवा त्वं दशमास्य सहावेहि जरायुणा

८

दश मासाञ्छशयानः कुमारो अधि मातरि ।

निरैतु जीवो अक्षतो जीवो जीवन्त्या अधि

९ १४०१

॥ २२५ ॥ (ऋ० ९।७४।५)

कक्षीवान् दैर्घतमसः । पवमानः सोमः (अदितेर्गर्भः) । जगती ।

अरावीदंशुः सचमान ऊर्मिणा देवाव्यं मनुषे पिन्वति त्वचम् ।

दधाति गर्भमदितेरुपस्थ आ येन तोकं च तनयं च धामहे

५ १४०४

॥ २२६ ॥ (अथर्व० १।११।१-६)

अथर्वा । पूषा, अर्यमा, वेधाः, दिशः, देवाः (नारी-सुखप्रसूतिः) । १ पङ्क्तिः; २ अनुष्टुप्;

३ चतुष्पदोष्णिग्गर्भा ककुम्भत्यनुष्टुप्; ४-६ पथ्यापङ्क्तिः ।

वषट् ते पूषन्नसिन्सूतावर्यमा होता कृणोतु वेधाः ।

सिंसृतां नार्यृतप्रजाता वि पर्वाणि जिहतां सूतवा उं

१ १४०५

चतस्रो दिवः श्रदिशश्चतस्रो भूम्या उत । देवा गर्भं समैरयन् तं व्यूर्णुवन्तु सूतवे २

सूषा व्यूर्णोतु वि योनिं हापयामसि । श्रथया सूपणे त्वमव त्वं विष्कले सृज ३

नेवं मांसं न पीवसि नेवं मज्जस्वाहतम् ।

अवैतु पृश्नि शेवलं शुने जरायवत्तवेऽव जरायु पद्यताम्

४

वि ते भिनन्नि मेहनं वि योनिं वि गृवीनिके ।

वि मातरं च पुत्रं च वि कुमारं जरायुणाव जरायु पद्यताम्

५ १४०६

[अथाः १३९८-१४२१]

यथा वातो यथा मनो यथा पतन्ति पक्षिणः ।

एवा त्वं दशमास्य साकं जरायुणा पतावं जरायु पद्यताम्

६ १४१०

॥ २२७ ॥ (अथर्व० १२।४०।१-४)

ब्रह्मा । बृहस्पतिः, विश्वे देवाश्च (मेधा) । १ पराऽनुष्टुप् त्रिष्टुप्; २ पुरःककुम्भत्युपरिष्ठाद्बृहती;
३ बृहतीगर्भा; ४ त्रिपदाऽऽर्वी गायत्री ।

यन्मे छिद्रं मनसो यच्च वाचः सरस्वती मन्युमन्तं जगाम ।

विश्वेस्तद् देवैः सह संविदानः सं दधातु बृहस्पतिः

१

मा न आपो मेधां मा ब्रह्म प्र मथिष्टन ।

सुष्टुदा यूयं स्यन्दध्वमुपहूतोऽहं सुमेधां वर्चस्वी

२

मा नो मेधां मा नो दीक्षां मा नो हिसिष्टं यत् तपः ।

शिवा नः शं सन्त्वार्युषे शिवा भवन्तु मातरः

३

या नः पीपरदुश्चिना ज्योतिष्मती तमस्तिरः । तामस्मे रासतामिपम्

४ १४१४

॥ २२८ ॥ (अथर्व० १।१।१-४)

अथर्वा । वाचस्पतिः (मेधाजननम्) । अनुष्टुप्, ४ चतुष्पदा विराडुरोबृहती ।

ये त्रिपदाः परियन्ति विश्वां रूपाणि विभ्रतः ।

वाचस्पतिर्वला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे

१ १४१५

पुनरोहि वाचस्पते देवेन मनसा सह ।

वसोष्पते नि रमय मय्येवास्तु मयि श्रुतम्

२

इहैवाभि वि तनूमे आत्मी इव ज्यया ।

वाचस्पतिर्नि यच्छतु मय्येवास्तु मयि श्रुतम्

३

उपहूतो वाचस्पतिरुपास्मान् वाचस्पतिर्ह्वयताम् ।

सं श्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन वि राधिषि

४ १४१८

॥ २२९ ॥ (अथर्व० ६।१०८।१-५)

शौतकः । मेधा, ४ अग्निः (मेधावर्धनम्) । अनुष्टुप्, २ उरोबृहती, ३ पथ्याबृहती ।

त्वं नो मेधे प्रथमा गोभिरश्वेभिरा गहि । त्वं सूर्यस्य रश्मिभिस्त्वं नो असि यज्ञिया १

मेधामहं प्रथमां ब्रह्मण्वतीं ब्रह्मजूतामृषिष्ठताम् । प्रपीतां ब्रह्मचारिभिर्देवानामवसे हुवे २ १४२०

यां मेधामुमवो विदुर्या मेधामसुरा विदुः

रूपयो भद्रां मेधां यां विदुस्तां मय्या वैशयामसि

३ १४२१

यामृषयो भूतकृतो मेधां मेधाविनो विदुः । तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कृणु ४
मेधां सायं मेधां प्रातर्मेधां मध्यंदिनं परि । मेधां सूर्यस्य रश्मिभिर्वचसा वैश्यामहे ५ १४२३

मणिधारणम् । (१४२४-१५७८)

॥ २३० ॥ (अथर्व० ४।१०।१-७)

अथर्वा । शङ्खमणिः, कृशनः । अनुष्टुप्, ६ पद्यापङ्क्तिः, ७ पञ्चपदा पराऽनुष्टुप्शकरी ।

वाताज्जातो अन्तरिक्षाद् विद्युतो ज्योतिषस्पति ।

स नो हिरण्यजाः शङ्खः कृशनः पात्वंहसः १

यो अग्रतो रौचनानां समुद्रादग्निं जज्ञिषे । शङ्खेन हत्वा रक्षांस्यत्त्रिणो वि पहामहे २ १४२५

शङ्खेनाग्निं वाममतिं शङ्खेनोत सदान्वाः ।

शङ्खो नो विश्वभेषजः कृशनः पात्वंहसः ३

दिवि जातः समुद्रजः सिन्धुतस्पर्शमृतः ।

स नो हिरण्यजाः शङ्ख आयुषप्रतरणो मणिः ४

समुद्राज्जातो मणिर्वृत्राज्जातो दिवाकृगः । सो अस्मान्तसर्वतः पातु हेत्या देवासुरेभ्यः ५

हिरण्यानामेकोऽसि सोमात् त्वमग्निं जज्ञिषे ।

रथे त्वमसि दर्शत इषुधौ रौचनस्त्वं प्र ण आयूषि तारिषत् ६

देवानामस्थि कृशनं बभूव तदात्मन्वच्चरत्यप्स्वेऽन्तः ।

तत् ते वध्मभ्यायुषे वर्चमे बलाय दीर्घायुत्वाय शतशारदाय कार्शनस्त्वाभि रक्षतु ७ १४३०

॥ २३१ ॥ (अथर्व० ८।५।१-२२)

शुकः । कृत्यादूषणं, मन्त्रोक्ताः (प्रतिसरो मणिः) । अनुष्टुप्, १, ६ उपरिष्ठाद्वृहती, २ त्रिपदा विराड्

गायत्री, ३ चतुष्पदा भुरिजगती, ५ भुरिकसस्तारपङ्क्तिः, ७-८ ककुम्भती, ९

पुरस्कृतिर्जगती, १० त्रिष्टुप्, ११ पद्यापङ्क्तिः, १४ व्यवसाना षट्पदा जगती;

१५ पुरस्ताद्वृहती, १९ जगतीगर्भा त्रिष्टुप्, २० विराड्गर्भा प्रस्तारपङ्क्तिः;

२१ विराट् त्रिष्टुप्, २२ व्यवसाना सप्तपदा विराड्गर्भा भुरिकशकरी ।

अयं प्रतिसरो मणिर्वीरो वीराय बध्यते ।

वीर्यवान्सप्तपत्नहा सुवीरः परिपाणः सुमङ्गलः १

अयं मणिः सप्तपत्नहा सुवीरः सहस्रान् वाजी सहमान उग्रः ।

प्रत्यक् कृत्या दूषयन्नेति वीरः २

अनेनेन्द्रो मणिना वृत्रमहन्ननेनासुरान् पराभावयन्मनीषी ।

अनेनाजयद् द्यावापृथिवी उभे इमे अनेनाजयत् प्रदिशश्चतस्रः ३ १४३१

१४२२-१४४९ ।

प्राधान्यम् ।

अयं साक्त्यो मणिः प्रतीवर्तः प्रतिसरः ।

ओजस्वान् विमृधो वशी सो अस्मान् पातु सर्वतः ४

तद्विराहं तदु सोमं आह बृहस्पतिः सविता तदिन्द्रः ।

ते मे देवाः पुरोहिताः प्रतीचीः कृत्याः प्रतिसरैरजन्तु ५ १४३५

अन्तर्दधे धावापृथिवी उताहरुत सूर्यम् ।

ते मे देवाः पुरोहिताः प्रतीचीः कृत्याः प्रतिसरैरजन्तु ६

ये साक्त्यं मणिं जना वर्माणि कृण्वते । सूर्यं इव दिवं मारुह्य वि कृत्या बाधते वशी ७

साक्त्येन मणिं ऋषिणेव मनीषिणा । अजैषं सर्वाः पृतना वि मृधो हन्मि रक्षसः ८

याः कृत्या आङ्गिरसीर्याः कृत्या आसुरीर्याः कृत्याः स्वयंकृता या उ चान्येभिराभृताः ।

उमयीस्ताः परां यन्तु परावतो नवति नान्व्याड् अति ९

अस्मै मणिं वर्मं वधन्तु देवा इन्द्रो विष्णुः सविता रुद्रो अग्निः ।

प्रजापतिः परमेष्ठी विराड् वैश्वानर ऋषयश्च सर्वे १० १४४०

उत्तमो अस्योपधीनामनृजान् जगतामिव व्याघ्रः श्वपदामिव ।

यमेच्छामाविदाम् तं प्रतिस्पाशनमन्तितम् ११

स इदं व्याघ्रो भवत्यथो सिंहो अथो वृषा । अथो सपत्नकर्शनो यो विभर्तमिं मणिम् १२

नैनं घन्त्यप्सरसो न गन्धर्वा न मर्त्याः ।

सर्वा दिशो वि रजति यो विभर्तमिं मणिम् १३

कृदयपस्त्वामसृजत कृदयपस्त्वा समैरयत् ।

अविमस्त्वेन्द्रो मानुषे विभ्रत् संश्रेषिणेऽजयत् ।

मणिं सहस्रवीर्यं वर्मं देवा अकृण्वत १४

यस्त्वा कृत्याभिर्यस्त्वा दीक्षाभिर्यज्ञैर्यस्त्वा जिघांसति ।

प्रत्यक् त्वमिन्द्र तं जहि वज्रेण शतपर्वणा १५ १४४५

अयमिदं वै प्रतीवर्त ओजस्वान् संजयो मणिः ।

प्रजां धनं च रक्षतु परिपाणः सुमङ्गलः १६

असपत्नं नो अधरादसपत्नं न उत्तरात् । इन्द्रासपत्नं नः पश्चाज्ज्योतिः शूर पुरस्कृधि १७

वर्मं मे धावापृथिवी वर्माहर्वर्मं सूर्यः । वर्मं म इन्द्रश्चाग्निश्च वर्मं धाता दधातु मे १८

एन्द्रायं वर्मं बहुलं यदुग्रं विश्वं देवा नाति विध्यन्ति सर्वे ।

तन्मै तन्वै त्रायतां सर्वतो बृहदायुष्मां जरदष्टिर्यथासानि १९ १४४९

आ मांरुक्षद् देवमणिर्मह्या अरिष्टतातये ।
 इमं मेथिमभिसंविशध्वं तनूपानं त्रिवरुथमोजसे
 अस्मिन्निन्द्रो नि दधातु नृम्णमिमं देवासो अभिसंविशध्वम् ।
 दीर्घायुत्वाय शतशरदायायुष्मान् जरदद्विर्यथासत्
 स्वस्तिदा विशां पतिर्वृत्रहा विमृधो वशी ।
 इन्द्रो वधातु ते मणिं जिगीवा अपराजितः सोमपा अभयंकरो वृषां ।
 स त्वां रक्षतु सर्वतो दिवा नक्तं च विश्वतः

२० १४५०

२१

२२ १४५२

॥ २३५ ॥ (अथर्वे १०।३।१-२५)

अथर्वा । (सपत्नक्षयणो), वरणमणिः, वनस्पतिः, चन्द्रमाः । अनुष्टुप्; २-३, ६ भुरिक् विष्टुप्;
 ८, १३-१४ पद्यपङ्क्तिः; ११, १६ भुरिक्; १५, १७-२५ षट्पदा जगती ।

अयं मे वरणो मणिः सपत्नक्षयणो वृषां ।
 तेना रभस्व त्वं शत्रून् प्र मृणीहि दुरस्यतः
 प्रैणान्छृणीहि प्र मृणा रभस्व मणिस्ते अस्तु पुरस्ता पुरस्तात् ।
 अवारयन्त वरणेन देवा अभ्याचारमसुराणां श्वःश्वः
 अयं मणिर्वरणो विश्वभेषजः सहस्राक्षो हरितो हिरण्ययः
 स ते शत्रून्धरान् पादयाति पूर्वस्तान् दधुहि ये त्वां द्विपन्ति
 अयं ते कृत्यां विततां पौरुषेयादयं भयात् ।
 अयं त्वा सर्वस्मात् पापाद् वरणो वारयिष्यते
 वरणो वारयाता अयं देवो वनस्पतिः । यक्ष्मो यो अस्मिन्नाविष्टस्तमुं देवा अवीवरन्
 स्वप्नं सुप्त्वा यदि पश्यासि पापं मृगः सृतिं यति धावादजुष्टाम् ।
 परिक्षवाच्छकुनेः पापवादादयं मणिर्वरणो वारयिष्यते
 अरात्यास्त्वा निर्ऋत्या अभिचारादथो भयात् ।
 मृत्योरोर्जीयसो वधाद् वरणो वारयिष्यते
 यन्मै माता यन्मै पिता भ्रातरो यच्च मे स्वा यदेनश्चकृमा वयम् ।
 ततो नो वारयिष्यतेऽयं देवो वनस्पतिः
 वरणेन प्रव्यथिता भ्रातृव्या मे सर्वन्धवः । अहर्त रजो अप्यङ्गुस्ते यन्त्वधमं तमः
 अरिष्टोऽहमरिष्टगुरायुष्मान्तसर्वपूरुषः ।
 तं मायं वरणो मणिः परि पातु दिशोदिशः

१

२

३ १४५५

४

६

७

८ १४५६

९

१० १४५७

मणिधारणम् ।

[१४५०-१४७३]

- अयं मे वरुण उरसि राजा देवो वनस्पतिः ।
 २० १४५० स मे शत्रून् वि बाधतामिन्द्रो दस्युनिवासुरान् ११
- इमं विभर्मि वरुणमायुष्मान्छतशारदः ।
 २१ स मे राष्ट्रं च क्षत्रं च पशूनोजश्च मे दधत् १२
- यथा वातो वनस्पतीन् वृक्षान् भनक्त्योजसा ।
 एवा सपत्नान् मे भङ्गिष्य पूर्वीन् जातौ उतापरान् वरुणस्त्वाभि रक्षतु १३ १४६१
- यथा वातश्चाग्निश्च वृक्षान् प्सातो वनस्पतीन् ।
 २२ १४५२ एवा सपत्नान् मे प्साहि पूर्वीन् जातौ उतापरान् वरुणस्त्वाभि रक्षतु १४
- यथा वातेन प्रक्षीणा वृक्षाः शरे न्यर्पिताः ।
 त्रिष्टुपः एवा सपत्नास्त्वं मम प्र क्षिणीहि न्यर्पिष्य पूर्वीन् जातौ उतापरान् वरुणस्त्वाभि रक्षतु १५
- तास्त्वं प्र छिन्धि वरुण पुरा दिष्टात् पुरायुषः ।
 १ य एनं पशुषु दिप्सन्ति ये चास्य राष्ट्रदिप्सवः १६
- यथा सूर्यो अतिभाति यथास्मिन् तेज आहितम् ।
 २ एवा मे वरुणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु १७
- तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा
 ३ १४५५ यथा यशश्चन्द्रमस्यादित्ये च नृचक्षसि ।
- एवा मे वरुणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु
 ४ तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा १८ १४७०
- यथा यशः पृथिव्यां यथास्मिन् जातवेदसि ।
 ५ एवा मे वरुणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु १९
- तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा
 ६ यथा यशः कन्यायां यथास्मिन्त्संभूते रथे ।
- एवा मे वरुणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु
 ७ १४६५ तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा २०
- यथा यशः सोमपथि मधुपर्के यथा यशः ।
 ८ १४६६ एवा मे वरुणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु २१ १४७३
- तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा

यथा यशोऽग्निहोत्रे वषट्कारे यथा यशः ।

एवा मे वरणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु

तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा

२२

यथा यशो यजमाने यथास्मिन् यज्ञ आहितम् ।

एवा मे वरणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु

तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा

२३ १४७५

यथा यशः प्रजापतौ यथास्मिन् परमेष्ठिनि ।

एवा मे वरणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु

तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा

२४

यथा देवेष्वमृतं यथेषु सत्यमाहितम् ।

एवा मे वरणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु

तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा

२५ १४७६

॥ २३३ ॥ (अथर्व० १०।६।१-३५)

बृहस्पतिः । फालमणिः, वनस्पतिः, ३ आपः (मणिबन्धनम्) । अनुष्टुप्; १,४,२१ गायत्री; ५ षट्पदा जगती; ६ सप्तपदा विराट् शकरी; ७-१० त्र्यवसाना अष्टपदाऽष्टिः (१० नवपदा धृतिः); ११,२०, २३-२७ पञ्चापङ्क्तिः; १२-१७ त्र्यवसाना षट्पदा शकरी; ३१ त्र्यवसाना षट्पदा जगती; ३५ पञ्चपदा त्र्यनुष्टुभाभा जगती ।

अरातीयोभ्रातृव्यस्य दुर्हादौ द्विषतः शिरः । अपि वृश्चाम्योजसा १

वर्म मद्यमयं मणिः फालाज्जातः करिष्यति । पूर्णो मन्थेन मार्गमद् रसेन सह वर्चसा २

यत् त्वां शिक्कः परावधीत् तक्षा हस्तेन वास्या ।

आपस्त्वा तस्माज्जीवलाः पुनन्तु शुचयः शुचिम् ३ १४७७

हिरण्यस्रगयं मणिः श्रद्धां यज्ञं महो दधत् । गृहे वसतु नोऽतिथिः ४

तस्मै घृतं सुरां मध्वन्नमन्नं क्षदामहे ।

स नः पितेव पुत्रेभ्यः श्रेयःश्रेयश्चित्सतु भूयोभूयः श्वःश्वो देवेभ्यो मणिरेत्य ५

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्मणिं फालं घृतश्रुतमुग्रं खदिरमोजसे ।

तमग्निः प्रत्यमुञ्चत सो अस्मै दुह आज्यं भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि ६

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्मणिं फालं घृतश्रुतमुग्रं खदिरमोजसे ।

तमिन्द्रः प्रत्यमुञ्चतौजसे वीर्यायि कम् ।

सो अस्मै बलमिद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि ७ १४७८

[मणिघारणम्]

२२

यमवध्नाद् बृहस्पतिर्मणिं फालं घृतश्रुतमुग्रं खदिरमोजसे ।
तं सोमः प्रत्यमुञ्चत महे श्रोत्राय चक्षसे ।

८ १४८५

२३ १४८५

सो अस्मै वर्च इद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि
यमवध्नाद् बृहस्पतिर्मणिं फालं घृतश्रुतमुग्रं खदिरमोजसे ।
तं सूर्यः प्रत्यमुञ्चत तेनेमा अजयद् दिशः ।

९

२४

सो अस्मै भूतिमिद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि
यमवध्नाद् बृहस्पतिर्मणिं फालं घृतश्रुतमुग्रं खदिरमोजसे ।
तं विश्वचन्द्रमा मणिमसुराणां पुरोऽजयद् दानवानां हिरण्ययीः ।

१०

२५ १४८५

सो अस्मै वाजिनं दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि
यमवध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे । तेनेमां मणिना कृषिमश्विनावभि रक्षतः ।

११

५ पटपदा

११, २०,

त भिषग्भ्यां महो दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि

१२

यमवध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे । तं विश्वत सविता मणि तेनेदमजयत् स्वः ।

सो अस्मै सनुतां दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि

१३ १४९०

यमवध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे । तमापो विश्वतीर्मणिं सदा धावन्त्यक्षिताः ।

त आभ्योऽमृतमिद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि

१४

यमवध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे । तं राजा वरुणो मणि प्रत्यमुञ्चत शंभुवम् ।

सो अस्मै सत्यमिद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि

१५

यमवध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे । तं देवा विश्वतो मणिं सर्वाँल्लोकान् युधाजयन् ।

त आभ्यो जितिमिद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि

१६

यमवध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे । तमिमं देवतां मणि प्रत्यमुञ्चन्त शंभुवम् ।

त आभ्यो विश्वमिद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि

१७

संवत्समवधतर्वास्तमवधत । संवत्सरस्तं बद्ध्वा सर्वं भूतं वि रक्षति

१८ १४९५

वधर्वाणो अवधताथर्वणा अवधत । प्रजापतिसृष्टो मणिद्विषतो मेऽधराँ अकः १९

तैर्मिनो अङ्गिरसो दस्यूनां विभिदुः पुरस्तेन त्वं द्विषतो जहि

२०

तं धाता प्रत्यमुञ्चत स भूतं व्यकल्पयत् । तेन त्वं द्विषतो जहि ।

२१ १४९८

११३० [आयुर्वेद०]

यमवध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम् ।	
स मायं मणिरागमद् रसेन सह वचसा	२२
यमवध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम् ।	
स मायं मणिरागमत् सह गोभिरजाविभिरनैन प्रजया सह	२३ १५००
यमवध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम् ।	
स मायं मणिरागमत् सह वीहियवाभ्यां महसा भूत्या सह	२४
यमवध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम् ।	
स मायं मणिरागमन्मधोर्धृतस्य धारया कीलालेन मणिः सह	२५
यमवध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम् ।	
स मायं मणिरागमदूर्जया परसा सह द्रविणेन श्रिया सह	२६
यमवध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम् ।	
स मायं मणिरागमत् तेजसा त्विष्या सह यज्ञसा कीर्त्या सह	२७
यमवध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम् ।	
स मायं मणिरागमत् सर्वाभिर्भूतिभिः सह	२८ १५०५
तमिमं देवतां मणिं मह्यं ददतु पुष्टये । अभिभुं क्षत्रवर्धनं सपरन्दम्भनं मणिम्	२९
ब्रह्मणा तेजसा सह प्रति मुञ्चामि मे शिवम् ।	
असपत्नः सपत्नहा सपत्नान मेऽधरा अकः	३०
उत्तरं द्विपतो मामयं मणिः कृणोतु देवजाः ।	
यस्य लोका इमे त्रयः पर्यो दुग्धमुपासते ।	
स मायमधि रोहतु मणिः श्रेष्ठ्याय मूर्धतः	३१
यं देवाः पितरो मनुष्या उपजीवन्ति सर्वदा ।	
स मायमधि रोहतु मणिः श्रेष्ठ्याय मूर्धतः	३२
यथा बीजमुर्वरायां कृष्टे फालेन रोहति ।	
एवा मयि प्रजा पशवोऽनैमन्नं वि रोहतु	३३ १५१०
यस्यै त्वा यज्ञवर्धन मणे प्रत्यमुचं शिवम् ।	
तं त्वं शतदक्षिण मणे श्रेष्ठ्याय जिन्वतात्	३४
एतमिधमं समाहितं जुषाणो अग्ने प्रति हर्य होमैः ।	
तस्मिन् विदेम सुमतिं स्वस्ति प्रजां चक्षुः पशून्सामिद्वे जातवेदसि ब्रह्मणा	३५ १५११

[मणिधारणम् ।]

॥ २३४ ॥ (अथर्व० १९।२८।१-१०)

ब्रह्मा (सपत्नक्षयकामः) । दर्भमणिः मन्त्रोक्ताश्च । अनुष्टुप् ।

२२	इमं बन्धामि ते मणिं दीर्घायुत्वाय तेजसे । दुर्भं सपत्नदम्भनं द्विषतस्तपनं हृदः १	
२३ १५००	द्विषतस्तापयन् हृदः शत्रूणां तापयन् मनः । दुर्हर्दिः सर्वास्त्वं दर्भं घर्म इवाभित्संतापयन् २	
२४	घर्म इवाभितपन् दर्भं द्विषतो नितपन् मणे । हृदः सपत्नानां भिन्द्वाद्भिन्द्वा इव विरुजं बलम् ३ १५१५	
२५	भिन्द्वा दर्भं सपत्नानां हृदयं द्विषतां मणे । उद्यन् त्वचमिव भूम्याः शिर एषां वि पातय ४	
२६	भिन्द्वा दर्भं सपत्नान् मे भिन्द्वा मे पृतनायतः । भिन्द्वा मे सर्वान् दुर्हर्दो भिन्द्वा मे द्विषतो मणे ५	
२७	छिन्द्वा दर्भं सपत्नान् मे छिन्द्वा मे पृतनायतः । छिन्द्वा मे सर्वान् दुर्हर्दो छिन्द्वा मे द्विषतो मणे ६	
२८ १५०५	वृश्च दर्भं सपत्नान् मे वृश्च मे पृतनायतः । वृश्च मे सर्वान् दुर्हर्दो वृश्च मे द्विषतो मणे ७	
२९	कृन्त दर्भं सपत्नान् मे कृन्त मे पृतनायतः । कृन्त मे सर्वान् दुर्हर्दो कृन्त मे द्विषतो मणे ८ १५२०	
३०	पिंश दर्भं सपत्नान् मे पिंश मे पृतनायतः । पिंश मे सर्वान् दुर्हर्दो पिंश मे द्विषतो मणे ९	
३१	विध्य दर्भं सपत्नान् मे विध्य मे पृतनायतः । विध्य मे सर्वान् दुर्हर्दो विध्य मे द्विषतो मणे १० १५२२	

॥ २३५ ॥ (अथर्व० १९।२९।१-९)

ब्रह्मा । दर्भमणिः । अनुष्टुप् ।

३३ १५१०	निक्षं दर्भं सपत्नान् मे निक्षं मे पृतनायतः । निक्षं मे सर्वान् दुर्हर्दो निक्षं मे द्विषतो मणे १	
३४	तृन्धि दर्भं सपत्नान् मे तृन्धि मे पृतनायतः । तृन्धि मे सर्वान् दुर्हर्दो तृन्धि मे द्विषतो मणे २	
३५ १५११	रुन्धि दर्भं सपत्नान् मे रुन्धि मे पृतनायतः । रुन्धि मे सर्वान् दुर्हर्दो रुन्धि मे द्विषतो मणे ३ १५२५	

मृण दर्म सपत्नान् मे मृण मे पृतनायतः ।
 मृण मे सर्वान् दुर्हादो मृण मे द्विषतो मणे ४
 मन्थं दर्म सपत्नान् मे मन्थं मे पृतनायतः ।
 मन्थं मे सर्वान् दुर्हादो मन्थं मे द्विषतो मणे ५
 पिण्डिठ दर्म सपत्नान् मे पिण्डिठ मे पृतनायतः ।
 पिण्डिठ मे सर्वान् दुर्हादो पिण्डिठ मे द्विषतो मणे ६
 ओषं दर्म सपत्नान् मे ओषं मे पृतनायतः ।
 ओषं मे सर्वान् दुर्हादो ओषं मे द्विषतो मणे ७
 दहं दर्म सपत्नान् मे दहं मे पृतनायतः ।
 दहं मे सर्वान् दुर्हादो दहं मे द्विषतो मणे ८ १५१०
 जहि दर्म सपत्नान् मे जहि मे पृतनायतः ।
 जहि मे सर्वान् दुर्हादो जहि मे द्विषतो मणे ९ १५११

॥ २३६ ॥ (अथर्व० १९।३०।१-५)

ब्रह्मा । दर्ममणिः । अनुष्टुप् ।

यत् तैर्दर्म जरामृत्युः शतं वर्मसु वर्म ते । तेनेमं वर्मिणं कृत्वा सपत्नां जहि वीर्यैः १
 शतं तैर्दर्म वर्माणि सहस्रं वीर्याणि ते । तमस्यै विश्वे त्वां देवा जरसे भर्तवा अदुः २
 त्वामाहुर्देववर्म त्वां दर्म ब्रह्मणस्पतिम् । त्वामिन्द्रस्याहुर्वर्म त्वं राष्ट्राणि रक्षसि ३
 सपत्नक्षयणं दर्म द्विषतस्तपनं हृदः । मणिं क्षत्रस्य वर्धनं तनूपानं कृणोमि ते ४ १५१५
 यत् समुद्रो अभ्यक्रन्दत् पर्जन्यो विद्युता सह ।
 ततो हिरण्ययो बिन्दुस्ततो दुर्मो अजायत ५ १५१६

॥ २३७ ॥ (अथर्व० १९।३१।१-१४)

सविता (पुष्टिकामः) । औदुम्बरमणिः । अनुष्टुप् ; ५, १२ त्रिष्टुप्, ६ विराट् प्रस्तार-
 पङ्क्तिः ; ११, १३ पञ्चपदा शकरी ; १४ विराडास्तारपङ्क्तिः ।

औदुम्बरेण मणिना पुष्टिकामाय त्रेधसा । पशूनां सर्वेषां स्फाति गोष्ठे मे सविता करतः १
 यो नो अग्निर्गर्हिपत्यः पशूनामधिपा असत् ।
 औदुम्बरो वृषा मणिः स मां सृजतु पुष्ट्या २
 करीषिणीं फलवतीं स्वधामिरां च नो गृहे ।
 औदुम्बरस्य तेजसा धाता पुष्टिं दधातु मे ३ १५१७

मणिधारणम् ।

४

५

६

७

८ १५१०

९ १५११

१

२

३ १५१२

४ १५१३

५ १५१४

६

७

८

९ १५१५

१०

११

१२

यद् द्विपाच्च चतुष्पाच्च यान्यन्नानि ये रसाः ।

गृहेऽहं त्वेषां भूमानं बिभ्रदौदुम्बरं मणिम्

पुष्टिं पशूनां परि जग्रभाहं चतुष्पदां द्विपदां यच्च धान्यम् ।

पर्यः पशूनां रसमोषधीनां बृहस्पतिः सविता मे नि यच्छातु

अहं पशूनामधिपा अंसानि मयि पुष्टं पुष्टपतिर्दधातु ।

मह्यमौदुम्बरो मणिर्द्रविणानि नि यच्छतु

उप मौदुम्बरो मणिः प्रजया च धनेन च ।

इन्द्रेण जिन्वितो मणिरा मागन्तसह वर्चसा

देवो मणिः सपत्नहा धनसा धनसातये ।

पशोरन्नस्य भूमानं गवां स्फातिं नि यच्छतु

यथाग्रे त्वं वनस्पते पुष्ट्या सह जजिषे ।

एवा धनस्य मे स्फातिमा दधातु सरस्वती

आ मे धनं सरस्वती पर्यस्फातिं च धान्यम् ।

सिनीवाल्युपा वहादयं चौदुम्बरो मणिः

त्वं मणीनामधिपा वृषासि त्वयि पुष्टं पुष्टपतिर्जजान ।

त्वयिमे वाजा द्रविणानि सर्वौदुम्बरः स त्वमस्मत् सहस्वारादरातिममतिं क्षुधं च ११

ग्रामणीरसि ग्रामणीरुत्थायाभिषिक्तोऽभि मां सिञ्च वर्चसा ।

तेजोऽसि तेजो मयि धारयाधि रयिरसि रयिं मे धेहि

पुष्टिरसि पुष्ट्या मा समङ्ग्धि गृहमेधी गृहपतिं मा कृणु ।

औदुम्बरः स त्वमस्मास्तु धेहि रयिं च नः सर्ववीरं नि यच्छ

रायस्पोषाय प्रति मुञ्चे अहं त्वाम्

अयमौदुम्बरो मणिर्वीरो वीराय वध्यते ।

स नः सनि मधुमतीं कृणोतु रयिं च नः सर्ववीरं नि यच्छातु

॥ २३८ ॥ (अथर्व० १९।३४।१-१०)

अङ्गिराः । वनस्पतिः, लिंगोक्ताः (जङ्गिडमणिः) । अनुष्टुप् ।

जङ्गिडोऽसि जङ्गिडो रक्षितासि जङ्गिडः । द्विपाच्चतुष्पादुस्माकं सर्वे रक्षतु जङ्गिडः १

या गृहस्यस्त्रिपञ्चाशीः शतं कृत्याकृतश्च ये ।

सर्वान् विनक्तु तेजसोऽरसां जङ्गिडस्करतु

४ १५४०

५

६

७

८

९ १५४५

१०

१२

१३

१४ १५५०

२ १५५१

अरसं कृत्रिमं नादमरसाः सप्त विस्रसः । अपेतो जङ्गिडामतिमिषुमस्तेव शातय ३
कृत्यादूषण एवायमथो अरातिदूषणः । अथो सहस्वान् जङ्गिडः प्र ण आयुषि तारिषत् ४
स जङ्गिडस्य महिमा परि णः पातु विश्वतः ।

विष्कन्धं येन सासह संस्कन्धमोज ओजसा ५ १५५५
त्रिष्टा देवा अजनयन् निष्ठितं भूम्यामधि । तमु त्वाङ्गिरा इति ब्राह्मणाः पूर्या विदुः ६
न त्वा पूर्वा ओषधयो न त्वा तरन्ति या नवाः ।

विवाध उग्रो जङ्गिडः परिपाणः सुमङ्गलः ७
अथोपदान भगवो जङ्गिडामितवीर्य । पुरा तं उग्रा ग्रसत उपेन्द्रो वीर्यं ददौ ८
उग्र इत् ते वनस्पत इन्द्र ओजमानमा दधौ । अमीवाः सर्वाश्चातयं जहि रक्षोस्योषधे ९
आशरीकं विशरीकं बलासं पृष्ट्यामयम् । त्वमानं विश्वशारदमरसां जङ्गिडस्करत् १० १५६०

॥ २३९ ॥ (अथर्व० १९।३५।१-५)

अङ्गिराः । वनस्पतिः (जङ्गिडः) । अनुष्टुप् । ३ पथ्यापङ्क्तिः । ४ निचृत् त्रिष्टुप् ।

इन्द्रस्य नाम गृह्णन्त ऋषयो जङ्गिडं ददुः ।
देवा यं चक्रुर्भेषजमग्रे विष्कन्धदूषणम् १
स नो रक्षतु जङ्गिडो धनपालो धनेव । देवा यं चक्रुर्ब्राह्मणाः परिपाणमरातिहम् २
दुर्हर्दिः संघोरं चक्षुः पापकृत्वानमागमम् ।
तांस्त्वं सहस्रचक्षो प्रतीबोधेन नाशय परिपाणोऽसि जङ्गिडः ३
परि मा दिवः परि मा पृथिव्याः पर्यन्तरिक्षात् परि मा वीरुद्धयः ।
परि मा भुतात् परि मोत भव्याद् दिशोदिशो जङ्गिडः पात्वस्मान् ४
य ऋणवो देवकृता य उतो ववृतेऽन्यः ।
सर्वास्तान् विश्वभेषजोऽरसां जङ्गिडस्करत् ५ १५६५

॥ २४० ॥ (अथर्व० १९।३६।१-६)

ब्रह्मा । शतवारो मणिः । अनुष्टुप् ।

शतवारो अनीनशद् यक्षमान् रक्षोसि तेजसा ।
आरोहन् वर्चसा सह मणिर्दुर्णामचातनः १
शृङ्गाभ्यां रक्षो नुदते मूलेन यातुधान्यः । मध्येन यक्षं बाधते नैनं पाप्मातिं तत्रति २
ये यक्षमासो अर्भका महान्तो ये च शब्दिनः ।
सर्वा दुर्णामहा मणिः शतवारो अनीनशत् ३ १५६८

शतं वीरानजनयच्छतं यक्षमानपावपत् । दुर्गाभिः सर्वान् हत्वा रक्षांसि ध्रुते ४
 हिरेण्यशृङ्ग ऋषभः शतवारो अयं मणिः । दुर्गाभिः सर्वास्तुड्ढ्वा रक्षांस्यकमीत् ५ १५७०
 शतमहं दुर्गाभिनां गन्धर्वाप्सरसां शतम् । शतं शश्वन्वतीनां शतवारिण वारये ६ १५७१

॥ २४१ ॥ (अथर्व० १९।४६।१-७)

प्रजापतिः । अस्तृतमणिः । त्रिष्टुप् ; १ पञ्चपदा ज्योतिष्मती त्रिष्टुप्, २ षट्पदा भुरिक्शकरी;
 ३, ७ पञ्चपदा पथ्यापङ्क्तिः; ४ चतुष्पदा; ५ पञ्चपदा अतिशकरी; ६ पञ्चपदोष्णिग्गर्भा
 विराट् जगती ।

प्रजापतिष्ठा बध्नात् प्रथममस्तृतं वीर्यायि कम् ।

तत् ते बध्नाभ्यायुषे वर्चस ओजसे च बलाय चास्तृतस्त्वाभि रक्षतु १

ऊर्ध्वस्तिष्ठतु रक्षन्नप्रमादमस्तृतेमं मा त्वा दभन् पणयो यातुधानाः ।

इन्द्र इव दस्यूनव ध्रुन्व पृतन्यतः सर्वाछत्रून् वि षहस्वास्तृतस्त्वाभि रक्षतु २

शतं च न प्रहरन्तो निघ्नन्तो न तस्तिरे ।

तस्मिन्निन्द्रः पर्यदत्त चक्षुः प्राणमथो बलमस्तृतस्त्वाभि रक्षतु ३

इन्द्रस्य त्वा वर्मणा परि धापयामो यो देवानामधिराजो बभूव ।

पुनस्त्वा देवाः प्र णयन्तु सर्वेऽस्तृतस्त्वाभि रक्षतु ४ १५७५

अस्मिन् मणावेकशतं वीर्याणि सहस्रं प्राणा अस्मिन्नस्तृते ।

व्याघ्रः शत्रून्भि तिष्ठ सर्वान् यस्त्वा पृतन्यादधरः सो अस्त्वस्तृतस्त्वाभि रक्षतु ५

पृतादुल्लसो मधुमान् पर्यस्वान्तसहस्रप्राणः शतयोनिर्वयोधाः ।

शुभ्रं मयोभूथोर्जस्वांश्च पर्यस्वांश्चास्तृतस्त्वाभि रक्षतु ६

यथा त्वमुत्तरोऽसौ असपत्नः सपत्नहा ।

सजातानामसद् वशी तथा त्वा सविता करदस्तृतस्त्वाभि रक्षतु ७ १५७८

अरिष्टनाशनम् । (१५७९-१५९०)

॥ २४२ ॥ (अथर्व० ६।२७।१-३)

भृगुः । यमः, निर्रक्तिः (अरिष्टक्षयणम्) । जगती, २ त्रिष्टुप् ।

देवाः कपोत इषितो यदिच्छन् दूतो निर्रक्त्या इदमाज्जगाम ।

तस्मा अर्चाम कृण्वाम निर्रक्तिं शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे १

शिवः कपोत इषितो नो अस्त्वनागा देवाः शकुनो गृहं नः ।

अग्निर्हि विप्रो जुषतां हविर्नः परि हेतिः पक्षिणी नो वृणक्तु २ १५८०

हेतिः पक्षिणी न दंभात्यस्मान्नाष्ट्री पदं कृणुते अग्निधाने ।

शिवो गोभ्य उत पुह्वेभ्यो नो अस्तु मा नो देवा इह हिंसीत् कपोतः

३ १५८१

॥ २४३ ॥ (अथर्व० ६।२८।१-३)

भृगुः । यमः, निऋतिः (अरिष्टक्षयणम्) । १ त्रिष्टुप्, २ अनुष्टुप्, ३ जगती ।

ऋचा कपोतं नुदत प्रणोदुमिषं मदन्तः परि गां नयामः ।

संलोभयन्तो दुरिता पदानि हित्वा न ऊर्जं प्र पदात् पथिष्ठः

१

परीमेदुश्चिमर्षत परीमे गामनेपत ।

देवेष्वकृत श्रवः क इमां आ दधर्षति

२

यः प्रथमः प्रवर्तमाससाद बहुभ्यः पन्थामनुपस्पशानः ।

योऽस्येशे द्विपदो यश्चतुष्पदस्तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे

३ १५८४

॥ २४४ ॥ (अथर्व० ६।२९।१-३)

भृगुः । यमः, निऋतिः (अरिष्टक्षयणम्) । (बृहती) १-२ विराण्नाम गायत्री, ३ ज्यवसाना सप्तपदा विराडाष्टिः ।

अमून् हेतिः पतत्रिणी न्येति यदुल्लको वदति मोघमेतत् ।

यद् वा कपोतः पदमग्नौ कृणोति

१ १५८५

यौ ते दूतौ निऋत इदमेतोऽप्रहितौ प्रहितौ वा गृहं नः ।

कपोतोलूकाभ्यामपदं तदस्तु

२

अवैरहत्यायेदमा पपत्यात् सुवीरताया इदमा संसद्यात् ।

पराङ्मुख परा वद पराचीमनु संवतम् ।

यथा यमस्य त्वा गृहेऽसं प्रतिचाकशानाभूकं प्रतिचाकशान्

३ १५८६

॥ २४५ ॥ (अथर्व० ६।८०।१-३)

अथर्वा । चन्द्रमाः (अरिष्टक्षयणम्) । १ भुरिक्, २ अनुष्टुप्, ३ प्रस्तारपङ्क्तिः ।

अन्तरिक्षेण पतति विश्वा भूतावचाकशत् ।

शुनो दिव्यस्य यन्महस्तेना ते हविषा विधेम

१

ये त्रयः कालकाञ्जा दिवि देवा इव श्रिताः ।

तान्तसर्वानह उतयेऽस्मा अरिष्टनातये

२

अप्सु ते जन्म दिवि ते सधस्यं समुद्रे अन्तर्महिमा ते पृथिव्याम् ।

शुनो दिव्यस्य यन्महस्तेना ते हविषा विधेम

३ १५९०

कृत्यादूषणम् । (१५९१-१६५३)

॥ २४६ ॥ (अथर्व० ५।१४।१-१३)

शुक्रः । वनस्पतिः, कृत्यापरिहरणम् । अनुष्टुप् ; ३, ५, १२ भुरिक् ; ८ त्रिपदा विराट् ;
१० निचृदबृहती, ११ त्रिपदा साम्नी त्रिष्टुप् ; १३ स्वराट् ।

सुपर्णस्त्वान्विन्दत् सुकरस्त्वाखनन्नसा । दिप्सौपधे त्वं दिप्सन्तमव कृत्याकृतं जहि १

अव जहि यातुधानानव कृत्याकृतं जहि ।

अथो यो अस्मान् दिप्सति तमु त्वं जह्योषधे २

रिश्यस्येव परीशासं परिकृत्य परि त्वचः ।

कृत्या कृत्याकृतं देवा निष्कर्मिव प्रति सुश्वत ३

पुनः कृत्या कृत्याकृतं हस्तगृह्य परा णय ।

समक्षमस्मा आ धेहि यथा कृत्याकृतं हनत् ४

कृत्याः सन्तु कृत्याकृतं शपथः शपथीयते ।

सुखो रथ इव वर्ततां कृत्या कृत्याकृतं पुनः ५ १५९५

यदि स्त्री यदि वा पुमान् कृत्या चकार पाप्मने ।

तामु तस्मै नयामस्यश्चमिवाश्वाभिधान्या ६

यदि वासि देवकृता यदि वा पुरुषैः कृता । तां त्वा पुनर्णयामसीन्द्रेण सयुजा वयम् ७

अथे पृतनाषाट् पृतनाः सहस्र । पुनः कृत्या कृत्याकृतं प्रतिहरणेन हरामसि ८

कृत्यधनि विध्य तं यश्चकार तमिजहि । न त्वामचक्रुषे वयं वधाय सं शिशीमहि ९

पुत्र इव पितरं गच्छ स्वज इवाभिष्टितो दश ।

बन्धमिवावक्रामी गच्छ कृत्यै कृत्याकृतं पुनः १० १६००

उदेणीवं वारण्यमिस्कन्दं मृगीवं । कृत्या कर्तारमृच्छतु ११

इषा क्रजीयः पततु द्यावापृथिवी तं प्रति ।

सा तं मुगमिव गृह्णातु कृत्या कृत्याकृतं पुनः १२

अग्निरिवैतु प्रतिकूलमनुकूलमिवोदकम् । सुखो रथ इव वर्ततां कृत्या कृत्याकृतं पुनः १३ १६०३

॥ २४७ ॥ (अथर्व० ५।३।१-१२)

शुक्रः । कृत्यादूषणम् (कृत्यापरिहरणम्) । अनुष्टुप् ; ११ बृहतीगर्भाऽनुष्टुप् ; १२ पथ्याबृहती ।
पां तं चक्रुरामे पात्रे यां चक्रुर्मिश्रधान्ये ।

आमे मांसं कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम् १ १६०४
[आयुर्वेद०]

यां ते चक्रुः कृकवाकावजे वा यां कुरीरिणि ।
अव्यां ते कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्
यां ते चक्रुः केशके पशुनामुभयादति ।
गर्दभे कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्
यां ते चक्रुः मूलायां वल्लभं वा नराच्याम् ।
क्षेत्रे ते कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्
यां ते चक्रुः गर्हिपत्ये पूर्वाभावात् दुश्चितः ।
शालायां कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्
यां ते चक्रुः सभायां यां चक्रुः धिदेवने ।
अक्षेपु कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्
यां ते चक्रुः सेनायां यां चक्रुः शिवायुधे ।
दुन्दुभौ कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्
यां ते कृत्यां कूपेऽवदधुः श्मशाने वा निचरुः ।
सवानि कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्
यां ते चक्रुः पुरुषास्थे अग्रौ संकसुके च याम् ।
प्रोकं निर्दाहं कृष्यादं पुनः प्रति हरामि ताम्
अपथेना जभारैणां तां पथेतः प्र हिंमसि ।
अधीरो मर्याधीरिभ्यः सं जभाराचित्या
यश्चकार न शशाक कर्तुं शश्रे पादमङ्गुरिम् । चकार भद्रमसभ्यमभगो भगवद्भ्यः ११
कृत्याकृतं वलगिनं मूलिनं शपथेयम् ।
इन्द्रस्तं हन्तु महता वधेनाग्निर्विध्यत्वस्तयां

२ १६०५

३

४

५

६

७ १६१०

८

९

१०

११

१२ १६१५

॥ २४८ ॥ (अथर्व० १०।१।१-३२)

प्रत्यङ्गिरसः । कृत्यादूषणम् । अनुष्टुप् ; १ महावृहती ; २ विराणनाम गायत्री ; ९ पथ्यापङ्क्तिः ;
१२ पङ्क्तिः ; १३ उरोवृहती ; १५ चतुष्पदा विराङ्जगती ; १७, २०, २४ प्रस्तारपङ्क्तिः
(२० विराङ्) ; १६, १८ त्रिष्टुप् ; १९ चतुष्पदा जगती ; २२ एकावसाना द्विपदाऽऽर्ची
उष्णिक् ; २३ त्रिपदा भुरिष्विषमा गायत्री ; २८ त्रिपदा गायत्री ; २९ मध्ये ज्योतिष्मती
जगती ; ३२ द्व्यनुष्टुप्गर्भा पञ्चपदाऽतिजगती ।

यां कल्पयन्ति बहवो वधूमिव विश्वरूपां हस्तकृतां चिकित्सवः ।
सारदेत्वप नुदाम एनाम्

१ १६१६

१६०५-१६३३]

यादूषणम् ।

शीर्षवतीं नस्वतीं कृणिनीं कृत्याकृता संभृता विश्वरूपा । सारादेत्वपं नुदाम एनाम् २
 शूद्रकृता राजकृता स्त्रीकृता ब्रह्मभिः कृता । जाया पत्या नुत्तेव कर्तारं बन्ध्वच्छतु ३
 अनयाहमोषध्या सर्वाः कृत्या अदूढषम् । यां क्षेत्रे चक्रुर्या गोषु यां वा ते पुरुषेषु ४
 अघमस्त्वषकृते शपथः शपथीयते । प्रत्यक् प्रतिप्रहिण्मो यथा कृत्याकृतं हनत् ५ १६२०

प्रतीचीनं आङ्गिरसोऽध्यक्षो नः पुरोहितः ।

प्रतीचीः कृत्या आकृत्यामून् कृत्याकृतो जहि

६

यस्त्वोवाच परेहीति प्रतिकूलमुदाय्यम् ।

तं कृत्येऽभिनिवर्तस्व मास्मानिच्छो अनागसः

७

यस्ते परूषि संदुधौ रथस्येव भुर्धिया । तं गच्छ तत्र तेऽयं नमज्ञातस्तेऽयं जनः ८

ये त्वा कृत्वालेभिरे विद्वला अभिचारिणः ।

शम्बीडेदं कृत्यादूषणं प्रतिवर्त्म पुनःसरं तेन त्वा स्नपयामसि

९

यद् दुर्मगां प्रस्नपितां मृतवत्सामुपेयिम । अपैतु सर्वं मत् पापं द्रविणं मोषं तिष्ठतु १० १६२५

यत् तं पितृभ्यो ददतो यज्ञे वा नाम जगृहुः ।

संदेह्याडेत् सर्वस्मात् पापादिमा मुञ्चन्तु त्वौषधीः

११

देवैसात् पित्र्यान्नामग्राहात् संदेह्यादभिनिष्कृतात् ।

मुञ्चन्तु त्वा वीरुधो वीर्येण ब्रह्मण ऋग्भिः पयंस ऋषीणाम्

१२

यथा वातश्चयावयति भूम्या रेणुमन्तरिक्षाच्चाभ्रम् ।

एवा मत् सर्वं दुर्भूतं ब्रह्मनुत्तमपायति

१३

अपं कामं नानंदती विनद्धा गर्दभीव ।

कर्तृन् नक्षस्वेतो नुत्ता ब्रह्मणा वीर्याविता

१४

अयं पन्थाः कृत्येति त्वा नयामोऽभिप्रहितां प्रति त्वा प्र हिण्मः ।

तेनाभि याहि भञ्जत्यनस्वतीव वाहिनीं विश्वरूपा कुरुटिनीं

१५ १६३०

पराक् ते ज्योतिरपथं ते अर्वागन्यत्रास्मदयना कृणुष्व ।

परैहि नवति नाव्याडे अति दुर्गाः स्रोत्या मा क्षणिष्ठाः परैहि

१६

वातं हव वृक्षान् नि मृणीहि पादय मा गामश्च पुरुषमुच्छिष एषाम् ।

कर्तृन् निवृत्येतः कृत्येऽप्रजास्त्वायं बोधय

१७

यां ते बर्हिषि यां इमंशाने क्षेत्रे कृत्यां वल्लगं वा निचरुनुः ।

अमौ वा त्वा गार्हपत्येऽभिचेरुः पाकं सन्तं धीरतरा अनागसम्

१८ १६३३

*

- उपाहेतमनुबुद्धं निखातं वैरं त्सार्यन्वविदाम् कर्तुम् ।
तदेतु यत् आभूतं तत्रार्थं इव वि वर्ततां हन्तुं कृत्याकृतः प्रजाम् १९
स्वायसा असयः सन्ति नो गृहे विद्वा तै कृत्ये यतिधा परूपि ।
उत्तिष्ठैव परेहीतोऽज्ञाते किमिहेच्छसि २० १६३५
ग्रीवास्ते कृत्ये पादौ चापि कर्स्यामि निर्देव ।
इन्द्राग्नी अस्मान् रक्षतां यौ प्रजानां प्रजावती २१
सोमो राजाधिपा मृडिता च भूतस्य नः पतयो मृडयन्तु २२
भवाशर्वावस्यतां पापकृते कृत्याकृते । दुष्कृते विद्युतं देवहेतिम् २३
यद्येयथ द्विपदी चतुष्पदी कृत्याकृता संभृता विश्वरूपा ।
सेतोऽष्टापदी भूत्वा पुनः परेहि दुच्छने २४
अभ्यर्त्ताक्ता स्वर्िकृता सर्वं भरन्ती दुरितं परेहि ।
जानीहि कृत्ये कर्तारं दुहितेव पितरं स्वम् २५ १६४०
परेहि कृत्ये मा तिष्ठो विद्वस्यैव पदं नय ।
मृगः स मृगयुस्त्वं न त्वा निकर्तुमर्हति २६
उत हन्ति पूर्वासिनं प्रत्यादायापरं इष्वा । उत पूर्वस्य निघ्नतो नि हन्त्यपरः प्रति २७
एतद्वि शृणु मे वचोऽर्थेहि यत् एयथ । यस्त्वा चकार तं प्रति २८
अनागोहत्या वै भीमा कृत्ये मा नो गामश्च पुरुषं वधीः ।
यत्रयत्रासि निहिता ततस्त्वोत्थापयामसि पूर्णाह्वीयसी भव २९
यदि स्थ तमसावृता जालेनाभिहिता इव ।
सर्वाः संलुप्येतः कृत्याः पुनः कर्त्रे प्र हिंमसि ३० १६४५
कृत्याकृतो वलगिनोऽभिनिष्कारिणः प्रजाम् ।
मृणीहि कृत्ये मोच्छिषोऽमून् कृत्याकृतो जहि ३१
यथा सूर्यो मुच्यते तमसस्परि रात्रिं जहात्युपसंश्च केतून् ।
एवाहं सर्वं दुर्भूतं कर्त्रे कृत्याकृता कृतं हस्तीव रजो दुरितं जहामि ३२ १६४७

॥ २४९ ॥ (अथर्व० २.१४।१-६)

चातनः । शालाग्निदैवत्यं (दस्युनाशनम्) । अनुष्टुप्, २ भुक्ति, ४ उपरिष्ठाद्विराड्वृहती ।

निःशालां धृष्णं धिषणमेकवाद्यां जिघत्स्वम् ।

सर्वाश्चण्डस्य नृप्यो नाशयामः सदान्वाः

१ १६४८

१६३४-१६६०]
[आयुर्वेदम् ।

निर्वो गोष्ठादजामसि निरक्षान्निरुपानसात् ।

निर्वो मगुन्या दुहितरो गृहेभ्यश्चातयामहे

२

असौ यो अंधराद् गृहस्तत्र सन्त्वराय्यः ।

३ १६५०

तत्र सेदिन्युच्यतु सर्वाश्च यातुधान्यः

भूतपतिर्निरजत्विन्द्रश्चेतः सदान्वाः ।

गृहस्य बुध्न आसीनास्ता इन्द्रो वज्रेणाधि तिष्ठतु

४

यदि स्थ क्षेत्रियाणां यदि वा पुरुषेपिताः ।

यदि स्थ दस्युभ्यो जाता नश्यतेतः सदान्वाः

५

परि धामान्यासामाशुर्गामिवासरन् ।

अजैप सर्वांनाजीन्वो नश्यतेतः सदान्वाः

६ १६५३

पापादिनाशनम् । (१६५४-१६६०)

॥ २५० ॥ (अथर्व० १।१०।१-४)

अथवा । असुरो वरुणः (पाश-विमोचनम्) । त्रिष्टुप् । ३ ककुम्भत्यनुष्टुप्, ४ अनुष्टुप् ।

अयं देवानामसुरो वि राजति वशा हि सत्या वरुणस्य राज्ञः ।

ततस्परि ब्रह्मणा शाशदान उग्रस्य मन्योरुदिमं नयामि

१

नमस्ते राजन् वरुणास्तु मन्यवे विश्वं ह्युग्र निचिकेपि द्रुग्धम् ।

सहस्रमन्यान् प्र सुवामि साकं शतं जीवाति शरदुस्तवायम्

२ १६५५

यदुवकथानृतं जिह्या वृजिनं बहु । राज्ञस्त्वा सत्यधर्मणो मुञ्चामि वरुणादुहम्

३

मुञ्चामि त्वा वैश्वानरादण्वानमहतस्परि ।

सजातानुग्रेहा वंदु ब्रह्म चापं चिकीहि नः

४ १६५७

॥ २५१ ॥ (अथर्व० १।३१।१-४)

ब्रह्मा । आशापालाः, [वास्तोष्पतिः] (पाशमोचनम्) । अनुष्टुप्, ३ विराट् त्रिष्टुप् ।

४ पराऽनुष्टुप् त्रिष्टुप् ।

आशानामाशापालेभ्यश्चतुर्भ्यो अमृतेभ्यः । इदं भूतस्याध्यक्षेभ्यो विधेम हविषा वयम् १

य आशानामाशापालाश्चत्वार स्थनं देवाः ।

ते नो निर्कृत्याः पार्श्वेभ्यो मुञ्चतांहसोअंहसः

२

अस्मामस्त्वा हविषा यजाम्यश्लोणस्त्वा घृतेन जुहोमि ।

य आशानामाशापालस्तुरीयो देवः स नः सुभूतमेह वक्षत्

३ १६६०

स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्यः ।
विश्वं सुभूतं सुविदत्रं नो अस्तु ज्योगेव दशेभ्यः सूर्यम्

४ १६६१

॥ २५२ ॥ (अथर्व० २।१०।१-८)

भृग्वक्त्रिः । १-८ द्यावापृथिवी, ब्रह्म; २ अग्निः, आपः, ओषधयः, सोमः; ३ वातः, दिशः; ४-८ वातपत्नी, सूर्यः, यक्ष्मं, निर्ऋतिः (पाशमोचनम्) । १ त्रिष्टुप्; २ सप्तपदाऽष्टिः; ३-५, ७-८ सप्तपदा धृतिः; ६ सप्तपदाऽत्यष्टिः; ८ (१-३) द्वौ पादौ उष्णिहौ ।

क्षेत्रियात् त्वा निर्ऋत्या जामिशंसाद् द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात् ।

अनागसं ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम्

१

शं ते अग्निः सहाद्भिरस्तु शं सोमः सहौषधीभिः ।

एवाहं त्वां क्षेत्रियान् निर्ऋत्या जामिशंसाद् द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात् । अना० । २

शं ते वातो अन्तरिक्षे वयो धाच्छं ते भवन्तु प्रदिशश्चतस्रः । एवाहं० । अना० । ३

इमा या देवीः प्रदिशश्चतस्रो वातपत्नीरभि सूर्यो विचष्टे । एवाहं० । अना० । ४ १६६५

तासु त्वान्तर्जरस्या दधामि प्र यक्ष्म एतु निर्ऋतिः पराचैः । एवाहं० । अना० । ५

अमुकथा यक्ष्माद् दुरितादवद्याद् द्रुहः पाशाद् ग्राह्याश्चोदमुकथाः । एवाहं० । अना० । ६

अहा अरातिमविदः स्योनमप्यभूर्भद्रे सुकृतस्य लोके । एवाहं० । अना० । ७

सूर्यमृतं तमसो ग्राह्या अर्धे देवा मुञ्चन्तौ असृजन्निरेणसः ।

एवाहं त्वां क्षेत्रियान् निर्ऋत्या जामिशंसाद् द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात् ।

अनागसं ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम्

८ १६६९

॥ २५३ ॥ (अथर्व० ६।११।१-३)

अथर्वा । अग्निः (पाशमोचनम्) त्रिष्टुप् ।

मा ज्येष्ठं वधीदुयमग एषां मूलबर्हणात् परि पाद्येनम् ।

स ग्राह्याः पाशान् वि चृत प्रजानन् तुभ्यं देवा अनु जानन्तु विश्वे

उन्मुञ्च पाशांस्त्वमग एषां त्रयस्त्रिभिरुत्सिता येभिरासन् ।

स ग्राह्याः पाशान् वि चृत प्रजानन् पितापुत्रौ मातरं मुञ्च सर्वान्

येभिः पाशैः परिवित्तो विवद्भोऽङ्गेअङ्ग आपित उत्सितश्च ।

वि ते मुच्यन्तां त्रिमुचो हि सन्ति भ्रूणानि पूषन् दुरितानि मृक्ष

१ १६७०

२

३ १६७१

पादिनाशनम् ।

१६६१-१६८३]

॥ २५४ ॥ (अथर्व० ६।११९।१-३)

कौशिकः । वैश्वानरोऽग्निः [आनृण्यम्] (पाशमोचनम्) । त्रिष्टुप् ।

४ १६६१

वातपत्नी,
पदा

यददीव्यन्नमहं कृणोम्यदास्यन्नम उत संगुणामि ।

वैश्वानरो नो अधिपा वसिष्ठ उदिन्नयाति सुकृतस्य लोकम् १

वैश्वानराय प्रति वेदयामि यद्यृणं संगरो देवतासु ।

स एतान् पाशान् विचर्त वेदु सर्वानथ पक्वेन सह सं भवेम २

वैश्वानरः पविता मा पुनातु यत् संगरमभिभवाभ्याशाम् ।

अनाजान् मनसा याचमानो यत् तत्रैनो अप तत् सुवामि ३ १६७५

॥ २५५ ॥ (अथर्व० ७।८३।१-४)

गुणशेषः । वरुणः (पाशमोचनम्) । १ अनुष्टुप् २ पथ्यापङ्क्तिः; ३ त्रिष्टुप्, ४ बृहतीगर्भा त्रिष्टुप् ।

२

३

४ १६६५

५

६

७

८ १६६९

असु ते राजन् वरुण गृहो हिरण्ययो मिथः ।

ततो धृतव्रतो राजा सर्वा धामानि मुञ्चतु १

धाम्नो धाम्नो राजन्नितो वरुण मुञ्च नः ।

यदापो अद्या इति वरुणेति यदूचिम ततो वरुण मुञ्च नः २

उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय ।

अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम ३

प्रास्मत् पाशान् वरुण मुञ्च सर्वान् य उतमा अधमा वारुणा ये ।

दुष्यन्त्यं दुरितं नि ष्वास्मदथ गच्छेम सुकृतस्य लोकम् ४ १६७९

॥ २५६ ॥ (अथर्व० ७।७८।१-२)

अथर्वा । अग्निः (बन्धमोचनम्) । १ परोष्णिक्, २ त्रिष्टुप् ।

वि ते मुञ्चामि रशनां वि योक्त्रं वि नियोजनम् । इहैव त्वमजस एध्यग्रे १ १६८०

अस्मै क्षत्राणि धारयन्तमग्रे युनज्मि त्वा ब्रह्मणा दैव्येन ।

दीदिवस्मभ्यं द्रविणेह भद्रं प्रेमं वोचो हविर्दा देवतासु २ १६८१

॥ २५७ ॥ (अथर्व० ६।२५।१-३)

शुनःशेषः । मन्याविनाशनम् । अनुष्टुप् ।

२

३ १६७९

पञ्च च याः पञ्चाशच्च संयन्ति मन्या अभि ।

इतस्ताः सर्वा नश्यन्तु वाका अपचितामिव १

सप्त च याः सप्ततिश्च संयन्ति ग्रैव्या अभि ।

इतस्ताः सर्वा नश्यन्तु वाका अपचितामिव २ १६८३

नव च या नवतिश्च संयन्ति स्कन्ध्या अभि ।
इतस्ताः सर्वा नश्यन्तु वाका अपचितामिव

३ १६८४

॥ २५८ ॥ (अथर्व० ४।२३।१-७)

मृगारः । प्रचेता अग्निः (पाप-मोचनम्) । त्रिष्टुप्, ३ पुरस्ताज्ज्योतिष्मती, ४ अनुष्टुप्, ६ प्रस्तारपङ्क्तिः ।

अग्नेर्मन्वे प्रथमस्य प्रचेतसः पाञ्चजन्यस्य बहुधा यमिन्धते ।

विशोविशः प्रविशिवांसमीमहे स नो मुञ्चत्वंहसः

१ १६८५

यथा हव्यं वहसि जातवेदो यथा यज्ञं कल्पयसि प्रजानन् ।

एवा देवेश्यः सुमतिं न आ वह स नो मुञ्चत्वंहसः

२

यामन्यामनुपयुक्तं वहिष्ठं कर्मन्कर्मन्नाभंगम् ।

अग्निमीडे रक्षोहणं यज्ञवृधं घृताहुतं स नो मुञ्चत्वंहसः

३

सुजातं जातवेदसमग्निं वैश्वानरं विभुम् । हव्यवाहं हवामहे स नो मुञ्चत्वंहसः

४

येन ऋषयो बलमद्योतयन् युजा येनासुराणामयुवन्त मायाः ।

येनाग्निना पणीनिन्द्रो जिगाय स नो मुञ्चत्वंहसः

५

येन देवा अमृतमन्वविन्दन् येनौषधीर्मधुमतीरकृण्वन् ।

येन देवाः स्वराभरन्तस् नो मुञ्चत्वंहसः

६ १६९०

यस्येदं प्रदिशि यद् विरोचते यज्जातं जनितव्यं च केवलम् ।

स्तौम्यग्निं नाथितो जोहवीमि स नो मुञ्चत्वंहसः

७ १६९१

॥ २५९ ॥ (अथर्व० ४।२४।१-७)

मृगारः । इन्द्रः (पापमोचनम्) । त्रिष्टुप्, १ शाकरीगर्भा पुरःशकरी ।

इन्द्रस्य मन्महे शश्वदिदस्य मन्महे वृत्रघ्न स्तोमा उप मेम आगुः ।

यो द्वाशुपः सुकृतो हवमेति स नो मुञ्चत्वंहसः

१

य उग्रीणामुग्रवाहुर्ययुर्यो दानवानां बलमारुरोज ।

येन जिताः सिन्धवो येन गावः स नो मुञ्चत्वंहसः

२

यश्चर्षणिप्रो वृषभः स्वर्विद् यस्मै ग्रावाणः प्रवदन्ति नृम्णम् ।

यस्याध्वरः समहोता मदिष्ठः स नो मुञ्चत्वंहसः

३

यस्य वशासं ऋषभासं उक्षणो यस्मै मीयन्ते स्वरवः स्वर्विदे ।

यस्मै शुक्रः पवते ब्रह्मशुम्भितः स नो मुञ्चत्वंहसः

४ १६९५

यस्य जुष्टिं सोमिनः कामयन्ते यं हवन्त इषुमन्तं गर्विष्ठौ ।

यस्मिन्नर्कः शिश्रिये यस्मिन्नोजः स नो मुञ्चत्वंहसः

५ १६९६

[१६८४-१७०८]

मदिनाशनम् ।

३ १६८४

रपङ्क्तिः ।

१ १६८५

२

३

४

५

६ १६९०

७ १६९१

१

२

३

४ १६९५

५ १६९६

यः प्रथमः कर्मकृत्याय जज्ञे अस्य वीर्यं प्रथमस्यानुबुद्धम् ।

येनोद्यतो वज्रोऽभ्यायताहिं स नो मुञ्चत्वंहसः

यः संग्रामानयति सं युधे वशी यः पुष्टानि संसृजति द्वयानि ।

स्तौमीन्द्रं नाथितो जौहवीमि स नो मुञ्चत्वंहसः

॥ २६० ॥ (अथर्व० ४।२५।१-७)

मृगारः । सविता, वायुः (पापमोचनम्) । । त्रिष्टुप्, ३ अतिशकरी, ७ पथ्याबृहती ।

वायोः सवितुर्विदधानि मन्महे यावात्मन्वद् विशथो यौ च रक्षथः ।

यौ विश्वस्य परिभू बभूवथुस्तौ नो मुञ्चत्वमंहसः

ययोः संख्याता वरिमा पार्थिवानि याभ्यां रजो युपितमन्तरिक्षे ।

ययोः प्रायं नान्वानशे कश्चन तौ नो मुञ्चत्वमंहसः

तव व्रते नि विशन्ते जनास्त्वय्युदिते प्रेरते चित्रमानो ।

युवं वायो सविता च भुवनानि रक्षथस्तौ नो मुञ्चत्वमंहसः

अपेता वातो सविता च दुष्कृतमप रक्षांसि शिर्मिदां च सेधतम् ।

सं ब्रूज्यां सृजथः सं ब्रूनेन तौ नो मुञ्चत्वमंहसः

रयि मे पोषे सवितोत वायुस्तनू दक्षमा सुवतां सुशेवम् ।

अयस्मताति मह इह धत्तं तौ नो मुञ्चत्वमंहसः

प्र सुमतिं सवितर्वाय ऊतये महस्वन्तं मत्सरं मादयाथः ।

अवाग् वामस्य प्रवतो नि यच्छतं तौ नो मुञ्चत्वमंहसः

उप श्रेष्ठा न आशिषो देवयोर्धामन्नस्थिरन् ।

स्तौमि देवं सवितारं च वायुं तौ नो मुञ्चत्वमंहसः

॥ २६१ ॥ (अथर्व० ४।२६।१-७)

मृगारः । द्यावापृथिवी (पापमोचनम्) । । त्रिष्टुप्, १ अष्टिः, २-३ जगती,

७ शाकरगर्भातिमध्येज्योतिः ।

मुने वा द्यावापृथिवी सुभोजसौ सचेतसौ ये अप्रथेथाममिता योजनानि ।

प्रतिष्ठे ह्यभवतं वसनां ते नो मुञ्चत्वमंहसः

प्रतिष्ठे ह्यभवतं वसनां प्रवृद्धे देवी सुभगे उरूची ।

द्यावापृथिवी भवतं मे स्योने ते नो मुञ्चत्वमंहसः

असतापे सुतपसौ ह्रुवेऽहमुर्वी गम्भीरे कविभिर्नमस्ये । द्यावापृथिवी० ।

१७ दै० [आयुर्वेद०]

ये अमृतं विभृथो ये हवींषि ये स्रोत्या विभृथो ये मनुष्यान् ।
 द्यावापृथिवी भवंतं मे स्योने ते नो मुञ्चतमंहसः ।
 ये उस्त्रिया विभृथो ये वनस्पतीन् ययौर्वा विश्वा भुवनान्यन्तः ।
 द्यावापृथिवी भवंतं मे स्योने ते नो मुञ्चतमंहसः ।
 ये कीलालेन तर्पयथो ये घृतेन याभ्यामृते न किं चन शक्नुवन्ति ।
 द्यावापृथिवी भवंतं मे स्योने ते नो मुञ्चतमंहसः ।
 यन्मेदमभिश्चोचति येनयेन वा कृतं पौरुषेयान्न दैवात् ।
 स्तौमि द्यावापृथिवी नाथितो जौहवीमि ते नो मुञ्चतमंहसः ।

४

५ १७१०

६

७ १७११

॥ २६२ ॥ (अथर्व० ४।२७।१-७) [पापमोचनम्] ।×

॥ २६३ ॥ (अथर्व० ४।२८।१-७)

मृगारोऽथर्वा वा । भवाशर्वो रुद्रो वा । (पापमोचनम्) । त्रिष्टुप्, १ अतिजागतगर्भा भुरिक् ।
 भवाशर्वो मन्वे वां तस्य वित्तं ययौर्वाभिदं प्रदिशि यद् विरोचते ।
 यावस्येशाथे द्विपदो यौ चतुष्पदस्तौ नो मुञ्चतमंहसः ।
 ययोरभ्यध्व उत यद् दूरे चिद् यौ विदिताविषुभृतामसिष्ठौ । यावस्येशाथे० ।
 सहस्राक्षौ वृत्रहणा हुवेऽहं दूरेगव्यूती स्तुवन्नेभ्युग्रौ । यावस्येशाथे० ।
 यावारिभार्थे बहु साकमग्रे प्र चेदस्माष्टमभिभां जनेषु । यावस्येशाथे० ।
 ययोर्विभानापपद्यते कश्चनान्तर्देवेषूत मानुषेषु । यावस्येशाथे० ।
 यः कृत्याकृन्मूलकृद् यातुधानो नि तस्मिन् धत्तं वज्रमुग्रौ । यावस्येशाथे० ।
 अधि नो ब्रूतं पृतनास्रुगौ सं वज्रेण सृजतं यः किमीदी ।
 स्तौमि भवाशर्वो नाथितो जौहवीमि तौ नो मुञ्चतमंहसः ।

१

२

३ १७१५

४

५

६

७ १७१९

॥ २६४ ॥ (अथर्व० ४।२९।१-७)

मृगारः । मित्रावरुणौ (पापमोचनम्) । त्रिष्टुप्, ७ शकरीगर्भाऽतिजगती ।
 मन्वे वां मित्रावरुणावृतावृधौ सचेतसौ द्रुह्णो यौ नुदेथे ।
 प्र सत्यावानमवथो भरेषु तौ नो मुञ्चतमंहसः ।
 सचेतसौ द्रुह्णो यौ नुदेथे प्र सत्यावानमवथो भरेषु ।
 यौ गच्छथो नृचक्षसौ बभ्रुणा सुतं तौ नो मुञ्चतमंहसः ।

१

२ १७२१

× द्रष्टव्या मरुदेवतामन्त्राः ४४०-४४६ ।

गदिनाशनम् ।

१७०१-१७३२]

४

५ १७१०

६

७ १७११

रिक् ।

१

२

३ १७१५

४

५

६

७ १७१६

१

२ १७१९

यावद्विरसमवथो यावगस्ति मित्रावरुणा जमदग्निमत्रिम् ।

यौ कश्यपमवथो यौ वसिष्ठं तौ नो मुञ्चतमंहसः

यौ श्यावाश्वमवथो वध्यश्च मित्रावरुणा पुरुमीढमत्रिम् ।

यौ विमदमवथः सप्तवधि तौ नो मुञ्चतमंहसः

यौ भरद्वाजमवथो यौ गविष्ठिरं विश्वामित्रं वरुण मित्र कुत्सम् ।

यौ कक्षीर्वन्तमवथः प्रोत कण्वं तौ नो मुञ्चतमंहसः

यौ मेधातिथिमवथो यौ त्रिशोकं मित्रावरुणावुशनां काव्यं यौ ।

यौ गोतममवथः प्रोत मुद्गलं तौ नो मुञ्चतमंहसः

ययो रथः सत्यवर्त्मजुराग्निमिथुया चरन्तमभियाति दूषयन् ।

स्तौमि मित्रावरुणौ नाथितो जोहवीमि तौ नो मुञ्चतमंहसः

॥ २६५ ॥ (अथर्व० ६।१५।१-३)

ब्रह्मा । विश्वे देवाः (पापमोचनम्) । अनुष्टुप् ।

यद्विद्वांसो यदविद्वांस एनांसि चक्रमा वयम् ।

यूपं नस्तस्मान्मुञ्चत विश्वे देवाः सजोषसः

यदि जाग्रद् यदि स्वप्नेन एनस्योऽर्करम् ।

भूतं मा तस्माद् भव्यं च द्रुपदादिव मुञ्चताम्

द्रुपदादिव मुमुक्षानः स्विन्नः स्नात्वा मलादिव ।

पूतं पवित्रेणैवाज्यं विश्वे शुम्भन्तु मैतसः

॥ २६६ ॥ (अथर्व० ७।४२।१-२) +

प्रस्कण्वः । सोमारुद्रौ (पापमोचनम्) । त्रिष्टुप् ।

सोमारुद्रा वि बृहतं विषूचीममीवा या नो गर्यमाविवेश ।

वार्धेया दूरं निर्ऋतिं पराचैः कृतं चिदेनः प्र मुमुक्तमस्मत्

सोमारुद्रा युवमेतान्यस्मद् विश्वा तनूषु भेषजानि धत्तम् ।

अव सतं मुञ्चतं यन्नो असत् तनूषु बद्धं कृतमेनो अस्मत्

॥ २६७ ॥ (अथर्व० ७।६४।१-२)

यमः । आपः, अग्निः, निर्ऋतिः (पापमोचनम्) । १ भुरिगनुष्टुप्, २ न्यङ्कुसारिणी बृहती ।

हुदं यत् कृष्णः शकुनिरभिनिष्पतन्नपीपतत् ।

आपो मा तस्मात् सर्वस्माद् दुरितात् पान्त्वंहसः

* धोमदेवता- १२२४-१२२५ (ऋ. ६।७४।२, ३) ।

३

४

५

६ १७२५

७ १७२६

१

२

३ १७२९

१ १७३०

२ १७३१

१ १७३२

इदं यत् कृष्णः शकुनिरवामृक्षन्निर्गते ते मुखेन ।

अग्निर्मा तस्मादेनसो गार्हिपत्यः प्र मुञ्चतु

२ १७३३

॥ २६८ ॥ (अथर्व ११:६:१-२३)

शन्तातिः । चन्द्रमाः, मन्त्रोक्ताः (पापमोचनम्) । अनुष्टुप् । २३ बृहतीगर्भा ।

अग्निं ब्रूमो वनस्पतीनोपधीरुत् वीरुधः ।

इन्द्रं बृहस्पतिं सूर्यं ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

१

ब्रूमो राजानं वरुणं मित्रं विष्णुमथो भगम् ।

अंशं विवस्वन्तं ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

२ १७३५

ब्रूमो देवं सवितारं धातारमुत् पूषणम् । त्वष्टारमग्नियं ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

३

गन्धर्वाप्सरसो ब्रूमो अश्विना ब्रह्मणस्पतिम् ।

अर्यमा नाम यो देवस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

४

अहोरात्रे इदं ब्रूमः सूर्याचन्द्रमसावुभा ।

विश्वानादित्यान् ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

५

वातं ब्रूमः पर्जन्यमन्तरिक्षमथो दिशः । आशाश्च सर्वा ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

६

मुञ्चन्तु मा शपथ्यादिहोरात्रे अथो उषाः ।

सोमो मा देवो मुञ्चतु यमाहुश्चन्द्रमा इति

७ १७४०

पार्थिवा दिव्याः पशव आरण्या उत्त ये मृगाः ।

शकुन्तान् पक्षिणो ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

८

भवाशर्वाविदं ब्रूमो रुद्रं पशुपतिश्च यः ।

इषूया एषां संविद्य ता नः सन्तु सदा शिवाः

९

दिवं ब्रूमो नक्षत्राणि भूमिं यक्षाणि पर्वतान् ।

समुद्रा नद्यो वेशन्तास्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

१०

सप्तर्षीन् वा इदं ब्रूमोऽपो देवीः प्रजापतिम् ।

पितृन् यमश्रेष्ठान् ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

११

ये देवा दिविपदो अन्तरिक्षसदश्च ये । पृथिव्यां शक्रा ये श्रितास्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

१७४५

१२

आदित्या रुद्रा वसवो दिवि देवा अथर्वाणः ।

अङ्गिरसो मनीषिणस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

१३

यज्ञं ब्रूमो यजमानमृचः सामानि भेषजा । यजूंषि होत्रा ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

१७४९

१४

रादिनाशनम् ।

१७३३-१७६४]

२ १७३३

१

२ १७३५

३

४

५

६

७ १७४०

८

९

१०

११

१२ १७४५

१३

१४ १७४५

पञ्च राज्यानि वीरुधां सोमश्रेष्ठानि ब्रूमः ।

दुर्मो भङ्गो यवः सहस्ते नो मुञ्चन्त्वंहंसः

अरायान् ब्रूमो रक्षांसि सर्पान् पुण्यजनान् पितृन् ।

मृत्युनेकेशतं ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहंसः

ऋतून् ब्रूम ऋतुपतीनार्तवानुत हायनान् ।

समाः संवत्सरान् मासांस्ते नो मुञ्चन्त्वंहंसः

एतं देवा दक्षिणतः पश्चात् प्राञ्च उदेत ।

पुस्तादुत्तराच्छुक्रा विश्वे देवाः समेत्य ते नो मुञ्चन्त्वंहंसः

विश्वान् देवानिदं ब्रूमः सत्यसंधानृतावृधः ।

विश्वाभिः पत्नीभिः सह ते नो मुञ्चन्त्वंहंसः

सर्वान् देवानिदं ब्रूमः सत्यसंधानृतावृधः ।

सर्वाभिः पत्नीभिः सह ते नो मुञ्चन्त्वंहंसः

भूतं ब्रूमो भूतपतिं भूतानामुत यो वृशी ।

भूतानि सर्वा संगत्य ते नो मुञ्चन्त्वंहंसः

या देवीः पञ्च प्रदिशो ये देवा द्वादशर्तवः ।

संवत्सरस्य ये दंष्ट्रास्ते नः सन्तु सदा शिवाः

यन्मार्तली रथक्रीतममृतं वेदं भेषजम् ।

तदिन्द्रो अप्सु प्रावेशयत् तदापो दत्त भेषजम्

॥ २६३ ॥ (अथर्व० ४।३३।१-८; ऋ० १।९७।१-८; अग्निः १८८७-९४)

ब्रह्मा । पाप्मनाशनोऽग्निः (पाप-नाशनम्) । गायत्री ।

अप नः शोशुचदुधमग्रे शुशुग्ध्या रयिम्

सुश्रेयिया सुगातुया वसूया च यजामहे

प्र यद् भन्दिष्ठ एषां प्रास्माकांसश्च सूरयः

प्र यत् ते अग्रे सूरयो जायैमहि प्र ते वयम्

प्र यदग्रेः सहस्वतो विश्वतो यन्ति भानवः

त्वं हि विश्वतोमुख विश्वतः परिभूरसि

द्विषो नो विश्वतोमुखाति नावेव पारय

स नः सिन्धुमिव नावार्ति पर्षा स्वस्तये

। अप नः शोशुचदुधम्

। अप नः शोशुचदुधम्

। अप नः शोशुचदुधम्

। अप नः शोशुचदुधम्

। अप नः शोशुचदुधम्

। अप नः शोशुचदुधम्

। अप नः शोशुचदुधम्

। अप नः शोशुचदुधम्

१५

१६

१७ १७५०

१८

१९

२०

२१

२२ १७५५

२३ १७५६

१

२

३

४ १७६०

५

६

७

८ १७६४

॥ २७० ॥ (अथर्व० ६।११३।१-३)

अथर्वा । पूषा (पापनाशनम्) । त्रिष्टुप्, ३ पङ्क्तिः ।

त्रिते देवा अमृजतैतदेनस्त्रित एनन्मनुष्येषु समृजे ।

ततो यदि त्वा ग्राहिरानुशे तां ते देवा ब्रह्मणा नाशयन्तु

१ १७६१

मरीचिर्धूमान् प्र विशानुं पाप्मन्नुदारान् गच्छोत वा नीहारान् ।

२

नदीनां फेनां अनु तान् वि नश्य भ्रूणानि पूषन् दुरितानि मृक्ष

द्वादशधा निहितं त्रितस्यापमृष्टं मनुष्यैर्नसानि ।

ततो यदि त्वा ग्राहिरानुशे तां ते देवा ब्रह्मणा नाशयन्तु

३ १७६७

॥ २७१ ॥ (अथर्व० ७।११२।१-२)

वरुणः । आपः, वरुणश्च (पापनाशनम्) । १ भुरिक्, २ अनुष्टुप् ।

शुभ्रमनी द्यावापृथिवी अन्तिसुम्ने महित्रते ।

आपः सप्त सुसुबुद्धेवीस्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः

१

मुञ्चन्तु मा शपथ्याद्दुदथो वरुण्यादितु ।

अथो यमस्य पङ्क्तिंशाद् विश्वस्माद् देवकिल्विषात्

२ १७६९

॥ २७२ ॥ (अथर्व० ७।११५।१-४) [पापलक्षणनाशनम्] ❀

॥ २७३ ॥ (अथर्व० ६।२६।१-३)

ब्रह्मा । पाप्मा (पाप्मनाशनम्) । अनुष्टुप् ।

अवं मा पाप्मन्तसृज वशी सन् मृडयासि नः ।

आ मा मद्रस्य लोके पाप्मन् धेह्यविहृतम्

१ १७७०

यो नः पाप्मन् न जहासि तमुं त्वा जहिमो वयम् ।

पथामनु व्यावर्तनेऽन्यं पाप्मानु पद्यताम्

२

अन्यत्रास्मन्युच्यतु सहस्राक्षो अमर्त्यः ।

यं द्वेषाम तमृच्छतु यमुं द्विष्मस्तमिज्जहि

३ १७७१

॥ २७४ ॥ (अथर्व० ६।३७।१-३)

अथर्वा । (स्वस्त्ययनकामः) । चन्द्रमाः (शापनाशनम्) । अनुष्टुप् ।

उप प्रागात् सहस्राक्षो युक्त्वा शपथो रथम् ।

शप्सारमन्विच्छन् मम वृकं इवाविमतो गृहम्

१

परि णो वृङ्गिधि शपथ हृदमगिरिवा दहन् ।

शप्सारमन्त्रं नो जहि दिवो वृक्षमिवाशनिः

२ १७७२

वादिनाशनम् ।
१७६५-१७८६]

यो नः शपादशपतः शपतो यश्च नः शपात् ।

शुने पेषमिवावक्षामं तं प्रत्यस्यामि मृत्युर्वे

॥ २७५ ॥ (अथर्व० ७।५।१)

३ १७७५

वादरायणिः । अरिनाशनम् (शाप-मोचनम्) । अनुष्टुप् ।

यो नः शपादशपतः शपतो यश्च नः शपात् ।

वृक्ष इव विद्युता हत आ मूलादनु शुष्यतु

॥ २७६ ॥ (अथर्व० ५।७।१-१०)

१ १७७६

गर्वा । बहुदैवत्यम् ; १-३, ६-१० अरातयः ; ४-५ सरस्वती (अरातिनाशनम्) । अनुष्टुप् ; १ विराड्गर्भा
प्रस्तारपङ्क्तिः ; ४ पथ्यावृहती ; ६ प्रस्तारपङ्क्तिः ।

आ नो भर मा परिं ष्ठा अराते मा नो रक्षीर्दक्षिणां नीयमानाम् ।

नमो वीत्सीया असमृद्धये नमो अस्त्वरतये

१

यमराते पुरोधत्से पुरुषं परिरापिणम् ।

नमस्ते तस्मै कृण्मो मा वनि व्यथयीर्ममं

२

प्र णो वनिर्देवकृता दिवा नक्तं च कल्पताम् ।

अरातिमनुप्रेमो वयं नमो अस्त्वरतये

३

सरस्वतीमनुमतिं भगं यन्तो हवामहे ।

वर्च जुष्टं मधुमतीमवादिषं देवानां देवहूतिषु

४ १७८०

यं वाचांम्यहं वाचा सरस्वत्या मनोयुजा ।

श्रद्धा तमद्य विन्दतु दुत्ता सोमेन बभ्रुणां

५

मा वनि मा वाचं नो वीत्सीरुभारविन्द्राग्नी आ भरतां नो वसूनि ।

सर्वे नो अद्य दित्सन्तोऽरातिं प्रति हर्यत

६

पुरोऽप्येह्यसमृद्धे वि ते हेतिं नयामसि ।

वेदं त्वाहं निमीवन्तीं नितुदन्तीमराते

७

उत नया वोभ्रवती स्वमया संचसे जनम् ।

अरातिं चित्तं वीत्सन्त्याकृतिं पुरुषस्य च

८

या मवती महोन्माना विश्वा आशा व्यानशे ।

तस्यै हिरण्यकेश्यै निर्ऋत्या अकरं नमः

९ १७८५

हिरण्यवर्णा सुभगा हिरण्यकशिपुर्मही ।

तस्यै हिरण्यद्रापयेऽरात्या अकरं नमः

१० १७८६

॥ २७७ ॥ (अथर्व० ६।५१।१-३)

शन्तातिः । आपः, ३ वरुणः (एनोनाशनम्) । १ गायत्री, २ त्रिष्टुप्, ३ जगती ।
 वायोः पूतः पवित्रेण प्रत्यङ् सोमो अति द्रुतः । इन्द्रस्य युज्यः सखा १
 आपो अस्मान् मातरः सृदयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु ।
 विश्वं हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरा पूत एमि २
 यत् किं चेदं वरुण दैव्ये जनेऽभिद्रोहं मनुष्याश्चरन्ति ।
 अचिन्त्या चेत् तव धर्मा युयोपिम मा नस्तस्मादेनसो देव रीरिपः ३ १७८१

॥ २७८ ॥ (अथर्व० ६।८४।१-४)

भगः । निर्ऋतिः (निर्ऋतिमोचनम्) । १ भुरिजगती; २ त्रिपदार्षी बृहती; ३ जगती,
 ४ भुरिक् त्रिष्टुप् (जगती) ।

यस्यास्त आसनि घोरे जुहोम्येषां वृद्धानामवसर्जनाय कम् ।
 भूमिरिति त्वाभिप्रमन्वते जना निर्ऋतिरिति त्वाहं परि वेद सर्वतः १ १७९०
 भूते हविर्मती भवैष ते भागो यो अस्मासु । मुञ्चेमानमूनेनसः स्वाहा २
 एवो ष्वस्मन्निर्ऋतेऽनेहा त्वमयस्मयान् वि चृता बन्धपाशान् ।
 वमो मह्यं पुनरित् त्वां ददाति तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे ३
 अयस्मये द्रुपदे वैधिष इहाभिहितो मृत्युभिर्ये सहसम् ।
 यमेन त्वं पितृभिः संविद्वान उत्तमं नाकमधि रोहयेमस् ४ १७९१

॥ २७९ ॥ (अथर्व० ६।११३।१-३)

ब्रह्मा । विश्वे देवाः (उन्मोचनम्) । अनुष्टुप् ।

यद् देवा देवहेडनं देवासश्चक्रमा वयम् । आदित्यास्तस्मान्नो यूयमृतस्यर्तेन मुञ्चत १
 ऋतस्यर्तेनादित्या यजत्रा मुञ्चतेह नः ।
 यज्ञं यद् यज्ञवाहसः शिक्षन्तो नोपशेकिम २ १७९५
 मेदस्वता यजमानाः सुचाज्यानि जुह्वतः ।
 अक्रामा विश्वे वो देवाः शिक्षन्तो नोप शेकिम ३ १७९६

॥ २८० ॥ (अथर्व० ७।६३।१) [दुरितनाशनम्] ×

॥ २८१ ॥ (अथर्व० ३।९।१-६)

वामदेवः । द्यावापृथिवी, देवाः (दुःखनाशनम्) । अनुष्टुप्, ४ चतुष्पदा निचृद्वृहती, ६ भुरिक् ।
 कर्शफस्य विशफस्य द्यौः पिता पृथिवी माता ।
 यथाभिचक्र देवास्तथाप कृणुता पुनः १ १७९७

× अग्निदेवता- १३७४ ।

पादिनाशनम् ।

१७८७-१८१५]

१

२

३ १७८१

ती,

१ १७९०

२

३

४ १७९१

१

२ १७९५

३ १७९६

भुरिक् ।

१ १७९७

अश्रेष्माणो अधारयन् तथा तन्मनुना कृतम् ।

कृणोमि वधि विष्कन्धं मुष्कावर्हो गवामिव

पिशङ्गे सूत्रे खृगलं तदा बध्नन्ति वेधसः ।

श्रवस्यं शुष्मं काववं वध्नि कृण्वन्तु बन्धुरः

येनो श्रवस्ववश्चरथ देवा इवासुरमायया ।

शुनो कपिरिव दूषणो बन्धुरा काववस्य च

दुष्ट्यै हि त्वा भत्स्यामि दूषयिष्यामि काववम् ।

उदाशवो रथा इव शपथैभिः सरिष्यथ

एकशतं विष्कन्धानि विष्टिता पृथिवीमनु ।

तेषां त्वामग्र उज्जहर्मुणिं विष्कन्धदूषणम्

॥ २८२ ॥ (अथर्व० १६।१।१-१३) [प्रथमः पर्यायः ।]

वयो । प्रजापतिः (दुःखमोचनम्) । १,३ द्विपदा सास्त्री बृहती; २,१० याजुषी त्रिष्टुप्; ४ आसुरी गायत्री; ५,८ सास्त्री पङ्क्तिः (५ द्विपदा); ६ सास्त्री अनुष्टुप्; ७ निचृद् विराड् गायत्री; ९ आसुरी पङ्क्तिः; ११ साम्युष्णिक्; १२-१३ आचर्यनुष्टुप् ।

अतिसृष्टो अपां वृषभोऽतिसृष्टा अग्रयो दिव्याः

लून् परिरुजन् मृणन् प्रमृणन्

श्रोको मनोहा खनो निर्दाह आत्मदूषिस्तनूदूषिः

इदं तमतिं सृजामि तं माभ्यवनिक्षि

तेन तमभ्यतिसृजामो योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः

अपामग्रमसि समुद्रं वोऽभ्यवसृजामि

योऽेप्स्व१ शिरति तं सृजामि श्रोकं खनिं तनूदूषिम्

यो व आपोऽग्निराविवेश स एष यद् वो घोरं तदेतत्

इन्द्रस्य व इन्द्रियेणाभि धिञ्चेत्

अग्निं आपो अप रिग्रमस्मत्

प्रास्मदेनो वहन्तु प्र दुष्वप्यै वहन्तु

शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापः शिवया तन्वोप स्पृशत त्वचं मे

शिवानग्निनस्सुषदो हवामहे मयि क्षत्रं वर्च आ धत्त देवीः

१८ दे० [आयुर्वेद०]

२

३

४ १८००

५

६ १८०२

१

२

३ १८०५

४

५

६

७

८ १८१०

९

१०

११

१२

१३ १८१५

॥ २८३ ॥ (अथर्व० १६।२।१-६) [द्वितीयः पर्यायः ।]

अथर्वा । वाक् १ आसुर्यनुष्टुप् ; २ आसुर्युष्णिक् ; ३ साम्न्युष्णिक् ; ४ त्रिपदा साम्नी वृहती ;
५ आर्च्यनुष्टुप् ; ६ निचृद् विराङ्गायत्री ।

निर्दुरर्मण्य ऊर्जा मधुमती वाक्	१
मधुमती स्थ मधुमती वाचमुदेयम्	२
उपहूतो मे गोपा उपहूतो गोपीथः	३
सुश्रुतौ कर्णौ भद्रश्रुतौ कर्णौ भद्रं श्लोकं श्रूयासम्	४
सुश्रुतिश्च मोषश्रुतिश्च मा हासिष्टां सौपर्णं चक्षुरजस्रं ज्योतिः	५ १८२०
क्षणीणां प्रस्तरोऽसि वमोऽस्तु दैवाय प्रस्तराय	६ १८११

॥ २८४ ॥ (अथर्व० १६।३।१-६) [तृतीयः पर्यायः ।]

ब्रह्मा । आदित्यः । १ आसुरी गायत्री ; २-३ आर्च्यनुष्टुप् ; ४ प्राजापत्या त्रिष्टुप् ; ५ साम्न्युष्णिक् ;
६ द्विपदा साम्नी त्रिष्टुप् ।

मूर्धाहं रयीणां मूर्धा समानानां भूयासम्	१
रुजश्च मा वेनश्च मा हासिष्टां मूर्धा च मा विधर्मा च मा हासिष्टाम्	२
उर्वश्च मा चमसश्च मा हासिष्टां धर्ता च मा धरुणश्च मा हासिष्टाम्	३
विमोकश्च मार्द्रपविश्च मा हासिष्टामार्द्रदानुश्च मा मातरिश्वा च मा हासिष्टाम्	४ १८१५
बृहस्पतिर्मे आत्मा नमणा नाम ह्ययः	५
असंतापं मे हृदयमुर्वी गव्यूतिः समुद्रो अस्मि विधर्मणा	६ १८१०

॥ २८५ ॥ (अथर्व० १६।४।१-७) [चतुर्थः पर्यायः ।]

ब्रह्मा । आदित्यः । १, २ साम्न्यनुष्टुप् ; २ साम्न्युष्णिक् ; ४ त्रिपदाऽनुष्टुप् ;
५ आसुरी गायत्री ; ६ आर्च्युष्णिक् ; ७ त्रिपदा विराङ्गभाऽनुष्टुप् ।

नाभिरहं रयीणां नाभिः समानानां भूयासम्	१
स्वासदेसि सूषा अमृतो मर्त्येष्वा	२
मा मां प्राणो हासीन्मो अपानोऽवहाय परां गात्र	३ १८२०
सूर्यो माहः पात्वग्निः पृथिव्या वायुरन्तरिक्षाद् यमो मनुष्येभ्यः सरस्वती पार्थिवेभ्यः	४
प्राणापानौ मा मां हासिष्टं मा जने प्र मोष	५
स्वस्त्यग्घोषसो दोषसश्च सर्वे आपः सर्वगणो अशीय	६
शक्ररी स्थ पशवो मोषं स्तेषुर्मित्रावरुणौ मे प्राणापानावग्निर्मे दक्षं दधातु	७ १८१३

पादिनाशनम् ।

१८९१-१८५५]

हती;

१

२

३

४

५ १८२०

६ १८११

ष्णिक्;

१

२

३

४ १८१५

५

६ १८१०

१

२

३ १८३०

४

५

६

७ १८१३

॥ २८६ ॥ (अथर्व० १६।५।१-१०) [पञ्चमः पर्यायः ।]

यमः । दुःस्वप्ननाशनम् । १-६ (प्रथमा) विराड् गायत्री [५ (प्रथमा) भुरिक्, ६ (प्रथमा) खराट्];
१-६ (द्वितीया) प्राजापत्या गायत्री; १-६ (तृतीया) द्विपदा साम्नी बृहती ।

विद्य तै स्वप्न जनित्रं ग्राह्याः पुत्रोऽसि यमस्य करणः ॥१॥

१ १८३५

अन्तर्कोऽसि मृत्युरसि ॥२॥

२

तं त्वा स्वप्न तथा सं विद्य स नः स्वप्न दुःस्वप्न्यात् पाहि ॥३॥

३

विद्य तै स्वप्न जनित्रं निर्भूत्याः पुत्रोऽसि यमस्य करणः ॥१॥ अन्तर्०।२ तं०।३ ४

विद्य तै स्वप्न जनित्रमभूत्याः पुत्रोऽसि यमस्य करणः ॥१॥ अन्तर्०।२ तं०।३ ५

विद्य तै स्वप्न जनित्रं निर्भूत्याः पुत्रोऽसि यमस्य करणः ॥१॥ अन्तर्०।२ तं०।३ ६ १८४०

विद्य तै स्वप्न जनित्रं पराभूत्याः पुत्रोऽसि यमस्य करणः ॥१॥ अन्तर्०।२ तं०।३ ७

विद्य तै स्वप्न जनित्रं देवजामीनां पुत्रोऽसि यमस्य करणः ॥१॥

८

अन्तर्कोऽसि मृत्युरसि ॥२॥

९

तं त्वा स्वप्न तथा सं विद्य स नः स्वप्न दुःस्वप्न्यात् पाहि ॥३॥

१० १८४४

॥ २८७ ॥ (अथर्व० १६।६।१-१२) [षष्ठः पर्यायः ।]

यमः । दुःस्वप्ननाशनं, उषा । १-४ प्राजापत्याऽनुष्टुप्; ५ साम्ना पङ्क्तिः; ६ निचृदार्षी बृहती;
७ द्विपदा साम्नी बृहती; ८ आसुरी जगती; ९ आसुरी बृहती; १० आर्च्युष्णिक्;
११ त्रिपदा यवमध्या गायत्री वा आर्च्यनुष्टुप् ।

अजैष्माद्यासनामाद्याभुमानांगसो वयम्

१ १८४५

उषो यसाद् दुःस्वप्न्यादभैष्माप तदुच्छतु

२

द्विपते तत् परा वह शपते तत् परा वह

३

यं द्विष्मो यच्च नो द्वेष्टि तस्मा एनद् गमयामः

४

उषा देवी वाचा संविदाना वाग् देव्युषसां संविदाना

५

उपस्पतिर्वाचस्पतिना संविदानो वाचस्पतिरुषस्पतिना संविदानः

६ १८५०

तेऽष्टमै परा वहन्त्वरायान् दुर्गाम्नः सदान्वाः

७

कुम्भीकां दुषीकाः पीयकान्

८

जाग्रदुष्वप्यं स्वप्नेदुष्वप्यम्

९

अनागमिष्यतो वरानवित्तेः संकल्पानमुच्य द्रुहः पाशान्

१०

तदमुष्मा अग्रे देवाः परा वहन्तु वधिर्यथासद् विथुरो न साधुः

११ १८५५

१८५-४७ पृष्ठयोः १०५-१११ सूक्तानि दृष्टव्यानि ।

॥ २८८ ॥ (अथर्व० १६।७।१-१३) [सप्तमः पर्यायः ।]

यमः । दुःष्वपनाशनं, उषा । १ पङ्क्तिः; २ साम्यनुष्टुप्; ३ आसुर्युष्णिक्; ४ प्राजापत्या गायत्री; ५ आर्च्युष्णिक्; ६, ९, ११ साम्नी बृहती; ७ याजुषी गायत्री; ८ प्राजापत्या बृहती; १० साम्नी गायत्री; १२ भुरिक् प्राजापत्यानुष्टुप्; १३ आसुरी त्रिष्टुप् ।

तेनैनं विध्याम्यभूत्यैनं विध्यामि निर्भूत्यैनं विध्यामि

पराभूत्यैनं विध्यामि ग्राह्यैनं विध्यामि तमसैनं विध्यामि

देवानामेनं घोरैः क्रूरैः प्रैषैरभिप्रेष्यामि

वैश्वानरस्यैनं दंष्ट्रयोरपि दधामि ॥ ३ ॥ एवानेवाव सा गरत्

योऽस्मान् द्वेष्टि तमात्मा द्वेष्टु यं वयं द्विष्मः स आत्मानं द्वेष्टु

निर्द्विषन्तं दिवो निः पृथिव्या निरन्तरिक्षाद् भजाम ॥ ६ ॥ सुर्यामंश्चाक्षुष

इदमहमांशुष्यायणेऽमुष्याः पुत्रे दुष्वप्यै मृजे

यदुदोऽदो अभ्यगच्छन् पदं दोषा यत् पूर्वा रात्रिम्

यज्ञाग्रद् यत् सुप्तो यद् दिवा यन्नक्तम्

यदहरहर्गभिगच्छामि तस्मादेनमव दये

तं जेहि तेन मन्दस्व तस्य पृथीरपि शृणीहि

स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु

॥ २८९ ॥ (अथर्व० १६।८।१-२७) [अष्टमः पर्यायः ।]

यमः । दुःष्वपनाशनम् । १-२७ (प्रथमा) एकपदा यजुर्ब्राह्मणनुष्टुप्; १-२७ (द्वितीया) त्रिपदा निचृद्गायत्री; १ (तृतीया) प्राजापत्या गायत्री; १-२७ (चतुर्थी) त्रिपदा प्राजापत्या त्रिष्टुप्; २-४, ९, १७, १९, २४ (तृतीया) आसुरी जगती; ५, ७-८, १०-११, १३, १८ (तृतीया) आसुरी त्रिष्टुप्; ६, १२, १४-१६, २०-२३, २७ (तृतीया) आसुरी पङ्क्तिः; २५-२६ (तृतीया) आसुरी बृहती ।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरिस्माकं

यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ॥ १ ॥

तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमांशुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ॥ २ ॥

स ग्राह्याः पाशान्मा मौचि ॥ ३ ॥

तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वैष्टयामीदमेनमधराञ्च पादयामि ॥ ४ ॥

जितम० । स निर्भेत्याः पाशान्मा मौचि । तस्येदं ॥ १-४ ॥

जितम० । सोऽभूत्याः पाशान्मा मौचि । तस्येदं ॥ १-४ ॥

जितम० । स निर्भूत्याः पाशान्मा मौचि । तस्येदं ॥ १-४ ॥

[१८५६-१९०१]

दिनाशनम् ।

त्या
ते;

१

२

४

५ १८६०

७

८

९

० १८६५

१

२

३

) त्रिपदा

-४, ९, १७,

६, १२,

।

१

२ १८७०

३

४

५

६

७ १८७५

जितम् । स पराभूत्याः पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	५।	८
जितम् । स देवजामीनां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	६।	९
जितम् । स बृहस्पतेः पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	७।	१०
जितम् । स प्रजापतेः पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	८।	११
जितम् । स ऋषीणां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	९।	१२ १८८०
जितम् । स आर्षेयाणां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	१०।	१३
जितम् । सोऽङ्गिरसां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	११।	१४
जितम् । स आङ्गिरसानां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	१२।	१५
जितम् । सोऽथर्वणां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	१३।	१६
जितम् । स आथर्वणानां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	१४।	१७ १८८५
जितम् । स वनस्पतीनां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	१५।	१८
जितम् । स वानस्पत्यानां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	१६।	१९
जितम् । स ऋतूनां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	१७।	२०
जितम् । स आतृवानां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	१८।	२१
जितम् । स मासानां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	१९।	२२ १८९०
जितम् । सोऽर्धमासानां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	२०।	२३
जितम् । सोऽहोरात्रयोः पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	२१।	२४
जितम् । सोऽह्नौः संयतोः पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	२२।	२५
जितम् । स द्यावापृथिव्योः पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	२३।	२६
जितम् । स इन्द्राग्न्योः पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	२४।	२७ १८९५
जितम् । स मित्रावरुणयोः पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	२५।	२८
जितम् । स राज्ञो वरुणस्य पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	२६।	२९
जितम् । स मासुः पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ॥१॥			३०
स मृत्योः पृथ्वीं शात पाशान्मा मौचि ॥३॥			३१
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वैष्ट्यामीदमैनमधराञ्च पादयामि ॥४॥			३२ १९००
			३३ १९०१

॥ २९० ॥ (अथर्व० १६।१।१-४) [नवमः पर्यायः ।]

यमः । १ प्रजापतिः; २ अग्निः, सोमः, पूषा; ३-४ सूर्यः । १ प्राजापत्या आर्च्यनुष्टुप्; २ आर्च्युष्णिक्;
३ साम्नी पङ्क्तिः; ४ परोष्णिक् ।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमभ्यष्टिं विश्वाः पृतना अरातीः १
तदग्निराह तदु सोम आह पूषा मा धातु सुकृतस्य लोके २
अगन्म स्वः; स्वरिगन्म सं सूर्यस्य ज्योतिषागन्म ३
वस्योभूयाय वसुमान् यज्ञो वसु वंशिषीय वसुमान् भूयासं वसु मयि धेहि ४ १९०५

॥ २९१ ॥ (अथर्व० ७।२३।१)

यमः । दुःष्वप्प्रनाशनम् । अनुष्टुप् ।

दौष्वप्न्यं दौर्जीवित्यं रक्षो अश्वमिरायः ।

दुर्णाम्नीः सर्वा दुर्वाचस्ता अस्मन्नाशयामसि १ १९०६

॥ २९२ ॥ (अथर्व० १३।५६।१-६)

यमः । दुःष्वप्प्रनाशनम् । त्रिष्टुप् ।

यमस्य लोकादध्या बभूविथ प्रमदा मर्त्यान् प्र युनक्षि धीरः ।

एकाकिना सरथं यासि विद्वान्तस्वप्नं मिमानो असुरस्य योनौ १

बन्धस्त्वाग्ने विश्वचया अपश्यत् पुरा रात्र्या जनिंतोरेके अहिं ।

ततः स्वप्नेदमध्या बभूविथ भिषग्भ्यो रूपमपगूहमानः २

बृहदावासुरेभ्योऽधि देवानुपावर्तत महिमानमिच्छन् ।

तस्मै स्वमाय दधुराधिपत्यं त्रयस्त्रिंशसुः स्वरानशानाः ३

नैतां विदुः पितरो नोत देवा येषां जल्पिश्चरत्यन्तरेदम् ।

त्रिते स्वप्नमदधुराप्त्ये नर आदित्यासो वरुणेनानुशिष्टाः ४ १९१०

यस्य क्रूरमभजन्त दुष्कृतोऽस्वप्नेन सुकृतः पुण्यमायुः ।

स्वर्मदसि परमेण बन्धुना तप्यमानस्य मनसोऽधि जज्ञिषे ५

विन्न ते सर्वाः परिजाः पुरस्ताद् विन्न स्वप्न यो अधिपा इहा ते ।

यशस्विनो नो यशसेह पाद्भाराद् द्विषेभिरप याहि दूरम् ६ १९१२

॥ २९३ ॥ (अथर्व० १९।५७।१-५)

यमः । दुःष्वप्प्रनाशनम् । १ अनुष्टुप्; २-३ त्रिष्टुप्, (ज्यवसाना); ४ षट्पदा उष्णिग्वृहतीगर्भा विराट् शकरी;

५ ज्यवसाना पञ्चपदा परशाकरातिजगती ।

यथा कलां यथा शफं यथर्णं संनयन्ति ।

एवा दुष्वप्न्यं सर्वमप्रिये सं नयामसि १ १९१३

११दिनाशनम् । ११०२-११२३]

११दिनाशनम् ।

१

२

३

४ ११०५

१ ११०६

१

२

३

४ १११०

५

६ १११२

७ १११४

१ १११६

सं राजानो अगुः समृणान्यगुः सं कुष्ठा अगुः सं कला अगुः ।

समस्मासु यद् दुष्पण्यं निदिषते दुष्पण्यं सुवाम

देवानां पत्नीनां गर्भं यमस्य कर यो भद्रः स्वप्न ।

सम यः पापस्तद् द्विषते प्र हिंस्रः । मा तृष्टानामसि कृष्णशकुनेर्मुखम्

तं त्वां स्वप्न तथा सं विद्म स त्वं स्वप्नाश्च इव कायमश्च इव नीनाहम् ।

अनास्माकं देवपीयुं पियारुं वपु यदुस्मासु दुष्पण्यं यद् गोषु यच्च नो गृहे

अनास्माकस्तद् देवपीयुः पियारुर्निष्कर्मिव प्रति मुञ्चताम् ।

नवास्तीनपमया अस्माकं ततः परि । दुष्पण्यं सर्वं द्विषते निर्दयामसि

॥ २९४ ॥ (अथर्व० १९।६५।१) [अवनम्] ❀

यज्ञादिकम् । (१९१८-२३२४)

॥ २९५ ॥ (अथर्व० ७।७३।६-७,११) ×

अथर्वा । घर्मः, अश्विनौ । ६ जगती; ७,११ त्रिष्टुप् ।

उप द्रव पयसा गोधुगोषमा घर्मे सिञ्च पय उस्त्रियायाः ।

वि नाकमख्यत् सविता वरेण्योऽनुप्रयाणमुपसो वि राजति

उप ह्वये सुदुर्घा धेनुमेतां सुहस्तो गोधुगुत दौहदेनाम् ।

श्रेष्ठं सर्वं सविता साविषन्नोऽभीद्धो घर्मस्तदु षु प्र वोचत्

सुयवसाद् भगवती हि भूया अधा वयं भगवन्तः स्याम ।

अदि तृणमघ्न्ये विश्वदानीं पिबं शुद्धमुदकमाचरन्ती

॥ २९६ ॥ (अथर्व० ७।६१।१-२)

अथर्वा । अग्निः (तपः) । अनुष्टुप् ।

यदग्रे तपसा तप उपतप्यामहे तपः । प्रियाः श्रुतस्य भूयास्मायुष्मन्तः सुमेधसः १

अग्रे तपस्तप्यामह उप तप्यामहे तपः ।

श्रुतानि शृण्वन्तो वयमायुष्मन्तः सुमेधसः

॥ २९७ ॥ (अथर्व० १९।३१।१-१०)

भृगुः (आयुष्कामः) । दर्भः । अनुष्टुप्; ८ पुरस्ताद्वृहती; ९ त्रिष्टुप्; १० जगती ।

शुतकाण्डो दुश्चयवनः सहस्रपर्ण उत्तिरः । दुर्भो य उग्र ओषधिस्तं ते बभ्राम्यायुषे १ १९२३

१११६ [अग्निः] २३४९ ।

१११७ [अग्निः] ७।७३।१-५, ८ = दै० [अश्विनौ] ६७९-६८४ ।

१११८ [अग्निः] ७।७३।९-१० = दै० [अश्विनौ] ७९४, ९३५ ।

नास्य केशान् प्र वर्पन्ति नोरसि ताडमा ध्रुते ।
 यस्मा अच्छिन्नपर्णेन दुर्भेण शर्म यच्छति २
 दिवि ते तूलमोषधे पृथिव्यामसि निष्ठितः । त्वया सहस्रकाण्डेनायुः प्र वर्धयामहे ३ १९२५
 तिस्रो दिवो अत्यतृणत् तिस्र इमाः पृथिवीरुत ।
 त्वयाहं दुर्हादौ जिह्वां नि तृणञ्चि वचांसि ४
 त्वमासि सहमानोऽहमस्मि सहस्वान् । उभौ सहस्वन्तौ भूत्वा सपत्नान्तसहिषीवहि ५
 सहस्व नो अभिमांति सहस्व पृतनायतः ।
 सहस्व सर्वान् दुर्हादः सुहादौ मे बहून् कृधि ६
 दुर्भेण देवजातेन दिवि धृम्भेन शश्वदित् ।
 तेनाहं शश्वतो जनां असनं सनवानि च ७
 प्रियं मां दर्भं कृणु ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च ।
 यस्मै च कामयामहे सर्वस्मै च विपश्यते ८ १९३०
 यो जायमानः पृथिवीमदहद् यो अस्तभ्रादन्तरिक्षं दिवं च ।
 यं विभ्रतं ननु पाप्मा विवेद स नोऽयं दुर्भो वरुणो दिवा कः ९
 सपत्नहा शतकाण्डः सहस्वानोपधीनां प्रथमः सं बभूव ।
 स नोऽयं दुर्भः परि पातु विश्वतस्तेन साक्षीय पृतनाः पृतन्यतः १० १९३१

॥ २९८ ॥ (अथर्व० १९।३३।१-५)

भृगुः । दर्भः । १ जगती, २, ५ त्रिष्टुप्; ३ आर्षी पङ्क्तिः; ४ आस्तारपङ्क्तिः ।

सहस्राधः शतकाण्डः पर्यस्वान्पामशिवीरुधौ राजसूर्यम् ।
 स नोऽयं दुर्भः परि पातु विश्वतो देवो मणिरायुषा सं सृजाति नः १
 घृतादुल्लुप्तो मधुमान् पर्यस्वान् भूमिदहोऽच्युतश्च्यवयिष्णुः ।
 नुदन्तसपत्नानघरांश्च कृण्वन् दर्भा रोह महतामिन्द्रियेण २
 त्वं भूमित्येव्योजसा त्वं वेद्यां सीदसि चारुरध्वरे ।
 त्वां पवित्रमृषयोऽभरन्त त्वं पुनीहि दुरितान्यसत् ३ १९३५
 तीक्ष्णो राजा विपासही रक्षोहा विश्वचर्षणिः ।
 ओजो देवानां वलमुग्रमेतत् तं ते वधामि जरसे स्वस्तये ४
 दुर्भेण त्वं कृणवद् वीर्याणि दुर्भं विभ्रद्वात्मना मा व्यथिष्ठाः ।
 अतिष्ठाया वर्चसाधान्यान्तसूर्य इवा भाहि प्रदिशश्चतस्रः ५ १९३७

यज्ञादिकम् ।

[१९४४-१९५१]

॥ २९९ ॥ (अथर्व० ५।२६।२-४, ६-९, ११) +

ब्रह्मा । वास्तोष्पतिः, २ सविता, ३, ११ इन्द्रः, ४ निविदः, ६ अदितिः, ७ विष्णुः,
८ त्वष्टा, ९ भगः, (नवशालायां घृतहोमः) । २, ४, ६-८, ११ द्विपदा
प्राजापत्या बृहती; ३ त्रिपदा विराड् गायत्री; ९ त्रिपदा
पिपीलिकमध्या पुर उष्णिक्; (सर्वा एकावसानाः) ।

४ युनक्तु देवः सविता प्रजानन्नस्मिन् यज्ञे महिषः स्वाहा २
५ इन्द्र उक्थामदान्यस्मिन् यज्ञे प्रविद्वान् युनक्तु सुयुजः स्वाहा ३
६ प्रेषा यज्ञे निविदः स्वाहा शिष्टाः पत्नीभिर्वहतेह युक्ताः ४ १९४०
७ एयमगन् बहिषा प्रोक्षणीभिर्यज्ञं तन्वानादितिः स्वाहा ६
८ विष्णुयुनक्तु बहुधा तपोऽस्यस्मिन् यज्ञे सुयुजः स्वाहा ७
९ त्वष्टा युनक्तु बहुधा नु रूपा अस्मिन् यज्ञे सुयुजः स्वाहा ८
१० भगो युनक्त्वाशिषो न्वऽस्मा अस्मिन् यज्ञे प्रविद्वान् युनक्तु सुयुजः स्वाहा ९
११ इन्द्रो युनक्तु बहुधा वीर्याण्यस्मिन् यज्ञे सुयुजः स्वाहा ११ १९४५

॥ ३०० ॥ (ऋ० १०।१८।७-१४) ×

कुम्भको यामायनः । ७-१४ पितृमेधः; १४ प्रजापतिर्वा । त्रिष्टुप्, ११ प्रस्तारपङ्क्तिः, १३ जगती, १४ अनुष्टुप् ।

१ इमा नारीरविधवाः सुपत्नी—राजनेन सर्पिषा सं विशन्तु ।
२ अनश्रवोऽनमीवाः सुरत्ना आ रोहन्तु जनयो योनिमग्रे ७
३ उदीर्घ्वं नार्यामि जीवलोकं गतासुमेतमुप शेष एहि ।
४ हस्तग्राभस्य दिधिषोस्तवेदं पत्युर्जनित्वमभि सं बभूथ ८
५ धनुर्हस्तादाददानो मृतस्या—ऽस्मे क्षत्राय वर्चसे बलाय ।
६ अथैव त्वमिह वयं सुवीरा विश्वाः स्पृध्वो अभिमातीर्जयेम ९
७ उप सर्प मातरं भूमिमेता—मुरुव्यचंसं पृथिवीं सुशेवाम् ।
८ ऊर्ध्वप्रदा युवतिर्दक्षिणावत एषा त्वा पातु निर्ऋतेरुपस्थात् १०
९ माता पुत्रं यथा सिचा ऽभ्येनं भूम ऊर्णुहि ११ १९५०
१० उच्छृङ्खमाना पृथिवी सु तिष्ठतु सहस्रं मित उप हि श्रयन्ताम् ।
११ ते गृहासो घृतश्रुतो भवन्तु विश्वाहास्मै शरणाः सन्त्वत्र १२ १९५१

+ अथर्व० ५।२६।१ = अग्निः २३४५; ५।२६।५ = मरुतः ४३२; ५।२६।१० = सोमः ११८९; ५।२६।१२ = अश्विनौ ६७१ ।
× अथर्व० १८।३।१, ५०-५१, ५७ ।
१९ दे. [आयुर्वेद०]

उत् ते स्तभ्नामि पृथिवीं त्वत् परी—मं लोमं निदधन्मो अहं रिपम् ।
 एतां स्थूणां पितरो धारयन्तु तेऽत्रा यमः सादना ते मिनोतु
 प्रतीचीने मामहनी—ष्वाः पर्णमिवा दधुः ।
 प्रतीचीं जग्रभा वाच—मश्वं रशनया यथा

१३

१४ १९५३

॥ ३०१ ॥ (क्र० १०१०१-१४) *

नवमीवर्ज्यानामयुजां षष्ठ्याश्च वैवस्वती यमी ऋषिका । यमः । षष्ठीवर्ज्यानां युजां
 नवम्याश्च वैवस्वतो यमः ऋषिः । यमी । त्रिष्टुप्, १३ विराट्स्थाना ।

ओ चित् सखायं सख्या वृष्ट्यां तिरः पुरु चिदर्णवं जगन्वान् ।
 पितुर्नपातमा दधीत वेधा अधि क्षमिं प्रतरं दीध्यानः
 न ते सखा सख्यं वष्टयेतत् सलक्ष्मा यद् विपुरुषा भवाति ।
 महस्पुत्रासो असुरस्य वीरा दिवो धर्तार उर्विया परि ख्यन्
 उशन्ति घा ते अमृतास एत—देकस्य चित् त्यजसं मर्त्यस्य ।
 नि ते मनो मनसि धायस्मे जन्युः पतिस्तन्वमा विविश्याः
 न यत् पुरा चकृमा कद्ध नून—मृता वदन्तो अनृतं रपेम ।
 गन्धर्वो अप्सव्या च योषा सा नो नार्भिः परमं जामि तन्नौ
 गर्भे नु नौ जनिता दंपती क—देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपः ।
 नकिरस्य प्र मिनन्ति व्रतानि वेदं नावस्य पृथिवी उत द्यौः
 को अस्य वेद प्रथमस्याहः क ई ददर्श क इह प्र वोचत् ।
 बृहन्मित्रस्य वरुणस्य धाम कहु ब्रव आहनो वीच्या नृन्
 यमस्य मा यम्यं काम आग—न्तसमाने योनौ सहश्रेय्याय ।
 जायेव पत्ये तन्वं रिरिच्यां वि चिद् बृहेव रथ्येव चक्रा
 न तिष्ठन्ति न नि मिषन्त्येते देवानां स्पशं इह ये चरन्ति ।
 अन्येन मदाहनो याहि तूयं तेन वि बृह रथ्येव चक्रा
 रात्रीभिरम्मा अहभिर्दशस्येत् सूर्यस्य चक्षुर्मुहुरुन्मिमीयात् ।
 दिवा पृथिव्या मिथुना सबन्धू यमीर्यमस्य विभृयादजामि
 आ घा ता गच्छानुत्तरा युगानि यत्र जामयः कृणवन्नजामि ।
 उप बर्हहि नृषभार्थं बाहु—मन्यमिच्छस्व सुभगे पतिं मत्

१

२ १९५५

३

४

५

६

७ १९६०

८

९

१० १९६३

* अथर्व० १८।१।१-५, ७-१२, १५-१६ ।

यज्ञादिकम् ।

१९५२-१९७६]

किं आतासद् यदनाथं भवति किमु स्वसा यन्निर्गतिर्निगच्छात् ।

काममृता बृह्तेऽतद् रपामि तन्वा मे तन्वं सं पिपृग्धि

११

न वा उ ते तन्वा तन्वं सं पिपृच्यां पापमाहुर्यः स्वसारं निगच्छात् ।

अन्येन मत् प्रमुदः कल्पयस्व न ते आता सुभगे वष्टयेतत्

१२ १९६५

वृत्तो वतासि यम नैव ते मनो हृदयं चाविदाम ।

अन्या किल त्वां कक्ष्येव युक्तं परिं ष्वजाते लिबुजेव वृक्षम्

१३

अन्यम् पु त्वं यम्यन्य उ त्वां परिं ष्वजाते लिबुजेव वृक्षम् ।

तस्या वा त्वं मन इच्छा स वा तवा—ऽधा कृणुष्व संविदं सुमद्राम्

१४ १९६७

॥ ३०२ ॥ (ऋ० १०।१४।१-५, ७-९, १३-१६) +

वैवस्वतो यमः । यमः, ७-९ लिङ्गोक्ताः, पितरो वा । त्रिष्टुप्; १३-१४, १६ अनुष्टुप्; १५ बृहती ।

प्रेषिवांसं प्रवर्तो महीरनु बहुभ्यः पन्थामनुपस्पशानम् ।

वैवस्वतं संगमनं जनानां यमं राजानं हविषा दुवस्य

१

यमो नो गातुं प्रथमो विवेद नैषा गव्यूतिरपभर्तवा उ ।

यत्रा नः पूर्वे पितरः परेयुरेना जज्ञानाः पथ्याऽनु स्वाः

२

मातली कुवैर्यमो अङ्गिरोभिर्बृहस्पतिर्ऋकभिर्वावृधानः ।

याँश्च देवा वावृधुर्ये च देवा—न्त्स्वाहान्ये स्वधयान्ये मदन्ति

३ १९७०

इमं यम प्रस्तरमा हि सीदा—ऽङ्गिरोभिः पितृभिः संविदानः ।

आ त्वा मन्त्राः कविशस्ता वह—न्त्वेना राजन् हविषा मादयस्व

४

अङ्गिरोभिरा गहि यज्ञियेभि—र्यमं वैरूपैरिह मादयस्व ।

विवस्वन्तं हुवे यः पिता ते ऽस्मिन् यज्ञे बर्हिष्या निषद्य

५

प्रेहि प्रेहि पृथिभिः पूव्येभि—र्यत्रा नः पूर्वे पितरः परेयुः ।

तुमा राजाना स्वधया मदन्ता यमं पश्यासि वरुणं च देवम्

७

सं गच्छस्व पितृभिः सं यमेने—ष्टापुर्तेन परमे व्योमन् ।

हित्वायावद्यं पुनरस्तमेहि सं गच्छस्व तन्वा सुवर्चाः

८

अपेत वीत वि च सर्पतातो ऽस्मा एतं पितरौ लोकमक्रन् ।

अहोभिरङ्गिरक्तुभिर्व्यक्तं यमो ददात्यवसानमस्मै

९ १९७५

यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुता हविः ।

यमं ह यज्ञो गच्छ—त्यभिर्दूतो अरंकृतः

१३ १९७६

+ ऋ० १०।१४।२, ९ । अथर्व० १८।१।५०, ५५ ।

यमाय धृतवद्ववि—जुहोतु प्र च तिष्ठत ।

स नो देवेष्वा यमद् दीर्घमायुः प्र जीवसे

१४

यमाय मधुमत्तमं राज्ञे हव्यं जुहोतन ।

इदं नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वैभ्यः पथिकृद्भ्यः

१५

त्रिकद्रुकेभिः पतति पल्लुर्वीरेकमिद् बृहत् ।

त्रिष्टुब् गांयत्री छन्दांसि सर्वा ता यम आर्हिता

१६ १९७९

॥ ३०३ ॥ (ऋ० १०।१३५।१-७)

कुमारो यामायनः । यमः । अनुष्टुप् ।

यस्मिन् वृक्षे सुपलाशे देवैः संपिबते यमः ।

अत्रा नो विश्वतिः पिता पुराणां अनु वेनति

१ १९८०

पुराणां अनुवेनन्तं चरन्तं पापयामया ।

असूयन्नभ्यचाकशं तस्मा अस्पृह्यं पुनः

२

यं कुमार नवं रथं—मचक्रं मनसाकृणोः ।

एकैषं विश्वतः प्राञ्च—मपश्यन्नधि तिष्ठसि

३

यं कुमार प्रावर्तयो रथं विप्रैभ्यस्परि ।

तं सामानु प्रावर्ततु समितो नाव्याहितम्

४

कः कुमारमजनयद् रथं को निरवर्तयत् ।

कः स्वित् तदद्य नो ब्रूया—दनुदेयी यथाभवत्

५

यथाभवदनुदेयी ततो अग्रमजायत ।

पुरस्ताद् बुध्न आततः पश्चान्निरयणं कृतम्

६ १९८५

इदं यमस्य सादनं देवमानं यदुच्यते ।

इयमस्य धम्यते नाळी—रथं गीर्भिः परिष्कृतः

७ १९८६

॥ ३०४ ॥ (ऋ० १०।१५।१-१४)

शङ्खो यामायनः । पितरः । त्रिष्टुप्, ११ जगती ।

उदीरतामवर उत परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः ।

असुं य ईयुरवृका ऋतज्ञा—स्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु

१

इदं पितृभ्यो नमो अस्त्वद्य ये पूर्वासो य उपरास ईयुः ।

ये पार्थिवे रजस्या निषत्ता ये वा नूनं सुवृजनासु विश्व

२ १९८८

यज्ञादिकम् ।

[११००-२००१]

२४

५

१६ १९७९

१ १९८०

२

३

४

५

६ १९८१

७ १९८१

१

२ १९८८

आहं पितृन्सुविदत्राँ अवित्सि नपातं च विक्रमणं च विष्णोः ।

बर्हिषदो ये स्वधया सुतस्य भजन्त पित्वस्त इहागमिष्ठाः ।

बर्हिषदः पितर ऊत्यर्वा—गिमा वो हव्या चक्रमा जुषध्वम् ।

त आ गतावसा शतमेना—स्था नः शं थोररपो दधात

उपहृताः पितरः सोम्यासो बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु ।

त आ गमन्तु त इह श्रुवन्त्व—धि ब्रुवन्तु तैऽवन्त्वस्मान्

आच्या जानु दक्षिणतो निषद्ये—मं यज्ञमभि गृणीत विश्वे ।

मा हिंसिष्ट पितरः केन चिन्नो यद् व आगः पुरुषता कराम

आसीनासो अरुणीनामुपस्थे रयिं धत्त दाशुषे मर्त्याय ।

पुत्रेभ्यः पितरस्तस्य वस्वः प्र यच्छत त इहोजिं दधात

ये नः पूर्वे पितरः सोम्यासो ऽनूहिरे सोमपीथं वसिष्ठाः ।

तेभिर्ममः संरराणो हवीष्यु—शन्नृशङ्घिः प्रतिक्राममत्तु

ये तातृपुर्देवत्रा जेहमाना होत्राविदुः स्तोमतष्टासो अर्केः ।

आमे याहि सुविदत्रेभिर्वाङ् सत्यैः कव्यैः पितृभिर्धर्मसङ्घिः

ये सत्यासो हविरदो हविष्पा इन्द्रेण देवैः सरथं दधानाः ।

आमे याहि सहस्रं देववन्दैः परैः पूर्वैः पितृभिर्धर्मसङ्घिः

अधिष्वात्ताः पितर एह गच्छतु सदःसदः सदत सुप्रणीतयः ।

अत्ता हवीषि प्रयतानि बर्हिष्य—था रयिं सर्ववीरं दधातन

त्वमग ईळितो जातवेदो ऽवाङ्मुव्यानि सुरभीणि कृत्वी ।

प्रादाः पितृभ्यः स्वधया ते अक्ष—न्नद्धि त्वं देव प्रयता हवीषि

ये चेह पितरो ये च नेह याँश्च विद्म याँ उ च न प्रविद्म ।

त्वं वेत्थ यति ते जातवेदः स्वधाभिर्यज्ञं सुकृतं जुषस्व

ये अग्निदग्धा ये अनग्निदग्धा मध्ये दिवः स्वधया मादयन्ते ।

तेभिः स्वराकसुनीतिमेतां यथावशं तन्वं कल्पयस्व

॥ ३०५ ॥ (अथर्व० १८।१।६, १३-१४, १७, ३९-४९, ५१-५३, ५७-६१) ×

अथर्व। यमः, मन्त्रोक्ताः, ४० रुद्रः, ४१-४३ सरस्वती, ४४-४६, ५१-५२ पितरः (पितृमेघः) ।

त्रिष्टुप्; १४, ४९ भुरिक्; ५७, ६१ अनुष्टुप्; ५९ पुरोबृहती ।

क्रो अथ युङ्क्ते धुरि गा क्रतस्य शिमीवतो भामिनो दुर्हणायून् ।

आसन्निषून् हृत्स्वसो मयोभून् य एषां भृत्यामृणधत् स जीवात्

× अथर्व० १८।१।८-३८, ५६ । दै० [अग्निः] १।४।४०-५५, ५७, ५९, ६०, ६२, ६५, ६८ । दि० [इन्द्रः] १७९०-९१ ।

३

४ १९९०

५

६

७

८

९ १९९५

१०

११

१२

१३

१४ २०००

६ २००१

न ते नाथं यम्यत्राहमस्मि न ते तनू तन्वाइ सं पृच्छ्याम् ।
 अन्येन मत् प्रमुदः कल्पयस्व न ते आता सुभगे वष्टयेतत् १३
 न वा उ ते तनू तन्वाइ सं पृच्छ्यां पापमाहुर्यः स्वसारं निगच्छात् ।
 असंयदेतन्मनसो हृदो मे आता स्वसुः शयने यच्छयीय १४
 त्रीणि च्छन्दांसि कवयो वि येतिरे पुरुषं दर्शतं विश्वचक्षणम् ।
 आपो वाता ओषधयस्तान्येकस्मिन् भुवेन आपितानि १७
 स्तेगो न क्षामत्येपि पृथिवी मही नो वाता इह वान्तु भूमौ ।
 मित्रो नो अत्र वरुणो युज्यमानो अग्निर्वने न व्यसृष्ट शोकम् २९ १००५
 स्तुहि श्रुतं गर्तसदं जनानां राजानं भीममुपहन्तुमुग्रम् ।
 मृडा जरित्रे रुद्र स्तवानो अन्यमसत् ते नि वपन्तु सेन्यम् ४०
 सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने ।
 सरस्वतीं सुकृतो हवन्ते सरस्वती दाशुषे वार्यं दात् ४१
 सरस्वतीं पितरो हवन्ते दक्षिणा यज्ञमभिनक्षमाणाः ।
 आसद्यास्मिन् वहिषि मादयध्वमनमीवा इष आ धैह्यस्मे ४२
 सरस्वति या सरथं ययाथोकथैः स्वधाभिर्देवि पितृभिर्मदन्ती ।
 सहस्रार्धमिडो अत्र भागं रायस्पोषं यजमानाय धेहि ४३
 उदीरतामवर उत् परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः ।
 असुं य ईयुरवका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु ४४ १०१०
 आहं पितृन्सुविदत्रां अविस्ति नपातं च विक्रमणं च विष्णोः ।
 वहिषदो ये स्वधया सुतस्य भजन्त पित्वस्त इहागमिष्ठाः ४५
 इदं पितृभ्यो नमो अस्त्वद्य ये पूर्वोसो ये अपरास ईयुः ।
 ये पार्थिवे रजस्या निषत्ता ये वा नूनं सुवृजनासु दिक्षु ४६
 मातली कव्यैर्यमो अङ्गिरोभिर्वृहस्पतिर्ऋकभिर्वावृधानः ।
 यांश्च देवा वावृधुर्ये च देवास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु ४७
 स्वादुष्किलायं मधुमां उतायं तीव्रः किलायं रसवां उतायम् ।
 उतो न्वस्य पपिवांसमिन्द्रं न कश्चन सहत आहवेषु ४८
 परेयिवांसं प्रवतो महीरिति बहुभ्यः पन्थामनुपस्पशानम् ।
 वैवस्वतं संगमनं जनानां यमं राजानं हविषा सपर्यत ४९ १०१५

[यज्ञादिकम् ।

१००१-२०२७]

१३

४

७

१९ २००५

२०

३१

३२

३३

४४ २०१०

४५

४६

४७

४८

४९ २०१५

वर्हिषदः पितर ऊत्यर्वाग्निमा वो हव्या चक्रुमा जुषध्वम् ।

त आ गतावसा शतमेनाधा नः शं योररपो दधात

५१

आन्या जानु दक्षिणतो निषद्येदं नो हविरभि गृणन्तु विश्वे ।

मा हिंसिष्ट पितरः केन चिन्नो यद् व आगः पुरुषता करांम

५२

त्वष्टा दुहित्रे वहतुं कृणोति तेनेदं विश्वं भुवनं समेति ।

यमस्य माता पर्युद्यमाना महो जाया विवस्वतो ननाश

५३

प्रेहि प्रेहि पथिभिः पूर्याणिर्येना ते पूर्वे पितरः परेताः ।

उमा राजानौ स्वधया मदन्तौ यमं पश्यासि वरुणं च देवम्

५४

द्युमन्तस्त्वेधीमहि द्युमन्तः समिधीमहि ।

द्युमान् द्युमत आ वह पितृन् हविषे अत्तवे

५७ २०२०

अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः ।

तेषां वयं सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम

५८

अङ्गिरोभिर्यज्ञियैरा गहीह यमं वैरूपैरिह मादयस्व ।

विवस्वन्तं हुवे यः पिता तेऽस्मिन् बर्हिष्या निषद्य

५९

इमं यम प्रस्तरमा हि रोहाङ्गिरोभिः पितृभिः संविद्वानः ।

आ त्वा मन्त्राः कविशस्ता वहन्त्वेना राजन् हविषो मादयस्व

६०

इत एत उदारुहन् दिवस्पृष्ठान्यारुहन् ।

प्र भूर्जयो यथा पथा द्यामङ्गिरसो युयुः

६१ २०२४

॥ ३०६ ॥ (अथर्व० १८।२।१-६०)

अथर्वा । यमः, मन्त्रोक्ताः; ४, ३४ अग्निः; ५ जातवेदाः; २९ पितरः (पितृमेघः) । त्रिष्टुप्; १-३, ६, १४-१८, २०, २२-२३, २५, ३०, ३४, ३६, ४६, ४८, ५०-५२, ५६ अनुष्टुप्; ४, ७, ९, १३ जगती; ५, १६, ४९, ५७ भुरिक्; १९ त्रिपदाऽऽर्षी गायत्री; २४ त्रिपदा समविषमाऽऽर्षी गायत्री; ३७ विराड् जगती; ३८-४४ आर्षी गायत्री; (४०, ४१-४४ भुरिक्)

४५ ककुम्भती अनुष्टुप् ।

यमाय सोमः पवते यमाय क्रियते हविः । यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्निर्दूतो अरंकृतः १ २०२५

यमाय मधुमत्तमं जुहोता प्र च तिष्ठत ।

इदं नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वैभ्यः पथिकृद्भ्यः

२

यमाय घृतवत् पयो राज्ञे हविर्जुहोतन ।

स नो जीवेष्वा यमेद् दीर्घमायुः प्र जीवसे

३ २०२७

- मैनमग्ने वि देहो माभि शूशुचो मास्य त्वचं चिक्षिपो मा शरीरम् ।
शृतं यदा करसि जातवेदोऽथेमेनं प्र हिणुतात् पितॄरुप ४
यदा शृतं कृणवो जातवेदोऽथेमेनं परि दत्तात् पितृभ्यः ।
यदो गच्छात्यसुनीतिमेतामथ देवानां वशनीर्भवाति ५
त्रिकद्रुकेभिः पवते षडुर्वीरेकमिद् बृहत् ।
त्रिष्टुब् गांयत्री छन्दांसि सर्वा ता यम आपिता ६ २०३०
सूर्यं चक्षुषा गच्छ वातमात्मना दिवं च गच्छ पृथिवीं च धर्मभिः ।
अपो वा गच्छ यदि तत्र ते हितमोषधीषु प्रति तिष्ठा शरीरैः ७
अजो भागस्तपस्स्तं तपस्व तं ते शोचिस्तपतु तं ते अर्चिः ।
यास्ते शिवास्तन्वो जातवेदस्ताभिर्वहैनं सुकृतांमु लोकम् ८
यास्ते शोचयो रंहयो जातवेदो याभिरापृणासि दिवमन्तरिक्षम् ।
अजं यन्तमनु ताः समृण्वतामथेतराभिः शिवतमाभिः शृतं कृषि ९
अव सृज पुनरग्ने पितृभ्यो यस्त आहुतश्चरति स्वधावान् ।
आयुर्वसान उप यातु शेषः सं गच्छतां तन्वा सुवचैः १०
अति द्रव श्वानौ सारमेयौ चतुरक्षौ श्वलौ साधुना पथा ।
अर्धा पितृन्सुविदत्रा अपीहि यमेन ये सधमादं मदन्ति ११ २०३५
यौ ते श्वानौ यम रक्षितारौ चतुरक्षौ पथिषदी नृचक्षसा ।
ताभ्यां राजन् परि धेह्येनं स्वस्त्यस्मा अनमीवं च धेहि १२
उरूणसावंसुतपावुदुम्बलौ यमस्य दूतौ चरतो जनां अनु ।
तावस्मभ्यं दृश्ये सूर्याय पुनर्दातामसुमद्येह भद्रम् १३
सोम एकैभ्यः पवते घृतमेक उपासते ।
येभ्यो मधु प्रधावति तांश्चिदेवापि गच्छतात् १४
ये चित् पूर्वं क्रतुसाता क्रतुजाता क्रतावृधः ।
ऋषीन् तपस्वतो यम तपोजा अपि गच्छतात् १५
तपसा ये अनाधृष्यास्तपसा ये स्वर्ययुः ।
तपो ये चक्रिरे महस्तांश्चिदेवापि गच्छतात् १६ २०४०
ये युध्यन्ते प्रधनेषु शूरासो ये तनूत्यजः ।
ये वा सहस्रदक्षिणास्तांश्चिदेवापि गच्छतात् १७ २०४५

यज्ञादिकम् ।

संस्कृत २०२८-२०५६]

४

सहस्रणीथाः कवयो ये गोपायन्ति सूर्यम् ।

ऋषीन् तपस्वतो यम तपोजाँ अपि गच्छतात्

१८

स्योनासै भव पृथिव्यनृक्षरा निवेशनी । यच्छास्मै शर्म सप्रथाः

१९

५

असंवाधे पृथिव्या उरौ लोके नि धीयस्व ।

स्वधा याश्चकृषे जीवन् तास्ते सन्तु मधुश्रुतः

२०

६ २०३०

ह्वयामि ते मनसा मन इहेमान् गृह्णो उप जुजुषाण एहि ।

सं गच्छस्व पितृभिः सं यमेन स्योनास्त्वा वाता उप वान्तु शग्माः

२१ २०४५

७

उत् त्वावहन्तु मरुत उदवाहा उदग्रतः । अजेन कृण्वन्तः शीतं वर्षेणोक्षन्तु बालिति

२२

उदहमायुरायुषे कृत्वे दक्षाय जीवसे ।

८

स्वान् गच्छतु ते मनो अधा पितृरुपं द्रव

२३

मा ते मनो मासोर्माङ्गानां मा रसंस्थ ते ।

९

मा ते हास्त तन्वः किं चनेह

२४

मा त्वा वृक्षः सं बाधिष्ट मा देवी पृथिवी मही ।

०

लोकं पितृषु विच्वैधस्व यमराजसु

२५

१ २०३१

यत् ते अङ्गमतिहितं पराचैरपानः प्राणो य उ वा ते परैतः ।

तत् ते संगत्य पितरः सनीडा घासाद् घासं पुनरा वेशयन्तु

२६ २०५०

२

अपेम जीवा अरुधन् गृहेभ्यस्तं निर्वहत परि ग्रामादितः ।

मृत्युर्यमस्यासीद् दूतः प्रचेता असन् पितृभ्यो गमयां चकार

२७

३

ये दस्यवः पितृषु प्रविष्टा ज्ञातिमुखा अहुतादुश्चरन्ति ।

परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्ठानस्मात् प्र धमाति यज्ञात्

२८

४

सं विशन्विह पितरः स्वा नः स्योनं कृण्वन्तः प्रतिरन्त आयुः ।

तेभ्यः शक्रेम हविषा नक्षमाणा ज्योग् जीवन्तः शरदः पुरुचीः

२९

५

यां ते धेनुं निपृणामि यमुं ते क्षीर औदुनम् ।

तेना जनस्यासो भर्ता योऽत्रासदजीवनः

३०

६ २०४०

अश्वावर्ता प्र तर या सुशेवार्क्षीकं वा प्रतरं नवीयः ।

यस्त्वा जुषान् वध्यः सो अस्तु मा सो अन्यद् विदत भागधेयम्

३१ २०५५

७ २०४१

यमः परोऽवरो विवस्वान् ततः परं नाति पश्यामि किं चन ।

यमे अच्वरो अधि मे निर्विष्टो भुवो विवस्वानन्वाततान

३२ २०५६

२० दे० [आयुर्वेद०]

अपाङ्गूहन्नमृतां मर्त्येभ्यः कृत्वा सर्वर्णामदधुर्विवस्वते ।	
उताश्विनावभरद् यत् तदासीदजहादु द्वा मिथुना संरण्यूः	३३
ये निखाता ये परोम्ना ये दुग्धा ये चोद्धिताः ।	
सर्वास्तानग्र आ बह पितृन् हविषे अत्ते	३४
ये अग्निदग्धा ये अर्नग्निदग्धा मध्ये दिवः स्वधया मादयन्ते ।	
त्वं तान् वेत्थ यदि ते जातवेदः स्वधया यज्ञं स्वधितिं जुषन्ताम्	३५
शं तप माति तपो अग्ने मा तन्वैः तपः ।	
वनेषु शुष्मो अस्तु ते पृथिव्यामस्तु यद्धरः	३६ २०६०
ददाम्यस्मा अवसानमेतद् य एष आगन् मम चेदभूदिह ।	
यमश्चिकित्वान् प्रत्येतदाह ममैष राय उर्ष तिष्ठतामिह	३७
इमां मात्रां मिमीमहे यथापर्ं न मासातै । शते शरत्सु नो पुरा	३८
प्रेमां मात्रां मिमीमहे यथापर्ं न मासातै । शते शरत्सु नो पुरा	३९
अप्रेमां मात्रां मिमीमहे यथापर्ं न मासातै । शते शरत्सु नो पुरा	४०
वीडेमां मात्रां मिमीमहे यथापर्ं न मासातै । शते शरत्सु नो पुरा	४१ २०६५
निरिमां मात्रां मिमीमहे यथापर्ं न मासातै । शते शरत्सु नो पुरा	४२
उदिमां मात्रां मिमीमहे यथापर्ं न मासातै । शते शरत्सु नो पुरा	४३
समिमां मात्रां मिमीमहे यथापर्ं न मासातै । शते शरत्सु नो पुरा	४४
अमांसि मात्रां स्वर्गामायुष्मान् भूयासम् ।	
यथापर्ं न मासातै शते शरत्सु नो पुरा ।	४५
प्राणो अपानो व्यान आयुश्चक्षुर्दृश्ये सूर्याय ।	
अपरिपरेण पथा यमराज्ञः पितृन् गच्छ	४६ २०७०
ये अग्रवः शशमानाः परियुर्हित्वा द्वेषांस्वनपत्यवन्तः ।	
ते द्यामुदित्याविदन्त लोकं नाकस्य पृष्ठे अधि दीध्यानाः	४७
उदन्वती द्यौरवमा पीलुमतीति मध्यमा ।	
तृतीया ह प्रद्यौरिति यस्यां पितर आसते	४८
ये नः पितुः पितरो ये पितामहा य आविविशुरुर्वन्तरिक्षम् ।	
य आक्षिपन्ति पृथिवीमुत द्यां तेभ्यः पितृभ्यो नमसा विधेम	४९ २०७३

[१०५७-१०८४]

यज्ञादिकम् ।

३

४

५

६ २०६०

७

८

९ २०६५

१०

११

१२

१३ २०७०

१४

१५

१६ २०७५

इदमिद् वा उ नापरं दिवि पश्यसि सूर्यम् ।

माता पुत्रं यथा सिचाभ्येनि भूम ऊर्णुहि

इदमिद् वा उ नापरं जरस्यन्यदितोऽपरम् ।

जाया पतिमिव वाससाभ्येनि भूम ऊर्णुहि

अभि त्वोर्णोमि पृथिव्या मातुर्वस्त्रेण भद्रया ।

जीवेषु भद्रं तन्मयि स्वधा पितृषु सा त्वयि

अग्नीषोमा पथिकृता स्योनं देवेभ्यो रत्नं दधथुर्वि लोकम् ।

उप प्रेष्यन्तं पूषणं यो वहांत्यज्जोयानैः पथिभिस्तत्र गच्छतम्

पूषा त्वेतश्चावयतु प्र विद्वाननष्टपशुर्भुवनस्य गोपाः ।

स त्वैतेभ्यः परि ददत् पितृभ्योऽग्निर्देवेभ्यः सुविदुत्रियेभ्यः

आयुर्विश्वायुः परि पातु त्वा पूषा त्वा पातु प्रपथे पुरस्तात् ।

यथासते सुकृतो यत्र त ईयुस्तत्र त्वा देवः सविता दधातु

इमौ युनज्मि ते वह्नी असुनीताय वोढवे ।

ताभ्यां यमस्य सादनं समितीश्चाव गच्छतात्

एतत् त्वा वासः प्रथमं न्वागन्नपैतदूह यदिहाबिभः पुरा ।

इष्टापूर्तमनुसंक्राम विद्वान् यत्र ते दत्तं बहुधा विबन्धुषु

अयेर्वर्म परि गोभिर्व्ययस्व सं प्रोर्णुष्व मेदसा पीवसा च ।

नेत् त्वा धृष्णुर्हरसा जर्हीषाणो दुष्टम् विधुक्षन् परीङ्खयाति

दुष्टं हस्तादाददानो गतासोः सह श्रोत्रेण वर्चसा बलेन ।

अत्रैव त्वमिह वयं सुवीरा विश्वा मृधो अभिमातीर्जयेम

धनुर्हस्तादाददानो मृतस्य सह क्षत्रेण वर्चसा बलेन ।

सुमार्गमाय वसु भूरि पुष्टमर्वाङ् त्वमेह्युप जीवलोकम्

५०

५१ २०७५

५२

५३

५४

५५

५६ २०८०

५७

५८

५९

६० २०८४

॥ ३०७ ॥ (अथर्व० १८।३।१, ३-४९, ५२, ५४, ५६, ५८-६६, ६८-७३) ×

अथर्वा । यमः, ४४, ४६ मन्त्रोक्ताः, ५-६ अग्निः, ५४ इन्द्रः, ५६ आपः (पितृमेघः) । त्रिष्टुप् ; ४, ८, ११, २३
सतः पङ्क्तिः, ५ त्रिपदा निचृद्गायत्री; ६, ५६, ६८, ७०, ७२ अनुष्टुप् (५६ आर्षी); १८, २५-२९,
४४, ४६ जगती (१८ भुरिक्, २९ विराट्); ३० पञ्चपदाऽतिजगती; ३१ विराट् शकरी;
३२-३५, ४७, ४९, ५२ भुरिक्; ३६ एकावसानाऽऽसुर्यनुष्टुप्; ३७ एकाव-
सानाऽऽसुरी गायत्री; ३९ परा त्रिष्टुप् पङ्क्तिः; ५४ पुरोऽनुष्टुप्;
५८ विराट्; ६० त्र्यवसाना षट्पदा जगती;
६४ भुरिक् पथ्यापङ्क्तिः;
६९, ६१ उपरिष्ठाद् बृहती ।

इयं नारीं पतिलोकं वृणाना नि पद्यत उप त्वा मर्त्यं प्रेतम् ।

धर्मं पुराणमनुपालयेन्ती तस्यै प्रजां द्रविणं चेह भैहि

अपश्यं युवतिं नीयमानां जीवां मृतेभ्यः परिणीयमानाम् ।

अन्धेन यत् तमसा प्रावृतासीत् प्राक्तो अपाचीमनयं तदेनाम्

प्रजानत्यग्निं जीवलोकं देवानां पन्थामनुसंचरन्ती ।

अयं ते गोपतिस्तं जुषस्व स्वर्गं लोकमग्निं रोहयैनम्

उप द्यामुप वेतुसमवेत्तरो नदीनाम् । अग्ने पितृमपामसि

यं त्वमग्ने समदहस्तमु निर्वापया पुनः ।

क्याम्बूरत्र रोहतु शाण्डदूर्वा व्यल्किशा

इदं तु एकं पर ऊं तु एकं तृतीयेन ज्योतिषा सं विशस्व ।

संवेशने तन्वांश्च चारुरेभि प्रियो देवानां परमे सधस्थे

उत् तिष्ठ प्रेहि प्र द्रवौकः कृणुष्व सलिले सधस्थे ।

तत्र त्वं पितृभिः संविदानः सं सोमेन मदस्व सं स्वधाभिः

प्र च्यवस्व तन्वांश्च सं भैरस्व मा ते गात्रा वि हायि मो शरीरम् ।

मनो निर्विष्टमनुसंविशस्व यत्र भूमैर्जुषसे तत्र गच्छ

वर्चसा मां पितरः सोम्यासो अञ्जन्तु देवा मधुना घृतेन ।

चक्षुषे मा प्रतरं तारयन्तो जरसे मा जरदष्टिं वर्धन्तु

वर्चसा मां समनक्त्वग्निर्मेधां मे विष्णुर्न्यनित्वा सन् ।

रयि मे विश्वे नि यच्छन्तु देवाः स्योना मापः पवनैः पुनन्तु

× अथर्व० १८।३।५३; ५५, ६७ = दै० [अग्निः] १५६२, १५६४ । दै० [इन्द्रः] २२६० ।

[यज्ञादिकम् ।
१०८५-११०८]

३, ८, ११, २३

५-२३,

२३;

१ १०८५

३

४

५

६

७ २०१०

८

९

०

१ २०१४

मित्रावरुणा परि मामं धातामादित्या मा स्वरवो वर्धयन्तु ।
 वर्षां म इन्द्रो न्यनिक्तु हस्तं योर्जरदंष्ट्रि मा सविता कृणोतु
 यो ममारं प्रथमो मर्त्यानां यः प्रेयायं प्रथमो लोकमेतम् ।
 वैवस्वतं संगमनं जनानां यमं राजानं हविषा सपर्यत
 परा यात पितर आ च यातायं वो यज्ञो मधुना समक्तः ।
 दुक्तो अस्मभ्यं द्रविणह भद्रं रयिं च नः सर्ववीरं दधात
 कर्षः कक्षीवान् पुरुमीढो अगस्त्यः श्यावाश्वः सोमर्थ्यर्चनानां ।
 विश्वामित्रोऽयं जमदग्निरत्रिरवन्तु नः कश्यपो वामदेवः
 विश्वामित्र जमदग्ने वसिष्ठ भरद्वाज गोतम वामदेव ।
 शर्दिनो अत्रिग्रभीन्नमोभिः सुसंशासः पितरो मृडता नः
 कृसे मृजाना अतिं यन्ति रिप्रमायुर्दधानाः प्रतरं नवीयः ।
 आप्यार्यमानाः प्रजया धनेनार्धं स्याम सुरभयो गृहेषु
 अज्जते व्यज्जते समज्जते कृतं रिहन्ति मधुनाभ्यज्जते ।
 सिन्धोरुच्छ्वासे पतयन्तमुक्षुणं हिरण्यपावाः पशुमांसु गृह्णते
 यद् वो मुद्रं पितरः सोम्यं च तेनो सचध्वं स्वयंशसो हि भूत ।
 ते अर्वाणः कवय आ शृणोत सुविदुत्रा विदथे हूयमानाः
 ये अत्रयो अङ्गिरसो नवर्गवा इष्टावन्तो रातिषाचो दधानाः ।
 दक्षिणावन्तः सुकृतो य उ स्यासद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वम्
 अथा यथा नः पितरः परासः प्रत्तासो अग्र कृतमांशशानाः ।
 शुचीदयन् दीध्यत उक्थशासः क्षामा भिन्दन्तो अरुणीरपं व्रन्
 सुकर्माणः सुरुचो देवयन्तो अयो न देवा जनिमा धमेन्तः ।
 शुचन्तो अग्निं वावृधन्त इन्द्रमुर्वी गव्यां परिषदं नो अक्रन्
 आ युधेवं क्षुमति पश्वो अरुयद् देवानां जनिमान्त्युग्रः ।
 मतीसश्चिदुर्वशीरकृप्रन् वृधे चिदुर्य उपरस्यायोः
 अकर्म ते स्वपसो अभूम कृतमवसन्नपसो विभातीः ।
 विश्वं तद् भद्रं यदवन्ति देवा बृहद् वंदेम विदथे सुवीराः
 इन्द्रो मा मरुत्वान् प्राच्यां दिशः पातु बाहुच्युतां पृथिवी द्यामिवोपरि ।
 लोककृतः पाथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभांगा इह स्थ

१२ २०१५

१३

१४

१५

१६

१७ २१००

१८

१९

२०

२१

२२ २१०५

२३

२४

२५ २१०८

धाता मा निर्ऋत्या दक्षिणाया दिशः पातु बाहुच्युता पृथिवी धामिबोपरि ।

लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ

२६

अदितिर्मादित्यैः प्रतीच्या दिशः पातु बाहुच्युता पृथिवी धामिबोपरि ।

लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ

२७ २११०

सोमो मा विश्वैर्देवैरुदीच्या दिशः पातु बाहुच्युता पृथिवी धामिबोपरि ।

लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ

२८

धर्ता ह त्वा धरुणो धारयाता ऊर्ध्व भानुं संविता धामिबोपरि ।

लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ

२९

प्राच्यां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युता पृथिवी धामिबोपरि ।

लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ

३०

दक्षिणायां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युता पृथिवी धामिबोपरि ।

लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ

३१

प्रतीच्यां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युता पृथिवी धामिबोपरि ।

लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ

३२ २१११

उदीच्यां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युता पृथिवी धामिबोपरि ।

लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ

३३

ध्रुवायां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युता पृथिवी धामिबोपरि ।

लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ

३४

ऊर्ध्वायां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युता पृथिवी धामिबोपरि ।

लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ

३५

धर्तासि धरुणोऽसि वंसगोऽसि ॥ ३६ ॥ उदुपूरसि मधुपूरसि वातपूरसि

३७ २११२

इतश्च मामुतश्चावतां यमे इव यतमाने यदैतम् ।

प्र वा भरन् मानुषा देवयन्तो आ सीदतां स्वमु लोकं विदानी

३८

स्वासस्थे भवतमिन्देवे नो युजे वां ब्रह्म पूर्य नमोभिः ।

वि श्लोक एति पथ्येव सूरिः शृण्वन्तु विश्वे अमृतांस एतत्

३९

त्रीणि पदानि रूपो अन्वरोहचतुष्पदीमन्वैतद् व्रतेन ।

अक्षरेण प्रति मिमीते अर्कमृतस्य नाभावमि सं पुनाति

४० २११३

[यज्ञादिकम् ।

[११०९-११३०]

२६

२७ १११०

२८

२९

परि ।

३०

वोपरि ।

३१

परि ।

३२ १११५

परि ।

३३

परि ।

३४

परि ।

३५

३७ ११२०

३८

३९

४० ११२५

देवेभ्यः कर्मवृणीत मृत्युं प्रजायै किममृतं नावृणीत ।

४१

बृहस्पतिर्यज्ञमृतनुत ऋषिः प्रियां यमस्तन्वमा रिरैच
त्वमग्न ईडितो जातवेदोऽवाङ्मह्यानि सुरभीणि कृत्वा ।

४२ ११२५

प्रादाः पितृभ्यः स्वधया ते अक्षन्नद्धि त्वं देव प्रयता हवींषि
आसीनासो अरुणीनामुपस्थे रयि धत्त दाशुषे मर्त्यीय ।

४३

पुत्रेभ्यः पितरस्तस्य वस्वः प्र यच्छत त इहोर्जं दधात
अग्निष्वात्ताः पितर एह गच्छत सदाः सदाः सदत सुप्रणीतयः ।

४४

अतो हवींषि प्रयतानि बर्हिषि रयि च नः सर्ववीरं दधात
उपहूता नः पितरः सोम्यासो बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु ।

४५

त आ गमन्तु त इह श्रुवन्त्वधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्
ये नः पितुः पितरो ये पितामहा अनूजहिरे सोमपीथं वासिष्ठाः ।

४६

तेभिर्ममः संरराणो हवींष्युशन्नद्धिः प्रतिक्राममत्तु
ये तातृपदेवत्रा जेहमाना होत्राविदुः स्तोमं तष्टासो अकैः ।

४७ ११३०

आमे याहि सहस्रं देववन्दैः सत्यैः कविभिर्ऋषिभिर्धर्मसद्धिः
ये सत्यासो हविरदो हविष्पा इन्द्रेण देवैः सुरथं तुरेण ।

४८

आथ याहि सुविदत्रेभिरवाङ् परैः पूर्वैर्ऋषिभिर्धर्मसद्धिः
उप सर्प मातरं भूमिमेतामुख्यचंसं पृथिवीं सुशेवाम् ।

४९

ऊर्णप्रदाः पृथिवी दक्षिणावत एषा त्वां पातु प्रपथे पुरस्तात्
उत् ते स्तन्नामि पृथिवीं त्वत् परीमं लोमं निदधन्मो अहं रिषम् ।

५०

एतां स्थूणां पितरो धारयन्ति ते तत्र यमः सादना ते कृणोत
अथवा पूर्णं चमसं यमिन्द्रायाविभर्वाजिनीवते ।

५१

तस्मिन् कृणोति सुकृतस्य भक्षं तस्मिन्निन्दुः पवते विश्वदानीम्
पर्यस्वतीरोपघयः पर्यस्वन्मामकं पर्यः ।

५२ ११३५

अपां पर्यसो यत् पर्यस्तेन मा सह शुम्भतु
स गच्छस्व पितृभिः सं यमेनेष्टापुतेन परमे व्योमिन् ।

५३

ह्रिवावधं पुनरस्तमेहि सं गच्छतां तन्वा सुवर्चाः
ये नः पितुः पितरो ये पितामहा य आविविशुरुर्वन्तरिक्षम् ।

५४ ११३७

तेभ्यः स्वराडसुनीतिर्नो अद्य यथावशं तन्वाः कल्पयाति

शं ते नीहारो भवतु शं ते प्रुष्वावं शीयताम् ।
 शीतिके शीतिकावति हार्दिके हार्दिकावति ।
 मण्डूक्यं शुभ्रं शं भुव इमं स्वर्गं शमय ६०
 विवस्वान् नो अभयं कृणोतु यः सुत्रामा जीरदानुः सुदानुः ।
 इहेमे वीरा बहवो भवन्तु गोमदश्च वन्मर्यस्तु पृष्टम् ६१
 विवस्वान् नो अमृतत्वे दधातु परैतु मृत्युर्मृतं न ऐतु ।
 इमान् रक्षतु पुरुषाना जरिष्णो मो ष्वेषामसवो यमं गुः ६२ २१४०
 यो दुध्रे अन्तरिक्षे न मृहा पितृणां कविः प्रमतिर्मतीनाम् ।
 तमर्चत विश्वमित्रा हविर्भिः स नो यमः प्रतरं जीवसे धातु ६३
 आ रोहत दिवमुत्तमामृषयो मा विभीतन ।
 सोमपाः सोमपायिन इदं वः क्रियते हविरगन्म ज्योतिरुत्तमम् ६४
 प्र केतुना बृहता भान्त्यग्निरा रोदसी वृषभो रोरवीति ।
 दिवश्चिदन्तादुपमामुदानुपामुपस्थे महिषो ववर्ध ६५
 नाके सुपर्णमुप यत् पतन्तं हृदा वेनन्तो अभ्यचक्षत त्वा ।
 हिरण्यपक्षं वरुणस्य दूतं यमस्य योनौ शकुनं भुरण्युम् ६६
 अपुषापिहितान् कुम्भान् यांस्ते देवा अधारयन् ।
 ते ते सन्तु स्वधावन्तो मधुमन्तो घृतश्चुतः ६८ २१४१
 यास्ते धाना अनुकिरामि तिलमिश्राः स्वधावन्तीः ।
 तास्ते सन्तु विम्बीः प्रम्बीस्तास्ते यमो राजानु मन्यताम् ६९
 पुनर्देहि वनस्पते य एष निहितस्त्वयि ।
 यथा यमस्य सादन् आसातै विदथा वदन् ७०
 आ रभस्व जातवेदस्तेजस्वद्धरो अस्तु ते ।
 शरीरमस्य सं दुहायैनं धेहि सुकृतांस्तु लोके ७१
 ये ते पूर्वे परागता अपरे पितरश्च ये ।
 तेभ्यो घृतस्य कुल्यैतु शतधारा व्युन्दती ७२
 एतदा रोह वयं उन्मृजानः स्वा इह बृहदु दीदयन्ते ।
 अभि प्रेहि मध्यतो माप हास्याः पितृणां लोकं प्रथमो यो अत्र ७३ २१४०

॥ ३०८ ॥ (अथर्व० १८।४।१-८९)

यमः, मन्त्रोक्ताः, ८१ पितरः, ८८ अग्निः, ८९ चन्द्रमाः । त्रिष्टुप् ; १, ४, ७, १४, ३६, ६० भुरिक् ; २, ५, ११
 १२, २०-५१, ५८ जगती ; ३ पञ्चपदा भुरिगतिजगती ; ६, ९, १३ पञ्चपदा शकरी (९ भुरिक्, १३ व्यवसाना) ;
 ८ पञ्चपदाऽतिशकरी ; १२ महाबृहती ; १६-२४ त्रिपदा भुरिङ्महाबृहती ; २६, ३३, ४३ उपरि-
 शदबृहती (२६ विराट्) ; २७ याजुषी गायत्री ; २५, ३१-३२, ३८, ४१-४२, ५५-५७, ५९, ६१
 अनुष्टुप् (५६ ककुम्भती) ; ३२, ६२-६३ आस्तारपङ्क्तिः ; (३९ पुरोविराट्,
 ६१ भुरिक्, ६३ स्वराट्) ; ४९ अनुष्टुगर्भा त्रिष्टुप् ; ५३ पुरोविराट् सतः
 पङ्क्तिः ; ६६ त्रिपदा स्वराट् गायत्री ; ६७ द्विपदाऽऽर्च्यनुष्टुप् ;
 ६८, ७१ आसुर्यनुष्टुप् ; ७२-७४, ७२ आसुरी पङ्क्तिः ; ७५
 आसुरी गायत्री ; ७६ आसुर्युष्णिक् ; ७७ देवी जगती ;
 ७८ आसुरी त्रिष्टुप् ; ८० आसुरी जगती ; ८१ प्राजा-
 पत्याऽनुष्टुप् ; ८२ सास्नी बृहती ; ८३-८४ सास्नी
 त्रिष्टुप् ; ८५ आसुरी बृहती ; (६७-६८-७१-८६
 एकावसाना) ; ८६-८७ चतुष्पदा उष्णिक् ;
 (८६ ककुम्भती, ८७ शंकुमती) ;
 ८८ व्यवसाना पथ्यापङ्क्तिः ; ८९ पञ्चपदा पथ्यापङ्क्तिः ।

आ रोहत् जनित्रीं जातवैदसः पितृयाणैः सं व आ रोहयामि ।

अवाङ्मयेपितो हव्यवाह ईजानं युक्ताः सुकृतां धत्त लोके

देवा यज्ञमृतवः कल्पयन्ति हविः पुरोडाशं सुचो यज्ञायुधानि ।

तेभिर्याहि पृथिभिर्देवयानैर्यैरीजानाः स्वर्गं यन्ति लोकम्

ऋतस्य पन्थामनु पश्य साध्वङ्गिरसः सुकृतो येन यन्ति ।

तेभिर्याहि पृथिभिः स्वर्गं यत्रादित्या मधुं भक्षयन्ति तृतीये नाके अधि वि श्रयस्व ३

त्रयः सुपर्णा उपरस्य मायू नाकस्य पृष्ठे अधि विष्टपि श्रिताः ।

स्वर्गा लोका अमृतैर्न विष्टा इपमूर्जं यजमानाय दुहाम्

बुहदीधारं घामुपभृदन्तरिक्षं ध्रुवा दाधार पृथिवीं प्रतिष्ठाम् ।

प्रतीमां लोका घृतपृष्ठाः स्वर्गाः कामैकामं यजमानाय दुहाम्

ध्रुव आ रोह पृथिवीं विश्वभोजसमन्तरिक्षमुपभृदा क्रमस्व ।

बुध्वां गच्छ यजमानेन साकं सुवेणं वत्सेन दिशः प्रपीनाः सर्वा ध्रुक्वाहणीयमानः ६

तीर्थैस्तरन्ति प्रवतो महीरिति यज्ञकृतः सुकृतो येन यन्ति ।

अवाङ्मयैर्जमानाय लोकं दिशो भूतानि यदकल्पयन्त

११ दे० [आयुर्वेद०]

अङ्गिरसामयनं पूर्वो अग्निरादित्यानमयनं गार्हपत्यो दक्षिणानामयनं दक्षिणाग्निः ।

महिमानमग्रेर्विहितस्य ब्रह्मणा समङ्गः सर्व उप याहि शुग्मः

पूर्वो अग्निष्ठा तपतु शं पुरस्ताच्छं पश्चात् तपतु गार्हपत्यः ।

दक्षिणाग्निष्टे तपतु शर्म वर्मोत्तरतो मध्यतो अन्तरिक्षाद् दिशोदिशो

अग्ने परि पाहि घोरात्

यूयमग्ने शंतमाभिस्तनूभिरीजानमभि लोकं स्वर्गम् ।

अश्वा भूत्वा पृष्टिवाहो बहाथ यत्र देवैः संधमादं मदन्ति

शमग्ने पश्चात् तप शं पुरस्ताच्छमुत्तराच्छमधरात् तपैनम् ।

एकस्त्रेधा विहितो जातवेदः सम्यगेनं धेहि सुकृतांस्तु लोके

शमग्रयः समिद्धा आ रभन्तां प्राजापत्यं मेध्यं जातवेदसः ।

शृतं कृण्वन्त इह माव चिक्षिपन्

यज्ञ एति विततः कल्पमान ईजानमभि लोकं स्वर्गम् ।

तमग्रयः सर्वहुतं जुषन्तां प्राजापत्यं मेध्यं जातवेदसः ।

शृतं कृण्वन्त इह माव चिक्षिपन्

ईजानश्चितमारुक्षदग्निं नार्कस्य पृष्ठाद् दिवमुत पतिष्यन् ।

तस्मै प्र भाति नमसो ज्योतिषीमान्त्स्वर्गः पन्थाः सुकृते देवयानः

अग्निर्होताध्वर्युष्टे बृहस्पतिरिन्द्रो ब्रह्मा दक्षिणतस्ते अस्तु ।

हुतोऽयं संस्थितो यज्ञ एति यत्र पूर्वमयनं हुतानाम्

अपूपवान् क्षीरवांश्चरुरेह सीदतु ।

लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ

अपूपवान् दधिवांश्चरुरेह सीदतु । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये०

अपूपवान् द्रप्सवांश्चरुरेह सीदतु । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये०

अपूपवान् घृतवांश्चरुरेह सीदतु । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये०

अपूपवान् मांसवांश्चरुरेह सीदतु । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये०

अपूपवान् न्नवांश्चरुरेह सीदतु । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये०

अपूपवान् मधुमांश्चरुरेह सीदतु । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये०

अपूपवान् रसवांश्चरुरेह सीदतु । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये०

अपूपवान् पवांश्चरुरेह सीदतु । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये०

[यज्ञादिकम् ।	११५८-११८९]	अपूपारिहितान् कुम्भान् यांस्ते देवा अधारयन् ।	
।		ते ते सन्तु स्वधावन्तो मधुमन्तो घृतश्रुतः	२५ २१७५
८		यास्ते धाना अनुकिरामि तिलमिश्राः स्वधावतीः ।	
		तास्ते सन्तु द्रुवीः प्रभ्वीस्तास्ते यमो राजानु मन्यताम्	२६
९		अक्षितिं भूयसीम्	२७
		द्रुप्सश्चस्कन्द पृथिवीमनु द्यामिमं च योनिमनु यश्च पूर्वः ।	
१० २१६०		समानं योनिमनु संचरन्तं द्रुप्सं जुहोम्यनु सप्त होत्राः	२८
		शतधारं वायुमर्कं स्वविदं नृचक्षसस्ते अभि चक्षते रयिम् ।	
११		ये पुणन्ति प्र च यच्छन्ति सर्वदा ते दुहते दक्षिणां सप्तमातरम्	२९
		कोशं दुहन्ति कलशं चतुर्विलमिडां धेनुं मधुमतीं स्वस्तये ।	
१२		ऊर्जं मदन्तीमदितिं जनेष्वग्रे मा हिंसीः परमे व्योमिन्	३० २१८०
		एतत् ते देवः सविता वासो ददाति भर्तवे ।	
		तत् त्वं यमस्य राज्ये वासानस्ताप्यं चर	३१
१३		धाना धेनुरभवद् वत्सो अस्यास्तिलोऽभवत् ।	
		तां वै यमस्य राज्ये अक्षितामुप जीवति	३२
१४		एतास्ते असौ धेनवः कामदुघां भवन्तु ।	
१५ २१६५		एनीः श्येनीः सरूपा विरूपास्तिलवत्सा उप तिष्ठन्तु त्वात्र	३३
		एनीर्धाना हरिणीः श्येनीरस्य कृष्णा धाना रोहिणीर्धेनवस्ते ।	
१६		तिलवत्सा ऊर्जमसौ दुहाना विश्वाहा सन्त्वनपस्फुरन्तीः	३४
१७		वैश्वानरे हविरिदं जुहोमि साहस्रं शतधारमुत्सम् ।	
१८		स विभर्ति पितरं पितामहान् प्रपितामहान् विभर्ति पित्र्वमानः	३५ २१८५
१९		सहस्रधारं शतधारमुत्समक्षितं व्यच्यमानं सलिलस्य पृष्ठे ।	
२० २१७०		ऊर्जं दुहानमनपस्फुरन्तमुपासते पितरः स्वधार्भिः	३६
२१		इदं कसाम्बु चयनेन चितं तत् संजाता अव पश्यतेत ।	
२२		मत्स्योऽयममृतत्वमेति तस्मै गृहान् कृणुत यावत्सबन्धु	३७
२३		इहैधि धनसनिरिहचित्त इहक्रतुः । इहैधि वीर्यवित्तरो वयोधा अपराहतः	३८
२४ २१७५		पुत्रं पौत्रमभितर्पयन्तीरापो मधुमतीरिमाः ।	
		स्वधां पितृभ्यो अमृतं दुहाना आपो देवीरुभयांस्तर्पयन्तु	३९ २१८९

- आपो अग्निं प्र हिणुत पितॄरुपेमं यज्ञं पितरो मे जुषन्ताम् ।
 आसीनामूर्जमुप ये सचन्ते ते नो रयिं सर्ववीरं नि यच्छान् ४० २१९०
 समिन्धते अमर्त्यं हव्यवाहं घृतप्रियम् । स वेद निहिताग्निधीन् पितॄन् परावतो गतान् ४१
 यं ते मन्थं यमोदुनं यन्मांसं निपुणामि ते । ते ते सन्तु स्वधावन्तो मधुमन्तो घृतश्रुतः ४२
 यास्ते धाना अनुकिरामि तिलमिश्राः स्वधावतीः ।
 तास्ते सन्तुद्भवीः प्रभ्वीस्तास्ते यमो राजानुं मन्यताम् ४३
 इदं पूर्वमपरं नियानं येनां ते पूर्वं पितरः परेताः ।
 पुरोगवा ये अभिशाचो अस्य ते त्वां वहन्ति सुकृतांस्तु लोकम् ४४
 सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने ।
 सरस्वतीं सुकृतो हवन्ते सरस्वतीं दाशुषे वार्यं दातु ४५ २१९५
 सरस्वतीं पितरो हवन्ते दक्षिणा यज्ञमभिनक्षमाणाः ।
 आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वमनमीवा इष आ धेह्यसे ४६
 सरस्वति या सरथं ययाथोकथैः स्वधार्मिर्देवि पितृभिर्मर्दन्ती ।
 सहस्रार्धमिडो अत्र भागं रायस्पोषं यजमानाय धेहि ४७
 पृथिवीं त्वां पृथिव्यामा वैश्यामि देवो नो धाता प्र तिरात्यायुः ।
 परापरैता वसुविद् वो अस्त्वधा मृताः पितृषुः सं भवन्तु ४८
 आ प्र च्यवेथामप तन्मृजेषां यद् वामभिभा अत्रोचुः ।
 अस्मादेतमध्वन्यौ तद् वशीयो दातुः पितृष्विह भोजनौ मम ४९
 एयमग्नं दक्षिणा भद्रतो नो अनेन दत्ता सुदुघा वयोधाः ।
 यौवने जीवानुपपृश्चती जरा पितृभ्य उपसंपराणयादिमान् ५० २२००
 इदं पितृभ्यः प्र भेरामि बर्हिर्जीवं देवेभ्य उत्तरं स्तृणामि ।
 तदा रोह पुरुष मेध्यो भवन् प्रति त्वा जानन्तु पितरः परेतम् ५१
 एदं बर्हिरसदो मेध्योऽभूः प्रति त्वा जानन्तु पितरः परेतम् ।
 यथापरु तन्वै सं भेरस्व गात्राणि ते ब्रह्मणा कल्पयामि ५२
 पर्णो राजापिधानं चरुणामूर्जो बलं सह ओजो न आगन् ।
 आयुर्जोविभ्यो विदधद् दीर्घायुत्वाय शतशारदाय ५३
 ऊर्जो भागो य इमं जजानाश्मानानामाधिपत्यं जगाम ।
 तमर्चत विश्वमित्रा हविर्भिः स नो यमः प्रतरं जीवसे धातु ५४ २२०४

[यज्ञादिकम्]

क्रमाः १११०-१२२१]

४० २१९०

४१

४२

४३

४४

४५ २१९५

४६

४७

४८

४९

५० २२००

५१

५२

५३

५४ २२०४

यथा यमाय हर्म्यमवपन् पञ्च मानवाः ।

एवा वपामि हर्म्यं यथा मे भूरयोऽसत

इदं हिरण्यं विमृहि यत् ते पिताविभः पुरा ।

स्वर्गं यतः पितुर्हस्तं निर्मृद्धि दक्षिणम्

ये च जीवा ये च मृता ये जाता ये च यज्ञियाः ।

तेभ्यो घृतस्य कुल्यैतु मधुधारा व्युन्दुती

वृषा मतीनां पवते विचक्षणः सरो अहो प्रतरीतोषसां दिवः ।

प्राणः सिन्धूनां कलशां अचिक्रदुदिन्द्रस्य हार्दिमाविशन् मनीषया

लेपस्ते धूम ऊर्णोतु दिवि पञ्चलुक् आततः ।

सरो न हि द्युता त्वं कृपा पावक रोचसे

प्र वा एतीन्दुरिन्द्रस्य निष्कृतिं सखा सख्युर्न प्र मिनाति संगिरः ।

मयि इव योषाः समर्षसे सोमः कलशैः शतरथामना पथा

अक्षन्मीमदन्त ह्यव प्रियां अधूषत । अस्तोषत स्वभानवो विप्रा यविष्ठा ईमहे

आ यात पितरः सोम्यासो गम्भीरैः पृथिमिः पितृयाणैः ।

आयुस्मभ्यं दधतः प्रजां च रायश्च पोषैरभि नः सचध्वम्

परा यात पितरः सोम्यासो गम्भीरैः पृथिमिः पूर्याणैः ।

अथा मासि पुनरा यात नो गृहान् हविरत्तुं सुप्रजसः सुवीराः

यद् वो अग्निरजहादेकमङ्गं पितृलोकं गमयं जातवेदाः ।

तद् व एतत् पुनरा प्याययामि साक्षाः स्वर्गे पितरो मादयध्वम्

अभूद् दूतः प्रहितो जातवेदाः सायं न्यह्ण उपवन्द्यो नृभिः ।

प्रादाः पितृभ्यः स्वधया ते अक्षन्नद्धि त्वं देव प्रयता हवींषि

असौ हा इह ते मनः ककुत्सलमिव जामयः । अभ्येनि भूम ऊर्णहि

शुम्भन्तां लोकाः पितृषदना पितृषदने त्वा लोक आ सादयामि

येऽस्माकं पितरस्तेषां बर्हिंसि ॥ ६८ ॥ उदुत्तमं वरुण०+

प्रास्मत् पाशान् वरुण मुञ्च सर्वान् यैः समामे बध्यते यैर्व्यामे ।

अथ जीवेम श्रद्धं शतानि त्वया राजन् गुपिता रक्षमाणाः

अग्रयं कव्युवाहनाय स्वधा नमः ॥ ७१ ॥ सोमाय पितृमते स्वधा नमः

५५ २२०५

५६

५७

५८

५९

६० २२१०

६१

६२

६३

६४

६५ २२१५

६६

६७

६९

७०

७२ २२२२

* दै० [आयुर्वेद०] १६७८ ।

पितृभ्यः सोमवद्भ्यः स्वधा नमः ॥ ७३ ॥ यमाय पितृमते स्वधा नमः
 एतत् ते प्रततामह स्वधा ये च त्वामनु
 एतत् ते ततामह स्वधा ये च त्वामनु
 एतत् ते तत स्वधा ॥ ७७ ॥ स्वधा पितृभ्यः पृथिविषद्भ्यः
 स्वधा पितृभ्यो अन्तरिक्षसद्भ्यः ॥ ७९ ॥ स्वधा पितृभ्यो दिविषद्भ्यः
 नमो वः पितर ऊर्जे नमो वः पितरो रसाय
 नमो वः पितरो भामाय नमो वः पितरो मन्यवे
 नमो वः पितरो यद् घोरं तस्मै नमो वः पितरो यत् क्रूरं तस्मै
 नमो वः पितरो यच्छिवं तस्मै नमो वः पितरो यत् स्योनं तस्मै
 नमो वः पितरः स्वधा वः पितरः
 येऽत्र पितरः पितरो येऽत्र यूयं स्थ युष्मास्तेऽनु यूयं तेषां श्रेष्ठा भूयास्थ
 य इह पितरो जीवा इह वयं स्मः । अस्मास्तेऽनु वयं तेषां श्रेष्ठा भूयास्म
 आ त्वाग्र इधीमहि द्युमन्तं देवाजरम् ।
 यद् घ सा ते पर्नीयसी समिद् दीदर्यति द्यवि । इयं स्तोतृभ्य आ भर
 चन्द्रमा अस्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि ।
 न वो हिरण्यनेमयः पदं विन्दन्ति विद्युतो वित्तं मे अस्य रोदसी

॥ ३०९ ॥ (क्र० ८१३११-४)

मनुर्वैवस्वतः । यज्ञः, यजमानश्च । गायत्री ।

यो यजाति यजात इत् सुनवच्च पचाति च । ब्रह्मेदिन्द्रस्य चाकनत्
 पुरोळाशं यो अस्मै सोमं ररत आशिरम् । पादित् तं शक्रो अंहसः
 तस्य द्युमाँ असद् रथो देवजूतः स शूशुवत् । विश्वा वन्वन्नमित्रिया
 अस्य प्रजावती गृहे ऽसश्नन्ती दिवेदिवे । इळा धेनुमती दुहे

॥ ३१० ॥ (क्र० १०१८३११-२)

प्रजावान् प्राजापत्यः । १ यजमानः; २ यजमानपत्नी । त्रिष्टुप् ।

अपश्यं त्वा मनसा चोक्तानं तपसो जातं तपसो विभूतम् ।
 इह प्रजामिह रयिं रराणः प्र जायस्व प्रजया पुत्रकाम
 अपश्यं त्वा मनसा दीध्यानां स्वायां तनू ऋत्वे नाधमानाम् ।
 उप मामुच्चा युवतिर्बभूयाः प्र जायस्व प्रजया पुत्रकामे

अङ्काः १२२३-२२५५]

॥ ३११ ॥ (अथर्व० ७।९७।१-८) [यज्ञः ।] +

॥ ३१२ ॥ (अथर्व० १९।१।१-३)

ब्रह्मा । यज्ञः; चन्द्रमाश्च । १-२ पथ्यावृहती, ३ पङ्क्तिः ।

सं सं संवन्तु नद्यः सं वाताः सं पतत्रिणः ।

यज्ञमिमं वर्धयता गिरः संस्त्राव्येण हविषा जुहोमि

१

इमं होमा यज्ञमवतेमं संस्त्रावणा उत ।

यज्ञमिमं वर्धयता गिरः संस्त्राव्येण हविषा जुहोमि

२

रूपरूपं वयोवयः संरभ्यैनं परिं ष्वजे ।

यज्ञमिमं चतस्रः प्रदिशो वर्धयन्तु संस्त्राव्येण हविषा जुहोमि

३ २२४८

॥ ३१३ ॥ (अथर्व० १९।५८।१-६)

ब्रह्मा । यज्ञः; बहुदैवत्यम् । त्रिष्टुप्, २ पुरोऽनुष्टुप्; ३ चतुष्पदाऽतिशकरी; ५ भुरिक् ।

वृत्स्य जतिः समना सदेवा संवत्सरं हविषा वर्धयन्ती ।

श्रोत्रं चक्षुः प्राणोच्छिन्नो नो अस्त्वच्छिन्ना वयमायुषो वर्चसः

१

उपासान् प्राणो ह्वयतामुप वयं प्राणं हवामहे ।

वचो जग्राह पृथिव्यन्तरिक्षं वर्चः सोमो बृहस्पतिर्विधत्ता

२ २२५०

वर्चसो द्यावापृथिवी संग्रहणी बभूवथुर्वचो गृहीत्वा पृथिवीमनु सं चरेम ।

यज्ञसं गावो गोपतिमुप तिष्ठन्त्यायतीर्यशो गृहीत्वा पृथिवीमनु सं चरेम

३

व्रजं कृणुध्वं स हि वो नृपाणो वर्मा सीव्यध्वं बहुला पृथूनि ।

पुरः कृणुध्वमार्यसीरवृष्टा मा वः सुस्रोच्चमसो दैहता तम्

४

यज्ञस्य चक्षुः प्रभृतिर्मुखं च वाचा श्रोत्रेण मनसा जुहोमि ।

इमं यज्ञं विततं विश्वकर्मणा देवा यन्तु सुमनस्यमानाः

५

ये देवानामृत्विजो ये च यज्ञिया येभ्यो हव्यं क्रियते भागधेयम् ।

इमं यज्ञं सह पत्नीभिरेत्य यावन्तो देवास्तविषा मादयन्ताम् ।

६ २२५४

॥ ३१४ ॥ (अथर्व० १९।५९।२)

ब्रह्मा । अग्निः (यज्ञः) । त्रिष्टुप् ।

यद् वो वयं प्रमिनाम व्रतानि विदुषां देवा अविदुष्टरासः ।

अग्निष्टु विश्वादा पूणातु विद्वान्तसोमस्य यो ब्राह्मणां आविवेश

२ २२५५

१ २२४९
२ २२४९
[दन्तः] ३२०-३२७ ।
अथर्व० १९।५९।१-३; = दै० [अग्निः] १२१४, १४९४-१४९५ ।

॥ ३१५ ॥ (अथर्व० ७९९।१)

अथर्वा । वेदी । भुरिक् । त्रिष्टुप् ।

परिं स्तृणीहि परिं धेहि वेदिं मा जाभिं मोपीरमुया शयानाम् ।

होतृषदं हारितं हिरण्ययं निष्का एते यजमानस्य लोके

१ २२५६

॥ ३१६ ॥ (ऋ० १।३६।१३-१४)

कण्वो घोरः । (अग्निः) यूपः । प्रगाथः [विपमा बृहती+समा सतोबृहति] (१३ उपरिष्ठाद्बृहती ।
ऐ. ब्रा. २।२ चरणच्छेदः) ।

ऊर्ध्व ऊ षु ण ऊतये तिष्ठा देवो न सविता ।

ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्वाधञ्जिर्विहयामहे

१३

ऊर्ध्वो नः पाह्यंसो नि केतुना विश्वं समत्रिणं दह ।

कृधी न ऊर्ध्वाश्चरथाय जीवसे विदा देवेषु नो दुर्वः

१४ २२५८

॥ ३१७ ॥ (ऋ० ३।८।१-१०)

गाथिनो विश्वामित्रः । यूपः, ६-१० यूपाः, ८ विश्वे देवा वा । त्रिष्टुप्; ३, ७ अनुष्टुप् ।

अञ्जन्ति त्वामध्वरे देवयन्तो वनस्पते मधुना दैव्येन ।

यदूर्ध्वस्तिष्ठा द्रविणेह धत्ताद् यद् वा क्षयो मातुरस्या उपस्थे

१

समिद्धस्य श्रयमाणः पुरस्ताद् ब्रह्म वन्वानो अजरं सुवीरम् ।

आरे अस्मदमतिं वाधमान उच्छ्रयस्व महते सौमगाय

२ २२६०

उच्छ्रयस्व वनस्पते वर्ष्मन् पृथिव्या अधि ।

सुमिती मीयमानो वर्चो धा यज्ञवाहसे

३

युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः ।

तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्योऽ मनसा देवयन्तः

४

जातो जायते सुदिनत्वे अह्नां समर्य आ विदथे वर्धमानः ।

पुनन्ति धीरा अपसौ मनीषा देव्या विप्र उदियति वाचम्

५

यान् वो नरो देवयन्तो निमिष्युर्वनस्पते स्वधितिर्वा ततक्ष ।

ते देवासः स्वरवस्तस्थिवांसः प्रजार्वदुस्मे दिधिषन्तु रत्नम्

६

ये वृक्णासो अधि क्षमि निर्मितासो यतस्तुचः ।

ते नो व्यन्तु वार्य देवत्रा क्षेत्रसाधसः

७ २२६५

आदित्या रुद्रा वसवः सुनीथा द्यावाक्षामा पृथिवी अन्तरिक्षम् ।

सजोषसो यज्ञमवन्तु देवा ऊर्ध्व कृण्वन्त्वध्वरस्य केतुम्

८ २२६६

अथाः २२५६-२२७३]

हंसा इव श्रेणिशो यतानाः शुक्रा वसानाः स्वरवो न आगुः ।
 उन्नीयमानाः कविभिः पुरस्ताद् देवा देवानामपि यन्ति पार्थः
 शृङ्गाणीवेच्छुङ्गिणां सं ददृशे चषालवन्तः स्वरवः पृथिव्याम् ।
 बाधं विहा विहवे श्रोषमाणा अस्माँ अवन्तु पृतनाज्येषु

॥ ३१८ ॥ (वा० य० ६।२-३,६)

(यूपः ।)

अग्नेरीरसि स्वावेश उन्नेतृणामेतस्य वित्तादधि त्वा स्थास्यति देवस्त्वा सविता
 मध्वानक्तु सुपिप्पलाभ्यस्त्वौषधीभ्यः ।

धामग्रेणास्पृक्ष आन्तरिक्षं मध्येनाप्राः पृथिवीमुपरेणादृहीः

या ते धामान्युडमसि गमध्वे यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः ।

अत्राह तदुरुगायस्य विष्णोः परमं पदमवभारि भूरि ।

ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि रायस्पोषवनि पर्यूहामि ।

ब्रह्म दृह क्षत्रं दृहायुर्दृह प्रजां दृह

परिवीरसि परि त्वा दैवीविशो व्ययन्तां परीमं यजमानं रायो मनुष्याणाम् ।

दिवः सूनुरस्येष तै पृथिव्याँल्लोक आरण्यस्ते पशुः

॥ ३१९ ॥ (वा० य० २१।४६)

(यूपः ।)

होता यक्षद् वनस्पतिमभि हि पिष्टतमया रभिष्ठया रशनयाधित ।

यत्राश्विनोऽङ्गारस्य हविषः प्रिया धामानि यत्र सरस्वत्या मेषस्य हविषः प्रिया

धामानि यत्रेन्द्रस्य ऋषभस्य हविषः प्रिया धामानि यत्राग्नेः प्रिया धामानि यत्र

सोमस्य प्रिया धामानि यत्रेन्द्रस्य सुत्राम्णः प्रिया धामानि यत्र सवितुः प्रिया धामानि

यत्र वरुणस्य प्रिया धामानि यत्र वनस्पतैः प्रिया पार्थाँसि यत्र देवानामाज्यपानाँ

प्रिया धामानि यत्राग्नेर्होतुः प्रिया धामानि तत्रैतान् प्रस्तुत्यैवोपस्तुत्यैवोपार्वस्रक्षद्

रमीयस इव कुत्वा करदेवं देवो वनस्पतिर्जुषताँ हविर्होतुर्यज

॥ ३२० ॥ (वा० य० २८।२०)

(यूपः ।)

देवो देवैर्वनस्पतिर्हिरण्यपर्णो मधुशाखः सुपिप्पलो देवमिन्द्रमवर्धयत् ।

दिवमग्रेणास्पृक्षदान्तरिक्षं पृथिवीमदृहीद् वसुवने वसुधेयस्य वेतु यज

११ ते. [आयुर्वेद०]

॥ ३२१ ॥ (अथर्व० ७।९८।१)

अथर्वा । इन्द्रः, विश्वे देवाः (हविः) । विराट् त्रिष्टुप् ।

सं वह्निरक्तं हविषा घृतेन समिन्द्रेण वसुना सं मरुद्भिः ।

सं देवैर्विश्वदेवेभिरक्तमिन्द्रं गच्छतु हविः स्वाहा

१ २२७४

॥ ३२२ ॥ (ऋ० १०।१३।१-५)

आङ्गिर्हविर्धानः विवस्वानादित्यो वा । हविर्धानेऽ । त्रिष्टुप्, ५ जगती ।

युजे वां ब्रह्म पूर्य नमोभिर्वि श्लोक एतु पृथ्यैव सूरः ।

शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा आ ये धामानि दिव्यानि तस्थुः

१ २२७५

यमे इव यतमाने यदैतं प्र वां भरन् मानुषा देवयन्तः ।

आ सीदतं स्वमु लोकं विदानि स्वासस्थे भवतमिन्द्रवे नः

२

पञ्च पदानि रूपो अन्वरोहं चतुष्पदीमन्वैमि व्रतेन ।

अक्षरेण प्रति मिम एतामृतस्य नाभावधि सं पुनामि

३

देवेभ्यः कर्मवृणीत मृत्युं प्रजायै कर्मृतं नावृणीत ।

बृहस्पतिं यज्ञमकृण्वत ऋषिं प्रियां यमस्तन्वं प्रारिरेचीत्

४

सप्त क्षरन्ति शिशवे मरुत्वन्ते पित्रे पुत्रासो अप्यवीवतन्नृतम् ।

उभे इदस्योभयस्य राजत उभे यतेते उभयस्य पुण्यतः

५ २२७६

॥ ३२३ ॥ (ऋ० १।२८।५-८)

आजीगर्तिः शुनःशेषः स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः । ५-६ उलूखलं, ७-८ उलूखलमुसले ।

५-६ अनुष्टुप्, ७-८ गायत्री ।

यच्चिद्धि त्वं गृहेगृह उलूखलक युज्यसे ।

इह धुमर्त्तमं वद जयतामिव दुन्दुभिः

५ २२८०

उत स ते वनस्पते वातो वि वात्यग्रमित् ।

अथो इन्द्राय पार्तवे सुनु सोममुलूखल

६

आयजी वाजसातमा ता ह्युच्चा विजर्भतः । हरीं इवान्धांसि वप्सता

७

ता नो अद्य वनस्पती ऋष्यावृष्वेभिः सोतुभिः । इन्द्राय मधुमत् सुतम्

८ २२८१

॥ ३२४ ॥ (ऋ० ७।१०४।१७)

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । ग्रावाणः । त्रिष्टुप् ।

प्र या जिगाति खर्गलेव नक्तमपद्रुहा तन्वं गृहमाना ।

वत्रां अनन्तां अव सा पदीष्ट ग्रावाणो घ्नन्तु रक्षस उपन्दैः

१७ २२८४

॥ ३२५ ॥ (ऋ० १०।७६।१-८)

सर्प ऐरावतो जरत्कर्णः । आवाणः । जगती ।

आ वं ऋजस ऊर्जा व्युष्टि—ष्विन्द्रं मरुतो रोदसी अनक्तन ।

उभे यथा नो अहनी सचाभुवा सदैःसदो वरिवस्यात उद्धिदा

तदु श्रेष्ठं सर्वनं सुनोतना—ऽत्यो न हस्तयतो अर्द्रिः सोतरि ।

विदद्वय्यो अभिभूति पौंस्यं महो राये चित् तरुते यदर्वतः

तदिद्वयस्य सर्वनं विवेरपो यथा पुरा मनवे गातुमश्रैत् ।

गोअर्णसि त्वाष्ट्रे अश्वनिणिजि प्रेमध्वरेष्वध्वराँ अशिश्रयुः

अप हत रक्षसो भङ्गुरावतः स्कभायत निर्कृतिं सेधतामतिम् ।

आ नो रयिं सर्ववीरं सुनोतन देवाव्यं भरत श्लोकमद्रयः

दिवशिदा वोऽमवत्तरेभ्यो विभ्वना चिदाश्वपस्तरेभ्यः ।

वायोश्चिदा सोमरभस्तरेभ्यो ऽग्नेश्चिदर्च पितुकृत्तरेभ्यः

भुन्तु नो यशसः सोत्वन्धसो आवाणो वाचा दिविता दिविर्माता ।

नरो यत्र दुहते काम्यं मध्वा—घोषयन्तो अभितो मिथस्तुरः

सुन्वन्ति सोमं रथिरासो अर्द्रयो निरस्य रसं गविषो दुहन्ति ते ।

दुहन्यूर्ध्वरूपसेचनाय कं नरो हव्या न मर्जयन्त आसभिः

एते नरः स्वर्पसो अभूतन य इन्द्राय सुनुथ सोममद्रयः ।

वामवांमं वो दिव्याय धाम्ने वसुवसु वः पार्थिवाय सुन्वते

॥ ३२६ ॥ (ऋ० १०।९४।१-१४)

अर्बुदः काद्रवेयः सर्पः । आवाणः । जगती; ५, ७, १४ त्रिष्टुप् ।

प्रैते वदन्तु प्र वयं वदाम आवाभ्यो वाचं वदता वदद्वयः ।

यदद्रयः पर्वताः साकमाश्वः श्लोकं घोषं भरथेन्द्राय सोमिनः

एते वदन्ति शतवत् सहस्रव—दुभि क्रन्दन्ति हरितेभिरासभिः ।

विष्टी प्रावाणः सुकृतः सुकृत्या होतुश्चित् पूर्वं हविरघमाशत

एते वदन्त्यविदन्नना मधु न्यूङ्खयन्ते अर्धं पक्क आमिषि ।

वृक्षस्य शाखामरुणस्य वप्सत—स्ते स्रमर्वा वृषभाः प्रेमराविषुः

बृहद् वदन्ति मद्विरेण मन्दिने—न्द्रं क्रोशन्तोऽविदन्नना मधु ।

संरम्या धीराः स्वसृभिरनर्तिषु—राघोषयन्तः पृथिवीमुपबिदिभिः

सुपर्णा वाचमक्रतोप द्यव्या—खरे कृष्णा इषिरा अनर्तिषुः ।
न्यङ्गि यन्त्युपरस्य निष्कृतं पुरु रेतो दधिरे सूर्यश्चितः
उग्रा इव प्रवहन्तः समायमुः साकं युक्ता वृषणो विभ्रतो धुरः ।
यच्छ्वसन्तो जग्रसाना अराविषुः शृण्व एषां प्रोथथो अर्वतामिव
दशानिभ्यो दशक्षयेभ्यो दशयोक्त्रेभ्यो दशयोजनेभ्यः ।
दशाभीशुभ्यो अर्चताजरेभ्यो दश धुरो दश युक्ता वहद्भ्यः
ते अद्रयो दशयन्त्रास आशव—स्तेषामाधानं पर्येति हर्यतम् ।
त ऊं सुतस्य सोम्यस्यान्धसो—ऽशोः पीयूषं प्रथमस्य भेजिरे
ते सोमादो हरी इन्द्रस्य निसर्ते—ऽशुं दुहन्तो अध्यासते गवि ।
तेभिर्दुग्धं पपिवान्तसोम्यं मध्वि—न्द्रो वर्धते प्रथते वृषायते
वृषा वो अंशुर्न किला रिषाथने—ळावन्तः सदुमित् स्थनाशिताः ।
रैवत्येव महसा चारवः स्थन यस्य ग्रावाणो अजुषध्वमध्वरम्
तुदिला अतदिलासो अद्रयो ऽश्रमणा अशृथिता अमृत्यवः ।
अनातुरा अजराः स्थामविष्णवः सुपीवसो अतृषिता अतृष्णजः
ध्रुवा एव वः पितरो युगेयुगे क्षेमकामासः सदैसो न युञ्जते ।
अजुर्यासौ हरिषाचो हरिद्रव आ द्यां रवेण पृथिवीमंशुश्रुवुः
तदिद् वदन्त्यद्रयो विमोचने यामन्नञ्जस्पा इव धेदुपब्दिभिः ।
वर्पन्तो बीजमिव धान्याकृतः पृश्नन्ति सोमं न मिनन्ति बप्सन्तः
सुते अध्वरे अधि वाचमक्रता—ऽऽ क्रीळ्यो न मातरं तुदन्तः ।
वि पू मुञ्चा सुपुषो मनीषां वि वर्तन्तामद्रयश्चायमानाः

५

६

७

८ १३००

९

१०

११

१२

१३ १३०५

१४ १३०६

॥ ३२७ ॥ (क्र० १०।१७५।१-४)

ऊर्ध्वग्रावा सर्प आर्बुदिः । ग्रावाणः । गायत्री ।

प्र वो ग्रावाणः सविता देवः सुवतु धर्मेणा । धूर्षु युज्यध्वं सुनुत
ग्रावाणो अपं दुच्छुना—मपं सेधत दुर्मतिम् । उस्ताः कर्तन भेषजम्
ग्रावाण उपरेष्वा महीयन्ते सजोषसः । वृष्णे दधतो वृष्यम्
ग्रावाणः सविता नु वो देवः सुवतु धर्मेणा । यजमानाय सुन्वते

१

२

३

४ १३१०

॥ ३२८ ॥ (ऋ० १०।११।१-९)

भिक्षुराङ्गिरसः । घनान्नदानम् । त्रिष्टुप्, १-१ जगती ।

न वा उ देवाः क्षुधमिद्वधं ददु—रुताशितमुप गच्छन्ति मृत्यवः ।

उतो रयिः पृणतो नोप दस्य—त्युतापृणन् मर्दितारं न विन्दते १

य आग्राय चकमानाय पित्वो ऽन्नवान्तसन् रफितायोपजग्मुषे ।

स्थिरं मनः कृणुते सेवते पुरो—तो चित् स मर्दितारं न विन्दते २

स इद्धोजो यो गृहवे ददा—त्यन्नकामाय चरते कृशाय ।

अरमसै भवति यामहता उतापरीषु कृणुते सखायम् ३

न स सखा यो न ददाति सख्यै सचाशुवे सचमानाय पित्वः ।

अपास्मात् प्रयान्न तदोक्तो अस्ति पूणन्तमन्यमरणं चिदिच्छेत् ४

पूणीयादिन्नाधमानाय तव्यान् द्राघीयांसमनु पश्येत पन्थाम् ।

ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्रा ऽन्यमन्यमुप तिष्ठन्तु रायः ५ २३१५

मोषमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत् स तस्य ।

नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी ६

कृषित् फाल आशितं कृणोति यन्नध्वानमुप वृङ्क्ते चरित्रैः ।

वदन् ब्रह्मावदतो वनीयान् पूणन्नापिरपृणन्तमभि ध्यात् ७

एकपाद् भूयो द्विपदो वि चक्रमे द्विपात् त्रिपादमभ्येति पश्चात् ।

चतुष्पादेति द्विपदामभिस्त्रे संपश्यन् पङ्क्तीरुपतिष्ठमानः ८

समौ चिद्वस्तौ न समं विविष्टः समातरां चिन्न समं दुहाते ।

यमयोश्चिन्न समा वीर्याणि जाती चित् सन्तौ न समं पूणीतः ९ २३१९

॥ ३२९ ॥ (अथर्व० ३।१४।१-६)

ब्रह्मा । गोष्ठः, अहः, १ अर्यमा, पूषा, बृहस्पतिः, इन्द्रः; १-६ गावः, ५ गोष्ठश्च ।

अनुष्टुप्, ६ आर्षा त्रिष्टुप् ।

सं वो गोष्ठेन सुषदा सं रय्या सं सुभृत्या ।

अर्हजितस्य यन्नाम तेनां वः सं सृजामसि १ २३१०

सं वः सृजत्वर्यमा सं पूषा सं बृहस्पतिः ।

समिन्द्रो यो धनंजयो मयि पुष्यत यद् वसुं २

संजग्माना अविश्युषीरस्मिन् गोष्ठे करीषिणीः ।

विभ्रताः सोम्यं मध्वनमीवा उपेतन ३ २३१२

इहैव गाव एतन्नेहो शकैव पुष्यत । इहैवोत प्र जायध्वं मयि संज्ञानमस्तु वः ४
 शिवो वो गोष्ठो भवतु शारिशकैव पुष्यत । इहैवोत प्र जायध्वं मया वः संसृजामसि ५
 मया गावो गोपतिना सचध्वमयं वो गोष्ठ इह पौषयिष्णुः ।
 रायस्पोषेण बहुला भवन्तीर्जीवा जीवन्तीरुप वः सदेम

॥ ३३० ॥ (अथर्व० ६।४९।३) । ×

गार्ग्यः । अग्निः (अग्निस्तवः) । विराट् जगती ।

सुपर्णा वाचमक्रतोष घव्याखरे कृष्णा इपिरा अनर्तिषुः ।
 नि यन्नियन्त्युपरस्य निष्कृतिं पुरु रेतो दधिरे सूर्यश्रितः

६ २३२५

३ २३२६

[२३२७-२३४५ इत्येकोनविंशति (१९) मन्त्राः तत्तद्विषये संग्राह्याः ।]

॥ ३३१ ॥ (वा० यः १२।१००)

(दीर्घायुष्यम् ।)

दीर्घायुस्त ओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम् ।
 अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात्

१०० २३२७

॥ ३३२ ॥ (वा० य० ३४।५०-५२)

(दीर्घायुष्यम् ।)

आयुष्यं वर्चस्यं रायस्पोपमौद्धिदम् ।
 इदं हिरण्यं वर्चस्वज्जैत्रायारविंशतादु माम्
 न तद् रक्षांसि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजं ह्येतत् ।
 यो विमर्ति दाक्षायणं हिरण्यं स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते
 दीर्घमायुः

५०

५१

यदाबध्न दाक्षायणा हिरण्यं शतानीकाय सुमनस्यमानाः ।

तन्म आ बध्नामि शतशारदाययुष्माञ्जरद्विर्थासम्

५२ २३३०

॥ ३३३ ॥ (अथर्व० २।१३।१-५)

अथर्वा । अग्निः, २-३ बृहस्पतिः, ४-५ विश्वे देवाः (दीर्घायुःप्राप्तिः) । त्रिष्टुप्,

४ अनुष्टुप्, ६ विराट्जगती ।

आयुर्दा अग्ने जरसं वृणानो घृतप्रतीको घृतपृष्ठो अग्ने ।

घृतं पीत्वा मधु चारु गव्यं पितेव पुत्रानभि रक्षतादिमम्

१ २३३१

× अथर्व० ६।४९।१-२ = दै० [अग्निः] २३३७-२३३८ ।

यज्ञादिकम् ।

[२३२१-२३४१]

परि धत्त धत्त नो वर्चसेमं जरा मृत्युं कणुत दीर्घमायुः ।

बृहस्पतिः प्रायच्छद् वासं एतत् सोमाय राज्ञे परिधातुवा उं २

परीदं वासो अधियाः स्वस्तयेऽभूर्गृहीनामभिशस्तिपा उं ।

शतं च जीवं शरदः पुरुची रायश्च पोषमुपसंव्ययस्व ३

एवमनमा तिष्ठाश्मा भवतु ते तनूः ।

कृण्वन्तु विश्वे देवा आयुष्टे शरदः शतम् ४

यस्य ते वासः प्रथमवास्यं हरा मस्तं त्वा विश्वेऽवन्तु देवाः ।

तं त्वा आतरः सुवृधा वर्धमानमनु जायन्तां बहवः सुजातम् ५ २३३५

॥ ३३४ ॥ (क्र० १०।८५।३१)

सावित्री सूर्या ऋषिका । दम्पत्योर्यक्ष्मनाशनम् । अनुष्टुप् ।

ये वृष्वश्चन्द्रं वहतुं यक्ष्मा यन्ति जनादनु ।

पुनस्तान् यज्ञिया देवा नयन्तु यत् आगताः ३१ २३३६

॥ ३३५ ॥ (क्र० १०।१५५।१,४)

शिरिम्बिठो भारद्वाजः । अलक्ष्मीघ्नम् । अनुष्टुप् ।

अरायि काणे विकटे गिरिं गच्छ सदान्वे ।

शिरिम्बिठस्य सत्त्वभिस्तोभिष्ठा चातयामसि १

यद्वा प्राचीरजगन्तो रौ मण्डूरधाणिकीः ।

हता इन्द्रस्य शत्रवः सर्वे बुद्धदयाशवः ४ २३३८

॥ ३३६ ॥ (क्र० १०।१४५।४,६) *

इन्द्राणी । सपत्नीवाधनम् (उपनिषत्) । ४ अनुष्टुप्, ६ पङ्क्तिः ।

नक्षत्राणां नाम गुणानामि नो अस्मिन् रमते जने ।

परमेव परावर्तं सपत्नी गमयामसि ४

उप तेऽद्यां सहमाना मभि त्वाद्यां सहीयसा ।

यामनु प्र ते मनो वत्सं गौरिव धावतु पथा वारिव धावतु ६ २३४०

॥ ३३७ ॥ (क्र० १०।१६६।१-५)

ऋषभो वैराजः, ऋषभः शाकरो वा । सपत्नघ्नम् । अनुष्टुप्, ५ महापङ्क्तिः ।

ऋषभं मा समानानां सपत्नानां विषासहिम् ।

हन्तारं शत्रूणां कृधि विराजं गोपतिं गवाम् १ २३४१

* क्र० १०।१४५।१-६ = दै० [आयुर्वेद०] ३६४-३६९ ।

अहमस्मि सपत्नहे—न्द्र इवारिष्टो अक्षतः ।
 अधः सपत्नी मे पदो—रिमे सर्वे अभिष्टिताः
 अत्रैव वोऽपि नह्या—म्युमे आत्नीं इव ज्ययां ।
 वाचस्पते नि वेधेमान् यथा मदधरं वदान्
 अभिभूरहमागमं विश्वकर्मण धाम्ना ।
 आ वञ्चित्तमा वो व्रत—मा वोऽहं समितिं ददे
 योगक्षेमं व आदाया—ऽहं भूयासमुत्तम आ वो मूर्धानमक्रीम् ।
 अधस्पदान्म उद्वदत मण्डूका इवोदुका—न्मण्डूका उदुकादिव

२

३

४

५ १३४५

इत्यायुर्वेद-प्रकरणं समाप्तम् ।

आयुर्वेद-प्रकरणस्य उपमा-सूची ।

२

3

8

4 9384

अर्वतां इव ऋ. १०,९४,६; २२९८ एषां प्रोथयः शृण्वे ।
अर्वतीः इव अ. १०,४,२१; ८२८ नयामि ।
अवध्वंसः इव अ. ५,२२,३; ५३३ अरुणः ।
अवसृष्टः न पाशैः वा. य. २०,७५,३; ३७२ त्मन्या समञ्जः ।
अश्रेष्माणः आधारयन् अ. ३,९,२; १७२८ तथा तत् मनुना ।
अश्वः इव अ. १०,१,१९; १६३४ वि वर्तताम् ।
अश्व इव अ. १९,५७,४; १९१३ कायम् ।
अश्व इव अ. १९,५७,४; १९१३ नीनाहम् ।
अश्व इव नडम् अ. १२,२,५०; २३६ अग्निः अन्तिकात् अनुवपते ।
अश्वं इव अश्वामिधान्या अ. ५,१४,६; १५२६ तां तस्मै नयामसि ।
अश्वः इव ऋ. १०,९७,३; ३०३ वीरुधः सजित्वरीः ।
मृगाः) अश्वः इव अ. १९,३८,२; २०३ विष्वच्चः यक्ष्माः ईरते ।
अश्वः न ऋ. १०,७५,७; १०४२ चित्रः सिन्धुः ।
विषिते हासमाने) अश्वे इव ऋ. ३,३३,१; १०२२ पर्वतानां ।
यथा)ऽसितः प्रथयते अ. ६,७२,१; १३४० एवाते अङ्गेन ।
इषुम्) अस्ता इव अ. १९,१४,३; १५५३ अपेतो जङ्घिडामति
यथा) अहानि अनुपूर्वम् अ. १२,२,२५; २४१ एवा आर्यूषि
यथा) अहा रात्री समवती अ. ४,१८,१; ३८८ तथा कृणोमि
हा इव सूर्यः ऋ. ६,६१,९; १०६७ ऋतावरी अन्याः स्वसृः
यथा यशः) आदिष्ये अ. १०,३,१८ १४७० एवा मणिः कीर्ति
पः मलं इव अ. २,७,१; ६६८ सर्वान् शपथान् अधि ।
के) आमिषे अधि ऋ. १०,९४,३; २२९५ सूभर्वाः वृषभाः
र्त्नी इव ज्यया अ. १,१,३; १४१७ इहैव उभौ अभि वि तनु ।
र्त्नी इव ज्यया ऋ. १०,१६६,३; २३४३ अत्रैव वा अपि ।
इव अ. ६,१४,३; ४८५ हायन, उप द्राहि ।
इव विरुजं बलम् अ. १३,२८,३; १५१५ हृदः सपत्नानां ।
इव ऋ. १,१६६,२; २३४२ अहं अक्षत अस्मि ।
इव अ. ४,५,७; ६१३ अहं अरिष्टः अक्षितः ।
इव दस्युन् असुरान् अ. १०,३,११; १४६३ मे शत्रून् ।
इन्द्रियाणि इव अ. १,३५,३; ६१ दक्षमाण हिरण्यं विभ्रत् ।

इन्द्रं न वृत्रतूर्ये धने हिते ऋ. ६, ६१, ५; १०६३ यः त्वा उप ब्रूते
(धन्वन्) इरा इव अ. ५, १३, १; ८३४ ते विषं नि जजास ।
इषीकां इव अ. ७, ५६, ४; ८५५ तानि त्वं सं नमः ।
(यथा) इषुका परापतदव सृष्टा अ. १, ३, ९; ५७९ एवा ते मूर्त्रं ।
इलावन्तः इव ऋ. १०, ९४, १०; २३०२ सदमित् आशिताः ।
(मध्यमशीः) उग्रः इव अ. ४, ९, ४; ५८३ ततः यक्ष्मं वि बाधसे ।
उग्राः इव प्रवहन्तः ऋ. १०, ९४, ६; २२९७ ग्रावाणः समाययुः ।
(यथा) उदकं अपपुषः अ. ६, १३९, ४; ६८० एवा नि शुष्य ।
उदप्लुतमिव दास अ. १०, ४, ३-४; ८१०-११ अरसं विषं उग्रम् ।
उह्रा अग्निं इव अ. ७, ४५, १; ६८६ ईर्ष्यां शमय ।
उर्वरीः इव साधुया अ. १०, ४, २१; ८२८ ओषधीनां अहं वृणे ।
(यथा) ऋणं सं नयन्ति अ. १९, ५७, १; १९१३ एवा दुष्पण्यं
अ. ६, ४६, ३; ६३५ अप्रिये ।
ऋणात् ऋणं इव अ. १९, ४५, १; ५९२; संनयन् कृत्यां ।
(यथा) ऋतवः ऋतुभिः अ. १२, २, २५; २४१ एवा धातः ।
ऋषिणा इव मनीषिणा अ. ८, ५, ८; १४३८ साकल्येन मणिना ।
(वारणी) एणी इव अ. ५, १४, ११; १६०१ कृत्या कर्तारं उत ।
ककुत्सलमिव जामयः अ. १८, ४, ५६; २२१६ अभि एनं भूम ।
कक्ष्या युक्तं इव ऋ. १०, १०, १३; १९६६ त्वा अन्या परि ।
कण्ववत् अ. ५, २३, १०; ७०६ किमयः हन्मि ।
कन्या इव तुष्ठा अ. ६, २२, ३; ९६७ एजाति ग्लहा ।
(मर्याय इव) कन्या ऋ. ३, ३३, १०; १०३१ शश्वच्चै ते ।
(यथा यशः) कन्यायाम् अ. १०, ३, २०; १४७२ एवा मणिः ।
कपिः इव अ. ४, ३७, ११; ७२५ एकः गन्धर्वः ।
(यथा) कलां संनयन्ति अ. १२, ५७, १; १२१३ एवा सर्वं
अ. ६, ४६, ३; ६३५ अप्रिये ।
कुमारः सर्वकेशकः इव अ. ४, ३७, ११; ७२५ एकः गन्धर्वः ।
(उदकं) कुम्भिनीः इव ऋ. १, १९१, १४; ७८७ मयूर्यः ते विषं ।
कशः इव रोहितम् अ. ४, ४, ७; १३३८ अनवगलयाता सदा ।
अ. ६, १०१, ३; १३४५ ।
क्रीलयः न मातरम् ऋ. १०, ९४, १४; २३०६ सुतं अध्वरे अधि ।
क्रीबा इव अ. ८, ६, ११; २३७८ वने प्रवृत्तः ।
खर्गलाः इव ऋ. ७, १०४, १७; २२८४ या नक्तं प्रजिगाति ।
(दृषदा) खत्वान् इव अ. २, ३१, १; ६९१ सं पिनष्मि किमीन् ।
(दृषदा) खत्वान् इव अ. ५, २३, ८; ७०३ मष्मषा नि आकरम् ।
गवां अह न मायुः ऋ. ७, १०३, २; ९९५ मण्डूकानां वगुः ।

(मुष्कावर्हो) गवामिव अ. ३, ९, २; १७९८ कृणोमि वधि ।
गां उक्षणमिव रज्ज्वा अ. ३, ११, ८; ७९ अभि त्वा ।
गावः गोघ्रात इव ऋ. १०, ९७, ८; ३०८ ओषधीनां शुष्माः ।
(रिहाणा मातरा शुभ्रे) गावा ऋ. ३, ३३, १; १०२२ पर्वतानां ।
गावो न हव्या ऋ. १, १८७, ११; १११८ हे पितो वचोभिः ।
गोषु युधः न ऋ. १०, ३०, १०; २१० नियवं चरन्तीः ।
गोष्ठामिव अ. २, १४, ६; १६५३ आसां धामानि परि असरन्
(वत्सं) गौः इव ऋ. १०, १४५, ६; २३४० ते मनः मां अनु ।
(वत्सं) गौः इव अ. ३, १८, ६; ३६३ मामनु ते मनः प्र धावतु ।
(स्पन्दना) गौः स्थाली अ. ८, ६, १७; १३८३ पाण्यो पदा ।
(आचितं) ग्रामं इव अ. ४, ७, ५; ८०२ वचसा परि स्थाप० ।
घर्म इव अभितपन् अ. १९, २८, ३; १५१५ द्विषतो नितपन् ममे ।
चतुष्पदामिव च्छदिः अ. ३, ७, ३; १९४ अदो यदवरोचते ।
(यथा यशः) चन्द्रमसि अ. १०, ३, १८; १४७० मणिः कीर्तिं भूतिं ।
(येषन्तं) चरुमिव अ. ४, ७, ४; ८०१ वचसा परि स्थापयामि ।
छायां इव अ. ८, ६, ८; १३७४ प्र तान् सूर्यः अनीनश्च ।
(रात्री) जगत् इव अ. ६, १२, १; ८४६ हंसात् अन्यत् विषं ।
जनं इव शेवधिम् अ. ५, २२, ४; ५४४ त्वमानं परि दक्षि ।
जमदग्निवत् अ. ५, २३, १०; ७०५ किमयः हन्मि ।
जयतां इव दुन्दुभिः ऋ. १, २८, ५; २२८० युमत्तमं वद ।
(यथा यशः) जातवेदसि अ. १०, ३, १९; १४७१ एवा मणिः कीर्तिं
जाया पतिं इव अ. १८, २, ५१; २०७५ वाससा अभ्येनं ।
(पत्या तुष्ठा) जाया इव अ. १०, १, ३; १६१८ शूद्रकृता कर्तारं
जाया इव पत्ये ऋ. १०, १०, ७; १९६० अहं तन्वं वि विरिच्याम् ।
जालेन अभिहिता इव अ. १०, १, ३०; १६४५ तमसा आहृताः ।
(यथा) जीवाः अदितेः उपस्थे अ. २, २८, ४; ४ त्वां पिता गुप्तिता ।
(यथा) जीवगृभः अ. १०, ९७, ११; ३११ तथा यक्ष्मस्य आत्मा ।
ज्यामिव धन्वन् अ. ५, १३, ६; ८३९ मन्योः विसृजामि ।
(यथा) समं ज्योतिः सूर्येण अ. ४, १८, १; ३८८ तथा कृणोमि ।
ज्योतिषा इव अ. ४, १९, ३; ३९८ अभि दीपयन् अग्रमेधि ।
तक्मन्वी इव अ. ५, २२, ७; ५३७ तां धूनुहि ।
तम इव अ. ८, २, १२; ३८ सर्वं दुर्भूतं अपहन्मसि ।
तमस इव ज्योति अ. ५, १३, ३; ८३६ उदेतु सूर्यः ।
(प्रदोषं) तस्काराः इव ऋ. १, १९१, ५; ७७८ अहृष्टाः विषदृष्टाः ।
(यथैव) तृप्यते मयः अ. १९, २, ५; ९३२ तास्त आदत्त मेवज्जी ।

णोमि विप्र ।
त्वा ।
रीनां शुष्माः ।
२ पर्वतानां ।
तो वचोभिः ।
रन्तीः ।
परि असरन् ।
मनः मां अनु ।
नः प्र धावतु ।
पण्यां पदा ।
परि स्थाप० ।
नितपन् मने ।
यदवरोचते ।
ः कीर्ति भूति ।
स्थापयामसि ।
भनीनशत ।
न्यत विष ।
दशसि ।
।
तमं वद ।
मा मणिः कीर्ति
अभ्येनं ।
ददकृता कर्तार
वे रिरिच्यम् ।
मसा आहताः ।
पिता गुपिता ।
मस्य आत्मा ।
सुखामि ।
तथा कृणोमि ।
अग्रमेभि ।
।
ः ।
विषदष्टाः ।
वादादक्ष भेषजः ।

(रूप) तेज आहितम् अ. १०,३,१७ १४६९ एवा मणिः कीर्ति
(यथा अन्तर्निहित) तेजन्म अ. १,२,४; ६६७ एवा रोगं च ।
(रूप) त्वचमिव भूम्याः अ. १९,२८,४; १५१६ शिर एषां ।
विने देवाः इव अ. ६,८०,२; १५८९ त्रयः कालकाजाः श्रिताः ।
विने भूमिवाशनि अ. ६,३७,२; १७७४ शतारं अत्र नो जहि ।
देवै इव पितरम् अ. १०,१,२६; १६४१ जानीहि कृत्ये ।
तो न शुष्कम् ऋ. ७,१०३,२; ९९५ आपः शयानं एनम् ।
वि (इव) मुरावतो ऋ. १,१२१,१०; ७८३ सूर्यं विषम् ।
(निष्पन्नं) दतेरिव अ. ६,१८,३; ६८४ ते ईर्ष्यां मुञ्चामि ।
ऋ. इव अ. ४,३७,११; ७२५ प्रियः भूत्वा ।
तेन सविता ऋ. १,३६,१३; २२५७ (यूप), ऊर्ध्वः तिष्ठ ।
तेन असुरमायया अ. ३,९,४; १८०० येन श्रवस्यवः चरथ ।
वत्स उपरि अ. १८,३,२९; २१२२ ऊर्ध्वं भानुं सविता ।
वत्स उपरि अ. १८,३,२५-२८, ३०-३५; २१०८-
११,२११३-१८ वाहुच्युता पृथिवी
(रि) वा इव सूर्यः अ. ६,१२,१; ८४६ अहीनां जनिमागमम् ।
(रि) वावापृथिवी वि इतः अ. ३,३१,४; १७१ अहं सर्वेण ।
ऋ. इव अ. ६,१४२,१; ११२५ तत् उच्छ्रयस्व ।
मृगदेव मुमुचानः वा. य. २०,२०; ११०५ आपः मा एनसः ।
मृगदेव मुमुचानः अ. ६,११५,३; १७२९ आपः शुन्धन्तु ।
मृगदेवः मया इव अ. १९,३५,२; १५६२ स नो रक्षतु जङ्गिडः ।
ऋ. इव अ. ६,१०१,२; १३४३ आ तानय पसः ।
ऋ. इव अ. ४,४,६; १३३७ आ तानय पसः ।
(रूप) नकुलः विच्छिद्य अ. ६,१३९,५; ६८१ एवा कामस्य
नो इव अ. ४,१९,१; ३९६ प्रजां छिन्धि वार्षिकम् ।
(रूप) नदं अशिपुने त्रियो अ. ६,१३८,५; ५०२ एवा भिनक्षि ।
ऋ. इव अ. ६,१३७,२-३; ४६४-६५ केशाः वर्धन्ताम् ।
ऋ. इव अ. ४,३३,७; १७६२ द्विषो नो अति पारय ।
ऋ. इव अ. ५,१४,३; १५९३ कृत्यां देवाः प्रति मुञ्चत ।
(रूप) पतन्ति पक्षिणः अ. १,११,६; १४१० एवा त्वं जरायुणा
ऋ. इव अ. ६,२२,३; ९६७ एहं तुन्दाना ।
(रूप) इव सूर्यः अ. १८,३,३९; २१२२ वि श्लोक एति ।
(रूप) इव सूर्यः अ. १०,१३,१; २२७५ श्लोकः एतु ।
(रूप) दिशं दिशं वि अ. ३,३१,४; १७१ अहं सर्वेण ।
(रूप) इव धेनवः ऋ. १०,७५,४; १०३९ त्वां वाश्राः अर्षन्ति ।

(यथा यशः) परमेष्ठिनि अ. १०,३,२४; १४७६ एवा मणिः कीर्ति
(इवाः) पर्ण इव ऋ. १०,१८,१४; १९५३ मां प्रतीचीन ।
(सरो) पर्ण इव अ. ४,२५,१; १३४६ शेषो गर्भस्य रेतोधाः ।
(पूतं) पवित्रेण इव वा. य. २०,२०; ११०५ आपः शुन्धन्तु ।
आज्ये अ. ६,११५,३; १७१२
पिता इव पुत्रान् अ. २,१३,१; २३३१ अभिरक्षतात् इमम् ।
पितरं न पुत्रः ऋ. ७,१०३,३; ९९६ अन्यः अन्यं (मण्डूकं) ।
पितारुः निष्कमिव अ. १९,५७,५; १९१७ देवपीयुः प्रति ।
पुत्र इव पितरम् अ. ५,१४,१०; १६०० कृत्ये गच्छ ।
(यथा) पुत्रं जनादिति अ. ६,८१,३; १३३१ त्वष्टा तं अस्यै ।
(यथा न) पूर्वं अपरः जहाति अ. १२,२,२५; २४१ एवा धातः ।
पूषा इव ऋ. ६,६१,६; १०६४ नः सनि रद ।
(यथेयं) पृथिवी गर्भ आ दधे अ. ५,२५,२; १३४७ एवा दधामि ।
(यथेयं) पृथिवी गर्भ आ दधे अ. ६,१७,१४; १३६२-६५ एवा ते ।
(यथा यशः) पृथिव्याम् अ. १०,३,१९; १४७१ एवा मणिः ।
पौञ्छिष्ठ इव कर्वरम् अ. १०,४,१९; ८२६ शीर्षाणि अप्रभम् ।
(यथा यशः) प्रजापतौ अ. १०,३,२४; १४७६ एवा मणिः कीर्ति ।
बन्धमिव अ. ५,१४,१०; १६०० अवक्रामी ।
(यथा) बाणः सुसंशितः अ. ६,१०५,२; ४८७ एवा त्वं कासे ।
विसखा इव ऋ. ६,६१,२; १०६० ऊर्मिभिः गिरीणां सानु ।
(वपन्तः धान्यकृतः) बीजम् ऋ. १०,९४,१३; २३०५ प्रावाणः ।
(यथा) बीजं उर्वराया अ. १०,६,३३; १५१० एवा मयि प्रजा ।
ब्राह्मणा इव व्रतचारिणः ऋ. ७,१०३,१; ९९३ मण्डूकाः वाचं ।
ब्राह्मणासः अतिरात्रेण सोमे ऋ. ७,१०३,७; १००० मण्डूकाः ।
मग इव यामेषु अ. ६,२१,२; ४५८ भेषजानां श्रेष्ठं असि ।
(इदं) भुवनं विश्वं वि अ. ३,३१,१; १७२ अहं सर्वेण पाप्मना ।
(यथा) भूमिः मृतमनाः अ. ६,१८,२; ६८३ एवा ईर्ष्याः ।
मण्डूकाः उदकात् इव ऋ. १०,१६६,५; २३४१ मे पदात् अधः
मत्तः इव अ. ६,२०,१; १७९ विलपन् ।
मधुपर्कं यथा यशः अ. १०,३,२१; १४७३ एवा मणिः ।
(उग्रः) मध्यमशीः इव ऋ. १०,२७,१२; ३१२ ओषधीः यक्ष्मं ।
(यथा) मनः (पतति) अ. १,११,६; १४१० एवा त्वं जरायुणा ।
यथा मनः मनस्कैतैः परा अ. ६,१०५,१; ४८६ एवा कासे प्रपत ।
(यथा पुरा) मनवे गातुम् ऋ. १०,७६,३; २२८७ तद्वत् व्याप्तोतु ।
मनसः न प्रयुक्ति ऋ. १०,३०,१; ९०१ सोमः देवत्रा अपः ।
(यथा) मन्त्रो मनः अ. ६,१८,२; ६८३ एवा ईर्ष्यां मृतं मनः ।

मर्यः न कल्याणीभिः ऋ. १०,३०,५; २०५ याभिः सोमः ।
 मर्य इव योषाः अ. १८,४,१०; २२१० सोमः शतयामना ।
 माता इव अ. २,२८,५; ५ अस्मै शर्म यच्छ ।
 माता इव पुत्रम् अ. २,२८,१; १ मित्रः एवं पातवहसः ।
 (सं) मातरः इव अ. ८,७,२७; ३५० पुष्पवतीः दुहामस्या ।
 (उशतीः इव) मातरः ऋ. १०,९,२; ८८० तस्य भाजयत इह नः ।
 (स) मातरा चित् न ऋ. १०,११७,९; २३१९ ज्ञाती चित् ।
 माता पुत्रं यथा अ. १८,२,५०; २०७४ अभ्येनं भूम ऊर्णुहि ।
 (यथा) माता पुत्रं सिचां ऋ. १०,१८,११; १९५० एनं हे भूमे
 माता इव पुत्रम् वा. य. १२,३५; ११०० सुपत्नीः बिभ्रत ।
 माता इव पुत्रेभ्यः अ. ६,३०,३; ४७२ शमि, केशेभ्यः मृड ।
 मुष्करं यथा अ. ६,१४,२; ४८४ बलासं निः क्षिणोमि ।
 मूलमुर्धावा इव अ. ६,१४,२; ४८४ छिनन्नि अस्य बन्धनम् ।
 मृगं इव अ. ५,१४,१२; १६०२ तं कृत्याकृतं पुनः गृह्णातु ।
 मृगी इव अ. ५,१४,११; १६०१ कृत्या कर्तारं उद् ऋच्छतु ।
 यथा यमस्य गृहे त्वा अ. ६,२९,३; १५८७ तथा आभूकम् ।
 यथा यमस्य सादन अ. १८,३,७०; २१४७ पुनर्देहि वनस्पते ।
 यथा यमाय हर्म्य अ. १८,४,५५; २२०५ एवा वपामि ।
 यमे इव ऋ. १०,१३,२; २२७६ युवां यतम ने यदा एतम् ।
 अ. १८,३,३८; २१२१
 यथा यशः यजमाने अ. १०,३,२३; १४७५ एवा मणिः कीर्ति ।
 यथा यशः यज्ञे अ. १०,३,२३; १४७५ एवा मणिः कीर्ति ।
 युवयोः चित् न समा ऋ. १०,११७,९; २३१९ तथा ज्ञाती चित् ।
 यूथा इव सुमति पथः अ. १८,३,२३; २१०६ उपरः देवानां ।
 पीप्याना योषा इव ऋ. ३,३३,१०; १०३१ वयं ते नि नसै ।
 (सुखः) रथः इव अ. ५,१४,५; १५२५ कृत्या कृत्याकृतं ।
 अ. ५,१४,१३; १६०३
 रथः इव ऋ. ६,६१,१३; १०७१ बृहती विभ्वने कृता ।
 (यथा सुचक्र सुपविः) रथः अ. ४,१२,६; ४२६ तथा प्रति ।
 (आशवः) रथाः इव अ. ३,९,५; १८०१ शपथेभिः उत् ।
 रथान् इव अ. ५,१३,६; ८३९ सात्रासहस्य मन्योः विमुञ्चामि ।
 (ऋभुः) रथस्य अंगानि इव अ. ४,१२,७; ४२७ परुषा परुः ।
 रथस्य इव अ. १०,१,८; १६९३ यस्ते परुषि संदधौ ।
 (यथा यशः) रथे अ. १०,३,२०; १४७२ एवा मणिः ।
 रथी इव ऋ. ५,८३,३; ९७६ कशया अध्वान् अभिशिपन् ।
 रथ्या इव ऋ. ३,३३,२; १०२३ युवां समुद्रं अच्छा याथः ।

(प्रवावधाना) रथ्या इव ऋ. ७,९५,१; १०७३ अपः प्रवावधाना ।
 रथ्या इव चक्रा ऋ. १०,११७,५; २३१५ रायः आ वर्तन्ते ।
 रथ्या इव चक्रा ऋ. १०,१०,७ १९६० [आवां] वि वृदेव चित् ।
 रथ्या इव चक्रा ऋ. १०,१०,८ १९६१ तेन अन्येन वि बृह ।
 राजा इव युध्वा ऋ. १०,७५,४; १०३९ त्वमित सिचौ नथसि ।
 राजानः समितौ इव ऋ. १०,९७,६; ३०६ ओषधीः समगमत ।
 रिश्यस्य इव परीशासम् अ. ५,१४,३; १५९३ त्वचः परि ।
 रैवत्या इव ऋ. १०,९४,१०; २३०२ महसा चारतः स्थन ।
 लिबुजा वृक्षं इव ऋ. १०,१०,१३; १९६६ त्वां अन्या ।
 लिबुजा वृक्षं इव ऋ. १०,१०,१४; १९६७ अन्यः त्वां ।
 वत्सो धारुरिव मातरम् अ. ४,१८,२; ३८९ तं प्रलग्नप पयताम् ।
 वत्समिव मातरा संरिहाणे ऋ. ३,३३,३; १०२४ युवां अयां ।
 वधूं इव वहतौ अ. १०,१,१; १६१६ चिकित्सवः या ।
 वपुषी इव ऋ. १०,७५,६; १०४२ दर्शता ।
 (देवेषु) वरुणो यथा अ. ६,२१,२; ४५८ मेघजानां श्रेष्ठ अशि ।
 वचं वेशन्त्या इव अ. १,३,७; ५७७ प्र ते भिनन्नि मेहनम् ।
 वषट्कारे यथा यशः अ. १०,३,२२; १४७४ एवा मणिः ।
 वद्यंश्चान्ता वधूः इव अ. ४,२०,३; ७५६ स भूमि आ ।
 वाका अपचितां इव अ. ६,२५,१-३; १६८२-८४ ताः सर्वाः नश्यन्तु ।
 (यथा) वातः अ. १,११,६; १४१० एवा त्वं पत ।
 वातः अभ्रं इव अ. ८,६,१३; १३८५ पिङ्गः स्त्रीभागान् ।
 (यथा) वातश्च्यावयति अ. १०,१,१३; १६२८ एवा सर्व ।
 (यथा) वातश्च्यावयति अन्तरिक्षादध्रम ,, ,,
 यथा वातः न्यग् वाति अ. ६,९१,२; २०० न्यग् भवतु ते रथः ।
 वात इव वृक्षान् अ. १०,१,१७; १६३२ नि मृणीहि ।
 (यथा) वातः वनस्पतीन् अ. १०,३,१३; १४६५ एवा मे ।
 (यथा) वातश्च अग्निश्च अ. १०,३,१४; १४६६ एवा मे ।
 (दिवि) वाता इव श्रिताः ऋ. १,१८७,४; १०११ ले रसाः ।
 (यथा) वातेन प्रक्षीणाः अ. १०,३,१५; १४६७ एवा सपत्न्या ।
 (पथा) वार इव ऋ. १०,१४५,६; २३४० मनः मामनु ।
 विद्धस्य इव अ. १०,१,२६; १६४१ कृत्ये पदं नय ।
 (नानदती) विनद्धा गर्दभी इव अ. १०,१,१४; १६१९ कृते
 वृक्ष इव अविमतः अ. ६,३७,१; १७७३ सहस्राक्षः उप प्रागात् ।
 वृक्ष इव विद्युता हतः अ. ७,५९,१; १७७६ आ मूलात् अत ।
 वृक्षादिव स्रजम् अ. ८,६,२६; १३९१ कृत्वा श्रिये प्रति ।

(२५) वृत्रः अपः तस्तम्भ अ. ६, ८५, ३; १८४ एवा ते यक्ष्मं ।
 सप्तमी इव कन्याला अ. ५, ५, ३; ४३० वृक्षं वृक्षं आरोहसि ।
 त्वमः न क्र. १०, ७५, ३; १०३८ सिन्धुः रोहवत् एति ।
 मातः श्वपदामिव अ. १९, ३९, ४; ४५० उत्तमोऽसि ओषधीनाम् ।
 मातः श्वपदामिव अ. ८, ५, ११; १४४१
 वृषा इव अ. ३, १४, ४; १३२३ इहो पुष्यत ।
 वृत्रे इव अ. १, १५, २; ४१७ दुर्णामां शिरो वृश्चामि ।
 वृत्रः क्र. १०, ९४, २; २२९४ एते वदन्ति ।
 (२६) शर्प संनयन्ति अ. ६, ४६, ३; ६३५ दुष्पण्यं द्विषते ।
 (२७) शर्प संनयन्ति अ. १९, ५७, १; १९१३ दुष्पण्ये अप्रिये ।
 शिवा न तमन्या समञ्जत् वा. य. २०, ४१; ३७२ देवः यशं ।
 वृत्र इव अ. ४, ७, ४; ८०१ ते मदं मदावति वि पातयामसि ।
 वृत्रे न वृत्रम् क्र. ७, ९५, ५; १०५६ शर्मन् दधानाः उप स्थेयाम् ।
 वृत्र इव शिक्षमाणः क्र. ७, १०३, ५; ९९८ मण्डूकानां ।
 वृत्रं मनुष्यं इव अ. १, ३४, ४; ४८१ मां इत किलत्वं ।
 वृत्रा इव अ. ३, १४, ५; २३२४ शिवो वो गोष्ठो भवतु ।
 वृत्रे इव मातरः क्र. १०, ७५, ४; १०३९ त्वां वाश्राः अर्पन्ति ।
 वृत्रे इव अवक्षामम् अ. ६, ३७, ३; १७७५ तं प्रत्यस्यामि ।
 वृत्रे इव दुष्पणः अ. ३, ९, ४; १८०० बन्धुरा काववस्य च ।
 वृत्रे इव शृङ्गाणि इव क्र. ३, ८, १०; २२६८ खरवः पृथिव्यां ।
 वृत्रे इव अ. ५, ३०, ९; १०६ यक्ष्मः प्रापसत् ।
 वृत्रे इव अ. ४, ३७, ११; ७२५ एकः गन्धर्वः ।
 वृत्रा वृत्रः न अ. १८, ४, ६०; २२१० प्र वा एति इन्दुः ।
 (२८) सलं आहितम् अ. १०, ३, २५; १४७७ एवा मणिः ।
 वृत्रः इव अ. ६, १४२, २; ११२५ अधि अक्षितः ।
 वृत्रं न सुसुवः अ. ४, ८, ७; ८०४ अप्स्वन्तः तस्थिवांसं ।
 वृत्रस्य वदयेः इव अ. १, ३, ८; ५७८ ते वस्तिबिलं विषितम् ।
 वृत्रा इव अ. १९, ४५, ४; ५९५ ध्रुवस्तिष्ठसि चार्यः ।

सहस्रवत् क्र. १०, ९४, २; २२९४ एते ग्रावाणः वदन्ति ।
 सिंहस्य इव अ. ८, ७, १५; ३३८ स्तनयोः सं विजन्ते ।
 सिन्धुं इव नावा अ. ४, ३३, ८; १७६३ अति पर्षा स्वस्तये
 सुपर्णो वसतेः इव अ. ६, ८३, १; ५१३ अपचितः प्र पतत ।
 सूर्यो न द्युता अ. १८, ४, ५९; २२०९ त्वं कृपा रोचसे ।
 सूर्यः इव अ. १९, ३३, ५; १८३७ आभाहि प्रदिशः चतस्रः ।
 सूर्य इव दिवमारुह्य अ. ८, ५, ७; १४३७ वशी कृत्या वि बाधते ।
 (यथा) सूर्यः अतिभाति अ. १०, ३, १७; १४६९ मणिः कीर्ति ।
 (यथा न्यक् तपति) सूर्यः अ. ६, ९१, २; २०० न्यग् भवतु ते ।
 (यथा) सूर्यो मुच्यते तमसः अ. १०, १, ३२; १३४७ एव अहं ।
 (वीधे) सूर्यमिव सर्पन्तम् अ. ४, २०, ७; ७६० मा पिशाचं ।
 (यथा) सूर्यस्य रश्मयः अ. ६, १०५, ३; ४८८ एवा त्वं कासे ।
 सेना इव अ. ४, १९, २; ३९७ एषि त्विषीमती ।
 सोमः इव यामेषु अ. ६, २१, २; ४५८ वीरुधानां वसिष्ठम् ।
 (यथा यशः) सोमपाथे अ. १०, ३, २१; १४७३ मणिः कीर्ति ।
 स्तुकां इव अ. ७, ७४, २; ५०४ जघन्यां आसां आ छिनधि ।
 स्तेनः इव व्रजम् क्र. १०, ९७, १०; ३१० ओषधीः विश्वाः ।
 स्तुषा इव श्वशुरादाधि अ. ८, ६, २४; १३९० सूर्यात् परि सर्पन्ति ।
 खजः इव अ. ५, १४, १०; १६०० अभिष्ठितः दश ।
 खिन्नः स्नात्वा मलादिव अ. ६, ११५, ३; १७२९ आपः शुन्धन्तु
 वा. य. २०, २०; ११०५ मैनसः ।
 हंसाः इव क्र. ३, ८, ९; २२६७ खरवः नः आयुः ।
 हरी इव अन्यांसि क्र. १, २८, ७; २२८२ आयजी उल्लखल०
 (यथेदं) हर्म्यम् अ. ४, ५, ५; ६१७ तेषां अक्षीणि सं दध्मः ।
 (यथा) हव्यं वहसि अ. ४, २३, २; १६८६ एवा देवेभ्यः ।
 (यथा) यज्ञं कल्पयसि अ. ४, २३, २; १६८६ एवा देवेभ्यः ।
 (समौचित्) हस्तौ न समं क्र. १०, ११७, ९; २३१९ तथा ज्ञाती ।
 हस्ती इव रजः अ. १०, १, ३२; १६४७ दुरितं जहामि ।
 हदं अग्निः इवा दहन् अ. ६, ३७, २; १७७४ परि णः वृद्धिश्च शपथ ।

विषय-सूची ।

विषयः ।	मंत्रांकाः	प्रकरणम् ।	विषयः ।	मंत्रांकाः	प्रकरणम् ।
अक्षि ७,३६,१; ५९१		रोगाचि.	अभिस्तवः ६,४९,३; २३२६		यज्ञादि.
अक्षिरोगभेषज्यम् ६,१६,१-४; ४३६-६९		ओषधि.	अमीन्द्रौ १,७,३; ७६२		क्रिमिना.
अभिः ६,११,१-३; ८५-८७ । ६,४७,१; ८८ ।			अमीषोमौ १,८,१-२; ७२७-२८		क्रिमिना.
२,२९,१; २१ । १९,६४,१-४; ११५-८ ।			अमीषोमौ ऋ. १०,१९,१ उत्तरार्धः; ८९३		जलचि.
७,३३,१; १४२ । २,१३,१; २३३१		दीर्घायु.	अग्न्यादयः त्रिवृत ५,२८,१-१४; १२७-४०		दीर्घायु.
अभिः ३,३१,१,६; १६८,१७३ । १२,२,१-५५;			अंगानि १९,६०,१-२; १५७-५८		दीर्घायु.
२१७-७१		यक्षमना.		(अरिष्टानि अंगानि)	
अभिः १,२५,१-४; ५२५-२८ । ६,१११,१-४;			अजः ९,५,१-३८; ११८३-१२२०		अक्षादि.
६८७-९०		रोगचि.	अजशृंगी (औषधिः) ४,३७,१-१२; ७१५-२६		क्रिमिना.
अभिः ६,३२,१; ७३१ । १,२८,१-२; ७३४-३५		क्रिमिना.	अजनम् ७,३०,१; ५९० । ७,३६,१; ५९१ ।		
अभिः १,२३,२३; ८७० । ७,८५,१-४; ९५९-६२		जलचि.	वा० य० ४,३; ६१२		रोगचि.
अभिः ६,७१,१-३; १११९-२१ । १२,३,१-६०;			अदितिः ६,७,१,३; ७६३-६५		क्रिमिना.
१२७२-१३३१		अक्षादि.	अदितिः ५,२६,६; १९४१		यज्ञादि.
अभिः ४,४,६; १३३७		वाजी.	अदितेर्गर्भः ऋ. ९,७४,५,१४०४		गर्भाधानं.
अभिः ६,१०८,४; १४२२		गर्भाधानं.	अन्नम् वा० य० १८,३२-३४; ३५९-६१ [वाजः]		ओषधि.
अभिः २,१०,२; १६६३ । ६,११२,१-३;			अन्नम् ऋ. १,१८७,१-११; ११०८-१८ । अ. ६,		
१६७०-७२ । ७,७८,१-२; १६८०-८१ ।			७२,१-३; १११९-२१ । ७,५८,१-२; ११२२-२३ ।		अक्षादि.
४,२३,१-७; १६८५-९१ । ७,६४,१-२;			६,११६,१-३; १२६६-६८		
१७३२-३३ । ४,३३,१-८; १७५७-६४ ।			अन्नसमृद्धिः ६,१४२,१-३; ११२४-२६		
१६,९,२; १९०३		पापादि.	अन्नादिकम् । (११०८-१३३१)		
अभिः ७,६१,१,२; १९२१-२२ । १८,२,४,३४;			अपचिद्-भेषज्यम् ७,७६,१-२; ५०७-८		रोगचि.
२०२८,२०५८ । १८,३,५-६; २०८८-८९ ।			अपमार्गो वनस्पतिः ४,१७,१-८ । १८,१-८ । १९,१-८;		ओषधि.
१८,४,८८; २२३८ । १९,५९,२; २२५५ ।			३८०-४०३		ओषधि.
ऋ. १,३६,१३-१४; २२५७-५८ । ६,४९,३;			अपामार्गवीरुत् ७,६५,१-३; ४०४-६		जलचि.
२३२६		यज्ञादि.	अपां नपात् ऋ. १०,३०,१-१५; ९०१-१५		जलचि.
अभिः ऋ. १०,१५५,१,४; २३३७-३८ (अलक्ष्मी) रोगचि.			अपां भेषजम् १,४,४; २६३ । १,६,४; ९६४		
अभिः जातवेदाः १,१८,३-४; ७२९-३० । १,७			अपां भेषज्यम् ६,२३,१-३; २६८-७० । ६,२४,		
१-७; ७६७-७३		क्रिमिना.	१,३; ९७१-७३		
अभिः वैश्वानरः ६,११९,१-३; १६७३ ७५		पापादिना.	अप्सरसः ४,३७,१,३-५; ७१५,७१७-१३		

आपः ३, ७, ५; १९६ । ६, ९१, ३; २०१	यक्षमना.
आपः ऋ. १, १९१, १-१६; ७७४-८९	विषना.
आपः ऋ. १, २३, १६-२३ । ७, ७७, १-४ ।	
४९, १-४ । १०, ९, १-९ । १७, १०-१४ । १९,	
१-८ । ३०, १-१५ । अ० १, ३३, १-४;	
८६३-९१९ । ३, १३, १, ४-७; ९२०, ९२३ २६ ।	
७, ३९, १; ९२७ । १९, २, १-५ । ६९, १-४;	
९२८-३६ । वा. य. १, १२-१३, २१, ३१ ।	
२, २, ३४; ४, १, १२ । ५, ११ । ६, १०-१३, ३०-३१ ।	
६, १७, २२, २४, २७-२८ । ८, २६; ९३७-५५ ।	
१, ४, ४ । ६, ४; ९६३-६४६, २३, १-३। २४, १-३;	
९६८-७३ । ४, १५, ५-१०; १००८-१३ । वा० य०	
१०, १-४, ६, १९। ११, ३८। १२, ३५, ५५। १४, ८ ।	
२०, १८-२०, २२-२३; १०९३-११०७	जलचि.
आपः ४, ४, ५; १३३६	वाजीक.
आपः १०, ६, ३; १४८०	मणिधारणं
आपः २, १०, २; १६६३ । ७, ६४, १-२; १७३२-	
३३। ११२, १-२; १७६८-६९। ६, ५१, १-३;	
१७८७-८९	पापादिना.
आपः १८, ३, ५६; २१३५	यज्ञादि.
आपः दिव्याः ६, १९४, १-३ । ७, ८९, १-४; ९५६-६२	जलचि.
आयुः २, २८, १, ३; १, ३ । ८, १, १-२१ । २, १-२८;	
६-५४ । ७, ३२, १; १४१ ।	
७, ५३, १-७; १४३-४९	दीर्घायुष्यम्
आयुः ३, ३१, ८-१०; १७५-७७	यक्षमनाश.
आयुः ६, १०९, १-३; ४१३-१५	ओषधिव.
आयुः २, ३, १-६; ५६५-७० । ७, १-५; ६६८-७२	रोगचिकि.
आयुः सर्वम् १९, ६१, १; १५५ । ७०, १; १५६	दीर्घायु.
आयुष्यम् ३, ११, १-८; ७२-६९ । ५, ३०, १-१७;	
९८-११४ । ६, ७६, १-४; १५०-५३	दीर्घायु.
आयुष्यम् २, ३३, १-७; २९४-३००	यक्षमनाश.
आयुष्यम् ८, ७, १-२८; ३२४-५१	ओषधिव.
आयुष्कामः द्रष्टा १, ३०, १-४; ५५-५८ । ३५, १-४	
५९-७२ । ५, ३०, १-१७; ९८-११४	दीर्घायु.
आयुष्कामः १९, ३२, १-१० । ३३, १-५; १९२३-३७	यज्ञादि.
आयुर्वर्धनम् १९, ६३, १; १५४	दीर्घायु.
आपः ५, ७, १-३, ६-१०; १७७७ ७९, १७८२-८६ पापादि.	
आपः ५, ७, १-१०; १७७७-८६	
आपः ७, ५९, १; १७७६	
अरिष्टनाशनम् । (१५७३-१५९०)	
अरिष्टनाशनम् ६, २७, १-३; १५७९-८१ । ६, २८,	
१३ । २९, १-३ । ८०, १-३; १५८२-९०	अरिष्ट.
अरिष्टानि अंगानि । (१५७-१५८)	
अरिष्टानि (औषधिः) ६, ५२, १-३; ४०७९	ओषधि.
अरिष्टानि ६, ७२, १-३; १३४०-४२	वाजीक.
अरिष्टानि १, १८, १; ६७३	रोगचि.
अरिष्टानि १, ११, १-६; १४०५-१०	गर्भाधानं
अरिष्टानि १, १४, २; २३२१	यज्ञादि.
अरिष्टानि १०, १५५, १, ४; २३३७-३८	रोगचि.
अरिष्टानि १, १८, १-४; ६७३ ७६	रोगचि.
अरिष्टानि १९, ६५, १ [अग्निः २३४९]	पापादि.
अरिष्टानि १, २९, ६; ९६ । ७, ५३, १-७; १४३ ४९	दीर्घायु.
अरिष्टानि १, १२०, १; ६२३	रोगचि.
अरिष्टानि ५, ७८, ५-९; १३९९-१४०३	
(गर्भसाविष्युपनिषद्) गर्भाधानं.	
अरिष्टानि ७, ७३, ६-७, ११; १९१८-२०	यज्ञादि.
अरिष्टानि १, २३, १-४; ५१७-२०	रोगचि.
अरिष्टानि ६, ७, १-३; ७६३-६५	किमिना.
अरिष्टानि १, १०, १-४; १६५४-५७	पापादिना.
अरिष्टानि १९, ४६, १-७; १५७२-७८	मणिधारणं
अरिष्टानि १, १४, १; २३२०	यज्ञादि.
अरिष्टानि ७, ६९, १; ६३८	रोगचि.
अरिष्टानि ४, ९, १-१०; ५८०-८९ । १९, ६५, १-१०;	
अरिष्टानि १२, ६०१ । १९, ४४, १-१२; ६०२-११	
अरिष्टानि ७, १११, १; १३६६	रोगचि.
अरिष्टानि २, ३२, १-६; ७०९१४	गर्भाधानं.
अरिष्टानि ६, ८१, १-३; १३५९ ६१	किमिना.
अरिष्टानि १६, ३, १-६ । ४, १७; १८२२-१४	गर्भाधानं.
अरिष्टानि १, ३०, १; ५५	पापादि.
अरिष्टानि ६, २२, १; ९६५	दीर्घायु.
अरिष्टानि १, १९, १-३; १६७३-७५	जलचि.
अरिष्टानि १, २९, ४-५; ९४-९५	पापादिना.
अरिष्टानि १, २९, ४-५; ९४-९५	दीर्घायु.

आशापालाः १,३१,१-४; १६५८-६१	पापादिना.
आसुरी वनस्पतिः १,२४,१-४; ५२१-२४	रोगचिकि.
आस्त्रावस्य भेषजम् २,३,१-६; ५६५-७०	रोगचिकि.
इन्दुः १८,३,५४; २१३४	यज्ञादि.
इन्द्रः २,२९,३; ९३	दीर्घायुः
इन्द्रः ७,७६,३-३; ५०९ १२ । १,२,३; ६६६	रोगचिकि.
इन्द्रः ५,२३,१-१३; ६९५ ७०८	किमिना.
इन्द्रः ३,१२,२-३; ९२१-२२ । ऋ० १०,२७,१६;	जलाचि,
९८४ । ऋ० ३,३३,६-७; १०२७-२८	अज्ञादि.
इन्द्रः ४,४,४; १३३५	पापादिना.
इन्द्रः ४,२४,१-७; १६९२ २८	
इन्द्रः ५,२३,३,११; १९३९,१९४५ । ३,१४,२;	यज्ञादि.
२३२१	दीर्घायु.
इन्द्रसूर्यादयः १९,७०,१; १५६	दीर्घायु.
इन्द्राग्नी १,३५,१-४; ५९-६२ । ३,११,१-८,	दीर्घायु.
७२-७९	अज्ञादि.
इन्द्रावरुणौ ७,५८,१-२; ११२२-२३	रोगचि.
इषुनिष्कासनम् ६,९०,१-३; ६२०-२२	रोगचि.
ईर्ष्यापनयनम् ७,४५,१-२; ६८५-८६	रोगचि.
ईर्ष्याविनाशनम् ६,१८,१-३; ६८२-८४	रोगचि.
उन्मत्ततामोचनम् ६,१११,१-४; ६८७-९०	रोगचि.
उन्मोचनम् ६,११४,१-३; १७९४-९३	पापादिना.
उल्लखलम् ऋ० १,२८,५-६; २२८०-८१	यज्ञादि.
उल्लखलमुसले ऋ० १,२८,७-८; २२८२-८३	यज्ञादि.
उषा ७,६९,१; ६३८	रोगचि.
उषा १६,६,१-११ । ७,१-१३; १८४५-६८	पापादिना.
एकवृषः ५,१६,१-११; ६४२-५२	रोगचि.
एनोनाशनम् ६,५१,१-३; १६८७-८९	पापादिना.
ओदनम् पञ्च ९,५,१-३८; ११८३-१२२०	अज्ञादि.
ओदनम् बार्हस्पत्य ११,३ १-५६; ११२७-८२	अज्ञादि.
ओदनम् ब्रह्म ११,१,१-३७; १२२९-६५	अज्ञादि.
ओदनम् स्वर्ग १२,३,१-६०; १२७२-१३३१	अज्ञादि.

ओषधिः वा० य० १२,७९; ३५८	ओषधि.
ओषधयः ऋ० १०,९७,१-२३; ३०१-२३ । अ० ८,७	ओषधि.
१-२८; ३२४-५१ । ऋ० ३,५३,७,३६३	ओषधि.
ओषधयः २,१०,२; १६६३	पापादि.
औषधिः अजशृंगी ४,३७,१-२,६,१०; ७१५-१६,	
७२०,७२४	किमिनाश.
औषधिः अरुन्धती ६,५९,१-३; ४०७-९	ओषधि.
औषधिः केशवर्धनी ६,२१,१-३; ४५७-५९	ओषधि.
औदुम्बरमणिः १९,३१,१-१४; १५३७-५०	मणिधार.
कामिलानाशनम् १,२२,१-४; ४८९-९२	रोगचि.
कासा कासशमनम् ६,१०५,१-३; ४८६-८८	रोगचि.
कुष्ठः ५,४,१-१०; ४३७-४३ । १९,३९,१-१०;	
४४७-५६	ओषधि.
कुष्ठतकमनाशनम् ५,४,१-१०; ४३७-४६	ओषधि.
कुष्ठतकमनाशनम् १९,३९,१-१०; ४४७-५६	ओषधि.
कुष्ठौषधिः ६,९५,१-३; ४१०-१२	ओषधि.
कृत्यादूषणम् । (१५९१-१६५३)	
कृत्यादूषणम् ८,५,१-२२; १४३१-५२	मणिधारणम्.
कृत्यादूषणम् १०,१,१-३२; १६१६-४७ । ५-३१,	
१-१२; १६०४-१५	कृत्यादू.
कृत्यापरिहरणम् ५,१४,१-१३; १५९१-१६०३ ।	
५,३१,१-२२; १६०४-१५	कृत्यादू.
कृमिनाशनम् ४,३७,१-२; ७१५-२६	किमिना.
कृशनः ४,१०,१-७; १४२४-३०	मणिधा.
केशदंष्ट्रणम् ६,१३६,१-३; ४६०-६२	ओषधि.
केशवर्धनम् ६,१३७,१-३; ४६३-६५	ओषधि.
केशवर्धनी औषधिः ६,२१,१-३; ४५७-५९	ओषधि.
किमिघ्नम् ५,२३,१-१३; ६९६-७०८	किमिना.
किमिजम्भनम् २,३२,१-५; ६९१-९५	किमिना.
किमिनाशनम् । (६२१-७७३)	
किमिनाशनम् २,३२,१-६; ७०९-१४	किमिना.
क्लीबत्वम् ६,१३८,१-५; ४९८-५०२	रोगचि.

× ' कुष्ठः ' वीरुधां बलवत्तमा ओषधिः । सा तकमानं नाशयति । अत्र अतः ' कुष्ठः तकमनाशनः । ' इति प्रथमस्के
' तकमनाशनम् ' इति द्वितीयस्थले पाठः योग्यः ।

॥ अत्र क्लीबत्वापादनम् ' इति पाठः समीचीनतरः भवति ।

२२) ओषधि.	रोगचिकित्सा २,८,१-५; ४९३-९७	जरीमा २,२८,१-३; १,३	दीर्घायु.
० ८,७ ओषधि.	तत्त्वनाशनाशनम् ७,७४,१-४ । ७६,१-६; ५०३-१२ ,,	जलाचिकित्सा । (८६०-११०७)	दीर्घायु.
१६, ओषधि.	तत्त्वनाशनाशनम् ४,३७,७-१२; ७२१-२६	जातवेदा ६,२९,२,९२	रोगचि.
क्रिमिनाश.	गर्भाधानम् । (१३४६-१४१०)	जातवेदा ७,७४,४; ५०४	
ओषधि.	गर्भाधानम् ६,१७,१-४; १३६२-६५	जातवेदा १,१८,३,४; ७२९-३० । ५,२९,१-१५;	
पापादि.	गर्भाधानम् ८,३,१-२६; १३६७-९२	७३८-५२ । १९,६६,१; ७३६ । १,७	
क्रिमिनाश.	गर्भाधानम् २०,९६,११-१६; १३२३-९८	१-७; ७३७-७३	क्रिमिना.
ओषधि.	गर्भाधानम् ५,७८,५-९; १३९९-१४०३ ,,	जातवेदा १८,२,५; २०२९	यज्ञादि.
ओषधि.	गर्भाधानम् ६,८१,१-३; १३९५-६१	जायान्यः ७,७६,३-६; ५०९-१२	रोगाचि.
मणिधा.	गर्भाधानम् १०,१९,८; ४७३	ज्वरनाशनम् १,२५,१-४; ५२५-२८ । ७,११६,१-२;	
रोगचि.	गर्भाधानम् ६,५१,१; ५६३	५२९-३०	रोगचि.
रोगचि.	गर्भाधानम् १०,११,१-८; ८२३-९००	तत्त्वनाशनः ५,२२,१-१४; ५३१-४४	रोगचि.
	गर्भाधानम् ३,१४,१-६; २३२०-२५	तक्षकः ४,६,१-८; ७९०-९७ । १०,४,१-२६;	
ओषधि.	गर्भाधानम् ३,१४,१-५; २३२०-२३२४	५,१३,१-११ । ७,८८,१, ६,१२,१-३; ८०८-४८	विषना.
ओषधि.	गर्भाधानम् ७,७३,६,७,११, १९१८-२०	तपः ७,६१,१-२; १२२१-२२	यज्ञादि.
ओषधि.	गर्भाधानम् ५,६२,१-४; ६-९,११; १२३८-५५	तारक ३,७,१, १७५	यक्षमना.
ओषधि.	गर्भाधानम् ३,३१,६; १७३	तृणम् १,१९१,१-१६; ७७४-८९ (अप्तृणसूर्याः)	विषना.
मणिधारणम्	गर्भाधानम् १,३,४; ५७४	त्रिवृत् ५,२८,१-१४; १२७-४०	दीर्घायु.
१, कृत्वाद्.	गर्भाधानम् १,४,१,६; ६६-७१ । ४,१,१-३; ६३-६५	त्रैकाकुदाजनम् ४,९,१-१०; ५८०-८९	रोगचि.
कृत्वाद्.	गर्भाधानम् १,३३,१-७; २९४-३००	त्वष्टा ३,३१,२; १७२	यक्षमना.
क्रिमिना.	गर्भाधानम् १,३३,१-३; ४५७-५९१, १६, १-४; ४६६-६९	त्वष्टा ६,८१,३; १३६१	गर्भाधानं
मणिधा.	गर्भाधानम् ४,८३,१; ५१३ । ७,११६,१-२; ५२९-३० ।	त्वष्टा ५,२६,८; १२४३	यज्ञादि.
ओषधि.	गर्भाधानम् ४,८३,१-७; ५४८-५४ । १,२,३; ६६६	दन्तौ ६,१४०,१-३; १५९-६१ (सुमंमलौ दन्तौ)	दीर्घायु.
ओषधि.	गर्भाधानम् १,३३,१-५; ६९१-२५	दर्भः १२,३२,१-१०; १२२३-३२ । ३३,१-५;	
ओषधि.	गर्भाधानम् १,३३,१-४; ९१६-१९	१२३३-३७	यज्ञादि.
क्रिमिना.	गर्भाधानम् १०,१,१-२५; १४५३-७७	दर्भमणिः १९,२८,१-१० । २९,१-९ । ३०,१-५;	
क्रिमिना.	गर्भाधानम् ६,८०,१-३; १५८८-२०	१५१३-३६	मणिधा.
	गर्भाधानम् ११,६,१-२३; १७३४-५६ । ६,३७,१-३;	दस्युनाशनम् २,१४,१-६; १६४८-५३	कृत्वाद्.
क्रिमिना.	१७३४-७५	दिशः ४,१५,१; १००४	जलचि.
प्रथमसंके	गर्भाधानम् १८,८९,२२-३९ । १९,१,१-३; २२४६-४८	दिशः १,११,१-६; १००५-१०	गर्भाधानं
	गर्भाधानम् १,९,१-३; ३५२-५४	दिशः २,१०,३; १६६४	पापादिना.
	गर्भाधानम् १,४,१-६; ६६-७१	दीर्घायुष्यम् । (१-१६१)	
	गर्भाधानम् १९,३५,१-५; १५६१-६५	दीर्घायुः ५,२८,१-१४; १२७-४० । ७,३३,१; १४२	दीर्घायु.
	गर्भाधानम् १९,३४,१-१०; १५५१-६०	दीर्घायुत्वम् १२,६४,१-४; ११५-१८ । ६७,१-८;	
	१४६. [आयुर्वेद]	११९-२३	दीर्घायु.

(१८६)

दीर्घायुष्यम् वा० य० १२,१०० । ३४,५०-५२;
२३२७-३० दीर्घायु.
दीर्घायुः प्राप्तिः २,१३,१-५; २३३१-३५ दीर्घायु.
दुरितनाशनम् ७,६५,१-३; ४०४-६ ओषधि.
दुरितनाशनम् ७,६३,१; [अग्निः २३७४] पापादि.
दुःखनाशनम् ३,९,१-६; १७७७-१८०३ पापादि.
दुःखमोचनम् १६,१,१-१३। २,१-६ । ३,१-६ । ४,१-७;
१८०३-३४ पापादि.
दुःष्वप्ननाशनम् ऋ० १,१२०,१२ । २,२८,१० । १०,
१६४,१-५; ६२३-२९ रोगचि.
दुःष्वप्ननाशनम् अ० ३,४५,१-३ । ४६,१-३ । ७,१००,१।
१०१,१; ६३०-३७ रोगचि.
दुःष्वप्ननाशनम् १६,५,१-१०। ६,१-११ । ७,१-१३। ८,
१-३३ । ९,१-४; ७; २३,१, १९,५६,१-६।
५७,१-५; १८३५-१९१७ पापादि.
देवाः १,३०,१-४; ५५-५८ दीर्घायु.
देवाः ३,३१,७; १७४ यक्षमना.
देवाः ४,१३,१; ५४८ । १,१८,२; ६७४ रोगचि.
देवाः ६,७,३; ७६५ किमिना.
देवाः ६,७१,३; ११२१ अन्नादि.
देवाः १,११,१-६; १४०५-१० गर्भाधानं
देवाः ३,९,१-६; १७७७-१८०२ पापादि.
दैव्याः ऋषयः ६,४१,१-३; ६३-६५ दीर्घायु.
द्यावापृथिवी २,२९,४-५; ९४-९५ दीर्घायु.
द्यावापृथिवी ३,३१,४; १७१ यक्षमना.
द्यावापृथिवी ७,३०,१; ५९० रोगचि.
द्यावापृथिवी ४,६,२, ७९१ विषना.
द्यावापृथिवी २,१०,१-८; १६६२-६९ । ४,२६,१-७;
१७०६-१२ । ३,९,१-६; १७३७-१८०२ पापादि.
द्यावापृथिव्यादयः २,२८,४-५; ४-५ दीर्घायु.
धनान्नदानम् ऋ. १०,११७,१-९; २३११-१९ यज्ञादि.
धन्वन्तरिः २,३,१-६; ५६५-७० रोगचि.
धमन्यः धमनीबन्धनम् १,१७,१-४; ५५५-५८ रोगचि.
नयः ऋ. ३,३३,१-३; ५,९,११-१३; १०२२-३४
ऋ० ७,५०,४; ऋ० १०,७५,१-९; १०३५-४४ जलाचि.
नारीसुखप्रसूतिः १,११,१-६; १४०५-१० गर्भाधानं

नितरनी (वनस्पतिः) ६,१३६,१-३; ४३०-६२ ओषधि.
निर्ऋतिः ६,२७,१-३ । २८,१-३ । २९,१-३;
१५७९-८७
निर्ऋतिः २,१०,४-८; १६६५-६९ । ७,६४,१-२;
१७३२-३३
निर्ऋतिमोचनम् ६,८४,१-४; १७९०-२३
निविदः ५,२६,४; १९४०
पञ्चोदनः अजः ९,५,१-३८; ११८३-१२२०
परस्परचित्तौकरणाकामः [द्रष्टा] ६,४३,१-३; ६२९-४१ रोगचि.
पर्जन्यः ३,३१,११; १७८ यक्षमना.
पर्जन्यः १,३,१; ५७१ । १,२१४; ६६४-६७ रोगचि.
पर्जन्यः ऋ० ५,८३,१-१०; १०,२७,१६ । ७,१०१,
१-६ । १०२,१-३ । १०३,१-१०; ९७४-१००३
४,१५,४; १००७ । ७,१८,१-२; १०२० २१ जलाचि.
पवमानः सोमः ऋ० ९,७४,५; १४०४ गर्भाधानं.
पशवः ३,३१,३; १७० यक्षमना.
पापादिनाशनम् । (१६५३-१९१७)
पापनाशनम् ४,३३,१-८; १७५७-६४ । ६,११,१-३;
१७६५-६७ । ७,११२,१-२; १७६८-६९ पापादि.
पापमोचनम् ४,२३,१-७ । २४,१-७ । २५,१-७ ।
२६,१-७; १६८५-१७१२ । २७,१-७; [मस्तः
४००-४६] । २८,१-७ । २९,१-७ । ६,१५,१-३;
७,४२,१-२। ६४,१-२। ११,६,१-२३, १७१३-५६ पापादि.
पापलक्षणनाशनम् ७,११५,१-४ [अग्निः २२०१-४] पापादि.
पापशमनम् ६,३०,१-३; ४७०-७२ ओषधि.
पाप्मनाशनः (अग्निः) ४,३३,१-८; १७५७-६४ पापादि.
पाप्मनाशनम् ६,२६,१-३; १७७०-७१ पापादि.
पाप्महा ३,३१,१-११; १६८-७८ यक्षमना.
पाप्मा ६,२६,१-३; १७७०-७२ पापादि.
पाशमोचनम् १,३१,१-४ । २,१०,१-८ । ६,११२,१-१।
११९,१-३ । ७,८३; १-४; १६५८-७९
पाशविमोचनम् १,१०,१-४; १६५४-५७
पितरः ४,१५,१३-१५; १०१६-१८
पितरः १०,१४,७-९; १९७३-७५ । १५,१-१४;
१९८७-२००० । १८,१,४४-४६; ५१,५२;
२०१०-१२, २०१६-१७ । १८,२,२९; २०५३।
४,८१; २२३१ यज्ञादि.

ओषधि.	निम्बेका १०, १८, ७-१४; १९४६-५३ । १८, १, ६,	ब्रह्मणस्पतिः ७, ३०, १; ५९०	रोगचि.
अरिष्टना.	११-१४, १७, ३३-४९, ५१-५४, ५७-६१ ।	ब्रह्मणस्पतिः ७, ५६, ४; ८५५	विषना.
पापादि.	१, १-३० । ३, १, ३-४९; ५२, ५४, ५६, ५८-६६;	ब्रह्मणस्पतिः ४, ४, ६; १३३७ । ६, ७२, १-३ । १०१, १-३;	वाजीक.
पापादि.	६८-७१; २००१-२१५०	१३४०-४५	गर्भाधानं
यज्ञादि.	पेन्ना ६, १०९, १-३; ४१३-१५	ब्रह्मणस्पतिः ८, ६, १५; १३८१	अन्नादि.
अन्नादि.	पिप्लवकम् ४, २०, १-९; ७५४-६२	ब्रह्मौदनम् ११, १, १-३७; १२२९-६५	यज्ञादि.
९-४१ रोगचि.	कुष्ठिकाः (दृष्टा) १९, ३१, १-१४; १५३७-५०	भगः ५, २६, ९; १९४४	पापादिना.
यक्ष्मना.	७, ७, ३३, १; १४२	भवाश्वौ ४, २८, १-७; १७१३-१९	रोगचि.
रोगचि.	७, १, ११, १-६; १४०५-१०	भेषजम् ६, ५२, ३; ५६४ । ७, ४५, १-२; ६८५-८६	रोगचि.
१०१,	७, ६, ११३, १-३; १७६५-६७ । १६, ९, २;	भेषजम् आस्त्रावस्य २, ३, १-६; ५६५-७०	रोगचि.
०३	११०३	भेषज्यम् ८, ७, १-२८; ३२४-५१ । ६, १०९, १-३;	ओषधि.
२१ जलाचि.	७, १, १४, २; २३११	४१३-१५	जलाचि.
गर्भाधानं	कुवेरी १, २, १, ४; ६६४, ६६७	भेषज्यम् २, ३, १-६; ५६५-७० । १९, ४४, १-१०;	रोगचि.
यक्ष्मना.	कुवेरी ७, १८, १-२; १०२० २१	६०२-११; २, ७, १-५; ६६८-७२	जलाचि.
२७)	कुवेरी ६, १७, १-४; १३६२-६५	भेषज्यम् ६, २२, १-३; ९६५-६७	
१, १-३;	कुम्भद्वयः ५, २५, १-१३; १३४३-५८	मणिधारणम् । (१४२४-१५७८)	
६९ पापादि.	कुम्भौ २, २५, १-५; ४१६-२०	मणिः अस्तुत १९, ४६, १-७; १५७२-७८	मणिधारणं
७ ।	मन्त्रादिः ४, १५, १-१; १०१४	मणिः औदुम्बरः १९, ३१-१-१४; १५३७-५०	मणिधारणं
महतः	मन्त्रादिः ४, ४, १-२; १३३२-३३	मणिः जंगिडः १९, ३४, १-१०; १५५१-६० । ३५, १-५;	
१, १-३;	मन्त्रादिः ४, १, १-३; १८०३-१५१६, ९, १, १९०२	१५६१-६५	मणिधारणं
३-५६ पादादि.	मन्त्रादिः ४, १, १-२; १४३१-५२	मणिः जंगिडः २, ४, १-६; ६६-७१	दीर्घायु.
१-४] पापादि.	मन्त्रादिः ४, १, १-३५; १४७८-१५१२	मणिः दर्भः १९, २८, १-१० । २९, १-९ । ३०, १-५;	
ओषधि.	मन्त्रादिः ४, १, १-२; १४३१-५२	१५१३-३६	मणिधारणं
पापादि.	मन्त्रादिः ४, १, १-३५; १४७८-१५१२	मणिः प्रतिसरः ८, ५, १-२२; १३३१-५२	मणिधारणं
पापादि.	मन्त्रादिः ४, १, १-३५; १४७८-१५१२	मणिः फाल १०, ६, १-३५; १४७८-१५१२	मणिधारणं
यक्ष्मना.	मन्त्रादिः ४, १, १-३५; १४७८-१५१२	मणिः वरणः १०, ३, १-२५; १४५३-७७	मणिधारणं
पापादि.	मन्त्रादिः ४, १, १-३५; १४७८-१५१२	मणिः शंख ४, १०, १-७; १४२४-३०	मणिधारणं
१२, १-३ ।	मन्त्रादिः ४, १, १-३५; १४७८-१५१२	मणिः शतवारः १९, ३६, १-६; १५६६-७१	मणिधारणं
पापादि.	मन्त्रादिः ४, १, १-३५; १४७८-१५१२	मण्डूकाः ४० ७, १०३, १-१०; ९९४-१००३ ।	
पापादि.	मन्त्रादिः ४, १, १-३५; १४७८-१५१२	अ. ४, १, १, ३-१५; १०१६-१८	जलाचि.
जलाचि.	मन्त्रादिः ४, १, १-३५; १४७८-१५१२	मधु (वनस्पतिः) मधु-विद्या १, ३४, १-५; ४७८-८२	ओषधि.
१४;	मन्त्रादिः ४, १, १-३५; १४७८-१५१२	मधुमत् अन्नम् ६, ११६, १-३; १९६६-६८	अन्नादि.
२;	मन्त्रादिः ४, १, १-३५; १४७८-१५१२	मधुला (वनस्पतिः) ५, १५, १-११; ६५३ ६३	रोगचि.
५३ ।	मन्त्रादिः ४, १, १-३५; १४७८-१५१२	मनः ७, ३६, १; ५९१	रोगचि.
यज्ञादि.	मन्त्रादिः ४, १, १-३५; १४७८-१५१२	मन्त्रोक्ताः १२, २, १-५५; २१७-७१	यक्ष्मना.
	मन्त्रादिः ४, १, १-३५; १४७८-१५१२	मन्त्रोक्ताः ६, १६, १-४; ४६६-६९	ओषधि.

मंत्रोक्ताः १९, ४५, १-१०; ५२२-६०१। (आञ्जनम्) रोगचि.
मंत्रोक्ताः ५, २९, १-१५; ७३८-५२। (रक्षोघ्नम्) क्रिमिना.
मंत्रोक्ताः ११, ३, ३२-५६; ११५८-८२। ९, ५, १-३८;

११८३-१२२० (ओदनः) अन्नादि.

मंत्रोक्ताः ८, ६, १-२६; १३६७-९२। (मातृनामा) गर्भाधानं

मंत्रोक्ताः ८, ५, १-२२; १४३१-५२ (कल्यादूषणम्) मणिधा.

मंत्रोक्ताः ११, ६, १-२३; १७३४-५६ पापादि.

मंत्रोक्ताः १८, १, ६, १३-१४; १७, ३९-४९; ५१-५४;

५७-६१। २, १-६०; २००१-८४। (पितृमेधः)

३, ४४, ४६; २१२७, २१२९। १८, ४, १-८९;

२१५१-२२३२ यज्ञादि.

मन्याविनाशनम् ६, २५, १-३; १६८२-८४ पापादि.

मन्युशमनम् ६, ४३, १-३; ६३९४१ रोगचि.

मरुतः २, २९, ४५; ९४-९५। ७, ३३, १; १४२ दीर्घायु.

मरुतः ४, १३, ४; ५५१ रोगचि.

मरुतः ६, २२, २-३; ९६६-६७। ४, १५, ४-१०;

१००७-१३ जलचि.

मरुतः ४, २७, १-७; [मरुतः ४४०-४६] पापादि.

मही २, ३१, १-५; ६९१-९५ क्रिमिना.

मातृनामा ४, २०, १-९; ७५४-६२ क्रिमिना.

मातृनामा ८, ६, १-२६; १३६७-९२ गर्भाधानं

मित्रः १, ३, २; ५७२। ७, ३०, १; ५२०; १, १८, २;

६७४ रोगचि.

मित्रावरुणौ २, २८, २; २ दीर्घायु.

मित्रावरुणौ ६, ३२, ३; ७३३ क्रिमिना.

मूत्रमोचनम् १, ३, १-९; ५७१-७९ रोगचि.

मृत्युः १२, २, २१-३३; २३७-४९ यक्षमना.

मेघा १२, ४०, १-४; १४११-१४। ६, १०८, १-५;

१४१९-२३ गर्भाधानं

मेघाजननम् १, १, १-४; १४१५-१८ गर्भाधानं

मेघावर्धनम् ६, १०८, १-५; १४१९-२३ गर्भाधानं

यक्ष २, १०, ४-८; १६६५-६९ पापादि

यक्षमनाशनम्। (१६२, ३००, २३३६)

यक्षमनाशनम् ३, ११, १-८; ७२-७९। २, ९, १-५;

८०-८४ दीर्घायु.

यक्षमनाशनम् ऋ. १०, १६३, १-६; अ. ३, ३१, १-११।

६, २०, १-३। ८५, १-३। १२७, १-३। १, १२, १-४;

१६२-९१। ३, ७, ६-७। ६, ९१, १-३; १९७-२०१।

२०, ९६, ६-१०; २०५-९। १९, ३८, १-३;

२०२-४। २०, ९६, १७-२३; २१०-१६ यक्षमना.

यक्षमनाशनम् दम्पत्योः ऋ. १०, ८५, ३१; २३३६ यक्षमना.

यक्षमनाशनम् ५, ४, १-१०; ४३७-४६ ओषधि.

यक्षमनाशनम् (वनस्पतिः) २, ८, १-५; ४९३-२७ रोगचि.

यक्षमनाशनः अग्निः १, २५, १-४; ५२५-२८ रोगचि.

यक्षमविबर्हणम् २, ३३, १-७; २९४-३०० यक्षमना.

यक्षमनिवारणम् ९, ८, १-२२; २७२-२३ यक्षमना.

यक्षमरोगनाशनम् १२, २, १-५५; २१७-७१ यक्षमना.

यजमानः ऋ. ८, ३१, १-४; २२४०-४३। ऋ. १०,

१८३, १; २२४४ यज्ञादि.

यजमानपत्नी ऋ. १०, १८३, २; २२४५ यज्ञादि.

यज्ञादिकम्। (१९१८-२३२४)

यज्ञः ऋ. ८, ३१, १-४; २२४०-४३। अ. ७, १७, १-८।

[इन्द्रः ३१२०-२७]। १९, १, १-३। ५८, १-६। ५९, १;

२२४६-५५। ५९, १, ३ [अग्निः १२१४, १४९४] यज्ञादि.

यमः ६, २७, १-३ २८, १-३। २२, १-३; १५७९-८७ अग्नि.

ऋ. १०, १४, १-५, १३-१६; १९६८-७२, यज्ञादि.

१९७६-७९ यज्ञादि.

यमः यमी ऋ. १०, १०, १-१४; १२५४-६७

यमः ऋ. १०, १३५, १-७; १९८०-८६। १८, १, ६;

१३ १४; १७, ३२-४९; ५१-५४; ५७-६१।

२, १-६०। ३, १, ३-४२, ५२, ५४, ५६, ५८-६६,

६८-७३। ४, १ ८९; २००१-२२३९ यज्ञादि.

यातुधानीः १, २८, ३-४; ७३६-३७

यातुधानक्षयणम् ६, ३२, १-३; ७३१-३३

यातुधाननाशनम् १, १८, १-४; ७२७-३०। १, ७,

१ ७; ७६७-७३ क्रिमिना.

यूपः १, ३६, १३-१४; २२५७-५८। ऋ. ३, ८, १-५।

२२५९-६३ यज्ञादि.

यूपः वा. य. ६, २-३, ६। २१, ४६। २८, १०; २२६९-७३ यज्ञादि.

यूपाः ऋ. ३, ८, ६-१०; २२६४-६८ यज्ञादि.

योनिगर्भः ५, २५, १-१३; १३४६ ५८ गर्भाधानं

१-११।	रोगाचि.	वनस्पतिः, अपमार्गः ४, १७, १-८ । १८, १-८ । १९,	ओषधि.
१, १-४;	क्रिमिना.	१-८; ३८०-४०३	रोगाचि.
२०१।	रोगाचि.	वनस्पतिः असिकी १, २३, १-४; ५१७-२०	रोगाचि.
	रोगाचि.	वनस्पतिः आसुरी १, २४, १-४; ५२१-२४	ओषधि.
यक्ष्मना.	ओषधि.	वनस्पतिः कुष्ठौषधिः ६, ९५, १-३ । ४१०-१२	मणिधा.
यक्ष्मना.	क्रिमिना.	वनस्पतिः जंगिडः १९, ३४, १-१०। ३५, १-५, १५५१-६५मणिधा.	दीर्घायु.
ओषधि.	विषना.	वनस्पतिः दक्षत्रुक्षः २, २, १-५; ८०-८४	ओषधि.
७७ रोगाचि.	जलचि.	वनस्पतिः पृश्निपर्णी २, २५, १-५; ४१३-२०	मणिधा.
रोगाचि.	पापादि.	वनस्पतिः फालमणिः १०, ६, १-३५; १४७८-१५७२	रोगाचि.
यक्ष्मना.	यज्ञादि.	वनस्पतिः मधुला ५, १५, १-११; ६५३-६३	ओषधि.
यक्ष्मना.	रोगाचि.	वनस्पतिः रोहणी ४, १२, १-७; ४२१-२७	मणिधा.
यक्ष्मना.	मणिधा.	वनस्पतिः वरणमणिः १०, ३, १, २५; १४५३-७७	मणिधा.
यक्ष्मना.	मणिधा.	वरणमणिः १०, ३, १, २५; १४५३-७७	मणिधा.
१०,	रोगाचि.	वरुणः १, ३, ३; ५७३ । १९, ४४, ८-९; ६०९-१०;	रोगाचि.
यज्ञादि.	रोगाचि.	ऋ. २, २८, १०; ६२३ । १, १८, २; ६७४	जलचि.
यज्ञादि.	रोगाचि.	वरुणः ४, ५, १२; १०१५	पापादि.
)	रोगाचि.	वरुणः ७, ८३, १-४; १६७६-७३ । ७, ११२, १-२;	पापादि.
१-८।	ओषधि.	१७६८-६९	दीर्घायु.
५९, १;	रोगाचि.	वरुणः आसुरः १, १०, १-४; १६१४-५७	पापादि.
३४] यज्ञादि.	रोगाचि.	वसवः १, ३०, १; ५५,	दीर्घायु.
८७ अरिष्ट.	ओषधि.	वाक् १९, ६०, १-२; १५७-५८ (अरिष्टानि अंगानि)	पापादि.
,	मणिधारणं	वाक् १६, २, १-६; १८१६-२१	गर्भाधानं
यज्ञादि.	यज्ञादि.	वाचस्पतिः १, १, १-४; १४१५-१८ (मेधाजननम्)	वाजीकरणम् । (१३३२-१३४५)
यज्ञादि.	क्रिमिना.	वाजीकरणम् ४, ४, १-८ । ६, ७२, १-३ । १०१, १-३;	वाजीक.
६;	यक्ष्मना.	१३३२ ४५	रोगाचि.
६१ ।		वातः ४, १३, २-३; ५४३-५० । ७, ६९, १; ६३८	जलचि.
६-६६,		वातः ४, १५, १६; १०१९	पापादि.
यज्ञादि.		वातः २, १०, ३; १६६४	पापादि.
क्रिमिना.		वातपत्नीः २, १०, ४-८; १६६५-६९	ओषधि.
क्रिमिना.		वातसिन्ध्वोषधयः ऋ. १, २०-६; ३६२	अज्ञादि.
७,		वायुः ६, १४२, १-३; ११२४-२६	पापादि.
क्रिमिना.		वायुः ४, २५, १-७; १६२९-१७०५	अज्ञादि.
१-५;		वासः (सस्) ७, ३७, १; १२६९ । वा. य. ४, २, १०;	अज्ञादि.
यज्ञादि.		१२७०-७१	पापादि.
६९-७३ यज्ञादि.		वास्तोष्पतिः १, ३१, १-४; १६५८-६१	यज्ञादि.
यज्ञादि.		वास्तोष्पतिः ५, २६, २-४, ६-९, ११; १२३८-४५	
गर्भाधानं			

विनायकः १,१८,१; ६७३	रोगचि.	वैश्वानरः (अग्निः) ६,११९,१-३; १६७३-७५	पापादि.
विष्वान् ६,११३,१-३; १२६६-६८	अज्ञादि.	शक्रः ३,३१,२; १६९	यक्ष्मना.
विश्वामित्रः ऋ. ३,३३,४,८,१०, १०२५,१०२९, १०३१	जलचि.	शंखमणिः ४,१०,१-७; १४२४-३०	मणिधा.
विश्वे देवाः १,३०,१-४। ३५,१-४; ५५-६२। ६,४७, २; ८९। २,२९,४-५; ९४-९५। २,१३, ४-५; २३३४-३५	दीर्घायु.	शतवारः मणिः १९,३६,१-६; १५६६-७१	मणिधा.
विश्वे देवाः ऋ. १,९०,६; ३६२। ऋ. ३,५७,३; ३६३। ऋ. १,९०,८; ४७३	ओषधि.	शमी ६,३०,१-३; ४७०-७२	ओषधि.
विश्वे देवाः ४,१३,१-७; ५४८-५४	रोगचि.	शापनाशनम् ६,३७,१-३; १७७३-७५	पापादि.
विश्वे देवाः ६,५३,१; ८४९	विषना.	शापमोचनम् २,७,१-५; ६६८-७२	रोगचि.
विश्वे देवाः १९,४०,१-४; १४११-१४	गर्भाधानं	शापमोचनम् ७,५९,१; १७७६	पापादि.
विश्वे देवाः ६,१५,१,३; १७२७-२९। ११४ १-३; १७५४-९६।	पापादि.	शालामिदैवत्यम् २,१४,१-६; १६४८-५३	कृत्वाद्.
विश्वे देवाः ऋ. ३,८,८; २२६३। अ. ७,९८,१; २२७४ यज्ञादि.	यज्ञादि.	शेषः ६,७२,१-३; १३४० ४२	वाजीक.
विषम् ४,६,४-८; ७९३-९७	विषना.	श्वेतकुष्ठनाशनम् १,२३,१-४; ५१७-२०	रोगचि.
विषमम् ४,६,१-८; ७९०-९७	विषना.	सप्ततन्त्रक्षयकामः (द्रष्टा) १९,२८,१-१०; १५१३-२२	मणिधा.
विषमोपनिषद् ऋ. १,२१,१-१६; ७७४-८९	विषना.	सप्ततन्त्रक्षयणः १०,३,१-२५; १४५३-७७	मणिधा.
विषदूषणम् ६,१००,१-३; ८०५-७	विषना.	सप्ततन्त्रम् ऋ० १०,१६६,१-५; २३४१-४५	ओषधि.
विषनाशनम् ४,७,१-७; ७९८-८०४	विषना.	सप्ततीजयः ३,१८,१-६; ३६४-६९	ओषधि.
विषमैज्यम् ७,५६,१-८; ८५२-५९	विषना.	सप्ततीबाधनम् ऋ० १०,१४५,४-६; २३२९-४०	ओषधि.
विष्णुः ५,२६,७; १९४२	यज्ञादि.	सप्तसिन्धवः ४,६,२; ७९१	विषना.
वीरुषः ४,१५,२-३; १००५-६	जलचि.	सरण्युः ऋ० १०,१७,१-२; १०८१-८२	जलचि.
वृश्चिकादयः ७,५६,१-८; ८५२-५९	विषना.	सरस्वान् ऋ० ७,२५,३। ९६,४-६। अ. ७,४०,१-२;	जलचि.
वृषभः ४,५,१-७; ६१३-१९	रोगचि.	१०४५-५०	दीर्घायु.
वृषभः ७,३९,१; ९२७	जलचि.	सरस्वती ६,४१,२; ६४	
वृषभः ७,११,१; १३३६	गर्भाधानं	सरस्वती ऋ० १,३,१०-१२। १६४,४३। २,३०,८ पूर्वार्धः।	
वृषरोगशमनम् ६,१६,१-११; ६४२-५२	रोगचि.	४१,१६-१८। ६,६१,१-१४। ७,२५,१-२;	
वृष्टिः ४,१५,१-१६; १००४-१९। ७,१८,१-२; १०२०-२१	जलचि.	४-६। ९६,१-३। १०५१-८०। १०,१७,७-९;	
वृष्टिकामः (द्रष्टा) ऋ. ७,१०१,१-६। १०२,१-३; ९८५-९३	जलचि.	१०८३-८५। अ० ७,१०,१। ११,१। ५७,१-२।	
वेदी ७,९९,१; २२५६	यज्ञादि.	६८,१-३; १०८६-९२	
वेधाः १,११,१-६; १४०५-१०	गर्भाधानं	सरस्वती ४,४,६; १३३७	
वैश्वानरः (अग्निः) ६,७१,३; १८२१	अज्ञादि.	सरस्वती ५,७,४-५; १७८०-८१	
		सरस्वती १८,१,४१-४३; २००७-९	
		सर्पविषदूरीकरणम् १०,४,१-२६। ५,१३,१-११;	
		८०८-४४	
		सर्पविषनाशनम् ७,८८,१; ८४५	
		सर्पविषनिवारणम् ६,१२,१-३; ८४६-४८	
		सर्पैभ्यो रक्षणम् ६,५६,१-३; ८४९-५१	
		सर्वमायुः १५,६१,१; १५५। ७०,१; १५६	
		सर्वशीर्षमयाद्यपाकरणम् ९,८,१; २२; २७२-९३	

२२ मणिषा,
मणिषा,
ओषधि,
ओषधि,
ओषधि,
विषना,
जलचि,
२;
जलचि,
दीर्घायु.

१-२१

जलवि.
वाजीरु.
पापादि.
यज्ञादि.

विषना.
विषना.
विषना.
विषना.
दीर्घायु.
यक्ष्मना.

सविता १, ११, १; १५
 सविता ७, ३०, १; ५१०। १, १८, २-३; ६७४-७५
 सविता ४, १५, १-७; १६९९-१७०५
 सविता ५, १३, २; १९३८
 सत्यव्रत अग्निः ६, ७६, १-४; १५०-५३
 सुव्रत ७, ६९, १; ६३८
 सुव्रता ६, ४७, ३; ९०
 सुव्रतः ४, ६, ३; ७९२
 सुव्रतः ७, ३३, १; ९२७
 सुव्रतः १, ११, १; ९१। १९, ६७, १-८; ११९-२६
 सुव्रतः ३, ३१, ७; १७४
 सुव्रतः ४० १, १०, ८; ४७३
 सुव्रतः १, १२, १-४; ४८९-९२। ६, ८३, १; ५६३।
 सुव्रतः १, ५०, ११-१३; ५४५-४७। ६, ५२, १
 सुव्रतः १, १३, ७; ५७५। ७, ६९, १; ६३८
 सुव्रतः १, १६, १; ७६६
 सुव्रतः १, १९, १-१६; ७७४-८९ (अप्तुणसूयः)
 सुव्रतः ४, १, १; १३३२-३३
 सुव्रतः १, १०, ४-८; १६६५-६९। १६, २, ३-४;
 सुव्रतः ११०४५।
 सुव्रतः ४० ३, ५७, ३; ३८३

दीर्घायु.
रोगचि.
पापादि.
यज्ञादि.
दीर्घायु.
रोगचि.
दीर्घायु
विषना.
जलचि.
दीर्घायु.
यक्ष्मना.
ओषधि.
;
रोगचि.
क्रिमिना.
) विषना.
वाजीक.
पापादि.
ओषधि.

सोमः ६, ९६, ३; ३५४। ऋ० १०, ८५, २-४; ४७४-७३	ओषधि.
सोमः ६, ७, १-३; ७६३-६५	किमिना.
सोमः ऋ० १०, १७, ११-१३; ८४९-५१	जलचि.
सोमः ४, ४, ५; १३३६	वाजीक.
सोमः २, १०, २, १६६३ । १६, २, २; १९०३	पापादि.
सोमः पवमानः ऋ० ९, ७४, ५; १४०४	गर्भाधानं.
सोमवनस्पतिः ऋ० १, ९१, ६; ४७७	ओषधि.
सोमारुद्रौ ७, ४२, १-२; १७३०-३१	पापादि.
सौभाग्यवर्धनम् ६, १३९; १-५; ६७७-८१	रोगचि.
स्तनयितुः ४, १५, ११; १०१४	जलचि.
स्वर्गः स्वर्गौदनः १२, ३, १-६०; १२७२-१३३१	अन्नादि.
स्वस्त्ययनकामः (द्रष्टा) ६, ३७, १-३; १७७३-७५	पापादि.
स्वापनम् ४, ५, १-७; ६१३-१९	रोगचि.
हरिणः ३, ७, १-३; १९२-१४	यक्ष्मना.
हरिमा १, २२, १-४; ४८९-९२	रोगचि.
हविः ७, ९८, १; २२७४	यज्ञादि.
हविर्धानि ऋ० १०, १३, १-५; २२७५-७९	यज्ञादि.
हस्तः ४, १३, ६७; ५५३-५४	रोगचि.
हिरण्यम् १, ३५, १-४; ५२-६२	दीर्घायु.
हृद्रोगः (कामिलानाशनम्) १, २२, १-४; ४८९-९२	रोगचि.

निस + कस् ।
 इषु निष्कासनम् ।
 न्या + दूरी + कृ ।
 सर्वशेषिमयादि अपाकरणम् ।
 सर्वविषदूरीकरणम् ।
 भरिष् — क्षयणम् ।
 अक्षर — क्षयणम् ।
 शिञ्च — क्षयणम् ।
 गतुधान — क्षयणम् ।
 क्षयल — क्षयणम् ।
 किमिभ्यन्तम् ।
 ह्यादुषणम् ।

विषदूषणम् ।
वि + नश ।
अरातिनाशनम् ।
अरि— नाशनम् ।
अलक्ष्मी— नाशनम् ।
एनः— नाशनम् ।
कामिला— नाशनम् ।
कृमि— नाशनम् ।
क्षेत्रियरोग— नाशनम् ।
ज्वर— नाशनम् ।
तकम— नाशनम् ।
दस्यु— नाशनम् ।
दुरित— नाशनम् ।
दुःख—नाशनम् ।
दुष्पत्र— नाशनम् ।

पाप— नाशनम् ।
 पापलक्षण— नाशनम् ।
 पाप्म— नाशनम् ।
 बलास— नाशनम् ।
 यक्ष्म— नाशनम् ।
 यक्ष्मरोग— नाशनम् ।
 रोग— नाशनम् ।
 विष— नाशनम् ।
 श्वेतकुष्ठ— नाशनम् ।
 सर्पविष— नाशनम् ।
 ईर्ष्याविनाशनम् ।
 मन्या— नाशनम् ।

अप + नि ।

ईर्ष्या— अपनयनम् ।

वि + बर्ह ।

यक्ष्मविबर्हणम् ।

वाध ।

सपत्नीबाधनम् ।

उत् + वि + मुच् ।

उन्मत्तता— मोचनम् ।

दुःख— मोचनम् ।

निर्ऋति— मोचनम् ।

पाप— मोचनम् ।

पाश— मोचनम् ।

बन्ध— मोचनम् ।

मूत्र— मोचनम् ।

शाप— मोचनम् ।

उत्— मोचनम् ।

पाश— विमोचनम् ।

नि + वृ ।

गर्भदोष— निवारणम् ।

यक्ष्म— निवारणम् ।

रोग— निवारणम् ।

सर्पविष— निवारणम् ।

उप + शम् ।

कास— शमनम् ।

पाप— शमनम् ।

मन्यु— शमनम् ।

वृषरोग— शमनम् ।

शाप— शमनम् ।

रोग— उपशमनम् ।

हन् ।

अलक्ष्मी— घ्नम् ।

किमि— घ्नम् ।

रक्षो— घ्नम् ।

रोग— घ्नम् ।

विष— घ्नम् ।

पाप्म— हा ।

परि + ह ।

कृत्यापरिहरणम् ।

भावकरणार्थ निर्दिष्टाः विषयाः ।

दीर्घायुः प्राप्तिः ।

मेधा— जननम् ।

सपत्नी— जयः ।

केश— दृढणम् ।

गर्भ— दृढणम् ।

धमनी— बन्धनम् ।

सर्पेभ्यः— रक्षणम् ।

आयुर्— वर्धनम् ।

केश— वर्धनम् ।

मेधा— वर्धनम् ।

सौभाग्य— वर्धनम् ।

द्रष्टुः कामः ।

आयुष्कामः ।

परस्परैकचित्तीकरणकामः ।

पुष्टि— कामः ।

वृष्टि— कामः ।

सपत्नक्षय— कामः ।

स्वस्थयन— कामः ।

यक्षमनाशनम् ।

(१) गुणबोधक-पदसहिता मन्त्रोक्त-देवताः ।

शुक्रः अ. ३, ३१, १, ६; १६८, १७३ । २०, ९६, ९; २०८ ।
११, १, ३, ५; १७-१८, ५०, ५२; २१९-२१, २३३-३४,
२६६, २६८ । १२, २, १-५५; २१७-७१
शुक्रः क्रम्यात् १२, २, ७-१०, १५-१६, ३५-३८; २२३-२६,
१३१-२३२, २५१-५४

शुक्रः गार्हपत्यः १२, २, ३४, ४४-४६; २५०, २६०-६२

शुक्रः वैश्वानरः ६, ८५, ३; १८४

शुक्रः संक्रुमुकः १२, २, ११-१४, १९४०; २२७-३०, २३५,
१५६

शुक्रः ६, ९१, १; २००

शुक्रः १२, २, ४८; २६४

शुक्रः १२, २, २६-२७; २४२-४३

शुक्रः १२, २, ६; २२२ । ९, ८, २१-२२; २९२-२३

शुक्रः ९, ८, २२; २९३

शुक्रः ३, ३१, ३; १७० । ३, ७, ५; १९६ । ६, २१, ३; २०१ ।
१२, २, ४०-४१; २५६-५७

शुक्रः ३, ३१, ८-१०; १७५-७७

शुक्रः १, ३३, १-७; २२४-३००

शुक्रः १, ८५, २; १८३ । २०, ९६, ९; २०८ । १२, २, ४७,
५४; २६३, २७०

शुक्रः २०, ९६, ६; २०५

शुक्रः १२, २, २९-३०; २४५-४६

शुक्रः ६, १०, २; १८०

शुक्रः अ. १९, ३८, १-३, २०१-४

शुक्रः पञ्चमः ३, ३१, ३; १७०

शुक्रः २, ३३, १, ६; १७३

शुक्रः २, ३३, १-७; २९४-३००

शुक्रः ६, १०, १-३; १७९-८१

शुक्रः ३, ७, ४; १९५ । विष्टौ सुभगे ।

शुक्रः ३, ११, ५; १७३ । १२, २, २४; २४०
१५ ३० [आयुर्वेद]

देवाः ३, ३१, १, ७; १६८, १७४ । ६, ८५, १-२; १८२-८३ ।
ऋ. १०, ८५, ३१; २३३६ यज्ञियाः ।

द्यौः ६, २०, २; १८०

द्यावापृथिवी ३, ३१, ४; १७१

धाता १२, २, २५; २४१

पन्थानः ३, ३१, ४; १७१

पर्जन्यः पर्जन्यस्य वृष्टिः ३, ३१, ११; १७८

पवमानः ३, ३१, २; १६९

पशवः ग्राम्याः ३, ३१, ३; १७०

पाप्महा ३, ३१, १-११, १६८-७८

पृथिवी ६, २०, २; १८०

वृहस्पतिः २०, ९६, ९; २०८

ब्रह्मा १२, २, ६; २२२ । वसुनीतिः ।

ब्रह्मणस्पतिः १२, २, ६; २२२

मन्त्रोक्ताः १२, २, १-५५; २१७-७१

मित्रः अ. ६, ८५, २; १८३

मृत्युः १२, २, २१-३३; २३७-४९

यक्षमनाशनम् ऋ. १०, १६३, १-६; १६२-६७ । अ. ३, ३१,

१-११; १६८-७८ । ६, २०, १-३; १७९-८१ । ८५, १-३,

१८२-१८४ । १२७, १-३; १८५-८७ । १, १२, १-४;

१८८-१९१ । ३, ७, ६-७; १९७-९८ । ६, ९१, १-३;

१९९-२०१ । १९, ३८, १-३; २०२-४ । २०, ९६, ६-१०;

२०५-२ । ९६, १७-२३; २१०-१६ । ऋ. १०, ८५, ३१;

२३३६

यक्षमनिवारणम् अ. ९, ८, १-२२; २७२-९३

यक्षमरोग-नाशनम् अ. १२, २, १-५५; २१८-७१

यक्षम-विबर्हणम् अ. २, ३३, १-७; २९४-३००

रुद्रः ६, २०, २; १८०

रुद्राः १२, २, ६; २२२

वनस्पतिः ६, ८५, १; १८२ । १२७, १-३; १८५-८७

वरुणः ६,२०,२; १८० । ६,८५,२; १८३
 वसवः १२,२,६; २२२
 वातः ६,९१,२; २००
 विचृतौ तारके ३,७,४; १९५ । सुभगे ।
 विश्वे देवाः ६,८५,२, १८३ । १२,२,२८; २४४
 शक्रः अ. ३,३१,२; १६९
 सर्वशीर्षामयापाकरणम् ९,८,१-२२; २७२-२३

सविता २०,९६,९; २०८
 सुपत्नी १२,२,३१; २४७ । अनमीवाः अनश्रवः अविधवाः
 नारीः सुरत्नाः ।
 सूर्यः ३,३१,७; १७४ (विश्वतोवीर्यः) । १, १२, १-४;
 १८८-९१ । ६,९१,२; २०० । अग्निवायुसूर्यामा ।
 हरिणः ३,७,१; १९२ रघुव्यद् । ३,७,२-३; १९३-९४

(२) यक्षमस्य शरीरगतस्थानानि ।

अंसो क्र. १०,१६३,२; १६३ । अ. २०,९६,१८; २११ ।
 २,३३,२; २९५
 अक्षिणी क्र. १०,१६३,१; १६२ । अ. २०,९६,१७;
 २१० । २,३३,१; २९४
 अंगम् क्र. १०,१६३,६; १६७ । अ. २०,९६,२३; २१६ ।
 २,३३,७; ३००
 अंगानि अ. ९,८,९,१९; २८०,२९०
 अङ्गुलयः अ. २०,९६,२२; २१५ । २,३३,६; २९९
 अनुक्यम् क्र. १०,१६३,२; १६३ । अ. २०,९६,१८;
 २११ । २,३३,२; २९५
 अन्तरात्मा अ. ९,८,९; २८०
 अष्टीवन्तौ क्र. १०,१६३,४; १६५ । अ. २०,९६,२१;
 २१४ । २,३३,५; २९८
 अस्थीनि क्र. १०,१६३,४; १६५ । अ. २०,९६,२२;
 २१५ । २,३३,६; २९९
 आत्मा क्र. १०,१६३,५; १६६ । अ. २०,९६,२२;
 २१५ । २,३३,६; २९९
 आन्त्राणि क्र. १०,१६३,३; १६४ । अ. २०,९६,१९;
 २१२ । २,३३,३; २९६
 आसु (आसः पञ्च) अ. ९,८,१०; २८१
 आस्यम् अ. ९,८,३; २७४
 उदरम् अ. ९,८,९,११-१२; २८०,२८२-२८३ । २०,
 ९६,२०; २१३ । २,३३,४; २९७
 उष्णिहाः क्र. १०,१६३,२; १६३ । अ. २०,९६,१८; २११ ।
 २,३३,२; २९५

ऊरु क्र. १०,१६३,४; १६५ । अ. २०,९६,२१; २१४ ।
 २,३३,५; २९८ । अ. ९,८,७; २७८
 कक्षम् अ. ६,१२७,२; १८६
 कङ्कषाः अ. ९,८,२; २७३
 कर्णौ क्र. १०,१६३,१; १६२ । अ. २०,९६,१७; २१० ।
 २,३३,१; २९४ । अ. ९,८,२-३ २७३-७४
 कीकसाः क्र. १०,१६३,२; १६३ । अ. २०,९६,१८;
 २११ । २,३३,२; २९५
 कुक्षी क्र. १०,१६३,२; १६३ । अ. २०,९६,२०; २१३ ।
 २,३३,४; २९७
 क्लोमन् अ. ९,८,१२; २८३
 गवीनिके अ. ९,८,७; २७८
 गुदाः क्र. १०,१६३,३; १६४ । अ. २०,९६,१९; २११ ।
 २,३३,३; २९६ । अ. ९,८,१७; २८८
 ग्रीवाः क्र. १०,१६३,२; १६३ । अ. २०,९६,१८; २११ ।
 २,३३,२; २९५
 ह्रुवुकम् क्र. १०,१६३,१; १६२ । अ. २०,९६,१७;
 २१० । २,३३,१; २९४
 जानू अ. ९,८,२१; २९२
 जिह्वा क्र. १०,१६३,१; १६२ । अ. २०,९६,१७; २१० ।
 २,३३,१; २९४
 त्वक् (त्वचस्यम्) अ. २०,९६,२३; २१६ । २,३३,
 ७,३००
 दोस् (दोषण्यम्) क्र. १०,१६३,२; १६३ । अ. २०,९६,१८;
 २११ । २,३३,७; ३००

अविषयाः ऋ. १०, १६३, १; १६२। अ. २०, ९६, २२; २१५।
 १, ३३, ६; २९९
 तन्नि ऋ. १०, १६३, ५; १६६। अ. २०, ९६, २२; २१५।
 १, ३३, ६; २९९
 तन्नि अ. ९, ८, १२; २८३। अ. २०, ९६, २०; २१३। २,
 ३३, ४; २९७
 तन्नि ऋ. १०, १६३, १; १६२। अ. २०, ९६, १७;
 १०। २, ३३, १; २९४
 तन्नि अ. ९, ८, १८; २८९
 तन्नि ऋ. १०, १६३, ६; १६७। अ. २०, ९६, २३;
 १६६। २, ३३, ७; ३००
 तन्नि ऋ. १०, १६३, ६; १६७। अ. २०, ९६, २२; २१५।
 १, ३३, ६; २९९
 तन्नि अ. ९, ८, ११; २९२
 तन्नि अ. ९, ८, १५; २८६। अ. २०, ९६, १९; २१२।
 १, ३३, ३; २९६
 तन्नि ऋ. १०, १६३, ४; १६५। अ. २०, ९६, २१; २१४।
 १, ३३, ५; २९८
 तन्नि अ. ९, ८, १५; २८६
 तन्नि ऋ. १०, १६३, ४; १६५। अ. २०, ९६, २१; २१४।
 १, ३३, ५; २९८
 तन्नि ऋ. १०, १६३, ३; १६४। अ. २०, ९६, २०; २१३।
 १, ३३, ४; २९७
 तन्नि ऋ. १०, १६३, ३; १६४। अ. २०, ९६, १९; २१२।
 १, ३३, ३; २९६
 तन्नि ऋ. १०, १६३, २; १६३। अ. २०, ९६, १८; २११।
 १, ३३, २; २९५
 तन्नि ऋ. १०, १६३, ४; १६५। अ. २०, ९६, २१; २१४।
 १, ३३, ५; २९८। अ. ९, ८, २१; २९२
 तन्नि ऋ. १०, १६३, ४; १६५। अ. २०, ९६, २१; २१४।
 १, ३३, ५; २९८। अ. ९, ८, २१; २९२
 तन्नि ऋ. १०, १६३, ४; १६५। अ. २०, ९६, २१; २१४।
 १, ३३, ५; २९८। अ. ९, ८, २१; २९२

मज्जा अ. ९, ८, १८, २८९। अ. २०, ९६, २२; २१५।
 २, ३३, ६; २९९
 मतस्नौ ऋ. १०, १६३, ३; १६४। अ. २०, ९६, १९; २१२।
 २, ३३, ३; २९६
 मस्तिष्कम् ऋ. १०, १६३, १; १६२। अ. २०, ९६, १७;
 २१०। २, ३३, १; २९४
 मुष्कौ अ. ६, १२७, २; १८६
 मूर्धा अ. ९, ८, १३; २८७
 मेहनम् ऋ. १०, १६३, ५; १६६
 यकृत-यकन ऋ. १०, १६३, ३; १६४। अ. २०, ९६, १९;
 २१२। अ. २, ३३, ३; २९६
 ओम-मानि ऋ. १०, १६३, ५-६; १६६-१६७। अ. २०,
 ९६, २३; २१६। २, ३३, ७; ३००
 वक्षणाः अ. ९, ८, १६; २८७
 वनंकरणम् ऋ. १०, १६३, ५; १६६
 वनिष्ठुः ऋ. १०, १६३, ३; १६४। अ. २०, ९६, २०;
 २१३। २, ३३, ४; २९७
 शीर्षन् अ. ९, ८, १-५, १२; २७२-७६, २९३
 शीर्षन् (शीर्षण्यम्) ऋ. १०, १६३, १, १६२। अ. २०,
 ९६, १७; २१०। २, ३३, १; २९४
 श्रोणी ऋ. १०, १६३, ४; १६५। अ. २०, ९६, २१, २१४।
 २, ३३, ५; २९८। अ. ९, ८, २१; २९२
 सीमन्-मा अ. ९, ८, १३; २८४
 स्नावन्-वा ऋ. १०, १६३, ४; १६५। अ. २०, ९६, २२;
 २१५। २, ३३, ६; २९९
 हलीक्षणम् ऋ. १०, १६३, ४; १६५। अ. २०, ९६, १९;
 २१२। २, ३३, ३; २९६
 हृदयम् ऋ. १०, १६३, ३; १६४। अ. २०, ९६, १९; २१२।
 २, ३३, ३; २९६। अ. ९, ८, ८, १२, १४, २२; २७९, २८३;
 २८५, २९३

(३) गुणबोधकपदसहिताः यक्षमभेदाः ।

अविषयः अ. ६, १२७, ३; १८७
 अविषयः १२, २, २; २१८
 अविषयः ९, ८, ५; २७६

अंगभेदः ९, ८, ५; २७६। ९, ८, २२; २९३
 अंग्यः विसन्पकः ६, १२७, ३; १८७
 अज्ञातः यक्षमः ६, १२७, ३; १८७

(१९६)

देवत-सहिताया

अज्ञातयक्ष्मः २०,९६,६; २०५
 अधराब्च् ६,१२७,३; १८७
 अन्धः पुरुषः (अन्धत्वम्) ९,८,४; २७५
 अप्वा ९,८,९; २८०
 अभिशोचयिष्णुः ६,२०,३; १८१
 अभ्रजाः १,१२,३; १९०
 अरातिः ३,३१,१; १६८। १२,२,३; २१९
 अरुणः ६,२०,३; १८१
 अर्षणीः ९,८,१३,१६,२१; २८४,२८७,२९२
 अलजिः ९,८,२०; २८१
 आर्तिः ३,३१,१; १६९
 आसो बलासः ९,८,१०; २८१
 कर्ण्यः विसल्पकः ६,१२७,३; १८७
 कर्णशूलः ९,८,१-२; २७२-७३
 कासः १,१२,३; १९०
 काहाबाहः ९,८,११; २८२
 कीकसाः ९,८,१४; २८५
 क्षेत्रियः ३,७,१-७; १९२-९८
 गुप्तिः हृदि ३,७,२; १९३
 गोष्ठु यक्ष्मः १२,२,१; २१७
 ग्राहिः २०,९६,६; २०५
 जातः पर्वणि पर्वणि ऋ. १०,१६३,६; १६७
 तक्मा ६,२०,१-३; १७९-८१। ९,८,६; २७७
 तपुर्वधः ६,२०,१; १७९
 तिल्पिजः १२,२,५४; २७०
 रवचस्यः २०,९६,२३; २१६
 दण्डनम् १२,२,५४; २७०
 दुःशंसः १२,२,२; २१८
 दुर्भूतं सर्वम् ३,७,७; १९८
 दोषण्यः यक्ष्मः ऋ. १०,१६३,२; १६३
 निर्ऋतिः २०,९६,७; २०६। १२,२,३; २१९
 पापकृत्या ३,३१,२; १६९
 पाप्मा सर्वः ३,३१,१-११; १६८-७८
 पुरुषेषु यक्ष्मः १२,२,१; २१७
 प्रमोतः पुरुषः (प्रमोतत्वम्) ९,८,४; २७५

बभ्रुः (तक्मा) ६,१०,३; १८१
 बलासः ६,१२७,२; १८६। ९,८,८,१०; २७९,२८१
 मूत्रं आमयत् ९,८,१०; २८१
 मृत्युः १२,२,३; २१९
 यक्ष्मः (बहुशः प्रतिसूक्तम्) ।
 रपः ६,९१,१-२; १९९-२००
 राजयक्ष्मः २०,९६,६; २०५
 रोपणाः ९,८,१९; २९०
 लोहितः ६,१२७,२; १८६
 वन्यः ६,२०,३; १८१
 वातजाः १,१२,३; १९०
 वातीकारः ९,८,२०; २९१
 विद्रधः ६,१२७,१,३; १८५,१८७। ९,८,२०; २९१
 विलोहितः ९,८,१; २७२
 विश्वशारदः ९,८,६; २७७
 विश्वाङ्ग्यः ९,८,५; २७६
 विषूचीनः ३,७,१; १९२
 विष्वङ् २०,९६,२३; २१६
 विसल्पः ९,८,२०; २९१
 विसल्पकः ६,१२७,३; १८७। ९,८,२,५; २७३,२७६
 शपथः १९,३८,१; २०२
 शरः १२,२,४७; २६३
 शीर्ष्णः रोगः ९,८,२२; २९३
 शीर्षण्यः यक्ष्मः ऋ. १०,१६३,१; १६२। अ. २०,१६,१
 १७; २१०
 शीर्षण्यः रोगः ९,८,१-५; २७२-७६
 शीर्षक्तिः १,१२,३; १९०। १२,२,१९-२०।
 २३५-३६। ९,८,१, २७२
 शीर्षामयः ९,८,१; २७२
 शुष्मः १,१२,३; १९०
 शुष्मी ६,२०,१; १७९
 सीसम् १२,२,२०; २३६
 हरिमा ९,८,९; २८०
 हृदयामयः ६,१२७,३; १८७

(४) दीर्घायुत्वपर्यायाः ।

शतः ३,११,१-११; १६८-७८ । १२,२,२५; २४१
 शतः शीर्षम् १२,२,६,३२,५५; २२२,२४८,२७१
 शतः शीर्षम् १२,२,३०; २४६
 शतः शीर्षम् १०,९६,१०; २०९ । १२,२,२४; २४०
 शतः शतम् १०,९६,८-९; २०७-८
 शतः जलम् १२,२,२४; २४०

शतं वसन्ताः २०,९६,९; २०८
 शतं शरदः २०,९६,९; २०८
 शतं हेमन्ताः २०,९६,९; २०८
 शतं हिमाः १२,२,८; २४४
 शतशरदम् २०,९६,७; २०६

(५) भैषज्यम् ।

ओषधयः ।

शतः १९,३८,१-३; २०२-४
 शतः शैथिल्यम् १९,३८,१; २०३
 शतः शैथिल्यम् १९,३८,१; २०३
 शतः शैथिल्यम् १९,३८,१; २०२
 शतः शैथिल्यम् ६,१२७,२, १८६
 शतः शैथिल्यम् ६,१२,१८; १९९

वरणः (वनस्पतिः देवः) ६,८५,१; १८२
 वनस्पतिः ६,१२७,१; १८५

(२) अन्ये पदार्थाः ।

आपः ३,७,५; १९६ । ६,९१,३; २०१
 हरिणस्य शीर्षणि भैषजम् ३,७,१; १९२
 हरिण-विषाणम् ३,७,१-२; १९-२९३

ओषधिवनस्पतयः ।

ओषधिदेवता-गुणबोधक पदानि ।

पदानि ।	स्थानम् ।	विशेषनाम ।	पदानि ।	स्थानम् ।	विशेषनाम ।
शतः ८,७,४; ३२७	ओषधयः	अपक्रीताः ८,७,११; ३३४	ओषधयः	लाक्षा	ओषधयः
शतः ८,७,८; ३३१	ओषधयः	अपां स्वसा ५,५,७; ४३४	ओषधयः	लाक्षा	ओषधयः
शतः ८,७,३; ३२६	ओषधयः	अपां गर्भः ८,७,८; ३३१	ओषधयः	लाक्षा	ओषधयः
शतः ८,७,१२; ३२५	अपामार्गः	अपामार्गः ४,१७,१-८ । १८,१-८ । १९,१-८ ।	अपामार्गः	लाक्षा	ओषधयः
शतः ५,५,८; ४३५	ओषधयः	७,६५,१-३; ३८०-४०६	ओषधयः	लाक्षा	ओषधयः
शतः ६,१०९,१; ४१३	लाक्षा	अपुष्पाः १०,९७,१५; ३१५	ओषधयः	लाक्षा	ओषधयः
शतः १९,३९,४; ४५०	पिप्पली	अफलाः १०,९७,१५; ३१५ । ८,७,२७; ३५०	ओषधयः	लाक्षा	ओषधयः
शतः ६,११,३; ४५९	कुष्ठः	अवन्धुक्ता ४,१९,१; ३१६	ओषधयः	लाक्षा	ओषधयः
शतः ६,१६,१ । ४६६	रेवतीः	असिदीपयन् ४,१९,३; ३२८	ओषधयः	लाक्षा	ओषधयः
शतः ८,७,१२; ३३५	विशेषनाम	अभिष्टुताः ८,७,११; ३३४	ओषधयः	लाक्षा	ओषधयः
	ओषधयः	अमृतस्य भक्षः ८,७,१२; ३३५	ओषधयः	लाक्षा	ओषधयः

(१२८)

देवत-साहितायां

अयक्ष्मान् पुरुषान् करत् ६,५९,२; ४०८

अरुन्धती ८,७,६; ३२२। ६,५९,१-३

अरुन्धती ६,५९,१-३; ४०७-९

अरुन्धती ४,१२,१; ४२१

अरुन्धती ५,५,५; ४३२

अर्यमा पितामहः ५,५,१; ४२८

अलसाला (पूर्वा) ६,१६,४; ४६९

अवकोल्बाः ८,७,९; ३३२

अवपतन्तीः दिवः ऋ. १०,९७,१५; ३१५

अश्वत्थः ५,५,५; ४३२। ५,४,३; ४३९। १९,३९,६

४५२

अश्वत्थः, दर्भः ८,७,२०; ३४३

अश्वत्थे निपूदनम् ऋ. १०,९७,५; ३०५। वा० य०

१२,७९; ३५,४; ३५८

अश्वत्थी ऋ. १०,९७,७; ३०७

असिकी ८,७,१; ३२४

आंगिरसीः ८,७,१७,२४; ३४०,३४७

आत्मा वातः ५,५,७; ४३४

आपः अग्रम् ८,७,३; ३२६

आबयुः ६,१६,१; ४६६

आभृताः ८,७,८,२५; ३३१,३४८

इक्ष्वाकुः १९,३९,९; ४५५

इष्कृतिः माता ऋ. १०,९७,९; ३०९

उक्थिन-कथी वा० य० २८,३३; ३७६

उक्षिता अश्वस्य अस्त्रा ५,५,८; ४३५

उग्राः ८,७,४,१०; ३२७,३३३

उग्रा २,२५,१; ४१६

उत्तमः ५,४,९; ४४५

उत्तमः नाम ते पिता ५,४,९; ४४५

उत्तमः ओषधीनाम् १९,३९,४; ४५०

उत्तरा ३,१,४; ३६७

उत्तानपर्णा ३,१,२; ३६५

उदकात्मानः ८,७,९; ३३२

उदोजस्-जाः ऋ. १०,९७,७; ३०७

उन्नयन्ती ८,७,६; ३२९

उन्मुञ्चन्तीः ८,७,१०; ३३३

अरुन्धती

ओषधिविशेषः

ओषधिविशेषः

रोहणी

लाक्षा

लाक्षा

विशेषनाम

ओषधयः

ओषधयः

विशेषनाम

ओषधयः

ओषधयः

ओषधयः

ओषधयः

वि. नाम

ओषधयः

ओषधयः

ओषधयः

लाक्ष

ओषधयः

वि. नाम

ओषधयः

ओषधयः

ओषधयः

वनस्पतिः

लाक्षा

ओषधयः

पृश्निपर्णा

कुष्ठः

कुष्ठः

कुष्ठः

वि. नाम

वि. नाम

ओषधयः

वि. नाम

अरुन्धती

ओषधयः

ऊर्जयन्ती ऋ. १०,९७,७; ३०७

ऋतावरी ६,३०,३; ४७२

एकशुक्लाः ८,७,४; ३२७

ओषधिः ओषधयः (बहुलं दृश्यते) ।

ओषधीनां गर्भः ६,९५,३; ४१२

कण्वजम्भनी २,२५,१; ४१६

काण्डिनीः ८,७,४; ३२७

कानीनः ५,५,५; ४३५

कुष्ठः ६,९५,१-३; ४१०-१२। ५,४,१-१०। १९,

३९,१-१०; ४३७-४५६

कृत्यादूषणीः ८,७,१०, ३३३

कृष्णाः ८,७,१; ३२४

केशहंढणीः ६,२१,३; ४५९

केशवर्धनीः ६,२१,३; ४५९

केशवर्धनी ६,१३७,१; ४६३

क्षिप्रमेघजी ६,१०९,१; ४१३

क्षिप्रस्य मेघजी ६,१०९,३; ४१५

खदिरः ५,५,५; ४३२

गर्भः अपाम् ८,७,८; ३३१

गर्भः ओषधीनाम् ६,९५,३; ४१२

गर्भः विश्वस्य भूतस्य ६,९५,३; ४१२

गर्भः हिमवताम् ६,९५,३; ४१२

गोभाजः ऋ. १०,९७,५; ३०५। वा० य० १२,७९;

३५,४; ३५८

गोष्ठं पयस्वन्तं करत् ६,५९,२; ४०८

घाघः अमेः ८,७,८; ३३१

जनानां न्यञ्जनी ५,५,२; ४२९

जयन्ती ५,५,३; ४३०

जातः त्रिः आदित्येभ्यः परि १९,३९,५; ४५१

जातः त्रिः विश्वेभ्यो देवेभ्यः १९,३९,५; ४५१

जातः त्रिः शाम्भुभ्यो अंगिरोभ्यः १९,३९,५; ४५१

जातः देवेभ्यः अग्नि ५,४,७; ४४३

जातः सुपर्णसुवने गिरौ ५,४,२; ४४८

जातः हिमवतः उग्र ५,४,८; ४४४

जामयः ऋ. ३,५७,३; ३६३

जामिकृत ४,१९,१; ३९६

वि. नाम

शमी

ओषधयः

सामान्यनाम

कुष्ठः, अश्वत्थो वा

पृश्निपर्णा

ओषधयः

लाक्षा

वि. नाम

ओषधयः

ओषधयः

रेवतीः

रेवतीः

रेवतीः

रेवतीः

पिप्पली

पिप्पली

ओषधिविशेषः

ओषधयः

अश्वत्थः कुष्ठो वा

अश्वत्थः कुष्ठो वा

अश्वत्थः कुष्ठो वा

ओषधयः

अरुन्धती

ओषधयः

लाक्षा

लाक्षा

कुष्ठः

कुष्ठः

कुष्ठः

कुष्ठः

कुष्ठः

कुष्ठः

कुष्ठः

कुष्ठः

ओषधयः

अपामर्षा

वि. नाम	विशेषनाम	नमस्यन्ती: क. ३,५७,३; ३६३	ओषधयः
शमी	कुष्ठः	नितत्नी ६,१३६,१; ४६०	वि. नाम
ओषधयः	वि. नाम	निषदनं अश्वत्थे क. १०,९७,५; ३०५	ओषधयः
सामान्यनाम	कुष्ठः	निष्कृतिः ५,५,६; ४३३	लाक्षा
३, अश्वत्थो वा	अरुन्धती	निष्कृतिः क. १०,९७,९; ३०९	ओषधयः
पुत्रिणी	वनस्पतिः (यूपः)	नीलागलसाला ६,१६,४; ४६९	वि. नाम
ओषधयः	कुष्ठः	न्यग्रोधः ५,५,५; ४३२	वि. नाम
लाक्षा	ओषधयः	न्यञ्चनी जनानाम् ५,५,१; ४२८	लाक्षा
१९,	अपामार्गः	पतत्रिणी ५,५,२; ४३६	लाक्षा
वि. नाम	अपामार्गः	पतत्रिणी: क. १०,९७,९; ३०९	ओषधयः
ओषधयः	कुष्ठः	पयस्वती: ८,७,१७; ३४०	ओषधयः
ओषधयः	अश्वत्थः	परागता: दूरम् क. १०,९७,२१; ३२१	ओषधयः
रेवती:	ओषधयः	परिष्ठा: क. १०,९७,१०; ३१०	ओषधयः
रेवती:	कुष्ठः	पर्णः ५,५,५; ४३२	वि. नाम
वनस्पति:		पर्णं मधुमत् ८,७,१२; ३३५	ओषधयः
पिप्पली	वनस्पति: (यूपः)	पर्णं वसति: क. १०,९७,५; ३०५	ओषधयः
पिप्पली	ओषधयः	पर्युक्ता कण्वेन नार्षदेन ४,१९,२; ३९७	अपामार्गः
ओषधिविशेषः	नितत्नी	पाकस्य त्राता ४,१९,३; ३९८	अपामार्गः
ओषधयः	उत्तानपर्णा	पारयिष्णवः क. १०,९७,३; ३०३	ओषधयः
अश्वत्थः कुष्ठो वा	वनस्पति: (यूपः)	पिता अजबम्भः ५,५,८; ४३५	(सिलाची) लाक्षा
अश्वत्थः कुष्ठो वा	अश्वत्थः	पिता द्यौः ८,७,२; ३२५	ओषधयः
अश्वत्थः कुष्ठो वा	ओषधयः	पिता नभः ५,५,१; ४२८	(सिलाची) लाक्षा
१२,७९;	लाक्षा	पिता विमिन्दिन् नाम ४,१९,५; ४००	अपामार्गः
ओषधयः	ओषधयः	पिता विहहो नाम ६,१६,२; ४६७	आषयुः
अरुन्धती	ओषधयः	पितामहः अर्यमा ५,५,१; ४२८	लाक्षा
ओषधयः	वि. नाम	पिप्पली-ल्यः ६,१०९,१-२; ४१३-४१४	वि. नाम
लाक्षा	ओषधयः	पुनर्नवा: ८,७,८; ३३१	ओषधयः
लाक्षा	ओषधयः	पुनः सरा ४,१७,२; ३८१	अपामार्गः
१	वनस्पति: (यूपः)	पुरुषजीवनी: ८,७,४; ३२७	ओषधयः
१	ओषधयः	पुष्पा ८,७,६; ३२९	वि. नाम
४५१	ओषधयः	पुष्पं मधुमत् ८,७,१२; ३३५	ओषधयः
कुष्ठः	कुष्ठः	पुष्पिणी: क. १०,९७,१५; ३१५	ओषधयः
कुष्ठः	कुष्ठः	पुष्पवती: क. १०,९७,३; ३०३ । अ. ८,७,२७;	ओषधयः
कुष्ठः	ओषधयः	३५०	ओषधयः
कुष्ठः	कुष्ठः	पूर्वा जाता: क. १०,९७,१; ३०१	ओषधयः
ओषधयः	लाक्षा	पृथिवी माता ८,७,२; ३१५	ओषधयः

पृथ्वयः ८,७,१; ३२४	ओषधयः	मधुमान् ऋ. १,९०,८; ४७३	वनस्पतिः
पृथ्विपर्णी २,२५,१-४; ४१६-४१९	वि. नाम	मधुमती ८,७,६; ३२९	ओषधयः
प्रचेतसः ८,७,७; ३३०	ओषधयः	मधुना संयुतः ६,३०,१; ४७०	यवः
प्रजाता मधोः अधि १,३४,१; ४७८	मधुवनस्पतिः	मधुजाता १,३४,१; ४७८	मधुवनस्पतिः
प्रजानन् देवलोकम् वा० य० २९,१०; ३७८	वनस्पतिः	मधोः अधि प्रजाता १,३४,१; ४७८	मधुवनस्पतिः
प्रतन्वतीः ८,७,४; ३२७	ओषधयः	मधोः सम्भक्ताः ८,७,१२; ३३५	ओषधयः
प्रतीचीन फलः ४,१९,७; ४०२	अपामार्गः	मध्यं मधुमत ८,७,१२; ३३५	ओषधयः
प्रत्यातिष्ठन्ती ५,५,३; ४३०	लाक्षा	मातरः ऋ. १०,९७,४; ३०४	ओषधयः
प्रथमा (सहमाना) २,२५,२; ४१७	पृथ्विपर्णी	माता इष्कृतिः ऋ. १०,९७,९; ३०९	ओषधयः
प्रसूमतीः ८,७,२७; ३५०	ओषधयः	माता पृथ्वी ८,७,२; ३२५	ओषधयः
प्रसूतरीः ऋ. १०,९७,३; ३०३	ओषधयः	माता मदावती नाम ६,१६,२; ४६७	ओषधयः
प्रस्तृणतीः ८,७,४; ३२७	ओषधयः	माता रात्रिः ५,५,१; ४२८	आबयुः
प्लक्षः ५,५,५; ४३२	वि. नाम	माध्वीः ऋ. १,२०,६; ३६२	लाक्षा
फलिनीः ऋ. १०,९७,१५; ३१५	ओषधयः	मूलं मधुमत ८,७,१२; ३३५	ओषधयः
बभ्रवः ऋ. १०,९७,१; ३०१ । ८,७,१; ३२४	ओषधयः	मूलं समुद्रः ८,७,२; ३२५	ओषधयः
बलवत्तमा वीरुधाम् ३,१८,१; ३६४	उत्तानपर्णी	मेदिनीः ८,७,७; ३३०	ओषधयः
बलासनाशनीः ८,७,१०; ३३३	ओषधयः	यवः ८,७,२०; ३४३ । ६,३०,१; ४७०	वि. नाम
बह्वीः ऋ. १०,९७,१५; ३१५ । ६,९६,१; ३५२	ओषधयः	रक्षसः हन्ता ४,१९,३; ३९८	अपामार्गः
बृहत्पलाशा ६,३०,३; ४७२	शमी	रराणः स्मना देवेषु वा. य. २७,२१; ३७४	वनस्पतिः (यूपः)
बृहस्पतिप्रसूताः ऋ. १०,९७,१५,१२; ३१५,३१९; ६,९६,१; ३५२	ओषधयः	रशनां विश्रव वा. य. २८,३३; ३७६	वनस्पतिः (यूपः)
भक्षः अमृतस्य ८,७,१२; ३३५	ओषधयः	राजा वनस्पतिः यासाम् ८,७,१६; ३३९	ओषधयः
भगः वा० य० २८,३३; ३७६	ओषधयः	राजा वीरुधाम् ८,७,२०; ३४३	सोमः
भद्रः ५,५,५; ४३२	वनस्पतिः (यूपः)	रात्रिः माता ५,५,१; ४२८	लाक्षा
भद्रा ४,१२,२; ४२२	वि. नाम	रुहः सहस्रं यासाम् ऋ. १०,९७,२; ३०२	ओषधयः
भर्त्री शश्वताम् ५,५,२; ४२९	रोहणी	रेवतीः ६,२१,३; ४५९	वि. नाम
भूमि सन्तन्वतीः ८,७,१६; ३३९	लाक्षा	रोहणी ४,१२,१; ४२१	वि. नाम
भेषजीः ८,७,८; ३३१	ओषधयः	रोहिणीः ८,७,१; ३२४	ओषधयः
भेषजौ ८,७,२०; ३४३	ओषधयः	लाक्षा ५,५,७; ४३४	लाक्षा
भेषजानां श्रेष्ठः ६,२१,२; ४५८	व्रीहिः यवश्च	लोमशवक्षणा ५,५,७; ४३४	लाक्षा
मणिः वैयाघ्रा यासाम् ८,७,१४; ३३७	चन्द्रमाः	वनस्पतिः वा० य० ५,४२-४३ । २०,४५ । २१,२१ । २७, २१ । २८, १०, ३३, ४३; ३७०-३७७	वनस्पतिः (यूपः)
मदावती नाम माता ६,१६,२; ४६७	वीरुधः	वनस्पतिः (उपर्युक्तान्यस्थले सामान्यनाम रूपेण निर्देशः) ।	
मधुमत अग्रम् ८,७,१२; ३३५	आबयुः	वपुष्टमा ५,५,६; ४३३	
मधुमत पर्णम् ८,७,१२; ३३५	ओषधयः	वर्षवृद्धा ६,३०,३; ४७२	
मधुमत पुष्पम् ८,७,१२; ३३५	ओषधयः	वशिः वा० य० २८,३३; ३७६	(वनस्पतिः)
मधुमत मध्यम् ८,७,१२; ३३५	ओषधयः		
मधुमत मूलम् ८,७,१२; ३३५	ओषधयः		

वनस्पतिः ओषधयः यः मधुवनस्पतिः मधुवनस्पतिः ओषधयः ओषधयः ओषधयः ओषधयः ओषधयः आयुः लाक्षा ओषधयः ओषधयः ओषधयः ओषधयः वि. नाम अपामार्गः वनस्पतिः (यूपः) वनस्पतिः (यूपः) ओषधयः ओषधयः लाक्षा ओषधयः वि. नाम वि. नाम ओषधयः लाक्षा लाक्षा उ३३ वनस्पतिः (यूपः) निर्देशः) लाक्षा वनस्पतिः)	४,१७,८; ३८७ पर्वः वः क्र. १०,९७,५; ३०५ । वा० य० ११,७९; ३५,४; ३५८ क्र. आत्मा ५,५,७; ४३४ द्वितीयस्य भेषजी ६,१०९,३; ४१५ द्वितीयस्य पुत्रम् क्र. ३,५७,३; ३६३ द्वितीयस्य नाम पिता ४,१९,५; ४०० द्वितीयस्य ४,१९,५; ४०० द्वितीयस्य ८,७,१०; ३३३ द्वितीयस्य ८,७,१०; ३२७ द्वितीयस्य क्र. १०,९७,१०; ३१० द्वितीयस्य १९,३९,१०; ४५६ द्वितीयस्य १९,३९,५-९; ४५१-४५५ द्वितीयस्य ६,१३६,३; ४६२ द्वितीयस्य ८,७,२६; ३४९ द्वितीयस्य ७,६५,२; ४०५ द्वितीयस्य ६,५९,३; ४०२ द्वितीयस्य भूतस्य गर्भः ६,९५,३; ४१२ द्वितीयस्य ८,७,१०; ३३३ द्वितीयस्य वा. य. ५,४२; ३७० द्वितीयस्य पृथिवी अनु क्र. १०,९७,१९; ३१९ द्वितीयस्य नाम ते पिता ६,१६,२; ४६७ द्वितीयस्य क्र. १०,९७,३,२१; ३०३,३२१ । ८,७,२; ३१५ द्वितीयस्य पिताः ४,१९,४; ४०३ द्वितीयस्य बलवत्तम ३,१८,१; ३६४ द्वितीयस्य बलवत्तमः ५,४,१; ४३७ द्वितीयस्य वसिष्ठः ६,२१,२; ४५८ द्वितीयस्य क्र. १०,९७,२३; ३२३ द्वितीयस्य ८,७,४; ३२७ द्वितीयस्य ८,७,२०; ३४३ द्वितीयस्य वा. य. २८,१०,३३; ३७५-३७६ वनस्पति (यूपः) द्वितीयस्य क्र. १०,९७,२; ३०२ द्वितीयस्य वा. य. ५,४३; ३७१ द्वितीयस्य ६,३०,२; ४७१ द्वितीयस्य क्र. १०,९७,१८; ३१८ । ६,९६,१; ३६ दे. [आयुर्वेद०]	अपामार्गः ओषधयः लाक्षा पिप्पली ओषधयः अपामार्गः अपामार्गः ओषधयः ओषधयः ओषधयः ओषधयः कुष्ठः कुष्ठः नित्तनी ओषधयः अपामार्गः अरुन्धती कुष्ठौषधिः ओषधयः वनस्पतिः (यूपः) (यूपः) आयुः सामान्यवाची अपामार्गः उत्तानपर्णी कुष्ठः चन्द्रमाः सोमः ओषधयः वि. नाम वनस्पति (यूपः) ओषधयः वनस्पतिः (यूपः) शमी ओषधयः	शतशाखा ४,१९,५; ४०० शपथयावनी ४,१७,२; ३८१ शमिता वा. य. ११,२१; २७,२१; २८,१०,३३; ३७३-३७६ शमी ६,३०,३; ४७२ शश्वतां भर्त्री ५,५,२; ४२९ शिवाः ८,७,१७; ३४० शुक्राः ८,७,१; ३२४ शुष्मा ५,५,७; ४३४ सजित्वरीः क्र. १०,९७,३; ३०३ सत्यजित् ४,१७,२; ३८१ सनिध्यन्तीः धनम् क्र. १०,९७,८; ३०८ सन्तन्वन्ती भूमिम् ८,७,१६; ३३९ समुद्रः मूलम् ८,७,२; ३२५ सम्पतिता अश्वस्य अस्नः ५,५,९; ४३६ सम्भक्ता मधोः ८,७,१२; ३३५ सरा ५,५,९; ४३६ सहमानाः ८,७,५; ३२८ सहमानाः २,२५,२; ४१७ सहमानाः ४,१७,२; ३८१ सहस्रधामा ४,१८,४; ३९१ सहस्रनाम्नीः ८,७,८; ३३१ सहस्रपण्यः ८,७,१३; ३३६ सहस्रती ३,१८,२,५; ३६५,३६८ सहस्रती २,२५,१; ४१६ सासहिः ३,१८,५; ३६८ सिलाची ५,५,१,८; ४२८,४३५ सिलाजाला ६,१६,४; ४६९ सिषासवः ६,२१,३; ४५९ सीराः क्र. १०,९७,९; ३०९ सुपर्णीः ८,७,२४; ३७७ सुपिप्पलाः वा. य. ११,४८; ३५७ सुभगा ३,१८,२; ३६५ सुभगा ६,५९,३; ४०९ सुभगा ५,५,६-७; ४३३-४३४ सुभगा ६,३०,३; ४७२	अपामार्गो वनस्पतिः अपामार्गो वनस्पतिः वनस्पतिः (यूपः) वि. नाम लाक्षा ओषधयः ओषधयः लाक्षा ओषधयः अपामार्गः ओषधयः ओषधयः लाक्षा ओषधयः अपामार्गः ओषधयः लाक्षा ओषधयः पृश्निपर्णी अपामार्गः अपामार्गः ओषधयः ओषधयः उत्तरा उत्तानपर्णी वा पृश्निपर्णी उत्तरा लाक्षा आयुः रेवतीः केशवर्धनीः ओषधयः ओषधयः ओषधयः उत्तानपर्णी अरुन्धती लाक्षा शमी
--	--	---	---	---

सूर्यवर्णा ५,५,६; ४३३	लाक्षा	स्वधिति: वा० य० ४,१; ५,४२; ६,१५; ३५५ ।	
सोमः ६,२१,२; ४५८	चन्द्रमा:	५,४२; ३७०	ओषधि:
सोमः (राजा) ऋ. १०,९७,२२-२३; ३२२३-२३		खसा अपाम् ५,५,७; ४३४	लाक्षा
८,७,२०; ३४३ । ६,१६,३; ३५४	वि. नाम	खसा देवानाम् ५,५,१; ४२८	सिलाची (लाक्षा)
सोम-राज्ञी: ऋ. १०,९७,१८-१९; ३१८-१९;		हन्ता रक्षसः ४,१९,३; ३९८	अपामार्गः
६,९६,१; ३५२	ओषधयः	हितः सखा सोमस्य ५,४,७; ४४३	कुष्ठः
सोमावती ऋ. १०,९७,७; ३०७	वि. नाम	हिमवतां गर्भः ६,९५,३; ४१२	कुष्ठः
स्तम्बिनी: ८,७,४; ३२७	ओषधयः	हिरण्यपर्णः वा० य० २८,३३; ३७६	वनस्पतिः (यूपः)
स्पर्णी ५,५,३; ४३०	लाक्षा	हिरण्यवर्णा ५,५,६-७; ४३३-३४	लाक्षा

रोगचिकित्सान्तर्गता ओषधयः ।

वनस्पतिः सौभाग्यवर्धनी । ६,१३९,१-५; ६७७-६८१

कल्याणी ३; ६७९

त्रयस्त्रिंशत् नितानाः १; ६७७

न्यस्तिका १; ६७७

बभ्रु ३; ६७९

वीर्यावती ५; ६८१

शतं प्रतानाः १; ६७७

संवननी ३; ६७९

समुष्पला ३; ६७९

सहस्रपर्णा १; ६७७

सुभगंकरणी १; ६७७

वनस्पतिः मधुला (रोगोपशमनम्) । ५,१५,१-११;

६५३-६६३

ऋतजाता १-११; ६५३-६६३

ऋतापरी १-११; ६५३-६६३

वनस्पतिः (शापमोचनम्) । २,७,१-५; ६६८-६७२

अषट्त्रिंश १; ६६८

देवजाता १; ६६८

मूलं दिवः अवततम् ३; ६७०

मूलं पृथिव्या अधि उत्तमम् ३; ६७०

शपथयोपनी वीरुत् १; ६६८

सहस्रकाण्डः ३; ६७०

अलक्ष्मी- (दोषः) । १,१८,१-४; ६७३-६७६

अरणिः पदोः २; ६७४

अरणिः हस्तयोः २; ६७४

अरातिः १; ६७३

गोषेधा ४; ६७६

घोरः आत्मनि ३; ६७५

घोरः केशेषु ३; ६७५

घोरः तन्वाम् ३; ६७५

घोरः प्रातिचक्षणे ३; ६७५

निर्लक्ष्म्यम् १; ६७३

रिश्यपदी ४; ६७६

ललाम्यम् १,४; ६७३, ६७६

विधमा ४; ६७६

विलीढ्यम् ४; ६७६

वृषदती ४; ६७६

रोगचिकित्सा ।

(१) रोगाणां नामानि, तेषां गुणबोधकपदानि च ।

अपचितः गण्डमालाः वा (५०३-५१६)

अपचित-तः ६,८३,१,३; ५१३,५१५

असतराः सेहोः ७,७६,१; ५०७

असतराः असतीभ्यः ७,७६,१; ५०७

अवीरिणीः ६,८३,२; ५१४

अस्तिवत् ६,८३,३; ५१५

अपचिताः अपचितः ७,७६,२; ५०८

एनी ६,८३,२; ५१४

अक्षिधितः ७,७६,३; ५०९

अक्षिधितः अक्षिधितः ७,७६,३; ५०९

अक्षिधितः ६,८३,२; ५१४

अक्षिधितः ६,८३,३; ५१५

अक्षिधितः अपचितः ७,७६,२; ५०८

अक्षिधितः ६,८३,३; ५१५

अक्षिधितः ७,७६,३-५; ५०९-५११

अक्षिधितः अवतिष्ठमाना ७,७६,३; ५०९

अक्षिधितः यासां कृष्णा ७,७६,१; ५०३

अक्षिधितः ६,८३,३; ५१५

अक्षिधितः ६,८३,२; ५१४

अक्षिधितः ७,७६,१; ५०३

अक्षिधितः लवणात् ७,७६,१; ५०७

अक्षिधितः याः अपचिताः ७,७६,२; ५०८

अक्षिधितः ६,८३,२; ५१४

अक्षिधितः सुखः ७,७६,१; ५०७

अक्षिधितः ७,७६,२; २

अक्षिधितः दोषः । १,१८,१-४; ६७३-७६

रूप- (वेधः) । ६,१०,१-३; ६२०-६२२

रूपः निपतिता ३; ६२२

रूपः प्रतिहिता ३; ६२२

रूपः विरज्यमाना ३; ६२२

रूपः ६८२-६८६

अग्निः हृदयः ६,१८,१; ६८२

मनस्कं पतयिष्णुकम् ६,१८,३; ६८४

मृतं मनः ईर्ष्याः ६,१८,२; ६८३

शोकः हृदयः ६,१८,१; ६८२

उन्मत्तता । ६,१११,१-४; ६८७-६९०

उन्मत्तं रक्षसस्परि ६,१११,३; ६८९

उन्मदितं देव एनसात् ६,१११,३; ६८९

उद्युतं मनः ६,१११,२; ६८८

सुयतः लालपीति यः ६,१११,१; ६८७

कासा । ६,१०५,१-३; ४८६-४८८

क्षेत्रियरोगः । २,८,१-५; ४९३-९७

अभिकृत्वरीः २; ४९४

उत्तरः । १,२५,१-४ । ७,११६,१-२; ५२५-३०

अन्येद्युः अभ्येता १,२५,४; ५२८ । ७,११६,२; ५३०

अभिषोकः १,२५,३; ५२७

अर्चिः १,२५,२; ५२६

अव्रतः ७,११६,२; ५३०

उभयद्युः १,२५,४; ५२८ । ७,११६,२; ५३०

च्यवनः ७,११६,१; ५२९

जनित्रं शकल्येषि १,२५,२; ५२६

तक्मा १,२५,१-४; ५२५-२८

तृतीयकः १,२५,४; ५२८

धृष्णुः ७,११६,१; ५२९

नोदनः ७,११६,१; ५२९

पुत्रः राज्ञः वरुणस्य १,२५,३; ५२७

पूर्वकामकृत्वन् ७,११६,१; ५२९

रुरः १,२५,४; ५२८ । ७,११६,१; ५२९

वरुणस्य पुत्रः १,२५,३; ५२७

शकल्येषि जनित्रम् १,२५,२; ५२६

शीतः १,२५,४; ५२८ । ७,११६,१; ५२९

शोकः १,२५,३; ५२७

शोचिः १,२५,२,४; ५२५,५२८

हरितस्य देवः १, २५, ३; ५२७

हूडुः नाम १, २५, ३; ५२७

तकमा । ५, २२, १-१४; ५३१-४४

अधराङ् ३; ५३३

अभिदुन्वन् अग्निः इव २; ५३२

अरसः २; ५३२

अवध्वंसः इव अरुणः ३; ५३३

उच्छोचयन् अग्निः इव २; ५३२

उद्युगः यस्य सखा ११; ५४१

कासः यस्य सखा ११; ५४१

कासा सह अवेपयः १०; ५४०

कासिका यस्य स्वसा १२; ५४२

ग्रैष्मः १३; ५४१

तकमा १-१४; ५३१-४४

तृतीयकः १३; ५४३

पक्षः पार्ष्वेयः ३; ५३३

पाप्मा भ्रातृव्यः १२; ५४२

प्रार्थः ९; ५३९

बह्निरेषु न्योचरः ५; ५३५

बलासः यस्य भ्राता १२; ५४२

बलासः यस्य सखा ११; ५४१

महावृषाः अस्य ओकः ५; ५३५

मूजवन्तः अस्य ओकः ५; ५३५

रुरः १०, १३; ५४०, ५४३

वशी ९; ५३९

वार्षिकः १३; ५४३

वितृतीयः १३; ५४३

वर्दगः ६; ५३६

यलः ६; ५३६

शकम्बरस्य मुष्टिहा ४; ५३४

शारदः १३; ५४३

शतः १०, १३; ५४०, ५४३

सदन्तिः १३; ५४३

हरितान् विश्वान् यः कृणोति २; ५३२

हेतयः यस्य भीमाः १०; ५४०

दुःस्वप्नानि ।

बलासः । ६, १४, १-३; ४८३-४८५

अंगेष्ठाः १; ४८३

अवीरहा ३; ४८५

अस्थिस्त्रंसः १; ४८३

पर्वसु (तिष्ठमानः) १; १४३

पुरास्त्रंसः १; ४८३

हृदयामयः १; ४८३

मूत्र- (कृच्छ्रम्) । १, ३, १-९; ५७१-७९

आन्त्रेषु अधि संश्रुतं मूत्रम् ६; ५७६

गवीन्योः अधि संश्रुतं मूत्रम् ६; ५७६

वस्तौ अधि संश्रुतं मूत्रम् ६; ५७६

यक्ष्मनाशनम् । २, ८, १-५; ४२३-२६

इदं सूक्तं क्षेत्रियरोगनाशनपरम्, न यक्ष्मनाशनपरम् ।

‘ यक्ष्मनाशनम् ’ नाम स्वतन्त्रं प्रकरणं (१६२-३००

मंत्रांकाः) अस्यां संहितायां वर्तते ।

रुधिरास्त्रावः । १, १७, १-४ । ६, ४४, १-३ । २, ३, १-६;

५५५-६१; ५६५-५७०

श्वेत कुष्ठम् । १, २३, १-४ । २४, १-४; ५१७-२४

अस्थिजः किलासः १, २३, ४; ५२०

किलासः १, २३, १-२; ५१७-१८

तनूजः किलासः १, २३, ४; ५२०

दृष्या कृतः १, २३, ४; ५२०

पलितम् १, २३, १-२; ५१७-१८

पृषत् १, २३, २-३; ५१८-१९

लक्ष्म श्वेतं त्वचि १, २३, ४; ५२०

शुक्लानि १, २३, २; ५१८

हरिमा । १, २२, १-४; ४८२-४९१ ।

ऋ. १, ५०, ११-१३; ५४५-५७

हरिमा १, २२, १, ४; ४८२, ४९२

ऋ. १, ५०, ११-१२; ५४५-४६

हयोतः १, २१, १; ४८२

हृद्गोः १, ५०, ११; ५४५

(२) रोगाणां परिहार-साधनानि ।

अपचितः गण्डमाला वा ।

कुनेः देवस्य मूलम् ७,७४,१; ५०३

लाष्टं वचः ७,७४,३; ५०५

इषुनिष्कासनम् ।

ईर्ष्यापनयनम् ।

भेषजम् ७,४५,१; ६८५

उन्मत्ततामोचनम् ।

भेषजम् ६,१११,२-३; ६८८-६८९

कासा-शमनम् ।

क्षेत्रियरोगनाशनम् । २,८,१-५; ४९३-९७

क्षेत्रियनाशनी वीरुत् २-५; ४९४-९७

विषस्य तिलपिञ्जी ३; ४९५

सस्य पलली अर्जुनकाण्डस्य ३; ४९५

सस्य पलली बभ्रोः ३, ४९५

विजुतौ नाम तारके १; ४९३

रोगानुगम्यः क्षेत्रस्य पतये लांगलेभ्यः सनिस्त्रसाक्षेभ्यः

सन्देशेभ्यः च नमस्कृतिः ४-५; ४९६-९७

ज्वरनाशनम् । .

तक्ष्मनाशनम् ।

दुःध्वन्ननाशनम् ।

बलासनाशनम् ।

मूत्रमोचनः ।

प्र ते भिनन्ति मेहनम् १,३,७; ५७७

विहिते ते वस्त्रविलम् १,३,८; ५७८

यक्ष्मनाशनम् । २,८,१-५; ४९३-९६

प्रै सृष्टं न यक्ष्मनाशनम् [स्वतन्त्रं प्रकरणं द्रष्टव्यम् १६२-३००]

लोघिरास्त्रावनिवृत्तिः ।

लोहितः हिराः लोहितवाससः धमन्यः अभ्रातरः इव जामयः

तिष्ठन्तु १,१७,१; ५५५

लोघवभेषजम् ६,४४,२; ५६०

लोघस्य मूत्रम् ६,४४,३; ५६१

वातीकृतनाशनी ६,४४,३; ५६१

विषणका नाम ६,४४,३; ५६१

अन्वास्त्रावम् २,३,२; ५६६

अस्त्राणम् २,३,३,५; ५६७-५६९

अरोगणम् २,३,२; ५६६

आस्त्रावस्य भेषजम् २,३,३-५; ५६७-६९

श्वेतकुष्ठनाशनम् ।

असिक्ती (वनस्पतिः) १,२३,१-४; ५१७-२०

असितं आस्थानम् १,२३,३; ५१९

असितं प्रलयनम् १,२३,३; ५१९

आसुरी (वनस्पतिः) १,२४,१-४; ५२१-२४

किलासनाशनम् १,२४,२; ५२२

किलासभेषजम् १,२४,२; ५२२

कृष्णा १,२३,१; ५१७

पृथिव्या अधि उद्भूता १,२४,४; ५२४

रामा १,२३,१; ५१७

इयामा १,२४,४; ५२४

सरूपं करणी १,२४,४; ५२४

सरूपकृत् १,२४,३; ५२३

सरूपो नाम पिता १,२४,३; ५२३

सरूपा नाम माता १,२४,३; ५२३

हरिमा- (हृद्रोग-कामिला नाशनम्) ।

नाशनम् । १,२२,१-४; ४८९-९२

रोगधन्यः उपनिषदः ऋ १,५०,११-१३; ५४५-४७

रोपणाकासु ध्मानम् १,२२,४; ४९२ । ऋ. १,५०, १२; ५४६

रोहितैः वर्णैः ध्मानम् १,२२,२; ४९०

रोहितस्य वर्णेन ध्मानम् १,२२,१; ४८३

रोहिणीभिः ध्मानम् १,२२,३; ४९१

रोहिणीः देवत्याः गावः ताभिः ध्मानम् १,२२,३; ४९१

शुक्लेषु ध्मानम् १,२२,४; ४९२ । ऋ. १,५०,१२; ५४६

हारिद्रवेषु ध्मानम् १,२२,४; ४९२ । ऋ. १,५०,१२; ५४६

(३) भैषज्यम् ।

आञ्जनं । गुणबोधक पदानि ।

अञ्जनं आञ्जनं वा ४,९,१-१० । ७,३०,१ । ३६,१ ।

१९,४५,१-१०; १९,४४,१-१० । वा. य. ४,३;
५८०-६१२

अपां ऊर्जः १९,४५,३; ५९४

अभयम् १९,४४,१; ६०२

आञ्जनम् १९,४४,३; ६०४

आयुषः प्रतरणम् १९,४४,१; ६०२

ओजसः वायुधानम् १९,४५,३; ५९४

कम् ४,९,१; ५८०

चक्षुर्दाः वा. य. ४,३; ६१२

चतुर्वारम् १९,४५,३-५; ५९४-९६

जम्भयत् यातुन् ४,९,९; ५८८

जम्भयत् यातुधान्यः ४,९,९; ५८८

जातं अग्नेः जातवेदसः १९,४५,३; ५९४

जातं हिमवतः परि ४,९,९; ५८८

जीवं त्रायमाणम् ४,९,१; ५८०

जीवभोजनम् ४,९,३; ५८२

त्रिककुद् नाम ते पिता ४,९,८; ५८७

त्रैककुदम् ४,९,९-१०; ५८८-५८९

त्रैककुदम् १९,४४,६; ६७०

दत्तं विश्वेभिः देवैः ४,९,१; ५८०

देवः १९,४४,६; ६०७

परिधिः जीवनाय १९,४५,३; ५९४

परिपाणं अर्बताम् ४,९,२; ५८१

परिपाणं अश्वानाम् ४,९,२; ५८१

परिपाणं गवाम् ४,९,२; ५८१

परिपाणं पुरुषाणाम् ४,९,२; ५८१

पर्वतस्य अक्षयम् ४,९,१; ५८०

पर्वतीयम् १९,४५,३; ५९४

पुरुषजीवनम् १९,४४,३; ६०४

पृथिव्यां जातम् १९,४४,३; ६०४

भद्रम् १९,४४,३; ६०४

भेषजम् १९,४४,१; ६०२

यातुजम्भनम् ४,९,३; ५८२

यासुनम् ४,९,१०; ५८९

विद्युतां पुष्पम् १९,४४,५; ६०६

विप्रम् १९,४४,१; ६०२

वृत्रस्य कनीनकः वा. य. ४,३; ६१२

शन्तातिः १९,४४,१; ६०२

सहस्रवीर्यम् १९,४४,८-९; ६०९-६१०

सिन्धोः गर्भः १९,४४,५; ६०६

हरितभेषजम् ४,९,३; ५८२

आञ्जनेन परिहरणीयाः रोगाः

अंगभेदः विसर्पकः १९,४४,२; ६०३

अप्रमायुकः १९,४४,३; ६०४

आददिः (अञ्जनस्य दातः) ४,९,८; ५८७

तक्मा (अञ्जनस्य दातः) ४,९,८; ५८७

बलासः (अञ्जनस्य दातः) ४,९,८; ५८७

यक्ष्म १९,४४,२; ६०३

रथजृतिः १९,४४,३; ६०४

विसर्पकः अंगभेदः १९,४४,२; ६०३

हरिमा जायान्य १९,४४,२; ६०३

क्रिमिनाशनम् ।

(१) क्रिमीणां विविधप्रकाराः, तेषां गुणबोधकपदानि च ।

अक्षयौ परिसर्पन् ५,२३,३; ६२८

अक्किनः अयस्मयैः पाशैः १९,६६,१; ७६६

अत्रिणः ६,३२,३; ७३३ । १,७,३; ७६३

अदूनाः २,३१,३; ६७३

अदृष्टः २,३१,२; ६२२

अदृष्टाः ५,२३,६-७; ७०१-७०२

अन्तः ये अप्सु २,३१,५; ६९५

अन्तः ओषधीषु २,३१,५; ६९५

* इदं पदद्वयं किमर्थं न प्रतिभाति ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

विश्वरूपः ५,२३,५; ७०० । २,३१,२; ७१०
 वेशसः २,३२,५; ७१२
 व्यध्वरः २,३१,४; ६९४
 शिखण्डी ४,३७,७; ७२१
 शितिकक्षाः ५,२३,५; ७००
 शितिबाहवः ५,२३,५; ७००
 शिपवित्तुकाः ५,२३,७; ७०२
 शिष्टाः २,३१,३; ६९३
 शीर्षण्यः २,३१,४; ६९४

श्वा इव ४,३७,११; ७३५
 सरूपौ ५,२३,४; ६९२
 सहसूराः ५,२९,११; ७४८
 सारङ्गः २,३२,२; ७१० । ५,२३,२; ७०३
 स्थपतिः २,३२,४; ७१२
 हतभ्राता २,३२,४; ७१२
 हतमाता २,३२,४; ७१२
 हतस्वसा २,३२,४; ७१२
 हविरदाः ४,३७,८-९; ७२२-७२३

(२) ओषधिनामानि ।

तासां गुणबोधकपदानि च ।

अजशृङ्गी ४,३७,२,६; ७१६, ७२०
 अराटकी ४,३७,६; ७२०
 अर्जुनाः ४,३७,५; ७१९
 अश्वत्थाः ४,३७,४; ७१८ (महावृक्षाः)
 आघाटाः ४,३७,५; ७१९
 ओषधिः देवी ४,२०,२; ७५५
 ओषधीनां वीरुषां वीर्यावती ४,३७,६; ७२०
 औक्षगन्धिः ४,३७,३; ७१७
 कर्कर्यः ४,३७,५; ७१९
 गुल्गुलः ४,३७,३; ७१७

तीक्ष्णशृङ्गी ४,३७,६; ७२०
 नलदी ४,३७,३; ७१७
 न्यग्रोधाः ४,३७,४; ७१८ (महावृक्षाः)
 पीला ४,३७,३; ७१७
 प्रमन्दनी ४,३७,३; ७१७
 ब्रह्म ४,३७,११; ७२५
 विश्वतोवीर्या वीरुत ६,३२,२; ७३२
 शिखण्डिनः ४,३७,४; ७१८ (महावृक्षाः)
 हरिताः ४,३७,५; ७१९

विषनाशनम् ।

(१) विष-उत्पत्ति-हेतवः ।

अंस्थाः ऋ. १,१९१,७; ७८०
 अग्निविषम् १०,४,२२; ८२६
 अमिजाः सर्पाः १०,४,२३; ८३०
 अघाश्वः १०,४,१०; ८१७
 अङ्गयाः ऋ. १,१९१,७; ७८०
 अट्टाः ऋ. १,१९१,१-८; ७७४-७८१
 अपोदकाः ५,१३,६; ८३९
 अप्पुजाः सर्पाः १०,४,२३; ८३०
 अलीकाः ५,१३,६; ८३९
 असिकन्या दासी ५,१३,८; ८४१

असितं-ताः १०,४,५,१३; ८१२, ८२० । ५,१३,५-६;
 ८३८-८३९
 अहिः-हयः १०,४,६-८-९, १६-१७, १९-२१, २६;
 ८१३, ८१५-१६, ८२३-२४, ८२६-८८, ८३३ । ७,
 ८८, १; ८४५ । ६, ५६, १; ८४९
 आलिंगी ५,१३,७; ८४०
 उपतृण्यः ५,१३,५; ८३८
 उरुगूलायाः दुहिता ५,१३,८; ९९१
 ओषधिः ४,६,८; ७९७
 ओषधिजाः सर्पाः १०,४,२३; ८३०

ओषधि विषम् १०,४,२२; ८२९
 वृषः ऋ. १,१९१,१; ७७४
 वृषः ७,५६,१; ८५२
 वृषः १०,४,२२; ८२९
 वृषः ५,१३,९; ८४२
 वृषः १०,४,५,१७; ८१२, ८२४
 वृषः १०,४,२२; ८२९
 वृषः ऋ. १,१९१,३; ७७६
 वृषः ५,१३,५; ८३८
 वृषः ५,१३,९; ८४२
 वृषः वतः विषं जातम् ४,६,८; ७९७
 वृषः १०,४,१३,१७,२०; ८२०, ८२४, ८२७
 वृषः अर्धः ७,५६,३; ८५४
 वृषः ५,१३,६; ८३९
 वृषः ५,१३,८; ८४१
 वृषः ऋ. १,१९१,३; ७७६
 वृषः १०,४,१३; ८२०
 वृषः १०,४,१७; ८२४
 वृषः ऋ. १,१९१,१; ७७४
 वृषः वतः विषं जातम् ४,६,८; ७९७
 वृषः यद् विषम् १०,४,२२; ८२९
 वृषः १०,४,११,१३,१७,२०; ८१८, ८२०, ८२४,
 ८१७। ७,५६,१; ८५२
 वृषः १०,४,५,१७; ८१२, ८२४
 वृषः ५,१३,५; ८३८

प्रकृता ऋ. १,१९१,७; ७८०
 वृषः ५,१३,५-६; ८३८-३९। ६,५६,२; ८१०
 वैरिणाः ऋ. १,१९१,३; ७७६
 मदावती ४,७,४; ८०१
 मनुः ५,१३,६; ८३२
 मशकः वृषदंशी ७,५६,३; ८५४
 मौजः ऋ. १,१९१,३; ७७६
 यातुधान्यः ऋ. १,१९१,८; ७८१
 रथर्वी १०,४,५; ८१२
 विद्युतः जाताः सर्पाः १०,४,२३; ८३०
 विलिगी ५,१३,७; ८४०
 वृश्चिकः ऋ. १,१९१,१६; ७८३। १०,४,९,१५;
 ८६६, ८२२

शरासः ऋ. १,१९१,३; ७७६
 शर्कोटः ७,५६,५,७; ८५६, ८५८
 श्वावित् ५,१३,९; ८४२
 श्वित्रम् १०,४,५,१३; ८१२, ८२०
 सतीनकंकतः ऋ. १,१९१,१; ८७४
 सर्पाः १०,४,२३; ८३०
 सात्रासाहः ५,१३,६; ८३९
 सूर्ये यत् विषम् १०,४,२२; ८२९
 सैर्याः ऋ. १,१९१,३; ७७६
 खजः १०,४,१०; ८१७
 सूचीकाः ऋ. १,१९१,७; ७८०

(२) गुणबोधक-पदसहिता विषनाशका देवता ओषधयश्च ।

वृषः (देवता) १०,४,२६; ८३३
 वृषः ऋ. १,१९१,१४; ७८७
 वृषः (सूर्यवि.) ऋ. १,१९१,८-९; ७८१-८२
 वृषः १०,४,४; ८११
 वृषः (ओषधिवि.) ऋ. १,१९१,२; ७७५
 वृषः १०,४,२; ८०९
 वृषः १,१९१,९; ७८२
 वृषः (ओषधिवि.) ऋ. १,१९१,२; ७७५
 १७ दे. [आयुर्वेद०]

इन्द्रः १०,४,१०,१२,१६-१८; ८१७, ८१९, ८२३-२५
 उदकं धन्वि ६,१००,२; ८०६
 ओषधिः अमुराणां दुहिता ६,१००,३; ८०७
 ओषधिः देवानां स्वसा ६,१००,३; ८०७
 ओषधिः दिवः पृथिव्याः सम्भृता ६,१००,३; ८०७
 ओषधिः अवगती ऋ. १,१९१,२; ७७५
 ओषधिः आयती ऋ. १,१९१,२; ७७५
 ओषधिः परायती ऋ. १,१९१,२; ७७५
 ओषधिः पिषती ऋ. १,१९१,२; ७७५

करम्भः ४,७,२-३; ७९९-८००
 गरुत्मान् ४,६,३; ७९२
 कुष्ठम्भकः ऋ. १,१९१,१६; ७८९
 गिरयः (तेषां मधु) ६,१२,३; ८४८
 घृताची नाम (कन्या) १०,४,२४; ८३१
 तरुणकम् १०,४,२; ८०९
 तस्तुवम् ५,१३,११; ८४४
 ताबुवम् ५,१३,१०; ८४३
 तौदी नाम (कन्या) १०,४,२४; ८३१
 दर्भः १०,४,२; ८०९
 दशशीर्षः (ब्राह्मणः) ४,६,१; ७९०
 दशास्यः (ब्राह्मणः) ४,६,१; ७९०
 देवजनाः ६,५६,२; ८५०
 देवाः ६,१००,१; ८०५
 द्यौः ६,१००,१; ८०५
 धन्वनि उदकम् ६,१००,२; ८०६
 नद्यः (तासां मधु) ६,१२,३; ८४८
 परुष्णी (ओषधिः) ६,१२,३; ८४८
 पर्जन्यः १०,४,१६; ८२३
 पर्वताः (तेषां मधु) ६,१२,३; ८४८
 पीबस्पाकः तिर्यः उदारधिः ४,७,३; ८००
 पुरुषस्य वारः १०,४,२; ८०९
 पैद्वः १०,४,५-७,१०-११; ८१२-१४, ८१७-१८
 ब्रह्मणस्पतिः ७,५६,४; ८५५
 ब्राह्मणः (दशशीर्षः दशास्यः) ४,६,१; ७९०
 मधु (नद्यः पर्वताः गिरयः एतेषां) ६,१२,३; ८४८
 मधुला (वीरुत्) ७,५६,२; ८५३

मशकजम्भनी (वीरुत्) ७,५६,२; ८५३
 मयूर्यः त्रिः सप्त ऋ. १,१९१,१४; ७८७
 मित्रः १०,४,१६; ८२३
 गेपुण्यः नव नवत्यः ऋ. १,१९१,१३; ७८६
 वचस् (ओषधिः) ४,७,४-५; ८०१-२
 वरणावस्यां अधि (ओषधिः) ४,७,१; ७९८
 वरुणः १०,४,१६; ८२३
 वातः १०,४,१६; ८२३
 विश्वदृष्टः (सूर्यः) ऋ. १,१९१,८-९; ७८१-८२
 विष्णुलिङ्गकाः त्रिः सप्त ऋ. १,१९१,१२; ७८५
 वीरुत् ७,५६,१; ८५२
 वीरुत् मधुजाता ७,५६,२; ८५३
 वीरुत् मधुला ७,५६,२; ८५३
 वीरुत् मधुश्चुत् ७,५६,२; ८५३
 वीरुत् मधूः ७,५६,२; ८५३
 वीरुत् मशकजम्भनी ७,५६,२; ८५३
 शकुन्तिका इयत्तिका ऋ. १,१९१,११; ७८४
 शोचिः १०,४,२; ८०९
 श्वेतः (ओषधिः) १०,४,३; ८१०
 शीपाला (ओषधिः) ६,१२,३; ८४८
 सरस्वतीः तिस्रः ६,१००,१; ८०५
 सिन्धवः १०,४,२०; ८२७
 सुपर्णः (गरुत्मान्) ४,६,३; ७९२
 सूर्यः ६,१००,१; ८०५। ऋ. १,१९१,१०। ७८१
 सूर्यः अदृष्टा विश्वदृष्टः ऋ. १,१९१,८-९; ७८१-८२
 सोमः १०,४,२६; ८३३
 स्वसारः सप्त (अघुवः) ऋ. १,१९१,१४; ७८७

मणिधारणम् ।

अस्तृतादि-मणिदेवता-गुणबोधकपदानि ।

(१) अस्तृतमणिः । १२,४६,१-७; १५७२-१५७८

असपत्नः ७, १५७८

ऊर्जस्वान् ६; १५७७

घृतात् उल्लुप्तः ६; १५७७

पयस्वान् ६; १५७७

मधुमान् ६; १५७७

मयोभूः ६; १५७७

वयोधाः ६, १५७७

वशी सजातानाम् ७, १५७८

शतयोनिः ६; १५७७

शम्भुः ६; १५७८
 शम्भुः ७; १५७८
 शम्भुः ८; १५७७

(१) औदुम्बरमणिः । १९, ३१, १-१४; १५३७-५०

शम्भुः मणीनाम् ११; १५४७

शम्भुः १३; १५४९

शम्भुः १२; १५४८

शम्भुः ११; १५४८

शम्भुः ८; १५४४

शम्भुः ८; १५४४

शम्भुः ६; १५४२

शम्भुः १३; १५४९

शम्भुः ११; १५४८

शम्भुः ९; १५४५

शम्भुः १४; १५५०

शम्भुः ११, १३; १५३८, १५४६

शम्भुः ८; १५४४

(१) जङ्घिमणिः । २, ४, १-६; ६६-७१ । १९,

१४, १-१०; ३५, १-५; १५५१-६५

शम्भुः ३४, ६; १५५६

शम्भुः ३४, ८; १५५८

शम्भुः ३४, ४; १५५४

शम्भुः २, ४, ६; ७१

शम्भुः ३५, २; १५६२

शम्भुः आख्यात् २, ४, ५; ७०

शम्भुः ३४, ७; १५५७

शम्भुः ३४, ८; १५५८

शम्भुः ३४, ५; १५५५

शम्भुः ३४, ९; १५५९

शम्भुः ३४, ४; १५५४

शम्भुः २, ४, ६; ७१

शम्भुः २, ४, ५; ७०

शम्भुः २, ४, ४; ६९

शम्भुः ३४, ७; १५५७ । ३५, २-३; १५६२-६३

शम्भुः ३४, ८; १५५८

शम्भुः ३४, ६; १५५६

भेषजम् ३५, १; १५६१

मयोभुः २, ४, ४; ६९

वनस्पतिः ३४, ९; १५५९

विश्वभेषजः २, ४, ३; ६८ । १९, ३५, ५; १५६५

विष्कन्धदूषणः २, ४, १; ६६ । १९, ३५, १; १५६१

सहस्रचक्षुः १९, ३५, ३; १५६३

सहस्रवीर्यः २, ४, २; ६७

सहस्रवान् २, ४, ६; ७१ । १९, ३४, ४; १५५४

सुमङ्गलः १९, ३४, ७; १५५७

(४) दर्भमणिः । १९, २८, १-१०; २९, १-९;

३०, १-५; १५१३-३६

अभितपन धर्मः इव २८, ३; १५१५

इन्द्रस्य वर्म ३०, ३; १५३४

क्षत्रस्य वर्धनः ३०, ४; १५३५

दुर्हर्दः सन्तापयन् २८, २; १५१४

देववर्म ३०, ३; १५३४

द्विषतः नितपन् २८, ३; १५१५

द्विषतः हृदः तपनः २८, १-२; १५१३-१४

ब्रह्मणस्पतिः ३०, ३; १५३४

वर्माणि ते शतम् ३०, २; १५३३

वीर्याणि ते सहस्रम् ३०, २; १५३३

शत्रूणां मनः तापयन् २८, २; १५१४

सपत्नक्षयणः ३०, ४; १५३५

सपत्नदम्भनः २८, १; १५१३

यज्ञादि-प्रकरणे 'दर्भः' देवता-गुणबोधकपदानि ।

१९, ३३, १-१०; १९२३-३२ । ३३, १-५; १९३३-३७

अच्युतः ३३, २; १९३४

अपा अग्निः ३३, १; १९३३

उग्रः ३२, १; १९२३

उत्तिरः ३२, १; १९२३

उभं बलम् ३३, ४; १९३६

ओजः देवानाम् ३३, ४; १९३६

ओषधिः ३२, १, ३; १९२३, १९२५

ओषधीनां प्रथमः ३२, १, ०; १९३२

घृतात् उल्लसः ३३, २; १९३४

द्यावयिष्णुः ३३, २; १९३४

(२१२)

तीक्ष्णः १९,३३,४; १९३६
दिवि तूलं ते ३२,३; १९२५
दिविष्टम्भः ३२,७; १९२९
दुश्चयवनः ३२,१; १९२३
देवजातः ३२,७; १९२९
नुदन् सपरान् ३३,२; १९३४
पयस्वान् ३३,१-२; १९३३-३४
पवित्रः ३३,३; १९३५
पृथिव्यां निष्ठितः ३२,३; १९२५
भूमिदंढः ३३,२; १९३४
मधुमान् ३३,२; १९३४
रक्षोहा ३३,४; १९३६
राजा ३३,४; १९३६
विश्वचर्षणिः ३३,४; १९३६
विषासहिः ३३,४; १९३६
वीर्या राजसूयः ३३,१; १९३३
शतकाण्डः १९,३२,१,१०; १९२३,१९३२ । ३३,१;
१९३३

सपरान्हा ३२,१०; १९३२
सहमानः ३२,५; १९२७
सहस्रकाण्डः ३२,३; १९२५
सहस्रपर्णः ३२,१; १९२३
सहस्रार्धः ३३,१; १९३३

(५) प्रतिसरमणिः । ८,५,१-२२; १४३१-५२

अनङ्गान् जगतामिव ११; १४४१
उग्रः २; १४३२
उत्तमः ओषधीनाम् ११; १४४१
ओजस्वान् ४,१६; १४३४,१४४३
ओषधीनां उत्तमः ११; १४४१
तनूपानः २०; १४५०
त्रिवरूथः २०; १४५०
देवमणिः २०; १४५०
नृमणः २१; १४५१
परिपाणः १,१६; १४३१, १४४६
प्रतिमरः (मणिः) १,६; १४३१, १४३४
प्रतीवर्तः ४,१६; १४३४, १४४६

मणिः १,४,७,८,२२; १४३१, १४३४, १४३७-३८;
१४५२

मेथिः २०; १४५०
वशी ४,७; १४३४, १४३७
वाजी २; १४३२
विमृधः ४; १४३४
वीरः १-२; १४३१-३२
वीर्यवान् १; १४३१
व्याघ्रः श्वपदा इव ११; १४४१
शरवीरः १; १४३१
सञ्जयः १६; १४४६
सपरान्हा १-२; १४३१-३२
सहमानः २; १४३२
सहस्रवीर्यः १४; १४४४
सहस्वान् २; १४३२
सुमंगलः १,१६; १४३१, १४४६
सुवीरः २; १४३२
स्वाकृत्यः ४,७-८; १४३४, १४३७-३८

(६) फालमणिः । १०,६,१-३५; १४७८-१५११

अभिभूः २९; १५०६
असपत्नः ३०; १५०७
असुरक्षितिः २२-२८; १४९९-१५०५
उग्रः ६-१०; १४८३-८७
क्षत्रवर्धनः २९; १५०६
खदिरः ६-१०; १४८३-८७
घृतक्षुतः ६-७; १४८३-८४
देवजाः ३१; १५०८
प्रजापतिसृष्टः १९; १४९६
यज्ञवर्धनः ३४; १५११
शतदाक्षिणः ३४; १५११
शंभुवः १५,१७; १४९२, १४९४
सपत्नदम्भनः २९; १५०६
सपत्नहा ३०; १५०७
हिरण्यसक् ४; १४८१

(७) वरणमणिः । १०,३,१-२५; १४५३-७७

देवः ५,८,११; १४५७, १४६०, १४६३

७-३८;

उपस्था १; १४५४
 गतिः १; १४५४
 स्तपतिः ५, ८, ११; १४५७, १४६०, १४६३
 विश्वेयनः ३; १४५५
 ष १; १४५३
 नवस्ययाः १; १४५३
 लक्ष्मः ३; १४५५
 हितः ३; १४५५
 गिरध्वः ३; १४५५

(८) शङ्खमणिः । ४, १०, १-७ १४२४-३०

बहुभूतः ४; १४२७
 हर्षः ७; १४३०
 हर्षः १, ३; १४२४, १४२६
 यतः अन्तरिक्षात् १; १४२४
 यतः दिवि ४; १४२७
 यतः वातात् १; १४२४
 यतः विद्युतः १; १४२४
 यतः इन्द्रात् ५; १४२८

१७८-१५११

जातः समुद्रात् ५; १४२८
 ज्योतिषः परि १; १४२४
 दर्शतः ६; १४२९
 दिवाकरः ५; १४२८
 पर्याभूतः सिन्धुतः ४; १४२७
 मणिः ४; १४२७
 रोचनः ६; १४२९
 विश्वभेषजः ३; १४२६
 शंखः १-४ १४२४-२७
 समुद्रजः ४; १४२७
 हिरण्यजाः १, ४; १४२४, १४२७
 हिरण्यानां एकः ६; १४२९

(९) शतवारमणिः । १९, ३६, १-६; १५६६-७१
 ऋषभः ५; १५७०
 दुर्णामचातनः १; १५६६
 दुर्णामहा ३; १५६८
 शातवारः मणिः ५; १५७०
 हिरण्यशृंगः ५; १५७०

यज्ञादिकम् ।

(१) यम-देवताया गुणबोधकपदानि ।

स्वात्मगानः बहुभ्यः पन्थाम् ऋ. १०, १४, १; १९६८।
 १. १८, १, ४९; २०१५। ६, २८, ३; १५८४
 विरः द्विपदः चतुष्पदः ६, २८, ३; १५८४
 अ. ऋ. १०, १५, ८; १९९४
 विः १८, ३, ६३; २१४१
 विज्ञान १८, १, ३७; २०६१
 मति आहिताः यस्मिन् ऋ. १०, १४, १६; १९७९
 यज्ञं योगमनः ऋ. १०, १४, १; १९६८। अ. १८, १, ४९;
 २०१५। १८, ३, १३; २०९६
 यज्ञं अथ गन्धर्वा अप्या च योषा यस्य ऋ. १०, १०, ४;
 १९५७
 यज्ञं ऋ. १०, १४, १; १९६८। अ. १८, १, ४९; २०१५
 यज्ञं ऋ. १०, १३, ५, १; १९८०

३-७७

पिता विवस्वान् यस्य ऋ. १०, १४, ५; १९७२
 पितृमान् १८, ४, ७४; २२२४
 प्रथमः ऋ. १०, १४, २; १९६९। अ. ६, २८, ३; १५८४
 प्रेयाय यः प्रथमः लोकमेतम् १८, ३, १३; २०९६
 मदनं स्वधया ऋ. १०, १४, ७; १९७३। अ. १८, १, ५४;
 २०१९
 ममार य प्रथमः मर्त्यानाम् १८, ३, १३; २०९६
 मृत्युः ६, २८, ३; १५८४
 यमः ६, २७-२९, १-३; १५७९-१५८७। ऋ. १०,
 १०, १-१४; १४, १-५, ७, ९, १३-१६; १३५, १-७;
 १९५४-८६। २००१, २२३९ मंत्रेषु बहुषु स्थलेषु ।
 यमी (यमस्य भगिनी) ऋ. १०, १०, ९; १९६२

(६१४)

राजा क्र. १०,१४,१,४,७,११; १९६८,१९७१,१९७३,
१९७८। अ. १८,१,४९; २०१५। अ. १८,१,६०;
२०२३। १८, २, १२; २०३६। १८, ३, १३;
२०९६

विवस्वान पिता यस्य क्र. १०,१४,५; १९७२

विश्वपतिः क्र. १०,१३५,१; १९८०

वैवस्वतः क्र. १०,१४,१; १९६८। अ. १८,१,४९;
२०१५। १८,३,१३; २०९६

संराराणः हवींषि क्र. १०,१५,८; १९९४। अ. १८,
३,४६; २१२९

संगमनः जनानाम् 'जनानां संगमनः' द्रष्टव्यम्।

स्वधया मदन् 'मदन् स्वधया' द्रष्टव्यम्।

(२) पितर-देवताया गुणबोधकपदानि ।

अग्निदग्धाः क्र. १०,१५,१४; २०००। अ. १८,२,
३५; २०५९

अग्निष्वात्ताः क्र. १०,१५,११; १९९७। अ. १८,३,
४४; २१२७

अंगिरसः क्र. १०,१४,३-५; १९८०-७२। अ. १८,
१,५८-६१; २०२१-२४

अथर्वानः १८,१,५८; २०२१

अनग्निदग्धाः क्र. १०,१५,१४; २०००। अ. १८,२,३५;
२०५९

अनावृष्ट्याः तपसा १८,२,१६; २०४०

अन्तरिक्षसदः १८,४,७९; २२२९

अपरासः १८,१,४६; २०१२

अर्वाणः १८,३,१९; २१०२

अवरे क्र. १०,१५,१; १९८७। अ. १८,१,४४; २०१०

अवृक्काः क्र. १०,१५,१; १९८७। अ. १८,१,४४; २०१०

अमुं ये ईयुः क्र. १०,१५,१; १९८७। अ. १८,१,४४; २०१०

आसीनासः अरुणीनां उपस्थे क्र. १०,१५,७; १९९३।

अ. १८,३,४३; २१२६

उक्थशासः १८,३,२१; २१०४

उद्धिताः १८,२,३४; २०५८

उपरासः क्र. १०,१५,२; १९८८

उपहृताः क्र. १०,१५,५; १९९१

ऋतं आशसानाः १८,३,२१; २१०४

ऋतजाताः १८,२,१५; २०३९

ऋतज्ञाः क्र. १०,१५,१; १९८७। अ. १८,१,४४;

२०१०

ऋतसाताः १८,२,१५; २०३९

ऋतावृधः १८,२,१५; २०३९

कवयः १८,३,१९,४७; २१०२,२१३०

कव्याः क्र. १०,१५,९; १९९५

धर्मसदः क्र. १०,१५,९-१०; १९९५-९६। अ. १८,३,
४७-४८; २१३०-३१

जहमानाः क्र. १०,१५,९; १९९५। अ. १८,३,४७;
२१३०

तपस्वन्तः १८,२,१५; २०३९

तपोजाः १८,२,१५; २०३९

दग्धाः १८,२,३४; २०५८

देवत्राः क्र. १०,१५,९; १९९५। अ. १८,३,४७; २१३०

देववन्दाः क्र. १०,१५,१०; १९९६

द्युमन्तः १८,१,५७; २०२०

नवग्वाः १८,१,५८; २०२१

निखाताः १८,२,३४; २०५८

पराः-रासः क्र. १०,१५,१,१०; १९८७, १९९६।

अ. १८,१,४४; २०१०। १८,३,२१; २१०४

परोप्ताः १८,२,३४; २०५८

पार्थिवे रजसि आ निषत्ताः क्र. १०,१५,२; १९८८

पूर्वे-वांसः क्र. १०,१५,२,८,१०; १९८८, १९९४,

१९९६। अ. १८,१,४६; २०१२

पितरः पितृदेवतमंत्रेषु सर्वत्र।

प्रस्तासः १८,३,२१; २१०४

बर्हिषदः क्र. १०,१५,३-४; १९८९-९०। अ. १८,१,

४५,५१; २०११, २०१६

भूर्जयः १८,१,६१; २०२४

भृगवः १८,१,५८; २०२१

मध्यमाः क्र. १०,१५,१; १९८७। अ. १८,१,४४;

२०१०

अ. १८,

अ. १८,३

१८,३,४७;

३७; २१३०

१९९६ ।

208

୨୭୬୯

५५५४.

१८९१

9,881

२१२७

११३०

१८,३,४९; २१३२

सूपायना ११; १९५०
स्थूणा १३; १९५२ । अ. १८, ३, ५२; २१३३

११११; १६

आदित्यौ ८, ९, १५: ४१

(२१६)

आपः ८, १, ५; १०। ५, २८, २; १२८
आपः दिव्याः पयस्वतीः ८, २, १४; ४०
आपः पयस्वतीः २, २९, ५; ९५
आयुः २, २८, १, ३; १, ३। ८, १, १-२१; ६-२६। ८,
२, १-२८; २७-५४। ७, ३२, १; १४१। ७, ५३, १-७;
१४३-४९
आयुर्वर्धनम् १९, ६३, १; १५४। वा. य. ३४, ५०-५२;
२३२८-३०
आयुष्यम् ३, ११, १-८; ७२-७९। ५, ३०, १-१७; ९८-
११४। ६, ७६, १-४; १५०-१५३। ५, २८, १-१४;
१२७-४०। ७, ३३, १; १४२। २, १३, ४, ५; २३३४
वीर्यायुत्वम् अ. १९, ६४, १-४; १११-८। १९, ६७,
१-८; ११९-२६। ५, २८, १-१४; १२७-४०। ७, ३३,
१; १४२। २, १३, ४-५; २३३४-३५। वा. य. १२,
१००; २३२७
सर्वमायुः १९, ६१, १; १५५। १९, ७०, १; १५६
इन्द्रः ८, १, १५; २०। ३, ११, ३-४; ७४-७५। ६, ४७,
२; ८९। २, २९, ३-४, ७; ९३-९४, ९७। ५, २८, ४;
१३०। १९, ७०, १; १५६
इन्द्रामो ८, १, २, १६; ७, २१। ८, २, २१; ४७। १,
३५, ४; ६२। ३, ११, १-८; ७२-७९
ऋतवः आर्तवाः ५, २८, २, १३; १२८, १३९
ऋषयः दैव्याः ६, ४१, ३; ६५ अमर्त्याः तन्वः तनूजाः
तनूपाः।
ऋषयः सप्त ७, ५३, ४; १४६
ओषधी-धयः ८, २, ६, १५; ३२, ४१
गोपायन् ८, १, १३; १८
चन्द्रमाः ८, १, १२; १७। ६, ४१, १; ६३। ५, २८, २;
१२८
जङ्घिः मणिः २, ४, १-६; ६६-७१
जरिमा २, २८, १, ३; १, ३
जायुविः ८, १, १३; १८। ५, ३०, १०; १०७
त्रिवृत् ५, २८, १-१४; १२७-४०
त्रिवृत् आयुः ५, २८, ७; १३३
त्रिवृत् देवपुराः ५, २८, ९-१०; १३५-३६
त्रिवृत् पोषाः भूमा वा ५, २८, ३; १२९
त्रिवृत् प्राणाः ५, २८, १; १२७

त्रिवृत् सुपर्णाः ५, २८, ८; १३४
त्रिवृत् हिरण्यम् ५, २८, ६; १३९
त्वष्टा २, २९, २; ९२
दशवृक्षः २, ९, १; ८०
दाक्षायणाः १, ३५, १; ५९
दाक्षायणं हिरण्यम् १, ३५, २; ६०। वा. य. ३४, ५०.
५२; २३२८-२३३०
दिशः ५, २८, २; १२८
देवाः ८, १, १८; २३। ८, २, २७; ५३। १, ३०, २, ४,
५६-५८ (अहुतादः सत्रसदः हुतभागाः)। २, २९, १;
९१। १९-७०, १; १५६
द्यौः १, १२, १७; १७, २२
द्यावापृथिवी २, २८, ४; ४। ८, २, १४; ४० (अभिधियो
अमन्तापे शिवे)। २, २९, ४-५; २४-२५ (ऊर्जस्वती
पयस्वती)।
धाता ८, १, १५; २०
पितरः ५, ३०, १२; १०२
पूषा ५, २८, ३, १२; १२९, १३८। ७, ३२, १; १४२
पृथिवी ८, १, १२; १७
प्रजापतिः ८, १, १७; २२
प्रतीबोधः ८, १, १३; १८। ५, ३०, १०; १०७
प्रदिशः ५, २८, २; १२८
बृहस्पतिः ३, ११, ४, ८; ७५, ७२। २, २९, १; ९१। ५,
२८, १२; १३८। ७, ३३, १; १४२। ७, ५३, १; १४१।
२, १३, २-३; २३३२-३३
बोधः ८, १, १३; १८। ५, ३०, १०; १०७
ब्रह्मणस्पतिः १९, ६३, १; १५४। ६१, १; १५५
भगः ८, १, २; ७
भवाशर्वौ ८, २, ७; ३३
भूमिः ५, २८, २, ५; १२८, १३१
मरुतः ८, १, २; ७। ६, १७, १, ८९। २, २३, ४-५।
२४-२५। ७, ३३, १; १४२
मातरिश्वा वातः ८, १, ५; १०। ८, २, ३, १४; २९, ४०
मित्रः २, २८, १; १
मित्रावरुणौ २, २८, २, ५; २, ५ रिशादा संविदानौ।
मृत्युः ८, १, १, ६; ६, १०। ५, ३०, १२; १०९
यक्षमनाशनम् ३, ११, १-८; ७२-७९। २, ९, १-५; ८०-८१

(२१८)

जरसं आयुः १,३०,३; ५७
 जरसे बहू ७,५३,४; १४६
 जरामृत्युः २,२८,२,४; २,४
 शतशारदम् ८,२,२; २८। १,३५,१; ५९। ३,११,२;
 ७३। ६,११०,२; ८६। ५,२८,१; १२५। वा. य.
 ३४,५२; २३३०
 शतहायनम् ८,२,८; ३४

शतं शरदः ३,११,४; ७५। २,२२,२; ९२। १९,
 ६७,१-८; ११९-१२६। ७,५३,२; १४४
 शतं वसन्ताः ३,११,४; ७५
 शतं हेमन्ताः ३,११,४; ७५
 शतं हिमाः २,२८,४; ४
 शतं अयुतं हायनान् द्वे युगे त्रीणि चत्वारि ८,२,२१; ४७
 सर्वे आयुः १२,६१,१; १५५। १९,७०,१; १५६

(४) दीर्घायुत्वे परिहरणीयम् ।

अंहः २,२८,१; १। २,४,३; ६८
 अंगज्वरः ५,३०,९; १०६
 अंगभेदः ५,३०,९; १०६
 अज्ञातयक्ष्मः ३,११,१; ७२
 अभिशक्तिः ७,५३,१; १४३
 अमिशोचनम् २,४,२; ६७
 ग्राहिः ३,११,१; ७२
 जम्भः २,४,२; ६७

मृत्युः ७,५३,१; १४३
 मृत्यवः शतम् २,२८,१; १
 यक्ष्मः ५,३०,९; १०६
 राजयक्ष्मः ३,११,१; ७२
 विशरः २,४,२; ६७
 विष्कन्धः २,४,२,५; ६७,७०
 हृदयामयः ५,३०,९; १०६

(५) ओषधयः, तासां विकाराः, गुणबोधकपदानि च ।

ओषधिः वा. य. १२,१००; २३२७
 जंगिहः मणिः २,४,१-६; ६६-७१
 जीवन्ती ८,२,६; ३२
 जीवला ८,२,६; ३२
 त्रायमाणा ८,२,६; ३२
 दशवृक्षः २,९,१; ८०
 नवारिषा ८,२,६,३२

पूतद्रुः नाम भेजषम् ८,२,२८; ५४
 वनस्पतिः २,९,१; ८०
 वीरुधः ८,७,२; ३२५
 शतवल्शा वा. य. १२,१००; २३२७
 सर्वहा ८,२,७; ३३
 सहमाना ८,२,६; ३२
 सहस्वती ८,२,६; ३२

जलचिकित्सा ।

(१) आपः [उदकम्] गुणबोधकपदानि ।

अप्रेगुवः वा. य. १,१२; ९३७
 अप्रेपुवः वा. य. १,१२; ९३७
 अघ्न्याः वा. य. २०,१८; ११०३
 अध्वरीयतां अम्बयः ऋ. १,२३,१६; ६३

अध्वरीयतां जामयः ऋ. १,२३,१६; ८६३
 अध्वर्युमिः मनसा संविदानाः ऋ. १०,३०,१३; ९१३
 अनश्रयः अ. १९,२,३; ९३०
 अनमीवाः वा. य. ४,१२; ९४४

१९। १९,
४२, २१; ४७
१५६

३; ११३

अक्षयः वा. य. ४, १२; ९४४
 अक्षयः वा. य. १०, ४; १०९६
 अक्षयः वा. य. १०, ६; १०९७
 अक्षयः अ. ७, ४९, १; ८७५
 अक्षयः अ. १९, २, २; ९२९ । १, ६, ४; ९६४
 अक्षयः बहुधा भवन्ति अ. १, ३३, ३; ९१८
 अक्षयः वा. य. १०, ३; १०९५
 अक्षयः वा. य. १०, ३; १०९५
 अक्षयः [सुपर्णः वृषभः वा] अ. ७, ३९, १; ९२७
 अक्षयः अन्तः क्र. १, २३, १९; ८६६ । अ. १, ४,
 ४; ९६३
 अक्षयः वा. य. ४, १२; ९४४
 अक्षयः अ. १९, २, ५; ९३२
 अक्षयः वा. य. ४, १२; ९४४
 अक्षयः [सोमः] क्र. ७, ४७, १; ८७१
 अक्षयः वा. य. १०, ३; १०९५
 अक्षयः अक्षयः अक्षयः वा. य. १०, १९; १०९८
 अक्षयः वा. य. ११, ३८; १०९९ । १२, ३, ५; ११०० ।
 क्र. १०, ९, १, ४-१; ८७९, ८८२-८८३ । अ. ७, ४९,
 १-४; ८७५-७८
 अक्षयः (निर्वचनम्) अ. ३, १३, २; ९२१
 अक्षयः क्र. १०, ३०, १३; ९१३
 अक्षयः क्र. १०, ३०, १०; ९१०
 अक्षयः [सोमः] अ. ७, ४७, १; ८७१ । क्र. १०, ३०,
 १; ९०९
 अक्षयः पर्वतस्य पृष्ठात् वा. य. १०, १९; १०९८
 अक्षयः क्र. १०, ३०, ८; ९०८
 अक्षयः वायोणाम् क्र. १०, ९, ५; ८८३
 अक्षयः अ. १९, २, १; ९२८
 अक्षयः (निर्वचनम्) अ. ३, १३, ४; ९२३
 अक्षयः वा. य. १०, १९; १०९८
 अक्षयः अ. १९, ६९, २; ९३४
 अक्षयः क्र. १०, ३०, १५; ९१५
 अक्षयः वा. य. २, ३४; ९४२
 अक्षयः वा. य. १०, १; १०९३
 अक्षयः (सोमः) क्र. ७, ४७, १; ८७१ । १०, ३०, ७-९;
 ९०७-९०९

*

अक्षयः वृष्णः वा. य. १०, २; १०९४
 अक्षयः अ. ३, १३, ७; ९२६
 अक्षयः वा. य. ४, १२; ९४४
 अक्षयः वा. य. १०, ३; १०९५
 अक्षयः [सुपर्णः] अ. ७, ३९, १; ९२७
 अक्षयः [सोमः] क्र. १०, ३०, ९; ९०९
 अक्षयः क्र. १०, ३०, ५; ९०५
 अक्षयः-मे-आभृताः अ. १९, २, २; ९२९ । १, ६, ४;
 ९६४
 अक्षयः महि क्षत्रं वन्वाताः वा. य. १०, ४; १०९६
 अक्षयः चर्षणीनाम् क्र. १०, ९, ५; ८८२
 अक्षयः अ. १९, २, ३; ९३०
 अक्षयः क्र. ७, ४९, २; ८७६ । अ. १९, २, २; ९२९ ।
 १, ६, ४; ९६४
 अक्षयः क्र. १०, १७, १; ८८८
 अक्षयः क्र. १०, ३०, ८; ९०८
 अक्षयः (सोमः) क्र. ७, ४७, १; ८७१
 अक्षयः क्र. १०, ३, १३; ९१३ । अ. ३, १३, ५;
 ९२४
 अक्षयः अ. १, ३३, ४; ९१९
 अक्षयः क्र. १०, ३०, १०; ९१०
 अक्षयः वा. य. १०, १; १०९३
 अक्षयः वा. य. १०, ४; १०९६
 अक्षयः वा. य. १२, ३५; ११००
 अक्षयः क्र. १०, ३०, १०; ९१०
 अक्षयः क्र. १, २३, १६; ८६३
 अक्षयः (जलम्) अ. ६, ५७, २; ८६१
 अक्षयः अ. १९, ६९, १; ९३३
 अक्षयः क्र. १०, ३०, १४; ९१४
 अक्षयः अ. १९, ६९, ४; ९३६
 अक्षयः वा. य. १०, ६; १०९७
 अक्षयः [सोमः] क्र. १०, ३०, ९; ९०९
 अक्षयः क्र. ७, ४९, २; ८७६ । अ. ७, ३९, १; ९२७ ।
 १९, २, ४; ९३१
 अक्षयः वा. य. २०, १९; ११०४
 अक्षयः [सोमः] क्र. १०, ३०, ७; ९०७

देवश्रुतः वा. य. ६,३०; ९४८
 देवीः ऋ. १,२३,१८; ८६५ । ७,४७,३; ८७३ ।
 ४९,१-४; ८७५-७८ । १०,१७,१०; ८८८ । वा. य.
 ४,१,१२; ९४३-३४ । ६,१०,१३; ९४६-४७ ।
 अ. ६,२४,१; ९७१ । वा. य. ११,३८; १०१९ ।
 १२,३५; ११००

द्विधाराः ऋ. १०,३०,१०; ९१०
 धन्वत्याः अ. १९,२,२; ९२९ । १,६,४; ९६४
 नद्यः (निर्वचनम्) अ. ३,१३,१; ९२०
 नभोजाः (सोमः) ऋ. १०,३०,९; ९०९
 नावः वा. य. १०,१९; १०९८
 निप्राभ्यः वा. य. ६,३०; ९४८
 द्रप्सः [सोमः] ऋ. १०,१७,११-१३; ८८३-९१
 पत्नीः भुवनस्य ऋ. १०,३०,१०; ९१०
 पत्नीः रायः ऋ. १०,३०,१२; ९१२
 पत्नीः स्वपत्यस्य ऋ. १०,३०,१२; ९१२
 पयस् [सुपर्णः वृषभः] अ. ७,३९,१; ९२७
 पयस्वत् इत् पयः अपाम् (सोमः) ऋ. १०,१७,१४;
 ८९२

पयः पृच्छतीः मधुना ऋ. १,२३,१६; ८६३
 परिवाहिणीः वा. य. १०,३; १०९५
 पावकाः ऋ. ७,४९,२-३; ८७६-८७७ । अ. १,३०,
 १,४; ९१६,९१९
 पीताः वा. य. ४,१२; ९४४
 पुनानाः ऋ. ७,४९,१; ८७५
 पृश्नयः वा. य. १२,५५; ११०१
 वृहन् [सुपर्णः] अ. ७,३९,१; ९२७
 भद्राः अ. ३,१३,५; ९२४
 मिषवतराः मिषभ्यः अ. १९,२,३; ९३०
 मिषवतनाः मिषजाम् अ. ६,२४,२; ९७२
 भुवनस्य जनित्रीः ऋ. १०,३०,१०; ९१०
 भुवनस्य पत्नीः ऋ. १०,३०,१०; ९१०
 भेषजम् (जलम्) अ. ६,५७,१-३; ८६०-६२
 भेषजीः अ. १९,२,५; ९३२
 मत्सरः (सोमः) ऋ. १०,३०,९; ९०९
 मदच्युतः (सोमः) ऋ. १०,३०,९; ९०९
 मदन्तीः स्वधर्मा ऋ. ७,४७,३; ८७३

मधुमतीः वा. य. १०,१,४; १०९३,१०९६ । ११,३८,
 १०९९ । १,२१; ९३२ । ऋ. १०,३०,४; ९०४
 मधुमान् (सोमः) ऋ. ७,४७,१; ८७१ । १०,१०,
 ७-८; ९०७-८
 मधुमत्तमः (सोमः) ऋ. ७,४७,२; ८७२
 मध्व उत्सः (सोमः) ऋ. १०,३०,८; ९०८
 मधुश्चुतः ऋ. ७,४९,३; ८७७
 मधुपृचः अ. ३,१३,५; ९२४
 मयोभुवः ऋ. १०,९,१; ८७९
 मातरः ऋ. १०,१७,१०; ८८८
 मान्दाः वा. य. १०,४; १०९६
 रसः यासां शिवतमः ऋ. १०,९,२; ८८०
 राजस्वः वा. य. १०,१,६; १०९३,१०९७
 रायः पत्नीः ऋ. १०,३०,१२; ९१२
 राष्ट्रदाः वा. य. १०,२-४; १०९४-१०९६
 रेवतीः ऋ. १०,३०,८,१२,१४; ९०८,९१२,९१४ ।
 वा. य. १,२१; ९३९
 वर्ध्याः अ. १९,२,१; ९२८
 वाः (र) अ. ३,१३,३; ९२२ निर्वचनम् । वा. य. ५,
 ११; ९४५
 वाचः बन्धुः वा. य. १०,६; १०९७
 वार्षिकीः अ. १,६,३; ९६४
 वाशाः वा. य. १०,४; १०९६
 विचरन् (सोमः) ऋ. १०,३०,९; ९०९
 विश्वभृतः वा. य. १०,४; १०९६
 विश्वभेषजीः ऋ. १,२३,२०; ८६७
 वृषण ऊर्मिः वा. य. १०,२; १०९४
 वृषसेनः वा. य. १०,२; १०९४
 वृषभः ओषधीनाम् (सुपर्णः) अ. ७,३९,१; ९२७
 वृष्ट्या अभीपतः तर्पयन् (सुपर्णः) अ. ७,३९,१ । ९२७
 व्रजक्षितः वा. य. १०,४, १०९६
 शं भवन्तः अ. १,३३,१-४; ९१६-१९ । वा. य. ४,१; ९४१
 शकरीः अ. ३,१३,७; ९२३ । वा. य. १०,४; ९१६
 शतपवित्राः ऋ. ७,४७,३, ८७३
 शवित्राः वा. य. १०,४; १०९६
 शिवाः अ. १९,२,५; ९३२

सुपर्णा: क. ७,४९,२-३; ८७६-७७ । अ. १,३३,१,४;
 सुमित्रिया: न: वा. य. ६,२२; ९५१ । २०,१९; ११०४
 सुवर्णा: अ. १,३३,१-३; ९१६-१८
 सुशेवा: वा. य. ४,१२; ९४४
 सूददोहस: वा. य. १२,५५; ११०१
 सूर्यश्चक्षु: वा. य. १०,४; १०९६
 सूर्यवर्चस: वा. य. १०,४; १०९६
 सोमस्य दात्रम् वा. य. १०,६; १०२७
 स्योना: अ. १,३३,१-४; ९१६-१९
 स्रवन्ति या: क. ७,४९,२, ८७६
 स्रोतस्या: अ. १९,२,४; ९३१
 स्वपथस्य पानी: क. १०,३०,१२; ९१२
 स्वयंजा: क. ७,४९,२; ८७६
 स्वराज: वा. य. १०,४; १०९६
 स्वसिच: वा. य. १०,१९; १०९८
 हिरण्यवर्णा: अ. १,३३,१; ९१६ । ३,१३,६; ९२५
 हैमवती: अ. १९,२,१; ९२८

सुपर्णा: क. ७,४९,२-३; ८७६-७७ । अ. १,३३,१,४;
 सुमित्रिया: न: वा. य. ६,२२; ९५१ । २०,१९; ११०४
 सुवर्णा: अ. १,३३,१-३; ९१६-१८
 सुशेवा: वा. य. ४,१२; ९४४
 सूददोहस: वा. य. १२,५५; ११०१
 सूर्यश्चक्षु: वा. य. १०,४; १०९६
 सूर्यवर्चस: वा. य. १०,४; १०९६
 सोमस्य दात्रम् वा. य. १०,६; १०२७
 स्योना: अ. १,३३,१-४; ९१६-१९
 स्रवन्ति या: क. ७,४९,२, ८७६
 स्रोतस्या: अ. १९,२,४; ९३१
 स्वपथस्य पानी: क. १०,३०,१२; ९१२
 स्वयंजा: क. ७,४९,२; ८७६
 स्वराज: वा. य. १०,४; १०९६
 स्वसिच: वा. य. १०,१९; १०९८
 हिरण्यवर्णा: अ. १,३३,१; ९१६ । ३,१३,६; ९२५
 हैमवती: अ. १९,२,१; ९२८

(२) सरस्वत्यादि-नदी-नामानि, तासां गुणबोधकपदानि च ।

सरस्वती (सरस्वती) क. ७,९३,३३; १०८०
 गन्ध (विपाट् शुतुद्री) क. ३,३३,१३; १०३४
 गन्ध (विन्धु:) क. १०,७५,७; १०४२
 गन्ध (विपाट् शुतुद्रौ) क. ३,३३,१३; १०३४
 गन्ध (नद्य:) क. ३,३३,२; १०३०
 गन्ध (सरस्वत्या: अम:) क. ६,६१,८; १०६६
 गन्ध (नद्य:) अ. ७,५०,४; १०३५
 गन्ध (अपाधामा (नद्या) क. १०,७५,७; १०४२
 गन्ध (सरस्वती) क. ६,६१,१३; १०७१
 गन्ध (नद्य:) अ. ७,५०,४; १०३५
 गन्ध (विपाट् शुतुद्रौ) क. ३,३३,२; १०३४
 गन्ध (सरस्वती) क. १०,१७,२; १०८२
 गन्ध (सरस्वती) क. २,८१,१६; १०५६
 गन्ध (सरस्वत्या: अम:) क. ६,६१,८; १०६६
 गन्ध (सरस्वती) क. ७,९३,२; १०७९ । क. ६,

अक्षिपदा: (नद्य:) अ. ७,५०,४; १०३५
 अक्षिमिदा: (नद्य:) अ. ७,५०,४; १०३५
 अक्षिनी [विशेषनाम] क. १०,७५,५; १०४०
 अहत: (सरस्वत्या: अम:) क. ६,६१,८; १०६६
 आर्जोकीया [विशेषनाम] क. १०,७५,५; १०४०
 इन्द्रेषिते [विराट् शुतुद्रौ] क. ३,३३,२; १०२३
 इयाना मितजुमि: नमस्यै: [सरस्वती] क. ७,९५,४; १०७५

इषयन्ती: (नद्य:) क. ३,३३,१२; १०३३
 उत्तरा सखिभ्य: [सरस्वती] क. ७,९५,४; १०७५
 उदन्वती: (नद्य:) अ. ७,५०,४; १०३५
 उदधि: (समुद्र:) अ. ४,१५,११; १०१४
 उद्वत: (नद्य:) अ. ७,५०,४; १०५०
 उपस्तुत्या चिकितुषा (सरस्वती) क. ६,६१,१३; १०७१
 उर्वी (विपाट्) क. ३,३३,३; १०२४
 उशती (विपाट् शुतुद्रौ) क. ३,३३,१; १०२२

ऊर्णावती (सिन्धुः) ऋ. १०, ७५, ८; १०४३
 ऋजीती (सिन्धुः) ऋ. १०, ७५, ७; १०४२
 ऋतावरीः (नद्यः) ऋ. ३, ३३, ५; १०२६ (सरस्वती) ।
 २, ४१, १८; १०५८
 ऋध्वः (सरस्वती स्तनः) अ. ७, ११, १; १०८७
 एनी (सिन्धुः) ऋ. १०, ७५, ७; १०४२
 कुभा (सिन्धुसंगता) ऋ. १०, ७५, ६; १०४१
 केतुः [सरस्वती स्तनः] अ. ७, ११, १; १०८७
 गंगा (नदीविशेषः) ऋ. १०, ७५, ५; १०४०
 गोमती (सिन्धुसंगता) ऋ. १०, ७५, ६; १०४१
 घृतश्रुत (सरस्वदूर्मयः) ऋ. ७, ९६, ५; १०४७
 घोरा (सरस्वती) ऋ. ६, ६१, ७; १०६५
 चरन्ती देवकृतं योनिं अनु (विपाट् शुतुद्री) ऋ. ३, ३३,
 ४; १०२५
 चरिष्णुः [सरस्वत्याः अमः] ऋ. ६, ६१, ८; १०६६
 चित्रा अद्या न (सिन्धुः) ऋ. १०, ७५, ७; १०४२
 चेतन्ती भुवनस्य भूरेः रायः (सरस्वती) ऋ. ७, ९५, २;
 १०७४
 चेतन्ती सुमतीनाम् (सरस्वती) ऋ. १, ३, ११; १०५२
 चोदयित्री सूनृतानाम् (सरस्वती) ऋ. १, ३, ११; १०५२
 जुषाणा (सरस्वती) ऋ. ७, ९५, ४; १०७५
 तृष्टामा (सिन्धुसंगतानदी) ऋ. १०, ७५, ६; १०४१
 त्वेषः (सरस्वत्याः अमः) ऋ. ६, ६१, ८; १०६६
 त्रिषधस्था (सरस्वती) ऋ. ६, ६१, १२; १०७०
 दर्शता वपुषी इव (सिन्धुः) ऋ. १०, ७५, ७; १०४२
 दाश्वान् (सरस्वान्) अ. ७, ४०, २; १०५०
 देवी (सरस्वती) ऋ. ६, ६१, ४, ६; १०६२-६४ । २,
 ४१, १७; १०५७ । ... (नद्यः) अ. ७, ५०, ४; १०३५
 देवितमा (सरस्वती) ऋ. २, ४१, १६; १०५६
 दैवः (सरस्वती स्तनः) अ. ७, ११, १; १०८७
 धरुणा (सरस्वती) ऋ. ७, ९५, १; १०७३
 धियावसुः (सरस्वती) ऋ. १, ३, १०; १०५१
 धीनां अवित्री (सरस्वती) ऋ. ६, ६१, ४; १०६२
 धृषती (सरस्वती) ऋ. २, ३०, ८; १०४५
 नदीतमा (सरस्वती) ऋ. २, ४१, १६; १०५६
 नर्यः (सरस्वान्) ऋ. ७, ९५, ३; १०४५
 निवतः (नद्यः) अ. ७, ५०, ४; १०३५

पञ्चजाता वर्धयन्ती (सरस्वती) ऋ. ६, ६१, १२; १०७०
 पक्ष्णी (नदीविशेषा) ऋ. १०, ७५, ५; १०४०
 पारावतघ्नी (सरस्वती) ऋ. ६, ६१, २; १०६०
 पावका (सरस्वती) ऋ. १, ३, १०; १०५१
 पिन्वमाने कर्मिभिः (विराट् शुतुद्री) ऋ. ३, ३३, २; १०२३
 पिन्वमानाः पयसा (विपाट् शुतुद्री) ऋ. ३, ३३, ४; १०२५
 (नद्यः) अ. ७, ५०, ४; १०३५
 पीपिवान् (सरस्वत्याः स्तनः) ऋ. ७, ९६, ६; १०४८
 पुष्टपतिः (सरस्वान्) अ. ७, ४०, २; १०५०
 पृथुः (सरस्वती स्तनः) अ. ७, ११, १; १०८७
 प्रचेतयति महः अर्णः केतुना (सरस्वती) ऋ. १, ३, ११;
 १०५३
 प्रत्यङ् आ दाशुषे (सरस्वान्) अ. ७, ४०, २; १०५०
 प्रवाधधाना महिना विश्वा अपः (सरस्वती) ऋ. ७, ९५, १;
 १०७३
 प्रवतः (नद्यः) अ. ७, ५०, ४; १०३५
 प्रिया प्रियासु (सरस्वती) ऋ. ६, ६१, १०; १०६८
 बृहती कृता विभ्वने (सरस्वती) ऋ. ६, ६१, १३; १०७१
 भद्रा (सरस्वती) ऋ. ७, ९६, ३; १०८०
 भद्रं कृणवत् (सरस्वती) ऋ. ७, ९६, ३; १०८०
 भिक्षमणे प्रसवम् (विपाट् शुतुद्री) ३, ३३, २; १०२३
 मधुमन्तः (सरस्वत्याः कर्मयः) ऋ. ७, ९६, ५; १०४७
 मयोभूः (सरस्वती स्तनः) ऋ. १, १६४, ४१; १०५४
 अ. ७, १०, १; १०८६
 मरुत्वती (सरस्वती) ऋ. २, ३०, ८; १०४५
 मरुत्सखा (सरस्वती) ऋ. ७, ९६, २; १०७९
 मरुद्वृधा (नदीविशेषः) ऋ. १०, ७५, ५; १०४०
 मातृतमा (शुतुद्री) ऋ. ३, ३३, ३; १०२४
 मेदत्तुः (सिन्धुसंगतानदी) ऋ. १०, ७५, ६; १०४१
 यती गिरिभ्यः आ समुद्रात् (सरस्वती) ऋ. ७, ९५, १;
 १०७४
 यमुना (नदीविशेषा) ऋ. १०, ७५, ५; १०४०
 याति रथ्या इव (सरस्वती) ऋ. ७, ९५, १; १०७३
 (युक्ता) युग्मेभिः- (सरस्वती) ऋ. ६, ६१, १३; १०७१
 (युक्ता) महिना महिना (सरस्वती) ऋ. ६, ६१, १३;
 १०७१
 युजा राया (सरस्वती) ७, ९५, ४; १०७५

सुकृते सुखं अधिनं रथम् (सिन्धुः) ऋ. १०, ७५, ९; १०४४
 सुकृते (सिन्धुः) ऋ. १०, ७५, ८; १०४३
 सुकृते (सरस्वती) अ. ७, ४०, २; १०५०
 सुकृते (सिन्धुधंगतानदी) ऋ. १०, ७५, ६; १०४१
 सुकृते (सरस्वती) अ. ७, ४०, २; १०५०
 सुकृते (सिन्धुः) ऋ. १०, ७५, ७; १०४२
 सुकृते एति (सिन्धुः) ऋ. १०, ७५, ३; १०३८
 सुकृते वरति (सरस्वतीः अमः) ऋ. ६, ६१, ८; १०६६
 सुकृते (नद्यः) ऋ. ३, ३३, १२; १०३३
 सुकृते पञ्चजाता (सरस्वती) ऋ. ६, ६१, १२; १०७०
 सुकृते मधुसूते (सिन्धुः) ऋ. १०, ७५, ८; १०४३
 सुकृते (सरस्वती) ऋ. ६, ६१, ६; १०६४
 सुकृते (सरस्वती) ऋ. ६, ६१, ३-४; १०६१-
 १०६२ । ७, ९६, ३; १०८० । २, ४, १८; १०५८ ।
 १, ३, १०; १०५१ । (सिन्धुः) ऋ. १०, ७५, ८; १०४३
 सुकृते (विपाद् शुतुद्रि) ऋ. ३, ३३, १३; १०३४
 सुकृते (नदीविशेषः) ऋ. १०, ७५, ५; १०४०
 सुकृते (नदीविशेषः) ऋ. ३, ३३, १; १०२२
 सुकृते (सरस्वती) ऋ. ७, ९६, ६; १०४८
 सुकृते (सरस्वती) ऋ. ६, ६१, ७; १०६५
 सुकृते (सरस्वती) ऋ. ७, ९५, ३; १०४५
 सुकृते (सरस्वती स्तनः) ऋ. १, १६४, ४९; १०५४
 सुकृते (सरस्वती स्तनः) अ. ७, १०, १; १०८६
 सुकृते (नद्यः) अ. ७, ५०, ४; १०३५
 सुकृते (सरस्वती) ऋ. ७, ९५, ३; १०४५
 सुकृते (सरस्वती) ऋ. ७, ९५, २; १०७४
 सुकृते (नदीविशेषः) ऋ. ३, ३३, १; १०२२ । १०, ७५,
 १ १०४०
 सुकृते (विपाद् शुतुद्रि) ऋ. ३, ३३, २; १०२३ ।
 सुकृते (सरस्वती) ऋ. ७, ९५, ६; १०७७ । ७, ९६, २;
 १०७९
 सुकृते (सरस्वती) अ. ७, ४०, २; १०५०
 सुकृते (सिन्धुधंगता) ऋ. १०, ७५, ६; १०४१
 सुकृते वसवि (विपाद् शुतुद्रि) ऋ. ३, ३३, ३; १०२४
 सुकृते समानं योनिं अनु (विपाद् शुतुद्रि) ऋ. ३, ३३,

सप्तधातुः (सरस्वती) ऋ. ६, ६१, १२; १०७०
 सप्तस्वसा (सरस्वती) ऋ. ६, ६१, १०; १०६८
 समुद्रः अ. ४, १५, ५; १००८ । ऋ. ३, ३३, २;
 १०२३ । ७, ९५, २; १०७४ । वा. य. २०, १९; ११०४
 समाराणे (विपाद् शुतुद्रि) ऋ. ३, ३३, २; १०२३
 सरण्युः (नदीविशेषः) ऋ. १०, १७, १-२, १०८१-८२
 सरस्वती (नदीविशेषः) ऋ. १०, ७५, ५; १०४० । १, ३,
 १०-१२; १०५१-५३ । १, १६४, ४९; १०५४ । २,
 ३०, ८; १०५५ । २, ४१, १६-१८; १०५६-५८ । ६,
 ६१, १-७, १०-११, १३-१४; १०५९-६५, १०६८-६९,
 १०७१-७२ । ७, ९५, १-२, ४-६; १०७३-७७ । ९६,
 १, ३; १०७८, १०८० । १०, १७, ७-९; १०८३-८५ ।
 अ. ७, १०, १; १०८६ । ५७, १; १०८८; ६८, १-३;
 १०३०-२२
 सरस्वान् ऋ. ७, ९६, ४-६; १०४६-४८ । अ. ७, ४०,
 १-२; १०४९-५०
 सिन्धुः ऋ. ३, ३३, ३, ५ (शुतुद्रि), ९ (नद्यः); १०२४,
 १०२६, १०३०
 सिन्धुः (समुद्रः) अ. ६, २४, १; ९७१ । ऋ. १०, ७५,
 १-४, ६-९; १०३६-३९, १०४१-४४ । (विशेषनाम)
 सिन्धुपत्नीः (नद्यः) अ. ६, २४, ३; ९७३
 सिन्धुराज्ञीः (नद्यः) अ. ६, २४, ३; ९७३
 सीलमावती (सिन्धुः) ऋ. १०, ७५, ८; १०४३
 सुकृता (सिन्धुः) ऋ. १०, ७५, ८; १०४३
 सुसुष्टा (सरस्वती) ऋ. ६, ६१, १०; १०६८
 सुदत्रः (सरस्वती स्तनः) ऋ. १, १६४, ४९; १०५४ ।
 अ. ७, १०, १; १०८६
 सुपाराः (नद्यः) ऋ. ३, ३३, ९; १०३०
 सुभगा (सिन्धुः) ऋ. १०, ७५, ८; १०४३ । (विपाद्)
 ऋ. ३, ३३, ३; १०२४
 सुभगा (सरस्वती) ऋ. ७, ९५, ४, ६; १०७५, १०७७
 सुमतीनां चेतन्ती (सरस्वती) ऋ. १, ३, २१; १०५२
 सुरथा (सिन्धुः) ऋ. १०, ७५, ८; १०४३
 सुराधाः (नद्यः) ऋ. ३, ३३, १२; १०३३
 सुवासाः (सिन्धुः) ऋ. १०, ७५, ८; १०४३
 सुसर्तुः (सिन्धुसङ्गता) ऋ. १०, ७५, ६; १०४१

(२२४)

देवता-संहिता

सुसोमा (नदीविशेषः) ऋ. १०, ७५, ५; १०४०
 सुहवः (सरस्वती स्तनः) अ. ७, १०, १; १०८६
 सूनृतानां चोदयित्री (सरस्वती) ऋ. १, ३, ११; १०५२
 स्तनः (सरस्वत्याः) ऋ. १, १६४, ४९; १०५४ । अ.
 ७, १०, १; १०८६
 स्तनयितुः (सरस्वत्याः) अ. ७, ११, १; १०८७

स्ताम्या (सरस्वती) ऋ. ६, ६१, १०; १०६८
 स्वश्वा (सिन्धुः) ऋ. १०, ७१, ८; १०४३
 स्वसारः (नद्यः) ऋ. ३, ३३, ९; १०३०
 हासमाने (विपाट शुतुदी) ऋ. ३, ३३, १; १०२२
 हिरण्ययी (सिन्धुः) ऋ. १०, ७५, ८; १०४३
 हिरण्यवर्तनिः (सरस्वती) ऋ. ६, ६१, ७; १०६५

(३) ' पर्जन्य ' देवताया गुणबोधकपदानि ।

अजगराः (मेघाः) अ. ४, १५, ९; १०१२
 असुरः ऋ. ५, ८३, ६; ९७९ । अ. ४, १५, १२; १०१५
 ईशः विश्वस्य जगतः ऋ. ७, १०१, २; ९८६
 उत्साः (मेघाः) अ. ४, १५, ९; १०१२
 ऊधः ऋ. ७, १०१, १; ९८५
 कनिकदत् ऋ. ५, ८३, १, ९; ९७४, ९८२
 कृणोति गर्भं ओषधीनाम् ऋ. ७, १०२, २; ९९२
 कृणोति गर्भं गवाम् ऋ. ७, १०२, २; ९९२
 कृणोति गर्भं परुषाणाम् ऋ. ७, १०२, २; ९९२
 कृण्वन् ओषधीनां गर्भम् ऋ. ७, १०१, १; ९८५
 कृण्वन् वत्सम् ऋ. ७, १०१, १; ९८५
 जीरदानुः ऋ. ५, ८३, १; ९७४
 दिवस्पुत्रः ऋ. ७, १०२, १; ९९१
 देवः ऋ. ७, १०१, २; ९८६
 निषिञ्चन् अपः ऋ. ५, ८३, ६; ९७९ । अ. ४, १५, १२; १०१५
 पर्जन्यः ऋ. ५, ८३, १-५, ९; ९७४-७८, ९८२ । ७,
 १०१, ५; ९८९ । १०२, १; ९९१
 पिता नः ऋ. ५, ८३, ६; ९७९ । अ. ४, १५, १२; १०१५

प्रच्युताः मरुद्भिः (मेघाः) अ. ४, १५, ७, ९; १०१०-११
 मधुदोषा (मेघः) ऋ. ७, १०१, १; ९८५
 मीढ्वान् ऋ. ७, १०२, १; ९९१
 मेघाः अ. ४, १५, ७-९; १०१०-१२
 यंसत् त्रिधातु शरणं शर्म ऋ. ७, १०१, २; ९८६
 रेतोधाः ऋ. ७, १०१, ६; ९९०
 वर्धनः अपाम् ऋ. ७, १०१, २; ९८६
 वर्धनः ओषधीनाम् ऋ. ७, १०१, २; ९८६
 वर्षम् (वृष्टिः) ऋ. ५, ८३, १०; ९८३ । अ. ७, १५, १४,
 ६, १०, १४-१५; १००५-७, १००९, १०१३, १०१७-१८
 वर्ष्यम् (वृष्टयोपेतम्) ऋ. ५, ८३, ३; ९७६
 वर्ष्याः (मेघः) ऋ. ५, ८३, ३; ९७६
 वृषभः ऋ. ५, ८३, १, ९७४ । ७, १०१, १, ६; ९८५, ९९०
 वृष्टिः-ष्टयः ऋ. ५, ८३, ६; ९७९ । ७, १०१, ५; ९८९
 सयोजातः ऋ. ७, १०१, १; ९८५
 सुदानवः (मेघाः) अ. ४, १५, ९; १०१२
 स्तनयन् ऋ. ५, ८३, २, ९; ९७५, ९८२
 स्वराट् ऋ. ७, १०१, ५; ९८९

(४) ' मण्डूक ' देवताया गुणबोधकपदानि ।

अजमायुः ऋ. ७, १०३, ६, १०; ९९९, १००३
 अमिवृष्टः ४; ९९७
 उशन् ३; ९९६
 कनिष्कन् ४; ९९७
 गुह्याः न ८; १००१
 गोमायुः ६, १०; ९९९, १००३
 चर्माः ९; १००२

धर्मिणः ऋ. ७, १०३, ८; १००१
 तप्ताः ९; १००२
 तृष्यावन्तः ३; ९९६
 नरः न ९; १००२
 पुरुत्रा वाचं वदन्तः ६; ९९९
 पृष्टिः ४, ६, १०; ९९७, ९९९, १००१
 पृष्टिबाहवः अ. ४, १५, १२; १०१५

क्र. ७,१०३; १७; ९९४,१०-०।
अ. ४,१५,१३; १०१६
क्र. ७,१०३,१-२,७,१०; ९९४-९५,१०००,
१००३। अ. ४,१५,१२-१३
१०१५-१६
अ. ४,१५,१४; १०१७
क्र. १७,१०३,३,७; ९९६,१०००

विरूपा: ७,१०३,६; ९९९
व्रतचारिण: १; ९९४। अ. ४,१५,१३; १०१६
शयान: २; ९९५
शशयान: संनत्सरम् १; ९९४। अ. ४,१५,१३; १०१६
समानं नाम बिभ्रत: ६; ९९९
सिध्दिदाना: ८; १००१
हरित: ४,६,१०; ९९७ ९९९,१००३

(५) ' आप: ' देवतान्तरसम्बन्धः ।

सत्त्वान् अम आ गाह । तं मा सं सृज वर्चसा । क्र. १,
१३,१; ८७०। १०,२,९; ८८७। अ. ७,८९,१;
९५९

अग्निः अप्सु अन्तः क्र. १,२३,२०; ८६७
अग्निः वा गर्भं दधिरे अ. १,२३,१-३; ९१६-१८

अग्निः वासु जातः अ. १,२३,१; ९१६

अग्निः वासु अग्निः प्रविष्टः क्र. ७,४९,४; ८७८

अग्निः वासु अग्निः प्रविष्टः क्र. ७,४९,४; ८७८

अग्निः वासु अग्निः प्रविष्टः क्र. ७,४९,४; ८७८

अग्निः वासु अग्निः प्रविष्टः क्र. ७,४९,४; ८७८

अग्निः वासु अग्निः प्रविष्टः क्र. ७,४९,४; ८७८

अग्निः वासु अग्निः प्रविष्टः क्र. ७,४९,४; ८७८

अग्निः वासु अग्निः प्रविष्टः क्र. ७,४९,४; ८७८

अग्निः वासु अग्निः प्रविष्टः क्र. ७,४९,४; ८७८

अग्निः वासु अग्निः प्रविष्टः क्र. ७,४९,४; ८७८

अग्निः वासु अग्निः प्रविष्टः क्र. ७,४९,४; ८७८

अग्निः वासु अग्निः प्रविष्टः क्र. ७,४९,४; ८७८

अग्निः वासु अग्निः प्रविष्टः क्र. ७,४९,४; ८७८

अग्निः वासु अग्निः प्रविष्टः क्र. ७,४९,४; ८७८

अग्निः वासु अग्निः प्रविष्टः क्र. ७,४९,४; ८७८

अग्निः वासु अग्निः प्रविष्टः क्र. ७,४९,४; ८७८

यामिर्मित्रावरुणावभ्यषिञ्चन् वा. य. १०,१; १०९३
मित्रावरुणयोः भागधेयी स्थ वा. य. ६,२४; ९५२
यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यावृते अ. १,२३,२; ९१७।
अवपश्यन्नानाम् क्र. ७,४९,३; ८७७
यासु राजा वरुणः (वर्तते) क्र. ७,४९,२; ८७८
विश्वे देवा यासूर्जं मदन्ति क्र. ७,४९,४; ८७८
विश्वेषां देवानां भागधेयी स्थ वा. य. ६,२४; ९५२
अपामुत प्रशस्तये । देवा भवत वाजिनः ॥ क्र. १,२३,
१९; ८६६

यासु जातः सविता अ. १,२३,१; ९१६
सूर्यः रश्मिभिर्याः (आपः) आततान क्र. ७,४९,४; ८७४
अमूः (आपः) याः उप सूर्यं क्र. १,२३,१७। ८६४।
याभिर्वा सूर्यः सह वा. य. ६,२४; ९५२
आपः पृणीत भेषजं ज्योक् च सूर्यं हृशे क्र. १,२३,२१;
८६८। १०,९,७; ८८५

यासु सोमः (वर्तते) क्र. ७,४९,४; ८७८
याभिः सोमः मोदते हर्षते च क्र. १०,३०,५; ९०५
अप्सु मे सोमोऽब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा क्र. १,२३,२०;
८६७

अग्निं च विश्वशंभुवं आपश्च विश्वभेषजीः क्र. १०,९,६;
८८४

तसूर्मिमापां मधुमत्तमं वोऽपां नपादवत्वाशुहेमा । क्र. ७,
४७,२; ८७२

अध्वर्यवाऽप इता समुद्रं अपां नपातं हविषा यजध्वम् । क्र.
१०,३०,३; ९०३

नि बर्हिषि धत्तन सोम्यासोऽपां नपत्रा संविदानास एनाः ।
क्र. १०,३०,१४; ९१४

अपां नपायो व ऊर्मिर्हविष्यः वा. य. ६,२७; ९५३

आयुर्वेद-मन्त्राणां वर्णानुक्रमसूची ।

अकर्म ते स्वपसो अभूम	२१०७	अग्ने सहस्वानभिरभूर्भोदमि	१२३४
अक्षजमीमदन्त ह्यव	२२११	अग्नेः शरीरमसि	५४
अक्षितास्त उपसदो	११२६	अग्नेः सान्तपनस्य	१५१
अक्षिति भूयसीम्	२१७७	अग्नेरिवास्य दहत एति	१७९
अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां	१६२, २१०, २९४	अग्नेरिवास्य दहतो दावस्य	६८३
अक्ष्यौ नि विध्य हृदयं	७४१	अग्नेर्घसो अपां गर्भो	३३१
अक्ष्यौ नौ मधुसंकाशे	५९१	अग्नेर्मन्वे प्रथमस्य प्रचेतसः	१६८५
अगन्म स्वः स्वर्गन्म	१९०४	अग्नेर्वर्म परि गोभिर्भयस्व	२०८२
अग्नये कव्यवाहनाय	२२२१	अग्नेर्वोऽपजगृहस्य सदसि	९५२
अग्निः पचन् रक्षतु त्वा	१२९५	अग्नेष्टे प्राणममृताद्	३९
अग्निः पूर्वं आ रभतां	७७०	अग्नौ तुषाना वप जानवेदसि	१२५७
अग्निः प्राणान्स् दधाति	१७३	अग्नेमघ्योषधीनां ज्योतिषा	३९८
अग्निः प्रातःसवने पावस्मान्	८८	अग्नेणीरसि स्वावंश	२१६९
अग्निः सूर्यश्चन्द्रमा भूमिरापो	१२८	अघद्विष्टा देवजाता	६६८
अग्निं ब्रूमी वनस्पतीन्	१७३४	अघमग्नत्वघकृते शपथः	१६२०
अग्निरिवैतु प्रतिकूलम्	१६०३	अघशंसदुःशंसाभ्यां	२१८
अग्निर्माग्निनावतु प्राणाय	५९७	अघाश्वस्येदं भेषजम्	८१७
अग्निर्होताध्वर्युष्टे बृहस्पतिः	२१६५	अङ्गभेदमङ्गज्वरं	२७३
अग्नेष्टे नि शमयतु	६८८	अङ्गभेदो अङ्गज्वरो	१०६
अग्निष्वात्ताः पितर एह गच्छत	१९९७, २१२७	अङ्गादङ्गात् प्र च्यावय	८३१
अग्निस्तकमानमप बाधतामितः	५३१	अङ्गादङ्गाल्लोमोलोमो	१६७
अग्नौ रक्षस्तपतु यद् विदेवं	१३१४	अङ्गिरसामयनं पूर्वो	२१५८
अग्नीषोमा पथिकृता स्योनं	२०७७	अङ्गिरसो नः पितरो न त्वा	२०२१
अग्ने अक्रव्याग्निः क्रव्यादं	२५८	अङ्गिरोमिरा गहि यज्ञियेभिः	१९७१
अग्ने चरुयज्ञियस्ताध्यरक्षतु	१२४४	अङ्गिरोभिर्यज्ञियैरा गहीह	२०२२
अग्नेऽजनिष्ठा महते वीर्याय	१२३१	अङ्गेअङ्गे लोमिलोमि	५१६, ३००
अग्ने जायस्वादितिनाथितेयं	१२२९	अङ्गेअङ्गे शोचिषा क्षिप्रियाणं	१८९
अग्ने तपस्तप्यामह उप	१९२२	अच्छा वद तवसं गीर्भिराभिः	२७४
अग्ने पृतनाषाट् पृतनाः	१५९८	अच्छा सिन्धु मातृतमा	१०२४
अग्ने समिधमाहर्ष	११५	अजं च पचत पञ्च	१२१३
		अजः पक्वः स्वर्गं लोके	१२००

अबल्लिनाके त्रिदिवे त्रिपृष्ठे	११२२	अध्वर्यवोऽप इता समुद्रं	९०३
अत्रा रोह सुकृतां यत्र लोकः	११९१	अध्वर्यवो हविष्मन्तो हि	९०२
अत्रैष्वाद्यामनाम च	६२९	अनदुद्भयस्त्वं प्रथमं	४०७
अत्रैष्वाद्यासनामाद्याभूम	१८४५	अनद्वहं पञ्चमन्वारभध्वं	२६४
अत्रो अमिरत्रमु ज्योतिराहुः	११८९	अनध्रयः खनमाना	९३०
अत्रो भागस्तपस्स्तं तपस्व	२०३२	अनयाहमोषध्या सर्वाः	६९२, १६१९
अत्रो वा इदमग्रे व्यक्रमत	१२०२	अनस्थाः पूताः पवनेन शुद्धाः	१२२२
अत्रोऽथ्यत्र स्वर्गोऽसि त्वया	११९८	अनागमिष्यतो वरानवितेः	१८१४
अत्रो ह्यनेरजनिष्ठ शोकाद्	११९५	अनागोहत्या वै भीमा कृत्ये	१६८४
अत्रते ध्वजते समञ्जते	२१०१	अनाप्ता ये वः प्रथमा	८०४
अत्रन्ति त्वामध्वरे देवयन्तो	२२५९	अनास्माकस्तद् देवपीयुः	१९१७
अत्रारिपुर्भरता गव्यवः	१०३३	अनु च्छय इयामेन त्वचमेतां	११८६
अत्रे द्वे श्वानौ सारमेयौ	२०३५	अनुजिघ्रं प्रमृशन्तं	१३७२
अत्रे विश्वाः परिष्ठाः	३१०	अनु त्वा हरिणो वृषा	१९३
अत्रिष्टो अपां वृषभो	१८०३	अनुपूर्ववत्सां धेनुम्	१२११
अत्र्ययौ अगो नान्यौ	३७०	अनुसूर्यमुदयतां	४८९
अत्रिवद् वः किमया हन्मि	७०५, ७११	अनुद्वतः पुनरेहि	१०४
अत्रैव वोऽपि नद्यामि	२३४३	अनेनेन्द्रो मणिना वृत्रमहन्	१४३३
अथवागो अबध्नत	१४९७	अन्तकाय मृत्यवे नमः	६
अथवा पूर्णं चमसं	२१३४	अन्त कोऽसि मृत्युरसि	१८३६, १८४३
अथोपदान भगवो	१५५८	अन्तरिक्षेण पतति	१५८८
अदन्ति त्वा पिपीलिका	८५८	अन्तर्दधे यावापृथिवी	१४३६
अदितिर्मादित्यैः प्रतीच्या दिशः	२११०	अन्तर्दावे जुहुता स्वेतद्	७३१
अदितेर्हस्तां सुचमेतां द्वितीयां	१२५२	अन्तर्देशा अबध्नत	१४२६
अदित्यै व्युन्दनमधि	२४१	अन्तर्धिर्देवानां परिधिः	२६०
अद्यत्न हन्त्यायति	७७५	अन्यक्षेत्रे न गमसे	५३९
अदो यत् ते हृदि ध्रितं	६८४	अन्यत्रास्मन्न्युच्यतु	१७७२
अदो यदवधावति	५६५	अन्यमू षु त्वं यम्यन्य	१२६७
अदो यदवरोचते	१२४	अन्या वो अन्यामवतु	३१४
अद्याने अद्य सवितः	२३३७	अन्येभ्यस्त्वा पुरुषेभ्यो	२३२
अद्याक्षं प्र हिणोमि	५३४	अन्यो अन्यमनुगृभ्णाम्येनोः	९९७
अथ स्वल्पस्य निर्विदं	६२३	अन्वाऽत्रयं शीर्षण्यमथो	६२४
अथा यथा नः पितरः	२१०४	अपक्रामं स्यन्दमाना	९२२
अथि नो मृतं पृतनासूत्रां	१७१९	अप क्राम नानदती	१६२९
अथि वृहि मा रमथाः	३३	अपक्रीताः सहीयसीः	४३४
अथि स्तन्द वीरयस्व	१३५३	अपचितः प्र पतत	५१३
अथोतीप्यगादयम्	८१	अपचितां लोहिनीनां	५०३

अपथेना जभारैणां	१६१३	अपेहि मनसरूपते	६२५
अप नः शोष्ठचदधममे	१७५७	अपेह्यरिरस्यरिर्वा अलि	८४५
अपः पिन्वौषधीर्जैन्व	११०२	अपो अद्यान्वचारिषः	११०६
अपमृज्य यातुधानान्	३९५	अपो दिव्या अचायिषं	९५१
अपरिमितमेव यज्ञमाप्रति	१२०४	अपो देवा मधुमतीः	१०९३
अपवासे नक्षत्राणाम्	१९८	अपो देवीरुपसृज	१०९९
अपश्यं युवतिं नीयमानां	२०८६	अपो देवीरुप हृये	८६५
अपश्यं त्वा मनसा चेकितानं	२२४३	अपो निषिञ्चन्नसुरः	१०१५
अपश्यं त्वा मनसा दीध्यानां	२२४५	अप्रज स्वं मार्तवत्समात्	१३९९
अप हत रक्षसो भङ्गुरावतः	२२८८	अप्सु ते जन्म दिवि ते	१५९०
अपां रसः प्रथमजोऽथो	१३३६	अप्सु ते राजन् वरुण	१६३६
अपागूहन्नमृतां मर्त्येभ्यः	१०८२, २०५७	अप्सु मे सोमो अत्रवीद्	८६७, ८८४
अपानाय व्यानाय	६४	अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजम्	८६६, १६३
अपां तेजो ज्योतिरोजो बलं	६१	अभयं मित्रावरुणाविहास्तु	७३३
अपामभिस्तनूभिः संविदानो	१०१३	अभि क्रन्द स्तनयं गर्भमा	९८०
अपामग्रमसि समुद्रं वो	१८०८	असि क्रन्द स्तनयादयोदधिं	१००९
अपमह दिव्यानाम्	९३१	असि तेऽधां सहमानाम्	३६२
अपामार्गं ओषधीनां	३८७	असि त्वा जरिमाहित	७९
अपामार्गोऽप मार्ष्टु	३९४	असि त्वा मनुजांतन	१२६९
अपामूर्जं भोजसो वायुधानं	५९४	असि त्वा सिन्धो जिशुमित्र	१०३९
अपां मा पाने यतमो ददन्म	७५५	आभि त्वोर्णोमि पृथिव्या	२०७६
अपावृत्य गार्हपत्यात्	२५०	अभिभूरहमागमं	२३४४
अपूपवानन्नवान्	२१७१	अमीशुना मेघा आमन्	४६४
अपूपवानपवान्	२१७८	अभूद् दूतः प्रहितो जातवेदाः	२२१५
अपूपवान् क्षीरवान्	२१६६	अभ्यक्ताक्ता स्वरंकृता	१६४०
अपूपवान् घृतवान्	२१६९	अभ्यजनं सुरभि सा समृद्धिः	९५८
अपूपवान् दधिवान्	२१६७	अभ्यावर्तस्व पशुभिः सहैतां	१२५०
अपूपवान् द्रव्यवान्	२१६८	अमा कृत्वा पाप्मानं	३९०
अपूपवान् मधुमान्	२१७२	अभासि मात्रां स्वरगाम्	२०६९
अपूपवान् मौसवान्	२१७०	अमुकथा यक्षमाद् दुरितादवद्यात्	१६६७
अपूपवान् रसवान्	२१७३	अमुत्रभूयादधि यद्यमस्य	१४३
अपूपापिहितान् कुम्भान्	२१४५, २१७५	अमृन् हेतिः पतत्रिणी	१५८५
अपेन वीत वि च सर्पतातो	१९७५	अमृ ये दिवि सुभगे	१९५
अपेतो वातो सविता च	१७०२	अमूर्या उप सूर्ये याभिः	८६४
अपेमं जीवा अरुघन्	२०५१	अमूर्या यन्ति याषितो	५५५
अपेमां मात्रां मिमीमहे	२०६४	अमोतं वासो दद्यात्	११९६
अपेयं राज्यच्छवपो०	४९४	अम्बयो यन्त्यध्वभिः	८३३

६२५	अश्विमे नदीतमे	१०५६	अरायमसृक् पावानं	४१८
८५५	अथ यो असिशोचयिष्णुः	१८१	अगायान् ब्रूमो रक्षांसि	१७४९
११०६	अथ यो भूरिमूलः	६४०	अरायि काणे विकटे	२३३७
९५१	अथ यो वक्रो विरु०	८५५	अरावीदंशुः सचमानः	१४०४
१०९३	अथ यो विधान् हरितान्	५३२	अरिप्रा आपो अप	१८१२
१०९९	अथ लोकः धियतमो	११४	अरिष्टोऽहमरिष्टगुः	१४६१
८६५	अथ विद्वन्धं सहते	६८	अरुहणमिदं महत्	५६९
१०१५	अथ स्तुवान् आगमद्	७२८	अर्थेत् स्थ राष्ट्र राष्ट्रं	१०९५
१३१२	अथ साक्थो मणिः	१४३४	अलसालासि पूर्वा	४६२
१५९०	अथ प्राजा पृथुबुधो वयोधाः	१२८५	अलग्णून् हन्मि महता	६९३
१६०६	अथ जीवतु मा सृत्	३१	अवकादानमिशोचानप्सु	७२४
६७, ८८४	अथ शिषो हतवर्चा भवति	२५३	अवकोल्वा उदकात्मान	३३२
६६, २३३	अथ ते कुर्यां विततां	१४५६	अव जहि यातुधानान्	१५९२
७३३	अथ दमो विमन्युकः	६३९	अवपतन्तीरवदन्	३१७
९८०	अथ देवा इहैवास्तु	६३	अव मा पाप्मन्तसृज	१७७०
१००९	अथ देवानामसुरो वि राजति	१६५४	अवर्षावर्षमुदु पू गुभाय	९८३
३६९	अथमसिरुपस्य इह	१०८	अवशसा निःशसा यत्	६३१
७९	अथिद् वै प्रतीवर्त	१४४६	अव श्वेत पदा जहि	८१०
११६९	अथमु ते सरस्वति वसिष्ठो	१०७७	अव सृज पुनरमे पितृभ्यो	२०३४
१०३९	अथमोदुम्बरो मणिः	१५५०	अविः कृष्णा भागधेयं	२६९
२०७१	अथ पत्न्याः कृत्येति त्वा	१६३०	अवैरहस्यायेदमा पपत्यात्	१५८७
२३४४	अथ प्रतिसरो मणिः	१४३१	अदमन्वती रीयते सं रभध्वं	२४२
४६४	अथ मणिनेरणो विश्वभेषजः	१४५५	अश्रेष्माणो आधारयन्	१७३८
२२१५	अथ मणिः सपत्नहा सुवीरः	१४३२	अश्वत्ये वो निषदनं	३०५, ३५८
१६४०	अथ मे वरण उरसि	१४६३	अश्वत्यो दमो वीरधां	३४३
९५८	अथ मे वरणो मणिः	१४५३	अश्वत्यो देवसदनः	४१०, ४३२, ४५२
१२५०	अथ मे हस्तो भगवान्	५५३	अश्वस्याश्वतरस्याजस्य	१३३९
३९०	अथस्ये दुपदे बधिष इह	१७२३	अश्वस्यास्त्रः संपतिता सा	४३६
२०६९	अथोजाला असुरा मायिनो	७६६	अश्वाः कणा गावः	११३१
१६६७	अथुयो निमज्ज	८११	अश्वावती प्र तर या	२०५१
१४३	अथे कृत्रिम नादम्	१५५३	अश्वावती सोमावती	३०७
१५८५	अथे प्राच्यं विषम्	७९२	अश्वो घृतेन त्मन्या समन्त	३७८
१९५	अथस्त इया शल्यो	७९५	अष्ट च मेऽशीतिश्च मे	६६०
८६४	अथस्य वा भेटस्य	८५६	असद् भूम्याः समभवद्	४०१
५५५	अथास इशहयो	८१६	असंतापं मे हृदयमुर्वी	१८२७
११९६	अत्तीयोप्रातृव्यस्य	१४७८	असंतापे सुतपसौ हुवे	१७०८
८३१	अथारवा निष्ठत्या	१४५९	असन्मन्त्राद् दुःष्वप्याद्	५८५

(२३०)

असपत्नं ना अधराद्	१४४७	आज्यस्थ परमेष्ठिन्	७६८
असंवाधे पृथिव्या उरौ	२०४४	आञ्जनं पृथिव्यां जातं	६०४
असितं ते प्रलयनम्	५११	आ ते कारो शृणवामा	१०३१
असितस्थ तैमातस्थ	८३९	आ ते प्राणं सुवामसि	१४८
असुराणां दुहितासि	८०७	आत्मानं पितरं पुत्रं	१२१९
असुगस्त्वा न्यखनन् देवाः	४१५	आ त्वागमं शंतातिभिः	५५१
असृतिका रामायणी	५१५	आ त्वाग्न इधीमहि	२२३८
असौ यो अधराद् गृहः	१६५०	आ त्वा चृतत्वर्थमा	१३८
असौ हा इह ते मनः	२२१६	आदङ्गा कुविदङ्गा	५६६
अस्थाद् द्यौरस्थाद् पृथिवी	५५९	आदिन् पश्यामुत वा	९२५
अस्थिजस्थ किलासस्थ	५२०	आदित्या रुद्रा वसवः	१७०६, २२६६
अस्थिभ्यस्ते मज्जभ्यः	२१५, २९९	आदित्येभ्यो अङ्गिरोभ्यो	१३१५
अस्थिस्संसं परस्संसम्	४८३	आ नयैतमा रभस्व	११८३
अस्मिन्निन्द्रो नि दधातु	१४५१	आ निवर्तन वर्तय	९००
अस्मिन् मणावेकशतं	१५७६	आ निवर्त नि वर्तय	८९८
अस्मिन् वयं संकसुके	२२९	आनृत्यतः शिखण्डिनो	७२१
अस्मै क्षत्राणि धारयन्तम्	१६८१	आ नो भर मा परि छा	१७७७
अस्मै मणिं वर्म बध्नन्तु	१४४०	आन्त्राणि जत्रवो गुदा	११३६
अस्मै सृत्यो अधि ब्रूहि	३४	आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो	१६४, २१३, २९७
अस्य प्रजावती गृहे	२२४३	आप इद् वा उ भेषजीः	१९६, २०१
अस्येन्द्र कुमारस्य	६९७	आपः पृणीत भेषजं	८६८, ८८५
अस्त्रामस्त्वा हविषा यजामि	१६६०	आपप्रुषी पार्थिवाणि	१०६९
अहमस्मि सपत्नहेन्द्रे	२३४२	आ पर्जन्यस्य वृष्ट्यो०	१७८
अहमस्मि सहमानाथो	३६८	आ पश्यति प्रति पश्यति	७५४
अहं पचाम्यहं ददामि	१३१८	आपस्सुत्रासो अग्निं सं	१२७५
अहं पशूनामधिपा असानि	१५४२	आपो अग्निं प्र हिणुत	२१९०
अहा अरातिमविदः स्योनम्	१६६८	आपो अभं दिव्या	३२६
अहीनां सर्वेषां विषं	८९७	आपो अद्यान्वचारिषं	८७०, ८८७
अहोरात्रं अन्वेषि बिभ्रत्	२६५	आपो अस्मान् मातरः	८८८, १७८८
अहोरात्रं इदं ब्रूमः	१७३८	आपो देवीः प्रतिगृष्णीत	११००
अहं च त्वा रात्रये च	४६	आपो देवीः स्वदन्तु	९४६
आक्ष्वैकं मणिमेकं कृष्णध्व	५९६	आपो भद्रा घृतमिदाप	९४४
आगादुदगादयं	८१	आपो यं वः प्रथमं देवयन्ते	८७१
आगमन्नाप उशतीर्बहिरेदं	९१५	आपो रेवतीः क्षयथा हि	९११
आ धा ता गच्छानुत्तरा	१९६३	आपो विद्युदध्रं वर्षं सं वो	१०११
आच्छाद्विधानैर्गुपितो	४७३	आपो हि छा मयोभुवः	८७९
आच्या जानु दक्षिणतो	१९९२, २०१७	आ प्र च्यवेधामप तन्मृजेथां	२१९९

७६८	आ प्रपञ्चं दाशुषे दाश्वंसं	१०५०	आशृण्वन्तं यवं देवं	११२५
६०४	अबयो अनाबयो रसः	४६६	आसीनासो अरुणीनाम्	१९९३, २१२६
१०३१	आ मासद् देवमणिः	१४५०	आसुरी चक्रे प्रथमेदं	५२२
१४८	आ मे धनं सरस्वती	१५४६	आ सुखसः सुखसो	५०७
१२१२	आमे सुपके शबले विपके	७४३	आसो बलासो भवतु	२८१
५५१	आपत्री वाजसातमा	२२८२	आहं तनोमि ते पसो	१३३८, १३४५
२२३८	आ वन्ति दिवः पृथिवीं	१२९७	आहं पितृन्सुविदत्रां	१९८९, २०११
१३८	आपमगन् युवा भिषक्	८२२	आहार्षमविदं त्वा	५५, २०९
५६६	आ वात पितरः शोभ्यासो	२२१२		
९२५	आयुस्मै धेहि जातवेदः	९२	इत एत उदारुहन्	२०२४
१, २२६६	आयुर्देवं विपश्चितं	५६४	इतश्च मामुतश्चावतां	२१२१
१३१५	आयुर्देवं अमे जरसं वृणानो	२३३१	इदं यत् कृष्णः शकुनि०	१७३२, १७३३
११८३	आयुर्देव ते अतिहितं पराचैः	१४५	इदं यमस्य सादनं	१९८६
९००	आयुर्विश्वायुः परि पातु त्वा	२०७९	इदं व आपो हृदयमयं	९२६
८९८	आयुषोऽसि प्रहरणं	६०२	इदं वचः पर्जन्याय स्वराजे	९८९
७२१	अनुभूतामायुष्कृतां	१७५	इदं विद्वानाञ्जन सत्यं	५८६
१७७७	अनुर्ध्वं वर्चस्य राय०	२३२८	इदं हविर्यातुधानान्	७२७
११३६	अनुषेव क्षमति पञ्चो	२१०६	इदं हिरण्यं बिभृहि	२२०६
१३, २९७	आ रसस्व जातवेदः	७७२, २१४८	इदं कसाम्बु चयनेन चितं	२१८७
२६, २०१	आ रसस्वेमाममृतस्य	२७	इदं त एकं पर ऊ त एकं	२०९०
६८, ८८५	आ दाराति निर्कृतिं परो	३८	इदं तमति सृजामि	१८०६
१०६९	अमे अमृद् विपमरौद्	८३३	इदं तृतीयं सवनं कवीनाम्	९०
१७८	आ रोहत जनिर्वा जातवेदसः	२१५१	इदं ते व्यं घृतवत्	२०९१
७५४	आ रोहत दिवमुत्तमाम्	२१४२	इदमहं रक्षसां ग्रीवा	७५३
१२७५	आ रोहतायुर्वरसं वृणाना	२४०	इदमहं तप्तं वार्षाधिर्धा	९४५
२१९०	आ रोहते नि दध ओदन	१२६१	इदमहमायुष्यायणेऽमुष्याः	१८६३
३२६	अस्ति च विलिगी च	८४०	इदमापः प्र बहत	८६२, ८८६
७०, ८८७	आ व ऋजस ऊर्जा व्युष्टिषु	२२८५	इदमापः प्रवदतावयं	९५०, ९६१
८८, १७८८	आ वरत आवतः	९८	इदमिदमेवाय रूपं	१२०६
११००	आ वरततीरध नु द्विधारा	१९०	इदमिद् वा उ नापरं	२०७४, २०७५
९४६	आ वात वाहि भेषजं	५५०	इदमिद् वा उ भेषजम्	८३०
९२४	आ वानेक्युप्य रूपानि	७५८	इदं पितृभ्यः प्र भरामि	२२०१
८७१	आ वानेक्युप्य श्रमिहि	१४३	इदं पितृभ्यो नमो अस्त्वय	१९८८, २०१२
९११	आ वानेक्युप्य विद्यारोके	१५६०	इदं पूर्वमपरं नियानं	२१९४
१०११	आ वानेक्युप्य विद्यारोके	१६५८	इदं पैद्वो अजायत	८१४
८७९	आ वानेक्युप्य विद्यारोके	१०११	इदं प्रापमुत्तमं काण्डम्	१३१६
२१९१	आ वानेक्युप्य विद्यारोके	९३	इदं मे ज्योतिरमृतं हिरण्यं	१२५६

इध्मेन त्वा जातवेदः	११६	इमा आपः शमु मे सन्तु	१४३
इन्द्र लक्ष्मामदान्यस्मिन्	११३९	इमां खनाम्योषधि	१६३
इन्द्र एतां सद्यजे विद्धो	९७	इमा जुहाना युष्मदा नमोसिः	१०७६
इन्द्र जीव सूर्य जीव	१५६	इमा नारीरविधवाः सुपत्नीः	११७६
इन्द्रस्य कुक्षिरसि सोमधान	१३६६	इमा ब्रह्म सरस्वति	१०५८
इन्द्रस्य त्वा वर्मणा परि	१५७५	इमा मात्रां सिमीमहे	१०६२
इन्द्रस्य नाम गृह्णन्त	१५६१	इमा या देवीः प्रदिशश्चतस्रो	१६६५
इन्द्रस्य प्रथमो रथो देवानाम्	८०८	इमा यास्तिस्रः पृथिवी	४५७
इन्द्रस्य मन्महे शश्वदिदस्य	१६९२	इमास्तिस्रो देवपुराः	१३६
इन्द्रस्य या मही हवत्	६९१	इमे जीवा वि मृतेराववृत्रन	१३८
इन्द्रस्य व इन्द्रियेण	१८११	इमौ युनजिम ते बह्वी	१०८०
इन्द्रस्य वचसा वयं	१८३	इयं वीरुन्मधुजाता	४७८. ८५३
इन्द्राय भागं परि त्वा	११८४	इयं शुष्मेभिर्विसखा इव	१०६०
इन्द्रावरुणा मधुमत्तमस्य	११२३	इयत्तकः कुषुम्भकः	७८८
इन्द्रावरुणा सुनपाविमं सुतं	११२५	इयत्तिका शकुन्तिका	७८४
इन्द्रेण दत्तो वरुणेन शिष्टो	९४	इयं ते धीतिरिदमु ते जनित्रं	११३९
इन्द्रेषिते प्रषवं भिक्षमाणे	१०२३	इयं नारी पतिलोकं वृणाना	२०८५
इन्द्रो अस्मौ अरदद्	१०६७	इयमददाद् रभसमृणच्युतं	१०५९
इन्द्रो जघान प्रथमं	८२५	इयमन्तर्वेदति जिह्वा	११३
इन्द्रो मा मरुत्वान् प्राच्या	२१०८	इयमेव पृथिवी कुम्भी भवति	११३७
इन्द्रो मेन्द्रियेणावतु	५९८	इयं मही पति गृह्णतु	११३६
इन्द्रो मेऽहिमरन्धयत्	८२३ ८२४	इषोकां जरतीमिध्रु	१७०
इन्द्रो युनक्तु बहुधा वीर्याणि	१९४५	इष्कृतिर्नाम वो माता	३०९
इमं यम प्रस्तरमा	१९७१, २०२३	इष्वा ऋजीयः पततु	१६०२
इमं यवमष्टायैः	१९९	इह तेऽसुरिह प्राण	८
इमं होमा यज्ञमवतेमं	२२४७	इहा यन्तु प्रचेतसो	३३०
इमं कथ्यादा विवेशायं	२५९	इद्वैधि पुरुष सर्वेण	१०३
इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि	२३९	इद्वैव गाव एतनेहो	२३१३
इममस्य आयुषे वर्चसे जय	५	इद्वैव स्तं प्राणापानौ	७७
इममादित्या वसुना समुक्षत	१३०	इद्वैवाभि वि तनूमे	१४१७
इममिन्द्रं वह्निं पप्रिमनु	२६३	इद्वैवैधि धनसनिः	१८८
इममोदन् नि दधे ब्राह्मणेषु	१२२८	ईजानश्चितमारुक्षद्	२१६४
इमं बभ्रामि ते मणिं	१५१३	ईजानानां सुकृतां लोकम्	११९४
इमं विभर्मि वरणम्	१४६४	ईष्याया धाजिं प्रथमां	६८१
इमं मे अग्ने पुरुषं मुमुग्ध्ययं	६८७	ईशानां त्वा भेषजानाम्	३८०
इमं मे कुष्ठं पुरुषं	४४२	ईशाना वार्याणां क्षयन्तीः	८८१
इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति	१०४०		

१४३	उप इद ते वनस्पते	१५५९	उदगातां भगवती	४९३
३६३	आ इद प्रवहन्तः	२२९८	उदगादयमादित्यो	५४७
१०७३	अक्षुषा ओषधीनां	३०८	उदग्रभं परिपाणाद्	७६१
१९७६	अक्षुषीषधीनां सार	१३३५	उदङ् जातो हिमवतः	४४४
१०५८	अक्षुष्यस्व बहुर्भव स्वेन	११२४	उदन्वती द्यौरवमा	२०७२
२०६२	अक्षुष्यस्व वनस्पते	२२६१	उदपप्तदसौ सूर्यः	७८२
१६६५	अक्षुष्यमाना पृथिवी सु	१९५१	उदपूरसि मधुपूरसि	२१२०
४५७	अक्षुष्यस्व पृथिवि मा	१९५०	उदग्रुतो मरुतस्तौ इयते	९६७
१३६	अग्निदीधे स्तनयति	३४४	उदरात् ते क्लोत्रो नाभ्या	३८३
२३८	अ देवा अवहितं	५४८	उदहमायुरायुषे क्रवे	२०४७
२०८०	अ नमा बोधुवती	१७८४	उदायुषा समायुषा	१७७
७८. ८५३	अ नः प्रिया प्रियासु	१०६८	उदिमां मात्रां मिमीमहे	२०६७
१०६०	अ स ते वनस्पते	२२८१	उदीचीनैः पथिमिर्वायुमद्भिः	२४५
७८८	अ स नः सरस्वती	१०६५, १०७५	उदीच्यां त्वा दिशि पुरा	२११६
७८४	अ हन्ति पूर्वासिनं	१६४२	उदीच्यै त्वा दिशे सोमाय	१३२९
११३९	असि परिपाणं	५८२	उदीरतामवर उत् परासः	१९८७, २०१०
२०८५	अस्व प्रवीरुत संमितासः	१२९८	उदीरयत मरुतः समुद्रतः	१००८
१०५९	ओ अस्वबन्धुकुतो	३९६	उदीर्ष्व नार्यभि जीवलोकं	१९४७
११३	ओ ज्ञायातः परि चेद्	११८८	उदुत्तमं वरुण पाशम्	१६७८, २२१९
११३७	ओ ज्ञायातः पुरुष माव	९	उदुषा उदु सूर्य उदिदं	१३३३
११३६	जगो अस्वोपधीनाम्	४५०, १४४१	उदेणीव वारण्यमिस्कन्दं	१६०१
२७०	जगो नाम कुष्ठसि	४४५	उदेनं भगो अग्रभीद्	७
३०९	जगं द्विषतो मामयं	१५०८	उदेहि वेदिं प्रजया वर्धय	१२४९
१६०२	जगं राष्ट्रं प्रजयोत्तरावद्	१२८१	उद्यजय मित्रमह	५४५
८	जगद्भुत्तर उत्तरेद्	३६७	उद्यज्ञादित्यः किमीन् हन्तु	७०९
३३०	जगर्णे सुमने	३६५	उद्यानं ते पुरुष नावयानं	११
१०३	जगिषता प्र तरता सखायो	२४३	उद्योधन्त्यभि वल्गन्ति तप्ताः	१३००
२३२३	जगिषेहि प्र द्रवौकः	२०९१	उद् व ऊर्मिः शम्या हन्तु	१०३४
७७	जगिषु ब्रह्मणस्पते	१५४	उद्वयं तमसस्पति रोहन्तो	१४९
१४१७	जगते स्तत्रामि पृथिवी	१९५२, २१३३	उद्वर्षिणं मुनिकेशं	१३८३
२८८	जगत्ता द्यौरत् पृथिवी	२२	उन्मुञ्चन्तीर्विवरुणा	३३३
२१६४	जगत्ता पृथोरपीपरं	२४	उन्मुञ्च पाशास्त्वमत्र एषां	१६७१
१११४	जगत्ता बहन्तु मरुतः	२०४६	उपजीका उद् भरन्ति	५६८
६८१	जगत्ता द्यौर् पञ्चशलाद्	३५१	उपजीवा स्थोप जीव्यासं	२३४
३८०	जगत्ता सीदतौ बुध एनान्	१३०१	उप तेऽधां सहमानाम्	२३४०
८८१	जगत्ता सुस्ताव सूर्य एति	७०१, ७८१	उप यामुप वेतसमवत्तरो	२०८८
	जगत्ता दिव एति	५६२	उप द्रव पयसा गोधु गोषमा	१९१८
	३० दै. [आयुर्वेद०]			

(२३४)

उप नः पितृवा चर	१११०
उपप्रवद मण्डकि वर्षमा	१०१७
उप प्रागात् सहस्राक्षो	१७७३
उप प्रागाद् देवो अग्नी	७३४
उप प्रियं पनिप्रतं	१४१
उप मौदुम्बरो मणिः	१५४३
उप श्रेष्ठा न आशिषो	१७०५
उपश्वसे द्रुवये सीदता यूयं	१२४०
उप सर्प मातरं भूमिम्	१९४९, २१३२
उप स्तृणीहि प्रथय पुरस्ताद्	१३०८
उपहृता नः पितरः सोम्यासो	२१२८
उपहृताः पितरः सोम्यासो	१९९१
उपहृतो मे गोपा	१८१८
उपहृतो वाचस्पतिः	१४१८
उपहृतौ सयुजौ स्योनी	१६१
उप ह्वये सुदुधां धेनुमेतां	१९१९
उपावसृज तन्म्या समञ्जन्	३७९
उपास्तरीरकरो लोकम्	१३०९
उपास्मान् प्राणो ह्ययताम्	२२५०
उपाहृतमनुबुद्धं निष्ठातं	१६३४
उभयोरग्रभं नामास्मा	२०४
उभे नभसी उभयांश्च	१२७७
उभे यत् ते महिना	१०७९
उरुगूलाया दुहिता	८४१
उरुः प्रथस्व महता	१२४७
उरुणसावसृत्पावुदुम्बलौ	२०३७
उर्वश्च मा चमसश्च मा	१८२४
उशान्ति धा ते अमृतासः	१९५६
उषस्पतिर्वाचस्पतिना	१८५०
उषा देवी वाचा संविदाना	१८४२
उषो यस्माद् दुष्वप्याद्	१८४६
ऊरुभ्यां ते अग्नीवद्भ्यां	१६५, २१४, २९८
ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं	९४२
ऊर्जमस्मा ऊर्जस्वती	९५
ऊर्जो भागो निहितो यः	१२४३
ऊर्जो भागो य इमं जजाना	२२०४

ऊर्ध्व ऊ पु ण ऊतये	२२५७
ऊर्ध्वस्तिष्ठतु रक्षत्रप्रमादम्	१५७३
ऊर्ध्वायां त्वा दिशि पुरा	२११८
ऊर्ध्वायै त्वा दिशे बृहस्पतये	१३३१
ऊर्ध्वो नः पाह्यहसो नि	२२५८
ऊर्ध्वोरोजो जङ्घयोर्जवः	१५८
ऋचा कपोतं नुदत	१५८२
ऋचा कुम्भीमध्यग्नौ	११८७
ऋचा कुम्भ्यधिहिता	११४०
ऋजीत्येनी रुशती महित्वा	१०४२
ऋणाहणमिव संनयन्	५९२
ऋतं हस्तावनेजनं	११३९
ऋतवः पक्तार आर्तवाः	११४३
ऋतवस्तमवधृत	११४५
ऋतस्य पन्थामनु पश्य	२१५३
ऋतस्यर्तेनादित्या	१७९५
ऋतुमिष्ट्वार्तवैरायुषे	१३९
ऋतून् ब्रूम ऋतुपतीन्	१७५०
ऋतेन तद्या मनसा	१२५१
ऋषभं मा समानानां	२३४१
ऋषीणां प्रस्तरोऽसि	१८११
ऋषी बोधप्रतीबोधा	१०७
एकपाद् भूयो द्विपदो	२३१८
एकशतं विष्कन्धानि	१८०१
एका च मे दश च मे	६५३
एकाचेतत् सरस्वती नदीनां	१०७४
एको वो देवोऽप्यतिष्ठत्	९२३
एजदेजदजग्रभं चक्षुः	६१६
एत उ त्ये प्रत्यदृश्रन्	७७८
एतत् ते तत स्वधा	२२१७
एतत् ते ततामह स्वधा	२२२६
एतत् ते देवः सविता	२१८१
एतत् ते प्रततामह स्वधा	२२२५
एतत् त्वा वासः प्रथमं	२०८१
एतदा रोह वय उन्मृजानः	२१५०
एत देवा दक्षिणतः	१७५१

२२५७	एतद्दि शृणु मे वचो	१६४३	ओता आपः कर्मण्या	९६२
१५७३	एतद् वचो जरितर्मापि	१०२२	ओते मे यावापृथिवी	६९६
२११८	एतद् वै ब्रह्मस्य विष्टपं	११७६	ओदन एवौदनं	११५७
१३३१	एतद् वो ज्योतिः पितरः	११९३	ओदनेन यज्ञवचः	११४५
२२५८	एतमिधं समाहितं जुषाणो	१५१२	ओष दर्म सपत्नान् मे	१५२९
१५८	एतस्माद् वा ओदनाद्	११७८	ओषधयः प्रतिगृम्णीत	३५७
१५८९	एतास्ते अग्ने समिधः	११८, ७५१	ओषधयः प्रतिमोदध्वं	३५६
११८७	एतास्ते असौ धेनवः	२१८३	ओषधयः सं वदन्ते	३२२
११४०	एतास्त्वजोप यन्तु धाराः	११९७	ओषधीः प्रति मोदध्वं	३०३
१०४२	एते नरः स्वपसो अभूतन	२२९२	ओषधीनामहं वृण	८२८
५९२	एते वदन्ति शतवत्	२२९४	ओषधीरिति मातरः	३०४
११३९	एते वदन्त्यविदन्नना मधु	२२९५	ओषधे त्रायस्व स्वधिते	३५५
११४३	एतौ प्रावाणौ सयुजा	१२३७	ओ पु स्वसारः कारवे	१०३०
११४३	एदं बर्हिंसदो मेधयोऽभूः	२२०२	औदुम्बरेण मणिना	१५३७
११४९५	एयोऽस्येधिषीमहि समिदसि	११०७	कः कुमारमजनयद्	१९८४
२१५३	एयोऽस्येधिषीय समिदसि	९६२	कङ्कतो न कङ्कतो	७७४
१७९५	एना वयं पयसा पिन्वमाना	१०२५	कण्वः कक्षीवान् पुरुमीढो	२०९८
१३९	एनोर्धना हरिणीः श्येनीः	२१८४	कन्नु फलीकरणाः	११३२
१७५०	एन्येहा श्येन्येका कृष्णैका	५१४	करम्भ ओषधे भव	१११७
२२५१	एना अपुयैषितः शुम्भमाना	१२४२	करम्भं कृत्वा तिर्य	८००
२३४१	एना अगमन् रेवतीः	९१४	करीषिणीं फलवतीं	१५३९
१८११	एवमपलोषधीनां	७२०	कर्णाभ्यां ते कङ्कषेभ्यः	२७३
१०७	एवमगन् दक्षिणा भद्रतो	२२००	कर्णां श्वावित् तदब्रवीद्	८४२
२३१८	एवमगन् बर्हिषा प्रोक्षणीभिः	१९४१	कर्शफस्य विशफस्य	१७९७
१८०९	एवमेवाव सा गारत्	१८५९	कश्यपस्त्वामसृजत	१४४४
६५३	एवैवै युवतयो नमन्त	९०६	कश्यपस्य चक्षुरसि	७६०
१०७४	एवो ध्वस्मन्निर्कृतोऽनेहा	१७९२	कस्ये मृजाना अति	२१००
९१३	एव यज्ञानां विततो	१२२५	किं भ्रातासद् यदनाथं	१९६४
६१६	एव त्वचां पुरुषे सं बभूव	१३२२	किलासं च पलितं च	५१८
७७८	एविव जीवं त्रायमाणं	५८०	कुम्भीका दूषीकाः	१८५२
२२२७	एवमानमा तिष्ठारमा	२३३४	कुपुम्भकस्तदब्रवीद्	७८९
२२२६	एतु देवत्वायमाणः	४४७	कृणुत धूमं वृषणः	१२३०
२१८१	एतु प्राण एतु मनः	११०	कृणोमि ते प्राणापानौ	३७
२२२५	एतन्मं वर्म बहुलं	१४४९	कृतव्यधनि विध्य तं	१५९९
२०८१	योदो अस्य मूजवन्त	५३५	कृत्याकृतं वलगिनं	१६१५
२१५०	यो चित् सखायं सह्या	१९५४	कृत्याकृतो वलगिनो	१६४६
१७५१	*			

कृत्यादूषण एवायमथो	१५५४
कृत्यादूषिरण्यं मणिः	७१
कृत्याः सन्तु कृत्याकृते	१५९५
कुन्तं दर्भं सपत्नान् मे	१५२०
कृषजित् फाल आशितं	२३१७
कृष्णं नियानं हरयः	२६५
कैरात पृश्न उपतृण्य	८३८
कैरातिका कुमारिका	८२१
को अद्य युङ्क्ते धुरि	२००१
को अस्य वेद प्रथमस्य	१९५९
कोशं दुहन्ति कलशं	२१८०
क्रव्यादमग्निं शशमान	२२६
क्रव्यादमग्निमिषितो हरामि	२२५
क्रव्यादमग्निं प्र दूरं हिणोमि	२२४
क्रव्यादमग्ने रुधिरं पिशाचं	७४७
क्लीब क्लीबं स्वाकरं वध्रे	५००
क्लीबं कृष्योपशितम्	४९९
क्षीरे मा मन्थे यतमो	७४४
क्षुधामारं तृष्णामारम्	३८५
क्षेत्रियात् त्वा निर्ऋत्या	१६६२
खण्वखाइ खेमखाइ	१०१८
खलः पात्रं स्फ्यावंसावीधे	११३५
गणास्त्वोप गायन्तु मारुताः	१००७
गन्धर्वाप्सरसो ब्रूमो	१७३७
गन्धारिभ्यो मूजवद्भ्यो	५४४
गर्भं ते मित्रावरुणौ	१३४९
गर्भं धेहि सिनीवालि	१३४८
गर्भे नु नौ जनिता दंपती	१९५८
गर्भो अस्थोषधीनां	४१२, ६३५२
गिरिमेनो आ वेशय	४१९
गृहाण प्रावाणौ सकृदौ	१२३८
गोमायुरदादजमायुरदात्	१००३
गोमायुरेको अजमायुरेकः	९९९
ग्रामणीरसि ग्रामणीः	१५४८
प्रावाण उपरेष्वा	२३०९
प्रावाणः सविता नु वो	२३१०

प्रावाणो अप दुच्छुनाम्	२३०८
प्राहिं पाप्मानमति तौ	१२८९
प्राह्या गृहाः सं सृज्यन्ते	१५५
प्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः	१६३, २११, २९५
प्रीवास्ते कृत्ये पादौ	१६३६
धर्म इवाभितपन् दर्भ	१५१५
घृतस्य जूतिः समना	२२४२
घृतहृदा मधुकूलाः सुरोदकाः	१२१६
घृतादुल्लसं मधुना समकृतं	१४०
घृतादुल्लसो मधुमान् पयस्वान्	१५७७, १९३४
चक्षुर्मुसलं काम उल्लखलम्	११२९
चक्षुषा ते चक्षुर्हन्मि	८३७
चतस्रश्च मे चत्वारिंशच्च मे	६५६
चतस्रो दिवः प्रदिशः	१४०६
चतुरः कुम्भांश्चतुर्धा ददामि	१२२७
चतुर्वीरं वध्यत आजनं ते	५९५
चन्द्रमा अप्स्वन्तरा	२२३२
चरं पञ्चबिलमुखं	११४४
चोदयित्री सूरुतानां	१०५२
छिन्दि दर्भं सपत्नान् मे	१५१८
जङ्घिडो जम्भाद् विशराद्	६७
जङ्घिडोऽसि जङ्घिडो	१५५१
जनाद् विश्वजनीनात्	६८५
जनित्रीव प्रति हर्षासि	१२९४
जनीयन्तो न्यग्रवः	१०४६
जरायुजः प्रथम उल्लियो	१८८
जरायै त्वा परि ददामि	७८
जहि दर्भं सपत्नान् मे	१५३१
जाग्रदुष्वप्यं स्वप्ने	१८५१
जातो जायते सुदिनत्वे	२२६१
जाया इद् वो अप्सरसो	७२६
जालाषेणाभि पिश्वत	८६१
जितम० । स आङ्गिरसानां	१८८१
जितम० । स आथर्वणानां	१८८५
जितम० । स आर्तवानां	१८८९
जितम० । स आर्षेयाणां	१८९१

२३०८	वित्तम० । स इन्द्राग्र्योः	१८९५	तकमन् मूजवतो गच्छ	५३७
१२८९	वित्तम० । स ऋतूनां	१८८८	तकमन् व्याल वि गद	५३६
२५५	वित्तम० । स ऋषीणां	१८८०	तं जहि तेन मन्दस्व	१८६७
२११, २९५	वित्तम० । स देवजामीनां	१८७७	ततश्चैनमन्यया जिह्वया	११६२
१६३६	वित्तम० । स यावापृथिव्योः	१८९४	ततश्चैनमन्यया प्रतिष्ठया	११७५
१५१५	वित्तम० । स निर्ऋत्याः	१८७३	ततश्चैनमन्याभ्यां श्रोत्राभ्यां	११५२
२२४९	वित्तम० । स निर्भृत्याः	१८७५	ततश्चैनमन्याभ्यां हस्ताभ्यां	११७४
१२२६	वित्तम० । स पराभृत्याः	१८७६	ततश्चैनमन्याभ्यामक्षीभ्यां	११६०
१४०	वित्तम० । स प्रजापतेः	१८७९	ततश्चैनमन्याभ्यामष्टौवङ्ग्यां	११७१
७, १९३४	वित्तम० । स वृहस्पतेः	१८७८	ततश्चैनमन्याभ्यामूरुभ्यां	११७०
१११९	वित्तम० । स मासानां	१८९०	ततश्चैनमन्याभ्यां पादाभ्यां	११७२
८३७	वित्तम० । स मित्रवरुणयोः	१८९६	ततश्चैनमन्याभ्यां प्रपदाभ्यां	११७३
६५६	वित्तम० । स राज्ञो वरुणस्य	१८९७	ततश्चैनमन्येन पृष्ठेन	११६६
१४०६	वित्तम० । स वनस्पतीनां	१८८६	ततश्चैनमन्येन मुखेन	११६१
१२२७	वित्तम० । स वानस्पत्यानां	१८८७	ततश्चैनमन्येन वस्तिना	११६९
५९५	वित्तम० । सोऽङ्गिरसां	१८८२	ततश्चैनमन्येन व्यचसा	११६५
२२३९	वित्तम० । सोऽथर्वणां	१८८४	ततश्चैनमन्येन शीर्ष्णां	११५८
११४४	वित्तम० । सोऽभृत्याः	१८७४	ततश्चैनमन्यैः प्राणापानैः	११६४
१०५२	वित्तम० । सोऽर्धमासानां	१८९१	ततश्चैनमन्यैर्दन्तैः प्राशीः	११६३
१५१८	वित्तम० । सोऽहोरात्रयोः	१८९२	ततश्चैनमन्येनोदरेण प्राशीः	११६८
६७	वित्तम० । सोऽहोः संयतोः	१८९३	ततश्चैनमन्येनोरसा प्राशीः	११६७
१५५१	वित्तमस्माकमुद्भिन्नमस्माकम्	१८६९, १८९८, १९०२	तथा तदग्ने कृणु जातवेदो	७३९
६८५	विद्याया अग्ने मधु मे	४७९	तदग्निराह तदु सोम आह	१४३५, १९०३
१२९४	वीर्यां ज्योतिरभि	२८	तदमुष्मा अग्ने देवाः परा	१८५५
१०४६	वीर्यां नधारिषां	३२, ३२९	तदिद्वयस्य सवनं विवेरपो	२२८७
१८८	वीर्या नाम ते माता	४४९	तदिदु वदन्त्यद्रयो	२३०५
७८	वीर्या स्थ जीव्यासं	९३६	तदु श्रेष्ठं सवनं सुनोतना	२२८६
१५३१	वीर्यानामायुः प्र तिर	२६१	तनूस्तन्वा मे सहे	१५५
१८५३	वीर्या स्थ जीव्यासं	९३३	तं त्वा वयं पितो वचोभिः	१११८
१२६३	वीर्यमस्वा समुदे वायुः	२०	तं त्वा स्वप्न तथा सं विद्म	१८३७, १८४४, १९१६
७२६	वीर्यमश्रुदः शतम्	१२०	तं त्वौदनस्य पृच्छामि	११४८
८६१	वृद्धाधार दामुपमृदन्तरिक्षं	२१५५	तं धाता प्रत्यमुञ्चत	१४९८
१८८१	व्याके परि णो नमादमानं	६६५	तन्वं स्वर्गो बहुधा	१३२५
१८८५	व्योम्यां जातो विजृतोः	८६	तपसा ये अनाधृष्याः	२०४०
१८८९	तं सिन्धवो मत्सरम्	९०९	तमिमं देवता मणिं	१५०६
१८८९	तमन् प्रात्रा बलसेन	५४२	तमूर्मिमापो मधुमत्तमं	८७२
			तव ह्ये पितो ददतः	१११२

तव त्वे पितो रसा	११११
तव व्रते नि विशन्ते	१७०१
तस्तुवं न तस्तुवं	८४४
तस्मा अरं गमाम वो	८८१
तस्मा इदास्ये हविः	९९३
तस्मादमुं निर्भजामो	१८७०, १८९९
तस्मै घृतं सुरां मधु	१४८२
तस्य घुमाँ असद्	२२४२
तस्यामृतस्येयं बलं	३४५
तस्येदं वर्चस्तेजः	१८७२, १९०१
तस्यौदनस्य बृहस्पतिः	११२७
ता अधरादुदीचीः	२५७
ता अपः शिवा अपो	९३२
ता अस्मभ्यमयक्ष्मा	९४४
ता अस्य सूददोहसः	११०१
ता नो अद्य वनस्पती	२१८३
ताबुवं न ताबुवं	८४३
तां मे सहस्राक्षो देवो	७५७
तांष्टीधीरमे समिधः	७५२
तावद् वा चक्षुस्तति	१२७३
तासु त्वान्तर्जरस्या	१६६६
तास्ते रक्षन्तु तव	१२२०
तांस्त्वं प्र चिच्छिन्द	१४६८
तिरश्चिराजेरसितात्	८५२
तिष्ठावरे तिष्ठ पर	५५६
तिस्रश्च मे त्रिशच्च मे	६५५
तिस्रो दिवस्तिष्ठः पृथिवीः	७५५
तिस्रो दिवो अत्यवृणत्	१९२६
तिस्रो वाचः प्र वद	९८५
तीक्ष्णो राजा विषासही	१९३६
तीर्थैस्तरन्ति प्रवतो	२१५७
तुभ्यं वातः पवतां	१०
तुभ्यमेव जरिमन्	१
तृतीयकं वितृतीयं	५४३
तृदिला अतृदिलासो अद्रयो	२३०३
तृन्दि दर्मं सपत्नान् मे	१५२४
तृष्णामारं क्षुधामारम्	३८६

तृष्टामया प्रथमं यातवे	१०४१
ते अद्रयो दशयन्त्रासः	२३००
ते त्वा रक्षन्तु ते	१९
ते देवेभ्य आ वृश्चन्ते	२६६
तेन तमभ्यतिष्ठजामो	१८०७
तेनैनं विध्याम्यभूत्यैनं	१८५६
तेऽमुष्मै परा वदन्तु	१८५१
तेषां प्रज्ञानाय यज्ञम्	११७९
ते सोमादो हरी इन्द्रस्य	२३०१
तौदी नामासि कन्या	८३१
तौ विलिक्तेऽवेलयाम्	४६८
त्रपु भस्म हरितं वर्णः	११३४
त्रयः पोषास्त्रिवृति	१२९
त्रयः सुपर्णा उपरस्य	२१५४
त्रयः सुपर्णास्त्रिवृता	१३४
त्रयो दासा आज्ञनस्य	५८७
त्रयो लोकाः संमिता	१२९१
त्रायन्तामिमं देवाः	५५१
त्रायन्तामिमं पुरुषं	३२५
त्रिः शाश्वतभ्यो अङ्गिरेभ्यः	४५१
त्रिः सप्त मयूर्यः	७८७
त्रिः सप्त विष्पुलिङ्गका	७८५
त्रिकद्रुकेभिः पतति	१९७९
त्रिकद्रुकेभिः पवते	२०३०
त्रिते देवा अमृजत	१७६५
त्रिशीर्षाणं त्रिककुदं	७०४
त्रिषधस्था सप्तधातुः	१०७०
त्रिष्ट्वा देवा अजनयन्	१५५६
त्रीणि च्छन्दांसि कवयो	२००४
त्रीणि ते कुष्ठ नामानि	४४८
त्रीणि पदानि रूपो	२१२३
त्रेधा जातं जन्मनेदं	१३१
त्रेधा भागो निहितो	१२३३
त्र्यायुषं जमदग्नेः	१३३
त्वं वीरुधां श्रेष्ठतमा	४९८
त्वं हि विश्वतोमुख	१७६१
त्वं च सोम नो वशो	४७७

१०४१	त्वं देवि सरस्वत्यवाम्	१०६४
२३००	त्वं नो मेघे प्रथमा	१४१९
१९	त्वमस ईळि (०डि०) तो जातवेदो	१९९८, २१२५
२६६	त्वमस यातुधानान्	७७३
१८०७	त्वमसि सहमानो	१९५७
१८५६	त्वमसि पशूनां	३
१८५१	त्वमुत्तमस्योषधे	३२३
११७९	त्वमोदनं प्राप्तीस्त्वाम्	११५३
२३०१	त्वं भूमिमत्येज्यो जसा	१९३५
८३१	त्वं मणीनामधिपा वृषासि	१५४७
४६८	त्वया पूर्वमथर्वाणो	७१५
११३४	त्वया वयमप्सरसो	७१६
१२९	त्वष्टः श्रेष्ठेन रूपेणास्या	१३५६
२१५४	त्वष्टा दुहित्रे वहतुं कृणोति	१०८१, २०१८
१३४	त्वष्टा दुहित्रे वहतुं युनक्ति	१७२
५८७	त्वष्टा युनक्तु बहुधा	१९४३
१२९१	त्वामाहुर्देववर्म त्वां	१५३४
५५१	मन्त्रेणाहं वचसा वि	५०५
३२५	ते पितो महानां देवानां	१११३
४५१	ते विश्वा सरस्वति	१०५७
७८७	तेपस्ते धूम ऊर्णोतु	२२०९
७८५	दक्षिणां दिशमभि	१२७९
१९७९	दक्षिणायां त्वा दिक्षि	२११४
२०३०	दक्षिणायै त्वा दिश	१३२७
१७६५	दक्षं हस्तादाददानो	२०८३
७०४	दाम्मस्मा अवसानम्	२०६१
१०७०	दीर्घं यज्ञं वरुणो दिवः	८३४
१५५६	दीर्घः शोचिस्तरुणकम्	८०९
२००४	दीर्घं त्वं कृणवद् वीर्याणि	१९३७
४४८	दीर्घं देवजातेन	१९२९
२१२३	दीर्घं मा यातुधानान्	७५९
१३१	द्वयं च मे शतं च मे	६६२
१२२३	द्वयं मासाञ्छयानः	१४०३
१३१	द्वयं मुञ्चेमं रक्षसो	८०
४४८	द्वयं मेकं कपिलं समानं	९८४
१७६१	द्वयं निभ्यो दशक्षेत्रेभ्यो	२१९९

दह दर्भं सपत्नान् मे	१५३०
दितिः शूर्पमदितिः	११३०
दिवं ब्रूमो नक्षत्राणि	१७४३
दिवश्चिदा वोऽमवत्तरेभ्यो	२२८९
दिवस्त्वा पातु हरितं	१३५
दिवा मा नक्तं यतमो	७४६
दिवि जातः समुद्रजः	१४२७
दिवि ते तूलमोषधे	१९२५
दिवि स्वनो यतते	१०३८
दिवो नु मां बृहतो	९५६
दिवो नो वृष्टिं मरुतो	२७९
दिवो मूलमवततं	६७०
दिव्यं सुपर्णं पयसं	९२७
दिव्यस्य सुपर्णस्य तस्य	७५६
दिव्या आपो अभि	९९५
दीक्षातपसोस्तनूरसि	१२७०
दीर्घायुत्वाय वृहते रणाय	६६
दीर्घायुस्त ओषधे खनिता	२३२७
दुर्णामा च सुनामा च	१३७०
दुर्हार्दः संघोरं चक्षुः	१५६३
दुष्टं हि त्वा भत्स्यामि	१८०१
दंह मूलमाग्नं यच्छ	४६५
दंह प्रतनान् जनयाजातान्	४६१
दृष्टमदृष्टमदृष्टम्	६९२
देवस्य सवितुः सवे	९७०
देवहितं जुगुपुर्द्वादशस्य	१००२
देवा अदुः सूर्यो अदाद्	८०५
देवा इमं मधुना संयुतं	४७०
देवाः कपोत इषितो	१५७९
देवाज्जन त्रैककुदं	६०७
देवानां हेतिः परि त्वा	३५
देवानामस्थि कृशनं बभूव	१४३०
देवानामेनं घोरैः	१८५७
देवानां पत्नीनां गर्भं	१९१५
देवा यज्ञमृतवः कल्पयन्ति	२१५२
देवास्ते चीतिमविदन्	८३

देवी देव्यामधि जाता	४६०
देवीराप एष वो गर्भः	२५५
देवीरापः शुद्धा वोढ्वः	२४७
देवीरापो अपां नपायो	२५३
देवेभ्यः कमृणीत मृत्युं	२१२४, २१७८
देवेभ्यो अधि जातोऽसि	४४३
देवैनसात् पित्र्यानाम	१६२७
देवैनसादुन्मदितम्	६८९
देवैर्दत्तं मणिना	६९
देवो अग्निः संकसुको	२२८
देवो देवैर्वनस्पतिः	२२७३
देवो मणिः सपत्नहा	१५४४
देवो वनस्पतिर्देवमिन्द्रं	३७७
दौष्वप्यं दौर्जोवित्यं	३८४, १९०६
द्यां मा लेखीरन्तरिक्षं	३७१
द्यावापृथिवी श्रोत्रे	११२८
द्युमन्तस्वधीमहि	२०२०
द्यौर्वः पिता पृथिवी माता	७७९
द्यौष्ट्वा पिता पृथिवी माता	४
द्रप्सश्चस्कन्द पृथिवीमनु	२१७८
द्रप्सश्चस्कन्द प्रथमौ अनु	८८९
द्रुपदादिव मुमुचानः	११०५, १७२९
द्वादशधा निहितं त्रितस्या०	१७६७
द्वाविमौ वातो वात आ	५४२
द्विभागधनमादाय प्र	२५१
द्विपतस्तापयन् हृदः	१५१४
द्विपते तत् परा वह	१८४७
द्विषो नो विश्वतोमुखाति	१७६३
द्वे च मे विश्वतिश्च मे	६५४
द्यास्याच्चतुरक्षात्	१३८८
धनुर्हस्तादादानो मृतस्य	१९४८, २०८४
धर्ता प्रियस्व धरुणे पृथिव्या	१३०६
धर्तासि धरुणोऽसि	२११९
धर्ता ह त्वा धरुणो	२११२
धातः श्रेष्ठेन रूपेणास्या	१३५५
धाता मा निर्रह्या	२१०९

धाना धेतुरभवद् वत्सो	२१८९
धानोधाप्रो राजजितो	१६७७
धृषत् पिब कलशे सोमम्	५१२
ध्रुव आ रोह पृथिवी	२१५६
ध्रुवा एव वः पितरो	२३०४
ध्रुवायां त्वा दिशि पुरा	२११७
ध्रुवायै त्वा दिशे विष्णवे	१३३०
ध्रुवेयं विराणमो अस्तु	१२८१
न किल्बिषमत्र नाधारो	१३१९
नक्तंजातास्योषधे रामे	५१७
न प्रंस्तताप न हिमो	१०२१
न च प्राणं रुणद्धि	११८१
न च सर्वज्यानि जीयते	११८२
नहमा रोह न ते	२१७
न तं यक्ष्मा अरुन्धते	२०२
न तद् रक्षांसि न	२३२९
न तिष्ठन्ति न नि मिषन्ति	१९६१
न ते नाथं यम्यत्राहमस्मि	२००२
न ते बाहोर्बलमस्ति	८५७
न ते सखा सख्यं वष्टयेतत्	१९५५
न त्वा पूर्वं ओषधयो	१५५७
नदीं यन्त्वप्सरसो	७१७
न भूमिं वातो अति	६१४
नमः शीताय तक्मने	५२८
नमः सनिस्वाक्षेभ्यो	४९७
नमस्ते राजन् वरुणास्तु	१६५५
नमस्ते रुद्रास्यते	६२९
नमस्ते लाङ्गलेभ्यो	४९६
नमो यमाय नमो अस्तु	१०९
नमो रुद्राय नमो अस्तु	१८०
नमो रुद्राय च्यवनाय	५२९
नमो वः पितर ऊर्जे	२२३१
नमो वः पितरः स्वधा	२२३५
नमो वः पितरो भामाय	२२३१
नमो वः पितरो यच्छिवं	२२३४
नमो वः पितरो यद् घोर्	२२३१

२१८२	नमोऽस्त्वसिताय नमः	८५०
१६७७	न यत् पुरा चक्रमा कद्ध	१९५७
५१२	न च मे नवतिष्ठ मे	६६१
२१५६	न च या नवतिष्ठ	१६८४
२३०४	न च प्राणान् नवभिः सं	१२७
२११७	न च बहिरोदनाय स्तृणीत	१३०३
१३३०	न वा उ ते तनू तन्वा सं	२००३
१२८१	न वा उ ते तन्वा तन्वं सं	१९६५
१३१२	न वा उ देवाः क्षुधमिद्वधं	२३११
५१७	नवानां नवतीनां	७८६
१०११	नष्टस्यो नष्टविषा	८१९
११८१	न स सखा यो न ददाति	२३१४
११८१	न ह्ये ते नाम जग्राह	३६६
११८१	न ह्यस्या नाम गृणामि	२३३९
२१७	न ह्ये सुपर्णमुप यत् पतन्तं	२१४४
२०२	नभिर्हं रथीणां	१८२८
२३२९	नाथ इति ब्रूयान्नामुचेचन	११५०
१९६१	नास केशान् प्र वपन्ति	१९२४
२००२	नासास्थानि भिन्यान्	१२०५
८५७	निःसर्गा धृष्टुं धिषणम्	१६४८
१९५५	निःसर्गं सपत्नान् मे	१५२३
१५५७	नि गावो गोष्ठे असदन्	५६३, ७७७
७१७	निष्प्रभ्या स्थ देवश्रुतः	९४८
६१४	निषि निषिषा अभ्येनम्	१३१३
५२८	निराशि सविता धाविषक्	६७४
४९७	निरितो नृत्युं निर्रति	२१९
१६५५	निरिमा मात्रां मिमीमहे	२०६६
६२१	निरुमेण्य ऊर्जा	१८१६
४९६	निर्दिष्टं दिवो निः पृथिव्या	१८६१
१०९	निर्दिष्टं बलाधिनः	४८४
१८०	निर्दिष्टः प्र पताशुंगः	४८५
५१९	निर्दिष्टं ललाम्यं	६७३
२२११	निर्वो गोष्ठदजामसि	१६४९
२२३५	निर्वैर्ध्वं मानु गात	८९३
२२३१	निर्वैः खनन्यसुरा	५६७
२२३४	निर्वैः विदुः पितरो नोत	१९१०
२२३३	निर्वैः मासि न पीवसि	१४०८
	११ दे. [आयुर्वेद०]	

नैनं रक्षांसि न पिशाचाः	६०
नैनं घ्नन्ति पर्यायिणो	१५३
नैनं घ्नन्त्यप्सरसो	१४४३
नैनं प्राप्नोति शपथो	५८४
नैवाहमोदनं न मामोदनः	११५६
न्यग् वातो वाति न्यक्	२००
न्यस्तिका रुरोद्विध	६७७
पक्षा जायान्यः पतति	५१०
पञ्च च मे पञ्चाशच्च मे	६५७
पञ्च च याः पञ्चाशच्च	१६८२
पञ्च पदानि रूपो अन्वरोहं	२२७७
पञ्च राज्यानि वीरुधां	१७४८
पञ्च रुक्मा ज्योतिरस्मै	१२०८
पञ्च रुक्मा पञ्च नवानि	१२०७
पञ्चौदनः पञ्चधा वि क्रमताम्	११९०
पयस्वतीः कृणुथाप ओषधीः	९६६
पयस्वतीरोषधयः	८९२, २१३५
परं मृत्यो अनु परेहि पन्था	२३७
पराक् ते ज्योतिरपथं ते	१६३१
पराच एनान् प्र णुद	४२०
पराञ्च चैनं प्राशीः प्राणास्त्वा	११५४
परा यात पितर आ च यात	२०९७
परा यात पितरः सोम्यासो	२२१३
परि ग्राममिवाचितं	८०२
परि णो वृद्धिं शपथ	१७७४
परि त्वा परितन्नुना	४८९
परि त्वा पातु समानेभ्यो	५२
परि त्वा रोहितैर्वर्णैः	४९०
परि यामिव सूर्योऽद्दीनां	८४६
परि धत्त धत्त नो वर्चसा	२३३२
परि धामान्यासामाशुः	१६५३
परिपाणं पुरुषाणां	५८१
परि मा दिवः परि मा पृथिव्याः	१५६४
परि मां परि मे प्रजां	६७१
परि वः सिकतावती	५५८
परिवारसि परि त्वा दैवीर्विशो	२२७१

परि वो विध्वतो दध	८९९
परिसृष्टं धारयतु यद्वितं	१३८६
परि स्तृणीहि परि धेहि	२२५६
परिहस्त वि धारय	१३६०
परीदं वासो अधिधाः	२३३३
परीमेऽग्निमर्षत परि	१५८३
परेयिवांसं प्रवतो महीः	१९६८, २०१५
परेहि कृत्वे मा तिष्ठो	१६४१
परेहि नारि पुनरेहि क्षिप्रम्	१२४१
परोऽपेहि मनस्पाप किम्	६३०
परोऽपेह्यसमृद्धे वि	१७८३
पर्जन्याय प्र गायत	९९१
पर्णो राजापिधानं चरुणाम्	२२०३
पर्यस्ताक्षा अप्रचङ्कशा	१३८२
पर्यावर्ते दुष्पण्यत	६३६
पर्वताद् दिवो योनेः	१३४६
पलालानुपलालो शर्कुं	१३६८
पवस्तैस्त्वा पयैक्रीणन्	८०३
पवीनसात् तङ्गत्वात्	१३८७
पश्याम ते वीर्यं जातवेदः	७७१
पश्येम शरदः शतम्	११९
पादाभ्यां ते जानुभ्यां	२९२
पार्थिवस्य रसे देवा	९१
पार्थिवा दिव्याः पशवः	१७४१
पावका नः सरस्वती	१०५१
पिश दर्भ सपत्नान् मे	१५२१
पिङ्ग रक्षे जायमानं	१३९१
पिण्डु दर्भ सपत्नान् मे	१५२८
पितुं न स्तोषं महो	११०८
पितृभ्यः सोमवद्भ्यः	२२२३
पितेव पुत्रानभि सं	१२८३
पिप्पली क्षिप्रमेपजी	४१३
पिप्पल्यः समवदन्त	४१४
पिशङ्गे सूत्रे खृगलं	१७९९
पीपिवांसं सरस्वतः	१०४८
पुत्र इव पितरं गच्छ	१६००
पुत्रमचु यातुधानीः	७३७

पुत्रं पौत्रमभितर्पयन्तीः

पुनः कृत्यां कृत्याकृते	२१८२
पुनरेता नि वर्तन्ताम्	१५९४
पुनरेता नि वर्तय	८२५
पुनरेहि वाचस्पते	८९४
पुनरेहि वनस्पते य	१४१६
पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः	२१४७
पुनस्त्वा दुरप्सरसः	२२२
पुमान् पुंसोऽधि तिष्ठ	६२०
पुरं देवानाममृतं हिरण्यं	१२७१
पुरस्ताद् युक्तो वह जातवेदो	१३७
पुराणं अनुवैनन्तं	७३८
पुरोळाशं यो अस्मै	१९८१
पुष्टिं पशूनां परि जग्रभ	२२४१
पुष्टिरसि पुष्ट्या मा समङ्गिध	१५४१
पुष्पवतीः प्रसूमतीः	१५४९
पूताः पवित्रैः पवन्ते अत्राद्	३५०
पूर्वो अग्निष्वा तपतु शं	१२९६
पूषा त्वेतदच्यावयतु प्र	२१५१
पूषेम शरदः शतम्	२०७८
पृणीयादिन्नाधमानाय तव्यान्	१२३
पृथग् रूपाणि बहुधा पशूनाम्	२३१५
पृथिवीं त्वा पृथिव्यामा वेशयामि	१२९१
पैद्व प्रेहि प्रथमोऽनु	१२९२, २१९८
पैद्वस्य मन्महे वयं	८१३
पैद्वो हन्ति कसर्णालं	८१८
प्र केतुना बृहता भाल्यग्निः	८११
प्र क्षोदसा धायसा सख	२१४३
प्र च्यवस्व तन्वं सं भरस्व	१०७३
प्रजापतिष्वा बध्नात् प्रथमम्	२०९१
प्रजापतिः सलिलादा समुद्राद्	१५७१
प्रजापते श्रेष्ठेन रूपेण	१०१४
प्रजानल्यध्वे जीवलोकं	१३५८
प्र णो देवी सरस्वती	२०८७
प्र णो वनिर्देवकृता	१०६१
प्रति दह यातुधानान्	१७९१
प्रति यदापो अहश्चायतीः	७३५

२१८९	प्रतिष्ठे ह्यभवतं वसूनां	१७०७	प्राणापानौ मा मा हासिष्टं	१८३२
१५९४	प्रतीची दिशामियमिद	१२८०	प्राणेन त्वा द्विपदां चतुष्पदां	३०
८९५	प्रतीचीन आत्त्रिसो	१६२१	प्राणेन प्राणतां प्राण	१७६
८९४	प्रतीचीनफलो हि	४०४	प्राणेन विश्वतोवीर्यं	१७४
१४१६	प्रतीचीने मामहनीष्वाः	१९५३	प्राणेनाग्ने चक्षुषा सं सृजेमं	१११
११४७	प्रतीच्या त्वा दिशि पुरा	२११५	प्राणो अपानो व्यान आयुः	२०७०
२२२	प्रतीच्यै त्वा दिशे वरुणाय	१३२८	प्रास्मत् पाशान् वरुण मुञ्च	१६७९, २२२०
६९०	प्र ते भिनन्नि मेहनं	५७७	प्रास्मदेनो वहन्तु प्र	१८१३
१२७९	प्र तेऽरदद् वरुणो यातवे	१०३७	प्रास्मै हिनोत मधुमन्तमूर्मिं	२०८
१३७	प्र ते सृणामि शृङ्गे	७१४	प्रियं प्रियाणां कृण्वाम तमः	१३२०
७३८	प्रतो हि कमीड्यो अध्वरेषु	८५	प्रियं मा दर्भं कृणु ब्रह्म०	१९३०
१९८१	प्रसक्तं हि संवभूविथ	४०२	प्रेमां मात्रां मिमीमहे	२०६३
१२४१	प्रसक्तं चैनं प्राशीरपानाः	११५५	प्रेव पिपतिषति मनसा	२६८
१५४१	प्रसक्तमर्कं प्रत्यर्पयित्वा	२७१	प्रेहि प्रेहि पथिभिः पूर्याणिः	२०१९
१५४९	प्र देवत्रा ब्रह्मणे गातुः	९०१	प्रेहि प्रेहि पथिभिः पूर्व्येभिः	१९७३
३५०	प्र नमस्त वृथिवि	१०२०	प्रेणान्छृणीहि प्र भृणा रभस्व	१४५४
१२९६	प्र पदोऽव नोनिग्धि दुश्चरितं	११८५	प्रेते वदन्तु प्र वयं वदाम	२२९३
१२५९	प्र पर्वतस्य वृषभस्य	१०९८	प्रेषा यज्ञे निविदः स्वाहा	१९४०
२०७८	प्र पर्वतानामुशती उपस्थाद्	१०२२	प्रोष्ठेशयास्तल्पेशया	६१५
१२३	प्र पृच्छ पशुं त्वरथा	१३०२	वतो बतासि यम नैव ते	१२६६
१३१५	प्र यत् ते अग्ने सूरयो	१७६०	बन्धस्त्वाग्ने विश्वचया	१९०८
१२९१	प्र यदग्नेः सहस्रतो	१७६१	बभ्रे रक्षः समदमा वपैभ्यो	१२६०
०३, ११९८	प्र यद् भन्दिष्ठ एषां	१७५९	बभ्रेरध्वर्यो मुखमेतद्	१२५९
८१३	प्र या जिगाति खर्गलेव	२२८४	बभ्रोरर्जुनकाण्डस्य यवस्य	४९५
८१८	प्र या महिन्ना महिन्नासु	१०७१	बर्हिषदः पितर ऊर्यवाग्	१९९०, २०१६
८११	प्र वा एतीन्दुरिन्द्रस्य	२२१०	बर्हिर्बिलं निर्द्ववतु	२८२
११४३	प्र वाचं शश्वधा वीर्यं तद्	१०२८	बह्वीदं राजन् वरुणान्	६०९
१०७३	प्र वाता वान्ति पतयन्ति	२७७	बुध्येम शरदः शतम्	१२१
२०९१	प्र विसृतं प्राणापानौ	७६, १४७	बृहत्पलाशे सुभगे	४७२
१५७१	प्र वो प्रवाणः सविता	२३०७	बृहदायवनं रथन्तरं दर्विः	११४१
१०१४	प्र वृमति सवितर्वाय ऊतये	१७०४	बृहदु गायिषे वचो	१०७८
१३५८	प्र सु व आपो महिमानम्	१०३६	बृहद्वावासुरेभ्योऽधि देवान्	१९०९
२०८७	प्रसृणती स्तम्बनीरेकशृङ्गाः	३२७	बृहद् वदन्ति मदिरण	२२९६
१०६१	प्रसृणती प्रदिशमा	१२७८	बृहस्पतिर्म आत्मा	१८२५
१७७९	प्रसृणती त्वा दिशि पुरा	२२१३	बोधश्च त्वा प्रतीबोधश्च	१८
७३५	प्रसृणती त्वा दिशेऽग्रये	१३२६	ब्रह्मलोको भवति ब्रह्मस्य	११७७
९११	प्रसृणती त्वा दिशेऽग्रये	६०५		

ब्रह्मणामिः संविदानो	१३९३
ब्रह्मणा तेजसा सह	१५०७
ब्रह्मणा परिगृहीता	११४१
ब्रह्मणा शुद्धा उत पूता	१२४६
ब्रह्मवादिनो वदन्ति पराञ्चम्	११५२
ब्रह्मास्य शीर्षं बृहदस्य	१२२१
ब्राह्मणामः सोमिनो वाचम्	१००१
ब्राह्मणासो अतिरात्रे न सोमे	१०००
ब्राह्मणेन पर्युक्तासि	३९७
ब्राह्मणो जज्ञे प्रथमो	७९०
ब्रूमो देवं सवितारं	१७३६
ब्रूमो राजानं वरुणं	१७३५
भगो मा भगेनावतु प्राणाय	६००
भगो युनक्त्वाशिषो न्वस्मा	१९४४
भद्रं वै वरं वृणते	६२६
भद्रमिद् भद्रा कृणवत्	१०८०
भद्रात् एक्षाञ्जितष्ठसि	४३२
भवाशर्वाविद्यतां पापकृते	१६३८
भवाशर्वाविदं ब्रूमो	१७४९
भवाशर्वा मन्वे वां तस्य	१७१३
भवेम शरदः शतम्	१२४
भिन्द्रि दर्भं सपत्नानां	१५१६
भिन्द्रि दर्भं सपत्नान् मे	१५१७
भीताय नाधमानाय	१४००
भीमा इन्द्रस्य हेतयः	७२२, ७२३
भुरन्तु नो यशसः सोत्वन्धसो	२२९०
भूतपतिर्निरजतु	१६५१
भूतं ब्रूमो भूतपतिं	१७५४
भूते हविष्मती भवैष ते	१७९१
भूमिष्वा पातु हरितेन	१३१
भूयसीः शरदः शतात्	१२६
भूयेम शरदः शतम्	१२५
मज्जा मज्ज्ञा सं धीयतां	४२४
मधुमती स्थ मधुमतीं	१८१७
मधुमन्मे निरुमणं	४८०
मधुमन्मूलं मधुमदग्रमासां	३३५

मधुमात्रो वनस्पतिः	४७३
मधु वाता ऋतायते	३६२
मध्वा पृञ्चे नद्यः पर्वता	८४८
मधोरस्मि मधुतरो	४८१
मनसे चेतसे धियः	६३
मनो मे तर्पयत वाचं मे	९४९
मन्य दर्भं सपत्नान् मे	१५२७
मन्वे वां द्यावापृथिवी सुभोजसौ	१७०६
मन्वे वां मित्रावरुणावृतावृधौ	१७१०
मया गावो गोपतिना सचध्वम्	२३२५
मरीचीर्धूमान् प्र विशातु	१७६६
मरुतो मा गणैरवन्तु	६०१
महान्तं कोशमुदचा नि षिञ्च	९८१
महान्तं कोशमुदचाभि षिञ्च	१०१९
महावृषान् मूजवतो	५३८
महो अर्णः सरस्वती	१०५३
मा गतानामा दीधीथा	१३
मा ज्येष्ठं वधीदयमग्र एषां	१६७०
मातली कव्यैर्यमो अङ्गिरोभिः	१९७०, २०१३
मा ते प्राण उप दसन्मो	१११
मा ते मनस्त्र गान्मा तिरौ	१२
मा ते मनो मासोर्माज्ञानां	२०४८
मा त्वा कव्यादभि मंस्त	१७
मा त्वा जम्भः संहनुर्मा	२१
मा त्वा वृक्षः सं बाधिष्ट	२०४९
मा न आपो मेधां मा	१४११
मा नो देवा अहिर्वधीत्	८४९
मा नो मेधां मा नो दीक्षां	१४१३
मा नो हासिषुर्ऋषयो दैव्या	६५
मापो मौषधीर्द्विःसीः	९५१
मा विर्भेन मरिष्यसि	१०५
मा मां प्राणो हासीन्मो	१८३०
मा वनिं मा वाचं नो	१७८१
मा वो रिषत् खनिता	३२०
मा सं वृतो मोप सृप	१३६९
मा स्मेतान्सखीन् कुरुथा	५४१

४७३	वित्र एनं वरुणो वा	२	यः कीकसाः प्रशृणाति	५०९
३६१	वित्र त्वा वरुणश्च	६११	यः कृणोति प्रमोतम्	२७५
८४८	वित्रवरुणा परि माम्	२०९५	यः कृणोति मृतवत्साम्	१३७१
४८१	मुहन्तु मा शपथ्याद्	३१६, ३५३, १७४०, १७६९	यः कृत्याकृन्मूलकृद्	१७१८
६३	मुह शीर्षकृत्या उत कासः	१९०	यः कृष्णः केश्यसुर	१३७१
९४९	मुञ्चामि त्वा वैश्वानराद्	१६५७	यः पुरुषः पारुषेयो	५३३
१५२७	मुञ्चामि त्वा हविषा	७२, २०५	यः प्रथमः कर्मकृत्याय	१६९७
१७०६	मुञ्चाना ओषधयो	३३९	यः प्रथमः प्रवतमाससाद	१५८४
१७१०	मुहुर्गृह्येः प्र वदति	२५४	यः संग्रामाजयति सं युधे	१६९८
२३२५	मूर्ध्नि रथोणां मूर्ध्ना	१८२२	यं कुमार नवं रथम्	१९८२
१७६६	मृग दर्भं सपत्नान् मे	१५२६	यं कुमार प्रावर्तयो	१९८३
६०१	मृतुराशि द्विपदां	४९	यच्चक्षुषा मनसा यच्च	३५४
९८१	मृत्योः पदं योपयन्त	२४६	यच्चिद्धि त्वं गृहेगृहे	२२८०
१०१९	मेदस्तता यजमानाः	१७३६	यज्जाग्रद् यत् सुप्तो	१८६५
५३८	मेवां सायं मेघां प्रातः	१४२३	यज्ञ एति विततः कल्पमानः	२१६३
१०५३	मेघामहं प्रथमां ब्रह्मण्वतीं	१४२०	यज्ञं दुहानं सदमित् प्रपीनं	१२६२
१३	मेघं प्राणो हासीन्मो	१४६	यज्ञं ब्रूमो यजमानम्	१७४७
१६७०	मेघनाद्वनंकरणात्	१६६	यज्ञस्य चक्षुः प्रभृतिर्मुखं	२२५३
१०, २०१३	मेघं पन्थामनु गा भीम	१५	यतो दष्टं यतो धीतं	८५४
११९	मेघमे वि दहो माभि	२०२८	यत् किं चेदं वरुण दैव्ये	१७८९
१२	मेघमहं विन्दते अप्रचेताः	२३१६	यत् कृषते यद् वनुते	२५२
२०४८	मेघो मनोहा खनो निः	१८०५	यत् क्षुरेण मर्चयता	४३
१७	य आत्मानमतिमात्रमंस	१३६९	यत् ते आत्मनि तन्वां	६७५
२१	य आत्राय चक्रमानाय	२३१२	यत् ते अङ्गमतिहितं	२०५०
२०४९	य आर्धं मांसमदन्ति	१३८२	यत् ते अपोदकं विषं	८३५
१४१९	य आशानामाशापालाः	१३५९	यत् ते दर्भं जरामृत्युः	१५३२
८४९	य आस्ते यश्चरति यश्च	६१७	यत् ते नियानं रजसं	३६
१४१३	य ह पितरो जीवा	२२३७	यत् ते पितृभ्यो ददतो	१६२६
६५	य श्योगमुग्रबाहुर्हयुः	१६२३	यत् ते माता यत् ते पिता	१०२
९५१	य उदानद् व्ययनं	८९७	यत् ते रिष्टं यत् ते शुत्तम्	४२१
१०५	य उमाभ्यां प्रहरसि	८५२	यत् ते वासः परिधानं	४२
१८३०	य ऊरु अनुसर्पति	२७८	यत् ते सोम गवाशिरो	१११६
१७८१	य ऊणो देवकृता	१५६५	यत् त्वं शीतोऽथो रुरः	५४०
३२०	य एनं परिषोदन्ति	१५०	यत् त्वा कुद्धाः प्रचक्रुः	२२१
१३६९	य वाचा मयई वाचा	१७८१	यत् त्वाभिचेरुः पुरुषः	९९
५४१	य वां पितृ पचति यं	१२७६	यत् त्वा शिक्चः पराव०	१४८०
			यत् पर्जन्य कनिकदत्	९८२

यत् प्रेषिता वरुणेन	९२१	यथा वृत्र इमा आपः	१८४
यत्र नावप्रभंशानं	४५४	यथासितः प्रथयते वशौ	१३४०
यत्र वः प्रेक्षा हरिता	७२९	यथा सूर्यस्य रश्मयः	४८८
यत्राश्वत्था न्यग्रोधा	७१८	यथा सूर्यो अतिभाति	१४६९
यत्रैषामग्ने जनिमानि	७३०	यथा सूर्यो मुच्यते तमसः	१६४७
यत्रौषधीः समग्मत	३०६	यथा सो अस्य परिधिः	७४०
यत् समुद्रो अभ्यक्रन्दत्	१५३६	यथा स्म ते विरोहतो	१३३४
यत् स्वप्ने अन्नमश्रामि	६३७	यथा हव्यं वहसि जातवेदो	१६८६
यथा कलां यथा शर्फं	६३५, १९१३	यथाहान्यनुपूर्वं भवन्ति	२४१
यथाग्ने त्वं वनस्पते	१५४५	यथेयं पृथिवी मही दाधार	१३६३-६५
यथा त्वमुत्तरोऽसौ	१५७८	यथेहं पृथिवी मही भूतानां	१३४७, १३६२
यथा देवेष्वमृतं यथा	१४७७	यथेषुका परापतद्	५७९
यथा यां च पृथिवीं च	६६७	यथोदकमपपुषो	६८०
यथा नकुलो विच्छिद्य	६८१	यदक्षेषु वदा यत् समित्यां	१३१३
यथा नडं कशिपुने	५०२	यदभिरापो अदहत प्रविश्य	५२५
यथा पसस्तायादरं	१३४१	यदग्ने तपसा तपः	१९२१
यथा बाणः सुसंशितं	४८७	यदग्ने यानि कानि	११७
यथा बीजमुर्वरायां	१५१०	यदग्नौ सूर्ये विषं पृथिव्याम्	८९९
यथाभवदनुदेयी ततो	१९८५	यदङ्ग त्वा भरताः संतेरयुः	१०३१
यथा भूमिर्मृतमना	६८३	यददः संप्रयतीरह्वा०	९२०
यथा मनो मनस्केतैः	४८६	यददीव्यनृणमहं कृणोमि	१६७३
यथा यमाय हर्म्यम्	२१०५	यददोअदो अभ्यगच्छन्	१८६४
यथा यशः कन्यायां	१४७२	यददो देवा असुरान्	३९९
यथा यशः पृथिव्यां	१४७१	यददो पितो अजगन्	१११४
यथा यशः प्रजापतौ	१४७६	यदन्नमग्नि बहुधा विरूपं	१११९
यथा यशः सोमपीथे	१४७३	यदन्नमद्भ्यनृतेन देवा	११११
यथा यशश्चन्द्रमसि	१४७०	यदपामोषधीनां परि०	१११५
यथा यशोऽग्निहोत्रे	१४७४	यदश्रासि यत् पिबसि	४५
यथा यशो यजमाने	१४७५	यदस्मासु दुष्पण्यं यद्	५९३
यथा वातः पुष्करिणीं	१४०१	यदस्य हतं विहतं यत्	७४२
यथा वातश्चाग्निश्च वृक्षान्	१४६६	यदहरहरभिगच्छामि	१८६६
यथा वातश्चावयति	१६२८	यदाङ्गनं त्रैककुदं	५८८
यथा वातेन प्रक्षीणा	१४६७	यदान्त्रेषु गवीन्योः	५७६
यथा वातो यथा मनो	१४१०	यदापो अघ्न्या इति	६१०, ११०३
यथा वातो यथा वनं	१४०२	यदाबध्नन् दाक्षायणा	५९, २३३०
यथा वातो वनस्पतीन्	१४६५	यदाशसा निःशसामिशसो	६१७
		यदाशसा वदतो मे विचुक्षुभे	१०८८

१८४	यदा द्युतं कृण्वो जातवेदो	२०२९	यद्यत् कृष्णः शकुनः	१२८४
१३४०	यदासुतः कियमाणायः	१९७	यद्यर्चिर्यदि वासि शोचिः	५९६
४८८	यदि कृतं पतित्वा संशये	४२७	यद्यष्टवृषोऽसि सृजारसो	६४९
१४६९	यदि कामादपकामाद्	२७९	यद् यामं चकुर्निखनन्तो	१२६६
१६४७	यदि सितायुर्यदि वा	७३, २०६	यद्येकवृषोऽसि सृजारसो	६४९
७४०	यदि चतुर्वृषोऽसि सृजा०	६४५	यद्येकादशोऽसि सोऽपो	६५२
१३३४	यदि जाग्रद् यदि स्वप्नेन	१७२८	यद्येयथ द्विपदी चतुष्पदी	१६३९
१६८६	यदि त्रिवृषोऽसि सृजारसो	६४४	यद् रिप्रं शमलं चक्रम	२५६
२४१	यदि दशवृषोऽसि सृजा०	६५१	यद् वः सहः सहमाना	३२८
१३६३-६५	यदि द्विवृषोऽसि सृजा०	६४३	यद् विद्वांसो यद्विद्वांसः	१७२७
७, १३६१	यदि नववृषोऽसि सृजा०	६५०	यद् द्विपाच्च चतुष्पाच्च	१५४०
५७९	यदि नववृषोऽसि सृजा०	६४६	यद् वेद राजा वरुणो	१३५१
६८०	यदि वाजयज्ञहम्	३११	यद् वो अमिरजहादेकं	२२१४
१३२३	यदि वासि त्रैककुन्दं	५८९	यद् वो देवा उपजीका	८०६
५१५	यदि वासि देवकृता	१५९७	यद् वो मुद्रं पितरः सोम्यं	२१०२
१९२१	यदि वृषादभ्यपत्तत्	९५७	यद् वो वयं प्रमिनाम	२२५५
११७	यदि शोको यदि वाभि	५२७	यन्तासि यच्छसे हस्तौ	१३५२
८९९	यदि षड्वृषोऽसि सृजा०	६४७	यं ते मन्थं यमोदनं	२१९२
१०३१	यदि सप्तवृषोऽसि सृजा०	६४८	यं त्वमग्ने समदहस्तमु	२०८९
९२०	यदेवो यदि वा पुमान्	१५९६	यं त्वा वेद पूर्व इक्ष्वाको	४५५
१६७३	यदि स्य क्षेत्रियाणां	१६५२	यं देवा पितरो मनुष्या	१५०९
१८६४	यदि स्य तमसावृता	१६४५	यं द्विष्मो यच्च नो द्वेष्टि	१८४८
३९९	यदेवं मातुर्यदि वा पितुर्नः	१२६८	यन्नियानं न्ययनं	८९६
१११४	यदेभिर्नो उग्रतो अभि	९९६	यन्मातली रथक्रीतम्	१७५६
१११९	यदुत्कृष्टात्तं जिह्वया	१६५६	यन्मा हुतमहुतमाजगाम	११२०
११२१	यदेनसो मातृकृता०	१०१	यन्मे अक्षयोरदियोत	९७२
१११५	यदेगमन्यो अन्यस्य	९९८	यन्मे छिद्रं मनसो यच्च	१४११
४५	यद् दण्डेन यदिष्वा	४३१	यन्मेदमभिशोचति येनयेन	१७१२
५२३	यद् दुरोद्विष्य शेषिषे	१००	यन्मे माता अन्मे पिता	१४६०
७४१	यद् दुर्मगा प्रस्नपितां	१६२५	यमः परोऽवरो विवस्वान्	२०५६
१८६६	यद् दुष्कृतं यच्छमलं	४०५	यमबध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो	१४९९-१५०१
५८८	यद् देवा देवहेडनं	१७९४	यमबध्नाद् बृहस्पतिर्मणिं	१४८३-८७
५७६	यद् प्राचीरजगन्तरो	२३३८	यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय	१४८८-९४
६१०, ११०१	यद् यद्भिर्नोद्विषिभिः	८४७	यमराते पुरोधत्से पुरुषं	१७७८
५९, २३३०	यस्यैः कस्याद् यदि	२२०	यमस्य मा यम्यं कामः	१९६०
६१७	यस्यैः कस्याद् यदि	१३१०	यमस्य लोकादध्या बभूविथ	१९०७
१०८८	यस्यैः कस्याद् यदि			

यमाय घृतवत् पयो	२०२७	यस्त्वा स्वप्ने निपद्यते	१३७३
यमाय घृतवद्धविः	१९७७	यस्त्वोवाच परेहीति	१६२२
यमाय पितृमते स्वधा	२२२४	यस्मिन्समुद्रो द्यौर्भूमिः	११४६
यमाय मधुमत्तमं	१९७८, २०२६	यस्मिन् देवा अमृजत	२३३
यमाय सोमं सुनुत	१९७६	यस्मिन् विश्वानि भुवनानि	९८८
यमाय सोमः पवते	२०२५	यस्मिन् वृक्षे सुपलाशे	१९८०
यमे इव यतमाने यदैतं	१२७६	यस्मै त्वा यज्ञवर्धन मणे	१५११
यमो नो गातुं प्रयमो	१९६९	यस्य क्रूरमभजन्त दुष्कृतो	१९११
यं परिहस्तमभिभः	१३६१	यस्य जुष्टिं सोमिनः	१६१६
यं ब्राह्मणे निदधे यं च	१२०१	यस्य ते वासः प्रथमवास्यं	२३३५
ययो रथः सत्यवर्त्मजुरश्मिः	१७२६	यस्य देवा अकल्पन्त	११४७
ययोरभ्यध्व उत यद् दूरे	१७१४	यस्य भीमः प्रतीकाशः	२७७
ययोर्विधाज्ञापयते कश्चन	१७१७	यस्य वशास ऋषभासः	१६१५
ययोः संख्याता वरिमा	१७००	यस्य व्रतं पशवो यन्ति	१०४९
यश्चकार न शशाक कर्तुं	३९३, १६१४	यस्य व्रते पृथिवी ननमीति	९७८
यश्चकार स निष्करत्	८४	यस्य हेतोः प्रच्यवते	२७४
यश्चर्षणिप्रो वृषभः खर्विद्	१६९४	यस्या अमन्तो अहुतः	१०६६
यश्च सापत्नः शपथो	६६९	यस्याजन प्रसर्पसि	५८३
यस्त आस्यत् पञ्चाङ्गुरिः	७९३	यस्यास्त आसनि घोरे	१७९०
यस्त ऊरू विहरति	१३९६	यस्येदं प्रदिशि यद्	१६११
यस्ते केशोऽवपयते	४६२	यस्यौषधीः प्रसर्पथ	३११
यस्ते गर्भममीवा दुर्णामा	१३९४	या अन्येद्युरुभयद्युः	५३०
यस्ते गर्भं प्रतिमृशात्	१३८४	या आपो दिव्या उत	८७६
यस्ते द्रप्सः स्कन्दति	८९०	या ओषधयः सोमराज्ञीः	३५१
यस्ते द्रप्सः स्कन्नो यस्ते	८९१	या ओषधीः पूर्वा जाता	३०१
यस्ते पशूषि संदधौ	१६१३	या ओषधीः सोमराज्ञीर्वह्नीः	३१८
यस्ते पृथु स्तनयितुर्न्युः	१०८७	या ओषधीः सोमराज्ञीर्विष्टिताः	३१९
यस्ते मदोऽवकेशो विकेशो	४७१	याः कृत्या आज्झिरसीर्याः	१४३१
यस्ते स्तनः शशयुर्यौ	१०८६	याः पार्श्वे उपर्वन्ति	२८३
यस्ते स्तनः शशयो यो	१०५४	याः प्रवतो निवत उद्वतः	१०३५
यस्ते हन्ति पतयन्तं	१३९५	याः फलिनीर्या अफला	३१५
यस्त्वा कृत्याभिर्यस्त्वा	१४४५	याः सीमानं विरुजन्ति	२८४
यस्त्वा देवि सरस्वति	१०६३	याः सुपर्णा आज्झिरसीः	३४७
यस्त्वा पिबति जीवति	४२९	याः सूर्यो रश्मिभिराततान	८७४
यस्त्वा भ्राता पतिर्भूत्वा	१३९७	या गुदा अनुसर्पन्ति	२८८
यस्त्वा स्वपन्ती त्सरति	१३७४	या गृत्स्यस्त्रिपञ्चाशीः	१५५१
यस्त्वा स्वप्नेन तमसा	१३९८	या ग्रैव्या अपचितो	५०८

१३७३	वा कल्पयन्ति वहतौ	१६१६
१६२२	वा जामयो वृष्ण इच्छन्ति	३६३
११४६	वा जमदग्निस्त्रिदश	४६३
२३३	वत्सुधानस्य सोमप	७२९
१८८	वा ते धामान्युदमसि	२२७०
१९८०	वा देवीः पञ्च प्रदिशो	१७५५
१५११	वा नः पीपरदक्षिणा	१४१४
१९११	वा ते कृत्वा कूपेऽवदधुः	१६११
१६१६	वा ते वक्रुः कृकवाकावजे	१६०५
२३३५	वा ते वक्रुः पुरुषास्थे	१६१२
११४७	वा ते वक्रुः सभायां	१६०२
२७७	वा ते चक्रुरमूलायां	१६०७
१६१५	वा ते चक्रुरामे पात्रे	३८३, १६०४
१०४९	वा ते चक्रुरेकशफे	१६०६
९७८	वा ते चक्रुर्गर्हिपरये	१६०८
२०४	वा ते चक्रुः सेनायां	१६१०
१०६६	वा ते धेनुं निपृणामि	२०५४
५८३	वा ते वर्हिषि यां शमशाने	१६३३
१७९०	वा ते रुद्र इपुमास्यद्	६२०
१६११	वा ता गन्धर्वो अखनद्	१३३२
३११	वा च नरो देवयन्तो	२२६४
५३०	वा पूर्व पतिं विस्वाथ	१२०९
८७६	वा वज्रवो याश्च शुक्रा	३२४
३५१	वाभिः सोमो मोदते	९०५
३०१	वा मृज्जो निर्धयन्ति	२८९
३१८	वापन्यामन्तुपयुक्तं वहिष्ठं	१६८७
३१९	वा महती महोन्माना	१७८५
१४१३	वापृषयो भूतकृतो	१४२२
२८६	वा मेघाम्बुभवो विदुर्या	१४२१
१०२५	वा रोहत्याङ्गिरसीः	३४०
३१५	वा रोहिणीदेवत्याः	४९१
२८४	वाङ्गिरसमवयो यावगस्ति	१७२२
३४७	वावतीः कियतीश्वेमाः	३३६
८७४	वावती यावापृथिवी वरिष्णा	७९१
२८८	वावतीनामोषधीनां गावः	३४८
१५५१	वावतीषु मनुष्या भेषजं	३४९
५०८	वावतीनां पारस्वतं	१३४२

३१ दै. [आयुर्वेद०]

यावद् दाताभिमनस्येत	११५१
यावन्तो अस्याः पृथिवीं	१३११
यावारेमाथे बहु साकम्	१७१६
या शशाप शपनेन	३८२, ७३६
याश्चाहं वेद वीरुधो	३४१
याश्चेदमुपशृण्वन्ति	३२१
यासां राजा वरुणो याति	८७७, ९१७
यासां देवा दिवि कृण्वन्ति	९१८
यासु राजा वरुणो यासु	८७८
यास्तिरश्चरुपर्षन्ति	२८७
यास्ते धाना अनुकिरामि	२१४६, २१७६, २१९३
यास्ते शतं धमनयो	६२१
यास्ते शोचयो रंहयो	२०३३
या हृदयमुपपर्षन्ति	२८५
युजे वां ब्रह्म पूर्वं	२२७५
युनक्तु देवः सविता प्रजानन्	१९३८
युवा सुवासाः परिवीत आगात्	२२६२
युष्मा इन्द्रोऽवृणीत वृत्रतूथे	९३८
यूयमग्ने शंतमाभिस्तनूभिः	२१६०
ये अस्या ये अङ्गया	७८०
ये अग्निजा ओषधिजा अहीनां	८३०
ये अग्निदग्धा ये अनग्निदग्धा	२०००, २०५९
ये अग्रवः शशमानाः परेयुः	२०७१
ये अङ्गानि मदयन्ति	२९०
ये अत्रयो अङ्गिरसो नवग्वा	२१०३
ये अपीषन् ये अदिहन्	७३६
ये अमृतं विभृथो ये हवीषि	१७०९
ये अग्ने जातान् मारयन्ति	१३८५
ये उस्त्रिया विभृथो ये वनस्पतीन्	१७१०
ये क्रीलालेन तर्पयथो ये घृतेन	१७११
ये कुकुन्धाः कुकूरमाः	१३७७
ये क्रिमयः पर्वतेषु वनेषु	६९५
ये क्रिमयः शितिकक्षा	७००
ये च जीवा ये च मृता	२२०७
ये चित् पूर्वं ऋतसाता	२०३९
ये चेह पितरो ये च नेह	१९९९
ये तातृषुर्देवत्रा जेहमाना	१९९५, २१३०

ये ते नाड्यौ देवकृते	५०१
ये ते पूर्वे परागता	२१४९
ये ते सरस्व ऊर्मयो	१०४७
येऽत्र पितरः पितरो	२२३६
ये त्रयः कालकाजा	१५८९
ये त्रिषप्ताः परियन्ति	१४१५
ये त्वा कृत्वालेभिरे	१६२४
ये दस्यवः पितृषु प्रविष्टा	२०५२
ये देवा दिविषदो	१७४५
ये देवा दिविष्ठ ये पृथिव्या	५७
ये देवानामृत्विजो ये च	२२५४
येन ऋषयो बलमद्योतयन्	१६८९
येन कृशं वाजयन्ति	१३४४
येन देवा अमृतमन्वर्विन्दन्	१६२०
येन देवा अमुराणाम्	७६५
येन देवा ज्योतिषाणाम्	१२६५
ये नः पितुः पितरो ये	२०७३, २१२९, २१३७
ये नः पूर्वे पितरः सोम्यासो	१२२४
येन सोम साहन्त्यासुरान्	७६४
येन सोमादितिः पथा	७६३
येना श्रवस्यवश्चरथ	१८००
येना सहस्रं वहसि	११९९
ये निखाता ये परोप्ता	२०५८
ये पूर्वे बध्वो यन्ति	१३८०
येभिः पाशैः परिवित्तो	१६७२
ये मृत्यव एकशतं	५३
ये यक्ष्मासो अर्भका	१५६८
ये युध्यन्ते प्रधनेषु	२०४१
ये बध्वश्चन्द्रं वहतुं	२३३६
येवाषासः कष्कषासः	७०२
ये वृक्णासो अधि क्षमि	२२६५
ये वो देवाः पितरो ये च	५६
ये शालाः परितृत्यन्ति	१३७६
येऽश्रद्धा धनकाम्या	२६७
येषां पश्चात् प्रपदानि	१३८१
येषां प्रयाजा उत वानुयाजा	५८

ये सत्यासो हविरदो	१९९६, २१३१
ये सूर्यं न तितिक्षन्त	१३७८
ये सूर्यात् परिसर्पन्ति	१३९०
येऽस्माकं पितरस्तेषां	२२१८
ये स्नाकस्यं मणिं जना	१४३७
यो अक्ष्यौ परिसर्पति	६९८
यो अग्निः कव्यात् प्रविवेश	२२३
यो अङ्गयो यः कर्ण्यो	१८७
यो अग्रतो रोचनानां	१४२५
यो अनिध्मो दीदयदप्स्वन्तर्ध	९०४
यो अन्तरिक्षेण पतति	७६१
यो अस्य समिधं वेद	१५१
योगक्षेमं व आदाय	२३४५
यो गर्भमोषधीनां	९९१
यो गिरिविजयाय	४३७
यो जायमानः पृथिवीम्	१९३१
यो दध्रे अन्तरिक्षे न मद्वा	२१४१
यो देवाः कृत्यां कृत्वा	३८९
यो न जीवेऽसि न मृतो	६३३
यो न पाप्मन् न जहासि	१७७१
यो न शपादशपतः	१७७५, १७७६
यो नो अग्निः पितरो हृत्सु	२४९
यो नो अग्निर्गार्हपत्यः	१५३८
यो नो अश्वेषु वीरेषु	२३१
योऽप्यग्निरिति तं सृजामि	१८०९
यो ममार प्रथमो मर्त्यानां	२०९६
यो मे राजन् युज्यो वा	६२४
यो यजाति यजात इत्	२२४०
यो व आपोऽग्निराविवेश	१८१०
यो वर्धन ओषधीनां	९८६
यो वः शिवतमो रसः	८८०
यो वा अभिभुवं नामतुं	१११८
यो वा उद्यन्तं नामतुं	१२१७
यो वै कुर्वन्तं नामतुं	१२१४
यो वै नैदाघं नामतुं	१२१३
यो वै पिन्वन्तं नामतुं	१२१६
यो वै संयन्तं नामतुं	१२१५

३६, २१३१	वो वो वृताभ्यो अकृणोडु
१३७८	वोऽस्मान् द्वेष्टि तमास्मा
१३९०	वो हरिमा जायान्यो
२२१८	वो ते दूतौ निर्ऋत इदम्
१४३७	वो ते बलास तिष्ठतः
६९८	वो ते मातोऽन्ममार्ज
२२३	वो ते यानौ यम रक्षितारौ
१८७	वो मरदाजमवथो यौ
१४२५	वो मेघातिथिमवथो यौ
९०४	वो व्याघ्राववरूढौ जिघत्सतः
७६२	वो स्यावाक्षमवथो वक्ष्यन्
१५२	रसन्तु त्वाग्रयो ये अप्सवन्ता
२३४५	रखेव वरायाश्च अभिक्षिपन्
९९१	रखे मे वचसे सोम्याय
४३७	रखे मे पोषं सवितोत वायुः
१९३१	रखेभिरस्मा अहभिर्दशस्येत्
२१४१	रखे माता नमः पिता
३८९	रिद्वदो वृषदती
६३३	रिद्वदेव पराशासं
१७७१	रखन् परिजन् मृगन्
१७७६	रख मा वेनश्च मा हासिष्टो
२४९	रख मृगमस्यमृतस्य नाभिः
१५३८	रखो वो प्रीवा अक्षरैत्
२३१	रिद्वदं दमे घपलान् मे
१८०९	रखे मे वयोवयः
२०९६	रखे मे वयोवयः
६२४	रखे मे वयोवयः
२२४०	रखे मे वयोवयः
१८१०	रखे मे वयोवयः
९८६	रखे मे वयोवयः
८८०	रखे मे वयोवयः
१११८	रखे मे वयोवयः
१११७	रखे मे वयोवयः
१११४	रखे मे वयोवयः
१११३	रखे मे वयोवयः
१११२	रखे मे वयोवयः
११११	रखे मे वयोवयः
१११०	रखे मे वयोवयः
११०९	रखे मे वयोवयः
११०८	रखे मे वयोवयः
११०७	रखे मे वयोवयः
११०६	रखे मे वयोवयः
११०५	रखे मे वयोवयः
११०४	रखे मे वयोवयः
११०३	रखे मे वयोवयः
११०२	रखे मे वयोवयः
११०१	रखे मे वयोवयः
११००	रखे मे वयोवयः
१०९९	रखे मे वयोवयः
१०९८	रखे मे वयोवयः
१०९७	रखे मे वयोवयः
१०९६	रखे मे वयोवयः
१०९५	रखे मे वयोवयः
१०९४	रखे मे वयोवयः
१०९३	रखे मे वयोवयः
१०९२	रखे मे वयोवयः
१०९१	रखे मे वयोवयः
१०९०	रखे मे वयोवयः
१०८९	रखे मे वयोवयः
१०८८	रखे मे वयोवयः
१०८७	रखे मे वयोवयः
१०८६	रखे मे वयोवयः
१०८५	रखे मे वयोवयः
१०८४	रखे मे वयोवयः
१०८३	रखे मे वयोवयः
१०८२	रखे मे वयोवयः
१०८१	रखे मे वयोवयः
१०८०	रखे मे वयोवयः
१०७९	रखे मे वयोवयः
१०७८	रखे मे वयोवयः
१०७७	रखे मे वयोवयः
१०७६	रखे मे वयोवयः
१०७५	रखे मे वयोवयः
१०७४	रखे मे वयोवयः
१०७३	रखे मे वयोवयः
१०७२	रखे मे वयोवयः
१०७१	रखे मे वयोवयः
१०७०	रखे मे वयोवयः
१०६९	रखे मे वयोवयः
१०६८	रखे मे वयोवयः
१०६७	रखे मे वयोवयः
१०६६	रखे मे वयोवयः
१०६५	रखे मे वयोवयः
१०६४	रखे मे वयोवयः
१०६३	रखे मे वयोवयः
१०६२	रखे मे वयोवयः
१०६१	रखे मे वयोवयः
१०६०	रखे मे वयोवयः
१०५९	रखे मे वयोवयः
१०५८	रखे मे वयोवयः
१०५७	रखे मे वयोवयः
१०५६	रखे मे वयोवयः
१०५५	रखे मे वयोवयः
१०५४	रखे मे वयोवयः
१०५३	रखे मे वयोवयः
१०५२	रखे मे वयोवयः
१०५१	रखे मे वयोवयः
१०५०	रखे मे वयोवयः
१०४९	रखे मे वयोवयः
१०४८	रखे मे वयोवयः
१०४७	रखे मे वयोवयः
१०४६	रखे मे वयोवयः
१०४५	रखे मे वयोवयः
१०४४	रखे मे वयोवयः
१०४३	रखे मे वयोवयः
१०४२	रखे मे वयोवयः
१०४१	रखे मे वयोवयः
१०४०	रखे मे वयोवयः
१०३९	रखे मे वयोवयः
१०३८	रखे मे वयोवयः
१०३७	रखे मे वयोवयः
१०३६	रखे मे वयोवयः
१०३५	रखे मे वयोवयः
१०३४	रखे मे वयोवयः
१०३३	रखे मे वयोवयः
१०३२	रखे मे वयोवयः
१०३१	रखे मे वयोवयः
१०३०	रखे मे वयोवयः
१०२९	रखे मे वयोवयः
१०२८	रखे मे वयोवयः
१०२७	रखे मे वयोवयः
१०२६	रखे मे वयोवयः
१०२५	रखे मे वयोवयः
१०२४	रखे मे वयोवयः
१०२३	रखे मे वयोवयः
१०२२	रखे मे वयोवयः
१०२१	रखे मे वयोवयः
१०२०	रखे मे वयोवयः
१०१९	रखे मे वयोवयः
१०१८	रखे मे वयोवयः
१०१७	रखे मे वयोवयः
१०१६	रखे मे वयोवयः
१०१५	रखे मे वयोवयः
१०१४	रखे मे वयोवयः
१०१३	रखे मे वयोवयः
१०१२	रखे मे वयोवयः
१०११	रखे मे वयोवयः
१०१०	रखे मे वयोवयः
१००९	रखे मे वयोवयः
१००८	रखे मे वयोवयः
१००७	रखे मे वयोवयः
१००६	रखे मे वयोवयः
१००५	रखे मे वयोवयः
१००४	रखे मे वयोवयः
१००३	रखे मे वयोवयः
१००२	रखे मे वयोवयः
१००१	रखे मे वयोवयः
१०००	रखे मे वयोवयः

१८२, १४५७

वराहो वेद वीरुधं	३४६
वर्चसा मां समनक्त्वभिर्मेधां	२०९४
वर्चसा मां पितरः सोम्यासो	२०९३
वर्चसो यावापृथिवी संप्रहणी	२२५१
वर्म मह्यमयं मणिः	१४७९
वर्म मे यावापृथिवी	१४४८
वर्ष वनुष्वापि गच्छ देवान्	१३२४
वषट् ते पूषन्नस्मिन्सूतौ	१४०५
वसोर्या घारा मधुना प्रपीना	१३१२
वस्योभूयाय वसुमान् यज्ञो	१९०५
वाङ् म आसन्नसोः प्राणः	१५७
वाजः पुरस्तादुत मध्यतो	३६१
वाजो नः सप्त प्रदिशः	३५९
वाजो नो अद्य प्रसुवाति	३६०
वात इव वृक्षान् नि मृणीहि	१६३२
वाताज्जातो अन्तरिक्षाद्	१४२४
वातात् ते प्राणमविदं	२९
वातं ब्रूमः पर्जन्यम्	१७३९
वायोः पूतः पवित्रेण	१७८७
वायोः सवितुर्विदधानि	१६९९
वारिदं वारयातै	७९८
वि प्राम्याः पशव आरण्यैः	१७०
वि जिह्वीष्व बार्हत्सामे	१३५४
वि जिह्वीष्व वनस्पते	१३९९
वि ते भिनद्धि मेहनं	१४०९
वि ते मदं मदावति	८०१
वि ते सुखामि रशनां	१६८०
वि ते हनव्या शरणिं	६४१
वि देवा जरसावृतन्	१६८
विद्य ते सर्वाः परिजाः पुरस्ताद्	१९१२
विद्य ते स्वप्न जनित्रं प्राह्याः	१८३५
विद्य ते स्वप्न जनित्रं देवजामीनां	६३४, १८४२
विद्य ते स्वप्न जनित्रं निर्ऋत्याः	१८३८
विद्य ते स्वप्न जनित्रं निर्भूत्याः	१८४०
विद्य ते स्वप्न जनित्रमभूत्याः	१८३९
विद्य ते स्वप्न जनित्रं पराभूत्याः	१८४१
विद्य वै ते जायान्य जानं	५११

विद्या शरस्य पितरं चन्द्रं ५७४
 विद्या शरस्य पितरं पर्जन्यं ५७१, ६६४
 विद्या शरस्य पितरं मित्रं ५७२
 विद्या शरस्य पितरं वरुणं ५७३
 विद्या शरस्य पितरं सूर्यं ५७५
 विद्रधस्य बलासस्य १८५
 विध्य दर्भ सपत्नान् मे १५२२
 विध्याम्यासां प्रथमाः ५०४
 विभिन्दती शतशाखा ४००
 विमोक्षश्च मार्द्रपविश्व मा १८२५
 वि लपन्तु यातुधाना ७६९
 विवस्वान् नो अभयं कृणोतु २१३९
 विवस्वान् नो अमृतत्वे दधातु २१४०
 वि वृक्षान् हन्त्युत हन्ति ९७५
 विश्वरूपं चतुरक्षं किमि ७१०
 विश्वरूपां सुभगाम् ४०९
 विश्वव्यचा घृतपृष्ठो भविष्यन् १२९०
 विश्वान् देवानिदं ब्रूमः १७५२
 विश्वामित्र जमदग्ने वसिष्ठ २०९९
 विश्वे देवा मरुत इन्द्रो ८९
 विश्वे देवा वसवो रक्षते० ५५
 विषितं ते वस्तिविलं ५७८
 विष्टारिणमोदनं ये पचन्ति १२२३, १२२४
 विष्णुर्धनकतु बहुधा तपांसि १९४२
 विष्णुर्योनिं कल्पयतु १३५०
 विष्णोः शर्मासि शर्म १२७१
 विश्वश्चस्तस्माद् यक्ष्मा २०३
 विसल्पस्य विद्रधस्य २२१
 विहहो नाम ते पिता ४६७
 वीदं मध्यमवास्पद् ६०८
 वीमां मात्रां मिमीमहे २०६५
 वीमे द्यावापृथिवी इतो १७१
 वीहि स्वामाहुतिं जुषाणो ५१६
 वृक्षं यद् गावः परिष्वजाना ६६६
 वृक्षं वृक्षमा रोहसि वृष० ४३०
 वृत्रस्यासि कनीनकः ६१२
 वृश्च दर्भ सपत्नान् मे १५१९

वृषभोऽसि स्वर्ग ऋषीन् १२६३
 वृषा मतीनां पवते विचक्षणः २२०८
 वृषा मे रवो नभसा न ८३६
 वृषा वो अंशुर्न किला २३०२
 वृष्ण ऊर्मिरसि राष्ट्रदा १०९४
 वैयाघ्रो मणिर्वीर्यां ३३७
 वैवस्वतः कृणवद् भागधेयं १२६७
 वैश्वदेवीं वर्चस आ रभध्वं २४४
 वैश्वानरः पविता मा पुनातु १६७५
 वैश्वानरस्यैनं दंष्ट्रयोः १८५८
 वैश्वानराय प्रति वेदयामि १६७४
 वैश्वानरे हविरिदं जुहोमि २१८५
 व्यावात् ते ज्योतिरभूद् २६
 व्याकरोमि हविषाहमेतौ २४८
 व्याघ्रेऽहयजनिष्ठ वीरो ८७
 व्यात्यां पवमानो वि १६९
 व्रजं कृणुध्वं स हि वो २२५१
 व्रतेन त्वं व्रतपते समक्तो ५०६
 व्रीहिमत्तं यवमत्तम् १६०
 शकवरी स्थ पशवो १८३४
 शङ्खेनामीवाममर्ति १४२६
 शं च नो मयश्च नो ८६२
 शणश्च मा जङ्गिडश्च ७०
 शतं या भेषजानि ते ५६०
 शतं वीरानजनयच्छतं १५६९
 शतं वो अम्ब धामानि ३०२
 शतकाण्डो दुश्च्यवनः १९२३
 शतं च न प्रहरन्तो १५७४
 शतं च मे सहस्रं च ६६१
 शतं जीव शरदो वर्धमानः ७५, २०८
 शतधारं वायुमर्कं स्वर्विदं २१०९
 शतं ते दर्भ वर्माणि १५३३
 शतं तेऽयुतं हायनान् ४७
 शतपवित्राः स्वधया मदन्तीः ८७३
 शतमहं दुर्णीन्नीनां १५७१
 शतवारो अनीनशद् यक्ष्मान् १५६६

१२६३ शतस्य यमनीनां
 २२०८ श्रुतेन मा परि पाहि
 ८३६ सं त आपो धन्वन्याः
 २३०२ सं त आपो हैमवतीः
 १०९४ सं तप माति तपो अग्ने
 ३३७ सं ते अग्निः सहाङ्गिरस्तु
 १२६७ सं ते नौहारो भवतु
 २४४ सं ते वातो अन्तरिक्षे
 १६७५ सं न आपो धन्वन्याः
 १८५८ सं नो देवी वृश्निपण्यंशं
 १६७४ सं नो देवीभिरष्टय
 २१८५ सं नो भवन्त्वप
 २६ सं नो वातो वातु
 २४८ शतारमेतु शपथो यः
 ८७ शमप्रयः समिद्धा आ
 १६९ शममे पथात् तप शं
 २२५१ शमिता नो वनस्पतिः
 ५०६ सं मे परस्मै गात्राय
 १६० सरदे त्वा हेमन्ताय
 १८३४ शरसः कुशरासो
 १४२६ शर्म यच्छ्रवोपधिः
 ८६२ शन्याद् विषं निरवोचं
 ७० श्विः कपोत इषितो
 ५६० श्विवा नः शंतमा भव
 १५६९ शिवानमोनप्सुपदो हवामहे
 ३०१ शिवामिष्टे हृदयं तर्पयामि
 १४२३ शिवारस्ते सन्त्वोपधय उत
 १५७४ शिवे ते स्तां यावापृथिवी
 ६६१ शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापः
 ७५, २०८ शिवो वो गोष्ठो भवतु
 २१७९ शिवो ते स्तां ब्रौह्मिव वै
 १५३३ शीर्षं किं शीर्षमयं
 ४७ शीर्षं श्वती नस्वती कर्गिनी
 ८७३ शीर्षं लोकं तृतीयकं
 १५७१ शीर्षमयमुपदत्त्याम्
 १५६६ शुक्रेषु ते हरिमाणं
 रुदाः पूता योषितो यज्ञिया

५५७
 ४०३
 ९२२
 ९२८
 २०६०
 १६६३
 २१३८
 १६६४
 ९६४
 ४१६
 ८८२
 ५७०
 ६३८
 ६७२
 २१६२
 २१६१
 ३७३
 १९१
 ४८
 ७७३
 ४०८
 ७९४
 १५८०
 १०९२
 १८१५
 ९६
 ४१
 ४०
 ९१९, १८१४
 २३२४
 ४४
 २७२
 १६१७
 ४५६
 ४४६
 ४९२, ५४६
 १२४५, १२५५

शुम्भनी यावापृथिवी
 शुम्भन्तां लोकाः पितृषदना
 शुष्यतु मयि ते हृदयम्
 शुद्रकृता राजकृता
 शृङ्गाणीवेच्छृङ्गाणां सं दहश्रे
 शृङ्गाभ्यां रक्षो नुदते
 शृतं त्वा हव्यमुप सीदन्तु
 श्याममयोऽस्य मांसानि
 श्यामश्च त्वा मा शबलः
 श्यामा सरूपं करणी
 श्यावदता कुनखिना
 श्राम्यतः पचतो विद्धि
 श्रेष्ठमसि भेषजानां
 श्वेवैकः कपिरिवैकः
 षट् च मे षष्टिश्च मे
 षष्ठ्यां शरस्तु निधिपा
 स इन्द्रो जो यो गृहवे
 स इद् व्याघ्रो भवत्यथो
 स उत् तिष्ठ प्रेहि प्र द्रव
 संयतं न वि ष्परद्
 सं राजानो अगुः समृणानि
 सं वः सृजत्वर्थमा
 संवत्सरं शशयाना
 संवननीं समुष्पला
 सं विशन्तिवह पितरः
 सं वो गोष्ठेन सुषदा
 सं वोऽवन्तु सुदानव
 सं सं स्रवन्तु नद्यः
 सं हि शीर्षाण्यग्रभं
 स ग्राह्याः पाशान्मा मोचि
 संकसुको विकसुको
 सं कामतं मा जहीतं शरीरं
 संख्याता स्तोकाः पृथिवीं
 सं गच्छस्व पितृभिः सं
 सचेतसौ ब्रह्मणो यौ
 स जङ्गिडस्य महिमा

१७६८
 २२१७
 ६७८
 १६१८
 २२६८
 १५६७
 १२५३
 ११३३
 १४
 ५२४
 ४०६
 १२५८
 ४५८
 ७२५
 ६५८
 १३०५
 २३१३
 १४४२
 ४२६
 ८१५
 १९१४
 २३२१
 ९९४, १०१६
 ६७९
 २०५३
 २३२०
 १०१०
 २२४६
 ८२६
 १८७१
 २१०
 १४४
 १२९९
 १९७४, २१३६
 १७२१
 १५५५

संजग्माना अविभ्युषीः	२३२२	समुद्रस्य त्वा क्षित्या	९५४
संजीवा स्थ सं जीव्यासं	९३५	समुद्राज्जातो मणिः	१४२८
सत्यजितं शपथयावनीं	३८१	समुद्रे ते हृदयमप्स्वन्तः	११०४
सत्यं चर्तं च चक्षुषी विश्वं	१२०३	स मृत्योः पङ्क्तिशात् पाशान्मा	१९००
सत्याय च तपसे देवताभ्यो	१३१७	समौ चिद्धस्तौ न समं विविष्टः	२३१९
स नः सिन्धुमिव नावाति	१७६४	सं बर्हिर्क्तं हविषा घृतेन	२२७४
सनादग्रे मृणसि यातुधानान्	७४८	सं माग्ने वर्चसा सृज	९६०
स नो रक्षतु जङ्घिडो	१५६२	सं मा सिञ्चन्तु मरुतः	१४१
सं ते मज्जा मज्ज्ञा भवतु	४२३	स य एवं विदुष उपद्रष्टा	११८०
सं ते क्षीर्णः कपालानि	२९३	स य ओदनस्य महिमानं	११४९
सं ते हन्मि दत्ता दतः	८५१	सरस्वति त्वमस्मौ अविड्ढि	१०५५
सपत्नहा शतकाण्डः सहस्वान्	१९३२	सरस्वति देवनिदो नि बह्वय	१०६१
सपत्नक्षयणं दर्भं द्विषतः	१५३५	सरस्वति या सरथं ययाथ	१०८४, २००९, ११९७
सप्त क्षरन्ति विशवे मरुत्वते	१०८९, २२७९	सरस्वति व्रतेषु ते	१०९०
सप्त च मे सप्ततिश्च मे	६५९	सरस्वती यां पितरो हवन्ते	१०८५
सप्त च याः सप्ततिश्च	१६८३	सरस्वती देवयन्तो हवन्ते	१०८३, २००७, २१९५
सप्त मेघान् पशवः पर्यगृह्णन्	१२८७	सरस्वतीमनुमतिं भगं	१७८०
सप्तर्षीन् वा इदं ब्रूमो	१७४४	सरस्वतीं पितरो हवन्ते	२००८, २१९६
समग्रयो विदुरन्यो अन्यं य	१३२१	सरस्वत्यभि नो नेषि वस्यो	१०७१
समं ज्योतिः सूर्येण	३८८	सरूपा नाम ते माता	५२३
समस्मिन्नोके समु देवयाने	११७४	सरूपौ द्वौ विरूपौ द्वौ	६९९
समाचिनुष्वानुसंप्रयाह्यग्रे	१२६४	स रेतोधा वृषभः शश्वतीनां	९९०
स मा जीवीत् तं प्राणो	१८६८	सर्वोः समग्रा ओषधीः	३४१
समानलोको भवति	१२१०	सर्वानग्रे सहमानः सपत्नान्	२६१
समानां मासामृतुभिर्द्वा वयं	६२	सर्वान्तसमागा अस्मिजित्य	१३०७
समाप ओषधीभिः सम्	९३२	सर्वान् देवानिदं ब्रूमः	१७५३
समाहर जातवेदो	७४९	सर्वेषां च किमीणां	७०८
समिद्धस्य श्रयमाणः पुरस्ताद्	२२६०	सर्वो वै तत्र जीवति	५१
समिद्धो अग्रे आहुत	२३४	स वावृधे नर्यो योषणासु	१०४५
समिद्धो अग्रे समिधा समिध्यस्व	१२३२	सवितः श्रेष्ठेन रूपेण	१३५७
समिन्धते अमर्त्यं	२१९१	सवितुर्वः प्रसव उत्पुनामि	१०९७
समिन्धते संकसुकं स्वस्तये	२२७	सस्रुषीस्तदपसो दिवा	९६८
समिमां मात्रां मिमीमहे	२०६८	सहस्रधा प्रथमा	४१७
समीक्ष्यन्तु तविषाः सुदानवो	१००५	सहस्रणीथाः कवयो	२०४१
समीक्ष्यस्व गायतो नर्मांसि	१००६	सहस्रधामन् विशिखान्	३९१
समुत्पतन्तु प्रदिशो नभस्वतीः	१००४	सहस्रधारं शतधारमुत्समक्षितं	२१८६
समुद्रज्येष्ठाः सलिलस्य मध्यात्	८७५	सहस्रपृष्ठः शतधारो अक्षितो	११४८

२५४	महत्काङ्क्षो वृषभो	६१३	सोमं मन्यते पपिवान्	४७५
१४२८	महत्काङ्क्षेण शतवीर्येण	७४, २०७	सोम राजन्तस्ज्ञानमा	१२५४
११०४	महत्काङ्क्षो वृत्रहणा हुवे	१७१५	सोमस्येव जातवेदो	७५०
१९००	महत्कार्यः शतकाण्डः	१९३३	सोमाय पितृमते स्वधा	२२२२
२३१९	महत्स्व नो अभिमार्ति	१९२८	सोमारुद्रा युवमेतानि	१७३१
२२७४	साकं यस्मि प्र पत	३१३	सोमारुद्रा वि वृहत्	१७३०
९६०	साकं सजातैः पयसा सह	१२३५	सोमेनादित्या बलिनः	४७४
१४१	सा नो विश्वा अति द्विषः	१०६७	सोमो मा विश्वैर्देवैरुदीच्या	२१११
११८०	सिद्धस्येव स्तनयोः सं	३३८	सोमो मा सौम्येनावतु	५३९
११४९	सिन्धुपत्नीः सिन्धुरात्रीः	९७३	सोमो राजाधिपा मृडिता	१६३७
१०५५	सिन्धोर्गर्भोऽसि विद्युतां	६०६	सोऽरिष्ट न मरिष्यसि	५०
१०६१	सिन्धोर्गर्भोऽसि विद्युतां	४३५	स्तरिह त्वद् भवति सूते	९८७
२, ११९७	सोताः पशवः सिकता	११३८	स्तुवानमग्न आ वह	७६७
१०९०	सोसे मले सादयित्वा	२३६	स्तुहि श्रुतं गर्तसदं	२००६
१०८५	सोसे मृद्वं नडे मृद्वं	२३५	स्तेगो न क्षामत्येवि	२००५
७, २१९५	सुर्माणिः सुर्यो देवयन्तो	२१०५	स्योनास्मै भव पृथिवि	२०४३
१७८०	सुक्षेत्रिया सुगातुया	१७५८	साकत्येन मणिन ऋषिणा	१४३८
२, २१९६	सुखं रथं युयुजे सिन्धुः	१०४४	स्वधा पितृभ्यः पृथिवि	२२२८
१०७२	सुखात् जातवेदसम्	१६८८	स्वधा पितृभ्यो अन्तरिक्ष	२२२९
५२३	सुते अचरे अधि वाचमकत	२३०६	स्वधा पितृभ्यो दिवि	२२३०
६९९	सुवन्ति सोमं रथिरासो	२२९१	स्वप्नु माता स्वप्नु पिता	६१८
९९०	सुवन्ति सुर्यो देवयन्तो	४३८	स्वप्नं सुप्त्वा यदि	१४५८
३४१	सुवन्ति सुर्यो देवयन्तो	७९२	स्वप्नं स्वप्नाभिकरणेन	६१९
२६१	सुवन्ति सुर्यो देवयन्तो	१५९१	स्वर्गं लोकमभि नो	११८८
१३०७	सुवन्ति सुर्यो देवयन्तो	२२९७, २३२६	स्वश्वा सिन्धुः सुरथा	१०४३
१७५३	सुवन्ति सुर्यो देवयन्तो	५२१	स्वस्तिदा विशां पतिः	१४५२
७०८	सुवन्ति सुर्यो देवयन्तो	१८६२	स्वस्ति मात्र उत पित्रे	१६६१
५१	सुवन्ति सुर्यो देवयन्तो	१८२०	स्वस्त्यद्योषसो दोषसश्च	१८३३
१०४५	सुवन्ति सुर्यो देवयन्तो	१८१९	स्वाकं मे द्यावापृथिवी	५९०
१३५७	सुवन्ति सुर्यो देवयन्तो	१९२०	स्वादुष्किलायं मधुमाँ	२०१४
१०९७	सुवन्ति सुर्यो देवयन्तो	२०३१	स्वादो पितो मधो पितो	११०९
९६८	सुवन्ति सुर्यो देवयन्तो	१०९६	स्वायसा असयः सन्ति	१६३५
४१७	सुवन्ति सुर्यो देवयन्तो	१६६९	स्वासदसि सूषा अमृतो	१८२९
२०४२	सुवन्ति सुर्यो देवयन्तो	७८३	स्वासस्थे भवतमिन्दवे	२६२२
३२१	सुवन्ति सुर्यो देवयन्तो	१८३१	हंसा इव श्रेणिशो	२२६७
२१८६	सुवन्ति सुर्यो देवयन्तो	१४०७	हतासो अस्य वेशसो	७०७, ७१३
१२४८	सुवन्ति सुर्यो देवयन्तो	२०३८		

हतास्तिरश्चिराजयो	८२०	हिरण्यवर्णा सुभगा	
हतो येवाषः किमीणां	७०३	हिरण्यवर्णे सुभगे शुष्मे	१७८३
हतो राजा किमीणाम्	७०६, ७१२	हिरण्यवर्णे सुभगे सूर्य	४३४
हस्ताभ्यां दशशखाभ्यां	५५४	हिरण्यशृङ्ग ऋषभः	४३३
हरिणस्य रघुष्यदो	१९२	हिरण्यस्रगयं मणिः	१५७०
हरिमाणं ते अङ्गेभ्यो	२८०	हिरण्यानामेकोऽसि	१४८१
हिनोता नो अच्वरं	९११	हृदयात् ते परि क्लोमो	१४१९
हिमवतः प्र स्रवन्ति	९७१	हेतिः पक्षिणी न	२१२, २९६
हिरण्ययाः पन्थानः	४४१	होता यक्षद् वनस्पतिमभि	१५८१
हिरण्ययी नौरचरद्	४११, ४४०, ४५३	होता यक्षद् वनस्पतिः	२२७२
हिरण्यवर्णाः शुचयः	९१६	ह्वयामि ते मनसा	३७५, ३७६
			२०४५

॥ आयुर्वेद-प्रकरणं समाप्तम् ॥





दैवत-संहिता ।

(७)

रुद्रदेवता ।

संपादक

पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर,
साहित्यवाचस्पति, गीतालंकार
अध्यक्ष- स्वाध्याय-मण्डल

[स्व. नारायणजी पुरुषोत्तम विश्वस्तनिधिके बंधई निवासी विश्वस्तोने
संपूर्ण 'दैवत-संहिता' के मुद्रणके लिये १५०००) रु०
दिये, इस धनके भागसे यह विभाग मुद्रित हुआ है ।]

स्वा ध्या य म ण्ड ल, पा र डी

संवत् २०१५, शक १८८०, सन् १९५८

प्रकाशक :

वसन्त श्रीपाद सातवलेकर, बी. ए.,

स्वाध्याय-मण्डल, भारत मुद्रणालय,

पोस्ट- 'स्वाध्याय मण्डल (पारडी)'

पारडी (जि. सुरत)

द्वितीय वार

मूल्य १.७५ न. पैसे

मुद्रक :

वसन्त श्रीपाद सातवलेकर, बी. ए.,

स्वाध्याय-मण्डल, भारत मुद्रणालय,

पोस्ट- 'स्वाध्याय-मण्डल (पारडी)'

पारडी (जि. सुरत)



रुद्रदेवताका परिचय ।

‘रुद्र’ के विषयमें निरुक्तका मत ।

‘निघण्टु’ नामक वैदिक कोश में अ० ३।१६ में ‘स्तोतारामां’ में ‘रुद्र’ शब्दका निर्देश किया गया है। ‘रुद्र’ शब्दका ‘स्तोता’ स्तुति करनेवाला, ऐसा अर्थ निघण्टुकार के मतसे है। इसलिये निघण्टुकारके मतानुसार ‘रुद्र’ शब्द मनुष्यवाचक ही प्रतीत होता है। परंतु निरुक्तका शास्त्राचार्यने इस ‘रुद्र’ देवताका परिगणन मध्यस्थानीय रूप (निरु० अ० १०।११) में किया है।

अथातो मध्यस्थानां देवताः ॥ १ ॥ रुद्रो रीतीति सतः रोरुयमाणो द्रवतीति वा, रोदयतेवा, ‘यदरुदत्तद्रुद्रस्य रुद्रत्वम्’ इति काठकम् ‘यदरोदीत्तद्रुद्रस्य रुद्रत्वम्’ इति शारिद्रविकम् ॥

(निरुक्त, दैवतकाण्ड १०।११-६)

“अब मध्यम स्थान अर्थात् अन्तरिक्ष स्थानके देवोंका विचार करना है। ‘रु’ अर्थात् शब्द करना, इस अर्थका शब्द है, किंवा शब्द करता हुआ पिघलता है, पिघलका अर्थ है। रोनेके कारण इसको रुद्र कहा है। ऐसा काठक और शारिद्रविक शाखा संप्रदायवालोंका मत है।” अर्थात् ‘रुद्र’ देवता अन्तरिक्षमें है। मेघोंमें प्रथम यह गर्जनारूप शब्द करता है, और गर्जना करता है, मेघोंको द्रवरूप बनाकर वृष्टि कराता है। काठक और शारिद्रविक शाखा-संप्रदाय-वालोंका मत ऐतिहासिक है—

(१) स किल पितरं प्रजापतिमिषुणा विध्यन्त-
मनुशोचन्नरुदत् तद्रुद्रस्य रुद्रत्वम् ॥
(२) यदरोदीत्तद्रुद्रस्य रुद्रत्वम् ॥

(नि० भाष्य १०।११६)

“वह रुद्र अपने प्रजापति पिताको बाणसे विद्ध करता हुआ देखकर रोया, इसलिये उसका नाम रुद्र हुआ।” यह मत ऐतिहासिकोंका है। तथा—

एक एव रुद्रोऽवतस्थे न द्वितीयः ।

असंख्याताः सहस्राणि ये रुद्रा अधिभूम्याम् ।

.....इति ॥ (नि० १।१३)

“एक मंत्र कहता है कि ‘एक ही रुद्र है, वह अ-द्वितीय है।’ परन्तु दूसरे मंत्रमें कहा है कि ‘पृथ्वीमें असंख्य और हजारों रुद्र हैं।’

इस विषय में निरुक्तकार कहते हैं—

तासां महाभाग्यादेकैकस्या अपि बहूनि नाम-
धेयानि भवन्ति ॥ १ ॥.....तत्र संस्थानैकत्वं
संभोगैकत्वं चोपेक्षितव्यम् ।..... ॥

तत्रैतन्नरराष्ट्रमिव ॥ ५ ॥ (नि० दै. ७।२।५)

“उन देवताओंमें एक-एक देवताका महत्त्व विशेष होनेके कारण एक-एक देवताके अनेक नाम होते हैं।.....परंतु उनका स्थानसे और भोगसे एकत्व देखना चाहिए।..... जैसा मनुष्योंका राष्ट्र।”

अर्थात् एकएक देवताके विशेष गुणोंके कारण अनेक नाम हुआ करते हैं। नाम अनेक होनेपर भी भिन्न देवता नहीं होते हैं। अनेक शब्दोंसे एक ही देवताका बोध होता है।..... क्योंकि उनके स्थान और भोगकी एकता देखकर उनकी विविधतामें एकता देखनी चाहिए।..... जैसा राष्ट्रमें रंग-रूप-जातिके कारण अनेक प्रकारके लोग होनेपर भी उन सबमें एक राष्ट्रीयत्व होता है, उसी प्रकार अनेक देवताओंके ‘स्थानके और भोगके एकत्व’ के कारण उन अनेकोंमें एकत्व मानना उचित है।

इसलिये यद्यपि किसी मंत्रमें ‘एक ही रुद्र है’ ऐसा वचन आया अथवा दूसरे किसी मंत्रमें ‘हजारों रुद्र हैं’ ऐसा विधान

आगया, तथापि इतनेसे ही उनमें भेद है, ऐसा नहीं सिद्ध होता । यह उक्त निरुक्तवचनोंका तात्पर्य है ।

निरुक्तकार और क्या क्या कहते हैं, यह पहिले यहां देखेंगे और पश्चात् अन्य मतोंका विचार करेंगे—

अग्निरपि रुद्र उच्यते ॥ (नि. १०:७:२)

“ अग्नि को भी रुद्र कहते हैं । ” इस प्रकार ‘ रुद्र ’ शब्दका ‘ अग्नि ’ ऐसा अर्थ यहां निरुक्तकारने दिया है ।

‘ रुद्र ’ शब्दका ‘ परमात्मा, परमेश्वर ’ ऐसा अर्थ स्पष्टापूर्वक यद्यपि निरुक्तकारने नहीं दिया, तथापि ‘ एक ही देवताके अनेक नाम देवताके महत्त्वके कारण हुआ करते हैं । ’ ऐसा कहकर सूचित किया है कि परमात्माके अनेक नामोंमें ‘ रुद्र ’ भी एक नाम है; अर्थात् ‘ रुद्र ’ शब्दका परमेश्वरपर अर्थ भी हो सकता है ।

स्थानके एकत्वके कारण, भिन्न वर्णन होने पर भी, एकत्वकी कल्पना करनेकी सूचना निरुक्तकार यास्काचार्य पूर्वोक्त वचनमें देते हैं । सर्वव्यापक परमात्मा जैसा पृथ्वीपर है, वैसा ही अन्तरिक्षमें और ऊपर व्युलोकमें भी व्यापक होनेसे उसका स्थान सर्वत्र है; इसलिये सब स्थानके देवताओंके सब शब्द उस एक अद्वितीय महा देवताके वाचक हो सकते हैं । इस तर्कशास्त्रसे हम निरुक्तकारका भाव जान सकते हैं । यही भाव श्वेताश्वतर उपनिषद्में बिलकुल स्पष्ट है । देखिए—

रुद्रके विषयमें उपनिषत्कारोंकी संमति ।

श्वेताश्वतर उपनिषद्में ‘ एक रुद्र है, ’ इस विषयमें निम्न मंत्र आया है—

एको ह रुद्रो न द्वितीयाय तस्थुर्य इमांलोकानी-
शत ईशनीभिः । प्रत्यङ् जनास्तिष्ठति सं-
चुकोचान्तकाले संसृज्य विश्वा भुवनानि
गोपाः ॥ १ ॥ (श्वे. उ. ३:१२)

यही मंत्र निरुक्तभाष्यकारने निम्न प्रकार दिया है—

एक एव रुद्रोऽवतस्थे न द्वितीयो रणे निघ्न
पृतनासु शत्रून् ॥ संसृज्य विश्वा भुवनानि
गोप्ता प्रत्यङ् जनांसंचुकोचान्तकाले ॥

(नि. १:११४ दुर्गाचार्यटीका)

एक एव रुद्रो न द्वितीयाय तस्थे ॥ (तै. सं. १:१८:६:११)

“ एक ही रुद्र है, दूसरा रुद्र नहीं है । वह शत्रुओंको युद्धमें पराजित करता है । सब भुवनोंको उत्पन्न करके, उस सब

विश्वका संरक्षण करता है और अन्तकालमें सबका संकोच (प्रलय) करता है । ”

ऊपर दिये हुए श्वेताश्वतर मंत्रका अर्थ—“ एक ही रुद्र है, वह किसी दूसरेकी सहायताकी अपेक्षा नहीं करता । वह अपनी शक्तियोंसे इन सब लोकोंको स्वाधीन रखता है । और प्रत्येक मनुष्यके अन्दर रहता है । यह संरक्षक प्रभु सब विश्वको उत्पन्न करने और पालन करनेके पश्चात् अन्तकालमें सबको संकुचित करता है । ” तथा—

एको रुद्रो न द्वितीयाय तस्यै य इमांलोकानी-
शत ईशनीभिः ॥ (अथर्व-शिर. ५)

रुद्रमेकत्वमाहुः शाश्वतं वै पुराणम् ॥ अथर्व-शिर. ५
यो अग्नौ रुद्रो यो अप्सवन्तर्य ओषधीर्वारु-
आविवेश । य इमा विश्वा भुवनानि चकले
तस्यै रुद्राय नमोऽस्तवग्नये ॥ (अथर्व-शिर. ६)

“ एक ही रुद्र है । वह किसी दूसरेकी सहायता नहीं चाहता । जो इन सब लोक-लोकान्तरोंको अपनी शक्तियों द्वारा स्वाधीन रखता है । ‘ रुद्र ’ एक ही है ऐसा कहते हैं । वह शाश्वत और प्राचीन है । ” “ जो रुद्र अग्नि, जल, ओषधी, वनस्पति, आदिमें व्यापक है और जो इन सब भुवनोंको बनाता है, उस एक अद्वितीय तेजस्वी रुद्रके लिये नमस्कार है । ” तथा—

यो देवानां प्रभवश्चोद्भवश्च विश्वाधिपो रुद्रो
महर्षिः ॥ हिरण्यगर्भं जनयामास पूर्व स नो
बुद्ध्या शुभया संयुनक्तु ॥ ४ ॥ (श्वेता. उ. ३:१४)
यो देवानां प्रभवश्चोद्भवश्च विश्वाधिपो रुद्रो
महर्षिः ॥ हिरण्यगर्भं पश्यति जायमानं स
नो बुद्ध्या शुभया संयुनक्तु ॥ ११ ॥ (श्वेता. उ. ४:११)

“ जो सब देवताओंको जन्म देता है, जो सर्व दृष्ट और सब विश्वका अधिपति है, जिसने पहिले हिरण्यगर्भ के उत्पन्न किया था, वह एक प्रभु रुद्र हम सबको शुभ बुद्धि देवे । ”

इस प्रकार ‘ रुद्र ’ शब्दसे ‘ एक परमात्मा ’ का बोध उपनिषदोंमें लिया है । इससे सिद्ध है कि ‘ रुद्र ’ शब्द परमात्माका वाचक है । यद्यपि इस समयका कोई कोशकार ‘ रुद्र ’ शब्दका ‘ परमात्मा ’ ऐसा अर्थ नहीं देता, तथापि कृष्णयजुर्वेदमें श्वेताश्वतर उपनिषद्के उक्त वचन द्वारा उस शब्दका परमात्माका वाचक अर्थ निःसंदेह सिद्ध है ।

रुद्रके एकत्वके विषयमें वेदकी संमति ।

'रुद्र' के एकत्वके विषयमें निरुक्तकारने दिया हुआ मंत्र पूर्व स्थलमें दिया ही है । वह आजकल किसी संहितामें नहीं मिलता । इसलिये अनुमान है कि वह किसी अन्य शाखाग्रंथमें स्थित होगा और निरुक्तकारके समय वह शाखाग्रंथ उपलब्ध होगा । रुद्रके एकत्वके विषयमें वेदमें ये वचन हैं—

स धाता स विधाता स वायुर्नभ उच्छ्रितम् । ... ॥३॥

सोऽयमा स वरुणः स रुद्रः स महादेवः । ... ॥४॥

तमिदं निगतं सहः स एष एक एकवृदेक एव ॥१२॥

एते अस्मिन्देवा एकवृत्तो भवन्ति ॥१३॥ (अथर्व. १.३।४।२)

'वह ही धाता, विधाता, वायु, अर्यमा, वरुण, रुद्र और महादेव । उल्लेख यह आकाश ऊपर हुआ है, यह सब महान् शक्ति उसी में है । वह एक ही है । वह एक सर्वत्र व्यापता है । वह निश्चयसे एक है । सब देव उसमें एक जैसे होते हैं ।' इसमें बताया है कि एक सर्वव्यापक सर्वाधार आत्मतत्त्वका नाम भी रुद्र है ।

सर्वव्यापक रुद्रदेव ।

एक ही रुद्र सर्वत्र व्यापक है, इस आशयको निम्न मंत्र प्रकट कर रहा है—

यो अग्नौ रुद्रो यो अप्सन्तर्य ओषधीर्वीरुध

आविशे । य इमा विश्वा भुवनानि चाकल्पे

तस्मै रुद्राय नमोस्त्वग्नये ॥ (अथर्व. ७।९.२।१)

" जो एक रुद्र देव अग्नि, जल, औषधि, वनस्पति आदि प्राणोंमें व्याप्त है और जो सब भुवनोंको (चाकल्पे) बना सकता है, उस (अग्नये रुद्राय) एक तेजस्वी रुद्रदेवके लिये नमन है ।"

रुद्र मंत्र विलकुल स्पष्ट है और इससे रुद्रदेवकी सर्वव्यापक-ता सिद्ध होती है । जगत् की रचना करनेवाला, सब पदार्थोंमें व्यापक और सबका उपास्य जो देव है, उसीका उल्लेख यहां 'रुद्र' नामसे किया है ।

रुद्र शब्दके एकवचन होनेके कारण वह एक ही है, ऐसा सिद्ध होता है । तथा सर्वव्यापक जो होता है, एक ही हो सकता है । इससे भी उसका एकत्व सिद्ध हो जाता है ।

रुद्रदेवका ही सब कुछ है, ऐसा अथर्ववेदीय रुद्र-मंत्रमें कहा है—

तव चतस्रः प्रदिशस्तव द्यौस्तव पृथिवी तवेद-

सुप्रोक्तारिक्त्वा । तवेदं सर्वमात्मन्वद् यत्प्राणत्

शुषिषीमनु ॥ १० ॥

'रुद्र' । इन चार दिशाओंमें तथा बुलोक, पृथ्वी और इस

बड़े अन्तरिक्षमें जो कुछ है, वह सब तेरा ही है । जो कुछ (आत्मन्-वत्) आत्मायुक्त अर्थात् प्राण धारण करनेवाला है, जो इस पृथ्वीपर जीवनरूपसे रहता है, वह सब तेरा ही है ।"

इस तरह 'रुद्र' का सामर्थ्य और प्रभुत्व चारों ओर सब दिशा विदिशाओंमें है, ऐसा वर्णन इस मंत्रमें है । इससे सिद्ध होता है कि उस जगन्नियन्ता परमात्माका ही यह 'रुद्र' नाम है ।

केवल इतने ही प्रमाणोंसे 'परमात्मा' वाचक 'रुद्र' शब्द है, ऐसा सिद्ध होगा । तथापि परमात्माके अनेक गुण वेदमंत्रों द्वारा 'रुद्र' के साथ मिलते हैं वा नहीं, यह हम अब देखते हैं—

जगत् का पिता रुद्र ।

'पिता' का अर्थ 'रक्षक और अपने वीर्य द्वारा जन्म देने-वाला' ऐसा होता है । 'रुद्र' सब भुवनोंका पिता है, ऐसा निम्न मंत्रमें कहा है—

भुवनस्य पितरं गीर्भिराभी रुद्रं दिवा वर्धया

रुद्रमक्तौ । बृहन्तमृष्वमजरं सुषुप्तमृधग्धुवेम

कविनेषितासः ॥ (ऋ. ६।४९।१०)

" (दिवा अक्तौ) दिनमें और रात्रीमें (आभिः गीर्भिः)

इन वचनोंके साथ (भुवनस्य पितरं) सब सृष्टिके पिता (रुद्रं) बलवान् रुद्र देवकी (वर्धया) बधाई करो । उनके महत्त्व-

की प्रशंसा करो । उस (बृहन्तं) महान् (ऋष्वं) श्रेष्ठ ज्ञानी

तथा (अ-जरं) जीर्ण अथवा क्षीण न होनेवाले और (सु-सु-

म्नं) अत्यंत उत्तम विचारशील, रुद्रदेवताकी, (कविना इषि-

तासः) बुद्धिवानोंके साथ उन्नतिकी इच्छा करनेवाले हम सब

(ऋधक् हुवेम) विशेष प्रकारसे उपासना करेंगे ।"

इस मंत्रमें वह 'रुद्र' देव 'महान्, ज्ञानी, अजर, अमर और सुविचारी' है, ऐसा कहा है । ये उनके गुण परमात्माके

गुणोंके साथ मिलनेवाले ही हैं, तथा 'भुवनस्य पितरं रुद्रं' ये शब्द रुद्रदेवका वास्तविक स्वरूप बताते हैं ।

'सृष्टिका पिता रुद्र है ।' जगत्का पिता जो अजर, अमर, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् है, वह परमात्माके सिवा दूसरा कौन हो सकता है ?

इस प्रकार इस मंत्रका 'रुद्र' देव उस अद्वितीय परमात्माका ही नाम है, ऐसा दीखता है । इस जगदीशका वर्णन निम्न मंत्रमें

देखने योग्य है—

सब सृष्टिका स्वामी रुद्र ।

स्थिरेभिरंगैः पुरुरूप उग्रो बभूः शुक्रेभिः

पिपिशे हिरण्यैः । ईशानादस्य भुवनस्य भूरेर्न

वा उ योषद्बुद्रादस्युर्म ॥ (ऋ. २।३।१९)

“ (स्थिरोभिः अंगैः) दृढ अवयवोंसे (पुरु-रूपः) अनेक पदार्थोंको आकार देनेवाला (उग्रः) महान् प्रबल और (बभ्रुः) तेजस्वी रुद्र (शुक्रैभिः हिरण्यैः) शुद्ध तेजोंके साथ (पिपिशे) शोभता है । (अस्य भुवनस्य) इस सब सृष्टिके (भूरेः ईशानात् रुद्रात्) महान् स्वामी रुद्रदेवसे (असुर-यं) उसकी महान् जीवनशक्ति (न वा उ योषत्) कभी पृथक् नहीं होती । ”

यह ‘ रुद्र ’ देव जगत्को निर्माण करके सब पदार्थोंको रंग, रूप और आकार देता है । वह अत्यंत तेजस्वी और सर्वशक्तिमान् है । अपने ही विविध तेजोंसे और पवित्रताओंके कारण वह शोभायमान हो रहा है । वह सब जगत्का ईश्वर है और उससे उसकी शक्ति कभी पृथक् नहीं होती । यह मंत्र ‘ रुद्र ’ देवताके सब शंकाओंको दूर कर सकता है । ‘ भुवनस्य ईशानात् रुद्रात् असुर्यं न योषत् । ’ जगत् के स्वामी रुद्रदेवसे उसकी दिव्य शक्ति कभी पृथक् नहीं होती । इस वाक्यसे रुद्र देवताके वास्तविक मूल स्वरूपका पता लग सकता है ।

भुवनस्य पिता रुद्रः ॥ (ऋ० ६।४९।१०)

भुवनस्य ईशानः रुद्रः ॥ (ऋ० २।३३।९)

उक्त दो मंत्रोंके ये दो वाक्य एक ही आशयको बतानेवाले हैं, इसका यदि पाठक विचार करेंगे, तो वेदमंत्रोंके शब्दोंकी विशेष योजनाका पता लग सकता है । यह वाक्य यहच्छासे नहीं बने हैं, विशेष हेतुपूर्वक ही यह शब्दप्रयोग हुआ है, ऐसा प्रतीत होता है । इससे अगला मंत्र यहां अब देखिए—

सर्वशक्तिमान् रुद्र ।

अर्हन् विभर्षि सायकानि घन्वाहन्निष्कं यजतं विश्वरूपम् । अर्हन्निदं दयसे विश्वमभ्वं न वा ओजोयो रुद्र त्वदस्ति ॥ (ऋ० २।३३।१०)

“ (अर्हन्) योग्य होनेके कारण रुद्र सब शस्त्रास्त्रोंको धारण करता है । रुद्र योग्य होनेके कारण सब विश्वको रूप और तेज देता है । योग्य होनेके कारण ही इस (अभ्वं विश्वं) महान् विश्व पर (दयसे) दया करके उस सबका संरक्षण करता है । हे रुद्र ! (त्वत्) तेरेसे कोई भी अधिक (ओजीयः) बलवान् (न वा अस्ति) नहीं है । ”

इस मंत्रमें ‘ त्वत् ओजीयो न वा अस्ति । ’ तेरेसे अधिक शक्तिशाली कोई भी नहीं है, अर्थात् तू ही सबसे अधिक बलवान् है । इससे सर्वशक्तिमान् रुद्रदेव परमात्मा ही है, ऐसा दिखाई दे रहा है । अब निम्न लिखित मंत्र देखिए । इसमें रुद्रदेव सब जनताका राजा है, ऐसा कहा है—

गुहा-निवासी रुद्र ।

स्तुहि श्रुतं गर्तसदं जनानां राजानं भीममुप- हन्तुमुग्रम् । मृडा जरित्रे रुद्र स्तवानो अन्यम- सत्ते नि वपन्तु सेन्यम् ॥ (अथर्व० १८।१।४०)

“ (उग्रं भीमं) उग्र और शक्तिमान्, (उप-हर्तुं) प्रलय-कर्ता, (श्रुतं) ज्ञानी, (गर्त-सदं) सबके अन्दर रहनेवाला, (जनानां राजानं) सब लोकोंका राजा रुद्र है, उसकी (स्तुहि) स्तुति करो । हे रुद्र ! तेरी (स्तवानः) प्रशंसा होनेपर (जरित्रे) उपासकको तू (मृडा) सुख दे । (ते सेन्यं) तेरी शक्ति (अस्मत् अन्यं) हम सबको बचाकर दूसरे दुष्टका (निवपन्तु) नाश करे । ”

इस मंत्रमें ‘ जनानां राजानं रुद्रं ’ ये शब्द विशेष महत्त्व रखते हैं । सब लोगोंका एक राजा रुद्र है ।

गर्त-सद्	} = निहितं गुहा सत् । (यजु० ३२।८)
गुहाऽऽहितः	
गुहा-चरः	
गुहा-शयः	} = परमं गुहा यत् । (अथर्व० २।१।१२)
	= गुह्यं ब्रह्म ।

उक्त शब्दोंके साथ ‘ गर्त-सद् ’ शब्द देखने और विचार करनेसे इस शब्दके गूढ़ आशयका पता लग सकता है । ‘ गुहाऽऽहित ’ और ‘ गर्त-सद् ’ ये दोनों शब्द एक ही अर्थ बता रहे हैं । ‘ गर्त ’ शब्दका ‘ गुहा ’ ऐसा अर्थ लगा दिया ही है । अस्तु । इस मंत्रमें भी ‘ रुद्र ’ का पूर्वोक्त भाव ही दृढ़ हो रहा है । तात्पर्य ‘ रुद्र ’ शब्दका ‘ सर्वव्यापक परमात्मा ’ ऐसा एक अर्थ निःसंदेह है । इस मंत्रका ऋग्वेदका पाठ यहां देखिए—

स्तुहि श्रुतं गर्तसदं युवानं मृगं न भीममुप- हन्तुमुग्रम् । मृडा जरित्रे रुद्र स्तवानोऽन्यं ते अस्मन्नि वपन्तु सेनाः ॥ (ऋ० २।३३।११)

इसका अर्थ स्पष्ट है ।

अपने अंतःकरणमें रुद्रकी खोज ।

अन्तरिच्छन्ति तं जने रुद्रं परो मनीषया । गृभ्णन्ति जिह्वया ससम् ॥ (ऋ० ८।१२।३)

“ समुद्युज्जन् (तं रुद्रं) उसी रुद्रको (जने परः) मनःपुष्पके अत्यंत बीचके अन्तःकरणमें (मनीषया) बुद्धि द्वारा जानना (इच्छन्ति) चाहते हैं । (जिह्वया) जिह्वासे (गृभ्णन्ति) लेते हैं । ”

प्रकार धारण करते हैं । ”

इस मंत्रमें ‘रुद्र’ की ‘यह’ शक्तिका वर्णन है । यह शक्ति सब को सतत चेतना दे रही है ।

एक रुद्रके पुत्र अनेक रुद्र हैं ।

**रुद्रस्य ये मीळहुषः सन्ति पुत्रा यांश्चो नु दाधृ-
विर्भरध्वै । विदे हि माता महो मही षा
सेत्पृश्निः सुभ्वे गर्भमाधात् ॥ ३ ॥** (ऋ० ६।६।३)

“(मीळहुषः रुद्रस्य) एक दानशूर रुद्रदेवके (ये पुत्राः) जो अनेक रुद्र संज्ञकपुत्र हैं, (यान च उ नु) और जिनका निश्चयसे (भरध्वै) भरण-पोषण, पालन करनेकी सब शक्ति वह एक अद्वितीय रुद्र (दाधृविः) धारण करता है । (महः) इस महान् रुद्रकी शक्तिको (सा मही माता विदे) वह मूल प्रकृतिरूपी बड़ी माता जानती है, अथवा प्राप्त करती है और (सु-भ्वे) जीवोंकी उत्तम अवस्था होनेके लिये (सा पृश्निः) वह विविध रंगरूपवाली माता (इत्) निश्चयसे (गर्भमाधात्) जीवोंको गर्भमें धारण करती है । ”

इस मंत्रमें अनेक रुद्र इस एक रुद्रके पुत्र हैं, ऐसा स्पष्ट कहा है । इस लिये परमपिता परमात्मा ही रुद्र है और सब जीव उसके पुत्र हैं, ऐसा ही इसका अर्थ मानना उचित है ।

अनंत प्राणी अनेक रुद्र हैं ।

ये अनंत रुद्र जीव हैं, ये प्राणी अर्थात् जीवन धारण करनेवाले हैं । ये मर्य, मर्य हैं । इनका शरीर धारण होनेके कारण जन्म होता है और मृत्यु भी होती है । यद्यपि जन्ममरण शरीरका धर्म है, तथापि इन रुद्रोंकी शरीरके साथ स्थिति होनेके कारण, शरीरके साथ इनका जन्म और मरण हुआ, ऐसा कहा जाता है । अर्थात् शरीरके धर्मोंका इनके ऊपर आरोपण होता है । ये ‘मर्य’ हैं, ऐसा निम्न मंत्रमें कहा है—

**ते जङ्घिरे दिव ऋष्वास उक्षणो रुद्रस्य मर्या
असुरा अरेपसः । पावकासः शुचयः सूर्या
इव सत्त्वानो न द्रप्सिनो घोरवर्पसः ॥**

(ऋ० १।६।२)

“(ते) वे अनंत रुद्र (ऋष्वासः) उच्च (दिवः उक्षणाः) दिव्य बलसे युक्त (असुराः) जीवनशक्तिसे प्रकाशनेवाले, (अ-रेपसः) निष्कलंक और (मर्याः) मर्य हैं । वे उस (रुद्रस्य जङ्घिरे) एक रुद्रसे प्रकट होते हैं । वे (पावकासः)

मुमुक्षुजन जिह्मसे सात्विक पदार्थोंको लेते हैं । ‘सस’ अर्थ ‘फल, धान्य, अनाज, शाकभाजी, ओषधि, परमपिता’ इतना ही है । जिह्मसे जिस अन्नका ग्रहण करना उचित है, उसका इस मंत्रने यहां उपदेश किया है । फल, धान्य, अनाज, शाकभाजी आदि पदार्थ ही खाने चाहिए । इस प्रकारका सात्विक आहार करनेवाले मुमुक्षु लोग उस रुद्र से अर्थात् परमात्माको मनुष्यके अतःकरणके अत्यन्त गहरे स्थानमें अपनी सात्विक विचारशक्तिके द्वारा ढूँढ ढूँढ कर देखनेकी कृति करते हैं ।

अनेक रुद्रोंमें व्यापक ‘एक रुद्र’ ।

एक प्रमाणोंसे ‘रुद्र’ एक है और वह सर्वत्र व्यापक है, वह वाद सित हो चुकी । अब अनेक रुद्रोंका वर्णन, जो हमें आता है, उसका विचार करना चाहिए ।

रुद्रं रुद्रेषु रुद्रियं हवामहे । (ऋ० १०।६।८)

“(रुद्रेषु) अनेक रुद्रोंमें रहनेवाले (रुद्रियं रुद्रं) प्रशंसा करने योग्य एक रुद्रकी (हवामहे) हम सब पूजा करते हैं । ”

एक रुद्रदेव अनेक रुद्रोंमें रहता है, अर्थात् यह एक रुद्र अपने व्यापक है और अनेक रुद्र व्याप्य हैं । अनेक रुद्र अणु और यह एक रुद्र महान् है । इस एक रुद्रके द्वारा अनेक रुद्र प्रेरित होते हैं, अर्थात् अनेक रुद्र प्रेर्य हैं और यह एक रुद्र रुद्रोंका प्रेरक है । तथा—

(१) शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः । (ऋ० ७।३।५।६)

(२) रुद्रो रुद्रेभिर्देवो मृत्ययाति नः । (ऋ० १०।६।३)

(३) रुद्रं रुद्रेभिरावहा बृहन्तम् । (ऋ० ७।१०।४)

“(१) अनेक रुद्रोंके साथ एक रुद्र हम सबका कल्याण करे ।

(२) अनेक रुद्रोंके साथ एक रुद्रदेव हम सबको सुख देवे । (३)

सब रुद्रोंके साथ रहनेवाले एक महान् रुद्रकी पूजा करो । ” ये

स मंत्र लक्ष भाव बता रहे हैं । अनेक छोटे रुद्रोंमें एक महान्

रुद्र की प्रेरणा होती है, इस आशयका ध्वनि निम्न मंत्रमें देखने

में है—

तविमुद्रस्य चेतति यहं पत्नेषु धामसु ।

मनो यत्रा वि तदधुर्विचेतसः ॥ (ऋ० ८।१३।२०)

“(रुद्रस्य तत्तु यहं) रुद्र देवकी वह एक महान् प्रेरक शक्ति

(तत्तु धामसु) अनेक सनातन स्थानोंमें (इत् चेतति) निश्चयसे

प्रकाश होती है । (यत्र) जिस शक्तिमें (वि-चेतसः) विशेष

रुद्रोंकी (तत् मनः) अपना वह मन (वि-दधुः) विशेष

अग्निके समान पवित्र (शुचयः) तेजस्वी और शुद्ध (सूर्य इव सत्त्वानः) सूर्यके समान सत्त्वशाली और (द्रप्सिनः न) वर्षा करनेवाले मेघोंके समान (घोर-वर्षसः) सुंदर और विशाल रूप धारण करनेवाले हैं । ”

इस मंत्रमें रुद्रसंज्ञक जीवके गुणधर्म बताये हैं । इनमें ‘मर्त्य’ शब्द आया है । प्राणी, शरीरधारी, मरणधर्मवाला, ऐसा उस शब्दका अर्थ है । जिन अनंत रुद्रोंमें एक महान् रुद्र व्यापक हो रहा है वे अनंत रुद्र ‘अनंत मर्त्य’ प्राणी हैं; यह भाव इस मंत्रसे प्रकट हो रहा है । ‘जनानां राजा रुद्रः’ ऐसा एक वचन पूर्व स्थलमें आया है । उसके साथ इस मंत्रका आशय ‘मर्त्यानां पिता रुद्रः’ देखने योग्य है । एक ही भाव किस प्रकार भिन्न भिन्न प्रकारसे बताया गया है, यह यहाँ देखने योग्य है । इसी विषयका स्पष्टीकरण करनेवाले निम्न लिखित मंत्र यहाँ देखिए—

क ई व्यक्ता नरः सनीळा रुद्रस्य मर्या खधा
स्वश्वाः ॥ १ ॥ न किह्येषां जनुषि वेद ते अंग
विद्रे मिथो जनित्रम् ॥ २ ॥ (ऋ० ७।५६)

“(अघ) अजी ! (स्वश्वाः = सु-अश्वाः) उत्तम भोग भोगनेवाले, (स-नीळाः) एक आश्रयसे रहनेवाले और (व्यक्ताः नरः) अलग अलग दीखनेवाले पुरुष (के) कौन हैं ? वे (रुद्रस्य मर्याः) रुद्रके मर्त्य पुत्र हैं । (एषां जनुषि) इनके जन्मका वृत्तांत (न किः वेद) कोई भी नहीं जानता ? हे (अंग) प्रिय ! (ते मिथः) वेही परस्पर एक दूसरेका (जनित्रं) जन्म (विद्रे) जानते हैं । ”

इस मंत्रमें ‘रुद्रस्य मर्याः’ रुद्रके मर्त्य पुत्रोंका वर्णन फिर आया है । इनमें अलग अलग व्यक्तित्व अर्थात् व्यक्तित्व, पृथक्त्व, इकाई है, इस लिये इनको ‘व्यक्त’ अर्थात् ‘व्यक्ति-भाव’ से युक्त कहा है । प्रकृति और पुरुष ऐसे जो दो भेद हैं, उनमें ये ‘पुरुष’ हैं, इसलिये मंत्रमें इनको ‘नर’ कहा है । एक ईश्वरके आश्रयसे ये रहते हैं, इसलिये इन सबको ‘स-नीळाः’ (स-नीडाः) कहा है । यहाँ—

यत्र विश्वं भवत्येक-नीडम् । (यजु० ३२।८)

यत्र विश्वं भवत्येक-रूपम् । (अथर्व० २।१।१)

इन मंत्रोंमें ‘एक-नीडं’ और ‘एक-रूपं’ ये शब्द देखने योग्य हैं । ‘स-नीळ, स-नीड, एक-नीड, एक-रूप’ ये सब शब्द ‘सबका एक ही आश्रयस्थान है,’ ऐसा बता रहे हैं ।

इस विचारसे पता लग जायगा कि (१) अनंत रुद्रोंका जन्म, (२) उनको पुत्र कहना, (३) उनकी माताका वर्णन, (४) उनके गर्भधारणका वर्णन यहाँ है ।

रुद्रके पुत्र मरुत हैं । मरुतोंके विषयमें श्री सायणाचार्य लिखते हैं कि ‘मनुष्यरूपा वा मरुतः । पूर्वं मनुष्याः संतः पश्चात् सुकृतविशेषेण ह्यमरा आसन् ।’ मरुत पढ़िले मनुष्य ही होते हैं, परंतु उत्तम प्रशस्त कर्म करनेके कारण जो अमर बनते हैं (ऋ० सायणभाष्य, मं. १०, सू. ७७, मं. २) इस प्रकार मरुतोंके मनुष्यरूप होनेमें शंका ही नहीं है । मनुष्योंके अतिरिक्त भी मरुतोंका अर्थ है, उसका विचार मरुतदेवताके ग्रंथमें किया गया है । अब मरुतोंके मनुष्य होनेके विषयमें वेदका प्रमाण देखिए—

अग्निश्रियो मरुतो विश्वकृष्टय आत्वेपमुग्रमव
ईमहे वयम् । ते स्वानिनो रुद्रिया वर्षनिर्णिजः
सिंहा न हेषकतवः सुदानवः ॥ (ऋ. ३।२६।५)

“(ते रुद्रियाः मरुतः) वे रुद्रके पुत्र मरुत (अग्नि-श्रियोः) अग्निके समान तेजस्वी, (स्वानिनः) उत्तम शब्द बोलनेवाले, (सिंहा न हेषकतवः) सिंहके समान गंभीर शब्द करनेवाले, (वर्ष-निर्णिजः) वृष्टिके द्वारा शुद्ध होनेवाले, (सु-दानवः) उत्तम दान करनेवाले, (विश्वकृष्टयः) सर्व-मनुष्य हैं । (वयं) हम सब (त्वेषं उग्रं अवः) तेजस्वी शौर्यमय संरक्षण उनसे (आ ईमहे) प्राप्त करते हैं । ”

इस मंत्रमें ‘विश्व-कृष्टि’ शब्द अत्यंत महत्वपूर्ण है । ‘कृष्टि’—शब्दका अर्थ—(१) मनुष्यमात्र, मानवजाति है । (२) देशनिवासी राष्ट्रीय जनता । ‘विश्व-कृष्टिः’ = (विश्व + जन = सर्व + जन) सब मनुष्य, मनुष्यमात्र, मनुष्यजाति । यहाँ कई शंका करेंगे कि मानवजातिके विषयका उल्लेख वेदमें कहाँ है ? वैदिक धर्म ‘वैयक्तिक’ होनेके कारण उसमें ‘सार्वजनिक भाव’ नहीं होगा । इस शंकाका उत्तर देनेके लिये यहाँ सार्वजनिक भाव बतानेवाले कुछ वैदिक शब्दोंका उल्लेख करना चाहिए । देखिए निम्न शब्द—

(१) विश्व-कृष्टिः = (सर्व-मनुष्य) = मानवजाति ।

(२) विश्व-वर्षणिः = (सर्व-जन) = सब लोक, मनुष्य, मनुष्यमात्र, मानवजाति ।

(३) विश्व-जनः = (सर्व-जन) = मानवजाति ।

(४) विश्व-मनुष्यः } = (सर्व-मनुष्य) = मनुष्यमात्र ।

(५) विश्व-मानुषः } = (सर्व-मनुष्य) = मनुष्यमात्र ।

[रुद्रदेवता ।

अनंत रुद्रोंका
माताका वर्णन,

सायणाचार्य

पूर्व मनुष्याः

सन् । मरु

करनेके कारण

सू. ७७, मं. २)

हैं । मनुष्योंके

मरुतदेवताके

होनेके विषयमें

पुष्पमुग्रमव

प्रेनिर्णिजः

(३।२६।५)

(अग्नि-प्रियः)

शब्द बोलनेवाले,

शब्द करनेवाले,

दानवाः) उत्तम

(वयं) हम वय

से (आ ईमहे)

महत्त्वपूर्ण हैं ।

मानवजाति है ।

ष्टेः ' = (विश्व-

यजाति ।

का उल्लेख वेदमें

उषमें 'सर्व-

उत्तर देनेके विषे

शब्दोंका उल्लेख

मानवजाति ।

सब लोक, मनुष्य,

म, मानवजाति ।

नवजाति ।

)= मनुष्यमात्र ।

१) = मनुष्यमात्र ।

२ है. [रुद्र]

(६) विश्व-नरः = (सर्व-नर) = सब मनुष्य ।

(७) पंच-जनाः = ज्ञानी, शूर, व्यापारी, कारीगर और साधारण लोक । ये पांच प्रकारके लोक मिलकर सब जनता होती है ।

इस तरह सार्वजनिक भावोंकी विस्तारपूर्वक कल्पना वेदमें ही मिलती है । वैदिक धर्म 'सार्वजनिक भावका धर्म' ही है ।

प्रसूत मंत्रमें 'विश्व-कृष्टि' शब्द 'मानव-जाति' का भाव बता रहा है । मरुतोंका अथवा रुद्र-पुत्रोंका अर्थात् छोटे कृष्टि अथवा रुद्रोंका स्वरूप 'विश्व-कृष्टि' शब्दने बताया है । इस प्रकार अनेक रुद्र ये अनंत मानवप्राणी हैं, यह बात सिद्ध हो गई । 'मरु' शब्दसे साधारण मर्त्य अर्थात् मरणधर्मवाले प्रणिमात्र, ऐसा भी भाव निकल सकता है । इसका निश्चय अब करेंगे ।

अनेक रुद्रोंकी संख्या ।

इस अनंत रुद्रोंकी संख्याके विषयमें वाजसनेय यजुर्वेदमें निम्न लिखित मंत्र देखने योग्य है—

असंख्याताः सहस्राणि ये रुद्रा अधि भूम्याम् ।

(यजु. १६।५४)

"असंख्यात हजार (ये रुद्राः) जो रुद्र (भूम्यां अधि) पृथ्वी पर हैं ।" अर्थात् ये अनेक रुद्र अनंत हजार इस पृथ्वीपर हैं । प्राणियोंकी संख्या किसी समयमें भी पृथ्वीपर निश्चित नहीं कही जा सकती । क्योंकि प्राणियोंकी संख्या अनेक कारणोंसे बढ़ भी सकती है और घट भी सकती है । इस हेतुसे यहां निश्चित संख्या नहीं कही । परंतु 'अनंत हजार' ऐसा ही कहा है । इससे वेदके मरुतोंका अद्भुत महत्त्व ज्ञात हो सकता है ।

यजुर्वेद वाजसनेय संहिता अ० १६ में रुद्रोंके कई नाम लिखे हैं । यह अध्याय काण्व संहितामें १७ वां है । और तैत्तिरीय संहितामें यही रुद्राध्याय ४।५।१।१ में है । अब इन रुद्रोंका वर्णन करना है । परंतु इससे पूर्व 'रुद्र' शब्दका भाष्यकार का प्रयोग किया हुआ अर्थ अवश्य देखना चाहिए । क्योंकि इन रुद्रोंको देख कर ही हम रुद्रोंके वर्ग बना सकते हैं ।

रुद्रके विषयमें श्रीसायणाचार्यजीका मत ।

श्री सायणाचार्यजीने चारों वेद और सब मुख्य ब्राह्मणोंपर विचार किया है । इनका भाष्य विशेषतया याज्ञिक पद्धतिके अनुसार है । इस लिये इनका भाष्य देखनेसे याज्ञिक-संप्रदायवालोंका मत २ है. [रुद्र]

ज्ञात हो सकता है । अब देखिए श्री सायणाचार्यजी 'रुद्र' के विषयमें क्या कहते हैं—

ऋग्वेद-भाष्य ।

१. रुद्रस्य कालात्मकस्य परमेश्वरस्य । (ऋ. ६।२८।७)

२. रुद्राय क्रूराय अग्रये । (ऋ. १।२७।१०)

३. रुद्र दुःखं तद्धेतुभूतं पापं वा । तस्य द्रावयितारौ रुद्रौ । संप्रामे अयंकरं शब्दयन्तौ वा ॥ (ऋ. १।१५।८।१)

४. रुद्राणां.....प्राणरूपेण वर्तमानानां मरुतां । यद्वा । रोदयितृणां प्राणानां । प्राणा हि शरीराभितृता-सन्तो बंधुजनान् रोदयन्ति ॥ (ऋ. १।१०।१।७)

५. रुद्राणां रोदनकारिणां शूरभटानां वर्तनिर्मर्गो धाटीः रूपो ययोस्तौ रुद्रवर्तनी । (ऋ. १।३।३)

६. रोदयन्ति शत्रूनि रुद्राः । (ऋ. ३।३।२।३)

७. रुद्रौ संप्रामे रुद्रन्तौ । (ऋ. ८।२६।५)

८. हे रुद्र ! ज्वरादिरोगस्य प्रेक्षणेन संहर्तर्देव । (ऋ. १।१६।९।१)

९. रुद्रियं सुखं । (ऋ. २।११।३)

१०. रुद्रियं रुद्रसंबन्धि भेषजं । (ऋ. १।४३।२)

अथर्ववेद-भाष्य ।

१. रोदयति सर्वं अंतकाले इति रुद्रः संहर्ता देवः । (अथर्व. १।१९।३)

२. रौति शब्दायते तारकं ब्रह्म उपदिशतीति रुद्रः । तथा च जाबालश्रुतिः । 'अत्र हि जन्तोः प्राणे-पूष्कामसु रुद्रस्तारकं ब्रह्म व्याचष्टे ॥ (जाबा. उ. १) (अथर्व. २।२७।६)

३. तस्मै जगत्स्त्रे सर्वं जगदनुप्रविष्टाय रुद्राय । (अथर्व. ७।९२।१)

४. रुद्र दुःखं दुःखहेतुर्वा तस्य द्रावको देवो रुद्रः परमेश्वरः । (अथर्व. १।१।२।३)

५. सर्वप्राणिनो मामनिष्ट्वा विनश्यन्ति इति स्वयं रौति रुद्रः । (अथर्व. १।८।१।४०)

६. स्वसेवकानां दुःखस्य द्रावकत्वं (रुद्रस्य) । (अथर्व. १।८।१।४०)

७. महानुभावं रुद्रं । (अथर्व. १।८।१।४०)

८. रुद्रस्य हिंसकस्य देवस्य । (अथर्व. ६।५९।३)

९. रुद्रस्य ज्वराभिमानिदेवस्य हेतिः आयुधं ।
(अथर्व. ४।२१।७)

१०. रुद्रः रोदयिता शूलाभिमानि देवः ।
(अथर्व. ६।९०।११)

११. रोदयति उपतापेन अश्रूणि मोचयति इति रुद्रो
ज्वराभिमानि देवः । (अथर्व. ६।२०।१२)

१२. रोदयति शत्रूनि रुद्रः । (अथर्व. ७।९२।११)

१३. रुद्रा रोदकाः । (अथर्व. ११।९।१०)

१४. रुद्राः रोदयितारः अन्तरिक्षस्थानीया देवाः ।
(अथर्व. ११।११।४)

१५. रुद्रः पशूनां अभिमन्ता पीडाकरो देवः ।
(अथर्व. ६।१४।११)

ये 'रुद्र' शब्दके श्री सायणाचार्यजीके किये हुए अर्थ हैं । अब यजुर्वेदके भाष्यमें श्री उवटाचार्य और श्री महीधरा-
चार्य क्या कहते हैं, देखिए—

श्री उवटाचार्यजीका 'रुद्र' विषयक मत ।

१. रुद्रैः स्तोतृभिः । (यजु. भाष्य, ३८।१६)
२. रुद्रवर्तनी रुग्णवर्तनी । (य. ११।८२)
३. रुद्रौ शत्रूणां रोदयितारौ । (य. २०।८१)
४. रुद्रैः धीरैः । (य. ११।५५)

श्री महीधराचार्यजीका 'रुद्र' संबंधी मत ।

१. रुद्रस्य शिवस्य । (वा. यजु. भाष्य १६।५०)
२. रुद्राय शंकराय । (य. १६।४८)
३. रुद्रं दुःखं द्रावयति रुद्रः ।
रवणं रुद्रं ज्ञानं राति ददाति ।
पापिनो नरान् दुःखभोगेन रोदयति । (य. १६।११)
४. रुद्रस्य क्रूरदेवस्य । (य. ११।१५)
५. रुद्रं दुःखं द्रावयति नाशयति रुद्रः । (य. १६।२८)
६. रुद्रो दुःखनाशकः । (य. १६।३९)
७. रोदयति विरोधिनां शतं इति रुद्रः । (य. ३।५७)
८. रुद्रौ शत्रूणां रोदयितारौ । (य. २०।८१)
९. रुद्रैः धीरैः बुद्धिमद्भिः । (य. ११।५५)
१०. रुद्रैः स्तोतृभिः । (य. ३८।१६)
११. रुद्रवर्तनी रुग्णवर्तनी भिषजौ अश्विनौ ।
(य. ११।८२)

१२. कदम्बमक्षणे चौर्ये वा प्रवर्त्य, रोगमुत्पाद्य, जनान्
घ्नति तेभ्यः पृथ्वीस्थेभ्यो अस्त्रायुधेभ्यो रुद्रेभ्यः ॥
(य. ११।६६)

१३. कुवातेनान्नं विनाश्य वातरोगं वा उत्पाद्य जनान्
घ्नति । (य. १६।६५)

श्री स्वामी दयानंद सरस्वतीजीका रुद्रके विषयमें मत ।

ऋग्वेद-भाष्य ।

१. रुद्राय परमेश्वराय जीवाय वा ॥ ॥ रुद्रशब्देन
त्रयोऽर्था गृह्यन्ते । परमेश्वरो जीवो वायुश्चेति । तत्र परमे-
श्वरः सर्वज्ञतया येन यादृशं पापकर्म कृतं तत्फलदानेन रोद-
यिताऽस्ति । जीवः खलु यदा मरणसमये शरीरं जहाति
पापफलं च भुंक्ते तदा स्वयं रोदिति । वायुश्च शूलादि-
पीडा कर्मणा कर्मनिमित्तः सन् रोदयितास्ति । अत एव
रुद्रा विज्ञेयाः । (ऋग्वेद. १।४३।११)

२. रुद्रः दुःखनिवारकः । (ऋ. २।३३।७)
३. रुद्रः दुष्टानां भयंकरः । (ऋ. ५।४६।२)
४. रुद्रः दुष्टदण्डकः । (ऋ. ५।५१।१२)
५. रुद्रः सर्वरोगदोषनिवारकः । (ऋ. २।३३।२)
६. रुद्रस्य रोगाणां द्रावकस्य निःसारकस्य ।
(ऋ. ७।५६।११)
७. रुद्रः रोगाणां प्रलयकृत् । (ऋ. २।३३।३)
८. रुद्रः कुपथ्यकारिणां रोदयिता । (ऋ. २।३३।४)
९. रुद्रस्य प्राणस्य वर्तनिः मार्गः ययोस्तौ रुद्रवर्तनी ।
(ऋ. १।३।३)
१०. रुद्रं शत्रुरोद्धारं । (ऋ. १।११।४)
११. रुद्रस्य शत्रूणां रोदयितुर्महावीरस्य । (ऋ. १।८।५)
१२. रुद्राणां प्राणानां दुष्टान् श्रेष्ठांश्च रोदयतां ।
(ऋ. १०।१०।१७)
१३. रुद्र ! रुतः सत्योपदेशान् राति ददाति तत्संबुद्धौ ।
(ऋ. १।११।४३)
१४. रुद्रः अधीतविद्यः । (ऋ. १।११।४१)
१५. रुद्राय सभाध्यक्षाय । (ऋ. १।११।४६)
१६. रुद्रः न्यायाधीशः । (ऋ. १।११।४२)
१७. रुद्रियं रुद्रस्येदं कर्म । (ऋ. १।४३।२)

यजुर्वेद-भाष्य ।

१. रुद्रः परमेश्वरः । चतुश्चत्वारिंशद्वर्षकृतब्रह्मचर्यो विद्वान्
(यजु. ४।२०)
वा ।
२. रोदयत्यन्याकारिणो जनान् स रुद्रः । (य. ३।५७)
३. दुष्टानां रोदयिता विद्वान् रुद्रः । (य. ४।२१)
४. रुद्रः शत्रूणां रोदयिता शूरवीरः । (य. ९।३९)
५. रुद्रस्य शत्रुरोदकस्य स्वसेनापतेः । (य. ११।१५)
६. रुद्रः जीव । (य. ८।५८)
७. रुद्राः एकादशप्राणाः । (य. २।५)
८. रुद्राः प्राणरूपा वायवः । (य. ११।५४)
९. रुद्रा बलवन्तो वायवः । (य. १५।११)
१०. रुद्राः सजीवा अजीवाः प्राणादयो वायवः । (य. १६।५४)

११. रुद्रा मध्यस्थाः । (य. १२।४४)
 १२. रुद्रा रुद्रसंज्ञका विद्वांसः । (य. ११।५८)
 १३. रुद्रः राजवैद्यः । (य. १६।४९)
 १४. रुद्रस्य सप्तेशस्य । (१६।५०)
- इस तरह भाष्य में अर्थ हैं ।
यजु. अ० १६ में रुद्रवाचक अनेक पद आये हैं । इनकी संख्या लगभग २४० है ।

- (१) विश्व-रूप, (२) विद्युत्, (३) वायु, (४) वृक्ष,
(५) गृत्स, (६) मंत्रिन्, (७) भिषक्, (८) सभा,
(९) सभापति, (१०) स्थ-पति, (११) सेनानी, (१२)
सेना, (१३) इषु-कृत्, (१४) रथी, (१५) वणिज्, (१६)
किरिक्, (१७) तक्षन्, (१८) परि-चर, (१९) स्तेन,
(२०) प्रतरण, (२१) इवन्, (२२) तल्प्य ।

- ये सब रुद्र ही हैं— (१) सर्वव्यापक ईश्वर, (२) बिजुली,
(३) वायु, (४) वृक्ष, (५) विद्वान्, (६) दिवाण, (७)
सभा, (८) सभापति, (९) राजा, (१०) सेना-
पति, (११) सेना, (१२) शस्त्र बनानेवाला, (१३) वीर, (१४)
सैन्या, (१५) किसान, (१६) बढई, (१७) नौकर, (१८) चोर,
(१९) थोखेबाज, (२०) कुत्ता, (२१) खटमल; इन सबको
रुद्र ही कहा है, इस सबमें 'रुद्रत्व' है यह निश्चित है ।

'रोदयति इति रुद्रः' (जो दूसरोंको रुलाता है, वह
रुद्र है) यह रुद्र शब्दका एक अर्थ है । दूसरोंको रुलानेका धर्म
रुद्र है, यह बात इस अर्थसे सिद्ध होती है । रुलानेका तात्पर्य

कष्ट अथवा दुःख देना है । देखिए—

- (१) रोदयति शत्रून् इति रुद्रः महा-वीरः ।
- (२) रोदयति दुष्टान् इति रुद्रः न्यायाधीशः ।
- (३) रोदयति धनिकान् इति रुद्रः चोरः ।
- (४) रोदयति निद्राक्रान्तान् इति रुद्रः तल्प्य-कीटः ।
- (१) शत्रुओंको रुलानेके कारण शूरको रुद्र कहते हैं ।
- (२) दुष्टोंको रुलानेके कारण न्यायाधीशको रुद्र कहते हैं । (३)
- धनिकोंको रुलानेके कारण चोरको रुद्र कहते हैं । (४) सोने-
- वालोंको रुलानेके कारण खटमलको रुद्र कहते हैं ।

उक्त चार विग्रहोंमें क्रमशः ' (१) शत्रून्, (२) दुष्टान्,
(३) धनिकान्, (४) निद्राक्रान्तान् । ' इन चार
पदोंका अध्याहार अर्थात् कल्पना की है । और उस कल्पनाके
अनुसार ' रुद्र ' शब्दके चार भिन्न भिन्न अर्थ किये हैं । जहाँ
जैसा पूर्वापर संबंध होगा, वहाँ वैसा अर्थ लेना उचित है ।

उक्त चार आर्थोंमें ' रुलानेका धर्म ' सबमें समान है ।
यही यहाँ ' रुद्रत्व ' है । ' रोदयितृत्वं रुद्रत्वं ' रुलानेका
धर्म ही रुद्रपन है, ऐसा हम यहाँ कह सकते हैं । जहाँ जहाँ
' रुलानेका गुण ' होगा, वहाँ वहाँ रुद्रत्व होगा, यह इस विवरण
का तात्पर्य है ।

इस प्रकार अन्य स्थानोंमें भी समझना चाहिए । यह बात
स्पष्ट है कि इस अर्थमें ' स्वयं दुःखका अनुभव करना रुद्रपनका
लक्षण ' है । दूसरोंको रुलाना अथवा स्वयं रोना ये दोनों रुद्रके
लक्षण हैं । इन दोनों अर्थोंको लेनेसे पूर्वोक्त रुद्रवाचक अनेक
शब्दोंमेंसे कई शब्दोंका मूल आशय खुल जाता है और इस
बातका निश्चय होता है, कि इनको रुद्र क्यों कहा गया है ।

' रुद्र ' के इतने ही लक्षण नहीं हैं । ' रुत् ज्ञानं तत्
ददाति इति रुद्रः । ' जो ज्ञानको उपदेश द्वारा देता है, वह
रुद्र होता है । इस अर्थको लेनेसे ' ज्ञानी, उपदेशक, गुरु,
व्याख्यानदाता ' ये रुद्र हैं, ऐसा प्रतीत होगा । पूर्वोक्त
शब्दोंमें ' अधिवक्ता ' शब्द इसी अर्थका प्रकाश करनेवाला
है । ' श्रुत, गृत्स, मंत्रिन् ' ये भी शब्द इसी भावको बतानेवाले
हैं । ' ज्ञानदातृत्वं रुद्रत्वं ' दूसरोंको उपदेश करनेका रुद्रका
धर्म है, ऐसा इस अर्थसे सिद्ध होता है ।

' रुद्र दुःखं द्रावयति विनाशयति इति रुद्रः । ' रुत्
अर्थात् दुःख, उसका जो नाश करता है, वह रुद्र कहलाता है ।
' क्षत्र ' शब्दका अर्थ ' क्षतात् त्रायते ' जो दुःखसे बचाता है,

ऐसा होता है । यह रुद्रका एक अर्थ है ।

रुद्र+द्र= दुःखको दूर करनेवाला ।

क्षत्+त्र= दुःखसे बचानेवाला ।

ये दोनों शब्द बिल्कुल समान अर्थवाले हैं । इसलिये क्षत्रिय-वाचक शब्द रुद्रके लिये आये हैं । इस बातको पूर्वोक्त वीरवर्गमें पाठक देख सकते हैं ।

‘रुद्र रोगं राति ददाति इति रुद्रः रोगोत्पादकः ।’
जो रोगोंको उत्पन्न करता है, उसको रुद्र कहते हैं । बुरी हवा, सड़ा हुआ जल, दुर्गन्धयुक्त भूमि, कुपथ्य आदि सब इस अर्थके कारण रुद्र होते हैं । ‘रुत्’ शब्दके दुःख और रोग ऐसे अर्थ कोशोंमें हैं । रोग उत्पन्न करना यह रुद्रका कार्य कई मंत्रोंमें वर्णन किया है, उनमेंसे एक मंत्र यहां देखिए—

येऽन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् ।

(यजु. अ. १६।६२)

‘(ये) जो रुद्र (अन्नेषु) अन्नोंमें और (पात्रेषु) बर्तनोंमें प्रविष्ट होकर (पिबतः जनान्) जल पीनेवाले मनुष्योंको (विविध्यन्ति) अनेक प्रकारके रोग उत्पन्न करते हैं ।’ यह रुद्रका वर्णन विशेष प्रकारसे देखने योग्य है । इसी मंत्रके भाष्य देखिए—

श्री सायणाचार्य—ये रुद्रा अन्नेषु भुज्यमानेषु स्थिताः सन्तो जनान् विविध्यन्ति, विशेषेण ताडयन्ति । धातुवैषम्यं कृत्वा रोगान् उत्पादयन्ति इत्यर्थः । तथा पात्रेषु पात्रस्थक्षीरोदकादिषु स्थिताः सन्तः क्षीरादिपानं कुर्वतो जनान् विविध्यन्ति । अन्नोदकभोक्तारो व्याधिभिः पीडनीया इति भावः ॥ (काण्वयजु. १।७।१६)

श्री महीधराचार्य—(पूर्ववत्)

श्री उवटाचार्य—ये अन्नेषु अवस्थिताः विविध्यन्ति अतिदशेन विध्यन्ति ताडयन्ति । येपामयमधिकारः अन्नस्य भक्षयितारो व्याधिभिर्गृहीतव्या इति ६० ॥

उक्त आचार्य-मतका तात्पर्य—ये रुद्र अन्न और पानीमें प्रविष्ट होकर उस अन्नको खानेवाले और उस पानीको पीनेवाले लोगोंमें रोग उत्पन्न करते हैं ।

रोग उत्पन्न करना रुद्रोंका कर्म है । रोगजन्तुओंका यह वर्णन है । ‘रोग-जन्तु’ अन्नके द्वारा और जलके द्वारा शरीरमें प्रविष्ट होकर शरीरमें नाना प्रकारके रोग उत्पन्न करते हैं, यही भाव उक्त मंत्रका है । इसलिये रोगबीजोंका नाम रुद्र हुआ है । रोगजन्तु किस प्रकारके होते हैं और कहां रहते हैं,

इस बातका ज्ञान पूर्वोक्त अध्यायमें ‘जन्तुवर्ग’ के रुद्रवाचक शब्दोंके अर्थोंका विचार करनेसे स्पष्टतया हो सकता है ।

तात्पर्य इस प्रकार रुद्रोंके लक्षण हैं । यहां नमूनेके लिये थोड़ेसे दिये हैं । विशेष विचार करनेके लिये पूर्वोक्त आचार्योंके अर्थोंका मनन करना उचित है । इन अर्थोंको देखनेसे ‘रुद्रत्व’ की कल्पना हो सकती है । अर्थात् ‘रुद्र’ यह कोई एक ही पदार्थ नहीं है, परंतु यह अनेक कल्पनाओंका समूहवाचक शब्द है ।

जिस प्रकार ‘प्राणा’ कहनेसे ‘मनुष्य, घोडा, गाय, चूहा’ आदि का बोध होता है अथवा ‘मनुष्य’ कहनेसे ‘ज्ञानी, शूर, व्यापारी’ आदि जनोंका बोध होता है, इसी प्रकार ‘रुद्र’ कहनेसे ‘ज्ञानी, शूर, दुष्ट, सज्जन’ आदिका बोध होता है । परंतु ये सब प्रत्यक्षमें एक नहीं हैं, इनमें भिन्नत्व है । इस भिन्नत्वका स्वरूप यहां बताया है और इस समयतक के संपूर्ण विवरणमें भी इसी भिन्नत्वका रूप स्पष्ट किया है ।

श्री भ० गीताके विभूतियोगके साथ तुलना ।

श्रीमद्भगवद्गीताके १० अध्यायमें ‘विभूतियोग’ कहा है । उसका थोडासा भाग देखिए—

रुद्राणां शंकरश्चास्मि वित्तेशो यक्षरक्षसाम् ।

वसूनां पावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणामहम् ॥२३॥

यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्थावराणां हिमालयः ॥२४॥

मृगाणां च मृगेन्द्रोऽहं वैनतेयश्च पक्षिणाम् ॥२५॥

अध्यात्मविद्या विद्यानां वादः प्रवदतामहम् ॥२६॥

द्यूतं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ॥२६॥

वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पांडवानां धनंजयः ॥२७॥

यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा ।

तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोऽशंसभवम् ॥२८॥

अथवा बहुनैतेन किं ज्ञातेन तवार्जुन ॥

विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत् ॥२९॥

(श्री भ० गी० अ० १०)

“रुद्रोंमें मैं शंकर, यक्ष और राक्षसोंमें मैं कुबेर, वसुओंमें मैं पावक, चोटियोंवाले पहाड़ोंमें मैं मेरुपर्वत हूं । यज्ञोंमें जपयज्ञ, स्थिर पदार्थोंमें हिमालय, मृगोंमें सिंह, पक्षियोंमें गरुड, विद्याओंमें आत्मविद्या और वक्ताओंका भाषण मैं ही हूं । कपटियोंका द्यूत अर्थात् जूआ, तेजस्वियोंका तेज, वृष्णियोंका वासुदेव, पांडवोंमें अर्जुन मैं हूं । जो जो विशेष ऐश्वर्ययुक्त,

[रुद्रदेवता ।

के रुद्रवाचक
हैं ।नमूनेके लिखे
क्त आचार्यों
से 'रुद्रत्व'
कोई एक ही
समूहवाचक

गाय, चूहा'

नेसे 'ज्ञानी,
प्रकार 'रुद्र'
होता है । परंतु
इस भिन्नत्वका
पूर्ण विवरणमें

तुलना।

ग' कहा है।

भूसा।

महम् ॥२३॥

गालयः ॥२५॥

गणम् ॥३०॥

महम् ॥३१॥

म् ॥३६॥

जयः ॥३७॥

।

म् ॥४१॥

॥

जगत् ॥४१॥

० अ० १०)

कुबेर, वसुओंमें

यज्ञोंमें जपयह,

गरुड, विवा-

हैं । कपटि-

तेज, वृष्णिओंमें

ऐश्वर्ययुक्त,

मेष

योगयुक्त और उच्च तत्त्व होगा, वह सब मेरे ही अंशसे हुआ है, ऐसा तुम जानो । अथवा इतने विस्तारसे कहनेकी क्या आवश्यकता है ? सारांशरूपसे इतना ही कहना पर्याप्त है कि रुद्र अंशसे सब जगत् व्यापक मैं रहा हूं ।

जगत्में जो जो ऐश्वर्ययुक्त सत्त्व होता है, वह परमेश्वरके लक्षण होता है, ऐसा यहां कहा है ।

इसी 'विभूतियोग' के समान 'रुद्रको चोरके रूपमें मानना' है । कई टीकाकारोंने इस रुद्राध्यायपर टीका करते हुए लिखा है कि चोर और डाकू भी रुद्रके रूप हैं । देखिए—

रुद्रो लीलया चोरादिरूपं धत्ते, यद्वा रुद्रस्य जगदात्मकत्वाच्चोरादयो रुद्रा एव ज्ञेयाः । यद्वा स्तेनादिशरीरे जीवेश्वररूपेण रुद्रो द्विधा तिष्ठति तत्र जीवरूपं स्तेनादिपदवाच्यं तदीश्वररुद्ररूपं लक्षयति यथा शाखाग्रं चन्द्रस्य लक्षकम् । किंवहुना लक्ष्यार्थविवक्षया मंत्रेषु लौकिकाः शब्दाः प्रयुक्ताः ॥

(महीधरभाष्य य. अ. १६।२०)

"रुद्ररूपी जगदात्मा लीलासे चोरका रूप धारण करता है ।

कसा रुद्र जगदात्मा होनेसे चोरादि सब रुद्र ही जान लीजिए ।

यसा चोरादिकोंके शरीरमें जीव और ईश्वररूपसे रुद्र दो

रूपवा होकर रहता है, वहां चोर आदि शब्द जीवरूपके

लिखे होते हुए भी ईश्वररूपके बोधक होते हैं, जिस प्रकार

चन्द्रके अप्रसं चंद्रमाका ज्ञान बताया जाता है । बहुत क्या

रुद्र ही ईश्वरका ज्ञान देनेकी इच्छासे मंत्रोंमें बहुतसे लौकिक

शब्द प्रयुक्त किये हैं ।"

श्री सायणाचार्य भी अपने काण्व-यजु० अ० १७ के भाष्य

में एक प्रकार ही कहते हैं । उक्त विषयमें सायण और महीधर

को समझिए एक जैसी ही है ।

१. उद्यतां धृतं अस्मि (गीता) - कपटीयोंका शूत मैं हूं ।

२. स्तेनानां पतिः अस्मि (वेद) - चोरोंका स्वामी मैं हूं ।

३. सायूनां पतिः अस्मि । (वेद) - ठगोंका मुखिया मैं हूं ।

४. वरुणाणां पतिः अस्मि । (वेद) - डाकूओंका सरदार मैं हूं ।

५. सुष्मतां पतिः अस्मि । (वेद) - लुटेरोंका श्रेष्ठ मैं हूं ।

नर गीताके वचनमें 'रुद्राणां शंकरश्चास्मि ।' यह

कहा है । 'अनंत रुद्रोंमें मैं एक शंकरनामक रुद्र हूं ।' इन

लक्षणोंका अनंतत्व और शंकरका एकत्व सिद्ध है । यहां

शंकर शब्दसे परमात्मा और रुद्र शब्दसे परमात्मासे उत्पन्न पूर्वोक्त इतर रुद्र लेना उचित है । इस प्रकार करनेसे इस वाक्यकी वेदके आशयके साथ संगति लग सकती है ।

पं० जान डॉसनसाहबका मत ।

'हिंदु-क्लासिकल डिक्शनरी' में पं० डॉसनसाहब लिखते हैं कि—

'He is the howling terrible god, the god of storms, the father of the Rudras or Maruts, and is sometimes identified with the god of fire. On the one hand he is a destructive deity who brings diseases upon men and cattle, and upon the other he is a beneficent deity supposed to have a healing influence. These are the germs which afterwards developed into the god Siva.'

(पृ. २६९)

'यह (रुद्र) गर्जना करनेवाला भयानक देव है, जो तूफानका देव है और जो रुद्रों अथवा मरुतोंका पिता है । कभी कभी इसका संबंध अग्निदेव के साथ जोड़ा जाता है । एक ओर यह देव सबका नाश करता है और प्राणियोंमें बीमारियाँ फैलाता है, तथा दूसरी ओर इसको सुखदायक और आरोग्य देनेवाला देव समझा जाता है । ये ही मूल अंकुर हैं कि जिनका विकास होकर आगे जाकर शिवजीका स्वरूप बना है ।'

रुद्रको केवल वादलोंका देव पं० डॉसनसाहब मानते हैं । परंतु यदि वे 'रुद्र और मरुत्' के मूल अर्थोंकी थोड़ीसी भी खोज करते, तो उनको पता लगता कि 'रुद्र' को 'जगतां पतिः' अर्थात् 'अनंत ब्रह्मांडोंका स्वामी' कहा है । यह मंत्रोंका विधान ये यूरोपियन पंडित देखते ही नहीं ।

सर मोनिअर वुइलियमसाहबकी संमति ।

यह साहब कहते हैं कि—

'Rudra, roarer, the god of tempests and father and ruler of Rudras and Maruts. (In Veda he is closely connected with Indra and still more with Agni, the god of fire and also with Kala or time, the all-consumer with whom he is afterwards identified; though

generally represented as a destroying deity... he has also the epithet Siva, 'benevolent or auspicious' and is even supposed to possess healing powers..... from his purifying the atmosphere;)'

(सर मो. वुडलियम का संस्कृत-इंग्लिश कोश)

‘गरजनेवाला रुद्र तूफानोंका देव है और रुद्रों और मरुतोंका पिता और राजा है । (वेदमें रुद्र देवका इन्द्र और विशेष कर अग्निके साथ संबंध बताया है ।..... बादमें सर्वभक्षक कालके साथ भी जोड़ दिया है । यद्यपि इसको संहारक देव समझा जाता है..... तथापि यह कल्याणकारक और आरोग्यदायक भी वर्णन किया है । यह हवा को शुद्ध करता है ।)’

एक ही परमेश्वर जगत्का उत्पादक, पालक, संहारक, कल्याणकारक, सुखदायक आदि अनंत गुणोंसे युक्त हैं । ये लोग इन सब गुणोंको रुद्र-वर्णनमें देखते हैं, परंतु रुद्रको ईश्वर माननेके समय क्षिप्त होते हैं ।

श्री० म० आर्थर आंटोनी मॅकडोनेल- साहबकी संमति ।

‘This god occupies a subordinate position in the Rig Veda being celebrated in only three entire hymns, in part of another, and in one conjointly with Soma. His hand, his arms, and his limbs are mentioned. He has beautiful lips and wears braided hair. His colour is brown; his form is dazzling, for he shines like the radiant sun, like gold..... he holds the thunderbolt in his arm, and discharges his lightning shaft from the sky; but he is usually said to be armed with a bow & arrows, which are strong and swift.’

‘Rudra is very often associated with the Maruts (i. 85). He is their father, and is said to have generated them from the shining under of the cow prishni.’

‘He is fierce and destructive like a terrible beast, and is called a bull, as well as the ruddy (arusa) boar of heaven. He is exalted, strongest of the strong, swift, unassailable,

unsurpassed in might. He is young and unaging, a lord (Ishana) and father of the world. By his rule and universal dominion he is aware of the doings of man and gods. He is bountiful (midhvams), easily invoked and auspicious (Shiva). But he is usually regarded as malevolent; for the hymns addressed to him chiefly express fear of his terrible shafts and deprecation of his wrath..... He is however, not purely maleficent like a demon. He not only preserves from calamity, but bestows blessing. His healing powers are especially often mentioned; he has a thousand remedies, and is the greatest physician of physicians.....’

‘The physical basis represented by Rudra is not clearly apparent. But it seems probable that the phenomenon underlying his nature was the storm.’ [A Vedic Reader, pages 56-57]

‘.....यह रुद्रदेव ऋग्वेदमें निम्न कोटिका देव है । क्योंकि संपूर्ण ऋग्वेदमें इसके लिये केवल तीन सूक्त ही हैं ।..... उसके हात, बाहु और अवयवोंका वर्णन किया है । उसके लंबे सुंदर हैं, और वह जटाजूट धारण करनेवाला है । उसका बदन भी है और इसका आकार चमकीला है, क्योंकि तेजस्वी सुंदर समान वह चमकता है..... मेघविद्युत् का वज्र वह हाथों धरता है, और आकाशसे तेजस्वी वाण मारता है । परंतु बहुत करके धनुष्यबाण धारण करता है, ऐसा ही कहा गया है...’

‘रुद्रका मरुतोंके साथ बहुत संबंध बताया है । वह उनका पिता है और पृश्निनामक गायके चमकीले गर्भस्थानसे मरुतोंको उत्पत्ति की गई है, ऐसा कहा गया है ।’

‘कूर पशुके समान भयानक और विनाशक वह रुद्र है । कौन उसको बैल कहते हैं, तथा उसको स्वर्गका लाल सुवर्ण रंग है । वह बड़ा उच्च, बलवानोंमें बलवान्, चपल, न दबनेवाला है और सबसे प्रबल है । वह तरुण और वृद्धावस्थासे रहित है । वह सबका राजा और जगत्का पिता है । सब मनुष्य और देवताओंके सब कर्मोंको वह जानता है, क्योंकि उसका राजा

[रुद्रदेवता]

ng and un-
of the world.
nion he is
gods. He is
nvoked and
ally regarded
ressed to him
e shafts and
..... He is
ke a demon.
amity, but
powers are
s a thousand
physician of

d by Rudra
seems pro-
derlying his
' [A Vedic

देव है। क्योंकि
हैं।..... उसके
। उसके होंठ धर
रसका बदामी रंग
के तेजस्वी मुख
का वज्र वह हाथों
ता है। परंतु बहुत
कहा गया है.....
या है। वह उनका
भूमिस्थानसे मल्लोत्त
वह रुद्र है। और
लाल सुवर्ण
पल, न दबनेवाला,
वस्थासे रहित है।
व मनुष्य और
योंकि उसका रंग

और उसका शासन सर्व जगत्में है। वह दानशूर, कल्याणमय और कुसमतासे संतुष्ट होनेवाला है। परंतु बहुधा ऐसा समझा जाता है कि वह बड़ा द्रोही है, क्योंकि जिन सूक्तोंसे उनकी वर्णना की गई है, उन सूक्तोंमें उसके क्रोधकी भीति और उनके शत्रुओं का डर व्यक्त हुआ है। परंतु वह राक्षसके समान अत्याचारी नहीं है। वह कष्टोंसे न केवल बचाता है, परंतु आशावाद भी देता है। उसकी आरोग्यवर्धनकी शक्तियोंका वर्णन आया है और उसके पास हजारों दवाइयाँ हैं और वह केंचुले बड़ा वैद्य है ।'

'छत्रे द्वारा जिस पांचभौतिक घटनाका वर्णन हुआ है, वह घटना स्पष्ट रीतिसे ज्ञात नहीं होती। परंतु यह संभव है कि उसके स्वभावके नीचे जो पांचभौतिक घटना है, वह सुखा दुखानी अवस्था होगी '

(वैदिक रीडर, पृ. ५६-५७)

युरोपियन पंडितोंकी ये ही संमतियाँ हैं। अन्य अनेक पंडितोंके रुद्र देवताके विषयपर बहुतसा लिखा है, परंतु उसका मूल मंत्र उक्त संमतियोंमें हैं। इसलिये और अधिक संमतियाँ न देना हुआ मैं इनकी ही समालोचना करता हूँ। उक्त संमतियाँ निम्ने निम्न मत प्रतीत होते हैं—

(१) रुद्रा दर्जा बहुत नीचे है, क्योंकि उसके लिये थोड़े तू है।

(२) उसके अवयवोंका और रंगरूपका वर्णन होनेसे वह कम है।

(३) पशुव्याघ्रका वर्णन होनेसे वह शस्त्रधारी साकार है।

(४) रुद्र मरुतोका पिता है और पृश्निनामक गायसे मरुतोंकी उत्पत्ति हुई है।

(५) रुद्र देव क्रूर, द्रोही, भयानक है, परंतु राक्षसके समान अत्याचारी नहीं है।

(६) वह उच्च, श्रेष्ठ, सर्वशक्तिमान्, चपल, न दबनेवाला, तेजस्वी, सर्वज्ञ, दाता, मंगलमय और संतुष्ट है।

(७) यह आरोग्यदाता और रोग दूर करनेवाला है।

(८) रुद्रके वर्णनके बीचमें जो नैसर्गिक घटना है, वह उसका पता नहीं लगता। परंतु वह घटना बहुधा ऐसी ही होगी।

(९) वह बैल और दिव्य सुवर कहा गया है।

(१०) रुद्र मेघस्थानकी विजुली है।

अब हम रुद्रसूक्तका थोड़ासा विचार करते हैं—

पौराणिक रुद्र और वैदिक रुद्र ।

पुराणोंमें आया हुआ रुद्रका वर्णन और वेदका रुद्रका वर्णन कई अंशोंमें भिन्न है। देखिए—

एष ते रुद्र भागः सह स्वस्त्राऽम्बिकया
तं जुषस्य स्वाहा । एष ते रुद्र भाग
आखुस्ते पशुः ॥ (यजु. ३।५७)

' हे रुद्र ! यह तेरा भाग है। अपनी बहन अंबिकाके साथ उसका सेवन करो। यह तेरा भाग है और चूहा तेरा पशु है । '

यहां इतना ही बताना है कि वेदमें अंबिका रुद्रदेवकी बहन कही है, परंतु पुराणोंमें उसकी धर्मपत्नी कही है। तथा रुद्रका पशु चूहा इस मंत्रमें बताया है। परंतु पुराणोंमें चूहा गणपति का पशु कहा है। यह भेद देखने योग्य है। तथा—

भवारुद्रौ सयुजा संविदानाबुभावुग्रौ

चरतो वीर्याय । ताभ्यां नमो यतमस्यां दिशीतः ॥

(अथर्व. ११।२।१४)

' भव और शर्व ये दोनों (सयुजा) साथ रहनेवाले मित्र, (संविदानौ) उत्तम ज्ञानवाले हैं। (उभौ उग्रौ) दोनों प्रतापी हैं, वे (वीर्याय चरतः) वे पराक्रम करनेके लिये चलते हैं। (यतमस्यां दिशि) जिस किसी दिशामें वे होंगे, उनको हमारा नमस्कार है । '

इससे ' भव और शर्व ' ये परस्पर भिन्न हैं, परंतु साथ रहनेवाले और बड़ा पराक्रम करनेवाले हैं, ऐसा पता लगता है। पुराणमें ये दोनों शब्द एक ही रुद्रके लिये आये हैं।

' भव ' का अर्थ ' उत्पन्नकर्ता ' है और ' शर्व ' का अर्थ ' प्रलय करनेवाला ' है। परमात्मामें ये दोनों गुण होनेसे वहां इनकी भिन्नता लुप्त होती है, ऐसा भी माना जा सकता है। इसलिये यह भिन्नत्व और एकत्व विशेष विचारसे सोचना चाहिए ।

रुद्रका शरीर ।

शिवपुराणमें निम्न श्लोक ' रौद्रो तनुः ' अर्थात् रुद्रके शरीर-के विषयमें आते हैं, रुद्रका विचार करनेके समय इसका भी विचार करना उचित है—

अग्निरित्युच्यते रौद्री घोरा या तैजसी तनुः ।
 सोमः शाक्तोऽमृतमयः शक्तेः शांतिकरी तनुः ॥३॥
 विविधा तेजसे वृत्तिः सूर्यात्मा च जलात्मिका ।
 तथैव रसवृत्तिश्च सोमात्मा च जलात्मिका ॥४॥
 वैद्युतादिमयं तेजः मधुरादिमयो रसः ।
 अग्निरमृतनिष्पत्तिरमृतादग्निरुधते ॥ ५ ॥

‘अभितत्त्वको रुद्रका भयानक तैजस् शरीर कहते हैं । तथा जलमय सोमतत्त्वको शक्तिका—(रुद्रपत्नी)—शांतिकारक शरीर कहते हैं । तेजके तत्त्व अनेक प्रकारके हैं तथा जलके तत्त्व भी विविध हैं । विद्युत् आदि तेज हैं और मधुर आदि रस हैं । अग्नि से जलकी उत्पत्ति और जलसे अग्निका प्रकाश होता है ।’ इस प्रकार सब जगत् ‘तैजस् उग्र शक्तिके साथ जलात्मक शांत शक्तिके वास्तव्य’ से होता है ।

उक्त वर्णनका तात्पर्य इतना ही है कि, इस जगत्में दो शक्तियाँ हैं, (१) एक तेजस शक्ति गति उत्पन्न करनेवाली है; (२) दूसरी शांति करनेवाली एक शक्ति है । इन दो शक्तियोंसे यह जगत् चल रहा है । दोनों शक्तियाँ कार्य कर रही हैं । पहिली रुद्र शक्ति है और दूसरी रुद्रकी धर्मपत्नी है । इसलिये इन को जगत् के माता पिता कहते हैं ।

रुद्र	अंबिका
महादेव	पार्वती
अग्नि	जल
सूर्य	चंद्र
अग्नि	सोम

इत्यादि शब्दोंसे उक्त आशयका पता लग सकता है । आशा है कि इस विधानका भी पाठक विचार करेंगे ।

खोजका विषय ।

‘रुद्र’ देवताका परिचय देनेके लिये बहुतसा रुद्रविषयक ज्ञान इस निबंधमें एकत्रित किया है । अभी बहुतसे बातोंका संशोधन करना है । आशा है कि पाठक इन बातोंका विचार करेंगे और रुद्रत्वका निश्चय करनेके लिये अन्य ग्रंथोंका संशोधन करके अधिक ज्ञान प्रकाशित करेंगे ।

रुद्रदेवताका यजुर्वेदोक्त विश्वरूप ।

यह रुद्रसूक्त यजुर्वेद-संहिता में है । वाजसनेयी संहिता का १६ वां अध्याय; काण्वसंहिताका १७ वां अध्याय; मैत्रायणी संहिताका काण्ड २, प्रपाठक ९; काठकसंहिताका १७, १३-१४;

कपिष्ठल कठ संहिता का २७, ३-४; तैत्तिरीय संहिताका ३. ७।५।४-५ रुद्रदेवता के वर्णन के लिये ही प्रसिद्ध हैं । जो सूक्त हम यहां आज विचार करनेके लिये लेना चाहते हैं, वह इतनी संहिताओं में प्रमाणत्वेन विद्यमान है । इस अध्याय में रुद्रदेवताका बड़ा विस्तृत वर्णन है ।

यहां विचार करनेके लिये हम वा० यजु० अ० १६ के १७-४६ और ५४ ये ३१ मंत्र लेते हैं ।

यहां कई रुद्रों के नाम गिनाये हैं । इन मन्त्रों में नाम ही नाम गिनाये हैं । इन नामों के हम नीचे वर्ग करके बता देते हैं, जिन से पाठकों को पता लगेगा कि, वे सब रुद्र किन किन वर्गों में संमिलित होने योग्य हैं । इन में से जो मानवों में संमिलित होनेयोग्य हैं, उन के वर्ग वे हैं—

मानवरूपोंमें रुद्र ।

(ज्ञानी पुरुष)

पूर्वोक्त मन्त्रों में जो ज्ञानी-वर्ग के रुद्र हैं, उनकी नामावलि यह है । ज्ञानी-वर्गके रुद्रोंको ब्राह्मणवर्ग के रुद्र कहा जा सकता है ।

१. गृत्स = ज्ञानी, कवि, एक ऋषि [२५]
२. गृत्सपति = ज्ञानियोंमें श्रेष्ठ, गृत्सों का अधिष्ठाता [२५]
३. श्रुत = विख्यात, प्रसिद्ध, विद्वान्, श्रुति का वेत्ता [३५]
४. पुलस्ति = विद्वान्, ऋषि [४३]
५. रुद्र = [रु] शब्द शास्त्र का [द्र] पारंगत, ज्ञानी [१८]
६. उद्गुरमाण = उत्तम ज्ञानका उपदेश देनेवाला, वक्ता [४६]
७. अभिवक्ता = [वा० य० १६।५] = उपदेशक, अध्यापक, वक्ता ।
८. मंत्री = राजा का मन्त्री, दिवान, सलाहगार, सुविचार, बुद्धिमान्, चतुर, हित की मंत्रणा देनेवाला [१५]
९. देवानां हृदयः = देवताओंके लिये जिसने अपना हृदय दिया है, भक्त, प्रेमी, साधु, सज्जनों की सेवा करनेवाला [४६]
१०. भिषक्, दैव्यो भिषक् = दिव्य वैद्य [वा० य० १६।५], आयुर्वृद्ध [६०] आयुष्य की वृद्धि करने वाला ।

११. ऋषीणां पतिः = औषधियां अपने पास रखनेवाला [१९]

१२. सभा = सभा, परिषद्, विविध सभाओं के सभासद [२४]

१३. सभापतिः = सभा का अध्यक्ष, परिषद् का प्रमुख [२४]

१४. श्रवः = कान, सुननेवाला, श्रवण करनेवाला, शिष्य [३४] प्रमृशः = परामर्श लेनेवाले पंडित [३६]

१५. प्रतिश्रवः = सुनानेवाला, उपदेश करनेवाला, गुरु [३४]। वादी-प्रतिवादी, प्रश्न-प्रतिप्रश्न के समान श्रव-प्रतिश्रव ये पद हैं। इनका परस्परसंबंध है। सोभ्यः [३३] = पुण्यकर्म करनेवाले तथा प्रतिसर्ग्य [३३] = गुप्त बात प्रकट करनेवाले।

१६. श्लोक्यः = प्रशंसनीय, श्लोकों के योग्य, प्रशंसनीय विद्वान् [३३]

प्राचीन परंपराके अनुसार वैद्य, राजा का मंत्री, अध्यापक यदि ब्राह्मण अथवा ज्ञानी-वर्गके लोग ही हुआ करते हैं। क्योंकि ये ब्राह्मण हैं अथवा ज्ञानी तो निःसन्देह हैं।

पुराणों में 'ब्राह्मणों को नारायण का मुख' कहा है। यही नारायण के अथवा रुद्रदेवता के मुख में किन का प्रवेश होता है, यह अधिक नाम देकर बताया है। यहां के धर्म नाम जैसे 'उदुरमाण' आदि अन्य वर्गमें भी गिने गये। यही ब्राह्मणवर्ग के रुद्रोंका विचार करने के पश्चात् अब रुद्रवर्गके रुद्रों का, अथवा वीरोंका विचार करते हैं। रुद्र का नाम 'वीरभद्र' सुप्रसिद्ध है। कल्याण करनेवाला वीर 'वीरभद्र' कहा जाता है। देखिये, वीरभद्रके वर्गमें कौनसे रुद्र गिने जाने योग्य हैं—

क्षत्रिय-वर्गके रुद्र ।

(वीर रुद्र ।)

(रोषपति इति रुद्रः) जो रुलाता है, वह रुद्र है। शत्रु-को रुला देनेके कारण वीर को रुद्र कहते हैं। इस तरह वीर रुद्र कहे जाते हैं।

१. रुद्रः = शत्रुओं को रुलानेवाला वीर [१, १८]

तवस् = बलवान् [४८] आगे राजाके अनेक अधिकारी, ओहदेदार, रुद्र करके गिनाये हैं।

२. क्षेत्राणां पतिः = खेतोंकी रक्षा करनेवाला [१८]

३ है. [रुद्र]

भूतानां अधिपतिः = प्राणियों के रक्षक [५९]

३. वनानां पतिः = वनोंकी पालना करनेवाला [१८]

वन्यः = वनमें उत्पन्न [३४]

४. अरण्यानां पतिः = अरण्यों का संरक्षण करने-वाला [२०]

५. स्थपतिः = स्थानोंका पालक [१९], पथिरक्षी [६०], प्रपथ्य [४३] = मार्गों की रक्षा करनेवाले।

६. कक्षाणां पतिः [१९] दिशां पतिः [१७]

(कक्षा) = गुप्त स्थान, अन्तर्का भाग, बड़ा अरण्य, बहुत ही बड़ा वन। [कक्षाणां पतिः, कक्षापः] = गुप्त स्थान की रक्षा करनेवाला, अन्तिम विभाग का रक्षक, बड़े अरण्योंका रक्षक [१९], कक्ष्यः = अरण्य की कक्षा में रहनेवाला [३४]

७. पत्तीनां पतिः = सेनाओं का पालक, सेनापति, पादचारी सेनाविभाग का अधिपति [१९], सखनां पतिः = प्राणियोंका रक्षक [२०]

८. आन्याधिनीनां पतिः = उत्तम निशाना मारनेवाले सैनिकोंका अधिपति, सेनापति [२०], [व्याधिन्] = शत्रु का वेध करनेवाला [२०, २४]

९. विकृन्तानां पतिः = शत्रु सैनिकोंका अधिपति [२१]

१०. कुलुब्बानां पतिः = शत्रुसेनाको पीसनेवाले, शत्रुपर चढ़ाई करके उनके सेनाविभागोंको पृथक् करके उनका नाश करनेवाले वीरोंके प्रमुख अधिपति [२२]

११. गणपतिः = वीरोंके गणों के अधिपति [२५]

• ककुभः = प्रमुख, मुख्य [२०]

१२. व्रातपतिः = वीरोंके समूह के प्रमुख [२५]

१३. सेना, १४ व्रातः, १५ गणः = ये सेनाविभागोंके नाम हैं; सैनिकों की संख्या के अनुसार ये नाम प्रयुक्त होते हैं [२५, २६]।

१६. शूरः = वीर, शूर [३४], क्षयद्वीरः = शत्रु का नाश करनेवाला वीर [४८]; उग्रः, भीमः = उग्र, शूर वीर, भयानक कर्म करनेवाले [४०]

१७. विचिन्वर्कः = शूर वीर, बहादुर, चुन चुन कर शत्रुवीरों का वेध करनेवाला वीर [४६], विकि-रिद्रः = विशेष नाश करनेवाला [५२]

१८. रथी = रथमें बैठनेवाला वीर [२६]

१९. अरथी = रथके विना युद्ध करनेमें प्रवीण वीर [२६]
 २०. आशुरथ = जो त्वराके साथ रथयुद्ध करता है, त्वरासे रथ चलानेवाला वीर [३४]
 २१. उगणा = शस्त्रास्त्रों को ऊपर उठाकर शत्रुपर हमला करनेवाली सेना का समूह [२४]
 २२. आशुसेनः = अपनी सेनाको अतिशीघ्र तैयार करनेवाला वीर, अपनी सेनाको सदा सिद्ध रखनेवाला वीर [३४]
 २३. श्रुतसेनः = जिस सेनाका यश चारों ओर फैला हो, विख्यात, यशस्वी, सदा विजयी सेनापति [३५]
 २४. सेनानी = सेनाको कुशलता के साथ चलानेवाला सेनापति [२६]
 २५. दुन्दुभ्यः = नौबत, ढोल अथवा बाजेके साथ रहकर लड़नेवाला सैन्य [३५]
 २६. असिमान् = तलवारसे लड़नेवाले सैनिक वीर [२१]
 २७. ह्युधमान् = बाणोंका उपयोग करनेवाले, बाणोंको बर्तनेवाले वीर [२२, २९]
 २८. सूकायी = तीक्ष्ण बाण अथवा भाला बर्तनेवाला वीर [२१]
 सूकाहस्ताः = शस्त्र धारण करनेवाले [६१]
 २९. निषङ्गी = खड्गधारी वीर [२०, २१, ३६]
 ३०. धन्वायी = धनुष्य धारण करके शत्रुपर चढ़ाई करनेवाला वीर [२२]
 आयुधी = शस्त्रोंको साथ रखनेवाला वीर [३६]
 ३१. शतधन्वा = सौ धनुष्योंका धारण करनेवाला वीर [२९]
 ३२. ह्युधमान् = बाणोंके तर्कसको पास रखनेवाला [२१, ३६]
 ३३. तीक्ष्णेषुः = तीखे बाणोंका उपयोग करनेवाला [३६]
 ३४. स्वायुधः = उत्तम आयुधोंको पास रखनेवाला [३६]
 ३५. सुधन्वन् = उत्तम धनुष्यका उपयोग करनेवाला [३६]
 ३६-३९. वर्मी, कवची, बिहमी, वरूथी = विविध प्रकारके कवच धारण करनेवाला वीर [३५]
 ४०. कृस्त्रायतया धावन् = आकर्षण धनुष्य पूर्णतया खींचकर युद्धभूमिमें दौड़नेवाला वीर [२०]
 ४१. निव्याधी [१८, २०] = शत्रुका निःशेष वेध करनेवाला वीर [२०]
 ४२. जिघांसत् = शत्रुकी कत्ल करनेवाला वीर [२१]
 ४३. विध्यत् = शत्रुका वेध करनेवाला [२३]

४४. अवमेदी = शत्रुको नीचे गिराकर उसको छिन्नभिन्न करनेवाला वीर [३४]
 ४५. हन्ता = शत्रुका हनन करनेवाला [४०]
 ४६. हनीयान् = शत्रुका संहार करनेवाला [४०]
 ४७. अभिघ्नत् = शत्रुपर प्रहार करनेवाला [४६]
 ४८. अग्रेवधः = अग्रभागमें रहकर शत्रुका वध करनेवाला [४०]
 ४९. दूरेवधः = दूरसे शत्रुका वध करनेवाला [४०]
 ५०. आह्नन्यः = शत्रुपर आघात करनेवाला [३५]
 ढोलका शब्द करता हुआ शत्रुपर आक्रमण करनेवाला ।
 ५१. घृष्णुः = शत्रुका वध करनेवाला साहसी वीर [१४, ३६]
 ५२. विक्षिणत्क = शत्रुका नाश करनेवाला [४६]
 ५३. आनिर्हत्त = आसमन्तात् भागसे जिसने शत्रुका वध किया है [४६]
 ५४. सहमानः = शत्रुका पराभव करनेवाला [२०]
 ५५. आतन्वानः = धनुष्यकी प्रत्यंचा चढ़ानेवाला वीर [२२]
 ५६. प्रतिदधानः = प्रत्यंचा चढ़ाये धनुष्यपर बाण लगानेवाला [२२]
 ५७. आघच्छत् = धनुष्यकी डोरी खींचनेवाला वीर [२२]
 ५८. अस्यत् = शत्रुपर बाण फेंकनेवाला [२२]
 ५९. विसृजत् = शत्रुपर विशेष रूपसे बाण फेंकनेवाला [२३]
 ६०-६१. आलिदत् प्रलिदत् = शत्रुको खेद उत्पन्न करने योग्य आचरण करनेवाला वीर [४६]
 ६२-६३. आढ्याधिनी [२४], आढ्याधिनीनां पतिः [२०] = शत्रुसेनापर चारों ओरसे हमला करनेवाला वीर तथा ऐसी वीरसेनाका सेनापति ।
 ६४. विविधन्ती = विशेष रीतिसे शत्रुसेना का वेध करनेवाली प्रबल वीरसेना [२४]
 ६५. वृहती = शत्रुका नाश करनेवाली वीरसेना [२५]
 ६६. अवसान्यः = अन्तिम भागपर खड़ा रहकर संलग्न करनेवाला वीर [३३]
 ६७. पथीनां पतिः = मार्गस्थोंके रक्षक वीर [१७]
 ६८. मृगयुः = मृगया, अथवा शिकार करनेवाला वीर [२५]
 ये वीरवर्ग अथवा क्षत्रियवर्गके नाम हैं। खर्दोंकी ही ये नाम हैं, जैसे ब्राह्मणवर्गके खर्द पीछे दिये हैं, वैसे ही ये क्षत्रियवर्गके

रुद्र हैं। जिस तरह ब्राह्मण रुद्र हैं, वैसे ही क्षत्रिय भी रुद्र हैं। अब वैश्यवर्गके रुद्र देखिये। वैश्यवर्गमें खेती और पशुपालन करनेवालोंका समावेश होता है, अतः उक्त मन्त्रोंमें वैश्य-रुद्रोंका वर्णन देखिये—

वैश्ववर्गके रुद्र ।

वैश्यवर्गमें निम्नलिखित रुद्रोंका अन्तर्भाव हो सकता है—

१. बाणिजः = बनिया, व्यापारी, दूकानदारी करनेवाला [१९]

२. संप्रहीता = पदार्थों का संग्रह करनेवाला [२६]
वारिवस्त्रवृत् [१९] धनकी उत्पत्ति करनेवाला ।

३-४. अन्धस्रपतिः [४७], अन्नानां पतिः [१८] = अन्नका पालनकर्ता, अन्नके लिये उपयोगी होनेवाले विविध धान्यादि पदार्थोंका पालन करनेवाला [४७, १८]
ऐलबुदाः [६०] = अन्नकी वृद्धि करनेवाला ।

५. वृक्षाणां पतिः = वृक्षवनस्पति आदिओं की पालना करनेवाला [१९]

६-७. पशुपतिः [२८], पशूनां पतिः [१७] = पशुओंका पालनेवाला ।

८. अश्वपतिः = घोड़ोंकी पालना करनेवाला [२४]

९-१०. श्वपतिः [२८], श्वनी [२७], कुत्तोंकी पालना करनेवाला ।

११. पुष्टानां पतिः = पुष्टोंके स्वामी [१७]

१२. जगतो पतिः = चलनेवालोंका पालक [१८]

कैशिक कर्तव्य खेती, वृक्षसंवर्धन और पशुपालन है। रुद्र वर्ग करनेवाले ये रुद्र इस रुद्रसूक्तमें दीखते हैं। इस तरह ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य वर्गोंके रुद्रोंका वर्णन हमने यहां तक देखा। रुद्रवर्गके रुद्रोंका वर्णन अब देखना है। शूद्रोंमें सब कारीगरों का समावेश होता है। देखिये—

शिल्पिवर्गके रुद्र ।

पूर्वोक्त मंत्रोंमें निम्नलिखित रुद्र शिल्पिवर्गके आ गये हैं—

१. सूतः = सारथी, रथ चलानेवाला, घोड़ोंकी शिक्षा देनेवाला, भाट और वीरोंकी कथाओंकी सुनानेवाला ।

२-४. क्षत्ता [२६], तक्षा [२७], रथकारः [२७] = बढई, तख्ता, रथ बनानेवाला, लकड़ीका काम करनेवाला [२६]

५-६. धनुष्कृत्, ह्युष्कृत् = धनुष्य और बाण बनानेवाला कारीगर [४६]

७. कर्मारः = लुहार, लोहेका अथवा धातुका कार्य करनेवाला [२७]

८. कुलालः = कुम्हार [२७]

९. निषादः = जंगलमें रहनेवाला, जंगली आदमी, सभामें [नि-साद] सबसे नीचे बैठने योग्य [२७]

१०. पुंजि-ष्ठ = टोलियां बनाकर रहनेवाले लोग [२७]

११. गिरि-चरः [२२] गिरिशयः [२९] गिरिशन्त [२] पहाडियोंपर घूमनेवाला, पहाड़ी लोग ।

१२. उत्तरण, प्रतरण, तार = नदीके पार करनेवाला, नदीपार करानेमें कुशल [४२]

१३. अहन्तिः सूतः = हननसे बचानेवाला सूत [१८]

ये नाम प्रायः कारीगरोंके तथा अन्यान्य व्यवहार करनेवालोंके वाचक हैं। अर्थात् शूद्रोंके वाचक हैं। शूद्रोंमें जो कारीगरी कर नहीं सकते, वे परिचर्या, सेवां शुश्रूषा करके अपनी आजीविका करते हैं, उनके नाम उपर्युक्त रुद्रमंत्रों में ये हैं—

१४. परि-चरः = परिचारक, नौकर, सेवक, परिचर्या करनेवाले [२२]

१५. नि-चेरुः = नौकरी करनेवाला, नीचे के स्थानमें रहनेयोग्य [२०]

१६. जघन्यः = हीन, अन्त्यज, नीच वृत्तिका मनुष्य, अधःपतित मनुष्य [३२]

ये नाम शूद्रवर्गके हैं। इनमें 'परिचर' नाम परिचर्या करनेवाले का स्पष्ट है। लुहार, बढई आदि के नाम भी सब को मालूम हैं। शूद्रोंमें दो भेद हैं, एक सच्छूद्र कहलाते हैं। जो कारीगरीके द्वारा अपगी आजीविका प्राप्त करके निर्वाह करते हैं और दूसरे असच्छूद्र हैं; जो सेवा करके आजीविका प्राप्त करते हैं। इन दोनों प्रकारके शूद्रोंका वर्णन पूर्वोक्त शब्दोंद्वारा हुआ है।

यहां तक ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चारों वर्गोंके अर्थात् ज्ञानी, शूर, व्यापारी और कारीगर इन चार प्रकारके व्यवसायियोंके नाम रुद्र के नामोंमें दीखते हैं। वे सब रुद्र के रूप हैं। रुद्रदेवता इन रूपोंमें इस भूमिपर विचर रहा है। रुद्रदेवता की भेट करनी हो, तो इन रूपोंमें रुद्र का दर्शन हो सकता है। रुद्र इन नाना रूपोंमें इस भूमिपर विचर रहा है। रुद्रदेवता के भक्त अपनी उपास्य देवता का दर्शन करें। वेद ने रुद्रदेवता का इस तरह प्रत्यक्ष साक्षात्कार कराया है। पाठक इस का स्वीकार करें।

पाठक यह जानते हैं कि, 'रुद्र' उसी अद्वितीय देव का नाम है, जिस को 'पुष्प, नारायण, अग्नि, इन्द्र,' आदि अनेक नाम दिये गये हैं ।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्

बाहू राजन्यः कृतः ।

ऊरु तदस्य यद् वैश्यः

पद्भ्यां शूद्रो अजायत ॥ [ऋ० १०।१०।१२]

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णों के लोग ये सब परमात्मा के क्रमशः सिर, बाहू, पेट या जंघा तथा पांव हैं । अर्थात् चारों वर्ण मिलकर परमात्मा का शरीर है । परमात्मा के शरीर के ये चार अवयव हैं । इस परमात्मा को आत्मा, ब्रह्म, पुरुष, नारायण या रुद्र आदि नामों से पुकारते हैं । रुद्र और नारायण एक ही देव है । एक ही देवता के ये दो नाम हैं । इसलिये जो वर्णन नारायणपुरुष का पुरुषसूक्त में हुआ है, वही वर्णन रुद्र का विस्तार से रुद्रसूक्त में दिखाई दिया, तो वह उचित ही है ।

यहाँ पाठक देखें कि, पुरुषसूक्त में जो वर्णन अतिसंक्षेप से है, वही वर्णन रुद्रसूक्त में विस्तार से है । पुरुषसूक्त में पुरुष-नारायण-देवता के ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये लोग अवयव हैं, ऐसा कहा है और रुद्रसूक्त में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र वर्णों के कई नाम गिनये हैं । अर्थात् पुरुषसूक्त का यह विस्तार से स्पष्टीकरण है । इस रुद्रसूक्त में ये रुद्र के रूप हैं, ऐसा कहा है; और इन रुद्र को नमस्कार किया है । ये उपास्य और संसेव्य हैं, ऐसा यहाँ बताया है ।

मानवों को जो परमात्मा संसेव्य है, वह ज्ञानी, शूर, व्यापारी और सेवक रूप से इस भूमि पर विचरनेवाला ही परमात्मा है । यह बात इस रुद्रसूक्त के मनन से सिद्ध हो रही है । परमात्मा सब रूपों में इस भूमि पर विचर रहा है, इन में मानवों के रूप भी हैं । हमें परमात्मा की सेवा करके कृतकृत्य बनना है, तो हमें इन मानवों की-जनतारूपी जनार्दन की सेवा करना उचित है । वेदका यही धर्म है, पर आज मानवों की सेवा अपनी कृतकृत्यता के लिये करने का भाव समाज से दूर हुआ है और अन्यान्य उपासनाएं प्रचलित हुई हैं । वैदिक धर्म से जनता कितनी दूर जा रही है, इसका विचार यहाँ इस विवेक से हो सकता है ।

चार वर्णों के रुद्र ।

चार वर्णों के चार वर्गों में जो रुद्र होते हैं, उनकी गणना उपर के लेख में की है, परन्तु वहाँ ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य ये नाम नहीं आये हैं । इसलिये पाठकों के मन में सन्देह हो सकता है कि, ये नाम चार वर्णों के कैसे माने जायेंगे ? इस शंका का निवारण यजुर्वेदकी मैत्रायणी-संहिता में किया है, वह मन्त्र भाग अब देखिये—

नमो ब्राह्मणेभ्यो राजन्येभ्यश्च वो नमः ।

नमः सूतेभ्यो विद्येभ्यश्च वो नमः ॥

(मैत्रायणी सं० २।१।५)

' ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और सूत संज्ञक रुद्रों को मैं प्रणाम करता हूँ । ' वहाँ शूद्र नाम नहीं है, पर 'सूत' नाम है, जो शूद्र का वाचक है । अन्य तीन नाम हैं । इस से सिद्ध होता है कि, चारों वर्णों के लोग रुद्र देवता के रूप हैं । इसलिये इस विषय में अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है ।

पूर्वोक्त चार वर्णों के रुद्रों में ही संपूर्ण जनता समाप्त नहीं होती है । जिनको दुष्ट डाकू आदि कहा जाता है, उन रूपों में भी रुद्रदेवता हमारे सम्मुख उपस्थित होती है, देखिये—

आततायी वर्ग के रुद्र ।

१. आततायी = घातपात करनेवाला [१०]

धनुष्य सज्य करके हमला करनेवाला घातक ।

२-५. स्तेनानां पतिः [२०], तस्कराणां पतिः [२१],

सुग्नतां पतिः [२१], स्तायूनां पतिः [२१] =

चोर, डाकू, लुटेरे, ठगानेवाले ।

६-८. वञ्चत् [२१], परिवञ्चत् [२१] = धोखेबाज,

फरेबी, मक्कार, कपटी, छल करनेवाला ।

९. लोप्यः = नियमों का लोप करनेवाला, नियमों का

उल्लंघन करनेवाला [४५] ।

१०. नक्तं चरत् = रात्री के समय दुष्ट इच्छा से भ्रमण

करनेवाला [२१]

ये नाम चोर, डाकू, लुटेरे, आततायी दुष्टों के हैं । निःशरीर ये दुष्ट भाववाले मानवों के वाचक हैं । परन्तु ये भी रुद्र के ही रूप हैं । जिस तरह ज्ञानदाता ब्राह्मण, सब के पालन करनेवाले क्षत्रिय, सब के पोषणकर्ता वैश्य और सबकी सहाय्यार्थ कर्मा

[रुद्रदेवता ।

उनकी गणना
वैद्य ये नाम
हो सकता है
इस शंकाका
है, वह मन्त्र

मः ।

२।१५)

को मैं प्रणाम
नाम है, जो
सिद्ध होता
इसलिये इस

।

समाप्त नहीं
है, उन रूपों में

देखिये—

[१८]

घातक ।

पतिः [२१]

[२१] =

= ओखेबाग,

।

मला, नियमों का

डच्छा से प्रभाव

क हैं । निःसंदेह

ये भी रुद्र के ही

पालन करनेवाले

सहायता के

परमात्मा शूद्र रुद्रके रूप हैं, उसी तरह चोरी करके लोगों को
रुद्रके भी रुद्र के ही रूप हैं ।

परमात्मा को यह मानने के लिये बड़ा कठिन कार्य है । चोर
परमात्मा का अंश है । क्या यह सत्य नहीं है ? भगवद्गीता
में कहा है कि—

प्रम एव अंशः जीवलोकं जीवभूतः सनातनः ।

[भ. गी. १५।७]

‘भगवद्गीता में एक अंश जीवलोक में जीव होता है ।’ यदि
हम उसी जीव परमात्मा का अंश हैं, तब तो वह जैसा ज्ञानी
होगा जीव परमात्मा का अंश है, वैसा ही दुष्ट डाकुओं
का भी जीव परमात्मा का ही अंश है । जीवमात्र परमात्मा का
अंश है, यह जैसा भगवद्गीता में कहा है, वैसा ही वेद
में पुरुषसूक्त में भी कहा है । पुरुष का एक अंश इस विश्व में
व्याप्त अस्मिता है, यह बात पुरुषसूक्त में कही है । अस्तु,
यह तब चार वर्णों के मानवों का जीव जैसा परमात्मा का अंश
है, वैसा ही चोर, डाकू, लुटेरे दुष्टों का भी जीव परमात्मा का ही
अंश है । तबतः सब की एकता है ।

ऐसी तरह आँख में सूर्य का अंश, जिह्वा में जल का अंश,
शरीर में पृथ्वी का अंश और अन्यान्य इंद्रियों में और अव-
का में अन्यान्य देवताओं के अंश आकर बसे हैं । ये जैसे
देह में बसे हैं, वैसा ही दुष्ट दुर्जनों के देहों में भी
है । देवताओं के अंशों के निवास की दृष्टि से भी सब
वर्णों को, सब प्राणियों की समता है । इस रीति से ३३ देवता-
ओं के अंश और परमात्मा का अंश शरीर में आकर रहे हैं,
यह दृष्टि से सब के देह समान हैं । प्रत्येक देह में ३३ देवता-
ओं के अंशों के साथ परमात्मा का अंश रहता है । देह सज्जन
का या दुर्जन का, उसमें परमात्मा के अंशों के साथ देवता-
ओं के अंश रहते ही हैं ।

अतः वेद का कथन यह है कि, जिस तरह चार वर्णों में
विभक्त बनता संवेद्य है, उसी तरह चोर, डाकू आदि भी
संवेद्य हैं । पर सज्जनों की अपेक्षा दुर्जनों की सेवा
करनी चाहिये, क्योंकि इन दुष्ट मानवों की
शारीरिक और मानसिक विकृति के कारण

उनकी सेवा करनी चाहिये, जिस के लिये सेवाकी
है । जैसे किसीको सर्दी लगती हो, तो उसको

कंबल देना चाहिये, प्यासेको जल, भूखेको अन्न, रोगीको दवा
आदि देना सेवा है । जो तृप्त है, उसको अन्न देना सेवा नहीं
है । सर्वत्र न्यूनता, हीनता, विकृतता की पूर्तिके लिये ही सेवा
हुआ करती है । रोगी-की सेवा शुश्रूषा उसमें उत्पन्न विकार
अथवा न्यूनता को दूर करनेके लिये की जानी चाहिये । इसी
तरह चोर, डाकू, आततायी, लुटेरे, ठग, कपटी आदि जो
गुनहगार हैं, वे यकृत, लीहा या मस्तिष्क की विकृतिके कारण
अथवा सामाजिक, आर्थिक या राजकीय दोषोंके कारण गुनाह
करनेके लिये प्रवृत्त होते हैं । देखिये, यकृत बिगडनेसे मस्तिष्क
बिगडता है और क्रोधी प्रकृति बनती है, जिसका परिणाम खून
करनेतक होता है । दरिद्रताके कारण त्रस्त हुआ मनुष्य चोरी
की ओर झुकता है । इसी तरह अन्यान्य कुप्रवृत्तियोंके कारण
शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक अथवा राजकीय विकृ-
तियाँ उत्पन्न होती हैं । इसलिये जैसे ज्वरके रोगी चिकित्सा-
द्वारा संसेव्य हैं, उसी तरह चोर, डाकू, खूनी, आततायी भी
शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक अथवा राजकीय
चिकित्सासे सेवा करनेयोग्य हैं ।

आजकल इन चोर, डाकू आदिकोंको जेलखानेमें बंद करते
हैं, कोड़ोंसे मारते हैं अथवा खूनियोंको फाँसी देते हैं । पर वेद
कहता है कि, ये भी वैसे ही रुद्रके अवतार हैं, जैसे उत्तम ब्राह्मण
और श्रेष्ठ क्षत्रिय । अतः ये भी सेवाके योग्य हैं । उनकी सेवा
करके जिन दोषोंके कारण उनमें कुप्रवृत्तियाँ उठीं, उनको दूर
करके उनकी तनदुरुस्ती अथवा मनदुरुस्ती करनी चाहिये । सदैक्य-
वादकी भूमिकाके अनुकूल और वेदके द्वारा कथित उपदेशके
अनुसार चोर भी ईश्वरका रूप है और वह भी सज्जनके समान
ही सेवाके योग्य है । यदि ठीक तरह इस ईश्वरके रूपकी सेवा
होगी, तो जो उस ईश्वरके रूपमें अप्रसन्नता थी, वहाँ सुप्रसन्नता
होगी और वेही लोग समाजमें प्रसन्नता बढ़ायेंगे । सदैक्यवादसे
अर्थात् वैदिक दृष्टिकोण धारण करनेसे इस तरह चोर और
डाकू भी दिव्य भावप्रकाशनका अवसर मिलनेसे देवत्वकी प्रकट
कर सकते हैं । सेवा तो अप्रसन्नकी प्रसन्नता करनेके लिये ही
की जाती है । इस विषयमें अधिक आगे लिखा जायगा । यहाँ
किंचित् दिग्दर्शनमात्र लिखना पर्याप्त है ।

यहाँतक मानवी प्राणियोंके रुद्रके रूपों का वर्णन हुआ, अब
अन्य प्राणियों के रूपों में जो रुद्र का अवतरण हुआ है, उस
विषय में देखिये—

प्राणियों में रुद्र के रूप ।

१. अश्वः = घोड़ा [२४]
२. श्वा = कुत्ता [२८]
३. व्रज्यः = वज्र अर्थात् ग्वालों के वाडोंमें पालनेयोग्य गौ आदि पशु [४४]
४. गोष्ठ्यः = गोशालामें पालनेयोग्य गौ आदि पशु [४४]
५. शीभ्यः = बैल आदि गतिमान् पशु [३१]
६. गेह्यः = घरोंमें पालनेयोग्य पशु, अर्थात् गाय, भैंस, बैल, कुत्ता, बिल्ली आदि पशु [४४]
७. किरिकः = किरिः = सूवर, सूकर [४६]
८. तरुण्यः = बिछोना, चारपाई, खटियां, तकिया आदि में जो कृमिकीट होते हैं, जिनको खटमल आदि नाम हैं, वे कृमि [४४]
९. रेण्यः = हिंसक कृमिकीट अथवा जीव [३९]
१०. गह्वरेष्ठः = घन जंगलों में, पहाडों की गुफा में रहनेवाले सिंह, व्याघ्र आदि पशु [४४], गुहा में रहनेवाले मनुष्य ।
११. हरिण्यः = उजाड मैदान में, रेतीले स्थानमें, जो भूमि उपजाऊ नहीं है, वैसी भूमि में रहनेवाले, प्राणी अथवा कृमि [४३]
१२. सिकत्यः = रेतीले स्थान में रहनेवाले पशु अथवा कृमिकीट [४३]
१३. किंशिलः = पत्थरोंवाले स्थान में रहनेवाले पशु अथवा जीव [४३]
- १४-१५. पांसव्यः, रजस्यः = धूली में रहनेवाले जीवजन्तु [४५]
- १६-१७. ऊर्व्यः [४५], उर्व्यः [३३], = उपजाऊ भूमिमें रहनेवाले जीव ।
१८. खल्यः = खलिशान में जो जीव रहते हैं [३३]
१९. सुर्व्यः = [सु-ऊर्व्यः], उत्तम उपजाऊ भूमि में होनेवाला जीव [४५]
- २०-२१. शुष्क्यः [४५], अवर्ष्यः, [३८], = शुष्क स्थानमें, वर्षा न होनेवाली भूमिमें होनेवाले जीवजन्तु ।
- २२-२३. हरित्यः [४५], वर्ष्यः [३८] = हरेभरे स्थानमें रहनेवाले, वर्षाके स्थानमें होनेवाले जीवजन्तु ।

२४. अवध्यः = छोटे तालाव में रहनेवाले जीव [३८]
२५. उलप्यः = घास जहां उगता है, ऐसे स्थान में होनेवाले कृमि [४५]
२६. शष्प्यः = कोमल घासके ऊपर रहनेवाले कृमि [४२]
- २७-२८. पर्णः, पर्णशदः = पत्तोंपर रहनेवाले जीव-जन्तु [४६]
- २९-३०. पथ्यः [३७], प्रपथ्यः [४३], = मार्गों पर रहनेवाले जीव, मार्गोंके रक्षक ।
३१. नीप्यः = पहाडके निम्न स्थानमें रहनेवाले प्राणी [३७] अथवा पहाडियों की तराईपर निवास करनेवाले मनुष्य ।
३२. आतप्यः = धूपमें रहनेवाले प्राणी [३८]
३३. वात्यः = वायुरूप में रहनेवाले प्राणी [३९]
३४. वीष्प्यः = शुष्क अन्नरूप में रहनेवाले [३८]
३५. मेघ्यः = मेघ में रहनेवाले प्राणी [३८]
- ३६-३७. काट्यः [३७, ४४], कूप्यः [३८] = कुएं में रहनेवाले प्राणी, कूप के पास रहनेवाले मनुष्य ।
- ३८-४६. कुल्यः [३७], कूल्यः [४२] = जल-प्रवाहमें अथवा प्रवाहके समीप रहनेवाले प्राणी, जलप्रवाह के पास रहनेवाले मनुष्य ।
३९. सरस्यः = तालाव के समीप अथवा तालाव में रहनेवाले जीव या मानव [३७]
४०. नादयः = नदी में अथवा नदीके समीप रहनेवाले जीव या मानव [३१, ३७]
४१. वैशान्तः = छोटे तालावमें रहनेवाले जीव [३७] अथवा मनुष्य ।
४२. तीर्थ्यः = तीर्थस्थान में रहनेवाले [४२], तीर्थानि प्रचरन्ति (६१) = जो तीर्थों में विचरते हैं, यात्री ।
४३. ऊर्म्यः = लहरों में रहनेवाले [३१]
४४. प्रवाह्यः = प्रवाह में रहनेवाले [३१]
४५. पार्यः = परतीर में रहनेवाले [४२]
४६. अवार्यः = नदीके इधरके तीरपर रहनेवाले [४२]
४७. फेन्यः = जलके फेनमें रहनेवाले [४२]
४८. द्वीप्यः = द्वीपमें रहनेवाले, टापूमें रहनेवाले [४५]
४९. निवेष्प्यः = पानीके भंवरमें रहनेवाले [४५]
५०. क्षयणः = जहां पानी स्थिर रहता है, ऐसे स्थान में रहनेवाले [४३]

[रुद्रदेवता]

ले जीव [३८]
एसे स्थान मेंवाले कृमि [४२]
रहनेवाले जीव

[४३], = माण

वाले प्राणी [३७]
करनेवाले मनुष्य

[३८]

प्राणी [३९]

वाले [३८]

[३८]

[३८] = कुं

वाले मनुष्य ।

[४२] = जल-

प्राणी, जलप्रवाह

अथवा तालाब में

क समीप रहनेवाले

वाले जीव [३७]

वाले [४२], ये

तीर्थों में निवसते

[३९]

[३९]

[४२]

[४२]

[४२]

[४२]

[४२]

[४२]

[४२]

[४२]

[४२]

[४२]

[४२]

[४२]

[४२]

ये सब रुद्र जलस्थानोंमें रहनेवाले प्राणियोंके रूप हैं । और

लिखे-

५१. हृदयः = हृदयमें रहनेवाले (४४), हृदयको

विषय लगनेवाले स्थानमें रहनेवाले ।

५२. वास्तुपः = घरोंका संरक्षण करनेवाले [३९]
पहरेदार ।

५३. वास्तव्यः = घरोंमें रहनेवाले [३९]

'वास्तव्य तथा वास्तुप' ये दो पद सर्वसाधारण मानव-
वर्तिके वाचक हो सकते हैं । क्योंकि प्रायः मानव घरोंमें रहते
और शौकी रक्षा करते हैं ।

सर्वसाधारण रुद्र ।

१. उपवीति = यज्ञोपवीत अथवा उत्तरीय धारण करने-
वाले [१७]

२. उष्णीषी = पगडी अथवा साफा धारण करनेवाले [२२]

३. हिरण्यबाहुः = बाहुओंपर सुवर्णभूषण धारण
करनेवाले [१७]

४. कपर्दी = जटा अथवा शिखा धारण करनेवाले [२९, ४८]

५. व्युत्केशः = जिनके बाल कटे हैं, हजामत बनाये
हुए [२९], विशिखासः [५९] = शिखा न रखने-
वाले, सिर सुंढन करनेवाले ।

६. सोम्यः = शान्त [३९]

७. याम्यः = नियममें रहनेवाले [३३]

८. क्षेम्यः = आराम देनेवाले [३३], घरमें रहनेवाले,

९-११. आशु, शीघ्र्य, अजिर = शीघ्रता करने-
वाले [३१]

१२-१९. महान् [२६], सवृद्ध [३०], पूर्वज [३२],
ज्येष्ठ [३२], अन्य [३०], प्रथम [३०], बृहत्

[३०], वर्षीयस् [३०], वृद्ध [३९], = बड़ा, ज्येष्ठ,
श्रेष्ठ, पूर्वज ।

२०-२६. अग्रक [२६], ह्रस्व [३०], वामन [३०],

मध्यम [३२], अपर-ज [३२], कनिष्ठ, [३२]

अवसान्य [३३] = छोटा, कनिष्ठ, बालक, निकृष्ट,

२७. बुध्य = तह में रहनेवाला [३२]

२८. अपगल्भ = अज्ञानी [३२]

२९-३०. ताम्र, अरुण [३९] = विलोहित [७, ५२],
[३९] लाल रंगवाले,

३१. सस्पर्जर [१७] लाल रंगवाले,

३१. आक्रन्द्यन्, उच्चैर्घोषः = गर्जना करनेवाला
[१९]

३२. स्वपत् = सोनेवाला [२३]

३३. जाग्रत् = जागनेवाला [१६]

३४. शयानः = लेटनेवाला [२३]

३५. आसीनः = बैठनेवाला [२३]

३६. तिष्ठत् = खड़ा रहनेवाला [२३]

३७. धावत् = दौड़नेवाला [२३]

यहाँ नानाविध प्राणियों के नाम हैं, तथापि इनमें कईपद मानवप्राणियोंके भी वाचक हो सकते हैं, जैसा देखिये- गन्धरेष्ठ [४४] यह पद सिंहव्याघ्रादि जंगली जानवरों का वाचक करके ऊपर दिया है, पर इस पदका अर्थ 'गुहा में रहनेवाला मानव' भी हो सकता है । जो गुहामें रहता है, वह गन्धरेष्ठ है । इसी तरह 'नीप्य' = [३७] पहाड की तराई पर रहनेवाला ' यह मानव भी हो सकता है, क्योंकि पहाडों की तराई पर मनुष्य भी रहते हैं । 'कूल्य' [४२] = नदीतीरपर रहने-वाला यह जैसा मानव, वैसाही अन्य प्राणी भी होना संभव है । इसी तरह अन्ततक समझना उचित है । ये पद प्राणियोंके वाचक हैं, फिर ये प्राणी मनुष्य हों अथवा अन्य हों । ये सब रुद्रदेवता के रूप हैं ।

वास्तुपः— [३९] यह पद घरोंकी सुरक्षा के लिये जो पहरेदार होते हैं, उन का वाचक है । आगे 'उपवीति' [१७] आदि शब्द मानवों के ही वाचक हैं । व्युत्केश [हजामत किये हुए], विशिखासः [शिखारहित, संन्यासी] ये सब निःसंदेह मानवही हैं ।

इस के आगे [३२-३७] जागनेवाले, सोनेवाले, लेटनेवाले, बैठनेवाले, दौड़नेवाले ये सब जाति के प्राणी हो सकते हैं, क्योंकि सभी प्राणी इन क्रियाओं को करते हैं ।

१२-२६ तकके शब्द भी बालक-पूज, जवान-तर्लण, मध्यम-कनिष्ठ आदि अवस्थाओं के वाचक हैं, अतः ये पद सब प्राणियों के लिये प्रयुक्त हो सकते हैं । अतः इन अवस्थाओंमें रहनेवाले सभी प्राणी रुद्रदेवता के रूप हैं । बालक, तर्लण, वृद्ध ये सब रुद्र हैं, अर्थात् सभी प्राणी रुद्र हैं ।

यहाँ प्राणियों की कोई भी अवस्था छूटी नहीं है, अर्थात् सब अवस्थाओं में विद्यमान सब प्राणी रुद्रदेवता के रूप हैं, यह यहाँ विद्वद्बुद्धि । पशुपक्षी, मानव, कृमिकीट, पर्वत सभी रुद्र

के रूप हैं । इसी तरह सूक्ष्म कृमि भी रुद्र हैं, जो जलों और अज्ञोद्गारा मनुष्यादि प्राणियों में प्रविष्ट होकर नाना प्रकारके रोग उत्पन्न करते हैं । इनकी भयानकता प्रसिद्ध है—

सूक्ष्म रुद्र ।

ये अन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् ।

(वा. १६-६२)

जो अन्नों में तथा जलमें रहते हैं, और अन्न खानेवालों तथा जल पीनेवालों में नाना प्रकार की पीड़ा उत्पन्न करते हैं, ये भी सूक्ष्म रोगकृमि रुद्र के रूप हैं ।

वृक्षरूपी रुद्र ।

१. वृक्ष (४०) = वृक्ष, पेड़, वनस्पति ।

२. हरिकेश (३०) = हरे रंगवाले पत्तेरूपी केश जिनको होते हैं, ऐसे ।

इस तरह वृक्षवनस्पति भी रुद्र के रूप हैं ।

ईश्वरवाचक रुद्र ।

अब ईश्वरको इस रुद्रसूक्तमें ' विश्वरूप ' कहा है । क्योंकि जब सभी रूप परमात्मा के हैं, तब विश्व के सब रूपों को कहाँ तक गिना जाय ? एक बार ' विश्वरूप ' कहा, तो उसमें सब रूप आ गये, इसलिये ये नाम देखिये—

१. विश्वरूपः (२५) = विश्वका रूप धारण करनेवाला,

२. विरूप (२५) = विविध रूप धारण करनेवाला,

३. भव (२८) = सबका उत्पादक,

४. शर्व (२८) = प्रलयकर्ता,

५. भगवः, ईशानः (४३) = भगवान्, ईश्वर,

६. भवस्य हेतिः (१८) = संसार के दुःखों को दूर करने का साधन ।

ईश्वर सब का कल्याण करता है, इसलिये निम्न लिखित पद उस में सार्थ होते हैं—

कल्याणकारी रुद्र ।

३८-४०. शिव, शिवतर (४१), शिवतम (५१), = कल्याण करनेवाला ।

४१-४२. शंभु, शंकर (४१) = शान्ति करनेवाला ।

४३-४४. मयोभव, मयस्कर (४१) = सुख देनेवाला ।

४५. अघोर (२) = जो भयानक नहीं है, जो शान्त है ।

४६. सुमंगल (६) = जो मंगल है ।

४७. शंगु (४०) = शान्तिमुख का दाता ।

४८. मीढुष्टम (५१) = सुखदाता ।

४९. त्विषीमत् (१७) = तेजस्वी ।

५०. विद्युत् (३८) = बिजली के समान तेजस्वी ।

५१-५२. शिपिविष्ट, सहस्राक्षः (२९) = सहस्रों किरणों से युक्त, तेजस्वी ।

यहाँ तक जो रुद्रदेवता का वर्णन हुआ, उससे पाठकों को पता लग सकता है कि, तमाम विश्वरूप ही परमेश्वर का रूप है, इस रूप में सब रूप आ गये । सूर्य चंद्रके रूप, जल, पृथ्वी, अग्नि, विद्युत् के रूप, सब प्राणियों के रूप, सब जन्तुओं के रूप इसमें आ गये हैं ।

स्थायर-जंगम में राज्ययन्त्रके कर्मचारी, राजा, मन्त्री, नाना प्रकारके ओहदेदार, प्रजाजन, सैनिक, योद्धा, क्षत्रिय, ब्रिजा, बालक, वृद्ध, तरुण, पशुपक्षी आदि सब आते हैं, जो परमात्मा के ही रूप हैं । यही तो सदैव्यवादद्वारा बताया आ रहा है । इसलिये परमेश्वर के रूप में राज्ययन्त्र का अन्तर्भाव होना स्वाभाविक है । सब राज्य-यन्त्र ईश्वर का स्वरूप है । इस विषय में इस यजुर्वेद के रुद्राध्यायद्वारा जो गूढ़ उपदेश दिया है, वह इस लेख में प्रकट करना है ।

रुद्रदेवता संहार की देवता है, पर वह संहार जनता की भलाई करने के उद्देश्य में होता है । इसलिये यह रुद्रदेवता संघटना का कार्य भी करती है । इस देवताद्वारा जो संहार होता है, वह संघटना के लिये ही होता है । इस लिये रुद्रदेवता संघटना के लिये सहायक देवता है, यह बात यहाँ भूलने नहीं चाहिये ।

रुद्रदेवता ईश्वर का ही रूप है । ईश्वर संहारकारी है, वैद्य रचनाकारी भी है । इसलिये जन्म और मृत्यु ये दोनों उसी के रूप हैं । इसलिये संहार से घबराना योग्य नहीं है । जंगल तोड़े के बाद उस लकड़ी से घर बनते हैं, अर्थात् वृक्षों का तोड़ना घरों के बनानेका सहायक है । इसी तरह संहार संहार रचना के लिये आवश्यक ही है ।

या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहा भेषजी शिवा रुतस्य भेषजी तथा नो मृड जीवसे ॥

(वा० य० १६/१५)

त्रिधासंज्ञकः ॥ २१ ॥ क्षयणाय च ॥ ४३ ॥

(वा० य० १६)

रुद्र को तबुएँ हैं। एक 'घोरा' तबु और दूसरी 'शिवा' रुद्र का घोर कर्म करनेवाला एक शरीर है और कल्याण-कारक कर्म करनेवाला दूसरा शरीर है। इसीलिये इस रुद्र को 'शिव' कहते हैं, वैसे ही 'कूर' भी कहते हैं। अस्तु। रुद्र से ज्ञात हो सकता है कि, इस देवताके मिष से जैसे विघ-ट्ना के, तोड़ने के कार्यों का विधान है, वैसे ही संघटना के, संघटन के कार्यों का भी उल्लेख है। शत्रु के साथ लड़ना और रुद्र का नाश करना, इसका एक विघटनाका कार्य है और राष्ट्रकी धना करना इसका दूसरा संघटनाका कार्य है। यह दूसरा संघटन अब बताना है।

वा० यजु० के अ० १६, मं० २५ में "नमो गणेश्यो गणपतिभ्यश्च वो नमः, नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमः" कहा है। यह गणपति-संस्था की महत्त्व की बात है। गणपतिके सहस्रनामों से 'गण, गणेश, गणपति, गण-मण्डल, गणमण्डलाध्यक्ष, महागणपति' आदि पद हैं। ये भी यहां देखने आवश्यक हैं। यहीं गणपति-संस्था रुद्र के शासनसंस्था में प्रधान कार्य करनेवाली संस्था है। गण और व्रात दो इन के संघटना के मूल भाग हैं।

गण और व्रात ।

'व्रात' पालन करनेवालों के संघ का नाम 'व्रात' है और 'गण' संघटन करनेवालों के संघ का नाम 'गण' है। 'गण' संघटन 'घातु' से 'गण' शब्द बनता है, अतः इस संघटन को गणना की संख्या निश्चित की गयी है, जो गिने हैं, जिन-को गणना की गयी है, ऐसा होता है और एक व्रतसे, एक नियम से, एक उद्देश्य तथा एक ध्येय के कारण जो इकट्ठे कार्य कर रहे हैं, वे 'व्रात' हैं। तीसरा एक संघटना बतानेवाला पद इस संघटन में है, वह है 'पुञ्जिष्ठ' अर्थात् पुञ्ज करके रहनेवाले, जो एक-एक मिलकर अपना जमाव बनाकर रहनेवाले। 'पुञ्ज' का अर्थ एक-एक मिलकर रहना है। रुद्रसंघटना के ये तीन भेद हैं।

ये 'संभूति' शब्द (वा. य. अ. ४०।९-११ में) 'संभूति' के अर्थ में यह पद है। 'संभूति, सं-भूयसमुत्थान' आदि अनेक पद मिलकर संभूति करने के अर्थ में भारतीय अर्थशास्त्र में प्रचलित हुए हैं। [रुद्र]

हैं। अनेक लोगोंने मिलकर बहुत धन इकट्ठा करके बड़ा व्यापारव्यवहार करने के अर्थ में ये पद प्राचीन काल से प्रयुक्त होते हैं। स्मृतियों और अर्थशास्त्र में इस तरह की संघटना के विषय में विस्तारपूर्वक उल्लेख हैं। यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय में उक्त 'संभूति, संभव' ये पद मानवों के सांघिक जीवनविषयक व्यवहारके लिये आये हैं। पर रुद्राध्याय में इस पदका प्रयोग नहीं है, इसलिये हम यहाँ इस पदका विचार नहीं करेंगे।

गण, व्रात और पुञ्ज ये तीन पद रुद्र की संघटना के लिये इस रुद्राध्याय में प्रयुक्त हुए हैं, इसलिये इनका विचार हम यहाँ करेंगे।

१. 'गण' पदसे 'गणना किये गये, गिने हुए लोग,'

२. 'व्रात' पद से 'एक व्रत का पालन करनेवाले लोग,' और—

३. 'पुञ्ज' पदसे 'एक जातिके लोग' बोधित होते हैं।

जनगणना करनेकी बात 'गण' पदसे बोधित होती है। रुद्रकी शासनसंस्थामें जनोकी गणना की जाती थी, यह इससे सूचित होता है। विना गणना किये 'गण' बन ही नहीं सकते। इसलिये जहाँ गणोंका राज्य होता है, वहाँ जनगणना अवश्य होती है। महादेवके भूतगण प्रसिद्ध हैं। इन भूतगणोंमें जन-गणना की जाती थी। ये ही गण रुद्रशासनमें प्रमुख घटक माने गये हैं।

एक नियमका पालन करनेवाले, एक कार्य करनेवाले, एक उद्देश्यसे संघटित हुए, एक ध्येयको माननेवाले जो लोग होंगे, उनके समूहका नाम 'व्रात' है। कर्मव्यवसायसे, व्यापार-व्यवहारसे ये व्रात नामक संघ निर्माण होते हैं। सैनिकोंके समूहों के भी ये नाम मरुतसूक्तोंमें प्रसिद्ध हैं। एक ही उद्देश्यसे एक ही कर्ममें लगनेके कारण इनमें सांघिक बल बड़ा चढ़ा रहता है।

पूर्वोक्त रुद्रसूक्तमें 'गण, गणपति, व्रात, व्रातपति' ऐसे पद आये हैं। अर्थात् इन संघोंका एक अध्यक्ष भी रहता है। इस अध्यक्ष का कार्य अपने संघका हित करना होता है। (आजकल Union, Guild आदि श्रमजीवी लोगोंके संघ और उनके अध्यक्ष रहते हैं, वैसे ही यहां ये दोखते हैं।)

इससे पूर्व कहा है, 'गण, गणमण्डल, गणमहामण्डल' ऐसे संघोंसे छोटे और मोटे संघ हुआ करते हैं। इसी तरह 'गणेश, गणपति, गणमण्डलेश, गणमहामण्डलाधि-

पति, महागणपति ' आदि नाम गणपतिसहस्रनामोंमें संघाधिपतियोंके दिये हैं। इससे इनके कर्तव्योंका ज्ञान हो सकता है और ये संघ अपने संघमें रहनेवाले लोगोंके लिये क्या कार्य करते हैं, इसका भी ज्ञान इन नामोंके मननसे हो सकता है ।

' पुंज ' के लिये ' पुंजपति ' नहीं है। ' पुंजिष्ठ ' पद ही है। अर्थात् इस नामके संघमें कोई अध्यक्ष नहीं होता था। ये संघके सभी सदस्य मिलकर अपना प्रबंध किया करते थे ।

पुंज के सदस्य इकट्ठे होते हैं और वे सबके सब अपना संघ का हित या प्रबंध करने के लिये जो कुछ करना होगा वह कर लेते हैं। इनके नाम से यह सिद्ध होता है कि, ये संघशासक हैं। इन संघशासकों में कोई एक मुखिया नहीं होता। अतः ये पूरे पूरे ' समाजशासक ' होते हैं। इस पुंजव्यवस्था से गण और व्रात की व्यवस्थामें कुछ भिन्नता है। पाठक इस भेद को ध्यान में अवश्य धारण करें। पुंज का जाति के साथ संबंध है और ऐसा जातीय समाजशासन इस भरतखण्ड में कई जातियों में प्राचीन काल से इस समय तक प्रचलित है ।

ये गण और व्रात संघ कार्य, व्यवहार, धंधा, उद्योग, सिद्धान्त या ध्येय के साथ संबंधित हैं। पुंज के समान जातिके या कुल के साथ संबंधित नहीं हैं। इसीलिये गण और व्रातके पूर्व दूसरे व्यवसायों का वाचक कोई पद अवश्य रखना चाहिये, तब इस व्यवस्था की कल्पना ठीक तरह ध्यानमें आ सकती है। वा० यजुर्वेदके १६ वें अध्यायमें ऐसे अनेक धंधोंके पद हैं, उनको इस के साथ जोड़ दें। देखिये, इससे ये संघ सिद्ध होते हैं—

धंधा

संघ

भिषक् (वैद्य)	भिषगण (वैद्यों का संघ)
वणिक् (वैश्य)	वणिगण (व्यापारियों का संघ)
क्षत्ता (बढई)	क्षत्तृगण (बढईयों का संघ)
तक्षा (तख्ताण)	तक्षगण (तख्ताणों का संघ)
रथकार (रथ बनानेवाला)	रथकारगण (गाड़ी बनानेवालों का संघ)

कुलाल (कुम्हार) कुलालगण (कुम्हारों का संघ)

इस तरह कार्यव्यवहार करनेवाले धन्धेवालों के गण होते थे और शर्तें लगाकर, नियम बांधकर एक ध्येय से प्रेरित होकर जो संघ बनते थे, वे ' व्रात ' कहलाते थे। उतने नियमों का, उतनी शर्तोंका ही बन्धन उन व्रातनामक संघवालोंपर रहता था। व्रात संघके सदस्य अन्य व्यवहारके लिये स्वतंत्र समझे

जाते थे। ' गण ' व्यवस्थामें हर एक सदस्यपर अन्य सदस्यके हितहितकी जिम्मेवारी पूर्णतया रहती थी, पर ' व्रात ' व्यवस्थामें उतने निश्चित व्रातकी मर्यादा तक की ही यह जिम्मेवारी रहती थी। गणमें उत्तरदायित्व अधिक और व्रातमें नियमाचूक मर्यादित रहता था। इस कारण गणमें प्रविष्ट होनेवालोंको लाभ भी अधिक होते थे और व्रातमें उसको अपेक्षासे लाभ भी कम होते थे ।

विचार करनेसे पता चलता है कि, गणसंस्थामें संमिलित होनेवाले सदस्योंका हित करनेका पूर्णतासे उत्तरदायित्व गणके अधिष्ठातापर रहता था। इसलिये गणेश अर्थात् गणके अधिष्ठाताको तथा गणपति अर्थात् गणके पालनकर्ताको गणके प्रत्येक सदस्यके हितकी सब जिम्मेवारी उठानी पड़ती थी। अर्थात् गणमें प्रविष्ट सदस्य बीमार हुआ, युद्धमें जखमी हुआ, किसी अन्य आपत्तिमें फँसा, तो ऐसी सब आपत्तियोंका निवारण करनेके लिये सुप्रबंध करनेका कार्य गणपतिको करना पड़ता था। यह भाव निम्नलिखित नामोंसे ज्ञात होता है— ' गणभीतिहर, गणदुःखप्रणाशन, गणभीत्यपहारक, गणसौख्यप्रद, गणाभीष्टकर, गणरक्षणकर्ता, ' ऐसे अनेक नाम हैं, जो बताते हैं कि गणोंका सब प्रकारसे हित करनेके लिये गणोंके अध्यक्षों अनेक प्रकारका योग्य प्रबंध करना पड़ता था ।

' व्रात ' के विषयमें जिम्मेवारी थोड़ी होती है। जिस नियम या शर्तसे वह व्रात संघटित होता था, उतना ही उत्तरदायित्व संघाधिपतिपर रहता था। अन्य बातोंके विषयमें उसको देखने की आवश्यकता नहीं होती थी ।

गण व्यवस्थामें छोटीमोटी कई संस्थाएँ थीं, जो निम्नलिखित नामोंसे ज्ञात हो सकती हैं— ' गणप, गणवर, गणेश, गणपति, गणाधीश, गणाग्रणी, गणाध्यक्ष, गणेश्वर, गणैकराट्, गणाभि-राज, गणनायक, गणमण्डलाध्यक्ष ' ये पद एक अर्थके वाचक नहीं हैं। प्रत्येक पदमें अधिकारका भेद है और तदनुसार छोटे या बड़े संघका भी वह सूचक है ।

गणमण्डलाध्यक्ष वह है, जो अनेक गणोंके संघोंका अध्यक्ष होता है। गणनायक वह है, जो गणोंको चलानेवाला है। गण वह है कि जो गणोंका पालन करता है। ये सब पद गणशासन की प्रणाली बताते हैं। इन सबका विचार करनेसे इस शासन सम्बन्धी सब बातोंका पता लग सकता है, पर हमें इस लेखके अन्तर्गत गणपतिसंस्थाका पूर्ण विचार करना नहीं है, प्रत्युत

[रुद्रदेवता ।

न्य सदस्यों के
त 'व्यवस्था में
मेवारी रहतीनियमानुसूल
वालों को लाभ
लाभ भी कममिलित होने-
गण के अधि-

अधिष्ठाता को

लेख सदस्यों के

गण में प्रविष्ट

अन्य आपत्ति

हमारे सुप्रबन्ध

ह भाव निम्न

गणदुःख

प्रद, गणा-

हैं, जो बताते हैं

हैं, जो बताते हैं

हैं, जो बताते हैं

हैं, जो बताते हैं

हैं, जो बताते हैं

हैं, जो बताते हैं

हैं, जो बताते हैं

हैं, जो बताते हैं

हैं, जो बताते हैं

हैं, जो बताते हैं

हैं, जो बताते हैं

संस्थाका विचार करना है। इसके अन्तर्गत गणपति पद होनेसे गणपतिस्थानका थोड़ासा विचार करना आवश्यक हुआ, अतः अतिशयेसे यह विचार यहाँ किया है।

अपना प्रकृत विषय ठीक तरह समझमें आनेके लिये यजुर्वेद म. १६ में आये गण और गणपति का थोड़ासा अधिक विचार करना आवश्यक है। विचार करनेके लिये मान लीजिये कि, 'रथकार-गण' है, अर्थात् गाड़ियाँ बनानेवालोंका एक संघ है, अथवा अधिराज्यमें स्थापन हुआ है। इसका एक अध्यक्ष होगा, जिसका नाम 'रथकार-गणेश' होगा। इस अध्यक्षका प्रथम कर्तव्य है अपने संघमें स्थित सदस्योंकी गणना करना, एक पुस्तकमें अपने सदस्योंके नाम, स्थान तथा उनकी आवश्यकता-ओका लेख तैयार करके सुरक्षित रखना। अपने गणको अर्थात् संघके कार्यन होगा, तो उसको कार्य देना, भोजनका प्रबंध होगा तो करना, बीमार होनेपर दवाका प्रबंध करना, अर्थात् दवा लेना और उसके बदले दाम देना अथवा सुख-साधन देना। इतने वर्णनसे पाठकोंके मनमें यह बात आयी होगी कि, यह गणव्यवस्था कैसी होनी चाहिये।

'गण-आर्ति-हर' यह नाम इस प्रबंधकी सुव्यवस्था का सूत्र है। गणव्यवस्थामें आये सदस्योंकी हरप्रकारकी आपत्ति-ओको दूर करना गणनायकका कर्तव्य होता है और वह उसको दूर ही पढ़ता है। सदस्य कर्म करनेके जिम्मेवार हैं, शेष जिम्मेवारी नायकपर रहती है।

पाठक ऐसी कल्पना करें कि, इस रथकार-गण में १०० सदस्य होंगे, तो उन को उन के करनेयोग्य काम देना, उन से दाम दवा लेना और उन को सुखसाधन समय पर देना, यह इस गणव्यवस्था में अध्यक्ष का मुख्य कर्तव्य है। ऐसा प्रबन्ध करने के लिये देशभर कैसी सुव्यवस्था रखना आवश्यक है, इसका विचार पाठक कर सकते हैं। यह रथकार-संघ के विषय में हुआ।

इसके पश्चात् ऐसे अनेक गणों का 'गण-मण्डल' होता है। जिसमें एक दूसरे के साथ सम्बन्ध रखनेवाले अनेक उप-गणों का परस्पर सम्मेलन होता है और अनेक 'गण-मण्डलों' का मिलकर एक 'महागणमण्डल' हुआ करता है। इसका पता देखायेंगे कि, गणमण्डल में रथकार-गण संमिलित हो सकते हैं। हमारे विचार से निम्नलिखित कारीगरोंका गणमण्डल रथकार-गणके

साथ बन सकता है—(क्षत्तृगण) बढइयोंका संघ, (तक्षगण) तख्ताणों का संघ, (कर्मारगण) लुहारों का संघ, ये और ऐसे एक दूसरेके साथ सम्बन्ध रखनेवाले अनेक कारीगरों के गणोंका मिलकर यह गणमण्डल होगा।

इस गणमण्डल का एक अध्यक्ष होगा। उसका कर्तव्य सब गणों का हित करना होगा। इस तरह सदस्यों का गण, गणों का गणमण्डल और गणमण्डलों का महागणमण्डल होता है। ऐसा संघों का यह जाला देशभर फैला रहता है। यह है गणशासन की आयोजना।

रुद्रसूक्त में जो नाम गिनाये हैं, उन में जो कार्यव्यवहार के वाचक नाम हैं, उन सब के ऐसे गण हैं, ऐसा समझकर इस रुद्रशासनप्रणाली का विचार करना चाहिये। तब वैदिक गण-शासन का महत्त्व ध्यान में आ सकता है। यहाँ प्रत्येक के संघ का स्वतन्त्र विचार करके लेख को व्यर्थ बढ़ाने की आवश्यकता नहीं है। रुद्र की शासनव्यवस्था की कल्पना ही पाठकों को देना है। ऊपर दिये वर्णन से वह व्यवस्था पाठकों के मन में आ गयी होगी। इस तरह ब्राह्मणवर्ग में कई गण अथवा संघ, क्षत्रियों में अनेक गण अथवा संघ, इसी तरह वैश्य और शूद्रों में भी कार्यव्यवहार तथा व्यवसाय के गण बनाने से यह रुद्र-शासनप्रणाली परिपूर्ण होती है।

राष्ट्र में कोई मनुष्य गणव्यवस्था से बाहर नहीं रहने पाय, जिसके कर्म और व्यवहार की गणना नहीं हुई, ऐसा भी कोई मनुष्य नहीं रहना चाहिये। प्रत्येक मनुष्य को उसके करनेके लिये सुयोग्य कार्य मिलना चाहिये और उस कर्म के बदले उसको कर्मफलस्वरूप आवश्यक सुखसाधन प्राप्त होने चाहिये। यह इस गणव्यवस्था का मूल सूत्र है।

प्रत्येक मनुष्य को अपना कर्म उत्तम कुशलता के साथ समाप्त करना चाहिये, कर्म के फलस्वरूप सुखसाधन देना इस शासनसंस्था की जिम्मेवारी है। कर्म करनेपर हरएक को आवश्यक सुखसमाधान मिलने ही चाहिये। आवश्यक सुख-साधनों में रहने के लिये सुयोग्य स्थान, भोजन के लिये योग्य और आवश्यक अन्न, पीने के लिये उत्तम जल, ओढ़ने के लिये आवश्यक वस्त्र, बीमारी की निवृत्ति के लिये चिकित्सा के साधन, धर्मसंस्कार के समय पर होनेकी व्यवस्था, विद्या की पढाईकी व्यवस्था और आध्यात्मिक उन्नति के लिये आवश्यक गुरुपदेश आदिका समावेश होना स्वाभाविक है। जो सदस्य उत्तम धर्मा-

नुकूल रहेंगे, उनका इस व्यवस्था से कल्याण होगा । पर जो नियमभंग करेंगे, उनको कठोर दण्ड देना भी इस रुद्रशासन के प्रबंधद्वारा ही होता रहता है । उसमें क्षमा नहीं होगी ।

रुद्रसूक्त में जो नाम कार्यव्यवहार करनेवालोंके गिनाये हैं, उतने ही कार्यव्यवहार करनेवाले हैं, ऐसी बात नहीं है । किसी देशविशेषमें इससे न्यून वा अधिक भी कार्यव्यवहार करनेवाले लोग हो सकते हैं । वहां की स्थिति के अनुसार न्यून वा अधिक गणों की व्यवस्था होगी । उस रुद्राध्याय के वर्णन में इस रुद्रीय शासनव्यवस्था का पता लगने के लिये केवल सूचनामात्र उल्लेख है । उस अध्याय में 'गण, गणपति' तथा 'व्रात, व्रातपति' ऐसे नाम लिखकर इस गणशासन के व्यवहार की सूचना दी है । परन्तु प्रत्येक धंधेवाले के साथ 'गण' शब्द उस अध्याय में लगाया नहीं है । वह उन धंधेवाले नामों के साथ लगाकर इस शासन की कल्पना पाठकों को करनी चाहिये, इसीलिये यह लेख लिखा है ।

उक्त अध्याय में कई पद सर्वसामान्य भाव बतानेवाले हैं, उन्हें देखिये- (उपवीती) यज्ञोपवीतधारी, (उष्णीषी) पगडीधारी, (कपर्दी) शिखाधारी, (व्युसकेश) जिस के बाल कटे हैं । ये पद सामान्य हैं । प्रत्येक वर्णके लोगों को ये पद लगाये जा सकते हैं । 'उपवीती' पद तीन वर्णों के लिये प्रयुक्त हो सकता है, शेष तीनों पद सब मानवोंके लिये प्रयुक्त हो सकते हैं ।

इसी तरह (स्वपत्) सोनेवाला, (जाग्रत्) जागनेवाला, (शयानः) लेटनेवाला, (आसीनः) बैठनेवाला आदि पद सर्वसामान्य मानवों के लिये अथवा प्राणियों के लिये लगाये जा सकते हैं । तथा (महान्) बड़ा, (ज्येष्ठ) श्रेष्ठ, (प्रथम) पहिला, (कनिष्ठ) छोटा आदि पद भी सामान्य पद हैं, जो हर एक प्राणी के लिये प्रयुक्त हो सकते हैं । ऐसे सामान्य पद इस अध्याय में कौनसे हैं, उनका पता पाठकों को उक्त पदों का अर्थ देखने से लग सकता है । ऐसे सर्वसामान्य पद छोड़ने चाहिये, और शेष पदों में जो पद कामधंधेके सूचक हैं, व्यापार व्यवहार के सूचक तथा विशेष उद्यम के सूचक हैं, उनके साथ ही यह 'गण' पद अथवा 'व्रात' पद लग सकता है । ये 'गण, व्रात और पुंज' पद सब व्यवसायों के साथ लगनेवाले पद हैं । उदाहरणके लिये हम कुछ ऐसे गण बता देते हैं—

ब्राह्मणवर्ण में- गृत्सगण (कवियोंका संघ), श्रुतगण (श्रुतिशास्त्रज्ञों का संघ), अधिवक्त्रगण (उपदेशक संघ), भिषगण (वैद्यों का संघ), इ. इ.

क्षत्रियवर्ण में- क्षेत्रपति-गण (खेतोंके मालिकों का संघ), रथीगण (रथियोंका संघ), स्वायुधगण (उत्तम हथियार चलानेवालों का संघ), दूरेवधगण (दूर से वध करनेवालों का संघ), इ. इ.

वैश्यवर्णमें- वणिग्गण (व्यापारियोंका संघ), संग्रहीत-गण (बड़े बड़े संग्रह [Store] करनेवालोंका संघ), पशु-पतिगण (पशुपालकों का संघ), इ. इ.

शूद्रवर्ण में- रथकारगण (गाड़ी बनानेवालों का संघ), इषुकृद्रण (वाण बनानेवालों का संघ), कुलालगण (कुम्हारों का संघ), निषादगण (निषादोंका संघ), इ. इ.

इस तरह इस रुद्राध्याय का विचार करके जितने धंधेवाले यहां हैं और जितने कल्पना में आ सकते हैं, उतनों के संघों की अर्थात् उतने गणोंकी अथवा व्रातोंकी कल्पना पाठक कर सकते हैं । इस तरह गणोंकी स्थापना के पश्चात् अनेक परस्पर सहायक गणोंका मिलकर एक गणमण्डल बनने की भी कल्पना पाठक करें । प्रत्येक गण का एक अध्यक्ष तथा गणमण्डल का प्रमुख बनाने का भी विचार इसी तरह हो सकता है । इस संस्था के अध्यक्ष वा प्रमुख का कर्तव्य पूर्व स्थानमें बताया ही है । गणके सब सदस्यों का ठीक तरह योगक्षेम चलाना संघप्रमुखोंका कर्तव्य है । कर्म कुशलता से करना संघस्थों का कर्तव्य है । इस तरह विचार करनेसे निःसन्देह पता लग सकता है कि, यह गणशासन की आयोजना अत्यंत उत्तम है और बड़ी सुखदायी भी है ।

इसमें कर्मकर्ताओं को चिंता नहीं है, प्रमुखों को ही चिंता रहती है । कर्मकर्ताको इतनी ही चिंता रहती है कि, अपनी कारीगरी की अत्यधिक उन्नति करना । सबका योगक्षेम गणव्यवस्थाके प्रबंधद्वारा यथायोग्य होता रहता है ।

शिक्षाका प्रबंध ब्राह्मणों के द्वारा विनामूल्य होता रहता है । रक्षाका प्रबंध क्षत्रिय करते रहते हैं । इसी तरह वैश्यशूद्रों के व्यवसायों का प्रबंध होता रहता है । और सब मानवों का योगक्षेम चलता है ।

'गणनायक' का कार्य गणके सदस्यों को चलाना है । यहां नायक का अर्थ अधिपति नहीं है, परन्तु नेता अर्थात्

[रुद्रदेवता ।

), श्रुतगण
(देशक संघ),मालिकों का
गण (वृत्तम
(दूर से वध), संग्रहीत-
संघ), पशु-

लों का संघ),

कुलालगण
(संघ), इ. इ.जतने धंधेवाले
उतनों के संघों
ना पाठक करअनेक परस्पर
ही भी कल्पना
गणमण्डल काकता है। इस
धानमें बताया
क्षेम चलानासंघर्षों का
लाग सकता
म है और वहीको ही विता
है कि, अपनी

क्षेम गणव्यव-

रहा रहता है।
ह वैश्यद्वयों केव मानवों का
चलाना है।

नु नेता अर्थात्

बलक है। आज क्या कर्तव्य करना चाहिये, इस विषय की जोय संमति अपने सदस्यों को देकर जो अपने संघ से उत्तमोत्तम कार्य करता रहता है, वही गणनायक होता है। गण का धर्म, गण का पालक, गण का अधिपति, गण का नायक ये सब विभिन्न कर्तव्य बतानेवाले पद हैं। इनके विभिन्न कर्तव्य अच्छी तरह समझनेसे ही गणशासन का उपयोगित्व ठीक तरह ध्यान में आ सकता है।

गण का अधिष्ठाता जानता है कि, अपने संघ में कितने कर्तव्य हैं, किसको किस वस्तु की जरूरत है, उस की आवश्यकता की पूर्तता किस तरह करनी चाहिये, अपने संघ में कौन बीमार है, किस वैद्य से उसकी चिकित्सा करनी योग्य है, और का विचार गण का अधिष्ठाता करता रहता है। गणमण्डल के रुद्र अनेक संघ संमिलित रहते हैं, उनके धंधोंका परस्पर संबंध रहता है और वे धंधे एक दूसरे के साहाय्यकारी रहते हैं। इसलिये गणमण्डल की सुव्यवस्थासे सब गणों का सुख रहता जाता है।

गणमण्डलों के मुख्य महागणमण्डलाध्यक्ष के पास सभी प्रकार की व्यवस्था रहती है। सारे कारीगरोंके सब पदार्थ उनके कार्यालयमें जमा होते हैं और आवश्यकताके अनुसार सब पदार्थों का लेनदेन करता है। अनावश्यक वस्तुओं के निष्काशन पर वह प्रतिबंध रखता है, और आवश्यक वस्तुओं के निष्काशन की प्रेरणा करता है। एक बार इस तरह की सुव्यवस्था की कल्पना पाठकोंके मनमें उतर गयी, तो वे ही इस सब व्यवस्था के विषय में उत्तम कल्पना अपने मन में कर सकते हैं। इस विषय में वेद वा० यजुर्वेद का १६ वाँ अध्याय विशेष अध्ययन करने के लिये है और ३० वाँ अध्याय भी मनन करने के लिये है। साथ ही साथ वा० यजुर्वेद ३० वाँ अध्याय भी मनन करने के लिये है। पर तत्त्वदृष्टि से दोनों का आशय एक ही है।

रुद्र गणशासनव्यवस्था वेद की आदर्श शासनव्यवस्था है। प्रजा का हित अधिक से अधिक हो सकता है। प्रजा का सुख अधिक से अधिक करने के लिये इसी मार्ग से जाना चाहिये। इस में शासकों की व्यवस्था इस तरह रहती है—

१. रुद्र = (महारुद्र, महादेव) = सर्वाधिपति ।
२. मंत्री = मन्त्री, सलाहकार ।

३. सभा, सभापति = राष्ट्रसभा, राष्ट्रसभापति, ग्रामसभा, प्रांतसमिति, आमंत्रण (मन्त्रीमंडल) ।

४. गण, गणपति = गणोंकी नाना प्रकार के संघों की व्यवस्था ।

५. व्रात, व्रातपति = नाना प्रकार व्रतनिष्ठ संघों की व्यवस्था ।

६. पुञ्जिष्ठ = मानवपुञ्जों की व्यवस्था ।

यह व्यवस्था पूर्व स्थान में बतायी है। गण, महागण, गणमण्डल आदि बड़े बड़े संघों में से राष्ट्रसभा के सदस्य चुने जाते हैं और इस तरह राज्य का नियंत्रण होता रहता है और वहां प्रत्यक्ष जनताके साथ रातदिन रहनेवाले और जनता की स्थिति देखनेवाले ही लोग आते हैं, इसलिये उन का शासन जनहित का साधक होता है।

इस के साथ साथ निम्न लिखित कार्यकर्ता भी होते हैं—

७. क्षेत्रपति: = खेतों की रक्षा करनेवाले,

८. वनपति: = वनों की पालना करनेवाले,

९. स्थपति: = स्थानों के पालनकर्ता,

१०. कक्षाणां पति: = राष्ट्र की कक्षा चारों ओर की परिधि होती है, वही की सुरक्षा करने के लिये जो नियुक्त होते हैं, वे कक्षापति कहलाते हैं, गुप्त स्थानों के रक्षक ।

११. पत्नीनां पति: = पैदल विभाग के नेता,

१२. सेना, सेनापति: = सब प्रकार की सेना और उस के अधिपति,

१३. सेनानी = सेना का संचालन करनेवाले,

१४. आव्याधिनीनां पति: = हमला करनेवाली सेना के नेता ।

इस तरह सेना की व्यवस्था इस रुद्रशासन में रहती है। इस रुद्राध्याय में सैनिकों के नाम बड़े विस्तारपूर्वक दिये हैं। पाठक उन सब को यहां रखकर उन का कार्य राष्ट्ररक्षा में कितना है, इस का यथायोग्य विचार करें, उन सबको यहां पुनः लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है।

१५. वास्तुप: = घरोंकी रक्षाके लिये नियुक्त पहरेदार,

१६. वास्तव्य: = लोग जहां रहते हैं, वहां रहनेवाला,

१७. गह्वरेष्ठः = गिरिकंदरों की रक्षा के लिये नियुक्त,
 १८. नादेयः, तीर्थ्यः = नदी तैरकर पार होनेके स्थान-
 पर रक्षा के लिये तथा सहाय-
 तार्थ नियुक्त,

१९. नक्तंचरः = रात्रीके समय घूमकर रक्षा करनेमें नियुक्त ।

इस तरह अनेकानेक पदोंसे पाठक योग्य बोध प्राप्त कर सकते हैं और रुद्र की शासनव्यवस्थाका पता भी इस से लगा सकते हैं ।

यहां पाठक देखें कि, रुद्राध्याय (वा. यजु. अ. १६) के विशेष सूक्ष्म रीति के इस अध्ययन से एक विशेष प्रकार की गणशासन की प्रणाली का बोध यहाँ हमें मिला है । यह वैदिक व्यवस्था है और प्रत्येक प्रजाजनका इससे लाभ हो सकता है । इस विषय में विस्तारपूर्वक बहुत कुछ स्पष्टीकरण करना आवश्यक है, परन्तु वैयास करने के लिये हमारे पास यहाँ स्थान नहीं है ।

एक रुद्रके अनेक रूप हैं ।

एक ही रुद्र के ये सब मानवी रूप हैं । गण, गणपति ये दोनों रुद्र के रूप हैं । मन्त्री और राजा, सेना और सेनापति, क्षेत्र और क्षेत्रपति, वणिक् और प्राहक, शिष्य और गुरु ये सब रुद्र के रूप हैं । कोई मनुष्य, कोई प्राणी अथवा कोई वस्तु रुद्रका रूप नहीं, ऐसी वस्तु यहाँ नहीं है ।

यहाँ राजा भी ईश्वर का रूप है और प्रजा भी । दोनों मिलकर एक ईश्वरके दो रूप हैं । राजा-प्रजा, गुरु-शिष्य, मालक-मजदूर, धनी-सेवक, ज्ञानी-अज्ञानी ये सब ईश्वरके ही रूप हैं, अतः ये परस्पर की सेवा करनेयोग्य हैं । एक सत्ता के ये अंश हैं । अतः सब की मिलकर एक ही सत्ता माननी चाहिये । यहाँ किसी की भी विभिन्न सत्ता नहीं है । हम सब एक ही जीवन के अंश हैं, यह जानकर परस्पर के सहायक व्यवहार हम सबको करने चाहिये ।

जिस तरह एक शरीर में सिर, आँख, नाक, कान, मुख, जिह्वा, दाँत, होठ, गाल, बाहु, अंगुलियाँ, हात, पैर, पाँव आदि अनेक अवयव एक ही जीवनके अवयव हैं और पूर्णतया परस्पर सहायता करना इनका कर्तव्य है, सब का मिलकर एक जीवन है, यह जानना, मानना और उस एक जीवन के

हितके लिये अपना समर्पण करना प्रत्येक अवयव का कर्तव्य है, उसी तरह सब मानव एक ही जीवनके अंश हैं, यह जानना, मानना और उस अखंड, अटूट, अनन्य एक जीवनका अत्यधिक हित करनेके लिये अपने जीवनको लगाना, अर्थात् पूर्ण की सेवाके लिये अंशने अपना अर्पण करना आवश्यक है ।

जो लोग शंका करते हैं कि सदैक्यवादसे राष्ट्रीय शासन किस तरह होगा, राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रकी उन्नति तथा राष्ट्रीय संघटना किस तरह होगी, इस शंकाका उत्तर इस लेखमें दिया गया है । वेदने जनताकी उन्नतिके लिये 'सदैक्यवाद' दिया और इस वादसे सिद्ध होनेवाला राष्ट्रीय संघटनाका आदर्श भी मानवोंके सम्मुख गणव्यवस्थाद्वारा रख दिया । सदैक्यवादसे अनन्य भावकी सिद्धता होती है और सब प्राणियोंका मिलकर एक अखण्ड और अटूट जीवन है, इसके विषयमें निश्चय होता है । इस निश्चयके पश्चात् व्यक्ति व्यक्तिकी, संघ संघकी तथा जाति जाति की सेवामें लगकर, परस्पर सेवाशुश्रूषासे जो सबकी उन्नति होती है, उस उन्नतिकी आयोजनाकी कल्पना इस गणसंस्थासे पाठकों के मनमें स्थिर हो सकती है । इस तरह सदैक्यवादसे राष्ट्रीय सिद्ध होती है और इससे मानवताका भी पूर्ण विकास हो सकता है ।

इस रुद्राध्याय में सब प्राणी रुद्रके रूप हैं ऐसा कहकर संघटना का वैदिक संदेश दिया है । अन्य स्थानों में पुरुष, नारायण, आत्मा, ब्रह्म आदिके सब रूप हैं, ऐसा बता कर वही संदेश दिया है । सदैक्यवाद का तत्त्व यह है कि, सबके रूप भिन्न होने पर भी सब की सत्ता तत्त्वतः एक मानना । यहाँ तत्त्वतः भिन्न अनेक सत्ताएँ नहीं हैं । इस सदैक्यवाद के सिद्धान्त को व्यवहार में लानेके लिये छोटे छोटे गणों में यह तत्त्व प्रथम आचरणद्वारा तथा परस्पर सेवाद्वारा सिद्ध करना चाहिये । पश्चात् गणों के, संघों के और राष्ट्रके व्यवहार में लाना चाहिये और अन्त में मानवों के व्यवहार में लाना योग्य है । इसका मार्ग जो वेद ने बताया है, वह यह है । इसका विचार पाठक करें ।

अस्तु । रुद्रदेवताका स्वरूप और उसका कार्य इसका विचार यहाँतक हुआ । पाठक रुद्रके मंत्रोंका अधिक विचार करें और वेदका आशय जाननेका यत्न करें । यहाँ रुद्रके संपूर्ण मंत्रोंके संग्रह इसी प्रकारके मनन के लिये इकट्ठा किया है ।

रुद्रदेवताकी विषयसूची ।

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
१. रुद्रदेवताका परिचय ।	३	२१. सर मोनिभर वुइलियमसाहबकी सम्मति ।	१३
२. रुद्रके विषयमें निरुक्तका मत	३	२२. श्री० म० आर्थर आंदोनी मैक्डोनेलसाहबकी सम्मति ।	१४
३. रुद्रके विषयमें उपनिषत्कारोंकी सम्मति ।	४	२३. पौराणिक रुद्र और वैदिक रुद्र ।	१५
४. रुद्रके एकत्वके विषयमें वेदकी सम्मति ।	५	२४. रुद्रका शरीर ।	१५
५. सर्वव्यापक रुद्रदेव ।	५	२५. खोजका विषय ।	१६
६. ब्रह्म का पिता रुद्र ।	५	२६. रुद्रदेवताका यजुर्वेदोक्त विश्वरूप ।	१६
७. श्व सृष्टिका स्वामी रुद्र ।	५	२७. मानवरूपोंमें रुद्र (ज्ञानी पुरुष)	१६
८. सर्वशक्तिमान् रुद्र ।	६	२८. क्षत्रियवर्गके रुद्र (वीर रुद्र ।)	१७
९. गुहानिवासी रुद्र ।	६	२९. वैश्यवर्गके रुद्र ।	१९
१०. अपने अंतःकरणमें रुद्र की खोज ।	६	३०. शिल्पिवर्गके रुद्र ।	१९
११. अनेक रुद्रोंमें व्यापक ' एक रुद्र ' ।	७	३१. चार वर्णोंके रुद्र ।	२०
१२. एक रुद्रके पुत्र अनेक रुद्र हैं ।	७	३२. आततायी वर्ग के रुद्र ।	२०
१३. अनंत प्राणी अनेक रुद्र हैं ।	७	३३. प्राणियों में रुद्र के रूप ।	२२
१४. अनेक रुद्रोंकी संख्या ।	९	३४. सर्वसाधारण रुद्र ।	२३
१५. रुद्रके विषयमें श्रीसायणाचार्यजीका मत ।	९	३५. सूक्ष्म रुद्र ।	२४
१६. श्रीउक्ताचार्यजी का ' रुद्र ' विषयक मत ।	१०	३६. वृक्षरूपी रुद्र ।	२४
१७. श्रीमहीधराचार्यजीका ' रुद्र ' संबंधी मत ।	१०	३७. ईश्वरवाचक रुद्र ।	२४
१८. श्रीसामी दयानंदसरस्वतीजीका रुद्रके विषयमें मत ।	१०	३८. कल्याणकारी रुद्र ।	२४
१९. श्री भग० गीताके विभूतियोगके साथ तुलना ।	१२	३९. गण और व्रात ।	२५
२०. पं. जॉन डॉसनसाहबका मत ।	१३	४०. एक रुद्रके अनेक रूप हैं ।	३०

रुद्र-देवता-मंत्रोंकी ऋषिसूची ।

रुद्रः ।

ऋषिः	मंत्रसंख्या	पृष्ठम्	ऋषिः	मंत्रसंख्या	पृष्ठम्
रुद्रो वीरः			(वाज० यजुर्वेदमन्त्राः।)	३७-१११	४
ऋष आत्तरिषः ।	१-५	१	ब्रह्मा ।	११२-११७	९
ऋषमदः सौनकः ।	६-१६	१	कपिलः ।	११८	१०
ऋषवर्गवैशिष्टः ।	१७-३१	२	अथर्वी ।	११९-१४१	१०
	३२-३६	३			

रुद्रसहचारी देवगणः ।

(१) रुद्रः मित्रावरुणौ च । कण्वो घौरः । १४२	११
(२) रुद्रः, दिशः । अथर्वा । १४३-२००	११
(३) आदित्याः, रुद्राः । अथर्वा । १४३-२००	१३
(४) सोमारुद्रौ । अथर्वा । १४३-२००	१३
(५) भव-शर्व-रुद्राः । अथर्वा । १४३-२००	१४

भग-शर्व-रुद्राः । शन्तातिः । २०१-२०२

(६) रुद्रः, व्याघ्रः । अथर्वा । २०३-२०९	१६
(७) रुद्रः, (अग्निः) । वामदेवो गौतमः । २१०	१७
„ „ „ (मृत्युः) । संकसुको यामायनः । २११-१४	१७
„ „ „ „ । अथर्वा । २१५-२१७	१८
„ „ „ „ । प्रजापतिः । २१८-२२५	१८
„ „ „ „ । द्रुहणः । २२६-२२७	१९

रुद्र-देवताकी सूचियाँ ।**१ पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।**

ऋ० प्रथमं मण्डलम् ।	२०
द्वितीयं मण्डलम् ।	२०
चतुर्थं मण्डलम् ।	२०
सप्तमं मण्डलम् ।	२०

२ मन्त्राणां सूची ।

२१-२३

३ गुणबोधक-पदसूची ।

२४-३०

४ मृत्यु-देवता-गुणबोधक-पदानि ।

३१

**५ मृत्युनिवारक-ब्रह्मौदन-
गुणबोधक-पदानि ।**

३१

६ दिग्भेदेन रुद्ररूपाणि ।

३२

७ उपमा-सूची ।

३२



दैवत-संहिता ।

(ऋग्यजुःसामाथर्वणां संहितानां सर्वान् मन्त्रान् दैवतानुसारेण संगृह्य निर्मिता ।)

७ रुद्रदेवता ।

॥ १ ॥ (ऋ० १।४३।१-२,४-६)

(१-५) कण्वो घौरः । गायत्री ।

कद् रुद्राय प्रचैतसे	मीळहुष्टमाय तव्यसे	। वोचेम शंतमं हृदे	१
यथा नो अदितिः कर्तु	पश्चे नृभ्यो यथा गवे	। यथा तोकाय रुद्रियम्	२
गाथपति मेधपति	रुद्रं जलाषभेजम्	। तच्छंयोः सुम्नमीमहे	४
यः शुक्र इव सूर्यो	हिरण्यमिव रोचते	। श्रेष्ठो देवानां वसुः	५
शं नः कर्त्यर्वते	सुगं मेषाय मेघ्ये	। नृभ्यो नारिभ्यो गवे	६

॥ २ ॥ (ऋ० १।११४।१-११)

(६-१६) कुत्स आङ्गिरसः । जगती; १०-११ त्रिष्टुप् ।

इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने	क्षयद्वीराय प्र भरामहे मतीः ।	
यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे	विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्	१
मूला नो रुद्रोत नो मयस्कृधि	क्षयद्वीराय नमसा विधेम ते ।	
यच्छं च योश्च मनुरायेजे पिता	तदश्याम तव रुद्र प्रणीतिषु	२
अश्याम ते सुमतिं देवयज्या	क्षयद्वीरस्य तव रुद्र मीढ्वः ।	
सुम्नायन्निद् विशो अस्माकमा चरा	रिष्टवीरा जुहवाम ते हविः	३
त्वेपं वयं रुद्रं यज्ञसाधं	वड्कुं कविमवसे नि ह्वयामहे ।	
आरे असद् दैव्यं हेळो अस्यतु	सुमतिमिद् वयमस्या वृणीमहे	४

५ दै० [रुद्र०]

दिवो वराहमरुषं कपर्दिनं त्वेष रूपं नमसा नि ह्वयामहे ।
 हस्ते विभ्रद् भेषजा वार्याणि शर्म वर्म च्छर्दिस्मभ्यं यंसत् ५ १०
 इदं पित्रे मरुतामुच्यते वचः स्वादोः स्वादीयो रुद्राय वर्धनम् ।
 रास्वा च नो अमृत मर्तभोजनं तमने तोकाय तनयाय मृळ ६
 मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम् ।
 मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः ७
 मा नस्तोके तनये मा न आयौ मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः ।
 वीरान् मा नो रुद्र भामितो वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे ८
 उप ते स्तोमान् पशुपा इवाकरं रास्वा पितर्मरुतां सुम्नमस्मे ।
 भद्रा हि ते सुमतिर्मृळ्यत्तमाथा वयमव इत् ते वृणीमहे ९
 आरे ते गोघ्नमुत पूरुषं क्षयद्वीर सुम्नमस्मे ते अस्तु ।
 मृळा च नो अर्थि च ब्रूहि देवाधा च नः शर्म यच्छ द्विर्वा १० १५
 अवोचाम नमो अस्मा अवस्यवः शृणोतु नो हवै रुद्रो मरुत्वान् ।
 तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता मर्दितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ११ १६

॥ ३ ॥ (क्र० २।३३।१-१५)

(१७-३१) गृत्समद (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चात्) भार्गवः शौनकः । त्रिष्टुप् ।
 आ ते पितर्मरुतां सुम्नमेतु मा नः सूर्यस्य सदृशो युयोथाः ।
 अभि नो वीरो अर्धति क्षमेत प्र जयिमहि रुद्र प्रजाभिः १
 त्वादत्तेभी रुद्र शतमेभिः शतं हिमा अशीय भेषजेभिः ।
 व्यस्मद् द्वेषो वितरं व्यहो व्यमीवाश्वातयस्वा विषूचीः २
 श्रेष्ठो जातस्य रुद्र श्रियासि तवस्तमस्तवसां वज्रबाहो ।
 पर्षि णः पारमंहसः स्वस्ति विश्वा अभीती रपंसो युयोधि ३
 मा त्वा रुद्र चुक्रुधामा नमोभिर्मा दुष्टुती वृषभ मा सहूती ।
 उन्नो वीरौ अर्पय भेषजेभिर्मिषक्तं त्वा भिषजां शृणोमि ४
 हवीमभिर्हवते यो हविर्भिरव स्तोमेभी रुद्रं दिषीय ।
 क्रुदूदरः सुहवो मा नो अस्यै वभ्रुः सुभिप्रो रीरधन्मनायै ५
 उन्मा ममन्द वृषभो मरुत्वान् त्वक्षीयसा वयसा नाधमानम् ।
 घृणीव च्छायामरपा अशीयाः विवासेयं रुद्रस्य सुम्नम् ६

[रुद्रदेवता ।

क्रमाः १०-३५]

५ १०

६

७

८

९

१०

११

१

१

२

३

४

५

६

क्वा स्य ते रुद्र मृळयाकु—हस्तो यो अस्ति भेषजो जलापः ।

अपमर्ता रपसो दैव्यस्या—भी नु मा वृषभ चक्षमीथाः

प्र वभ्रवे वृषभाय श्वितीचे महो महीं सुष्टुतिमीरयामि ।

नमस्या कल्मलीकिनं नमोभि—र्गृणीमसि त्वेषं रुद्रस्य नामं

स्थिरोभिरङ्गैः पुरुरूप उग्रो वभ्रुः शुक्रेभिः पिपिशे हिरण्यैः ।

ईशानादस्य भुवनस्य भूरे—र्न वा उ योषद् रुद्रादसुर्यम्

अहं विमर्षि सायकानि धन्वा—हं निष्कं यजतं विश्वरूपम् ।

अहंनिदं दयसे विश्वमभवं न वा ओजीयो रुद्र त्वदस्ति

स्तुहि श्रुतं गर्तसदं युवानं मृगं न भीममुपहत्नुमुग्रम् ।

मृगा जरित्रे रुद्र स्तवानो ऽन्यं ते अस्मन्नि वपन्तु सेनाः

कुमारश्चित् पितरं वन्दमानं प्रति नानाम रुद्रोपयन्तम् ।

भूरैर्दुतारं सत्पतिं गृणीषे स्तुतस्त्वं भेषजा रास्यस्मे

या वो भेषजा मरुतः शुचीनि या शंतमा वृषणो या मंगोभु ।

यानि मनुरवृणीता पिता न—स्ता शं च योश्च रुद्रस्य वशिम

परि णो हती रुद्रस्य वृज्याः परि त्वेषस्य दुर्मतिर्मही गात् ।

अव स्थिरा मध्वेन्द्र्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृळ

एवा वभ्रो वृषभ चेकितान यथा देव न हृणीषे न हंसि ।

हवनश्रुन्नो रुद्रेह बोधि बृहद् वदेम विदुथे सुवीराः

॥ ४ ॥ (क्र० ७।४६।१-४)

(३२-३६) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । जगती, ४ त्रिष्टुप् ।

इमा रुद्राय स्थिरधन्वने गिरः क्षिप्रेषवे देवाय स्वधाज्ञे ।

अपाळ्हाय सहमानाय वेधसे तिग्मायुधाय भरता शृणोतु नः

स हि क्षयेण क्षम्यस्य जन्मनः साम्राज्येन दिव्यस्य चेतति ।

अवभवन्तीरुप नो दुरश्चरा—ऽनमीवो रुद्र जासुं नो भव

या ते दिद्युदवसृष्टा दिवस्परि क्षमया चरति परि सा वृणक्तु नः ।

सहसे ते स्वपिवात भेषजा मा नस्तोकेषु तनयेषु रीरिषः

मा नो वधी रुद्र मा परां दा मा ते भूम प्रसितौ हीलितस्य ।

आ नो भज बर्हिषि जीवशंसे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

*

॥ ५ ॥ (ऋ० ७।५३।१२)

रुद्रः (त्र्यम्बकः) (मृत्युविमोचनी ऋक्) । अनुष्टुप् ।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्

१२ ३६

॥ ६ ॥ (३७-१११) (वा० य० ३।५७-६३) ×

एतत् रुद्र भागः सह स्वस्त्वाम्बिकया तं जुषस्व स्वाहैष ते रुद्र भाग आखुस्ते पशुः ५७

अव रुद्रमदीमह्यं देवं त्र्यम्बकम् ।

यथा नो वस्यसस्करद् यथा नः श्रेयसस्करद् यथा नो व्यवसाययात् ५८

भेषजमसि भेषजं गवेऽध्याय पुरुषाय भेषजम् । सुखं मेषाय मेघ्यै ५९

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम् । उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामृतात्ः ६० ४०

एतत् ते रुद्रावसं तेन परो मूर्जवतोऽतीहि ।

अवततधन्वा पिनाकावसः कृत्तिवासा अहिंशसन्नः शिवोऽतीहि ६१

त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् । यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् ६२

शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा मा हिंसीः ।

निर्वर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय ६३ ४३

॥ ७ ॥ (वा० य० १०।२०)

रुद्र यत् ते क्रिवि परं नाम तस्मिन् हुतमस्य मेष्टमसि स्वाहा २० ४४

॥ ८ ॥ (वा० य० ११।५४)

रुद्राः सृष्टसृज्यं पृथिवीं बृहज्ज्योतिः समीधिरे ।

तेषां भानुरजस्र इच्छुक्रो देवेषु रोचते ५४ ४५

॥ ९ ॥ (वा० य० १६।१-६६) +

नमस्ते रुद्र मन्यवे उतो त इष्ये नमः । बाहुभ्यामुत ते नमः १

या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी ।

तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि २

यामिषु गिरिशन्त हस्ते विभर्ष्यस्तेवे ।

शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिंसीः पुरुषं जगत् ३ ४८

× वा० य० ३।६० (पूर्वार्धः) = ऋ० ७।५९।१२

+ वा० य० १६।१५-१६ = ऋ० १।११।७-८

[रुद्रदेवता ।]

२ ३६

७

१८

१९

२०

२१

२२

२३

२४

२५

२६

२७

२८

२९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

४०

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि ।
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मन् सुमना असत् ४
अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् ।
अहोश्च सर्वाज्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परासुव ५ ५०
असौ यस्ताम्रो अरुण उत वभ्रुः सुमङ्गलः ।
ये चैनं रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैपाथ्यं हेड ईमहे ६
असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः ।
उतैनं गोपा अदृशन्नदृशन्नुदहार्युः स दृष्टो मृडयाति नः ७
नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे ।
अथो ये अस्य सत्त्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः ८
प्रमुञ्च धन्वंनस्त्वमुभयोरात्न्योर्ज्याम् ।
याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप ९
विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ २ उत ।
अनेशनस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गाधिः १० ५५
या ते हेतिर्मीढुष्टम् हस्ते वभ्रुव ते धनुः ।
तयास्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज ११
परि ते धन्वनो हेतिरस्मान् वृणक्तु विश्वतः ।
अथो य इषुधित्तवारे अस्मन्निधेहि तम् १२
अवतत्य धनुष्ट्वं सहस्राक्ष शतेषुवे ।
निशीर्थे शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव १३
नमस्तु आयुधायानां तताय धृष्णवे । उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने १४
मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम् ।
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः १५ ६०
मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः ।
मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदामित् त्वा हवामहे १६
पशूनां पतये नमो नमः शृङ्गिज्जराय त्विषीमते पथीनां पतये नमो नमो हरिकेशयो-
पवीतिने पुष्टानां पतये नमः १७ ६२

नमो बभ्रुशाय व्याधिनेऽन्नानां पतये नमो नमो भवस्य हेतये जगतां पतये
नमो नमो रुद्रायाततायिने क्षेत्राणां पतये नमो नमः सूतायाहन्तये वनानां पतये
नमः १८

नमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणां पतये नमो नमो भुवन्तये वारिवस्कृतायौप-
धीनां पतये नमो नमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणां पतये नमो नम उच्चैर्घोषायाक्रन्दयते
पत्तीनां पतये नमः १९

नमः कृत्स्नायतया धावते सत्त्वनां पतये नमो नमः सहमानाय निव्याधिन आव्या-
धिनीनां पतये नमो नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानां पतये नमो नमो निचेरवे
परिचरायारण्यानां पतये नमः २०

नमो वश्वते परिवश्वते स्तायूनां पतये नमो नमो निषङ्गिणे इषुधिमते तस्कराणां
पतये नमो नमः सृकायिभ्यो जिघांशसद्भ्यो मुष्णतां पतये नमो नमोऽसिमद्भ्यो
नक्तश्चरद्भ्यो विकृन्तानां पतये नमः २१

नम उष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानां पतये नमो नम इषुमद्भ्यो धन्वायिभ्यश्च
वो नमो नम आतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमो नम आयच्छद्भ्योऽस्यद्भ्यश्च
वो नमः २२

नमो विसृजद्भ्यो विध्यद्भ्यश्च वो नमो नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमो नमः
शयनेभ्य आसीनेभ्यश्च वो नमो नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमः २३

नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च वो नमो नमोऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमो नम
आव्याधिनीभ्यो विविध्यन्तीभ्यश्च वो नमो नम उगणाभ्यस्तुहतीभ्यश्च वो नमः २४

नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो
गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः २५

नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमो नमो रथिभ्यो अरथेभ्यश्च वो नमो नमः
क्षत्रभ्यः संग्रहीतृभ्यश्च वो नमो नमो महद्भ्यो अर्भकेभ्यश्च वो नमः २६

नमस्तक्ष्मभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्मरिभ्यश्च वो नमो
नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमो नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः २७

नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च
पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च २८

[रुद्रदेवता ।]

नमः कपर्दिने च व्युत्पत्तेशाय च नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च नमो गिरिश-
 याय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च २९

नमो ह्रस्वाय च वामनाय च नमो बृहते च वर्षीयसे च नमो वृद्धाय च सवृधे
 च नमोऽग्न्याय च प्रथमाय च ३० ७५

नम आशवे चाजिराय च नमः शीघ्राय च शीभ्याय च नम ऊर्म्याय चाव-
 स्वन्याय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च ३१

नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमो मध्यमाय
 चापगुल्माय च नमो जघन्याय च बृध्याय च ३२

नमः सोम्याय च प्रतिसूर्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नमः श्लोक्याय
 चावसान्याय च नम उर्वर्याय च खल्याय च ३३

नमो वन्याय च कक्ष्याय च नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च नम आशुषेणाय
 चाशुरेणाय च नमः शूराय चावभेदिने च ३४

नमो विलिमने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च
 श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च ३५ ८०

नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च नमस्तीक्ष्णेषवे चायु-
 धिने च नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च ३६

नमः सुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः कुल्याय च
 सरस्याय च नमो नादेयाय च वैशन्ताय च ३७

नमः कूप्याय चावट्याय च नमो वीष्ण्याय चातप्याय च नमो मेध्याय च
 विद्युत्याय च नमो वर्ष्याय चावर्ष्याय च ३८

नमो वात्याय च रेष्म्याय च नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय च नमः सोमाय
 च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च ३९

नमः शङ्गवे च पशुपतये च नम उग्राय च भीमाय च नमोऽग्रेवधाय च दूरे-
 वधाय च नमो हन्त्रे च हनीयसे च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय ४० ८५

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय
 च शिवतराय च ४१

नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय च
 कल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च ४२ ८७

नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय च नमः किंशिलाय च क्षयणाय च नमः कप-
दिने च पुलस्तये च नमः इरिण्याय च प्रपण्याय च ४३

नमो व्रज्याय च गोष्ठ्याय च नमस्तल्याय च गेह्याय च नमो हृदय्याय च
निवेण्याय च नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च ४४

नमः शुष्क्याय च हरित्याय च नमः पाथ्यसव्याय च रजस्याय च नमो लोप्याय
चोलप्याय च नम ऊर्व्याय च सूर्याय च ४५

नमः पर्णाय च पर्णशदाय च नम उद्गुरमाणाय चाभिधनते च नम आखिदुते च
प्रखिदुते च नम इषुकुद्भ्यो धनुष्कुद्भ्यश्च वो नमो नमो वः किरिकेभ्यो देवानां
हृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमो विक्षिणत्केभ्यो नम आनिर्हतेभ्यः ४६
द्रापे अन्धसस्पते द्ररिद्र नीललोहित ।

आसां प्रजानामेषां पशूनां मा भेर्मा रोड्मो च नः किञ्चनाममत् ४७

इमा रुद्राय तवसे कपदिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः

यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम् ४८

या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहा भेषजी ।

शिवा रुतस्य भेषजी तयां नो मृड जीवसे ४९

परि नो रुद्रस्य हेतिवृणक्तु परि त्वेपस्य दुर्मतिरघायोः ।

अव स्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृड ५०

मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमनां भव ।

परमे वृक्ष आयुधं निधाय कृत्ति वसान् आचर पिनाकं विभ्रदामहि ५१

विकिरिद्र विलोहित नमस्ते अस्तु भगवः ।

यास्ते सहस्रं हेतयोऽन्यमस्मन्निर्वपन्तु ताः ५२

सहस्राणि सहस्रशो ब्राह्मोस्तवं हेतयः । तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि ५३

असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधि भूम्याम् ।

तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ५४

अस्मिन् महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे भवा अधि । तेषां सहस्रयोजनेऽव ५५

नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिव्यं रुद्रा उपश्रिताः । तेषां सहस्रयोजनेऽव ५६

नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः श्रमाचराः । तेषां सहस्रयोजनेऽव ५७

ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः । तेषां सहस्रयोजनेऽव ५८

[रुद्रदेवता ।]

कप-	ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः । तेषां सहस्रयोजनेऽव०	५९	
४३	ये पथां पथिरक्षय ऐलवृदा आयुर्युधः । तेषां सहस्रयोजनेऽव०	६०	१०५
य च	ये तीर्थानि प्रचरन्ति सूकाहस्ता निषङ्गिणः । तेषां सहस्रयोजनेऽव०	६१	
४४	येऽन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबन्तो जनान् । तेषां सहस्रयोजनेऽव०	६२	
याय	य एतावन्तश्च भूयांश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे । तेषां सहस्रयोजनेऽव०	६३	
४५	नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवः । तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश		
ते च	प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः । तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं		
नां	द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः	६४	
४६	नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषां वात इषवः । तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा		
	दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः । तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते		
४७	यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः	६५	११०
	नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषवः । तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा		
४८	दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः । तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते		
	यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः	६६	१११

॥ १० ॥ (अथर्व० १।१९।३)

(११२-११७) ब्रह्मा । पथ्यापङ्क्तिः ।

५०	यो नः स्वो यो अरणः सजात उत निष्ठ्यो यो अस्माँ अभिदासति ।		
५१	रुद्रः शरव्ययैतान् ममामित्रान् वि विध्यतु	३	११२

॥ ११ ॥ (अथर्व० ६।५५।२-३)

२ त्रिष्टुप्, ३ जगती ।

५२	ग्रीष्मो हेमन्तः शिशिरो वसन्तः शरद् वर्षाः स्विते नो दधात ।		
५३	आ नो गोषु भजता प्रजायाँ निवात इद् वः शरणे स्याम	२	
५४	इदावत्सराय परिवत्सराय संवत्सराय कृणुता बृहन्नमः ।		
५५	तेषां वयं सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम	३	११४

॥ १२ ॥ (अथर्व० १३।४।४; १३।६।२५-२६) ।

५६	४ प्राजापत्याऽनुष्टुप्, २५ एकपदाऽऽसुरी गायत्री, २६ आर्च्यनुष्टुप् ।		
५७	सोऽर्यमा स वरुणः स रुद्रः स महादेवः ।		
५८	सिमिर्निम आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः	४	११५

६ है० [छ०]

स एव मृत्युः सोऽमृतं सोऽमृतं स रक्षः
स रुद्रो वसुवर्निर्वसुदेयं नमोवाके वषट्कारोऽनु संहितः

२५

२६ ११७

॥ १३ ॥ (अथर्व० १।२७।६)

(११८) कपिञ्जलः । अनुष्टुप् ।

रुद्र जलाषभेषज नीलशिखण्ड कर्मकृत् ।

प्राशं प्रतिप्राशो जह्यरसान् कृण्वोषधे

६ ११८

॥ १४ ॥ (अथर्व० ७।८७।१)

(११९-१४१) अथर्वा । जगती ।

यो अग्नौ रुद्रो यो अस्वन्तर्य ओषधीर्वीरुध आविवेशं ।

य इमा विश्वा भुवनानि चाकलपे तस्मै रुद्राय नमो अस्त्वग्नये

१ ११९

॥ १५ ॥ (अथर्व० १५।५।१-२१)

१ त्रिपदा समविषमा गायत्री; २ त्रिपदा भुरिगार्ची त्रिष्टुप्; ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१ द्विपदा प्राजापत्याऽनुष्टुप्; ४ त्रिपदा स्वराट् प्राजापत्या पङ्क्तिः; ५, ८, ११, १७ त्रिपदा ब्राह्मी गायत्री; ७, १०, १६ त्रिपदा ककुप्; १३, १९ भुरिग् विषमा गायत्री, १४ निचृद्ब्राह्मी गायत्री; २० विराट्;

तस्मै प्राच्यां दिशो अन्तर्देशाद् भवमिष्वासमनुष्टातारमकुर्वन् ॥ १ ॥

१ १२०

भव एनमिष्वासः प्राच्यां दिशो अन्तर्देशादनुष्टातानुं तिष्ठति

नैनं श्रुवो न भवो नेशानः ॥ २ ॥

२

नास्य पशून् समानान् हि नस्ति य एवं वेद ॥ ३ ॥

३

तस्मै दक्षिणाया दिशो अन्तर्देशाच्छर्वमिष्वासमनुष्टातारमकुर्वन् ॥ १ ॥

४

शर्व एनमिष्वासो दक्षिणाया दिशो अन्तर्देशादनुष्टातानुं तिष्ठति

नैनं श्रुवो न भवो नेशानः ॥ २ ॥ ५ नास्य पशून् ॥ ३ ॥

६ १२१

तस्मै प्रतीच्यां दिशो अन्तर्देशात् पशुपतिमिष्वासमनुष्टातारमकुर्वन् ॥ १ ॥

७

पशुपतिरेनमिष्वासः प्रतीच्यां दिशो अन्तर्देशादनुष्टातानुं तिष्ठति

नैनं श्रुवो न भवो नेशानः ॥ २ ॥ ८ नास्य पशून् ॥ ३ ॥

९

तस्मा उदीच्या दिशो अन्तर्देशादुग्रं देवमिष्वासमनुष्टातारमकुर्वन् ॥ १ ॥

१०

उग्र एनं देव इष्वास उदीच्या दिशो अन्तर्देशादनुष्टातानुं तिष्ठति

नैनं श्रुवो न भवो नेशानः ॥ २ ॥ ११ नास्य पशून् ॥ ३ ॥

१२

तस्मै ध्रुवायां दिशो अन्तर्देशाद् रुद्रमिष्वासमनुष्टातारमकुर्वन् ॥ १ ॥

१३

[रुद्रदेवता ।	अन्तः ११६-१४५]	रुद्र एनमिष्वासो ध्रुवायां दिशो अन्तर्देशादनुष्ठातानु तिष्ठति		
२५		नैनं शर्वो न भवो नेशानः ॥ २ ॥ १४ नास्य पशून् ० ॥ ३ ॥	१५	
२६ ११०		तस्मा ऊर्ध्वायां दिशो अन्तर्देशान्महादेवमिष्वासमनुष्ठातारमकुर्वन् ॥ १ ॥	१६	१३५
		महादेव एनमिष्वास ऊर्ध्वायां दिशो अन्तर्देशादनुष्ठातानु तिष्ठति		
		नैनं शर्वो न भवो नेशानः ॥ २ ॥ १७ नास्य पशून् ० ॥ ३ ॥	१८	
६ ११८		तस्मै सर्वेभ्यो अन्तर्देशेभ्य ईशानमिष्वासमनुष्ठातारमकुर्वन् ॥ १ ॥	१९	
		ईशान एनमिष्वासः सर्वेभ्यो अन्तर्देशेभ्योऽनुष्ठातानु तिष्ठति		
		नैनं शर्वो न भवो नेशानः ॥ २ ॥	२०	
		नास्य पशून् न समानान् हि नस्ति य एवं वेद ॥ ३ ॥	२१	१४०
१ ११९		॥ १६ ॥ (अथर्व० १९।१८।३) आचर्यनुष्टुप् ।		
		सोमं ते रुद्रवन्तमृच्छन्तु । ये माघायवो दक्षिणाया दिशोऽभिदासात्	३	१४१

रुद्र-सहचारी देवगणः ।

(१) रुद्रः मित्रावरुणौ च ।

॥ १७ ॥ (ऋ० १।४३।३)

(१४२) कण्वो घौरः । गायत्री ।

यथा नो मित्रो वरुणो यथा रुद्रश्चिकेतति । यथा विश्वे सजोषसः ३ १४२

(२) रुद्रः, दिशः ।

॥ १८ ॥ (अथर्व० ३।२६।१-६)

(१४३-२००) अथर्वा । दिशः, रुद्रः, १ साग्रयो हेतयः, २ सकामा अविष्यवः, ३ वैराजः, ४ सवाताः प्रविध्यन्तः, ५ सौषधिका निलिम्पाः, ६ बृहस्पतियुता अवस्वन्तः । त्रिष्टुप्; २, ५-६ जगती; ३-४ भुरिक्; १-६ पञ्चपदा विपरीतपादलक्ष्मा ।

येऽस्यां स्थ प्राच्यां दिशि हेतयो नाम देवास्तेषां वो अग्निरिषवः ।

ते नो मृडतु ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा १

येऽस्यां स्थ दक्षिणायां दिश्य विष्यवो नाम देवास्तेषां वः काम इषवः ।

ते नो मृडतु ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा २

येऽस्यां स्थ प्रतीच्यां दिशि वैराजा नाम देवास्तेषां व आप इषवः ।

ते नो मृडतु ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा ३ १४५

ये३ऽस्यां स्थोदीच्यां दिशि प्रविध्यन्तो नाम देवास्तेषां वो वात इषवः ।
 ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा ४
 ये३ऽस्यां स्थ ध्रुवायां दिशि निलिम्पा नाम देवास्तेषां व ओषधीरिषवः ।
 ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा ५
 ये३ऽस्यां स्थोर्ध्वायां दिश्यवस्वन्तो नाम देवास्तेषां वो बृहस्पतिरिषवः ।
 ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा ६ १४८

॥ १९ ॥ (अथर्व० ३।२७।१-६)

दिशः, रुद्रः; १ अग्निः असितः, आदित्याः; २ इन्द्रः, तिरश्चिराजी, पितरः; ३ वरुणः; पृदाकुः, अन्नः; ४ सोमः, स्वजः, अशनिः; ५ विष्णुः, कल्माषग्रीवो वीरुधः; ६ बृहस्पतिः, श्वित्रं, वर्षम् ।

१-६ पञ्चपदा ककुम्मतीगर्भाऽष्टिः, (२ अत्यष्टिः, ५ भुरिक्)

प्राची दिग्गिरिधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः ।
 तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।
 यो३ऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः १
 दक्षिणा दिग्निन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः ।
 तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।
 यो३ऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः २ १५०
 प्रतीची दिग् वरुणोऽधिपतिः पृदाक् रक्षितान्नमिषवः ।
 तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।
 यो३ऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ३
 उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः ।
 तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।
 यो३ऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ४
 ध्रुवा दिग् विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः ।
 तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।
 यो३ऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ५
 ऊर्ध्वा दिग् बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः ।
 तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।
 यो३ऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ६ १५४

(३) आदित्याः, रुद्राः ।

॥ २० ॥ (अथर्व० ५।३।११)

बृहद्विवोऽथर्वा । विराङ् जगती ।

ये नः सपत्ना अप ते भवन्तिवन्द्राग्निभ्यामव वाधामह एनान् ।

आदित्या रुद्रा उपरिस्पृशो न उग्रं चेत्तारमधिराजमक्रत

१० १५५

(४) सोमारुद्रौ ।

॥ २१ ॥ (अथर्व० ५।६।१-१४)

१ ब्रह्म, २ कर्माणि, ३-४ रुद्रगणाः, ५-८ सोमारुद्रौ, ९ हेतिः, १०-१४ सर्वात्मा रुद्रः ।

त्रिष्टुप्, २ अनुष्टुप्, ३ जगती, ४ अनुष्टुबुष्णिक्त्रिष्टुब्गर्भा पञ्चपदा जगती,

५ ७ त्रिपदा विराणनाम गायत्री, ८ एकावसाना द्विपदाऽऽर्च्यनुष्टुप्,

१० प्रस्तारपङ्क्तिः, ११-१३ पङ्क्तिः, १४ स्वराट्पङ्क्तिः ।

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् वि सीमन्तः सुरुचो वेन आवः ।

स बुध्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः

अनासा ये वः प्रथमा यानि कर्माणि चक्रिरे ।

वीरान् नो अत्र मा दभन् तद् व एतत् पुरो दधे

सहसंधार एव ते समस्वरन् दिवो नाके मधुजिह्वा असश्चतः ।

तस्य स्पशो न नि मिषन्ति भूर्णयः पदेपदे पाशिनः सन्ति सेतवे

पर्यु पु प्र धन्वा वाजसातये परि वृत्राणि सुक्षणिः ।

द्विषत्तदध्यर्णवेनेयसे सनिस्रसो नामासि त्रयोदशो मास इन्द्रस्य गृहः

त्येतेनारात्सीरसौ स्वाहा ।

तिग्मायुधौ तिग्महेती सुशेवौ सोमारुद्राविह सु मृडतं नः

अपैतेनारात्सीरसौ स्वाहा । तिग्मायुधौ तिग्महेती०

अपैतेनारात्सीरसौ स्वाहा । तिग्मायुधौ तिग्महेती०

ममक्तमस्मान् दुरितादवद्याजुषेथां यज्ञममृतमस्मासु धत्तम्

चक्षुषो हेते मनसो हेते ब्रह्मणो हेते तपसश्च हेते ।

मेन्या मेनिरस्यमेनयस्ते सन्तु येऽस्माँ अभ्यघायन्ति

योऽस्माँश्चक्षुषा मनसा चित्याकृत्या च यो अघायुरभिदासात् ।

त्वं ताने मेन्यामेनीन् कृणु स्वाहा

१० १६५

(१४)

इन्द्रस्य गृहोऽसि । तं त्वा प्र पद्ये तं त्वा प्र विशामि सर्वगुः सर्वपूरुषः

सर्वात्मा सर्वतनूः सह यन्मेऽस्ति तेन ११

इन्द्रस्य शर्मासि । तं त्वा प्र पद्ये तं १२

इन्द्रस्य वर्मासि । तं त्वा प्र पद्ये तं १३

इन्द्रस्य वरूथमसि । तं त्वा प्र पद्ये तं १४ १६९

(५) भव-शर्व-रुद्राः । ×

॥ २२ ॥ (अथर्व० ११।२।१-३१)

त्रिष्टुप् ; १ पराऽतिजागता विराड्जागती, २ अनुष्टुप्गर्भा पञ्चपदा पथ्याजगती, ३ चतुष्पदा

स्वराडुष्णिक् ; ४-५, ७, १३, १५-१६, २१ अनुष्टुप् ; ६ आर्षी गायत्री ; ८ महावृहती ;

९ आर्षी ; १० पुरोकृति त्रिपदा विराट् ; ११ पञ्चपदा विराड्जगतीगर्भा

शकरी ; १२ भुरिक् ; १४, १७-१९, २३, २६-२७ विराड्गायत्री ;

२० भुरिगायत्री ; २२ विषमपादलक्ष्मा त्रिपदा

महावृहती ; २४, २९ जगती ; २५ पञ्चपदा

ऽतिशकरी ; ३० चतुष्पदा उष्णिक् ;

३१ त्र्यवसाना विपरीतपादलक्ष्मा

षट्पदा (जगती ?) ।

भवांशर्वो मृडतं माभि यातं भूतपती पशुपती नमो वाम् ।

प्रतिहितामायतां मा वि साष्टं मा नो हिंसिष्टं द्विपदो मा चतुष्पदः १ १७०

शुनं क्रोष्ट्रे मा शरीराणि कर्तमलिक्लवेभ्यो गृध्रेभ्यो ये च कृष्णा अविष्यवः ।

मक्षिकास्ते पशुपते वयांसि ते विघ्नसे मा विदन्त २

क्रन्दाय ते प्राणाय याश्च ते भव रोपयः । नमस्ते रुद्र कृष्णः सहस्राक्षायामर्त्य ३

पुरस्तात् ते नमः कृष्ण उत्तरादधरादुत । अभीवर्गाद् दिवस्पर्यन्तरिक्षाय ते नमः ४

मुखाय ते पशुपते यानि चक्षूषि ते भव । त्वचे रूपाय संदृशे प्रतीचीनाय ते नमः ५

अङ्गेभ्यस्त उदराय जिह्वाया आस्यायि ते । दुद्भ्यो गन्धाय ते नमः ६ १७१

अस्त्रा नीलशिखण्डेन सहस्राक्षेण वाजिना । रुद्रेणार्धकघातिना तेन मा समरामहि ७

स नो भवः परि वृणक्तु विश्वत आप इवाग्निः परि वृणक्तु नो भवः ।

मा नोऽभि मास्तु नमो अस्त्वस्मै ८

चतुर्नमो अष्टकृत्वो भवाय दश कृत्वः पशुपते नमस्ते ।

तवमे पञ्च पशवो विभक्ता गावो अश्वाः पुरुषा अजावयः ९ १७२

× दे० [आयुर्वेद०] १७१३-१७१९ । मन्त्राः द्रष्टव्याः ।

[रुद्रदेवता ।
पृष्ठा १६६-१९३]

तव चतस्रः प्रदिशस्तव द्यौस्तव पृथिवी तवेदमुग्रोर्वीन्तरिक्षम् ।

तवेदं सर्वमात्मन्वद् यत् प्राणत् पृथिवीमनु

उरुः कोशो वसुधानस्तवायं यस्मिन्निमा विश्वा भुवनान्यन्तः ।

स नो मृड पशुपते नमस्ते परः क्रोष्टारो अभिभाः श्वानः परो यन्त्वघरुदो विकेश्यः ११ १८०

धनुर्विभर्षि हरितं हिरण्यं सहस्रं शतवधं शिखण्डिनम् ।

रुद्रस्पृश्वरति देवहेतिस्तस्यै नमो यतमस्यां दिशीडेतः १२

योडेभियातो निलयते त्वां रुद्र निचिकीर्षति ।

पश्चादनुप्रयुङ्क्षे तं विद्वस्य पदनीरिव १३

भवारुद्रौ सयुजा संविदानावुभावुग्रौ चरतो वीर्याय ।

ताभ्यां नमो यतमस्यां दिशीडेतः १४

नमस्तेऽस्त्वायते नमो अस्तु परायते । नमस्ते रुद्र तिष्ठत आसीनायोत ते नमः १५

नमः सायं नमः प्रातर्नमो रात्र्या नमो दिवा ।

भवाय च शर्वाय चोभाभ्यामकरं नमः १६ १८५

सहस्राक्षमतिपश्यं पुरस्ताद् रुद्रमस्यन्तं बहुधा विपश्चितम् ।

मोषाराम जिह्वेयमानम् १७

१ १७९ श्यावाश्वं कृष्णमर्षितं मृणन्तं भीमं रथं केशिनः पादयन्तम् ।

पूर्वं प्रतीमो नमो अस्त्वस्मै १८

२ मा नोऽभि स्या मृत्युं देवहेति मा नः क्रुधः पशुपते नमस्ते ।

३ अन्यत्रास्मद् दिव्यां शाखां वि धूनु १९

४ मा नो हिंसीरधि नो ब्रूहि परिं णो वृङ्गि मा क्रुधः । मा त्वया समरामहि २०

५ मा नो गोषु पुरुषेषु मा गृधो अजाविषु ।

६ १७९ अन्यत्रोऽग्र विवर्तय पियारूणां प्रजां जहि २१ १९०

७ यस्य तुक्मा कासिका हेतिरेकमश्वस्येव वृषणः क्रन्दु एति ।

८ अभिपूर्वं निर्णयते नमो अस्त्वस्मै २२

योडेन्तरिक्षे तिष्ठति विष्टभितोऽयं ज्वनः प्रमृणन् देवपीयून् ।

९ १८० तस्मै नमो दुशभिः शकरीभिः २३

तुभ्यमारण्याः पशवो मृगा वनै हिता हंसाः सुपर्णाः शकुना वयांसि ।

तव युक्षं पशुपते अस्वन्तस्तुभ्यं क्षरन्ति दिव्या आपो वृधे २४ १९३

शिंशुमारा अजगराः पुंरीकया जपा मत्स्या रजसा येभ्यो अस्यसि ।
न ते दुरं न परिष्ठास्ति ते भव सद्यः सर्वान् परि

पश्यसि भूमिं पूर्वस्माद्वस्युत्तरस्मिन्त्समुद्रे
मा नो रुद्र तक्मना मा विषेण मा नः सं स्या दिव्येनाग्निना ।

अन्यत्रास्मद् विद्युतं पातयैताम्
भवो दिवो भव ईशे पृथिव्या भव आ पप्र उर्वं१न्तरिक्षम् ।

तस्मै नमो यतमस्यां दिशीशुतः

भव राजन् यजमानाय मृड पशूनां हि पशुपतिर्वभूथ ।

यः श्रद्धाति सन्ति देवा इति चतुष्पदे द्विपदेऽस्य मृड

मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा नो वहन्तमुत मा नो वक्ष्यतः ।

मा नो हिंसीः पितरं मातरं च स्वां तन्वं रुद्र मा रीरिषो नः

रुद्रस्यैलबकारेभ्योऽसंस्तुक्तगिलेभ्यः ।

इदं महास्येभ्यः श्वभ्यो अकरं नमः

नमस्ते घोषिणीभ्यो नमस्ते केशिनीभ्यः ।

नमो नमस्कृताभ्यो नमः संभृज्जतीभ्यः ।

नमस्ते देव सेनाभ्यः स्वस्ति नो अभयं च नः

॥ २३ ॥ (अथर्व० ६।९३।१-२)

(२०१-२०२) शन्तातिः । रुद्रः, १ यमो मृत्युः, शर्वः, २ भवः, शर्वः । त्रिष्टुप् ।

यमो मृत्युरधमारो निर्ऋथो वभ्रुः शर्वोऽस्ता नीलशिखण्डः ।

देवजनाः सेनयोत्तस्थिवांसस्ते अस्माकं परि वृज्जन्तु वीरान्

मनसा होमैर्हरसा घृतेन शर्वायास्त्र उत राज्ञे भवाय ।

नमस्येभ्यो नम एभ्यः कृणोम्यन्यत्रास्वदुधविषा नयन्तु

(६) रुद्रः, व्याघ्रः ।

॥ २४ ॥ (अथर्व० ४।३।१-७)

(२०३-२०९) अथर्वा । अनुष्टुप्, १ पथ्यापङ्क्तिः, ३ गायत्री ७ ककुम्भतीगर्भोपरिष्ठाद्बृहती ।

उदितस्त्रयो अक्रमन् व्याघ्रः पुरुषो वृकः ।

हिरुग्धि यन्ति सिन्धवो हिरुग् देवो वनस्पतिर्हिरुङ्गमन्तु शत्रवः

परैणैतु पथा वृकः परमेणोत तस्करः ।

परैण दुत्वती रजुः परैणाघायुरर्षतु

अक्षयौ च ते मुखे च ते व्याघ्र जम्भयामसि ।

आत् सर्वान् विंशतिं नखान्

व्याघ्रं दुत्वतां वयं प्रथमं जम्भयामसि ।

आहुष्टेनमथो अहिं यातुधानमथो वृकम्

यो अद्य स्तेन आयति स संपिष्टो अपायति ।

प्रथमपध्वंसेनैत्विन्द्रो वज्रेण हन्तु तम्

मूर्णा मृगस्य दन्ता अपिशीर्णा उ पृष्टयः ।

निमृक्तै गोधा भवतु नीचार्यच्छशयुर्मृगः

यत् संयमो न वि यमो वि यमो यन्न संयमः ।

इन्द्रजाः सौमजा आथर्वणमसि व्याघ्रजम्भनम्

(७) रुद्रः (अग्निः) ।

॥ २५ ॥ (ऋ० ४।३।१)

(२१०) वामदेवो गौतमः । रुद्रः । त्रिष्टुप् ।

आ वो राजानमध्वरस्य रुद्रं होतारं सत्ययज्ञं रोदस्योः ।

अग्निं पुरा तनयित्नोरचित्ता—द्विरण्यरूपमवसे कणुध्वम्

॥ २६ ॥ (ऋ० १०।१८।१-४)

(२११-२१४) संकुसुको यामायनः । मृत्युः । त्रिष्टुप् ।

परं मृत्यो अनु परैहि पन्थां यस्ते स्व इतरो देवयानात्

चक्षुष्मते शृण्वते तै ब्रवीमि मा नः प्रजां रीरिषो मोत वीरान्

मृत्योः पदं योपयन्तो यदैत द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः ।

आप्यार्यमानाः प्रजया धनेन शुद्धाः पूता भवत यज्ञियासः

हमे जीवा वि मृतैराववृत्र—नभूद् भद्रा देवहूतिर्नो अद्य ।

प्राञ्चो अगाम नुतये हसाय द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः

हमं जीविम्यः परिधिं दधामि मेषां नु गादपरो अर्थमेतम् ।

शतं जीवन्तु शरदः पुरुची—रन्तर्मृत्युं दधतां पर्वतेन

॥ २७ ॥ (अथर्व० ६।१३।१-३)

(२१५-२१७) अथर्वा (स्वस्त्ययनकामः) । मृत्युः । अनुष्टुप् ।

नमो देववधेभ्यो नमो राजवधेभ्यः ।

अथो ये विश्वानां वधास्तेभ्यो मृत्यो नमोऽस्तु ते

नमस्ते अधिवाकाय परावाकाय ते नमः ।

सुमत्यै मृत्यो ते नमो दुर्मत्यै त इदं नमः

नमस्ते यातुधानेभ्यो नमस्ते भेषजेभ्यः ।

नमस्ते मृत्यो मूलैभ्यो ब्राह्मणेभ्य इदं नमः

॥ २८ ॥ (अथर्व० ४।३५।१-७)

(२१८-२२४) प्रजापतिः । अतिमृत्युः । त्रिष्टुप्, ३ भुरिजगती ।

यमोदुनं प्रथमजा ऋतस्य प्रजापतिस्तपसा ब्रह्मणेऽपचत् ।

यो लोकानां विष्टतिर्नाभिरेषात् तेनौदुनेनार्तिं तराणि मृत्युम्

येनातरन् भूतकृतोऽति मृत्युं यमन्वविन्दन् तपसा श्रमेण ।

यं पपाच ब्रह्मणे ब्रह्म पूर्वं तेनौदुनेनार्तिं तराणि मृत्युम्

यो दाधार पृथिवीं विश्वभोजसं यो अन्तरिक्षमापृणाद् रसेन ।

यो अस्तंभ्राद् दिवमध्वो महिम्ना तेनौदुनेनार्तिं तराणि मृत्युम्

यस्मान्मासा निर्मितास्त्रिंशदराः संवत्सरो यस्मान्निर्मितो द्वादशारः ।

अहोरात्रा यं परियन्तो नापुस्तेनौदुनेनार्तिं तराणि मृत्युम्

यः प्राणदः प्राणदवान् वभूव यस्मै लोका घृतवन्तः क्षरन्ति ।

ज्योतिष्मतीः प्रदिशो यस्य सर्वास्तेनौदुनेनार्तिं तराणि मृत्युम्

यस्मात् पक्वादमृतं संवभूव यो गायत्र्या अर्धिपतिर्वभूव ।

यस्मिन् वेदा निर्हिता विश्वरूपास्तेनौदुनेनार्तिं तराणि मृत्युम्

अव वाधे द्विषन्तं देवपीयुं सपत्ना ये मेऽप ते भवन्तु ।

ब्रह्मोदुनं विश्वजितं पचामि शृण्वन्तु मे श्रद्धधानस्य देवाः

॥ २९ ॥ (अथर्व० ७।१०।१)

(२२५) द्यावापृथिवी, अन्तरिक्षम्, मृत्युः । विराट् पुरस्ताद्वहती ।

नमस्कृत्य द्यावापृथिवीभ्यामन्तरिक्षाय मृत्यवे ।

मेक्षाम्यध्वस्तिष्ठन्मा मां हिसिपुरीश्वराः

[रुद्रदेवता ।]

॥ ३० ॥ (अथर्व० ६।६३।२-३)

(२२६-२२७) द्रुहणः । २ यमः, ३ मृत्युः । २ अतिजगतीगर्भा, ३ जगती ।

नमोऽस्तु ते निर्ऋते तिग्मतेजोऽयस्मयान् वि चृता बन्धपाशान् ।

यमो मह्यं पुनरित् त्वां ददाति तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे

अयस्यै द्रुपदे वैधिष इहाभिहितो मृत्युभिर्ये सहस्रम् ।

यमेन त्वं पितृभिः संविदान उत्तमं नाक्रमधि रोहयेमम् ।

इति रुद्रदेवता समाप्ता ।

रुद्रदेवता-पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

[११] १।११४।६ (कुत्स आङ्गिरसः । रुद्रः)

— रुद्राय — —

त्मने तोकाय तनयाय मृळ ।

(३०) १।३३।१४ (गृत्समदः शौनकः । रुद्रः)

— रुद्रस्य — — ।

मीद्वस्तोकाय तनयाय मृळ ।

[१४] १।११४।९ उप ते स्तोमान् पशुपा इवाकरं ।

१०।१२७।८ (विहव्य आङ्गिरसः । विधे देवाः)

उप ते गा इवाकरं । — स्तोमं ।

[१५] १।११४।१० मृळा च नो ऋधि च ब्रूहि देव ।

(अदितिः ० ४१९) १।३५।११ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । सविता)

रक्षा च नो ऋधि ... ।

ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

[१८] २।३३।२ (गृत्समदः शौनकः । रुद्रः)

व्य१स्सद् द्वेषो वितरं व्यंहो ।

(इन्द्रः २०५१) ६।४४।१६ (शंयुर्वाहस्पत्यः । इन्द्रः)

व्य१स्सद् द्वेषो युयवद् व्यंहः ।

[३०] २।३३।१४ (गृत्समदः शौनकः । रुद्रः)

परि णो हेतो रुद्रस्य वृज्याः ।

६।२८।७ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । गावः)

परि वो हेतो — ।

(इन्द्रः ३१९३) ७।८४।२ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । इन्द्रावरुणौ)

परि नो हेळो वरुणस्य वृज्याः ।

[३०] २।३३।१४ = (११) १।१४।६ तोकाय तनयाय मृळ ।

ऋग्वेदस्य चतुर्थं मण्डलम् ।

[२२७] ४।३।१ (वामदेवो गौतमः । रुद्रः)

होतारं सत्ययजं रोदस्योः ।

(अग्निः १०८७) ६।१६।४६ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । अग्निः)

होतारं सत्ययजं रोदस्योः ।

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

[३२] ७।४६।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । रुद्रः)

अषाळहाय सहमानाय वेधसे ।

(इन्द्रः १२१८) २।२१।२ (गृत्समदो भार्गवः शौनकः । इन्द्रः)

अषाळहाय सहमानाय वेधसे ।

[३५] ७।४६।४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । रुद्रः)

मा नो वधी रुद्र मा परा दा ।

(इन्द्रः ८५४) १।१०४।८ (कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्रः)

मा नो वधीरिन्द्र मा परा दा ।

दैवत-संहितान्तर्गत रुद्रदेवता-मन्त्राणां सूची ।

अस्थौ च ते मुखं च ते	२०५	उग्र एनं देव इष्वासः	१३०
बह्वेभ्यस्त उदराय	१७५	उदितस्त्रयो अक्रमन्	२०३
अथवोचदधिवक्ता	५०	उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः	१५२
अनासा ये वः प्रथमा	१५७	उन्मा ममन्द वृषभो	२२
अपेतनारास्सीरसौ	१६२	उप ते स्तोमान् पशुपा	१४
अयस्मये दुपदे	२२७	उरुः कोशो वसुधानः	१८०
अहं विभिर्धि सायकानि	२६	ऊर्ध्वा दिग् बृहस्पतिरधिपतिः	१५४
अवतल्य धनुष्ट्वम्	५८	एतत् ते रुद्रावसं	४१
अव बाधे द्विषन्तं	२२३	एवा बभ्रो वृषभ	३१
अव रुद्रमदीमहाव	३८	एष ते रुद्र भागः	३७
अवैतेनारास्सीरसौ	१६१	कद् रुद्राय प्रचेतसे	१
अवोचाम नमो अस्मा	१६	कुमारश्चित् पितरं	२८
अरयाम ते सुमतिं	८	क्रन्दाय ते प्राणाय	१७२
अषंश्वाता सहस्राणि	९९	क्व स्य ते रुद्र मृळयाकुः	२३
अशौ यस्ताम्रो अरुण	५१	गाथपतिं मेधपतिं	३
अशौ योऽवसर्पति	५२	ग्रीष्मो हेमन्तः शिशिरो	११३
अस्त्रा नीलशिखण्डेन	१७६	चक्षुषो हेते मनसो	१६४
अस्मिन् महत्यर्णवे	१००	चतुर्नमो अष्टकृत्वो	१७८
आ ते पितर्मरुतां	१७	तव चतस्रः प्रदिशः	१७९
आरे ते गोप्रसुत	१५	तस्मा उदीच्या दिशो	१२९
आ वो राजानमध्वरस्य	२१०	तस्मा ऊर्ध्वाया दिशो	१३५
एदं पित्रे मरुताम्	११	तस्मै दक्षिणाया दिशो	१२३
एदवत्सराय परि०	११४	तस्मै ध्रुवाया दिशो	१३२
रुद्रस्य गृहोऽसि	१६६	तस्मै प्रतीच्या दिशो	१२६
रुद्रस्य वरूथमसि	१६९	तस्मै प्राच्या दिशो	१२०
रुद्रस्य वर्मासि	१६८	तस्मै सर्वेभ्यो अन्तर्देशेभ्यः	१३८
रुद्रस्य शर्मासि	१६७	तुभ्यमारण्याः पशवो	१२३
रुध्रं जीवेभ्यः परिधिं	२१४	त्र्यम्बकं यजामहे	३६; ४०
रमा रुद्राय तवसे	६; ९३	त्र्यायुषं जमदग्नेः	४२
रुमा रुद्राय स्थिर०	३२	त्वादत्तेभी रुद्र शंतमेभिः	१८
रुमे जीवा वि मृतैः	२१३	त्वेषं वयं रुद्रं यज्ञसाधं	९
रुशन एनामिष्वासः	१३९	दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिः	१५०

दिवो वराहमरुषं	१०	नमो वात्याय च	८४
द्रापे अन्धसरूपे	९२	नमो विसृजद्भ्यो	६८
धनुर्भिर्भर्षि हरितं	१८१	नमो व्रज्याय च	८९
ध्रुवा दिग् विष्णुरधिपतिः	१५३	नमोऽस्तु ते निर्ऋते	१२६
नम आशवे चाजिराय	७६	नमोऽस्तु नीलग्रीवाय	५३
नम उष्णीषिणे	६७	नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि	१०९
नमः कपर्दिने च	७४	नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे	११०
नमः कूप्याय च	८३	नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां	१११
नमः कृत्स्नायतया	६५	नमो हिरण्यवाहवे	६२
नमः पर्णाय च	९१	नमो ह्रस्वाय च	७५
नमः पार्याय च	८७	नास्य पशून् न समानान् १२२, १२५, १२८, १३१,	
नमः शङ्खवे च	८५	१३४, १३७, १४०	
नमः शम्भवाय च	८६	नीलग्रीवाः शितिकण्ठा	१०१
नमः शुष्क्याय च	९०	नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः	१०२
नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यः	७३	न्वेतेनारात्सीरसौ	१६०
नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यः	६९	परं मृत्यो अनु परेहि	२११
नमः सायं नमः प्रातः	१८५	परि णो हेती रुद्रस्य	३०
नमः सिकत्याय च	८८	परि ते धन्वनो हेतिः	५७
नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यः	७१	परि नो रुद्रस्य हेतिः	९५
नमः सोभ्याय च	७८	परेणेतु पथा वृकः	२०४
नमः सुत्याय च	८२	पर्यु पु प्र धन्वा वाजसातये	१५९
नमस्कृत्य द्यावापृथिवीभ्यां	२२५	पशुपतिरेनमिष्वासः	१२७
नमस्त आयुधायाना०	५९	पुरस्तात् ते नमः कृष्णः	१७३
नमस्तक्ष्मभ्यो रथकारेभ्यः	७२	प्रतीची दिग् वरुणोऽधिपतिः	१५१
नमस्ते अधिवाकाय	२१६	प्र बभ्रवे वृषभाय	२४
नमस्ते घोषिणीभ्यो	२००	प्रभुञ्च धन्वनस्त्वम्	५४
नमस्ते यातुधानेभ्यो	२१७	प्राची दिगग्निरधिपतिः	१४९
नमस्ते रुद्र मन्यव	४६	ब्रह्म जज्ञाने प्रथमं	१५६
नमस्तेऽस्त्वायते नमो	१८४	भव एनमिष्वासः	१२१
नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यः	१७०	भव राजन् यजमानाय	१९७
नमो ज्येष्ठाय च	७७	भवा रुद्रौ सयुजा	१८३
नमो देववधेभ्यो	२१५	भवाशर्वौ मृडतं	१७०
नमो धृष्णवे च	८१	भवो दिवो भव ईशे	१९६
नमो बभ्रुशाय	६३	भेषजमसि भेषजं	३९
नमो बिल्मिने च	८०	मनसा होमैर्हरसा	२०२
नमो रोहिताय	६४	महादेव एनमिष्वासः	१३६
नमो वज्रते परि०	६६	मा त्वा रुद्र चुकुधामा	२०
नमो वन्याय च	७९	मा त्वा रुद्र चुकुधामा	१३१

मा नो गोषु पुरुषेषु	१९०	येऽस्यां स्थ प्राच्यां दिशि	१४३
मा नोऽभि स्या मल्यं	१८८	येऽस्यां स्थोदीच्यां दिशि	१४६
मा नो महान्तमुत	१२; ६०; १९८	येऽस्यां स्थोर्ध्वायां दिशि	१४८
मा नो रुद्र तक्मना	१९५	यो अग्नौ रुद्रो यो	११९
मा नो वधी रुद्र मा	३५	यो अद्य स्तेन आयति	२०७
मा नो हिंसोराधि	१८९	यो दाधार पृथिवीं	२२०
मोदुष्टम शिवतम	९६	यो नः खो यो अरणः	११२
मुत्ताय ते पशुपते	१७४	योऽन्तरिक्षे तिष्ठति	१९२
मुमुक्तमस्मान् दुरिताद्	१६३	योऽभियातो निलयते	१८२
मूर्त्ता मृगस्य दन्ता	२०८	योऽस्मांश्चक्षुषा मनसा	१६५
मृच्छा नो रुद्रो नो	७	रुद्र एनमिष्वासो	१३३
मृचोः पदं योपयन्तो	२१२	रुद्र जलाषमेषज	११८
य एतावन्तश्च भूयाःसः	१०८	रुद्र यत् ते क्विवि	४४
यः प्राणदः प्राणदवान्	२२२	रुद्रस्यैलवकारेभ्यो	१९९
यः शुक्र इव सूर्यो	४	रुद्राः सःसृज्य पृथिवीं	४५
यत् संयमो न वि	२०९	विकिरिद्र विलोहित	९७
यथा नो अदितिः	२	विज्यं धनुः कपर्दिनो	५५
यथा नो मित्रो वरुणो	१४२	व्याघ्रं दत्ततां वयं	२०६
यमोदनं प्रथमजा	२१८	शं नः करत्यर्वते	५
यमो मृत्युरधमारो	२०१	शर्व एनमिष्वासो	१२४
यस्मात् पक्वादमृतं	२२३	शिवेन वचसा त्वा	४९
यस्मान्मासा निर्मिताः	२२१	शिवो नामासि स्वधितिः	४३
यस्य तक्मा कासिका	१९१	शिशुमारा अजगराः	१९४
या ते दिव्यदवसृष्टा	३४	शुने क्रोष्टे मा शरीराणि	१७१
या ते रुद्र शिवा तनूः	४७; ९४	श्यावाश्वं कृष्णमसितं	१८७
या ते हेतिर्मादुष्टम	५६	श्रेष्ठो जातस्य रुद्र	१९
याधिपुं गिरिशन्त	४८	स एव मृत्युः सोऽमृतं	११६
या वो मेषजा मरुतः	२९	स नो भवः परि वृणक्तु	१७७
ये तीर्थानि प्रचरन्ति	१०६	स रुद्रो वसुवनिः	११७
ये नः सपत्ना अप ते	१५५	सहस्रधार एव ते	१५८
येनातारन् भूतकृतो	२१९	सहस्राक्षमतिपश्यं	१८६
येऽन्नेषु विविध्यन्ति	१०७	सहस्राणि सहस्रशो	९८
ये पयां पथिरक्षय	१०५	स हि क्षयेण क्षम्यस्य	३३
ये भूतानामधिपतयो	१०४	सोमं ते रुद्रवन्तं	१४१
ये वृक्षेषु शण्डिपञ्चरा	१०३	सोऽर्यमा स वरुणः	११५
येऽस्यां स्थ दक्षिणायां दिशि	१४४	स्तुहि श्रुतं गर्तसदं	२७
येऽस्यां स्थ ध्रुवायां दिशि	१४७	स्थिरेभिरङ्गैः पुरुष	२५
येऽस्यां स्थ प्रतीच्यां दिशि	१४५	हवीमभिर्हवते	२१

दैवत-संहितान्तर्गत रुद्रदेवताया गुणबोधक-पदसूची ।

[१ ऋग्वेदसंहिता ' ऋ० ' ; अथर्ववेदसंहिता ' अ० ' ; संहितानामविरहिताः यजुर्वेदमन्त्राः । २ जातसंज्ञाः रुद्राः बहुवचनेन निर्दिष्टाः ।]

अग्ने-वधः १६, ४०. ८५
 अग्न्यः १६, ३०. ७५
 अजिरः १६, ३१. ७६
 अधः क्षमाचराः १६, ५७. १०२
 अधिपतयः भूतानाम् १६, ५९. १०४
 अधिवक्ता १६, ५. ५०
 अध्वरस्य राजा [अग्निः] ऋ० ४, ३, १. २१०
 अनुष्ठाता अ० १५, ५, १-२, ४-५, ७-८, १०-११, १३-१४, १६-१७, १९-२०. १२०-२१, १२३-२४, १२६-२७, १२९-३०, १३२-३३, १३५-३६, १३८-३९
 अन्तरिक्षे (ये) येषां वातः इषवः १६, ६५. ११०
 अन्धस्वरूपतिः १६, ४७. ९२
 अन्नानां पतिः १६, १८. ६३
 अपगल्भः १६, ३२. ७७
 अपभर्ता रपसः दैव्यस्य ऋ० २, ३३, ७. २३
 अपरजः १६, ३२. ७७
 अभिघ्नन् १६, ४६. ९१
 अश्वं सः अ० १३, ६, २५. ११६
 अमर्त्यः अ० ११, २, ३. १७२
 अमृतं सः अ० १३, ६, २५. ११६
 अरण्यानां पतिः १६, २०. ६५
 अरथाः १६, २६. ७१
 अरुणः १६, ६, ३९. ५१, ८४
 अरुषः ऋ० १, ११४, ५. १०
 अर्मकाः १६, २६. ७१
 अर्यमा (सः) अ० १३, ४, ४. ११५
 अर्हन् ऋ० २, ३३, १०. २६
 अवध्यः १६, ३८. ८३
 अवततधन्वा ३, ६१. ४१
 अवमेदी १६, ३४. ७९
 अवर्ष्यः १६, ३८. ८३
 अवसान्यः १६, ३३. ७८

अवस्वन्यः १६, ३१. ७६
 अवार्यः १६, ४२. ८७
 अश्वाः १६, २४. ६९
 अश्वपतयः १६, २४. ६९
 अषाढहः ऋ० ७, ४६, १. ३२
 असंख्याताः १६, ५४. ९९
 असितः अ० ११, २, १८. १८७
 असिमन्तः १६, २१. ६६
 अस्यन्तः १६, २२. ६७
 अस्यन् बहुधा अ० ११, २, १७. १८६
 अहन्तिः १६, १८. ६३
 आक्रन्दयत् १६, १९. ६४
 आखिदत् १६, ४६. ९१
 आततायी १६, १८. ६३
 आतन्वानाः १६, २२. ६७
 आतप्यः १६, ३८. ८३
 आनिर्हताः १६, ४६. ९१
 आयत् अ० ११, २, १५. १८४
 आयच्छन्तः १६, २२. ६७
 आयुधी (धिन्) १६, ३६. ८१
 आयुर्बुधः १६, ६०. १०५
 आब्याधिन्त्यः १६, २४. ६९
 आब्याधिनीनां पतिः १६, २०. ६५
 आशुः १६, ३१. ७६
 आशुरथः १६, ३४. ७९
 आशुषेणः १६, ३४. ७९
 आसीनः अ० ११, २, १५. १८४
 आसीनाः १६, २३. ६८
 आहनन्यः १६, ३५. ८०
 इरिण्यः १६, ४३. ८८
 इषुकृतः (त्) १६, ४६. ९१

नेन निर्दिष्टः ।

इष्टुभिमान १६, २१, ३६. ६६, ८१
इष्टुमान् १६, २९. ७४
इष्टुमन्तः १६, २२. ६७
इष्टासः अ० १५, ५, १-२, ४-५, ७-८, १०-११, १३-
१४, १६-१७, १९-२०. १२०-२१, १२३-२४, १२६-
२७, १२९-३०, १३२-३३, १३५-३६, १३८-३९
इष्टमानः अ० ११, २, १७. १८६
इष्टानः ऋ० २, ३३, ९. २५। अ० १५, ५, २, ५, ८
११, १४, १७, १९-२०. १२१, १२४, १२७, १३०, १३३,
१३६, १३८-३९
इष्टानः हेतीनाम् १६, ५३. ९८
इष्टो दिवः पृथिव्याः अ० ११, २, २७. १९६
उगणाः १६, २४. ६९
उगः १६, ४०. ८५। ऋ० २, ३३, ९, ११. २५, २७।
१५, ५, १०-११. १२९-१३०. ११, २, २१. १९०
उगैर्घोषः १६, १९. ६४
उगरणः १६, ४२. ८७
उगुरमाणः १६, ४६. ९१
उपवीती १६, १७. ६२
उपहारतुः ऋ० २, ३३, ११. २७
उर्वर्यः १६, ३३. ७८
उलथः १६, ४५. ९०
उल्लोषी १६, २२. ६७
ऊर्म्यः १६, ३१. ७६
ऊर्म्यः १६, ४५. ९०
ऊर्दरः ऋ० २, ३३, ५. २१
पतावन्तः १६, ६३. १०८
पेलवृदाः १६, ६०. १०५
लोषधीनां पतिः १६, १९. ६४
ककुमः १६, २०. ६५
कक्षाणां पतिः १६, १९. ६४
कक्ष्यः १६, ३४. ७९
कनिष्ठः १६, ३२. ७७
कपदी १६, १०, २२, ४३. ५५, ७४, ८८। ऋ० १, ११४,
१, ५, ६, १०
कपदिनः १६, ५९. १०४
८ दे. [ख]

कर्मकृत् अ० २, २७, ६. ११८
कर्माः १६, २७. ७२
कल्मलीकी ऋ० २, ३३, ८. २४
कवची १६, ३१. ८०
कविः १६, ४८. ९३। ऋ० १, ११४, ४. ९
काव्यः १६, ३७, ४४. ८२, ८९
किंशिलः १६, ४३. ८८
किरिकाः १६, ४६. ९१
कुलालाः १६, २७. ७२
कुलुघानां पतिः १६, २२. ६७
कुल्यः १६, ३७. ८२
कूल्यः १६, ४२. ८७
कृत्ति वसानः १६, ५१. ९६
कृत्तिवासाः ३, ६१. ४१
कृत्स्नायतया धावन् १६, २०. ६५
कृष्णः ११, २, १८. १८७
क्षत्तारः १६, २६. ७१
क्षमाचराः अधः १६, ५७. १०२
क्षयणः १६, ४२. ८८
क्षयद्वीरः ऋ० १, ११४, १-३, १०. ६-८, १५
क्षिप्रेषुः ऋ० ७, ४६, १. ३२
क्षेत्राणां पतिः १६, १८. ६३
क्षेम्यः १६, ३३. ७८
खल्यः १६, ३३. ७८
गणाः १६, २५. ७०
गणपतयः १६, २५. ७०
गर्तसदः (द्) ऋ० २, ३३, ११. २७
गह्वरेष्ठः १६, ४४. ४२
गाथपतिः ऋ० १, ४३, ४. ३
गिरिचरः १६, २२. ६७
गिरिशः १६, ४. ४९
गिरिशयः १६, २३. ७४
गिरिशन्तः १६, २-३. ४७-४८
गृत्साः १६, २५. ७०
गृत्सपतयः १६, २५. ७०
गेह्यः १६, ४४. ८९
गोष्ठयः १६, ४४. ८९

(२६)

चेकितानः ऋ० २,३३,१५. ३१
 जगतां पतिः १६,१८. ६३
 जघन्यः १६,३२. ७७
 जलाशयेषजः ऋ० १,४३,४. ३। अ० २,१७,६. ११८
 जाग्रतः १६,२३. ६८
 जातस्य श्रेष्ठः ऋ० २,३३,३. १९
 जिघांसन्तः १६,२१. ६६
 ज्येष्ठः १६,३२. ७७
 तक्षणाः १६,२७. ७२
 तल्प्यः १६,४४. ८९
 तवस् १६,४८. ९३। ऋ० १,११४,१. ६
 तव्यस् ऋ० १,४३,१. १
 तस्कराणां पतिः १६,२१. ६६
 ताम्रः १६,६,३९. ५१,८४
 तारः १६,४०. ८५
 तिग्महेती [सोमास्त्रौ] अ० ५,६,५-७. १६०-१६२
 तिग्मायुधः ऋ० ७,४६,१. ३२
 तिग्मायुधौ [सोमास्त्रौ] अ० ५,६,५-७. १६०-१६२
 तिष्ठन् अ० ११,२,१५. १८४
 तिष्ठन्तः १६,२३. ६८
 तवस्तमः तवसाम् ऋ० २,३३,३. १९
 तीक्ष्णेषुः १६,३६. ८१
 तीर्थ्यः १६,४२. ८७
 तृहन्यः १६,२४. ६९
 त्र्यम्बकः ३,५८,६०. ३८,४०। ऋ० ७,५९,१२. ३६
 त्विषीमान् १६,१७. ६२
 त्वेषः ऋ० १,११४,४-५. ९,१०। २,३३, १४. ३०
 दरिद्रः १६,४७. ९२
 दाता भूरेः ऋ० २,३३,१२. २८
 दिवं उपश्रिताः १६,५६. १०१
 दिवि ये येषां वर्ष इषवः १६,६०. १०२
 दिशां पतिः १६,१७. ६२
 दुन्दुभ्यः १६,३५. ८०
 दूरेवधः १६,४०. ८५

देवः ३,५८. ३८। ऋ० १,११४,१०. १५।
 २,३३,१५, ३१। ७,४६,१. ३२। अ० १५,५।
 १०-११. १२९-१३०
 देवानां श्रेष्ठः ऋ० १,४३,५. ४
 देवानां हृदयानि १६,४६. ९१
 द्रापिः १६,४७. ९२
 द्विबर्हाः ऋ० १,११४,१०. १५
 द्वीप्यः १६,३१. ७६
 धनुष्कृतः १६,४६. ९१
 धन्वायिनः* १६,२२. ६७
 धावत् कृत्स्नायतया १६,२०. ६५
 धावन्तः १६,२३. ६८
 धृष्णुः १६,३६. ८१
 नक्षत्ररन्तः १६,२१. ६६
 नादेयः १६,३१,३७. ७६,८२
 निचक्रः १६,२०. ६५
 निर्णयन् अभिपूर्वम् अ० ११,२,२२. १९१
 निवेष्ट्यः १६,४४. ८९
 निव्याधी १६,२०. ६५
 निषङ्गिणः १६,६१. १०६
 निषङ्गी १६,२०-२१,३६. ६५-६६,८१
 निषादाः १६,२७. ७२
 नीप्यः १६,३७. ८२
 नीलग्रीवः १६,७-८,२८. ५२-५३,७३
 नीलग्रीवाः १६,५६-५८. १०१-१०३
 नीललोहितः १६,४७. ९२
 नीलशिखण्डः अ० २,२७,६. ११८। ६,९३,१. १०१।
 ११, २,७. १७६
 पतिः अन्धसः १६,४७. ९२
 पतिः अज्ञानाम् १६,१८. ६३
 पतिः अरण्यानाम् १६,२०. ६५
 पतिः आव्याधिनीनाम् १६,२०. ६५
 पतिः ओषधीनाम् १६,१२. ६४
 पतिः कक्षाणाम् १६,१९. ६४

* रुद्रस्य धनुः— शतवधं, शिखण्डि, सहस्रग्निरिति, हिरण्यं च। (अथर्व० ११,२,१२. १८१)

पतिः कुलधामनाम् १६,२२. ६७
पतिः क्षेत्राणाम् १६,१८. ६३
पतिः जगताम् १६,१८. ६३
पतिः तस्कराणाम् १६,२१. ६६
पतिः दिशाम् १६,१७. ६२
पतिः पत्नीनाम् १६,१९. ६४
पतिः पथीनाम् १६,१७. ६२
पतिः पशूनाम् १६,१७. ६२
पतिः पुष्टानाम् १६,१७. ६२
पतिः सुष्ठानाम् १६,२१. ६६
पतिः वनानाम् १६,१८. ६३
पतिः विष्णुनाम् १६,२१. ६६
पतिः वृक्षाणाम् १६,१९. ६४
पतिः सत्त्वनाम् १६,२०. ६५
पतिः स्तायूनाम् १६,२१. ६६
पतिः स्तेनानाम् १६,२०. ६५
पतिवेदनः ३,६०. ४०
पत्नीनां पतिः १६,१९. ६४
पथां पथि रक्षयः १६,६०. १०५
पथीनां पतिः १६,१७. ६२
पथ्यः १६,३७. ८२
परिचरः १६,२०. ६५
परिवहत् १६,२१. ६६
परावत् अ० ११,२,१५. १८४
पर्यः १६,५६. ९१
पर्यदः १६,४६. ९१
पशुपतिः १६,२८,४०. ७३,८५ । अ० १५,५,७-८.
१२६-१२७ । अ० ११,२,२,५,९,११. १७१,
१७४,१७८,१८०
पशुपति [भवाशर्वी] अ० ११,२,१. १७०
पशूनां पतिः १६,१७. ६२
पशुव्यः १६,४५. ९०
पादयन् केचिनः रथम् अ० ११,२,१८. १८७
पार्यः १६,४९. ८७
पिता मस्ताम् ऋ० १,११४,६,९. ११,१४; २,३३,
१. १७

पिनाकं बिभ्रत् १६,५१. ९६
पिनाकावसः ३,६१. ४१
पुञ्जिष्ठाः १६,२७. ७२
पुरुषः ऋ० २,३३,९. २५
पुलस्तः १६,५३. ८८
पुष्टानां पतिः १६,१७. ६२
पुष्टिवर्धनः ३,६०. ४० । ऋ० ७,५९,१२. ३६
पूर्वजः १६,३२. ७७
पृथिव्यां ये, येषां अन्नं इषवः १६,६६. १११
प्रखिदत् १६,४६. ९१
प्रचरन्तः तीर्थाणि १६,६१. १०६
प्रचेताः ऋ० १,४३,१. १
प्रतरणः १६,४९. ८७
प्रतिदधानाः १६,२२. ६७
प्रतिश्रवः १६,३४. ७९
प्रतिसर्यः १६,३३. ७८
प्रतीचीनः अ० ११,२,५. १७४
प्रथमः १६,३०. ७५
प्रथमः भिषक् दैव्यः १६,५. ५०
प्रपथ्यः १६,४३. ८८
प्रमृणन् अयज्वनः देववीयन् अ० ११,२,२३. १९२
प्रमृशः १६,३६. ८१
प्रवाह्यः १६,४३. ८८
फेन्यः १६,४२. ८७
बभ्रुः १६,६. ५१ । ऋ० २,३३,५,८-९,१५ २१,
२४,२५,३१
बभ्रुशः १६,१८. ६३
बिभ्रत् पिनाकम् १६,५१. ९६
बिभ्रत् मेषजा वार्याणि ऋ० १,११४,६. ११
बिहमी १६,३५. ८०
बुध्न्यः १६,३२. ७७
बृहत् १६,३०. ७५
भगवान् १६,९,५२-५३. ५४, ९७-९८
भवः १६,२८. ७३ । अ० १५,५,१-२,५,८,११,
१४,१७,२०. १२०-२१, १२४,१२७,१३०,१३३,
१३६, १३९ । अ० ११,२,३,५,८-९,१६,२५,२७.
१७२,१७४,१७७-१७८, १८५, १९४, १९६

भवाश्वौ [देवते] अ० ११, २, १. १७०
 भवस्य हेतिः १६, १८. ६३
 भामितः ऋ० १, ११४, ८. १३
 भिषक् दैव्यः प्रथमः १६, ५. ५०
 भिषक्तमः भिषजाम् ऋ० २, ३३, ४. २०
 भीमः १६, ४०. ८५। ऋ० २, ३३, ११. २७
 भुवनस्य भूरिः ऋ० २, ३३, ९. २५
 भुवन्तिः १६, १९. ६४
 भूतपती [भवाश्वौ] अ० ११, २, १. १७०
 भूतानां अधिपतयः १६, ५९. १०४
 भूयांसः १६, ६३. १०८
 भूरिः भुवनस्य ऋ० २, ३३, ९. २५
 भूरेः दाता ऋ० २, ३३, १२. २८
 भेषजम् ३, ५९. ३९
 भेषजा वायणि विभ्रतु ऋ० १, ११४, ६. ११
 मध्यमः १६, ३२. ७७
 मन्त्री १६, १९. ६४
 मयस्करः १६, ४१. ८६
 मयोभुवः १६, ४१. ८६
 मरुत्वान् ऋ० १, ११४, ११. १६। ऋ० २, ३३, ६. २२
 मरुतां पिता ऋ० १, ११४, ६. ११। ऋ० २, ३३, १. १७
 महादेवः सः अ० १३, ४, ४. ११५। अ० १५, ५,
 १६-१७. १३५-१३६
 महान्तः १६, २६. ७१
 महेंद्रः सः अ० १३, ४, ४. ११५
 मीढवान् १६, ८, ५०. ५३, ९५। ऋ० १, ११४, ३. ८।
 २, ३३, १४. ३०
 मीढुष्टमः १६, ११, २९, ५१. ५६, ७४, ९६। ऋ. १,
 ४३, १. १
 मुष्णतां पतिः १६, २१. ६६
 मृगयवः (युः) १६, २७. ७२
 मृणन् अ० ११, २, १८. १८७
 मृत्युः सः अ० १३, ६, २५. ११६
 मेघ्यः १६, ३८. ८३
 मेघपतिः ऋ० १, ४३, ४. ३
 यज्ञसाधः ऋ० १, ११४, ४. ९
 याम्यः १६, ३३. ७८

युवा ऋ० २, ३३, ११. २७
 रक्षः सः अ० १३, ६, २५. ११६
 रजस्यः १६, ४५. ९०
 रथकाराः १६, २७. ७२
 रथिनः १६, २६. ७१
 राजा अ० ११, २, २८. १९७
 राजा, अध्वरस्थ - [अग्निः] ऋ० ४, ३, १. २१०
 रुद्रः (प्रायः सर्वत्र)।
 रुद्रः [अग्निः] ऋ० ४, ३, १. २१०
 रुद्रः अग्नौ अन्तः अ० ७, ८७, १. ११९
 रुद्रः अप्सु अन्तः अ० ७, ८७, १. ११९। अ० ११, २, १४,
 १९३
 रुद्रः ओषधीः विवेशः अ० ७, ८७, १. ११९। अ० ११, २, १४,
 १९३
 रुद्रः वीरुधः विवेश अ० ७, ८७, १. ११९।
 अ० ११, २, २४. १९३
 रूपम् ऋ० १, ११४, ५. १०
 रेष्म्यः १६, ३२. ८३
 रोहितः ऋ० १६, १२. ६४
 लोप्यः १६, ४५. ९०
 वङ्कुः ऋ० १, ११४, ४. ९
 वज्रबाहुः ऋ० २, ३३, ३. १९
 वञ्चत् १६, २१. ६६
 वनानां पतिः १६, १८. ६३
 वन्यः १६, ३४. ७९
 वराहः ऋ० १, ११४, ५. १०
 वरुणः सः अ० १३, ४, ४. ११५
 वरुथी १६, ३५. ८०
 वर्मा १६, ३५. ८०
 वर्षीयान् १६, ३०. ७५
 वर्धयः १६, ३८. ८३
 वसानः कृत्तिम् १६, ५१. ९६
 वसुः ऋ० १, ४३, ५. ४
 वाणिजः १६, १२. ६४
 वसुदेये वसुनिः अ० १३, ६, २६. ११७
 वषट्कारः नमोवाके अनु अ० १३, ६, २६. ११७
 वात्यः १६, ३९. ८४

१. २१०

२९

अ० ११, २, १४.

अ० ११, २, १४.

११९।

१७

६. ११७

कामनः १६, ३०. ७५
 वारिवस्तुतः १६, १९. ६४
 वास्तव्यः १६, ३९. ८४
 वास्तुपः १६, ३९. ८४
 विचित्रिदः १६, ५२. ९७
 विहन्तानां पतिः १६, २१. ६६
 विक्षिप्तकाः १६, ४६. ९१
 विचित्रकाः १६, ४६. ९१
 विद्युत्तः १६, ३८. ८३
 विद्यन्तः १६, २३. ६८
 विवश्चि अ० ११, २, १७. १८६
 विरुपाः १६, २५. ७०
 विरोहितः १६, ७, ५२, ५८. ५२, ९७, १०३
 विविच्यन्तः १६, २४. ६९
 विविक्षासः १६, ५९. १०४
 विश्वरुपाः १६, ५५. ७०
 विद्यन्तः १६, २३. ६८
 शीघ्रः १६, ३८. ८३
 रक्षाः (हरिकेशाः) १६, ४०. ८५
 रक्षाः १६, १७. ६२
 रक्षाणां पतिः १६, १९. ६४
 रक्षेयु स्थिताः १६, ५८. १०३
 रदः १६, ३०. ७५
 रमः ऋ० २, ३३, ४, ६-८, १५. २०, २२-२४, ३१
 रवाः ऋ० ७, ४६, १. ३२
 रवानाः १६, ३७. ८२
 रज्यः १६, ४४. ८९
 रातपतयः १६, २५. ७०
 राताः १६, २५. ७०
 रापी (धिन्) १६, १८. ६३
 रापकेशः १६, २९. ७४
 राहः १६, ४१. ८६
 रागः १६, ४०. ८५
 रातयन्ता १६, २९. ७४
 रातयुधिः १६, १३. ५८

अस्य श्वानः- असंयुक्तगिलाः, ऐलबकाराः, महास्याः । (अ० ११, २, ३०. १९९)

शम्भवः १६, ४१. ८६
 शयानाः १६, २३. ६८
 शर्वः १६, २८. ७३। अ० १५, ५, २, ५, ८, ११, १४, १७,
 २०. १२१, १२४, १२७, १३०, १३३, १३६, १३९
 शष्पिञ्जरः १६, १७. ६२
 शष्पिञ्जराः वृक्षेषु १६, ५८. १०३
 शष्प्यः १६, ४२. ८७
 शितिकण्ठः १६, २८. ७३
 शितिकण्ठाः १६, ५६, ५८. १०१-१०३
 शिपिविष्टः १६, २९. ७४
 शिवः ३, ६१. ४१। १६, ४१. ८६
 शिवः नामः ३, ६३. ४३
 शिवतमः १६, ५१. ९६
 शिवतरः १६, ४१. ८६
 शीघ्रः १६, ३१. ७६
 शीघ्रः १६, ३१. ७६
 शुष्क्यः १६, ४५. ९०
 शूरः १६, ३४. ७९
 शयावाश्वः अ० ११, २, १८. १८७
 श्रवः १६, ३४. ७९
 श्रिया श्रेष्ठः ऋ० २, ३३, ३. १९
 श्रुतः १६, ३५. ८०। ऋ० २, ३३, ११. २७
 श्रुतसेनः १६, ३५. ८०
 श्रेष्ठः जातस्य ऋ० २, ३३, ४. १२
 श्रेष्ठः देवानाम् ऋ० १, ४३, ५. ६
 श्रेष्ठः श्रिया ऋ० २, ३३, ३. १९
 श्लोक्यः १६, ३३. ७८
 श्वनयः (निः) १६, २७. ७२
 श्वपतयः १६, २८. ७३
 श्वानः १६, २८. ७३
 श्वित्यञ्च् (ङ्) ऋ० २, ३३, ८. २४
 संविदानौ [भवाकटौ] अ० ११, २, १४. १८३
 संगृहीतारः १६, २६. ७१
 सत्पतिः ऋ० २, ३३, १२. २८
 सत्ययजः [अग्निः] ऋ० ४, ३, १. २१०

सत्वनां पतिः १६,२०. ६५
 सभाः १६,२४. ६९
 सभापतयः १६,२४. ६९
 सयुजौ [भवारुद्रौ] अ० ११,२,१४. १८४
 सरस्यः १६,३७. ८२
 सवृध् १६,३०. ७५
 सहमानः १६,२०. ६५ । ऋ० ७,४६,१. ३२
 सहस्राणि १६,५४. ९९
 सहस्राक्षः १६,८,१३,२९. ५३,५८,७४ ।
 अ० ११,२,३,७. १७२,१७६
 सिकल्यः १६,४३. ८८
 सुगन्धिः ३,६०. ४० । ऋ० ७,५३,१२. ३६
 सुधन्वा १६,३६. ८१
 सुमङ्गलः १६,६. ५१
 सुशिप्रः ऋ० २,३३,५. २१
 सुशेवौ [सोमारुद्रौ] अ० ५,३,५-७. १६०-१६२
 सुदवः ऋ० २,३३,५. २१
 सूतः १६,१८. ६३
 सूर्यः १६,४५. ९०
 सृकायी (यिन्) १६,२१. ६६
 सृकाहस्ताः १६,६१. १०६
 सेनाः १६,२६. ७१
 सेनानीः १६,१७. ६२
 सेनान्यः १६,२६. ७१
 सोम्यः १६,३३. ७८
 सोमः १६,३९. ८४ । अ० १९,१८,३. १४१
 स्थायुनां पतिः १६,२१. ६६

स्तुतः ऋ० २,३३,१२. २८
 स्तुत्यः १६,३७. ८२
 स्तेनानां पतिः १६,२०. ६५
 स्थपतिः १६,१९. ६४
 स्थिरधन्वा ऋ० ७,४६,१. ३२
 स्वधावन् (वा) ऋ० ७,४६,१. ३२
 स्वपन्तः १६,२३. ६८
 स्वपिवातः ऋ० ७,४६,३. ३४
 स्वायुधः १६,३६. ८१
 हनीयान् १६,४०. ८५
 हन्ता १६,४०. ८५
 हरिकेशः १६,१७. ६२
 हरिकेशाः (वृक्षाः) १६,४०. ८५
 हरित्यः १६,४५. ९०
 हवनश्रुत् ऋ० २,३३,१५. ३१
 हिरण्यवाहुः १६,१७. ६२
 हिरण्यरूपः [अभिः] ऋ० ४,३,१. ११०
 हीलितः ऋ० ७,४६,४. ३५
 हस्तः यस्य जलाषः } ऋ० २,३३,७. २३
 भेषजः मृलयाकुः }
 हस्ते विभ्रत् भेषजा वार्याणि ऋ० १,११४,५. १०
 हृदयानि देवानाम् १६,४६. ९१
 हृदयः १६,४४. ८९
 हेतिः भवस्य १६,१८. ६६
 हेतिः यस्य तक्मा कासिका अ० ११,२,२१. १९१
 हेतीनाम् ईशानः १६,५३. ९८
 होता [अभिः] ऋ० ४,३,१. ११०
 ह्रस्वः १६,३०. ७५

X अस्य सेनाः— केशिन्यः, वोषिण्यः, नमस्कृताः, संभुज्जनयः । (अ० १०,२,३१. २००)

मृत्युदेवता-गुणबोधक-पदानि

अधिवाकः अ० ६, १३, २. २१६
समुष्मान् ऋ० १०, १८, १. २११
तिमतेजाः अ० ६, ६३, २. २२६
दुर्मतिः अ० ६, १३, २. २१६
देववधाः अ० ६, १३, १. २१५
निर्कृतिः अ० ६, ६३, २. २२६
परावाक अ० ६, १३, २. २१६
ब्राह्मणाः अ० ६, १३, ३. २१७
मेषजानि अ० ६, १३, ३. २१७

मृत्युः ऋ० १०, १८, १-२, ४. २११-२१२,
२१४ । अ० ६, १३, १-३, २१५-२१७; ४,
३५, १-७. २१८-२२५; ६, ६३, २-३.
२२६-२२७

यमः अ० ६, ६३, २-३. २२६, २२७
यातुधानाः अ० ६, १३, ३. २१७
राजवधाः अ० ६, १३, १. २१५
विश्यानां वधाः अ० ६, १३, १. २१५
शृण्वन् ऋ० १०, १८, १. २११
सुमतिः अ० ६, १३, २. २१६

मृत्युनिवारक-ब्रह्मौदन-गुणबोधक-पदानि ।

बोदनः ब्रह्मणे अ० ४, ३५, १-७. २१८-२२४
अधिपतिः गायत्र्याः अ० ४, ३५, ६. २२३
एकः अ० ४, ३५, ६. २२३
प्राणदः अ० ४, ३५, ५. २२२

प्राणदवान् ४, ३५, ५. २२२
ब्रह्मौदनः ४, ३५, ७. २२४
विधृतिः लोकानाम् ४, ३५, १. २१८
विश्वजित् ४, ३५, ७. २२४

दिग्भेदेन रुद्ररूपाणि ।

अथर्व० ३. २६. १-६ (१४३-१४८)			अथर्व० ३. २७. १-६ (१४९-१५४)			अथर्व० १५. ५. १-२१ (१९०-१९०)	
दिङ्नाम ।	देवाः ।	इषवः ।	अधिपतिः ।	रक्षिता ।	इषवः ।	अन्तर्देशात् अनुष्ठाता इध्वासः ।	
प्राची	हेतयः	अग्निः	अग्निः	असितः	आदित्याः	भवः	
दक्षिणा	अविष्यवः	कामः	इन्द्रः	तिरश्चिराजिः	पितरः	शर्वः	
प्रतीची	वैराजाः	आपः	वरुणः	पृदाकुः	अन्नम्	पशुपतिः	
उदीची	प्रविध्यन्तः	वातः	सोमः	स्वजः	अशनिः	उग्रः	
ध्रुवा	निलिम्पाः	ओषधीः	विष्णुः	कल्माषघ्नीवः	वीरुधः	रुद्रः	
ऊर्ध्वा	अवखन्तः	बृहस्पतिः	बृहस्पतिः	धित्रः	वर्षम्	महादेवः	
सर्वे अन्तर्देशाः ।	ईशानः	

दैवत-संहितान्तर्गत-

रुद्रदेवताया उपमा-सूची ।

आप इव अग्निः	अ० ११, २, ८. १७७	परि वृणक्तु नो भवः ।
शृषणः अश्वस्य क्रन्दः इव	अ० ११, २, २२. १९१	यस्य तक्मा कासिका हेतिः ।
घृणी इव च्छायाम्	ऋ० २, ३३, ६. २२	अरपाः रुद्रस्य सुम्रं अशीय ।
पशुपाः इव	ऋ० १, ११४, ९. १४	ते स्तोमान् उपाकरम् ।
मृगं न	ऋ० २, ३३, ११. २७	भीमम् ।
सूर्यः इव	ऋ० १, ४३, ५. ४	यः शुक्रः ।
हिरण्यं इव	ऋ० १, ४३, ५. ४	यः रोचते ।



दैवत-संहिता ।

(८)

उषा-देवता ।

संपादक

पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर
साहित्यवाचस्पति, गीतालंकार
अध्यक्ष- स्वाध्याय-मण्डल

[स्व. नारायणजी पुरुषोत्तम विश्वस्तनिधिके बंबई निवासी विश्वस्तोने
संपूर्ण 'दैवत-संहिता' के मुद्रणके लिये १५०००) रु०
दिये, इस धनके भागसे यह विभाग मुद्रित हुआ है ।]

स्वा ध्या य म ण्ड ल, पा र डी

संवत् २०१५, शक १८८०, सन् १९५९

प्रकाशक :

वसन्त श्रीपाद सातवलेकर, बी. ए.,

स्वाध्याय-मण्डल, भारत मुद्रणालय,

पोस्ट- 'स्वाध्याय मण्डल (पारडी)'

पारडी (जि. सुरत)

द्वितीय वार

मूल्य रु. १.७५ न. पैसे

मुद्रक :

वसन्त श्रीपाद सातवलेकर, बी. ए.,

स्वाध्याय-मण्डल, भारत मुद्रणालय,

पोस्ट- 'स्वाध्याय-मण्डल (पारडी)'

पारडी (जि. सुरत)

उषा का परिचय

(१)

उषादेवता के सूक्तोंमें साधारणतया प्राभातिक दृश्यका अत्यन्त मनोरम एवं काव्यमय वर्णन किया हुआ है ऐसा प्रथमतः मनमें विचार उठ खड़ा होता है, और यह धारणा है भी ठीक, क्योंकि उषादेवता के लगभग २०० मंत्रोंमें करीब ८० मंत्र भाग स्पष्ट-तया प्रातःकालीन स्फूर्तिप्रद तथा प्रकाशमय दृश्य का वयान करते हुए पाये जाते हैं। इस उषावेलाके सजीव एवं आन्दोलन-मय वर्णन के अतिरिक्त पचास से अधिक बार इन मंत्रोंमें आर्थिक और सांपत्तिक समृद्धि एवं वैभव के देने और पानेका लेख पाया जाता है। इसलिये ऐसा निःसन्देह कहा जा सकता है कि, इन मंत्रोंमें भौतिक संपन्नता और उषाकालीन प्राकृतिक सुखता का ही अत्यधिक चित्रण एवं निर्देश किया है।

अँधेरे का हट जाना और उजलेका आविर्भाव मंत्रोंमें इस भाँति चित्रित किया है।

१. ज्योतिः कृणोति सूनरी । (ऋ. १।४८।८)
२. ज्योतिः विश्वस्यै भुवनाय कृण्वती... उषा तमः वि भावः । (ऋ. १।९२।४)
३. अप प्रागात् तम आ ज्योतिरेति । (ऋ. १।११३।१६)
४. ...वि भावः ज्योतिषा तमः । उषः अनु स्वधां भव । (ऋ. ४।५२।६)
५. अप...बाधमाना तमांसि उषा दिवो दुहिता ज्योति-प्रागात् । (ऋ. ५।८०।५)
६. पुनः ज्योतिः युवतिः पूर्वथा अकः । (ऋ. ५।८०।६)
७. ...चित्रं भान्ति उषसः ... वि ता बाधन्ते तम उर्म्यायाः । (ऋ. ६।६५।२)
८. ...अकः ज्योतिः बाधमाना तमांसि । (ऋ. ७।७७।१)
९. उषा याति ज्योतिषा बाधमाना विश्वा तमांसि दुरिता अप देवी । (ऋ. ७।७८।२)
१०. उषा स्या नव्यमायुर्दधाना गूढ्वी तमो ज्योतिषोषा ज्योधि । (ऋ. ७।८०।२)
११. अपो मही व्यपति चक्षसे तमो ज्योतिष्कृणोति सूनरी । (ऋ. ७।८१।१)

१२. अपो मही वृणुते चक्षुषा तमो ज्योतिष्कृणोति सूनरी । (साम. ३०३ पूर्व आ.)

१३. सं ते गावस्तम आ वर्तयन्ति ज्योतिः यच्छन्ति... । (ऋ. ७।७९।२)

१४. ...त्याः प्रत्यदश्नन् पुरस्तात् ज्योतिर्यच्छन्तीरुषो विभातीः । ...अपाचीनं तमो अगादजुष्टम् । (ऋ. ७।७८।३)

१५. ...उषा ज्योतिः यच्छत्यग्रे अह्नाम् । (ऋ. ५।८०।२)

१६. इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागात् । (ऋ. १।११३।११)

१७. इदं ...त्यत् पुरुतमं पुरस्ताज्ज्योतिस्तमसो ... अस्थात् । (ऋ. ४।५१।१)

१८. अस्थुः ...चित्रा उषसः पुरस्तात् ...वि ...तमसो द्वारोच्छन्तीः । (ऋ. ४।५१।२)

१. " यह भली भाँति ले चलनेवाली उषा प्रकाशका सृजन करती है; २. समूचे संसार के लिए उजाला निर्माण करती हुई उषा अँधेरा हटा चुकी है; ३. अँधेरा बिलकुल दूर हट गया और अब उजाला चला आ रहा है; ४. हे उषे ! तू उजालेसे अँधेरा हटा चुकी है और अब स्वकीय धारक शक्तिके अनुकूल रक्षा कर; ५. दुलोक की मानों कन्यासी यह उषा अन्धकार के पुत्र को दूर भगाती हुई उजालेके साथ आ चुकी है; ६. इस युवती उषाने फिर पहले जैसेही उजाला बनाया है; ७. उषाएँ अनूठे ढंगसे जगमगाती हैं और वे रात्रीके अँधेरेको विशेषरूपसे हटाती हैं; ८. अन्धकार हटाती हुई उषा उजाला कर चुकी है; ९. द्योतमान उषा सारे अँधेरे एवं बुराइयोंको उजालेसे दूर भगाती हुई चली आती है; १०. यही वह उषा जागृत हुई है जो उजालेसे अँधेरा छिपाकर नवीन जीवनका धारण कर लेती है; ११. सुन्दर ढंगसे ले चलनेवाली उषा देखना संभव हो इसलिये बड़ा भारी अँधेरा दूर करती है; १२. हे उषे ! तेरी किरणें अँधेरेको ठीक तरह हटाती हैं और उजला दे डालती हैं; १३. वे जगमगानेवाली उषाएँ प्रकाश देती हुई सामने दीख पड़ीं और अ-सेवनीय अँधेरा नीचा मुँह कर चला गया; १४. दिन के आरम्भ में ही

उषा उजाला देती है; १५. यह सभी प्रकाशोंमें उच्च कोटिका प्रकाश आपहुँचा है; १६. अँधेरेमेंसे यह विशालतम प्रकाश सामने उठखड़ा हुआ है; १७. सामने ये जगमगाती हुई उषाएँ विशेषरूपसे अँधःकारको हटाती हुई खड़ी हो चुकी हैं । ”

इसभाँति अँधियारीके दूर हो जानेपर और सभी जगह प्रकाश का पूर्ण संचार हो चुकनेपर प्राणिमात्रमें जागृति तथा हलचल शुरु होती है जिसका वर्णन निम्न मंत्रोंमें किया दिख पड़ता है—

१. सूनरी उषा आयाति, पद्मत् इयते, पक्षिणः उष्पातयति ।
(ऋ. १।४८।५)

२. उत्ते वयश्चित् वसतेरपत्तन् नरश्च...व्युष्टौ ।

(ऋ. १।१२४।१२; ६।६४।६)

३. वयो नकिष्टे पत्तिवांस आसते व्युष्टौ (ऋ. १।४८।६)

४. वयश्चित् पतत्रिणो द्विपच्चतुष्पदजुनि ।

उषः प्रारन्वृत्तु दिवः अन्तेभ्यस्परि (ऋ. १।४९।३)

“ १. सुन्दर रूपवाली या अच्छे ढंगसे ले चलनेवाली उषा चली जाती है तब जो कोई पैरोंसे युक्त होता है, वह चलने-लगता है और पंछी उड़ने लगते हैं; २. हे उषे ! तेरे उठ-आनेपर मानव तथा पंछी भी अपने निवासस्थानसे उठ बाहर निकल आये; ३. हे उषे ! तेरे उदय होनेपर उड़नेवाले पंछी कभी नहीं बैठ जाते हैं याने तुरन्त उड़ना शुरु करते हैं; ४. हे (अजुनि उषः) श्वेतवर्णवाली उषे ! (ते ऋतून् अनु) तेरी हलचल होनेके उपरान्तही (द्विपत् चतुष्पत्) मानव, चौपाये (पतत्रिणः वयः चित्) और डैनोंवाले पंछी भी (दिवः अन्तेभ्यः, परि) आकाशके एक छोरसे ले दूसरे छोरतक चारों ओरसे (प्रारन्) जाने आने लगे । ” तथा और भी देखिए—

१. अचेति दिवो दुहिता...विश्वे पश्यन्त्युषसं विभातीम् ।

(७।७८।४)

२. उपो रुरुचे युवतिर्न योषा विश्वं जीवं प्रसुवन्ती चरायै ।

(७।७७।१)

३. आविकृण्वती भुवनानि विश्वा । (ऋ. ७।८०।१)

४. अविरकभुवनं विश्वमुषाः । (ऋ. ७।७६।१)

५. विश्वानि देवी भुवनानि चक्ष्य...उर्विया वि भाति ।

विश्वं जीवं चरसे बोधयन्ती... ॥ (ऋ. १।९२।९)

६. विश्वमस्या नानाम चक्षसे जगत्... । (१।४८।८)

७. विश्वस्य हि प्राणनं जीवनं त्वे वि यदुच्छसि सूनरी ।

(ऋ. १।४८।१०)

८. दशं पश्यद्भ्यः उर्विया वि चक्षे उषा अजीगभुवनानि विश्वा ।

(ऋ. १।११३।५)

९. ससतो बोधयन्ती शश्वत्तमागात्... । (ऋ. १।१२४।४)

१०. यूयं हि देवीः...परिप्रयाथ भुवनानि सद्यः ।

प्रबोधयन्तीरुषसः ससन्तं द्विपाच्चतुष्पाच्चरथाय जीवम् ॥

(ऋ. ४।५१।५)

“ १. युलोककी कन्या इस उषाका पता लगा, अथ सभी विशेषरूपसे जगमगाती हुई उषाको देख लेते हैं; २. यह उषा समूचे प्राणिमात्रको संचारके लिए प्रेरित करती हुई युवती महिलाके तुल्य समीप आकर जगमगाती है; ३. सारे विश्वको प्रकट करती है; ४. समूचे संसारको स्पष्ट कर चुकी है; ५. समूचे जल-लोकको संचारार्थ जगाती हुई द्योतमान उषा अखिल जगत् को देखकर अत्यन्त अधिक रूपसे सुहाती है; ६. सारा संसार इसे देखनेके लिए नग्न हुआ है; ७. हे सुन्दरी उषे ! जो तू ऊपर उठ आती है तो सबसुख सबकी प्राणशक्ति तथा जीवनशक्ति तुझपर निर्भर है; ८. जो तनिकसा देख रहे हों वे विस्तृत रूपसे देख सकें इसलिए उषाने सारे संसारको जगाया है; ९. सोने-वालोंको जगाती हुई उषा हमेशा आती है; १०. तुम द्योतमान उषाओ ! तुरन्तही तुम अखिल विश्वमें संचार करती हो और मानव एवं चौपाये जीवोंको जो कि सोये पड़े हैं, संचार करनेके लिए जगाती हो । ”

उपर्युक्त अवतरणोंसे स्पष्ट हुआ कि उषाके आवगमनमात्रसे सारे संसारमें जागृति एवं संचरणशीलताका सूत्रपात होता है । निद्रार्थी प्राणिमात्रको जागृत करना उषाकाही कार्य है । तेजस्विता, सूर्यकिरणों एवं विविध वर्णोंका चेतोदायी वर्ण उषाकालमें हमें होता है । इस संबंधमें निम्न मंत्र देखने योग्य हैं—

१. उष आभाहि भानुना चन्द्रेण दुहितर्दिवः ।

(ऋ. १।४८।९)

२. उपो यदद्य भानुना वि द्वारावृणवो दिवः ।

(ऋ. १।४८।१५)

३. अस्मे श्रेष्ठेभिर्मानुभिर्वि भाहि । (ऋ. ७।७७।५)

४. एते त्वे भानवो दर्शतायाश्चित्रा उपसो अमृतास भानवः ।

(ऋ. ७।७७।१)

“ १. हे युलोककन्ये उषे ! तू आल्हाददायक दिशे जगमगाती रह; २. हे उषे ! आज तू किरणकी सहायके मानों युलोकके दरवाजोंको खोल चुकी है; ३. हमारे दि-
उच्च कोटिके किरणोंसे युक्त हो जगमगाने लगी; ४. देखने योग्य

III, 8. 40

(क्र. १११३१७)

यन्ति... (ऋ. १।९२।१)

६. प्रति अर्चिः रश्मिः अस्या अदर्शि, वितिष्ठते बाधते कृष्णं
अश्वम् । चित्रं दिवो दुहिता भानुं अश्वम् । (ऋ. १।९।२।५)
७. गूढन्तीरश्वमसितं रश्मिः शुक्रास्तनूभिः शुचयो रुचानाः
... दिवो दुहितरो विभातीः... । (ऋ. ४।१।१९)
८. द्युतत्-यामानं... अरुणसुं विभाती, देवीं उषसं...
(ऋ. ५।८०।१)

९. उक्ते शोचिर्मानवो धामपठन्... उषो देवि रोचमाना
महोभिः (ऋ. ६।६।४।२)
१०. उषा स्या... दुहिता दिवोजाः... या भानुना रुजता
राम्यासु अज्ञायि तिरस्तमसश्चिद्वत् । (ऋ. ६।६।५।१)
११. प्रति द्युतानां अरुणसो अश्वाः चित्रा अदश्रन्नुषसं
वहन्तः । (ऋ. ७।७।५।६)
१२. ऊर्ध्वा अस्या अक्षयो वि श्रयन्ते । (ऋ. ७।७।८।१)
१३. प्र रोचना रुच्ये रण्वसं दृक् । (ऋ. ३।६।१।५)
१४. उषा अदर्शि रश्मिभिः व्यक्ता । (ऋ. ७।७।७।३)
१५. दिवो अर्कैः अबोधि । (ऋ. ३।६।१।६)

“ १. यह उषा लालरंगवाले किरणोंसे युक्त होती हुई देखि-
पड़ती है; २. यह नवयौवन संपन्न नारीके तुल्य मोहरूपवाली
उषा रक्तमामय किरणोंके समूहको जोड़देती है; ३. रक्तवर्ण-
वाले किरण ऊपर उठ आये और लालिमामय एवं स्वयं ही
जुटजानेवाले रश्मिसमूह को जोड़ दिया तथा रक्तिम आभावाली
उषाएँ दासिमान सूर्य किरणके सहारे खड़ी हैं; ४. हे उषे !
आज तू रक्तिम कान्तिवाले तथा व्याप्त होनेवाले किरणोंको जोड़
दे; ५. ये लाल किरण चारों ओर चले जाते हैं तो ऐसा जान
पड़ता है कि, मानों साहसी वीर अपने हथियार खींच निकालते
हों; ६. इस उषाकी दैदीप्यमान ज्वालासी कान्ति दिखाई दी
और यह विशेष रूपसे खड़े रहकर काले कल्लटे तथा प्रचंड
अंधःकारको विनष्ट करडालती है पश्चात् यह युलोककन्या उषा
विचित्ररूपवाले या अद्भुत सूर्यके सहारे रहती है; ७. ये युलोक
की कन्यारूप उषाएँ सुशोभित होती हुई तथा पवित्र एवं विशुद्ध
हो चमकती हुई और दीप्त बनकर तेजस्वी रूपोंसे बड़े भारी कृष्ण
वर्णको मानों छिपाती हैं; ८. द्योतमान उषाको जो कि रक्तिम आभा-
वाली होकर भासमान होती है, तथा जिसका मार्ग जगमगरहा
है; ९. हे द्योतमान उषे ! तेरी आभा तथा रश्मियाँ आकाशमें
उपर उठ चुकी हैं और तू तेजस्वितासे बड़ी सुहावनी प्रतीत
होती है; १०. यही वह युलोकमें उत्पन्न कन्या है जो तेजस्वी

किरण की बदौलतही रात्रियोंमें अँधेरा एवं तारागण की टिम-
टिमाहट की अपेक्षा कहीं अधिक प्रतीत होती है; ११. अनेके
लाल रंगवाले, व्यापकशक्तिसे युक्त किरण द्योतमान उषाको
उठाकर लेचलते हुएसे दीख पड़े; १२. इस उषाके विमृषण
ऊपरवाली दिशामें टिके हुए दिखाई देते हैं; १३. देखनेमें
रमणीय प्रतीत होनेवाली उषा आभामय हो यथेष्ट सुहावे
लगी; १४. किरणोंके कारण स्पष्ट होकर उषा दृष्टिगोचर हुई;
१५. युलोकमें अर्चनीय किरणोंसे वह जागृत हुई । ”

उषाके बारेमें मंत्र क्या कहते हैं सो देख लीजिए—

१. उषो देवि अमर्या वि भाहि । (ऋ. ३।६।१।२)
२. उषः... ऊर्ध्वा तिष्ठसि अमृतस्य केतुः । (ऋ. ३।६।१।३)
“ १. हे द्योतमान उषे ! तू अमरगणशील होकर विशेषतया
जगमगती रह; २. तू अमरपनकी पताकासी है और ऊँची
जगह ठहरती है । ” इसीलिए यह उषा जो कि—
१. आस्वती... दिवः... दुहिता । (ऋ. १।९।२।७)
२. शुक्रा कृष्णात् अजनिष्ट श्वितीची । (ऋ. १।९।२।८)
३. उषा याति स्वसरस्य पत्नी... आ अन्तात् दिवः
प्रपथे आ पृथिव्याः । (ऋ. ३।६।१।४)

अर्थात् “ १. जगमगती हुई युलोककन्या तथा २. कृष्णवर्ण
अंधकारमेंसे तेजस्विनी और शुभ्रवर्णवालीके रूपमें उत्पन्न हुई एवं
३. दिनकी मानों पत्नीसी बनकर यात्रा करती है, अतः युलोक
एवं भूलोकके एक कोनेसे लेकर दूसरे कोनेतक फैलचुकी है और
व्युच्छन्ती जीवमुदीरयन्ती उषा मृतं कंचन बोधयन्ती ।
(ऋ. १।९।२।८)

“ उषा ऊपर उठते समय जीवनमात्रको ऊपर उठनेके लिए
प्रेरित करती हुई किसी भी निश्चेष्ट पड़े हुए को जगाती हुई
दीख पड़ती है जब उदित होती है तो लोग कहने लगते कि—

- अतारिष्म तमसः पारं अस्य । (ऋ. १।९।२।६)
‘ हम इस अंधःकारको पार कर गये हैं ’ क्योंकि अब तो
उषा उच्छन्ती... स्मयते विभाती सुप्रतीका (ऋ. १।९।२।७)
‘ ऊपर उठानेवाली उषा सुन्दर स्वरूपवाली होकर और
प्रकाशमान बनकर हँस रही है । ’ यह उषा

व्यूर्ध्वती दिवो अन्तां अबोधि, अप स्वसारं सनुवर्धयति
(ऋ. १।९।२।१)

आकाशकी चरम सीमाको खोलती हुई उठगयी है और
अपनी मानों बहनसी रात्रिको हमेशाहार्द दूर हटाती है । ”

[उषा देवता

रागण की टिप्-
है; ११. अनूठे
तोतमान उषा
उषाके विमूषण
१२. देखनेमें
यथेष्ट सुहने
दृष्टिगोचर हुई
ई । ”

जेए—

३।६१।२)

(क्र. ३।६१।३)

शेकर विशेषतया
है और उच्च

क्र. १।९२।७)

क्र. १।९२।११)

तात् दिवः

क्र. ३।६१।४)

था २. कृष्णवर्ण

में उत्पन्न हुई एवं

है, अतः बुलोक

फैलचुकी है । और

चन बोधयन्ती ।

क्र. १।९३।८)

र उठनेके विष

ने जगाती हुई

हने लगते कि-

२।२।६)

न्यौतिक अब तो

क्र. १।९२।११)

वाली होकर

और

समुत्पन्न

क्र. १।९२।११)

उठगयी है और

दृष्टाती है ।

वि ब्रह्मिभिः दिव आतासु अद्यौत् अप कृष्णां निर्णिजं
(क्र. १।९१३।१४)

देवी भावः ।

‘द्योतमान उषा ऊपरकी दिशाओंमें किरणजालसे चमकने
की ओर रात्रिके कालेकलटे स्वरूपको दूर कर चुकी है ।’

‘सा विश्वसाञ्जुवनादबोधि.. उच्चा व्यख्यद्युवतिः पुनर्भूः... ।
(क्र. १।९२३।२)

‘सारे संसारके पहलेही यह जागृत हुई और नवयौवनसंपन्न
तथा बारबार उत्पन्न होनेवाली यह उषा उच्च पदपर चढ़कर
सुहने लगी ।’

पुनःपुनः जायमाना पुराणी समानं वर्णं अभिशुम्भमाना ।
(क्र. १।९२।१०)

‘यह उषा पुरानी है पर बारबार उत्पन्न होती हुई
वर्णको समान रूपसे साफसुथरा एवं परिमार्जित करती हुई
दिखाई देती है ।’

पुराणी देवी युवतिः पुरन्धिः अनु व्रतं चरासि विश्ववारे ।
(क्र. ३।६१।११)

‘है दीप्तियुक्त तथा सबके स्वीकरणीय उषे । तू पुरानी है
लेकिन नवयौवनयुक्त और वहुतोंका धारण करनेवाली महिला
को है तथा व्रत-नियमके अनुकूल संचार करती है ।’

१. संसयमाना युवतिः पुरस्तात्... । (क्र. १।९२३।१०)

२. सुसंकाशा मातृमृष्टेव योषाः... (क्र. १।९२३।११)

‘१. यह उषा जनताके सम्मुख सुहास्य वदनी युवतीकी नाई
दिखाई देती है; २. यह उषा मानों माताने विभूषित की हुई
सुहास्य युवती नारीके तुल्य है ।’

१. एषा... आविष्कृण्वाना तन्वं पुरस्तात् । (क्र. ५।८०।४)

२. एषा... ऊर्ध्वैव ज्ञाती दृशये नो अस्यात् । (क्र. ५।८०।५)

३. आविर्वाक्षांसि कृणुषे विभाती । (क्र. १।९२३।१०)

४. आविस्तन्वं कृणुषे ददो कम् । (क्र. १।९२३।११)

‘१. यह उषा सामने अपने शरीरको व्यक्त करती हुई और
२. ऊँची जगह मानों जलमग्न हुईसी हमारे दर्शनार्थ खड़ी है;
३. “हैं उषे । तू सुहाती हुई जनताके दर्शनार्थ अपना सुन्दर
और भलीभाँति स्पष्ट अनावृत करती है ।”

असके वचनोंसे स्पष्ट हुआ होगा कि विश्वके पुरातनतम

विद्वान्-अर्थात् वेदमें प्रामाणिक वेलाका कितना काव्यमय,

विस्तृतपूर्ण एवं सौन्दर्यप्राही वर्णन किया हुआ उपलब्ध होता

है । ऐसा निरुपेक्ष कह जा सकता है कि, उषादेवताके सूक्त

वास्तवमें वेदकालीन प्रतिभाशाली कवियोंकी रसिकता तथा
सौन्दर्य लोलुपताका भलीभाँति परिचय करानेकी क्षमता रखने-
वाले काव्य हैं ।

उषा सूक्तोंको ध्यानपूर्वक पढ़लेनेसे जहाँ एक ओर वैदिक
कवियोंकी सौन्दर्यासक्ति तथा सहृदयताका ज्वलन्त उदाहरण
दीख पड़ता है, वहाँ इस बातका भी स्मरण हुए बिना नहीं रहा
जाता कि, वैदिक सूक्तोंके सृजन करनेकी क्षमतासे युक्त वे
प्राचीन कवि आर्थिक सुसमृद्धि एवं भौतिक वैभवको प्राप्त करनेकी
आवश्यकताके बारेमें पर्याप्त रूपसे सतर्क और सचेष्ट रहा करते
थे । बात भी बिल्कुल ठीक जँचती है, क्योंकि साधारणतया
ऐसा दिखाई देता है कि, जिस समाजमें पर्याप्त मात्रामें वैभव-
संपन्नता विद्यमान है, वहींपर रसिकता सहृदयता एवं प्रतिभा-
संपन्न सुरुचिताका प्रादुर्भाव हुआ करता है । वैदिक सूक्त पढ़
लेनेसे साफ जाहिर होता कि वैदिक समाज व्यवस्थामें सांपत्तिक
सुविधा एवं भौतिक ऐश्वर्यको अक्षुण्ण बनाये रखनेकी ओर
तत्कालीन जनताका ध्यान किस तीव्रतासे आकृष्ट हो चुका था ।
अस्तु, अब हमें उन मंत्र भागोंकी ओर दृष्टिपात करना चाहिए
जहाँ आर्थिक प्रगति करनेके स्पष्ट निर्देश पाये जाते हैं ।

१. दिवः दुहितर् ! त्योभः वाजेभिः आगहि, रथिं अस्मे
नि धारय । (क्र. १।३०।२२)

२. सान आवह... रथिं दिवो दुहितर्... । (क्र. ६।६४।४)

३. उच्छा दिवो दुहितः प्रनवत्... सुवीरं रथिं गृणते
रिरीहि... । (क्र. ६।६५।६)

४. महे नो अद्य सुविताय बोधि उषो... चित्रं रथिं यशसं
धेहि अस्मे... । (क्र. ७।७५।२)

५. एषा नेत्री राधसः... उषा... दीर्घश्रुतं रथिं अस्मे
दधानां... । (क्र. ७।७६।७)

६. वामेन सह, बृहता धुम्नेन राया सह नः वि उच्छ ।
(क्र. १।४८।१)

७. सा अस्मासु धा गोमदश्वावदुव्यं उषो वाजं सुवीर्यम् ।
(क्र. १।४८।१२)

८. बृहता विश्वपेशसा राया, इलाभिः वाजैः धुम्नेन नः
सं मिमिक्ष्व (क्र. १।४८।१६)

९. उषो अद्येह... रेवदस्मे व्युच्छ । (क्र. १।९२।१४)

१०. उषस्तन्त्रिचित्रमाभरासभ्यं... येन तोकं तनयं च
धामहे । (क्र. १।९२।१३)

११. ... अस्मै आयुर्नि दिदीहि प्रजावत् (ऋ. १।११३।१७)

१२. ताः प्रत्यवन्नव्यसीर्नूनमस्मे रेवदुच्छन्तु सुदिना उपासः ।
(ऋ. १।१२४।९)

१३. तेभ्यो युष्मन् वृद्धश उषो मघोन्यावह ।
(ऋ. ५।८९।७)

१४. रथि दिवो दुहितरो विभातीः प्रजावन्तं यच्छतास्मासु
देवीः । (ऋ. ४।५१।१०)

१५. स्योनादा वः प्रतिबुध्यमानाः सुवीर्यस्य पतयः स्याम ।
(ऋ. ४।५१।१०)

१६. महे नो अद्य बोधय उषो राये दिविस्मती ।
(ऋ. ५।७९।१)

१७. ...नो गोमतीरिपः आ वहा दुहितर्दिवः... ।
(ऋ. ५।७९।८)

१८. तच्चित्रं राध आभरोषो ... यत्ते दिवो दुहितर्मतेभोजनं
तत् रास्व भुनजामहे । (ऋ. ७।८१।५)

“ १. हे युलोककन्ये ! उन अन्नो या बलों के साथ इधर आजा और हममें धन रख दे; २. तू हमतक धन पहुँचा दे; ३. पहले जैसही तू उदित होती रह और स्तोताको अच्छी वीरतासे युक्त धन देडाल; ४. हे उषे ! हमारी बड़ी भारी भलाई हो इसलिए तू आज जाग तथा हमारे बीच अनूठे वैभव और यशकी स्थापना कर; ५. यह उषा बहुत दूरतक विख्यात धन हमारे मध्य रखती हुई धनको पहुँचानेवाली है; ६. हमारे लिए तू सुन्दरताके साथ बड़े भारी धन एवं वैभवको साथ ले उदित होजा; ७. गायों और घोडोंसे युक्त, अच्छी वीरता से परिपूर्ण एवं सराहनीय अन्नसामग्री या बल हममें धरदे; ८. बड़े प्रचंड, विश्वभरमें सुन्दर धन, अन्न सामग्रियों, बलों तथा वैभवसे तू हमें भली भाँति संयुक्त कर; ९. उषे ! आज तू हमारे लिए धनसंपन्न हो उदित हो; १०. वह अनूठा धन हमें दे डाल ताकि हम पुत्र पौत्रोंका धारण कर सकें; ११. हमें संतानयुक्त दीर्घजीवन दे डाल; १२. वे उषाएँ हमारे लिए पहले जैसे अबभी अच्छे दिनवाली एवं धनसंपन्न हो उदित हों; १३. हे ऐश्वर्य संपन्न उषे ! जन्हें बड़ा भारी यश और धन पहुँचादे; १४. वे द्योतमान युलोक कन्याएँ हमारे मध्य संतानयुक्त धन का प्रदान करें; १५. हे उषाओ ! आपके दिये हुए सुखसे हम जागृत होकर अच्छी वीरताके अधिपति बनें; १६. हे द्योतमान उषे ! आज हमें बड़ा भारी धन मिले इसलिए

जागृत कर; १७. हे युलोककन्ये ! हमारे समीप गोधन युक्त अन्नसामग्रियाँ पहुँचादे; १८. वह अनूठा धन देदे और जो तेरे निकट मानवोंके उपभोग योग्य वस्तु हो उसे प्रदान कर ताकि हम उपभोग लें। ”

उषाके संबंधमें वैदिक कवि कहते हैं—

१. चित्रामघा राय ईंशे वसूनाम् । (ऋ. ७।७५।५)

२. अग्रं अग्रमित् भजते वसूनाम् । (ऋ. १।१२३।४)

३. विश्वस्येशाना पार्थिवस्य वस्व उषो अघेह सुभगे व्युच्छ ।
(ऋ. १।११३।७)

४. ... उतोषो वस्व ईंशिषे । (ऋ. ४।९२।३)

५. धनानां सनये उषा एति । (ऋ. १।१२४।७)

६. एषा ... अन्नेधन्ती रथि अप्रायु चक्रे (ऋ. ५।८०।३)

७. ...ता भद्रा उपसः पुरा आसुः...यास्वीजानः...स्त्वन् शंसन् द्रविणं सद्य आप । (ऋ. ४।५१।७)

८. अभूदुषा...मघोन्यजीजनत् सुविताय श्रवांसि ।
(ऋ. ७।७९।३)

“ १. यह उषा अनोखे धनसे संपन्न है और संपत्तियों पर प्रभुत्व रखती है; २. धनोंमें जो परले दर्जेका हो उवही ले लेती है; ३. हे सुंदर ऐश्वर्यवाली उषे ! तू समूचे भूमंडल पर धनपर प्रभुत्व रखती हुई आज उदित हो; ४. तेरे आधीन धन है; ५. धनोंका दान करनेके लिए उषा आती है; ६. यह उषा क्षीण न होती हुई धनको स्थिर कर चुकी है; ६. पहले वे सुन्दर हितकारक उषाएँ थीं जिनमें यज्ञ करनेवाला सराहना एवं भाषण करता हुआ तुरन्त धन पा सका; ८. उषा ऐश्वर्यसंपन्न हुई और भलाईके लिए अन्नोका उत्पादन कर चुकी । ”

अच्छे कार्य करनेवाले तथा दानशूर पुरुषकोही धन दूनेके बारेमें निम्न मंत्रोंमें निर्देश मिलते हैं जिससे स्पष्ट होता है कि वैदिक कवि संपत्तिके विकेंद्रीकरणके अनुकूल थे और ऐसी समाज व्यवस्था चाहते थे जहाँ आर्थिक विषमता न हो तथा अधिकांश जनता निर्धन और कुछ इनेगिने व्यक्ति अत्यधिक संपन्न एवं धनशाली हैं ऐसी दशा न होने पाय ।

१. ...वहसि भूरि वामं उषो देवि दाशुषे मर्त्याय ।
(ऋ. १।१२४।१२)

२. या वहसि पुरु स्पाहं...रत्नं न दाशुषे मयः ।
(ऋ. ७।८१।३)

३. वि दिवो देवी दुहिता दधाति...सुकृते वसूनि ।
(ऋ. ७।७९।१)

[उषा देवता ।

प गोधन युक्त
देदे और जो
हो उसे प्रदान

७५५)

१२३१४)

सुभगेव्युच्छ

क. १११३१०)

१)

४७७)

५१८०३)

जानः...स्तुवर

क. ४५५१७)

वांसि ।

क. ७७५१३)

और संपत्तियों

हो उषा ही

ममूचे भूमंडल

तेरे आधीन धन

है; ६. यह उषा

६. पहले वे

गाला सराहना एवं

उषा ऐश्वर्यपूर्ण

चुकी । ”

कोही धन देने

स्पष्ट होता है कि

क थे और ऐसी

वृत्ता न हो तथा

व्यक्ति असाधक

य ।

उषा मर्त्याय ।

क. ११२३१३)

वे मयः ।

(क. ७८५१३)

कृते वसुनि ।

(क. ७७५१३)

२ है. [उषा]

१. याति शुभ्रा...दधाति रत्नं विधत्ते जनाय ।

(क. ७७५१६)

५. श्रवो वाजं हषं ऊर्जं वदन्तीः नि दाशुषे उषसो

६. एषा...दुहिता दिवो...व्यूष्वती दाशुषे वार्याणि ।

(क. ५१८०१६)

७. वा गोमतीरुषसः...व्युच्छन्ति दाशुषे मर्त्याय...

८. अथवा अश्नवत् सोमसुत्वा । (क. १११३११८)

“ १. हे उषे ! देवि ! तू दानशूर मानवके लिए प्रचंड

मुद्रा धन पहुँचाती है; २. तू दान देचुकनेपर उसे यथेष्ट,

सुखीय रत्नव्युत्पन्न सुख पहुँचाती है; ३. दानशूर युलोककन्या

मुद्रा कार्य करनेवालेके लिए धनसमूह रखती है; ४. श्वेत-

सर्वाली उषा कार्यकर्ता लोगों के लिए रत्न धरदेती हुई चली

जाती है; ५. दानी मानवके लिए उपाएँ अन्न, यश तथा बल

पहुँचाती है, आज कार्यकर्ताके लिए रक्षा एवं रत्न रख दो; ६.

युलोककन्या दानीके लिए स्वीकरणीय वस्तुओंको खोल देती

है; ७. दानी पुरुषके लिए जो उषाएं गोधनयुक्त हो उदित होती

हैं उन अन्न देनेवाली उषाओंको सोम निचोड़नेवाला पाता है । ”

वैदिक कवि उषासे क्या अपेक्षा रखते हैं सो देखलीजिए—

१. उषा माहि मानुना...आवहन्ती भूर्यस्रभ्यं सौभगम् ।

(क. ११४८१९)

२. उषा नो विश्वा सौभगन्यावह (क. ११९२१५)

३. सा नो रथि विश्ववारं सुपेशसं उषा ददातु सुग्धम् ।

(क. ११४८१३)

४. ...प्र नो यच्छतादवृकं पृथु छर्दिः प्र देवी गोमतीरिषः ।

(क. ११४८१५)

५. ...मद्रं मद्रं क्रतुमस्मासु धेहि ।

(क. ११९२१८)

६. उषो नो अन्न सुहवा व्युच्छ अस्मासु रायो मववस्तु

च स्युः । (क. ११२३१३३)

७. गुप्ताकं देवीरवसा सनेम सहस्रिणं च शतिनं च वाजम् ।

(क. ११२४१३३)

८. एषावत् वेदुषस्त्वं भूयो वा दातुमर्हसि ।

(क. ५१७९१०)

९. नो गोमतीरवद्वेहि रत्नं उषो अन्नावत् पुरुभोजो अस्मे ।

(क. ७७५१८)

१०. ... उरुगायमाघि धेहि श्रवो नः । (क. ६१६५१६)

११. ... उषो देवि प्रतिरन्ती न आयुः ।

हषं च नो दधती... गोमदश्चावद्रथवच्च राधः

(क. ७७७५५)

१२. तावदुषो राधो अस्मभ्यं रास्व यावत् स्तोतृभ्यो

अरदो गृणाना । (क. ७७९१४)

१३. उषो अर्वाचा बृहता रथेन ज्योतिष्मता वामं अस्मभ्यं

वक्षि । (क. ७७८११)

“ १. हे उषे ! रश्मिसे तू जगमगाती रह और हमारे लिए

बहुतसा अच्छा भाग्य पहुँचाती रह; २. अच्छा, अब तो हमें

सभी सौभाग्य प्राप्त करा; ३. वह उषा हमें सुखरूप, सबके

स्वीकरणीय एवं सुखदायक धनवैभव देवे; ४. हे द्योतमान !

हमें विस्तीर्ण, वृद्धरहित (जिसमें भेडिया नहीं घुस सकता हो)

घर तथा गोधनयुक्त अन्नसामग्रियाँ यथेष्ट दे दे; ५. हे उषे !

मैं अच्छी वीरतासे युक्त एवं यशसे पूर्ण धनसंपदाको प्राप्त कर

लूँ; ६. हममें अच्छे अच्छे कार्योंको धरदेती चल और हे उषे !

तू आज हमारे लिए सुखपूर्वक बुलाने योग्य है अतः उदित हो

तथा हममें और धनिकोंमें संपत्तियाँ रहें ऐसा प्रबंध कर; ७. हे

द्योतमान उषाओ ! तुम्हारी रक्षाके फलस्वरूप हम सैकड़ों

और हजारोंकी संख्यामें अन्न प्राप्त करें; ८. हे उषे ! इतना तो

जरूरही लेकिन और भी फिर, तू हमें दे दे; ९. अब हमें

गोधन, वाजिधन एवं वीरोंसे युक्त और बहुतोंको भोगसाधन

मिल सके ऐसा रत्न दे डाल; १०. बहुतसे लोक जिसके बारेमें

गायन करते हैं ऐसा यश हममें धर दे; ११. हे देवतारूपी

उषे ! हमारा जीवन बढ़ाती हुई और गौओं, घोड़ों तथा रथादि

वाहनोंसे युक्त धन एवं अन्न हमें देती हुई...; १२. हे उषे !

स्तोताओंको जितना धन तूने दिया उतना तू हमें देदे; १३. हे

उषे ! प्रकाशयुक्त और बड़े रथको, जो कि हमारी ओर ही आ

रहा है साथ लेकर तू सुन्दर धन हमें देती रह । ”

उषासे ऐसी प्रार्थना इसलिये की जाती है कि—

स्पर्धा वसुनि तमसा अपगूल्हा आविष्कृण्वन्ती उषसो

विभातीः । (क. ११२३१६)

‘ चमकती हुई उषाएं अंधेरेने गुप्तरूपसे ढकी हुई स्पृहणीय

धनोंको खोलदेती हैं । ’ और भी एक बात है कि,

प्रार्थ्या जगद्व्युनो रायो अख्यत् । (क. १११३१४)

‘ जगत्को अच्छी तरह दृष्टिगोचर कराके उषाने हमारे

धनोंको विशेष रीतिसे खोल दिया, चमका दिया । ' यह उषा हमारे लिए ' (आवहन्ती पोष्या वार्याणि) ऋ. १।११३।१५ ' पोषणीय तथा स्वीकरणीय वस्तुओंको पहुंचाती रहती है । और ' अस्मभ्यं गोमतः वाजान् सुरिभ्यः अमृतं वसुत्वनं श्रवः चोदयित्री । (ऋ. ७।८१।६) ' अर्थात्, हमें गौओंसे युक्त अन्न और विद्वानोंको अमरपन, धनाढ्यता एवं यश देनेकी प्रेरणा करनेवाली है ।

केवल पर्याप्त मात्रामें प्रकाश, अन्न, बल, धन देनेसेही देवता का कार्य पूर्ण नहीं होता, किन्तु द्वेषा, विरोधियों तथा शत्रु-ओंको हटानाभी अत्यन्त आवश्यक है । देखिए, वैदिक कवियोंने इस संबंधमें क्या कहा है—

... उषा स्त्रियः अप उच्छत् । (ऋ. ७।८१।६)

अप द्वेषो मघोनी दुहिता दिव उषा उच्छदप स्त्रियः ।
(ऋ. १।४८।८)

अर्थात् ' बुलोककन्या एवं ऐश्वर्यसंपन्न उषा द्वेषकरनेवालों को और शत्रुओंको हटानेके लिए उदित हो जाए । '

अन्तिवामा दूरे अमित्रमुच्छोर्वी गव्यूतिमभयं कृषी नः ।

यावय द्वेष आ मरा वसुनि चोदय राधो गृणते मघोनि ।
(ऋ. ७।७७।४)

' हे (मघोनि) ऐश्वर्यसंपन्न उषे ! तू (अन्ति-वामा) अपने समीप हमें देनेके लिए धन रखनेवाली है, अब (अमित्रं दूरे उच्छ) शत्रुको दूर हटादे और (नः) हमारे लिए (उर्वी गव्यूति) विशाल मार्ग तथा (अभयं कृषि) निर्भयतामय वातावरणका सृजन कर; पश्चात् (द्वेषः यावय) द्वेषको हटादे और (वसुनि आ मर) हमें धन ला दे एवं (गृणते राधः चोदय) स्तोताके लिए धन प्रेरित कर । '

वि उषा आवो...आविष्कृण्वाना महिमानमागात् ।

अप दुहस्तम आवरजुष्टं... ॥ (ऋ. ७।७५।१)

' उषा प्रकट हुई है, वह महिमाको साफ तौरसे व्यक्त करती हुई आ चुकी है और द्वेष करनेवालेको एवं असेवनीय अधैरेको दूर भगाया है । '

उषःवेलांमं अन्तेपनके रहनेपरभी अनोखी समानरूपता पाई जाती है जिसका उल्लेख यं है—

सदशीरद्य सदशीरिदु श्रो... । (ऋ. १।१२३।८)

शुभं यच्छुभ्रा उपसश्चरन्ति न वि ज्ञायन्ते सदशीरजुर्थाः ।

(ऋ. ४।५१।६)

' आज ये उषाएँ समानरूपवाली हैं तो कलभी उसी तरह

रूपवाली दिखाई देती हैं; ये शुभ्रवर्णवाली एवं जर्ण न होनेवाली उषाएँ भलीभाँति हितके लिए संचार करती हैं और समान स्वरूपवाली होनेसे प्रथक् पृथक् नहीं जानी जाती हैं । '

विख्यात ऋषि उषाकी सराहना करते थे ऐसा निम्न मंत्रोंसे सूचित होता है—

१. प्रति त्वा स्तोमैरीळते वसिष्ठा उपबुधः सुभगे
तुष्टुवांसः । (ऋ. ७।७६।६)

२. एषा... उषा उच्छन्ती रिभ्यते वसिष्ठैः (ऋ. ७।७६।७)

३. प्रति स्तोमेभिरुषसं वसिष्ठा गोभिर्विप्रासः प्रथमा
अबुधन् । (ऋ. ७।८०।१)

४. ऋषिष्टुता... मघोभ्युषा उच्छति वह्निभिर्गृणता ।
(ऋ. ७।७५।५)

५. देवीमुषसं स्वरावहन्तीं प्रति विप्रासो मतिभिर्जरन्ते ।
(ऋ. ५।८०।१)

६. यावयद् द्वेषसं त्वा... प्रति स्तोमैरभुस्सहि ।
(ऋ. ४।५२।४)

७. अभि ये त्वा विभाविरि स्तोमैर्गृणन्ति वह्नयः ।
(ऋ. ५।७९।४)

८. उषो... स्तोमं जुषस्व गृणतो मघोनि । (ऋ. ३।६१।१)

९. व्युच्छन्ती हि रश्मिभिर्विश्वमाभासि रोचनम् ।

तां त्वा मुषर्वसूयवो गोभिः कृण्वा अहूषत ॥ (ऋ. १।४९।४)

' १. हे सुन्दर ऐश्वर्यवाली उषे ! सुबह जाग उठनेवाले एवं स्तुति करनेवाले वसिष्ठ परिवारके लोग स्तुतिमय काव्योंसे तेरा प्रशंसा करते हैं; २. उदित होनेवाली उषाकी स्तुति वशिष्ठ वंशके ऋषियोंसे की जाती है; ३. प्रथम श्रेणीके तथा ज्ञानो वसिष्ठ कुलके ऋषि उषाके आगमनके मौकेपर स्तोत्रपाठ करने लगे; ४. यह ऐश्वर्यसंपन्न एवं ऋषियोंद्वारा प्रशंसित उषा उदित होती है जबकि हव्योंको डोनेवाले यजमान उसकी स्तुति करते लगे हैं; ५. स्वर्गतुल्य तेज पहुँचानेवाली तथा दैवीप्राप्त मानों जगाते हैं; ६. हे विशेष तेजवाली उषे ! हवनीय वस्तुओंको इष्टस्थानतक पहुँचानेवाले जो यजमान हैं वे स्तोत्रोंसे तेरी स्तुति करते हैं; ७. हे विशेष तेजवाली उषे ! स्तोताके स्तुति काव्यका स्वीकार कर; ८. हे उषे ! उदित होती हुई तू सुन्दर जगत्को सुन्दर करती है, ऐसे तुझको धन चाहनेवाले वंशके ऋषि भाषणोंसे बुलाते हैं । '

[उषा देवता ।

वर्णन होनेवाले
और समान
हैं ।

निम्न मंत्रोंसे

सुभगे

ऋ. ७।७।६।

ऋ. ७।७।७।

प्रथमा

ऋ. ७।८।१।

भिरुगुणा ।

ऋ. ७।७।५।

मतिभिर्जनने ।

ऋ. ५।८।१।

सहि ।

ऋ. ४।५।१।

वह्वयः ।

ऋ. ५।७।१।

(ऋ. ३।६।१।)

रोचनम् ।

॥ (ऋ. १।४।१।)

भाग उठनेवाले एवं

मय काष्ठोंसे तेरे

की स्तुति बरिष्ठ

णीके तथा शाली

र स्तोत्रपाठ कर

शंखित उषा वरिष्ठ

सकी स्तुति करते

तथा देवीपूजा

करते हैं; ६. उ

र स्तोत्रोंसे तुझसे

! हवनीय वस्तु

न हैं वे स्तोत्रों

स्तोताके स्तुति

तो हुई तू अपने

चाहनेवाले

उषा सुन्दर रथपर चढकर आती है और बलिष्ठ घोड़े उसे

ओते हैं ऐसा वर्णन पाया जाता है जैसे—

१. उषो देवि... चन्द्ररथा... ईरयन्ती । (ऋ. ३।६।१२)

२. आत्वा वहन्तु सुयमासो अश्वा हिरण्यवर्णा पृथुपाजसो

वे ॥ (ऋ. ३।६।१२)

१. हे द्योतमान उषे ! तू सुन्दर, आल्हाद दायक रथवाली

है और दूसरोंको प्रेरणा देनेवाली है इसलिए; २. जो विशाल

सुकु तथा भलीभाँति नियमित घोड़े हैं वे सुवर्ण कान्तिवाली

तुझको धर ले आँयें ।

सुपेतसं सुखं रथं यमध्यस्था उषस्त्वम् । (ऋ. १।४।१२)

‘हे उषे ! जिस सुन्दररूपवाले एवं सुखदायक रथपर तू

सवतुकी थी ।’

सा नो रथेन बृहता... श्रुधि चित्रामघे हवम् ।

(ऋ. १।४।१०)

‘हे अनोखे ऐश्वर्यसे युक्त उषे ! बड़े भारी रथपर चढकर

जाती हुई तू हमारी पुकार सुनले ।’

एषा अयुक्त परावतः सूर्यस्योदयनादधि ।

वत् रथेभिः सुभगोषा ह्यं वि यात्याभि मानुषान् ॥

(ऋ. १।४।७)

‘यह उषा सूर्योदयके पहले ही सुदूर स्थानमें रथोंको घोड़े

सोत चुकी है, ताकि शीघ्र यात्राका प्रारंभ हो; यह सुन्दर

ऐश्वर्यवाली उषा मानवोंके समीप मानों सैकड़ों रथोंसे चली

जाती है ।’

... अद्योदुषाः शोशुचता रथेन । (ऋ. १।१२३।७)

‘उषा जगमगाते हुए रथके कारण चमकने लगी ।’

बृहद्रथा बृहती... उषा ज्योतिर्यच्छति... ।

(ऋ. ५।८।०२)

‘महान उषा बड़े भारी रथसे आती हुई उजेली देडालती है ।’

... अरुषासो अश्वाश्चित्रा अदध्रन्नुषसं वहन्तः ।

याति शुभ्रा विश्वपिशा रथेन... (ऋ. ७।७।६)

‘रश्मि आभावाले अनूठे घोड़े उषाको ले आते हुए

रथसे चली जाती है ।’

‘दिवो दुहिता... आस्थात् रथं स्वधया युज्यमानं

या यं अश्वासः सुयुजो वहन्ति । (ऋ. ७।७।४)

‘युलोककन्या उषा, स्वकीय धारणशक्तिसे तैयार होनेवाले

रथपर, जिसे भली भाँति जोते हुए घोड़े लेचलते हैं, चढ गई ।

अश्विनौ जैसे अथकरूपसे लोक सेवा करनेवालोंसे मित्रता

पूर्ण वर्तव रखना और और गौओंकी माता बनना उषाकी

विशेषता है, देखिए—

हिरण्यवर्णा खुदशीकसंद्ग नवां माता नेत्र्यहामरोचि ।

(ऋ. ७।७।२)

‘सुवर्णकी कान्तिवाली अतः जिसका दर्शन बड़ा ही रमणीय है

ऐसी यह गौओंकी माता उषा जो कि दिनोंकी नेत्री है जगमगाने

लगी ।’

... अरुषी माता गवां... सखा अभूदश्विनोरुषाः ।

उत सखा असि अश्विनोरुत माता गवामसि... ।

(ऋ. ४।५।२-३)

‘लालिमामय आभावाली उषा गौओंकी माता एवं अश्विनौ

की मित्रा है ।’

लोगोंके दिलमें उषाके प्रति कैसी आदरमय भावना रहा

करती थी सो निम्न मंत्रोंसे स्पष्ट होगा—

उच्छन्ती या कृणोषि मंहना महि प्रख्यै देवि स्वर्दशे ।

तस्यास्ते रत्नभाज ईमहे वयं स्याम मातुर्न सूनवः ॥

(ऋ. ७।८।१४)

‘हे (महि देवि) महनीय देवतारूपी उषे ! (या उच्छन्ती)

जो तू उदित होती हुई (मंहना) अपने तेजसे (स्वः) स्वर्गको

(दशे) दर्शनेके योग्य तथा (प्रख्यै कृणोषि) विशेष स्पष्टताके

अनुकूल बनाती है उस (तस्याः ते) तुझको जो कि (रत्नभाजः)

रत्न साथ रखनेवाली है हम (ईमहे) चाहते हैं, या प्रार्थना करते हैं

कि (वयं) हम तेरी निगाहमें (मातुः सूनवः न) माताके लिए

उसके पुत्र जैसे प्यारे होते हैं, वैसेही (स्याम) प्रिय हों ।’

उषो भद्रेभिरागदि दिवाश्चिद्रोचनादधि । (ऋ. १।४।११)

‘हे उषे ! तू (रोचनात् दिवः चित्) चमकीले युलोक से

भी (भद्रेभिः अधि आगदि) कल्याणप्रद किरणों से युक्त हो हमें

प्राप्त होजा ।’

तद्वो दिवो दुहितरो विभातीरुप ब्रुव उषतः ...

वयं स्याम यशसो जनेषु ... (ऋ. ४।५।१११)

‘हे चमकती हुई, युलोककी कन्यासी उषाओ ! मैं तुमसे

वही कहना चाहता हूँ कि हम जनता में यशस्वी हों ।’

यां स्वा दिवो दुहितर्वर्धयन्त्युषः सुजाते मतिभिर्वसिष्ठाः ।

सा अस्मासु धा रयिमृष्वं बृहन्तं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।

(ऋ. ७।७।६)

‘ हे (सुजाते) सुन्दर ढंगसे उत्पन्न ! तुलोककन्धे उषे ! (यां त्वा) जिस तुलसी वसिष्ठवंशोत्पन्न लोग (मतिभिः वर्धयन्ति) बुद्धि से निष्पादित काव्योंद्वारा वृद्धिगत करते हैं ऐसी (सा) वह तू (अस्मासु) हममें (बृहन्तं ऋष्वं रयिं धा) बड़े दैदीप्यमान धन रख दे और तुम हमें सदैव कल्याणकारक बातोंसे सुरक्षित रखो । ’

उषा में इन्द्रशक्ति एवं अंगिरसोंकी शक्ति बढनेका उल्लेख मिलता है जैसे—

अभूदुषा इन्द्रतमा मघोनी ... दधात्यङ्गिरस्तमा सुकृते वसूनि । (७।७९।३)

...समानेन योजनेना परावतः । ... इपं वहन्तीः सुकृते सुदानवे ... ॥ (ऋ. १।९२।३)

‘ यह ऐश्वर्यसंपन्न उषा इन्द्रशक्तिकी खूब वृद्धि कर चुकी है और अंगिरसोंकी सामर्थ्य यथेष्ट बढाकर सुकर्मकर्ताको धन दे

डालती है; ये उषाएं सुदूर देशसे भी सदृश आयोजनाके अनुकूल अच्छे दानी एवं सुन्दर कार्यकर्ता को अन्न पहुंचाती हैं । ’

इस तरह उषा के सूक्तोंमें हमें एक सुरम्य प्राकृतिक दृश्य का और शाश्वतिक मानवी आकांक्षाका संमिश्र वर्णन देखने मिलता है । इन सूक्तोंमें इस बातका परिचय मिलता है कि मानवी मन प्राचीन कालमें मनोहर प्राकृतिक घटना से किस भाँति प्रभावित हुआ करता था और साथही यह भी ज्ञात होता है कि उत्साहवर्धक एवं नयनमनोरम प्राकृतिक दृश्य प्रभावित होने और उस में रस लेनेकी दशामें भी अनिवार्य सामाजिक आवश्यकताओंकी पूर्तिका भी ख्याल रखना पड़ता है । वैदिक सुकवियोंके विशाल एवं व्यापक दृष्टिकोणका इसमें बढकर और क्या अधिक परिचायक हो सकता है कि प्रतिदिन दृश्यमान एक नैसर्गिक दृश्य का सौन्दर्यप्राप्ती वर्णन करते हुए भी शाश्वतिक मानवी आवश्यकताओं का बारंबार उल्लेख करना वे नहीं भूलते ।

(२)

उषा सूक्तोंमें अतीन्द्रिय ज्ञान

योगी श्री अरविदजी महाराज अपने वेद रहस्य में उषा के स्वरूपका वर्णन अत्यंत हृदयंगम करते हैं, उसे अब यहां देखिये—

“ गोमद् वीरवद् घेहि रत्नम् उषो अश्वावत् ” उस समय कर्मकाण्डपरक व्याख्याकार को इस प्रार्थना में केवल उस सुखमय धन-दौलत की ही याचना दीखती है, जो गौओं, वीर मनुष्यों (या पुत्रों) और घोडों से युक्त हो । दूसरी तरफ यदि ये शब्द प्रतीकरूप हों, तो इसका अभिप्राय होगा— “ हमारे अन्दर आनन्द की उस अवस्था को स्थिर करो, जो ज्योति से, विजय शील शक्ति से और प्राण-बलसे भरपूर हो । ” इसलिये यह आवश्यक है कि एक बार सभी स्थलों के लिये वेद मंत्रों में आनेवाले, ‘ गौ ’ शब्द का अर्थ क्या है, इस का निर्णय कर लिया जाय । यदि यह सिद्ध हो जाय, कि यह प्रतीकरूप है, तो निरन्तर इस के साथ आनेवाले अथ (घोडा), वीर (मनुष्य या शूरवीर), अपत्य या प्रजा (औलाद), हिरण्य (सोना), वाज (समृद्धि, या सायण के अनुसार अन्न) इन दूसरे शब्दों का अर्थ भी अवश्य प्रतीकरूप और इसका सजातीय ही होगा ।

‘ गौ ’ का अलंकार वेद में निरन्तर उषा और सूर्यके साथ सम्बद्ध मिलता है । इसे हम उस कथानक में भी पाते हैं, जिस

में इन्द्र और वृद्धस्पति ने सरमा कृतिया (देवशुनी) और अङ्गिरस ऋषियों की मदद से पणियों की गुफा में से खोई हुई गौओं को फिर से प्राप्त किया है । उषा का विचार और ऋषियों का कथानक ये मानो वैदिक सम्प्रदायके हृदयस्थानीय हैं और इन्हें करीब करीब वेद के अर्थों के रहस्य की कुञ्जी समझा जा सकता है । इसलिये ये ही दोनों हैं, जिन की हमें अवश्य परीक्षा कर लेनी चाहिये, जिन से आगे अपने अनुसंधान के लिये हमें एक दृढ आधार मिल सके ।

अब उषासंबंधी वेद के सूक्तों को बिल्कुल ऊपर ऊपर से जांचने पर भी इतना बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि, उषा की गौएँ या सूर्यकी गौएँ ‘ ज्योति ’ का प्रतीक है, इसके सिवाय और कुछ नहीं हो सकती । सायण खुद इन मन्त्रों का माध्य करते हुए विवश होकर कहीं इस शब्द का अर्थ ‘ गाय ’ करता है और कहीं ‘ किरण ’, हमेशा की अपनी आदत के अनुसार परस्पर संगति बैठाने की भी कुछ पवाई नहीं रखता; कहीं वह यह भी कह जाता है कि, ‘ गौ ’ का अर्थ सत्यवाची ‘ ऋतु ’ शब्द की तरह पानी होता है । असल में देखा जाय तो वह स्पष्ट है कि इस शब्दसे दो अर्थ लिये जाने अभिप्रेत हैं ।

[उषा देवता ।

योजनाके अनु-
पहुंचाती हैं ।
प्राकृतिक दृश्य
वर्णन देखने
मिलता है कि
यटना से कि
यह भी ज्ञात
प्राकृतिक दृश्य से
भी अनिवार्य
रखना पड़ता
छकोणका इमे
है कि प्रतिदिन
गर्जन करते हुए
उल्लेख करना
देवगुनी) और
में से खोई इन्द्र
चार और अग्नि
हृदयस्थानीय है
की कुञ्जी समझ
की हमें अवश्य
अपने अनुसंधान
ऊपर रूप से
है कि, उषा की
के सिवाय और
का भाष्य करते
गाय ' करता है
दत्त के अनुसार
रखता; कहीं
यवाकी ' ऋतु
जाय तो वह
ने अभिप्रेत है।

(१) ' प्रकाश ' इस का असली अर्थ है और (२) ' गाय ' उस का स्थूल रूपक-रूप और शाब्दिक अलंकारमय अर्थ है ।
ऐसे स्थलों में गौओं का अर्थ ' किरणें ' इस में कोई मतभेद नहीं हो सकता, जैसे कि इंद्र के विषय में मधुच्छन्दस् ऋषिके दूक (१.७) का तीसरा मन्त्र है- ' इंद्रने दीर्घ दर्शन के लिये सूर्य को बुलोकमें चढाया उसने उसे उसकी किरणों (गौओं) के द्वारा सारे पहाड पर पहुंचा दिया- वि गोभिः अद्रिम् रोषत्* । ' परन्तु इस के साथ ही सूर्य की किरणें ' सूर्य ' देवता की गौएँ हैं, हीलियस (Helios) की वे गौएँ हैं, जिन्हें ओडिसी (Odyssey) में ओडिसस (Odysseus) के साथियों ने बंध किया है, जिन्हें हर्मिज (Hermes) के लिये बंधे गये होमर के गीतों में हर्मिजने अपने भाई अपोलो (Apollo) के पास से चुराया है । ये वे गौएँ हैं, जिन्हें ' वल ' नामक शत्रूने या पणियोंने छिपा लिया था । जब मधुच्छन्द इंद्रको कहता है- ' तूने वलकी उस गुफाको खोल दिया, जिस में गौएँ बंद पड़ी थीं ' - तब उस का यही अभिप्राय होता कि, वल गौओं को कैद करनेवाला है, प्रकाश को रोकनेवाला है और वह रोका हुआ प्रकाश ही है, जिसे तब तब करनेवालों के लिये फिर से ला देता है । खोई हुई या खोई हुई गौओं को फिर से पालने का वर्णन वेद के मन्त्रों में लगातार आया है और इस का अभिप्राय पर्याप्त स्पष्ट हो गया, जब कि हम पणियों और अङ्गिरसोंके कथानककी परीक्षा करना शुरू करेंगे ।

एक बार यदि यह अभिप्राय, यह अर्थ सिद्ध हो जाता है, स्मरित हो जाता है, तो ' गौओं ' के लिये की गई वैदिक अर्थनाओं की जो भौतिक व्याख्या की जाती है, वह एकदम गलत जाती है । क्योंकि खोई हुई गौएँ, जिन्हें फिर से पा लेने के लिये ऋषि इंद्र का आह्वान करते हैं, वे यदि द्रविड लोगों- द्वारा खोई गई भौतिक गौएँ नहीं हैं, किंतु सूर्य की ज्योति चमकती हुई गौएँ हैं, तो हमारा यह विचार बनाना न्याय-मूलक ठहरता है कि, जहां केवल गौओं के लिये ही प्रार्थना है

* इस का अनुवाद हम यह भी कर सकते हैं कि, " उसने अपने वज्र (अद्रि) को उस से निकलती हुई चमकों के साथ चारों ओर भेजा " पर यह अर्थ उतना अच्छा और संगत नहीं लगता । पर यदि हम इसे ही मानें, तो भी ' गोभिः ' का अर्थ ' किरणें ' ही होता है, गाय पशु नहीं ।

* सुरुपकृत्युमृतये सुदुधामिव गोदुहे । जुहमसि यवियवि ।
उप नः सवना गहि सोमस्य सोमपाः पिव । गोदा इद्रेवतो मदः ॥ (ऋ० १।४।१-२)

+ ज्योतिर्विश्वस्मै भुवनाय कृण्वती गावो न व्रजं व्युषा आवर्तमः ॥ (ऋ० १।९।४)

और साथ में कोई विरोधी निर्देश नहीं है, वहां भी यह अलं-कार लगता है, वहां भी गौ भौतिक गाय नहीं है । उदाहरण के लिये ऋ० १,४,१,२ x में इंद्र के विषय में कहा गया है कि, वह पूर्ण रूपों को बनानेवाला है और वह गौओं के दोहने में ऐसा चतुर है कि, उस का सोम-रस से चढनेवाला मद सचमुच गौओंको देनेवाला है, ' गोदा इद् रेवतो मदः ' ।

निरर्थकता और असंगतताकी हद हो जायगी, यदि इस कथनका यह अर्थ समझा जाय कि, इंद्र कोई बड़ा समृद्धि-शाली देवता है और जब वह पिये हुए होता है, उस समय गौओं के दान करने में बड़ा उदार हो जाता है । यह स्पष्ट है कि जैसे पदली ऋचा में गौओं का दोहना एक अलंकार है, वैसे ही दूसरी में गौओं का देना भी अलंकार ही है । और यदि हम वेद के दूसरे सन्दर्भों से यह जान लें कि ' गौ ' प्रकाश का प्रतीक है तो यहां भी हमें अवश्य यही समझना चाहिये कि, इंद्र जब सोम-जनित आनन्द में भरा होता है, तब वह निश्चित ही हमें ज्योतिरूप गौएँ देता है ।

उषा के सूक्तों में भी, गौएँ ज्योति का प्रतीक हैं, यह भाव वैसा ही स्पष्ट है । उषा को सब जगह ' गोमती ' कहा गया है, जिस का स्पष्ट ही अवश्य यही अभिप्राय होना चाहिये कि, वह ज्योतिर्मय या किरणोंवाली है, क्योंकि यह तो बिल्कुल सूर्यवत्पूर्ण होगा कि, उषा के साथ एक नियत विशेषण के तौरपर ' गौओं से पूर्ण ' यह विशेषण उस के शाब्दिक अर्थ में ही प्रयुक्त किया जाय । पर गौओं का प्रतीक वहां पर विशेषण में है, क्योंकि उषा केवल ' गोमती ' ही नहीं है, वह ' गोमती अश्वावती ' है, वह हमेशा अपने साथ अपनी गौएँ और अपने घोड़े रखती है ।

' वह सारे संसारके लिये ज्योति को रचकर देती है और अन्धकार को, जो गौओं का बाड़ा है, खोल देती है, १.९२. ४ + ' यहां हम देखते हैं कि, बिना किसी भूलचूक की सम्भावना के गौएँ ज्योति का प्रतीक ही हैं । हम इस पर भी ध्यान दे सकते हैं कि, इस सूक्त (१.९२) में अश्विनों को कहा

गया है कि, वे अपने रथ को उस पथपर हांक कर नीचे ले जायें, जो ज्योतिर्मय और सुनहरा है—X 'गोमद् हिरण्यवद्' इस के अतिरिक्त उषा के संबंध में कहा गया है कि, उस के रथ को अरुण गौएँ खींचती हैं और कहीं यह भी कहा है कि, अरुण घोड़े खींचते हैं ।

' वह अरुण गौओं के समूह को अपने रथ में जोतती है । युङ्क्ते गवामरुणानामनीकम् । ऋ. १.१२४.११ ' यहाँ 'अरुण किरणों के समूह को ' यह दूसरा अर्थ भी स्थूल अलंकार के पीछे स्पष्ट ही रखा हुआ है । उषा का वर्णन इस रूप में हुआ है कि, वह गौओं या किरणों की माता है, 'गवांजनित्री अकृत प्रकेतुम्' ऋ. १.१२४.५. गौओं (किरणों) की माता ने दर्शन (Vision) को रचा है । ' और दूसरे स्थानपर उस के कार्य के विषय में कहा है, ' अव दर्शन या बोध उदित हो गया है । जहाँ पहले कुछ नहीं (असत्) था ' । + इस से पुनः यह स्पष्ट है कि, ' गौएँ ' प्रकाश की ही चमकती हुई किरणें हैं । उस की इस रूप में भी स्तुति की गई है कि, वह चमकती हुई गौओं का नेतृत्व करनेवाली है (नेत्री गवाम् ७.७६.६) और एक दूसरी ऋचा इस पर पूरा ही प्रकाश डाल देती है, जिस में ये दोनों ही विचार इकट्ठे आ गये हैं, ' गौओं की माता दिनों की नेत्री ' (गवां माता नेत्री अहाम् । ऋ. ७.७७.२) अन्तमें मानो इस अलंकार पर से आवरण को कतरई हटा देने के लिये ही, वेद स्वयं हमें कहता है कि, गौएँ प्रकाश की किरणों के लिये एक अलंकार हैं, " उसकी सुखमय किरणें दिखाई दीं, जैसे छोड़ी हुई गौएँ " प्रति भद्रा अदक्षत गवां सर्गा न रश्मयः । ऋ. ४.५२.५ हमारे सामने इससे भी अधिक निर्णयात्मक एक दूसरी ऋचा (ऋ. ७.७९.२) है— ' तेरी गौएँ (किरणें) अन्धकार को हटा देती हैं और

ज्योति को फैलाती हैं— सं ते गावस्तम जावर्तयन्ति ज्योतिर्यच्छन्ति ॥

लेकिन उषा इन प्रकाशमय गौओंद्वारा केवल खींची ही नहीं जाती, वह इन गौओं को यज्ञ करनेवालों के लिये उपहाररूप में देती है । वह इन्द्र की ही भांति, जब सोम के आनन्द में होती है, तो ज्योति को देती है वसिष्ठ के एक सूक्त (७.७५) में उसका वर्णन इस रूपमें है कि, वह देवों के कार्य में हिस्सा लेती है और उससे वे दृढ स्थान जहाँ गौएँ बन्द पड़ी हैं, दृढ़ कर खुल जाते हैं और गौएँ मनुष्यों को प्राप्त हो जाती हैं । " वह ÷ सच्चे देवों के साथ सच्ची है, महान् देवों के साथ महान् है, वह दृढ स्थानों को तोड़ कर खोलती है और प्रकाशमय गौओंको छोड़ देती है, गौएँ उषा के प्रति रंभाती हैं " रुद्र दृढहानि ददद् उस्त्रियाणाम्, प्रति गाव उपसं वावशन्त । (ऋ. ७.७५.७) और ठीक अगली ही ऋचामें उससे प्रार्थना की गई है कि, वह यज्ञकर्ता के लिये आनन्द की उस अवस्था को स्थिर करे या धारण करवे, जो प्रकाश से (गौओं से), अथवा से (प्राण-शक्ति से) और वहुत से सुख-भोगों से परिपूर्ण हो— " गोमद् रत्नम् अश्वावत् पुरुभोजः । " इसलिये जिन गौओं को उषा देती है, वे गौएँ ज्योतिकी ही चमकती हुई सेनावादी हैं जिन्हें देवता और अङ्गिरस ऋषि वल और पणियों के दृढ स्थानों से उद्धार करके लाये हैं । साथ ही गौओं (और अथवा) की सम्पत्ति जिस के लिये ऋषि लगातार प्रार्थना करते हैं उषा ज्योति की सम्पत्तिके अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकती क्योंकि यह कल्पना असंभवसी है कि, जिन गौओं को देने के लिये इस सूक्त की सातवीं ऋचा में उषा को कहा गया है, वे उन गौओं से भिन्न हों जो ८ वीं में मांगी गई हैं, कि पहले मन्त्र में ' गौ ' शब्द का अर्थ है ' प्रकाश ' और अगले

× अश्विना वर्तिरस्मदा गोमद् दक्षा हिरण्यवत् । अर्वाग्रथं समनसा नि यच्छतम् । (ऋ. १.१२१.१६)

+ वि नूनमुच्छाद् असति प्रकेतुः । (ऋ. १.१२४.१६)

● निस्संदेह इसमें मतभेद हो सकता कि वेद में गौ का अर्थ प्रकाश है; उदाहरण के लिये जब यह कहा जाता है कि ' गवा, ' ' गौ ' से, प्रकाश से, वृत्र को मारा गया, तो यहाँ गाय पशुका तो कोई प्रश्न ही नहीं है, प्रश्न यह है कि यहाँ द्वयर्थक प्रयोग है और गौ यहाँ प्रतीकरूप है ।

÷ सत्या सत्येभिर्महती महद्भिर्देवी देवेभिर्यजता यजत्रैः ।

रुजद् दृढहानि दददुस्त्रियाणां प्रति गाव उपसं वावशन्त ॥ (ऋ. ७.७५.७)

नू नो गोमद् वीरवद् धेहि रत्नमुषो अश्वावत् पुरुभोजो अस्मे ॥ (ऋ. ७.७५.८)

[उषा देवता ।

ज्योतिर्गन्ति ज्योतिः ।

खींची ही नहीं

उपहाररूप में

आनन्द में होती

(७.७५) में

कार्य में हिस्सा

न्द पड़ो है, दूट

हो जाती है ।

देवों के साथ

है और प्रशङ्

गती है " रुद्र

सं वावशान ।

उससे प्रार्थना की

उस अवस्था को

गौओं से) अश्वों

ों से परिपूर्ण हो-

लिये जिन गौओं

की हुई सेनावे हैं ।

गियोंके दृढ स्थानों

और अश्वों) की

करते हैं उषा

नहीं हो सकती ।

गौओं को देने के

कहा गया है, वे

ई हैं, कि पहले

और अगले हैं

)

श जाता है कि

प्रश्न यह है कि

‘बाप’, और यह कि ऋषि मुखसे निकालते ही उसी क्षण यह भूत गया कि किस अर्थ में वह शब्द का प्रयोग कर रहा था ! वही कहीं ऐसा है कि प्रार्थना ज्योतिर्मय आनन्द या ज्योतिर्मय समृद्धिके लिये नहीं है, बल्कि प्रकाशमय प्रेरणा या वक्त के लिये है, ‘हे यु की पुत्री उषः ! तू हमारे अन्दर द्यौ की रश्मियों के साथ प्रकाशमय प्रेरणाको ला’— ‘गोमती-विष आवह । दुहितर्दिवः, साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ।’ ५।७९।८ । अथवा ‘गोमतीः इषः’ का अर्थ किया है ‘चमकता हुआ अन्न’ + । परन्तु यह स्पष्ट ही एक निरर्थक सी बात लगती है कि उषा से कहा जाय कि, वह सूर्य किरणों के साथ किरणों से युक्त अन्न को लाये । यदि ‘इष्’ का अर्थ अन्न है, तो हमें इस प्रयोग का अभिप्राय लेना होगा ।

इन नमूने के उदाहरणों से हम समझ सकते हैं कि, प्रकाश से गौओं का यह अलंकार कैसा व्यापक है और कैसे अनिवार्य रूप से यह वेदके लिये एक अध्यात्मपरक अर्थ की ओर निर्देश कर रहा है । एक सन्देह भी बीच में आ उपस्थित होता है । हमने माना कि, यह एक अनिवार्य परिणाम है कि ‘गौ’ प्रकाश के लिये प्रयुक्त हुआ है, पर इससे हम क्यों न समझें कि, इसका सीधासाधा मतलब दिन के प्रकाश से है, जैसा कि, देवी भाषा से निकलता प्रतीत होता है ? वहाँ किसी प्रतीक की कल्पना क्यों करें, जहाँ केवल एक अलंकार ही है ? हम उस दूसरे अलंकार की कठिनाई को निमंत्रण क्यों दें, जिससे ‘गौ’ का अर्थ तो हो ‘उषा का प्रकाश’ और उषाके प्रकाश को ‘आन्तरिक ज्योति’ का प्रतीक समझा जाय ? वह क्यों न मान लें कि ऋषि आत्मिक ज्योति के लिये नहीं, बल्कि दिन के प्रकाश के लिये प्रार्थना कर रहे थे ?

ऐसा माननेपर अनेक प्रकार के आक्षेप आते हैं और उन में कुछ तो बहुत प्रबल हैं । यदि हम यह मानें कि, वैदिक गौओं की रचना भारत में हुई थी और यह उषा भारत की उषा है और यह रात्रि वही यहाँ की दस या बारह घण्टे की छोटीसी रात है, तो हमें यह स्वीकार कर के चलना होगा कि, वैदिक ऋषि जंगली थे, अन्धकार के भय से बड़े भयभीत रहते थे और समझते थे कि, इस भय-प्रेत रहते हैं, वे दिन-रात की परम्परा के प्राकृतिक नियम से जिसका अब तक बहुत से सूक्तों में बड़ा सुन्दर चित्र चित्रा मिलता है— भी अनभिज्ञ थे और उनका ऐसा विश्वास था

+ गोमतीगौभिरुपेतानि इषोऽज्ञानि आवह आनय— सायण

कि, आकाश में जो सूर्य निकलता था और उषा अपनी बहिन रात्रि के आलङ्गन से छूटकर प्रकट होती थी, वह सब केवल उन की प्रार्थनाओं के कारण से ही होता था । पर फिर भी वे देवोंके कार्यमें अटल नियमों का वर्णन करते हैं और कहते हैं कि, उषा हमेशा शाश्वत सत्य व दिव्य नियम के मार्ग का अनुसरण करती है ! हमें यह कल्पना करनी होगी कि, ऋषि जब उल्लास में भरकर पुकार उठता है ‘हम अन्धकार को पार करके दूसरे किनारे पहुँच गये हैं !’ तो यह केवल दैनिक सूर्योदय पर होनेवाला सामान्य जागना ही है ।

जिस की ऋषि ऐसी उत्कण्ठा से स्तुति कर रहा है । हमें यह कल्पना करनी होगी कि, वैदिक लोग उषा निकलने पर यज्ञ के लिये बैठ जाते थे और प्रकाश के लिये प्रार्थना करते थे, जब कि वह पहले से ही निकल चुका होता था । और यदि हम इन सब असंभव कल्पनाओं को मान भी लें, तो आगे हमें यह एक स्पष्ट कथन मिलता है कि, नौ या दस महीने बैठ चुकने के उपरान्त ही यह हो सका कि अङ्गिरस ऋषियों को खोया हुआ प्रकाश और खोया हुआ सूर्य फिर से मिल पाया । और जो पितरों के द्वारा ‘ज्योति’ के खोजे जाने का कथन लगातार मिलता है, उस का हम क्या अर्थ लगायेंगे ।

“ हमारे पितरों ने छिपी हुई ज्योति को ढूँढकर पा लिया, उनके विचारों में जो सत्य था, उस के द्वारा उन्होंने उषा को जन्म दिया— गूलहं ज्योतिः पितरो अन्वाविन्दन्, सत्य-मन्त्रा अजनयन् उषासम् । (क. ७।७६।४) यदि हम किसी भी साहित्य के किसी कविता संग्रह में इस प्रकार का कोई पद्य पावें, तो तुरन्त हम उसे एक मनोवैज्ञानिक या आध्यात्मिक रूप दे देंगे, तो फिर वेद के साथ हम दूसरा ही बर्ताव करें, इस में कोई युक्तियुक्त कारण नहीं दीखता ।

फिर भी यदि हमें वेद के सूक्तों की प्रकृतिवादी व्याख्या ही करनी है और कोई नहीं, तो भी यह बिलकुल साफ है कि, वैदिक उषा और रात्रि कमसे कम भारत की रात्रि और उषा तो नहीं हो सकती । यह केवल उत्तरीय ध्रुव के प्रदेशों में ही हो सकता है कि इन प्रकृति की घटनाओं के संबंध में ऋषियों की जो मनोवृत्ति है और अंगिरसों के विषय में जो बातें कही गई हैं, वे कुछ समझ में आनेलायक बन सकें । प्राचीन वैदिक आर्य उत्तरीय ध्रुव से

आये, इस कल्पना (वाद) को क्षणभर के लिये मान लेनेपर भी यद्यपि यह बहुत अधिक सम्भव हो सकता है कि, उत्तरीय ध्रुव की स्मृतियों वेद के बाह्य अर्थ में आ गई हों, फिर भी इस कल्पना से प्रकृति से खींचे हुए इन प्राचीन अलंकारों के पीछे जो एक आन्तरिक अर्थ है, उस का निराकरण नहीं हो सकता, नहीं इस के मान लेने से यह सिद्ध हो जाता है कि, उषासंबंधी ऋचाओं की इस की अपेक्षा और अधिक सुसंबद्ध और सीधा किसी दूसरी व्याख्या की आवश्यकता नहीं है ।

उदाहरण के लिये हमारे सामने अश्विनो को कहा गया प्रस्कण्व काण्वका सूक्त [१४६] है, जिस में उस ज्योतिर्मय अन्तःप्रेरणा का संकेत है, जो हमें अन्धकार में से पार कर के परले किनारे पर पहुंचा देती है । उस सूक्त का उषा और रात्रिके वैदिक विचार के साथ घनिष्ठ संबंध है । इस में वेद में नियतरूप से आनेवाले बहुत से अलंकारों का संकेत मिलता है; जैसे ऋत के मार्ग का, नदियों को पार करने का, सूर्य के उदय होने का, उषा और अश्विनो में परस्पर संबंध का, सोम-रस के रहस्यमय प्रभाव का और उसके सामुद्रिक रस का ।

‘ देखो, आकाशमें उषा खिल रही है, जिस से अधिक उच्च और कोई वस्तु नहीं है, जो आनन्द से भरी हुई है । हे अश्विनो ! तुम्हारी मैं महान् स्तुति करता हूं । * (१) तुम जिन की सिंधु माता है, जो कार्य को पूर्ण करनेवाले हो, जो मन में से होते हुए उस पार पहुंचकर ऐश्वर्य (रथि) को पा लेते हो, जो दिव्य हो और उस ऐश्वर्य (वसु) को विचार के द्वारा पाते हो । (२) हे समुद्र-यात्रा के देवो जो शब्द को मनोमय करनेवाले हो ! यह तुम्हारे विचारों को भंग करनेवाला है- तुम प्रचण्ड रूपसे सोम का पान करो (५) हे अश्विनो ! हमें वह ज्योतिष्मती अन्तःप्रेरणा दो, जो हमें तमस् से निकाल कर पार

पहुंचा दे । (६) हमारे लिये तुम अपनी नावपर बैठकर चलो, जिस से हम मन के विचारों से परे परले पार पहुंच सकें । हे अश्विनो ! तुम अपने रथ को जोतो (७) अपने उस रथ को जो ध्रुलोक में इसकी नदियों को पार करने के लिये एक बड़े पतवारवाले जहाज का काम देता है । विचार के द्वारा आनन्द की शक्तियां जोती गई हैं । (८) जलो के स्थान पर ध्रुलोक में आनन्दरूपी सोम-शक्तियां ही वह ऐश्वर्य [वसु] है । पर अपने उस आवरण को तुम कहां रख दोगे, जो तुमने अपने आपको छिपने के लिये बनाया है ? (९) नहीं, सोम का आनन्द लेनेके लिये प्रकाश उत्पन्न हो गया है, - सूर्य ने जो कि, अन्धकारमय था, अपना जिह्वा को हिरण्य की ओर लपलपाया है (१०) ऋत का मार्ग प्रकट हो गया है, जिससे हम उस पार पहुंचेंगे; ध्रु के बीच का सारा खुला मार्ग दिखलाई पड़ गया है । (११) खोजनेवाला अपने जीवन में अश्विनो के ज्यों ज्यों सोम के आनन्दमें तृप्ति-लाभ करते हैं, सौं सौं उनके निरन्तर एक के बाद दूसरे आविर्भाव की ओर प्रगति किये आ रहा है । (१२) उस सूर्य में जिस में ज्योति ही ज्योति है, तुम निवास करते हुए [या चमकते हुए] सोम-पानके द्वारा, वाणीके द्वारा हमारी मानवीयता में सुख का सर्जन करनेवाले के तौरपर आओ । (१३) तुम्हारी कीर्ति और विजयके अतुल्य उषा हमारे पास आती है, जब तुम हमारे सब लोकों में व्याप्त हो जाते हो और रात्रि में से सखों को विजय कर लाते हो । (१४) दोनों मिलकर हे अश्विनो ! सोम-पान करो, दोनों मिलकर हमारे अन्दर शक्ति को प्राप्त कराओ उन विस्तारों के द्वारा जिन की पूर्णता सदा अविच्छिन्न रहती है । (१५)

यह इस सूक्त का सीधा और स्वाभाविक अर्थ है और हमें इस का भाव समझने में कठिनाई नहीं होगी, यदि हम वेद के मूलभूत विचारों और अलंकारों को स्मरण रखेंगे । ‘ रात्रि’ स्पष्ट ही आन्तरिक अन्धकार के लिये आलंकारिक रूप से कहा

* एषो उषा अपूर्व्या व्युच्छति प्रिया दिवः । स्तुषे वामश्विना बृहत् ॥ १ ॥ या दक्षा सिन्धुमातरा मनोतरा रथीणाम् । धिया देवा वसुविदा ॥ २ ॥ आदारो वां मतीनां नासत्या मतवचसा । पातं सोमस्य धृष्णुया ॥ ५ ॥ या नः पीपरदश्विना ज्योतिष्मतीं तमस्तिरः । तामस्मे रासाथामिषम् ॥ ६ ॥ आ नो नावा मतीनां यातं पाराय गन्तवे । युञ्जाथामश्विना रथम् ॥ ७ ॥ अश्विनो दिवस्पृथु तीर्थे सिन्धूनां रथः । धिया युयुज्ज इन्दवः ॥ ८ ॥ दिवस्कण्वास इन्दवो वसु सिन्धूनां पदे । स्वं वन्नि कुह धितस्य ॥ ९ ॥ अभूदु भा उ अंशवे हिरण्यं प्रति सूर्यः । व्यख्यजिह्वासितः ॥ १० ॥ अभूदु पारमेतवे पन्था ऋतस्य साधुया । अदतीं पि स्तुतिर्दिवः ॥ ११ ॥ ततदिदश्विनो रवो जरिता प्रति भूषति । मदे सोमस्य पिप्रतोः ॥ १२ ॥ वावसाना विवस्वति सोमस्य पीया गिरा । मनुष्वच्छंभू आ गतम् ॥ १३ ॥ युवोरुषा अनु श्रियं परिज्मनोरुपाचरत् । ऋता वनथो अक्तुभिः ॥ १४ ॥ वन पिवतमश्विनोभो नः शर्म यच्छतम् । अविद्रियाभिहृतिभिः ॥ १५ ॥ (ऋ. १।४६)

[उषा देवता ।

नावपर बैठकर

परे परले पार

जोते (७) अपने

पार करने के

ता है । विचार

(८) जलों के

ही वह ऐश्वर्य

कहाँ रख दोगे,

है ? (९) नहीं,

गया है, - सूर्य

हिरण्य की ओर

गया है, जिससे

लार्ग दिखल

वन में अधियों के

हैं, लों लों करने

प्रगति किये जा

ही ज्योति है,

म-पानके द्वारा,

र्जन करनेवाले के

विजयके अनुरा

लोकों में व्याप्त

कर लाते हो।

करो, दोनों मिल-

विस्तारों के द्वारा

(१५)

अर्थ है और हमें

यदि हम वेद के

खेंगे । 'रात्रि'

रूप से कहा

गाम् । विधा देव

धना ज्योतिष्मत्

॥ ७ ॥ अरिं च

ह धितस्थः ॥ ९ ॥

युया । अदर्वि नि

विवस्वति सोम

मः ॥ १४ ॥ नमः

पा है, उषा के आगमन के द्वारा रात्रि में से 'सत्त्वों' को निकाल हस्तगत किया जाता है । यही उस सूर्यका, सत्यके सूर्य का, उदय होना है, जो अन्धकार के बीच में खो गया था- यही खोये हुए सूर्य का हमारा परिचित अलंकार जिस में उसे देवों और ऋषियों ने फिर से पाया है । और अब यह अपनी जगति का जिह्वा को खार्णिल ज्योति के प्रति- 'हिरण्य' के प्रति लपलपाता है ।

सुवर्ण उच्चतर ज्योति का स्थूल प्रतीक है, यह सत्य का धोना है और यही वह निधि है, न कि कोई सोनेका सिका, जिसके लिये वैदिक ऋषि देवों से प्रार्थना करते हैं । आन्तरिक अन्धकार में से निकाल कर ज्योति में लाने के इस महान् परि- वर्तन को अर्थात् करते हैं, जो मन की और प्राण-शक्तियों की प्रवृत्ततायुक्त ऊर्ध्वगति के देवता हैं, और इसे वे इस प्रकार करते हैं कि, आनन्द का अमृतरस मन और शरीर में उण्डेला जाता है और वहाँ वे इस का पान करते हैं । वे व्यञ्जक शब्द को मनोमय रूप देते हैं, वे हमें विशुद्ध मन के उस स्वर्ग में ले जाते हैं, जो इस अन्धकार से परे है और वहाँ वे विचार के द्वारा आनन्द की शक्तियों को काम में लाते हैं ।

पर वे यु के जलों को भी पार कर के उससे भी ऊपर चल जाते हैं, क्योंकि सोम की शक्ति उन्हें सब मानसिक रचनाओं को तोड़ डालने में सहायता देती है और वे इस आवरण को भी उतार फेंकते हैं । वे मन से परे चले जाते हैं और सबसे अन्तिम चोच जो वे प्राप्त करते हैं वह 'नदियों का पार करना' का ही है, जो कि विशुद्ध मन के युलोकमें से गुजरने की यात्रा है, वह यात्रा है, जिस से सत्य के मार्ग पर चलकर किनारे पर पहुँचा जाता है और जब तक अन्त में हम उच्चतम पर, परमा परावत्पर नहीं पहुँच जाते, तब तक हम इस महान् यात्रा को विभ्राम नहीं लेते ।

हम देखेंगे कि, न केवल इस सूक्त में बल्कि सब जगह उषा को लानेवाली के रूप में आती है, स्वयं वह सत्य की ज्योति से जगमगानेवाली है । वह दिव्य उषा है और यह भौतिक उषा (प्रभात होना) उस की केवल छायामात्र है और भौतिक जगत् में उस का प्रतीक है ।

उषा सत्य के पथ की दृढ़ अनुगामिनी है और चूँकि इस पथ का उसे ज्ञान या बोध रहता है, इसलिये वह असीमता

X यूयं हि देवीर्ऋतयुग्मिभरथैः परिप्रयाथ भुवनानि सद्यः । (ऋ. ४।५।१५)

+ वि तद् ययुररुणयुग्मिभरथैश्चित्रं भान्त्युषसश्चन्द्ररथाः । (ऋ. ६।६।१२)

० ऋतस्य देवीः सदसो बुधानाः । (ऋ. ४।५।१-८)

३ है. [उषा]

को, वृहत् को, जिसकी कि वह ज्योति है, सीमित नहीं करती । यही इस मन्त्र का असली अभिप्राय है, यह बात ५ मण्डल की एक ऋचा (ऋ. ५।८०।१) से निर्विवाद स्पष्ट रूपसे सिद्ध हो जाती है और इस में भूलचूक की कोई संभावना नहीं रह जाती । इस में उषा के लिये कहा है- युतद्यामानं वृहतीम् ऋतेन ऋतावरीं, स्वरावहन्तीम् । 'वह प्रकाशमय गति-वाली है, ऋतसे महान् है, ऋत में सर्वोच्च (या ऋत से युक्त) है, अपने साथ स्वःको लाती है ।' यहाँ हम वृहत् का विचार, सत्य का विचार, स्वर्लोक के सौर प्रकाश का विचार पाते हैं; और निश्चय ही वे सब विचार इस प्रकार घनिष्ठता और दृढ़ता से एकमात्र भौतिक उषा के साथ सम्बद्ध नहीं रह सकते । इसके साथ हम ७।७।५१ के वर्णन की भी तुलना कर सकते हैं- व्युषा भावो दिविजा ऋतेन, भाविष्कृण्वाना महिमानमागात् । " यौमें प्रकट हुई उषा सत्यके द्वारा वस्तुओं को खोल देती है, वह महिमा को व्यक्त करती हुई आती है । " यहाँ पुनः हम देखते हैं कि, उषा सत्य की शक्ति के द्वारा सब वस्तुओं को प्रकट करती है और इसका परिणाम यह बताया गया है कि, एक प्रकार की महत्ता का आविर्भाव हो जाता है ।

अन्तमें इसी विचार को हम आगे भी वर्णित किया गया पाते हैं, बल्कि यहाँ सत्यके लिए 'ऋत' के बजाय सीधा 'सत्य' शब्द ही है, जोकि 'ऋतम्' की तरह दूसरा अर्थ किये जा सकने की सम्भावनामें डालनेवाला भी नहीं है- सत्या सत्योर्मिर्महती महद्भिर्देवी देवेभिः । (ऋ. ७।७।५१) 'उषा अपनी सत्ता में सब देवों के साथ सच्ची है, महान् देवों के साथ महान् है ।' वामदेव ने अपने एक सूक्त ४।५।१ में उषा के इस 'सत्य' पर बहुत बल दिया है; क्योंकि वहाँ वह उषाओं के बारे में केवल इतना ही नहीं कहता कि, 'तुम सत्य के द्वारा जोते हुए अर्धों के साथ जल्दी से लोकों को चारों ओर से घेर लेती हो,' X ऋतयुग्मिभः अथैः (तुलना करो ऋ. २।६।५।२ +) परन्तु वह उनके लिए कहता है- भद्रा ऋतजातसत्याः (ऋ. ४।५।१।७) 'वे सुखमय हैं और सत्यसे उत्पन्न हुई सच्ची हैं ।' और एक दूसरी ऋचा में वह उनका वर्णन इस रूप में करता है कि, 'वे देवी हैं जो कि ऋतके स्थानमें प्रबुद्ध होती हैं । ० '

‘भद्रा’ और ‘ऋत’ का यह निकट सम्बन्ध अग्रिको कहे गये मधुच्छन्दस् के सूक्त में इसी प्रकार का जो विचारों का परस्पर सम्बन्ध है, उस का हमें स्मरण करा देता है। वेद की अपनी आध्यात्मिक व्याख्या में हम प्रत्येक मोड़ पर इस प्राचीन विचार को पाते हैं कि ‘सत्य’ आनन्द को प्राप्त करने का मार्ग है। तो उषाको, सत्य की ज्योति से जगमगाती उषा को, भी अवश्य सुख और कल्याण को लानेवाला होना चाहिए। उषा आनन्द को लानेवाली है, यह विचार वेद में हम लगातार पाते हैं और वशिष्ठने (ऋ. ७।८।१३) में इसे बिल्कुल स्पष्ट रूप में कह दिया है— या वहसि पुरुस्पाई रतनं न दाशुषे मयः । “ तू जो देनेवाले को कल्याण-सुख प्राप्त कराती है, जो कि अनेक रूप है और स्पृहणीय आनन्द रूप है। ”

वेद का एक सामान्य शब्द ‘सूनुता’ है जिसका अर्थ सायण ने ‘मधुर और सत्य वाणी’ किया है, परन्तु प्रतीत होता है कि, इसका प्रायः और भी अधिक व्यापक अभिप्राय ‘सुखमय सत्य’ है। उषा का कहीं कहीं यह कहा गया है कि, वह ‘ऋतावरी’ है, सत्य से परिपूर्ण है और कहीं उसे ‘सूनुतावती’ कहा गया है। वह आती है सच्चे और सुखमय शब्दों को उच्चरित करती हुई “सूनुता ईरयन्ती।” जैसे उस का वह वर्णन किया गया है कि, वह जगमगाती हुई गौओं की नेत्री है और दिनों की नेत्री है, वैसे ही उसे सुखमय सत्त्वों की प्रकाशवती नेत्री कहा गया है। भास्वती नेत्री सूनुतानाम् । (ऋ. १।९।२।७) और वैदिक ऋषियों के मनमें ज्योति, किरणों या गौओं के विचार और सत्य के विचार में जो परस्पर गहरा सम्बन्ध है, वह एक दूसरी ऋचा (ऋ. १।९।२।४) में और भी अधिक स्पष्ट तथा असन्दिग्ध रूप से पाया जाता है— गोमति अश्वावती विभावरी... .. सूनुतावति । “ हे उषा, जो तू अपनी जगमगाती हुई गौओं के साथ है, अपने अश्वों के साथ है, अत्यधिक प्रकासमान है और सुखमय सत्त्वों से परिपूर्ण है। ” इसी जैसा पर तो भी इससे अधिक स्पष्ट वाक्यांश (ऋ. १।४।८।२) में है, जो इन विशेषणों के इस प्रकार रखे जानेके अभिप्राय को सूचित कर देता है— गोमतीरश्वावतीर्विश्वसुविदः । “ उषाएँ जो अपनी ज्योतियों (गौओं) के साथ हैं, अपनी त्वरितगतियों (अश्वों) के साथ हैं और जो सब वस्तुओं को ठीक प्रकार से जानती हैं। ”

वैदिक उषा के आध्यात्मिक स्वरूपका निर्देश करनेवाले जो उदाहरण ऋग्वेद में पाये जाते हैं, वे किसी भी प्रकार वहीं

तक परिमित नहीं हैं। उषा को निरन्तर इस रूप में प्रदर्शित किया गया है कि, वह दर्शन, बोध, ठीक दिशा में गति को जागृत करती है। गौतम राहुगण कहता है, “ वह देवी सब भुवनों को सामने होकर देखती है, वह दर्शनरूपी आँख अपनी पूर्ण विस्तीर्णता में चमकती हैं, ठीक दिशा में चलने के लिए सम्पूर्ण जीवन को जगाती हुई वह सब विचारशील लोगों के लिए वाणी को प्रकट करती है। ” + विश्वस्य वाचमविदन्मनायोः । (ऋ. १।९।२।९)

वहाँ हम उषा को इस रूप में पाते हैं कि, वह जीवन और मनको बन्धन मुक्त करके अधिकसे अधिक पूर्ण विस्तार में पहुँचा देती है और यदि हम इस उपर्युक्त निर्देश को वहीं तक सीमित रखें कि, यह केवल भौतिक उषा के उदय होने पर पार्थिव जीवन के पुनः जाग उठने का ही वर्णन है, तो हम ऋषि के चुने हुए शब्दों और वाक्यांशों में जो बल है, उस सारे की उपेक्षा ही कर रहे होंगे और यदि यह हो कि, उषा से लाये जानेवाले दर्शन के लिए यहाँ जो शब्द प्रयुक्त किया गया है, ‘चक्षुः’ उसे केवल भौतिक दर्शनशक्ति से ही सूचित कर सकने योग्य माना जाय, तो दूसरे सन्दर्भों में हम इसके स्थान पर ‘केतु’ शब्द पाते हैं, जिसका अर्थ है बोध, मानसिक चेतना में होनेवाला बोधयुक्त दर्शन, ज्ञान की एक शक्ति। उषा है ‘प्रचेताः’ इस बोधयुक्त ज्ञान से पूर्ण। उषाति जो कि ज्योतियों की माता है, मन के इस बोधयुक्त ज्ञान को रचा है, गवां जानित्री अकृत प्रकेतुम् (ऋ. १।१२।४)। वह स्वयं ही दर्शनरूप है— “ अव बोधमय दर्शनको उषा खिन्न उठी है, जहाँ कि पहले कुछ नहीं (असत्) था, ” वि नूनमुच्छादसति प्र केतुः (ऋ. १।१२।४-११)। वह अपनी बोधयुक्त शक्ति के द्वारा सुखमय सत्त्वोंवाली है, चिकित्सत सूनुतावरी । (ऋ. ४।५।२।४)

यह बोध, यह दर्शन, हमें बताया गया है, अमरत्व का है— अमृतस्य केतुः (ऋ. ३।६।१३)। दूसरे शब्दों में यह उस सत्य और सुख की ज्योति है, जिनसे उच्चतर या अमर चेतना का निर्माण होता है। रात्रि वेद में हमारी उस अन्धकारमय चेतना का प्रतीक है जिस के ज्ञान में अज्ञान भरा पड़ा है और जिसके संकल्प तथा क्रिया में स्खलन पर स्खलन होते रहते हैं और इसलिए जिसमें सब प्रकार की बुराई, पाप तथा कष्ट रहते हैं। प्रकाश है ज्योतिर्मयी उच्चतर चेतनाका आगमन जो कि सत्य है और सुख को प्राप्त कराता है। हम निरन्तर ‘दुरितम्’ और ‘सुवितम्’ इन दो शब्दों का विरोध पाते हैं।

+ विश्वं नि देवी भुवनाभिचक्ष्या प्रतीची चक्षुर्विद्या वि भाति ।

विश्वं जीवं चरसे बोधयन्ती विश्वस्य वाचमविदन्मनायोः ॥ (ऋ. १।९।२।९)

अमरत्व का है-
दोमें यह उस सब
या अमर वेतना
उस अन्धकारमय
भरा पड़ा है और
चलन होते रहते हैं
प तथा कष्ट रहते
आगमन जो कि सब
‘दुरितम्’ और
है। ‘दुरितम्’ का

इसलिये वह केवल सुखमय सख्यों की ही नहीं, किंतु हमारी आध्यात्मिक समृद्धि और उल्लास की भाँ नेत्री है, उस आनन्दको लगेवाला है, जिस तक मनुष्य सत्य के द्वारा पहुँचता है या जो सत्य के द्वारा मनुष्य के पास लाया जाता है, (एषा नेत्री राघवः सन्तानाम् । (ऋ. ७।७।७) यह समृद्धि जिस के लिए ऋषि प्रार्थना करते हैं, भौतिक दौलतों के अलङ्कार से सँभन की गई है; यह ' गोमद् अश्वावद् वीरवद् ' है, या वह ' गोमद् अश्वावद् रथवच्च राघः ' है । गौ (गाय), अश्व (घोड़ा), प्रजा या असत्य (सन्तान), नृ या वीर (मनुष्य या शूरावीर), हिरण्य (सोना), रथ (सवारीवाला रथ) श्रवः (मोहन या कीर्ति)- याज्ञिक सम्प्रदायवालों की व्याख्या के अनुसार ये ही उस सम्पत्ति के अंग हैं, जिस की वैदिक ऋषि प्राप्ता करते थे । यह लगेगा कि, इससे अधिक ठोस दुनियावी धार्मिक और भौतिक दौलत कोई और नहीं हो सकती थी, निश्चन्द्रे ये ही वे ऐश्वर्य हैं, जिन के लिए कोई बेहद भूखी, धार्मिक वस्तुओं की लोभी, कामुक, जंगली लोगोंकी जाति अपने कर्मेन्द्रों से जाति सोने की अपेक्षा दूसरे ही अर्थ में प्रयुक्त किया गया है । हम देख आए हैं कि ' गौएं ' निरन्तर उषा के साथ अमन्द होकर बार बार आती हैं, कि यह प्रकाश के उदय होने

* उषा याति ज्योतिः

१. उषा याति ज्योतिषा बाधमाना विश्वा तमांसि दुरिताप देवी
 २. घोडा प्रतीकरूप ही है, यह पूर्णतया स्पष्ट हो जाता है। दी
 ३. विक्रान्त विषयक भिन्न भिन्न ऋषियों के सूक्तों में और फिर
 ४. वर्णन है, जिसका आरम्भ 'उषा घोडे का सिर है,' (उष
 ५. १) शर्मिष्ठा देवयता मनांसि चक्षूंषीव सूर्ये सं चरन्ति ।
 ६. १) गुवाते उषसा विरूपे तेने

देवानां चक्षुः सुभगा वहन्ती, श्वेतं नयन्ती
सुदृशीकमश्मम् । उषा अदृशी रश्मिभिर्व्यक्ता,
चित्रमघा विश्वमनु प्रभता ॥

उषाका वर्णन किया गया है कि यह 'गोमती अश्ववती वीरवती' है और क्योंकि उसके साथ लगाये गये 'गोमती' और 'अश्ववती' ये दो विशेषण प्रतीकरूप हैं और इन का अर्थ यह नहीं है कि, यह 'भौतिक गौओं और भौतिक घोड़ोंवाली' है, बल्कि यह अर्थ है कि यह ज्ञान की ज्योति से जगमगानेवाली और शक्ति की तोम्रतासे युक्त है, तो 'वीरवती' का अर्थ भी यह नहीं हो सकता कि यह 'मनुष्योंवाली' है या शूर वीरों, नौकरचाकरों या पुत्रों से युक्त है, बल्कि इस की अपेक्षा इस का अर्थ यह होगा कि, यह वित्तशाली शक्तियों से संयुक्त है अथवा यह शब्द बिल्कुल इसी अर्थ में नहीं, तो

प्रतीकरूप ही है, यह पूर्णतया स्पष्ट हो जाता है। दीर्घतमस् के सूक्तों में जो कि यज्ञ के घोड़े के सम्बन्ध में हैं, अध्वर-
विकारण विषयक भिन्न भिन्न ऋषियों के सूक्तों में और फिर बृहदारण्यक उपनिषद् के आरम्भ में जहाँ यह जटिल आलङ्कारिक
वर्णन है, जिसका आरम्भ 'उषा घोड़े का सिर है,' (उषा वा अध्वस्य मेध्यस्य शिरः) इस वाक्य से होता है।

*
 कर्त्तुं भुवाते उपसा विरूपे श्वेतो वाजी जायते अग्रे अहाम् ॥ (कृ० ५।१।४)

कमसे कम किसी ऐसे ही और प्रतीकरूप अर्थ में ही प्रयुक्त हुआ है। यह बात (ऋ० १।११३।१८) में बिलकुल स्पष्ट हो जाती है। ' या गोमतीरुषसः सर्ववीरा ... ता अश्वदा अश्ववत् सोम सुत्वा । ' इस का यह अर्थ है कि, ' ये उषाएं जिन में कि भौतिक गायें हैं और सब मनुष्य या सब नौकर-चाकर हैं, सोम अर्पित कर के मनुष्य उन का भौतिक घोड़ों को देनेवाली के रूप में उपभोग करता है । ' उषा देवी यहाँ आन्तरिक उषा है, जो कि मनुष्य के लिए उस की वृहत्तम सत्ता की विविध पूर्णताओं को, शक्ति को, चेतना को और प्रसन्नता को लाती है; यह अपनी ज्योतियों से जगमग है, सब संभव शक्तियों और बलों से युक्त है, यह मनुष्य को जीवन-शक्तिका पूर्ण बल प्रदान करती है, जिस से कि यह उस वृहत्तर सत्ता के असीम आनन्द का स्वाद ले सके ।

अब हम अधिक देर तक ' गोमद् अश्ववद् वीरवद् राधः ' को भौतिक अर्थों में नहीं ले सकते; वेदकी भाषा ही हमें इस से बिलकुल भिन्न तथ्य का निर्देश कर रही है। इस कारण देवोंद्वारा वी गई इस सम्पत्ति के अन्य अंगों को भी हमें इसी की तरह अवश्यमेव आध्यात्मिक अर्थों में ही लेना चाहिए; सन्तान, सुवर्ण, रथ ये प्रतीकरूप ही हैं; ' श्रवः ' कीर्ति या भोजन नहीं है, बल्कि इस में आध्यात्मिक अर्थ अन्तर्हित है

और इस का अभिप्राय है, वह उच्चतर दिव्य ज्ञान जो कि इंद्रियों या बुद्धि का विषय नहीं है, बल्कि जो सत्य की दिव्य श्रुति है और सत्य के दिव्य दर्शन से प्राप्त होता है; ' रवि दीर्घश्रुतमम् ' रवि ' श्रवस्युम् ' सत्ता की यह सम्पन्न अवस्था है, यह आध्यात्मिक समृद्धि से युक्त वैभव है, जो कि दिव्य ज्ञान की ओर प्रवृत्त होता है (श्रवस्यु) और जिस में उस दिव्य शब्द के कम्पनों को सुनने के लिये सुदीर्घ, दूर तक फैली श्रवणशक्ति है, दिव्य शब्द हमारे पास असीम के प्रदेशों (दिशः) से आता है। इस प्रकार उषाका यह उज्ज्वल अलंकार हमें वेदसम्बन्धी उन सब भौतिक, कर्म-काण्डिक, अज्ञानमूलक भ्रांतियों से मुक्त कर देता है, जिनमें कि यदि हम फंसे रहते तो वे हमें असंगति और अस्पष्टता की रात्रि में ठोकड़ों पर ठोकड़ें खिलाती हुई एक से दूसरे अन्धकूपमें ही गिराती रहतीं, वह हमारे लिए बन्द द्वारों को खोल देती है और वैदिक ज्ञान हृदय के अन्दर हमारा प्रवेश करा देती है ।

उषा सूक्तों का यह आध्यात्मिक रहस्य श्री योगी भरविन्द जी की खोजसे प्राप्त हुआ है जिसे पाठकोंको मननपूर्वक अपनाना योग्य है ।

(३)

उषादेवताका वर्णन

उषा देवताका वर्णन कई विभिन्न रीतियोंसे भी देखने योग्य है। उषा के सूक्तों में काव्य का आलंकारिक वर्णन तो बड़ा ही मनोरंजक और हृदयंगम है हि परंतु इसकी अन्यभी कुछ विशेषताएं हैं जो देखने योग्य हैं ।

सूर्योदयके पूर्व उषाएँ

(वसिष्ठो मैत्रावरुणिः)

तानीदहानि बहुलान्वासन् या प्राचीनमुदिता सूर्यस्य ।

यतः परि जार इव आचरन्ती उषः ददक्षे न पुनर्यतीव ॥

(१४९) ऋ. ७।७६।३

' (सूर्यस्य प्राचीनं या उदिता) सूर्यके पूर्व जो उदय हुए थे, (तानि अहानि बहुलानि इत् आसन्) ऐसे वे उपःकाल निःसन्देह बहुत ही थे । '

इस मंत्र में ' सूर्योदयके पूर्व अनेक उपःकाल अथवा (अहानि) अनेक दिन व्यतीत हुए ' ऐसा वर्णन किया है। क्या

कभी हमें इसका अनुभव है ? नहीं, हमें अपने देशमें तो एक उपःकाल जानने के बादही उसी दिन प्रत्यक्ष सूर्य उगता हुआ दिखाई देता है। सूर्य उदयके पूर्व बहुत दिन व्यतीत हुए और बहुत दिन व्यतीत होने तक सूर्य का उदय नहीं हुआ, ऐसा इस देशमें कभी नहीं होता है। ये बहुत दिन उपःकाल के ही हैं, जैसी उषा लाल वर्णके प्रकाशसे युक्त होती है, वैसी ही ये दिन हैं। सूर्यप्रकाशवाले ये दिन नहीं हैं। क्यों कि इस सूक्तकी देवता उषा है और इस मंत्रमें भी ' उपः ' संवोधन करके ही वर्णन है, देखिये इसी मंत्रका उत्तरभाग-

' हे उषा देवी ! तू जारके समान आचरण करनेवाली दीखती है, संन्यासिनी यती स्त्रीके समान तू दीखती नहीं । ' ऐसा उषाको संवोधन करके कहा है। यार की प्रतीक्षा करती हुई जैसी कोई स्त्री रहती है, वह अपने प्रियकी प्रतीक्षा करती रहती है, वह पति न आया तो भी आतुरताके साथ

उषा देवता ।

ज्ञान जो कि
सत्य की दिव्य
ता है; 'रश्मि'
सम्पन्न अवस्था
, जो कि दिव्य
र जिस में उषा
दीर्घ, दूर तक
गास असीम के
र उषाका यह
भौतिक, कर्म-
देता है, जिनमें
और अस्पष्टता
एक से दूसरे
बन्द द्वारों को
अन्दर हमारा

योगी अरविद
ओंको मननपूर्वक
देशमें तो एक
पूर्य उगता हुआ
दिन व्यतीत हुए
दय नहीं हुआ,
दिन उषाका कहे
होती है, वैधेही
। क्यों कि इस
उषा: 'धैर्यवत्

चरण करनेवाली
दीखती नहीं ।'
प्रतीक्षा करती
प्रियकी प्रतीक्षा
आतुरताके साथ

ह जो प्रतीक्षा करतीही रहती है, परंतु अपने प्रियपर क्रोध
हके संन्यासिनी बन कर उसको नहीं छोड़ती, तद्वत् यह उषा है ।
यहां सूर्य उदय होनेतक अनेक दिन उषा:काल ही उषा:-
काल रहनेका स्पष्ट वर्णन है । हमारे देशमें घण्टाभर तक उषा:-
काल रहता है, पश्चात् सूर्यका उदय होता है । अतः यह
काल यहां के उषा:कालपर घटता ही नहीं । यहां तो सूर्योदयके
से बहुत उषा:काल आते नहीं, प्रतिदिन उषा सूर्य की प्रतीक्षा
करती रहती है, पर सूर्य देव उसके पास नहीं आते, ऐसा
काल नहीं होता, अतः उषा अपने प्रियकी प्रतीक्षा बहुत दिन
करती रही, पर सूर्य देव नहीं आये तथापि वह उषा यती
(संन्यासिनी) बनी नहीं, अपने प्रिय पर पूर्ववत् प्रेमही
करती रही, यह वर्णन यहांके उषा:कालका नहीं हो सकता ।
जिस देशमें सूर्योदयके पूर्व अनेक दिन उषा:काल रहता होगा,
सो पर ऐसी कल्पना कवि कर सकता है । और वहीं यह
कल्पना प्रत्यक्ष सृष्टीमें दीख सकती है । जहां घण्टाभर ही
काल रहता होगा, वहां सूर्योदय के पूर्व बहुत दिन उषा:-
काल रहा, ऐसा वर्णन नहीं हो सकता ।

यहां 'बहुलानि अहानि' पद है, अनेक दिन व्यतीत
होने पश्चात् वहां सूर्यदेवका दर्शन होता है । यहां दिनका अर्थ
प्रतीक्षा अपने इर्दगिर्द भ्रमणका काल है । आकाशमें जो तारका
खण्ड दीखता है वह भ्रमण करतासा दीखता है । उसके २४
घण्टे परिभ्रमणसे दिनकी कल्पना होती है । ऐसे बहुत दिन
व्यतीत होनेतक यह उषा सूर्यकी प्रतीक्षा करती रहती है, और
पश्चात् सूर्य देव आते हैं और उषा सूर्यदेवके साथ संलग्न होती है ।
यहां 'बहुलानि अहानि' पद है । इस वर्णनसे कितने
दिन उषा योग्य हैं, इसका भी यहां विचार करना चाहिये । यदि
२० दिन व्यतीत हो जायें तो एक महिना व्यतीत हुआ ऐसा
कहे, इसलिये जिस कारण यहां 'अहानि' अर्थात् 'दिन'
व्यतीत हुए ऐसा कहा है, उस कारण हम कह सकते हैं
कि, तीस दिनोंसे कम ही ये उषा:काल होंगे । यदि आठ दस
दिनक ही यह उषा:काल रहता होगा, तो उसके लिये 'बहुत
दिन' ऐसा प्रयोग कोई नहीं करेगा, क्योंकि सात संख्यातक
से भी नहीं और दस दिन तक भी नहीं अर्थात् बीससे कुछ
अधिक दिन ऐसा यह उषाका अवधि 'बहुलानि अहानि'
कहे केना योग्य है ।

संस्कृत व्याकरणके अनुसार 'बहुलानि अहानि' (बहुत
दिन) का अर्थ कमसे कम तीन दिन और अधिकसे अधिक
दिन भी होंगे उतने दिन बोधित होंगे । अतः व्याकरण

हमारी इतनीहि यहां सहायता करता है और कहता है कि इन
पदोंसे कमसे कम तीन दिनोंका अवधि निर्धारित हो सकता
है, ज्यादा कितने दिन ले सकते हैं यह व्याकरण नहीं कह सकता ।
पर केवल तीन ही दिनोंके लिये 'बहुतही दिन' ऐसा कोई
भी नहीं कहता । इसलिये यह अवधि निश्चयसे तीन दिनोंसे
अधिक है इसमें संदेह नहीं, अनेक उषाओंका वर्णन वेदमंत्रोंमें
भी है, अतः उषाका बहुवचनमें प्रयोग अनेक वेदमंत्रोंमें दिखाई
देता है—

स्पर्हा वसूनि तमसाऽपगूळ्हा

आविष्कृष्वन्त्युषसो विभातीः॥ (६४; ऋ १।२३।६)

'स्पृहणीय पदार्थ जो गूढ अन्धकारसे ढंके थे, उन सबको ये
अनेक (विभातीः उषसः आविष्कृष्वन्ति) प्रकाशनेवाली उषायें
प्रकट कर रही हैं ।' अर्थात् ये अनेक उषायें आकर सूर्य आनेके
पूर्वही विश्वान्तर्गत नाना पदार्थोंको हमारे सामने प्रकट करती हैं ।
इसी सूक्तका अगला मंत्र इस मंत्रका आशय अधिक स्पष्ट कर
रहा है—

परा च यन्ति पुनरा च यन्ति

भद्रा नाम वहमाना उषासः । (७०; ऋ० १।१२३।१२)

'ये (उषासः) उषायें (भद्रा नाम वहमानाः) कल्याणकारक
यशका धारण करती हुई (परा यन्ति) जाती हैं और (पुनः च
आयन्ति) फिर वापस आती हैं ।' उषा:काल चला गयासा
दीखता है और उसी समय फिर नया शुरू होने लगता है ।
वह वर्णन बड़ा महत्त्व रखनेवाला वर्णन है । हमारे देशमें एक
बार उषा:काल गया तो दिन आता है, दिनके बाद सायंकाल
और उसके बाद रात्री व्यतीत होती है, इसतरह २४ घण्टे
व्यतीत होते हैं, तत्पश्चात् दूसरी उषा आती है । अतः यह वर्णन
यहांका नहीं है जिस भूभाग पर एकवार उषा गयी तो उसी
समय पुनः दूसरी उषा:काल आनेकी संभावना हो, वही यह
वर्णन प्रत्यक्ष दीख सकता है, और वहीं सूर्योदयके पूर्व अनेक
उषाओंका होना भी संभव हो सकता है । ऐसी कई उषायें
लगातार आती हैं और पश्चात् सूर्य देव उगते हैं, वही कवि
कह सकता है कि, 'एक उषा गयी और फिरसे दूसरी उषा
पुनः आगयी ।' इसी तरह और भी वर्णन देखिये—

क स्विदासां कतमा पुराणी ? (९६; ऋ. ४।५।१।६)

'इस सब उषाओंमें कौनसी भला उषा पुरानी है ?' यह
प्रश्न तब हो सकता है कि, जब अनेक उषा:काल साथसाथ
आते हों । हमारे भारतवर्षमें तो एकही उषा:काल रहता है इस
लिये इसमें पुराना और नया ऐसा भेद नहीं हो सकता, परंतु

न्यून प्रकाशवाला और अधिक प्रकाशवाला ऐसे अनेक क्रमपूर्वक उषःकाल जहां होंगे, वहीं एक उषःकाल पुराना और दूसरा नया यह भाषा संभवनीय हो सकती है। इसीतरह और भी—

ता घा ता भद्रा उषसः पुरासुः । (८०; ऋ. ४।५।१७)

‘ वे निःसंदेह वे कल्याणकारक उषःकाल (पुरा आसुः) पहिले हो चुके थे । ’ यहां अनेक संख्यामें कुछ उषःकाल पहिले हो चुके ऐसा कहा है । अनेक संख्यामें उषःकालोंका होना यह जहां संभवनीय होगा, वहीं यह वर्णन हो सकता है । ये सब मंत्र किसी देशमें प्रत्यक्ष देखनेवाले दृश्यका वर्णन कर रहे हैं । उषा दृश्यमान है, हमारे देशमें प्रतिदिन आती है, परंतु यहां अनेक उषाएं सूर्योदयके पूर्व नहीं आती और नहीं इनमें एक प्राचीन और दूसरी अर्वाचीन कही जा सकती है । और जो वर्णन इन उषा सूक्तोंमें है, वहां अनेक उषाएं सूर्योदयके पूर्व होती हैं, और ये उषाएं एकके पीछे दूसरी ऐसी क्रमपूर्वक आती हैं, देखिये—

क्रमसे उषाओंका आना

आसां पूर्वासां अहसु स्वसृणां

अपरा पूर्वा अभ्येति पश्चात् ।

ताः प्रतनवन्नव्यसीः नूनं अस्मे

रेवदुच्छन्तु सुदिना उषासः ॥ (८०; ऋ. १।१२४।९)

‘ (आसां पूर्वासां स्वसृणां अहसु) इन पहिले बहिनरूपी अनेक उषाओंके दिनोंमें (पूर्वा पश्चात् अपरा अभ्येति) पहिली उषाके पश्चात् ही दूसरी उषा उसके पीछेसेही लगातार आती रहती है । (ताः) वे (नव्यसीः उषासः) नयी उषाएं (प्रतनवत्) पुराणी उषाओंके समानही निश्चय पूर्वक (अस्मे) हमें (रेवत् सुदिना उच्छन्तु) ऐश्वर्य युक्त उत्तम दिन दें । ’

इस मन्त्रमें ‘ पूर्वा पश्चात् अपरा अभि एति ’ यह वाक्य बड़े महत्वका है इसका आशय ऐसा है कि— ‘ पूर्व उषाके पश्चात् ही, उस उषाके पीछेसेही दूसरी उषा सब प्रकारसे आती है । ’ एक उषा समाप्त हुई तो दूसरी उषा शुरू होती है । यह दृश्य इस देशका नहीं है ।

यहां ‘ उषा ’ पद अनेक वचनमें है, इससे अनेक उषाओं का होना सिद्ध है, अनेक उषाएं होनेके कारण उनको इस मन्त्रने (स्वसृः) बहिनें कहा है । एक पिताकी अनेक पुत्रियाँ आपसमें बहिनें होती हैं । सूर्य आनेवाला है, उसके कारण उत्पन्न होनेवाली अनेक उषाएं आपसमें बहिनें कहीं जा सकती हैं । बहिन कहनेसे भी एक सूर्य देवके कारण उत्पन्न होनेवाली सूर्यकी अनेक पुत्रियाँ, ये उषाएँ हैं, अतः वे आपसमें बहिनें

हैं यह सिद्ध है । इससे सूर्योदयके पूर्व अनेक उषाओंका होना सिद्ध हुआ है ।

उषाओंका क्रमसे और एकके पीछे दूसरीका आना सिद्ध कर रहा है कि ऐसा दृश्य कितनी दूसरे देशमें होगा, इस भारत जैसे तो ऐसा दृश्य कदापि नहीं होता ।

पहिले दिनको जाननेवाली उषा

जानत्यहः प्रथमस्य नाम

शुक्रा कृष्णादजनिष्ट श्वितीची (६७; ऋ. १।१२३।५)

‘ यह उषा (प्रथमस्य अहः जानती) पहिले दिनका नाम जानती है, और (शुक्रा श्वितीची) यह प्रकाश देनेवाली तेजस्विनी उषा (कृष्णात् अजनिष्ट) कृष्ण वर्ण अन्धकारसे उत्पन्न हुई । ’

हमारे देशमें पहिले दिनकी उषा ऐसा कोई भेद नहीं है, क्योंकि सभी उषाएं एकसी होती हैं, पर जहां जिस प्रदेशमें वे अन्धकारके पश्चात् पहिलीही उषःकाल शुरू होता है और वह उषःकाल अनेक दिनोंतक लगातार रहता है वहीं यह संभव हो सकता है कि यह उषा प्रथम दिनकी है और यह दूसरे दिनकी है, पर वे आपसमें बहिनें हैं और एकके पीछे एक आती रहती हैं । इस मंत्र में प्रथम दिनकी उषा (प्रथमस्य अहः उषा) कहीं है, यह वर्णन विशेष महत्व का है । इसी तरह के वक्ता के ये मन्त्र हैं—

१. शश्वतीनां विभातीनां प्रथमा उषा व्यश्नैत् ।

(५३; ऋ. १।१३१।५)

२. शश्वतीनां आयतीनां प्रथमा उषा व्यश्नैत् ।

(७३; ऋ. १।१२४।२)

३. परायतीनां अन्वेति पाथः

आयतीनां प्रथमा शश्वतीनाम् । (४६; ऋ. १।१३१।८)

४. उषा अगन् प्रथमा पूर्वं हूतौ । (६०; ऋ. १।१३१।८)

५. उषः सूनृते प्रथमा जरस्व । (६३; ऋ. १।१२३।२)

६. उषः सूजाते प्रथमा जरस्व । (१५२; ऋ. ७।७६।१)

‘ (१) शश्वत् चमकनेवाली उषाओंमें यह पहिली उषा प्रकाशित हुई है । (२) शश्वत् आनेवाली उषाओंमें पहिली उषा उदित हुई है (३) जानेवाली उषाओंके मार्गका अनुसरण करनेवाली और आनेवाली उषाओंमें पहिली यह उषा है । (४) यह पहिली उषा आगई है । (५-६) देवता निर्माण हुई उषा । तू पहिली उषा है । ’

(१,३) कुत्स आगिरसः, (२,४-५) कक्षीवान् देवतमन्त्र

[उषा दैवता ।

अनेक उषाओंका

आना सिद्ध

इस भारत वर्षमें

उषा

क्र. १११२३१५)

हिले दिनका नाम

रनेवाली तेजस्विनी

रसे उत्पन्न हुई ।

काई भेद नहीं है,

जिस प्रदेशमें के

होता है और वह

वहीं यह संभव हो

यह दूसरे दिनकी

एक आती रहती

अस्य अहः उषा)

सी तरह के वर्णन

व्यवस्थित ।

क्र. १११३१५)

क्र. १११३१५)

क्र. १११३१५)

क्र. १११३१५)

क्र. १११३१५)

क्र. १११३१५)

क्र. १११३१५)

क्र. १११३१५)

(६) वसिष्ठ के देखे ये मंत्र हैं । इन में यह पहिली उषा है ।
 वहाँ पहिली उषा करके उसमें कोई विशेषता नहीं होती ।
 म वहाँ बड़े प्रदीर्घ अन्धेरेके पश्चात् वर्षमें प्रथमही उषाके
 प्रकाशका दर्शन होता होगा, वहाँका आनन्द इन मंत्रोंमें वर्णित
 हुआ दीखता है ।

तीस बहिनें

त्रिंशत्सवार उपयन्ति निष्कृतं । (तै. सं. ४।३।२।६)
 'तीस बहिनें नियत स्थानपर चलती हैं ।' बहिनें उषायें
 हैं जो ऋग्वेदमें कहा था, वे तीस बहिनें हैं ऐसा इस मंत्रने
 कहा है । तीस ही उषाएं क्यों हैं ? क्योंकि छः मास की रात्री
 के पश्चात् तीस उषाएं आकर ही सूर्यका उदय होता है ।

भयानक रात्री

न यस्याः पारं ददृशे न योयुवद्विश्वमस्यां नि विशते
 यदेजति । । अरिष्टासस्त उर्वि तमस्वति रात्रि पार-
 मशीमहि भद्रे पारमशीमहि ॥ (अथर्व. ११।४।७२)

('न यस्याः पारं ददृशे) जिस रात्रीका पार अर्थात् समस्त
 समय हम देखते नहीं, इतनी यह विशाल रात्री है ।

('न योयुवत्) इस रात्री में भिन्नता भी नहीं दीखती,
 छः घण्टी अखण्ड यह रात्री रहती है (विश्व अस्यां निविशते)

जो कुछ इस रात्री में प्रविष्ट होता है (यत् एजति) जो कुछ
 होता है वह सब भी इस रात्री में ही रहता है । (अ-रिष्टासः)

र विष्ट न होते हुए, हे (उर्वि तमस्वति रात्रि) बड़ी
 कबेरी रात्री ! तेरे पार (अशीमहि) हम होंगे । हे कल्याणि

रात्री ! तेरे पार हम होंगे । '

य विशेष दीर्घकालीन रात्रीका ही वर्णन दीखता है । यह
 रात्री १२ घण्टोंकी रात्री नहीं है, यह छः मासकी रात्री है

जो संवत्सर जैसी है इसका वर्णन देखिये—

संवत्सरस्य प्रतिमां यां त्वा रात्र्युपास्महे ।
 सा न वायुधमतीं प्रजां रायस्पोषेण सं सृज ॥ ३ ॥

(' यां संवत्सरस्य प्रतिमां रात्रिं त्वां) संवत्सरकी प्रतिमा-
 की रात्रीकी (उपास्महे) हम उपासना करते हैं । (सा नः)

हमारी (आयुधमतीं प्रजां) दीर्घायुवाली प्रजाको
 (रायः पोषेण संसृज) धन और पुष्टिके साथ पूर्ण करो । '

संवत्सरस्य प्रतिमा रात्री= ये पद निःसंदेह वर्षकी
 प्रतिमाको अर्थात् अर्धसंवत्सर तक चलनेवाली रात्रीको बता

ते हैं । नही तो ' संवत्सरकी प्रतिमा रात्री ' का कोई विशेष

ऐसे बड़े अन्धकारके पार होनेको ही अन्धेरेसे पार होना
 कहते हैं—

अन्धकारका पार होना

बड़े अन्धकारका पार होना भी इन उषा सूक्तोंमें दीखता है—

अतारिष्म तमसस्पां अस्य

उषा उच्छन्ती वयुना कृणोति । (२९; ऋ. १।९।२।६)

' (अस्य तमसः पारं अतारिष्म) इस अन्धकारको हमने
 पार किया, अब यह (उषा उच्छन्ती) उषा अपना प्रकाश
 करती हुई अपने उद्देश प्रकट करती है । '

इस मंत्रमें (अस्य तमसः पारं अतारिष्म) इस अन्धकारके
 पार हम हो चुके, यह वाक्य प्रगाढ़ और दीर्घकालके
 अन्धेरे की सूचना दे रहा है । प्रतिरात्रीके अन्धकारके विषयमें
 ऐसा कोई नहीं कहेगा, क्योंकि हमें पता है कि छः सात बजे
 यह अन्धेरा दूर होनेका निश्चय है । यदि अन्धेरा ऐसा हो कि
 जो कई महिने रहनेवाला हो, तो उस अन्धकारकी समाप्तिपर
 ऐसा वाक्य बोला जाना सर्वथा संभव है कि ' इस दुस्तर अन्ध-
 कारसे अब हम पार हो चुके हैं । ' इतने मंत्रोंका आशय मनन
 पूर्वक देखनेसे हमें ऐसा प्रतीत होता है कि बड़े अन्धकारके
 व्यतीत होनेपर कई उषायें लगातार आतीं, उनमें पहिली और
 अन्तिम ऐसी भी उषाएं रहती हैं, ऐसे अनेक उषाकाल व्यतीत
 होनेपर दिनका प्रारंभ होता है, जहां ऐसा होता हो वहाँका यह
 वर्णन है ।

हमें विदित है कि अपनीही पृथ्वीपर ऐसे प्रदेश हैं
 कि जहां करीब पांच महिनोकी प्रचण्ड रात्री रहती है,
 इस निबिड गाढ़ अंधेरी प्रचण्ड रात्रीके पश्चात् करीब तीस
 दिनका उषाकाल और प्रभात होता है, पश्चात् करीब पांच
 महिनेका दिन होता है और पश्चात् वैसा ही मासका सायं-
 काल होता है । दिन और रात्रीका प्रमाण न्यूनाधिक भी कई
 प्रदेशोंमें रहता है । नावें खीडन के प्रदेशोंमें इस तरहके प्रचण्ड
 दिन रात आज भी होते हैं । महाभारतकारने पर्वतका
 वर्णन दिया है वहाँ छः महिनोका दिन और वैसी ही प्रचण्ड
 रात्री होनेका वर्णन है । अगस्ति ऋषि वहाँ गये थे ऐसा भी
 महाभारतमें लिखा है । देखो—

एनं त्वहरहर्मेरं सूर्याचन्द्रमसौ ध्रुवम् ।

प्रदक्षिणमुपावृत्य कुरुतः कुरुनन्दन ॥

उज्योतीषि चाप्यशेषेण सर्वाण्यनघ सर्वतः ।

परियन्ति महाराज गिरिराजं प्रदक्षिणम् ॥

(म. भा. वन. १६३।३७-३८)

स्वतेजसा तस्य नगोत्तमस्य महौषधीनां च तथा प्रभावात् ।
विबिक्तभावो न बभूव कच्चिदहोनिशानां पुरुषप्रवीर ॥
बभूव रात्रिर्दिवसश्च तेषां संवत्सरेणैव समानरूपः ।

म. भा. वन. १६४।११, १३

देवे राज्यहनी वर्षं प्रविभागस्तयोः पुनः ।

अहस्तत्रोदगयनं रात्रिः स्यादक्षिणायनम् (मनु. १।६७)
एकं वा एतद्देवानां अहः यत्संवत्सरः । (तै. ब्रा. ३।९।२२।१)
' मेरुपर्वत है, उसकी प्रदक्षिणा सूर्य, चन्द्र, तथा सब नक्षत्र करते हैं । उस मेरुपर्वत पर दिन और रात्रीका ऐसा भेद नहीं (जैसा यहां हमारे देशमें प्रतिदिन दिखाई देता है ।) वहां दिन और रात्री वर्ष जैसी होती है (अर्थात् वहां छः मासोंकी रात्र और छः मासोंका दिन होता है, इसमें उपःकाल और सायंकालके संधिसमय अन्तर्भूत हुए हैं ।) यह महाभारतका वर्णन है ।

मनुस्मृतिमें कहा है कि उत्तरायण दिवस है और दक्षिणायन रात्री है । (अर्थात् छः मासोंका उत्तरायण दिन है और छः मासोंका दक्षिणायन रात्री है ।)

इस तरह मेरुपर्वतका वर्णन हमारे ग्रंथोंमें है । मेरुपर्वतही उत्तरीय ध्रुव है । आज भी वहां छः मासोंकी प्रचण्ड घन अन्ध-कारमयी रात्री है और छः मासोंका प्रचण्ड दिन है । उत्तरीय ध्रुवके नीचे दक्षिण दिशामें नावें और स्वीदन देश हैं, इसलिये वहां यह प्रमाण थोडा न्यूनानधिक रहता है । उत्तरीय ध्रुवमें सूर्य चन्द्र तथा नक्षत्र चक्रोंके समान घूमते हुए नजर आते हैं, हमारे देशमें जैसे सिरपर आकर अस्त होनेका दृश्य है वैसा वहां नहीं है, वहां किसी देवताको प्रदक्षिणा करनेके समान ये सब सूर्य चन्द्र और नक्षत्र घूमते हैं और मेरुको प्रदक्षिणा करते दीखते हैं ।

संक्षेपसे यहां ५ महिनोंकी निबिड गाढ अन्धकारवाली प्रचण्ड रात्री होती है, इसके बाद पहिली उषा चमकती है, इस कारण वह (प्रथम उषा) पहिली उषा कही जाती है, इसके नंतर करीब सत्ताईस उषाएं क्रमपूर्वक एकके पीछे दूसरी ऐसी आती है, अतः ये परस्पर बहिन होती हैं, पश्चात् सूर्य देव प्रकाशते हैं । ये करीब ५ महिनें प्रकाशते ही रहते हैं, तथापि कभी ये मध्याह्नके समय जैसे आकाशमध्यमें नहीं चढते । नौ वजने जितने ऊपर चढते हैं यह अधिक से अधिक ऊंचाई होती है । जिस किसी ऊंचाई पर हो दिनभर उसी ऊंचाईपर रहते हुए ये ध्रुवपर्वत की प्रदक्षिणा करते हैं, पश्चात् सायं समय भी करीब उपःकाल जितनाही होता है और पश्चात् रात्री होती है । इस तरह छः मास सूर्य दर्शन नहीं और छः मास

गाढ अन्धकार नहीं ऐसी वर्षकी अवधी काटी जाती है । नक्षत्रोंके एक परिभ्रमणसे एक दिन समझा जाता है, तथा वहां विद्युत्प्रकाश इस छः मासकी रात्रीमें कुछ रोशनी करता रहता है । यह वहां की परिस्थिति ध्यानमें धारण करके पूर्वोक्त मंत्रोंके निम्नलिखित वाक्य पुनः देखिये—

१. अस्य तमसः पारं अतारिष्म । (२९; ऋ. १।९२।६) = अब हम इस गाढ निबिड और प्रचंड अन्धकारके पार हो चुके ।

२. कृष्णात् शुक्रा प्रथमस्य अह्नः (उषा) अजनिष्ट । (६७; ऋ. १।१२३।३) = गाढ अन्धेरी रात्रीके पश्चात् प्रथम दिनकी यह पहिली उषा अब प्रकाशित हुई है ।

३. विभातीनां प्रथमा उषा व्यद्यौत् । (७३; ऋ. १।१२४।२) = प्रकाशित होनेवालीयोंमें यह पहिली उषा प्रकाशित हुई ।

४. आसां स्वसृणां पूर्वा पश्चात् अपरा अभ्येति । (८०; ऋ. १।१२४।९) = ये बहिनें जैसी अनेक उषाएं एकके पीछे दूसरी क्रमसे आती हैं ।

५. भद्रा उषसः पुरा आसुः । (८०; ऋ. ४।५।१७) = कृत्यम कारक अनेक उषाएं (सूर्य उदयके) पूर्व प्रकाशित हो चुकी हैं ।

६. उषसः परा यन्ति, पुनः आयन्ति । (७०; ऋ. १।१२३।१२) = इन उषाओंमें कई जाती हैं और नवीं आती हैं ।

७. उषसः विभातीः (६४; ऋ. १।१२३।६) = अनेक उषायें (क्रमशः आकर) प्रकाशती हैं ।

८. सूर्यस्य प्राचीनं उदिता अहानि बहुलानि आसन् । (१४९; ऋ. ७।७६।३) = सूर्य उदयके पूर्व उदय को प्राप्त होनेवाली उषाएं अनेक हैं ।

इस तरह किसी ऐसे प्रदेशमें मंत्रों के ये पद अत्यंत सार्थक दीखते हैं । पाठक इसका विचार करें ।

इतना होनेपर भी उपःकाल जाग्रतिका सूचक है । जब जाग्रति आध्यात्मिक मानना उचित है । क्योंकि कि आत्मिक जाग्रति में सब अन्य जाग्रतियां समाविष्ट होती हैं । वह जाग्रति इन मंत्रों में पाठक देख सकते हैं और उससे आध्यात्मिक उन्नति के मार्गका बोध भी प्राप्त कर सकते हैं । यह आध्यात्मिक उन्नति वेदकी मुख्य उन्नति है इस की सिद्धि करनेके आवश्यकता बिलकुल नहीं है । क्योंकि यह बात सबको स्वीकृत होती है । इस तरह उषाके हृदयंगम सूक्तोंका विचार पाठक कर सकते हैं ।



दैवत-संहिता ।

(ऋग्यजुःसामाथर्वणां संहितानां सर्वान् मन्त्रान् दैवतानुसारेण संगृह्य निर्मिता ।)

८ उपादेवता ।

॥ १ ॥ (ऋ० १।३०।२०-२९)

(१-३) शुनःशेष आजीगर्तिः । गायत्री ।

कस्त उपः कधप्रिये भुजे मर्तो अमर्त्ये । कं नक्षसे विभावरी	२०
व्यंहिते अमन्मह्या ऽऽन्तादा पराकात् । अश्वे न चित्रे अरुषि	२१
त्वं त्येभिरा गहि वाजैभिर्दुहितर्दिवः । अस्मे रयि नि धारय	२२

॥ २ ॥ (ऋ० १।४८।१-१६)

(४-२३) प्रस्कण्वः काण्वः । प्रगाथः = (विषमा बृहती+समा सतोबृहती ।)

सह वामेन न उपो व्युच्छा दुहितर्दिवः ।	
सह घुम्नेन बृहता विभावरी राया देवि दास्वती	१
अथावतीगोमतीविश्वसुविदो भूरि चयवन्त वस्तवे ।	
उदीरय प्रति मा सूनृता उप—श्रोदु राधो मघोनाम्	२
उवासोषा उच्छाच्च नु देवी जीरा रथानाम् ।	
ये अस्या आचरणेषु दध्निरे समुद्रे न श्रवस्यवः	३
उपो ये ते प्र यामेषु युञ्जते मनो दानाय सूरयः ।	
अत्राह तत् कण्व एषां कण्वतमो नाम गृणाति नृणाम्	४
आ घा योषेव सूनर्यु—पा याति प्रभुञ्जती ।	
जुरयन्ती वृजनं पददीयत उत्पातयति पश्विणः	५

४ दै० [उपा]

वि या सुजति समनं व्यर्थिनः पदं न वेत्योदंती ।
 वयो नकिष्टे पस्निवासं आसते व्युष्टौ वाजिनीवति ६
 एषायुक्त परावतः सूर्यस्योदयनादधि ।
 शतं रथेभिः सुभगोषा इयं वि यात्यभि मानुषान् ७ १०
 विश्वमस्या नानाम चक्षसे जगज्ज्योतिष्कृणोति सूनरी ।
 अप द्वेषो मघोनीं दुहिता दिव उषा उच्छदप सिधः ८
 उष आ भहि भानुना चन्द्रेण दुहितर्दिवः ।
 आवहन्ती भूर्यस्मभ्यं सौभगं व्युच्छन्ती दिविष्टिषु ९
 विश्वस्य हि प्राणनं जीवनं त्वे—वि यदुच्छसिं सूनरि ।
 सा नो रथेन बृहता विभावरि श्रुधि चित्रामघे हवम् १०
 उषो वाजं हि वंस्व यश्चित्रो मानुषे जनै ।
 तेना वह सुकृतो अध्वरां उष ये त्वां गृणन्ति वह्नयः ११
 विश्वान् देवां आ वह सोमपीतये ऽन्तरिक्षादुपस्त्वम् ।
 सास्मासु धा गोमदश्चावदुक्थ्य—मुषो वाजं सुवीर्यम् १२ १५
 यस्या रुशन्तो अर्चयः प्रति भद्रा अदक्षत ।
 सा नो रयिं विश्ववारं सुपेशस—मुषा ददातु सुगम्यम् १३
 ये चिद्धि त्वामृषयः पूर्वं ऊतये जुहुरेऽवसे महि ।
 सा नः स्तोमां अभि गृणीहि राधसो—षः शुक्लेण शोचिषां १४
 उषो यदद्य भानुना वि द्वारावृणवो दिवः ।
 प्र नो वच्छतादवृकं पृथु च्छर्दिः प्र देवि गोमतीरिषः १५
 सं नो राया बृहता विश्वपेशसा मिमिक्ष्वा समिळाभिरा ।
 सं द्युम्नेन विश्वतुरोषो महि सं वाजैर्वाजिनीवति १६ १८

॥ ३ ॥ (क्र० १४९।१-४) अनुष्टुप् ।

उषो भद्रेभिरा गहि दिवश्चिद् रोचनादधि ।
 वहन्त्वरुणप्सव उष त्वा सोमिनो गृहम् १
 सुपेशसं सुखं रथं यमध्यस्था उषस्त्वम् ।
 तेना सुश्रवसं जनं प्रावाद्य दुहितर्दिवः २

उपादेवता ।

मन्त्रा ९-२४]

वयश्चित् ते पतत्रिणो द्विपचतुष्पदर्जुनि ।

उषः प्रारन्नृत्तं दिवो अन्तेभ्यस्परि

व्युच्छन्ती हि रश्मिभिर्विश्वमाभासि रोचनम् ।

तां त्वामुर्ष्वसूयवो गीर्भिः कण्वा अहूषत

॥ ४ ॥ (ऋ० १।९२।१-१५)

(२४-३८) गोतमो राहूगणः । १-४ जगती; ५-१२ त्रिष्टुप्; १३-१५ उष्णिक् ।

एता उ त्या उषसः केतुमक्रत पूर्वे अर्धे रजसो भानुमञ्जते ।

निष्कृण्वाना आयुधानीव धृष्णवः प्रति गावोऽरुषीर्यन्ति मातरः

उदपन्नरुणा भानवो बृथा स्वायुजो अरुषीर्गा अयुक्षत ।

अक्रन्नुषासो व्युनानि पूर्वथा रुशन्तं भानुमरुषीरशिश्रयुः

अर्चन्ति नारीरपसो न विष्टिभिः समानेन योजनेना परावतः ।

इषं वहन्तीः सुकृते सुदानवे विश्वेदह यजमानाय सुन्वते

अधि पेशांसि वपते नृत्तूरिवा पौर्युते वक्ष उस्नेव बर्जहम् ।

ज्योतिर्विश्वस्मै भुवनाय कृण्वती गावो न ब्रजं व्युषा आवर्तमः

प्रत्यर्ची रुशदस्या अदर्शि वि तिष्ठते बाधते कृष्णमभ्वम् ।

स्वरं न पेशो विदथेष्वञ्जञ्चित्रं दिवो दुहिता भानुमश्रेत्

अतारिष्म तमसस्पासस्योपा उच्छन्ती व्युना कृणोति ।

श्रिये छन्दो न संयते विभाती सुप्रतीका सौमनसायाजीगः

भास्वती नेत्री सूनृतानां दिवः स्तवे दुहिता गोतमेभिः ।

प्रजावतो नृवतो अश्वबुध्यानुषो गोअग्रौ उप मासि वाजान्

उपस्तमस्यां यशसं सुवीरं दासप्रवर्गं रयिमश्वबुध्यम् ।

सुदंससा श्रवसा या विभासि वाजप्रसूता सुभगे बृहन्तम्

विश्वानि देवी भुवनाभिचक्ष्या प्रतीची चक्षुरुर्विया वि भाति ।

विश्वं जीवं चरसे बोधयन्ती विश्वस्य वाचमविदन्मनायोः

पुनःपुनर्जायमाना पुराणी समानं वर्णमभि शुम्भमाना ।

धृष्टीव कृत्नुर्विज आमिनाना मर्तस्य देवी जरयन्त्यायुः

व्युर्ष्वती दिवो अन्तां अवो ध्यप स्वसारं सनुतर्युयोति ।

शमिन्ती मनुष्या युगानि योषां जारस्य चक्षसा वि भाति

*

पञ्च चित्रा सुभगा प्रधाना सिन्धुर्न क्षोद उर्विया व्यश्नैत् ।
 अर्मिनती दैव्यानि व्रतानि सूर्यस्य चेति रश्मिभिर्दृशाना १२
 उषस्तच्चित्रमा भरा—सभ्यं वाजिनीवति । येन तोकं च तनयं च धामहे १३
 उषो अघेह गोम—त्यश्वावति विभावरी । रेवदस्मे व्युच्छ सूनृतावति १४
 युक्ष्वा हि वाजिनीव—त्यश्वा अघारुणो उषः । अथा नो विश्वा सौभगान्या वह १५

॥ ५ ॥ (क्र० १११३१-२०)

(३९-५८) कुत्स आङ्गिरसः । १ (उत्तरार्धस्य) राजिश्च । त्रिष्टुप् ।
 इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागा—चित्रः प्रकृतो अजनिष्ट विश्वा ।
 यथा प्रसूता सवितुः सवायं एवा रात्र्युपसे योनिमारैक् १
 रुशद्वत्सा रुशती श्वेत्यागा—दारैशु कृष्णा सदनान्यस्याः ।
 समानबन्धू अमृतं अनुची द्यावा वर्णा चरत आमिनाने २ ४०
 समानो अध्वा स्वस्रोतन्त—स्तमन्यान्या चरतो देवशिष्टे ।
 न मैथेते न तस्थतुः सुमेके नक्तोषासा समनसा विरूपे ३
 भास्वती नेत्री सूनृता—मचेति चित्रा वि दुरो न आवः ।
 प्राप्या जगद्वयं नो रायो अख्य—दुषा अजीगर्भुवनानि विश्वा ४
 जिह्मश्रेष्ठे चरितवे मघो—न्याभोगय इष्टये राय उ त्वम् ।
 दुभ्रं पश्यद्वय उर्विया विचक्षं उषा अजीगर्भुवनानि विश्वा ५
 क्षत्राय त्वं श्रवसे त्वं महीया इष्टये त्वमर्थमिव त्वमित्यै ।
 विसदृशा जीविताभिप्रचक्षं उषा अजीगर्भुवनानि विश्वा ६
 एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि व्युच्छन्ती युवतिः शुक्रवासाः ।
 विश्वस्येशाना पार्थिवस्य वस्व उषो अघेह सुभगे व्युच्छ ७ ४५
 परायतीनामन्वेति पार्थ आयतीनां प्रथमा शश्वतीनाम् ।
 व्युच्छन्ती जीवमुदीरय—न्त्युषा मृतं कं च न बोधयन्ती ८
 उषो यदुमिं समिधे चकर्थ वि यदावश्चक्षसा सूर्यस्य ।
 यन्मानुषान् यक्ष्यमाणौ अजीग—स्तद् देवेषु चक्रे भद्रमम्रः ९
 कियात्या यत् समया भवाति या व्युषुर्याश्च नूनं व्युच्छान् ।
 अनु पूर्वाः कृपते वावशाना प्रदीध्याना जोषमन्याभिरेति १०
 इयुष्टे ये पूर्वतरामपश्यन् व्युच्छन्तीमुपसं मर्त्यासः ।
 अस्माभिर्न नु प्रतिचक्ष्यामू—दो ते यन्ति ये अपरीषु पश्यान् ११

[उषादेवता ।

अन्तरा १५-६२]

२२

२३

४

५

४

२

३

४

५

६

७

८

९

१०

११

यावयद् द्वेषा ऋतपा ऋतेजाः सुम्नावरीं सूनृतां ईरयन्ती ।

सुमङ्गलीर्विभ्रती देववीति—मिहाद्योषः श्रेष्ठतमा व्युच्छ

शश्वत् पुरोषा व्युवास देव्य—थो अद्येदं व्यावो मघोनीं ।

अथो व्युच्छादुत्तरां अनु घू—नजरा मृतां चरति स्वधार्मिः

व्यज्जिभिर्दिव आतास्वद्यौ—दप कृष्णां निर्णिजं देव्यावः ।

प्रवोधयन्त्यरुणेभिरश्वै—रोषा याति सुयुजा रथेन

आवहन्ती पोष्या वार्याणि चित्रं केतुं कृणुते चेकिताना ।

ईयुषीणामुपमा शश्वतीनां विभातीनां प्रथमोषा व्यश्वेत्

उदीर्घ्वं जीवो असुर्न आगा—दप प्रागात् तम आ ज्योतिरेति ।

आरैक् पन्थां यातवे सूर्याया—गन्म यत्र प्रतिरन्त आयुः

स्यमना वाच उदियति वह्निः स्तवानो रेभ उषसो विभातीः ।

अद्या तदुच्छ गृणते मघो—न्यस्मे आयुर्नि दिदीहि प्रजावत्

या गोमतीरुषसः सर्ववीरा व्युच्छन्ति दाशुषे मर्त्याय ।

वायोरेव सूनृतानामुदुके ता अश्वदा अश्ववत् सोमसुत्वा

माता देवानामदितेरनीकं यज्ञस्य केतुर्वृहती वि भाहि ।

प्रशस्तिकृद् ब्रह्मणे नो व्युच्छा नो जने जनय विश्ववारे

यच्चित्रमसं उषसो वहन्ती—जानाय शशमानाय भद्रम् ।

तसो मित्रो वरुणो मामहन्ता—मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः

॥ ६ ॥ (ऋ० १।१२३।१-१३)

(५९-८४) कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । त्रिष्टुप् ।

पृथु रथो दक्षिणाया अयोज्यै—न देवासो अमृतासो अस्थुः ।

कृष्णादुदस्यादुर्याइ विहाया—श्विकित्सन्ती मानुषाय क्षयाय

पूर्वा विश्वस्माद् भुवनादवोधि जयन्ती वाजं वृहती सनुत्री ।

उच्चा व्यख्यद् युवतिः पुनर्भू—रोषा अगन् प्रथमा पूर्वहूतौ

यद्य भागं विभजासि नृभ्य उषो देवि मर्त्यत्रा सुजाते ।

देवो नो अत्र सविता दमूना अनागसो वोचति सूर्याय

गृहं गृहमहना यात्यच्छा दिवेदिवे अधि नामा दधाना ।

सिपासन्ती द्योतना शश्वदागा—दग्रमग्रमिद् भजते वसूनाम्

१२ ५०

१३

१४

१५

१६

१७ ५५

१८

१९

२० ५८

१

२ ६०

३

४ ६२

भगस्य स्वसा वरुणस्य जामि—रुपः सनुते प्रथमा जरस्व ।
 पश्चा स दध्या यो अघस्य धाता जयेम तं दक्षिणया रथेन
 उदीरतां सनुता उत् पुरन्धी—रुदग्रयः शुशुचानासौ अस्थुः ।
 स्पर्हा वसन्ति तमसापगूह्णा—विष्कृण्वन्त्युषसो विभार्ताः
 अपान्यदेत्यभ्यन्यदेति विष्टरूपे अहनी सं चरेते ।
 परिक्षितोस्तमो अन्या गुहाक—रघौदुषाः शोशुचता रथेन
 सदृशीरघ सदृशीरिदु श्वो दीर्घं सचन्ते वरुणस्य धाम ।
 अनवद्यास्त्रिशतं योजना—न्येकैका क्रतुं परि यन्ति सद्यः
 जानत्यह्नः प्रथमस्य नाम शुक्रा कृष्णादजनिष्ट श्वितीची ।
 क्रतस्य योषा न मिनाति धामा—हरहर्निष्कृतमाचरन्ती
 कन्यैव तन्वाइ शशदानां एषि देवि देवमियक्षमाणम् ।
 संस्मर्यमाना युवतिः पुरस्ता—द्वारिविर्वक्षांसि कृणुषे विभार्ती
 सुसंकाशा मातृमृष्टेव योषा—विस्तन्वै कृणुषे दृशे कम् ।
 भद्रा त्वमुपो वितरं व्युच्छ न तत् ते अन्या उषसो नशन्त
 अश्वावतीगोमतीर्विश्वारा यतमाना रश्मिभिः सूर्यस्य ।
 परां च यन्ति पुनरा च यन्ति भद्रा नाम वहमाना उषासः
 क्रतस्य रश्मिमनुयच्छमाना भद्रंभद्रं क्रतुमस्मासु धेहि ।
 उपो नो अद्य सुहवा व्युच्छा—स्मासु रायो मघवत्सु च स्युः

॥ ७ ॥ (ऋ० १।१२४।१-१२)

उषा उच्छन्ती समिधाने अग्रा उद्यन्त्सूर्यं उर्विया ज्योतिरश्नेत् ।
 देवो नो अत्र सविता न्वर्थं प्रासावीद् द्विपत् प्र चतुष्पदित्यै
 अमिनती दैव्यानि व्रतानि प्रमिनती मनुष्या युगानि ।
 ईयुषीणामुपमा शश्वतीना—मायतीनां प्रथमोषा व्यद्यौत्
 एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि ज्योतिर्वसाना समना पुरस्तात् ।
 क्रतस्य पन्थामन्वेति साधु प्रजानतीव न दिशो मिनाति
 उपो अदर्शि शुन्ध्युवो न वक्षो नोधा इवाविरकृत प्रियाणि ।
 अन्नसन्न संसतो बोधयन्ती शश्वत्तमागात् पुनरेयुषीणाम्

[उषादेवता] मन्त्रः ११-८८]

५	पूर्वं अर्धे रजसो अप्त्यस्य गवां जनित्र्यकृत प्र केतुम् ।	
५	व्यु प्रथते वितरं वरीय ओ—भा पूणन्ती पित्रोरुपस्था	५
६	एवेदेपा पुरुतमां दृशे कं नाजाभिं न परि वृणक्ति जामिम् ।	
६	अरेपसां तन्वाइ शशदाना नाभादीषते न महो विभाती	६
७	अभ्रातेव पुंस एति प्रतीची गतारुगिव सनये धनानाम् ।	
७	जायेव पत्य उशती सुवासा उषा हस्त्रेव नि रिणीते अप्सः	७
८	स्वसा स्वस्त्रे ज्यायस्यै योनिमारै—गपैत्यस्याः प्रतिचक्ष्येव ।	
८	व्युच्छन्ती रश्मिभिः सूर्यस्या—ज्यङ्क्ते समनगा इव त्राः	८
९	आसां पूर्वासामहंसु स्वसृणा—मपरा पूर्वीमभ्येति पश्चात् ।	
९	ताः प्रत्नवन्नव्यसीर्नूनमस्मे रेवदुच्छन्तु सुदिना उषासः	९ ८०
१०	प्र बोधयोषः पृणतो मघो—न्यबुध्यमानाः पणयः ससन्तु ।	
१०	रेवदुच्छ मघवद्भ्यो मघोनि रेवत् स्तोत्रे स्रुते जारयन्ती	१०
११	अवेयमश्वेद युवतिः पुरस्ताद् युङ्क्ते गवामरुणानामनीकम् ।	
११	वि नूनमुच्छादसति प्र केतु—गृहंगृहमुप तिष्ठाते अग्निः	११
१२	उत् ते वयश्चिद् वसतेरपमन्न नरश्च ये पितुभाजो व्युष्टौ ।	
१२	अमा सते वहसि भूरिं वाम—मुषो देवि दाशुषे मर्त्याय	१२
१३	अस्तौद्वं स्तोम्या ब्रह्मणा मे ऽवीवृधध्वमुशतीरुपासः ।	
१३	युष्माकं देवीरवसा सनेम सहास्त्रिणं च शतिनै च वाजम्	१३ ८४

॥ ८ ॥ (ऋ० ३।६१।१-७)

(८५-९१) गाथिनो विश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

१	उषो वाजेन वाजिनि प्रचेताः स्तोमं जुषस्व गृणतो मघोनि ।	
१	पुराणी देवि युवतिः पुरंधि—रनु व्रतं चरसि विश्ववारे	१ ८५
२	उषो देव्यमर्त्या वि भाहि चन्द्ररथा स्रुता ईरयन्ती ।	
२	आ त्वा वहन्तु सुयमासो अश्वा हिरण्यवर्णा पृथुपाजसो ये	२
३	उषः प्रतीची भुवनानि विश्वो—र्ध्वा तिष्ठस्यमृतस्य केतुः ।	
४	समानमर्थं चरणीयमाना चैकर्मिव नव्यस्या ववृत्स्व	३
४	अव स्यूमेव चिन्वती मघो—न्युषा याति स्वसरस्य पत्नी ।	
	स्वर्जन्ती सुभगा सुदंसा आन्ताद् दिवः पप्रथ आ पृथिव्याः	४ ८८

अच्छा वो देवीमुषसं विभातीं प्र वो भरध्वं नमसा सुवृक्तिम् ।
 ऊर्ध्वं मधुघ्ना दिवि पाजो अश्रेत् प्र रोचना रुच्ये रण्वसदृक्
 क्रतावरी दिवो अर्कैरवो—ध्या रेवती रोदसी चित्रमस्थ्यात् ।
 आयतीमग्न उषसं विभातीं वाममेषि द्रविणं भिक्षमाणः
 क्रतस्य बुध्न उषसाभिषण्यन् वृषा मही रोदसी आ विवेश ।
 मही मित्रस्य वरुणस्य माया चन्द्रेव भानुं वि दधे पुरुत्रा

॥ ९ ॥ (ऋ० ४।५।११-११)

(९२-१०९) वामदेवो गौतमः । त्रिष्टुप्

इदमु त्यत् पुरुतमं पुरस्ता—ज्ज्योतिस्तमसो व्युनावदस्थात् ।
 नूनं दिवो दुहितरो विभाती—र्गातुं कृणवन्नुषसो जनाय
 अस्थुरु चित्रा उषसः पुरस्ता—न्मिता इव स्वरवोऽध्वरेषु ।
 व्यू व्रजस्य तमसो द्वारो—च्छन्तीरत्रच्छुचयः पावकाः
 उच्छन्तीरद्य चितयन्त भोजान् राधोदेयायोषसो मघोनीः ।
 अचित्रे अन्तः पणयः सप्त—न्त्वबुध्यमानास्तमसो विमध्ये
 कुवित् स देवीः सनयो नवो वा यामो बभूयादुषसो वो अद्य ।
 येना नवंग्वे अङ्गिरे दशंग्वे सप्तास्ये रेवती रेवदूष
 यूयं हि देवीर्कृतयुग्मिभिरश्वैः परिप्रयाथ भुवनानि सद्यः
 प्रबोधयन्तीरुषसः ससन्तं द्विपाचतुष्पाच्चरथाय जीवम्
 कं स्विदासां कतमा पुराणी यया विधानां विदधुर्कभूणाम् ।
 शुभं यच्छुभ्रा उपसश्चरन्ति न वि ज्ञायन्ते सदशीरजुर्याः
 ता घा ता भद्रा उषसः पुरासु—रभिष्टिद्युम्ना क्रतजातसत्याः ।
 यास्वीजानः शशमान उक्थैः स्तुवच्छंसन् द्रविणं सद्य आप
 ता आ चरन्ति समना पुरस्तात् समानतः समना पप्रथानाः ।
 क्रतस्य देवीः सदसो बुधाना गवां न सर्गी उषसो जरन्ते
 ता इन्वेक्षेव समना समानी—रमीतवर्णा उषसश्चरन्ति ।
 गूहन्तीरभ्वमसितं रुशङ्घिः शुक्रास्तनूभिः शुचयो रुचानाः
 रयिं दिवो दुहितरो विभातीः प्रजावन्तं यच्छतास्मासु देवीः ।
 स्योनादा वः प्रतिबुध्यमानाः सुवीर्यस्य पतयः स्याम

तद् वो दिवो दुहितरो विभाती—रूपं ब्रुव उपसो यज्ञकैतुः ।
वयं स्याम यशसो जनैषु तद् द्यौश्च धत्तां पृथिवी च देवी

११

॥ १० ॥ (ऋ० ४।५।१-७) गायत्री ।

प्रति व्या सुनरी जनी व्युच्छन्ती परि स्वसुः । दिवो अदशि दुहिता
अश्वेव चित्रारुषी माता गवामृतावरी । सखाभूदश्विनोरुषाः

१

२

उत सखास्यश्विनो—रुत माता गवामसि । उतोषो वस्त्र ईशिषे

३

१०५

यावयद् द्वेषसं त्वा चिकित्वित् सूनृतावरि । प्रति स्तोमैरभुत्समहि

४

प्रति भद्रा अदक्षत गवां सर्गा न रश्मयः । ओषा अं प्रा उरु जयः

५

आपप्रुषी विभावरी व्यावज्योतिषा तमः । उषो अनु स्वधामव

६

आ द्यां तनोषि रश्मिभि—रान्तरिक्षमुरु प्रियम् । उषः शुक्रेण शोचिषा

७

१०२

॥ ११ ॥ (ऋ० ५।७९।१-१०)

(११०-१२५) सत्यश्रवा आत्रेयः । पङ्क्तिः ।

महे नो अद्य बोधयो—षो राये दिवित्मती ।

यथा चित्रो अवोधयः सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनुते

१

११०

या सुनीथे शौचद्रथे व्यौच्छो दुहितर्दिवः ।

सा व्युच्छ सहीयसि सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनुते

२

सा नो अद्याभरद्रसु—व्युच्छा दुहितर्दिवः ।

यो व्यौच्छः सहीयसि सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनुते

३

अभि ये त्वा विभावरी स्तोमैर्गुणन्ति वह्नयः ।

मघैर्मघोनि सुश्रियो दामन्वन्तः सुरातयः सुजाते अश्वसूनुते

४

यच्चिद्धि ते गणा इमे छदयन्ति मघत्तये ।

परि चिद् वष्टयो दधु—र्ददतो राधो अहयं सुजाते अश्वसूनुते

५

एषु धा वीरवद् यश उषो मघोनि सूरिषु ।

ये नो राधांस्यहया मघवानो अरासत सुजाते अश्वसूनुते

६

११५

तेभ्यो धुन्नं बृहद् यश उषो मघोन्या वह ।

ये नो राधांस्यश्या गव्या भजन्त सूरयः सुजाते अश्वसूनुते

७

उत नो गोमतीरिष आ वहा दुहितर्दिवः ।

साकं सूर्यस्य रश्मिभिः शुक्रैः शोचद्भिरर्चिभिः सुजाते अश्वसूनुते

८

११७

५ दे० [उषा]

व्युच्छा दुहितर्दिवो मा चिरं तनुथा अपः ।
 नेत् त्वा स्तेनं यथा रिपुं तपाति सरो अर्चिषा सुजाते अश्वसूनुते
 एतावद् वेदुषस्त्वं भूयो वा दातुमर्हसि ।
 या स्तोतृभ्यो विभावयुच्छन्ती न प्रमीयसे सुजाते अश्वसूनुते

॥ १२ ॥ (ऋ० ५।८०।१-६) त्रिष्टुप् ।

द्युतद्यामानं बृहतीमृतेन क्रुतावरीमरुणस्सु विभातीम् ।
 देवीमुषसं स्वरावहन्तीं प्रति विप्रासो मतिभिर्जरन्ते
 एषा जनं दर्शता बोधयन्ती सुगान् पथः कृण्वती यात्यग्रे ।
 बृहद्रथा बृहती विश्वमिन्वोपा ज्योतिर्यच्छत्यग्रे अह्वाम्
 एषा गोभिररुणेभिर्युजाना ऽस्सैधन्ती रयिमप्रायु चक्रे ।
 पथो रदन्ती सुविताय देवी पुरुष्टुता विश्ववारा वि भाति
 एषा व्यैनी भवति द्विबर्ही आविष्कृण्वाना तन्वै पुरस्तात् ।
 क्रतस्य पन्थामन्वैति साधु प्रजानतीव न दिशो मिनाति
 एषा शुभ्रा न तन्वो विदानो ध्वेव स्नाती दृश्ये नो अस्थात् ।
 अप द्वेषो बाधमाना तमांस्युषा दिवो दुहिता ज्योतिषागात्
 एषा प्रतीची दुहिता दिवो नृन् योषेव भद्रा नि रिणीते अप्सः ।
 व्यूर्ध्वती दाशुषे वार्याणि पुनर्ज्योतिर्युवतिः पूर्वथाकः

॥ १३ ॥ (ऋ० ६।६४।१-६)

(१२६-१३७) भरद्वाजो वार्हस्पत्यः । त्रिष्टुप् ।

उदुं श्रिय उपसो रोचमाना अस्थुरपां नोर्मयो रुशन्तः ।
 कृणोति विश्वा सुपथा सुगान्यभूदु वस्वी दक्षिणा मघोनीं
 भद्रा ददक्ष उर्विया वि मास्युत् ते शोचिर्भानवो द्यामपसन् ।
 आविर्वक्षः कृणुषे शुम्भमानोपो देवि रोचमाना महोभिः
 वहन्ति सीमरुणासो रुशन्तो गावः सुभगांमुर्विया प्रथानाम् ।
 अपेजते शूरो अस्तेव शत्रून् बाधते तमो अजिरो न वोळ्हा
 सुगोत ते सुपथा पर्वते ध्ववाते अपस्तरसि स्वमानो ।
 सा न आ वह पृथुयामनृषे रयिं दिवो दुहितरिष्यध्वै

[उपादेवता ।]

क्रमाः ११८-१४१]

सा वह् योक्षभिरवातो—पो वरं वहंसि जोषमनु ।

१ त्वं दिवो दुहितर्या ह देवी पूर्वहूतौ मंहनां दर्शता भूः

५ १३०

उत्ते वयश्चिद् वसतेरपमन् नरश्च ये पितुभाजो व्युष्टौ ।

१० ११९ अमा सते वहंसि भूरिं वाम—मुषो देवि दाशुषे मर्त्याय

६ १३१

॥ १४ ॥ (क्र० ६।६५।१-६)

एषा स्या नो दुहिता दिवोजाः क्षितिरुच्छन्ती मानुषीरजीगः ।

१ १२० या भानुना रुशता राभ्या—स्वज्ञायि तिरस्तमसश्चिदूक्तू

१

वि तद् ययुररुणयुग्भिरश्वै—श्चित्रं भान्त्युषसश्चन्द्ररथाः ।

२ अग्रं यज्ञस्य बृहतो नयन्ती—विं ता बाधन्ते तम ऊर्म्यायाः

२

श्रवो वाजमिषमूर्जं वहन्ती—निं दाशुषं उषसो मर्त्याय ।

३ मघोनीर्विरवत् पत्यमाना अवो धात विधते रत्नमद्य

३

इदा हि वो विधते रत्नमस्ती—दा वीरायं दाशुषं उषासः ।

४ इदा विप्राय जरते यदुक्था नि ष्म मावते वहथा पुरा चित्

४ १३५

इदा हि त उषो अद्रिसानो गोत्रा गवामङ्गिरसो गृणन्ति ।

५ व्यक्तेण विभिदुर्ब्रह्मणा च सत्या नृणामभवद् देवहूतिः

५

६ १२५ उच्छा दिवो दुहितः प्रत्नवन्नो भरद्वाजवद् विधते मघोनि ।

सुवीरं रयिं गृणते रिरीद्यु—रुगायमधि धेहि श्रवो नः

६ १३७

॥ १५ ॥ (क्र० ७।४१।७)

(१३८-१७८) मैत्रावरुणिवसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

अश्ववतीर्गोमतीर्न उषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः ।

१ धृतं दुहाना विश्वतः प्रपीता यूयं पात स्वास्तिभिः सदा नः

७ १३८

॥ १६ ॥ (क्र० ७।७५।१-८)

२ व्युषा आत्रो दिविजा क्रतेना—ऽऽविष्कृण्वाना महिमानमागात् ।

अप ब्रुहस्तम आवरजुष्ट—मङ्गिरस्तमा पृथ्या अजीगः

१

३ महे नो अद्य सुविताये वो—व्युषो महे सौभगाय प्र यन्धि ।

४ ११९ चित्रं रयिं यशसं भेह्यस्मे देवि मर्तेषु मानुषि श्रवस्युम्

२ १४०

एते ते भानवो दर्शताया—श्चित्रा उषसो अमृतांस आगुः ।

जनयन्तो दैव्यानि व्रतान्या—पूणन्तो अन्तरिक्षा व्यस्थुः

३ १४१

एषा स्या युजाना पराकात् पञ्च क्षितीः परि सद्यो जिगाति ।
 अभिपश्यन्ती वयुना जनानां दिवो दुहिता भुवनस्य पत्नी
 वाजिनीवती सूर्यस्य योषा चित्रामघा राय ईशे वसूनाम् ।
 ऋषिष्टुता जरयन्ती मघो न्युषा उच्छति वह्निभिर्गृणाना
 प्रति घृतानामरुषासो अश्वाश्चित्रा अदृशन्नुषसं वहन्तः ।
 याति शुभ्रा विश्वपिशा रथेन दधाति रत्नं विधत्ते जनाय
 सत्या सत्येभिर्महती महद्भिर्देवी देवेभिर्यजता यजत्रैः ।
 रुजद् दृळ्हानि दददुस्त्रियाणां प्रति गाव उषसं वावशन्त
 नू नो गोमद वीरवद् धेहि रत्नमुषो अश्वावत् पुरुभोजो अस्मे ।
 मा नो बर्हिः पुरुषता निदे कूर्युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

॥ १७ ॥ (ऋ० ७।७६।१-७)

उदु ज्योतिरमृतं विश्वजन्यं विश्वानरः सविता देवो अश्रेत् ।
 कृत्वा देवानामजनिष्ट चक्षुः राविरकर्ध्वनं विश्वमुषाः
 प्र मे पन्था देवयाना अदृशन्मर्मन्तो वसुभिरिष्कृतासः ।
 अभूदु केतुरुषसः पुरस्तात् प्रतीच्यागादधि हर्म्येभ्यः
 तानीदहानि बहुलान्यासन् या प्राचीनमुदिता सूर्यस्य ।
 यतः परि जार इवाचरन्त्युषो ददृक्षे न पुनर्यतीव
 त इद् देवानां सधमाद आसन्नतावानः कवयः पूर्यासः ।
 गूळहं ज्योतिः पितरो अन्वविन्दन्तसत्यमन्त्रा अजनयन्नुषासम्
 समान ऊर्वे अधि संगतासः सं जानते न यतन्ते मिथस्ते ।
 ते देवानां न मिनन्ति व्रतान्यमर्मन्तो वसुभिर्यादमानाः
 प्रति त्वा स्तोमैरीळते वसिष्ठा उषर्बुधः सुभगे तुष्टुवासः ।
 गवां नेत्री वाजपत्नी न उच्छोषः सुजाते प्रथमा जरस्व
 एषा नेत्री राधसः सूनृतानामुषा उच्छन्ती रिभ्यते वसिष्ठैः ।
 दीर्घश्रुतं रयिमस्मे दधाना यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

॥ १८ ॥ (ऋ० ७।७७।१-६)

उषो रुरुचे युवतिर्न योषा विश्वं जीवं प्रसुवन्ती चरायै ।
 अभूदग्निः समिधे मानुषाणामकज्योतिर्वाधमाना तमांसि

[उषादेवता ।]

संख्या: १४२-१६७

विश्वं प्रतीची सप्रथा उदस्थाद् रुशद् वासो विभ्रती शुक्रमश्वैत् ।

हिरण्यवर्णा सुदृशीकसंहृग् गवां माता नेत्र्यहामरोचि

देवानां चक्षुः सुभगा वहन्ती श्वेतं नयन्ती सुदृशीकमश्वम् ।

उषा अदर्शि रश्मिभिर्व्यक्ता चित्रामघा विश्वमनु प्रभृता

अन्तिवामा दूरे अभित्रमुच्छोर्वी गव्यूतिमभयं कृधी नः ।

यावय द्वेष आ भरा वसूनि चोदय राधो गृणते मघोनि

अस्मे श्रेष्ठैर्भिर्भानुभिर्वि भाह्युषो देवि प्रतिरन्ती न आयुः ।

इषं च नो दधती विश्ववारे गोमदश्चावद् रथवच्च राधः

यां त्वा दिवो दुहितर्वर्धयन्त्युषः सुजाते मतिभिर्वसिष्ठाः ।

सास्मासु धा रयिमृष्वं बृहन्तै ययं पात स्वस्तिभिः सदा नः

॥ १९ ॥ (ऋ० ७।७८।१-५)

प्रति केतवः प्रथमा अदृशन्नुर्ध्वा अस्या अञ्जयो वि श्रयन्ते ।

उषो अर्वाचा बृहता रथेन ज्योतिष्मता वाममस्मभ्यं वक्षि

प्रति पीमग्निर्जरते समिद्धः प्रति विप्रासो मतिभिर्गृणन्तः ।

उषा याति ज्योतिषा बाधमाना विश्वा तमांसि दुरितापं देवी

एता उ त्याः प्रत्यदृशन् पुरस्ताज्ज्योतिर्यच्छन्तीरुषसो विभातीः ।

अजीजनन्त्यस्य यज्ञमग्निमपाचीनं तमो अगादजुष्टम्

अचैति दिवो दुहिता मघोनी विश्वे पश्यन्त्युषसं विभातीम् ।

आस्याद् रथं स्वधया युज्यमानमा यमश्वासः सुयुजो वहन्ति

प्रति त्वाद्य सुमनसो बुधन्ताऽस्माकांसो मघवानो वयं च ।

तिल्विलायध्वमुषसो विभातीर्ययं पात स्वस्तिभिः सदा नः

॥ २० ॥ (ऋ० ७।७९।१-५)

व्युषा आवः पथ्याङ्गे जनानां पञ्च क्षितीर्मानुषीर्वोधयन्ती ।

सुसंहग्मिरुक्षमिर्भानुमश्वेद् वि सूर्यो रोदसी चक्षसावः

व्यञ्जते दिवो अन्तैष्वक्तून् विशो न युक्ता उषसो यतन्ते ।

स ते गावस्तम आ वर्तयन्ति ज्योतिर्यच्छन्ति सवितेव बाहू

अभूदुषा इन्द्रतमा मघोऽन्यजीजनत् सुविताय श्रवांसि ।

वि दिवो देवी दुहिता दधात्यङ्गिरस्तमा सुकृते वसूनि

तावदुषो राधो अस्मभ्यं रास्व यावत् स्तोत्रभ्यो अरदो गृणाना ।
यां त्वा जजुर्वृषभस्या र्वेण वि दृळ्हस्य दुरो अद्वैरौर्णोः
देवंदेवं राधसे चोदयन्त्यस्मद्यक् सूनृता ईरयन्ती ।
व्युच्छन्ती नः सनये धियो धा यूय पात स्वस्तिभिः सदा नः

॥ २१ ॥ (क्र० ७१८०१-३)

प्रति स्तोमैभिरुपसं वसिष्ठा गीर्भिर्विप्रासः प्रथमा अंबुध्रन् ।
विवर्तयन्तीं रजसी समन्ते आविष्कृण्वतीं भुवनानि विश्वा
एषा स्या नव्यमायुर्दधाना गृही तमो ज्योतिषोपा अंबोधि ।
अग्र एति युवतिरह्याणा प्राचिकित्त सूर्य यज्ञमग्निम्
अश्वावतीर्गोमतीर्न उपासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः ।
घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीत यूय पात स्वस्तिभिः सदा नः

॥ २२ ॥ (क्र० ७१८११-६) प्रगाथः = (विषमा बृहती + समा सतोबृहती) ।

प्रत्यु अदर्शयत्यु—च्छन्तीं दुहिता दिवः ।
अपो महि व्ययति चक्षसे तमो ज्योतिष्कणोति सूनरीं
उदुस्त्रियाः सृजते सूर्यः सचा उद्यन्नक्षत्रमर्चिवत् ।
तवेदुषो व्युषि सूर्यस्य च सं भक्तेन गमेमहि
प्रति त्वा दुहितर्दिव उपो जीरा अभुत्स्महि ।
या वहसि पुरु स्पार्ह वनन्वति रत्नं न दाशुषे मयः
उच्छन्ती या कृणोषि मंहना महि प्रख्यै देवि स्वेदंशे ।
तस्यास्ते रत्नभाज ईमहे वयं स्याम मातुर्न सूनवः
तच्चित्रं राध आ भरोपो यद् दीर्घश्रुत्तमम् ।
यत् ते दिवो दुहितर्मर्तभोजनं तद् रास्व भुनजामहै
श्रवः सूरिभ्यो अमृतं वसुत्वनं वाजां अस्मभ्यं गोमतः ।
चोदयित्री मघोनः सूनृतावत्यु—षा उच्छदप सिधः

॥ २३ ॥ (क्र० ८११०११३)

(१७९) जमदग्निर्भार्गवः । उपाः सूर्यप्रभा वा । बृहती ।

इयं या नीच्यर्किणी रूपा रोहिण्या कृता ।
चित्रेव प्रत्यदर्शयत्यु—न्तर्दशसु बाहुषु

॥ २४ ॥ (क्र० १०१७२११-४)

आ याहि वनसा सह	गावः सचन्त वर्तनि यदूधभिः	१	१८०
आ याहि वस्व्या धिया	महिष्ठो जारयन्मखः सुदानुभिः	१	२
पितृभृतो न तन्तुमित्	सुदानवः प्रति दध्मो यजामसि		३
उषा अप स्वसुस्तमः	सं वर्तयति वर्तनि सुजातता	२	४ १८३

॥ २५ ॥ (१८४) (वा० य० १२।३६)

संज्ञानमसि कामधरणं मायि ते कामधरणं भूयात् ।
अयेर्मेस्मास्यग्रेः पुरीषमसि चितं स्थ परिचितं ऊर्ध्वचितं श्रयध्वम् ४६ १८४

॥ २६ ॥ (साम० ३०३, ७५१) +

(१८५-१८६) वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । बृहती ।

प्रत्यु^{१२} अदर्श्याय^{३२} त्यू^१ रच्छन्ती^२ दुहिता^{३२} दिवः^{३२} ।

अपो मही वृणुते चक्षुषा तपो ज्योतिष्कृणोति सूनरी २०३ १८५

॥ ६७ ॥ (अथर्व० १९।१२।१)

वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

अप स्वसुस्तमः सं वर्तयति वर्तनि मुजातता ।
अवा वाजं देवहितं सनेम मदेम शतहिमाः सुवीराः

उषा-सहचारी देवगणः ।

(१) आदित्योषसः । (दुःष्वप्पञ्चम्)

॥ २८ ॥ (अ० ८४७।१४-१८)

(१८७-१९१) त्रित आप्त्यः । महापङ्क्तिः ।

यच्च गोषु दुःखवन्त्यं यच्चास्मे दुहितर्दिवः ।
 त्रिताय तद् विभावया पत्याय परा वहा नेहसौ व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः १४
 निष्क वा धा

निष्कं वा धा कृणवते स्रजं वा दुहितर्दिवः । सुकृतयो व कृतयः १४

तदन्नाय तदपसे तं भागमुपसेदुषे । सुकृतयो व कृतयः १५

त्रिताय च द्विताय चो—पो दुःस्वप्न्यं वहा—नेहसौ व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः १६ १८९

+ सा. ७५२ = ऋ. ७, ८१, २१ (वै. उषा १७४)

यथा कलां यथा शफं यथ कृणं संनयामसि ।

एवा दुःष्वप्न्यं सर्वं माप्तये सं नयामस्य—नेहसौ व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः १७ १९०

अजैष्माद्यासनाम् चा—भूमानांगसो वयम् ।

उषो यसाद् दुःष्वप्न्या—दभैष्माप तदुच्छत्व—नेहसौ व ऊतयः

सुऊतयो व ऊतयः

१८ १९१

(२) उपासानक्ता ।×

॥ २९ ॥ (१९२-१९४) (वा० य० २०।४१)

उपासानक्ता बृहती बृहन्तं पर्यस्वती सुदुधे शुरुमिन्द्रम् ।

तन्तुं ततं पेशसा संवर्यन्ती देवानां देवं यजतः सुरुक्मे

४१

॥ ३० ॥ (वा० य० २८।१४, ३७)

देवी उपासानक्तेन्द्रं यज्ञे प्रयत्युद्देताम् ।

दैवीर्विशः प्रायासिष्टाः सुप्रीते सुधिते वसुवने वसुधेयस्य वीतां यजं

१४

देवी उपासानक्ता देवमिन्द्रं वयोधसं देवी देवमवर्धताम् ।

अनुष्टुभा छन्दसेन्द्रियं बलमिन्द्रे वयो दधद् वसुवने वसुधेयस्य वीतां यजं

३७ १९४

× दे० (अमिः) [आप्रोसूक्तानि] १९१२; १९२४; १९३६; १९४७; १९५८; १९६९; १९७२; १९८६; १९९७; २००८
२०१९; २०३१; २०४२; २०८९; २१११; २१२३.

उषादेवता-पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

- [१] १।३०।२१ (शुनःशेष आजीगर्तिः । उषाः)
अश्वे न चित्रे अरुषि ।
(१०४) ४।५२।२ (वामदेवो गौतमः । उषाः)
अश्वेव चित्रारुषी ।
[३] १।३०।२२ (शुनःशेष आजीगर्तिः । उषाः)
अस्मे रयि नि धारय ।
(इन्द्रः २४८८) १०।२४।१ (विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा,
वसुकृद्धा वासुकः । इन्द्रः)
.....धारय वि वो मदे ।
[४] १।४८।१ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
युच्छा दुहितर्दिवः ।
(११२) ५।७९।३ = (११८) ५।७९।९ (सत्यश्रवा
आत्रेयः । उषाः)
[५] १।४८।२ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
चोद राधो मघोनाम् ।
(आयुर्वेदो १०७९) ७।९६।२ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ।
सरस्वती)
[११] १।४८।८ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
चक्षसे जगज्ज्योतिष्कृणोति सूनरी ।
अप...दुहिता दिव उषा उच्छदप स्निधः ।
(१७३) ७।८१।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः)
.....दुहिता दिवः ।
अपो...चक्षसे तमो ज्योतिष्कृणोति सूनरी ।
(१७८) ७।८१।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः)
उषा उच्छदप स्निधः ।
[१६] १।४८।१३ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
प्रति भद्रा अदक्षत ।
(१०७) ४।२५।५ (वामदेवो गौतमः । उषाः)
[१७] १।४८।१४ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
ये चिद्धि स्वासृषयः पूर्वं ऊतये जुहुरेऽवसे महि ।
सा नः स्तोमौ अभि गृणीहि राधसोषः शुक्रेण
शोचिषा ॥
(अश्विनौ ४२६) ८।८।६ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
यच्चिद्धि वां पुर ऋषयो जुहुरेऽवसे नरा ।
आ यातमश्विना गतमुपेमां सुष्टुतिं मम ।
६ दे. [उषा]

- (१०९) ४।५२।७ (वामदेवो गौतमः । उषाः)
उषः शुक्रेण शोचिषा ।
(अश्विनौ ४११) ८।५।३० (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
उपेमां सुष्टुतिं मम ।
(अश्विनौ ५३०-५३२) ८।३५।२२-२४ (श्यावाश्व
आत्रेयः । अश्विनौ)
आ यातमश्विना गतम् ।
[१८] १।४८।१५ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
प्र नो यच्छतादवृकं पृथु च्छर्दिः ।
(अश्विनौ ४४४) ८।२।१ (शशकर्णः काण्वः । अश्विनौ)
प्रस्मै यच्छतमवृकं पृथु च्छर्दिः ।
[२०] १।४९।१ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
दिवश्चिद् रोचनादधि ।
(मरुतः २७५) ५।५६।१ (श्यावाश्व आत्रेयः । मरुतः)
(अश्विनौ ४२७) ८।८।७ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
[२३] १।४९।४ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
विश्वमाभासि रोचनम् ।
१।५०।४ (प्रस्कण्वः काण्वः । सूर्यः)
विश्वमा भासि — ।
(इन्द्रः १४०३) ३।४४।४ (गाथिनो विश्वामित्रः । इन्द्रः)
विश्वमा भाति रोचनम् ।
[२६] १।९२।३ (गोतमो राहुगणः । उषाः)
हृषं वहन्तीः सुकृते सुदानवे ।
(अश्विनौ ४६) १।४७।८ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
हृषं पृथ्वन्ता सुकृते सुदानवे ।
[२७] १।९।२४ (गोतमो राहुगणः । उषाः)
ज्योतिर्विश्वस्मै भुवनाय कृण्वती ।
(अग्निः ७४६) ४।१४।२ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
— — कृण्वन् ।
[२९] १।९२।६ (गोतमो राहुगणः । उषाः)
अतारिष्म तमसस्परमस्य ।
(अश्विनौ २०७) १।१८३।६ = (अश्विनौ २१३) १।१८४।६
(अगस्त्यो मैत्रावरुणः । अश्विनौ)
अतारिष्म तमसस्परमस्य प्रति वां स्तोमो ।

- (अश्विनौ ३७३) ७।७३।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । अश्विनौ)
अतारिष्म तमसस्वारमस्य प्रति सोमं ।
- [३०] १।९२।७ (गौतमो राह्वगणः । उषाः)
मास्वती नेत्री सृनुतानाम् ।
- (४२) १।११३।४ (कुत्स आङ्गिरसः । उषाः)
- [३४] १।९२।११ (गौतमो राह्वगणः । उषाः)
प्रमिनती मनुष्या युगानि ।
- [३५] १।९२।१२ (गौतमो राह्वगणः । उषाः)
अमिनती दैव्यानि व्रतानि ।
- (७३) १।१२४।२ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिशः । उषाः)
अमिनती दैव्यानि व्रतानि प्रमिनती मनुष्या युगानि ।
- [३६] १।९२।१३ (गौतमो राह्वगणः । उषाः)
उषस्तच्चित्रमा भरास्मभ्यं वाजिनीवति ।
येन तोकं च तनयं च धामहे ।
४।५५।९ (वामदेवो गौतमः । विश्वे देवाः)
उषो मघोन्या वह ।
अस्मभ्यं वाजिनीवति ।
(सोमः ६६१) ९।७४।५ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिशः ।
पवमानः सोमः)
येन तोकं च तनयं च धामहे ।
- [४२] १।१२३।४=(३०) १।९२।७
- [४२-४४] १।१२३।४-६ (कुत्स आङ्गिरसः । उषाः)
उषा अजीगर्भुवनानि विश्वा ।
- [४५] १।१२३।७ (कुत्स आङ्गिरसः । उषाः)
एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शिः..... शुक्रवासाः ।
उषो अथेह सुमगे व्युच्छ ।
- (७४) १।१२४।३ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिशः । उषाः)
— प्रत्यदर्शि ज्योतिर्वसाना ।
- (७१) १।१२३।१३ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिशः । उषाः)
उषो नो अद्य सुहवा व्युच्छ ।
- [५२] १।१२३।१४ (कुत्स आङ्गिरसः । उषाः)
प्रबोधयन्त्यरुणेभिरश्वैरोषा याति सुयुजा रथेन ।
(अग्निः ७४७) ४।१४।३ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
प्रबोधयन्ती सुविताय देव्युषा ईयते सुयुजा रथेन ।
- [५३] १।१२३।१५ (कुत्स आङ्गिरसः । उषाः)
ईयुषीणामुपमा शश्वतीनां विमातीनां प्रथमोषा व्यथैत् ।
(७३) १।१२४।२ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिशः । उषाः)
ईयुषीणामुपमा शश्वतीनामायतीनां प्रथमोषा व्यथौत् ।

- [५४] १।१२३।१६ (कुत्स आङ्गिरसः । उषाः)
आगन्म यत्र प्रतिरन्त आयुः ।
(सोमः ११४५) ८।४८।११ (प्रगाथो घोरः काण्वः । सोमः)
अगन्म — — ।
- [६३] १।२२३।५ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिशः । उषाः)
उषः सृनुते प्रथमा जरस्व ।
(१५२) ७।७६।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः)
उषः सुजाते प्रथमा जरस्व ।
- [७०] १।२२३।१२ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिशः । उषाः)
यतमाना रश्मिभिः सूर्यस्य ।
(अग्निः ७७३) ५।४।४ (वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः)
यतमानो रश्मिभिः सूर्यस्य ।
- [७१] १।२२३।१३=(४५) १।१२३।७
- [७३] १।२२४।२=(३५) १।९२।१२
- [७३] १।२२४।२=(३४) १।९२।११
- [७३] १।२२४।२=(५३) १।१२३।१५
- [७४] १।२२४।३=(४५) १।१२३।७
- [७४] १।२२४।३ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिशः । उषाः)
..... पुरस्तात् ।
ऋतस्य पन्थामन्वेति साधु प्रजानतीव न दिशो मिनाति ।
(१२३) ५।८०।४ (सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः)
१०।६६।१३ (वसुकर्णो वासुकः । विश्वे देवाः)
ऋतस्य पन्थामन्वेति साधुया ।
- [७६] १।२२४।५ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिशः । उषाः)
व्यु प्रथते वितरं वरीय ।
(अग्निः २००६) १०।११०।४ (जमदग्निर्भागिवः, रामो
वा जामदग्न्यः । आप्रीसूक्तं [बर्हिः])
[७८] १।२२४।७ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिशः । उषाः)
जायेव पत्य उशती सुवासाः ।
(अग्निः ६६७) ४।३।२ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
=१०।७१।४ (बृहस्पतिराङ्गिरसः । ज्ञानम्)
(अग्निः १६६३) १०।९।१३ (अरुणो वैतहव्यः । अग्निः)
- [७८] १।२२४।७ उषा हस्तेव नि रिणीते अप्सः ।
(१२५) ५।८०।६ (सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः)
योषेव मद्रा नि— ।
- [८१] १।२२४।१० (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिशः । उषाः)
पृणतो मघोन्यबुध्यमानाः पणयः ससन्तु ।
रेवदुच्छ मघवज्यो मघोनि ।
(९४) ४।५।१३ (वामदेवो गौतमः । उषाः)

उच्छन्तीरय चितयन्त — — मघोनीः ।

अचित्रे अन्तः पणयः ससन्त्वबुध्यमानाः ।

[८१] १।१२४।१२ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः)

= (१३१) ६।६४।६ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । उषाः)

उत् ते नयश्चिद् वसतेरपसन् नरश्च ये पितुभाजो व्युष्टौ ।

अमा सते वहसि भूरि वाममुखो देवि दाशुषे मर्त्याय ॥

ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

[११] ३।६१।७ (गायिनो विश्वामित्रः । उषाः)

वृषा मही रोदसी आ विवेश ।

(अग्निः १६४५) १०।८०।२ (अग्निः सौचीको वैश्वा-

नरो वा, सतिर्वाजंभरो वा । अग्निः)

अग्निर्मही रोदसी आ विवेश ।

ऋग्वेदस्य चतुर्थं मण्डलम् ।

[१४] ४।५१।३ (वामदेवां गौतमः । उषाः)

अचित्रे अन्तः पणयः ससन्तु ।

(८१) १।१२४।१० (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः)

अबुध्यमानाः पणयः ससन्तु ।

[१०१] ४।५१।१० (वामदेवो गौतमः । उषाः)

सुवीर्यस्य पतयः स्याम ।

(इन्द्रः २११०) ६।४७।२२ (गर्गो भारद्वाजः । इन्द्रः)

(इन्द्रः २७७६) १०।१३१।६ (सुकीर्तिः काक्षीवितः । इन्द्रः)

(सोमः ७९९) ९।८९।७ (उशना काव्यः । पवमानः सोमः)

(सोमः ८३२) ९।९५।५ (प्रस्कण्वः काण्वः । पवमानः सोमः)

[१०४] ४।५१।२ (वामदेवो गौतमः । उषाः)

अश्वेव चित्रारुषी ।

(२) १।३०।२१ (शुनःशेषः आजीगर्तिः । उषाः)

अश्वे न चित्रे अरुषि ।

[१०७] ४।५१।५ (वामदेवो गौतमः । उषाः)

प्रति भद्रा अदक्षत ।

(१६) १।४८।१३ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)

[१०९] ४।५१।७ = (१७) १।४८।१४

उषः शुक्लेण शोचिषा ।

ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलम् ।

[११०-१२] ५।७९।१-३ (सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः)

सत्यश्रवसि वाक्ये सुजाते अश्वसूनुते ।

(११०-११२) ५।७९।१-१० सुजाते अश्वसूनुते

[१११] ५।७९।२ = (११२) ५।७९।३

वा (यो) व्युच्छ (व्यौच्छः) सहीयसि ।

[११२] ५।७९।३ = (११८) ५।७९।९ व्युच्छा दुहितर्दिवः ।

(४) १।४८।१ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)

(१२) १।४८।९ चन्त्रेण दुहितर्दिवः ।

(२१) १।४९।२ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)

प्रावाद्य दुहितर्दिवः ।

(१११) ५।७९।२ व्यौच्छो दुहितर्दिवः ।

(११७) ५।७९।८ आ वहा दुहितर्दिवः ।

[११५] ५।७९।६ पेषु घा वीरवद् यशः ।

(इन्द्रः १६५६) ४।३२।१२ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)

[११५-१६] ५।७९।६-७ ये नो राधांस्यहूया (७ अश्व्या)

[११६] ५।७९।७ उषो मघोन्या वह ।

४।५५।९ (वामदेवो गौतमः । विश्वे देवाः)

[११७] ५।७९।८ (सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः)

उत् नो गोमतीरिषः ।

(अश्विनौ ३९२) ८।५।९ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)

(सोमः ४४१) ९।६२।२४ (जमदग्निर्भागवः । पवमानः

सोमः)

[११८] ५।७९।८ साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ।

(अश्विनौ ४५) १।४७।७ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)

(अदितिः ० २११) १।१३।१ (पश्चच्छेपो दैवादसिः ।

मित्रावरुणौ)

(७०) १।१२३।१२ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः)

यत्माना रश्मिभिः सूर्यस्य ।

- (अदितिः ० ३७०) ८।१०१।२
 (जमदग्निर्भागवः । मित्रावरुणौ)
 [१२३] ५।८०।४ ऋतस्य पन्थामन्वेति साधु ।
 (७४) १।१२४।३ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः)
 १०।६६।१३ (वसुकर्णो वासुकः । विश्वे देवाः)
 ऋतस्य पन्थामन्वेति साधुया ।
 [१२३] ५।८०।४ प्रजानतीव न दिशो मिनाति ।
 (७४) १।१२४।३ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः)

- [१२५] ५।८०।६ (सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः)
 योषेव भद्रा नि रिणीते अप्सः ।
 (७८) १।१२४।७ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः)
 उषा हस्तेव नि रिणीते अप्सः ।
 [१२५] ५।८०।६ (सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः)
 व्यूर्ण्वती दाशुषे वार्याणि ।
 ६।५०।८ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः [सविता])
 व्यूर्णुते दाशुषे वार्याणि ।

ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

- [१३१] ६।६४।६ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । उषाः)
 =(८३) १।१२४।१२ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः)
 उक्ते वयश्चिद् वसतेरपसन् नरश्च ये पितुभाजो व्युष्टौ ।
 अमा सते वहसि भूरि वाममुषो देवि दाशुषे मर्त्याय ॥

- [१३४] ६।६५।३ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । उषाः)
 नि दाशुष उषसो मर्त्याय ।
 =(८३) १।१२४।१२=(१३१) ६।६४।६
 उषो देवि दाशुषे मर्त्याय ।

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

- [१३८] ७।४१।७=(१७२) ७।८०।३ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ।
 उषाः)
 अश्ववतीर्गोमतीर्न उषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः ।
 घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीता यूयं पात स्वास्तिभिः सदा नः ।
 [१३८] x ७।४१।७ यूयं पात स्वास्तिभिः सदा नः ।
 =(१४६) ७।७५।८=(१५३) ७।७६।७
 =(१५९) ७।७७।६=(१६४) ७।७८।५
 =(१६९) ७।७९।५=(१७२) ७।८०।३
 [१४४] ७।७५।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः)
 दधाति रत्नं विधत्ते जनाय ।
 (अश्विनौ १५४) ४।४४।४ (पुरुमीळ्हाजमीळ्हौ सौहोत्रौ ।
 अश्विनौ)
 दधथो रत्नं विधत्ते जनाय ।
 [१४५] ७।७५।७ देवी देवेभिर्यजता यज्ञैः ।
 ४।५६।२ (वामदेवो गीतमः । यावापृथिवी)
 देवी देवेभिर्यजते यज्ञैः ।
 [१५१] ७।७३।५ ते देवानां न मिनन्ति व्रतानि ।
 (आयुर्वेदं ८७३) ७।४७।३ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आपः)
 ता इन्द्रस्य न मिनन्ति व्रतानि ।
 [१५२] ७।७६।६=(६३) १।१२३।५
 उषः सुजाते (५ सूनुते) प्रथमा जरस्व ।

- [१५७] ७।७७।४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः)
 अन्ति — दूरे आमित्रं — उर्वी गव्यूतिमभयं कृषी नः ।
 (सोमः ६८५) २।७८।५ (कविर्भागवः । पवमानः सोमः)
 शत्रुमन्तिके दूरके ... उर्वी गव्यूतिमभयं च नस्काषे ।
 [१६२] ७।७८।३ एता उ ल्याः प्रत्यदधन् ।
 (आयुर्वेदं ७७८) १।१९१।५ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः ।
 अध्वन्यसूर्याः [विष्णोपनिषद्])
 एत उ ल्ये प्रत्यदधन् ।
 [१६२] ७।७८।३ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः)
 अजीजनन्त्सूर्यं यज्ञमग्निम् ।
 [१७१] ७।८०।२ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः)
 एषा स्या नव्यमायुर्दधाना ।
 प्राचिक्रितस्सूर्यं यज्ञमग्निम् ।
 ३।५३।१६ (गार्ग्यिनो विश्वामित्रः । वाक् [सप्तर्षी])
 सा पक्ष्या नव्यमायुर्दधाना ।
 [१७२] ७।८०।३=(१३८) ७।४१।७
 [१७३] ७।८१।१ प्रत्यु अदृश्यायति ।
 (१७९) ८।१०१।१३ (जमदग्निर्भागवः । उषाः सूर्यप्रभावा)
 चित्रेव प्रत्यदृश्यायति ।
 [१७३] ७।८१।१=(११) १।४८।८
 उद्योतिष्कृणोति सुनरी ।

x [दै०- अग्निः, २०६ षष्ठं ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डले एष मन्त्रभागो द्रष्टव्यः ।]

[१७३] ७८१११ = (११) ११४८१८
उच्छन्ती (८ मघोनी) दुहिता दिवः ।

[१७८] ७८११६ = (११) ११४८१८
उषा उच्छदप सिधः ।

[१७८] ७८११६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः)

श्रवः सुरिभ्यो अमृतं वसुत्वन्म ।

(इन्द्रः ३३२) ८१३१२२ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)

ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम् ।

[१७९] ८१०११३ (जमदग्निर्भागवः । उषाः सूर्यप्रभा वा)

चित्रेव प्रत्यदर्शयति ।

(१७३) ७८१११ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः)

प्रत्यु अदर्शयति ।



दैवत-संहितान्तर्गत-

उषादेवता-मन्त्राणां सूची ।

अचेति दिवो दुहिता	१६३	उच्छन्ती या कृणोषि	१७६
अच्छा वो देवीमुषसं	८९	उच्छन्तीरथ चितयन्त	९४
अजैष्मायासनाम	१९१	उच्छा दिवो दुहितः	१३७
अतारिष्म तमसः	२९	उत नो गोमतीरिष	११७
अधि पेशासि वपते	२७	उत सखास्यश्विनोः	१०५
अन्तिवामा दूरे अमित्र०	१५७	उत् ते वयश्चिद् वसतेः	८३; १३१
अपान्यदेखभ्यन्यदेति	६५	उदपमन्नरुणा भानवो वृथा	२५
अभि ये त्वा विभावरी	११३	उदीरतां सूनृता उत्	६४
अभूदुषा इन्द्रतमा	१६७	उदीर्ध्व जीवो असुर्न	५४
अभ्रातेव पुंस एति	७८	उदु ज्योतिरमृतं विश्वजन्यं	१४७
अमिनती दैव्यानि व्रतानि	७३	उदु श्रिय उषसो रोचमाना	११६
अर्चन्ति नारीरपसो	२६	उदुस्त्रियाः सृजते सूर्यः	१७४
अव स्यूमेव चिन्वती	८८	उपो अदर्शि शुन्धुवो	७५
अवेयमश्वेद् युवतिः	८२	उपो रुचि युवतिर्न योषा	१५४
अश्वावतीगौमतीः	५, ७०; १३८; १७२	उवासेषा उच्छाच्च नु	६
अश्वेव चित्रारुषी	१०४	उष आ माहि भानुना	११
अस्तोद्वं स्तोम्या ब्रह्मणा	८४	उषः प्रतीची भुवनानि	८७
अस्थुर चित्रा उषसः	९३	उषस्तच्चित्रमा भर	३६
अस्मे श्रेष्ठेभिर्मानुभिः	१५८	उषस्तमस्यां यशसं	३१
आ घा योषेव सूनर्युषा	८	उषा अप स्वसुस्तमः	१८३; १८६
आ यां तनोषि रदिमभिः	१०९	उषा उच्छन्ती समिधाने	७२
आपप्रुषी विभावरी	१०८	उषासानक्ता बृहती	१२१
आ याहि वनसा सह	१८०	उषो अयेह गोमती	३७
आ याहि वरुव्या धिया	१८१	उषो देव्यमर्त्या वि	८१
आवहन्ती पोष्या वार्याणि	५३	उषो भद्रेभिरा गहि	२०
आसां पूर्वामहसु	८०	उषो यदग्निं समिधे चकर्थ	७७
इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिः	३९	उषो यदद्य भानुना	१८
इदमु त्यत् पुरुतमं	९२	उषो ये ते प्र यामेषु युजते	७
इदा हि त उषो अद्रिसानो	१३६	उषो ये ते प्र यामेषु युजते	१४
इदा हि वो विधते	१३५	उषो वाजं हि वंख	८५
इयं या नीच्यकिंणी	१७३	उषो वाजेन वाजिनि	९१
इयुष्टे ये पूर्वतराम्	४९	ऋतस्य बुध्र उषसामिषण्यन्	७१
		ऋतस्य रदिमनुयच्छमाना	९०
		ऋतावरी दिवो अकैः	

१७६	एता उ त्या उषसः केतुं	२४
१७७	एता उ त्याः प्रत्यदृश्रन्	१६२
१७८	एतावद् वेदुषस्त्वं	११२
१७९	एते स्वे भानवो दर्शताया०	१४१
१८०	एवेदेषा पुरुतमा दृशे कं	७७
१८१	एषा गोभिररुणेभिर्गजाना	१२२
१८२	एषा जनं दर्शता बोधयन्ती	१२१
१८३	एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि	४५; ७४
१८४	एषा नेत्री राधसः सूनृतानां	१५३
१८५	एषा प्रतीची दुहिता दिवो	१२५
१८६	एषा युक्त परावतः	१०
१८७	एषा व्योनी भवति द्विर्बर्हाः	१२३
१८८	एषा युत्रा न तन्वो विदानो	१२४
१८९	एषा स्या नव्यमयुर्दधाना	१७१
१९०	एषा स्या नो दुहिता दिवोजाः	१३२
१९१	एषा स्या युजाना पराकात्	१४२
१९२	एषु धा वीरवद् यशः	११५
१९३	रुन्वे तन्वा शाशदानां	६८
१९४	रुन्व उषः कथप्रिये	१
१९५	रुन्वा यत् समया भवति	४८
१९६	रुन्वेत् स देवीः सनयो नवो वा	९५
१९७	रुन्विदासां कृतमा पुराणी	९७
१९८	रुन्वाय त्वं श्रवसे त्वं महिया	४४
१९९	रुन्वदृष्टमहना यात्यच्छा	६२
२००	जानलहः प्रथमस्य नाम	६७
२०१	विद्वसे चरित्वे मघोनी	४३
२०२	त इद् देवानां सधमाद्	१५०
२०३	तच्चित्रं राध आ भर	१७७
२०४	तदन्वाय तदपसे	१८२
२०५	तद् वो दिवो दुहितरो विभातीः	१०२
२०६	ता आ चरन्ति समना पुरस्तात्	९२
२०७	ता रुन्वेव समना समानीः	१००
२०८	ता या ता भद्रा उषसः पुरासुः	९८
२०९	तानां दहानि बहुलान्यासन्	१४९
२१०	तान्दृशो राधो अस्मभ्यं राख	१६८
२११	तान्दृशो वृहद् यशः	११६
२१२	तं लेभिरा गहि	३

देवदेवं राधसे चोदयन्ती	१६९
देवानां चक्षुः सुभगा वहन्ती	१५६
देवी उषासानक्ता	१२३; १९४
द्युतयामानं बृहती	१२०
निष्कं वा धा कृणवते	१८८
नू नो गोमद् वीरवद् धेहि	१४६
परायतीनामन्वेति पाथ	४६
प्रशृज चित्रा सुभगा प्रथाना	३५
पितुभृतो न तन्तुमित्	१८२
पुनःपुनर्जायमाना पुराणी	३३
पूर्वा विश्वस्माद् भुवनादबोधि	६०
पूर्वे अर्धे रजसो अपत्यस्य	७६
पृथू रथो दक्षिणाया अयो०	५९
प्रति केतवः प्रथमा अदृश्रन्	१६०
प्रति त्वा दुहितर्दिवः	१७५
प्रति त्वाय सुमनसो बुधन्त	१६४
प्रति त्वा स्तौमैरीळते वसिष्ठा	१५२
प्रति युतानामरुषासो	१४४
प्रति भद्रा अदृक्षत	१०७
प्रति धीमग्निर्जरते समिद्धः	१६१
प्रति ध्या सूनरी जनी	१०३
प्रति स्तोमेभिरुषसं	१७०
प्रत्यर्चा रुशदस्या अदर्शि	२८
प्रत्यु अदर्यायत्यु (त्यू) च्छन्ती	१७३; १८५
प्र बोधयोषः पृणतो मघोनि	८१
प्र मे पन्था देवयाना अदृश्रन्	१४८
भगस्य स्वसा वरुणस्य जामिः	६३
भद्रा ददृक्ष उर्विया वि भासि	१२७
भास्वती नेत्री सूनृतानां	३०; ४२
महे नो अय बोधय	११०
महे नो अय सुविताय	१४०
माता देवानामदितेरनीकं	५७
यच्च गोषु दुःष्वप्यं	१८७
यच्चित्रमप्य उषसो वहन्ति	५८
यच्चिद्धि ते गणा इमे	११४
यथा कलां यथा शफं	१९०
यदय भागं विभजासि	६१

यस्या रुशन्तो अर्चयः	१६
या गोमतीरुषसः सर्ववीरा	५६
यां त्वा दिवो दुहितर्वर्धयन्ति	१५९
यावयद् द्वेषसं त्वा	१०६
यावयद् द्वेषा ऋतपा ऋतेजाः	५०
या सुनीये शौचद्वये	१११
युक्ष्वा हि वाजिनीवती	३८
यूयं हि देवीऋतयुग्मिरश्वैः	९६
ये चिद्धि त्वामृषयः पूर्व ऊतये	१७
रयि दिवो दुहितरो विभातीः	१०१
रुशद्वत्सा रुशती श्वेलागा०	४०
वयं हि ते अमन्महि	२
वयश्चित् ते पतत्रिणो	२२
वहन्ति सीमरुणासो रुशन्तो	१२८
वाजिनीवती सूर्यस्य योषा	१४३
वि तद् ययुररुणयुग्मिरश्वैः	१३३
वि या सृजति समनं व्यर्थिनः	९
विश्वमस्या नानाम चक्षसे	११
विश्वं प्रतीची सप्रथाः	१५५
विश्वस्य हि प्राणनं जीवनं स्वे	१३
विश्वानि देवी भुवनाभिचक्ष्वा	३२
विश्वान् देवाँ आ वह सोमपीतये	१५
व्यजते दिवो अन्तेष्ववतून्	१६६

व्यजिभिर्दिव आतास्वयौ०	५९
व्युच्छन्ती हि रश्मिभिः	१३
व्युच्छा दुहितर्दिवो	११८
व्युषा आवः पथ्या जनानां	१६५
व्युषा आवो दिविजा ऋतेन	१३२
व्यूर्ष्वती दिवो अन्ताँ अबोधि	३४
शश्वत् पुरोषा व्युवास देवी	५१
श्रवः सूरिभ्यो अमृतं वसुत्वन्	१७८
श्रवो वाजमिषमूर्जं वहन्तीः	१३४
संज्ञानमसि कामधरणं	१८४
सत्या सत्येभिर्महती महद्भिः	१४५
सदशीरय सदशीरिदु श्वो	६६
सं नो राया बृहता विश्वपेशसा	१९
समान ऊर्वे अधि संगतासः	१५१
समानो अध्वा स्वसोरनन्त०	४१
सह वामेन न उषो	४
सा नो अद्याभरद् वसुः	१११
सा वह योक्षभिरवातो०	११०
सुगोत ते सुपथा पर्वतेषु	११९
सुपेशसं सुखं रथं	२१
सुसंकाशा मातृमृष्टेव	६९
स्यूमना वाच उदिर्यति वहिः	५५
स्वसा स्वस्वे ज्यायस्यै	७९

दैवत-संहितान्तर्गत-

उषादेवता-मन्त्राणां उपमा-सूची ।

अजितः न वोढ्वा ६,६४,३; १२८ तमः बाधते ।
 अजित न १,१२४,४; ७५ ससतः बोधयन्ती ।
 अपसः न १,९२,३; २६ नारीः विष्टिभिः आ परावतः अर्चन्ति ।
 उषा न ऊर्मयः ६,६४,१; १२६ उषसः श्रियः उत् अस्थुः ।
 अज्ञाता इव प्रतीची १,१२४,७; ७८ उषा एति ।
 अथा इव ४,५२,२; १०४ चित्रा अरुषी उषा ।
 अता इव ६,६४,३; १२८ शूरा शत्रून् अपेजते ।
 उषा इव बर्जहम् १,९२,४; २७ उषा वक्षः अपोर्णते ।
 (रणा) कृणम् ८,४७,१७; १९० दुःष्वप्यं आप्ले संनयामसि ।
 कृता इव १,१२३,१०; ६८ तन्वा शाशदाना ।
 (रणा) कलाम् ८,४७,१७; १९० दुःष्वप्यं आप्ले संनयामसि ।
 गर्गा इव १,१२४,७; ७८ धनानां सनये गर्त एति ।
 नो सर्गाः न ४,५१,८; ९९ ऋतस्य सदसः बुधानाः जरन्ते ।
 नो सर्गाः न ४,५२,५; १०७ उरु जयः आ अप्राः ।
 नवः न प्रवृत् १,९२,४; २७ विश्वस्मै भुवनाय ज्योतिः ।
 रुद्र इव ३,६१,३; ८७ समानं अर्थं चरणीयमाना ।
 रुद्रा इव ३,६१,७; ९१ माया पुरुषा भानुं वि दधे ।
 (रणा) चित् ५,७९,१; ११० नः अबोधयः ।
 चित्रा इव ८,१०१,१३; १७८ आयती प्रत्यदर्शि ।
 उषा इव पले उशती सुवासाः १,१२४,७; ७८ उषाः अप्सः ।
 उषा इव ७,७६,३; १४९ परि आ चरन्ती ।
 तन्तुं तं इव वा० य० २०,४१; १९२ पेशसा संवयन्ती ।
 (अयुधानि इव) धृष्णवः १,९२,१; २४ निष्कृण्वानः गावः प्रति ।
 गृध्र इव १,९२,४; २७ पेशांसि अधि वपते ।
 गोषा इव १,१२४,४; ७५ प्रियाणि आविः अकृत ।
 पक्ष न १,९२,१२; ३५ प्रथाना उर्विया व्यश्नैत् ।
 पशुपतः न १०,१७२,३; १८२ तन्तुं इत् प्रति धम् ।
 उषा १,९२,२; २५ वयुनानि अकृन् ।
 उषा ५,८०,६; १२५ युवतिः पुनः ज्योतिः अकः ।
 उषान्तो इव १,१२४,३; ७४ ऋतस्य पन्थां साधु एति ।
 उषान्तो इव ५,८०,४; १२३ दिशः न मिनाति ।

७ दै. [उषा]

प्रत्नवत् ६,६५,६; १३७ नः उच्छ ।
 भद्रा योषा इव ५,८०,६; १२५ नृन् अप्सः नि रिणीते ।
 भरद्वाजवत् ६,६५,६; १३७ नः धनं रिरीहि ।
 मातुः न सूनवः ७,८१,४; १७६ वयं ते स्याम ।
 यती इव ७,७६,३; १४९ पुनः न ददक्षे ।
 युवतिः [इव] १,१२३,१०; ६८ संस्मयमाना वक्षांसि आविः ।
 युवतिः अहयाणा ७,८०,२; १७१ सूर्यं आचिकितत् ।
 युवतिः न योषा ७,७७,१; १५४ उप रुच्ये ।
 योषा इव सूनरी १,४८,५; ८ प्रभुजती वा आ याति ।
 योषा इव १,१२३,११; ६९ सुसंकाशा तन्वं दशे आविः कृणुषे ।
 रत्नं न ७,८१,३; १७५ दाशुषे पुरु स्पाहं वहसि ।
 (वृषभस्य) रवेण ७,७९,४; १६८ त्वा प्रकाशेन जजुः ।
 (यथा) रात्री सवितुः प्रसूता १,११३,१; ३९ उषसे सवायं ।
 वायोः इव १,११३,१८; ५६ सूनूतानां उदकं ।
 विश्वः न युक्ताः ७,७९,२; १६६ उषासः अकृन्तु यतन्ते ।
 (समनगा इव) त्राः १,१२४,८; ७२ एषा अजि अङ्के ।
 (यथा) शफम् ८,४७,१७; १९० दुःष्वप्यं आप्ले संनयामसि ।
 शुन्ध्युवः न वक्षः १,१२४,४; ७५ एषा उपो अदर्शि ।
 शुभ्रा न ५,८०,५; १२४ तन्वः विदाना नः दशये अस्थात् ।
 (समुद्रे न) श्रवस्यवः १,४८,३; ६ अस्याः आचरणेषु रथाः ।
 श्रिये छन्दः न १,९२,६; २९ विभाती उषाः स्मरते ।
 श्वश्री इव कृतुः १,९२,१०; ३३ मर्तस्य आयुः जरयन्ती ।
 सविता इव बाह्व ७,७९,२; १६६ उषसः ज्योतिः यच्छन्ति ।
 सिन्धुः न क्षोदः १,९२,१२; ३५ उषाः उर्विया व्यश्नैत् ।
 (उद्यन्) सूर्यः [इव] १,१२४,१; ७२ उर्विया ज्योतिः अश्रेत् ।
 (रिपुं) स्तेनं यथा ५,७९,९; ११८ त्वां अर्चिषा नेत् तपाति ।
 स्यूमा इव ३,६१,४; ८८ (तमः) अव चिन्वती उषा याति ।
 (अध्वरेषु मिताः) स्वरवः इव ४,५१,२; ९३ चित्राः उषसः ।
 (विदथेषु) स्वरं न १,९२,५; २८ पेशः उषा अनक्ति ।
 स्नाती ऊर्ध्वा इव ५,८०,५; १२४ उषाः नः दशये अस्थात् ।
 हस्ता इव १,१२४,७; ७८ उषाः अप्सः नि रिणीते ।

दैवत-संहितान्तर्गत-

उषादेवताया गुणबोधक-पदानि ।

अङ्गिरस्तमा ७,७२,३; १६७
 अजरा १,११३,१३; ५१
 अजुर्याः ४,५१,६; ९७
 अदितेः अनीकम् १,११३,१९; ५७
 अद्रिसातुः ६,६५,५; १३६
 अध्वा समानः स्वस्त्रोः १,११३,३; ४१
 अनवथाः १,१२३,८; ६६
 अनीकम् अदितेः १,११३,१९; ५७
 अनुयच्छमाना ऋतस्य रश्मिम् १,१२३,१३; ७१
 अनुची [रात्र्युषसौ] १,११३,२; ४०
 अन्तिवामा ७,७७,४; १५७
 अभिपश्यन्ती जनानां वयुना ७,७५,४; १४२
 अभिष्टियुत्राः ४,५१,७; ९८
 अमर्त्या ३,६९,२; ८६
 अमिनती दैव्यानि व्रतानि १,२२,१२; ३५ । १२४,२;
 ७१
 अमीतवर्णा ४,५१,९; १००
 अमृतस्य केतुः ३,३९,३; ८७
 अमृता १,११३,१३; ५१
 अमृते [रात्र्युषसौ] १,११३,२; ४०
 अरुणस्युः ५,८०,१; १२०
 अरुषी १,३०,२१; २ । १२२,१-२; २४-२५ । ४,५२,
 २; १०४
 अर्किणी ८,१०१,१३; १७९
 अर्या १,१२३,१; ५९
 अवाता ६,६४,५; १३०
 अश्वदाः १,११३,१८; ५६
 अश्वं नयन्ती सुदृशीकं श्वेतम् ७,७७,३; १५६
 अश्वसूत्रता ५,७९,१-१०; ११०-११२
 अश्वा १,३०,११; २
 अश्वावती-तीः १,४८,२; ५ । ९२,१४; ३७ । १२३,
 १२; ७० । ७,४१,७; १३८ । ८०,३; १७२
 असितं अभ्वं गूहन्तीः ४,५१,९; १००
 अश्विनोः सखा ४,५२,२-३; १०४-१०५
 अश्वेधन्ती ५,८०,३; १२२
 अहना १,१२३,४; ६२

अहः प्रथमस्य नाम जानती १,१२३,९; ६७
 अहां नेत्री ७,७७,२; १५५

आपपृषी ४,५२,६; १०८
 आभरद्वसुः ५,७९,३; ११२
 आमिनाना विजः १,९२,१०; ३३
 आमिनाने वर्णम् [नक्तोषासा] १,११३,२; ४०
 आयती ३,६१,६; ९० । ७,८१,१; १७३ ।
 साम० ३०३; १८५

आयती अन्तः दशसु बाहुषु ८,१०१,१३; १७९
 आयतीनां प्रथमा १,१२४,२; ७३
 आयुः जरयन्ती १,२२,१०; ३३
 आयुः प्रतिरन्ती ७,७७,५; १५८
 आवहन्ती परेष्या वार्याणि १,११३,१५; ५३
 आवहन्ती स्वर ५,८०,१; १२०
 आविष्कृष्वती विश्वा भुवनानि ७,८०,१; १७०
 आविष्कृष्वाना तन्वम् ५,८०,४; १२३
 आविष्कृष्वाना महिमानम् ७,७५,१; १३९

इन्द्रतमा ७,७९,३; १६७
 इषं दधती ७,७७,५; १५८
 इषं वहन्ती १,९२,३; २६

ईयुषीणां शश्वतीनां उपमा १,११३,१५; ५३
 ईरयन्ती सूनता १,११३,१२; ५० । ३,६०,१; ८६ ।
 ७,७९,५; १६९
 ईशाना वस्वः विश्वस्य पार्थिवस्य १,११३,७; ४५
 ईशिषे वस्वः ४,५२,३; १०५
 ईशे वसूनां रायः ७,७५,५; १४३

उच्छन्ती १,९२,६; २९ । १२४,१; ७२ । ४,५१,१;
 ९४ । ६,६५,१; १३२ । ७,७६,७; १५३ । ८१,१;
 ४; १७३,१७६ । साम० ३०३; १८२
 उच्छन्ती व्रजस्य तमराः द्वारा ४,५१,२; ९३
 उदीरयन्ती जीवम् १,११३,८; ४६
 उपमा ईयुषीणां शश्वतीनाम् १,११३,१५; ५३ । ११४,
 २; ७३
 उर्विष्य १,९२,१२; ३५ । ६,६४,२,३; १२७; १२८

उषाः } प्रायः सर्वत्र ।
उषसः }

कृतजातसत्या ४,५१,७; ९८

कृतपाः १,११३,१२; ५०

कृतय सदसः ४,५१,८; ९९

कृतावरी ३,६९,६; ९० । ४,५२,२; १०४ । ५,८०,
१; १२०

कृतेजाः १,११३,१२; ५०

कृषिपुता ७,७५,५; १४३

कृषा ६,६४,४; १२९

पृथुषीणां शश्वत्तमा १,१२४,४; ७५

ओदती १,४८,६; ९

कृषप्रिया १,३०,२०; १

कृषती ज्योतिः भुवनाय १,९२,४; २७

कृषती पथः सुगान् ५,८०,२; १२१

कृषुः १,९२,१०; ३३

कृषुः १,१२४,११; ८२

कृषुः अमृतस्य ३,६१,३; ८७

कृषुः यज्ञस्य १,११३,१९; ५७

गवां जनित्री १,१२४,५; ७६

गवां नेत्री ७,७६,६; १५२

गवां माता ४,५६,२-३; १०४-१०५ । ७,७७,१;
१५५

गवः १,९२,१; २४

गृह्णती अम्बं असितम् ४,५१,९; १००

गृणाना ७,७९,४; १६८

गृणाना वक्षिभिः ७,७५,५; १४३

गोभिः अरुणेभिः युजाना ५,८०,३; १२२

गोमती-तीः १,४८,२; ५ । ९२,१४; ३७ । ११३

१८; ५६ । १२३,१२; ७० । ७,४१,७; १३८ ।
८०,३; १७२

घृतं दुहाना ७,४१,७; १३८ । ८०,३; १७२

चन्द्रया ३,६१,२; ८६ । ६,६५,२; १३३

चरणयमानां समानं अर्थम् ३,६१,३; ८७

चरायै विष्वं जीवं प्रसुवन्ती ७,७७,१; १५४

चिकित्वित् ४,५२,४; १०६

चिकित्सन्ती मातृषाणां क्षयाय १,१२३,१; ५९

*

चित्रा १,३०,११; २ । ९२,१२; ३५ । ११३,४;
४२ । ४,५१,२; ९३

चित्रामघा १,४८,१०; १३ । ७,७५,५; १४३ ।

७७,३; १५६

चेकिताना १,११३,१५; ५३

चोदयन्ती देवदेवं राधसे ७,७९,५; १६२

चोदयित्री मघोनः ७,८१,६; १७८

जननी स्वर ३,६१,४; ८८

जनानां पथ्या ७,७९,१; १६५

जनानां वयुना अभिपश्यन्ती ७,७५,४; १४२

जनियो गवाम् १,१२४,५; ७६

जनी ४,५१,१; १०३

जयन्ती वाजम् १,१२३,२; ६०

जरयन्ती मर्तस्य आयुः १,९२,१०; ३३

जरयन्ती वृजनम् १,४८,५; ८

जानती प्रथमस्य अहः १,१२३,९; ६७

जामिः वरुणस्य १,१२३,५; ६३

जायमाना पुनःपुनः १,९२,१०; ३३

जारयन्ती १,१२४,१०; ८१

जारस्य योषा १,९२,११; ३४

जीरा रथानाम् १,४८,३; ६

जीवं उदीरयन्ती १,११३,८; ४६

ज्योतिः कृष्वती भुवनस्य १,९२,४; २७

ज्योतिः यच्छन्ती ७,७८,३; १६२

ज्योतिः वसाना १,१२४,३; ७४

ज्योतिषा [निवारयन्ती] गृह्णी तमः ७,८०,२; १७१

ज्योतिषां श्रेष्ठं ज्योतिः १,११३,१; ३९

तन्वं आविष्कृष्वाना ५,८०,४; १२३

तन्वः विदाना ५,८०,५; १२४

तमः गृह्णी ज्योतिषा (निवारयन्ती) ७,८०,१; १७१

तमांसि अप बाधमाना ५,८०,५; १२४ । ७,७८,२;
१६१

तमांसि बाधमाना ७,७७,१; १५४

दक्षिणा १,१२३,१,५; ५९,६३ । ६,६७,१; १२६

दधती इषं राधः (च) ७,७८,५; १५८

दधाना नव्यं आयुः ७,८०,२; १७१

दधाना नाम अधि १,१२३,४; ६१

दधाना रयिं दीर्घश्रुतम् ७,७६,७; १५३

दर्शता ५,८०,२; १२१। ६,६४,५; १३०। ७,७५,
३; १४१

दाशुषे वार्याणि व्यूर्ण्वती ५,८०,६; १२५

दास्यती १,४८,१; ४

दिवः अन्तान् व्यूर्ण्वती १,९५,११; ३४

दिविजाः ७,७५,१; १३९

दिवोजाः ६,६५,१; १३२

दिवित्मती ५,७९,१; ११०

दिवो दुहिता-तरः १,३०,२२; ३। ४८,१,८-९; ४,

११-१२। ४९,२; २१। ९२,५,७; २८,३०। ११३,

७; ४५। १२४,३; ७४। ४,५१,१,१०; ९२,

१०१। ४,५२,१; १०३। ५,७९,२-३, ८-९;

११०-१११, ११७-११८। ८०,५-६; १२४-१२५।

६,६४,४-५; १२९-१३०। ६५,६; १३७। ७,७५,

४; १४२। ७७,६; १५९। ७८,४; १६३।

७९,३; १६७। ८१,१,३,५। १७३, १७५, १७७। ८,

४७, १४-१५; १८७-१८८। साम० ३०३; १८५

दुरिता विद्या अप बाधमाना ७,७८,२; १६१

दुहानाः घृतम् ७,४१,७; १३८। ८०,३; १७२

दुहिता ६,६५,१; १३२

दुहिता दिवः 'दिवो दुहिता' द्रष्टव्यम्।

दशाना सूर्यस्य रश्मिभिः १,११३,१२; ३५

देवदेवं राधसे चोदयन्ती ७,७९,५; १६९

देववीर्ति विभ्रती १,११३,१२; ५०

देवशिष्टे [रात्र्युषसौ] १,११३,३; ४१

देवाना चक्षुः वहन्ती ७,७७,३; १५६

देवानां माता १,११३,१९; ५७

देवी-वीः १,४८,१,३, १५; ४,६,१८। ९२,९-१०

३२-३३। ११३, १३-१४; ५१, ५२। १२३, ३, १०;

६१, ६८। १२४, १२-१३; ८३-८४। ३, ६१, १-२, ५;

८५-८६, ८२। ४, ५१, ८, १०; ९५-९६, ९९, १०१।

५, ८०, १, ३; १२०, १२२। ६, ६४, २, ५-६; १२७,

१३०-१३१। ७, ७५, २, ७; १४०, १४५। ७७, ५;

१५८। ७८, २; १६१। ७९, ३; १६७। ८१, ४;

१७६। वा० य० २८, १४, ३७; १९३-१९४।

द्युतदामा (मन्) ५, ८०, १; १२०

द्युताना ७, ७५, ६; १४४

द्योतना १, १२३, ४; ६२

द्विबर्हाः ५, ८०, ४; १२३

नक्तोषासा [देवते] १, ११३, ३; ४१

नयन्ती यज्ञस्य अग्रम् ६, ६५, २; १३३

नयन्ती सुदृशीकं श्वेतं अश्वम् ७, ७७, ३; १५६

नव्यं आयुः दधाना ७, ८०, २; १७१

नव्यसी-सीः ३, ६१, ३; ८७। १, १२४, ९; ८०

नाम अधि दधाना १, १२३, ४; ६२

नारीः १, ९२, ३; २६

निष्कृतं अहरहः आचरन्ती १, १२३, ९; ६७

नीची ८, १०१, १३; १७९

नेत्री अहाम् ७, ७७, २; १५५

नेत्री गवाम् ७, ७६, ६; १५२

नेत्री सूत्रतानाम् १, ९२, ७; ३०। ११३, ४; ४२।

७, ७६, ७; १५३

पत्यमानाः ६, ६५, ३; १३४

पत्नी भुवनस्य ७, ७५, ४; १४२

पत्नी स्वसरस्य ३, ६१, ४; ८८

पथः रदन्ती सुविताय ५, ८०, ३; १२२

पथः सुगान् कृण्वती ५, ८०, २; १२१

पथ्या जनानाम् ७, ७९, १; १६५

पप्रथानाः समानतः समना ४, ५२, ८; ९९

पयस्वती वा० य० २०, ४१; १९२

पराकात् युजाना ७, ७५, ४; १४२

पावकाः ४, ५१, २; ९३

पुनःपुनः जायमाना १, ९२, १०; ३३

पुनर्भूः १, १२३, २; ६०

पुरन्धिः ३, ६१, १; ८५

पुराणी १, ९२, १०; ३३। ३, ६१, १; ८५। ४, ५१, १;

९७

पुरुतमा १, १२४, ६; ७७

पुरुषुता ५, ८०, २; १२२

पूर्वहृतौ प्रथमा १, १२३, २; ६०

पृणन्ती उमा १, १२४, ५; ७६

पृथुयामा (मन्) ६, ६४, ४; १२९

प्रचेताः ३, ६१, १; ८५

प्रजानती इव १, १२४, ३; ७४। ५, ८०, ४; १२३

प्रतिबुध्यमानाः स्योनात् वः ४, ५१, १०; १०१

प्रतिरन्ती आयुः ७, ७७, ५; १५८

प्रतीची १, ९२, ९; ३२। ५, ८०, ६; १५५। ७, ७६, ७;

१४८

प्रतीची पुंसः १,१२४,७; ७८
प्रतीची विधम् ७,७७,२; १५५
प्रतीची विश्वा भुवनानि ३,६१,३; ८७
प्रथमा १,१२३,५; ६३ । ७,७६,६; १५२
प्रथमा आयतीनाम् १,१२४,२; ७३
प्रथमा आयतीनां शश्वतीनाम् १,११३,८; ४६
प्रथमा पूर्ववृत्तौ १,१२३,२; ६०
प्रथमा विभातीनाम् १,११३,१५; ५३
प्रथमा विश्वस्मात् भुवनात् १,१२३,२; ६०
प्रधाना १,९२,१२; ३५ । ६,६४,३; १२८
प्रदोष्याना अम्याभिः १,११३,१०; ४८
प्रतीताः विधतः ७,४१,७; १३८ । ८०,३; १७२
प्रदोषयन्ती अरुणैः अश्वैः १,११३,१४; ५२
प्रदोषयन्ती ससन्तम् ४,५१,५; ९६
प्रभुवती १,४८,५; ८
प्रभूता विश्वं अनु ७,७७,३; १५६
प्रमिनती मनुष्या युगानि १,९२,११; ३४ । १२४,२; ७२
प्रशस्तिवृत् १,११३,१९; ५७
प्रश्वन्ती विश्वं जीवं चरायै ७,७७,१; १५४
वाधमाना तमांसि द्वेषः अप ५,८०,५; १२४
वाधमाना तमांसि विश्वा दुरिता अप ७,७८,२; १६१
वाधमाना तमांसि ७,७७,१; १५४
विप्रती देववीतिम् १,११३,१२; ५०
विप्रती रुशत् शुक्रं वासः ७,७७,२; १५५
वृत्ती १,११३,१९; ५७ । ५,८०,२; १२१ । वा० य०
१०,४१, १९३
वृत्ती ऋतेन ५,८०,१; १२०
वृद्धया ५,८०,२; १२१
बोधयन्ती जनम् ५,८०,२; १२१
बोधयन्ती पञ्चमानुषीः क्षितीः ७,७९,१; १६५
बोधयन्ती विश्वं जीवम् १,९२,२; ३२
बोधयन्ती ससतः १,१२४,४; ७५
मगस्य स्वसा १,१२३,५; ६३
मदा १,१२३,११; ६९ । ६,६४,२; १२७
मदाः ४,५१,७; ९८ । ७,४१,७; १३८ । ८०,३;
१७२
मदा नाम वृद्धमानाः १,१२३,१२; ७०
मासती १,९२,७; ३०
भुवनस्य पत्नी ७,७५,४; १४२

भुवनानि विश्वा आविष्कृष्वती ७,८०,१; १७०
भुवनानि विश्वा प्रतीची ३,६१,३; ८७
मंहना ७,८१,४; १७६
मंहना पूर्ववृत्तौ ६,६४,५; १३०
मघोनः चोदयित्री ७,८१,६; १७८
मघोनी १,४८,८; ११ । ११३,५,१३,१७; ४३,५१,
५५ । १२४,१०; ८१ । ३,६१,४; ८८ । ४,५१,३
९४ । ५,७९,४,६-७; ११३,११५-११६ । ६,६४,१;
१२६ । ६५, ३, ६; १३४,१३७ । ७, ७५, ५;
१४५ । ७७,४; १५७ । ७८,४; १६३ । ७९,३;
१६२
मधुधा ३,६९,५; ८९
मर्त्यत्रा १,१२३,३; ६१
महती ७,७५,७; १४५
महिमानं आविष्कृष्वाना ऋतेन ७,७५,१; १३९
मही ३,६९,७; ९१ । ७,८१,४; १७६
मातरः १,९२,१; २४
माता गवाम् ४,५२,२-३; १०४-१०५ । ७,७७,२;
१५५
माता देवानाम् १,११३,१९; ५७
मातृमृष्टा १,१२३,११; ६९
माया मित्रस्य वरुणस्य ३,६१,७; ९१
मृतं बोधयन्ती १,११३,८; ४६
यच्छन्तीः ज्योतिः ७,७८,३; १६२
यजता ७,७५,७; १४५
यज्ञस्य केतुः १,११३,१९; ५७
यतमानाः सूर्यस्य रश्मिभिः १,१२३,१२; ७०
यावयद् द्वेषाः १,११३,१२; ५० । ४,५२,४; १०६
युगानि मनुष्या प्रमिनती १,९२,११; ३४ । १२४,२;
७२
युजाना अरुणेभिः गोभिः ५,८०,३; १२२
युजाना पराकात् ७,७५,४; १४२
युवतिः १,११३,७; ४५ । १२३,२,१०; ६०,६८ ।
१२४,११; ८२ । ३,६१,१; ८५ । ५,८०,६; १२५
युवतिः अहयाणा ७,८०,२; १७१
योषा १,१२३,२; ६७
योषा जारस्य १,९२,११; ३४
योषा सूर्यस्य ७,७५,५; १४३

रजसी समना विवर्तयन्ती ७,८०,१; १७०
 रण्वसंहक् ३,६१,५; ८९
 रत्नभाक् ७,८१,४; १७६
 रथानां जीरा १,४८,३; ६
 रदन्ती पथः सुविताय ५,८०,३; १२२
 रथि दीर्घश्रुतं दधाना ७,७६,७; १५३
 रश्मि ऋतस्य अनुयच्छमाना १,१२३,१३; ७१
 रश्मिभिः व्यक्ता ७,७७,३; १५६
 रश्मिभिः सूर्यस्य दशाना १,९२,१२; ३५
 रश्मिभिः सूर्यस्य यतमानाः १,१२३,१२; ७०
 रुचानाः ४,५१,९; १००
 रुशती १,११३,२; ४०
 रुशद्वत्सा १,११३,२; ४०
 रुशन्तः ६,६४,१,३; १२६,१२८
 रूपा ८,१०१,१३; १७२
 रेवती ४,५१,४; ९५
 रोचना ३,६१,५; ८२
 रोचमानाः ६,६४,१; १२६
 रोहिण्या ८,१०१,१३; १७२
 वनन्वती ७,८१,३; १७५
 वरुणस्य जामिः १,१२३,५; ६३
 वर्ण आमिनानि [नक्तोषासा] १,११३,२; ४०
 वसाना ज्योतिः १,१२४,३; ७४
 वसूनां रायः ईशे ७,७५,५; १४३
 वस्वः ईशिषे ४,५२,३; १०५
 वस्वी ६,६४,१; १२६
 वहन्तीः इषम् १,९२,३; २६
 वहन्तीः दाशुषे श्रवः वाजं इषं ऊर्जम् ६,६५,३; १३४
 वहन्ती देवानां चक्षुः ७,७७,३; १५६
 वह्निभिः गृणाना ७,७५,५; ११३
 वाजं जयन्ती १,१२३,२; ६०
 वाजपत्नी ७,७६,६; १५२
 वाजप्रसूता १,९२,८; ३१
 वाजिनी वाजेन ३,६१,१; ८५
 वाजिनीवती १,४८,६,१६; ९,१९ । १२३,१३,१५;
 ३६,३८ । ७,७५,५; १४३
 वार्याणि षोडशा आवहन्ती १,११३,१५; ५३
 वार्याणि व्यूर्ध्वती ५,८०,६; १२५

वावशाना पूर्वाः १,११३,१०; ४८
 विजः आमिनाना १,९६,१०; ३३
 विद्वाना तन्वः ५,८०,५; १२४
 विभाती १,९२,६; २९ । १२३,१०; ६८ । १२४,५;
 ७७ । ३,६१,५-६; ८९-९० । ४,५१,१,१०-११; ९३,
 १०१-१०२ । ५,८०,१; १२० । ७,७८,४; १६३
 विभातीः १,११३,१७; ५५ । १२३, ६; ६४ ।
 ७,७८,३,५; १६२, १६४
 विभातीनां प्रथमा १,११३,१५; ५३
 विभावरी १,३०,२०; १ । ४८,१,१०; ४,१३ । ११,
 १४; ३७ । ४,५२,६; १०८ । ५,७९,४,१०; ११३,
 ११९ । ८,४७,१४; १८७
 विरूपे [नक्तोषासा] १,११३,३; ४१
 विवर्तयन्ती रजसी समन्ते ७,८०,१; १७०
 विवासयन्ती १,११३,११; ४९
 विश्वं अनु प्रभूता ७,७७,३; १५६
 विश्वं जीवं चरायै प्रसुवन्ती ७,७७,१; १५४
 विश्वं प्रतीची ७,७७,२; १५५
 विश्वतः प्रपीताः ७,४१,७; १३८ । ८०,३; १७२
 विश्वमिन्वा ५,८०,२; १२१
 विश्ववारा १,११३,१९; ५७ । ३,६१,१; ८५ । ५,
 ८०,३; १२२ । ७,७७,५; १५८
 विश्ववाराः १,१२३,१२; ७०
 विश्वसुविदः १,४८,२; ५
 विश्वस्य वस्वः पार्थिवस्य ईशाना १,११३,७; ४५
 विहायाः १,१२३,१; ५२
 वीरवतीः ७,४१,७; १३८ । ८०,३; १७२
 वृजनं जरयन्ती १,४८,५; ८
 व्रतानि दैव्यानि अमिनती १,९२,१२; ३५ । १२३,१;
 ७३
 व्यक्ता रश्मिभिः ७,७७,३; १५६
 व्युच्छन्ती [तमांसि] १,४८,२; १२ । ४२,४; १३ ।
 ११३,७-८; ४५-४६ । ५,७९,१०; ११९ । ७,७९,
 ५; १६९
 व्युच्छन्ती सूर्यस्य रश्मिभिः १,१२४,८; ७९
 व्युच्छन्ती स्वसुः परि ४,५२,१; १०३
 व्यूर्ध्वती दाशुषे वार्याणि ५,८०,६; १२५
 व्यूर्ध्वती दिवो अन्तात् १,९२,११; ३४
 व्येनी ५,८०,४; १२३

शश्वत्तमा एयुषीणास् १,१२४,४; ७५
 शाश्वदाना १,१२३,१०; ६८
 शाश्वदाना अरेपसा तन्वा १,१२४,६; ७७
 शुक्रा १,१२३,९; ६७
 शुक्राः रुशङ्गः तनूभिः ४,५१,९; १००
 शुक्रं वासः विप्रती ७,७७,९; १५५
 शुक्रवासाः १,१२३,७; ४५
 शुचयः ४,५१,२,९; ९३,१००
 शुभ्राः ४,५१,६; ९७ । ७,७५,६; १४४
 शुम्भमाना १,९२,१०; ३३
 शुम्भमाना महोभिः ६,६४,२; १२७
 श्रेष्ठतमा १,१२३,१२; ५०
 श्वितीचो १,१२३,९; ६७
 श्वेला १,१२३,२; ४०
 संसयमाना १,१२३,१०; ६८
 सखा अधिनोः ४,५२,२-३; १०४-१०६
 सखा ७,७५,७; १४५
 सदसः ऋतस्य ४,५१,८; ९९
 सदशीः ४,५१,६; ९७
 सदशीः अथ १,१२३,८; ६६
 सदशीः श्वः १,१२३,८; ६६
 सदुत्री १,१२३,२; ६०
 सप्रथाः ७,७७,९; १५५
 सधनसा [नक्तोषासा] १,१२३,३; ४१
 सधना ४,५१,८-९; ९९-१००
 सधना पप्रधानाः ४,५१,८; ९९
 सधनबन्धू [नक्तोषासा] १,१२३,२; ४४
 सधनोः ४,५१,९; १००
 सर्ववीराः १,१२३,१८; ५६
 सधतः बोधयन्ती १,१२४,४; ७५
 सधन्ते प्रबोधयन्तीः ४,५१,५; ९६
 सिधासन्ती १,१२३,४; ६२
 सुजाता १,१२३,३; ६१ । ५,७९,१-२०; ११०-
 ११९ । ७,७६,६; १५२ । ७,७६; १५९
 सुदेया ३,६१,४; ८८
 सुदिनाः १,१२४,९; ८०

सुदुधे [उषासानक्ता] वा० य० २०,४१; १९२
 सुदशीकंसंहक् ७,७२,२; १५५
 सुधिते [उषासानक्ता] वा० य० २८,१४; १२३
 सुप्रतीका १,९२,६; २९
 सुप्रीते [उषासानक्ता] वा० य० २८,१४; १९३
 सुमगा १,४८,७; १० । ११३,७; ४५ । ९२,८,१२;
 ३१,३५ । ३,६१,४; ८८ । ६,६४,३; १२८ ।
 ७,७६,६; १५२ । ७,७३; १५६
 सुमङ्गली १,१२३,१२; ५०
 सुमेके १,१२३,३; ४१
 सुम्रावरी १,१२३,१२; ५०
 सुक्कमे [उषासानक्ता] वा० य० २०,४१; १२२
 सुविताय पथः रदन्ती ५,८०,३; १२२
 सुसंकाशा १,१२३,११; ६९
 सूनरी १,४८,५,८,१०; ८,११,२३ । ४,५२,१; १०३ ।
 ७,८१,१; १७३ । साम० ३०३; १८५
 सूनुता १,१२३,५; ६३ । १२४,१०; ८१
 सूनुतावती १,९२,१४; ३७ । ७,८१,६; १७८
 सूनुतावरी ४,५२,४; १०६
 सूनुताः ईरयन्ती १,१२३,१२; ५० । ३,६१,२; ८६ ।
 ७,७९,५; १६९
 सूनुतां नेत्री १,९२,७; ३० । ११३,४; ४२ । ७,७६,७;
 १५३
 सूर्यस्य योषा ७,७५,५; १४३
 सौभाग्यं आवहन्ती १,४८,९; १२
 स्तोम्याः १,१२४,१३; ८४
 स्योनात् वः प्रतिबुध्यमानाः ४,५१,१०; १०१
 स्वमानुः ६,६४,४; १२९
 स्वर आवहन्ती ५,८०,१; १२०
 स्वर जनन्ती ३,६१,४; ८८
 स्वसरस्य पत्नी ३,६१,४; ८८
 स्वसा भगस्य १,१२३,५; ६३
 स्वसारौ [नक्तोषासा] १,१२३,३; ४१
 स्वसुः परि व्युच्छन्ती ४,५२,१; १०३
 द्विरण्यवर्णा ३,६१,२; ८६ । ७,७७,२; १५५

अग्निदेवतामन्त्रान्तर्गत-

आग्नीसूक्तेषु ' उषासानक्ता ' -देवताया गुणबोधक-पद-संग्रहः ।

इन्द्रस्य धेनू	२०८९	मातरा	२०८९
उक्षिते	१९४७	मातरा ऋतस्य	१९२४
उपाके	१९५८; १९२४	यजते	२००८
उपाके	२०७९	यजते	२०७९
उभे	२१००	यह्नी	१९२४
उशती	१९९७	यह्नी	२०३१
उषे	२०४२	योषणे	२००८
ऋतस्य मातरा	१९२४; १९६९	योषणे	१९७३
चरन्ती मित्रावरुणा अन्तरा	२१११	योषणे दिव्ये	२०६६
ततं तन्तुं संवयन्ती	१९४७	रण्विते	१९४७
दधाने शुक्रपिशम्	२००८	वयोवृधा	१९६९
दर्शते	१९८६	वय्या इव	१९४७
दर्शते	२१००	शुक्रपिशं दधाने	२००८
दिवः दुहितरा	१९२७	विरूपे	१९५८
दिव्ये	१९७९	संवयन्ती ततं तन्तुम्	१९४७
दिव्ये (योषणे)	२००८	संविदाने	२१११
दिव्ये योषिते	२०६६	संस्मयमाने	२१३५
दुहितरः दिवः	१९९७	संजानाने	२०३१
देवी	१९२७	समीची	१९४७
धेनू इन्द्रस्य	२०८९	सवातरौ	२०८९
नृः पतिभ्यः योनिं कृण्वाने	२१३५	सनता	१९४७
पयस्वती	१९४७	सुदुधे	१९४७
पुरुहते	१९७९	सुपेशसा	१९१२; २०४१
बर्हिषदा	१९७२	सुपेशसा	१९२४; २१३५
बृहती	१९८६	सुपेशसा	१९३६; २१००
बृहती	२००८	सुपेशसा	२०१९; २०५४
बृहती	२१००	सुपेशसा	२०३१; २०४१
बृहती	२१३५	सुपेशसा	१९६९
भन्दमाने	१९२४	सुप्रतीके	१९३६; २००८
मघोनी	१९७९	सुरुक्मे	१९८६ } २००८
मही	१९७९	सुशिल्पे	१९९७ } २१००
मही	१९८६		२८०८; २०७९
मही	२०८९	सुष्वयन्ती	२१११
		सुहिरण्ये	



दैवत-संहिता ।

(९)

अदितिः, आदित्याश्च ।

संपादक

पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर
साहित्यवाचस्पति, गीतालंकार
अध्यक्ष- स्वाध्याय-मण्डल

[स्व. नारायणजी पुरुषोत्तम विश्वस्तनिधिके बंबई निवासी विश्वस्तोंने
संपूर्ण 'दैवत-संहिता' के मुद्रणके लिये १५०००) रु०
दिये, इस धनके भागसे यह विभाग मुद्रित हुआ है ।]

स्वा ध्या य-म ण्ड ल, पा र डी

संवत् २०१६, शक १८८१, सन् १९५९

प्रकाशक :

वसन्त श्रीपाद सातवलेकर, बी. ए.,

स्वाध्याय-मण्डल, भारत मुद्रणालय,

पोस्ट- 'स्वाध्याय मण्डल (पारडी)'

पारडी (जि. सुरत)

द्वितीय बार

मूल्य ३) रु.

मुद्रक :

वसन्त श्रीपाद सातवलेकर, बी. ए.,

स्वाध्याय-मण्डल, भारत मुद्रणालय,

पोस्ट- 'स्वाध्याय-मण्डल (पारडी)'

पारडी (जि. सुरत)



आदित्योंके कार्य और उनकी लोकसेवा

जिस प्रकार अश्विनौ सदैव जनताके हितके लिए कार्य करनेमें लगे रहते हैं वैसे ही आदित्य अर्थात् अदिति के पुत्र भी जन-सेवाको बड़े ही स्पृहणीय ढंग से प्रचलित रखते हैं। अदिति याने अर्दीनता, अखंडता एवं पूर्णता के इन पुत्रोंने वीरतापूर्वक और साहस से कार्य करके एवं जनताकी रक्षा करके लोगोंका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर लिया है अतः भक्त तथा उपासक इन आदित्यों से क्या कहते हैं सो वेदके शब्दोंमें देखना ठीक होगा।

जनताके सम्मुख अपनी रक्षाकी समस्या सदैव उठखड़ी होती है। अतः अपना संरक्षण भलीभाँति हो ऐसी तीव्र लालसा हमेशा जनमनमें जागृत रहती है और देवतारूपी सभी भूगोच्य एवं कार्यक्षम व्यक्तियों से इसी संबंधमें वारंवार निवेदन किया जाता है। जैसे—

अपना संरक्षण

तान् तु क्षत्रियान् अव आदित्यान् याचिषामहे ।

(ऋ. ८।६।११)

‘कन विख्यात आदित्यों के सम्मुख, जो कि क्षत्रिय हैं, हम संरक्षणको माँग पेश करते हैं।’

महि वो महतामवो ... अवांस्यावृणीमहे ।

(ऋ. ८।६।१४)

‘आप जैसे महान् लोगोंके संरक्षण बहुत बड़े होते हैं इसलिए हम आपको संरक्षण आयोजनाओं को स्वीकृत करते हैं।’

महि वो महतामवो ... दाशुषे । यं आदित्या अमि नुहो रक्षथा न ई अघं नशत् ... ॥

(ऋ. ८।४।११)

‘आप जैसे बड़े वीरोंका दानी पुरुषके लिए दिया हुआ संरक्षण बड़ा है क्योंकि जिसे आदित्य द्वेष्टाओं से बचाते हैं उसे आप या धुराई घेर नहीं सकती है।’

१ दे. [आदित्य]

स्यामेदिन्द्रस्य शर्मणि आदित्यानामुतावसि ।

(ऋ. ८।४।१५)

‘हम लोग प्रभु इन्द्रके सुखकी या आदित्योंके संरक्षण की छत्रछाया में रहें।’

... अनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ।

(ऋ. ८।४।११)

‘आप आदित्योंकी रक्षाएं निर्दोष, निष्पाप एवं सुन्दर हैं।’

आदित्या विश्वे... तुष्टुवाना यूयं पात स्वस्तिभिः

सदा नः ।

(ऋ. ७।५।१३)

‘आप सारे आदित्य प्रशंसित होनेपर हमेशा कल्याणकारक बातों से हमारी रक्षा कीजिए।’

आदित्यानामवसा नृतनेन सक्षीमहि शर्मणा

शान्तमेन ।

(ऋ. ७।५।१२)

‘हम लोग आदित्योंकी नई रक्षासे एवं अत्यन्त शक्तिदायक सुखसे जुड़ जायें।’

आदित्यासो अदितिर्मादयन्तां ... अस्माकं सन्तु

भुवनस्य गोपाः पिबन्तु सोमं अवसे नो अघ ।

(ऋ. ७।५।१२)

‘अदिति और आदित्य हर्षित हों और हमारे भुवन के संरक्षक बनें तथा आज हमारी रक्षा करनेमें उत्साह मिल जाय इसलिए सोमरसका पान करें।’

गुप्ते देवा अपि षमसि युध्यन्त इव वर्मसु ।

यूयं महो न एनसो यूयमर्भादुरुष्यथ ॥ (ऋ. ८।४।१८)

‘हे दानी या द्योतमान आदित्यो! तुम्हारे सहारे हम ऐसे रहते हैं मानों कवचधारी लोग लड़ते हों, याने वे जैसे निर्भय हुआ करते वैसे ही हम हैं और आप हमें बड़े एवं छोटे पापसे बचाते हैं।’

शश्वत् हि वः सुदानव आदित्या ऊतिभिर्वयं

पुरा नूनं बुभुजमहे ॥

(ऋ. ८।६।१६)

‘हे अच्छे दानी ! अदितिके पुत्रो ! हमेशा ही हम लोग आपकी रक्षाओं से पहले तथा अब भी सुखोंका उपभोग लेते रहते हैं ।’

ते न आस्नो वृकाणामादित्यासो मुमोचत ।

स्तेनं वद्धं हवादिते ॥ (ऋ. ८।६७।१४)

‘हे अदिति ! एवं वे ऐसे विख्यात आदित्यो ! हमें भेडिये जैसे कूर तथा लालची लोगोंके मुँहसे ऐसे छुड़ाओ जैसे बाँधकर रखे हुए चोरको छुड़ाया जाता है ।’

ये मूर्धानः क्षितीनां अदग्धासः स्वयशसा ।

व्रता रक्षन्ते अद्रुहः ॥ (ऋ. ८।६७।१३)

‘जो आदित्य द्वेष न करते हुए अपनी अर्जित यशस्वित्ता के कारण न दबाये हुए होकर मानवों के अप्रभाग में रहते हैं और व्रतोंकी रक्षा करते हैं ।’

धारयन्त आदित्यासो जगत् स्था देवा विश्वस्य भुवनस्य गोपाः.....रक्षमाणा असुर्यम् ।

(ऋ. २।२७।४)

‘ये देवतारूपी आदित्य ! अखिल भुवनके संरक्षक होते हुए जंगम तथा स्थावर का धारण करते हैं और प्राणशक्तियों को बचाते हैं ।’

विद्यां आदित्या अवसो वो अस्य...यत्...भय आ चित् मयोभु ।

(ऋ. २।२७।५)

‘हे अदितिके पुत्रो ! मैं चाहता हूँ कि आपकी इस रक्षासे परिचित हो जाऊँ जो रक्षा भय के अवसरपर भी सुखदायक बनी रहती है ।’

इन ऊपर दिये हुए मंत्रों और मन्त्रभागोंसे स्पष्ट दिखाई देता है कि जनताकी रक्षा करनेमें अदिति के पुत्र बड़े सिद्ध-हस्त थे, अतः लोग भी आदित्यों की संरक्षण आयोजना से लाभ उठानेमें अत्यन्त उत्सुक रहा करते थे । वेद में ऐसे निर्देश मिलते हैं कि लोगों का नेतृत्व भी आदित्य सफलतापूर्वक कर लिया करते थे और जो लोग मार्ग भूल भटक होते हैं तथा जो अन्धकार में रहते हैं उनके पथप्रदर्शन तथा प्रकाशमान का कार्य आदित्य सफलतापूर्वक पूर्ण करते हैं जैसे—

प्रकाशके वीर

आदित्या ... युष्मानीतो अभयं ज्योतिरश्चाम् ।

(ऋ. २।२७।११)

‘हे आदित्यो ! तुम्हारे नेतृत्वमें मैं निर्भयता से पूर्ण प्रकाश को प्राप्त कर लूँ ।’

...पुत्रासो अदितेः...मर्त्याय ज्योतिर्यच्छन्त्य-जस्त्रम् ।

(ऋ. १०।१८५।३)

‘आदित्य मानव को लगातार उजेली या प्रकाशपुत्र देते हैं ।’

मृळ यद्दो वयं चक्षुमा कच्चिददागः । उरु अस्यां अभयं ज्योतिः...मा नो दीर्घा अभि नशन् तमिच्छाः ॥

(ऋ. २।२७।१४)

‘यद्यपि हम से आप का कुछ अपराध हुआ हो तो भी हमें सुख दो; मैं विशाल एवं निर्भयतामय प्रकाश को प्राप्त हो जाऊँ और सुदीर्घ अन्धियारी हमें न घेर ले ।’

नकिष्टं घनन्त्यन्तितो न दूरात् य आदित्यानां भवति प्रणीतौ ॥

(ऋ. २।२७।१३)

‘जो कोई आदित्योंके श्रेष्ठ नेतृत्वके तत्त्वावधानमें रहता है उसे न कोई दूरसे या समीपसे होकर मार सकते हैं ।’

...आदित्या... युष्माकं...प्रणीतौ परि श्वेभ्य दुरितानि वृज्याम् ।

(ऋ. २।७७।५)

‘हे आदित्यो ! तुम्हारे श्रेष्ठ नेतृत्व में मैं बुराईयों को इस तरह टाल दूँ जैसे कोई गढोंको टाल देता हो अर्थात् आँ नेता की घुरा आदित्य उठा लेते हैं वहाँ बुराईयों का भय रहता ही नहीं ।’

बुराई दूर हो

सभी बुराईयों को हटाने की क्षमता आदित्यों में विद्यमान है ऐसा निम्न मन्त्रभागों से ज्ञात होता है ।

यत् आविः यत् अपीच्यं... अस्ति दुष्कृतं... तत् विश्वं... आरे असत् दधातन ... ।

(ऋ. ८।४७।१३)

‘जो कोई बुरा कृत्य चाहे प्रकट रूपसे या गुप्त रूपसे विद्यमान हो उस सारी बुराई को हम से दूर रखो ।’

अपामीवामपस्त्रिधं अप सेधत दुर्मति । आदित्यासो युयोतना नो अंहसः ॥ (ऋ. ८।१८।१०)

‘हे आदित्यो ! रोग, शत्रु तथा दुष्ट बुद्धि को दूर हटा दो और हमें पाप से पृथक् रखो ।’

अपो पु ण इयं शरुरादित्या अप दुर्मतिः ।

(ऋ. ८।६७।१५)

अस्मदेवजज्जुषी ॥

‘हे आदित्यो ! यह हिंसक हथियार तथा यह दुष्ट विचारवादी हमें पीडा न देती हुई, भलीभाँति हम से दूर हो जाए ।’

मा नो हेतिः...आदित्यः कृत्रिमा शरः पुरा

(ऋ. ८।६७।१०)

नृ जरसो वधीत ।

[आदित्य]

चन्द्र-
१०/१८/१२

शपुष देते हैं।

रु अश्यां

न शन

१२/७/१४)

हो तो भी हमें

प्राप्त हो जाऊँ

आदित्यानां

२/१२/१२)

नमन रहता है

हैं।

श्वभ्रव

२, २७/७/१५)

बुराईयों को इस

हो अर्थात् बुराई

यों का भय रहता

है।

मैं विद्यमान है

दुष्कृत...

...

८/४/१२)

रूपसे विचार

हैं। आदि-

८/१८/१०)

को दूर हटा दे

मर्तिः।

८/६/१५)

इ दुष्ट विचार

हो जाए।

शरुः पुरा

८/६/१२)

‘हे आदित्यो ! वृद्धावस्था के पहले यह शस्त्र तथा बनाया
हुआ हथियार हमें न मार डाले ऐसा प्रबंध करो ।’

तेनो भद्रेण शर्मणा युष्माकं नावा ... अति
विश्वानि दुरिता पिपर्तन । (ऋ. ८/१८/१७)

‘वे ऐसे विख्यात तुम कल्याणकारक सुखसे और आप की
नौका से हमें सभी बुराईयों के पार ले चलो- ।’

युयोत शरुमस्सत्... आदित्यास उतामर्ति ।
ऋष्य द्वेषः कृणुत विश्ववेदसः । (ऋ. ८/१८/१९)

‘हे सर्वज्ञ आदित्यो ! हमसे हिंसक शस्त्र, क्रुमति एवं शत्रु-
ओंको पृथक् कर दो ।’

वैदिक सूक्तों के दर्शन कर्ता सुकवि आदित्यों से कैसी प्रार्थना
करते हैं सो निम्न मंत्रों में देखने योग्य है—

तत् सु नः शर्म यच्छत आदित्या यन्मुमोचति ।
एतस्वन्तं चिदेनसः सुदानवः ॥ (ऋ. ८/१८/१२)

‘हे अच्छे दानशूर आदित्यो ! हमें भलीभाँति वह सुख दे
वाले जो पापीको भी पाप से छुड़ा सकता है ।’

यद् वः श्रान्ताय सुन्वते वरूथमस्ति यच्छर्दिः ।
तेना नो अधि वोचत ॥ (ऋ. ८/६/७६)

‘कार्य करके थके हुए और उपयुक्त वस्तुका उत्पादन करने-
वाले के लिए आप के पास जो वरणीय धन तथा घर है उसे
साप लेकर हमसे वार्तालाप करो ।’ इस प्रार्थनासे स्पष्ट हुआ
कि परिश्रमी तथा आवश्यक मानी हुई वस्तुओं के उत्पादक को
वे आदित्य स्वीकार करने योग्य धन देते एवं निवास करने के लिए
शेराय गृहका प्रबंध भी कर डालते ।

जोवान् नो अभि घेतन आदित्यासः पुरा हथात् ।
क्व स्थ हवनश्रुतः । (ऋ. ८/६/७५)

‘हमारी पुकार सुननेवाले हे आदित्यो ! भला तुम किधर
हो ! जबतक हम जीवित हैं, और मृत्युके पहले ही हमारे
निकट चले आओ ।’ इस मंत्र में वैदिक ऋषि आदित्यों के
अंशों में आने के लिए कितने उत्सुक हैं सो स्पष्ट दिखाई देता है ।

ये चिद्धि मृत्युबंधव आदित्या मनवः स्ससि ।
प्र सु न आयुर्जीवसे तिरेतन । (ऋ. ८/१८/२२)

‘हे आदित्यो ! हममें जो कोई मृत्यु के अत्यन्त निकट चले
गये हो तो भी जीवन के लिए हमारी आयु बढ़ाइये ।’ दीर्घ
जीवन की ऊँजी आदित्यों के समीप थी ऐसा जान पड़ता है
और वे मृत्यु लोंगोंको मृत्युपाशसे छुड़ानेकी चेष्टा करते थे ।

जनसेवाके गुस्तर कार्यमें आयुवृद्धिका बहुत ऊँचा स्थान है अतः
आदित्य इस विषय में पूर्ण सतर्क रहा करते ।

दीर्घ आयुष्य

तुचे तुनाय तत् सु नो द्राघोय आयुर्जीवसे ।
आदित्यासः सुमहसः कृणोतन ॥ (ऋ. ८/१८/१८)

‘हे आदित्यो ! तुम भलीभाँति महनीय तेजसे युक्त हो
इसलिए हमारी सन्तानके लिए जीवनार्थ उस दीर्घ आयुष्यका
प्रबंध करो ।’

शतं नो रास्व शरदो विचक्षेऽश्यामायुंषि सुधि-
तानि पूर्वा । (ऋ. २/२७/१०)

‘हमें विशेष दर्शनके लिए सौ वर्ष प्रदान करो (उतना
दीर्घ जीवन मिले) और हम भलीभाँति रखी हुई पूर्वकालीन
आयुर्मर्यादाको प्राप्त कर लें ।’

वेदकालीन कवि आदित्यो से कष्टनिवारणके लिए प्रार्थना
करते थे और आदितिके पुत्र जनताके सुखको बढ़ाने का प्रयत्न
करते थे ऐसा निम्न मंत्रों से व्यक्त होता है—

सुख इच्छा

इदं ह नूनमेषां सुमनं भिक्षेत मर्त्यः ।
आदित्यानां... (ऋ. ८/१८/१९)

‘अब इन आदित्यों के सामने मानव इस सुखकी माँग
पेश करे ।

तत् सु नः ... शर्म यच्छन्तु सप्रथो यदीमहे ।
(ऋ. ८/१८/१३)

‘हमें वही विस्तृत सुख जिसकी चाह हम करते हैं आदित्य
हमें दे दें ।’

विदा देवा अधानामादित्यासो अपाकृतिम् ।
पक्षा वयो यथोपरि व्यस्मे शर्म यच्छतं... (ऋ. ८/४/७२)

‘हे दानी आदित्यो ! तुम पापों को हटाना जानते हो और
जैसे पंछी ऊपर से डैनों को फैलाते हैं ताकि पक्षिशवकोंको सुख
मिले, उसी तरह तुम हमें विशेष ढंग से सुखका प्रदान करो ।’

व्यशस्मे अधि शर्म तत् पक्षा वयो न यन्तन
विश्वानि विश्ववेदसो वरूथया मनामहे... । (ऋ. ८/४/७३)

‘हे सर्वज्ञ आदित्यो ! हम सारे स्वीकरणीय वस्तुओं को
पाना चाहते हैं अतः विशेष रूपसे हमें वह सुख दे दो जिस
तरह पंछी अपने शिशुओं पर सुखके लिए पर फैलाते हैं ।’

यद् देवा शर्म शरणं यद् भद्रं यदनातुरम् ।
त्रिधातु यद् वरूथ्यं तदस्मासु वि यन्तन...
(क. ८।४७।१०)

‘ हे देवो आदित्यो ! जो कल्याणकारक, रोगरहित एवं सुखप्रद निवासस्थान है और जो तीन प्रकार के धातुओं से युक्त स्वीकरणीय धन है उसे हम लोगोंमें दे डालो । ’

इन आदित्यों की निरीक्षण शक्ति बड़ी सूक्ष्म है और इनके मार्गमें कोई रुकावट खड़ी नहीं होती है इसीलिए बड़ी सफलता से ये जनसेवा कर सकते हैं और लोगोंकी सुखवृद्धि करना इनके लिए बड़ी सुगम एवं साधारणसी बात है ।

त आदित्यास उरवो गभीरा अदब्धासो...

अन्तः पश्यन्ति वृजिनोत साधु, सर्वं राजभ्यः
परमा चिदन्ति । (क. २।२७।३)

‘ वे आदितिके पुत्र विशाल, गंभीर तथा न दबे हुए हैं और भली एवं बुरी बातोंकी याह पूरीतरह पालेते हैं, समूची घटनाओं की तहतक देखते हैं क्योंकि इन विराजमान आदित्यों के लिए सभी दूरस्थित वस्तुएँ मानों समीपवर्ति ही हैं । ’ इसलिए आदित्यों को सभी जानकारी अनायास ही मिल जाती है जैसे—

... देवा हत्सु जानीथ मर्त्यम् ।

उप द्वयं चाद्वयं च ... (क. ८।१८।१५)

‘ हे देवतारूपी आदित्यो ! तुम अपने दिलमें कपटी एवं अ-कपटी मानवको समीप से याने अच्छी तरह जानते हो । ’

आदित्या अव हि, ख्यताधि कूलादिव ...

(क. ८।४७।११)

‘ हे आदित्यो ! जैसे कोई तटपर खड़े रहकर नीचे पानीकी ओर देखते हैं वैसे ही तुम ऊँचे पदपर आरुढ़ हो नीचे हम मानवोंको देख लो । ’

... ते धामान्यमृता मर्त्यानामदब्धा अभि
चक्षते । (क. ८।१०।१६)

‘ वे न दबे हुए एवं अमर आदित्य मानवोंके स्थानोंको देखते हैं । ’

सुगः पन्था अनृक्षरः आदित्यासः ... नात्राष-
न्वादो अस्ति वः । (क. १।४१।४)

‘ हे आदित्यो ! तुम्हारा मार्ग सुगम एवं कंटकरहित है, यहाँपर तुम्हारे लिए कोई नीचे गिराने योग्य गर्त आदि नहीं है । ’

सुगो हि वो... पन्था अनृक्षरो... साधुः अस्ति ।
तेनादित्या अधि वोचता नो यच्छता नो दुष्परि-
हन्तु शर्म ॥ (क. २।२७।६)

‘ हे आदित्यो ! आपका मार्ग बड़ा सुगम, निष्कलंक और भला है, उस मार्ग परसे आकर आप हम से भाषण कीजिए और हमें ऐसा सुख दो कि जिसे विनष्ट करना शत्रुके लिए दूभर एवं बड़ा कठिन हो । ’

आदित्या... सुतीर्थमवर्ततो यथानु नेपथा सुगं...
(क. ८।४७।११)

‘ हे आदित्यो ! जैसे घोड़ोंको बिना कठिनाई के सुगमता-पूर्वक जाने योग्य स्थानमें ले चलते हैं वैसे ही हमें आसानीसे ले चलो । ’

या वो माया अभिद्रुहे यजत्राः पाशा आदित्या
रिपवे विचृत्ताः । अश्वीव ताँ आते येयं रथेना-
रिष्टा उरावा शर्मन् स्याम ॥ (क. २।२७।१६)

‘ हे (यजत्राः) पूजनीय आदित्यो ! (वः) आपको (याः मायाः) जो शक्तियाँ तथा (पाशाः) जाल (अभि-द्रुहे रिपवे विचृत्ताः) हमसे द्वेष करनेवाले एवं शत्रुको पकड़-नेके लिए फैलाये गये हैं (तान्) उन्हें मैं (रथेन) रथसे यात्रा करता हुआ (अश्वी इव अति येयं) जैसे एक घुड़सवार लौंघकर चला जाता है वैसे ही पार निकल जाऊँ और हम लोग (अ-रिष्टाः) अहिंसित होकर, बिना किसी क्षतिके (उराँ शर्मन् आ स्याम) विशाल सुखमें निवास करते रहें । ’ इसके स्पष्ट है कि वीर आदित्य अपनी अद्भुत युक्तियों तथा जानों से शत्रुको पकड़ लेते थे । परन्तु जो दानी एवं सरल मार्गपरने चलनेवाले होते उनकी दरतीरह की मदद करना आदित्यों का कार्य था, जैसे—

यो राजभ्य ऋतनिभ्यो ददाश यं वर्धयन्ति पुष्ट-
यश्च नित्याः । स रेवान् याति प्रथमो रथेन वष्ट-
दावा विदथेषु प्रशस्तः ॥ (क. २।२७।१२)

‘ (यः) जो मानव (ऋतनिभ्यः राजभ्यः) ऋतके नेता एवं विराजमान आदित्यों को (ददाश) दे चुका हो और (नित्याः पुष्टयः च यं वर्धयन्ति) शाश्वत टिकनेवाली पुष्टियों जिसे वृद्धिगत करते हैं (सः) वह (विदथेषु प्रशस्तः) सभा-मण्डपों में प्रशंसित होकर (प्रथमः रेवान्) प्रथम श्रेणी का

[आदित्य ।

भुः अस्ति ।
नो दुष्परि-
(२।२७।६)

निष्कलं और
भाषण कीजिए
शत्रुके लिए

या सुगं...।
(८।४७।११)

के सुगमता-
आसानोछे ले

आदित्या
पं रथेना-
(२।७।१६)

वः) आपक्षे
जाल (अभि-
शत्रुको पकड़-
रथेन) रथे
एक घुड़सवार
और हम लोग
क्षतिके (रथों
रहें । ' इसके
तथा जालों
सरल मार्गपर
आदित्यों का

धन्यन्ति पुष्ट-
रथेन वसु-
(२।२७।१२)

ऋतके नेता
चुका हो और
नेवाली पुष्टियों
शक्तः) समा-
प्रथम श्रेणी का

धनाढ्य बनकर (वसुदावा रथेन याति) धन का दानी होता हुआ रथ पर से संचार करता है । '

...हिरण्ययाः शुचयो धारपूताः अस्वप्नजो...

अद्व्याः उरुशंसा ऋजवे मर्त्याय । (ऋ. २।२७।९)

' सुवर्णमय आभावाले, विशुद्ध तथा जलधाराओं से पवित्र होते हुए आदित्य (अस्वप्नजः) स्वप्नशीलता से दूर रहकर और कठिनाइयों से न दबकर (ऋजवे मर्त्याय) सरल बर्ताव रखनेवाले मानव के लिए (उरुशंसाः) अत्यधिक मात्रा में सन्देश देनेवाले या भाषण करनेवाले हैं । ' अर्थात् जिस पक्षमें सरलता तथा निष्कपटता पाई जाती है उसके समीप आकर आदित्य सहायता करने के लिए या पथप्रदर्शनार्थ बहुत आगे बातें कहनेवाले होते हैं ।

शुचिरपः सुयवसा अदब्ध उपक्षेति वृद्धवयाः

सुवीरः । ... य आदित्यानां भवति प्रणीतौ ॥

(ऋ. २।२७।१३)

' जो अपने आपको आदित्यों के नेतृत्व के नीचे रखता है वह अच्छा वीर होकर (वृद्ध वयाः) अजभाण्डारों की वृद्धि करता हुआ (अदब्धः) विपत्तियोंसे न दबकर (सुयवसाः) अच्छे तूफानों से युक्त, (शुचिः अपः उप क्षेति) निर्मल जलों-कमियोंके निकट निवास करता है । ' इससे स्पष्ट हुआ कि आदित्य जनताके नेता बनकर उन्हें वीर बनाने का प्रयत्न करते आ अर्थों की वृद्धि कैसे करनी चाहिए सो बतलाकर अच्छे हुए, युद्ध बल आदि बातों से युक्त स्थानोंके निकट घर बनाकर अपने का प्रबंध करते ।

अनर्वाणो ह्येषां पन्था आदित्यानाम् । अदब्धाः सन्ति पायवः सुगेवृधः ॥

(ऋ. ८।१८।२)

इन आदित्यों का मार्ग (अनर्वाणः) हिंसारहित है और इनके संरक्षण सुगमतापूर्वक बढ़नेवाले तथा शत्रुओं से न डरते हुए हैं । ' आदित्यों की योग्यता का अच्छा परिचय इसमें मिलता है । आदित्यों के कार्य करने के मार्ग इस ढंगके हुआ प्रतीति कि यथा संभव हिंसा न हो और स्वयं ही अपनी आन्त-रक्षक से संरक्षण की आयोजनाएँ फलती फूलती रहें ।

अब आदितिके संबन्धमें क्या कहा है सो देखना चाहिए, क्योंकि इन आदित्यों को- आदिति के पुत्रों को उसी से प्रेरणा मिलती है ।

१६. [आदिति]

अदितिके गुण

अदितिर्न उरुष्यत्वदितिः शर्म यच्छतु ।

माता मित्रस्य रेवतोऽर्यम्णो वरुणस्य च ॥ ...

(ऋ. ८।४७।९)

' धनाढ्य मित्र, अर्यमा एवं वरुणकी माता जो अदिति है वह हमारी रक्षा करे और सुख दे दे । '

पिपर्तु नो अदितिः राजपुत्रा अति द्वेषांस्य-

र्यमा सुगेभिः । बृहन्मित्रस्य वरुणस्य शर्मोप

स्याम पुरुवीराः अरिष्टाः । (ऋ. २।२७।७)

' जिसके पुत्र विराजमान हैं ऐसी वह अदिति हमारा पालन करे, अर्यमा हमें सुगमतापूर्वक या सुखकर मार्गों से शत्रुओंके परे पहुँचा दे; मित्र एवं वरुण-का दिया हुआ सुख सचमुच बड़ा प्रचंड है अतः हम अनेक वीरोंसे युक्त होकर बिना क्षति उठाये उसके समीप रहें । '

महीं... मातरं सुव्रतानां ऋतस्य पत्नीमवसे

हुवेम । तुविक्षत्रामजरन्तीमुरुर्षी सुशर्माण-

मदिति सुप्रणीतिम् । (वा. यजु. २।१।५; अथर्व. ७।६।२)

' हम अदिति को अपनी रक्षा का प्रबंध करनेके लिए बुलायें, जो महनीय, अच्छे व्रतधारी आदित्यों की माता, ऋत की पत्नी, अत्यधिक क्षत्रियोचित वीरता से युक्त, जीर्ण न होनेवाली, विशालता से पूर्ण, सुन्दर सुख देनेवाली एवं भलीभाँति आगे ले चलनेवाली है । '

अदितिर्नो दिवा... अदितिर्नक्तं... अदितिः

पातु अंहसः सदावृधा । (ऋ. ८।१८।६)

' हमेशा बढ़नेवाली अदिति हमें दिन और रात पाप से बचाए । '

उत स्या नो दिवा... अदितिरुत्या गमत् ।

सा... मयस्करदप स्त्रिधः ॥ (ऋ. ८।१८।७)

' और वह अदिति दिन के समय संरक्षण की आयोजनाके साथ हमारे निकट चली आए और वह शत्रुओंको दूर हटाकर सुखमय वायुमण्डल का सृजन करे । '

आदित्यों की असाधारण योग्यता का परिचय होने के कारण वैदिक कवि इस प्रकार उनकी सराहना करते हैं—

इमा गिरः आदित्येभ्यो... सनात् राजभ्यो

जुह्वा जुहोमि । शृणोतु मित्रो अर्यमा भगो नः

तुविजातो वरुणो... (ऋ. २।२७।१)

‘मैं सनातनकाल से विराजमान आदित्यों के लिए इन भाषणों का मानों हविर्भागसा अपनी ओरसे अर्पण करता हूँ, हमारी इन वक्तृताओंको ये आदित्यमण्डलके सदस्य जैसे मित्र, वरुण, अर्यमा एवं भग सुन लें।’

इमं स्तोमं सक्रतवो मे अद्य ... जुषन्त ।

आदित्यासः शुचयो धारपूता अवृजिना

अनवद्या अरिष्टाः । (ऋ. २।२७।२)

‘आज मेरे इस स्तुतिमय भाषणका स्वीकार, कार्यशील आदित्य, जोकि विशुद्ध, पवित्र, पापराहित, निर्दोष और स्वस्थ हैं, कर लें।’

ऐसा प्रतीत होता है कि आदिति के पुत्र, आदित्य ऐसा नाम अवतक बतलाये हुए गुणों से युक्त कुछ चुने हुए देवोंको दिया जाता था जिनका सर्वोपरि कार्य केवलमात्र लोकरक्षा तथा लोक सेवा करना ही था। इस आदित्यमण्डल के सदस्य वेही हो सकते जो संपूर्णतया निर्दोष एवं पूर्णतया विकसित हों, जिन में किसी भी प्रकार की त्रुटि न पाई जाती हो, क्योंकि त्रुटि होनेसे वे आदिति अखण्डता, अदीनता के पुत्र कहलाने के अधिकारी नहीं हो सकते। यद्यपि एक स्थान में कहा है कि—

अशीतिभिस्तिष्ठसृभिः सामगेभिरादित्येभिः... ।

(अथर्व. २।१२।४)

जिससे ज्ञात होता है कि आदित्यों की संख्या $८० \times ३ = २४०$ थी और इन्हें सामगान विदित था, तथापि इस आदित्यमण्डल में प्रमुखतया मित्र, वरुण, अर्यमा, भग एवं सविता का स्थान था। क्योंकि अपने वैशिष्ट्यपूर्ण कार्यों से शायद इनकी ही अमिट छाप वैदिक कवियों के अन्तस्तलपर पड़ी हुई हो। आदित्यों के निश्चित कार्य को संभवतः मित्र, वरुण एवं अर्यमा ही अविकलभाव से संपूर्ण करने की क्षमता से युक्त हों अतः इन तीनों का उल्लेख आदित्यों के सूक्तों में बार बार पाया जाता है। जैसे कि निम्न मंत्रों से स्पष्ट होगा—

मित्रो नो अत्यंहति वरुणः पर्वदर्यमा ।

आदित्यासो यथा विदुः ॥ (ऋ. ८।६७।२)

‘आदित्य जैसे जानते हैं वैसे ही कार्य करके हमें मित्र, वरुण तथा अर्यमा दुर्गति या पापके पार ले चलें।’

संरक्षणका कार्य

महि वो महतामह वरुण मित्रार्यमन्... ।

(ऋ. ८।६७।४)

‘हे वरुण ! मित्र ! अर्यमन् ! आप जैसे बड़े आदित्यों का संरक्षण बड़ा है।’

महि त्रीणामवोऽस्तु द्युक्षं मित्रस्यार्यमन् ।

दुराधर्षं वरुणस्य ॥ (१०।१८५।२)

‘तीनों अर्थात् मित्र, वरुण तथा अर्यमा का संरक्षण महान, दिव्य तथा शत्रुओंके अपराभवनाथ हो जाए।’

अनेहो मित्रार्यमन् नृवद् वरुण शंस्यं ।

विवरुथं मरुतो यन्त नश्छर्दिः ॥ (ऋ. ८।१८।२)

‘हे वीर मरुतो ! हे मित्र, वरुण तथा अर्यमन् ! हमें निष्पाप, नेताओंसे युक्त, प्रशंसनीय और तीन प्रकार के स्वर्ण-णीय धन से पूर्ण घर दे डालें।’

... मित्रमीमहे वरुणं स्वस्तये । (ऋ. ८।१८।२०)

‘हम कल्याण के लिए मित्र तथा वरुणको चाहते हैं।’

महि वो महतामवो वरुण मित्र दाशुपे ।

(ऋ. ८।४७।१)

‘हे वरुण और मित्र ! दानीके लिए जो तुम बड़े आदित्य रक्षा का प्रबंध कर डालते हो वह बड़ा है।’

वयं ते वो वरुण मित्रार्यमन्स्यामेदतस्य रथः ।

(ऋ. ८।१९।२५)

‘हे वरुण, मित्र तथा अर्यमन् ! हम अवश्य ही आप के ऋतको ले चलनेवाले हों।’

तत् सु नः सविता भगो वरुणो मित्रो अर्यमा ।

शर्म यच्छन्तु सप्रथो यदीमहे । (ऋ. ८।१८।३)

‘वह विस्तारशील सुख जिसे हम चाहते हैं मित्र, वरुण, अर्यमा, सविता और भग हमें भली प्रकार से दे डालें।’

यदद्य सूर उदितेऽनागा मित्रो अर्यमा ।

सुवाति सविता भगः ॥ (ऋ. ७।६६।४)

‘आज जब कि सूर्य का उदय होनेपर (अनागा) मित्र, अर्यमा, भग एवं सविता (सुवाति) की निष्पन्न कर दिखाता है।’

... सूर उदिते मित्रं गृणीषे वरुणम् ।

अर्यमणं रिशादसम् ॥ (ऋ. ७।६६।७)

‘सूर्योदय के पश्चात् मित्र, वरुण एवं अर्यमा की सराहना करता हूँ।’

ते स्याम देव वरुण ते मित्र सूरभिः सह ।

इषं स्वस्व धीमहि ॥ (ऋ. ७।६६।९)

[आदित्य]

ले आदित्यों का

पर्यणः ।

(८५१२)

रा संरक्षण महान्,

स्यं ।

क्र. ८१८२२)

अर्थमन् ! हमें

प्रकार के स्वीकृ-

क्र. ८१८२०)

चाहते हैं ।

शुभे ।

क्र. ८१४७१)

मम बड़े आदि-

तस्य रथः ।

क्र. ८१९१३५)

ये ही आप के

मित्रो अर्थमा ।

(क्र. ८१९८१)

हैं मित्र, वरुण,

दे डालें ।

र्थमा ।

६६१४)

पर (अनाकः)

(सुवाति) हमें

सह ।

क्र. ७६६१५)

‘हे योतमान वरुण तथा हे मित्र ! हम विद्वानों के साथ तेरे ही बनकर रहें तथा अन्न एवं तेजको पाने के उपाय सोचें ।’

अनायं वरुणो मित्रो अर्थमा क्षत्रं राजान
(क्र. ७६६१११)

आशत ।
‘तीनों विराजमान वरुण, मित्र एवं अर्थमा को ऐसा क्षत्रिबोधित बल मिला कि जो दूसरों को पाना असंभव प्रतीत हुआ ।’

सर दिये हुए मन्त्रों से स्पष्ट ज्ञात होता है कि आदित्यों के संगठित दल में मित्र, वरुण और अर्थमा का स्थान बड़ा ही ऊँचा था । हो सकता है कि आदित्यदल के कार्यकारी मंडल के प्रमुख सदस्य उक्त नाम धारण करते हों । वेद में इन तीनों आदित्य दल के प्रमुख सदस्यों के बारे में कहा है कि—

स्मेचेतारो अनृतस्य भूरेर्मित्रो अर्थमा वरुणो
हि सन्ति । इमं ऋतस्य चावृधुर्दुरोणे शग्मासः
पुत्रा अदितेरदब्धाः ॥ (क्र. ७६०१५)

‘वे मित्र, अर्थमा एवं वरुण अदिति के (अदब्धाः शग्मासः) न दबे हुए शक्तिशाली पुत्र हैं और ये ऋत के (दुरोणे वृधुः) घर में पले हुए हैं तथा (भूरेः अनृतस्य चेतारः) वे भारी असत्य को पहचानने वाले हैं ।’ अर्थात् ये कभी मिथ्या बातों में फँस नहीं सकते और इनकी शिक्षादीक्षा ऋत के घर में हुई है । इस प्रकार शिक्षित होकर ये आदित्यदल के संगठन कार्य में ऊँचे पद पर विराजमान होते हैं । इन के कार्य का स्वरूप बताया है कि ये—

...तिरश्चिदंहः सुपथा नयन्ति । (क्र. ७६०१६)
‘अच्छे मार्ग से लोगों को पाप के परे ले चलते हैं ।’
...अचेतसं चिश्चितयन्ति दक्षैः ।

...विक्रित्वांसो अचेतसं नयन्ति ॥ (क्र. ७६०१६७)
‘अच्छे उपायों से अज्ञानी को भी ज्ञानसम्पन्न बनाते हैं और विक्रित्सक बुद्धि वाले होकर अनजान को ठीक मार्ग पर ले जाते हैं ।’

आदित्यों के गुण

अब विचार करना चाहिए आदित्यों के लिये कौन से विशेषण प्रयुक्त हुए हैं जिन से ज्ञात होगा कि आदित्य दल में प्रवेश पाने के लिए योग्यता का मानदंड कितना ऊँचा रखा था ।

१. सक्तवः = कार्यों से युक्त, कभी खाली हाथ या निठले न बैठे हुए ।

*

२. शुचयः, धारपूताः = विशुद्ध एवं जलधाराओं में नहा धोकर साफसुथरे रहनेवाले ।

३. अ-वृजिनाः, अनवद्याः = पापरहित, अनिन्य ।

४. अरिष्ठाः, अदब्धासः = अहिंसित, न दबे हुए ।

५. उरवः, गभीराः = बृहदाकार, गंभीर सुखाकृतिवाले ।

६. अस्वप्रजाः, अनिमिषाः = निद्रासुख का उपभोग न लेनेवाले और पलक न मारनेवाले । यह दूसरा विशेषण अथक परिश्रम करने की सूचना देता है ।

७. दीर्घाधियः = विशाल बुद्धिवाले या महान् कार्यक्रम रखनेवाले ।

८. ऋणानि चयमानाः = ऋणों को बटोरनेवाले ताकि उक्तण हो सकें ।

९. ऋजवे मर्त्याय उरुशंसाः = सरल, निष्कपट आचरणवाले मानव को खूब उपदेश की बातें कहनेवाले ।

१०. राजभ्यः (आदित्येभ्यः) राजानः = विराजमान आदित्यों के लिए, लोक सेवकों को जनता के मध्य विराजमान होने की चेष्टा करनी चाहिए ।

११. सु-दानवः = अच्छे दानशूर । कृपणता से कोसों दूर रहनेवाले ।

१२. यजत्राः = पूजनीय ।

१३. रजिष्ठाः = लोकों के मध्य खूब संचार करनेवाले ।

१४. ये अंहः अतिपिप्रति = जो पाप के परे ले जाते हैं, जनता को निष्पाप करने का प्रयत्न करते हैं ।

१५. ये अदब्धस्य व्रतस्य ईशते = जो न दबे हुए व्रत के अधिपति हैं ।

१६. ऋतावृधः, घोरासो अनृतद्विषः = ऋत की वृद्धि करनेवाले और असत्य के भीषण विरोधी ।

१७. ऋतजाताः ऋतस्य दुरोणे ववृधुः = ऋत से या ऋत के लिए उत्पन्न, ऋत के घर में पले हुए ।

१८. विश्व-वेदसः = सब कुछ जाननेवाले ।

१९. सु-महसः = बड़े अच्छे तेजस्वी ।
 २०. प्र-चेतसः = प्रकृष्ट ज्ञानवाले ।
 २१. सुमृत्तीकाः = बहुत अच्छे ढंगसे सुख देनेवाले ।
 २२. हवनश्रुतः = जनता की पुकार सुननेवाले ।
 २३. अ-द्रुहः = द्वेष न करनेवाले ।
 २४. क्षितीनां मूर्धानः = मानवोंके प्रमुख ।
 २५. अद्भुत-एनसः = जिन्होंने पहले पापकृत्य किया ही न हो ।

इन ऊपर दिये हुए विशेषणों से आदित्यदलके सदस्यों की योग्यतापर बहुत अच्छा प्रकाश पड़ता है। जो निरलस कार्यकर्ता, सत्यप्रेमी, उत्कृष्ट ज्ञानी, सेवातत्पर, निष्पाप, साफ सुथरे, दान-शूर, विशालचेता और लोकरक्षक बननेके इच्छुक होते वही आदित्यदल में प्रवेश पा सकते थे और अदिति अर्थात् अदीनता, स्वतंत्रता, पूर्णता के पुत्र कहलानेके अधिकारी बन सकते थे ।

मित्रका ऊँचा स्थान

इस आदित्यदल में मित्र का स्थान बहुत ही ऊँचा है, इसलिए वेदमें मित्र के बारे में क्या कहा है सो देखना चाहिए—

... मित्राय हव्यं घृतवज्जुहोत । (ऋ. ३।५९।१)

‘मित्रके लिए घृतयुक्त हवनीय वस्तुका अर्पण करो ।’

तस्मा एतत् पन्यतमाय जुष्टमग्नौ मित्राय हवि
 राजुहोत । (ऋ. ३।५९।५)

‘उस अत्यन्त प्रशंसनीय मित्र के लिए यह सेवनीय हविर्भाग अग्नि में डाल दो ।’ इस भाँति मित्र का सुखागत करनेके पश्चात् कवि कहते हैं—

अनमीवास इलया मदन्तो ... वयं मित्रस्य
 सुमतौ स्याम । (ऋ. ३।५९।३)

‘हम नीरोगी और अन्न मिलनेके कारण हर्षित होते हुए मित्र की प्रसन्न बुद्धि की छत्रछायामें रहें ।’

अयं मित्रो नमस्यः ... राजा सुक्षत्रो अजनिष्ट...
 तस्य वयं सुमतौ... भद्रे सौमनसे स्याम ।

(ऋ. ३।५९।४)

‘यह मित्र विराजमान्, अच्छे क्षत्रियोचित बल से युक्त एवं नमन करनेयोग्य हो प्रकट हुआ है अतः हम उस की कल्याणकारक प्रसन्नताके तत्त्वावधान में रहें । अर्थात् कभी ऐसा न होने पाय कि मित्र को क्रोधित होना पड़े ।’

महाँ आदित्यो नमसोपसद्यो यातयज्जनो
 गृणते सुशेवः । (ऋ. ३।५९।५)

‘यह मित्र बड़ा भारी आदित्य है जो जनता को प्रीति करता हुआ प्रशंसा करनेवाले को सुन्दर ढंगसे सुख देता है और जिस के समीप नमनपूर्वक बैठना चाहिए ।’

मित्रो जनान् यातयति वृषाणो... ।

(ऋ. ३।५९।१)

‘मित्र लोगों को उपदेश की बातें कहता हुआ कार्यप्रवृत्त करता है ।’

मित्रः कृष्टीरनिमिषाभि चष्टे... । (ऋ. ३।५९।१)

‘मित्र टकटकी लगाकर कृषिकर्म में लगे लोगों को देखता है ताकि कहीं काम में भूल न होने पाय ।’

मित्रो दाधार पृथिवीसुत द्याम् । (ऋ. ३।५९।१)

...स देवान् विश्वान् विभर्ति । (ऋ. ३।५९।८)

‘मित्र ध्रुलोक एवं भूलोक की धारणा करता है और सभी देवों का भरणपोषण करता है ।’ अर्थात् समूचे विश्व में सुव्यवस्था हो ऐसी कोशिश करता है ।

न हन्यते न जीयते त्वेतो, नैनं

अहो अइनोत्यन्तितो न दूरात् । (ऋ. ३।५९।२)

‘हे मित्र ! तू जिसकी रक्षा कर चुका है वह न माया जाता है और नाहि जीता जाता है, इसे न समीप से न दूर से ही पाप व्याप्त कर पाता है ।’

अभि यो महिना दिवं मित्रो बभूव सप्रथाः ।

अभि श्रवोभिः पृथिवीम् ॥ (ऋ. ३।५९।७)

‘जो मित्र विशाल होकर अपने महनीय तेज से ध्रुलोक को तथा अन्नोसे भूमण्डलको व्याप्त कर चुका है ।’

मित्रो... जनाय... इषः... अकः । (ऋ. ३।५९।९)

‘मित्रने जनताके लिए अन्न बनाया है ।’

इस प्रकार मित्र की योग्यता बड़ी है, परन्तु वह सब अकेला ही प्रकट न होकर बहुधा वरुण के साथ मिलकर प्रकट करता है । अतः वेद में दोनोंका संयुक्त उल्लेख पाया जाता है । जैसे—

मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम्...

...मित्रावरुणौ ऋतावृधौ ऋतस्पृशा...

कवी... मित्रावरुणा तुविजाता उरुक्षया...

(ऋ. १।१२।७-९)

‘शुद्ध बलवाले मित्र और शत्रुविध्वंसक वरुण को बुलाता है; मित्र एवं वरुण ऋत के संपर्क में रह उस की वृद्धि करने-वाले हैं; मित्र और वरुण विद्वान्, विशालता में उत्पन्न और विस्तृत स्थल में निवास करनेवाले हैं।’

मित्रं वयं हवामहे वरुणं सोमपीतये...

...यौ... ऋतस्य ज्योतिषस्पती । ता मित्रा-वरुणा हुवे । वरुणः प्राविता भुवन् मित्रो विश्वामिरूतिभिः । करतां नः सुराघसः ।

(ऋ. १।२३।४-६)

‘हम मित्र और वरुण को सोम पीनेके लिए बुलाते हैं; जो ऋत एवं प्रकाशके अधिपति हैं, उन मित्र एवं वरुण को मैं बुलाता हूँ; वरुण उत्कृष्ट संरक्षक बने तथा सभी संरक्षणसाधनों से युक्त होकर मित्र भी रक्षणकर्ता हो और दोनों मिलकर हमें अच्छे धनिक बना दें।’

मित्र और वरुण के स्वागत का वर्णन वैदिक कवियोंने इस तरह किया है—

आ नो गन्तं रिशादसा वरुण मित्र... उपेमं चारुमध्वरम् ।

(ऋ. ५।७।११)

‘हे शत्रुविध्वंसक मित्र एवं वरुण ! इस सुन्दर, हिसारहित कार्य के समीप आने के लिए हमारे पास आओ ।’

उप नः सुतमा गतं वरुण मित्र दाशुषः... सोमस्य पीतये ।

(ऋ. ५।७।१३)

‘हे मित्र और वरुण ! हमारे निचोड़े हुए सोमके निकट आओ, ताकि दानीके सोमका पी जाना संभव हो ।’

आ यातं मित्रावरुणा जुषाणावाहुतिं नरा ।

पातं सोममृतावृषा ।

(ऋ. ७।६६।१९)

‘हे नेता एवं ऋत की वृद्धि करनेवाले मित्र और वरुण ! हमारे दान का स्वीकार करते हुए तुम दोनों आओ तथा सोम पी जाओ ।’

...आयातं... गोश्रीता मत्सरा इमे सोमासो...

आ राजाना दिविस्पृशाऽसत्रा गन्तमुप नः

इमे वां मित्रावरुणा गवाशिरः सोमाः शुक्राः...

(ऋ. १।१३।७।१)

‘हे विराजमान एवं युलोक के छूनेवाले मित्र एवं वरुण ! आओ, हमारी ओर आओ; क्योंकि आपके लिए ये तेजस्वी सोम दुग्धमिश्रित बनाकर रखे हैं ।’

असत्रा गन्तमुप नोऽर्वाञ्चा सोमपीतये ।

अयं वां मित्रावरुणा नृभिः सुतः सोम आ

पीतये सुतः ॥

(ऋ. १।१३।७।३)

‘हे मित्र तथा वरुण ! सोम पीनेके लिए हमारी ओर आओ, क्योंकि यह सोम तुम्हारे पीने के लिए मनुष्यों से निचोड़ा गया है ।’

इससे स्पष्ट है कि आदित्यों का स्वागत तथा सत्कार करने के लिए दुग्धमिश्रित सोम का रस दिया जाता था । अब देखना चाहिए कि वैदिक कवि मित्र एवं वरुण से किस तरह की प्रार्थना करते हैं, या उनके सम्मुख कौनसी माँग पेश करते हैं—

अभयं मित्रावरुणाविहास्तु नोऽर्चिषात्रिणो नुदतं प्रतीचः । मा ज्ञातारं मा प्रतिष्ठां विदन्त मिथो विघ्नाना उप यन्तु मृत्युम् ॥

(अथर्व. ३।३२।३)

‘हे मित्र और वरुण ! हमारे लिए इधर निर्भयता रहे और अपने तेज से स्वार्थी लोगों को पराङ्मुख बनाकर दूर कर दो । ध्यानमें रहे कि वे किसी भी बतानेवाले ज्ञानी को और मान-सम्मान को न पा सकें, अपितु आपसमें ही एक दूसरे की राह में रोड़े अटकाते हुए मौत के मुँह में समाविष्ट हो जायें ।’

... मित्रावरुणा ... प्रजावत् क्षत्रं मधुनेह पिन्वतम् । बाधेथां दूरं निर्कृतिं पराचैः कृतं चिदेनः प्र मुमुक्तमस्मत् ॥ (अथर्व. ६।९।७।२)

‘हे मित्र एवं वरुण ! सन्तानयुक्त क्षत्रियोचित वीरताको तुम मधु से पुष्ट करो, बुराई को दूर से ही हटा दो और जो कुछ पाप किया हो, उसे हम से अलग कर दो ।’

यो अद्य सेन्यो... उदीरते । युवं तं मित्रा-वरुणौ अस्माद्यावयतं परि ॥ (अथर्व. १।२०।२)

‘आज जो कोई हथियारा सेना साथ ले ऊपर उठ जाता हो, हे मित्र और वरुण ! उसे तुम हम से दूर भगा दो ।’

मित्रावरुणौ वृष्ट्याधिपती तौ मावताम् ।

(अथर्व. ५।२४।५)

‘वे दोनों मित्र और वरुण जो स्वामी हैं, वर्षा से मेरी रक्षा करें ।’

... मित्रावरुणा धारयत्क्षिती ... युवो ... सख्यैरभिष्याम रक्षसः । (ऋ. १०।१३।२।२)

‘हे मानवोंके धारणकर्ता मित्र एवं वरुण ! तुम्हारी मित्रता मिलनेपर हम राक्षसों को पराभूत करेंगे।’

एष स्तोमो वरुण मित्र तुभ्यं ... अविष्टं
धियो जिगृतं पुरन्धीः । ...

(ऋ. ७।६५।५; ७।६४।५)

‘हे मित्र एवं वरुण ! तुम्हारे लिए यह स्तोत्र तैयार किया है; तुम हमारे कर्मों को सुरक्षित रखो और बहुतों के धारणक्षम बातों को जागृत करो।’

इयं... पुरोहितिर्युवभ्यां यज्ञेषु मित्रावरुणा-
वकारि। विश्वानि दुर्गा पिपृतं तिरो नो... ।

(ऋ. ७।६०।१२; ७।६१।७)

‘यज्ञों में, हे मित्र और वरुण ! तुम्हारे लिए यह पुर-
स्क्रिया कर डाली है; अतः सभी बहिष्ठ स्थानों को पार करके हमारी पुष्टि करो।’

आ मां मित्रावरुणह रक्षतं ... (ऋ. ७।५०।१)

... हुवे वां मित्रावरुणा सवाधः ।

(ऋ. ७।६१।६)

‘हे मित्र तथा वरुण ! यहाँ मेरी रक्षा करो; बाधा से घिर
जानेपर तुम्हें मैं पुकारता हूँ।’

प्र बाहवासिस्तुतं जीवसे न आ नो गव्यूति-
मुक्षतं घृतेन । आ नो जने श्रवयतं युवाना

श्रुतं मे मित्रावरुणा हवेमा ॥ (ऋ. ७।६२।५)

‘हे मित्र एवं वरुण ! अपने वाहुओं को खूब फैलाओ ताकि
हम जीवित रहें और घृतसे हमारे मार्ग को सींच दो, युवकतुल्य
तुम जनता में हमें विख्यात करो, मेरी इन पुकारोंको तुम सुन
लेना।’

राजाना... ऋतस्य गोपा सिन्धुपती क्षत्रिया
यातमर्वाक् । इळां नो मित्रावरुणोत वृष्टि
अव दिव इन्वतं जोरदानू ॥ (ऋ. ७।६४।२)

‘हे विराजमान मित्र एवं वरुण ! तुम ऋत के संरक्षक,
क्षत्रिय, शीघ्रदानी और समुद्रपर प्रभुत्व रखनेवाले हो, इसलिए
हमारे अभिमुख आओ और ब्रुलोक से हमें वृष्टि एवं अन्न
प्रेरित करो।’

सम्राजावस्य भुवनस्य राजथो मित्रावरुणा
विदथे स्वर्दशा । वृष्टिं वां राधो अमृतत्व-
मीमहे ...

(ऋ. ५।६३।२)

‘हे भलीभाँति विराजमान तुम इस भुवनपर प्रभुत्व रखने
वाले मित्र और वरुण ! यज्ञमें स्वकीय शक्ति से सब कुछ
देखनेवाले हो; तुम से हम अमरपन और धन तथा वृष्टि
चाहते हैं।’

यत् वंहिष्टं... सुदानू... अच्छिद्रं शर्म भुव-
नस्य गोपा । तेन नो मित्रावरुणावविष्टं सिषा-
सन्तो जिगीवांसः स्याम ॥ (ऋ. ५।६२।९)

‘हे अच्छे दानशूर एवं विश्वके पालनकर्ता मित्र और
वरुण ! जो कुछ भी छिद्ररहित (चुटिरहित, अखंड) और
अत्यधिक सुख है, उससे हमारी रक्षा करो; ताकि हम धन का
वितरण करते हुए जिगीषु बनें।’

... मित्रावरुणा... दिवः सम्राजा पयसान
उक्षतम् । (ऋ. ५।६३।५)

‘हे ब्रुलोक के सम्राट् तुल्य मित्र और वरुण ! हमें दूध एवं
जलसे सींच दो अर्थात् हमारे यहाँ दुग्ध एवं जल की न्यूनता
न हो।’

सम्राजा या... मित्रश्चोभा वरुणश्च देवा देवेषु
प्रशस्ता । ता नः शक्तं पार्थिवस्य महो रायो
दिव्यस्य । महि वां क्षत्रं देवेषु ॥

(ऋ. ५।६८।२-३)

‘जो ये सम्राट् तुल्य, दानी, देवतागणमें प्रशंसित मित्र एवं
वरुण हैं, वे हमें भूमंडल एवं ब्रुलोकस्थ महनीय धन दे सकें,
क्योंकि देवताओं में तुम्हारा क्षत्रियोचित बल महान् है।’

नू मित्रो वरुणो अर्यमा नस्मने तोकाय वरिवो
दधन्तु । सुगा नो विश्वा सुपथानि सन्तु ... ॥

(ऋ. ७।६३।६)

‘अब अर्यमाके साथ मित्र और वरुण हमें तथा बालकबच्चोंको
धन दे डालें और हमारे लिए सभी मार्ग सुन्दर एवं सुगम
हों।’

मा हेळे भूम वरुणस्य ... मा मित्रस्य ... नृणाम् ।
(ऋ. ७।६३।४)

‘हम लोग वरुण के तथा मानवोंके अत्यन्त प्यारे मित्र के
भी द्वेष में न रहें’ अर्थात् ऐसा कभी न होने पाय कि वे
हमारा द्वेष करने लें। इस से स्पष्ट है कि मित्रावरुणों का
कितना भारी प्रभाव जनतापर पड़ा था।

मित्रस्तन्नो वरुणो देवो...प्र साधिष्टेभिः पथि-
भिर्नयन्तु । (ऋ. ७।६४।३)

‘ तो हमें मित्र एवं देवतारूपी वरुण अत्यन्त सुगम मार्गों से अधिकारिक ले चलें । ’

मित्रस्तन्नो वरुणो मामहन्त शर्म तोकाय तन-
याय गोपाः । मा वो भुजेमान्यजातमेनो मा
तत् कर्म ... यच्चयध्वे ॥ (ऋ. ७।५२।२)

‘ संरक्षक मित्र एवं वरुण उस सुख को हमारी सन्तान के लिए दें, हम आप के ही हैं, इसलिए दूसरों से उत्पन्न पाप का भार हमें न उठाना पड़े और नाहि हम वह कार्य करें कि भ्रष्टे तुम नष्ट करना चाहो । ’

यत् गोपा अवदत् अदितिः शर्म भद्रं मित्रो
यच्छन्ति वरुणः । तस्मिन्ना तोकं तनयं
दधाना मा कर्म देवहेळनं... ॥ (ऋ. ७।६०।८)

‘ संरक्षक अदितिने जो कहा था कि मित्र एवं वरुण स्वागत्कारक सुख देते हैं, उसीमें हम अपनी सन्तान रखते हुए ऐसा कर्म न करें कि जिससे देवोंका क्रोध प्रतीति हो । ’

ता नः स्तिपा तनूपा वरुण जरितृणाम् ।
मित्र साधयतं धियः ॥ (ऋ. ७।६६।३)

‘ हे विख्यात गृहरक्षक तथा शरीरसंरक्षक मित्र और वरुण ! हम लोताओं के कर्मों को या बुद्धियोंको सफलता दो । ’

श्रुतस्य मित्रावरुणा पथा वामपो न नावा दुरिता
तरेम । (ऋ. ७।६५।३)

‘ हे मित्रावरुण ! तुम्हारे ऋतके मार्गसे हम बुराइयों को इस भाँति लाँचकर आगे बढें, जैसे नौकाके सहारे लोग जलोंको तरावते हैं । ’

वयं मित्रस्यावसि स्याम सप्रथस्तमे ... ॥
(ऋ. ५।६५।५)

‘ हम अत्यन्त विस्तृत एवं चौड़े मित्रके संरक्षणमें रहें । ’

इन उपर दिये हुए मंत्रभागों से मित्र और वरुणके कार्योंका स्वरूप स्पष्ट हो जाता है । जनताकी सेवा वे कितनी लगनसे करते थे, सो सूर्यप्रकाशवत् सुस्पष्ट होता है । वेदमें अन्यत्र इनके बारेमें जो उल्लेख पाये जाते हैं उनसे भी इसी बात की पुष्टि होती है । जैसे—

यां मे धियं ... देवा अददात् वरुण मित्र यूयं ।
तां पीपयत् पयसेव धेनुं कुवित् गिरो अधि रथे
वहाय ॥ (ऋ. १०।६४।१२)

‘ हे द्योतमान मित्र एवं वरुण ! तुमने जो बुद्धि मुझे प्रदान की है, उसे तुम ऐसी पुष्ट करो जैसे कोई गायको अत्यन्त दुग्धवती बनाए अर्थात् बुद्धि यथेष्ट सफल हो । क्योंकि तुम अपने रथोंमें बहुतसी वस्तुताओं को ले चलते हो । ’ इससे स्पष्ट होता है कि रथारोही होकर जहाँ जहाँ ये पहुँचते, उधर लोग इनके लिए भाषण किया करते थे । निःसन्देह इन भाषणोंमें मित्रावरुणकी योग्यताका यथोचित वर्णन रहता अतः वैदिक कवि उनसे प्रार्थना करते हैं कि वे दोनों तथा अन्य देव भी उन्हें भली भाँति लाभ पहुँचायें । मित्र और वरुण तथा अन्य आदित्य लोकसेवामें अनवरत रूपसे लगे हैं, इसलिए वैदिक कवि कहते हैं—

आ नो बर्ही रिशादसो वरुणो मित्रो अर्यमा ।
सीदन्तु मनुषो यथा ॥ (ऋ. १।२६।४)

आ सीदन्तु बर्हिषि मित्रो अर्यमा प्रातर्यावाणो
अध्वरम् । (ऋ. १।४४।१३)

‘ शत्रुहिंसक तीन प्रमुख आदित्य मित्र, वरुण और अर्यमा हमारे बिछाए हुए दर्भासनपर अन्य मानवोंके तुल्य बैठें । प्रातः काल ही अहिंसक कार्यमें उपस्थित रहनेके लिए जानेवाले मित्र एवं अर्यमा कुशासनपर बैठ जाएँ । ’

वैदिक कवि अग्निसे कहते हैं कि—

त्वमादित्याँ आवह तान् युश्मसि । अग्ने...
(ऋ. १।१४।३)

‘ हे अग्ने ! तू अदितिके पुत्रोंको इधर ले आ, क्योंकि हम उन्हें बहुत चाहते हैं । ’ आदित्योंकी योग्यताके बारेमें कहा है कि—

ते हि पुत्रासो अदितेर्विदुर्द्वेणांसि योतवे ।

अंहोश्चिदुरुचक्रयोऽनेहसः ॥ (ऋ. ८।१८।५)

‘ वे तो अदितिके पुत्र निष्पाप और विशाल मात्रा में कार्य करनेवाले हैं और जानते हैं कि किस ढंगसे हमें पापसे दूर रखा जाय तथा द्वेषाओं को हमसे पृथक् किया जाय । ’

सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुः ... दधिरे दिवि
क्षयम् । (ऋ. १०।६३।५)

‘ जो सम्राट्‌तुल्य भली भाँति बढनेवाले आदित्य हैं वे यज्ञमें आचुके हैं तथा युलोकमें निवासस्थान बना चुके हैं । ’

आदित्यों से जनताको कैसे लाभ पहुँचता था इस विषय में कहा है कि—

अरिष्टः स मर्तो विश्व एधते प्रप्रजाभिर्जायते...
यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि
दुरिता स्वस्तये ॥ (ऋ. १०६३।१३)

‘ जिस मानव को आदित्य अच्छी नीतियों से सारी बुराइयों के पार सुख के लिए ले चलते हैं, वह अखंडरूप से अहिंसित होता हुआ वृद्धिगत होता है और संतानों द्वारा विशेष रूप से जन्म लेता है । ’

इस कारण वैदिक कवि इन से प्रार्थना करते हैं कि—

त आदित्या अभयं शर्म यच्छत । सुगा नः कर्तं
सुपथा स्वस्तये ॥ (ऋ. १०६३।७)

‘ ऐसे वे विख्यात आदित्यो ! तुम भयरहित सुख प्रदान करो और भलाई के लिए हमारे लिए सुन्दर मार्ग सुखपूर्वक गमन करने योग्य कर दो । ’

त आदित्या आगता सर्वतातये... ।

(ऋ. १०३५।११)

‘ ऐसे वे तुम आदित्यो ! सबके विस्तार या वृद्धि के लिए आओ । ’

तन्नो देवा यच्छत सुप्रवाचनं छर्दिरादित्याः
सुभरं नृपाय्यम् । (ऋ. १०३५।१२)

‘ हे देवतारूपी आदित्यो ! तो हमें ऐसा घर दो कि जिसे नेताओं का संरक्षण प्राप्त हो, जो मलीभौति भरण करता हो तथा अत्यन्त प्रशंसनीय हो । ’

‘‘स्वस्तये आदित्यासो भवन्तु नः । (ऋ. ५।५१।१२)

‘ हमारे कल्याण के लिए आदित्य प्रयत्नशील रहें । ’

ऐसे विख्यात आदित्यों के दलमें प्रमुखतया विराजमान मित्र, वरुण एवं अर्यमा के संबंधमें निम्न मंत्र देखने योग्य हैं—

प्रोतये वरुणं मित्रं... कृष्वावसे नो अद्य ।

(ऋ. ६।२१।९)

‘ आज विशेष ढंग से संरक्षण हो इसलिए मित्र एवं वरुण को तैयार कर ले । ’

ते नः सन्तु युजः सदा वरुणो मित्रो अर्यमा ।

वृधासश्च प्रचेतसः ॥ (ऋ. ८।८३।२)

‘ वे वर्धनशील तथा उत्कृष्ट ज्ञानवाले मित्रावरुण एवं अर्यमा हमेशा हमारे साथ रहनेवाले हों । ’

ऋजुनीती नो वरुणो मित्रो नयतु विद्वान् ।

अर्यमा देवैः सजोषाः ॥ (ऋ. १।९०।१)

शं नो मित्रः, शं वरुणः. शं नो भवत्वर्यमा... ।
(ऋ. १।९०।११)

‘ सरल एवं निष्कपट नीतिसे प्रेरित होकर जाननेवाला मित्र, वरुण तथा देवताओं से युक्त अर्यमा हमें ले चलें । ’

‘ तीनों आदित्य हमारे लिए हितकारक बनें । ’

आ नो...गमन्तु देवा मित्रो अर्यमा वरुणः
सजोषाः । (ऋ. १।१८६।२)

‘ हमारे निकट तीनों देवतारूपी मित्रावरुण तथा अर्यमा मिल कर आ जायें । ’

वामं नो अस्त्वर्यमन् वामं वरुण शंस्यम् ।

वामं हि आवृणीमहे ॥ (ऋ. ८।८३।४)

‘ वे वरुण एवं अर्यमन् ! हमें प्रशंसनीय एवं सुन्दर धन मिल जाय; क्योंकि हम तो सुन्दर चीजको ही सर्वथा स्वीकार कर लेते हैं । ’

ते हि श्रेष्ठवर्चसस्त नस्तिरो विश्वानि दुरिता
नयन्ति । सुक्षत्रासो वरुणो... ॥ (ऋ. ६।५१।१०)

‘ वे उत्तम क्षत्रियोचित वलसे पूर्ण मित्र एवं वरुण उच्च कोटि के तेजवाले हैं और निश्चय से हमें सारी बुराइयों का ले चलते हैं । ’

त आगमन्तु त इह श्रवन्तु सुक्षत्रासो वरुणो
मित्रो... । (ऋ. ६।४९।१)

‘ वे अच्छे क्षत्रिय मित्रावरुण इधर आ जायें और हमारे कथन को सुन लें । ’

इस भाँति, मित्र और वरुण जिन्हें आदित्य दल में सर्वोपरि स्थान मिल गया है अपनी तीव्र लगन एवं अदम्य उत्साहसे जनसेवा को इतने अच्छे ढंग से निभाते हैं कि वैदिक कवि प्रसन्नचेता होकर उनकी खूब सराहना करते हैं, देखिए—

इमां वां मित्रावरुणा सुवृक्तिमिषं न कृण्वे
असुरा नवीयः ॥ (ऋ. ७।३६।२)

‘ हे बल तथा प्राण शक्ति देनेवाले मित्र और वरुण ! उप दोंनों के लिए मैं इस नयी सुन्दर वक्तृता को बना देता हूँ मानों जैसे कि कोई अन्न बनाता हो अर्थात् सोच विचार के उपरान्त परिश्रमपूर्वक तैयार कर देता हूँ । ’

सविता देवताका परिचय

सविता के संबन्ध में ब्राह्मणग्रन्थों में निम्न निर्देश मिलते हैं—

सविता वै देवानां प्रसविता । (शत. १।१।२।१७)
(जै. उ. ३।१।८।३)

सविता वै प्रसविता । (कौ. ६।१४)

‘सविता सचमुच देवोंको उत्पन्न करनेवाला है, उत्पादक है।’

सविता वै प्रसवानामीशे । (कौ. १।३।०; ७।१६)

सविता प्रसवानामीशे । (कौ. ५।२)

‘सविता विशेष उत्पादनोका प्रभु है।’ इस से स्पष्ट हुआ कि उत्पादन या सृजनक्रिया से सविताका घनिष्ठ संबंध है। यही बात निम्न निर्देश में दिखाई देती है—

एताभिर्वै (रात्रिभिः) सविता सर्वस्य प्रसवमगच्छत् ।
(ताण्ड्य. २४।१५।२)

‘इन्हीं से युक्त हो सविता सबके उत्पादन के निकट चला गया।’

सविता प्राजनयत् । (तै. ब्रा. १।६।२।२)

प्रजापतिः सविता भूत्वा प्रजा असृजत ।

(तै. ब्रा. १।६।४।१)

‘सविताने प्रकृत्यतया उत्पन्न किया, प्रजापतिने सविता रक्षक प्रजाओं का सृजन किया।’

अब देखना चाहिए कि वेदमंत्रोंमें उत्पादक सविता के संबंधमें कौनसे निर्देश पाये जाते हैं—

दियो घर्ता भुवनस्य प्रजापतिः ... विचक्षणः
प्रथमप्रापृणचूर्वजीजनत् सविता सुमनमुक्थ्यम् ।
(ऋ. ४।५३।२)

‘विश्वकी प्रजाओंका पालनकर्ता, युलोकका धारण करने-वाला और विशेष ढंगसे द्रष्टा सविता फैलानेका तथा भरनेका श्रेष्ठ करता हुआ प्रशंसनीय एवं विशाल सुखका सृजन कर रहा।’

... प्रासावीद्भद्रं द्विपदे चतुष्पदे । (ऋ. ५।८।१।२)

‘मानवों तथा चौपायोंके लिए सविताने हितका निर्माण प्रकृष्ट रूपसे किया।’

उतेशिषे प्रसवस्य त्वमेक इत्... (ऋ. ५।८।१।५)

‘हे सवितर्! तू अकेला ही उत्पादन कार्यपर प्रभुत्व रखता है।’

स हि रत्नानि दाशुषे सुवाति सविता भगः ।

तं भागं चित्रमीमहे ॥ (ऋ. ५।८।२।३)

‘वह सेवनीय या ऐश्वर्यवान् सविता तो दानी पुरुषके लिए रत्नोंका सृजन करता है और हम उस अनूठे भागको पाना चाहते हैं।’

... देवः सविता दमूना ... आ दाशुषे सुवति

भूरि वामम् । (ऋ. ६।७।१।४)

‘दान देनेकी इच्छा मनमें रखता हुआ द्योतमान सविता दानी पुरुषको देनेके लिए सुन्दर धन को प्रचुरमात्रा में बना देता है।’

सविता प्रसवानामधिपतिः स मावतु... ।

(अथर्व. ५।२४।१)

‘प्रकृष्ट उत्पादनोका स्वामी जो सविता है वह मेरी रक्षा करे।’

वाममद्य सवितर्वाममु श्वो दिवेदिवे वाममसभ्यं

सावीः । (ऋ. ६।७।१।६)

‘हे सवितर्! आज हमारे लिए सुन्दर धनका सृजन कर, कल के दिन भी और प्रतिदिन धनका निर्माण कर।’

अद्या नो देव सवितः प्रजावत् सावीः सौभगम् ।

(५।८।२।४)

‘हे देवतारूपी सवितर्! आज तू हमारे लिये सन्तानयुक्त अच्छे ऐश्वर्यका सृजन कर।’

देवेभ्यो हि प्रथमं यक्षिणेभ्योऽमृतत्वं सुवसि

भागमुत्तमम् । (४।५।४।२)

‘हे सवितर्! पहले तो तू पूजनीय देवोंके लिए उत्कृष्ट तथा भवनीय धनका और अमरपनका निर्माण करता है।’

य इमा विश्वा जातान्याश्रावयति श्लोकेन ।

प्र च सुवाति सविता ॥ (ऋ. ५।८।२।९)

‘जो सविता इन सभी वस्तुओं को प्रकर्ष से उत्पन्न करता है और उत्पादित होनेपर श्लोक द्वारा चारों ओर सुनाता है।’

उदु तिष्ठ सवितः श्रुध्यास्य... व्युर्वी पृथ्वी...
सृजानः आ नृभ्यो मर्तभोजनं सुवानः ॥

(ऋ. ७।३।८२)

‘हे सवितर! तू उठ खड़ा रह, इस प्रार्थना को सुन ले और तू विशाल पृथ्वी को बनाता है तथा मानवों के लिए मनुष्योपभोग्य धन-संपदा को प्रेरित करता है।’

इन उपर्युक्त मन्त्रों से भी स्पष्ट होता है कि उत्पादन एवं प्रेरण सविता के प्रमुख कार्यों में गिने जाते थे। दोनों कार्य निःसन्देह महत्त्वपूर्ण हैं और वैदिक कवि सविता से निम्न प्रकार प्रार्थना करते हैं—

ये ते पन्थाः सवितः पूर्यासोऽरेणवः सुकृता
अन्तरिक्षे । तेभिर्नो अद्य पथिभिः सुगेभी
रक्षा च नो अधि च ब्रूहि देव ॥ (ऋ. १।३।१११)

‘हे (देव सवितर) द्योतमान! उत्पादक तथा प्रेरक सवितर! अन्तरिक्ष में (ते ये पूर्यासः) तेरे जो पूर्वकाल से विद्यमान (अरेणवः सु कृताः) बिना धूलि के अर्थात् निर्मल एवं भली भाँति बनाये हुए (पन्थाः) मार्ग हैं (तेभिः) उनपर से, (सुगेभिः पथिभिः) जो कि सुगमतापूर्वक यात्रा करने योग्य हैं, आकर (अद्य नः रक्ष) आज हमारी रक्षा कर (अधि ब्रूहि च) और हमसे वार्तालाप कर, कुछ उपदेश की बातें हम से कह दे।’

अस्मभ्यं तद्विवो अद्भ्यः पृथिव्यास्त्वया
दत्तं काम्यं राधः आ गात् । शं यत् स्तोतृभ्य
आपये भवात्युरुशंसाय सवितर्जरीत्रे ॥

(ऋ. २।३।१११)

‘हे (सवितर) उत्पादक तथा प्रेरक देव! (त्वया दत्तं) तूने दिया हुआ (तत् काम्यं राधः) वह कमीय धन (दिवः अद्भ्यः पृथिव्याः) बुलोक से, जलों से तथा भूमंडलपर से (अस्मभ्यं आ गात्) हमारे लिए आ जाय, (यत्) जो धन, (स्तोतृभ्यः) स्तोताओं के लिए तथा (उरुशंसाय जरित्रे) विस्तारपूर्वक कहनेवाले प्रशंसक के लिए (शं आपये भवति) शान्तिदायक तथा आसवत् बन जाता है।’

बृहत्सुम्नः प्रसवीता निवेशनो जगतः स्थातु-
रुभयस्य यो वशी । स नो देवः सविता शर्म
यच्छत्वस्मे क्षयाय त्रिवरूथमंहसः ॥

(ऋ. ४।५।३।६)

‘(देवः सविता) दानी सविता (यः वशी) जो सब को वश में रखनेवाला, (जगतः स्थातुः) जंगम एवं स्थावर (उभयस्य जगतः निवेशनः) द्विविध संसार को ठीक बिठानेवाला, (प्रसवीता) प्रकर्ष से प्रेरित या उत्पन्न करनेवाला और (बृहत्सुम्नः) प्रचंड सुख या धन साथ रखनेवाला है (सः नः) वह हमें (शर्म यच्छतु) सुख दे डाले और (अस्मे) हमारे लिए (अंहसः क्षयाय) पाप का विनाश हो इसलिए (त्रिवरूथं) तीन विभागवाले घर का दान करे।’ इससे बिंदित होता है कि सविता का कार्यक्षेत्र समूचे विश्व में फैला हुआ है।

आगन् देव ऋतुभिर्वर्धतु क्षयं, दधातु नः
सविता सुप्रजामिषम् । स नः क्षपाभिरह-
मिश्र जिन्वतु, प्रजावन्तं रयिमस्मे समिन्वतु ॥

(ऋ. ४।५।३।७)

‘देवतारूपी सविता (ऋतुभिः आगन्) विभिन्न मौसम में आ जाए और (क्षयं वर्धतु) हमारे निवासस्थल को बढ़ाए तथा (सुप्रजां इषं) अच्छी सन्तान तथा अन्न (नः दधातु) हमें देदे; वह सविता (क्षपाभिः अहभिः च) रात-दिन (नः जिन्वतु) हमें संतुष्ट रखे और (अस्मे) हमारे ओर (प्रजावन्तं रयिं सं जिन्वतु) सन्तानयुक्त धन भलीभाँति प्रेरित करे।’

अभूदेवः सविता वन्द्यो नु नः... वि यो रत्ना
भजति मानवेभ्यः श्रेष्ठं नो अत्र द्रविणं यथा
दधत् ॥

(ऋ. ४।५।४।१)

‘हमारे लिए द्योतमान सविता वन्दनीय हुआ है, इसे सन्देह नहीं; जो मानवों को रमणीय धन बाँटकर देता है वह जैसे इधर हमारे लिए उच्च कोटि का द्रव्य रखे ऐसा प्रबंध करे।’

गाव इन ग्रामं युयुधिरिवाश्वान् वाश्रेव वसं
सुमना दुहाना । पतिरिव जायामभि नो न्येतु
घर्ता दिवः सविता विश्ववारः ॥ (ऋ. १०।१४।१५)

‘जैसे गौएँ सायंकाल अपने ग्राम की ओर सहर्ष और आती हैं, योद्धा जिस तरह उत्सुकतापूर्वक घोड़ों के पास आ पहुँचता है, अच्छी मनवाली गौ दुहते समय रैमाती हुई अपने बछड़े के निकट जिस प्रकार शीघ्र जाती है और पतिदेव अपने पत्नी के निकट जैसे त्रिव्रतया जाता है वैसे ही वह सविता, जो

विश्वलोक का धारणकर्ता और सब लोगों के लिए वरणीय है, हमारे समीप अत्यन्त अधिक मात्रा में आ जाए ।'

**देवस्य वयं सवितुः सवीमनि, श्रेष्ठे स्याम वसु-
नश्च दावने । यो विश्वस्य द्विपदो यश्चतुष्पदो
निवेशेन प्रसवे चासि भूमनः ॥** (ऋ. ६।७।१२)

(वयं) हम लोग देवतारूपी सविता के उच्चकोटि के (सवीमनि) उत्पादन-कार्य की तथा (वसुनः दावने) धन-वितरण-कार्य की छत्रछाया में रहें, हे सवितर ! जो तू अखिल मानव तथा चौपायों के यथेष्ट सृजन एवं प्रस्थापन-कार्य में लगा हुआ है । ' इस मन्त्र में सविता के विशाल कार्यक्षेत्र की एक झलक मिलती है । वह केवल श्रेष्ठ ढंग के उत्पादन कार्य में ही लगा हो सो बात नहीं अपितु धनके विभाजन में भी उसका ध्यान बराबर लगा रहता है, क्योंकि यदि उत्कृष्ट उत्पादन की ओर ही ध्यान दिया जाय और उचित वितरण का कुछ भी ख्याल न रखा जाय तो बड़ी बिकट समस्याएँ उठ खड़ी होती हैं जैसे कि वर्तमान आर्थिक संगठन से स्पष्ट होता है । समूचे विश्व के उत्पादन तथा ठीक जगह बिठाने के कार्य को सविता पुनारूप से निभाता है ।

**अदब्धेभिः सवितः पायुभिर्द्वं शिवेभिरद्य परि-
पाहि नो गयम् । हिरण्यजिह्वः सुविताय नव्यसे
रक्षा माकिर्नो अघशंस ईशत ॥** (ऋ. ६।७।१३)

' हे सवितर ! तू आज (नः गयं) हमारे धन तथा शत्रुओं (शिवेभिः अदब्धेभिः पायुभिः) हितकारक तथा न रक्षये गये संरक्षणसाधनों से (परि पाहि) चतुर्दिक् सुरक्षित रख और तू (हिरण्यजिह्वः) हितरमणीय वाणी से कहनेवाला है इसलिए हम तेरे सामने यह माँग पेश करते हैं कि हमें (नव्यसे सुविताय) नई भलाई के लिए वचा दे एवं हमपर (अघ-शंसः) बुरी बातें कहनेवाला कोई भी (माकिः ईशत) हमों न शासन प्रस्थापित करे ।'

**अपि पुतः सविता देवो अस्तु, यमा चित् विश्वे
यसवो गृणन्ति । स नः स्तोमान् नमस्य श्रनो
पादिश्वेभिः पातु पायुभिर्नि सूरिन् ॥**

(ऋ. ७।३८।३)

' सभी वसुतक जिसकी प्रशंसा करते हैं वह दानशालि सविता भी प्रशंसित होवे, वह नमन करने योग्य है और हमारे स्तोत्रोंको सुनकर हमें अन्न दे डाले तथा सारी संरक्षण पादिश्वेभिः को साथ लेकर विद्वन्मण्डली की रक्षा कर ले ।'

इससे स्पष्ट है कि उत्पादन, प्रेरण के अतिरिक्त संरक्षण कार्य करनेकी क्षमता भी पर्याप्त रूपसे सवितामें विद्यमान थी ।

सूर्य और सविता

साधारणतया सूर्यको सविता कह जाता है, अतः प्रश्न उठ खड़ा होता है कि क्या सूर्य और सविता अभिन्न हैं ? ब्राह्मण-ग्रंथों के कुछ वचन इस अभिन्नता को मानते हैं ऐसा प्रतीत होता जैसे—

आदित्य एव सविता । गोपथ. १।३३; जै. उ.

४।२७।११

**असावादित्यो देवः सविता । शतपथ. ६।३।१।१८
असौ वै सविता योऽसौ (सूर्यः) तपति ।**

कौ. ७।६; गोपथ. १।२०

एष वै सविता य एष (सूर्यः) तपति ।

शतपथ. ३।२।३।१८; ४।४।१।३; ५।३।१।७

इन वचनों से स्पष्ट होता है कि सविता वास्तवमें सूर्य ही है, क्योंकि विश्वभरमें प्रेरणा और उत्पादन-क्रिया का सजीव प्रतीक सूर्य है, यह निःसन्देह है । वेदमें भी कुछ ऐसे मंत्र पाये जाते हैं जिनसे सूर्य एवं सविताकी अभिन्नताकी सूचना मिलती है, जैसे—

**अष्टौ व्यख्यत् ककुभः पृथिव्याः... हिरण्याक्षः
सविता देव आगात्, दधद्रत्ना दाशुषे वार्याणि ।**
(ऋ. १।३।५।८)

' हितरमणीय दृष्टिसे युक्त सविता शीतमान होता हुआ, दानी पुरुष के लिए स्वीकरणीय रत्नों को धारण करता हुआ, पृथ्वीके आठों दिग्विभागों को प्रकाशित कर गया और आ पहुँचा है ।'

**हिरण्यपाणिः सविता विचर्षणिः, उभे द्यावा-
पृथिवी अन्तरीयते, अपामीवां बाधते ..अभि
कृष्णेन रजसा द्यामृणोति ॥** (ऋ. १।३।५।९)

' विशेष रीतिसे द्रष्टा और हाथ में सुवर्ण धारण करता हुआ भूलोक एवं बुलोक दोनों के बीच चला आता है, रोगों को दूर भगाता है और आकर्षक तेजसे बुलोक को व्याप्त करता है ।'

**आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो...हिरण्ययेन सवि-
ता रथेना आ देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥**

(ऋ. १।३।५।२)

‘ आकर्षक तेज से युक्त हो आनेवाला द्योतमान सविता सुवर्ण के बने अर्थात् तेजस्वी जगमगाते हुए रथपर से विश्व को निहारता हुआ चला आता है । ’

**वि नाकमख्यत् सविता वरेण्योऽनु प्रयाण-
मुषसो वि राजति ।** (ऋ. ५।८।१।२)

‘ श्रेष्ठ सविताने आकाश को विशेष ढंग से प्रकाशित कर दिया है और वह उषाके प्रयाण के पश्चात् विराजमान हो उठता है । ’

**नृचक्षा एष दिवो मध्य आस्ते, आपप्रिवान्
रोदसी अन्तरिक्षम् ।** (ऋ. १०।१३।१।२)

‘ बुलोक, भूलोक तथा अन्तरिक्ष पूर्ण करता हुआ यह मानवोंका निरीक्षण करनेवाला आकाश के मध्य बैठे रहता है । ’

**सूर्यरश्मिर्हरिकेशः पुरस्तात् सविता ज्योति-
रुदयाँ अजस्रम् ।** (ऋ. १०।१३।१।१)

‘ सूर्य की रश्मिवाला तथा हरण करने की क्षमता से युक्त सविता सदैव प्रकाशपुंज को ऊपर उठाता है । ’

**सविता यन्त्रैः पृथिवीमरम्णादस्कम्भने सविता
द्यामदंहत् ।** (ऋ. १०।१४।१।१)

‘ सविताने भूमि को यंत्रोंद्वारा स्थिर किया है और निरालंब से दिखाई देनेवाले स्थान में बुलोक को स्थायी बनाया है । ’

**आप्रा रजांसि दिव्यानि पार्थिवा... प्र बाहू
अस्त्राक् सविता सवीमनि निवेशयन् प्रसव-
न्नक्रुभिर्जगत् ॥** (ऋ. ४।५।३।३)

‘ बुलोकस्थ तथा भूमंडलस्थ लोकोंको अपने तेज से व्याप्त

कर चुका और जगत् को दिन और रात के समय प्रेरित तथा अपने स्थान पर बिठाकर उत्पादन कार्यके लिए सविताने अपने बाहुओं को खूब आगे बढ़ाया है । ’ सूर्य का सवितृत्व अत्यन्त स्पष्ट है ।

संरक्षण-कार्य करने के लिए सविता को निमंत्रण भेजने के निर्देश देखने योग्य हैं ।

**... हवामि देवं सवितारमूतये । (ऋ. १।३।५।१)
हिरण्यपाणिमूतये सवितारमुपह्वये ।**

(ऋ. १।२।१।५)

विभक्तारं हवामहे वसोश्चित्रस्य राधसः ।

सवितारं नृचक्षसम् ॥

(ऋ. १।२।१।७)

‘ संरक्षण हो इसलिए मैं देवतारूपी सविता को, जो हाथों सुवर्ण धारण करता है, बुलाता हूँ; मानवों के द्रष्टा और अनूठे धन का विभजन करनेवाले सविता को हम बुलाते हैं । ’ इस प्रकार भक्तोंके दिये हुए निमंत्रण को पाकर सविता रथपर चढ़कर यात्रा करने लगता है, जैसे—

**हिरण्येन सवितां रथेनाऽऽदेवो याति भुवनानि
पश्यन् । ... बृहन्तं आस्थाद्रथं सविता चित्र-
भानुः ।** (ऋ. १।३।५।२-४)

‘ देव सविता भुवनों को देखता हुआ सुनाहले रथपर चला आता है; विचित्र किरणोंवाला याने तेजस्वी सविता बड़े भारी रथपर चढ़ गया । ’

इस भाँति, आदित्यों के महनीय कार्यका वर्णन वेदमें किया है । पाठक भी आदित्यों के मंत्र एवं सूक्त पढ़ें और मन करें, ऐसी विनन्ति है ।



दैवत-संहिता ।

(ऋग्यजुःसामाथर्वणां संहितानां सर्वान् मन्त्रान् दैवतानुसारेण संगृह्य निर्मिता ।)

९ अदितिः, आदित्याश्च ।

(१) अदितिः ।

॥ १ ॥ (ऋ० १।८९।१०)

(१) × गोतमो राहूगणः । त्रिष्टुप् ।

अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षं—मदितिर्माता स पिता स पुत्रः ।

विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्

१०

१

॥ २ ॥ (ऋ० ८।१८।४-७)

(२-५) इरिम्बिठिः काण्वः । उणिक् ।

देवेभिर्देव्यदिते ऽरिष्टभर्मन्ना गहि । सत् सुरिभिः पुरुप्रिये सुशर्मभिः

४

ते हि पुत्रासो अदिते—विदुर्देषांसि योतवे ।

अंहोश्चिदुरुचक्रयोऽनेहसः

५

अदितिर्नो दिवा पशु—मदितिर्नक्तमद्रयाः । अदितिः पात्वंहसः सदावृधा

६

उत स्या नो दिवा मति—रदितिरूत्या गमत् । सा शंताति मयस्करदप सिधः

५

॥ ३ ॥ (ऋ० ८।६७।१०-१२)

(६-८) मत्स्यः साम्मदः, मैत्रावरुणिर्मान्यः बहवो वा मत्स्या जालनद्धाः । गायत्री ।

उत त्वामदिते म—ह्यहं देव्युप ब्रुवे । सुमुळीकामभिष्टये

१०

पपि दीने गभीर आँ उग्रपुत्रे जिघांसतः । मार्किस्तोकस्य नो रिषत्

११

अनेहो न उरुव्रज उरुचि वि प्रसर्तवे । कृधि तोकार्य जीवसे

१२

८

॥ ४ ॥ (९-१५) (वा० य० ११।५६-५७, ५९)

सिनीवाली सुकपर्दा सुकुरीरा स्रौपशा । सा तुभ्यमदिते मद्योखां दधातु हस्तयोः

९

× वा० य० २५, २३ । अथर्व० ७।६।१ ।

१ दै. [अदितिः]

उखां कृणोतु शक्त्या बाहुभ्यामदितिर्धिया ।
माता पुत्रं यथोपस्थे सार्धं विमर्त्तु गर्भं आ । मुखस्य शिरोऽसि
अदित्यै रास्नास्यदितिष्ठे बिलं गृभ्णातु ।
कृत्वाय सा महीमुखां मृन्मयीं योनिमग्रये ।
पुत्रेभ्यः प्रायच्छददितिः श्रपयानिति

५७ १०

५९ ११

॥ ५ ॥ (वा० य० २१।५-७) ×

महीम् पु मातरं सुव्रतानामृतस्य पत्नीमवसे हुवेम ।
तुविक्षत्रामजरन्तीमुरुचीं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम्
सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम् ।
दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये
सुनावमा रुहेयमस्रवन्तीमनागसम् । शतारित्रां स्वस्तये

५

६

७ १४

॥ ६ ॥ (वा० य० २२।४) *

स्तीर्णं बर्हिः सुष्टरीमा जुषाणोरु पृथु प्रथमानं पृथिव्याम् ।
देवेभिर्युक्तमदितिः सजोषाः स्योने कृण्वाना सुविते दधातु

४ १५

॥ ७ ॥ (अथर्व० ७।६।४) +

(१६-१७) अथर्वा । विराट् जगती ।

वाजस्य नु प्रसवे मातरं महीमदितिं नाम वचसा करामहे ।
यस्या उपस्थ उर्व्वन्तरिक्षं सा नः शर्म त्रिवरूथं नि यच्छातु

४ १६

॥ ८ ॥ (अथर्व० ७।७।१) आर्षी जगती ।

दितेः पुत्राणामदितेरकारिषमव देवानां बृहतामनर्मणाम् ।
तेषां हि धाम गभिषक् समुद्रियं नैनान् नमसा परो अस्ति कश्चन

१ १७

अदिति-सहचारी देवगणः ।

(१) सोमः, अदितिः ।

॥ ९ ॥ (अथर्व० ६।७।१-२) [दै० सोमः १२५१-५२ मन्त्रौ द्रष्टव्यौ]

× अथर्व० ७।६।२-३; * दै० [अग्निः] २१०९ ।

+ वा० य० २, ५; १८, ३० ।

अदितिदेवता ।

श्रुताः १०-३०]

(२) आदित्याः ।

॥ १० ॥ (क्र० ११८११८-६)

(१८-२०) कण्वो घौरः । गायत्री ।

सुगः पन्थां अनृक्षर आदित्यास कृतं यते । नात्रावखादो अस्ति वः ४
 यं यज्ञं नयथा नर आदित्या क्रजुना पथा । प्र वः स धीतये नशत् ५
 स रत्नं मर्त्यो वसु विश्वं तोकमुत तमना । अच्छा गच्छत्यस्तुतः ६ २०

॥ ११ ॥ (क्र० २१७११-१७)

(११-३७) कूर्मो गातर्समदो, गृत्समदो वा । त्रिष्टुप् ।

इमा गिर आदित्येभ्यो घृतस्नूः सनाद् राजभ्यो जुह्वा जुहोमि ।
 शुणोतु मित्रो अर्यमा भगो नस्तुविजातो वरुणो दक्षो अंशः १
 इमं स्तोमं सकृतवो मे अद्य मित्रो अर्यमा वरुणो जुषन्त ।
 आदित्यासः शुच्यो धारपूता अवृजिना अनवद्या अरिष्टाः २
 त आदित्यास उरवो गभीरा अदब्धासो दिप्सन्तो भूर्यक्षाः ।
 अन्तः पश्यन्ति वृजिनोत साधु सर्वं राजभ्यः परमा चिदन्ति ३
 धारयन्त आदित्यासो जगत् स्या देवा विश्वस्य भुवनस्य गोपाः ।
 दीर्घाधियो रक्षमाणा असुर्यमृतावानश्चर्यमाना क्रणानि ४
 विद्यामादित्या अवसो वो अस्य यदर्यमन् भय आ चिन्मयोभु ।
 युष्माकं मित्रावरुणा प्रणीतौ परि श्वभ्रैव दुरितानि वृज्याम् ५ २५
 सुगो हि वो अर्यमन् मित्र पन्थां अनृक्षरो वरुण साधुरस्ति ।
 तेनादित्या अर्घिं वोचता नो यच्छता नो दुष्परिहन्तु शर्म ६
 पिपर्तु नो अदिती राजपुत्रा ऽति द्वेषांस्वर्यमा सुगेभिः ।
 बृहन्मित्रस्य वरुणस्य शर्मो प स्याम पुरुवीरा अरिष्टाः ७
 तिस्रो भूमीर्धारयन् त्रीरुत द्यून् त्रीणि व्रता विदथे अन्तरेषाम् ।
 कृतेनादित्या महिं वो महित्वं तदर्यमन् वरुण मित्र चारुं ८
 त्री रौचुना दिव्या धारयन्त हिरण्ययाः शुच्यो धारपूताः ।
 अस्वप्नजो अनिमिषा अदब्धा उरुशंसा क्रजवे मर्त्याय ९
 त्वं विश्वेषां वरुणासि राजा ये च देवा असुर ये च मर्ताः ।
 शतं नो रास्व शरदौ विचक्षे ऽश्यामायूषि सुधितानि पूर्वा १० ३०

न दक्षिणा वि चिकिते न सुव्या न प्राचीनमादित्या नोत पश्चा ।
 पाक्यां चिद् वसवो धीर्यां चिद् युष्मानीतो अभयं ज्योतिरश्माम् ११
 यो राजभ्य क्रतुभिर्भ्यो ददाश यं वर्धयन्ति पुष्टयश्च नित्याः ।
 स रेवान् याति प्रथमो रथेन वसुदावा विदथेषु प्रशस्तः १२
 शुचिरपः सूर्यवसा अदब्ध उप क्षेति वृद्धवयाः सुवीरः ।
 नकिष्टं घ्नन्त्यन्तितो न दूराद् य आदित्यानां भवति प्रणीतौ १३
 अदिते मित्र वरुणोत मृळ यद् वो वयं चकृमा कञ्चिदागः ।
 उर्वश्यामभयं ज्योतिरिन्द्र मा नो दीर्घा अभि नशन् तमिस्त्राः १४
 उभे असौ पीपयतः समीची दिवो वृष्टि सुभगो नाम पुष्यन् ।
 उभा क्षयावाजयन् याति पृत्स्व भावधौ भवतः साधू असौ १५
 या वो माया अभिद्रुहे यजत्राः पाशा आदित्या रिपवे विचृत्ताः ।
 अश्वीव तां अति येष रथेना रिष्टा उरावा शर्मन्त्स्याम १६
 माहं मघोनो वरुण प्रियस्य भूरिदान्न आ विदं शूनमापेः ।
 मा रायो राजन्त्सुयमादव स्था बृहद् वदेम विदथे सुवीराः १७

॥ १२ ॥ (ऋ० ७।५।१-३)

(३८-५३) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

आदित्यानामवसा नूतनेन सक्षीमहि शर्मणा शतमेन ।
 अनागास्त्वे अदितित्वे तुरास इमं यज्ञं दधतु श्रोषमाणाः १
 आदित्यासो अदितिर्मादयन्तां मित्रो अर्यमा वरुणो रजिष्ठाः ।
 अस्माकं सन्तु भुवनस्य गोपाः पिबन्तु सोममवसे नो अद्य २
 आदित्या विश्वे मरुतश्च विश्वे देवाश्च विश्वे क्रभवश्च विश्वे ।
 इन्द्रो अग्निरश्विनां तुष्टुवाना यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ३

॥ १३ ॥ (ऋ० ७।५।१-३)

आदित्यासो अदितयः स्याम पूर्देवत्रा वसवो मर्त्यत्रा ।
 सनैम मित्रावरुणा सनन्तो भवेम द्यावापृथिवी भवन्तः १
 मित्रस्तन्नो वरुणो मामहन्त शर्म तोकाय तनयाय गोपाः ।
 मा वो भुजेमान्यजातमेनो मा तत् कर्म वसवो यच्चर्यध्वे २

तुरण्यवोऽङ्गिरसो नक्षन्त रत्नं देवस्य सवितुरियाणाः ।

पिता च तन्नो महान् यजत्रो विश्वे देवाः समनसो जुषन्त

॥ १४ ॥ (ऋ० ७।६।४-१३)

गायत्री, १०-१३ प्रगाथः = (समा बृहती+विषमा सतो बृहती)

यदद्य सूर उदिते ऽनांश मित्रो अर्यमा । सुवार्ति सविता भगः

सुप्रावीरस्तु स क्षयः प्र नु यामन्तसुदानवः । ये नो अंहोऽतिपिप्रति

उत स्वराजो अदिति रदब्धस्य व्रतस्य ये । महो राजान ईशते

प्रति वां सूर उदिते मित्रं गृणीषे वरुणम् । अर्यमणं रिशादसम्

राया हिरण्यया मतिरियमवृकाय शवसे । इयं विप्रा मेधसातये

ते स्याम देव वरुण ते मित्र सूरिभिः सह । इषं स्वश्च धीमहि

बृहवः सूरचक्षसो ऽग्निजिह्वा ऋतावृधः ।

त्रीणि ये येमुर्विदथानि धीतिभिर्विश्वानि परिभूतिभिः

वि ये दुधुः शरदं मासमादहं यज्ञमक्तुं चादचम् ।

अनाप्यं वरुणो मित्रो अर्यमा क्षत्रं राजान आशत

तद् वो अद्य मनामहे सूक्तैः सूर उदिते ।

यदोहते वरुणो मित्रो अर्यमा यूयमृतस्य रथ्यः

ऋतावानं ऋतजाता ऋतावृधो घोरासो अनृतद्विषः ।

तेषां वः सुम्ने सुच्छर्दिष्टमे नरः स्याम ये च सूरयः

॥ १५ ॥ (ऋ० ८।१।१-३, १०-१२)

(५४-६९) हरिश्चिठिः काण्वः । उष्णिक् ।

इदं ह नूनमेषां सुम्नं भिक्षेत मर्त्यैः । आदित्यानामपूव्यं सवीमनि १

अनर्वाणो ह्येषां पन्था आदित्यानाम् । अदब्धाः सन्ति पायवः सुगेवृधः २

तत् सु नः सविता भगो वरुणो मित्रो अर्यमा । शर्म यच्छन्तु सप्रथो यदीमहे ३

अपामीवामप सिधुमपं सेधत दुर्मतिम् । आदित्यासो युयोतना नो अंहसः १०

युयोता शरुमस्मदा आदित्यास उतामतिम् । ऋधग् द्वेषः कृणुत विश्ववेदसः ११

तत् सु नः शर्म यच्छताऽऽदित्या यन्मुमोचति । एनस्वन्तं चिदेनसः सुदानवः १२

यो नः कश्चिद् रिरिक्षति रक्षस्त्वेन मर्त्यैः । स्वैः प एवै रिरिषीष्ट युर्जनः १३

समित् तमघर्मश्वद दुःशंसं मर्त्यै रिपुम् । यो अस्मत्रा दुर्हणावाँ उप द्रयुः १४

पाकत्रा स्थन देवा हृत्सु जानीथ मर्त्यम् । उप द्रयुं चाद्वयुं च वसवः १५
 आ शर्म पर्वताना मोतापां वृणीमहे । द्यावाक्षामारे अस्मद् रपस्कृतम् १६
 ते नो भद्रेण शर्मणा युष्माकं नावा वसवः । अति विश्वानि दुरिता पिपर्तन १७
 तुचे तनाय तत् सु नो द्राघीय आयुर्जीवसे । आदित्यासः सुमहसः कृणोतेन १८
 युज्ञो हीळो वो अन्तर आदित्या अस्ति मृळत ।
 युष्मे इद् वो अपि ष्मसि सजात्यै १९
 बृहद् वरूथं मरुतां देवं त्रातारमश्विना । मित्रमीमहे वरुणं स्वस्तये २०
 अनेहो मित्रार्यमन् नृवद् वरुण शंस्यम् । त्रिवरूथं मरुतो यन्त नश्छर्दिः २१
 ये चिद्धि मृत्युबन्धव आदित्या मनवः स्मसि ।
 प्र स न आयुर्जीवसे तिरेतन २२

॥ १६ ॥ (क्र० ८१९१३४-३५)

(७०-७१) सोमरिः काण्वः । ३४ उष्णिक्, ३५ सतोवृहती ।

यमादित्यासो अद्रुहः पारं नयथ मर्त्यम् । मधोनां विश्वेषां सुदानवः ३४
 यूयं राजानः कं चिच्चर्षणीसहः क्षयन्तं मानुषां अनु ।
 वयं ते वो वरुण मित्रार्यमन्त्स्यामेदृतस्य रथ्यः ३५

॥ १७ ॥ (क्र० ८१४७१-१३)

(७२-८४) त्रित आप्त्यः । महापङ्क्तिः ।

महिं वो महतामवो वरुण मित्रं द्राशुषे ।
 यमादित्या अभि द्रुहो रक्षथा नेमघं नेश दनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः १
 विदा देवा अघाना मादित्यासो अपाकृतिम् ।
 पक्षा वयो यथोपरि व्यस्मे शर्म यच्छता नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः २
 व्यस्मे अधि शर्म तत् पक्षा वयो न यन्तन ।
 विश्वानि विश्ववेदसो वरूथ्या मनामहे ऽनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ३
 यस्मा अरासत् क्षयं जीवातुं च प्रचेतसः ।
 मनोर्विश्वस्य घेदिम आदित्या राय ईशते ऽनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ४
 परिं णो वृणजन्घा दुर्गाणि रथ्यो यथा ।
 स्यामेदिन्द्रस्य शर्म ण्यादित्यानामुतावस्य नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ५

[आदित्यदेवता ।]

- १५ परिहृतेदुना जनो युष्मादत्तस्य वायति ।
 १६ देवा अदभ्रमाश वो यमादित्या अहेतना—नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ६
 १७ न तं तिग्मं च न त्यजो न द्रासदुभि तं गुरु ।
 १८ यस्मा उ शर्म सप्रथ आदित्यासो अराध्व—मनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ७
 १९ युष्मे देवा अपि ष्मसि युध्यन्त इव वर्मसु ।
 २० पुषं महो न एनसो यूयमभीदुरुष्यता—नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ८
 २१ अदितिर्न उरुष्यत्व—दितिः शर्म यच्छतु ।
 २२ माता मित्रस्य रेवतो ऽर्यम्णो वरुणस्य चा—नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ९ ८०
 यद् देवाः शर्म शरणं यद् भद्रं यदनातुरम् ।
 २३ विधातु यद् वरुथ्यं तदस्मासु वि यन्तना—नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः १०
 आदित्या अव हि ख्यता—धि कूलादिव स्पशः ।
 २४ सुतीर्थमवधेता यथा—नु नो नेषथा सुग—मनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ११
 नेह भद्रं रक्षस्विने नावयै नोपया उत ।
 २५ नैव च भद्रं धेनवे वीराय च श्रवस्यते ऽनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः १२
 यदुविष्यदपीच्यं देवासो अस्ति दुष्कृतम् ।
 २६ विते तद् विश्वमाप्य आरे अस्मद् दधातना—नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः १३ ८४

॥ १८ ॥ (ऋ० ८।६७।१-९, १३-२१)

(८५-१०९) मत्स्यः साम्प्रदः, मैत्रावरुणिर्मान्यः, बहवो वा मत्स्या जालनद्धाः । गायत्री ।

- तयः १ त्वानु नु क्षत्रियाँ अव आदित्यान् याचिषामहे । सुमूळीकाँ अभिष्टये १ ८५
 तयः २ मित्रो नो अत्यहति वरुणः पर्षदर्यमा । आदित्यासो यथा विदुः २
 तयः ३ तेषां हि चित्रमुक्थ्यं वरुथमस्ति दाशुषे । आदित्यानामरंकुते ३
 तयः ४ महि वो महतामवो वरुण मित्रार्यमन् । अवांस्या वृणीमहे ४
 तयः ५ जीवान् नो अभि धेतना—ऽऽदित्यासः पुरा हथात् । कद्ध स्थ हवनश्रुतः ५
 तयः ६ यद् वः श्रान्ताय सुन्वते वरुथमस्ति यच्छदिः । तेना नो अधि वोचत ६ ९०
 तयः ७ अस्ति देवा अंहोरुर्व—स्ति रत्नमनांसः । आदित्या अद्भुतैनसः ७
 तयः ८ सा नः सेतुः सिषेदयं महे वृणक्तु नस्परि । इन्द्र इद्धि श्रुतो वशी ८
 तयः ९ सा नो मुचा रिपूणां वृजिनानामविष्यवः । देवा अभि प्र मृक्षत ९
 तयः १० ये मूर्धनः क्षितीना—मदब्धासः स्वयंशसः । व्रता रक्षन्ते अद्रुहः १३ ९४

ते न आस्रो वृकाणा—मादित्यासो मुमोचत	। स्तेनं बद्धमिवादिते	१४
अपो पु णं इयं शरू—रादित्या अपं दुर्मतिः	। अस्मदेत्वजमुषी	१५
शश्वद्धि वः सुदानव आदित्या ऊतिभिर्वयम्	। पुरा नूनं बुभुज्महे	१६
शश्वन्तं हि प्रचेतसः प्रतियन्तं चिदेनसः	। देवाः कृणुथ जीवसे	१७
तत् सु नो नव्यं सन्यस आदित्या यन्मुमोचति	। बन्धाद् बद्धमिवादिते	१८
नास्माकमस्ति तत् तर आदित्यासो अतिष्कदे	। यूयमस्मभ्यं मृळत	१९
मा नो हेतिर्विवस्वत आदित्याः कृत्रिमा शरूः	। पुरा नु जरसो वधीत्	२०
वि पु द्वेपो व्यहति—मादित्यासो वि संहितम्	। विष्वग् वि वृहता रपः	२१

॥ १९ ॥ (ऋ० ८।१०।१६)

(१०३) जमदग्निर्भागवः । सतोबृहती ।

ते हिंन्विरे अरुणं जेन्यं वस्वे—कं पुत्रं तिसृणाम् ।

ते धामान्यमृता मर्त्याना—मदब्धा अमि चक्षते

॥ २० ॥ (ऋ० १०।१८।५।१-३)

(१०४-१०६) सत्यधृतिर्वारुणिः । आदित्यः (स्वस्त्ययनम्) । गायत्री ।

महिं त्रीणामवोऽस्तु द्युक्षं मित्रस्यार्यम्णः	। दुराधर्षं वरुणस्य	१
नहि तेषाममा चन नाध्वसु वारुणेषु	। ईशं रिपुरधशंसः	२
यस्मै पुत्रासो अदितेः प्र जीवसे मर्त्याय	। ज्योतिर्यच्छन्त्यजसम्	३

॥ २१ ॥ (१०७-१२०) (वा० य० ८।१-५)

उपयामगृहीतोऽस्यादित्येभ्यस्त्वा ।

विष्णं उरुगायैष ते सोमस्तः रक्षस्व मा त्वा दभन्

कदा चन स्तरीरसि नेन्द्रं सशसि दाशुषे ।

उपोपेन्नु मधवन् भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यत आदित्येभ्यस्त्वा

कदा चन प्रयुच्छस्युभे निपासि जन्मनी ।

तुरीयादित्यं सर्वं त इन्द्रियमातस्थावमृतं दिव्यादित्येभ्यस्त्वा

यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः ।

आ वोऽर्वाचीं सुमतिर्वृत्यादुःहोश्चिद्या वरिवोवित्तरासदादित्येभ्यस्त्वा

विवस्वन्नादित्येष ते सोमपीथस्तस्मिन् मत्स्व

॥ २२ ॥ (वा० य० १३।३,५)

ब्रह्मं जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् वि सीमतः सुरुचो वेन आवः ।

स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसंतश्च विवः

आदित्यदेवता ।

मन्त्राः १५-१२४]

१४

१५

१६

१७

१८

१९

२०

२१

द्रुप्तश्चस्कन्द पृथिवीमनु घामिमं च योनिमनु यश्च पूर्वः ।

समानं योनिमनु सञ्चरन्तं द्रुप्तं जुहोम्यनु सप्त होत्राः

॥ २३ ॥ (वा० य० १७।५९-६०)

विमानं एष दिवो मध्यं आस्त आपप्रिवान् रोदसी अन्तरिक्षम् ।

स विश्वाचीरभिचष्टे धृताचीरन्तरा पूर्वमपरं च केतुम्

उक्षा समुद्रो अरुणः सुपर्णः पूर्वस्य योनिं पितुराविवेश ।

मध्यं दिवो निहितः पृश्निरश्मा विचक्रमे रजसस्पात्यन्तौ

॥ २४ ॥ (वा० य० २३।५; ३१।१७) ×

युञ्जन्ति ब्रध्नमरुधं चरन्तं परिं तस्थुषः । रोचन्ते रोचना दिवि

अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्तताग्रे ।

तस्य त्वष्टा विदधद् रूपमैति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे

॥ २५ ॥ (वा० य० ३३।८१-८३)

इमा उ त्वा पुरुवसो गिरो वर्धन्तु या मम ।

पावकवर्णाः शुचयो विपश्चितोऽभि स्तोमैरनूषत

यस्यायं विश्व आयो दासः शेवधिपा अरिः ।

तिरश्चिदये रुशमे पवीरवि तुभ्येत्सो अज्यते रयिः

अयं सहस्रमृषिभिः सहस्कृतः समुद्र इव पप्रथे ।

सत्यः सो अस्य महिमा गृणे शवो यज्ञेषु विप्रराज्ये

॥ २६ ॥ (अथर्व० २।३२।१-६) [दै० (आयुर्वेद०) १२५ सूक्तं द्रष्टव्यम् ।]

॥ २७ ॥ (अथर्व० १६।३।१-६)

(१२१-१६३) ब्रह्मा । १ आसुरी गायत्री; २-३ आचर्यनुष्टुप्; ४ प्राजापत्या त्रिष्टुप्;

५ सास्न्युष्णिक्; ६ द्विपदा साम्नी त्रिष्टुप् ।

मूर्धाहं रयीणां मूर्धा समानानां भूयासम्

रुजश्च मा वेनश्च मा हांसिष्टां मूर्धा च मा विधर्मा च मा हांसिष्टाम्

उर्वश्च मा चमसश्च मा हांसिष्टां धृता च मा धरुणश्च मा हांसिष्टाम्

विमोकश्च मार्द्रपविश्च मा हांसिष्टामार्द्रदानुश्च मा मातरिश्वा च मा हांसिष्टाम्

× वा० य० २३।५ = दै० [इन्द्रः] २४; अथर्व० २०, २६, ४; ४७, १०; ६९, ९; साम० १४६८

१ दै. [अदितिः]

बृहस्पतिर्म आत्मा नमणा नाम ह्यः
असंतापं मे हृदयमुर्वी गव्युतिः समुद्रो अस्मि विधर्मणा

॥ २८ ॥ (अथर्व० १६।४।१-७)

१,३ सामन्यनुष्टुप्; २ सामन्युष्णिक्; ४ त्रिपदाऽनुष्टुप्; ५ आसुरी गायत्री; ६ आचर्युष्णिक्; ७ त्रिपदा विराड्गर्भाऽनुष्टुप् ।

नाभिर्हं रेयीणां नाभिः समानानां भूयासम् १
स्वासदासि सृषा अमृतो मर्त्येष्व २
मा मां प्राणो हासीन्मो अपानोऽब्रुहाय परां गात्र ३
सूर्यो माह्वः पात्वग्निः पृथिव्या वायुरन्तरिक्षाद् यमो मनुष्येभ्यः सरस्वती पार्थिवेभ्यः ४ १३०
प्राणापानौ मा मां हासिष्टं मा जने प्र मैषि ५
स्वस्त्यद्योषसो दोषसश्च सर्वे आपः सर्वगणो अशीय ६
शक्ररी स्थ पशवो मोषं स्थेषुर्मित्रावरुणौ मे प्राणापानावग्निर्मे दक्षं दधातु ७ १३१

॥ २९ ॥ (अथर्व० १७।१।१-३०)

१ जगती, १-८ ज्यवसाना, १-३ अतिजगती; ६-७, १९ अत्यष्टिः, ८, ११, १६ अतिधृतिः;
९ पञ्चपदा शक्ररी; १०-१३, १६, १८-१९, २४ ज्यवसाना; १० अष्टपदा धृतिः;
१२ कृतिः; १३ प्रकृतिः; १४-१५ पञ्चपदा शक्ररी; १७ पञ्चपदा विराडतिशक्ररी;
१८ भूरिगष्टिः; २४ विराडत्यष्टिः; १-५ षट्पदा; ११-१३, १६, १८-१९, २४
सप्तपदा; १० ककुप्; २१ चतुष्पदा उपरिष्ठादब्रुहती; २२ याजुषी
अनुष्टुप्; २३ निचृद्ब्रुहती (२२-२३ द्विपदा); २५-२६ अनुष्टुप्;
२७, ३० जगती; २८-२९ त्रिष्टुप् ।

विषासहिं सहमानं सासहानं सहीयांसम् ।

सहमानं सहोजितं स्वर्जितं गोजितं संधनाजितम् ।

ईड्यं नाम ह्व इन्द्रमायुष्मान् भूयासम्

विषासहिं० । सहमानं० । ईड्यं नाम ह्व इन्द्रं प्रियो देवानां भूयासम्

विषासहिं० । सहमानं० । ईड्यं नाम ह्व इन्द्रं प्रियः प्रजानां भूयासम्

विषासहिं० । सहमानं० । ईड्यं नाम ह्व इन्द्रं प्रियः पशूनां भूयासम्

विषासहिं० । सहमानं० । ईड्यं नाम ह्व इन्द्रं प्रियः समानानां भूयासम्

उद्विह्यदिहि सूर्यं वर्चसा माभ्युदिहि ।

द्विषंश्च मह्यं रथ्यंतु मा चाहं द्विषते रथं तवेद् विष्णो बहुधा वीर्याणि ।

त्वं नः पृणीहि पशुमिर्विश्वरूपैः सुधायां मा घेहि परमे व्योमिन्

अन्त्राः १२५-१५५]

मादित्यदेवता ।

५ १२५

६ १२६

७ त्रिपदा

१

२

३

४ १३०

५

६

७ १३१

तिः

;

उद्विष्टुर्दिहि सूर्यं वर्चसा माभ्युर्दिहि ।

यांश्च पश्यामि यांश्च न तेषु मा सुमतिं कृधि तवेद् विष्णो० । त्वं नः० ७ १४०

मा त्वा दभन्तसलिले अप्सवन्तये पाशिन उपतिष्ठन्त्यत्र ।

द्विवाशस्ति दिवमारुक्ष एतां स नो मृड सुमतौ ते स्याम तवेद् विष्णो० । त्वं नः० ८

त्वं न इन्द्र महते सौभगायादब्धेभिः परि पाह्यक्तुभिस्तवेद् विष्णो० । त्वं नः० ९

त्वं न इन्द्रोतिभिः शिवाभिः शंतमो भव ।

आरोहंस्त्रिदिवं दिवो गृणानः सोमपीतये प्रियधामा स्वस्तये तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १०

त्वमिन्द्रासि विश्वजित् सर्ववित् पुरुहूतस्त्वमिन्द्र ।

त्वमिन्द्रेमं सुहवं स्तोममेरयस्व स नो मृड सुमतौ ते स्याम तवेद् विष्णो० । त्वं नः० ११

अदब्धो दिवि पृथिव्यामुतासि न त आपुर्महिमानमन्तरिक्षे ।

अदब्धेन ब्रह्मणा वावृधानः स त्वं न इन्द्र दिवि षष्ठमं यच्छ तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १२ १४५

या त इन्द्र तनुरप्सु या पृथिव्यां यान्तरग्नौ या त इन्द्र पर्वमाने स्वर्दि ।

ययैन्द्र तन्वाइन्तरिक्षं व्यापिथ तया न इन्द्र तन्वाइ शर्म यच्छ तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १३

त्वमिन्द्र ब्रह्मणा वर्धयन्तः सत्रं नि षेदुर्ऋषयो नाधमानास्तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १४

त्वं तूतं त्वं पर्येष्यत्सं सहस्रधारं विदथं स्वर्दिदं तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १५

त्वं रक्षसे प्रदिशश्चतस्रस्त्वं शोचिषा नभसी वि भासि ।

त्वमिमा विश्वा भुवनानु तिष्ठस ऋतस्य पन्थामन्वेषि विद्रास्तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १६

पञ्चभिः पराङ् तपस्येकयावाङ्शस्तिमेषि सुदिने वाधमानस्तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १७ १५०

त्वमिन्द्रस्त्वं महेन्द्रस्त्वं लोकस्त्वं प्रजापतिः ।

तुभ्यं युञ्जो वि तायते तुभ्यं जुहति जुहतिस्तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १८

असति सत् प्रतिष्ठितं सति भूतं प्रतिष्ठितम् ।

भूतं ह भव्य आहितं भव्यं भूते प्रतिष्ठितं तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १९

शुक्रोऽसि भ्राजोऽसि । स यथा त्वं भ्राजता भ्राजोऽस्येवाहं भ्राजता भ्राज्यासम् २०

रुचिरसि रोचोऽसि । स यथा त्वं रुच्या रोचोऽस्येवाहं पशुभिश्च ब्राह्मणवर्चसेन २१

च रुचिपीय २१

उद्यते नम उदायते नम उर्दिताय नमः । विराजे नमः स्वराजे नमः सम्राजे नमः २२ १५५

२२ १५५

*

अस्तंयते नमोऽस्तमेव्यते नमोऽस्तमिताय नमः । विराजे नमः स्वराजे नमः०
उदंगादयमादित्यो विश्वेन तपसा सह ।

२३

सपत्नान् मय्यं रन्धयन् मा चाहं द्विषते रंधं तवेद् विष्णो बहुधा वीर्याणि ।

त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमिन्

२४

आदित्य नावमारुक्षः शतारित्रां स्वस्तये । अहर्मात्यपीपरो रात्रिं सत्राति पारय

२५

सूर्य नावमारुक्षः शतारित्रां स्वस्तये । रात्रिं मात्यपीपरोऽहः सत्राति पारय

२६

प्रजापतेरावृतो ब्रह्मणा वर्मेणाहं कश्यपस्य ज्योतिषा वर्चसा च ।

जरदष्टिः कृतवीर्यो विहायाः सहस्रायुः सुकृतश्चरेयम्

२७

परीवृतो ब्रह्मणा वर्मेणाहं कश्यपस्य ज्योतिषा वर्चसा च ।

१६०

मा मा प्रापन्निषवो दैव्या या मा मानुषीरवसृष्टा वधाय

२८

ऋतेन गुप्त ऋतुभिश्च सर्वैर्भूतेन गुप्तो भव्येन चाहम् ।

मा मा प्रापत् पाप्मा मोत मृत्युरन्तर्दधेऽहं संलिलेन वाचः

२९

अग्निर्मा गोप्ता परि पातु विश्वत उद्यन्तसूर्यो नुदतां मृत्युपाशान् ।

व्युच्छन्तीरुपसः पर्वता ध्रुवाः सहस्रं प्राणा मय्या यतन्ताम्

३०

१६३

॥ ३० ॥ (अथर्व० १९।१८।४)

(१६४) अथर्वा । आर्च्यनुष्टुप् ।

वरुणं त आदित्यवन्तमृच्छन्तु । ये माघायव एतस्यां दिशोऽभिदासात्

४

१६४

(१६५) ॥ ३१ ॥ (अथर्व० २०।१३।५।६)

आदित्या ह जरितरङ्गिरोभ्यो दक्षिणामुनयन् ।

तां ह जरितः प्रत्यायंस्तासु ह जरितः प्रत्यायन्

६

१६५

आदित्य-सहचारी देवगणः ।

(१) आदित्योपसः ।

॥ ३२ ॥ [दै० (उषा) १८७-१९१ मन्त्राः द्रष्टव्याः ।]

(२) अग्निमित्रवरुणादित्यविश्वेदेवाः ।

(१६६) ॥ ३३ ॥ (वा० य० ४।११)

वृत्तं कृणुताग्निर्ब्रह्माग्निर्यज्ञो वनस्पतिर्यज्ञियः ।

देवी धियं मनामहे सुमृडीकामभिष्टये वर्चोधां यज्ञवाहसं सुतीर्था नो असद्वशे ।

ये देवा मनोजाता मनोयुजो दक्षकृतवस्ते नोऽवन्तु ते नः पान्तु तेभ्यः स्वाहा ।

११ १६६

(३) आदित्या वसवोऽङ्गिरसः पितरः ।

॥ ३४ ॥ (अथर्व० २।१२।४) (१६७) भरद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

अदीतिभिस्तिष्ठभिः सामगेभिरादित्येभिर्वसुभिरङ्गिरोभिः ।

एषा पतर्मवतु नः पितृणामासुं ददे हरसा दैव्येन

४ १६७

(४) भगादित्याः ।

॥ ३५ ॥ (अथर्व० ३।१६।२-३, ५) (१६८-१७०) ; अथर्वा । त्रिष्टुप् ।

शर्जितं भगमुग्रं हवामहे वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता ।

आग्निद्वयं मन्यमानस्तुराश्विद् राजा चिद् यं भगं भक्षीत्याहं

भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः ।

भग प्रणो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम

भग एव भगवाँ अस्तु देवस्तेना वयं भगवन्तः स्याम ।

ते त्वा भग सर्वे इजोहवीमि स नो भग पुरता भवेह

२

३

५ १७०

(५) बृहस्पतिः, आदित्यः ।

॥ ३६ ॥ (अथर्व० ४।१।१-७) +

(१७१-१७७) वेनः । त्रिष्टुप्, २, ५ पुरोऽनुष्टुप् ।

जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् वि सीमितः सुरुचो वेन आवः ।

स वृक्ष्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः

वि पित्र्या राष्ट्रयेत्वग्रं प्रथमायं जनुपै भुवनेष्ठाः ।

एता एतं सुरुचं हारमह्यं धर्मं श्रीणन्तु प्रथमायं धास्यवे

१

२ १७२

+ वा० य० १३।३ (११२)

प्र यो जज्ञे विद्वानस्य बन्धुर्विश्वा देवानां जनिमा विवक्ति ।
 ब्रह्म ब्रह्मण उज्जभार मध्यान्नीचैरुच्चैः स्वधा अभि प्र तस्थौ
 स हि दिवः स पृथिव्या ऋतस्था मही क्षेमं रोदसी अस्कभायत् ।
 महान् मही अस्कभायद् वि जातो द्यां सन्न पार्थिवं च रजः
 स बुध्न्यादाष्ट्र जुषोऽभ्यग्रं बृहस्पतिर्देवता तस्य सम्राट् ।
 अहर्गच्छुकं ज्योतिषो जनिष्ठार्थं द्युमन्तो वि वसन्तु विप्रः
 नूनं तदस्य काव्यो हिनोति महो देवस्य पूर्यस्य धाम ।
 एष जज्ञे बहुभिः साकमित्था पूर्वे अर्धे विषिते ससन्नु
 योऽथर्वाणं पितरं देवबन्धुं बृहस्पतिं नमसाव च गच्छात् ।
 त्वं विश्वेषां जनिता यथासः कविर्देवो न दभायत् स्वधावान्

(६) दिवादित्यौ ।

॥ ३७ ॥ (अथर्व० ४।३९।५-६)

(१७८-१७९) अङ्गिराः । ५ त्रिपदा महावृहती, ६ संस्तारपङ्क्तिः ।

दिव्यादित्याय समनमन्त्स आर्धोत् ।
 यथा दिव्यादित्याय समनमन्नेवा मह्यं संनमः सं नमन्तु
 द्यौर्धनुस्तस्या आदित्यो वृत्सः । सा म आदित्येन वृत्सेनेषमूर्जं कामं दुहाम् ।
 आयुः प्रथमं प्रजां पोषे रयि स्वाहा

(७) आदित्यादयः ।

॥ ३८ ॥ (अथर्व० ५।२१।१०-१२)

(१८०-१८२) ब्रह्मा । अनुष्टुप्, ११ बृहतीगर्भा त्रिष्टुप् ।

आदित्यं चक्षुरा दत्स्व मरीचयोऽनु धावत । पत्सङ्गिनीरा सजन्तु विगते बाहुवीर्ये
 यूयमुग्रा मरुतः पृश्निमातर इन्द्रेण युजा प्र मृणीत शत्रून् ।
 सोमो राजा वरुणो राजा महादेव उत मृत्युरिन्द्रः
 एता देवसेनाः सूर्यकेतवः सचेतसः । अमित्रान् नो जयन्तु स्वाहा

(८) आदित्या रुद्रा वसवश्च ।

॥ ३९ ॥ (१८३) (अथर्व० २०।१३।९)

आदित्या रुद्रा वसवस्त्वेनु त इदं राघः प्रति गृष्णीह्यङ्गिरः ।
 इदं राघो विश्व प्रभु इदं राघो बृहत्पृथु

(३) मित्रः, मित्रावरुणौ च ।

॥ ४० ॥ (ऋ० १।१५।१)

(१८४) दीर्घतमा औचथ्यः । जगती ।

मित्रं न यं शिष्या गोषु गव्यवः स्वाध्यायं विदथे अप्सु जीर्जनम् ।

अरेजितां रोदसी पार्जसा गिरा प्रति प्रियं यजतं जनुषामवः ।

॥ ४१ ॥ (ऋ० ३।५९।१-९) ×

(१८५-१९३) गायत्री विध्वामित्रः । त्रिष्टुप्, ६-९ गायत्री ।

मित्रो जनान् यातयति ब्रुवाणो मित्रो दाधार पृथिवीमुत द्याम् ।

मित्रः कृष्टीरनिमिषाभि चष्टे मित्राय हव्यं घृतवज्रहोत ।

प्र स मित्रं मर्तो अस्तु प्रयस्वान् यस्त आदित्यं शिक्षति व्रतेन ।

न हन्यते न जीयते त्वोतो नैनमंहो अश्रोत्यन्तितो न दूरात् ।

अनमीवास इळया मदन्तो मितज्ञवो वरिमन्ना पृथिव्याः ।

आदित्यस्य व्रतमुपक्षिपन्तो वयं मित्रस्य सुमतौ स्याम ।

अयं मित्रो नमस्यः सुशेवो राजा सुक्षत्रो अजनिष्ट वेधाः ।

तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्याऽपि भद्रे सौमनसे स्याम ।

महो आदित्यो नमसोपसद्यो यातयज्जनो गृणते सुशेवः ।

तस्मा एतत् पन्यतमाय जुष्टं मग्नौ मित्राय हविरा जुहोत ।

मित्रस्य चर्षणीधृतो ऽवो देवस्य सानसि । द्युम्नं चित्रश्रवस्तमम् ।

अभि यो महिना दिवं मित्रो बभूव सप्रथाः । अभि श्रवोभिः पृथिवीम् ।

मित्राय पञ्च येमिरे जना अभिष्टिशवसे । स देवान् विश्वान् बिभर्ति ।

मित्रो देवेष्वायुषु जनाय वृक्तवर्हिषे । इषं इष्टव्रता अकः ।

॥ ४२ ॥ (१९४) (वा० य० १।५३)

मित्रः सः सृज्यं पृथिवीं भूमिं च ज्योतिषा सह ।

सुजातं जातवेदसमयक्ष्माय त्वा सः सृजामि प्रजाभ्यः ।

॥ ४३ ॥ (अथर्व० १९।१९।१)

(१९५) अथर्वा भुवि बृहती ।

मित्रः पृथिव्योदकामत् तां पुरं प्र णयामि वः ।

तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्मं च वर्मं च यच्छतु ।

× ऋ० ३।५९।६ = वा० य० ११।६२; काण्व० १२।६४ ।

॥ ४४ ॥ (ऋ० १।२।७-९)

(१९६-१९८) मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री ।

मित्रं हुवे पुतदक्षं वरुणं च रिशादसम् । धियं घृताचीं साधन्ता
 ऋतेन मित्रावरुणा वृतावृधावृतस्पृशा । ऋतुं बृहन्तमाशथे
 कवी नो मित्रावरुणा तुविजाता उरुक्षया । दक्षं दधाते अयसम्

७

८

९

१९८

॥ ४५ ॥ (ऋ० १।२।४-६)

(१९९-२०१) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।

मित्रं वयं हवामहे वरुणं सोमपीतये । जज्ञाना पुतदक्षसा
 ऋतेन यावृतावृधा वृतस्य ज्योतिषस्पती । ता मित्रावरुणा हुवे
 वरुणः प्राविता भुवन् मित्रो विश्वाभिरुतिभिः । करतां नः सुराधंसः

४

५

६

२००

२०१

॥ ४६ ॥ (ऋ० १।४।३-५)

(२०२) कण्वो घौरः । गायत्री ।

यथा नो मित्रो वरुणो यथा रुद्रश्चिकेतति । यथा विश्वे सजोषसः

३

२०२

॥ ४७ ॥ (ऋ० १।२।६।१-७)

(२०३-२१३) परुच्छेपो दैवोदासिः । अत्यष्टिः, ७ त्रिष्टुप् ।

प्र सु ज्येष्ठं निचिराम्यां बृहन्नमो हव्यं मतिं भरता मृळयद्भ्यां स्वादिष्ठं मृळयद्भ्याम् ।
 ता सम्राजा घृतासुती यज्ञेयं उपस्तुता ।
 अथैनोः क्षत्रं न कुतश्चनाधृषे देवत्वं नू चिदाधृषे
 अदंशि गातुरुवे वरीयसी पन्थां ऋतस्य समयंस्त रश्मिभिश्चक्षुर्भगस्य रश्मिभिः ।
 द्युक्षं मित्रस्य सादनं मर्यम्णो वरुणस्य च ।
 अथा दधाते बृहदुक्थ्यं वयं उपस्तुत्यं बृहद् वयं
 ज्योतिष्मतीमदिति धारयतिक्षतिं स्वर्वतीमा सचेते दिवेदिवे जागृवांसां दिवेदिवे ।
 ज्योतिष्मत् क्षत्रमांशाते आदित्या दानुनस्पती ।
 मित्रस्तयोर्वरुणो यातयज्जनो स्यमा यातयज्जनः
 अयं मित्राय वरुणाय शतमः सोमो भूत्ववपानेष्वामंगो देवो देवेष्वामंगः ।
 तं देवासो जुषेरत् विश्वे अद्य सजोषसः ।
 तथा राजाना करथो यदीमहं ऋतावाना यदीमहे

१

२

३

४

२०५

२०६

मन्त्राः १९६-२१५]

यो मित्राय वरुणाय विधुज्जनोऽनर्वाणं तं परि पातो अंहसो दाश्वांसं मर्तमंहसः ।
तमर्यमाभि रक्ष—त्यृजुयन्तमनु व्रतम् ।

उक्थैर्य एनोः परिभूषति व्रतं स्तोमैराभूषति व्रतम् ५
नमो दिवे बृहते रोदसीभ्यां मित्राय वोचं वरुणाय मीळहुषे सुमृळीकाय मीळहुषे ।

इन्द्रमग्निमुप स्तुहि द्युक्षमर्यमणं भगम् ।

ज्योर्जीवन्तः प्रजया सचेमहि सोमस्योती सचेमहि ६

ऊती देवानां वयमिन्द्रवन्तो मसीमहि स्वयंशसो मरुद्भिः ।

अग्निमित्रो वरुणः शर्म यंसन् तदश्याम मघवानो वयं च ७ २०९

॥ ४८ ॥ (१।१३७।१-३) अतिशक्करी ।

सुषुमा यातमद्रिभिर्गोश्रीता मत्सरा इमे सोमासो मत्सरा इमे ।

आ राजाना दिविस्पृशाऽस्मन्ना गन्तुमुप नः ।

इमे वा मित्रावरुणा गवांशिरः सोमाः शुक्रा गवांशिरः १ २१०

इम आ यातमिन्द्रवः सोमासो दध्याशिरः सुतासो दध्याशिरः ।

उत वामुषसो बुधि साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ।

सुतो मित्राय वरुणाय पीतये चारुर्कृताय पीतये २

तां वा धेनुं न वासरी—मंशुं दुहन्त्यद्रिभिः सोमं दुहन्त्यद्रिभिः ।

अस्मन्ना गन्तुमुप नोऽर्वाश्वा सोमपीतये ।

अयं वा मित्रावरुणा नृभिः सुतः सोम आ पीतये सुतः ३ २११

॥ ४९ ॥ (ऋ० १।१३९।१) अत्यष्टिः ।

यद्द त्यन्मित्रावरुणावृतादध्यादुदाथे अनृतं स्वेन मन्युना दक्षस्य स्वेन मन्युना ।

युवोरित्थाधि सन्न—स्वपश्याम हिरण्ययम् ।

धीभिश्चन मनसा स्वेभिरक्षभिः सोमस्य स्वेभिरक्षभिः २ २१३

॥ ५० ॥ (ऋ० १।१५१।१-९)

(२१४-२३९) दीर्घतमा औचध्यः । जगती ।

यद्द त्यद् वां पुरुमीळहस्य सोमिनः प्र मित्रासो न दधिरे स्वाभुवः ।

अथ कर्तुं विदतं गातुमर्चत उत श्रुतं वृषणा पस्त्यावतः २

आ वां भूषन् क्षितयो जन्म रोदस्योः प्रवाच्यं वृषणा दक्षसे महे ।

यदीमृताय मरथो यदर्वते प्र होत्रया शिर्म्या वीथो अध्वरम् ३ २१५

३ [दे० अदितिः०]

प्र सा क्षितिर्सुर या महि प्रिय ऋतावानावृतमा घोषथो बृहत् ।
युवं दिवो बृहतो दक्षमाश्रुवं गां न धुर्युषं युञ्जाथे अपः
मही अत्र महिना वारमृण्वथो ऽरेणवस्तुज आ सवन्न धेनवः ।
स्वरन्ति ता उपरताति सूर्यमा निशुच उपसस्तक्ववीरिव
आ वामुताय केशिनीरनूपत मित्र यत्र वरुण गातुमर्चयः ।
अव त्मना सृजतं पिन्वतं धियो युवं विप्रस्य मन्मनामिरज्यथः
यो वां युज्ञैः शशमानो ह दाशति कविर्होता यजति मन्मसाधनः ।
उपाह तं गच्छथो वीथो अध्वरमच्छा गिरः सुमतिं गन्तमस्मयू
युवां युज्ञैः प्रथमा गोभिरञ्जत ऋतावाना मनसो न प्रयुक्तिषु ।
भरन्ति वां मन्मना संयता गिरो ऽदृष्यता मनसा रेवदाशाथे
रेवद् वयो दधाथे रेवदाशाथे नरा मार्याभिरितऊति माहिनम् ।
न वां द्यावोऽहभिर्नोत सिन्धवो न देवत्वं पणथो नानशुर्ध्वम्

॥ ५१ ॥ (ऋ० १।१५२।१-७) त्रिष्टुप् ।

युवं वस्त्राणि पीवसा वसाथे युवोरच्छिद्रा मन्तवो ह सर्गाः ।
अवातिरतमनृतानि विश्वं ऋतेन मित्रावरुणा सचेथे
एतच्चुन त्वो वि चिकेतदेषां सत्यो मन्त्रः कविशस्त ऋधावान् ।
त्रिरश्वि हन्ति चतुरश्रिरुग्रो देवनिदो ह प्रथमा अजूर्यन्
अपादैति प्रथमा पद्वतीनां कस्तद् वां मित्रावरुणा चिकेत ।
गर्भो भारं भरत्या चिदस्य ऋतं पिपत्यनृतं नि तारीत्
प्रयन्तमित् परिं जारं कनीनां पश्यामसि नोपनिषद्यमानम् ।
अनवपृग्णा वितता वसानं प्रियं मित्रस्य वरुणस्य धाम
अनश्वो जातो अनभीशुरर्वा कनिकदत् पतयदूर्ध्वसानुः ।
अचित्तं ब्रह्म जुजुष्युवानः प्र मित्रे धाम वरुणे गुणन्तः
आ धेनवो मामतेयमवन्ती ब्रह्मप्रियं पीपयन्तस्मिन्नूधन् ।
पित्वो मिक्षेत वयुनानि विद्रा नासाविवासन्नदितिमुख्येत
आ वां मित्रावरुणा हव्यजुष्टिं नमसा देवाववसा ववृत्याम् ।
असाकं ब्रह्म पृतेनासु सहा असाकं वृष्टिर्दिव्या सुपारा

मित्रावरुणा देवता ।

मन्त्राः २१६-२४१]

॥ ५२ ॥ (क्र० ११५३।१-४)

यजामहे वां महः सजोषां हव्येभिर्मित्रावरुणा नमोभिः ।
 घृतैर्घृतस्नु अध यद् वांमसो अध्वर्यवो न धीतिभिर्भरन्ति
 प्रस्तुतिर्वा धाम न प्रयुक्तिरयामि मित्रावरुणा सुवृक्तिः ।
 अनक्ति यद् वां विदथेषु होता सुमं वां सूरिर्वृषणावियक्षन्
 पीपाय धेनुरदितिर्क्रताय जनाय मित्रावरुणा हविर्दे ।
 हिनोति यद् वां विदथे सपर्यन्तस रातहव्यो मानुषो न होता
 उत वां विश्व मद्यास्वन्धो गाव आपश्च पीपयन्त देवीः ।
 उतो नो अस्य पूर्यः पतिर्दन् वीतं पातं पर्यस उस्त्रियायाः

॥ ५३ ॥ (क्र० २४१।४-६) ×

(२३३-२३५) गृत्समद (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । गायत्री ।
 अयं वां मित्रावरुणा सुतः सोमं क्रतावृधा । ममेदिह श्रुतं हवम्
 राजानावनभिद्रुहा ध्रुवे सदस्युत्तमे । सहस्रस्थूण आसाते
 ता सम्राजा घृतासुती आदित्या दानुनस्पती । सचैते अनवह्वरम्

॥ ५४ ॥ (क्र० ३१६२।१६-१८) +

(२३६-२३८) गायिनो विश्वामित्रः, जमदग्निर्वा । गायत्री ।

आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यंतिमुक्षतम् । मध्वा रजांसि सुक्रतू
 उरुशंसो नमोवृधा मह्ना दक्षस्य राजथः । द्राघिष्ठाभिः शुचित्रता
 गुणाना जमदग्निना योनावृतस्य सीदतम् । पातं सोममृतावृधा

॥ ५५ ॥ (क्र० ५१६२।१-९)

(२३९-२४७) श्रुतविदात्रेयः । त्रिष्टुप् ।

क्रतेन क्रतमपिहितं ध्रुवं वां सूर्यस्य यत्र विमुचन्त्यश्वाङ् ।
 दशं शता सह तस्थुस्तदेकं देवानां श्रेष्ठं वर्षषामपश्यम्
 तत् सु वां मित्रावरुणा महित्वमीर्मा तस्थुषीरहभिर्दुदुहे ।
 विश्वाः पिन्वथः स्वसंरस्य धेना अनु वामेकः पविरा ववर्त
 आधारयतं पृथिवीमुत द्यां मित्रराजाना वरुणा महोभिः ।
 वर्षयतमोषधीः पिन्वतं गा अव वृष्टिं सृजतं जीरदान्

× क्र० २,४१,४ = वा० य० ७,९;

+ क्र० ३,६२,१६ = वा० य० २१।८; सा० २२०,६६३

*

आ वामश्चासः सुयुजो वहन्तु यतरंश्मय उप यन्त्वर्वाक् ।
 वृत्स्यं निर्णिगन्तु वर्तते वा—मुषं सिन्धवः प्रदिवि क्षरन्ति
 अनुं श्रुताममतिं वर्धदुर्वी बर्हिर्विव यजुषा रक्षमाणा ।
 नमस्वन्ता धृतदुश्चाधि गर्ते मित्रासाथे वरुणेळास्वन्तः
 अक्रविहस्ता सुकृते परस्पा यं त्रासांथे वरुणेळास्वन्तः ।
 राजाना क्षत्रमहणीयमाना सहस्रस्थूणं विभृथः सह द्वौ
 हिरण्यनिर्णिगयो अस्य स्थूणा वि भ्राजते दिव्यश्वार्जनीव ।
 भद्रे क्षेत्रे निर्मिता तिल्विले वा सनेम मध्वो अधिगर्त्यस्य
 हिरण्यरूपमुषसो व्युष्टा—वयःस्थूणमुदिता सूर्यस्य ।
 आ रोहथो वरुण मित्र गर्त—मत्तश्चक्ष्वाथे अदितिं दितिं च
 यद् बर्हिष्ठं नातिविधे सुदान् अर्च्छिद्रं शर्म भुवनस्य गोपा ।
 तेन नो मित्रावरुणावविष्टं सिषासन्तो जिगीवांसः स्याम

॥ ५६ ॥ (ऋ० ५।६३।१-७)

(१४८-२६१) अर्चनाना आत्रेयः । जगती ।

ऋतस्य गोपावधिं तिष्ठथो रथं सत्यधर्माणा परमे व्योमनि ।
 यमत्र मित्रावरुणावथो युवं तस्मै वृष्टिर्मधुमत् पिन्वते दिवः
 सम्राजावस्य भुवनस्य राजथो मित्रावरुणा विदथे स्वर्दशा ।
 वृष्टिं वां राधो अमृतत्वमीमहे द्यावापृथिवी वि चरन्ति तन्यवः
 सम्राजा उग्रा वृषभा दिवस्पती पृथिव्या मित्रावरुणा विचर्षणी ।
 चित्रेभिर्भैरुपं तिष्ठथो रवं द्यां वर्षयथो असुरस्य मायया
 माया वा मित्रावरुणा दिवि श्रिता सूर्यो ज्योतिश्चरति चित्रमायुधम् ।
 तमभ्रेण वृष्ट्या गूहथो दिवि पर्जन्य द्रप्सा मधुमन्त ईरते
 रथं युञ्जते मरुतः शुभे सुखं शूरो न मित्रावरुणा गर्विष्ठिषु ।
 रजांसि चित्रा वि चरन्ति तन्यवो दिवः सम्राजा पयसा न उक्षतम्
 वाचं सु मित्रावरुणाविरावती पर्जन्यश्चित्रां वदति त्विषीमतीम् ।
 अत्रा वसत मरुतः सु मायया द्यां वर्षयतमरुणामरेपसम् ।
 धर्मेणा मित्रावरुणा विपश्चिता व्रता रक्षेथे असुरस्य मायया ।
 ऋतेन विश्वं भुवनं वि राजथः सूर्यमा धत्थो दिवि चित्र्यं रथम्

मंत्राः २४२-२७५]

॥ ५७ ॥ (ऋ० ५।६।१-७) अनुष्टुप्, ७ पङ्क्तिः ।

वरुणं वो रिशादस—मृचा मित्रं हवामहे । परिं व्रजेत्र बाह्वो—जगन्वांसा स्वर्णरम् १ २५५
 ता बाहवा सुचेतुना प्र यन्तमस्मा अर्चते । शेवं हि जार्यं वां विश्वासु क्षासु जोगुवे २
 यन्नमस्यां गतिं मित्रस्य यायां पथा । अस्य प्रियस्य शर्मण्य—हिंसानस्य सश्चिरे ३
 युवास्यां मित्रावरुणो—पमं धेयामृचा । यद्वा क्षये मघोनां स्तोतृणां च स्पर्धसे ४
 आ नो मित्र सुदीतिभि—वरुणश्च सधस्थ आ । स्वे क्षये मघोनां सखीनां च वृधसे ५
 युवं नो येषु वरुण क्षत्रं बृहच्च विभृथः । उरुणो वाजसातये कृतं राये स्वस्तये ६ २६०
 उच्छन्त्यां मे यजता देवक्षत्रे रुशदवि ।
 सुतं सोमं न हस्तिभि—रा पङ्क्तिर्धावतं नरा विभ्रतावर्चनानसम् ७ २६१

॥ ५८ ॥ (ऋ० ५।६।१-६)

(२६२-२७३) रातद्वय आत्रेयः । अनुष्टुप्, ६ पङ्क्तिः ।

यथिकेत स सुक्रतु—देवत्रा स ब्रवीतु नः । वरुणो यस्य दर्शतो मित्रो वा वनते गिरः १
 ता हि श्रेष्ठवर्चसा राजाना दीर्घश्रुत्तमा । ता सत्पती ऋतावृधं ऋतावाना जनैजने २
 ता वामियानोऽवसे पूर्वा उप ब्रुवे सचा । स्वश्वासः सु चेतुना वाजा अभि प्र दावने ३
 मित्रो अंहोश्चिदादुरु क्षयाय गातुं वनते । मित्रस्य हि प्रतूर्वतः सुमतिरस्ति विधतः ४ २६५
 यं मित्रस्यावसि स्याम सप्रथस्तमे । अनेहसस्त्वोतयः सत्रा वरुणशेषसः ५
 युवं मित्रेमं जनं यतथः सं च नयथः ।
 मा मघोनः परिं ख्यतं मो अस्माकमृषीणां गोपीथे न उरुष्यतम् ६ २६७

॥ ५९ ॥ (ऋ० ५।६।१-६) अनुष्टुप् ।

वा चिकितान सुक्रतु देवौ मर्ते रिशादसा । वरुणाय ऋतपेशसे दधीत प्रयसे महे १
 ता हि क्षत्रमर्विहुतं सम्यगसुर्यमाशाते । अध व्रतेव मानुषं स्वर्णं घायि दर्शतम् २
 ता वामेषे रथाना—मूर्वी गव्यूतिमेषाम् । रातद्वयस्य सुष्टुतिं दुधृक् स्तोमैर्मनामहे ३ २७०
 यथा हि काव्या युवं दक्षस्य पूभिर्द्रुता । नि केतुना जनानां चिकेथे पूतदक्षसा ४
 तदुतं पृथिवि बृह—च्छ्वण्ण ऋषीणाम् । जयसानावरं पृथ्व—ति क्षरन्ति यामभिः ५
 वा यद्वासीयचक्षसा मित्रं वयं च सूरयः । व्यचिष्टे बहुपाय्ये यतैमहि स्वराज्ये ६ २७३

॥ ६० ॥ (ऋ० ५।६।१-५)

(२७४-२८३) यजत आत्रेयः । अनुष्टुप् ।

यदित्या देव निष्कृत—मादित्या यजतं बृहत् । वरुण मित्रार्यमन् वर्षिष्ठं क्षत्रमाशाथे १
 यद् योनिं हिरण्ययं वरुण मित्र सदथः । धर्तारा चर्षणीनां यन्तं सुभ्रं रिशादसा २ २७५

विश्वे हि विश्वेवैदसो वरुणो मित्रो अर्यमा । व्रता पदेव सश्विरे पान्ति मर्त्ये रिपः ३
 ते हि सत्या क्रतुस्पृश क्रतावानो जनैजने । सुनीथासः सुदानवोऽहोश्चिदुरुचक्रयः ४
 को नु वा मित्रास्तुतो वरुणो वा तनूनाम् । तत् सु वामेपते मतिरत्रिभ्य एपते मतिः ५

॥ ६१ ॥ (ऋ० ५।६८।१-५) गायत्री ।

प्र वो मित्राय गायत वरुणाय विषा गिरा । सहिषत्रावृतं बृहत् १
 सम्राजा या घृतयोनी मित्रश्चोभा वरुणश्च । देवा देवेषु प्रशस्ता २ २८०
 ता नः शक्तं पार्थिवस्य महो रायो दिव्यस्य । महिं वां क्षत्रं देवेषु ३
 क्रतुमतेन सर्पन्तेऽपिरं दक्षमाशाते । अद्भुता देवौ वर्धते ४
 वृष्टिद्यावा रीत्यापेऽवस्पती दानुमत्याः । बृहन्तं गर्तमाशाते ५ २८१

॥ ६२ ॥ (ऋ० ५।६९।१-४)

(२८४-२९१) उरुचक्रिरात्रेयः । त्रिष्टुप् ।

त्री रौचिना वरुण त्रीरुत द्यून् त्रीणि मित्र धारयथो रजोसि ।
 वावृधानावमतिं क्षत्रियस्याऽनु व्रतं रक्षमाणावजुर्धम् १
 इरावतीवरुण धेनवो वां मधुमद् वां सिन्धवो मित्र दुहे ।
 त्रयस्तस्थुर्वृषभास्तिसृणां धिषणानां रेतोधा वि द्युमन्तः २ २८२
 प्रातर्देवीमर्दितिं जोहवीमि मध्यंदिन उर्दिता सूर्यस्य ।
 राये मित्रावरुणा सर्वतातेऽके तोकाय तनयाय शं योः ३
 या धर्तारा रजसो रोचनस्योऽतादित्या दिव्या पार्थिवस्य ।
 न वां देवा अमृता आ भिनन्ति व्रतानि मित्रावरुणा भ्रुवानि ४ २८३

॥ ६३ ॥ (ऋ० ५।७०।१-४) गायत्री ।

पुरुषा चिद्वचस्त्यवो नूनं वां वरुण । मित्र वंसि वां सुमतिम् १
 ता वां सम्यगद्ब्रुह्माणेऽपमस्याम् धारयसे । वयं ते रुद्रा स्याम २ २८४
 पातं नो रुद्रा पायुभिः क्रतु त्रियथां सुत्रात्रा । तुर्याम् दस्यून् तनूभिः ३ २८५
 मा कस्याद्भुतकतू यक्षं भुजेमा तनूभिः । मा शेषसा मा तनसा ४

॥ ६४ ॥ (ऋ० ५।७१।१-३)

(२९२-२९७) बाहुवृक्त आत्रेयः गायत्री ।

आ नो गन्तं रिशादसा वरुण मित्रं वर्हणा । उपेमं चारुमध्वरम् १
 विश्वस्य हि प्रचेतसा वरुण मित्र राजथः । ईशाना पिप्यतं धियः २ २९३

मन्त्राः २७६-३०८]

उप नः सुतमा गतं वरुण मित्रं दाशुषः । अस्य सोमस्य पीतये ३ २९४

॥ ६५ ॥ (ऋ० ५।७२।१-३) उष्णिक् ।

आ मित्रे वरुणे वयं गीर्भिर्जुहुमो अत्रिवत् । नि वहिषि सदतं सोमपीतये १ २९५

वृतेन स्थो ध्रुवक्षेमा धर्मणा यातयजना । नि वहिषि सदतं सोमपीतये २

मित्रश्च नो वरुणश्च जुषेतां यज्ञमिष्टये । नि वहिषि सदतां सोमपीतये ३

॥ ६६ ॥ (ऋ० ६।६७।१-११)

(२९८-३०८) वार्हस्पत्यो भरद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

विश्वेषां वः सतां ज्येष्ठतमा गीर्भिर्मित्रावरुणा वावृध्वयै ।

सं या रश्मेव यमतुर्यमिष्टा द्वा जना असमा बाहुभिः स्वैः १

इयं मद् वां प्र स्तृणीते मनीषो प प्रिया नमसा बहिरच्छ ।

यन्तं नो मित्रावरुणावधृष्टं छुर्दिर्यद् वां वरुध्वं सुदानू २

आ यातं मित्रावरुणा सुशस्त्यु प प्रिया नमसा हूयमाना ।

सं यावमस्थो अपसेव जनां ज्युधीयतश्चिद् यतथो महित्वा ३ ३००

अथा न या वाजिनां पूतवन्धू ऋता यद् गर्भमदितिर्भरध्वै ।

प्र या महि महान्ता जायमाना घोरा मतींय रिपवे नि दीधः ४

विश्वे यद् वां मंहना मन्दमानाः क्षत्रं देवासो अदधुः सजोषाः ।

परि यद् भूथो रोदसी चिदुर्वी सन्ति स्पशो अदब्धासो अमूराः ५

ता हि क्षत्रं धारयेथे अनु दून् दृहेथे सानुमुपमादिव द्योः ।

दृळ्हो नक्षत्र उत विश्वदेवो भूमिमातान् द्यां धासिनायोः ६

ता विग्रं धैथे जठरं पूणध्या आ यत् सञ्च सभृतयः पूणन्ति ।

न मृष्यन्ते युवतयोऽवाता वि यत् पयो विश्वजिन्वा भरन्ते ७

ता जिह्वया सदमेदं सुमेधा आ यद् वां सत्यो अरतिर्कृते भूत् ।

तद् वां महित्वं घृतान्नावस्तु युवं दाशुषे वि चयिष्टमंहः ८ ३०५

प्र यद् वां मित्रावरुणा स्पृधन् प्रिया धाम युवधिता मिनन्ति ।

न ये देवास ओहंसा न मर्ता अयज्ञसाचो अप्यो न पुत्राः ९

वि यद् वाचं कीस्तासो भरन्ते शंसन्ति के चिन्निविदो मनानाः ।

आद् वां ब्रवाम सत्यान्युकथा नर्किर्देवेभिर्यतथो महित्वा १०

अवोरिस्था वां छुर्दिषो अभिष्टौ युवोर्मित्रावरुणावस्कृधोयु ।

अनु यद् गावः स्फुरानृजिप्यं धृष्णं यद् रणे वर्षणं युनजन् ११ ३०८

॥ ६७ ॥ (ऋ० ७।५०।१)

(३०९-३४७) मित्रावरुणिवेसिष्ठः । जगती ।

आ मां मित्रावरुणेह रक्षतं कुलाययद् विश्वयन्मा न आ गन् ।
अजकावं दुर्दशीकं तिरो दधे मा मां पथेन रपसा विदुत् त्सरुः

॥ ६८ ॥ (ऋ० ७।६०।२-१२) त्रिष्टुप् ।

एष स्य मित्रावरुणा नृचक्षा उभे उदैति सूर्यो अभि जमन् ।
विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च गोपा ऋजु मर्तेषु वृजिना च पश्यन्
अयुक्त सप्त हरितः सधस्थाद् या ई वहन्ति सूर्यं घृताचीः ।
धामानि मित्रावरुणा युवाकुः सं यो यथेव जनिमानि चष्टे
उद् वां पृक्षासो मधुमन्तो अस्थुरा सूर्यो अरुहच्छुक्रमणैः ।
यस्मा आदित्या अघ्वनो रदन्ति मित्रो अर्यमा वरुणः सजोषाः
इमे चेतारो अनृतस्य भूरं मित्रो अर्यमा वरुणो हि सन्ति ।
इम ऋतस्य वावृधुर्दुरोणे शग्मासः पुत्रा अदितेरदब्धाः
इमे मित्रो वरुणो दूळभासो ऽचेतसं चिञ्चितयन्ति दक्षैः ।
अपि क्रतुं सुचेतसं वतन्तस्तिरश्चिदंहः सुपथा नयन्ति
इमे दिवो अनिमिषा पृथिव्याश्चिकित्वांसो अचेतसं नयन्ति ।
प्रव्राजे चिन्नद्यौ गाधमस्ति पारं नो अस्य विष्पितस्य पर्पन्
यद् गोपावददितिः शर्म भद्रं मित्रो यच्छन्ति वरुणः सुदासे ।
तस्मिन्ना तोकं तनयं दधाना मा कर्म देवहेळनं तुरासः
अव वेदिं होत्राभिर्यजेत् रिपुः काश्चिद् वरुणधृतः सः
परि द्वेषोभिर्यमा वृणक्तू रं सुदासे वृषणा उ लोकम्
सस्वश्चिद्वि समृतिस्त्वेष्येषा मपीच्येन सहसा सहन्ते ।
युष्मद् भिया वृषणो रेजमाना दक्षस्य चिन्महिना मूळता नः
यो ब्रह्मणे सुमतिमायजाते वाजस्य सातौ परमस्य रायः ।
सीक्षन्त मन्युं मघवानो अर्य उरु क्षयाय चक्रिरे सुधातुं
इयं देव पुरोहितिर्युवभ्यां यज्ञेषु मित्रावरुणावकारि ।
विश्वानि दुर्गा पिपृतं तिरो नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

॥ ६९ ॥ (ऋ० ७।६।१-७)

उद् वां चक्षुर्वरुण सुप्रतीकं देवयोरिति सूर्यस्तन्वान् ।

अभि यो विश्वा भुवनानि चष्टे स मन्युं मर्त्येष्ववा चिकेत १

प्र वां स मित्रावरुणावृतावा विप्रो मन्मानि दीर्घश्रुदियति ।

यस्य ब्रह्माणि सुक्रतू अवाथ आ यत् क्रत्वा न शरदः पुणैथे २

प्रोरोमित्रावरुणा पृथिव्याः प्र दिव ऋग्वाद् बृहतः सुदानू ।

स्पर्शो दधाथे ओषधीषु विक्ष्वधंयतो अनिमिषं रक्षमाणा ३

शंसा मित्रस्य वरुणस्य धाम शुष्मो रोदसी बद्धधे महित्वा ।

अयन् मासा अयज्वनामवीराः प्र यज्ञमन्मा वृजनै तिराते ४

अमरा विश्वा वृषणाविमा वां न यासु चित्रं ददंशे न यक्षम् ।

द्रुहः सचन्ते अनृता जनानां न वां निष्यान्यचिते अभूवन् ५ ३२५

समु वां यज्ञं महयं नमोभिर्हवे वां मित्रावरुणा सबाधः ।

प्र वां मन्मान्यचसे नवानि कृतानि ब्रह्म जुजुषन्निमानि ६

इयं देव पुरोहितिर्युवभ्यां यज्ञेषु मित्रावरुणावकारि ।

विश्वानि दुर्गा पिपृतं तिरो नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ७ ३२७

॥ ७० ॥ (ऋ० ७।६।४-६) ×

द्यावाभूमी अदिते त्रासीथां नो ये वां जज्ञुः सुजनिमान ऋष्वे ।

मा हेके भूम वरुणस्य वायोर्मा मित्रस्य प्रियतमस्य नृणाम् ४

प्र वाहवा सिमृतं जीवसे न आ नो गव्यूतिमुक्षतं घृतेन ।

आ नो जने श्रवयतं युवाना श्रुतं मे मित्रावरुणा हवेमा ५

न मित्रो वरुणो अर्यमा न स्तमने तोकाय वरिवो दधन्तु ।

सुगा नो विश्वा सुपथानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः *६ ३३०

॥ ७१ ॥ (ऋ० ७।६।१-५)

दिवि क्षयन्ता रजसः पृथिव्यां प्र वां घृतस्य निर्णिजो ददीरन् ।

हव्यं नो मित्रो अर्यमा सुजातो राजा सुक्षत्रो वरुणो जुषन्त १ ३३१

× ऋ० ७।६।५ = वा० य० २१,९ । * ऋ० ७।६।६

४ दे. [अदितिः]

आ राजाना मह ऋतस्य गोपा सिन्धुपती क्षत्रिया यातमर्वाक् ।

इळां नो मित्रावरुणोत वृष्टि—मव दिव ईन्वतं जीरदानू

मित्रस्तन्नो वरुणो देवो अर्यः प्र साधिष्ठेभिः पथिभिर्नयन्तु ।

ब्रवद् यथा न आदुरिः सुदास इषा मदेम सह देवगोपाः

यो वां गते मनसा तक्षदेत—मूर्ध्वा धीतिं कृणवद् धारयच्च ।

उक्षेथा मित्रावरुणा घृतेन ता राजाना सुक्षितीस्तर्पयेथाम्

एष स्तोमो वरुण मित्र तुभ्यं सोमः शुक्रो न वायवेऽयामि ।

अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधी—र्युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

॥ ७२ ॥ (ऋ० ७।६५।१-५)

प्रति वां स्र उदिते सूक्तै—मित्रं हुवे वरुणं पूतदक्षम् ।

ययोरसुर्यमक्षितं ज्येष्ठं विश्वस्य यामन्नाचिता जिगत्तु

ता हि देवानामसुरा तावर्या ता नः क्षितीः करतमूर्जयन्तीः ।

अश्याम मित्रावरुणा वयं वां द्यावा च यत्र पीपयन्नहा च

ता भूरिपाशावनृतस्य सेतू दुरत्येतू रिपवे मर्त्याय ।

ऋतस्य मित्रावरुणा पथा वा—मपो न नावा दुरिता तरेम

आ नो मित्रावरुणा हव्यजुष्टि घृतैर्गव्यूतिमुक्षतमिळाभिः ।

प्रति वामत्र वरुमा जनाय पृणीतमुद्रो दिव्यस्य चारोः

एष स्तोमो वरुण मित्र तुभ्यं सोमः शुक्रो न वायवेऽयामि ।

अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधी—र्युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

॥ ७३ ॥ (ऋ० ७।६६।१-३, १७-१९) गायत्री ।

प्र मित्रयोर्वरुणयोः स्तोमो न एतु शूष्यः । नमस्वान् तुविजातयोः

या धारयन्त देवाः सुदक्षा दक्षपितरा । असुर्याय प्रमहसा

ता नः स्तिपा तनूपा वरुण जरितृणाम् । मित्रं साधयतं धियः

काव्यैभिरदाभ्या ऽऽयातं वरुण द्युमत । मित्रश्च सोमपीतये

दिवो धामभिर्वरुण मित्रश्चा यातमद्रुहा । पिबतं सोममातुजी

आ यातं मित्रावरुणा जुषाणावाहुतिं नरा । पातं सोममृतावृधा

॥ ७४ ॥ (ऋ० ८।२५।१-९, १३-२४)

(३४७-३६७) विश्वमना वैयश्वः । उष्णिक्, २३ उष्णिग्गर्भा ।

ता वां विश्वस्य गोपा देवा देवेषु यज्ञिया । ऋतावाना यजसे पूतदक्षसा

३३२-३७०]

रुणो देवता ।

मित्रा तना न रथ्याः वरुणो यश्च सुक्रतुः । सनात् सुजाता तनया धृतव्रता २

ता माता विश्ववेदसा ऽसुर्याय प्रमहसा । मही जजानादितिर्कृतावरी ३

महान्ता मित्रावरुणा सम्राजा देवावसुरा । कृतावानावृतमा घोषतो बृहत् ४ ३५०

नपाता शर्वसो महः सुनू दक्षस्य सुक्रतू । सुप्रदानू इषो वास्त्वधि क्षितः ५

सं या दानूनि येमथुर्दिव्याः पार्थिवीरिषः । नभस्वतीरा वां चरन्तु वृष्टयः ६

अधि या बृहतो दिवोः ऽभि यूथेव पश्यतः । कृतावाना सम्राजा नभसे हिता ७

कृतावाना नि षेदतुः साम्राज्याय सुक्रतू । धृतव्रता क्षत्रियां क्षत्रमांशतुः ८

अक्ष्णश्चिद् गातुविचरता ऽनुव्यणेन चक्षसा । नि चिन्मिषन्ता निचिरा नि चिकयतुः ९ ३५५

तद् वार्यं वृणीमहे वरिष्ठं गोपयत्यम् । मित्रो यत् पान्ति वरुणो यदर्यमा १३

उत नः सिन्धुरपां तन्मरुतस्तदुक्षिना । इन्द्रो विष्णुर्मिद्धांसः सजोषसः १४

तेहिष्मा वनुषो नरो ऽभिमांति कयस्य चित् । तिग्मं न क्षोदः प्रतिघ्नन्ति भूर्णयः १५

अयमेक इत्था पुरूरु चष्टे वि विष्पतिः । तस्य व्रतान्यनु वश्ररामसि १६

अनु पूर्वाण्योक्या साम्राज्यस्य सश्विम । मित्रस्य व्रता वरुणस्य दीर्घश्रुत् १७ ३६०

परि यो रश्मिना दिवो ऽन्तान् ममे पृथिव्याः । उभे आ पंग्रौ रोदसी महित्वा १८

उदुष्य शरणे दिवो ज्योतिर्यस्त सूर्यः । अग्निर्न शुक्रः समिधान आहुतः १९

वचो दीर्घप्रसवनी शे वाजस्य गोमंतः । ईशे हि पित्वो ऽविषस्य दावने २०

तत् सूर्य रोदसी उभे दोषा वस्तोरुप ब्रुवे । भोजेष्वसां अभ्युच्चरा सदा २१

रुज्रमुक्षुण्यार्यने रजतं हरयाणे । रथं युक्तमसनाम सुषामणि २२ ३६५

ता मे अश्वानां हरीणां नितोशना । उतो नु कृत्वाणां नृवाहसा २३

सदभीशु कशावन्ता विप्रा नविष्ठया मती । महो वाजिनावर्षन्ता सचासनम् २४ ३६७

॥ ७५ ॥ (क्र० ८१०११-४) +

(३६८-३७१) जमदग्निर्भागवः १-२ प्रगाथः = (बृहती + सतो बृहती), ३ गायत्री, ४ सतो बृहती ।

कथं गित्था स मर्त्यः शशमे देवतातये ।

यो नूनं मित्रावरुणावभिष्टय आचक्रे हव्यदातये १

वर्षिष्ठक्षत्रा उरुचक्षसा नरा राजाना दीर्घश्रुत्तमा ।

ता बाहुता न दुंसना रथर्यतः साकं सूर्यस्य रश्मिभिः २

प्र यो वां मित्रावरुणा ऽजिरो दूतो अद्रवत् । अयःशीर्षा मदरघुः ३ ३७०

+ क्र० ८१०१, १ = वा० य० ३३, ८७ ।

न यः संपृच्छे न पुनर्हवीतिवे न सैवादाय रमते ।
तस्मान्नो अद्य समृतेरुष्यतं बाहुभ्यां न उरुष्यतम्

४ ३७१

॥ ७६ ॥ (क्र० १०।१३१।२-७)

(३७२-३७७) शकपूतो नामधेयः । विराड् रूपा; २, ६ प्रस्तरपङ्क्तिः, ७ महासतोवृहती ।

ता वाँ मित्रावरुणा धारयत्क्षिती सुषुम्नेषितृत्वता यजामसि ।

युवोः क्राणाय सख्यै—रभि ष्याम रक्षसः

२

अथा चिन्तु यदिधिषामहे वासुभिः प्रियं रेक्कणः पत्यमानाः ।

दुद्वाँ वा यत् पुष्यति रेवणः सम्भारन् नकिरस्य मघानि

3

असावन्यो असुर सुयत द्यौः—स्त्वं विश्वेषां वरुणासि राजा ।

मूर्धा रथस्य चाक्रन् नैतावतैनसान्तकध्रुक्

8

अस्मिन्स्वेतच्छकपूत एनो हिते मित्रे निगतान् हन्ति वीरान् ।

अ॒वो॒र्वा यद्वा॒त् त॒नू॒ष्ववः॑ प्रि॒यासु॑ य॒ज्ञि॒यास्व॒र्वा

4

युवोर्हि मातादितिर्विचेतसा द्यौर्न भूमिः पयसा पुपूतनि ।

3

अव प्रिया दिदिष्टन सूरौ निनिक्त रश्मिभिः

युवं ह्यमराजावसीदतं तिष्ठद् रथं न धूर्षदं वनर्षदम् ।

9

ता नः कणूकयन्तीर्नमेधस्तत्रे अंहसः सुमेधस्तत्रे अंहसः

॥ ७७ ॥ (३७८-३८२) (वा० य० ७।१०) +

रा॒या व॒यः स॑स॒वाः सौ॑ म॒देम॑ ह॒व्येन॑ दे॒वा यव॑सेन॒ गावः॑ ।

तां धेनुं मित्रावरुणा युवं नो विश्वाहा घत्तमनपस्फुरन्तीम्

१० ३७८

॥ ७८ ॥ (वा० य० १०।१६, २१)

हिरण्यरूपा उषसो विरोक उभाविन्द्रा उदिथः सूर्यश्च ।

आरोहतं वरुण मित्रं गच्छं ततश्चक्षाथामदितिं दितिं च मित्रोऽसि वरुणोऽसि १६

१६

मित्रावरुणयोस्त्वा प्रशास्त्रोः प्रक्षिषा युनज्मि

२४

॥ ७९ ॥ (वा० य० २९।६)

अन्तरा मित्रावरुणा चरन्ती मुखं यज्ञानामभि सँविदाने ।

उ॒षासा॑ वा॒ꣳ सु॒हि॒र॒ण्ये सु॑शि॒ल्पे ऋ॒तस्य॑ योना॑विह सा॒दया॑मि

3

+ वै० [इन्द्रः] ३१६० ।

॥ ८० ॥ (वा० य० ३३।७२)

काव्ययोराजानेषु कृत्वा दक्षस्य दुरोणे । रिशादसा सधस्थ आ

७२ ३८९

॥ ८१ ॥ (अथर्व० २।२८।२) +

(३८३) शम्भुः । त्रिष्टुप् ।

मित्र एतं वरुणो वा रिशादा जरामृत्युं कृणुतां संविदानौ ।
तदुग्रिहोता वयुनानि विद्वान् विश्वा देवानां जनिमा विवक्ति

२ ३८३

॥ ८२ ॥ (अथर्व० ३।२५।१-६)

(३८४-३८९) भृगुः । अनुष्टुप् ।

उत्तुदस्त्वोत्तुदतु मा धृथाः शयने स्वे ।

इषुः कामस्य या भीमा तया विध्यामि त्वा हृदि

१

आधीपर्णा कामशल्यामिषुं संकल्पकुलमलाम् ।

तां सुसंनतां कृत्वा कामो विध्यतु त्वा हृदि

२ ३८५

या प्लिहानं शोषयति कामस्येषुः सुसंनता ।

प्राचीनपक्षा व्योषि तया विध्यामि त्वा हृदि

३

शुचा विद्वा व्योषिया शुष्कास्यामि सर्प मा ।

मृदुनिर्मन्युः केवली प्रियवादिन्यनुव्रता

४

आजामि त्वाजन्त्या परि मातुरथो पितुः । यथा मम क्रतावसो मम चित्तमुपायसि

व्यस्ये मित्रावरुणौ हृदश्चित्तान्यस्यतम् । अथैनामकृतं कृत्वा ममैव कृणुतं वशे

६ ३८९

॥ ८३ ॥ (अथर्व० ४।२२।१-७) [आयुर्वेदप्रकरणे सूक्तं (२६४) द्रष्टव्यम् ।]

॥ ८४ ॥ (अथर्व० १।२०।२)

(३९०-३९४) अथर्वा । अनुष्टुप् ।

यो अय सेन्यो वधोऽघ्वायूनामुदीरते । युवं तं मित्रावरुणावसद्यावयतं परि

२ ३९०

॥ ८५ ॥ (अथर्व० ५।२४।५) चतुष्पदातिऽशकरी ।

मित्रावरुणौ वृष्ट्याधिपती तौ मावताम् ।

अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायांस्यां प्रतिष्ठायांस्यां चित्यामस्यामाकू-

त्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा

५ ३९१

+३० [आयुर्वेद०] २ ।

॥ ८६ ॥ (अथर्व० ६।३१।३) त्रिष्टुप् । +

अभयं मित्रावरुणाविहास्तु नोऽर्चिषात्त्रिणो नुदतं प्रतीचः ।
मा ज्ञातारं मा प्रतिष्ठां विदन्त मिथो विद्वाना उप यन्तु मृत्युम्

॥ ८७ ॥ (अथर्व० ६।८९।३) अनुष्टुप् ।

मह्यं त्वा मित्रावरुणौ मह्यं देवी सरस्वती ।
मह्यं त्वा मध्यं भूम्या उभावन्तौ समस्यताम्

॥ ८८ ॥ (अथर्व० ६।९७।२) जगती ।

स्वधास्तु मित्रावरुणा विपश्चिता प्रजावत् क्षत्रं मधुनेह पिन्वतम् ।
बाधेथां दूरं निर्रति पराचैः कृतं चिदेनः प्र मुमुक्तमस्मत्

॥ ८९ ॥ (अथर्व० ९।१०।२३)

(३९५) ब्रह्मा । त्रिष्टुप् ।

अपादेति प्रथमा पद्वतीनां कस्तद्वी मित्रावरुणा चिकेत ।
गर्भो भारं भरत्या चिदस्या क्रतं पिपत्यनृतं नि पाति

॥ ९० ॥ (अथर्व० १०।५।११)

(३९६) सिन्धुद्वीपः । पथ्यापङ्क्तिः ।

मित्रावरुणयोर्भाग स्थ । अपां शुक्रमापो देवीर्वर्चो अस्मासु धत्त ।
प्रजापतेर्वो धाम्नास्मै लोकाय सादये

॥ ९१ ॥ (३९७-३९९) (सा० ९८६-९८७) ❁

ता वां सम्यग्द्रुह्याणेषमश्याम धाम च । वयं वां मित्रा स्याम
पातं नो मित्रा पायुभिरुत त्रायेथां सुत्रात्रा । साह्याम दस्युं तनुभिः

॥ ९२ ॥ (सा० १६४७) ×

त्वां विष्णुवृहन् क्षयो मित्रो गृणाति वरुणः । त्वां शर्धो मदत्यनु मारुतम्

मित्र-मित्रावरुण-सहचारी-देवगणः ।

(१) मित्रावरुणौ नभस्यश्च ।

॥ ९३ ॥ (ऋ० २।३।६)

गृत्समद (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । जगती ।

जुषेथां यज्ञं बोधतं हवस्य मे सुतो होता निविदः पूर्या अनु ।

अच्छा राजाना नम एत्यावृतं प्रशास्त्रादा पिबतं सोम्यं मधु ।

६ ४००

(२) मित्रावरुणादित्याः ।

॥ ९४ ॥ (ऋ० ८।१०।५)

जमदग्निर्भार्गवः । बृहती ।

प्र मित्राय प्रार्यम्णे सचुध्यमृतावसो ।

वरुण्यं वरुणे छन्द्यं वचः स्तोत्रं राजसु गायत

५ ४०१

(३) उखामित्रौ ।

॥ ९५ ॥ (वा० य० ११।६४)

उत्थाय बृहती भवोदु तिष्ठ ध्रुवा त्वम् ।

मित्रैतां त उखां परिददाम्यमित्या एषा मा भैदि

६४ ४०२

(४) सविता ।

॥ ९६ ॥ (ऋ० १।२।५-८) +

(४०३-४०६) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।

हिरण्यपाणिमृतये सवितारमुप ह्वये । स चेत्ता देवता पदम् ५
 अपां नपातमवसे सवितारमुप स्तुहि । तस्य व्रतान्युश्मसि ६
 विभक्तारं हवामहे वसोश्चित्रस्य राधंसः । सवितारं नृचक्षसम् ७ ४०५
 सखाय आ नि पीदत सविता स्तोम्यो नु नः । दाता राधांसि शुम्भति ८ ४०६

॥ ९७ ॥ (ऋ० १।२।३-५)

(४०७-४०९) आजीगर्तिः शुनःशेषः स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः । (५ भगो वा) । गायत्री ।

अभि त्वा देव सवित-रीशानं वार्याणाम् । सदावन् भागमीमहे ३
 यश्चिद्धि तं इत्था भगः शशमानः पुरा निदः । अद्वेषो हस्तयोर्दधे ४
 भगभक्तस्य ते वय-मुदशेम तवावसा । मूर्धानं राय आरभे ५ ४०९

॥ ९८ ॥ (ऋ० १।३।५-११) ×

(४१०-४१९) हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । त्रिष्टुप्, ९ जगती ।

आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ।
 हिरण्ययेन सविता रथेना-ऽऽ देवो याति भुवनानि पश्यन् २ ४१०
 याति देवः प्रवता यात्युद्धता याति शुभ्राभ्यां यजतो हरिभ्याम् ।
 आ देवो याति सविता परावतो ऽप विश्वा दुरिता बाधमानः ३
 अभीवृतं कुशनैर्विश्वरूपं हिरण्यशम्यं यजतो बृहन्तम् ।
 आस्थाद् रथं सविता चित्रभानुः कृष्णा रजांसि तर्विषीं दधानः ४
 वि जनाच्छयावाः शितिपादो अख्यन् रथं हिरण्यप्रउगं वहन्तः ।
 शश्वद् विशः सवितुर्देव्यस्यो-पस्थे विश्वा भुवनानि तस्थुः ५
 तिस्रो द्यावः सवितुर्द्वा उपस्थां एकां यमस्य भुवने विराषाट् ।
 आर्णि न रथ्यममृताधिं तस्थु-रिह ब्रवीतु य उ तच्चिकेतत् ६
 वि सुपर्णो अन्तरिक्षाण्यख्यद् गभीरवैपा असुरः सुनीथः ।
 क्वेदानीं सूर्यः कश्चिकेत कतमां द्यां रश्मिरस्या ततान ७
 अष्टौ व्यख्यत् ककुभः पृथिव्या-स्त्री धन्व योजना सप्त सिन्धून् ।
 हिरण्याक्षः सविता देव आगाद् दधद्रता दाशुषे वार्याणि ८ ४१९

+ ऋ. १, २२, ५ = वा. य. २२, १० । × ऋ. १।३।५।१ = दै० [अग्निः] २४४८; ऋ. १।३।५।८-१० = वा. य. ३४।२४-२७

विता देवता ।

क्रा. ४०३-४२९]

हिरण्यपाणिः सविता विचर्षणि—रुमे द्यावापृथिवी अन्तरीयते ।

अपामीवां बाधते वेति सूर्य—मभि कृष्णेन रजसा द्यामृणोति

९

हिरण्यहस्तो असुरः सुनीथः सुमृच्छीकः स्ववां यात्वर्वाङ् ।

अपसेधन् रक्षसो यातुधाना—नस्थाद् देवः प्रतियोषं गृणानः

१०

ये ते पन्थाः सवितः पूव्यासो ऽरेणवः सुकृता अन्तरिक्षे ।

तेभिर्नो अद्य पथिभिः सुगेभी रक्षा च नो अधि च ब्रूहि देव

११ ४१९

॥ ९९ ॥ (ऋ० २।३८।१-११)

(४१०-४३०) गृत्समद (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । त्रिष्टुप् ।

उदु व्य देवः सविता सवार्यं शश्वत्तमं तदपा वह्निरस्यात् ।

नूनं देवेभ्यो वि हि धाति रत्न—मथाभजद् वीतिहोत्रं स्वस्तौ

१ ४२०

विश्वस्य हि श्रुष्ट्यै देव ऊर्ध्वः प्र बाहवां पृथुपाणिः सिसर्ति ।

आपश्चिदस्य व्रत आ निमृग्रा अयं चिद् वार्तो रमते परिज्मन्

२

आशुभिश्चिद्यान् वि मुचाति नून—मरीरमदतमानं चिदेतोः ।

अद्यर्षणां चिन्नययाँ अविष्या—मनु व्रतं सवितुर्मोक्यागात्

३

पुनः समव्यद् विततं वयन्ती मध्या कर्तो न्यैधाच्छकम धीरः ।

उत् सहायास्थाद् व्यृत्तूरदधर—रमतिः सविता देव आगात्

४

नानौकांसि दुर्यो विश्वमायु—र्वि तिष्ठते प्रभवः शोको अग्नेः ।

ज्येष्ठं माता सुनवे भागमाधा—दन्वस्य केतमिषितं सवित्रा

५

समाववर्ति विष्टितो जिगीषु—विश्वेषां कामश्चरताममाभूत् ।

शक्षा अपो विकृतं हित्व्यागा—दनु व्रतं सवितुर्देव्यस्य

६ ४२५

त्वया हितमप्यसप्सु भागं धन्वान्वा मृगयसो वि तस्थुः ।

वनानि विभ्यो नकिरस्य तानि व्रता देवस्य सवितुर्मिनन्ति

७

याद्राध्यं वरुणो योनिमप्य—मनिशितं निमिषि जर्भुराणः ।

विश्वो मार्ताण्डो व्रजमा पशुर्गीत् स्थशो जन्मानि सविता व्याकः

८

न यस्येन्द्रो वरुणो न मित्रो व्रतमयमा न मिनन्ति रुद्रः ।

मगं धियं वाजयन्तः पुरंधि हुवे देवं सवितारं नमोभिः

९

आये वामस्य संगथे रयीणां प्रिया देवस्य सवितुः स्याम

१० ४२९

५ दे. [अदितिः]

८ ४१५
१. ३४।१४-१७

असम्यं तद् दिवो अद्भ्यः पृथिव्या—स्त्वया दत्तं काम्यं राध आ गात् ।
शं यत् स्तोतृभ्य आपये भवा—त्युरुशंसाय सवितर्जरित्रे

११ ४३०

॥ १०० ॥ (ऋ० ३।६२।१०-१२) ×

(४३१-४३३) गाथिनो विश्वामित्रः । गायत्री ।

तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात्
देवस्य सवितुर्वयं वाजयन्तः पुरंध्या । भर्गस्य रातिमीमहे
देवं नरः सवितारं विप्रां युज्ञैः सुवृक्तिभिः । नमस्यन्ति धियेपिताः

१०

११

१२ ४३३

॥ १०१ ॥ (ऋ० ४।५३।१-७)

(४३४-४४६) वामदेवो गौतमः । जगती ।

तद् देवस्य सवितुर्वयि महद् वृणीमहे असुरस्य प्रचेतसः ।
छर्दिरेन दाशुषे यच्छति त्मना तन्नो मह्यं उदयान् देवो अक्षुभिः
दिवो धर्ता भुवनस्य प्रजापतिः पिशङ्गं द्रापिं प्रति मुञ्चते कविः ।
विचक्षणः प्रथयन्नापूणन्नुर्व—जीजनत् सविता सुममृकथ्यम्
आप्रा रजांसि दिव्यानि पार्थिवा श्लोकं देवः कृणुते स्वाय धर्मणे ।
प्र बाहू अस्माक् सविता सर्वमनि निवेशयन् प्रसुवन्नक्तुभिर्जगत्
अदाभ्यो भुवनानि प्रचाकेशद् व्रतानि देवः सविताभि रक्षते ।
प्रास्ताग् बाहू भुवनस्य प्रजाभ्यो धृतव्रतो महो अजमस्य राजति
त्रिरन्तरिक्षं सविता महित्वना त्री रजांसि परिभूस्त्रीणि रोचना ।
तिस्रो दिवः पृथिवीस्तिष्ठ इन्वति त्रिभिर्व्रतैरभि नो रक्षति त्मना
बृहत्सुमः प्रसवीता निवेशनो जगतः स्थातुरुभयस्य यो वशी ।
स नो देवः सविता शर्म यच्छ—त्वस्मे क्षयाय त्रिवरूथमंहसः
आगन् देव ऋतुभिर्वर्धतु क्षयं दधातु नः सविता सुप्रजामिषम् ।
स नः क्षपाभिरहमिश्च जिन्वतु प्रजावन्तं रयिमस्मे समिन्वतु

१

२ ४३५

३

४

५

६

७ ४४०

॥ १०२ ॥ (ऋ० ४।५४।१-६) जगती, ६ त्रिष्टुप् ।

अभूद् देवः सविता वन्द्यो नु न इदानीमहं उपवाच्यो नृभिः ।
वि यो रत्ना भजति मानवेभ्यः श्रेष्ठं नो अत्र द्रविणं यथा दधत्
देवेभ्यो हि प्रथमं यज्ञियेभ्यो ऽमृतत्वं सुवासिं भागमुत्तमम् ।
आदिद् दामानं सवितर्व्यूणुषे ऽनूचीना जीविता मानुषेभ्यः

१

२ ४४१

× ऋ. ३, ६२, १० = वा. य. ३, ३५; २२, ९, ३०, २; ३६, ३ ।

वेता देवता ।

अङ्काः ४३०-४५७]

१ ४३०

०

१ ४३३

२ ४३३

अदितिं यच्चकृमा दैव्ये जने दीनैर्दक्षैः प्रभृती पूरुषत्वता ।

देवेषु च सवितुर्मनुषेषु च त्वं नो अत्र सुवतादनागसः ३

न प्रमिये सवितुर्दैव्यस्य तद् यथा विश्वं भुवनं धारयिष्यति ।

यत् पृथिव्या वरिमन्ना स्वङ्गुरिर्वर्ष्मन् दिवः सुवति सत्यमस्य तत् ४

इन्द्रज्येष्ठान् बृहद्भ्यः पर्वतेभ्यः क्षया एभ्यः सुवासि पुस्त्यावतः ।

यथायथा पतर्यन्तो वियेमिर एवैव तस्थुः सवितः सुवाय ते ५ ४४५

ये ते त्रिरहन्त्सवितः सुवासो दिवेदिवे सौभगमासुवन्ति ।

इन्द्रो द्यावापृथिवी सिन्धुरङ्गि रादित्यैर्नो अदितिः शर्म यंसत् ६ ४४६

॥ १०३ ॥ (क्र० ५१८११-५) ×

(४४७-४६०) इयावाश्च आत्रेयः । जगती ।

१ युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः ।

२ ४४५ वि होत्रा दधे वयुनाविदेक इन्मही देवस्य सवितुः परिण्डुतिः १

विश्वो रूपाणि प्रति मुञ्चते कविः प्रासावीद् भद्रं द्विपदे चतुष्पदे ।

३ वि नाकमख्यत् सविता वरेण्यो ऽनु प्रयाणमुषसो वि राजति २

यस्य प्रयाणमन्वन्य इद् ययुर्देवा देवस्य महिमानमोजसा ।

४ यः पार्थिवानि विममे स एतशो रजांसि देवः सविता महित्वना ३

उत यांसि सवितस्त्रीणि रोचनो त सूर्यस्य रुश्मिभिः समुच्यसि ।

५ उत रात्रीभुभयतः परीयस उत मित्रो भवसि देव धर्मभिः ४ ४५०

उतेशिषे प्रसवस्य त्वमेक इदुत पूषा भवसि देव यामभिः ।

६ उतेदं विश्वं भुवनं वि राजसि इयावाश्चस्ते सवितुः स्तोममानशे ५ ४५१

॥ १०४ ॥ (क्र० ५१८२११-९) + । गायत्री, १ अनुष्टुप् ।

७ ४४७ तत् सवितुर्वृणीमहे वयं देवस्य भोजनम् । श्रेष्ठं सर्वधातमं तुरं भगस्य धीमहि १

अस्य हि स्वयंशस्तरं सवितुः कच्चन प्रियम् । न मिनन्ति स्वराज्यम् २

स हि रत्नानि दाशुषे सुवति सविता भगः । तं भागं चित्रमीमहे ३

१ अद्या नो देव सवितः प्रजावत् सावीः सौभगम् । परा दुःष्वप्यं सुव ४ ४५५

विश्वानि देव सवितुर्दुरितानि परा सुव । यद् भद्रं तन्न आ सुव ५

२ ४४९ अनागसो अदितये देवस्य सवितुः सवे । विश्वा वामानि धीमहि ६ ४५७

* क्र. ५१८११-३ = वा. य. ५, १४; ११४, ६; ३७, २; १२, ३ । अथर्व, ७, ७२, ६ (उत्तरार्धः) ।
+ क्र. ५१८१४-५ = वा. य. ३०, ३; सा. १४१ ।

आ विश्वदेवं सत्पतिं सूक्तैरद्या वृणीमहे । सत्यसवं सवितारम् ७
 य इमे उभे अहनी पुर एत्यप्रयुच्छन् । स्वाधीदेवः सविता ८
 य इमा विश्वा जाता न्याश्रावयति श्लोकैः । प्र च सुवार्ति सविता ९ ४६०

॥ १०५ ॥ (ऋ० ६।७।१-६)

(४६१-४६६) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । जगती, ४-६ त्रिष्टुप् ।

उदु ष्य देवः सविता हिरण्यया बाहू अयंस्तु सर्वनाथ सुकृतुः ।
 घृतेन पाणी अभि प्रुष्णुते मुखो युवा सुदक्षो रजसो विधर्मणि १
 देवस्य वयं सवितुः सवीमनि श्रेष्ठे स्याम वसुनश्च दावने ।
 यो विश्वस्य द्विपदो यश्चतुष्पदो निवेशने प्रसवे चासि भूमनः २
 अदब्धेभिः सवितः पायुभिर्द्वं शिवेभिर्द्य परि पाहि नो गयम् ।
 हिरण्यजिह्वः सुविताय नव्यसे रक्षा मार्किनो अवशंस ईशत ३
 उदु ष्य देवः सविता दमूना हिरण्यपाणिः प्रतिदोषमस्थात् ।
 अयोहनुर्यजतो मन्द्रजिह्व आ दाशुषे सुवति भूरि वामम् ४
 उदु अयो उपवक्तेव बाहू हिरण्यया सविता सुप्रतीका ।
 दिवो रोहोस्यरुहत् पृथिव्या अरीरमत पतयत् कञ्चिदम्बम् ५ ४६५
 वाममद्य सवितर्वामसु श्वो दिवेदिवे वाममस्मभ्यं सावीः ।
 वामस्य हि क्षयस्य देव भूरैरया धिया वामभार्जः स्याम ६ ४६६

॥ १०६ ॥ (ऋ० ७।३।१-६)

(४६७-४७६) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । ६ उत्तरार्धस्य भगो वा । त्रिष्टुप् ।

उदु ष्य देवः सविता ययाम हिरण्ययीममतिं यामशिश्रेत् ।
 नूनं भगो हव्यो मानुषेभिर्वि यो रतां पुरुवसुर्दधाति १
 उदु तिष्ठ सवितः शुध्यस्य हिरण्यपाणे प्रभृतावृतस्य ।
 व्युर्वी पृथ्वीममतिं सृजान आ नृभ्यो मर्तभोजनं सुवानः २
 अपि धृतः सविता देवो अस्तु यमा चिद् विश्वे वसवो गृणन्ति ।
 स नः स्तोमान् नमस्यश्चनो धाद् विश्वेभिः पातु पायुभिर्नि सरीन् ३
 अभि यं देव्यदितिर्गृणाति सवं देवस्य सवितुर्जुषाणा । ४ ४७०
 अभि सम्राजो वरुणो गृणन्त्यभि मित्रासो अर्यमा सजोषाः
 अभि ये मिथो वनुषः सपन्ते राति दिवो रातिषाचः पृथिव्याः । ५ ४७१
 अर्हिर्वुध्न्य उत नः शृणोतु वरुण्येकधेनुभिर्नि पातु

विता देवता ।

५५८-४८२]

अनु तन्नो जास्पतिर्मसीष्ट रत्नं देवस्य सवितुरियानः ।
भगमुग्रोऽवसे जोहवीति भगमुग्रो अधं याति रत्नम्

६ ४७२

॥ १०७ ॥ (ऋ० ७।४।१-४)

आ देवो यातु सविता सुरत्नोऽन्तरिक्षग्रा वहमानो अश्वैः ।
हस्ते दधानो नयीं पुरुषाणि निवेशयञ्च प्रसुवञ्च भूमं
उदस्य ब्राह्म शिथिरा बृहन्ता हिरण्यया दिवो अन्ता अनष्टाम् ।
नूनं सो अस्य महिमा पतिष्ट सूरश्चिदस्मा अनु दादपस्याम्
स वा नो देवः सविता सहावाऽऽ साविषद् वसुपतिर्वसुनि ।
विश्रयमाणो अमर्तिमुरुचीं मर्तभोजनमधं रासते नः
इमा गिरः सवितारं सुजिह्वं पूर्णगभस्तिमीळते सुपाणिम् ।
चित्रं वयो बृहदुस्मे दधातु यूतं पात स्वास्तिभिः सदा नः

१

२

३ ४७५

४ ४७६

॥ १०८ ॥ (ऋ० १०।१३९।१-३)

(४७७-४७९) देवगन्धर्वो विश्वावसुः । त्रिष्टुप् ।

सूर्यरश्मिर्हरिकेशः पुरस्तात् सविता ज्योतिरुदयाँ अजस्रम् ।
तस्य पूषा प्रसवे याति विद्रा—न्तसंपश्यन् विश्वा भुवनानि गोपाः
नृचक्षा एष दिवो मध्यं आस्त आपप्रिवान् रोदसी अन्तरिक्षम् ।
स विश्वाचीरभि चष्टे घृताची—रन्तरा पूर्वमपरं च केतुम्
रापो बुध्नः संगमनो वसूनां विश्वा रूपाभि चष्टे शचीभिः ।
देव इव सविता सत्यधर्मेन्द्रो न तस्थौ समरे धनानाम्

१

२

३ ४७९

॥ १०९ ॥ (ऋ० १०।१४९।१-५)

(४८०-४८४) अर्चन् हैरण्यस्तूपः । त्रिष्टुप् ।

सविता यन्त्रैः पृथिवीमरम्णा—दस्कम्भने सविता घामदंहत् ।
अश्वमिवाधुक्षदुर्निमन्तरिक्ष—मृतूर्तं बद्धं सविता समुद्रम्
यत्रा समुद्रः स्कम्भितो व्यौन—दपां नपात् सविता तस्य वेद ।
अतो भूरत आ उत्थितं रजो ऽतो द्यावापृथिवी अग्रथेताम्
पृथेदमन्यदभवद् यजत्र—ममर्त्यस्य भुवनस्य भूना ।
सुपर्णो अङ्ग सवितुर्गुरुमान् पूर्वो जातः स उ अस्यानु धर्म

१ ४८०

२

३ ४८२

गाव इव ग्रामं यूयुधिरिवाश्वान् वाश्रेव वत्सं सुमना दुर्हाना ।
 पतिरिव जायामभि नो न्येतु धर्ता दिवः सविता विश्ववारः
 हिरण्यस्तूपः सवितर्यथा त्वा ऽऽङ्गिरसो जुह्वे वाजं अस्मिन् ।
 एवा त्वाचन्नवसे वन्दमानः सोमस्येवांशुं प्रति जागराहम्

॥ ११० ॥ (४८५-५१६) (वा० य० १।१०, ३१) +

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्
 सवितुस्त्वां प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।
 सवितुर्वैः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः

॥ १११ ॥ (वा० य० ४।४, २५) *

चित्पतिर्मा पुनातु वाक्पतिर्मा पुनातु देवो मां सविता पुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेण
 सूर्यस्य रश्मिभिः ।

तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्
 अभि त्वं देव संवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामि सत्यसंव रत्नधामभि प्रियं मतिं कविम् ।
 ऊर्ध्वा यस्यामतिर्भा अदिद्युतत्सवीमनि हिरण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृषा स्वः २५ ४८८

॥ ११२ ॥ (वा० य० ५।३९)

देवं सवितरेष ते सोमस्त रक्षस्व मा त्वा दमन् ।

एतत् त्वं देव सोम देवो देवाँर उपागा इदमहं मनुष्यान्तसह रायस्पोषेण स्वाहा ३९ ४८९

॥ ११३ ॥ (वा० य० ८।७)

उपयामगृहीतोऽसि सावित्रोऽसि चनोधाश्चनोधा असि चनो मयि धेहि ।

जिन्वं यज्ञं जिन्वं यज्ञपतिं भगाय देवाय त्वा सवित्रे

॥ ११४ ॥ (वा० य० ९।१; ११।७; ३०, १) ×

देवं सवितुः प्रसव यज्ञं प्रसव यज्ञपतिं भगाय ।

दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाजं नः स्वदतु स्वाहा १ ४९१

+ वा० य० १।२१, २४; २।११; ५।२२, २३; ६।१, ९, ३०; ९।३०, ३८; १०।६; ११।९, २८; १८।३७; २०।३; २१।१;
 ३७।१; ३८।१। अथर्व. १९।५।१।

* अथर्व. ७।१४।१-२ । सा० ४६४ ।

× वा० य० ९, ५; १८, ३० = दै० [अदितिः०] १६ ।

४२३-५०५]

॥ ११५ ॥ (वा० य० १०,५; २८)×

सवित्रे स्वाहा ॥ ५ ॥

सवितासि सत्यप्रंसवः

२८ ४९३

॥ ११६ ॥ (वा० य० ११।१-३,८,११,६३)

युञ्जानः प्रथमं मनस्तत्त्वाय सविता धियः ।

अप्रेज्योतिर्निचाय्यं पृथिव्या अध्याभरत्

१

युक्तेन मनसा वयं देवस्य सवितुः सवे । स्वर्ग्याय शक्त्या

२

४९५

युक्त्वाय सविता देवान्त्स्वर्यतो धिया दिवम् ।

बृहज्ज्योतिः करिष्यतः सविता प्रसुवाति तान्

३

इमं नो देव सवितर्यज्ञं प्रणय देवाव्यः सखिविदः सत्राजितं धनजितं स्वर्जितम् ।

ऋचा स्तोमः समर्धय गायत्रेण रथन्तरं बृहद्वायवर्त्तनि स्वाहा

८

हस्त आधाय सविता बिभ्रदभ्रिः हिरण्ययीम् ।

अप्रेज्योतिर्निचाय्यं पृथिव्या अध्याभरत्

११

देवस्त्वा सवितोद्वपतु सुपाणिः स्वङ्गुरिः सुबाहुरुत शक्त्या ।

अव्यथमाना पृथिव्यामाशा दिश आपृण

६३

४९९

॥ ११७ ॥ (वा० य० १७।७४)

ताः सवितुर्वरेण्यस्य चित्रामाहं वृणे सुमतिं विश्वजंन्याम् ।

यामस्य कण्वो अदुहत् प्रपीनाः सहस्रधारां पर्यसा महीं गाम्

७४

५००

॥ ११८ ॥ (वा० य० १९।४३)

उमाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च । मां पुनीहि विश्वतः

४३

५०१

॥ ११९ ॥ (वा० य० २०।७०)

य इन्द्र इन्द्रियं दधुः सविता वरुणो भगः । स सुत्रामां हविषंतिर्यजमानाय सश्वत ७०

५०२

॥ १२० ॥ (वा० य० २१।२१)

शमिता नो वनस्पतिः सविता प्रसुवन् भगम् ।

कुरु लन्द इहेन्द्रियं वशा वेहद्वयो दधुः

२१

५०३

॥ १२१ ॥ (वा० य० २१।११-१४)

देवस्य चेततो महीं प्र सवितुर्हवामहे । सुमतिः सत्यराधसम्

११

सुष्टुतिः सुमतीवृधो रातिः सवितुरीमहे । प्र देवाय मतीविदे

१२

५०५

× वा० य० १०,५ = २२,६;

॥ वा० य० २०।७१-७२ = दै० [इन्द्रः] २९५५-५६ ।

रातिः सत्पतिं महे सवितारमुप ह्वये । आसवं देववीतये
देवस्य सवितुर्मतिमासवं विश्वदैव्यम् । धिया भगं मनामहे

॥ १२२ ॥ (वा० य० ३०४)

विभक्तारं हवामहे वसोश्चित्रस्य राधंसः । सवितारं नृचक्षसम्

॥ १२३ ॥ (वा० य० ३५२-३,५)

सविता ते शरीरेभ्यः पृथिव्याँल्लोकमिच्छतु । तस्मै युज्यन्तामुस्त्रियाः
सविता पुनातु

सविता ते शरीराणि मातुरुपस्थ आ वपतु । तस्मै पृथिवि शं भव

॥ १२४ ॥ (वा० य० ३७११-१२, १४-१५)

देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु ।

सुषदा पश्चाद् देवस्य सवितुरधिपत्ये चक्षुर्मे दाः

गर्भो देवानां पिता मतीनां पतिः प्रजानाम् ।

सं देवो देवेन सवित्रा गतु सः सूर्येण रोचते

समग्निरग्निना गतु सं दैवेन सवित्रा सः सूर्येणारोचिष्ट ।

स्वाहा समग्निस्तर्पसा गतु सं दैव्येन सविता सः सूर्येणारुरुचत

॥ १२५ ॥ (३८८)

सवित्रे त्वं ऋभुमते विभुमते वाजवते स्वाहा

॥ १२६ ॥ (अथर्व० ११८३) +

(५१७) द्रविणोदाः । विराडास्तारपङ्क्तिस्त्रिष्टुप् ।

यत् तं आत्मनि तन्वां घोरमस्ति यद् वा केशेषु प्रतिचक्षणे वा ।

सर्वं तद् वाचापं हन्मो वयं देवस्त्वा सविता हृदयतु

॥ १२७ ॥ (अथर्व० ५१२४१)

(५१८-५२४) अथर्वा । चतुष्पदाऽतिशक्री ।

सविता प्रसवानामधिपतिः स मावतु ।

अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां चित्यामस्यामार्क-
त्यामस्यामाश्लिष्यस्यां देवहृत्यां स्वाहा

॥ १२८ ॥ (अथर्व० ६।१।१-३)

उष्णिक्, १ त्रिपदा पिपीलिकमध्या साम्नी जगती, २-३ पिपीलिकमध्या पुर उष्णिक् ।

दोषो गाय बृहद् गाय द्युमद् धेहि । आथर्वण स्तुहि देवं सवितारम् १
 तमुष्टुहि यो अन्तः सिन्धौ सूनुः । सत्यस्य युवानुमद्रौघवाचं सुशेवम् २ ५२०
 स वा नो देवः सविता साविषदुमृतानि भूरि । उमे सुष्टुती सुगातवे ३ ५२१

॥ १२९ ॥ (अथर्व० ७।१४।३-४) +

३ त्रिष्टुप्, ४ जगती ।

सावीहि देव प्रथमार्यं पित्रे वर्ष्माणमस्मै वरिमाणमस्मै ।
 अथास्मभ्यं सवितर्वार्याणि दिवोदिव आ सुवा भूरि पश्वः ३
 दमूना देवः सविता वरेण्यो दधद् रत्नं दक्षं पितृभ्य आयुषि ।
 पिवात् सोमं ममददेनमिष्टे परिजमा चित् क्रमते अस्य धर्मेणि ४ ५२३

॥ १३० ॥ (अथर्व० १९।१६।१) अनुष्टुप् ।

असपत्नं पुरस्तात् पश्चान्नो अभयं कृतम् ।
 सविता मा दक्षिणत उत्तरान्मा शचीपतिः १ ५२४

॥ १३१ ॥ (अथर्व० ५।२५।१२)

(५२५-५२६) ब्रह्मा । अनुष्टुप् ।

सवितः श्रेष्ठेन रूपेणास्या नार्या गवीन्योः ।
 पुमांसं पुत्रमा धेहि दशमे मासि सूतवे १२ ५२५

॥ १३२ ॥ (अथर्व० ५।१६।२) द्विपदा प्राजापत्या बृहती ।

युनक्तु देवः सविता प्रजानन्नस्मिन् यज्ञे महिषः स्वाहा २ ५२६

॥ १३३ ॥ (अथर्व० ७।१६।१)

(५२७) भृगुः । त्रिष्टुप् ।

बृहस्पते सवितर्वर्धयैनं ज्योतयैनं महते सौमगाय ।
 सवितं चित् संतरं सं शिशाधि विश्वं एनमनु मदन्तु देवाः १ ५२७

॥ १३४ ॥ (अथर्व० १०।५।१४)

(५२८) सिन्धुद्वीपः । पथ्यापङ्क्तिः ।

देवस्य सवितुर्भाग स्थ । अपां शुक्रमापो देवीर्वर्चो अस्मासु धत्त ।
 प्रजापतेर्वो धाम्नास्मै लोकाय सादये १४ ५२८

७।१४।१-२ । = दै० [अदिति०] ४८८ ।
 ६ [दे० अदितिः०]

सवितृ-सहचारी देवगणः ।

(१) सवित्राद्याः ।

॥ १३५ ॥ (५२९-५३०) (वा० य० १०।३०)

सवित्रा प्रसवित्रा सरस्वत्या वाचा त्वष्टा रूपैः पूषणा
 पशुभिरिन्द्रेणास्मे बृहस्पतिना ब्रह्मणा वरुणेनौजसाग्निना
 तेजसा सोमेन राज्ञा विष्णुना दशम्या देवतया प्रसूतः प्रसर्पामि

(२) सवित्रादयः ।

॥ १३६ ॥ (वा० य० ३९।६)

सविता प्रथमेऽहन्निर्द्वितीये वायुस्तृतीये आदित्यश्चतुर्थे
 चन्द्रमाः पञ्चम ऋतुः षष्ठे मरुतः सप्तमे बृहस्पतिरष्टमे ।
 मित्रो नवमे वरुणो दशम इन्द्र एकादशे विश्वे देवा द्वादशे

(३) इन्द्रः, भगः, सविता ।

॥ १३७ ॥ (अथर्व० १।१६।१)

(५३१) ब्रह्मा । त्रिपदा एकावसाना साक्षी त्रिष्टुप् ।

सखासावस्मभ्यमस्तु रातिः सखेन्द्रो भगः सविता चित्रराधाः

(४) सविता, आदित्याः, रुद्राः, वसवः ।

॥ १३८ ॥ (अथर्व० ६।६८।१)

(५३२) अथर्वा । पुरो विराडतिशाकरगर्भा चतुष्पदा जगती ।

आयमगन्तसविता क्षुरेणोष्णेन वाय उदुकेनेहि ।

आदित्या रुद्रा वसव उन्दन्तु सचेतसः सोमस्य राज्ञो वपत् प्रचेतसः

(५) बृहस्पतिः सविता मित्रोऽर्यमा भगोऽश्विनौ ।

॥ १३९ ॥ (अथर्व० ६।१०३।१)

(५३३) उच्छोचनः । अनुष्टुप् ।

संदानं वो बृहस्पतिः संदानं सविता करत् ।

संदानं मित्रो अर्यमा संदानं भगो अश्विनौ

(५) सूर्यः ।

॥ १४० ॥ (ऋ० १।५०।१-१३) *

(५३४-४६) प्रस्कण्वः काण्वः । गायत्री, १०-१३ अनुष्टुप् ।

उदु त्वं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम्	१
अप त्वे तावो यथा नक्षत्रा यन्त्यक्तुभिः । सूराय विश्वचक्षसे	२ ५३५
अदृश्रमस्य केतवो वि रश्मयो जनां अनु । आजन्तो अग्नयो यथा	३
तारिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य । विश्वमा मासि रोचनम्	४
प्रत्यङ् देवानां विशः प्रत्यङ् दुर्देषि मानुषान् । प्रत्यङ् विश्वं स्वर्दृशे	५
येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनां अनु । त्वं वरुण पश्यसि	६
वि घामेषि रजस्पृथ्व हा मिमानो अक्तुभिः । पश्यञ्जन्मानि सूर्य	७ ५४०
सप्त त्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य । शोचिष्केशं विचक्षण	८
अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः सूरौ रथस्य नप्त्यः । तामिर्याति स्वयुक्तिभिः	९
उद्वयं तमसस्परि ज्योतिष्पश्यन्त उत्तरम् । देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् १०	
उद्यन्नध मित्रमह आरोहन्नुत्तरां दिवम् । हृद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय ११	
शुक्रेषु मे हरिमाणं रोषणाकासु दध्मसि । अथो हारिद्रवेषु मे हरिमाणं नि दध्मसि १२	५४५
उदगादुयमादित्यो विश्वेन सहसा सह । द्विपन्तं महीं रन्धयन् मो अहं द्विषते रधम् १३	५४६

॥ १४१ ॥ (ऋ० १।११।१-६) +

(५४७-५९) कुत्स आङ्गिरसः । त्रिष्टुप् ।

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्रे ।	
आप्रा घावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च	१
सूर्यो देवीमुषसं रोचमानां मर्यो न योषामभ्येति पश्चात् ।	
यत्रा नरो देवयन्तो युगानि वितन्वते प्रति भद्राय भद्रम्	२
भद्रा अथा हरितः सूर्यस्य चित्रा एतग्वा अनुमाद्यासः ।	
नमस्यन्तो दिव आ पृष्ठमस्थुः परि घावापृथिवी यन्ति सद्यः	३ ५४९

१० १।५०।१-१०, १२-१३ = वा० य० ७, ४१; ८, ४०-४१; २०, २१; २७, १०; ३३, ३१-३२, ३६; ३५, १४; ३८, २४.

वा० ३१, ६३३-६४० । अथर्व० १।२२, ४; १३, २, १६-२४; १७, १, २४; २०, ४७, १३-२१ । ऋ० १।५०।११-१३ =

१० [आयुर्वेद०] ५४५-४७ ।

१० १।११।१-२, ४-६ = वा० य० ७, ४२; १३, ४६; ३३, ३७-३८, ४२ । अथर्व० १३, २, ३५; २०, १०७, १४-१५;

१३३, १-२ । सा० ६२९ ।

तत् सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्तोर्विततं सं जभार ।
 यदेदयुक्त हरितः सधस्था—दाद् रात्री वासस्तनुते सिमस्मै
 तन्मित्रस्य वरुणस्याभिचक्षे सूर्यो रूपं कृणते द्यौरुपस्थे ।
 अनन्तमन्यद् रुद्रस्य पाजः कृष्णमन्यद्हरितः सं भरन्ति
 अद्या देवा उदिता सूर्यस्य निरहंसः पिपृता निरवद्यात् ।
 तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता—मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः

॥ १४२ ॥ (ऋ० १।१६४।४४-४७) ×

(५५३-५४) दीर्घतमा औचस्थः । त्रिष्टुप् ।

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहु—रथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान् ।
 एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः
 कृष्णं नियानं हरयः सुपर्णा अपो वसाना दिवमुत्पतन्ति
 त आववृत्रन्तसदेनाहतस्या—दिद् घृतेन पृथिवी व्युद्यते

॥ १४३ ॥ (ऋ० ४।४०।५) +

(५५५) वामदेवो गौतमः । जगती ।

हंसः शुचिषद् वसुरन्तरिक्षस—द्रोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् ।
 नृषद् वरसदृतसद् व्योमस—दुब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतम्

॥ १४४ ॥ (ऋ० ५।४०।५)

(५५६) अत्रिभौमः । । अनुष्टुप् ।

यत् त्वा सूर्यं स्वर्भानु—स्तमसाविध्यदासुरः । अक्षेत्रविद् यथा मुग्धो भुवनान्यदीधयुः५

॥ १४५ ॥ (ऋ० ७।६०।१)

(५५७-५६७) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

यदद्य सूर्यं ब्रवोऽनागा उद्यन् मित्राय वरुणाय सत्यम् ।
 वयं देवत्रादिते स्याम तव प्रियासो अर्यमन् गृणन्तः

॥ १४६ ॥ (ऋ० ७।६२।१-३)

उत् सूर्यो बृहदुर्चीष्यश्रेत् पुरु विश्वा जनिम् मानुषाणाम् ।
 समो दिवा ददृशे रोचमानः कत्वा कृतः सुकृतः कर्तृभिर्भूत्
 स सूर्यं प्रति पुरो न उद् गा एभिः स्तोमैर्भिरतशेभिरेवैः ।
 प्र नो मित्राय वरुणाय वोचो—ऽनागसो अर्यमणे अग्र्ये च

× दे० [आयुर्वेद०] ७७४-७८९ (अप्तृणसूर्याः) । + वा० य० १०, २४; १२, १४

वि नः सहस्रं शुरुधो रद—न्वृतावानो वरुणो मित्रो अग्निः ।
यच्छन्तु चन्द्रा उपमं नो अर्क—मा नः कामं पूपुरन्तु स्तवानाः

३ ५६०

॥ १४७ ॥ (ऋ० ७।६३।१-४)

उद्वेति सुभगो विश्वचक्षाः साधारणः सूर्यो मानुषाणाम् ।

चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्य देव—श्चर्मैव यः समर्विव्यक् तमांसि

१

उद्वेति प्रसवीता जनानां महान् केतुरर्णवः सूर्यस्य ।

समानं चक्रं पर्याविवृत्सन् यदेतशो वहति धूर्ध्रु युक्तः

२

विभ्राजमान उपसामुपस्थाद् रेभैरुदेत्यनुमद्यमानः ।

एष मे देवः संविता चच्छन्द यः समानं न प्रमिनाति धाम

३

दिवो रुक्म उरुचक्षा उद्वेति दूरे अर्थस्तर्णिभ्राजमानः ।

नूनं जनाः सूर्येण प्रसृता अयन्नर्थानि कृणवन्नपांसि

४ ५६४

॥ १४८ ॥ (ऋ० ७।६६।१४-१६) +

प्रगाथः = (समा बृहती + विषमा सतोबृहती) १६ पुर उष्णिक् ।

उदु त्यद् दर्शतं वपु—र्दिव एति प्रतिह्वरे ।

यदीमांशुर्वहति देव एतशो विश्वस्मै चक्षसे अरम्

१४ ५६५

शीर्ष्णः शीर्ष्णो जगतस्तस्थुषस्पतिं समया विश्वमा रजः ।

सप्त स्वसारः सुविताय सूर्यं वहन्ति हरितो रथे

१५

तचक्षुर्देवहितं शुक्रमुचरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतम्

१६ ५६७

॥ १४९ ॥ (ऋ० ८।१०।११-१२) ×

(५६८-६९) जमदग्निर्भागवः । प्रगाथः = (विषमा बृहती + समा सतोबृहती)

वपुर्माँ अंसि सूर्यं बळादित्य म्हाँ अंसि ।

महस्ते सतो महिमा पनस्यते ऽद्वा देव म्हाँ अंसि

११

वद् सूर्यं श्रवसा म्हाँ अंसि सत्रा देव म्हाँ अंसि ।

म्हा देवानामसूर्यः पुरोहितो विश्व ज्योतिरदाभ्यम्

१२ ५६९

+ ऋ० ७।६६।१६ = वा० य० ३६, २४ ।

× वा० य० ३३, ३९-४० । अथर्व० १३, २, २९; २०, ५८, ३-४ । सा० २७६, १७८८-८९ ।

॥ १५० ॥ (ऋ० १०।३७।१-१२)×

(५७०-८१) सौर्योऽभितपाः । जगती, १० त्रिष्टुप् ।

नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृतं संपर्यत ।
 दूरेदृशे देवजाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्याय शंसत
 सा मा सत्योक्तिः परिं पातु विश्वतो द्यावा च यत्र ततन्नहानि च ।
 विश्वमन्यन्नि विशते यदेजति विश्वाहाऽऽपो विश्वाहोदेति सूर्यः
 न ते अदेवः प्रदिबो नि वासते यदेतशेभिः पतरै रथर्यसि ।
 प्राचीनमन्यदनु वर्तते रज उदुन्येन ज्योतिषा यासि सूर्य
 येन सूर्य ज्योतिषा बाधसे तमो जगच्च विश्वभुदियर्षि भानुना ।
 तेनासद् विश्वामनिरामनाहुति मपामीवामप दुष्ववन्त्य सुव
 विश्वस्य हि प्रेषितो रक्षसि व्रत महैक्यन्नुचरसि स्वधा अनु ।
 यदद्य त्वा सूर्योपब्रवामहे तं नो देवा अनु मंसीरत क्रतुम्
 तं नो द्यावापृथिवी तन्न आप इन्द्रः शृण्वन्तु मरुतो हवं वचः ।
 मा शूने भूम सूर्यस्य संदृशि भद्रं जीवन्तो जरणामशीमहि
 विश्वाहा त्वा सुमनसः सुचक्षसः प्रजावन्तो अनमीवा अनागसः ।
 उद्यन्तं त्वा मित्रमहो दिवेदिवे ज्योग् जीवाः प्रति पश्येम सूर्य
 महि ज्योतिर्विभ्रतं त्वा विचक्षण भास्वन्तं चक्षुषेचक्षुषे मयः ।
 आरोहन्तं बृहतः पाजसस्परि वयं जीवाः प्रति पश्येम सूर्य
 यस्य ते विश्वा भुवनानि केतुना प्र चेरते नि च विशन्ते अकतुभिः ।
 अनागास्त्वेन हरिकेश सूर्याऽह्वाहा नो वस्यसावस्यसोदिहि
 शं नो भव चक्षसा शं नो अह्वा शं भानुना शं हिमा शं घृणेन ।
 यथा शमध्वञ्छमसद् दुरोणे तत् सूर्य द्रविणं धेहि चित्रम्
 अस्माकं देवा उभयाय जन्मने शर्म यच्छत द्विपदे चतुष्पदे ।
 अदत् पिबदूर्जयमानमाशितं तदुस्मे शं योररपो दधातन
 यद् वो देवाश्चक्रम जिह्या गुरु मनसो वा प्रयुंती देवहेळनम् ।
 जरावा यो नो अभि दुच्छुनायते तस्मिन् तदेनो वसवो नि धेतन

× ऋ० १०,३७,१ = वा० य० ४,३५ ।

॥ १५१ ॥ (ऋ० १०।१५८।१-५)

(५८२-८६) चक्षुः सौर्यः । गायत्री, २ स्वरान् ।

द्यौं नो दिवस्पातु वातो अन्तरिक्षात् । अग्निर्नः पार्थिवेभ्यः १
 जोषां सवितर्यस्य ते हरः शतं सवाँ अर्हति । पाहि नो दिद्युतः पतन्त्याः २
 चक्षुर्नो देवः सविता चक्षुर्न उत पर्वतः । चक्षुर्धाता दधातु नः ३
 चक्षुर्नो धेहि चक्षुषे चक्षुर्विख्यै तनूभ्यः । सं चेदं वि च पश्येम ४ ५८५
 सुसं दृश त्वा वयं प्रति पश्येम सूर्य । वि पश्येम नृचक्षसः ५ ५८६

॥ १५२ ॥ (ऋ० १०।१७०।१-४) ॐ

(५८७-९०) विभ्राद् सौर्यः । जगती, ४ आस्तरपङ्क्तिः ।

विभ्राद् बृहत् पिबतु सोम्यं सध्वायुर्दधद्यज्ञपतावर्विहुतम् ।
 वातजतो यो अभिरक्षति तमनां प्रजाः पुंषोष पुरुधा वि राजति १
 विभ्राद् बृहत् सुभृतं वाजसातमं धमैन् दिवो धरुणे सत्यमर्पितम् ।
 अमित्रहा वृत्रहा दस्युहंतमं ज्योतिर्जज्ञे असुरहा संपत्तहा २
 इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरुत्तमं विश्वजिद् धनजिदुच्यते बृहत् ।
 विश्वभ्राद् भ्राजो महि सूर्यो दृश उरु पप्रथे सह ओजो अच्युतम् ३
 विभ्राजुज्योतिषा स्वः — रगच्छो रोचनं दिवः ।
 येनेमा विश्वा भुवना न्याभृता विश्वकर्मणा विश्वदेव्यावता ४ ५९०

॥ १५३ ॥ (५९१-६०९) (वा० य० १।११)

मृताय त्वा नारातये स्वरभिविख्येषु दृशहन्तां दुर्याः पृथिव्यामुर्वन्तरिक्षमन्वेमि ।
 पृथिव्यास्त्वा नामौ सादयाम्यर्दित्या उपस्थेऽग्ने हव्यं रक्ष ११ २९१

॥ १५४ ॥ (वा० य० २।२६) x

सूर्यभरसि श्रेष्ठो रश्मिर्वर्चोदा असि वर्चो मे देहि । सूर्यस्यावृतमन्वावर्ते २६ २९२

॥ १५५ ॥ (वा० य० ३।५, ९-१०)

पृथ्विः स्वर्धौरिव मृन्ना पृथिवीर्व वरिष्णा ।
 तसांस्ते पृथिवि देवयजनि पृष्टेऽग्निर्मन्नादमन्नाद्यायादधे

५ ५९३

॥ ऋ० १०, १७०, १-३ = वा० य० ३३, ३०; सा० ६२८, १४५३-१४५५
 x वा० य० २।२६ (उत्तरार्धः) = अथर्व० १०, ५, ३७ (२); वा० य० २।२७

सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा । सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।
ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ।

सज्जुदेवेन सवित्रा सज्जुरुषसेन्द्रवत्या । जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा

॥ १६५ ॥ (वा० य० २।३३)

अध्वनामध्वपते प्र मा तिर स्वस्ति मेऽस्मिन् पथि देवयाने भूयात्

॥ १५७ ॥ (वा० य० ८।४०) *

अदृश्रमस्य केतवो वि रश्मयो जनां२ अनु । आजन्तो अग्रयो यथा ।
उपयामगृहीतोऽसि सूर्याय त्वा आजायैषते योनिः सूर्याय त्वा आजाय ।
सूर्यं आजिष्ठ आजिष्ठस्त्वं देवेष्वसि आजिष्ठोऽहं मनुष्येषु भूयासम्

॥ १५८ ॥ (वा० य० १।५८) x

परमेष्ठी त्वा सादयतु दिवस्पृष्टे ज्योतिष्मतीम् ।

विश्वस्मै प्राणायानाय व्यानाय विश्वं ज्योतिर्यच्छ ।

सूर्यस्तेऽधिपतिस्तया देवतयाऽङ्गिरस्वद् ध्रुवा सीद

॥ १५९ ॥ (वा० य० २०।१६, २१) +

यदि जाग्रद्यदि स्वप्न एनांसि चक्रमा वयम् ।

सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्व हंसः

उद्वयं तमसस्पति स्तुः पश्यन्त उत्तरम् ।

देवं देवत्रा सूर्यमगन्तु ज्योतिरुत्तमम्

॥ १६० ॥ (वा० य० ३३।३३-३५, ४१) •

दैव्यावध्वर्यु आ गतं रथेन सूर्यत्वचा । मध्वा यज्ञं समञ्जाथे

आ न इडाभिविदथे सुशस्ति विश्वानरः सविता देव एतु ।

अपि यथा युवानो मत्संथा नो विश्वं जगदभिपित्वे मनीषा

यदुद्य कच्च वृत्रहनुदगा अभि सूर्य । सर्वं तदिन्द्र ते वशे

श्रायन्त इव सूर्य विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत ।

वसूनि ज्ञाते जनमान ओजसा प्रति भागं न दीधिम

* वा० य० ८।४१ ।

x वा० य० १३।४३=दे० [अदितिः०] ५०१ मन्त्रः दृष्टव्यः ।

+ वा० य० २०।१६=अथर्ववेदे (६।११।१-२) पाठभेद रूपेण, तथा च वा० य० २०।२१; २७।२०; ३५, १४; ३८, १४

= ऋ० १।५०।१० अथर्वं ७।५३।७ पाठभेदेन च दृश्यते ।

• वा० य० ३३।३५, ४१ = दे० [इन्द्रः] १४३३, २३७८ ।

॥ १६१ ॥ (वा० य० ३६।९, २४)×

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वयमा ।

शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुहक्रमः

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् ।

पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः

शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्

॥ १६२ ॥ (वा० य० ३७।१६-१८)

धर्ता दिवो वि माति तपसस्पृथिव्यां धर्ता देवो देवानाममर्त्यस्तपोजाः ।

वाचमसे नि यच्छ देवायुवम्

अपश्यं गोपामनिपद्यमानमा च परां च पृथिभिश्चरन्तम् ।

स सध्रीचीः स विष्चीर्वसान् आ वरीवर्ति भुवनेष्वन्तः

विश्वासां भुवां पते विश्वस्य मनसस्पते विश्वस्य वचसस्पते सर्वस्य वचसस्पते ।

देवश्रुचं देव घर्म देवो देवान् पाह्यत्र प्रावीरनु वां देववीतये ।

मधु माध्वीभ्यां मधु माध्वीभ्याम्

॥ १६३ ॥ (अथर्व० १।३।५)

(६१०-६२२) अथर्वा । पथ्यापङ्क्तिः ।

विवा शरस्य पितरं सूर्यं शतवृष्यम् ।

तेनो ते तुन्वेडु शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्ठे अस्तु बालिति

॥ १६४ ॥ (अथर्व० २।२।१-५)

[एकावसानम्] १-४ निचृद्विषमा गायत्री, ५ भुरिग्विषमा ।

सूर्यं यत् ते तपस्तेन तं प्रति तप योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः

सूर्यं यत् ते हरस्तेन तं प्रति हर योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः

सूर्यं यत् तेऽर्चिस्तेन तं प्रत्यर्च योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः

सूर्यं यत् ते शोचिस्तेन तं प्रति शोच योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः

सूर्यं यत् ते तेजस्तेन तमतेजसं कृणु योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः

× दै० [आयुर्वेद०] ११९-१२६ ।

७ दै० [अदितिः]

॥ १६५ ॥ (अथर्व० ५।२४।९) चतुष्पदाऽतिशकरी ।

सूर्यश्चक्षुषामधिपतिः स मावतु ।

अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायां मस्यां प्रतिष्ठायां मस्यां चित्या मस्यामा-
कृत्या मस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा ९ ६१३

॥ १६६ ॥ (अथर्व० ७।१३।१-२) अनुष्टुप् ।

यथा सूर्यो नक्षत्राणामुद्यंस्तेजोऽस्याददे एवा स्त्रीणां च पुंसां च द्विषतां वर्च आ ददे ।
यावन्तो मा सपत्नानामायन्तं प्रतिपश्यथ ।

उद्यन्तसूर्ये इव सुप्तानां द्विषतां वर्च आ ददे २ ६१८

॥ १६७ ॥ (अथर्व० १९।१७।५) अतिजगती ।

सूर्यो मा द्यावापृथिवीभ्यां प्रतीच्या दिशः पातु तस्मिन् क्रमे तस्मिच्छूये तां पुरं प्रैमि ।
स मा रक्षतु स मा गोपायतु तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा ५ ६१९

॥ १६८ ॥ (अथर्व० १९।१८।५) सम्राडाचर्यनुष्टुप् ।

सूर्य ते द्यावापृथिवीवन्तमृच्छन्तु । ये माघायव प्रतीच्या दिशोऽभिदासात् ५ ६२०

॥ १६९ ॥ (अथर्व० १९।१९।३) भुरिगृहती ।

सूर्यो दिवोदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः ।

तामा विंशत तां प्र विंशत सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु ३ ६२१

॥ १७० ॥ (अथर्व० १९।२३।२४) दैवी पङ्क्तिः ।

सूर्याभ्यां स्वाहा २४ ६२२

॥ १७१ ॥ (अथर्व० २।३६।५)

(६२३) पतिवेदनः । अनुष्टुप् ।

भगस्य नावमा रोह पूर्णामनुपदस्वतीम् । तथोपप्रतारय यो वरः प्रतिक्राम्यः ५ ६२३

॥ १७२ ॥ (अथर्व० ४।४०।७)

(६२४) शुक्रः । त्रिष्टुप् ।

य उपरिष्टाज्जुह्वति जातवेद ऊर्ध्वायां दिशोऽभिदासन्त्यस्मान् ।

सूर्यमृत्वा ते परांश्चो व्यथन्तां प्रत्यगैनान् प्रतिसुरेणं हन्मि ७ ६२४

॥ १७३ ॥ (अथर्व० ६।५२।१)

(६२५) भागलिः । अनुष्टुप् ।

उत्सूर्यो दिव एति पुरो रक्षांसि निजूर्वेन् ।

आदित्यः पर्वतेभ्यो विश्वदृष्टो अदृष्टहा १ ६२५

[सूर्य-देवता ।

[६१६-६३२]

॥ १७४ ॥ (अथर्व० १६।९।३-४)

(६२६-२७) यमः । ३ सास्त्री पङ्क्तिः, ४ परोष्णिक् ।

अग्नम् स्वः स्वर्गिगन्म सं सूर्यस्य ज्योतिषागन्म

३

वस्योभूयाय वसुमान् यज्ञो वसु वंशिषीय वसुमान् भूयासं वसु मयि धेहि

४

६२७

॥ १७५ ॥ (साम० ४५८)

(६२८) गौराङ्गिरसः । अतिजगती (अष्टिर्वा) ।

अयं सहस्रमानवो दशः कवीनां मतिज्योतिर्विधर्म ।

ब्रह्मः समीचीरुषसः समैरयदरेपसः । सचेतसः स्वसरे मन्थुमन्तश्चिता गोः

२

६२८

॥ १७६ ॥ (साम० १७९०-९२) × सुकक्ष आङ्गिरसः । गायत्री ।

सूर्य-सहचारी देवगणः ।

(१) सूर्यः पर्जन्याग्नयो वा, सरस्वान् सूर्यो वा ।

॥ १७७ ॥ (ऋ० १।१६४।५१-५२)

(६२९-३०) दीर्घतमा औचथ्यः । ५१ अनुष्टुप्, ५२ त्रिष्टुप् ।

समानमेतदुदकमुच्चैत्यव चाहभिः ।

भूमिं पर्जन्या जिन्वन्ति दिवं जिन्वन्त्यग्नयः

५१

दिव्यं सुपर्णं वायुसं बृहन्तमपां गर्भं दर्शतमोषधीनाम् ।

अभीपतो वृष्टिर्मिस्तुर्षयन्तं सरस्वन्तमवसे जोहवीमि

५२

६३०

(२) सूर्यमित्रावरुणाः ।

॥ १७८ ॥ (ऋ० ७।६३।५)

(६३१) मैत्रावरुणिवसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

यत्रा चक्रुर्मृतां गातुमस्मै श्येनो न दीयन्नन्वेति पार्थः ।

प्रति वां सूर उदिते विधेम नमोभिर्मित्रावरुणोत हव्यैः

५

६३१

(३) सूर्याविवाहः ।

॥ १७९ ॥ (ऋ० १०।८५।६-१६)

(६३२-५८) सावित्री सूर्या ऋषिका । अनुष्टुप्, १४ त्रिष्टुप् ।

रैभ्यासीदनुदेयी नाराशंसी न्योचनी ।

सूर्याया मद्रमिद् वासो गार्थयैति परिष्कृतम्

६

६३२

* [इन्द्रः] २४६०-२४६२ ।

चित्तिरा उपबर्हेणं चक्षुरा अभ्यञ्जनम् ।	
द्यौर्भूमिः कोश आसीद् यदयात् सूर्या पतिम्	७
स्तोमा आसन् प्रतिधयः कुरीरं छन्द ओपशः ।	
सूर्याया अश्विना वरा ऽग्निरासीत् पुरोगवः	८
सोमो वधूयुरभव दुश्विनास्तामुभा वरा ।	
सूर्या यत् पत्ये शंसन्ती मनसा सविताददात्	९ ६३५
मनो अस्या अन आसीद् द्यौरासीदुत च्छदिः ।	
शुक्रावनद्वाहावास्तां यदयात् सूर्या गृहम्	१०
ऋक्सामाभ्यामभिहितौ गावौ ते सामनावितः ।	
श्रोत्रं ते चक्रे आस्तां दिवि पन्थाश्चराचरः	११
शुचीं ते चक्रे यात्या व्यानो अक्ष आहतः ।	
अनो मनस्सयं सूर्या ऽऽरोहत् प्रयती पतिम्	१२
सूर्याया वहतुः प्रागात् सविता यमवासृजत् ।	
अघासु हन्यन्ते गावो ऽर्जुन्योः पर्युह्यते	१३
यदश्विना पुच्छमानावयाते त्रिचक्रेण वहतुं सूर्यायाः ।	
विश्वे देवा अनु तद् वामजानन् पुत्रः पितराववृणीत पूषा	१४ ६४०
यदयात् शुभस्पती वरेयं सूर्यामुप । कैकं चक्रं वामासीत् कं देष्टार्यं तस्थयुः	१५
द्वे ते चक्रे सूर्ये ब्रह्माणं ऋतुथा विदुः ।	
अथैकं चक्रं यद् गृहा तदद्धातय इद् विदुः	१६ ६४१

(४) सूर्या-सावित्री ।

॥ १८० ॥ (ऋ० १०।८।५।३२-४७)

अनुष्टुप्, ३४ उरोवृहती, ३६-३७, ४४ त्रिष्टुप्, ४३ जगती ।

मा विदन् परिपन्थिनो य आसीदन्ति दंपती ।	
सुगेभिर्दुर्गमतीता मप द्रान्त्वरतयः	३२
सुमङ्गलीरियं वधू रिमां समेत पश्यत ।	
सौभाग्यमस्यै दुत्वाया ऽथास्तं वि परेतन	३३
तृष्टमेतत् कटुकमेत दपाष्ठवद् विषवन्नैतदत्तवे ।	
सूर्या यो ब्रह्मा विद्यात् स इद् बाधूयमर्हति	३४ ६४५

सूर्य-देवता ।

अध्यायः ६३३-६५८ ।

७

आशसनं विशसनं—मर्थो अधिविकर्तनम् ।

सूर्यायाः पश्य रूपाणि तानि ब्रह्मा तु शुन्धति

३५

गुण्यामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथासः ।

८

भगो अर्यमा संविता पुरंधि—मह्यं त्वादुर्गाहिपत्याय देवाः

३६

तां पृषञ्छिवतमामेरयस्व यस्यां बीजं मनुष्याश्च वपन्ति ।

९

या न ऊरू उशती विश्रयाति यस्यामुशन्तः ग्रहराम शेपम्

३७

तुभ्यमग्रे पर्यवहन्तसूर्या वहतुना सह ।

१०

पुनः पतिभ्यो जायां दा अग्रे प्रजया सह

३८

पुनः पत्नीमग्निरदा—दायुषा सह वर्चसा ।

११

दीर्घायुरस्या यः पति—जीवाति शरदः शतम्

३९ ६५०

१२

सोमः प्रथमो विविदे गन्धर्वो विविदु उत्तरः ।

तृतीयो अग्निष्टे पति—स्तुरीयस्ते मनुष्यजाः

४०

सोमो ददद् गन्धर्वाय गन्धर्वो ददद् अग्रे ।

१३

रयि च पुत्रांश्चादा—दुग्धिर्मह्यमर्थो इमाम्

४१

१४

इहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्रुतम् ।

१५

क्रीळन्तौ पुत्रैर्नमृभि—मोदमानौ स्वे गृहे

४२

१६

आ नः प्रजां जनयतु प्रजापति—राजरसाय समनक्त्वयमा ।

अदुर्मङ्गलीः पतिलोकमा विश शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे

४३

अधौरक्षुरपतिभ्येधि शिवा पशुभ्यः सुमनाः सुवर्चाः ।

वीरसुदेवकामा स्योना शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे

४४ ६५५

१७

इमां त्वमिन्द्र मीद्वः सुपुत्रां सुभगां कृणु ।

दशास्यां पुत्राना धेहि पतिमेकादशं कृधि ।

४५

सम्राज्ञी श्वशुरे भव सम्राज्ञी श्वश्वां भव ।

ननान्दरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अग्निं देवृषु

४६

समञ्जन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नो ।

सं मातरिश्वा सं धाता समु देष्टीं दधातु नो

४७ ६५८

१८

[५] सूर्य-वैश्वानरोऽग्निः ।

॥ १८१ ॥ (ऋ० १०।८।१-१९)

(६५९-७७) आङ्गिरसो मूर्धन्वान्, वामदेव्यो वा । अष्टुप् ।

हविष्पान्तमजरं स्वविदि दिविस्पृश्याहुतं जुष्टमग्नौ ।
 तस्य भर्मेणे भुवनाय देवा भर्मेणे कं स्वधया पप्रथन्त
 गीर्णं भुवनं तमसापगूळह—माविः स्वरभवज्जाते अग्नौ ।
 तस्य देवाः पृथिवी द्यौरुतापो ऽरण्यन्नोषधीः सख्ये अस्य
 देवेभिर्निषितो यज्ञियेभि—रग्निं स्तोषाप्यजरं बृहन्तम् ।
 यो भानुना पृथिवीं द्यामुतेमा—माततान रोदसी अन्तरिक्षम्
 यो होताऽऽसीत् प्रथमो देवजुष्टो यं समाञ्जन्नाज्येना वृणानाः ।
 स पतन्नीत्वरं स्या जगद्य—च्छ्वात्रमग्निरकृणो जातवेदाः
 यजातवेदो भुवनस्य मूर्ध—न्नतिष्ठो अग्रे सह रौचनेन ।
 तं त्वाहेम मतिभिर्गीभिर्कथैः स यज्ञियो अभवो रोदसिप्राः
 मूर्धा भ्रुवो भवति नक्तमग्नि—स्ततः सूर्यो जायते प्रातरुद्यन् ।
 मायामु तु यज्ञियानामेता—मपो यत् तूर्णिश्चरति प्रजानन्
 ह्येन्यो यो मेहिना समिद्धो ऽरौचत दिवियोनिर्विभावा ।
 तस्मिन्नग्नौ सूक्तवाकेन देवा हविर्विश्व आजुहवुस्तनूपाः
 सूक्तवाकं प्रथममादिदग्नि—मादिद्विरजनयन्त देवाः ।
 स एषां यज्ञो अभवत् तनूपा—स्तं द्यौर्वेदु तं पृथिवी तमापः
 यं देवासोऽजनयन्ताग्निं यस्मिन्नाजुहवुर्भुवनानि विश्वा ।
 सो अर्चिषा पृथिवीं द्यामुतेमा—मृजूयमानो अतपन्महित्वा
 स्तोमेन हि दिवि देवासो अग्नि—मजीजनच्छक्तिभी रोदसिप्राम् ।
 तमू अकृण्वन् त्रेधा भुवे कं स ओषधीः पचति विश्वरूपाः
 यदेदेनमदधुर्यज्ञियासो दिवि देवाः सूर्यमादितेयम् ।
 यदा चरिष्णू मिथुनावभूता—मादित् प्रापश्यन् भुवनानि विश्वा
 विश्वस्मा अग्निं भुवनाय देवा वैश्वानरं केतुमह्नामकृण्वन् ।
 आ यस्ततानोषसो विभाती—रपो ऊर्णोति तमो अर्चिषा यन्

१

२

३

४

५

६

७

८

९

१०

११

१२

[सूर्य-देवता ।]

वैश्वानरं कवयो यज्ञियांसो ऽग्निं देवा अजनयन्नजुर्यम् ।	
नक्षत्रं प्रत्नमग्निं चरिष्णु यक्षस्याध्यक्षं तविषं बृहन्तम्	१३
वैश्वानरं विश्वहा दीदिवीसं मन्त्रैरग्निं कविमच्छा वदामः ।	
यो महिम्ना परिवभूवोर्वी उतावस्तादुत देवः परस्तात्	१४
देवसुती अशृणवं पितृणां—महं देवानामुत मर्त्यानाम् ।	
ताम्यामिदं विश्वमेजत् समेति यदन्तरा पितरं मातरं च	१५
देव समीची विभृतश्चरन्तं शीर्षतो जातं मनसा विमृष्टम् ।	
स प्रत्यङ् विश्वा भुवनानि तस्था—वप्रयुच्छन् तरणिर्भ्राजमानः	१६
यत्रा वदेते अवरः परश्च यज्ञन्योः कतरो नौ वि वेद ।	
आ शैकुरित् संधमादुं सखायो नक्षन्त यज्ञं क इदं वि वोचत्	१७ ६७५
कथययः कति सूर्यासः कथुपासः कथुं स्त्रिदापः ।	
नोपस्पिजं वः पितरो वदामि पृच्छामि वः कवयो विद्वाने कम्	१८
यावन्मात्रमुषसो न प्रतीकं सुपण्योऽवसते मातरिश्चः ।	
तावद् दधात्युप यज्ञमायन् ब्राह्मणो होतुरवरो निषीदन्	१९ ६७७

(६) सूर्यो, हरिमा हृद्रोगश्च ।

॥ १८९ ॥ [दै० (आयुर्वेद०) ४८९-९२ मन्त्राः द्रष्टव्याः ।]

(७) सूर्यः प्रजापतिः ।

॥ १८३ ॥ [दै० (आयुर्वेद०) १३३२-३३ मन्त्रौ द्रष्टव्यौ ।]

(८) सूर्याचन्द्रमसौ ।

॥ १८४ ॥ (अथर्व० ६।८३।१) ×

(६७८) भगः । अनुष्टुप् ।

अपचितः प्र पतत सुपणो वसतेरिव ।

सूर्यः कृणोतु भेषजं चन्द्रमा वोऽप्योच्छतु

१ ६७८

(६७९-८४) अथर्वा । त्रिष्टुप्, ३ अनुष्टुप्, ४ आस्तारपङ्क्तिः, ५ खराडास्तारपङ्क्तिः ।

पूर्वापरं चरतो माययैतौ शिशु क्रीडन्तौ परि यातोऽर्णवम् ।

विश्वान्यो भुवना विचष्ट ऋतूरन्यो विदधंजायसे नवः

१ ६७९

+ दै० [आयुर्वेद०] ५१३ । × ऋ० १०।८५।१८-१९; अथर्व० १३।२।११; १४।१।२३-२४ ।

नवोनवो भवसि जायमानोऽह्नां केतुरुषसामेभ्यग्रम् ।
 भागं देवेभ्यो वि दधास्यायन् प्र चन्द्रमस्तिरसे दीर्घमायुः
 सोमस्यांशो युधां पतेऽनूनो नाम वा असि ।
 अनूनं दर्श मा कृधि प्रजया च धनेन च
 दुर्शोऽसि दर्शतोऽसि समग्रोऽसि समन्तः ।
 समग्रः समन्तो भूयासं गोभिरश्वैः प्रजया पशुभिर्गृहैर्धनेन
 योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तस्य त्वं प्राणेनाप्यायस्व ।
 आ वयं प्याशिषीमहि गोभिरश्वैः प्रजया पशुभिर्गृहैर्धनेन
 यं देवा अंशुमाप्याययन्ति यमक्षितमक्षिता भक्षयन्ति ।
 तेनास्मानिन्द्रो वरुणो बृहस्पतिराप्याययन्तु भुवनस्य गोपाः

(९) सूर्यः आपश्च ।

॥ १८६ ॥ (अथर्व० ७।१०७।१)

(६८५) भृगुः । अनुष्टुप् ।

अव दिवस्तायन्ति सप्त सूर्यस्य रश्मयः ।

आपः समुद्रिया धारास्तास्ते शल्यमसिससन्

(१०) सूर्यः गौः ।

॥ १८७ ॥ (अथर्व० २०।४८।१-६)

(६८६-९१) खिलम्, ४-६ सर्पराज्ञी । गायत्री ।

अभि त्वा वर्चसा गिरः सिञ्चन्तीराचरण्यवः । अभि वत्सं न धेनवं
 ता अर्षन्ति शुभ्रियः पृञ्चन्तीर्वर्चसा ग्रियः । जातं जात्रीर्यथा हृदा
 वज्रापवसाभ्यः कीर्तिर्ग्रियमाणमावहन् । मह्यमायुर्धृतं पर्यः
 आयं गौः पृश्निरक्रीदसदन्मातरं पुरः । पितरं च प्रयन्तस्वः
 अन्तश्चरति रोचना अस्य प्राणादपानतः । व्यंख्यन्महिषः स्वः
 त्रिशद्वामा वि राजति वाक् पतङ्गो अशिथ्रियत् । प्रति वस्तोरहर्द्युभिः

[सूर्य-देवता । पृष्ठः ६८०-६९८]

(६) त्वष्टा, धाता, पूषा, भगः, अर्यमा ।

[१] त्वष्टा । *

॥ १८८ ॥ (ऋ० १०।१८।६)

(६९२) संकुसुको यामायनः । त्रिष्टुप् ।

आ रोहतायुर्जरसं वृणाना अनुपूर्वं यतमाना यतिष्ठ ।

इह त्वष्टा सुजनिमा सजोषा दीर्घमायुः करति जीवसे वः

६ ६९२

॥ १८९ ॥ [६९३-९७] (वा० य० २।२४) ×

सं वर्चसा पर्यसा सं तनूभिरगन्महि मनसा सः शिवेन ।

त्वष्टा सुदत्रो विदधातु रायोऽनुमार्ष्टु तन्वो यद्विलिष्टम्

२४ ६९३

॥ १९० ॥ (वा० य० ६।७)

उपावीरस्युप देवान् दैवीर्विशः प्रागुरुशिजो वह्निमान् ।

देव त्वष्टुर्वसु रम हव्या ते स्वदन्ताम्

७ ६९४

॥ १९१ ॥ (वा० य० ८।१७) +

धाता रतिः संवितेदं जुषन्तां प्रजापतिर्निधिपा देवोऽग्निः ।

त्वष्टा विष्णुः प्रजयां सः शरणा यजमानाय द्रविणं दधातु स्वाहा

१७ ६९५

॥ १९२ ॥ (वा० य० २०।४४)

त्वष्टा दधच्छुष्ममिन्द्राय वृष्णेऽपाकोऽचिष्टुर्यशसे पुरुणि ।

वृषा यजन् वृषणं भूरिरेता मूर्धन् यज्ञस्य समनक्तु देवान्

४४ ६९६

॥ १०३ ॥ (वा० य० २९।९)

त्वष्टा वीरं देवकामं जजान त्वष्टुरवी जायत आशुरश्वः ।

त्वष्टेदं विश्वं भुवनं जजान ब्रह्मोः कर्तारमिह यक्षि होतः

९ ६९७

॥ १९४ ॥ (अथर्व० ३।३१।५)

(६९८-९९) ब्रह्मा । विराट् प्रस्तारपङ्क्तिः ।

त्वष्टा दुहित्रे वहतुं युनक्तीतीदं विश्वं भुवनं वि याति ।

व्यहं सर्वेण पाप्मना वि यक्षमेण समायुषा

५ ६९८

* दे० [अग्निः (आप्री सूक्तानि)] १९१५, १९२७, १९३२, १९५०, १९६१, १९७१, १९८९, २०००, २०११, २०२२, २०३४, २०४५, २०५७, २०६९, २०८१, २०९२, २१०३, २११४, २१२६, २१३८ ।

× वा० य० ८।१४, १६; अथर्व० ६।५३।३ (पाठभेदेन) । + अथर्व० ७।१७।४ ।

८ [दे० अदितिः०]

(अथर्व० ५।२६।८) द्विपदा प्राजापत्या बृहती ।

त्वष्टा युनक्तु बहुधा नु रूपा अस्मिन् युजे सुयुजः स्वाहा

॥ १९५ ॥ (अथर्व० ६।५२।३)

(७००) बृहच्छुक्रः । त्रिष्टुप् ।

सं वर्चसा पर्यसा सं तनूभिरगन्महि मनसा सं शिवेन ।

त्वष्टा नो अत्र वरीयः कृणोत्वन्तु नो मार्षु तन्वोऽयं यद् विरिष्टम्

॥ १९६ ॥ (अथर्व० ६।७८।३)

(७०१-२) अथर्वा । अनुष्टुप् ।

त्वष्टा जायामजनयत् त्वष्टास्यै त्वां पतिम् ।

त्वष्टा सहस्रमार्युषि दीर्घमार्युः कृणोतु वाम्

॥ १९७ ॥ (अथर्व० ६।८१।३)

यं परिहस्तमविभरदितिः पुत्रकाम्या ।

त्वष्टा तमस्या आ बभ्राद् यथा पुत्रं जनादिति

त्वष्ट-सहचारी देवगणः ।

(१) त्वष्टा शुक्रश्च ।

॥ १९८ ॥ (ऋ० २।३६।३)

(७०३) गृत्समद (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । जगती ।

अमेव नः सुहवा आ हि गन्तं नि बर्हिषि सदतना रणिष्टन ।

अथा मन्दस्व जुजुषाणो अन्धसस्त्वष्टदेवेभिर्जनिभिः सुमद्गणः

(२) त्वष्टा, पर्जन्यः, ब्रह्मणस्पतिः, अदितिः ।

॥ १९९ ॥ (अथर्व० ६।४।१)

(७०४) अथर्वा । पथ्याबृहती ।

त्वष्टा मे दैव्यं वचः पर्जन्यो ब्रह्मणस्पतिः ।

पुत्रैर्भ्रातृभिरदितिर्नु पातु नो दुष्टं त्रायमाणं सहः

[२] धाता ।

॥ २०० ॥ (ऋ० १०।१८।५)

(७०५) संकुसुको यामायनः । त्रिष्टुप् ।

यथाहान्यनुपूर्वं भवन्ति यथं कृतव कृतभिर्यन्ति साधु ।

यथा न पूर्वमपरो जहात्येवा धातरार्युषि कल्पयैषाम्

॥ २०१ ॥ (अथर्व० १३।४।३)

(७०६) ब्रह्मा । प्राजापत्याऽनुष्टुप् ।

स धाता स विधर्ता स वायुर्नभ उच्छ्रितम् ।

रश्मिभिर्नभ आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः

३ ७०६

॥ २०२ ॥ (अथर्व० १८।३।१६)

(७०७-१०) । अथर्वा । जगती ।

धाता मा निर्ऋत्या दक्षिणाया दिशः पातु बाहुच्युता पृथिवी धार्मिवोपरि ।

लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ

२६ ७०७

धातु-सहचारी-देवगणः ।

(१) धाता, सविता, इन्द्रः, त्वष्टा, अदितिः ।

॥ ३०३ ॥ (अथर्व० ३।८।२)

धाता रातिः सवितेदं जुषन्तामिन्द्रस्त्वष्टा प्रति हर्यन्तु मे वचः ।

हुवे देवीमदितिं शरपुत्रां सजातानां मध्यमेष्टा यथासानि

२ ७०८

(२) धाताविधातारौ, ऋतवः ।

॥ २०४ ॥ (अथर्व० ३।१०।१०)

ऋतम्यद्धारतवेभ्यो माद्भ्यः संवत्सरेभ्यः ।

धात्रे विधात्रे समृधे भूतस्य पतये यजे

१० ७०९

(३) धाता, विधाता, सविता, आदित्याः, रुद्राः, अश्विनौ ।

॥ २०५ ॥ (अथर्व० ५।३।९)

धाता विधाता भुवनस्य यस्पतिर्देवः सविताभिमातिषाहः ।

आदित्या रुद्रा अश्विनोभा देवाः पान्तु यजमानं निर्ऋथात्

९ ७१०

(४) धाता, सविता ।

॥ २०६ ॥ (अथर्व० ७।१७।१-३)

(७११-१३) भृगुः । १-२ गायत्री, २ त्रिष्टुप् ।

धाता दधातु नो रयिमीशानो जगतस्पतिः । स नः पूर्णेन यच्छतु

१

धाता दधातु दाशुषे प्राची जीवातुमक्षिताम् ।

क्यं देवस्य धीमहि सुमति विश्वराधसः

२ ७१२

धाता विश्वा वार्या दधातु प्रजाकामाय दाशुषे दुरोणे ।
तस्मै देवा अमृतं सं व्ययन्तु विश्वे देवा अदितिः सजोषाः

३ ७१३

(५) सविता, धाता, पूषा, त्वष्टा ।

॥ २०७ ॥ (अथर्व० ११।६।३)

(७१४) शन्तातिः । अनुष्टुप् ।

ब्रूमो देवं सवितारं धातारमुत पूषणम् । त्वष्टारमग्रियं ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

३ ७१४

[३] पूषा ।

॥ २०८ ॥ (ऋ० १।२३।३३-१५)

(७१५-१७) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।

आ पूषञ्चित्रवर्हिषमाघृणे धरुणं दिवः । आजानष्टं यथा पशुम्
पूषा राजानमाघृणि रपंगूळहं गुहां हितम् । अविन्दच्चित्रवर्हिषम्
उतो स मह्यमिन्दुभिः षड्युक्तां अनुसेषिधत् । गोभिर्यवं न चर्कषत्

१३ ७१५

१४

१५ ७१७

॥ २०९ ॥ (ऋ० १।४१।१-१०)

(७१८-२७) कण्वो घौरः । गायत्री ।

सं पूषन्नध्वनस्तिर व्यंहो विमुचो नपात् । सक्ष्वा देव प्र णस्पुरः
यो नः पूषन्नघो वृको दुःशेवं आदिदेशति । अप स्म तं पृथो जहि
अप त्यं परिपन्थिनं मुषीवाणं हुरश्चितम् । दूरमग्निं सुतेरंज
त्वं तस्य द्रयाविनो ऽघशंसस्य कस्य चित् । पदाभि तिष्ठ तपुषिम्
आ तत् तै दस मन्तुमः पूषन्नवो वृणीमहे । येन पितृनचौदयः
अथा नो विश्वसौभग हिरण्यवाशीमत्तम । धनानि सुपणां कृधि
अति नः सश्वतो नय सुगा नः सुपथां कृणु । पूषन्निह क्रतुं विदः
अभि सूयवसं नय न नवज्वारो अध्वने । पूषन्निह क्रतुं विदः
शग्धि पूर्धि प्र यंसि च शिशिहि प्रास्युदरम् । पूषन्निह क्रतुं विदः
न पूषणं मेथामसि सुक्तरभि गृणीमसि । वध्वनि दुस्ममीमहे

१

२

३ ७१०

४

५

६

७

८ ७१२

९

१० ७१७

॥ २१० ॥ (ऋ० १।१३।१-४)

(७२८-३१) परुच्छेपो दैवोदासिः । अत्यष्टिः ।

प्रप्र पूषणस्तुविजातस्य शस्यते महित्वमस्य तवसो न तन्दते ।
अर्चामि सुमन्यन्नहमन्त्युतिं मयोभुवम् ।
विश्वस्य यो मन आयुयुवे मुखो देव आयुयुवे मुखः

१ ७१८

ताः पूषा-देवताः ।

प्र हि त्वा पूषन्नजिरं न यामनि स्तोमैभिः कृण्व ऋणवो यथा मृध
उष्ट्रो न पीपरो मृधः ।

हुवे यत् त्वा मयोभुवें देवं सख्याय मर्त्यैः ।

अस्मार्कमाङ्गुषान् द्युम्निनस्कृधि वाजेषु द्युम्निनस्कृधि

यस्य ते पूषन्तसख्ये विपन्यवः कृत्वा चित् सन्तोऽवसा बुभुजिर

इति कृत्वा बुभुजिरे ।

तामनु त्वा नवीयसीं नियुतं राय ईमहे ।

अहैलमान उरुशंस सरीं भव वाजेवाजे सरीं भव

अस्या ऊ पु ण उप सातये भुवो ऽहैलमानो ररिवाँ अजाश्च श्रवस्यतामजाश्च ।

ओ पु त्वा ववृतीमहि स्तोमैभिर्दस्म साधुभिः ।

नहि त्वा पूषन्तिमन्य आघृणे न ते सख्यमपहृवे

॥ २११ ॥ (ऋ० ३।६२।७-९)

(७३२-३४) गायत्रीं विश्वामित्रः । गायत्री ।

इयं ते पूषन्नाघृणे सुष्टुतिर्देव नव्यसी । अस्माभिस्तुभ्यं शस्यते

तां जुषस्व गिरं मम वाजयन्तीमवा धियम् । वधूयुरिव योषणाम्

यो विश्वामि विपश्यति भुवनां सं च पश्यति । स नः पूषाविता भुवत्

॥ २१२ ॥ (ऋ० ६।४८।१६-१९)

(७३५-३८) शंयुर्वर्हस्पत्यः (तृणपाणिः) १६ ककुप्, १७ सतोवृहती, १८ पुर उष्णिक्, १९ वृहती ।

आ मां पूषन्नुपे द्रव शंसिषं नु ते अपिकुर्ण आघृणे । अघा अर्यो अरातयः १६ ७३५

मा काकम्बीरमुद् वृहो वनस्पति—मशस्तीर्वि हि नीनशः ।

मोत सरो अह एवा चन ग्रीवा आदधते वेः १७

द्वैरिव तेऽवुकमस्तु सख्यम् । अच्छिद्रस्य दधन्वतः सुपूर्णस्य दधन्वतः १८

पुरो हि मर्त्यैरसि समो देवैरुत श्रिया ।

अभि ख्यः पूषन् पृतनासु नस्त्व—मवां नूनं यथा पुरा १९ ७३८

॥ २१३ ॥ (ऋ० ६।५३।१-१०)

(७३९-७७४) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । गायत्री, ८ अनुष्टुप् ।

व्यसु त्वा पथस्पते रथं न वाजसातये । धिये पूषन्नयुजमहि

अभि नो नर्य वसु वीरं प्रयतदक्षिणम् । वामं गृहपतिं नय

अदित्सन्तं चिदाघृणे पूषन् दानाय चोदय । पणेश्चिद् वि भ्रंदा मनः ३
 वि पृथो वाजसातये चिनुहि वि मृधो जहि । सार्धन्तामुग्र नो धियः ४
 परि तन्धि पणीना—मारया हृदया कवे । अथेमस्मभ्यं रन्धय ५
 वि पूषन्मारया तुद पणेरिच्छ हृदि प्रियम् । अथेमस्मभ्यं रन्धय ६
 आ रिख किकिरा कृणु पणीनां हृदया कवे । अथेमस्मभ्यं रन्धय ७ ७४५
 यां पूषन् ब्रह्मचोदनी—मारां विभर्ष्याघृणे ।
 तया समस्य हृदय—मा रिख किकिरा कृणु ८
 या ते अष्टा गोओपशा ऽऽघृणे पशुसाधनी । तस्यास्ते सुस्रमीमहे ९
 उत नो गोषणिं धियं—मश्वसां वाजसामुत । नृवत् कृणुहि वीतये १० ७४८

॥ २१४ ॥ (क्र० ६।५४।१-१०) + गायत्री ।

सं पूषन् विदुषां नय यो अञ्जसानुशासति । य एवेदमिति ब्रवत् १
 समु पूष्णा गमेमहि यो गृह्णां अभिशासति । इम एवेति च ब्रवत् २ ७५०
 पूष्णश्चक्रं न रिष्यति न कोशोऽव पद्यते । नो अस्य व्यथते पविः ३
 यो अस्मै हविषाविधु—न्न तं पूषाऽपि मृष्यते । प्रथमो विन्दते वसु ४
 पूषा गा अन्वेतु नः पूषा रक्षत्वर्वतः । पूषा वाजं सनोतु नः ५
 पूषन्ननु प्र गा इहि यजमानस्य सुन्वतः । अस्माकं स्तुवतामुत ६
 मार्किर्नेशन्मार्की रिषन्मार्की सं शारि केवटे । अथारिष्टाभिरा गहि ७ ७५५
 शृण्वन्तं पूषणं वय—मिर्यमनष्टवेदसम् । ईशानं राय ईमहे ८
 पूषन् तव व्रते वयं न रिष्येम कदा चन । स्तोतारस्त इह स्मसि ९
 परि पूषा परस्ता—द्वस्तं दधातु दक्षिणम् । पुनर्नो नष्टमाजतु १० ७५८

॥ २१५ ॥ (क्र० ६।५५।१-६)

एहि वां विमुचो नपा—दाघृणे सं संचावहै । रथीर्कृतस्य नो भव १
 रथीर्तमं कपर्दिनु—मीशानं राधसो महः । रायः सखायमीमहे २ ७६०
 रायो धारास्याघृणे वसो राशिरंजाश्च । धीवतोधीवतः सखा ३
 पूषणं न्वजाश्च—मुप स्तोषाम वाजिनम् । स्वसुर्यो जार उच्यते ४
 मातुर्दिधिषुमब्रवं स्वसुर्जारः शृणोतु नः । भ्रातेन्द्रस्य सखा मम ५
 आजासः पूषणं रथे निशृम्भास्ते जनश्रियम् । देवं वहन्तु विभ्रतः ६ ७६४

+ क्र० ६, ५४, ९-१०=वा० य० ३४, ४१; अथर्व० ७, ९, ३-४

[पूषा-देवता ।

[७७१-७७८]

॥ २१६ ॥ (ऋ० ६।५६।१-६) गायत्री, ६ अनुष्टुप् ।

य एनमादिदेशति करम्भादिति पूषणम् । न तेन देव आदिशे १ ७६५
 उत वा स रथीतमः सख्या सत्पतिर्युजा । इन्द्रो वृत्राणि जिघ्रते २
 उतादः परुषे गवि सूरश्चक्रं हिरण्ययम् । न्यैरयद् रथीतमः ३
 यद्य त्वा पुरुष्टुत ब्रवाम दस मन्तुमः । तत् सु नो मन्म साधय ४
 इमं च नो गवेषणं सातये सीषधो गुणम् । आरात् पूषन्नसि श्रुतः ५
 आ ते स्वस्तिमीमह आरेअग्रामुपावसुम् । अद्या च सर्वतातये श्वश्च सर्वतातये ६ ७७०

॥ २१७ ॥ (ऋ० ६।५८।१-४) × त्रिष्टुप्, २ जगती ।

गुक्रं ते अन्यद् यजतं ते अन्यद् विष्टुरूपे अहनी द्यौरिवासि ।
 विश्वा हि माया अवासि स्वधावो भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु १
 अजाश्वः पशुपा वाजपस्त्यो धियंजिन्वो भुवने विश्वे अर्पितः ।
 अष्टा पूषा शिथिरामुद्धरीवृजत् संचक्षाणो भुवना देव ईयते २
 यास्ते पूषन्नावो अन्तः समुद्रे हिरण्ययीरन्तरिक्षे चरन्ति ।
 तामिर्यासि दूत्यां सूर्यस्य कामेन कृतं श्रवं इच्छमानः ३
 पूषा सुवन्धुर्दिव आ पृथिव्या इळस्पतिर्मघवा दुस्सवर्चाः ।
 यं देवासो अददुः सूर्यायै कामेन कृतं तवसं स्वश्चम् ४ ७७४

॥ २१८ ॥ (ऋ० १०।१७।३-६) +

(७७५-७८) देवश्रवा यामायनः । त्रिष्टुप् ।

पूषा त्वेतश्चयावयतु प्र विद्वा ननष्टपशुर्भुवनस्य गोपाः ।
 स त्वैतेभ्यः परि ददत् पितृभ्यो ऽग्निदेवेभ्यः सुविदुत्रियेभ्यः ३ ७७५
 आयुर्विश्वायुः परि पासति त्वा पूषा त्वा पातु प्रपथे पुरस्तात् ।
 यत्रासते सुकृतो यत्र ते ययुस्तत्र त्वा देवः संविता दधातु ४
 पूषेमा आशा अनु वेदु सर्वाः सो अस्मां अभयतमेन नेषत् ।
 स्वस्तिदा आर्घुणिः सर्ववीरो ऽप्रयुच्छन् पुर एतु प्रजानन् ५
 प्रपथे पथामजनिष्ट पूषा प्रपथे दिवः प्रपथे पृथिव्याः ।
 उमे अमि प्रियतमे सधस्थे आ च परा च चरति प्रजानन् ६ ७७८

× ऋ० ६, ५८, १ = सा० ७५ ।

+ ऋ० १०, १७, ५-६; ३-४ = अथर्व० ७, ९, १-२; १८, २, ५४-५५ ।

॥ २१९ ॥ (ऋ० १०।२६।१-९)

(७७९-८७) विमद पेन्द्रः प्राजापत्यो वा, वासुको वसुक्रदा । अनुष्टुप्; १,४ उष्णिक् ।
 प्र ह्यच्छा मनीषाः स्पर्हा यन्ति नियुतः । प्र दुस्सा नियुद्रथः पूषा अविष्टु माहिनः १
 यस्य त्यन्महित्वं वाताप्यमयं जनः । विप्र आ वैसद्वीतिभिश्चिकेत सुष्टुतीनाम् २ ७८०
 स वैद सुष्टुतीनामिन्दुर्न पूषा वृषा । अभि प्सुरः शुषायति व्रजं न आ शुषायति ३
 मंसीमहि त्वा वयमस्माकं देव पूषन् । मतीनां च साधनं विप्राणां चाध्वम् ४
 प्रत्यर्धिर्यज्ञानां मश्वहयो रथानाम् । ऋषिः स यो मनुर्हितो विप्रस्य यावयत्सखः ५
 आधीषमाणायाः पतिः शुचायाश्च शुचस्य च ।

वासोवायोऽवीनामा वासोसि मर्जत् ६
 इनो वाजानां पतिरिनः पुष्टीनां सखा । प्र इमश्रु हर्यतो दूधोद् वि वृथा यो अदाभ्यः ७ ७८१
 आ ते रथस्य पूषन्नजा धुरं ववृत्युः । विश्वस्यार्थिनः सखा सनोजा अनपच्युतः ८
 अस्माकमूर्जा रथं पूषा अविष्टु माहिनः । सुवद् वाजानां वृध इमं नः शृण्वद्ववम् ९ ७८२

॥ २२० ॥ [७८८] (वा० य० ३४।४२) ×

पथस्पथः परिपति वचस्या कामेन कृतो अभ्यानङ्कम् ।
 स नो रासच्छुरुषश्चन्द्राग्रा धिर्यधियः सीषधाति प्र पूषा । ४२ ७८८

॥ २२१ ॥ [दै० (आयुर्वेद० १७६५-६७) मन्त्राः द्रष्टव्याः ।]

पूषा-सहचारी देवगणः ।

(१) मरुतः, पूषा, बृहस्पतिः, अग्निः ।

॥ २२२ ॥ (अथर्व० ७।३३।१)

(७८९) ब्रह्मा । पथ्यापङ्क्तिः ।

सं मा सिञ्चन्तु मरुतः सं पूषा सं बृहस्पतिः ।
 सं मायमग्निः सिञ्चतु प्रजया च धनेन च दीर्घमायुः कृणोत मे १ ७८९

(२) अग्निः, सोमः, पूषा ।

॥ २२३ ॥ (अथर्व० १६।९।२)

(७९०) यमः । आच्युष्णिक् ।

तदुधिराह तद् सोम आह पूषा मा धातु सुकृतस्य लोके २ ७९०

[४] भगः ।

॥ २२४ ॥ (ऋ० १।२४।५)

(७९१) आजीगर्तिः शुनःशेषः, स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः । गायत्री ।

भगभक्तस्य ते वयं—मुदंशेम तवावसा । मूर्धानं राय आरभे

५ ७९१

॥ २२५ ॥ (ऋ० ७।३८।६ उत्तरार्धः)

(७९२-९७) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

भगमुग्रोऽवसे जोहवीति भगमुग्रो अध याति रत्नम्

६ ७९२

॥ २२६ ॥ (ऋ० ७।४१।२-६)×

प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमर्दितेयो विधर्ता ।

आध्रश्चिद् यं मन्यमानस्तुरश्चिद् राजा चिद् यं भगं भक्षीत्याह

२

भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः ।

भग प्र णो जनय गोभिरश्चैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम

३

उतेदानीं भगवन्तः स्यामो—त प्रपित्व उत मध्ये अह्वाम् ।

उतोदिता मघवन्तस्त्र्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम

४ ७९५

भग एव भगवां अस्तु देवा—स्तेन वयं भगवन्तः स्याम ।

तं त्वा भग सर्वं इजोहवीति स नो भग पुरेता भवेह

५

समध्वरायोपसो नमन्त दधिक्रावैव शुचये पदार्य ।

अर्वाचीनं वसुविदं भगं नो रथमिवाश्वा वाजिन आ वहन्तु

६ ७९७

॥ २२७ ॥ (अथर्व० २।३०।५)

(७९८) प्रजापतिः । अनुष्टुप् ।

एयमगन् पतिकामा जर्निकामोऽहमार्गमम् ।

अश्वः कर्निकदुद् यथा भगेनाहं सहागमम्

५ ७९८

॥ २२८ ॥ (अथर्व० २।३६।७)

(७९९) पतिवेदनः । अनुष्टुप् ।

इदं हिरण्यं गुल्गुल्वयमौक्षो अथो भगः । एते पतिभ्यस्त्वामदुः प्रतिकामाय वेत्तवे ७ ७९९

॥ २२९ ॥ (अथर्व० ५।२६।९)

(८००) ब्रह्मा । [एकावसाना] त्रिपदा पिपीलिकमध्या पुरउष्णिक् ।

मगो युनक्त्वाशिषो न्वंसा अस्मिन् यज्ञे प्रविद्वान् युनक्तु सुयुजः स्वाहा

९ ८००

× वा० य० ३४, ३५-३९; अथर्व० ३, १६, २-६

१ दे. [अदितिः]

॥ २३० ॥ (अथर्व० ६।१२९।१-३)

(८०१-३) अथर्वाङ्गिराः । अनुष्टुप् ।

भगेन मा शांशपेन साकमिन्द्रेण मेदिना । कृणोमि भगिनं माप द्रान्त्वरातयः १
 येन वृक्षां अभ्यभगो भगेन वर्चसा सह । तेन मा भगिनं कृण्वप द्रान्त्वरातयः २
 यो अन्धो यः पुनःसरो भगो वृक्षेष्वाहितः । तेन मा भगिनं कृण्वप द्रान्त्वरातयः ३

॥ २३१ ॥ (अथर्व० १४।१।५०-५१, ५३, ६०)

(८०४-७) सूर्या सावित्री । ५०, ५३ त्रिष्टुप्, ५१ अनुष्टुप्, ६० पराऽनुष्टुप् ।

गृह्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथासः ।

भगो अर्यमा सविता पुरंधिर्मह्यं त्वादुर्गाहपत्याय देवाः

भगस्ते हस्तमग्रहीत् सविता हस्तमग्रहीत् ।

पत्नी त्वमसि धर्मेणाहं गृहपतिस्तव

त्वष्टा वासो व्यदिधाच्छुभे कं वृहस्पतेः प्रशिषां कवीनाम् ।

तेनेमां नारीं सविता भगश्च सूर्यामिव परि धत्तां प्रजयां

भगस्ततश्च चतुरः पादान् भगस्ततश्च चत्वार्युष्णलानि ।

त्वष्टा पिपेश मध्यतोऽनु वर्धन्तसा नो अस्तु सुमङ्गली

भग-सहचारी-देवगणः ।

(१) अंशः, भगः, वरुणः, मित्रः, अर्यमा, अदितिः, मरुतः ।

॥ २३२ ॥ (अथर्व० ६।४।२)

(८०८) अथर्वा । प्रस्तारपङ्क्तिः ।

अंशो भगो वरुणो मित्रो अर्यमादितिः पान्तु मरुतः ।

अप तस्य द्वेषो गमेदभिहृतो यावयच्छत्रुमन्तितम्

(२) धाता, अर्यमा, भगः, अश्विनौ ।

॥ २३३ ॥ (अथर्व० १४।२।१३)

(८०९) सूर्या सावित्री । त्रिष्टुप् ।

शिवा नारीयमस्तुमार्गन्निमं धाता लोकमस्यै दिदेश ।

तामर्यमा भगो अश्विनोभा प्रजापतिः प्रजयां वर्धयन्तु

[५] अर्यमा ।

॥ २३४ ॥ (अथर्व० ६।६०।१-३)

(८१०-१२) अथर्वा । अनुष्टुप् ।

अर्यमा यात्यर्यमा पुरस्ताद् विषितस्तुपः । अस्या इच्छन्नगुवै पतिमुत जायामजानये १ ८१०

अश्रमदियमर्यमन्नन्यासां समनं यती । अङ्गो न्वर्यमन्नस्या अन्याः समनमार्यति २

धाता दाधार पृथिवीं धाता द्यामुत सूर्यम् ।

धाताऽस्या अगुवै पतिं दधातु प्रतिकाम्यम् ३ ८१२

॥ २३५ ॥ (अथर्व० ११।६।४)

(८१३) शन्तातिः । अनुष्टुप् ।

गन्धर्वाप्सरसो ब्रूमो अश्विना ब्रह्मणस्पतिम् ।

अर्यमा नाम यो देवस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ४ ८१३

॥ २३६ ॥ (अथर्व० १३।४।४)

(८१४-१६) ब्रह्मा । प्राजापत्याऽनुष्टुप् ।

सोऽर्यमा स वरुणः स रुद्रः स महादेवः ।

रश्मिभिर्नभ आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः ४ ८१४

अर्यमन्-सहचारी-देवगणः ।

(१) अर्यमा, पूषा, बृहस्पतिः, इन्द्रः ।

॥ २३७ ॥ (अथर्व० ३।१४।२) अनुष्टुप् ।

सं वः सृजत्वर्यमा सं पूषा सं बृहस्पतिः ।

समिन्द्रो यो धनंजयो मयि पुष्यत यद्वसु २ ८१५

(२) मित्रः, वरुणः, त्वष्टा, अर्यमा, महादेवः ।

॥ २३८ ॥ (अथर्व० ९।७।७) त्रिपदा पिपीलिकमध्या निचृद्वायत्री ।

मित्रश्च वरुणश्चांसौ त्वष्टा चार्यमा च दोषणीं महादेवो बाहू ७ ८१६

(३) अर्यमा, भगः, बृहस्पतिः, देवीः ।

॥ २३९ ॥ (अथर्व० ३।२०।३)

(८१७) वसिष्ठः । अनुष्टुप् ।

प्र णो यच्छत्वर्यमा प्र भगः प्र बृहस्पतिः ।

प्र देवीः प्रोत सूनृतां रयिं देवी दधातु मे ३ ८१७

*

(७) विष्णुः ।

॥ २४० ॥ (क्र० १।२२।१६-२१) +

(८१८-२२) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।

अतो देवा अन्वन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे । पृथिव्याः सप्त धामाभिः १६
 इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम् । समूळहमस्य पांसुरे १७
 त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः । अतो धर्माणि धारयन् १८
 विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पश्यशे । इन्द्रस्य युज्यः सखा १९
 तद् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीव चक्षुराततम् २०
 तद् विप्रांसो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते । विष्णोर्यत् परमं पदम् २१

॥ २४१ ॥ (क्र० १।१५४।१-६) *

(८२४-३७) दीर्घतमा औचथ्यः । त्रिष्टुप् ।

विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्र वोचं यः पार्थिवानि विममे रजांसि ।
 यो अस्कंभायदुत्तरं सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः १
 प्र तद् विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः ।
 यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणे ऽवधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा २
 प्र विष्णवे शूषमेतु मन्म गिरिक्षितं उरुगायाय वृष्णे ।
 य इदं दीर्घं प्रयतं सधस्थमेको विममे त्रिभिरित् पदेभिः ३
 यस्य त्री पूर्णा मधुना पदान्यक्षीयमाणा स्वधया मदन्ति ।
 य उ त्रिधातुं पृथिवीमुत द्यामेको द्वाधार भुवनानि विश्वा ४
 तदस्य प्रियमभि पार्थो अस्यां नरो यत्र देवयवो मदन्ति ।
 उरुक्रमस्य स हि बन्धुरित्था विष्णोः पदे परमे मध्वं उत्सः ५
 ता वां वास्तून्युश्मसि गर्मध्यै यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः ।
 अत्राह तदुरुगायस्य वृष्णः परमं पदमव भाति भूरि ६

॥ २४२ ॥ (क्र० १।१५५।४-६) जगती ।

तत्तदिदस्य पौंस्यं गृणीमसी नस्य त्रातुरवृकस्य मीळहुषः ।
 यः पार्थिवानि त्रिभिरिद् विगांमभिरुरु कर्मिष्टोरुगायाय जीवसे ४

+ क्र० १।२२।१७-२१ = वा० य० ५, १५; ३४, ४३-४४; ६, ४-५; १३, ३३; अथर्व. ७, २६, ४-७; सा० १२१, १६६९-७४ ।

* क्र. १।१५४।१-२, ६ = वा० य० ५, १८, २०; ६, ३; अथर्व. ७।२६।१-२, ३ (प्रथमचरणः) ।

[विष्णुदेवता । अ० ८१८-८१९]

द्वे इदं स्य क्रमणे स्वर्दशौ ऽभिख्याय मर्त्यो भुरण्यति ।
 तृतीयमस्य नकिरा दधर्षति वयश्चन पतर्यन्तः पतत्रिणः
 चतुर्भिः साकं नवति च नामभिश्चक्रं न वृत्तं व्यतीरवीविपत् ।
 बृहच्छरीरो विमिमान् क्रकभिर्धुवाकुमारः प्रत्येत्याहुवम्

॥ २४३ ॥ (ऋ० १।१५६।१-५)

भवा मित्रो न शेव्यो घृतासुतिर्विभूतद्युम्न एवया उ सप्रथाः ।
 अघा ते विष्णो विदुषा चिदध्वः स्तोमो यज्ञश्च राध्यो हविष्मता
 यः पूर्वाय वेधसे नवीयसे सुमज्जानये विष्णवे ददाशति ।
 यो जातमस्य महतो महि ब्रवत् सेदु श्रवोभिर्युज्यं चिदध्वसत
 तमु स्तोतारः पूर्वं यथा विद क्रतस्य गर्भं जनुषा पिपर्तन ।
 आस्यं जानन्तो नाम चिद् विवक्तन महस्ते विष्णो सुमतिं भजामहे
 तमस्य राजा वरुणस्तमश्चिना क्रतुं सचन्त मारुतस्य वेधसः ।
 दाधार दक्षमुत्तममहर्विदं व्रजं च विष्णुः सखिवा अपोर्णुते
 आ यो विवार्य सचथाय दैव्य इन्द्राय विष्णुः सुकृते सुकृत्तरः ।
 वेधा अजिन्वत् त्रिषधस्थ आर्यं मृतस्य भागे यजमानमभजत्

॥ २४४ ॥ (ऋ० ७।९९।१-३, ७) +

(८३८-४७) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

परो मात्रया तन्वा वृधान न ते महित्वमन्वश्नुवन्ति ।
 उभे ते विद्वा रजसी पृथिव्या विष्णो देव त्वं परमस्य वित्से
 न ते विष्णो जायमानो न जातो देव महिम्नः परमन्तमाप ।
 उदस्तश्चा नाकमुष्वं बृहन्तं दाधर्थं प्राचीं क्रकुभं पृथिव्याः
 इरावती धेनुमती हि भूतं ख्यवसिनी मनुषे दशस्या ।
 व्यस्तश्चा रोदसी विष्णवेते दाधर्थं पृथिवीमभितो मयूखैः
 वर्षत् ते विष्णवाः आ कृणोमि तन्मे जुषस्व शिपिविष्ट हव्यम् ।
 वर्षन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

+ ऋ० ७।९९।३, ७ = वा. य. ५, १६; ऋ० ७।१००।७ । दै० [इन्द्रः] ३३०३-५ ।

॥ २४५ ॥ (ऋ० ७।१००।१-६)

नू मर्तो दयते सनिष्यन् यो विष्णव उरुगायाय दाशत् ।
 प्र यः सत्राचा मनसा यजात एतावन्तं नयमाविवासात् १
 त्वं विष्णो सुमतिं विश्वजन्या मप्रयुतामेवयावो मतिं दाः ।
 पर्चो यथा नः सुवितस्य भूरे रश्वावतः पुरुश्चन्द्रस्य रायः २
 त्रिदेवः पृथिवीमेष एतां वि चक्रमे शतर्चसं महित्वा ।
 प्र विष्णुरस्तु तवसस्तवीयान् त्वेषं ह्यस्य स्थविरस्य नाम ३
 वि चक्रमे पृथिवीमेष एतां क्षेत्राय विष्णुर्मनुषे दशस्यन् ।
 ध्रुवासो अस्य कीरयो जनांस उरुक्षितिं सुजनिमा चकार ४
 प्र तत् ते अद्य शिपिविष्ट नामाऽर्यः शंसामि वयुनानि विद्वान् ।
 तं त्वा गृणामि तवसमतव्यान् क्षयन्तमस्य रजसः पराके ५
 किमिह ते विष्णो परिचक्ष्ये भूत् प्र यद् बवक्षे शिपिविष्टो अस्मि ।
 मा वर्षो असदप गूह एतद् यदन्यरूपः समिथे वभूथ ६

॥ २४६ ॥ (८४८-६०) (वा० य० १।२७,३०)

गायत्रेण त्वा छन्दसा परिगृह्णामि त्रैष्टुभेन त्वा छन्दसा परिगृह्णामि जागतेन
 त्वा छन्दसा परिगृह्णामि ।

सुक्ष्मा चासि शिवा चासि स्योना चासि सुषदा चास्यूर्जस्वती चासि पर्यस्वती च २७
 अदित्यै रास्नासि विष्णोर्वेष्पोऽस्यूर्जे त्वाऽदब्धेन त्वा चक्षुषावपश्यामि ।
 अग्नेर्जिह्वासि सुहृदेवेभ्यो धाम्ने धाम्ने मे भव यजुषे यजुषे ३०

॥ २४७ ॥ (वा० य० २।६,८,२५)

ध्रुवा असदन्नृतस्य योनौ ता विष्णो पाहि पाहि यज्ञं पाहि यज्ञपतिं पाहि मां
 यज्ञन्यम् ६

अर्द्धिघ्ना विष्णो मा त्वावक्रमिषं वसुमतीमग्ने ते च्छायामुपस्थेपं विष्णो
 स्थानमसीत इन्द्रो वीर्यमकृणोदूर्ध्वोऽध्वर आस्थात् ८
 दिवि विष्णुर्व्यक्रंस्त जागतेन च्छन्दसा ततो निर्भक्तो योऽस्मान् द्वेष्टि यं च
 वयं द्विष्मोऽन्तरिक्षे विष्णुर्व्यक्रंस्त त्रैष्टुभेन च्छन्दसा ततो निर्भक्तो
 योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः पृथिव्यां विष्णुर्व्यक्रंस्त गायत्रेण
 च्छन्दसा ततो निर्भक्तो योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः २५

॥ २४८ ॥ (वा० य० ५।१, १९, २१, २३-२५, ३८) ×

अग्नेस्तनूँसि विष्णवे त्वा सोमस्य तनूँसि विष्णवे त्वातिथेरातिथ्यमसि विष्णवे
 त्वा श्येनाय त्वा सोमभृते विष्णवे त्वाऽग्रये त्वा रायस्पोषदे विष्णवे त्वा १
 दिवो वा विष्ण उत वा पृथिव्या महो वा विष्ण उरोरन्तरिक्षात् ।

उमा हि हस्ता वसुना पूणस्वा प्र यच्छ दक्षिणादोत सव्याद् विष्णवे त्वा १९
 विष्णो रराटमसि विष्णोः श्रष्ट्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि ।

वैष्णवमसि विष्णवे त्वा २१ ८५५

रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवीभिदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे निष्ट्यो यममात्यो

निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे समानो यमसमानो निचखा-

नेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे सबन्धुर्यमसबन्धुर्निचखानेदमहं तं

वलगमुत्किरामि यं मे सजातो यमसजातो निचखानोत्कृत्यां किरामि २३

खराडसि सपत्नहा संत्रराडस्यभिमातिहा जनराडसि रक्षोहा सर्वराडस्यमित्रहा २४

रक्षोहणो वो वलगहनः प्रोक्षामि वैष्णवान् रक्षोहणो वो वलगहनोऽवनयामि

वैष्णवान् रक्षोहणो वो वलगहनोऽवस्तृणामि वैष्णवान् रक्षोहणो वां

वलगहना उप दधामि वैष्णवी रक्षोहणो वां वलगहनौ पर्युहामि वैष्णवी

वैष्णवमसि वैष्णवा स्थ २५

उरु विष्णो विक्रमस्त्रो क्षयाय नस्कृधि ।

धृतं धृतयोने पिव प्रप्र यज्ञपतिं तिर स्वाहा ३८ ८५९

॥ २४९ ॥ (वा० य० ८।१)

उपयामगृहीतोऽस्यादित्येभ्यस्तत्वा ।

विष्ण उरुगायैष ते सोमस्तः रक्षस्व मा त्वा दमन् १ ८६०

॥ २५० ॥ (अथर्व० ७।२६।१-३, ८)

विष्णोर्नु कं प्रा वोचं वीर्याणि यः पार्थिवानि विमुमे रजांसि ।

यो अस्कभायदुत्तरं सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः १

प्र तद् विष्णु स्तवते वीर्याणि मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः ।

परावत् आ जगम्यात् परस्याः ३ ८६२

× वा० य० ५।३८ = वा० य० ५, ४१; अथर्व० ७।२६।३

यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा ।
 उरु विष्णो वि क्रमस्वोरु क्षयाय नस्कृधि ।
 घृतं घृतयोने पिव प्रप्रं यज्ञपतिं तिर
 दिवो विष्ण उत वा पृथिव्या महो विष्ण उरोरन्तरिक्षात् ।
 हस्तौ पृणस्व बहुभिर्वसव्यैराप्रयच्छ दक्षिणादोत सव्यात्

॥ २५१ ॥ (अथर्व० १०।५।२५-३५)

(८६५-७५) कौशिकः । व्यवसाना षट्पदा यथाक्षरं शक्यतिशकरी ।

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा पृथिवीसंशितोऽग्निदेजाः ।
 पृथिवीमनु वि क्रमेऽहं पृथिव्यास्तं निर्भजामो योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः ।
 स मा जीवीत् तं प्राणो जहात २५ ८६५
 विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहाऽन्तरिक्षसंशितो वायुदेजाः ।
 अन्तरिक्षमनु वि क्रमेऽहमन्तरिक्षात् तं निर्भजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो० २६
 विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा द्यौसंशितः सूर्यदेजाः ।
 दिवमनु वि क्रमेऽहं दिवस्तं निर्भजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो जहात २७
 विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा दिक्संशितो मनस्तेजाः ।
 दिशोऽनु वि क्रमेऽहं दिग्भ्यस्तं निर्भजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो० २८
 विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहाऽऽशासंशितो वातदेजाः ।
 आशा अनु वि क्रमेऽहमाशाभ्यस्तं निर्भजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो० २९
 विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा ऋक्संशितः सामदेजाः ।
 ऋचोऽनु वि क्रमेऽहमृग्भ्यस्तं निर्भजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो जहात ३० ८७०
 विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा यज्ञसंशितो ब्रह्मदेजाः ।
 यज्ञमनु वि क्रमेऽहं यज्ञात् तं निर्भजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो जहात ३१
 विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहौषधीसंशितः सोमदेजाः ।
 ओषधीरनु वि क्रमेऽहमौषधीभ्यस्तं निर्भजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो० ३२
 विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहाप्सुसंशितो वरुणदेजाः ।
 अपोऽनु वि क्रमेऽहमप्सुस्तं निर्भजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो जहात ३३
 विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा कृषिसंशितोऽन्नदेजाः ।
 कृषिमनु वि क्रमेऽहं कृष्यास्तं निर्भजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो जहात ३४ ८७४

[विष्णुदेवता ।
पृ० ८६३-८८२]

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा प्राणसंशितः पुरुषतेजाः ।

प्राणमनु वि क्रमेऽहं प्राणात् तं निर्भेजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो जहात् ३५ ८७५
विष्णु-सहचारी-देवगणः ।

(१) विष्णु-त्वष्टृ-प्रजापति-धातारः ।

॥ २५२ ॥ (ऋ० १०।१८४।१) +

(८७६) त्वष्टा गर्भकर्ता, विष्णुर्वा प्राजापत्यः । अनुष्टुप् ।

विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिशतु ।

आ सिंश्चतु प्रजापति-ध्याता गर्भं दधातु ते

१ ८७६

(२) विष्णुर्वरुणश्च ।

॥ २५३ ॥ (८७७) (वा० य० ८।५२) ×

ययोरोजसा स्कभिता रजांसि वीर्येभिर्वीरतमा शविष्ठा ।

या पत्येते अप्रतीता सहोभिर्विष्णू अगन्वरुणा पूर्वहूतौ

५२ ८७७

॥ २५४ ॥ (अथर्व० ७।२५।२)

(८७८) मेघातिथिः । त्रिष्टुप् ।

यस्येदं प्रदिशि यद् विरोचते प्र चानति वि च चष्टे शचीभिः ।

पूरा देवस्य धर्मेणा सहोभिर्विष्णुमगन्वरुणं पूर्वहूतिः

२ ८७८

(८) विवस्वान् ।

॥ २५५ ॥ (८७९) (वा० य० २२।३०)

विवस्वते स्वाहा

३० ८७९

॥ २५६ ॥ (अथर्व० ६।११६।१-३) *

(८८०-८९) जाटिकायनः । जगती, २ त्रिष्टुप् ।

यद् यामं चक्रुर्निखनन्तो अग्रे कार्षीवणः अन्नविदो न विद्यया ।

वैवस्वते राजनि तज्जुहोम्यथ यज्ञियं मधुमदस्तु नोऽन्नम्

१ ८८०

वैवस्वतः कृणवद् भागधेयं मधुभागो मधुना सं सृजाति ।

मातुर्यदेन इषितं न आगन् यद् वा पितापराद्धो जिहीडे

२

यदीदं मातुर्यदि वा पितुर्नः परि भ्रातुः पुत्राच्चेतस एन आगन् ।

यार्वन्तो अस्मान् पितरः सचन्ते तेषां सर्वेषां शिवो अस्तु मन्युः

३ ८८१

* अथर्व० ५।२५।५,

× अथर्व० ७।२५।१;

* दै० [आयुर्वेद०] २०५६

१० [दै० अदितिः०]

(९) संवत्सरः कालः ।

॥ २५७ ॥ (क्र० १।१६४।४८)

(८८३) दीर्घतमा औचथ्यः । त्रिष्टुप् ।

द्वादश प्रधयश्चक्रमेकं त्रीणि नभ्यानि क उ तच्चिकेत ।
तस्मिन्त्साकं त्रिशता न शुक्लवोऽपिताः षष्टिर्न चलाचलासः

४८ ८८३

॥ २५८ ॥ [८८४-८६] (वा० य० २१।२८)

संवत्सराय स्वाहा

२८ ८८४

॥ २५९ ॥ (वा० य० २७।४५)

संवत्सरोऽसि परिवत्सरोऽसीदावत्सरोऽसीद्वत्सरोऽसि वत्सरोऽसि ।
उषसस्ते कल्पन्तामहोरात्रास्ते कल्पन्तामर्धमासास्ते कल्पन्तां मासास्ते
कल्पन्तामृतवस्ते कल्पन्तां संवत्सरस्ते कल्पताम् ।

प्रेत्या एत्यै स चाश्व प्र च सारय ।

सुपर्णचिदसि तथा देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवः सीद

४५ ८८५

॥ २६० ॥ (वा० य० ३०।१५)

संवत्सराय पर्यायिणीं परिवत्सरायाविजातामिदावत्सरायातीत्वरीमिद्वत्सराया-
तिष्कद्वरीं वत्सराय विजर्जरां संवत्सराय पलिकनीम्

१५ ८८६

॥ २६१ ॥ (अथर्व० ३।२०।८)

(८८६-८९) अथर्वा । अनुष्टुप् ।

आयमगन्तसंवत्सरः पतिरेकाष्टके तव ।

सा न आयुष्मतीं प्रजां रायस्पोषेण सं सृज

८ ८८७

॥ २६२ ॥ (अथर्व० ४।१५।१३) ×

संवत्सरं शशयाना ब्राह्मणा व्रतचारिणः ।

वाचं पर्जन्यजिन्वितां प्र मण्डूकां अवादिषुः

१३ ८८८

॥ २६३ ॥ (अथर्व० ११।७।१८)

समृद्धिरोज आकूतिः क्षत्रं राष्ट्रं षडुर्व्यः ।

संवत्सरोऽध्युच्छिष्ट इडां प्रैषा ग्रहां हविः

१८ ८८९

॥ २६४ ॥ (अथर्व० १५।३।१) पिपीलिकमध्या गायत्री ।

स संवत्सरमूर्ध्वोऽतिष्ठत् तं देवा अब्रुवन् व्रात्य किं नु तिष्ठसीति

१ ८९०

× [आयुर्वेद०] ९९४, १०१६ ।

॥ २६५ ॥ (अथर्व० ११।५।२०)

(८९१) ब्रह्मा । अनुष्टुप् ।

ओषधयो भूतमव्यमहोरात्रे वनस्पतिः ।

संवत्सरः सहर्तुभिस्ते जाता ब्रह्मचारिणः

२० ८९१

॥ २६६ ॥ (अथर्व० १९।५३।१-१०)

(८९२-९०६) भृगुः । अनुष्टुप् ; १-४ त्रिष्टुप् ; ५ निचृत् पुरस्ताद्बृहती ।

कालो अश्वो वहति सप्तारश्मिः सहस्राक्षो अजरो भूरिरेताः ।

तमा रोहन्ति कवयो विपश्चितस्तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा

सप्त चक्रान् वहति काल एष सप्तास्य नाभीरमृतं न्वक्षः ।

स इमा विश्वा भुवनान्यञ्जत् कालः स ईयते प्रथमो नु देवः

पूर्णः कुम्भोऽधि काल आहितस्तं वै पश्यामो बहुधा नु सन्तः ।

स इमा विश्वा भुवनानि प्रत्यङ्कालं तमाहुः परमे व्योमिन्

स एव सं भुवनान्याभरत् स एव सं भुवनानि पर्यैत् ।

पिता सन्नभवत् पुत्र एषां तस्माद् वै नान्यत् परमस्ति तेजः

कालोऽमं दिवमजनयत् काल इमाः पृथिवीरुत ।

काले ह भूतं भव्यं चेष्टितं ह वि तिष्ठते

कालो भूतिमसृजत काले तपति सूर्यः ।

काले ह विश्वा भूतानि काले चक्षुर्वि पश्यति

काले मनः काले प्राणः काले नामं समाहितम् ।

कालेन सर्वा नन्दुन्त्यागतेन प्रजा इमाः

काले तपः काले ज्येष्ठं काले ब्रह्मं समाहितम् ।

कालो ह सर्वस्येश्वरो यः पिताऽऽसीत् प्रजापतिः

तेनैषितं तेन जातं तदु तस्मिन् प्रतिष्ठितम् ।

कालो ह ब्रह्मं भूत्वा बिभर्ति परमेष्ठिनम्

कालः प्रजा असृजत कालो अग्रे प्रजापतिम् ।

स्वयंभूः कश्यपः कालात् तपः कालादजायत

१० ९०१

॥ २६७ ॥ (अथर्व० १२।५४।१-१५)

अनुष्टुप्, २ त्रिपदाऽऽर्षी गायत्री; ५ ज्यवसाना षट्पदा विराडष्टिः ।

कालादापः समभवन् कालाद् ब्रह्म तपो दिशः ।

कालेनोदेति सूर्यः काले नि विशते पुनः

कालेन वारतः पवते कालेन पृथिवी मही । द्यौर्मही काल आहिता

कालो ह भूतं भव्यं च पुत्रो अजनयत् पुरा ।

कालाद्वचः समभवन् यज्ञः कालादजायत

कालो यज्ञं समैरयद् देवेभ्यो भागमक्षितम् ।

काले गन्धर्वाप्सरसः काले लोकाः प्रतिष्ठिताः

कालेऽयमङ्गिरा देवोऽथर्वा चाधि तिष्ठतः ।

इमं च लोकं परमं च लोकं पुण्यांश्च लोकान् विधृतींश्च पुण्याः ।

सर्वलोकानभिजित्य ब्रह्मणा कालः स ईयते परमो नु देवः

(१०) ऋतवः ।

॥ २६८ ॥ (ऋ० १।१५।१-१२) +

(१०७-१८) मेघातिथिः काण्वः । [ऋतुदेवताः = १ इन्द्रः, २ मरुतः, ३ त्वष्टा, ४ अग्निः, ५ इन्द्रः, ६ मित्रावरुणौ, ७-१० द्रविणोदाः, ११ अश्विनौ, १२ अग्निः] । गायत्री ।

इन्द्र सोमं पिबं ऋतुना ऽऽ त्वां विशन्तिवन्देवः । मत्सरासस्तदोक्तसः

मरुतः पिबन्त ऋतुना पोत्राद् यज्ञं पुनीतन । यूयं हि ष्ठा सुदानवः

अभि यज्ञं गृणीहि नो ग्रावो नेष्टः पिबं ऋतुना । त्वं हि रत्नधा असि

अग्ने देवा इहा वह सादया योनिषु त्रिषु । परि भूष पिबं ऋतुना

ब्राह्मणादिन्द्र राघसः पिवा सोममूर्तुरुनु । तवेद्वि सख्यमस्तुतम्

युवं दक्षं धृतव्रत मित्रावरुण दूळर्मम् । ऋतुना यज्ञमाशथे

द्रविणोदा द्रविणसो ग्रावहस्तासो अश्वरे । यज्ञेषु देवमीळते

द्रविणोदा ददातु नो वसन्ति यानि शृण्विरे । देवेषु ता वनामहे

द्रविणोदाः पिपीषति जुहोतु प्र च तिष्ठत । नेष्टादुर्भिरिष्यत

यत् त्वा तुरीयमृतुभिर्द्रविणोदो यजामहे । अध स्मा नो दुदिर्भेव

+ ऋ० १।१५।२, ४, १२ = दे० [अग्निः] २२-२३; [मरुतः] ५;

अश्विना पिबतं मधु दीद्यशी शुचित्रता । ऋतुना यज्ञवाहसा ११
गर्हपत्येन सन्त्य ऋतुना यज्ञनीरासि । देवान् देवयुते यज १२ ११८

॥ २६९ ॥ (ऋ० २।३६।१-६)

(१११-३०) गृत्समद (आङ्गिरसः शौनहोत्राः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । [ऋतुदेवताः-१ इन्द्रो मधुश्च, २ मरुतो माधवश्च, ३ त्वष्टा शुक्रश्च, ४ अग्निः शुचिश्च, ५ इन्द्रो नभश्च, ६ मित्रावरुणौ नभस्यश्च । जगती ।

तुभ्यं हिन्वानो वसिष्ठ गा अपो ऽधुक्षन्त्सीमर्विभिरद्रिभिर्नरः ।
पिबेन्द्र स्वाहा प्रहुतं वर्षट्कृतं होत्रादा सोमं प्रथमो य ईशेषे १
यज्ञैः संमिश्राः पृषतीभिर्ऋष्टिभिर्—र्यामच्छुभ्रासो अजिषु प्रिया उत ।
आसधा बर्हिर्भरतस्य स्रनवः पोत्रादा सोमं पिबता दिवो नरः २ १२०
अमेव नः सुहवा आ हि गन्तं नि बर्हिषि सदतना रणिष्ठन ।
अथा मन्दस्व जुजुषाणो अन्धस—स्त्वष्टदेवेभिर्जनिभिः सुमद्रणः ३
आ वक्षि देवा इह विप्र यक्षि चो—शन् होतर्निषदा योनिषु त्रिषु ।
प्रति वीहि प्रस्थितं सोम्यं मधु पिवाशीघ्रात् तव भागस्य वृणुहि ४
एष स्य तै तन्वो नृम्णवर्धनः सह ओजः प्रदिवि बाह्वोर्हितः ।
तुभ्यं सुतो मधवन् तुभ्यमाभृत—स्त्वमस्य ब्राह्मणादा तृपत् पिब ५
जुषेथो यज्ञं बोधतु हवस्य मे सत्तो होता निविदः पूर्या अनु ।
अच्छा राजाना नम एत्यावृतं प्रशास्त्रादा पिबतं सोम्यं मधु ६ १२४

॥ २७० ॥ (अथर्व० २।३७।१-६) ×

[ऋतुदेवताः-१-४ द्रविणोदा ऋतवश्च, ५ अश्विनौ, ६ अग्निः ऋतुश्च]

मन्दस्व होत्रादनु जोषमन्धसो ऽध्वर्यवः स पूर्णा वष्ट्यासिचम् ।
तस्मा एतं भरत तद्वशो दुदि—होत्रात् सोमं द्रविणोदुः पिब ऋतुभिः १ १२५
यमु पूर्वमहुवे तमिदं हुवे सेदु हव्यो दुदिर्यो नाम पत्यते ।
अध्वर्युभिः प्रस्थितं सोम्यं मधु पोत्रात् सोमं द्रविणोदुः पिब ऋतुभिः २
मेघन्तु ते बह्व्यो येभिरीयसे ऽरिषण्यन् वीळयस्वा वनस्पते ।
आयूया धृष्णो अभिगूर्या त्वं नेष्टात् सोमं द्रविणोदुः पिब ऋतुभिः ३
अपाद्रोत्रादुत पोत्रादमत्तो—त नेष्टादजुषत् प्रयो हितम् ।
तुरीयं पात्रममृक्तममर्त्य द्रविणोदाः पिबतु द्रविणोदसः ४ १२८

॥ ऋ० २।३६।३, ६ = दै० [अदिति०] ४००, ७०३ × ऋ० २।३७।५ = दै० [अश्विनौ] २१४

अर्वाञ्चमद्य यय्यै नृवाहणं रथं युञ्जाथामिह वां विमोचनम् ।
 पूङ्क्त हवींषि मधुना हि कं गत—मथा सोमं पिबतं वाजिनीवसू
 जोष्यग्ने समिधं जोष्याहुतिं जोषि ब्रह्म जन्यं जोषि सुष्टुतिम् ।
 विश्वेभिर्विष्टाँ ऋतुना वसो मह उशन् देवाँ उशतः पायया हविः

॥ २७१ ॥ [२३१-४८] (वा० य० ७।३०)

उपयामगृहीतोऽसि मध्वे त्वोपयामगृहीतोऽसि माधवाय त्वोपयामगृहीतोऽसि
 शुक्राय त्वोपयामगृहीतोऽसि शुच्ये त्वोपयामगृहीतोऽसि नभसे त्वोपयाम-
 गृहीतोऽसि नभस्याय त्वोपयामगृहीतोऽसि त्वोपयामगृहीतोऽस्यूर्जे त्वोप-
 यामगृहीतोऽसि सहसे त्वोपयामगृहीतोऽसि सहस्याय त्वोपयामगृहीतोऽसि
 तपसे त्वोपयामगृहीतोऽसि तपस्याय त्वोपयामगृहीतोऽस्य हसस्पतये त्वा ३० १३१

॥ २७२ ॥ (वा० य० १३।२५)

मधुश्च माधवश्च वासन्तिकावृतु अग्नेरन्तःश्लेषोऽसि कल्पेतां द्यावापृथिवी
 कल्पन्तामाप ओषधयः कल्पन्तामग्नयः पृथङ् मम ज्यैष्ठ्याय सव्रताः ।
 ये अग्नयः समनसोऽन्तरा द्यावापृथिवी इमे ।
 वासन्तिकावृतु अभिकल्पमाना इन्द्रमिव देवा अभिसंविशन्तु तया
 देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदितम्

॥ २७३ ॥ (वा० य० १४।६, १५-१६, २७, २९)

शुक्रश्च शुचिश्च ग्रैष्मावृतु अग्नेरन्तः० ।०। ग्रैष्मावृतु अभिकल्पमाना०
 नभश्च नभस्यश्च वार्षिकावृतु अग्नेरन्तः० ।०। वार्षिकावृतु अभिकल्पमाना०
 इष्योर्जश्च शारदावृतु अग्नेरन्तः० ।०। शारदावृतु अभिकल्पमाना०
 सहश्च सहस्यश्च हैमन्तिकावृतु अग्नेरन्तः० ।०। हैमन्तिकावृतु अभिकल्पमाना०
 एकादशभिस्तुवत ऋतवोऽसृज्यन्तार्तुवा अधिपतय आसन्

॥ २७४ ॥ (वा० य० १५।२७)

तपश्च तपस्यश्च शैशिरावृतु अग्नेरन्तः० ।०। शैशिरावृतु अभिकल्पमाना०

॥ २७५ ॥ (वा० य० १७।३)

ऋतव स्थ ऋतावृधं ऋतुष्ठा स्थ ऋतावृधः ।

घृतश्रुतो मधुश्रुतो विराजो नाम कामदुघा अक्षीयमाणाः

॥ २७६ ॥ (वा० य० २१।२३-२८)

वसन्तेन ऋतुना देवा वसवास्त्रिवृता स्तुताः ।

रथन्तरेण तेजसा हविरिन्द्रे वयो दधुः

२३ २४०

ग्रीष्मेण ऋतुना देवा रुद्राः पञ्चदशे स्तुताः ।

बृहता यशसा बलं हविरिन्द्रे वयो दधुः

२४

वर्षाभिर्ऋतुनादित्या स्तोमे सप्तदशे स्तुताः ।

वैरूपेण विशौजसा हविरिन्द्रे वयो दधुः

२५

शरदेन ऋतुना देवा एकविंश ऋभवं स्तुताः ।

वैराजेन श्रिया श्रियं हविरिन्द्रे वयो दधुः

२६

हेमन्तेन ऋतुना देवास्त्रिणवे मरुतं स्तुताः ।

बलेन शक्वरीः सहो हविरिन्द्रे वयो दधुः

२७

शैशिरेण ऋतुना देवास्त्रयस्त्रिंशोऽमृता स्तुताः ।

सत्येन रेवतीः क्षत्रं हविरिन्द्रे वयो दधुः

२८ २४५

॥ २७७ ॥ (वा० य० २१।२८)

ऋतुभ्यः स्वाहाऽऽर्तवेभ्यः स्वाहा

२८ २४६

॥ २७८ ॥ (वा० य० २३।४०)

ऋतवस्त ऋतुथा पर्वं शमितारो वि शासतु ।

संवत्सरस्य तेजसा शमीभिः शम्यन्तु त्वा

४० २४७

॥ २७९ ॥ (वा० य० २६।१४)

ऋतवस्ते यज्ञं वि तन्वन्तु मासा रक्षन्तु ते हविः ।

संवत्सरस्ते यज्ञं दधातु नः प्रजां च परि पातु नः

१४ २४८

॥ २८० ॥ (अथर्व० ३।१०।९)

(२४९-६४) अथर्वा । अनुष्टुप् ।

ऋतुं यज ऋतुपतीनार्तवानुत हायुनान् ।

समाः संवत्सरान् मासान् भूतस्य पतये यजे

९ २४९

॥ २८१ ॥ (अथर्व० ५।२८।१३) पुरउष्णिक् ।

ऋतुभिर्द्वातवैरायुषे वर्चसे त्वा ।

संवत्सरस्य तेजसा तेन संहनु कृण्वसि

१३ २५०

॥ २८२ ॥ (अथर्व० ११।३।१७) आसुर्यनुष्टुप् ।

ऋतवः पक्तरं आर्तवाः समिन्धते

१७ १५१

॥ २८३ ॥ (अथर्व० १।५।३।४) द्विपदाऽऽच्युष्णिक् ।

तस्यां ग्रीष्मश्च वसन्तश्च द्वौ पादावास्तौ शरच्च वर्षाश्च द्वौ

४ १५२

॥ २८४ ॥ (अथर्व० १।५।४।२-३, ५-६, ८-९, ११-१२, १४-१५, १७-१८)

वासन्तौ मासौ गोप्सारावकुर्वन् बृहच्च रथंतरं चानुष्ठातारौ

२

वासन्तावेनं मासौ प्राच्यां दिशो गोपायतो बृहच्च रथंतरं चानु तिष्ठतो

य एवं वेद

३

ग्रीष्मौ मासौ गोप्सारावकुर्वन् यज्ञायज्ञियं च वामदेव्यं चानुष्ठातारौ

५ १५५

ग्रीष्मावेनं मासौ दक्षिणाया दिशो गोपायतो यज्ञायज्ञियं च वामदेव्यं

चानु तिष्ठतो य एवं वेद

६

वार्षिकौ मासौ गोप्सारावकुर्वन् वैरूपं च वैराजं चानुष्ठातारौ

८

वार्षिकावेनं मासौ प्रतीच्यां दिशो गोपायतो वैरूपं च वैराजं चानु तिष्ठतो

य एवं वेद

९

शरदौ मासौ गोप्सारावकुर्वन् छैतं च नौधसं चानुष्ठातारौ

११

शरदावेनं मासावुदीच्या दिशो गोपायतः श्यैतं च नौधसं चानु तिष्ठतो

य एवं वेद

१२ १६०

हैमनौ मासौ गोप्सारावकुर्वन् भूमिं चाग्निं चानुष्ठातारौ

१४

हैमनावेनं मासौ ध्रुवायां दिशो गोपायतो भूमिश्चाग्निश्चानु तिष्ठतो य एवं वेद

१५

शैशिरौ मासौ गोप्सारावकुर्वन् दिवं चादित्यं चानुष्ठातारौ

१७

शैशिरावेनं मासावूर्ध्वायां दिशो गोपायतो द्यौश्चादित्यश्चानु तिष्ठतो य एवं वेद

१८ १६४

॥ २८५ ॥ (अथर्व० १०।६।१८)

(१६५) बृहस्पतिः । अनुष्टुप् ।

ऋतवस्तमबध्नतार्तवास्तमबध्नत । संवत्सरस्तं बद्ध्वा सर्वं भूतं वि रक्षति

१८ १६५

॥ २८६ ॥ (अथर्व० ११।४।४)

(१६६) भार्गवो वैदर्भिः । अनुष्टुप् ।

यत् प्राण ऋतावागतेऽभिक्रन्दत्योषधीः ।

सर्वं तदा प्र मोदते यत् किं च भूम्यामधि

४ १६६

॥ २८७ ॥ (अथर्व० ११।६।१७, २२)

(९६७-६८) शन्तातिः । अनुष्टुप् ।

ऋतुं ब्रूम ऋतुपतीनार्तवानुत हायनान् ।

समाः संवत्सरान् मासांस्ते नो मुञ्चन्त्वंहंसः ।

१७

या देवीः पञ्च प्रदिशो ये देवा द्वादशर्तवः ।

संवत्सरस्य ये दंष्ट्रास्ते नः सन्तु सदा शिवाः ।

२२ ९६८

॥ २८८ ॥ (अथर्व० ११।१।३६)

(९६९) अथर्वा । विपरीतपादलक्ष्मा पङ्क्तिः ।

ग्रीष्मस्ते भूमे वर्षाणि शरद्वैमन्तः शिशिरो वसन्तः ।

ऋतवस्ते विहिता हायनीरहोरात्रे पृथिवि नो दुहाताम् ।

३६ ९६९

॥ २८९ ॥ (अथर्व० १६।८।२१)

(९७०) यमः । आसुरी पङ्क्तिः ।

स अर्तवानां पाशान्मा मोचि

२१ ९७०

॥ २९० ॥ (अथर्व० ७।१।२२)

(९७१) ब्रह्मा । त्रिष्टुप् ।

ऋतेन गुप्त ऋतुभिश्च सर्वैर्भूतेन गुप्तो भव्येन चाहम् ।

मा मा प्रापत् पाप्मा मोत मृत्युरन्तर्दधेऽहं संलिलेन वाचः ।

२९ ९७१

(११) चन्द्रमाः । ×

॥ २९१ ॥ (ऋ० १०।८।५।१९) *

(९७२) सावित्री सूर्या ऋषिका । त्रिष्टुप् ।

नवौनवो भवति जायमानो ऽह्नां केतुरुषसामेत्यग्रम् ।

भागं देवेभ्यो वि दधात्यायन् प्र चन्द्रमास्तिरते दीर्घमायुः ।

१९ ९७२

॥ २९२ ॥ (ऋ० १०।९।१३) +

(९७३) नारायणः । अनुष्टुप् ।

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।

सुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद् वायुरजायत ।

१३ ९७३

॥ २९३ ॥ [२७४-७९] (वा० य० १।२८)

पुरा क्रूरस्य विसृपों विरग्निनुदादार्य पृथिवीं जीवदानुम् ।

यामैर्यश्चन्द्रमसि स्वधाभिस्तामु धीरांसो अनुदिश्य यजन्ते

२८ २७४

* [आयुर्वेद०] ६-७, ३२, ६८, ७१, ८८, ९१, ११६, १२३, १५४, २३२, २४५, २६८, २७४, ३१२ सूक्तानि द्रष्टव्यानि ।
 * अथर्व० ७, ८१, २; १४, १, २३; + अथर्व १३, ६, ७ ।
 ११ [दे० अदितिः०]

॥ २९४ ॥

चन्द्राय स्वाहा (वा० य० २१।२८) + चन्द्रमसे किलासम् । (वा० य० ३०।२१) २८ १७१

॥ २९५ ॥ (वा० य० २३।४, १०)

एष ते योनिश्चन्द्रमास्ते महिमा ।

यस्ते नक्षत्रेषु चन्द्रमसि महिमा संवभूव तस्मै ते महिम्ने प्रजापतये देवेभ्यः स्वाहा ४

सूर्ये एकाकी चरति चन्द्रमा जायते पुनः ।

अभिर्हिमस्य भेषजं भूमिरावपनं महत्

१० १७३

॥ २९६ ॥ (वा० य० ३१।१२)

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।

श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादुग्रिरजायत

१२ १७८

॥ २९७ ॥ (वा० य० ३३।९०)

चन्द्रमा अप्सवन्तरा सुपर्णो धावते दिवि ।

रयि पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहं हरिरेति कर्निकदत्

१० १७९

॥ २९८ ॥ (अथर्व० १।३।४)

(९८०-९०) अथर्वा । पथ्यापङ्क्तिः ।

विद्या शरस्य पितरं चन्द्रं शतवृण्यम् ।

तेनां ते तन्वेद्वांश्च करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्ठे अस्तु बालिति

४ १८०

॥ २९९ ॥ (अथर्व० २।२२।१-५)

(एकावसानम्) १-४ निचृद्विषमा गायत्री, ५ भुरिग्विषमा ।

चन्द्र यत् ते तपस्तेन तं प्रति तप योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः

१

चन्द्र यत् ते हरस्तेन तं प्रति हर योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः

२

चन्द्र यत् तेऽर्चिस्तेन तं प्रत्यर्च योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः

३

चन्द्र यत् ते शोचिस्तेन तं प्रति शोच योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः

४

चन्द्र यत् ते तेजस्तेन तमेतेजसं कृणु योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः

५ १८१

॥ ३०० ॥ (अथर्व० ५।२४।१०) चतुष्पदातिशकरी ।

चन्द्रमा नक्षत्राणामधिपतिः स मावतु ।

अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायां मस्यां प्रतिष्ठायां मस्यां

चिर्यामस्यामाकृत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहृत्यां स्वाहा

१० १८२

+ वा० य० २१, २९-३०; ३२, २ । अथर्व० १९, ४३, ४ ।

॥ ३०१ ॥ (अथर्व० ६।७८।१-२) अनुष्टुप् ।

तेन भूतेन हविषायमा प्यायतां पुनः ।

ज्यायां यामस्मा आवाक्षुस्तां रसेनाभि वर्धताम्

अभि वर्धतां पर्यसाभि राष्ट्रेण वर्धताम् । रय्या सहस्रवर्चसेमौ स्तामनुपक्षितौ

॥ ३०२ ॥ (अथर्व० १८।४।८९) पञ्चपदा पथ्यापङ्क्तिः । x

चन्द्रमा अप्व१न्तरा सुपर्णो धावते दिवि ।

न वो हिरण्यनेमयः पदं विन्दन्ति विद्युतो वित्तं मे अस्य रोदसी

॥ ३०३ ॥ (अथर्व० १९।१९।४) अनुष्टुप् ।

चन्द्रमा नक्षत्रैरुदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः ।

तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्मे च यच्छतु

॥ ३०४ ॥ (अथर्व० ११।६।७)

(९९१) शन्तातिः । अनुष्टुप् ।

मुञ्चन्तु मा शपथ्यादिहोरात्रे अथो उपाः ।

सोमो मा देवो मुञ्चतु यमाहुश्चन्द्रमा इति

॥ ३०५ ॥ (अथर्व० १९।२७।२, ५)

(९९२-९९३) भृग्वङ्गिराः । अनुष्टुप् ।

सोमस्त्वा पात्वोषधीभिर्नक्षत्रैः पातु सूर्यैः ।

माद्भ्यस्त्वा चन्द्रो वृत्रहा वार्तः प्राणेन रक्षतु

धृतेन त्वा समुक्षाम्यग्र आज्येन वर्धयन् ।

अग्रेश्चन्द्रस्य सूर्यस्य मा प्राणं मायिनो दमन्

॥ ३०६ ॥ (अथर्व० १९।४३।४)

(९९४) ब्रह्मा । व्यवसाना शङ्कुमती पथ्यापङ्क्तिः ।

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह । चन्द्रो मा तत्र नयतु मनश्चन्द्रो दधातु मे ४

चन्द्रमा-सहचारी-देवगणः ।

(१) सूर्यः चन्द्रश्च ।

॥ ३०७ ॥ (अथर्व० २।१५।३)

(९९५-९९६) ब्रह्मा । त्रिपाद् गायत्री ।

यथा सूर्यश्च चन्द्रश्च न विभीतो न रिष्यतः । एवा मे प्राण मा विभेः

१।१०।५।१; सा० ४१७

(२) द्यौः, पृथिवी, सूर्यः, चन्द्रमाः, अन्तरिक्षं च ।

॥ ३०८ ॥ (अथर्व० ८।१।१२) ज्यवसाना पञ्चपदा जगती ।

मा त्वा कृव्यादुभि मैस्तारात् संकसुकान्चर ।

रक्षतु त्वा द्यौ रक्षतु पृथिवी सूर्यश्च त्वा रक्षतां चन्द्रमाश्च । अन्तरिक्षं रक्षतु देवहेत्याः १२ १९९

॥ ३०९ ॥ (अथर्व० ११।६।५)

(९९७) शन्तातिः । अनुष्टुप् ।

अहोरात्रे इदं ब्रूमः सूर्याचन्द्रमसावुभा ।

विश्वानादित्यान् ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ।

५ १९७

(३) दिक्चन्द्रमसः ।

॥ ३१० ॥ (अथर्व० ४।३९।७-८)

(६९८-९९) अङ्गिराः । ७ त्रिपदा महावृहती, ८ संस्तारपङ्क्तिः ।

दिक्षु चन्द्राय समनमन्त्स आर्धोत् ।

यथा दिक्षु चन्द्राय समनमन्नेवा मर्ह्यं संनमः सं नमन्तु

दिशो धेनवस्तासां चन्द्रो वत्सः । ता मे चन्द्रेण वत्सेनेषुमूर्जं कामं दुहाम् ।

आयुः प्रथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहा ।

८ १९९

(४) अग्निः, चन्द्रमाश्च ।

॥ ३११ ॥ (अथर्व० ६।८६।२)

(१०००) अथर्वा । अनुष्टुप् ।

समुद्र ईशे स्रवतामग्निः पृथिव्या वशी ।

चन्द्रमा नक्षत्राणामीशे त्वमेकवृषो भव ।

२ १०००

(१२) रात्रिः ।

॥ ३१२ ॥ (ऋ० १।११३।१ [उत्तरार्धः])

(१००१) कुत्स आङ्गिरसः । त्रिष्टुप् ।

यथा प्रसूता सवितुः सवायं एवा रात्र्युषसे योनिमारैक्

१ १००१

॥ ३१३ ॥ (ऋ० १०।१०।९)

(१००२) वैवस्वतो यमः ऋषिः । त्रिष्टुप् ।

रात्रीभिरस्मा अहर्भिर्जशस्येत् सूर्यस्य चक्षुर्मुहुरुन्मिमीयात् ।
 दिवा पृथिव्या मिथुना सबन्धू यमीर्यमस्य विभृयादजामि

९ १००२

॥ ३१४ ॥ (ऋ० १०।१२७।१-८)

(१००३-१०१०) कुशिकः सौभरः, रात्रिर्वा भारद्वाजी । गायत्री ।

रात्री व्यख्यदायती पुरुत्रा देव्यक्षभिः । विश्वा अधि श्रियोऽधित १
 ओर्विप्रा अमर्त्या निवतो देव्युद्वतः । ज्योतिषा बाधते तमः २
 निरु स्वसारमस्कृतो पस्य देव्यायती । अपेदु हासते तमः ३ १००५
 सा नो अद्य यस्या वयं नि ते यामन्नविक्षमहि । वृक्षे न वसति वयः ४
 नि ग्रामासो अविक्षत नि पद्वन्तो नि पक्षिणः । नि ज्येनासश्चिदर्थिनः ५
 यावया वृक्ष्यं वृकं यवयं स्तेनमूर्म्ये । अथा नः सुतरा भव ६
 उप मा पेपिशत् तमः कृष्णं व्यक्तमस्थित । उप क्रणेव यातय ७
 उप ते गा इवाकरं वृणीष्व दुहितर्दिवः । रात्रि स्तोमं न जिग्युषे ८ १०१०

॥ ३१५ ॥ [१०११-१६] (वा० य० ३।१८)

चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय

१८ १०११

॥ ३१६ ॥ (वा० य० २३।१२) ×

धौरासीत् पूर्वचित्तिरश्च आसीद् बृहद्वयः ।
 अविरासीत् पिलिप्पिला रात्रिरासीत् पिशङ्गिला

१२ १०१२

॥ ३१७ ॥ (वा० य० २४।२५)

अहौ पारावतानालभते रात्र्यै सीचापूरहोरात्रयोः सन्धिभ्यो
 जतूर्मासैभ्यो दात्योहान्तसंवत्सराय महतः सुपर्णान्

२५ १०१३

॥ ३१८ ॥ (वा० य० ३०।२१)

रात्र्यै कृष्णं पिङ्गाक्षम्

२१ १०१४

॥ ३१९ ॥ (वा० य० ३४।२२) ✽

आ रात्रि पार्थिव रजः पितुरग्रायि धामभिः ।
 दिवः सदाऽसि बृहती वि तिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः

३२ १०१५

✽ वा० य० २३।५४;

✽ अथर्व० १२, ४७, १ ।

॥ ३२० ॥ (वा० य० ३७।२१ [उत्तरार्धः]) +

रात्रिः केतुना जुषताऽसुज्योतिर्ज्योतिषा स्वाहा

२१ १०१६

॥ ३२१ ॥ (अथर्व० १।१६।१)

(१०१७) चातनः । अनुष्टुप् ।

येमावास्यां३ रात्रिमुदस्थुर्वाजमत्त्रिणः ।

अग्निस्तुरीयो यातुहा सो अस्मभ्यमधि ब्रवत्

१ १०१७

॥ ३२२ ॥ (अथर्व० २।१५।२)

(१०१८-१९) ब्रह्मा । त्रिपाद् गायत्री ।

यथाहश्च रात्री च न विभीतो न रिष्यतः । एवा मे प्राण मा विभेः

२ १०१८

॥ ३२३ ॥ (अथर्व० २।३।३०) प्राजापत्याऽनुष्टुप् ।

स वै रात्र्या अजायत तस्माद् रात्रिरजायत

३० १०१९

॥ ३२४ ॥ (अथर्व० ५।५।१)

(१०२०-२९) अथर्वा । अनुष्टुप् ।

रात्री माता नभः पितर्यमा ते पितामहः ।

सिलाची नाम वा असि सा देवानामसि स्वसा

१ १०२०

॥ ३२५ ॥ (अथर्व० १।५।२।५, १३, २१, २९) द्विपदाऽऽर्ची गायत्री ।

श्रद्धा पुंश्चली मित्रो माग्धो विज्ञानं वासोऽहरुष्णीषं रात्री केशा हरितौ प्रवर्तौ
कल्मलिर्मणिः

५

उषाः पुंश्चली मन्त्रो माग्धो विज्ञानं वासोऽहरुष्णीषं रात्री केशा हरितौ०

१३

इरा पुंश्चली हसो माग्धो विज्ञानं वासोऽहरुष्णीषं रात्री केशा हरितौ०

२१

विद्युत् पुंश्चली स्तनयित्नुर्माग्धो विज्ञानं वासोऽहरुष्णीषं रात्री केशा हरितौ०

२९ १०१८

॥ ३२६ ॥ (अथर्व० १।५।१३।१, ३, ५, ७, ९)

१ साम्युष्णिक्, ३, ५, ७ आसुरी गायत्री; ९ द्विपदानिचृद्रायत्री ।

तद् यस्यैवं विद्वान् व्रात्य एकां रात्रिमतिथिर्गृहे वसति

१ १०२५

तद् यस्यैवं विद्वान् व्रात्यो द्वितीयां रात्रिमतिथिर्गृहे वसति

३

तद् यस्यैवं विद्वान् व्रात्यस्तृतीयां रात्रिमतिथिर्गृहे वसति

५

तद् यस्यैवं विद्वान् व्रात्यश्चतुर्थीं रात्रिमतिथिर्गृहे वसति

७

तद् यस्यैवं विद्वान् व्रात्योऽपरिमिता रात्रीरतिथिर्गृहे वसति

९ १०२९

+ वा० य० ३८, १६ ।

॥ ३२७ ॥ (अथर्व० ६।१२८।२)

(१३०) अङ्गिराः । अनुष्टुप् ।

भद्राहं नो मध्यंदिने भद्राहं सायमस्तु नः ।

भद्राहं नो अह्नां पाता रात्रीं भद्राहमस्तु नः

२ १०३०

॥ ३२८ ॥ (अथर्व० १९।४७।१-९)*

(१०३१-५१) गोपथः । अनुष्टुप् ; २ पञ्चपदाऽनुष्टुग्भां पराऽतिजगती ।

६ पुरस्ताद्बृहती ; ७ ज्यवसाना षट्पदा जगती ।

न यस्याः पारं ददृशे न योयुवद् विश्वमस्यां नि विशते यदेजति ।

अरिंष्टासस्त उर्वि तमस्वति रात्रिं पारमशीमहि भद्रे पारमशीमहि

२

ये ते रात्रि नृचक्षसो द्रष्टारो नवतिर्नव । अशीतिः सन्त्युष्टा उतो ते सप्त समतिः ३

पृष्टिश्च षट् च रेवति पञ्चाशत् पञ्च सुमयि । चत्वारश्च त्वारिश्च च त्रयस्त्रिंशच्च वाजिनि ४

द्वौ च ते विशतिश्च ते रात्र्येकादशावमाः । तेभिर्नो अद्य पायुभिर्नु पाहि दुहितर्दिवः ५

रक्षा मार्किर्नो अघशंस ईशत मा नो दुःशंस ईशत ।

मा नो अद्य गवां स्तेनो मावीनां वृक ईशत

६ १०३५

माश्वानां भद्रे तस्करो मा नृणां यातुधान्यः ।

परमेभिः पृथिभि स्तेनो धावतु तस्करो । परेण दुत्वती रज्जुः परेणाघायुरर्षतु ७

अध रात्रि तृष्टधूममशीर्षाणमहि कृणु । हनु वृकस्य जम्भयास्तेन तं द्रुपदे जहि ८

त्वयि रात्रि वसामसि स्वपिष्यामसि जागृहि ।

गोम्यो नः शर्म यच्छाश्वेभ्यः पुरुषेभ्यः

९ १०३८

॥ ३२९ ॥ (अथर्व० १९।४८।१-६)

अनुष्टुप् ; १ त्रिपदाऽऽर्षी गायत्री ; २ त्रिपदा विराडनुष्टुप् ; ३ बृहतीगर्भाऽनुष्टुप् ;

५ पथ्यापङ्क्तिः ।

अथो यानि च यस्मा ह यानि चान्तः परीणहि । तानि ते परि ददासि १

रात्रि मातरुषसे नः परि देहि । उषा नो अह्ने परि ददात्वहस्तुभ्यं विभावरी २ १०४०

यत् किं चेदं पतयति यत् किं चेदं सरीसृपम् ।

यत् किं च पर्वतायासत्वं तस्मात् त्वं रात्रि पाहि नः ३

सा पश्चात् पाहि सा पुरः सोत्तरादधरादुत ।

गोपाय नो विभावरी स्तोतारस्त इह स्मसि ४ १०४२

४ १०४२

* अथर्व० १९।४७।१ = वा० य० ३४, ३२ ।

ये रात्रिमनुतिष्ठन्ति ये च भूतेषु जाग्रति
पशून् ये सर्वान् रक्षन्ति ते न आत्मसु जाग्रति ते नः पशुषु जाग्रति
वेदु वै रात्रि ते नाम धृताची नाम वा असि ।
तां त्वां भरद्वाजो वेदु सा नो वित्तेऽधि जाग्रति

॥ ३३० ॥ (अथर्व० १९।५०।१-७) अनुष्टुप् ।

अथ रात्रि तृष्टधूममशीर्षाणमहिं कृणु । अक्षौ वृकस्य निर्जह्यास्तेन तं द्रुपदे जहि १ १०४५
ये ते राज्यनड्वाहस्तीक्ष्णशृङ्गाः स्वाशवः । तेभिर्नो अद्य पारयाति दुर्गाणि विश्वहा २
रात्रिरात्रिमरिष्यन्तस्तरेम तन्वा वयम् । गम्भीरमप्लवा इव न तरेयुररातयः ३
यथा शाम्याकः प्रपतन्नपवान् नानुविद्यते । एवा रात्रि प्र पातय यो अस्मां अभ्यघायति ४
अप स्तेनं वासो गोअजमुत तस्करम् । अथो यो अर्वतः शिरोऽभिधाय निनीषति ५
यदद्या रात्रि सुभगे विभजन्त्ययो वसु । यदेतदस्मान् भोजय यथेदन्यानुपायसि ६ १०५०
उपसे नः परि देहि सर्वान् राज्यनागसः । उपा नो अहे आ भजादहस्तुभ्यं विभावरि ७ १०५१

॥ ३३१ ॥ (अथर्व० १९।४९।१-१०)

(१०५०-६०) गोपथः, भरद्वाजश्च । अनुष्टुप् ; १-५, ८ त्रिष्टुप् ; ६ आस्तारपङ्क्तिः ; ७ पद्यापङ्क्तिः ।
१० ज्यवसाना षट्पदा जगती ।

इषिरा योषा युवतिर्दमूना रात्री देवस्य सवितुर्भगस्य ।
अश्वक्षमा सुहवा संभृतश्रीरा पग्रौ द्यावापृथिवी महित्वा १
अति विश्वान्यरुहद् गम्भीरो वर्षिष्ठमरुहन्त श्रविष्ठाः । २
उशती राज्यनु सा भद्राभि तिष्ठते मित्र इव स्वधार्मिः
वर्ये वन्दे सुभगे सुजात आजगन् रात्रि सुमना इह स्याम् । ३
अस्मांस्त्रायस्व नर्याणि जाता अथो यानि गव्यानि पुष्ट्या
सिंहस्य राज्यशती पीषस्य व्याघ्रस्य द्वीपिनो वर्च आ ददे । ४ १०५५
अश्वस्य ब्रध्नं पुरुषस्य मायुं पुरु रूपाणि कृणुषे विभाती
शिवां रात्रिमनुस्य च हिमस्य माता सुहवा नो अस्तु । ५
अस्य स्तोमस्य सुभगे नि बोध येन त्वा वन्दे विश्वासु दिक्षु
स्तोमस्य नो विभावरि रात्रि राजैव जोषसे । ६ १०५७
आसाम् सर्ववीरा भवाम् सर्ववेदसो व्युच्छन्तीरनूपसः

[रात्रि-देवता ।]

श्रम्या ह नाम दधिषे मम दिप्सन्ति ये धना ।

रात्रीहि तानसुतपा य स्तेनो न विद्यते यत् पुनर्न विद्यते ।

मद्रासि रात्रि चमसो न विष्टो विष्ट्वं गोरूप युवतिर्विभर्षि ।

चक्षुष्मती मे उशती वर्षेषि प्रति त्वं दिव्या न क्षाममुक्थाः ।

यो अद्य स्तेन आर्यत्यघायुर्मर्त्यो रिपुः ।

रात्री तस्य प्रतीत्य प्र ग्रीवाः प्र शिरो हनत् ।

प्र पादौ न यथायति प्र हस्तौ न यथाशेषत् ।

यो मलिम्लरुपायति स संपिष्टो अपायति ।

अपायति स्वपायति शुष्के स्थाणावपायति ।

॥ ३३२ ॥ [१०६२-६७] (वा० य० ६।२१)

अहोरात्रे गच्छ स्वाहा ।

॥ ३३३ ॥ (वा० य० १४।३०)

नवदशमिरस्तुवत शूद्रार्यावसृज्येतामहोरात्रे अधिपत्नी आस्ताम् ।

॥ ३३४ ॥ (वा० य० १८।२३)

अहोरात्रे ऊर्वष्टीवे बृहद्रथन्तरे च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।

॥ ३३५ ॥ (वा० य० २१।२८)

अहोरात्रेभ्यः स्वाहा ।

॥ ३३६ ॥ (वा० य० २३।४१)

अर्धमासाः परूषि ते मासा आ च्छयन्तु शर्मन्तः ।

अहोरात्राणि मरुतो विलिष्टः स्रदयन्तु ते ।

॥ ३३७ ॥ (वा० य० ३१।२२)

श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ।

इषाणैषाणां म इषाण सर्वलोकं म इषाण ।

॥ ३३८ ॥ (अथर्व० ६।१२८।३)

(१०६८) अङ्गिराः । अनुष्टुप् ।

अहोरात्राभ्यां नक्षत्रेभ्यः सूर्याचन्द्रमसाभ्याम् ।

भद्राहमसभ्यं राजन्लकधूम त्वं कृधि ।

१९ दे. [अदितिः]

॥ ३३९ ॥ (अथर्व० १५।१।२२)

(१०६९-७३) अथर्वा । आसुरी गायत्री ।

अहश्च रात्रीं च परिष्कन्दौ मनो विपथम्

२२ १०६९

॥ ३४० ॥ (अथर्व० १५।६।१७-१८) १७ आर्ची पङ्क्तिः, १८ विराड् जगती ।

तमृतवर्षार्तवाश्च लोकाश्च लौक्याश्च मासाश्चार्धमासाश्चाहोरात्रे चानुव्यचलन्

१७ १०७०

ऋतूनां च वै स आर्तवानां च लोकानां च लौक्यानां च मासानां चार्धमासानां

चाहोरात्रयोश्च प्रियं धाम भवति य एवं वेद

१८ १०७१

॥ ३४१ ॥ (अथर्व० १५।१८।४-५) आर्च्यनुष्टुप् ।

अहोरात्रे नासिके दितिश्चादितिश्च शर्षिकपाले सैवत्सरः शिरः

४

अह्ना प्रत्यङ् ब्राह्म्यो रात्र्या प्राङ् नमो ब्राह्म्याय

५ १०७२

॥ ३४२ ॥ (अथर्व० १६।८।२४) +

(१०७४) यमः । आसुरी जगती ।

सोऽहोरात्रयोः पाशान्मा मोचि

२४ १०७४

रात्रि-सहचारी-देवगणः ।

रात्रिः, धेनुः ।

॥ ३४३ ॥ (अथर्व० ३।१०।२-४)

(१०७५-७७) २-३ अनुष्टुप्, ४ त्रिष्टुप् ।

यां देवाः प्रतिनन्दन्ति रात्रिं धेनुमुपायतीम् ।

२ १०७५

संवत्सरस्य या पत्नी सा नो अस्तु सुमङ्गली

संवत्सरस्य प्रतिमां यां त्वां रात्र्युपास्महे ।

सा न आयुष्मतीं प्रजां रायस्पोषेण सं सृज

३

इयमेव सा या प्रथमां व्यौच्छदास्वितरासु चरति प्रविष्टा ।

महान्तो अस्यां महिमानो अन्तर्वधूर्जिगाय नवगजनित्री

४ १०७७

५ आदितः आदित्याश्च ।

॥ ३४४ ॥ (अथर्व० १०।१।६)

(१०७८) नारायणः । यामः । जगती ।

कः सप्त खानि वि ततर्द शीर्षणि कर्णविमौ नासिके चक्षणी मुखम्
येषां पुरुत्रा विजयस्य मल्लानि चतुष्पादो द्विपदो यन्ति यामम्

६ १०७८

(१३) पूर्णिमा ।

॥ ३४५ ॥ (अथर्व० ७।८०।१-२,४)

(१०७९-८२) अथर्वा । त्रिष्टुप्, २ अनुष्टुप् ।

पूर्णा पश्चादुत पूर्णा पुरस्तादुन्मध्यतः पौर्णमासी जिगाय ।

तस्यां देवैः संवसन्तो महित्वा नाकस्य पृष्ठे समिषा मदेम

१

वृषभं वाजिनं वयं पौर्णमासं यजामहे ।

स नो ददात्वक्षितां रयिमनुपदस्वतीम्

२ १०८०

पौर्णमासी प्रथमा यज्ञियासीदह्नां रात्रीणामतिशर्वरेषु ।

ये त्वां यज्ञैर्यज्ञिये अर्धयन्त्यमी ते नाके सुकृतः प्रविष्टाः

४

॥ ३४६ ॥ (अथर्व० १५।१६।१) साम्युष्णिक् ।

तस्य व्रात्यस्य । योऽस्य प्रथमोऽपानः सा पौर्णमासी

१ १०८२

(१४) राका ।

॥ ३४७ ॥ (क्र० २।३२।४-५)*

(१०८३-८४) गृत्समद (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । जगती ।

राकामहं सुहवां सुष्टुती हुवे शृणोतु नः सुभगा बोधतु त्मना ।

सीव्यत्वर्पः सूच्याच्छिद्यमानया ददातु वीरं शतदायमुक्थ्यम्

४

यास्तै राके सुमतयः सुपेशसो याभिर्ददासि दाशुषे वसूनि ।

ताभिर्नो अद्य सुमना उपागहि सहस्रपोषं सुभगे रराणा

५ १०८४

(१५) अमावास्या ।

॥ ३४८ ॥ (अथर्व० ७।७९।१-४)

(१०८५-९१) अथर्वा । त्रिष्टुप्, १ जगती ।

यत् ते देवा अकृण्वन् भागधेयममावास्ये संवसन्तो महित्वा ।

तेनां नो यज्ञं पिपृहि विश्ववारे रयिं नो धेहि सुभगे सुवीरम्

१ १०८५

अहमेवास्म्यमावास्याइ मामा वसन्ति सुकृतो मयीमे ।

मयि देवा उभये साध्याश्चेन्द्रज्येष्ठाः समगच्छन्त सर्वे

२ १०८६

* अथर्व० ७,४८,१-२ ।

आगन् रात्रीं संगमनीं वसूनामूर्जं पुष्टं वस्वावेशयन्ती ।
अमावास्यां ये हविषा विधेमोर्जं दुहानां पर्यसा न आगन्
अमावास्ये न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिभूर्जेजान ।
यत् कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पर्यो रयीणाम्

॥ ३४९ ॥ (अथर्व० १५।१।१४) साम्नी पङ्क्तिः ।

अमावास्यां च पौर्णमासी च परिष्कन्दौ मनो विपथम्

॥ ३५० ॥ (अथर्व० १५।१६।३) साम्न्युष्णिक् ।

तस्य ब्रात्यस्य । योऽस्य तृतीयोऽपानः सामावास्यां

॥ ३५१ ॥ (अथर्व० १५।१७।९) द्विपदा साम्नी त्रिष्टुप् ।

तस्य ब्रात्यस्य । यदादित्यमभिसंविशन्त्यमावास्यां चैव तत् पौर्णमासीं च

(१६) सिनीवाली ।

॥ ३५२ ॥ (ऋ० २।३२।६-७) ×

(१०९२-९२) गृत्समदः (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । अनुष्टुप् ।

सिनीवालि पृथुष्टुके या देवानामसि स्वसा ।

जुषस्व हव्यमाहुतं प्रजां देवि दिदिद्धि नः

या सुबाहुः स्वङ्गुरिः सुषूमा बहुस्रवरी ।

तस्यै विस्पत्न्यै हविः सिनीवाल्यै जुहोतन

॥ ३५३ ॥ (अथर्व० ७।४६।३)

(१०९४) अथर्व । त्रिष्टुप् ।

या विस्पतीन्द्रमसि प्रतीचीं सहस्रस्तुकाभियन्ती देवी ।

विष्णोः पत्नि तुभ्यं राता हवींषि पतिं देवि राधसे चोदयस्व

॥ ३५४ ॥ [१०९५] (वा० य० ११।५५) *

संस्पृष्टां वसुमी रुद्रैर्धीरैः कर्मण्यां मृदम् ।

हस्ताभ्यां मूर्ध्नी कृत्वा सिनीवाली कृणोतु ताम्

॥ ३५५ ॥ (अथर्व० ९।४।१४)

(१०९६) ब्रह्मा । अनुष्टुप् ।

गुदा आसन्तिसनीवाल्याः सूर्यायास्त्वचमब्रुवन् ।

उत्थातुरब्रुवन् पद ऋषभं यदकल्पयन्

× वा० य० ३४, १०, अथर्व० ७, ४६, १-२ ।

* वा० य० ११, ५६ = दै० [अदितिः०] ९

सिनीवाली-सहचारी-देवगणः ।

(१) गुंगू-सिनीवाली-राका-सरस्वतीन्द्राणीवरुणानीः ।

॥ ३५६ ॥ (ऋ० २।३२।३)

(१०९७) गृत्समद (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । अनुष्टुप् ।

या गुङ्गूया सिनीवाली या राका या सरस्वती । इन्द्राणीमह ऊतये वरुणानीं स्वस्तये ३ १०९७

(२) बृहस्पतिः, सिनीवाली, अनुमतिः ।

॥ ३५७ ॥ (अथर्व० २।२६।२)

(१०९८) सविता । त्रिष्टुप् ।

इमं गोष्ठं पशवः सं संवन्तु बृहस्पतिरा नयतु प्रजानन् ।

सिनीवाली नयत्वाग्रमेषामाजग्मुषो अनुमते नि यच्छ

२ १०९८

(३) सिनीवाली-सरस्वत्याश्विनः ।

॥ ३५८ ॥ (अथर्व० ५।२५।३) ×

(१०९९) ब्रह्मा । अनुष्टुप् ।

गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति । गर्भं ते अश्विनोभा धत्तां पुष्करसजा ३ १०९९

(४) प्रजापतिः, अनुमतिः, सिनीवाली ।

॥ ३५९ ॥ (अथर्व० ६।११।३)

(११००) प्रजापतिः । अनुष्टुप् ।

प्रजापतिरनुमतिः सिनीवालयचीकल्पत् । सैषूयमन्यत्र दधत् पुमांसमु दधद्विह ३ ११००

(५) विष्णुः, सरस्वती, सिनीवाली, भगः ।

॥ ३६० ॥ (अथर्व० १४।२।१५, ११)

(११०१-११०२) सूर्या सावित्री । १५ भुरिक्, ११ अनुष्टुप् ।

प्रति तिष्ठ विराडसि विष्णुरिवेह सरस्वति ।

सिनीवालि प्र जायतां भगस्य सुमतावसत्

१५

गर्भं वर्मेतदा हरास्यै नार्या उपस्तरै । सिनीवालि प्र जायतां भगस्य सुमतावसत् २१ ११०२

(६) सरस्वती, सिनीवाली ।

॥ ३६१ ॥ (अथर्व० १९।३।१०)

(११०३) सविता । अनुष्टुप् ।

आमे धनं सरस्वती पर्यस्फाति च धान्यम् । सिनीवालयुषा वहादुयं चौदुम्बरो मणिः १० ११०३

× ३० [अश्विनौ०] ६८९ ।

(१७) कुहूः ।

॥ ३६२ ॥ (अथर्व० ७।४७।१-२)

(११०४-११०५) अथर्वा । १ जगती, २ त्रिष्टुप् ।

कुहूं देवीं सुकृतं विद्वानार्पसमस्मिन् यज्ञे सुहवां जोहवीमि ।
 सा नो रयिं विश्ववारं नि यच्छाद् ददातु वीरं शतदायमुक्थ्यम्
 कुहूदेवानाममृतस्य पत्नी हव्या नो अस्य हविषो जुषेत ।
 शृणोतु यज्ञमुश्रुती नो अद्य रायस्पोषं चिकितुषीं दधातु

(१८) नक्षत्राणि ।

॥ ३६३ ॥ [११०६-१३] (वा० य० १४।१९)

नक्षत्राणि छन्दः

॥ ३६४ ॥ (वा० य० १८।१८, ४०)

नक्षत्राणि च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्

तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो भेकुरयो नाम । ताम्यः स्वाहा

॥ ३६५ ॥ (वा० य० २२।२८) X

नक्षत्रेभ्यः स्वाहा नक्षत्रियेभ्यः स्वाहा

॥ ३६६ ॥ (वा० य० २३।४३)

द्यौस्ते पृथिव्युन्तरिक्षं वायुश्छिद्रं पृणातु ते ।

सूर्यस्ते नक्षत्रैः सह लोकं कृणोतु साधुया

॥ ३६७ ॥ (वा० य० २५।९)

नक्षत्राणि रूपेण

॥ ३६८ ॥ (वा० य० ३०।१०, २१)

प्रज्ञानाय नक्षत्रदुर्गम् ॥ १० ॥ नक्षत्रेभ्यः किर्मिरम्

॥ ३६९ ॥ (अथर्व० २।२।४)

(१११४) मातृनामा । त्रिपाद्विराणाम गायत्री ।

अग्निरे दिद्युन्नक्षत्रिये या विश्वावसुं गन्धर्व सचध्वे ।

ताम्यो वो देवीर्नम इत् कृणोमि

॥ ३७० ॥ (अथर्व० ३।७।७)

(१११५) भृग्वह्निः । अनुष्टुप् ।

अपवासे नक्षत्राणामपवास उपसामुत । अपासत् सर्वं दुर्भूतमप क्षेत्रियमुच्छत

X वा० य० २२, २९; ३९, २ ।

॥ ३७१ ॥ (अथर्व० ६।१२८।१,४)

(१११६-१७) अङ्गिराः । अनुष्टुप् ।

शकधूमं नक्षत्राणि यद् राजानमकुर्वत । भद्राहमस्मै प्रायच्छन्निदं राष्ट्रमसादिति १
यो नो भद्राहमकरः सायं नक्तमथो दिवा । तस्मै ते नक्षत्रराज शकधूम सदा नमः ४ १११७

॥ ३७२ ॥ (अथर्व० ९।७।१५)

(१११८-१९) ब्रह्मा । साम्नी बृहती ।

विश्वव्याचाश्चर्मौषधयो लोमानि नक्षत्राणि रूपम्

१५ १११८

॥ ३७३ ॥ (अथर्व० १३।६।२८) प्राजापत्याऽनुष्टुप् ।

तस्याम् सर्वा नक्षत्रा वशे चन्द्रमसा सह

२८ १११९

॥ ३७४ ॥ (अथर्व० १०।१।२२-२३)

(११२०-२१) नारायणः । अनुष्टुप् ।

केन देवाँ अनु क्षियति केन दैवजनीर्विशः । केनेदमन्यन्नक्षत्रं केन सत् क्षत्रमुच्यते २२ ११२०

ब्रह्म देवाँ अनु क्षियति ब्रह्म दैवजनीर्विशः ।

ब्रह्मेदमन्यन्नक्षत्रं ब्रह्म सत् क्षत्रमुच्यते

२३ ११२१

॥ ३७५ ॥ (अथर्व० ११।६।१०)

(११२२) शन्तातिः । अनुष्टुप् ।

दिवं ब्रूमो नक्षत्राणि भूमिं यक्षाणि पर्वतान् ।

समुद्रा नद्यो वेशन्तास्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

१० ११२२

॥ ३७६ ॥ (अथर्व० १५।१७।४)

(११२३) अथर्वा । साम्युष्णिक् ।

तस्य वात्यस्य । योऽस्य चतुर्थो व्यानस्तानि नक्षत्राणि

४ ११२३

॥ ३७७ ॥ (अथर्व० १९।७।१-५)

(११२४-२४) गार्ग्यः । अष्टुप्, ४ मुरिक् ।

चित्राणि साकं दिवि रोचनानि सरीसृपाणि भुवने ज्वानि ।

तुमिंशं सुमतिमिच्छमानो अहानि गीर्भिः संपर्यामि नाकम्

सुहवमग्रे कृत्तिका रोहिणी चास्तु भद्रं मृगशिरः शमार्द्रा ।

पुनर्वसु सूनृता चारु पुष्यो भानुराश्लेषा अर्यनं मघा मे

पुष्यं पूर्वा फल्गुन्यौ चात्र हस्तश्चित्रा शिवा स्वाति सुखो मे अस्तु ।

रावे विशाखे सुहवानुराधा ज्येष्ठा सुनक्षत्रमरिष्ट मूलम्

३ ११२६

अन्नं पूर्वी रासतां मे अषाढा ऊर्जं देव्युत्तरा आ वहन्तु ।
 अभिजिन्मे रासतां पुण्यमेव श्रवणः श्रविष्ठाः कुर्वतां सुपुष्टिम्
 आ मे महच्छतभिषग् वरीय आ मे द्रुया प्रोष्ठपदा सुशर्म ।
 आ रेवती चाश्वयुजौ भगं म आ मे रयि भरण्य आ वहन्तु

॥ ३७८ ॥ (अथर्व० १९।८।१-५,७) त्रिष्टुप्, १ विराड् जगती ।

यानि नक्षत्राणि दिव्यान्तरिक्षे अप्सु भूमौ यानि नगेषु दिक्षु ।
 प्रकल्पयन्चन्द्रमा यान्येति सर्वाणि ममैतानि शिवानि सन्तु
 अष्टाविंशानि शिवानि शम्भानि सह योगं भजन्तु मे ।
 योगं प्र पद्ये क्षेमं च क्षेमं प्र पद्ये योगं च नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु
 स्वस्तितं मे सुप्रातः सुसायं सुदिवं सुमृगं सुशकुनं मे अस्तु ।
 सुहवमग्रे स्वस्त्यमर्त्यं गत्वा पुनरायाभिनन्दनं
 अनुहवं परिहवं परिवादं परिक्षवम् । सर्वैर्मे रिक्तकुम्भान् परा तान् सवितः सुव
 अपपापं परिक्षवं पुण्यं भक्षीमहि क्षवम् । शिवा ते पाप नासिकां पुण्यगन्ध्याभि मेहताम्
 स्वस्ति नो अस्त्वभयं नो अस्तु नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु

नक्षत्राणि-सहचारी-देवगणः ।

(१) द्यौः, चक्षुः, नक्षत्राणि, सूर्यः ।

॥ ३७९ ॥ (अथर्व० ६।१०।३)

(११३५) शन्तातिः । सास्त्री बृहती ।

दिवे चक्षुषे नक्षत्रेभ्यः सूर्यायार्धिपतये स्वाहा

(२) सूर्यः, चन्द्रः, नक्षत्राणि ।

॥ ३८० ॥ (अथर्व० १५।६।५ - ६)

(११३६-३७) अथर्वा । ५ सास्त्री त्रिष्टुप्, ६ निचृद्बृहती ।

तमृतं च सत्यं च सूर्यश्च चन्द्रश्च नक्षत्राणि चानुव्यचिलन्
 ऋतस्य च वै स सत्यस्य च सूर्यस्य च चन्द्रस्य च नक्षत्राणां च
 प्रियं धाम भवति य एवं वेद

[नक्षत्राणि ।

अदितेः, आदित्यानां च गुणबोधक-पदानि ।

(१) अदितिः ।

अदितिः वा. य. २१, ५; १२

(सर्वत्र)

अदितिः वा. य. २१, ७; १४

अदितिः वा. य. २१, ६; १३

अदितिः १, ८९, १०; १

अदितिः ८, १८, ४; २

अदितिः वा. य. २१, ६-७; १३-१४

अदितिः यथाः उरु अन्तरिक्षम् अ. ७, ६, ४; १६

अदितिः ८, ६७, १२; ८

अदितिः वा. य. २१, ५; १२

अदितिः पत्नी वा. य. २१, ५; १२

अदितिः ८, २५, ३; ३४२

अदितिः स्योनम् वा. य. २९, ४; १५

अदितिः पञ्च १, ८९, १०; १

अदितिः १, ८९, १०; १

अदितिः १, ८९, १०; १

अदितिः वा. य. २९, ४; १५

अदितिः वा. य. २१, ५; १२

अदितिः ८, १८, ४; २ । ६७, १०; ६

अदितिः वा. य. २१, ६; १३

अदितिः १, ८९, १०; १ । वा. य. २१, ६; १३

अदितिः वा. य. २१, ६; १३

अदितिः १, ८९, १०; १

अदितिः वा. य. २१, ५; १२

पिता १, ८९, १०; १

पुत्रः १, ८९, १०; १

पुरुषप्रिया ८, १८, ४; २

पृथिवी वा. य. २१, ६; १३

मतिः ८, १८, ७; ५

मही वा. य. ११, ५६; ९ । २१, ५; १२ । अ. ७, ६, ४; १६ । ऋ. ८, २५, ३; ३४९

माता १, ८९, १०; १ । अ. ७, ६, ४; १६ । ऋ. ८, २५, ३; ३४९

माता मित्रस्य अर्थम्णः वरुणस्य च ८, ४७, ९; ८०

माता सुव्रतानाम् वा. य. २१, ५; १२

राजपुत्रा २, २७, ७; २७

विश्वे देवाः १, ८९, १०; १

(विश्वात्मत्वं आदित्याः) १, ८९, १०; १

शतारित्रा वा. य. २१, ७; १४

सजोषाः वा. य. २९, ४; १५

सुत्रामा वा. य. २१, ६; १३

सु-नौः वा. य. २१, ७; १४

सु-प्रणीतिः वा. य. २१, ५-६; १२-१३

सुमृळीका ८, ६७, १०; ६

सुव्रतानां माता वा. य. २१, ५; १२

सुशर्मा वा. य. २१, ५-६; १२-१३

स्योनं कृष्णानां वा. य. २९, ४; १५

स्वरित्रा वा. य. २१, ६; १३

(२) आदित्याः ।

अदितिः ७, ६६, १०; ५०

अदितिः-अथाः २, २७, ९; २९ । ८, ६७, १३; ९४ ।

अदितिः पुत्राः ८, १८, ५; ३ । १०, १८५, ३; १०६

अदितिः ८, ६७, ७; ९१

अदितिः ८, १९, ३४; ७० । ६७, १३; ९४

१३ दे० [अदिति]

अनवस्थाः २, २७, ९; २२

अनिमिषाः २, २७, ९; २२

अनृतद्विषः ७, ६६, १३; ५३

अनेहसः ८, १८, ५; ३

अमृताः ८, १०१, ६; १०३

अरिष्टाः २, २७, ९; २२

अश्वजिनाः २, २७, २; २२
 अश्वप्रजः २, २७, ९; २९
 आदित्याः-त्यासः वा बहुशः सर्वत्र ।
 आशवः × ८, ४७, ६; ७७
 अरवः २, २७, ३; २३
 अरुचक्रयः ८, १८, ५; ३
 अरुशंसः २, २७, २; २९
 ऊतयः अनेहसः (येषाम्) ८, ४७, १-१३; ७२, ८४
 ऊतयः सुऊतयः (येषाम्) ८, ४७, १-१३; ७२-८४
 ऋणानि चयमानाः २, २७, ४; २४
 ऋतजाताः ७, ६६, १३; ५३
 ऋतनिभ्यः २, २७, १२; ३२
 ऋत (ता) वानः २, २७, ४; २४ । ७, ६६, १३; ५३
 ऋत (ता) वृधः ७, ६६, १०, १३; ५०, ५३
 ऋतस्य रथ्यः ७, ६६, १२; ५२
 क्षत्रियाः ८, ६७, १; ८५
 क्षितीनां मूर्धानः ८, ६७, १३; ९४
 गम्भीराः २, २७, ३; २३
 गोपाः विश्वस्य भुवनस्य ७, ५१, २; ३९ । २, २७, ४; २४
 चयमानाः ऋणानि २, २७, ४; २४
 चर्षणीसहः ८, १९, ३५; ७१
 जगत् स्थाः धारयन्तः २, २७, ४; २४
 तुष्टुवानाः ७, ५१, ३; ४०
 तिस्रः भूमीः धारयन् २, २७, ८; २८
 त्रीणि व्रतानि एषाम् २, २७, ८; २८
 त्री रोचना दिव्या धारयन्त २, २७, २; २९
 त्रीन् यून् धारयन् २, २७, ८; २८
 त्रीणि विदधानि ये येमुः ७, ६६, १०; ५०
 दक्षकृतवः (देवाः विशोष्यम्) वा. य. ४, ११; १६६
 दिप्सन्तः २, २७, ३; २३
 दीर्घ (र्घा) धियः २, २७, ४; २४
 देवाः (बहुषु स्थलेषु वर्तते ।)
 देवत्राः वसवः ७, ५२, १; ४१
 धारपूताः २, २७, २, ९; २२, २९
 धारयन् तिस्रः भूमीः त्रीन् यून् २, २७, ८; २८
 धारयन्त त्री रोचना दिव्या २, २७, २; २९
 धारयन्तः जगत् स्थाः (च) २, २७, ४; २४
 नित्याः २, २७, ११; ३१

पन्थाः एषां अदब्धाः, अनर्वाणः, पायवः, सुगेवृधः ८, १८, ५; २
 पाकत्राः ८, १८, १५; ६२
 पुत्रासः अदितेः ८, १८, ५; २
 पुष्टयः २, २७, ११; ३९
 प्रचेतसः ८, ४७, ४; ७५ । ६७, १७; २८
 बहवः ७, ६६, १०; ५०
 भुवनस्य गोपाः २, २७, ४; २४ । ७, ५१, २; ३९
 भूमीः तिस्रः धारयन् २, २७, ८; २८
 भूर्यक्षाः २, २७, ३; २३
 मनोजाताः (देवाः विशोष्यम्) वा. य. ४, ११; १६६
 मनोयुजः (देवाः विशोष्यम्) वा. य. ४, ११; १६६
 महान्तः ८, ४७, १; ७२
 मूर्धानः क्षितीनाम् ८, ६७, १३; ९४
 यजत्राः २, २७, १६; ३६
 रक्षमाणाः २, २७, ४; २४
 रथ्यः ऋतस्य ७, ६६, १२; ५२
 राजानः २, २७, १, ३, ११; २१, २३, ३१ । ७, ६६, ११; ५१
 ८, १९, ३५; ७१
 राजानः व्रतस्य ७, ६६, ६; ४६
 रिशादसः (अर्यमा) ७, ६६, ७; ४७
 रोचना त्रीणि धारयन्त २, २७, २; २९
 वरूथं, तेषां चित्रं, उक्थ्यम् ८, ६७, ३; ८७
 वसवः ७, ५२, १; ४१ । ८, १८, १५, १७; ६२, ६४
 विदधानि त्रीणि ये येमुः ७, ६६, १०; ५०
 विश्ववेदसः ८, १८, ११; ५८ । ४७, ३; ७४
 व्रतानि त्रीणि विदधे एषाम् २, २७, ८; २८
 शुचयः २, २७, २, ९; २२, २९
 सुदानवः ७, ६६, ५; ४५ । ८, ५८, १२; ५१ । १९, १४;
 ७० । ६७, १६; ९७
 सुमहसः ८, १८, १८; ६५
 सुमृलीकाः ८, ६७, १; ६५
 सुशर्माणः ८, १८, ४; २
 सूरचक्षसः ७, ६६, १०; ५०
 सूरयः ८, १८, ४; २
 स्थाः जगत् धारयन्तः २, २७, ४; २४
 खयशसः ८, ६७, १३; ९४
 खराजः ७, ६६, ६; ४६

× अत्र 'आश, वः' इति पदद्वयमस्ति, किन्तु सायनभाष्ये 'आशवः' इति एकमेव पदम् । 'शीघ्रगमनाः' इत्यर्थेन ग्रहीतव्यम् ।

वृषः ८, १८,

हस्तश्रुतः ८, ६७, ५; ८९
हस्तश्रुतः २, २७, ९; २३

आदित्यः ।

समे समवर्तत विश्वकर्मणः रसात् वा. य. ३१, १७; ११७

हस्तश्रुतः अ. १७, १, १२; १४५

हस्तश्रुतः ब्रह्मणा वावृधानः अ. १७, १, १२; १४५

हस्तश्रुतः सम्भृतः वा. य. ३१, १७; ११७

हस्तश्रुतः १, १५२, ५; २२६

हस्तश्रुतः १, १५२, ५; २२६

हस्तश्रुतः वा. य. १७, ६०; ११५

हस्तश्रुतः वा. य. २३, ५; ११६

हस्तश्रुतः १, १५२, ५; २२६

हस्तश्रुतः वा. य. १७, ६०; ११५

हस्तश्रुतः अ. १७, १, २३; १५६

हस्तश्रुतः अ. १७, १, २३; १५६

हस्तश्रुतः अ. १७, १, २३; १५६

आदित्यः अ. १७, १, २४-२५, १५७-१५८। अ. ४, ३९-

५-६; १७८-१७९। अ. ५। २१, १०; १८०

आदित्यः त्रिविधम् अ. १७, १, १०; १४३

हस्तश्रुतः अ. १७, १, १-५, २-१४, १८; १३४-३८, १४२-

४७, १५१

हस्तश्रुतः अ. १७, १, १-५; १३४-१३८

हस्तश्रुतः वा. य. १७, ६०; ११५

हस्तश्रुतः अ. १७, १, २२; १५५

हस्तश्रुतः अ. १७, १, २२; १५५

हस्तश्रुतः अ. १७, १, २२; १५५

हस्तश्रुतः अ. १७, १, २२; १५५

हस्तश्रुतः अ. १७, १, २२; १५५

हस्तश्रुतः १, १५२, ५; २२६

हस्तश्रुतः वा. य. ३३, ८३; १२०

हस्तश्रुतः १, १५२, ५; २२५

हस्तश्रुतः १, १५२, ५; २२५

हस्तश्रुतः (मित्रावरुणयोः) १, १५२, ३; २२४

हस्तश्रुतः अ. १७, १, १०; १४३

हस्तश्रुतः अ. १७, १, १-५; १३४-१३८

हस्तश्रुतः वा. य. २३, ५; ११६

हस्तश्रुतः १, १५२, ५; २२६

हस्तश्रुतः १, १५२, ५; २२५

हस्तश्रुतः

हस्तश्रुतः

हस्तश्रुतः

हस्तश्रुतः

हस्तश्रुतः

हस्तश्रुतः

तनूः ते, अप्सु, पृथिव्यां, अन्तः अग्नौ,

पवमाने स्वर्गिदि अ. १७, १, १३; १४६

तन्वा अन्तरिक्षं व्यापिष अ. १७, १, १३; १४६

त्रिविधं आरोहन् अ. १७, १, १०; १४३

दिवः गृणानः अ. १७, १, १०; १४३

दिवः मध्ये निहितः वा. य. १७, ६०; ११५

द्रष्टः वा. य. १३, ५; ११३

द्यौः धेनुः तस्याः वत्सः अ. ४, ३९, ६; १७९

नभसी विभासि शोचिषा अ. १७, १, १६; १४९

निहितः दिवः मध्ये वा. य. १७, ६०; ११५

पुरु (रू) वसुः वा. य. ३३, ८१; ११८

पुरुहूतः अ. १७, १, ११; १४४

पृथिव्यैः संभृतः वा. य. ३१, १७; ११७

पृथिविः वा. य. १७, ६०; ११५

प्रजापतिः अ. १७, १, १८; १५१

प्रयन् १, १५२, ४; २२५

प्रियं धाम मित्रस्य वरुणस्य १, १५२, ४; २२५

प्रियधामा अ. १७, १, १०; १४३

बाधमानः सुदिने अ. १७, १, १७; १५०

ब्रध्नः वा. य. २३, ५; ११६

ब्रह्म वा. य. १३, ३; ११२

ब्रह्मणा वावृधानः अदब्धेन अ. १७, १, १२; १४५

ब्राजः अ. १७, १, १०; १५३

महेन्द्रः अ. १७, १, १८; १५१

रसात् सम्भृतः वा. य. ३१, १७; ११७

रुचिः अ. १७, १, २१; १५४

रोचः अ. १७, १, २१; १५४

रोचन्ते रोचना दिवि वा. य. २३, ५; ११६

वसानः अनवपृग्णा वितता १, १५२, ४; २२५

वावृधानः ब्रह्मणा अदब्धेन १७, १, १२; १४५

विद्वान् अ. १७, १, १६; १४९

विभासि नभसी शोचिषा अ. १७, १, १६; १४९

विमानः वा. य. १७, ५९; ११४

विराट् अ. १७, १, २२-२३; १५५-१५६

विवस्वान् वा. य. ८, ५; १११

विश्वजित् अ. १७, १, ११; १४४

विषासहिः अ. १७, १, १-५; १३४-१३८

न गृहीतं वर्तते ।

न गृहीतं वर्तते ।

न गृहीतं वर्तते ।

न गृहीतं वर्तते ।

न गृहीतं वर्तते ।

न गृहीतं वर्तते ।

(१००)

विष्णुः + अ. १७, १, ६-१९; १३९-१५२
 शुक्रः अ. १७, १, २०; १५३
 शोचिषा नभसी विभासि अ. १७, १, १६; १४९
 सन्धनाजितः अ. १७, १, १-१; १३४-१३८
 समुद्रः वा. य. १७, ६०; ११५
 समुद्र इव पप्रथे वा. य. ३३, ८३; १२०
 सम्राट् अ. १७, १, २२-२३; १५५-१५६
 सर्ववित् अ. १७, १, ११; १४४

सहमानः अ. १७, १, १-५; १३४-१३८
 सहस्कृतः ऋषिभिः वा. य. ३३, ८३; १२०
 सहीयान् अ. १७, १, १-५; १३४-१३८
 सहोजितः अ. १७, १, १-५; १३४-१३८
 सासहानः अ. १७, १, १-५; १३४-१३८
 सुपर्णः वा. य. १७, ६०; ११५
 खराट् अ. १७, १, २२-२३; १५५-१५६
 खर्जित् अ. १७, १, १-५; १३४-१३८

अदितेः, आदित्यानां च उपमासूची ।

सुतीर्थं अवर्ततः यथा ८, ४७, ११; ८२ तथा नः सुगमं अनु नेषथ ।
 अक्षी इव २, २७, १६; ३६ तान् रथेन अति येषम् ।
 यथा दिवि आदित्याय अ. ४, ३९, ५; १७८ एवा मल्लं सं नमः ।
 कूलात् इव स्पशः अधि ८, ४७, ११; ८२ अव हि ख्यत ।
 माता पुत्रं यथा उपस्थे वा. य. ११, ५७; १० उखा अग्नि ।
 बन्धात् बद्धं इव ८, ६७, १८; ९९ यत् बन्धात् नः मुमोचति ।
 स्तेनं बद्धं इव ८, ६७, १४; ९५ वृकाणां आस्नात् नः मुमोचत ।
 यथा त्वं भ्राजता भ्राजः अ. १७, १, २०; १५३ एवाहं... भ्राज्यासं ।

युध्यन्त इव वर्मसु ८, ४७, ८; ७९ युष्मे देवाः अपि ससि ।
 यथा रथ्यः ८, ४७, ५; ७६ तथा नः दुर्गाणि अघा परि वृण्वन् ।
 यथा त्वं रुच्या रोचः अ. १७, १, २१; १५४ एवाहं पशुभिः रुचिषी ।
 वयो यथा पक्षा उपरि ८, ४७, २; ७३ अस्मे शर्म विमोचत ।
 वयः न पक्षाः ८, ४७, ३; ७४ तत् शर्म अस्मे अधि वि यन्त ।
 श्वभ्रा इव २, २७, ५; २५ युष्माकं प्रणीतौ दुरितानि परि वृज्याम् ।
 समुद्र इव वा. य. ३३, ८३; १२० पप्रथे ।

आदित्य-मन्त्रान्तर्गता अन्यदेवताः ।

अंशः २, २७, १; २१
 अग्निः ७, ५१, ३; ४० । अ. १६, ४, ४, ७; १३०, १३३ ।
 १७, १, ३०; १६३ । वा. य. ४, ११; १६६
 अदितिः २, २७, ७, १४; १७, ३४ । ७, ५१, २; ३९ ।
 ६६, ६; ४६ । ८, ६७, १४; ९५
 अर्यमा २, २७, १-२, ५-८; २६-२२, २५-२८ । ७, ५१, २;
 ३९ । ६६, ४, ७, ११-१२; ४४, ४७, ५१-५२ । ८, १८,
 ३, २१; ५६, ६८ । १९, ३५; ७१ । ४७, ९; ८० । ६७,
 १, ४; ८६, ८८ । १०, १८५, १; १०४
 अश्विना ७, ५१, ३; ४० । ८, १८, १०; ६०
 आपः अथ. १६, ४, ६; १३२
 आदित्यः वा. य. ८, ३, ५; १०९, १११ । १३, ३, ५; ११२-११३ ।
 १७, ५२-६०; ११४-११५ । २३, ५; ११६ । ३१, १७;
 ११७ । ३३, ८१, ८३; ११८, १२० । अथ. १७, १, १७; १५०
 इन्द्रः २, २७, १४; ३४ । ७, ५१, ३; ४० । ८, १२, २०;
 ६७ । ४७, ५; ७६ । ६७, ८; ९२ । वा. य. ८, २; १०८ ।
 ३३, ८२; ११९ । अथ. १७, १, १-३०; १३४-१६३ ।
 उषसः अथ. १६, ४, ६; १३२ । १७, १, ३०; १६३
 ऋभवः ७, ५१, ३; ४०

दक्षः २, २७, १; २१ । (वरुणविशेषणं वा ।)
 यावापृथिवी २, २७, १५; ३५ । ७, ५२, १; ४१ । ८, १८,
 १६; ६३
 धीः दैवी वा. य. ४, ११; १६६
 पर्वताः अथ. १७, १, ३०; १६३
 पिता ७, ५३, ३; ४३ । [वरुणः प्रजापतिर्वा]
 पितरः अथ. २, १२, ४; १६७
 बृहस्पतिः अथ. १६, ३, ५; १२५
 भगः २, २७, १; २१ । ७, ६६, ४; ४४
 मरुतः ७, ५१, ३; ४० । ८, १८, २१; ६८
 मातरिश्वा अथ. १६, ३, ४; १२४
 मित्रः २, २७, १-२, ६-८, १४; २१-२२, २६-२८, ३१ ।
 ७, ५१, १; ३९ । ५२, २; ४२ । ६६, ४, ७, ११-१२;
 ४४, ४७, ४९, ५१-५२ । ८, १८, ३, २०, २९; ५६, ६७, ६८
 १९, ३५; ७१ । ४७, १, ९; ७२, ८० । ६७, १, ४; ८६
 ८८ । १०, १८१, १; १०४
 मित्रावरुणौ २, २७, ५; २५ । ७, ५२, १; ४१ । अथ. १६,
 ४, ७; १३३
 यमः अथ. १६, ४, ४; १३०

+ अस्यां सूच्यां अर्धवर्गं १७, १, ६-१९; १३९-५२ मन्त्रान्तर्गतानि पदानि विष्ण्वात्मकस्य आदित्यस्य सन्ति ।

वायुः अथ. २०, १३५, ९; १८३
विश्वे देवाः २, २७, १-२, ६-८, १०, १४, १७; २१ २२, २६-
२८, ३०, ३४, ३७ । ७, ५१, २; ३९ । ५२, २; ४२ ।
७, ६६, ४, ९, ११-१२; ४७, ४९, ५१-५२ । ८, १८, ३,
१०-११; ५६, ६७-६८ । १९, ३५, ७१ । ४७, १, २;
७१, ८० । ६७, २, ४; ८६, ८८ । १०, १८५, १; १४४ ।
अथ. १९, १८, ४; १६४
सूर्यः ७, ५२, १, ४१ । ८, १८, १५, १७; ६२, ६४ ।
[देवतान्तरं विशेषणं वा]

वायुः अथ. १६, ४, ४; १३०
विश्वे देवाः ७, ५१, २; ४० । ५२, ३; ४३
विष्णुः वा. य. ८, १; १०७ । अथ. १७, १, ७-१९, २४;
१४०-१५२, १५७
सरस्वती अथ. १६, ४, ४; १३०
सविता ७, ६६, ४; ४४ । ८, १८, ३; ५६
सूर्यः अथ. १६, ४, ४; १३० । १७, १, ६-८, ३०;
१३९-१४१, १६३

(३) मित्रः ।

मनागाः ७, ६६, ४; ४४
अश्विदेवाः ३, ५९, ८; १९२
आदित्यः ३, ५९, ५; १८६, १८९
तमसाः नमसा ३, ५९, ५; १८९
शश्वान् ७, ६२, ३; ५६०
दुक्ते सुशेवः ३, ५९, ५; १८९
वर्षाश्वन् ३, ५९, ६; १९०
रुद्रः ७, ६२, ३; ५६०
तेजः ३, ५९, ६; १९०
ममसा उपसद्याः ३, ५९, ५; १८९
नमसाः ३, ५९, ४; १८८
पनतमः ३, ५९, ५; १८९
मित्रः १, १५१, १; १८४
मित्राणः ३, ५९, १; १८५
मित्रा ३, ५९, ५; १८९
मित्रैः १, १५१, १; १८४ । ३, ५९, ४, १८८
मित्रवचनः ३, ५९, ५; १८९
मित्रा ३, ५९, ४; १८८
मित्राणि ८, २५, १६; ३५२
मित्रा ३, ५९, ४; १८८
मित्राः ३, ५९, ७, १९१
मित्रः ३, ५९, ४; १८८
मित्राः ३, ५९, ४-५; १८८-८९

मित्रावरुणौ ।

मित्रावरुणौ ५, ६२, ६; २४४
मित्रावरुणौ गात्रवितरा ८, २५, ९; ३५५
मित्रावरुणौ ७, ६०, ५; ३१३

अदाम्या ७, ६६, १७; ३४४
अदितिः युवोः माता १०, १२२, ६; ३७६
अदितेः पुत्रा ७, ६०, ५; ३१३
अद्भुतक्रतू ५, ७०, २; २८९
अद्भुता ५, ६६, ४; २७१
अद्भुहा ५, ६८, ४; २८२ । ७, ६६, १८; ३४५
अद्भुहाणा ५, ७०, २; २८९ । सा. २, ८६; ३९७
अनभिद्रुहा २, ४१, ५; २३४
अनृतस्य सेतू ७, ६५, ३; ३३८
अपसं दधाते १, २, ९, १९८
अप्नराजौ १०, १३२, ७, ३७७
अमूरा ७, ६१, ५; ३२५
अर्चनानसं बिभ्रतौ ५, ६४, ७; २६१
अर्या ७, ६५, २; ३३७
अर्वाश्वा १, १३७, ३; २१२
अवोः (अवतोः) ६, ६७, ११; ३०८
अवसा ६, ६७, १; २९८
असुरा १, १५१, ४; २१६ । ८, २५, ४; ३५०
असुरा देवानाम् ७, ६५, २; ३३७
अस्तुतः वां कः ? ५, ६७, ५; २७८
अस्मन्ना १, १३७, १, ३; २१०, २१२
अस्मयू १, १५१, ७; २१९
अहणीयमाना ५, ६२, ६; २४४
आतुजी ७, ६६, १८; ३४५
आदित्या १, १३६, ३; २०५ । २, ४१, ६; २३५ । ५, ६७, १;
२७४ । ६९, ४; २८७ । ७, ६०, ४; ३१२
आशाथे कर्तुं बृहन्तम् १, २, ८; १९७

(१०२)

इन्द्रा वा. य. १०, १६; ३७३
 इषस्पती ५, ६८, ५; २८३
 ईयचक्षसा ५, ६६, ६; २७३
 ईशाना ५, ७१, २; २९३
 उग्रा-प्रः ५, ६३, ३; २५० । १, १५२, २; २२३
 उपस्तुता यज्ञेयज्ञे १, १३३, १; २०३
 उरुक्षया १, २, ९; १९८
 उरुचक्रयः ५, ६७, ४; २७७
 उरुचक्षसा ८, १०१, २; ३६९
 उरुशंस ३, ६२, १७; २३७
 ऋता ६, ६७, ४; ३०१
 ऋतस्य गोपा ५, ६३, १; २४८ । ७, ६४, २; ३३२
 ऋतस्य ज्योतिषस्पती १, २३, ५; २००
 ऋतपेशस् (वरुणः) ५, ६६, १; २६८
 ऋत (ता) वाना १, १३६, ४; २०६ । १५१, ४-८; २१६,
 २२० । ५, ६५, २; २६३ । ६७, ४; २७७ । ८, २५, १, ४,
 ७-८, ३४७, ३५०, ३५३-५४
 ऋत (ता) वृषा १, २, ८; १९७ । २३, ५; २०० । २, ४१, ४;
 २३३ । ३, ६२, १८; २३८ । ५, ६५, २; २६३ । ७, ६६, १९;
 ३४६
 ऋतरस्पृशाः ५, ६७, ४; २७७
 ऋतरस्पृशा १, २, ८; १९७
 कवी १, २, ९; १९८
 काव्या ५, ६६, ४; २७१
 क्रतुं बृहन्तं आशाये १, २, ८; १९७
 क्षत्रिया ७, ६४, २; ३३२ । ८, २५, ८; ३५४
 क्षयन्ता दिवि पृथिव्या रजसः ७, ६४, १; ३३१
 गात्रुवित्तरा अक्षयश्चित् ८, २५, ९; ३५५
 गृणाना जमदग्निना ३, ६२, १८; २३८
 गोपा ऋतस्य ५, ६३, १; २४८ । ७, ६४, २; ३३२
 गोपा विश्वस्य ८, २५, १; ३४७
 घृतयोनी ५, ६८, २; २८०
 घृतस्नु १, १५३, १; २२२
 घृताची धियं साधन्ता १, २, ७; १९६
 घृताजौ ६, ६७, ८; ३०५
 घृतासुती १, १३६, १; २०३ । २, ४१, ५; २३५
 घोरा ६, ६७, ४; ३०१
 चर्षणीनां घर्तारा ५, ६७, २; २७५
 चिक्रिवांसः ७, ६०, ७; ३१५

चिकेतति नः १, ४३, ३; २०२
 चेतारः अनृतस्य भूरेः ७, ६०, ५; ३१३
 जगन्वांसा परि बाहोः ५, ६४, १; २५५
 जज्ञाना १, २३, ४; १९९
 जनेजने ऋतवाना ५, ६५, २; २६३
 जाग्रवांसः दिवेदिवे १, १३६, ३; २०३
 जायमाना ६, ६७, ४; ३०१
 जीरदानू ५, ६२, ३; २४१ । ७, ६४, २; ३३२
 जुषाणा ७, ६६, १९; ३४६
 ज्येष्ठतमा विश्वेषां सताम् ६, ६७, १; २९८
 ज्योतिषस्पती ऋतस्य १, २३, ५; २००
 ज्ययसानौ ५, ६६, ५; २७२
 तनया ८, २५, २; ३४८
 तना ८, २५, २; ३४८
 तनूपा ७, ६६, ३; ३४३
 तुरासः ७, ६०, ८; ३१६
 तुविजाता १, २, ९; १९८ । ७, ६६, १; ३४१
 दक्षं दधाते १, २, ९; १९८
 दक्षपितरा ७, ६६, २; ३४२
 दक्षस्य सूनु ८, २५, ५; ३५१
 दधाते दक्षं अपसम् १, २, ९; १९८
 दर्शतः ५, ६५, १; २६२
 दानुनस्पती १, १३६, ३; २०५ । २, ४१, ६; २३५
 दिवस्पती ५, ६३, ३; २५०
 दिविस्पृशा १, १३७, १; २१०
 दिव्या ५, ६९, ४; २८७
 दीर्घश्रुत् (वरुणः) ८, २५, १७; २६०
 दीर्घश्रुत्तमा ५, ६५, २; २६३ । ८, १०१, २; ३६९
 दुरत्येत ७, ६५, ३; ३३८
 दूळभासः ७, ६०, ६; ३१४
 देवः ७, ६४, ३; ३३३
 देवा-वौ १, १५२, ७; २२८ । ५, ६६, १; २६८ । ६७, १;
 २७४ । ६८, २, ४; २८०, २८२ । ७, ६०, १२; ३२० ।
 ६१, १, ७; ३२१, ३२७ । ६३, २; ३४२ । ८, २५, १, ४;
 ३४७, ३५०
 युमत ७, ६६, १७; ३४४
 द्वा ६, ६७, १; २९८
 धर्तारा चर्षणीनाम् ५, ६७, २; २७५
 धारयत्क्षिती १०, १३२, २; ३७२

रत्नस्यः श्री रोचना त्रीन् धून् त्रीणि रजांसि ५,६२,१; २८४
रत्नस्य रजसः रोचनस्य पार्थिवस्य ५,६९,४; २८७
रत्नस्य ५,६२,५; २४३
रत्नस्य ८,२५,१,८; ३४८,३५४ । १,१५,६; ९१२
रत्नस्य ५,७२,२; २९६
रत्नस्य महः शवसः ८,२५,५; ३५१
रत्नस्य हयमाना ६,६७,३; ३००
रत्नस्य हिता ८,२५,७; ३५३
रत्नस्य ५,६२,५; २४३
रत्नस्य ३,६२,१७; २३७
रत्नस्य १,१५,१,९; २२१ । ५,६४,७; २६१ । ८,१०१,२;
३६९
रत्नस्य १,१३६,१; २०३; ८ । २५,९; ३५५
रत्नस्य ८,२५,२; ३५५
रत्नस्य पृथिव्याः ५,६३,३; २५०
रत्नस्य सुष्ठुते ५,६२,६; २४४
रत्नस्य १,१५,१; २२२
रत्नस्य १,२,७; १९६ । ७,६५,१; ३३६
रत्नस्य १,२३,४; १९९ । ५,६६,४; २७१ । ८,२५,१;
३४७
रत्नस्य ६,६७,४; ३०१
रत्नस्य ५,६५,३; २६४
रत्नस्य पती ५,६३,३; २५०
रत्नस्य ५,७१,२; २९३
रत्नस्य १,१५,१,८; २२०
रत्नस्य ७,६६,२; ३४२ । ८,२५,३; ३४२
रत्नस्य (वरुणः) ५,६६,१; २६८
रत्नस्य देवेषु ५,६८,२; २८०
रत्नस्य वा. य. १६,२१; ३८०
रत्नस्य १,१३,६; २०१
रत्नस्य [मित्रः] ७,६२,४; ३२८
रत्नस्य ६,६७,२-३; २९९-३००
रत्नस्य ५,७१,१; २२२
रत्नस्य अर्चनानसम् ५,६४,७; २६१
रत्नस्य ७,६५,३; ३३८
रत्नस्य ६,६७,४; ३०१ । ८,२५,४; ३५०
रत्नस्य ८,६०,११; ३१२
रत्नस्य ५,६८,१; २७९
* अस्य स्थाने ' मित्रा ' इति सामवेदपाठः ३९७,३२८ ।

महित्वा ६,६७,३; ३००
महे [वरुणाय] ५,६६,१; २६८
माता युवोः अदितिः १०,१३२,६; ३७६
मित्रराजाना ५,६२,३; २४१
मित्रावरुणा मित्रः वरुणः च वा (प्रायशः सर्वत्र)
मीढवान्-द्विवांसः १,१३६,६; २०८ । ८,२५,१४; ३५७
मृळ्यन्ती स्वादिष्टम् १,१३६,१; २०३
यज्ञिया ८,२५,१; ३४७
यमिष्ठा ६,६७,१; २९८
यातयज्जनः-ना १,१३६,३; २०५ । ५,७२,२; २९६
युवाना ७,६२,५; ३२९
रक्षमाणा ७,६१,३; ३२३
रक्षमाणा उर्वीम् ५,६२,५; २४३
रक्षमाणा व्रतं अजुर्यम् ५,६९,१; २८४
रथ्या ८,२५,२; ३४८
राजा (अर्यमा) ७,६४,१; ३३१
राजानः ८,१०१,५; ४०१
राजाना १,१३६,३; २०६ । १,१३७,१; २१० । २,४१,
६; २३५ । ५,६२,६; २४४ । ६५,३; २६३ । ७,६४,१,४;
३३२,३३४ । ८,१०१,२; ३६९ । २,३६,६; ४००,२२४
रिशादसा १,२,७; १९६ । ५,६४,१; ५५ । ६६,१; २६८ ।
५,६७,२; २७५ । ७१,१; २१२ । वा. य. ३३,७२; ३८२
रिशादा अथ. २,२८,२; ३८३
रीति आपा (रीत्यापा) ५,६८,५; २८३
रुद्रा X ५,७०,२-३; २८९-२९०
वरुणा ५,६२,३; २४१ । ७,६१,१; ३२१ प्रतियोग्यपेक्षया
द्विवचनम् ।
वार्षिष्ठक्षत्रा ८,१०१,२; ३६९
वाजिना ६,६७,४; ३०१
वा (व) वृधाना अमर्ति क्षत्रियस्य ५,६९,१; २८४
विचर्षणी ५,६३,३; २५०
विचेतसा १०,१३२,६; ३७६
विपश्चिता ५,६३,७; २५४ । अथ. ६,९७,२; ३२४
विश्वा ७,६१,५; ३२५
विश्वस्य गोपा ८,२५,१; ३४७
विश्वजिन्वा ६,६७,७; ३०४
विश्ववेदसः-सा ५,६७,३; २७६ । ७,२५,३; ३४९
वृषणा १,१५,१,२-३; २१४-२१५ । ७,६०,२-१०; ३१७-
३१८ । ७,६१,५; ३२५

(१०४)

वृषभा ५, ६३, ३; २५०
 वृष्टिवावा ५, ६८, ५; २८३
 वृष्ट्याधिपती ५, २४, ५; ३११
 शमसाः ७, ६०, ५; ३१३
 शुचित्रता ३, ६२, १७; २३७
 श्रेष्ठवर्चसा ५, ६५, २; २६३
 संविदानौ अथ. २, २८, २; ३८३
 सजोषाः-षसः ७, ६०, ४; ३१२ । ८, २५, १४; ३५७
 सत्पती ५, ६५, २; २६३
 सत्याः ५, ६७, ४; २७७
 सत्यधर्माणा ५, ६३, १; २४८
 सम्राजा १, २३६, १; २०३ । २, ४१, ६; २३५ । ५, ६२, २-३, ५; २४९-५०, २५२ । ६८, २; २८० । ८, २५, ४, ७; ३५०, ३५३
 सर्वताता + ५, ६९, ३; २८६
 सहसः महः नपाता ८, २५, ५; ३५१
 साधन्ता वृत्ताची धियम् १, २, ७; १९६
 साम्राज्यः (वरुणः) ८, २५, ७; ३५३
 सिन्धुपती ७, ६४, १; ३३२
 सुकतुः (वरुणः) ८, २५, २; ३४८

सुकतु ३, ६२, १६; २३६ । ६६, १; २६८ । ७, ६१, २, ३२२ । ८, २५, ५, ८; ३५१, ३५४
 सुक्षत्रः (वरुणः) ७, ६४, १; ३३१
 सुचेतुना ५, ६४, २; २५६ । ६५, ३; २६४
 सुजातः-ता ७, ६४, १, ३३१ । ८, २५, ३; ३४८
 सुदक्षा ७, ६६, २; ३४२
 सुदानू-नवः ५, ६२, ५; २४७ । ६, ६७, २; २९२ । ७, ६१, ३; ३२३ । ५, ६७, ४; २७७
 सुनीथासः ५, ६७, ४; २७७
 सुमृलीकः १, १३६, ६; २०८
 सुषुम्ना १०, १३२, २; ३७२
 सूनू दक्षस्य ८, २५, ५; ३५१
 सप्रदानू ८, २५, ५; ३५१
 सेतु अनृतस्य ७, ६५, ३; ३३८
 स्तिपा ७, ६६, ३; ३४३
 स्वर्णरः ५, ६४, २; २५५
 स्वर्देशा ५, ६३, २; २४९
 हिता नमसे ८, २५, ७; ३५३
 हिरण्यरूपा वा. य. १०, १६; ३७१
 ह्यमाना नमसा ६, ६७, ३; ३००

अर्यमादेवताया गुणबोधकपदानि । [मित्रावरुण-सहकारित्वेन]

अदितेः पुत्रः ७, ६०, ५; ३१३
 अनृतस्य चेता (वृ) ७, ६०, ५; ३१३
 अरिः ७, ६४, ३; ३३३
 अर्यः x ७, ६४, ३; ३३३
 ऋतस्त्वृश-क् ५, ६७, ४; २७७
 ऋतावान् ५, ६७, ४; २७७
 चेता अनृतस्य ७, ६०, ५; ३१३
 जनेजने सुनीयः ५, ६७, ४; २७७
 दूढभाः ७, ६०, ६; ३१४
 युक्षः १, १३६, ६; २०८

यातयज्जनः १, १३६, ३; २०५
 रिशादाः ७, ६६, ७; ४७
 विश्ववेदाः ५, ६७, ३; २७६
 शमः ७, ६०, ५; ३१३
 सजोषाः ७, ६०, ४; ३१२
 सत्यः ५, ६७, ४; २७७
 सुजातः ७, ६४, १; ३३१
 सुदानुः ५, ६७, ४; २७७
 सुनीयः जनेजने ५, ६७, ४; २७७

+ सर्वताता ' सर्वतातौ यजे ' इति सायनभाष्यम् ।

x ' अरिः अर्यः च ' इति द्वे पदे वर्जयित्वा एतानि सर्वाणि पदानि मित्रावरुणाभ्यां सहिताया अर्यमादेवताया गुणबोधकानि सन्ति ।

निपातभागवरुणदेवताया गुणबोधकपदानि ।

०८। ७,६१,१
 अंशुं आप्याययन् अ. ७,८१,६; ६८४
 वासितः ७,८१,६; ६८४
 अक्षितं मक्षयन् ७,८१,६; ६८४
 आदिसवान् अ. १२,८,४; १६४
 आप्याययन् अंशुम् अ. ७,८१,६; ६८४
 श्रुतवान् ७,६२,३; ५६०
 २९१। ७, ८१, ६; ६८४
 तं भाः भुवनस्य अ. ७,८१,६; ६८४
 वन्दः ७,६२,३; ५६०

तुविजातः २,२७,१; २१
 दक्षः २,२७,१; २१
 पिता ७,५२,३; ४३
 मक्षयन् अक्षितम् अ. ७,८१,६; ६८४
 भुवनस्य गोपाः अ. ७,८१,६; ६८४
 महान् ७,५२,३; ४३। ८,६७,४; ८८
 यजत्रः ७,५२,३; ४३
 राजा अ. ५,२१,११; १८१
 रेवान् ८,४७,९; ८०

मित्रस्य, मित्रावरुणयोश्च उपमासूची ।

अग्निः न शुक्रः ८,२५,१९; ३६२ सूर्यः समिधानः आहुतः ।
 अश्विनः ५,७२,१; २२५ वयं गीर्भिः आ जुहुमः ।
 अयः न नावा ७,६१,३; ३३८ ऋतस्य पथा दुरिता तरेम ।
 अयसा इव जनान् ६,६७,३; ३०० श्रुधीयतः जनान् सं यतथः ।
 अथा न ६,६७,४; ३०१ वाजिना पूतवन्धू ऋता ।
 अथाजानो इव ५,६२,७; २४५ स्थूणा अयः वि भ्राजते ।
 अयसा इव ६,६७,६; ३०३ दंहेथे योः सानुम् ।
 यो न गुरि १,१५१,४; २१६ आभुवं अपः उप युजाथे ।
 उदगीः इव १,१५१,५; २१७ सूर्यं निम्हचः उपसः स्वरन्ति ।
 मित्रं न सोदः ८,२५,१५; ३५८ प्रतिघ्नन्ति भूर्णयः ।
 यो न १०,१३२,६; ३७६ भूमिः पयसा पुपूतनि ।
 अंशुं न वाधरीम् १,१३७,३; २१२ (अध्वर्यवः) अंशुं दुहन्ति ।
 अथा इव ५,६७,३; २७६ व्रता सश्चिरे ।
 अयः इव युजुषा ५,६२,५; २४३ उर्वी रक्षमाणा वर्धत् ।

बाहुता न ८,१०१,९; ३६९ दंसना ता रथ्यतः ।
 मनसः न प्रयुक्तिम् १,१५१,८; २२० युवां प्रथमा यज्ञैः अज्जते ।
 मित्रं न १,१५१,१; १८४ (मित्रः) अग्निं शिष्या अप्पु जीजनन् ।
 मित्रासः न १,१५१,२; २१४ ऋत्विजः प्र दधिरे ।
 यूथा इव ७,६०,३; ३११ जनिमानि सं चष्टे ।
 यूथा इव ८,२५,७; ३५३ वृद्धतः अग्निं पश्यतः ।
 रश्मा इव ६,६७,१; २९८ यमिष्ठा जनान् सं यमतुः ।
 बाहोः व्रजा इव परि जगन्वासा ५,६४,१; २५५ वः ऋचा हवामहे ।
 मानुषं व्रता इव ५,६६,२; २६९ दर्शतं धायि ।
 शूरः न ५,६३,५; २५२ मरुतः रथं युज्जते ।
 शुक्रः सोमः न ७,६४,५; ३३५ एष स्तोमः अयामि ।
 शुक्रः सोमः न ७,६५,५; ३४० एष स्तोमः अयामि ।
 खर् न ५,६६,२; २६२ दर्शतं धायि ।
 मानुषः होता न १,१५३,३; २३१ सः रातह्न्यः विदथे वां ।

मित्रावरुणदेवतामन्त्रेषु निपातदेवताः ।

अग्निः १,१३६,६-७; २०८-२०९
 अदितिः ५,६९,३; २८६। ७,६०,८; ३१६। ८,२५,३;
 ३४२। ७,६१,४; ३२८×
 अयं सिन्धुः ८,२५,१४-१५; ३५७-३५८
 अयसा १,१३६,२-३,५-६; २०४-५,२०७-८। ५,६७,१
 ३-४; २७४,२७६-२७७। ७,६०,४-६; ३१२-३१४।
 ६२,६; ३३०। ६४,१,३; ३३१,३३३
 अश्विना ८,२५,१४-१५; ३५७-३५८
 अदित्यः १,१५२,३-५; २२४-२२६
 अयः १,१३६,६; २०८। ८,२५,१४-१५; ३५७-३५८
 अयसा १,१३६,६; २०८
 अयसा ७,६२,४; ३२८

पर्जन्यः ५,६३,४,६; २५१,२५३
 पृथिवी ५,६६,५; २७२
 भगः १,१३६,२,६; २०४,२०८
 मरुतः १,१३६,७; २०९। ५,६३,५-६; २५१-२५२।
 ८,२५,१४-१५; ३५७-३५८
 रोदसी १,१३६,६; २०८
 वायुः ७,६२,४; ३२९। ६४,५; ३३५। ६५,५; ३४०
 विश्वे देवाः १,१३६,४,७; २०६,२०९। ६,६७,५; ३०२
 विष्णुः ८,२५,१४-१५; ३५७-३५८
 सूर्यः ७,६०,२; ३१०
 सोमः १,१३६,६; २०८

× अत्र 'अदिते' इति पदम् । तत्सायनैः 'यावाभूम्यो,' प्रत्येकं संबोधनं गृह्यते ।
 १४ दे० [अदिति]

(१०६)

अदितः, आदित्यानां च

(४) सविता ।

अदाभ्यः ४,५३,४; ४३७
 अद्रोघवाक् अ. ६,१,२; ५२०
 अधिपतिः प्रसवानाम् अ. ५,२४,१; ५१८
 अन्तरिक्षप्राः ७,४५,१; ४७३
 अपसेधन् रक्षसः यातुधानान् १,३५,१०; ४१८
 अपां नपात् १,२२,६; ४०४
 अप्रयुच्छन् अहनी एति ५,८२,८; ४५९
 अमर्ति उर्वी पृथ्वीं सृजानः ७,३८,२; ४६८
 अमर्ति उरुर्चीं विश्रयमाणः ७,४५,३; ४७५
 अयोहनुः ६,७१,४; ४६४
 अरमतिः २,३८,४; ४२३
 अर्वाङ् १,३५,१०; ४१८
 अवन् सदा १,२४,३; ४०७
 अश्वैः वहमानः ७,४५,१; ४७३
 असुरः १,३५,१०; ४१८ । ४,५३,१; ४३४
 आवर्तमानः कृष्णेन रजसा १,३५,२; ४१०
 आसवः वा. य. २२,१३; ५०६
 इयानः ७,३८,६; ४७२
 ईशानः वार्याणाम् १,२४,३; ४०७
 उपवाच्यः ४,५४,१; ४४१
 ऊर्ध्वः विश्वस्य श्रुष्टये २,३८,२; ४२१
 ऋभुमान् वा. य. ३८,८; ५१६
 ओण्योः (वर्तमानः) वा. य. ४,२५; ४८८
 कल्पः वा. य. ४,२५; ४८८
 कविः ४,५३,२; ४३५ । ५,८१,२; ४४८ । वा. य. ४, २५; ४८८
 कविक्रतुः वा. य. ४,२५; ४८८
 केतपूः वा. य. ९,१; ४९१
 गन्धर्वः वा. य. ९,१; ४९१
 गर्भः देवानाम् वा. य. ३७,१४; ५१४
 गृणानः प्रतिदोषम् १,३५,१०; ४१८
 ग्रास्पतिः २,३८,१०; ४२९
 चित्रमालुः १,३५,४; ४१२
 चित्रराधाः अ. १,२६,२; ५३१
 चेतन् वा. य. २२,११; ५०४
 चेत्ता पदम् १,२२,५; ४०३
 जगत् निवेशयन् प्रसुवन् अकतुभिः ४,५३,३; ४३६

जगतः वशी ४,५३,६; ४३९
 जनः दैव्यः ४,५४,३; ४४३
 जास्पतिः ७,३८,६; ४७२
 तदपाः २,३८,१; ४२०
 (तेजः) आपृणन् ४,५३,२; ४३५
 (तेजः) प्रथयन् ४,५३,२; ४३५
 दधत् रत्नं दक्षं आर्युषि पितृभ्यः अ. ७,१४,४; ५२३
 दधत् रत्ना दाशुषे वार्याणि १,३५,८; ४१६
 दधानः कृष्णा रजांसि तविषाम् १,३५,४; ४१२
 दधानः हस्ते नर्या पुरुणि ७,४५,१; ४७३
 दमूनाः अ. ७,१४,४; ५२३
 दाता राधांसि १,२२,८; ४०६
 दिवः धर्ता ४,५३,२; ४३५ । १०,१४९,४; ४८३
 दिवः रातिः ७,३८,५; ४७१
 दिव्यः वा. य. ९,१; ४९१
 देवः [बहुषु स्थलेषु]
 देवानां गर्भः वा. य. ३७,१४; ५१४
 देवता १,२२,५; ४०३
 दैव्यः १,३५,५; ४१३ । २,३८,६; ४२५ । ४,५४,४;
 ४४४
 दैव्यः जनः ४,५४,३; ४४३
 द्रापि पिशङ्गं प्रति मुञ्चते ४,५३,२; ४३५
 धर्ता दिवः ४,५३,२; ४३५ । १०,१४९,४; ४८३
 धर्ता भुवनस्य ४,५३,२; ४३५
 धियः २,३८,१०; ४२९
 धृतव्रतः ४,५३,४; ४३७
 नमस्यः ७,३८,३; ४६८
 नराशंसः २,३८,१०; ४२९
 निवेशनः ४,५३,६; ४३९
 निवेशयन् अमृतं मर्त्यं च १,३५,२; ४१०
 निवेशयन् जगत् अकतुभिः ४,५३,३; ४३६
 निवेशयन् भूम ७,४५,१; ४७३
 नृचक्षा १,२२,७; ४०५ । १०,१३९,२; ४७८ ।
 वा. य. ३०,४; ५०८
 पतिः प्रजानाम् वा. य. ३७,१४; ५१४
 पदं चेत्ता १,२२,५; ४०३
 परिज्मा अ. ७,१४,४; ५२३

परिभूः त्रिः अन्तरिक्षं महित्वना ४,५३,५; ४३८
मित्र मतीनाम् वा. य. ३७,१४; ५१४
जुष्टिः २,३८,१०; ४२९
उरु (रु) वसुः ७,३८,१; ४६७
सुवर्णभक्तिः ७,४५,४; ४७६
रु ५,८१,५; ४५१
सुवर्ण आ (तेजः) ४,५३,२; ४३५
सुवर्णः रातिः ७,३८,५; ४७१
सुवर्णः २,३८,२; ४२१
सुवर्णः ४,५३,१; ४३४
सुवर्णः पतिः वा. य. ३७,१४; ५१४
सुवर्णः ४,५३,२; ४३५
सुवर्णः युगानः १,३५,१०; ४१८
सुवर्णः (तेजः) ४,५३,२; ४३५
सुवर्णः अधिपतिः अ. ५,२४,१; ५१८
सुवर्णः (वी) ता ४,५३,६; ४३९ । वा. य. १०,३०; ५२९
सुवर्णः जगत् अक्तुभिः ४,५३,३; ४३६
सुवर्णः भूम ७,४५,१; ४७३
सुवर्णः वा. य. ४,२५; ४८८
सुवर्णः अप विश्वा दुरिता १,३५,३; ४११
सुवर्णः शिथिरा ७,४५,२; ४७४
सुवर्णः रायः १०,१३९,३; ४७९
सुवर्णः ५,८१,१; ४४७
सुवर्णः अ. ७,२६,१; ५२०
सुवर्णः ४,५३,६; ४३९
सुवर्णः १,३८,१०; ४२९ । ३,६२,११; ४३२ । ५,८२,१,३;
४५१,४५४ । ७,३८,१,६; ४६७,४७२ । वा. य. ८,७;
४२०
सुवर्णः १,२४,५; ४०९
सुवर्णः धर्ता ४,५३,२; ४३५
सुवर्णः निवेद्यन् प्रसुवन् च ७,४५,१; ४७३
सुवर्णः ६,७१,१; ४६१
सुवर्णः वा. य. ४,२५; ४८८
सुवर्णः (ती) विद् वा. य. २२,१२; ५०५
सुवर्णः पिता वा. य. ३७,१४; ५१४
सुवर्णः ६,७१,४; ४६४
सुवर्णः ५,८१,४; ४५०
सुवर्णः १,३५,३-४; ४११-४१२ । ६,७१,४; ४६४
सुवर्णः १,३५,१०; ४१८

सुवा ६,७१,१; ४६१ । अ. ६,१,२; ५२०
रक्षसः अपसेधन् १,३५,१०; ४१८
रजसः विधर्मणि (स्थितः) ६,७१,१; ४६१
रत्नधाः वा. य. ४,२५; ४८८
रातिः वा. य. २२,१३; ५०६
रातिः दिवः वृथिव्याः ७,३८,५; ४७१
राधांसि दाता १,२२,८; ४०६
राधसः विभक्ता १,२२,७; ४०५ । वा. य. ३०,४; ५०८
रायः बुधः १०,१३९,३; ४७९
वन्यः ४,५४,१; ४४१
वरेण्यः ५,८१,२; ४४८ । अ. ७,१४,४; ५२३
वशी जगतः स्थातुः उभयस्य ४,५३,६; ४३९
वसूनां संगमनः १०,१३९,३; ४७९
वसुपतिः ७,४५,३; ४७५
वहमानः अश्वैः ७,४५,१; ४७३
वाजवान् वा. य. ३८,८; ५१६
वार्याणां ईशानः १,२४,३; ४०७
विचक्षणः ४,५३,२; ४३५
विचर्षणिः १,३५,९; ११०
विपश्चित् ५,८१,१; ४४७
विप्रः ५,८१,१; ४४७
विभक्ता वसोः चित्रस्य राधसः १,२२,७; ४०५ । वा. य.
३०,४; ५०८
विभुमान् वा. य. ३८,८; ५१६
विश्रयमाणः उरुचौ अमतिम् ७,४५,३; ४७५
विश्वदेवः ५,८२,७; ४५८
विश्ववारः १०,१४९,४; ४८३
शचीपतिः अ. १२,१६,१; ५२४
संगमनः वसूनाम् १०,१३९,३; ४७९
सत्पतिः ५,८२,७; ४५८ । वा. य. २२,१३; ५०६
सत्यधर्मा १०,१३९,३; ४७९
सत्यप्रसवः वा. य. १०,२८; ४९३
सत्यसवः ५,८२,७; ४५८ । वा. य. ४,२५; ४८८
सत्यस्य सनुः अ. ६,१,२; ५२०
सदा (अ) वन् १,२४,३; ४०७
सविता [प्रायशः सर्वत्र]
सह (हा) वा ७,४५,३; ४७५
सिन्धौ अन्तः अ. ६,१,२; ५२०

(१०८)

सुकतुः ६,७१,१; ४६१। वा. य. ४,२५; ४८८
 सुजिह्वः ७,४५,४; ४७६
 सुत्रामा वा. य. २०,७०; ५०२
 सुदक्षः ६,७१,१; ४६१
 सुनीथः १,३५,१०; ४१८
 सुपाणिः ७,४५,४; ४७६। वा. य. ११,६३; ४९९
 सुबाहुः वा. य. ११,६३; ४९९
 सुमति (ती) वृध् वा. य. २२,१२; ४०५
 सुमृत्कोकः १,३५,१०; ४१८
 सुरत्नः ७,४५,१; ४७३
 सुवानः आ मर्तमोजनं नृभ्यः ७,३८,२; ४६८
 सुशेवः अ. ६,१,२; ५२०
 सूर्यरश्मिः १०,१३९,१; ४७७
 सृजानः उर्वी पृथ्वी अमतिम् ७,३८,२; ४६८
 स्तोम्यः १,२२,८; ४०६
 स्यातुः वशी ४,५३,६; ४३२
 खड्गुरिः वा. य. ११,६३; ४९९
 खः वा. य. ४,२५; ४८८
 खवान् १,३५,१०; ४१८
 खाधीः ५,८२,८; ४५९
 हरिकेशः १०,१३९,१; ४७७
 हविष्पतिः वा. य. २०,७०; ५०२
 हव्यः ७,३८,१; ४६७
 हिरण्य-अक्षः १,३५,८; ४१६
 हिरण्य-जिह्वः ६,७१,३; ४६३
 हिरण्य-पाणिः १,२२,५; ४०३। ३५,२; ४१७। ६,७१,
 ४; ४६४। ७,३८,२; ४६८। वा. य. ४,२५; ४८८
 हिरण्य-हस्तः १,३५,१०; ४१८

सवितुः अश्वाः।

शितिपादः १,३५,५; ४१३
 शुभ्रौ (हरी) १,३५,३; ४११
 श्यावाः १,३५,५; ४१३
 हरी १,३५,३; ४११

सवितुः बाहू।

दिवः अन्तान् अनष्टाम् ७,४५,२; ४७४
 वृहन्ता ७,४५,२; ४७४
 शिथिरा ७,४५,२; ४७४
 सुप्रतीका ६,७१,५; ४३५
 हिरण्यया ६,७१,१,५; ४६१,४६५। ७,४५,२; ४७४।
 पृथु-पाणिः २,३८,२; ४२१
 सु-पाणिः ७,४५,४; ४७६
 हिरण्यः-पाणिः १,२२,५; ४०३
 सु-बाहुः वा. य. ११,६३; ४९९
 हिरण्य-हस्तः १,३५,१०; ४१८

सवितुः रथः।

अभीवृत् १,३५,४; ४१२
 कृशनैः विश्वरूपः १,३५,४; ४१२
 वृहन् १,३५,४; ४१२
 हिरण्ययः १०,३५,२; ४१०
 हिरण्यशम्यः १,३५,४; ४१२
 हिरण्यप्रउगः १,३५,५; ४१३

सवितुः रश्मिः।

असुरः १,३५,७; ४१५
 गभीरवेपाः १,३५,७; ४१५
 सुनीथः १,३५,७; ४१५
 सुपर्णः १,३५,७; ४१५
 सूर्य-रश्मिः १०,१३९,१; ४७७
 पूर्ण-गभस्तिः ७,४५,४। ४७६

✓ सवितादेवताया उपमासूची।

अश्वं इव १०,१४२,१; ४८० शुनिं अशुक्षत् अन्तरिक्षम्।
 यथा आक्षिरसः हिरण्यस्तूपः १०,१४९,५; ४८४ एवा त्वा अवसे।
 आणि न रथ्यम् १,३५,६; ४१४ अमृत आधि तस्थुः तिस्रः यावः।
 इन्द्रः न १०,१३९,३; ४७९ सत्यधर्मा समरे तस्थौ।
 उपवक्ता इव बाहू ६,७१,५; ४६५ उद् अयान् सविता।

गावः इव ग्रामम् १०,१४९,४; ४८३ सविता नः एतु।
 देवः इव १०,१३९,३; ४७९ सविता सत्यधर्मा।
 पतिः इव जायाम् १०,१४९,४; ४८३ सविता नः एतु।
 यूयुधिः इव अश्वान् १०,१४२,४; ४८३ सविता नः एतु।
 वाश्रा इव वत्सं सुमना १०,१४२,४; ४८३ घर्ता दिवः नः नेतु।
 सोमस्य इव अंशुम् १०,१४९,५; ४८४ प्रति जागराहम्।

(५) सूर्यः ।

आरोहन् वृहतः पाजसः परि १०,३७,८; ५७७
इन्द्रः वा. य. ३३,३५; ६०३
उत्तमम् [ज्योतिः] १,५०,१०; ५४३ । १०,१७०,३; ५८९
उत्तरम् [ज्योतिः] १,५०,१०; ५४३
उत्तरां दिवं आरोहन् १,५०,११; ५४४
उद्यन् १,५०,११; ५४४ । अ. ७,१३,१-२; ६१७-६१८ ।
अ. १७,१,३०; १२३
उद्यन् दिवेदिवे १०,३७,७; ५७६
उरुचक्षाः ७,६३,४; ५६४
ऋतम् ४,४०,५; ५५५
ऋतजाः ४,४०,५; ५५५
ऋतसत् ४,४०,५; ५५५
ऋतुन् विदधत् नवः जायसे [चन्द्रः] अ. ७,८१,१; ६७९
ओजः उरु सह अच्युतं यस्य १०,१७०,३; ५८९
ओषधीनां गर्भः दर्शतः १,१६४,५२; ६३०
ओषधीनां दर्शतः १,१६४,५२; ६३०
कर्तुभिः सुकृतः ७,६२,१; ५५८
कवीनां मतिः साम. ४५८; ६२८
कृतः ७,६२,१; ५५८
केतुः ७,६३,२; ५६२ । १०,३७,१; ५७०
केतुः अह्नाम् अ. ७,८१,२; ६८०
केतवः [रश्मयः] वा. य. ८,४०; ५९७
कृत्वा ७,६२,१; ५५८
क्रीडन्तौ शिशू [सूर्यः चन्द्रमाः च] ७,८१,१; ६७९
गर्भः अपाम् १,१६४,५२; ६३०
गोजाः ४,४०,५; ५५५
गोपाः वा. य. ३७,१७; ६०८
गोपाः विश्वस्य स्थातुः जगतश्च ७,६०,२; ३१०
गौः अ. २०,४८,४; ६८२
घर्मः वा. य. ३७,१८; ६०९
चक्षाः मित्रस्य वरुणस्य १०,३७,१; ५७०
चक्षुः तत् ७,६६,१६; ५६७ । वा. य. ३३,२४; ६०६
चक्षुः मित्रस्य वरुणस्य अग्नेः १,११५,१; ५४७
चक्षुः मित्रस्य वरुणस्य ७,६३,१; ५६१
चक्षुषां अभिपतिः अ. ५,२४,९; ६१६
चक्षुषेचक्षुषे मयः १०,३७,८; ५७७
चरन् पथिभिः आ च परा च वा. य. ३७,१७; ६०८

अ. ७,८१,३; ६८१
अ. ७,८१,६; ६८४
अ. ७,८१,६; ६८४
१,११५,१; ५४७
४,४०,५; ५५५
७,६०,१; ५५७
अ. ६,५२,१; ६२५
४,४०,५; ५५५
वा. य. १५,५८; ५९८
अ. ५,२४,९; ६१६
वा. य. ५,३३; ५९६
वा. य. ३७,१७; ६०८
१,१५५,१; ५४७
७,६३,३; ५६३
अ. ७,८१,३; ६८१
४,४०,५; ५५५
१,१६४,५२; ६३०
१०,८८,१६; ६७४
४,४०,५; ५५५
[घर्मः] वा. य. ३७,१६; ६०७
[ज्योतिः] १०,१७०,३; ५८८
७,६३,२; ५६२
अ. ७,८१,१; ६७९
७,६०,१; ५५७
[ज्योतिः] १०,१७०,३; ५८८
८,१०१,१२; ५६९
अ. १,५०,७; ५४०
अ. ७,८१,२; ६८०
१०,३७,५; ५७४
वा. य. ३७,१७; ६०८
१,११५,१; ५४७
८,१०१,११; ५६८ ।
१०,८८,११; ६६९
१०,१७०,१; ५८७
अ. ७,८१,२; ६८०
१,५०,११; ५४४

चरतः पूर्वापरं मायया (सूर्यः चन्द्रमाः च) अ. ७, ८१, १; ६७२
 चरिष्णु [अग्निस्वर्यौ] १०, ८८, ११; ६६९
 जगतः गोपाः ७, ६०, २; ३१०
 जगतः तस्थुषश्च आत्मा १, ११५, १; ५४७
 जगतः तस्थुषः पतिः ७, ६६, १५; ५६६
 जनानां प्रसवि (वी) ता ७, ६३, २; ५६२
 जन्मानि पश्यन् १, ५०, ७; ५४०
 जातवेदाः १, ५०, १; ५३४
 जायमानः नवःनवः अ. ७, ८१, २; ६८०
 जुषाणः वा. य. ३, १०; ५९५
 ज्योतिः १०, १७०, २; ५८८ वा. य. ३, ९; ५९४ ।
 अ. १६, ९, ३; ६२६ । साम. ४५८; ६२८
 ज्योतिः उत्तमम् १, ५०, १०; ५४३
 ज्योतिः उत्तरम् १, ५०, १०; ५४३
 ज्योतिषा ज्योतिः १०, १७०, ३; ५८९
 ज्योतिः महि विभ्रत् १०, ३७, ८; ५७७
 ज्योतिः ते विभु अदाभ्यम् ८, १०१, १२; ५६९
 ज्योतिष्कृत् १, ५०, ४; ५३७
 तपोजाः [घर्मः] वा. य. ३७, १६; ६०७
 तमसः धर्ता [घर्मः] वा. य. ३७, १६; ६०७
 तमसः परि १, ५०, १०; ५४३
 तरणिः ७, ६३, ४; ५६४ । १०, ८८, १६; ६७४
 तर्पयन् वृष्टिभिः १, १६४, ५२; ६३०
 तस्थुषः जगतः आत्मा १, ११५, १; ५४७
 तस्थुषः जगतः पतिः ७, ६६, १५; ५६६
 दधत् आयुः यज्ञपतौ १०, १७०, १; ५८७
 दर्शः अ. ७, ८१, ४; ६८२
 दर्शतः अ. ७, ८१, ४; ६८२
 दर्शतं वपुः ल्यत् ७, ६६, १४; ५६५
 दर्शतः ओषधीनाम् १, १६४, ५२; ६३०
 दर्शतः गर्भं ओषधीनाम् १, १६४, ५२; ६३०
 दस्युहन्तमम् [ज्योतिः] १०, १७०, २; ५८८
 दिवः धरुणः १०, १७०, २; ५८८
 दिवः धर्ता [घर्मः] वा. य. ३७, १६; ६०७
 दिवस्पुत्रः १०, ३७, १, ५७०
 दिवा रोचमानः ७, ६०, १; ५५८
 दिव्यः १, १६४, ५२; ६३०
 दुरोणसत् ४, ४०, ५; ५५५
 दूरे अर्थः ७, ६३, ४; ५६४

दूरे दृश् १०, ३७, १; ५७०
 दृशः साम. ४५८; ६२८
 देवः १, ५०, १, ८; ५३४, ६४१ । ७, ६३, १, ३; ५६१, ५६३ ।
 ८, १०१, ११-१२; ५६८-६९ । १०, ३७, १, ५७०
 देवः [घर्मः] वा. य. ३०, १६, १८; ६०७, ६०९
 देवजातः १०, ३७, १; ५७०
 देवः देवत्रा १, ५०, १०; ५४३
 देवयजनी [पृथिवी] वा. य. ३, ५; ५३३
 देवश्रुत् [घर्मः] वा. य. ३७, १८; ६०९
 देवहितम् ७, ६६, १६; ५६७ । वा. य. ३६, २४; ६०६
 देवानां चित्रं अनीकम् १, ११५, १; ५४७
 देवानां धर्ता [घर्मः] वा. य. ३७, १६; ६०७
 देवानां पुरोहितः ८, १०१, १२; ५६९
 देवेभ्यः भागं विदधत् अ. ७, ८१, २; ६८०
 द्यौः (दिवे-चतुर्थी) १, १३६, ६; २०८
 द्यावापृथिवीवान् अ. १२, १८, ५; ६२०
 द्विषन्तं मह्यं रन्धयन् १, ५०, १३; ५४६
 धनजित् [ज्योतिः] १०, १७०, ३; ५८९
 धरुणः दिवः १०, १७०, २; ५८८
 धर्ता तपसः [घर्मः] ३७, १६; ६०७
 धर्ता दिवः [घर्मः] ३७, १६; ६०७
 धर्ता देवानाम् [घर्मः] ३७, १६; ६०७
 धर्मन् १०, १७०, २; ५८८
 नवःनवः जायमानः अ. ७, ८१, २; ६८०
 निजूर्वन् रक्षांसि अ. ६, ५२, १; ६२५
 नृचक्षाः ७, ६०, २; ३१०
 नृषत् (सद्) ४, ४०, ५; ५५५
 पतंगः अ. २०, ४८, ६; ६९१
 पतिः जगतः तस्थुषः च ७, ६६, १५; ५६६
 पतिः युधाम् अ. ७, ८१, ३; ६८१
 पतिः भुवां विश्वासाम् [घर्मः] वा. य. ३७, १८; ६०९
 पतिः मनसः विश्वस्य [घर्मः] वा. य. ३७, १८; ६०९
 पतिः वचसः विश्वस्य [घर्मः] वा. य. ३७, १८; ६०९
 पतिः वचसः सर्वस्य [घर्मः] वा. य. ३७, १८; ६०९
 परि यातः अर्णवम् [सूर्याचन्द्रमसौ] अ. ७, ८१, १; ६५५
 पश्यन् जन्मानि १, ५०, ७; ५४०
 पाजसः बृहतः पारे आरोहन् १०, ३७, ८; ५७७
 पावकः १, ५०, ६; ५३९
 पिता शरस्य अ. १, ३, ५; ६१०

देवानाम् ८,१०१,१२; ५६९
 वरतः मायया [सूर्याचन्द्रमसौ] अ. ७,८१,१; ६७९
 अ. २०,४८,४; ६८९
 अ. १०,८८,६; ६६४
 (वी) ता जनानाम् ७,६३,२; ५६२
 अ. १०,३७,५; ५७४
 ज्योतिः १०,३७,८; ५७७
 [ज्योतिः] १०,१७०,२-३; ५८८-५८९
 १,१६४,५२; ६३०। १,१३६,६; २०८
 साम. ४५८; ६२८
 अ. २,३६,५; ६२३
 १०,२७,८; ५७७
 विद्या विचष्टे अ. ७,८१,१; ६७९
 विद्यायां पतिः [धर्मः] वा. य. ३७,१८; ६०९
 १०,१७०,३; ५८९। वा. य. ८,४०; ५९७
 अ. ७,६३,४; ५६४। १०,८८,१६; ६७४
 वा. य. ८,४०; ५९७
 देवेषु वा. य. ८,४०; ५९७
 खीनाम् साम. ४५८; ६२८
 विश्वस्य वा. य. ३७,१८; ६०९
 अ. १०,३७,८; ५७७
 १०,३७,१; ५७०
 ७,६३,२; ५६२। ८,१०१,११-१२; ५६८-६९
 महा ८,१०१,१२; ५६९
 श्रवसा ८,१०१,१२; ५६९
 १०,१७०,३; ५८९
 अ. २०,४८,५; ६९०
 ८,१०१,१२; ५६९
 साधारणः ७,६३,१; ५६१
 वरुणस्य चक्षुः १०,३७,१; ५७०
 वरुणस्य अग्नेः चक्षुः १,११५,१; ५४७
 वरुणस्य चक्षुः ७,६३,१; ५६१
 १,५०,११; ५४४। १०,३७,७; ५७६
 [अग्निमयौ] १०,८८,११; ६६९
 अहः अकनुभिः १,५०,७; ५४०
 अ. ७,८१,३; ६८१
 अ. ६,५२,१; ६२५
 १,५०,१३; ५४६
 ७,६३,४; ५६४

रैः अनुमयमानः ७,६३,३; ५६३
 रोचनः १०,८८,५; ६६३
 रोचमानः दिवा ७,६२,१; ५५८
 वचस्य विश्वस्य पतिः वा. य. ३७,१८; ६०९
 वचस्य सर्वस्य पतिः वा. य. ३७,१८; ६०९
 वपुः दर्शतं त्यत् ७,६६,१४; ५६५
 वरसत् ४,४०,५; ५५५
 वरुणः १,५०,६; ५३९
 वरुणस्य चक्षाः १०,३७,१; ५७०
 वरुणस्य चक्षुः १,११५,१; ५४७। ७,६३,१; ५६१
 वर्चः वा. य. ३,९; ५९४
 वर्चोदाः [रश्मिः] वा. य. २,२६; ५२२
 वसानः सध्रीचीः विषूचीः वा. य. ३७,१७; ६०८
 वसुः ४,४०,५; ५५५
 वाजसातमम् [ज्योतिः] १०,१७०,२; ५८८
 वातजुतः १०,१७०,१; ५८७
 वायसः [सरस्वान्] १,१६४,५२; ६३०
 विचक्षणः १,५०,८; ५४१। १०,३७,८; ५७७
 विचष्टे विश्वा भुवना अ. ७,८१,१; ६७९
 विभ्राट् १०,१७०,१-२; ५८७-५८८
 विभ्राजन् ज्योतिषा १०,१७०,४; ५९०
 विभ्राजमानः ७,६३,३; ५६३
 विश्वकर्मन् [ज्योतिः] १०,१७०,४; ५९०
 विश्वचक्षाः १,५०,२; ५३५। ७,६३,१; ५६१
 विश्वजित् (ज्योतिः) १०,१७०,३; ५८९
 विश्वदर्शतः १,५०,४; ५३७
 विश्वदृष्टः अ. ६,५२,१; ६२५
 विश्वदेव्यावत् ज्योतिः १०,१७०,४; ५९०
 विश्वभ्राट् १०,१७०,३; ५८९
 विश्वस्य गोपाः ७,६०,२; ३१०
 विश्वानरः वा. य. ३३,३४; ६०२
 विश्वा भुवनानि आ बिभ्रत् १०,१७०,४; ५९०
 विषूचीः सध्रीचीः वसानः वा. य. ३७,१७; ६०८
 वृत्रहा १०,१७०,२; ५८८। वा. य. २३,३५; ६०३
 वृष्टिभिः तर्पयन् १,१६४,५२; ६३०
 वेदिषत् ४,४०,५; ५५५
 व्योमसत् ४,४०,५; ५५५
 शतवृष्ण्यः अ. १,३,५; ६१०
 शं अह्ना घृणेन चक्षसा भानुना हिमा १०,३७,१०; ५७९

(११२)

शरस्य पिता अ. १,३,५; ६१०
शिखः क्रीडन्तौ (सूर्याचन्द्रमसौ) अ. ७,८१,१; ६७९
शुक्रम् ७,६६,१६; ५६७ । वा. य. ३३,२४; ६०६
शुचिषद् ४,४०,५; ५५५
शोचिष्केशः १,५०,८; ५४१
श्रवसा महान् ८,१०१,१२; ५६९
श्रेष्ठः (रश्मिः) वा. य. २,२६; ५९२
श्रेष्ठम् (ज्योतिः) १०,१७०,३; ५८९
सज्जः देवेन सवित्रा वा. य. ३,१०; ५९५
सज्जः उषसा इन्द्रवत्या वा. य. ३,१०; ५९५
सत्यम् (ज्योतिः) १०,१७०,३; ५८८
सध्रीचीः वसानः (घर्मः) वा. य. ३७,१७; ६०८
सपत्नहा (ज्योतिः) १०,१७०,३; ५८८
समः ७,६२,१; ५५८
समन्तः समग्रः अ. ७,८१,४; ६८२
सरस्वान् १,१६४,५२; ६३०
सविता ७,६३,३; ५६३ । १०,१५८,२-३; ५८३-८४ ।
वा. य. ३,१०; ५९५ । ऋ. १०,८५,९,१३; ६३५,६३९
सहस्रमानवः साम. ४५८; ६२८
साधारणः मानुषाणाम् ७,६३,१; ५६१
सुकृतः कर्तुभिः ७,६२,१; ५५८
सुपर्णः १,१६४,५२; ६३०
सुभगः ७,६३,१; ५६१
सुभृतम् [ज्योतिः] १०,१७०,३; ५८८
सुषेहशः १०,१५८,५; ५८६
सूरः १,५०,२,९; ५३५,५४२ । ७,६३,५; ६३१
सूर्यः (प्रायः सर्वत्र) ७,६०,२; ३१०
सोमस्य अंशः अ. ७,८१,३; ६८१
खः वा. य. १,११; ५९१ । अ. १६,९,३; ६२६ ।
अ. २०,४८,४; ६८९
खयम्भूः वा. य. २,२६; ५९२
हंसः ४,४०,५; ५५५
हरिकेशः १०,३७,९; ५७८
होता ४,४०,५; ५५५

सूर्यस्यः रश्मयः ।

अपः वसानाः १,१६४,४७; ५५४
ऋतस्य सद्नात् आववृत्रन् (ये) १,१६४,४७; ५५४
केतवः १,५०,३; ५३६
केतवः ये देवं वहन्ति १,५०,१; ५३४
कृष्णं नियानं हरयः १,१६४,४७; ५५४
देवाः उदिताः १,११५,६; ५५२

यावः (बुध्निः-तृतीया) अ. २०,४८,६; ६९१
भ्राजन्तः यथा अग्रयः १,५०,३; ५३६ ।
रश्मयः सप्त १,५०,३; ५३६ । वा. य. ८,३; ५९७ ।
अ. ७,१०७,१; ६८५

सुपर्णाः १,१६४,४७; ५५४
हरितः १,११५,५; ५५१

सूर्यस्य द्विषन्नाशनी शक्तिः ।

अर्चिः अ. २,२१,३; ६१३
तपः अ. २,२१,१; ६११
तेजः अ. २,२१,५; ६१५
शोचिः अ. २,२१,४; ६१४
हरः अ. २,२१,२; ६१२

सूर्यस्य अश्वानां गुणबोधकपदानि ।

अनुमायासः १,११५,३; ५४९
अश्वः १,११५,३; ५४९
आशुः ७,६६,१४; ५६५
एतग्वाः १,११५,३; ५४९
एतशः ७,६३,२; ५६२ । ७,६६,१४; ५६५
एतशाः १०,३७,३; ५७२
केतवः १,५०,१; ५३४
चित्राः १,११५,३; ५४९
देवः ७,६६,१४; ५६५
धूर्ध्रु युक्तः ७,६६,१४; ५६५
नप्ल्यः रथस्य १,५०,२; ५४२

चन्द्रमसः सहचारित्वे सूर्यस्य गुणबोधकपदानि ।

आधिपतिः अ. ६,१०,३; ११३५
अह्नां केतुः १०,८५,१९; ९७२
उषसां अग्रं एति १०,८५,१९; ९७२
चक्षोः (अस्य पुरुषस्य) अजायत ऋ. १०,९०,१३; ९७१ ।
वा. य. २१,१२; ९७८
चरते एकाकी वा. य. २३,१०; ९७७
नमस्यन्तः १,११५,३; ५४९
पतराः १०,३७,३; ५७२
भद्राः १,११५,३; ५४९
युक्तः धूर्ध्रु ७,६६,१४; ५६५
रथस्य नप्ल्यः १,५०,२; ५४२
शुन्ध्युवः १,५०,९; ५४२
सप्त १,५०,८-९; ५४१-५४२
खयुक्तयः १,५०,२; ५४२ । ७,६६,१५; ५६६
स्वसारः ७,६६,१५; ५६६
हरितः १,११५,३-४; ५४९-५० । ७,६६,१५; ५६६

सूर्यसहचारी-वैश्वानराग्नेः गुणबोधकपदानि ।

(ऋ० १०, ८८, १-१९; ६५९-७७)

६९१

८, ३; ५९७।

नः ।

दानि ।

५६५

वोधकपदानि

९०, १३; १७१।

५६६

६, १५; ५६६

अत्राः ३; ६६१
 सुवर्गः १३; ६७१
 यस्मिन् यस्स १३; ६७१
 अविषा यन् १२; ६७०
 अत्राः यस्मिन् विश्वा भुवनानि ९; ६६७
 अत्राः यस्मिन् अविषा पृथिवी यां च ९; ६६७
 अत्राः १; ६५९
 अत्राः १४; ६७२
 अत्राः ४-५; ६६२-६३
 अत्राः ८; ६६६
 अत्राः (यम्-द्वितीया) १३; ६७१
 अत्राः ७; ६६५
 अत्राः १; ६५९
 अत्राः १४; ६७२
 अत्राः ७; ६६५

देवजुष्टः ४; ६६२
 पचति यः विश्वरूपा ओषधीः १०; ६६८
 प्रथमः होता ४; ६६२
 बृहन् ३, १३; ६६१, ६७१
 भुवनस्य मूर्धनि अतिष्ठः ५; ६६३
 मूर्धा भुवा भवति नक्तम् ६; ६६४
 यज्ञः ८; ६६६
 यज्ञियः ५; ६६३
 रोदसिप्राः ५, १०; ६६३, ६६८
 विभावा ७; ६६५
 वेदयं पृथिवी द्यौः आपः ८; ६६६
 समिद्धः ७; ६६५
 सूक्तवाक् ८; ६६६
 स्वर्वित् १; ६५९
 होता प्रथमः ४; ६६०

✓ सूर्यदेवताया उपमासूची ।

सूर्यः अत्रेति विद् सूर्यः ५, ४०, ५; ५५६ भुवनानि अर्दीधयुः ।
 सूर्यः अत्रेति विद् सूर्यः १, ५०, ३; ५३६ । वा. य. ८, ४०; ५९७
 केतवः रश्मयः वि अदृश्रम् ।
 सूर्यः ७, ६३, १; ५६१ देवः तमांसि समविष्यक् ।
 सूर्यः अत्रेति विद् सूर्यः २०, ४८, २; ६८७ ता अर्षन्ति शुभ्रयः ।
 सूर्यः अत्रेति विद् सूर्यः १, ५०, २; ५३५ नक्षत्राः अक्षुभिः अप यन्ति ।
 सूर्यः अत्रेति विद् सूर्यः ३, ५; ५९३ अहं भूयासम् ।
 सूर्यः अत्रेति विद् सूर्यः ३, ५; ५९३ अहं भूयासम् ।
 सूर्यः अत्रेति विद् सूर्यः ३, ५; ५९३ अहं भूयासम् ।
 सूर्यः अत्रेति विद् सूर्यः ३, ५; ५९३ अहं भूयासम् ।

मर्यः न योषाम् १, ११५, २; ५४८ सूर्यः उषसं पश्चात् अभ्येति ।
 यथा युवानः मत्सथः वा. य. ३३, ३४; ६०२ तथा नः विश्वं मनीषा ।
 अभि वत्सं न धेनवः अ. २०, ४८, १; ६८६ त्वा अभि गिरः ।
 श्येनः न दीयन् ७, ६३, ५; ६३१ पाथः अनु एति ।
 श्रायन्तः इव सूर्यम् वा. य. ३३, ४१; ६०४ वयं विश्वा इन्द्रस्य ।
 यथा सूर्यः... नक्षत्राणां अ. ७, १३, १; ६१७ एवा स्त्रीणां वर्चः ।
 उद्यन् सूर्यः इव अ. ७, १३, २; ६१८ द्विषतां वर्चः आ ददे ।
 सुपर्णः वसतेः इव अ. ६, ८३, १; ६७८ अपचितः प्र पतत ।

सूर्यदेवतामन्त्रेषु निपातदेवतानां गुणबोधकपदानि ।

सूर्यः १, १६४, ४६; ५५३ । ७, ६२, २-३; ५५२-५६०
 (चन्द्रः श्रुतावान् । (५६०))
 सूर्यः (पृथिवः) १०, १५८, १; ५८२
 सूर्यः १, ११५, ६; ५५२
 सूर्यः ७, ६२, २; ५५२
 सूर्यः १०, ३७, ६; ५७५
 सूर्यः १५ दै० [अदिति]

इन्द्रः १, १६४, ४६; ५५३ । १०, ३७, ८; ५७५ । अ. ७,
 ८१, ६; ६८४ । भुवनस्य गोपाः अक्षितः अक्षितं भक्षयन्,
 अंशु आप्याययन् ।
 चन्द्राः ७, ६२, ३; ५६० (अयं शब्दः मित्रावरुणाग्नीनां विशेष-
 षणं वा ।)
 देवाः १, ११५, ६; ५५२ । १०, ३७, ५, ११-१२; ५७४, ५८०-८१

(११४)

द्यौः १,११५,६; ५५२
 यावापृथिवी १०,३७,६; ५७५
 धाता १०,१५८,३; ५८४
 पर्वतः १०,१५८,३; ५८४
 पृथिवी १,११५,६; ५५२
 बृहस्पतिः अ. ७,८१,६; ६८४। भुवनस्य गोपाः अक्षितः
 अक्षितं भक्षयन्, अंशुं आप्याययन्।
 मरुतः १०,३७,६; ५७५
 मातरिश्वा १,१६४,४६; ५५३

मित्रः १,११५,६; ५५२। १६४,४६; ५५३। ७,६०,१;
 ६२,२-३; ५५७, ५५२-५६० ऋतावान् चन्द्रः ५६०
 यमः १,१६४,१६; ५५३
 वरुणः १,११५,६; ५५२। १६४,४६; ५५३। ७,६०,१;
 ५५७। ६२,२,३; ५५२-६०। ऋतावान् चन्द्रः ५६०।
 अ. ७,८१,६; ६८४। भुवनस्य गोपाः अक्षितः अक्षितं
 भक्षयन्, अंशुं आप्याययन्।
 वातः (अन्तरिक्षदेवता) १०,१५८,१; ५८२
 सिन्धुः १,११५,६; ५५२

(६) [१] त्वष्टा ।

अग्निः अ. ११,६,३; ७१४
 अचिष्टः वा. य. २०,४४; ६९६
 अन्धसः जुजुषाणः २,३६,३; ७०३, ९२१
 अपाकः वा. य. २०,४४; ६९६
 इन्द्राय जुष्टं दधत् वा. य. २०,४४; ६९६
 कर्ता बहोः वा. य. २९,९; ६९७
 प्रावः १,१५,३; ९०९
 जजान वीरं यः वा. य. २९,९; ६९७
 जनान विश्वं भुवनं यः वा. य. २९,९; ६९७
 जायत आशुश्चः अर्वा यस्मात् वा. य. २९,९; ६९७
 जुजुषाणः अन्धसः २,३६,३; ७०३, ९२१
 त्वष्टा [बहुशः सर्वत्र।]
 दुहित्रे बहवुं युनक्ति अ. ३,३१,५; ६९८
 देवः वा. य. ६,७; ६२४

नेष्टा १,१५,३,९; २०९,९१५
 प्रजया संरराणः वा. य. ८,१७; ६९५
 बहोः कर्ता वा. य. २९,९; ६९७
 भूरिरेताः वा. य. २०,४४; ६९६
 यजन् वा. य. २०,४४; ६९६
 रत्नधाः १,१५,३; ९०९
 वृषा वा. य. २०,४४; ६९६
 संरराणः प्रजया वा. य. ८,१७; ६९५
 सुजनिमा १०,१८,६; ६९२
 सुदत्रः वा. य. २,२४; ६९३
 सुमद्रणः २,३६,३; ७०३, ९२१
 सुयुजः अ. ५,२६,८; ६९९
 सुहवः २,३६,३; ७०३, ९२१

[२] धाता ।

अग्निः अ. ११,६,३; ७१४
 देवः अ. ११,६,३; ७१४
 धातादेवताया उपमासूची ।
 यथा अपरः पूर्वं न १०,१८,५; ७०५ एवा एषां आर्युषि ।

यथा अहानि पूर्वं अनु १०,१८,५; ७०५ एवा एषां आर्युषि ।
 यथा ऋतवः ऋतुभिः साधु यन्ति १०,१८,५; ७०५
 एवा एषां आर्युषि ।
 वा इव १८,३,२६; ७०७ बाहुच्युता पृथिवी उपरि ।

[३] पूषा ।

अजाध्वः १,१३८,४; ७३१। ६,५८,२; ७७२
 अदाम्यः १०,२६,७; ७८५
 अनपच्युतः १०,२६,८; ७८६
 अनष्टपशुः १०,१७,३; ७७५

अनष्टवेदाः ६,५४,८; ७५६
 अन्त्युतिः १,१३८,१; ७२८
 अप्रयुच्छन् १०,१७,५; ७७७
 अवीनां वासोवायः १०,२६,६; ७८४

× पूष्णो अथाः— अजासः, निशुम्भाः ६,५५,६; ७६४ ।

१५३। ७,६०,१;
चन्द्रः ५३०

५३। ७,६०,१;
चन्द्रः ५६०।
अक्षितः अक्षितं

२

वा एषा आवृणोति ।
१; ७०५

उपरि ।

अश्वः रथानाम् १०,२६,५; ७८३
अश्वानः १,१३८, ३-४; ७३०-३१
आशुनिः १,२३,१३-१४; ७१५-१६। १३८,४; ७३१।
३,६१,७; ७३२। ६,४८,१६; ७३५। ५३,३,८-९;
७४१,७४६-४७। ५५,१,३; ७५९, ७६१। १०,१७,५;
७७७
आश्वः विराणाम् १०,२६,४; ७८२
आश्वीषमाणायः पतिः १०,२६,६; ७८४
आश्वानः श्रवः ६,५८,३; ७७३
आः १०,२६,७; ७८५
आः पुष्टानाम् १०,२६,७; ७८५
आः वृषा १०,२६,३; ७८०
आः आता ६,५५,५; ७६३
आः ६,५४,८; ७५६
आः ६,५८,४; ७७४
आः ६,५४,८; ७५६
आः राघसः महः ६,५५,२; ७६०
आः ६,५३,४; ७४२
आः १,१३८,३; ७३०
आः रथी ६,५५,१; ७५९
आः १०,२६,५; ७८३
आः ६,५५,२; ७६०
आः ६,५३,७; ७४५
आः कृतः ६,५८,४; ७७४। वा. य. ३४,४२; ७८८
आः कामेन ६,५८,४; ७७४। वा. य. ३४,४२; ७८८
आः भुवनस्य १०,१७,३; ७७५
आः ६,५५,६; ७६४
आः ससुः ६,५५,४-५; ७६२-६३
आः ६,५८,४; ७७४
आः १,१३८,१; ७२८
आः १,४२,१०; ७२७
आः ६,५८,४; ७७४
आः १,४२,५; ७२२। ६,५६,४; ७६८
आः सुवन्धुः ६,५८,४; ७७४
आः मातुः ६,५५,५; ७६३
आः १,४२,१; ७१८। १३८,२; ७२२। ६,५५,६; ७६४।
आः ५८,२; ७७२। १०,२६,४; ७८२
आः यः स्यादैव अदुः ६,५८,४; ७७४
आः ६,४८,१९; ७३८

आरा रायः ६,५५,३; ७६१
आयं जिन्वः ६,५८,२; ७७२
आवतोधीवतः सखा ६,५५,३; ७६१
नपात् विमुचः १,४२,१; ७१८। ६,५५,१; ७५९
नियुद्धः १०,२६,१; ७७९
नावः यस्य हिरण्ययोः अन्तः समुद्रे चरन्ति अन्तरिक्षे चरन्ति
६,५८,३; ७७३
नौभिः यः सूर्यस्य दूत्यां याति ६,५८,३; ७७३
पतिः शुचस्य १०,२६,६; ७८४
पतिः शुचायाः १०,२६,६; ७८४
पतिः आश्वीषमाणायः १०,२६,६; ७८४
पथस्पतिः ६,५३,१; ७३९
परः मल्लैः ६,४८,१९; ७३८
पशुपाः ६,५८,२; ७७२
पुरुष्टुतः ६,५६,४; ७६८
पुष्टीनां इनः १०,२६,७; ७८५
पूषा [प्रायः सर्वत्र।]
पृथिव्याः सुवन्धुः ६,५८,४; ७७४
प्रजानन् १०,१७,५-६; ७७७-७८
प्रत्यर्धिः यज्ञियानाम् १०,२६,५; ७८३
भुवना संचक्षाणः ६,५८,२; ७७२
भुवना संपश्यति ३,६१,२; ७३४
भुवनस्य गोपाः १०,१७,३; ७७५
भुवने विश्वे अर्पितः ६,५८,२; ७७२
आता इन्द्रस्य ६,५५,५; ७६३
मखः १,१३८,१; ७२८
मघवा ६,५८,४; ७७४
मतीनां साधनः १०,२६,४; ७८२
मनुहितः १०,२६,५; ७८३
मन्तुमत् (मः-संबो) १,४२,५; ७२२। ६,५६,४; ७६८
मयोमूः १,१३८,१-२; ७२८-२९
मल्लैः परः ६,४८,१९; ७३८
महः राघसः ईशानः ६,५५,२; ७६०
मातुः दिधिषुः ६,५५,५; ७६३
यज्ञानां प्रत्यर्धिः १०,२६,५; ७८३
यावयत्सखः विप्रस्य १०,२६,५; ७८३
रथानां अश्वद्वयः १०,२६,५; ७८३
रथी ऋतस्य ६,५५,१; ७५२
रथीतमः ६,५५,२; ७६०। ५६,२-३; ७६३-६७

(११६)

रखिवान् १,१३८,४; ७३१
राघसः महः ईशानः ६,५५,२; ७६०
रायः धारा ६,५५,३; ७६१
राशिः वसोः ६,५५,३; ७६१
वचस्या कृतः वा. य. ३४,४२; ७८८
वसोः राशिः ६,५५,३; ७६१
वाजस्पत्यः ६,५८,२; ७७२
वाजानां पतिः १०,२६,७; ७८५
वाजी ६,५५,४; ७६२
वासोवायः अवीनाम् १०,२६,६; ७८४
विद्वान् १०,१७,३; ७७५
विप्रः १०,२६,२; ७८०
विप्राणां आधवः १०,२६,४; ७८२
विमुचः नपात् १,४२,१; ७१० । ६,५५,१; ७५९
विश्वा अभि विपश्यति ३,६२,९; ७३४
विश्वस्य अर्थिनः सखा १०,२६,८; ७८६
विश्वे भुवने अर्पितः ६,५८,२; ७७२
विश्वसौभगः १,४२,६; ७२३

वृषा १०,२६,३; ७८०
शृण्वन् ६,५४,८; ७५६
शुचस्य पतिः १०,२६,६; ७८४
शुचायाः पतिः १०,२६,६; ७८४
श्रवः इच्छमानः ६,५८,३; ७७३
श्रुतः आरात् ६,५६,५; ७६९
सखा ६,५५,२,५; ७६०, ७६३ । १०,२६,७; ७८५
सखा विश्वस्य अर्थिनः १०,२६,८; ७८६
समः देवैः श्रिया ६,४८,१; ७३०
सर्ववीरः १०,१७,५; ७७७
साधनः मतीनाम् १०,२६,४; ७८२
सुबन्धुः दिवः पृथिव्याः च ६,५८,४; ७७४
सूरः ७,५६,३; ७६७
स्वधः ६,५८,४; ७७४
स्वधावान् ६,५८,१; ७७१
स्वसुः जारः ६,५५,४-५; ७६२, ६३
स्वस्तिदाः १०,१७,५; ७७७
हिरण्यवाशीमत्तमः १,४२,६; ७२३

✓ पूषादेवताया उपमासूची ।

अजिरं न १,१३८,२; ७२९ त्वा यामनि स्तोमैः प्र कृण्वे ।
इन्दुः न १०,२६,५; ७८१ सः सुष्टुतीनां वेद ।
उष्ट्रः न १,१३८,२; ७२९ त्वं मृधः पीपरः ।
(यथा) वेः ग्रीवाः ६,४८,१७; ७३६ एवा सूरः मा अहः ।
दृतेः इव अछिद्रस्य ६,४८,१८; ७३७ दधन्वतः ते सख्यं- ।
यौः इव ६,५८,१; ७७१ त्वं असि ।

यथा नष्टं पशुम् १,२३,१३; ७१५ हे पूषन्... धरणं दिवः ।
यथा पुरा ६,४८,१९; ७३८ तथा नः त्वं नूनं अव ।
यथा मृधः ऋणवः १,१३८,२; ७२९ त्वा स्तोमैः प्र कृण्वे ।
गोभिः यवं न चर्कृषत् १,२३,१५; ७१७ स मह्यं इन्दुभिः ।
वधूयुः योषणां इव ३,६२,८; ७३३ वाजयन्ती धियं अव ।
रथं न वाजसातये ६,५३,१; ७३९ वयं त्वा धिये अयुज्महि ।

[४] भगः ।

अदितेः पुत्रः ७,४१,२; ७९३ । अ. ३,१६,२; १६८
अन्धः अ. ६,१२९,३; ८०३
आहितः वृक्षेषु ६,१२९,३; ८०३
उग्रः ७,४१,२; ७९३ । अ. ३,१६,२; १६८
जितः ७,४१,२; ७९३ । अ. ३,१६,२; १६८
देवः X अ. ३,१६,५; १७०

पुत्रः अदितेः ३,१६,५; १७०
पुनःसरः अ. ६,१२९,३; ८०३
पुर एता ७,४१,५; ७९६ । अ. ३,१६,५; १७०
प्रणेता ७,४१,३; ७९४ । अ. ३,१६,३; १६९
प्रविद्वान् अ. ५,२६,९; ८००
भगः [प्रायः सर्वत्र ।]

X अत्र ' देवाः ' इति ऋग्वेदपाठः । अथर्व. ३,१६,२-३,५, १६८-७० = ऋग्वेद ७,४१,२-३,५; ७९३-९४, ७९६
समाना एव ।

अपवार ७,४१,५; ७९६ । अ. ३,१६,५; १७०
 मन्वा ७,४१,४; ७९५
 सुनिद ७,४१,६; ७९७
 विवर्ता ७,४१,२; ७९३ । अ. ३,१६,२; १६८

वृक्षेषु आहितः अ. ६,१२९,३; ८०३
 शांशपः अ. ६,१२९,१; ८०१
 सत्यराधः ७,४१,३; ७९४ । अ. ३,१६,३; १६९
 सुयुजः अ. ५,२६,९; ८००

भगदेवताया उपमासूची ।

भृशः कनिकदद् अ. २,३०,५; ७९८ भगेन अहं सहागमम् ।
 त्रिकावा इव युच्ये पदाय ७,४१,६; ७९७ उपसः अध्वराय ।

रथं इव अक्षाः वाजिनः ७,४१,६; ७९७ उपसः अर्वाचीनं भगं ।
 सविता भगः सूर्या इव अ. १४,१,५३; ८०६ प्रजया परि धत्ताम् ।

(७) विष्णुः ।

ब्रह्मारः १,१५५,६; ८३२
 ब्रह्मः अ. १७,१,१२; १४५
 ब्रह्मन् १,२२,१८; ८२०
 ब्रह्मेन ब्रह्मणा वावृधानः अ. १७,१,१२; १४५
 ब्रह्मणः समिधे ७,१००,६; ८४७
 ब्रह्मेति ब्रह्म (यः) १,१५६,४; ८३६
 ब्रह्मता [वरुणश्च] वा. य. ८,५९; ८७७
 ब्रह्मः १,१५५,४; ८३०
 ब्रह्मेति त्रिविधम् अ. १७,१,१०; १४३
 तः १,१५५,४; ८३०
 ब्रह्म युज्यः सखा १,२२,१९; ८२१
 ब्रह्मं वषट्पं अस्त्रभायत् १,१५४,१; ८२४ । अ. ७,२६,१; ८६१
 ब्रह्मः १,१५४,५; ८२८
 ब्रह्मणः १,१५४,१,३,६; ८२४, ८२६, ८२९ । ७,१००,१;
 ८४९ । वा. य. ८,१; १०७, ८६०
 ब्रह्मः विमिमानः १,१५५,६; ८३२
 ब्रह्म गर्भः १,१६५,३; ८३५
 ब्रह्मः १,१५६,१; ८३३
 ब्रह्मन् (घा) ७,१००,२; ८४३
 ब्रह्मः १,१५४,२ । ८२५ । अ. ७,२६,२; ८६२
 ब्रह्मः १,१५६,३; ८३५
 ब्रह्मः १,१५४,३; ८२६
 ब्रह्मः १,१५४,२; ८२५ । अ. ७,२६,२; ८६२
 ब्रह्मः १,२२,१८; ८२०
 ब्रह्मः १,१५६,१; ८३३
 ब्रह्मन् परः वृधानः ७,९९,१; ८३८

तवसः ७,१००,५; ८४६
 तवीयान् तवसः ७,१००,३; ८४४
 त्राता १,१५५,४; ८३०
 त्रिविधं आरोहन् अ. १७,१,१०; १४३
 त्रिधातु दाधार १,१५४,४; ८२७
 त्रिस (घ) धस्यः १,१५६,५; ८३७
 दक्षं उत्तमं अहर्विदं दाधार १,१५६,४; ८३६
 देवः ७,९९,१-२; ८३८-३९
 दैव्यः १,१५६,५; ८३७
 धर्माणि धारयन् १,२२,१८; ८२०
 नवीयाः १,१५६,२; ८३४
 ना ८,२५,१५; ३५८
 नाकं ऋष्वं उदस्तभाः ७,९९,२; ८३९
 पार्थिवानि रजांसि विममे १,१५४,१; ८२४
 पूर्वहूतौ [वरुणश्च] वा. य. ८,५९; ८७७
 पूर्व्यः १,१५६,२-३; ८३४-८३५
 पृथिव्याः प्राचीं ककुभं दाधर्थ ७,९९,२; ८३९
 वृहच्छरीरः १,१५५,६; ८३२
 ब्रह्मणा वावृधानः अ. १७,१,१२; १४५
 भीमः मृगः न १,१५४,२; ८२५
 भूर्णिः ८,२५,१५; ३५८
 मीढ्वान् १,१५५,४; ८३० । ८,२५,१४; ३५७
 युवा १,१५५,६; ८३२
 वनीयान् ८,२५,१५; ३५८
 वावृधानः ब्रह्मणा अ. १७,१,१२; १४५
 विचक्रमाणः त्रैधा १,१५४,१; ८२४ । अ. ७,२६,१; ८६४
 विभूतयुजः १,१५६,१; ८३३

(११८)

विमिमानः ऋकमिः १,१५५,६; ८३२
 विष्णुः x [प्रायः सर्वत्र ।] अ. १७,१,६-१९; १३२.५२
 वीरतमा वीर्यमिः [वरुणश्च] वा. य. ८,५९; ८७७
 वृधानः तन्वा मात्रया परः ७,९९,१; ८३८
 वृषा १,१५४,३,६; ८२६, ८२९
 वेधाः १,१५६,२,५; ८३४, ८३७
 व्रजं अपोर्णते १,१५६,४; ८३६
 शविष्ठा [वरुणश्च] वा. य. ८,५२; ८७०
 शिपिविष्टः ७,९९,७, ८४१ । १००,५-६; ८४६-८४७
 शेष्यः १,१५६,१; ८३३
 सखा युज्यः इन्द्रस्य १,२२,१९; ८२१

सखिवाच १,१५६,४; ८३६
 सजोषाः ८,२५,१४; ३५७
 सप्रधाः १,१५६,१; ८३३
 समिथे अन्यरूपः ७,१००,६; ८४७
 सहोमिः पत्येते [वरुणश्च] ८,५९; ८७७
 सुकृत्तरः १,१५६,५; ८३७
 सुजनिमा ७,१००,४; ८४५
 सुमज्जानिः १,१५६,२; ८३४
 स्थविरः ७,१००,३; ८४४
 स्वर्दश १,१५५,५; ८३१

विष्णुदेवताया उपमासूची ।

चक्रं न १,१५५,६; ८३२ विष्णु वृत्तं व्यतीत्... अर्वाविपत् । मित्रः न १,१५६,१; ८३३ शेष्यः सुप्रथाः भव ।
 दिविः इव चक्षुः १,२२,२०; ८२२ सूरयः विष्णो तत्पदं । मृगः न १,१५४,२; ८२५ भीमः कुचरः गिरिष्ठा प्र स्वते ।

विष्णोः विक्रमणम् ।

१,२२,१६; ८१८	विष्णुः विचक्रमे । पृथिव्याः सप्त धामभिः ।	त्रिभिरित्पदेभिः ।
१,२२,१७, ८१९	इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम् ।	१,१५५,४; ८३०
१,२२,१८; ८२०	त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुः ।	७,१००,३; ८४४
१,१५४,१; ८२४	विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः ।	७,१००,४; ८४५
अ. ७,२६,१; ८६१	विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः ।	१,१५५,५; ८३१
१,१५४,२, ८२५	यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधि क्षियन्ति ।	
अ. ७,२६,३; ८६३	भुवनानि विश्वा ।	
१,१५४,३, ८२६	य इदं दीर्घं प्रथतं सधस्थमेको विममे	

विष्णोः पदम् ।

१,२२,१७; ८१९	...विष्णुः... त्रेधा नि दधे पदम् ।	१,१५४,४; ८२७	यस्य त्री पूर्णा मधुना पदान्यक्षीयमाणा
	समूहमस्य पांशुरे ॥		स्वधया मदन्ति ।
१,२२,२०; ८२२	तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः ।	१,१५४,५; ८२८	विष्णोः पदे परमे मध्व उत्सः ।
१,२२,२१; ८२३	तद्विप्रासो ... समिन्धते । विष्णोर्यत् परमं पदम् ॥	१,१५४,६; ८२९	अत्राह तदुरुगायस्य वृष्णः परमं पदम् भाति भूरि ।

(८) विवस्वान् ।

राजा अ. ६,११६,१; ८८०

वैवस्वतः अ. ६,११६,१-२; ८८०-८८१

× अत्र अथर्व १७,१,६-१९; १३९-१५२ मंत्रेषु वर्तमानानि पदानि विष्णुस्वरूपेण वर्तमानस्य आदित्यस्य सन्ति ।

(९) संवत्सरः कालः ।

संवत्सरपञ्चकम् ।

संवत्सरः वा. य. २७,४५; ८८५
विश्वत्सरः वा. य. २७,४५; ८८५
संवत्सरः वा. य. ३०,१५; ८८६
संवत्सरः वा. य. ३०,१५; ८८६
संवत्सरः वा. य. ३०,१५; ८८६

संवत्सरावयवाः ।

संवत्सरः वा. य. २७,४५; ८८५
विश्वत्सरः वा. य. २७,४५; ८८५
संवत्सरः वा. य. २७,४५; ८८५
संवत्सरः वा. य. २७,४५; ८८५
संवत्सरः वा. य. २७,४५; ८८५
संवत्सरः वा. य. २७,४५; ८८५

संवत्सरकालयो गुणबोधकपदानि ।

संवत्सरः ।

पतिः एकाष्टकायाः अ. ३,१०,८; ८८७
सुपर्णचित् वा. य. २७,४५; ८८५

कालः ।

ईश्वरः सर्वस्य अ. १९,५३,८; ८९९
देवः परमो नु अ. १९,५४,५; ९०६
देवः प्रथमो नु अ. १९,५३,२; ८८३
पिता प्रजापतेः अ. १९,५३,९; ९००
ब्रह्म अ. १०,५३,२; ९००

(१०) ऋतवः ।

द्वादशदेवाः, संवत्सरस्य दंष्ट्राः । अ. ११,६,२२; ९६८

ऋतूनां नामानि ।

संवत्सरः वा. य. २१,२३; ९४० । अ. १५,३,४; ९५२ ।
अ. १२,१,३६; ९६
ग्रीष्मः वा. य. २१,२४; ९४१ । अ. १५,३,४; ९५२ ।
अ. १२,१,३६; ९६९
वर्षाः वर्षाणि वा. य. २१,२५; ९४२ । अ. १५,३,४; ९५२ ।
अ. १२,१,३६; ९६९
शरदः शरदः वा. य. २१,२६; ९४३ । अ. १५,३,४; ९५२ ।
अ. १२,१,३६; ९६९
वृश्चिकः वा. य. २१,२७; ९४४ । अ. १२,१,३६; ९६९ ।
अ. १२,१,३६; ९६९
मृगशिरः वा. य. २१,२८; ९४५ । अ. १२,१,३६; ९६९ ।

ऋतवयवानां मासानां नामानि ।

शुभः, शश्वतः वा. य. ७,३०; ९३१ । १३,२५; ९३२
शुभः, शुचिः वा. य. ७,३०; ९३१ । १४,६; ९३३
शुभः, नमस्यः वा. य. ७,३०; ९३१ । १४,१५; ९३४
शुभः, कर्जः वा. य. ७,३०; ९३१ । १४,१६; ९३५
शुभः, सूर्यः वा. य. ७,३०; ९३१ । १४,२७; ९३६
शुभः, तपस्यः वा. य. ७,३०; ९३१ । १५,५७; ९३८
शुभः, सप्तः वा. य. ७,३०; ९३१

‘ हविरिन्द्रे वयो दधुः ’ इति । वा. य. २१,२३-२८; ९४०-४५
मन्त्रेषु इन्द्रे हविराद्याधाने वसन्तादीनामितरैः सह सहकारित्वम् ।

ऋतुनाम । देवाः । स्तोमनाम । पृष्ठ (साम) नाम । मंत्रांकः
वसन्तः वसवः त्रिवृत् रथन्तरम् २१,२३; ९४०
ग्रीष्मः रुद्राः पञ्चदशः बृहत् २१,२४; ९४१
वर्षाः आदित्याः सप्तदशः वैरूपम् २१,२५; ९४२
शरदः ऋभवः एकविंशः वैराजम् २१,२६; ९४३
हेमन्तः मरुतः त्रिणवः शाकरम् २१,२७; ९४४
शैशिरः अमृताः त्रयस्त्रिंशः रैवतम् २१,२८; ९४५

व्रात्यस्य (ब्रह्मचारिणः) मासानां गोप्त्रादयः ।

[अथर्व० १५-४ सूक्तं । ९५३-६४]

दिक्नाम । गोप्त्रारौ । अनुष्ठातारौ । मंत्रांकः ।

प्राची वासन्तौ मासौ बृहत् रथन्तरं च । २-३; ९५३-५४
दक्षिणा ग्रीष्मौ मासौ यज्ञायज्ञियं वामदेव्यं च । ५-६; ९५५-५६
प्रतीची वार्षिकौ मासौ वैरूपं वैराजं च । ८-९; ९५७-५८
उदीची शरदौ मासौ रैवतं नौधसं च । ११-१२; ९५९-६०
ध्रुवा हेमनौ मासौ भूमिः अग्निः च । १४-१५; ९६१-६२
ऊर्ध्वा शैशिरौ मासौ यौ आदित्यः च । १७-१८; ९६३-६४

(१२०)

(१०) ऋतवः । (ऋग्वेद-संहिता)

सूक्तमंत्र- क्रमांकः	मंत्रोक्त- ऋतुवाचक पदम्	सोमपान- पात्रम्	मन्त्रोक्त- देवतापदम् (१,१५।२,३६-३७)	मंत्रोक्त- ऋतुवाचक पदम्	काल्यायन- सर्वानुक्रमण्युक्ता देवताः	सोमपान- पात्रम्	सूक्तमंत्र- क्रमांकः ।
१,१५,			उभयत्र				२,३६,
१,१०७ ऋतुना	...		इन्द्रः	...	मधुः	होत्रम्	१,११९
२,१०८ ऋतुना	पोत्रम्		मरुतः	...	माधवः	पोत्रम्	२,१२०
३,१०९ ऋतुना	...		त्वष्टा	...	शुक्रः	...	३,१२१
४,११० ऋतुना	...		अग्निः	...	शुचिः	आग्नीध्रम्	४,१२२
५,१११ ऋतुन अनु	ब्राह्मणम्		इन्द्रः	...	नभः	ब्राह्मणम्	५,१२३
६,११२ ऋतुना	...		मित्रावरुणौ	...	नभस्यः	प्रशास्त्रम्	६,१२४
[सायनभाष्यानुसारेण]							
७,११३	द्रविणोदाः	ऋतुभिः	इषः	होत्रम्	१,१२५
८,११४	द्रविणोदाः	ऋतुभिः	ऊर्जः	पोत्रम्	२,१२६
९,११५ ऋतुभिः	नेष्ट्रम्		द्रविणोदाः	ऋतुभिः	सहः	नेष्ट्रम्	३,१२७
१०,११६ ऋतुभिः	तुरीयम्		द्रविणोदाः	होत्रपोत्रनेष्ट्रतुरीयाणि	४,१२८
११,११७ ऋतुना	...		अधिनौ	५,१२९
१२,११८ ऋतुना	..		अग्निः	ऋतुना	तपस्यः	...	६,१३०

२।३६ सूक्ते मंत्रेषु ऋतुवाचकपदस्य अभावः । काल्यायन सर्वानुक्रमण्यां देवतानामानि, मासानां नामानि, न तु ऋतूणाम् ।

(११) चन्द्रमाः ।

अधिपतिः नक्षत्राणाम् अ. ५,१४,१०; ९८६
अप्सु अन्तः वा. य. ३३,९०; ९७९ । अ. १८,४,८९;
९८९
अहां केतुः ऋ. १०,८५,१९; ९७२
आयन् देवेभ्यः भागं वि दधाति १०, ८५,१९; ९७२
एति कनिकदत् वा. य. ३३,९०; ९७९
केतुः अहाम् वा. य. ३३,९०; ९७९
चन्द्रः वा. य. २२,२८; ९७५
चन्द्रमाः (सर्वत्र)
जातः मनसा ऋ. १०,९०,१३; ९७३ । वा. य. ३१,२२;
९७८
जायते पुनः वा. य. २३,१०; ९७७
जायमानः नवः नवः ऋ. १०,८५,१९; ९७२
देवः अ. ११,६,७; ९९१

नक्षत्रैः उदकामत् अ. १२,१९,४; ९९०
नक्षत्राणां अधिपतिः अ. ५,१४,१०; ९८६
नक्षत्राणां ईशे अ. ६,८६,२; १०००
पिशङ्गं रयिं बहुलं पुरुस्पृहं एति वा. य. ३३,९०; ९७९
वत्सः दिशां धेनूनाम् अ. ४,३९,८; ९९९
वृत्रहा अ. १९,२७,२; ९९२
शतवृष्ण्यः अ. १,३,४; ९८०
शरस्य पिता अ. १,३,४; ९८०
सुपर्णः दिवि आ धावते वा. य. ३३,९०; ९७९ । अ. १८,
४,८३; ९८९
सोमः यं आहुः चन्द्रमाः अ. ११,६,७; ९९१
हरिः वा. य. ३३,९०; ९७९
आयुर्वेदप्रकरणे ।
अन्तरिक्षेण पतति अ. ६,८०,१; १५८८

अवकाशश्च विश्वा भूता अ. ६, ८०, १; १५८८

अन अस्तु अ. ६, ८०, ३; १५९०

विश्वः वा अ. ६, ८०, १, ३; १५८८, १५९०

अनाः पृथिव्याम् ६, ८०, ३; १५९०

अन्तः समुद्रं ६, ८०, ३; १५९०

विश्वः अ. ६, ८०, १, ३; १५८८, १५९०

अस्ति दिवि अ. ६, ८०, ३; १५९०

चन्द्ररश्मयः ।

विद्युतः ऋ. १, १०५, १; ९८९

हिरण्यनेमयः ऋ. १, १०५, १; ९८९

चन्द्रस्य द्विषन्नाशनी शक्तिः ।

अर्चिः अ. २, २२, ३; ९८३

तपः अ. २, २२, १; ९८१

तैजः अ. २, २२, ५; ९८५

शोचिः अ. २, २२, ४; ९८४

हरः अ. २, २२, २; ९८२

(१२) रात्रिः ।

अन्तः महान्तः महिमानः अस्याम् अ. ३, १०, ४; १०७७

अर्वा १०, १२७, २; १००४

अर्वाया रात्रिः अ. १, १६, १; १०१७

अर्वा अ. १९, ४९, १; १०५२

अर्वा १०, १२७, १, ३; १००३, १००५

अर्वा अ. १९, ४९, १; १०५२

अर्वा [धेनुः वा] अ. ३, १०, २; १०७५

अर्वा अ. १९, ४९, २; १०३१

अर्वा अ. १९, ४९, २, ८; १०५३, १०५९

अर्वा [रात्रौ भवति] अ. १५, २, ५, १३, २१, २९; १०११-१०२४

अर्वा नाम वै अस्ति अ. १९, ४८, ६; १०४४

अर्वा अ. १९, ४९, ८; १०५९

अर्वा वा. य. ३, १८; १०३१

अर्वा अ. ३, १०, ४; १०७७

अर्वा तमः बाधते १०, १२७, २; १००४

अर्वा सुज्योतिः वा. य. ३७, २१; १०१६

अर्वा अ. १०, १२७, ३; १००५

अर्वा अ. १०, १२७, २; १००४

अर्वा अ. १९, ४९, २; १०३१

अर्वा वा. य. ३४, ३२; १०१५

अर्वा अ. १९, ४९, १; १०५२

अर्वा १०, १२७, ८; १०१०। अ. १९, ४९, ५; १०३४

अर्वा १०, १२७, ८; १०१०।

अर्वा १०, १२७, १-३; १००३-५

अर्वा [धेनुः वा] अ. ३, १०, २; १०७५

१६ दै० [अदिति]

नवगत् वधूः [धेनुः वा] अ. ३, १०, ४; १०७७

पत्नी संवत्सरस्य [धेनुः वा] अ. ३, १०, २; १०७५

पिशङ्गिला वा. य. २३, १२; १०१२

पुरुत्रा १०, १२७, १; १००३

प्रतिमा संवत्सरस्य ३, १०, ३; १०७६

प्रथमा या व्यौच्छत् [धेनुर्वा] अ. ३, १०, ४; १०७७

प्रविष्टा आसु इतरासु [धेनुर्वा] अ. ३, १०, ४; १०७७

बृहती वा. य. ३४, ३२; १०१५

भद्रा अ. १९, ४९, २, ७; १०३१, १०३३। ४९, २; १०५३

भद्रा अस्तु रात्रौ अ. ६, १२८, २; १०३०

माता अ. १९, ४८, १; १०४०

माता वनस्पतेः सिलाचीनाम्याः अ. ५, ५, १; १०२०

माता हिमस्य अ. १९, ४९, ५; १०५६

युवतिः अ. १९, ४९, १, ८; १०५२, १०५९

योषा अ. १९, ४९, १; १०५२

रात्रिः [प्रायशः सर्वत्र]

रात्रिः तस्मात् [ब्रह्मणः] अजायत अ. १३, ४, ३०; १०१९

रात्र्याः सः [ब्रह्मा] अजायत अ. १३, ४, ३०; १०१९

रेवती अ. १९, ४९, ४; १०३३

वर्या अ. १९, ४९, ३; १०५४

वाजिनी अ. १९, ४९, ४; १०३३

विभाती अ. १९, ४९, ४; १०५५

विभावरी अ. १९, ४८, २, ४; १०४०, १०४२। ५०, ७;

१०५१। ४९, ६; १०५७

विश्वे अश्रियः अधि अधित १०, १२७, १; १००३

संवत्सरस्य पत्नी अ. ३, १०, २; १०७५

(१२२)

संवत्सरस्य प्रतिमा अ. ३,१०,३; १०७६
सम्भृतश्रीः अ. १९,४९,१; १०५२
सुभगा अ. १९,४९,३,५; १०५४, १०५६। अ. १९,५०,६;
१०५०

सुमङ्गली अ. ३,१०,२; १०७५
सुमयि [संबो०] अ. १९,४९,४; १०३३
सुहवा अ. १९,४९,१,५; १०५२, १०५६
हिमस्य माता अ. १९,४९,५; १०५६

रात्रिदेवताया उपमासूची ।

यथा इत् अन्यान् उपायसि अ. १९,५०,६; १०५० अस्मान्
भोजय ।
ऋणा इव १०,१२७,७; १००९ कृष्णं तमः यातय ।
अल्लाः गम्भीरं इव अ. १९,५०,३; १०४७ अरातयः रात्रिं न ।
गाः इव १०,१२७,८; १०१० हे उषः ते उप आकरम् ।
चमसः न अ. १९,४९,८; १०५९ विष्टः ।
दिव्याः न अ. १९,४९,८; १०५९ क्षामं उक्थाः ।

मित्रः इव अ. १९,४९,२; १०५३ स्वधामिः अमि तिष्ठते ।
राजा इव अ. १९,४९,६; १०५७ जोषसे अस्य सोमस्य ।
वृक्षे न वसति वयः १०,१२७,४; १००६ वयं ते अविस्महि ।
(यथा) शाम्याकः प्रपतन्नपवान् १२,५०,४; १०४८ एवा रात्रि
प्र पातव ।
स्तोमं न ऋ. १०,१२७,८; १०१० हे रात्रि...जियुषे ।

(१३) पूर्णिमा ।

पूर्णा पश्चात् अ. ७,८०,१; १०७९
पूर्णा पुरस्तात् अ. ७,८०,१; १०७९
पूर्णा मध्यतः अ. ७,८०,१; १०७९
पौर्णमासी अ. ७,८०,१; १०७९। अ. १५,२,१४; १०८९

प्रथमः अपानः व्रातस्य अ. १५,१६,१; १०८९
प्रथमा यज्ञिया अहो रात्रीणां अतिशर्वरेषु अ. ७,८०,४;
१०८१
यज्ञिया अ. ७,८०,४; १०८१

(१४) राका ।

रराणा सहस्रपोषम् २,३२,५; १०८४
राका २,३२,४-५; १०८३-८४
सुभगा २,३२,४-५; १०८३-८४

सुमनाः २,३२,५; १०८४
सुस्तु (घु) ती २,३२,४; १०८३
सुहवा २,३२,४; १०८३

(१५) अमावास्या ।

अमावास्या अ. ७,७९,१-४; १०८५-८८। अ. १५,२,१४;
१०८९। १६,३; १०९०। १७,९; १०९१
ऊर्जं दुहाना अ. ७,७९,३; १०८७
ऊर्जं पुष्टं वसु आवेशयन्ती अ. ७,७९,३; १०८७

विश्ववारा अ. ७,७९,१; १०८५
व्रात्यस्य तृतीयः अपानः अ. १५,१६,३; १०९०
संगमनी वसूनाम् अ. ७,७९,३; १०८७
सुभगा अ. ७,७९,१; १०८५

(१६) सिनीवाली ।

अभियन्ती अ. ७,४६,३; १०९४
इन्द्रं प्रतीची अ. ७,४६,३; १०९४
देवानां खसा अ. २,३२,६; १०९२

देवी अ. ७,४६,३; १०९४
पृथुष्ठा अ. २,३२,६; १०९२
बहुसूवरौ अ. २,३२,७; १०९३

मिस्तली अ. २,३२,७; १०९३ । ७,४६,३; १०९४
 विष्णोः पत्नी अ. ७,४६,३; १०९४
 ब्रह्मसुता अ. ७,४६,३; १०९४
 मित्रोवाली [प्रायशः सर्वत्र]
 कुम्भं (=खं) गुरिः अ. २,३२,७; १०९३
 कुम्भदा वा. य. ११,५६; ९

सुकुरीरा वा. य. ११,५६; ९
 सुबाहुः अ. २,३२,७; १०९३
 सुसू (पू) मा अ. २,३२,७; १०९३
 स्वसा देवानाम् अ. २,३२,६; १०९२
 खौपशा वा. य. ११,५६; ९

(१७) कुहूः ।

भिः अभि तिष्ठते ।
 अस्य सोमस्य ।
 यं ते अविष्महि ।
 १०४८ एवा रात्रि
 प्र पातय ।
 त्रे... जिरयुषे ।

द्वती अ. ७,४७,२; ११०५
 कुहूः अ. ७,४७,१-२; ११०४-५
 त्रिद्विषी अ. ७,४७,२; ११०५
 देवानां भृत्यस्य पत्नी अ. ७,४७,२; ११०५

देवी अ. ७,४७,१; ११०४
 विद्वानापस अ. ७,४७,१; ११०४
 सुकृत अ. ७,४७,१; ११०४
 सुहवा अ. ७,४७,१; ११०४
 हव्या अ. ७,४७,२; ११०५

(१८) नक्षत्राणि ।

आर्षिणानि अ. १९,८,२; ११३०
 त्रिणाणि अ. १९,७,१; ११२४
 शानि भुवने अ. १९,७,१; ११२४
 ऐरानानि अ. १९,७,१; ११२४
 नक्षत्रस्य चतुर्थो व्यानः अ. १५,१७,४; ११२३
 ह्यगानि अ. १९,८,२; ११३०
 शिवानि अ. १९,८,२; ११३०
 स्वराणि अस्य ब्रह्मणः रूपम् अ. ९,७,१५; १११८
 द्वे ब्रह्म अग्नयत् नक्षत्रम् अ. १०,२,२३; ११२१
 धाम्नाणि अ. १९,७,१; ११२४

नक्षत्राणां राजा ।

स्वराजा अ. ६,१२८,४; १११७
 शिवम् अ. ६,१२८,४; १११७

क्रमशः नक्षत्राणां नामानि ।

१ शक्तिदा अ. १९,७,२; ११२५
 २ रोहिणी अ. १९,७,२; ११२५
 ३ मृगशिरः अ. १९,७,२; ११२५
 ४ आर्द्रा अ. १९,७,२; ११२५
 ५ पुनर्वसु अ. १९,७,२; ११२५
 ६ पुष्यः अ. १९,७,२; ११२५

७ आश्लेषा अ. १९,७,२; ११२५
 ८ मघा अ. १९,७,२; ११२५
 ९ पूर्वा अ. १९,७,३; ११२६
 १० फल्गुन्यौ अ. १९,७,३; ११२६
 ११ हस्तः अ. १९,७,३; ११२६
 १२ चित्रा अ. १९,७,३; ११२६
 १३ स्वाति अ. १९,७,३; ११२६
 १४ विशाखे अ. १९,७,३; ११२६
 १५ अनुराधा अ. १९,७,३; ११२६
 १६ ज्येष्ठा अ. १९,७,३; ११२६
 १७ मूलम् अ. १९,७,३; ११२६
 १८ पूर्वा अषाढा अ. १९,७,४; ११२७
 १९ उत्तरा अषाढा अ. १९,७,४; ११२७
 २० अभिजित् अ. १९,७,४; ११२७
 २१ श्रवणः अ. १९,७,४; ११२७
 २२ शतभिषग् अ. १९,७,५; ११२८
 २३ द्वया अ. १९,७,५; ११२८
 २४ प्रोष्ठपदा अ. १९,७,५; ११२८
 २५ रेवती अ. १९,७,५; ११२८
 २६ अश्वयुजौ अ. १९,७,५; ११२८
 २७ भरण्याः अ. १९,७,५; ११२८

निपातभाक्-अग्निदेवताया गुणबोधकपदानि ।

उशान् विश्वान् देवान् २,३७,६; ९३०
 ऋतावान् ७,६२,३; ५६०
 गोप्ता अ. १७,१,३०; १६३
 चन्द्रः ७,६२,३; ५६०
 तुरीयः अ. १,१६,१; १०१७
 युक्षः १,१३६,६; २०८
 ना ८,२५,१५; ३५८
 पृथिव्याः वशी अ. ६,८६,२; १०००
 ब्रह्म वा. य. ४,११; १६६
 भूर्णिः ८,२५,१५; ३५८
 भेषजं हिमस्य वा. य. २३,१०; ९९७
 मीढ्वान् ८,२५,१४; ३५७
 यज्ञः वा. य. ४,११; १६६

यज्ञनीः १,१५,१२; ९१८
 यातुहा अ. १,१६,१; १०१७
 वनीयान् ८,२५,१५; ३५८
 वशी पृथिव्याः अ. ६,८६,२; १०००
 वसुः २,३७,३; ९३०
 विप्रः २,३६,४; ९२२
 विश्वान् देवान् उशान् २,३७,६; ९३०
 सजोषाः ८,२५,१४; ३५७
 होता २,३६,४; ९२२
 द्रविणोदा अग्निः ।

अरिषण्यन् २,३७,३; ९२७
 धृष्णुः २,३७,३; ९२७
 वनस्पतिः २,३७,३; ९२७

निपातभाक्-इन्द्रदेवताया गुणबोधकपदानि ।

अंशुं आप्याययन् अ. ७,८१,६; ६८४
 अक्षितः अ. ७,८१,६; ६८४
 अक्षितं भक्षयन् अ. ७,८१,६; ६८४
 अदब्धः अ. १७,१,१२; १४५
 आप्याययन् अंशुम् अ. ७,८१,६; ६८४
 आरोहन् त्रिदिवम् अ. १७,१,१०; १४३
 ईड्यः अ. १७,१,१-५; १३४-१३८
 ईशिषे सर्वस्य जगतः २,३६,१; ९१९
 ऋषिभिः सहस्कृतः वा. य. ३३,८३; १२०
 गृणानः दिवः अ. १७,१,१-५; १३४-१३८
 गोजितः अ. १७,१,१-५; १३४-१३८
 गोपाः भुवनस्य अ. ७,८१,६; ६८४
 त्राता मरुताम् वा. य. १८,२०; ६७
 त्रिदिवम् आरोहन् अ. १७,१,१०; १४३
 दिवः गृणानः अ. १७,१,१-५; १३४-१३८
 देवः वा. य. ८,२; १०८
 युक्षः १,१३६,६; २०८
 ना ८,२५,१५; ३५८
 पुरुहूतः अ. १७,१,११; १४४
 प्रथमः २,३६,१; ९१९
 प्रद्यौः २,३६,५; ९२३

प्रियधामा अ. १७,१,१०; १४३
 ब्रह्मणा वायुधानः अ. १७,१,१२; १४५
 भक्षयन् अक्षितम् अ. ७,८१,६; ६८४
 भुवनस्य गोपाः अ. ७,८१,६; ६८४
 भूर्णिः ८,२५,१५; ३५८
 मीढ्वान् ८,२५,१४; ३५७
 वनीयान् ८,२५,१५; ३५८
 वशी ८,६७,८; १२
 वायुधानः ब्रह्मणा अ. १७,१,१२; १४५
 विश्वजित् अ. १७,१,१२; १४४
 विषासहिः अ. १७,१,१-५; १३४-१३८
 श्रुतः ८,६७,८; ९२
 सजोषाः ८,२५,१४; ३५७
 सन्धनाजितः अ. १७,१,१-५; १३४-१३८
 सर्वविद् अ. १७,१,१-५; १३४-१३८
 सहमानः अ. १७,१,१-५; १३४-१३८
 सहस्कृतः ऋषिभिः वा. य. ३३,८३; १२०
 सहीयान् अ. १७,१,१-५; १३४-१३८
 सहोजितः अ. १७,१,१-५; १३४-१३८
 सासहानः अ. १७,१,१-५; १३४-१३८
 स्वर्जितः अ. १७,१,१-५; १३४-१३८

निपातभाक्-सोमदेवताया गुणबोधकपदानि ।

अयः १,३७,३; ९२७
 अर्चः १,३७,४; ९२८
 अर्कः १,३७,४; ९२८
 अर्कः इन्द्राय १,३६,५; ९२३
 अर्कः इन्द्रवः १,१५,१; ९०७
 अर्कः पात्रं (पात्रस्थम्) १,३७,४; ९२८
 अर्कः रश्मिः १,३६,५; ९२३
 अर्कः १,३७,४; ९२८
 अर्कः १,३६,४; ९२२

प्रहृतः १,३६,१; ९१२
 वाहोः सहः ओजः हितः (इन्द्रस्य) १,३६,५; ९२३
 मत्सरासः (इन्द्रवः) १,१५,१; ९०७
 मधु १,३६,४; ९२२
 रोजः अ. ५,२१,११; १८१
 वषट्कृतः १,३६,१; ९१९
 सुतः १,३६,५; ९२३
 हितः १,३७,४; ९२८

निपातभाक्-मरुदेवताया गुणबोधकपदानि ।

अर्कः प्रियाः १,३६,२; ९२०
 अर्कः अ. ५,२१,११; १८१
 अर्कः शुभ्रासः १,३६,२; ९२०
 अर्कः नरः १,३६,२; ९२०
 अर्कः ८,१५,१५; ३५८
 अर्कः दिवः १,३६,२; ९२०
 अर्कः यामनः अ. ५,२१,११; १८१
 अर्कः यामनः १,३६,२; ९२०
 अर्कः अक्षिणः १,३६,२; ९२०
 अर्कः सुतवः १,३६,२; ९२०

भूर्णयः ८,२५,१५; ३५७
 मीढ्वांसः ८,२५,१४; ३५७
 यज्ञैः संमिश्राः १,३६,२; ९२०
 यामनः पृषतीभिः १,३६,२; ९२०
 वनुषः (वनीयांसः) ८,२५,१५; ३५८
 शुभ्रासः ऋष्टिभिः १,३६,२; ९२०
 सजोषसः ८,२५,१४; ३५७
 संमिश्राः यज्ञैः १,३६,२; ९२०
 सुदानवः १,१५,२; ९०८
 सूनवः भरतस्य १,३६,२; ९२०

निपातभाक्-अश्विनौदेवताया गुणबोधकपदानि ।

अर्कः १,१५,११; ९१७
 अर्कः ८,२५,१५; ३५८
 अर्कः अ. ५,२५,३; १०९९
 अर्कः अ. ५,२५,३; १०९९
 अर्कः अ. ५,२५,१४; ३५७

यज्ञवाहसा १,१५,११; ९१७
 वनीयांसौ ८,२५,१५; ३५८
 बाजिनीवसू १,३७,५; ९२९
 शुचित्रता १,१५,११; ९१७
 सजोषसौ ८,२५,१४; ३५७

निपातभाक्-बृहस्पतिदेवताया गुणबोधकपदानि ।

अर्कः आप्यायनः अ. ७,८१,६; ६८४
 अर्कः अ. ७,८१,६; ६८४
 अर्कः मधुयनः अ. ७,८१,६; ६८४
 अर्कः अ. ४,१,७; १७७
 अर्कः अ. ७,८१,६; ६८४
 अर्कः अ. ४,१,४; १७४

ऋतस्थाः पृथिव्याः अ. ४,१,४; १७४
 कविः अ. ४,१,७; १७७
 गोपाः भुवनस्य अ. ७,८१,६; ६८४
 जनिता विश्वेषाम् अ. ४,१,७; १७७
 दिवः ऋतस्थाः अ. ४,१,४; १७४
 देवः पूर्व्यः अ. ४,१,६; १७६

देवता अ. ४,१,६; १७६
 देवबन्धुः अ. ४,१,७; १७७
 पिता अ. ४,१,७; १७७
 पूर्यः देवः अ. ४,१,६; १७६
 पृथिव्याः ऋतस्थाः अ. ४,१,४; १७६
 प्रजानन् अ. २,२६,२; १०३८

मक्षयन् अक्षितम् अ. ७,८१,६; ६८४
 भुवनस्य गोपाः अ. ७,८१,६; ६८४
 महान् अ. ४,१,४; १७४
 विश्वेषां जनिता अ. ४,१,७; १७७
 सम्राट् अ. ४,१,५; १७५
 स्रधावान् अ. ४,१,७; १७७

अदितेः, आदित्यानां च पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

[२०] १।४१।६ (कण्वो घौरः । आदित्याः)
 विश्वं तोकमुत स्मना ।

(अग्निः १४५६) ८।८४।३ (उशना काव्यः । अग्निः)
 रक्षा तोकमुत स्मना ।

ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

[२२] २।२७।२ (कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । आदित्याः)
 मित्रो अर्यमा वरुणो जुषन्त ।

(आयुर्वेदः १९५९) १०।१०।६ (यमो वैवस्वती ऋषिः)
 यमः)

(३३१) ७।६४।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)
 मित्रो अर्यमा ... वरुणो जुषन्त ।

... ... वरुणस्य धाम ।

[२४] २।२७।४ (कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । आदित्याः)

[२९] २।२७।३ (कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । आदित्याः)

देवा विश्वस्य भुवनस्य गोपाः ।

त्री रोचना दिव्या धारयन्त ।

(विश्वे देवाः ११९) १।१६४।२१ (दीर्घतमा औचथ्यः ।
 विश्वे देवाः)

(इन्द्रः १६६७) ५।२९।१ (गौरिवीतिः शाक्यः । इन्द्रः)

इनो विश्वस्य भुवनस्य गोपाः ।

[३७] २।२७।१७ (कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । आदित्याः)

[२७] २।२७।७ (कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । आदित्याः)
 बृहन्मित्रस्य वरुणस्य शर्म ।

= २।२८।२१ (कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । वरुणः)

= (विश्वे देवाः १५७) २।२९।७ (कूर्मो गार्त्समदो,
 गृत्समदो वा । विश्वे देवाः)

माहं मघोनो वरुण प्रियस्य भूरिदान्ता जा विदं शूनमपोः ।

मा रायो राजन्सुयमादव स्था बृहद्वदेम विदधे सुवीराः ॥

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

[४२] ७।५२।२ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः)

मा वो भुजमान्यजातमेनो मा तत् कर्म वसवो यच्चयध्वे ।

(विश्वे देवाः ३९९) ६।५१।७ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । आदित्याः)

मा व एनो अन्यकृतं भुजेम ... ।

[४३] ७।५२।३ तुरण्यवोऽङ्गिरसो नक्षन्त ।

(विश्वे देवाः ४९५) ७।४२।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । विश्वे देवाः)

प्र ब्रह्माणो अङ्गिरसो नक्षन्त ।

[४१] ७।५२।३ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः)
रत्नं देवस्य सवितुरियानाः ।

(४७२) ७।३८।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सविता)
..... सवितुरियानः ।

[४४] ७।६६।४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः)
यदद्य सूर उदिते ।

(५२) ७।६६।१२ सूक्तैः सूर उदिते ।

(विश्वे देवाः ५३०) ८।२७।१२ (मनुर्वैवस्वतः । विश्वे देवाः)

यदद्य सूर उद्यति ।

विश्वेदेवसो मध्यन्दिने ।

(विश्वे देवाः ५३२) ८।२७।११ यदद्य सूर उदिते ..
मध्यन्दिने । विश्वेदेवसो ... ।

[४४] ७।६६।४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः)

सुवाति सविता भगः ।

(४५४) ५।८२।३ (श्यावाश्व आत्रेयः । सविता)

[४६] ७।६६।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः)

उत स्वराजो अदितिः ।

(इन्द्रः ३०१) ८।१२।१४ (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)

उत स्वराजे अदितिः ।

[४७] ७।६६।७ प्रति वां सूर उदिते ।

(६३१) ७।६३।५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सूर्यमित्रवरुणाः)

[५०] ७।६६।१० अग्निजिह्वा ऋतावृधः ।

(अग्निः ९९) १।४४।१४ (प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः)

[५२] ७।६६।१२ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः)

यूयमृतस्य रथ्यः ।

(विश्वे देवाः ५६१) ८।८३।३ (कुसीदी काण्वः । विश्वे देवाः)

ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम् ।

[४४] ८।१८।१ (इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः)

एषां सुभ्रं भिक्षेत मर्त्यः ।

(मरुतः ६०) ८।७।१५ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)

वैवस्वती ऋषिः
यमः)

[४५] ८।१८।३ (इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः)

तत् सु नः सविता भगो वरुणो मित्रो अर्यमा ।

(विश्वे देवाः २३८) ४।५५।१० (वामदेवो गौतमः ।
विश्वे देवाः)

[४६] ८।१८।३ भगो वरुणो मित्रो अर्यमा ।

शाक्यः । इन्द्रः)
वा । आदित्याः)

(अग्निः ३१) १।२६।४ (शुनःशेष आजीगर्तिः । अग्निः)

रिशादसो वरुणो मित्रो अर्यमा ।

[४७] ८।१८।३ (इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः)

वरुणो मित्रो अर्यमा । शर्म यच्छन्तु सप्रथो यदीमहे ।

(विश्वे देवाः ७९८) १०।१२६।७ (कुलमलवर्हिषः शैलूषिः
अंहोमुखा वामदेव्यः । विश्वे देवाः)

वरुणो ... । शर्म ... सप्रथ आदित्यासो यदीमहे ।

[४८] ८।१८।५ (इरिम्बिठिः काण्वः । अदितिः)

अंहोश्चिदुरुचक्रयः ।

(१७७) ५।६७।४ (यजत आत्रेयः । मित्रावरुणौ)

[४९] ८।१८।१० (इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः)

अप सेवत दुर्मतिम् ।

(आयुर्वेदः २३०८) १०।१७।१२ (ऊर्ध्वग्रावा सर्प
आर्बुदिः । प्रावाणः)

[५९] ८।१८।१२ (इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः)

तत् सु नः.....आदित्या यन्मुमोचति ।

(९९) ८।६७।१८ (मत्स्यः साम्मदः मैत्रावरुणिर्मन्यः
बहवो वा मत्स्या जालनद्धाः । आदित्याः)

तत् सु नो...आदित्या ... ।

[६१] ८।१८।१४ दुःशंसं मर्त्यं रिपुम् ।

(अश्विनौ २२४) २।४१।८ (गृत्समदः शौनकः । अश्विनौ)

दुःशंसो मर्त्यो रिपुम् ।

[६३] ८।१८।१६ (इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः)

आ शर्म पर्वतानां अपां वृणीमहे ।

८।३१।१० (मनुर्वैवस्वतः । दम्पत्याशिषः)

आ शर्म पर्वतानां वृणीमहे नदीनाम् ।

[६८] ८।१८।२१ नृवद् वरुणं शंस्यम् ।

(विश्वे देवाः ५६२) ८।८३।४ (कुसीदी काण्वः ।
विश्वे देवाः)

वामं वरुणं शंस्यम् ।

[६९] ८।१८।२२ प्र सु न आयुर्जीवसे तिरेतन ।

१०।५९।५ (बन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुर्गौपायनाः असुनीतिः)

जीतावसे सु प्र तिरा न आयुः ।

(१२८)

- [७१] ८।१९।३५ (सोमरिः काण्वः । आदित्याः)
स्यामेहतस्य इथ्यः ।
(५२) ७।६६।१२ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः)
यूयमुतस्य इथ्यः ।
[७२] ८।४७।१ (त्रित आप्यः । आदित्याः)
महि वो महतामवो ।
(८८) ८।६७।४ (मत्स्यः साम्मदः मैत्रावरुणिर्मन्यः
वहवो वा मत्स्या जालनद्धाः । आदित्याः)
[७३] ८।४७।१ वरुण मित्र दाशुषे ।
(२९४) ५।७।१३ (बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
वरुण मित्र दाशुषः
[७४-८४] ८।४७।१-१३ (त्रित आप्यः । आदित्यः)
अनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ।
(उषा १८७-९१) ८।४७।१४-१८ (त्रित आप्यः ।
आदित्योषसः)
[७६] ८।४७।१ स्यामेदिन्द्रस्य जर्मणि ।
(इन्द्रः ९) १।४।६ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
[८०] ८।४७।९ अदितिः अर्मे षच्छतु ।
६।७।१२ (पायुर्भारद्वाजः । इषवः)
[८०] ८।४७।९ (त्रित आप्यः । आदित्याः)

- माता मित्रस्य रेवतो अर्यम्णो वरुणस्य ।
(विश्वे देवाः ५२६) १०।३६।३ (लुशो धानाकः । विश्वे देवाः)
माता मित्रस्य वरुणस्य रेवतः ।
[८०] ८।४७।९ अर्यम्णो वरुणस्य च ।
(२०४) १।१३६।२ (परच्छेपो देवोदाधिः । मित्रावरुणौ)
[८५] ८।६७।१ (मत्स्यः साम्मदः मैत्रावरुणिर्मन्यः वहवो वा
मत्स्या जालनद्धाः । आदित्याः)
सुमुळीकौ अभिष्टये ।
(६) ८।६७।१० सुमुळीकामभिष्टये ।
[८८] ८।६७।४ महि वो महतामवो वरुण मित्रायमन् ।
(७९) ८।४७।१ (त्रित आप्यः । आदित्याः)
... वरुण मित्र दाशुषे ।
[८८] ८।६७।४ वरुण मित्रायमन् ।
(२७४) ५।६७।१ (यजत आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
[८८] ८।६७।४ अवांस्या वृणीमहे ।
८।२६।२१ (विश्वमना वैयश्वः, व्यथो वाङ्गिरसः । बाहुः)
[९०] ८।६७।६ तेना नो अधि वोचत ।
(मरुतः १०७) ८।२०।२६ (सोमरिः काण्वः । मरुतः)
[९९] ८।६७।१८ आदित्या यन्मुमोचति ।
(५९) ८।१८।१२ (इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः)

ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

- [१८५] ३।५९।१ (गाथिनो विश्वामित्रः । मित्रः)
मित्रो जनान् यातयति ब्रुवाणः ।
(विश्वे देवाः ४६५) ७।३६।२ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ।
विश्वे देवाः)
जनं च मित्रो यतति ब्रुवाणः ।
[१८५] ३।५९।१ मित्रो दाधार पृथिवीमुत द्याम् ।
(विश्वे देवाः ४००) ६।५१।८ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
नमो दाधार ... ।
[१८५] ३।५९।१ मित्राय हव्यं वृतवञ्जुहोत ।
(आयुर्वेदः ८३७) ७।४७।३ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आपः)
सिन्धुभ्यो हव्यं ... ।
[१८७] ३।५९।३ अनमीवास इकया मदन्तः ।
(विश्वे देवाः १८९) ३।५४।२० (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः,
प्रजापतिर्वान्यो वा । विश्वे देवाः)

- ध्रुवक्षेमास इकया मदन्तः ।
[१८८] ३।५९।४ तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्यापि मदं
लौमनसे स्याम ।
(अग्निः ४६७) ३।१२।१ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
[१९३] ३।५९।९ (विश्वामित्रो गाथिनः । मित्रः)
जनाय वृकबर्हिषे ।
(अग्निः ९०५) ५।२३।३ (युत्रो विश्ववर्षणिरात्रेयः । अग्निः)
जनासो वृकबर्हिषः ।
(इन्द्रः १७४१) ५।३५।६ (प्रभुवसुराङ्गिरसः । इन्द्रः)
जनासो वृकबर्हिषः ।
(अश्विनौ ४००) ८।५।१७ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
जनासो वृकबर्हिषः ।
(इन्द्रः २७९) ८।६।३७ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
जनासो वृकबर्हिषः ।

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

वरुणस्य ।

नारुः । विवे देवाः ।

मित्रावरुणौ ।

मेमन्यः बहवो वा
दाः । आदित्याः ।

।

मित्रायाम् ।

आदित्याः ।

। मित्रावरुणौ ।

वाङ्मिरसः । वायुः ।

ः काण्वः । मरुतः ।

ः । आदित्याः ।

मित्रायाम् ।

मित्रावरुणौ ।

मित्रावरुणौ ।

मित्रावरुणौ ।

मित्रावरुणौ ।

मित्रावरुणौ ।

मित्रावरुणौ ।

मित्रावरुणौ ।

मित्रावरुणौ ।

मित्रावरुणौ ।

[११७] १।१।७ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । मित्रावरुणौ)

मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम् ।

(३३६) ७।६।११ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मित्रावरुणौ)

मित्रं हुवे वरुणं पूतदक्षम् ।

(१५५) ५।६।११ (अर्चनाना आत्रेयः । मित्रावरुणौ)

वरुणं वो रिशादसमृचा मित्रं हवामहे ।

[११७] १।१।८ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । मित्रावरुणौ)

ऋतेन मित्रावरुणावृतावृधौ ।

(१२२) १।१५।११ (दीर्घतमा औचथ्यः । मित्रावरुणौ)

ऋतेन मित्रावरुणा सचेथे ।

[१०१] १।२।६ (मेधातिथिः काण्वः । मित्रावरुणौ)

करतां नः सुराधसः ।

(इन्द्रः १४६५) ३।५।३।१३ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)

करदिभः सुराधसः ।

[१०३] १।१३।११ (परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)

ता सत्राजा घृतासुती ।

(२३५) १।४।१६ (गृत्समदः शौनकः । मित्रावरुणौ)

[१०४] १।१३।१२ (परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)

मित्रस्य ... अर्यम्णो वरुणस्य च ।

(८०) ८।४।७।९ (त्रित आप्यः । आदित्याः)

मित्रस्य ... अर्यम्णो वरुणस्य च ।

[१०५] १।१३।३ (परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)

सचेते ... । ... आदित्या दाजुनस्पती ।

(१३५) २।४।१६ (गृत्समदः शौनकः । मित्रावरुणौ)

आदित्या दाजुनस्पती । सचेते ... ।

[१०६] १।१३।४ अयं मित्राय वरुणाय श्रुतमः ।

(सोमः ९७६) ९।१०।४।३ (पर्वतनारदौ काण्वौ,
अस्यपो सिखण्डिन्यावप्सरसौ वा । पवमानः सोमः)

यथा मित्राय ... ।

[१०७] १।१३।११ अस्मन्ना गन्तमुप नः ।

(२१२) १।१३।३ (परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)

[१०८] १।१३।७।१ (परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)

सोमाः शुक्रा गवाक्षिरः ।

(सोमः ५०५) २।६।४।२८ (कश्यपो मारीचः । पवमानः
सोमः)

१७ दै० [अदिति]

[२११] १।१३।७।२ सोमासो दध्याक्षिरः ।

(इन्द्रः १८) १।५।५ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)

[२११] १।१३।७।२ साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ।

(अश्विनौ ४५) (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)

[२११] १।१३।७।२ (परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)

चारुर्कृताय पीतये ।

(सोमः १४४) ९।१७।८ (असितः काश्यपो देवलो वा ।
पवमानः सोमः)

[२१२] १।१३।७।३ अंशुं दुहन्त्यद्विभिः सोमं दुहन्त्यद्विभिः ।

(सोमः ५२२) ९।६।५।१५ (भृगुर्वाहणिर्जमदमिर्भार्गवो
वा । पवमानः सोमः)

तीव्रं दुहन्त्यद्विभिः ।

[२१६] १।१५।१४ (दीर्घतमा औचथ्यः । मित्रावरुणौ)

ऋतावानावृतावृधौ घोषथो बृहत् ।

(३५०) ८।२५।४ (विश्वमना वैयश्वः । मित्रावरुणौ)

... .. घोषतो बृहत् ।

[२२२] १।१५।२।१ ऋतेन मित्रावरुणा सचेथे ।

(१९७) १।२।८ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । मित्रावरुणौ)

ऋतेन मित्रावरुणौ ।

[२२५] १।१५।२।४ प्रियं मित्रस्य वरुणस्य धाम ।

(३२४) ७।६।१४ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)

शंसा मित्रस्य ... ।

(आयुर्वेदः १९५९) १०।१०।६ (यमो वैवस्वत ऋषिः ।
यमी)

यमी)

यमी)

यमी)

यमी)

यमी)

यमी)

यमी)

यमी)

यमी)

यमी)

यमी)

यमी)

यमी)

यमी)

यमी)

यमी)

यमी)

यमी)

यमी)

- [२२८] १।१५२।७ आ वा मित्रावरुणा हव्यजुष्टि ।
 (३३९) ७।६५।४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)
 आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम् ।
 (२३६) ३।६२।१६ (गाथिनो विश्वामित्रः, जमदग्निर्वा ।
 मित्रावरुणौ)
 [२२९] १।१५३।१ (दीर्घतमा औचथ्यः । मित्रावरुणौ)

- हव्येभिर्मित्रावरुणा नमोभिः ।
 (इन्द्रः ३१५९) ४।४२।९ (त्रसदस्युः पौरुक्त्स्यः ।
 इन्द्रावरुणौ)
 हव्येभिरिन्द्रावरुणा नमोभिः ।
 (इन्द्रः ३१९२) ७।८४।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ।
 इन्द्रावरुणौ)
 हव्येभिरिन्द्रावरुणा नमोभिः ।

ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

- [२३३] २।४१।४ (गृत्समद [आजिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्]
 भार्गवः शौनकः)
 अयं वा मित्रावरुणा सुतः सोम ऋतावृधा ।
 (अश्विनौ ३९) १।४७।१ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
 अयं वा मधुमत्तमः सुतः... ।
 [२३५] २।४१।६ ता सत्राजा घृतासुती ।
 (२०३) १।१२६।१ (परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)
 [२३५] २।४१।६ आदित्या दानुनस्पती । सचेते ।
 (२०५) १।१३६।३ (परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)
 सचेते... । आदित्या दानुनस्पती ।

ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

- [२३६] ३।६२।१६ (विश्वामित्रो गाथिनः जमदग्निर्वा ।
 मित्रावरुणौ)
 आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम् ।
 (३३९) ७।६५।४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)
 आ नो मित्रावरुणा ... घृतैर्गव्यूतिमुक्षतमिळाभिः ।
 (अश्विनौ ३८९) ८।५।६ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
 घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम् ।
 [२३८] ३।६२।१८ (विश्वामित्रो गाथिनः, जमदग्निर्वा । मित्रावरुणौ)
 गृणाना जमदग्निना ।
 (आयुर्वेदः १०८०) ७।९६।३ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ।
 सरस्वती)
 गृणाना जमदग्निवत् ।
 (अश्विनौ ५७९) ८।१०१।८ (जमदग्निर्भार्गवः ।
 अश्विनौ)
 गृणाना जमदग्निना ।
 (सोमः ४४१) ९।६२।१४ (जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः
 सोमः)
 गृणानो जमदग्निना ।
 (सोमः ५३२) ९।६५।२५ (भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो
 वा । पवमानः सोमः)
 गृणानो जमदग्निना ।
 [२३८] ३।६२।१८ (गाथिनो विश्वामित्रः, जमदग्निर्वा ।
 मित्रावरुणौ)
 पातं सोममृतावृधा ।
 (अश्विनौ ४१) १।४७।३ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)

ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलम् ।

- [२५५] ५।६४।१ (अर्चनाना आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
 वरुणं वो रिशादसम् ।
 (१९६) (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । मित्रावरुणौ)
 वरुणं च रिशादसम् ।
 [२५६] ५।६४।२ विश्वासु आसु जोगुवे ।
 (अग्निः २८१) १।१२७।१० (परुच्छेपो दैवोदासिः । अग्निः)
 [२६३] ५।६५।२ (रातहव्य आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
 राजाना दीर्वश्रुत्तमा । ऋतावृधा ऋतावाना जनेजने ।

सुः पौरुषस्यः ।
इन्द्रावरुणौ)

वरुणर्वसिष्ठः ।
इन्द्रावरुणौ)

सिः । मित्रावरुणौ)
सचेते ।

सिः । मित्रावरुणौ)
स्या दानुवस्यती ।

जमदग्निर्भागवः ।
अश्विनौ)

र्गवः । पवमानः
सोमः)

रुणिर्मदमिर्भागवः
पवमानः सोमः)

रः, जमदग्निर्भागवः
मित्रावरुणौ)

काण्वः । अश्विनौ)

वोदासिः । अग्निः)
मित्रावरुणौ)

ना जनेबने ।

(३६९) ८।१०।१२ (जमदग्निर्भागवः । मित्रावरुणौ)
राजाना ... ।

(२७७) ५।६७।४ (यजत आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
ऋतस्पृश ऋतावानो जनेजने ।

(३६६) ५।६५।५ स्याम सप्रथस्तमे ।

(अग्निः २६८) १।९४।१३ (कुत्स आङ्गिरसः । अग्निः)
स्याम...सप्रथस्तमे ।

(३६६) ५।६५।५ अनेहसस्स्वोतयः ।

(७२-८४) ८।४७।१-१३ अनेहसो व ऊतयः ।

(उषा १८७-९१) ८।४७।१४-१८ (त्रित आप्त्यः ।
आदित्यः)

(२००) ५।६६।३ (रातहव्य आत्रेयः । मित्रावरुणौ)

ता वामेषे रथानाम् ।

(इन्द्रः ३०४३) ५।८६।४ (अत्रिमौमः । इन्द्राग्नी)

(३७१) ५।६६।४ नि केतुना जनानाम् ।

(आयुर्वेदः ७७७) १।१९१।४ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः ।
अप्तृणसूर्याः)

नि केतवो जनानाम् ।

(३७३) ५।६७।१ (यजत आत्रेयः । मित्रावरुणौ)

वरुण मित्रार्थमन् ।

(८८) ८।६७।४ (मत्स्यः साम्मदः मान्यो मैत्रावरुणिः

बहवो वा मत्स्या जालनद्धाः । आदित्याः)

(विश्वे देवाः ७९३) १०।१२६।२ (कुल्मलवर्हिषः

शैल्लषिः अंहोमुग्वा वामदेव्यः । विश्वे देवाः)

(३७५) ५।६७।२ (यजत आत्रेयः । मित्रावरुणौ)

आ यद्योनि हिरण्ययं ... सद्यः ।

(सोमः ६९७) ९।६४।२० (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)

आ यद्योनि हिरण्ययं ... सीदति ।

(३७५) ५।६७।२ धर्तारा चर्षणीनाम् ।

(इन्द्रः ३१३५) १।१७।२ (मेधातिथिः काण्वः ।
इन्द्रावरुणौ)

(३७३) ५।६७।३ वरुणो मित्रो अर्थमा ।

(अग्निः ३१) १।२६।४ (शुनःशेष आजीगर्तिः । अग्निः)

(३७३) ५।६७।३ वरुणमित्रार्थमणः)

(३७३) ५।६७।३ पान्ति मर्त्यं रिषः ।

(३७३) ५।६७।३ (शुनःशेष आजीगर्तिः । वरुणमित्रार्थमणः)

*

[२७७] ५।६७।४ ऋतावानो जनेजने ।

(२३६) ५।६५।२ (रातहव्य आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
ऋतावाना ... ।

[२७७] ५।६७।४ (यजत आत्रेयः । मित्रावरुणौ)

ते हि ... । अंहोश्चिदुरुचक्रयः ।

(३) ८।१८।५ (इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः)

ते हि ... । अंहोश्चिदुरुचक्रयः ।

[२८६] ५।६९।३ (उरुचक्रिरात्रेयः । मित्रावरुणौ)

प्रातर...मध्यंदिन उदिता सूर्यस्य ।

(अश्विनौ २८९) ५।७६।३ (अत्रिमौमः । अश्विनौ)

[२९२] ५।७१।१ (बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ)

आ नो गन्तं रिशादसा ।... इमम् ।

(अश्विनौ ४३७) ८।८।१७ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)

... रिशादसेमम् ।

[२९३] ५।७१।२ (बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ)

ईशाना पिप्यतं धियः ।

(इन्द्रः ३०८०) ७।९४।२ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । इन्द्राग्नी)

(सोमः १५३) ९।१९।२ (असितः काश्यपो देवलो वा ।
पवमानः सोमः)

[२९४] ५।७१।३ उप नः सुतमा गतम् ।

(इन्द्रः ८१) १।१६।४ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)

उप ... गहि ।

[२९४] ५।७१।३ (बाहुवृक्त आत्रेयः मित्रावरुणौ)

वरुण मित्र दाशुषः ।

(७२) ८।४७।२ (त्रित आप्त्यः । आदित्याः)

वरुण मित्र दाशुषे ।

[२९४] ५।७१।३ अस्य सोमस्य पीतये ।

(अश्विनौ ५) १।२२।१ (मेधातिथिः काण्वः । अश्विनौ)

[२९५-२९७] ५।७१।१-३ नि बर्हिषि सदतं (३ सदतां)

सोमपीतये ।

[२९७] ५।७१।३ (बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ)

जुषेतां यज्ञमिष्टये ।

(अश्विनौ २९९) ५।७८।३ (सप्तवधिरात्रेयः । अश्विनौ)

जुषेतां यज्ञमिष्टये ।

(इन्द्रः ३०९४) ८।३८।४ (श्यावाश्व आत्रेयः । इन्द्राग्नी)

जुषेतां यज्ञमिष्टये ।

ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

[३०७] ६।६७।१० (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । मित्रावरुणौ)
वि यद्वाचं कीस्तासो भरन्ते ।

(अश्विनौ ३७१) ७।७२।४ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । अश्विनौ)
प्र वां ब्रह्माणि कारवो भरन्ते ।

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

[३०९] ७।५०।१ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)
मा मां पथेन रपसा विदत् स्वरुः ।
(अग्निः १२११) ७।५०।२ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । अग्निः)
(विश्वे देवाः ५०८) ७।५०।३ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः ।
विश्वे देवाः)

[३१०] ७।६०।२ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)
विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च गोपाः ।
(विश्वे देवाः ३८४) ६।५०।७ (ऋजिश्वा भारद्वाजः ।
विश्वे देवाः)

विश्वस्य स्थातुर्जगतो जनित्रीः ।

[३१०] ७।६०।२ ऋतु मर्तेषु वृजिना च पश्यन् ।
(अग्निः ६४३) ४।१।१७ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)

[३११] ७।६०।३ अयुक्त सप्त हरितः सधस्थात् ।
(५५०) १।११।५।४ (कुत्स आङ्गिरसः । सूर्यः)

[३११] ७।६०।३ सं यो यूथेव जनिमानि चष्टे ।
(अग्निः ६६४) ४।२।१८ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
आ यूथेव...जनिमान्युग्र ।

[३१२] ७।६०।४ उद्वां पृक्षासो मधुमन्तो अस्थुः ।
(अश्विनौ २३८) ४।४।५।२ (वामदेवो गौतमः । अश्विनौ)
उद्वां पृक्षासो मधुमन्त ईरते ।

[३१२] ७।६०।४ आ सूर्यो अरुहच्छुक्रमर्णः ।
(विश्वे देवाः ३१८) ५।४।५।१० (सदापृण आत्रेयाः ।
विश्वे देवाः)

[३१२] ७।६०।४ मित्रो अर्यमा वरुणः सजोषाः ।
(विश्वे देवाः १४१) १।१८।६।२ (अग्रस्त्यो मैत्रावरुणः ।
विश्वे देवाः)

[३१३] ७।६०।५ शन्मासः पुत्रा अदितेरदृग्धाः ।
२।२८।३ (कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । वरुणः)
यूयं नः पुत्रा... ।

[३१४] ७।६०।६ अपि ऋतुं सुचेतसं वतन्तः ।
(अग्निः ११३३) ७।३।१० = ७।४।१० (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । अग्निः)
अपि ऋतुं सुचेतसं वतेम ।

[३१५] ७।६०।११ वाजस्य सातौ परमस्य रायः ।
(अग्निः ७३६) ४।१२।३ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
अग्निर्वाजस्य परमस्य रायः ।

[३१६] ७।६०।११ उरु क्षयाय चक्रिरे ।
(अग्निः ७५) १।२६।८ (कण्वो घोरः । अग्निः)
[३२०] ७।६०।१२ = (३२७) ७।६।१७ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः ।
मित्रावरुणौ)

इयं देव पुरोहितिर्युवभ्यां यज्ञेषु मित्रावरुणावकारि ।
विश्वानि दुर्गां पिपृतं तिरो नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नमः ।

[३२१] ७।६१।१ अग्नि यो विश्वा भुवनानि चष्टे ।
(इन्द्रः ३००८) १।१०८।१ (कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्राग्नी)
वामभि विश्वानि भुवनानि चष्टे ।

[३२४] ७।६१।४ शंसा मित्रस्य वरुणस्य धाम ।
(२२५) १।१५।२।४ (दीर्घतमा औचथ्यः । मित्रावरुणौ)
प्रियं मित्रस्य वरुणस्य धाम ।

[३२६] ७।६१।६ समु वां यज्ञं महयं नमोभिः ।
(विश्वे देवाः ४९७) ७।३।२।३ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः ।
विश्वे देवाः)

समु वो यज्ञं महयं ... ।

[३२७] ७।६१।७ = (३२०) ७।६०।१२
[३२८] ७।६१।४ आवाभूमी अदितेः त्रासीयां नः ।
(विश्वे देवाः २२९) ४।५।५।१ (वामदेवो गौतमः ।
विश्वे देवाः)

[३२९] ७।६१।५ श्रुतं मे मित्रावरुणा हवेमा ।
(विश्वे देवाः ८७) १।१२।२।६ (कक्षीवान् दीर्घतमा
औशिजः । विश्वे देवाः)

[१३०] ७६१६ = ७६३६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)

वसिष्ठः । अश्विनौ)
मित्रो वरुणो अर्यमा नस्मने तोकाय वरिवो दधन्तु ।
गुणो नो विष्वा सुपथानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥

[१३१] ७६११ मित्रो अर्यमा वरुणो जुषन्त ।

(१२) ११७१२ (कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा ।
आदित्यः)

[१३२] ७६१५ = (३४०) ७६५५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ।
मित्रावरुणौ)

सोमो वरुणो मित्रं तुभ्यं सोमः शुक्रो न वायवेऽयामि ।
अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधीर्युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥

[१३५] ७६१५ = (३४०) ७६५५

अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधीः ।

(इन्द्रः ३३२४) ४५०११ (वामदेवो गौतमः ।
इन्द्रावृद्धस्पती)

[१३६] ७६५१ प्रति वां सूर उदिते सूक्तैः ।

(६३२) ७६३५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सूर्यमित्रावरुणाः)
प्रति वां ... विधेम ।

[१३७] ७६५१ मित्रं हुवे वरुणं पूतदक्षम् ।

(११६) १११७ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । मित्रावरुणौ)

ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम् ।

[१३८] ८१५११ (विश्वमना वैयश्वः । मित्रावरुणौ)

ऋतावाना यजसे पूतदक्षसा ।

(अग्निः ११९९) ८१३३० (विश्वमना वैयश्वः । अग्निः)

ऋतावाना सम्राजा पूतदक्षसा ।

[१३९] ८१५३ = (३४२) ७६६२

[१४०] ८१५४ = (२१६) ११५१४ (दीर्घतमा औचथ्यः ।
मित्रावरुणौ)

[१४१] ८१५७ अग्नि यूथेव पश्यतः ।

(अग्निः ६६४) ४१११८ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
आ यूथेव ... पश्ये ।

[१४२] ८१५८ साम्राज्याय सुकृतु ।

[१४३] ११२१८ (मेधातिथिः काण्वः । सविता)
सखाय आ नि धीदत ।

... पूतदक्षं वरुणम् ।

[३३८] ७६५३ अपो न नावा दुरिता तरेम ।

(इन्द्रः ३१६८) ६६८८ (वार्हस्पत्यो भरद्वाजः ।
इन्द्रावरुणौ)

[३३९] ७६५४ आ नो मित्रावरुणा ... धृतैर्गन्धूतिमुक्षतम् ।

(२३६) ३६२१६ (गाथिनो विश्वामित्रः, जमदग्निर्वा ।
मित्रावरुणौ)

[३४०] ७६५४ प्रति वामत्र वरमा जनाय ।

(अश्विनौ ३५९) ७७०५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः
अश्विनौ)

प्रति प्र यातं वरमा जनाय ।

[३४०] ७६५५ = (३३५) ७६४५

[३४०] ७६५५ = (३६५) ७६४५

[३४२] ७६६२ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)

असुर्याय प्रमहसा ।

(३४३) ८१५३ (विश्वमना वैयश्वः । मित्रावरुणौ)

[३४६] ७६६१९ (विश्वमना वैयश्वः । मित्रावरुणौ)

पातं सोममृतावृषा ।

(अश्विनौ ४१) १४७३ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)

११२५१० (शुनःशेष आजीर्गतिः । वरुणः)

साम्राज्याय सुकृतुः ।

[३६१] ८१५१८ उभे आ पप्रौ रोदसी महिरवा ।

(विश्वे देवाः १८४) ३५४१५ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः,
प्रजापतिर्विच्यो वा । विश्वे देवाः)

[३६७] ८१५२४ विषा नविष्टया मती ।

(इन्द्रः ९२६) १८२१२ (गोतमो राष्ट्रपणः । इन्द्रः)

[३६९] ८१०१२ (जमदग्निर्माग्वः । मित्रावरुणौ)

राजाना दीर्घश्रुत्तमा ।

(२६३) ५६५२ (रातहव्य आत्रेयः । मित्रावरुणौ)

[३६९] ८१०१२ साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ।

(अश्विनौ ४५) १४७३ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

(सोमः १७४) ९१०४१ (पर्वतनारदौ काण्वौ,
काश्यपौ शिखण्डिन्यावप्सरसौ वा । पवमानः सोमः)

(१३४)

अदितेः, आदित्यानां च

[४०७] १।२४।३ (आजीगर्तिः शुनःशेषः स कृत्रिमो वैश्वामित्रो
देवरातः । सविता)

ईशानं वार्याणाम् ।

(इन्द्रः १५) १।५।२ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)

[४१०] १।३५।२ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । सविता)

हिरण्ययेन सविता रथेन ।

(अश्विनौ २५५) ४।४४।५ (पुरुमीळहाजमीळहौ सौहोत्रौ ।
अश्विनौ)

हिरण्ययेन सुवृता रथेन ।

(अश्विनौ ४१८) ८।५।३५ (ब्रह्मातिथिः काण्वः ।
अश्विनौ)

हिरण्ययेन रथेन ।

[४१६] १।३५।८ हिरण्याक्षः सविता देव आगात् ।

(४३३) २।३८।४ (गृत्समद [आङ्गिरसः शौनहोत्रः
पश्चाद्] भार्गवः शौनकः । सविता)
अरमतिः सविता— ।

[४१६] १।३५।८ दधद् रत्ना दाशुषे वार्याणि ।

(अश्विनौ ३९) १।४७।१ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
धत्तं रत्नानि दाशुषे ।

[४१७] १।३५।२ उभे द्यावापृथिवी अन्तरीयते ।

१।१६०।१ (दीर्घतमा औचथ्यः । द्यावापृथिवी)
द्यावापृथिवी... । धिषणे अन्तरीयते ।

[४१८] १।३५।१० (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । सविता)
सुसृळीकः स्वर्वा यास्वर्वाङ् ।

(अश्विनौ १२७) १।११८।१ (कक्षीवान् औशिने
दैर्घतमसः । अश्विनौ)

ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

[४२०] २।३८।१ (गृत्समद [आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्]
भार्गवः शौनकः । सविता)

उदु ष्य देवः सविता सवाय ।

(४६१) ६।७१।१ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । सविता)

... सविता हिरण्यया ।

(४६४) ६।७१।४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । सविता)

... सविता दमूना हिरण्यपाणिः ।

(४६७) ७।३८।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सविता)
... सविता ययाम हिरण्ययीम् ।

[४२३] २।३८।४ = (४१६) १।३५।८ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः ।
सविता)

[४३०] २।३८।११ (गृत्समदः शौनकः । सविता)

शं यत् स्तोतृभ्य आपये भवाति ।

(अग्निः ११५४) ७।८।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । अग्निः)

ऋग्वेदस्य चतुर्थं मण्डलम् ।

[४४३] ४।५४।३ (वामदेवो गौतमः । सविता)

अचित्ति यत् चक्रमा दैव्ये जने ।

७।८९।५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । वरुणः)

यत् ... दैव्ये जने... ।

चरामसि ... अचित्ति ॥

[४४६] ४।५४।६ आदित्येनो अदितिः शर्म यंसत् ।

(विश्वे देवाः ६५) १।१०७।२ (कुत्स आङ्गिरसः ।
विश्वे देवाः)

ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलम् ।

[४५३] ५।८२।२ अस्य हि स्वयशस्तरम् ।

(अग्निः ८७७) ५।१७।२ (पूरुत्रेयः । अग्निः)

[४५३] ५।८२।२ (श्यावाश्व आत्रेयः । सविता)

न मिनन्ति स्वराज्यम् ।

(इन्द्रः २४४०) ८।९३।११ (सुकक्ष आङ्गिरसः । इन्द्रः)

[४५४] ५।८२।३ (श्यावाश्व आत्रेयः सविता)

सुवाति सविता भगः ।

(४४) ७।६६।४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः)

[४५७] ५।८१।६ (श्यावाश्व आत्रेयः । सविता)
विश्वा वामानि धीमहि ।

(अश्विनौ ४८९) ८।२१।१८ (सोमरिः काण्वः । अश्विनौ)
(अग्निः १२६१) ८।१०३।५ (सोमरिः काण्वः । अग्निः)

ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

[४६१] ६।७१।१ उदु ष्य देवः सविता हिरण्यया ।
(४२०) १।३८।१ ... देवः सविता सवाय ।
[४६२] ६।७१।३ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । सविता)
रक्षा माकिर्नो अघशंस ईशत ।
६।७५।१० (पायुर्भरद्वाजः । ब्राह्मण-पितृ-सोम-द्यावा-
पृथिवी-पूषाणः)

[४६४] ६।७१।४ उदु ष्य देवः सविता दमूना ।
(४२०) १।३८।१ (गृत्समद [आङ्गिरसः शौनहोत्रः
पश्चाद्] भार्गवः शौनकः । सविता)
... ... सविता सवाय ।

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

[४६७] ७।३८।१ = (४२०) २।३८।१
[४६८] ७।३८।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सविता)
हिरण्ययीममर्ति यामशिध्रेत् ।
(इन्द्रः १३५२) ३।३८।८ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः प्रजापति-
र्वाच्यो वा विश्वामित्रो गायिनो वा । इन्द्रः)
[४७१] ७।३८।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सविता, [उत्तरार्धः-
भगो वा])
रत्नं देवस्य सवितुरियानः ।

(४३) ७।५२।३ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्यः)
... ... रियानाः ।
[४७३] ७।४५।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सविता)
हस्ते दधानो नर्या पुरुणि ।
(अग्निः १२५) १।७२।१ (पराशरः शाक्यः । अग्निः)
[४७५] ७।४५।३ मर्तभोजनमघ रासते नः ।
(रुद्रः ११) १।११४।६ (कुत्स आङ्गिरसः । रुद्रः)
राखा च नो अमृत मर्तभोजनम् ।

ऋग्वेदस्य दशमं मण्डलम् ।

[४८८] १०।१३९।२ (देवगन्धर्वो विश्वावसुः । सविता)
बापयिवान् रोदसी अन्तरिक्षम् ।
(अग्निः २१२) १।७३।८ (पराशरः शाक्यः । अग्निः)
[४८९] १०।१३९।३ रायो बुध्नः संगमनो वसूनाम् ।
(अग्निः १८८४) १।९६।६ (कुत्स आङ्गिरसः ।
द्रविणोदा अग्निः)

[४७९] १०।१३९।३ देव इव सविता सत्यधर्मा ।
१०।३४।८ (ऋषयेष्टुषः, अक्षो मौजवान् वा । अक्षनिन्दा)
[४८१] १०।१४९।२ (अर्चन् हैरण्यस्तूपः । सविता)
अतो द्यावापृथिवी अप्रथेताम् ।
१०।८२।१ (विश्वकर्मा भौवनः । विश्वकर्मा)
आदिद् द्यावापृथिवी अप्रथेताम् ।

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

[४७७] १।११।१ (कुत्स आङ्गिरसः । सूर्यः)
द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ।
(अग्निः ७४६) (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
आमा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं ।

(आयुर्वेदः ९९०) ७।१०१।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः
(वृष्टिकामः) कुमार आग्नेयो वा । पर्जन्यः)
तस्मिन्नात्मा जगतस्तस्थुषश्च ।

(१३३)

अदिते, आदित्यानां च

- [५४९] १।११५।३ (कुत्स आङ्गिरसः । सूर्यः)
परि द्यावापृथिवी यन्ति सद्यः ।
(अश्विनौ २३३) ३।५८।८ (विश्वामित्रो गाथिनः ।
अश्विनौ)
परि द्यावापृथिवी यन्ति सद्यः ।
[५५०] १।११५।४ यदेदयुक्त हरितः सधस्यात् ।

- (३११) ७।६०।३ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)
अयुक्त सप्त हरितः — ।
[५५६] ५।४०।५ (अत्रिभौमः । सूर्यः)
यत् त्वा सूर्यं स्वर्भानुस्तमसाविध्यदासुरः ।
५।४०।९ (अत्रिभौमः । अत्रिः)
यं वै सूर्यं स्वर्भानुस्तमसाविध्यदासुरः ।

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

- [५५८] ७।६२।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सूर्यः)
कृतः सुकृतः कर्तुभिर्भूत् ।
(इन्द्रः १८७१) ६।१९।१ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । इन्द्रः)
पृथुः सुकृतः कर्तुभिर्भूत् ।
[५६०] ७।६२।३ ऋतावानो वरुणो मित्रो अग्निः ।
(विश्वे देवाः ४८७) ७।३९।७ = ७।४०।७ (मैत्रावरुणि-
र्वसिष्ठः । विश्वे देवाः)
[५६४] ७।६३।४ दूरेअर्थस्तरणिर्भ्राजमानः ।
(६७४) १०।८८।१६ (मूर्धन्वानाङ्गिरसो, वामदेव्यो वा ।
सूर्य-वैश्वानरौ)
अप्रयुच्छन् तरणिर्भ्राजमानः ।
[६३१] ७।६३।५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सूर्य (पूर्वार्धः) -
मित्रावरुणौ [उत्तरार्धः])

- प्रति वां सूर उदिते ... नमोभिर्मित्रावरुणा ।
(३३६) ७।६५।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)
— उदिते सूक्तैर्मित्रं ... वरुणम् ।
(४७) ७।६६।७ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः)
प्रति वां सूर उदिते मित्रं गृणीषे वरुणम् ।
[६३१] ७।६३।५ विधेम नमोभिर्मित्रावरुणोत हव्यैः ।
(अग्निः ९४८) ६।१।१० (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । अग्निः)
विधेम नमोभिरग्ने समिधोत हव्यैः ।
[५६७] ७।६६।१६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सूर्यः)
जीवेम शरदः शतम् ।
(६५०) १०।८५।३९ (सूर्यासावित्री ऋषिका ।
सूर्या-सावित्री)
जीवाति शरदः शतम् ।

ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम् ।

- [५६८] ८।१०।१।११ (जमदाग्निर्भागवः । सूर्यः)
महस्ते सतो महिमा पनस्यते ।

- (आयुर्वेदः १०४४) १०।७५।९ (सिन्धुक्षित्रैर्यमेधः । नद्यः)
महान् ह्यस्य महिमा पनस्यते ।

ऋग्वेदस्य दशमं मण्डलम् ।

- [५७३] १०।३७।४ (सौर्योऽभितपाः । सूर्यः)
येन सूर्यं ज्योतिषा बाधसे तमः ।
(१००४) १०।१२७।२ (कुशिकः सौभरः, रात्रिर्वा
भारद्वाजी । रात्रिः)
ज्योतिषा बाधते तमः ।
[५७६] १०।३७।७ जीवाः प्रति पश्येम सूर्यं ।
(५८६) १०।१५८।५ (चक्षुः सौर्यः । सूर्यः)

- प्रति पश्येम सूर्यं ।
[५७९] १०।३७।१० तत् सूर्यं द्रविणं घेहि चित्रम् ।
१।२३।१५ (गृत्समदः शौनकः । बृहस्पतिः)
तदस्मात्तु द्रविणं घेहि — ।
[५८०] १०।३७।११ यद् वो देवाश्चक्रुर्मा जिह्या ।
(आयुर्वेदः १९९०) १०।१५।४ (शङ्खो यामायनः । पितरः)
इमा वो हव्या चक्रुर्मा जुषध्वम् ।

[५८६] १०१५८५ (चक्षुः सौर्यः । सूर्यः)
सुसंद्दशं त्वा वयं प्रति ।
(इन्द्रः २२७) ११८२१३ (गोतमो राहुगणः । इन्द्रः)
सुसंद्दशं त्वा वयं मघवन् ।
[५८६] १०१५८५ प्रति पश्येम सूर्य ।
(५७६) १०१३७७ (सौर्योऽभितपाः । सूर्यः)
[५९०] १०१७०१४ (विभ्राट् सौर्यः । सूर्यः)
विभ्राजज्योतिषा स्वरगच्छो रोचनं दिवः ।
(इन्द्रः २३६६) ८१९८१३ (नृमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)
[५९०] १०८५१३९ = (५६७) ७६६१६
[५९३] १०८५१४२ विश्वमायुर्व्यश्नुतम् ।

(अग्निः २४६७) ११९३१३ (गोतमो राहुगणः ।
अग्नीषोमौ)
विश्वमायुर्व्यश्नुतम् ।
[६५४-५५] १०८५१४३-४४ शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ।
(सोमः १२२३) ६१७४१ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः ।
सोमारुद्रौ)
शं नो भूतं द्विपदे शं चतुष्पदे ।
[६६०] १०८८१२ (आङ्गिरसो मूर्धन्वान्, वामदेव्यो वा ।
सूर्यवैश्वानरोऽग्निः)
आविः स्वरभवज्जाते अग्नौ ।
(अग्निः ६७६) ४३१११ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
[६७४] १०८८१६ = (५६४) ७६३४

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

[६९] १११५३ (मेधातिथिः काण्वः । [ऋतवः] त्वष्टा)
त्वं हि रत्नधा असि ।
(अग्निः ११२७) ७१६६६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । अग्निः)
[६९] १०१८१६ (संकुषुको यामायनः । त्वष्टा)
दीर्घमायुः करति जीवसे वः ।
(आयुर्वेदः १९७७) १०१४१४ (यमो वैवस्वतः । यमः)

दीर्घमायुः प्र जीवसे ।
[७१७] ११२३१५ (मेधातिथिः काण्वः । पूषा)
गोभिर्वयं न चर्कुषत् ।
(इन्द्रः १०८६) ११७६१२ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः ।
इन्द्रः)
यवं न चर्कुषद् वृषा ।

ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

[७३] ३६२१८ (विश्वामित्रो गाथिनः । पूषा)
वधूयुरिव योषणाम् ।
(इन्द्रः १४४८) ३१५२३ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)

[७३४] ३६२१९ (विश्वामित्रो गाथिनः । पूषा)
यो विश्वामि विपश्यति भुवना सं च पश्यति ।
(अग्निः १७१४) १०१८७४ (वत्स आग्नेयः । अग्निः)

ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

[७४] ६४८१६ (शंयुर्बार्हस्पत्यः । पूषा)
अषा अयौ अरातयः ।
(इन्द्रः ३०५३) ६१५२८ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)
अषा अयौ अरातयः ।
[७४] ६१५३५ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । पूषा)
पणीनामारया हृदया कवे ।
(७४५) ६१५३७ पणीनां हृदया कवे ।
[७४] ६१५३५-७ अथेमस्मभ्यं रन्धय ।
१८ दै० [अदिति]

[७४५-४६] ६१५३७-८ आ रिख किक्किरा कृणु ।
[७४८] ६१५३१० (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । पूषा)
गोषणि...अश्वसां वाजसामुत । नृवत्... ।
(सोमः २०) ९१२१० (मेधातिथिः काण्वः । पवमानः
सोमः)
गोषा...नृषा...अश्वसा वाजसा उत ।
[७५४] ६१५४६ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । पूषा)
यजमानस्य सुन्वतः ।

(१३८)

अदितेः, आदित्यानां च

(इन्द्रः ३०७०) ६।६०।१५ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ।
इन्द्राग्नी)

[७५६] ६।५४।८ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । पूषा)

ईशानं राय ईमहे ।

८।२६।१२ (विश्वमना वैयश्वः, व्यश्वो वाङ्मिरसः । वायुः)

ईशानं राय ईमहे ।

(इन्द्रः १८२२) ८।४६।६ (वशोऽश्व्यः । इन्द्रः)

(इन्द्रः ५२५) ८।५३ [वाल० ५] । १ (मेध्यः काण्वः । इन्द्रः)

[७६६] ६।५६।२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । पूषा)

इन्द्रो वृत्राणि जिघ्रते ।

(इन्द्रः ४०१) ८।१७।८ (इरिम्बिठिः काण्वः । इन्द्रः)

[७८७] १०।२६।९ (विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा, वासुक्नो
वसुक्नुदा । पूषा)

इमं नः शृणवद्धवम् ।

(अग्निः १३३१) ८।४३।२२ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

[७९६] ७।४१।५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । भगः)

वयं भगवन्तः स्याम ।

(विश्वे देवाः १३८) १।१६४।४० (दीर्घतमा औचथ्यः ।

विश्वे देवाः)

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

[८१०] १।२२।१८ (मेधातिथिः काण्वः । विष्णुः)

त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुः ।

(इन्द्रः ३१४) ८।१२।२७ (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)

यदा ते विष्णुरोजसा त्रीणि पदा विचक्रमे ।

[८२३] १।२२।२१ (मेधातिथिः काण्वः । विष्णुः)

तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते ।

(अग्निः ५१७) ३।१०।९ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)

तं त्वा विप्रा विपन्यवो — ।

[८२५] १।१५।४।२ (दीर्घतमा औचथ्यः । विष्णुः)

मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः ।

(इन्द्रः २८४०) १०।१८०।२ (जय ऐन्द्रः । इन्द्रः)

[८२८] १।१५।४।५ (दीर्घतमा औचथ्यः । विष्णुः)

नरो यत्र देवयवो मदन्ति ।

(इन्द्रः २२७८) ७।९७।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । इन्द्रः)

[८३०] १।१५।४ (दीर्घतमा औचथ्यः । विष्णुः)

उरु क्रमिष्टोरुगायाय जीवसे ।

(इन्द्रः ५८६) ८।६३।९ (प्रगाथः काण्वः । इन्द्रः)

उरु क्रमिष्ट जीवसे ।

[८४१] ७।२९।७ = ७।१००।७ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । विष्णुः)

वषट् ते विष्णवासा आ कृणोमि तन्मे जुषस्व शिपिविष्ट हव्यम् ।

वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा न ॥

ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

[९२३] २।३६।५ (गृत्समदः शौनकः । [ऋतवः] इन्द्रो नभश्च)

तुभ्यं सुतो मधवन् तुभ्यमाभृत्तः—।...पिब ।

(इन्द्रः २७६१) १०।११६।७ (अमियुतः स्थैरोऽमियूपो
वा स्थौरः । इन्द्रः)

तुभ्यं सुतो मधवन् तुभ्यं पक्वो ... पिब... ।

[९२४] २।३६।६ (गृत्समदः शौनकः । [ऋतवः] मित्रा-

वरुणौ नभस्यश्च)

जुषेयां यज्ञं बोधतं हवस्य मे ।

(अश्विनौ ५१२) ८।३५।४ (श्यावाश्व आत्रेयः । अश्विनौ)

[९२५] २।३७।१ (गृत्समद [आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्]

भार्गवः शौनकः । द्रविणोदा ऋतवश्च)

अध्वर्यवः स पूर्णां वष्टयासिचम् ।

(अग्निः १२०२) ७।१६।११ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । अग्निः)

द्रविणोदा पूर्णां विवष्टयासिचम् ।

[९२५] २।३७।१ तस्मा एतं भरत तद्वशा ।

(इन्द्रः ११५१) २।१४।२ (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)

तस्मा एतं भरत तद्वशाय ।

ऋग्वेदस्य दशमं मण्डलम् ।

[१००३] १०।१२७।१ (कुशिकः सौभरः, रात्रिर्वा भारद्वाजी ।
रात्रिः)
विश्वा अधि भ्रियोऽधित ।
(अग्निः ४०१) २।८।५ (गृत्समदः शौनकः । अग्निः)
विश्वा अधि भ्रियो दधे ।

[१००४] १०।१२७।२ ज्योतिषा बाधते तमः ।
(५७३) १०।३७।४ ज्योतिषा बाधसे तमः ।
[१०१०] १०।१२७।८ उप ते गा इवाकरम् ।
(रुद्रः १४) १।११४।९ (कुत्स आङ्गिरसः । रुद्रः)
उप ते स्तोमान् ... इवाकरम् ।

अदितेः, आदित्यानां च
वर्णानुक्रम-सूची ।

सो भगो वरुणो	८०८	अदित्यै रास्नासि विष्णोः	८४९	अनेहो मित्रार्यमन्	६८
अदितेः सप्त	२४४	अदित्यै रास्नास्यदितिः	११	अन्तरा मित्रावरुणा	३८१
अदित्यद् गातुवित्तरा	३५५	अदित्सन्तं चिदावृणे	७४१	अन्तश्चरति रोचना	६९०
अन्तः सः स्वरगन्म	६२६	अदृश्रमस्य केतवो	५३६, ५९७	अन्नं पूर्वा रासतां मे	११२७
अन्नां गोसा परि	१६३	अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै	११७	अपचितः प्र पतत	६७८
अने देवा इहा वह	९१०	अद्या देवा उदिता	५५२	अप त्वं परिपन्थिनं	७२०
अनेतृषि विष्णवे त्वा	८५३	अद्यो नो देव सवितः	४५५	अप त्वे तावयो यथा	५३५
अनेतृषि विष्णवे धि	६५५	अद्य रात्रि तृष्टधूमं	१०३७, १०४५	अपपापं परिक्ष्वं	११३३
अनेतृषि विष्णो मा त्वा	८५१	अद्या चिन्तु यदिधिसामहे	३७३	अपवासे नक्षत्राणाम्	१११५
अनेतृषि वचक्रमा	४४३	अद्या नो विश्वसौभग	७२३	अपश्यं गोपाम्	६०८
अनेतृषि पशुपा वाजस्पत्यो	७७२	अधारयतं पृथिवीमुत	२४१	अप स्तेनं वासां	१०४९
अने नः सधतो नय	७२४	अद्या हि काव्या युवं	२७१	अपादेति प्रथमा	२२४, ३९५
अने विश्वान्यसहद्	१०५३	अधि या बृहतो दिवो	३५३	अपाद्वोत्रादुत पोत्राद्	९२८
अने देवा अवन्तु नो	८१८	अध्वनामध्वपते प्र मा	५९६	अपां नपातमवसे	४०४
अने गानि च यस्मा ह	१०३२	अनमीवास इळया	१८७	अपामीवामप सिधम्	५७
अनेभिः सवितः	४६३	अनर्वाणो ह्येषां पन्था	५५	अपि धृतः सविता देवो	४६९
अने दिवि पृथिव्यां	१४५	अनश्चो जातो अनभीशुः	२२६	अपो पु ण इयं शरुः	९६
अने गातुरवे	२०४	अनागसो अदितये	४५७	अभयं मित्रावरुणौ	३९२
अने सुवमानि	४३७	अनु तन्नो जास्पतिः	४७२	अभि त्वं देव सवितारम्	४८८
अनेतृषिः	१	अनु पूर्वाण्योक्या	३६०	अभि त्वा देव सवितः	४०७
अनेतृषि उरुव्यतु	८०	अनु श्रुताममतिं	२४३	अभि त्वा वर्चसा गिरः	६८६
अनेतृषि दिवा पशुं	२	अनुहवं परिहवं	११३२	अभि नो नयं वधु	७४०
अनेतृषि मित्र वरुणात	३४	अनेहो न उरुवजः	८	अभि यज्ञं गृणीहि नो	९०९

(१४०)

अदितेः, आदित्यानां च

अभि यं देव्यदितिः	४७०	अस्माकं देवा उभयाय	५८०	आ नो गन्तं रिशादसा	२९२
अभि ये मिथो वनुषः	४७१	अस्माकमूर्जा रथं	७८७	आ नो मित्र सुदीतिभिः	२५९
अभि यो महिना दिवं	१२१	अस्मिन्स्वेतच्छक्रपूत	३७५	आ नो मित्रावरुणा घृतैः	२३६
अभि वर्धतां पयसाभि	९८८	अस्य हि स्वयशस्तरं	४५३	आ नो मित्रावरुणा हव्यजुष्टि	३३९
अभि सूयवसं नय	७२५	अस्या ऊ पु ण उप	७३१	आ पूषश्चित्रवर्हिषम्	७२५
अभीवृत्तं कृशनेः	४१२	अहगेवास्म्यमावास्या	१०८६	आप्रा रजांसि दिव्यानि	३३६
अभिरे विद्युन्नक्षत्रिये	१११४	अहश्च रात्री च	१०६९	आ मा पूषन्नुप द्रव	७३५
अभूद् देवः सविता	४४१	अहोरात्राभ्यां नक्षत्रेभ्यः	१०६८	आ मां मित्रावरुणेह	३०९
अमावास्या च पौर्णमासी	१०८९	अहोरात्रे इदं ब्रूमः	९९७	आ मित्रे वरुणे वयं	२९५
अमावास्ये न त्वदेतानि	१०८८	अहोरात्रे ऊर्ध्वष्टौवे	१०३४	आ मे धनं सरस्वती	११०३
अमूरा विधा वृषणौ	३२५	अहोरात्रे गच्छ स्वाहा	१०६२	आ मे महच्छतभिषग्	११२८
अमेव नः सुहवा	७०३, ९२१	अहोरात्रे नासिके	१०७२	आयं गौः पृश्निरकमीद्	६८९
अयं वां मित्रावरुणा	२३३	अहोरात्रेभ्यः स्वाहा	१०६५	आ यद् योनिं हिरण्ययं	२७५
अयं सहस्रमानवो	६२८	अहो प्रत्यङ् बाल्यो	१०७३	आ यद् वामीयचक्षसा	२७३
अयं सहस्रमृषिभिः	१२०	अहो पारावतान्	१०१३	आयमगन्तंसंवत्सरः	८८७
अयमा यात्यर्यमा	८१०	आ कृष्णेन रजसा	४१०	आयमगन्तसविता क्षुरेण	५३२
अयमेक इत्या पुष	३५९	आगन् देव ऋतुभिः	४४०	आ यातं मित्रावरुणा	३००, ३४६
अयं मित्राय वरुणाय	२०६	आगन् रात्री संगमनी	१०८७	आयुर्विश्वायुः परि	७७६
अयं मित्रो नमस्यः	१८८	आ चिकितान सुक्रतू	३६८	आ यो विवाय सचथाय	८३७
अयुक्त सप्त शुन्धुवः	५४२	आजामि त्वाजन्या परि	३८८	आ राजाना मद ऋतस्य	३३२
अयुक्त सप्त हरितः	३११	आजासः पूषणं रथे	७३४	आ रात्रि पार्थिवः रजः	१०१५
अर्धमासाः पश्यन्ति ते	१०६६	आ तत् ते दत्त मन्तुमः	७२२	आ रिख किकिरा कृणु	७४५
अर्वाञ्चमद्य यग्यं	९२२	आ ते रथस्य पूषन्	७८६	आ रोहतायुर्जरसं	६९२
अव दिवस्तारयन्ति	६८५	आ ते स्वस्तिमीमहे	७७०	आ वक्षि देवां इह	९२२
अव वेदिं होत्राभिः	३१७	आदित्य चक्षुरा दत्स्व	१८०	आ वामध्वासः सुयुजो	२४२
अवोरिस्था वां छर्दिषो	३०८	आदित्य नावमारुक्षः	१५८	आ वाम्भ्यासः केशिनीः	२१८
अशीतिभिस्तिष्ठामिः	१६७	आदित्या अव हि ख्यत	८२	आ वां भूषन् क्षितयो	२१५
अश्रमदियमर्यमन्	८११	आदित्यानामवसा	३८	आ वां मित्रावरुणा	२२८
अश्वा न या वाजिना	३०१	आदित्या विश्वे मरुतः	४०	आ विश्वदेवं सत्पतिं	४५८
अश्विना पिबतं मधु	९१७	आदित्यासो अदितयः	४१	आ शर्म पर्वतानाम्	६३
अष्टाविंशानि शिवानि	११३०	आदित्यासो अदितिः	३२	आशसनं विशसनम्	६४६
अष्टौ व्यख्यत् ककुभः	४१६	आदित्या ह जरितः	१६५	आशुभिश्चिद्यान् वि मुचाति	४२१
असति सत् प्रतिष्ठितं	१५२	आदित्यो रुद्राः वसवः	१८३	इदं विष्णुर्वि चक्रमे	८१९
असंतापं मे हृदयम्	१२६	आ देवो यातु सविता	४७३	इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां	५८९
असपत्नं पुरस्तात्	५२४	आधीपर्णा कामशल्यां	३८५	इदं ह नूनमेषां	५४
असावन्यो असुर	३७४	आधीषमाणायः पतिः	७८४	इदं हिरण्यं गुल्गुलु	७९९
अस्तंयते नमो	१५६	आ धेनवो मामेतयम्	२२७	इदो वाजानां पतिः	७८५
अस्ति देवा अंहोः	९१	आ न इडाभिर्विदये	६०२	इन्द्र सोमं पिब ऋतुना	९०७
अस्मभ्यं तदिवो अद्भ्यः	४३०	आ नः प्रजां जनयतु	६५४	इन्द्रज्येष्ठान् बृहद्भ्यः	४४५

२९२	५५३	उत्तुदस्त्वोत्तुदतु	३८४	ऊती देवानां वयम्	२०९
२५९	२११	उत्थाय बृहती भव	४०२	ऋक्सामाभ्यामभिहितौ	६३७
२३३	२२	उत्सूर्यो दिव एति	६२५	ऋजमुक्षण्यायने	३६५
३३९	१०९८	उत् सूर्यो बृहदचौषि	५५८	ऋतमृतेन सपन्ता	२८२
७१५	७६९	उदगादयमादित्यो	१५७, ५४६	ऋतवः पक्कार आर्तवाः	९५१
३३९	४९७	उदस्य बाहू शिथिरा	४७४	ऋतवस्त ऋतुथा पर्व	९४७
७१५	११८	उदिह्युदिहि० । द्विषश्च	१३९	ऋतवस्तमवध्रतार्तवाः	९६५
३३६	२१	उदिह्युदिहि० । याश्च	१४०	ऋतवस्ते यज्ञं वि	९४८
७३५	४७६	उदु तिष्ठ सवितः	४६८	ऋतव स्थ ऋतावृधः	९३९
३०९	६५६	उदु त्र्यं जातवेदसं	५३४	ऋतस्य च वै स सत्यस्य	११३७
२९५	३१३	उदु त्यद् दर्शतं	५६५	ऋतस्य गोपावधि	२४८
११०३	३१५	उदु व्य देवः सविता दमूना	४६४	ऋतावान ऋतजाता	५३
११२८	३१४	उदु व्य देवः सविता ययाम	४६७	ऋतावाना नि षेदतुः	३५४
६८९	७३२	उदु व्य देवः सविता सवाय	४२०	ऋतुभिष्ट्वार्तवैरायुषे	९५०
२७५	३२०, ३२७	उदु व्य देवः सविता हिरण्यया	४६१	ऋतुभ्यष्ट्वार्तवैभ्यो	७०२
२७३	१०७७	उदु व्य शरणे दिवो	३६२	ऋतुभ्यः स्वाहा	९४६
८८७	१७२	उद् अर्यो उपवक्तेव	४१५	ऋतूनां च वै स आर्तवानां	१०७१
५३२	२९९	उद्यते नम उदायते	१५५	ऋतून् ब्रूम ऋतुपतीन्	९६७
००, ३४६	१०२३	उद्यन्नय मित्रमह	५४४	ऋतून् यज ऋतुपतीन्	९४९
७७६	८४०	उद्वयं तमसस्परि ज्योतिः	५४३	ऋतेन ऋतमपिहितं	२३९
८३७	२८५	उद्वयं तमसस्परि स्वः	६००	ऋतेन गुप्त ऋतुभिश्च	१६२, ९७१
३३२	९३५	उद् वां चक्षुर्वरुण	३२१	ऋतेन मित्रावरुणौ	१९७
१०१५	१०५२	उद् वां पृक्षासो मधुमन्तो	३१२	ऋतेन यावृतावृधौ	२००
७४५	६५३	उद्वेति प्रसर्वाता	५६२	ऋधगिस्था स मर्यः	३६८
६९२	११५	उद्वेति सुभगो विश्वचक्षाः	५६१	एकादशभिरस्तुवत	९३७
९२१	१०	उप ते गा इवाकरं	१०१०	एतच्चन त्वो वि चिकेतद्	२२३
२४२	२६१	उप नः सुतमा गतं	२९४	एता देवसेनाः सूर्य	१८२
२१८	७६६	उप मा पेपिशत् तमः	१००९	एयमगन् पतिकामा	७९८
४५८	६	उपयामगृहीतोऽसि	१०७, ८६०	एष ते योनिश्चन्द्रमाः	९७६
६३	३५७	उपयामगृहीतोऽसि मधवे	९३१	एष स्तोमो वरुण	३३५, ३४०
६४६	७४८	उपयामगृहीतोऽसि सावित्रो	४२०	एष स्य ते तन्वो	९२३
४२१	४५०	उपावीरस्युप देवान्	६९४	एष स्य मित्रावरुणा	३१०
८१९	२३२	उभाभ्यां देव सवितः	५०१	एहि वां विमुचो नपाद्	७५६
५८९	५	उभे अस्मै पीपयतः	३५	ओर्विप्रा अमर्त्या	१००४
५४	४६	उरु विष्णो विक्रमखो	८५२	ओषधयो भूतभयम्	८९१
७९९	७६७	उरुशंसा नमोवृधा	२३७	कः सप्त खानि वि ततर्द	१०७८
७८५	७९५	उर्वश्च मा चमसश्च	१२३	कल्यमयः कति सूर्यासः	६७६
९०७	४५१	उषसे नः परि देहि	१०५१	कदा चन प्रयुच्छसि	१०९
४४५	७१७	उषाः पुंश्चली मन्त्रो	१०२२	कदा चन स्तरीरसि	१०८

[अदिति]

(१४२)

कवी नो मित्रावरुणा	१९८	चन्द्रमा अप्सन्तरा	९७२, ९८९	तद् विष्णोः परमं पदं	८२२
कालः प्रजा असृजत	९०१	चन्द्रमा नक्षत्राणाम्	९८६	तद् वो अय मनामहे	५२
कालादापः समभवन्	९०२	चन्द्रमा नक्षत्रैः	९९०	तं नो व्यावापृथिवी	५७५
काले तपः काले ज्येष्ठं	८९९	चन्द्रमा मनसो जातः	९७३, ९७८	तन्मित्रस्य वरुणस्य	५५१
कालेन वातः पवते	९०३	चन्द्र यत् ते तपस्तेन	९८१	तपश्च तपस्यश्च	९३८
काले मनः काले प्राणः	८९८	चन्द्र यत् ते तेजस्तेन	९८५	तमस्य राजा वरुणः	८३६
कालेऽयमङ्गिरा देवो	९०६	चन्द्र यत् तेऽर्चिस्तेन	९८३	तमु ष्टुहि यो अन्तः	५१०
कालो अश्वो वहति	८९२	चन्द्र यत् ते शोचिस्तेन	९८४	तमु स्तोतारः पूज्यं	८३५
कालो भूतिमसृजत	८९७	चन्द्र यत् ते हरस्तेन	९८२	तमृतं च सत्यं च	११३६
कालोऽमृतं दिवमजनयत्	८९६	चन्द्राय स्वाहा चन्द्रमसे	९७५	तमृतवश्चार्तवाश्च	१०७०
कालो यज्ञं समैरयद्	९०५	चित्तिरा उपवर्हणं	६३३	तरणिर्विश्वदर्शतो	५३७
कालो ह भूतं भव्यं च	९०४	चित्पतिर्मा पुनातु	४८७	तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो	११०८
काव्ययोरराजानेषु	३८२	चित्रं देवानाम्	५४७	तस्य ब्राह्मस्य । यदादित्यम्	१०९१
काव्येभिरदाभ्या	३४४	चित्राणि साकं दिवि	११२४	तस्य ब्राह्मस्य । योऽस्य चतुर्थो	११२३
किमिदं ते विष्णो परि	८४७	चित्रावसो खस्ति ते	१०११	तस्य ब्राह्मस्य । योऽस्य तृतीयो	१०९०
कुहू देवां सुकृतं विघ्नना	११०४	जीवान् नो अभि धेतन	८९	तस्य ब्राह्मस्य । योऽस्य प्रथमो	१०८९
कुहू देवानाममृतस्य	११०५	जुषेथां यज्ञं बोधतं	४००, ९२४	तस्या ग्रीष्मश्च वसन्तश्च	९५२
कृष्णं नियतं हरयः	५५४	जोषा सवितर्यस्य ते	५८३	तस्यामू सर्वा नक्षत्रा	१११९
केन देवां अनु क्षियति	११२०	जोष्यमे समिधं जोषि	९३०	तां वां धेजुं न वासरी	११२
को नु वां मित्रास्तुतो	२७८	ज्योतिष्मतीमदिति	२०५	तां सवितुर्वरेण्यस्य	५००
गन्धर्वाप्सरसो ब्रूमो	८१३	त आदित्यास उरवो	२३	ता अर्षन्ति शुभ्रियः	६८७
गर्भं धेहि सिनीवालि	१०९९	तच्चक्षुर्देवहितं पुर०	६०६	ता जिह्वया सदमेदं	३०५
गर्भो देवानां पिता	५१४	तच्चक्षुर्देवहितं शुक्रं	५६७	तां जुषस्व गिरं मम	७३३
गायत्रेण त्वा छन्दसा	८४८	तत्तदिदस्य पौंस्यं	८३०	ता नः शक्तं पार्थिवस्य	१८१
गार्हपत्येन सन्त्य	९१८	तत् सवितुर्वरेण्यं	४३१	ता नः स्तिपा तनूपा	३४३
गाव इव ग्रामं यूयुधिः	४८३	तत् सवितुर्वृणीमहे	४५२	ता बाहवा सुचेतुना	२५६
गर्णं भुवनं तमसा	६६०	तत् सु नः शर्म यच्छत	५९	ता भूरिपाशावचृतस्य	३३८
गुदा आसन्तिसिनीवाल्याः	१०९६	तत् सु नः सविता भवो	५६	ता माता विश्वेदेवसा	३४९
गृणाना जमदग्निना	२३८	तत् सु नो नव्यं सन्यसे	९९	ता मे अश्व्यानां	३६६
गृष्णामि ते सौभगत्वाय	६४७	तत् सु वां मित्रावरुणा	२४०	तां पूषञ्छिवतमा०	६४८
गृह्णामि ते सौभगत्वाय	८०४	तत् सूर्यस्य देवत्वं	५५०	ता वामियानोऽवसे	२६४
ग्रीष्मस्ते भूमे वर्षाणि	९६९	तत् सूर्यं रोदसी उमे	३६४	ता वामिषे रथानाम्	२७०
ग्रीष्मेण ऋतुना देवा	९४१	तदमिराह तदु सोम	७२०	ता वां मित्रावरुणा	३७१
ग्रीष्मावेनं मासौ दक्षिणाया	९५६	तदस्य प्रियमभि	८२८	ता वां वास्तूयुरमसि	८१९
ग्रीष्मौ मासौ गोप्तारौ	९५५	तदृतं पृथिवि बृहत्	२७२	ता वां विश्वस्य गोपा	३४७
घृतेन त्वा समुक्षामि	९९३	तद् देवस्य सवितुः	४३४	ता वां सम्यगदुहणा	३९७
चक्षुर्नो देवः सविता	५८४	तद् यस्यैवं विद्वान्	१०२५-२९	ता विप्रं धैये जठरं	३०४
चक्षुर्नो धेहि चक्षुषे	५८५	तद् वार्यं वृणीमहे	३५६	ता सम्राजा घृतासुती	३३५
चतुर्भिः साकं नवर्ति च	८३२	तद् विप्रासो विपन्यवो	८२३	ता हि क्षत्रं धारयेथे	३०३

८२१	ता हि क्षत्रमविहुतं	२६९	त्वष्टा दुहित्रे बहत्तुं	६९८	दैव्यावध्वर्यु आ गतः	६०१
५२	ता हि देवानामसुरा	३३७	त्वष्टा मे दैव्यं वचः	७०४	दोषो गाय बृहद्	५१९
५७५	ता हि भ्रष्टवर्चसा	२६३	त्वष्टा युनक्तु बहुधा	६९९	द्यावाभूमी अदिते	३२८
५५१	तेतो वावः सवितुः	४१४	त्वष्टा वासो व्यदधात्	८०६	द्यौरासीत् पूर्वचित्तिः	१०१२
९३८	तेतो भूमीधारयन्	२८	त्वष्टा वीरं देवक्रामं	६९७	द्यौर्धनुस्तस्या आदित्यो	१७९
८३६	ते तनाय तत् सु	६५	त्वां विष्णुर्वहन् क्षयो	३९९	द्यौस्ते पृथिव्यन्तरिक्षं	१११०
५१०	तुं हिन्वानो वसिष्ठ	९१९	त्वामिन्द्र ब्रह्मणा वर्धयन्तः	१४७	द्रप्सश्चस्कन्द पृथिवीमनु	११३
८३५	तुयमे पर्यवहन्	६४९	दमूना देवः सविता	५२३	द्रविणोदा ददातु नो	९१४
११३६	तुयमोऽङ्गिरसो	४३	दर्शोऽसि दर्शतोऽसि	६८२	द्रविणोदा द्रविणसो	९१३
१०७०	तुमेतत् कटकम्	६४५	दिक्षु चन्द्राय समनमन्	९२८	द्रविणोदाः पिपीषति	९१५
५३७	तव आसो वृकाणाम्	९५	दितेः पुत्राणामदितेः	१७	द्वादश प्रधयश्चक्रमेकं	८८३
११०८	तव भूतेन हविषा	९८७	दिवं ब्रूमी नक्षत्राणि	११२२	द्वे इदस्य क्रमणे	८३१
१०९१	तवोऽपि तेन जातं	९००	दिवि क्षयन्ता रजसः	३३१	द्वे ते चक्रे सूर्ये	६४२
११२३	तवो भद्रेण शर्मणा	६४	दिवि विष्णुर्व्यक्रस्त	८५२	द्वे समीची विभृतः	६७४
१०९०	तवो हि चित्रमुक्थ्यं	८७	दिवे चक्षुषे नक्षत्रेभ्यः	११३५	द्वे सुतो अश्रुणवं	६७३
१०८१	तवामा देव वरुण	४९	दिवो धर्ता भुवनस्य	४३५	द्वौ च ते विंशतिश्च ते	१०३४
९५२	तवो हि अरुणं	१०३	दिवो धामभिर्वरुण	३४५	धर्ता दिवो वि भाति	६०७
१११९	तवो पुत्रासो अदितेः	३	दिवो रुक्म ऊरुचक्षा	५६४	धर्मणा मित्रावरुणा	२५४
२११	तवो वा वसुषो नरो	३५८	दिवो वा विष्ण उत वा	८५४	धाता दधातु दाशुषे	७१२
५००	तवो सला ऋतस्पृशः	२७७	दिवो विष्ण उत वा	८६४	धाता दधातु नो रयिम्	७११
६८७	तव तु क्षत्रियो अव	८५	दिव्यं सुपर्ण वायसं	६३०	धाता दाधार पृथिवीं	८१२
३०५	तवामा वि राजति	६९१	दिव्यादित्याय समनमन्	१७८	धाता मा निर्ऋत्या	७०७
७३१	तवोऽपि सविता	४३८	दिशो धेनवस्तासां	९२९	धाता रातिः सवितेदं	६९५, ७०८
१८१	तवोऽपि पृथिवीमेषः	८४४	दितेरिव तेऽवृक्कम्	७३७	धाता विधाता भुवनस्य	७१०
३४३	तवो पदा वि चक्रमे	८२०	दृशेन्यो यो महिना	६६५	धाता विश्वा वार्या दधातु	७१३
२५६	तवोऽपि दिव्या	२९	देव सवितः प्रसुव	४३१	धारयन्त आदित्यासो	२४
३३८	तवो वरुण	१८४	देव सवितेऽपि ते	४८९	ध्रुवा असदन्वृतस्य	८५०
३४९	तवोऽपि प्रदिशः	१४९	देवं नरः सवितारं	४२३	नक्षत्राणि च मे यज्ञेन	११०७
३६६	तवोऽपि वरुणासि	३०	देवस्त्वा सविता मध्वा	५१२	नक्षत्राणि छन्दः	११०६
६४८	तवोऽपि सुमति	८४३	देवस्त्वा सवितोद्वपु	४९९	नक्षत्राणि रूपेण	११११
२६४	तवोऽपि दयाविनो	७२१	देवस्य चेततो महीं	५०४	नक्षत्रेभ्यः किर्मिरम्	१११३
२७०	तवोऽपि त्वं पयेषु	१४८	देवस्य त्वा सवितुः	४८५	नक्षत्रेभ्यः स्वाहा	११०९
३७१	तवोऽपि महते	१४२	देवस्य वयं सवितुः	४६२	न तं तिग्मं च न त्यजो	७८
८१९	तवोऽपि स्त्रोतिभिः	१४३	देवस्य सवितुर्भाग स्थ	५२८	न ते अदेवः प्रदिवो	५७२
३४७	तवोऽपि महेन्द्रः	१५१	देवस्य सवितुर्मति	५०७	न ते विष्णो जायमानो	८३९
३९७	तवोऽपि विश्वजित्	१४४	देवस्य सवितुर्वयं	४३२	न दक्षिणा वि चिकिते	३१
३०४	तवोऽपि वसामसि	४२६	देवेभिर्देव्यदिते	२	नपाता श्वसो महः	३५१
२३५	तवोऽपि वसामसि	१०३८	देवेभिर्निषितो	६६१	न पूषणं मेथामसि	७२७
३०३	तवोऽपि वसामसि	७०१	देवेभ्यो हि प्रथमं	४४२	न प्रमिये सवितुः	४४४

(१४४)

नभश्च नभस्यश्च	२३४
नमो दिवे बृहते	२०८
नमो मित्रस्य वरुणस्य	५७०
न यः संवृच्छे न पुनः	३७१
न यस्याः पारं ददृशे	१०३१
न यस्येन्द्रो वरुणो	४२८
नव दशभिरस्तुवत	१०६३
नवोनवो भवति जायमानो	९७९
नवोनवो भवसि जायमानो	६८०
नहि तेषाममा चन	१०५
नानौकांसि दुर्यो विश्वम्	४२४
नाभिरहं रयीणां	१२७
नास्माकमस्ति तत् तर	१००
नि ग्रामासो अविक्षत	१००७
निस् स्वसारमस्कृतो	१००५
नूनं तदस्य काव्यो	१७६
नू मर्तो दयते सनिष्यन्	८४२
नू मित्रो वरुणो अर्यमा	३३०
नृचक्षा एष दिवो	४७८
नेह भद्रं रक्षस्विने	८३
पञ्चभिः पराङ् तपसि	१५०
पथस्पथः परिपति	७८८
परमेष्ठी त्वा सादयतु	५९८
परि णो वृणज्जघा	७६
परि नृधि पणीना०	७४३
परि पूषा परस्तात	७५८
परि यो रश्मिना दिवो	३६१
परिहृतेदना जनो	७७
परावृतो ब्रह्मणा वर्मणा	१६१
परो मात्रया तन्वा	८३८
परो हि मयैरसि	७३८
पर्वि दीने गभीर आँ	७
पश्चेदमन्यदभवद्	४८२
पाक्रता स्थन देवा	६२
पातं नो मित्रा पायुभिः	३९८
पातं नो रुद्रा पायुभिः	२९०
पिपर्तु नो अदितिः	२७
पीपाय धेनुरदितिः	२३१
पुण्यं पूर्वा फल्गुन्यौ	११२६

पुनः पत्नीमग्निरदाद्	६५०
पुनः समव्यद विततं	४२३
पुरा क्रूरस्य विसृपो	९७४
पुरुषणा चिद्धस्यवो	२८८
पूर्णः कुम्भोऽधि कालः	८९४
पूर्णा पश्चादुत पूर्णा	१०७९
पूर्वापरं चरतो मायया	६७९
पूषणं न्वजाश्वम्	७६२
पूषन् तव व्रते वयं	७५७
पूषन्नु प्र गा इहि	७५४
पूषा गा अन्वेतु नः	७५३
पूषा त्वेतश्चावयतु	७७५
पूषा राजानमाघृणिः	७१६
पूषा सुबन्धुर्दिव आ	७७४
पूषेमा आशा अनु वेद	७७७
पूषणश्चक्रं न रिष्यति	७५१
पौर्णमासी प्रथमा	१०८१
प्रजापतिरनुमतिः	११००
प्रजापतेरावृतो ब्रह्मणा	१६०
प्रज्ञानाय नक्षत्रदर्शम्	१११२
प्र णो यच्छत्वर्थमा	८१७
प्रति तिष्ठ विराडसि	११०१
प्रति वा सूर उदिते	४७, ३३६
प्र तत् ते अद्य शिपिविष्ट	८४६
प्र तद्विष्णु स्तवते वीर्याणि	८६२
प्र तद् विष्णुः स्तवते वीर्येण	८२५
प्रत्यङ् देवानां विशः	५३८
प्रत्यर्थिर्ज्ञानाम्	७८३
प्रपथे पथामजनिष्ट	७७८
प्र पादौ न यथायति	१०६१
प्रप्र पूषणस्तुविजातस्य	७२८
प्र बाहवा सिसृतं	३२९
प्र मित्रयोर्वरुणयोः	३४१
प्र मित्राय प्रार्थ्यम्णे	४०१
प्र यद् वा मित्रावरुणा	३०६
प्रयन्तमित् परि जारं	२२५
प्र यो जज्ञे विद्वानस्य	१७३
प्र यो वा मित्रावरुणा	३७०
प्र वां स मित्रावरुणौ	३२२

प्र विष्णवे शृषमेतु	८२६
प्र वो मित्राय गायत	२७९
प्र स मित्र मर्तो अस्तु	१८६
प्र सा क्षितिरसुर	२१६
प्र सु ज्येष्ठं निचिराभ्यां	२०३
प्रस्तुतिर्वा धाम न प्रयुक्तिः	२३०
प्र हि त्वा पूषन्नजिरं	७२९
प्र ह्यच्छा मनीषाः	७७९
प्राणापानौ मा हासिष्टं	१३१
प्रातर्जितं मगमुग्रं हवामहे	१६८
प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम	७२३
प्रातर्देवीमदिति	२८६
प्रोरोर्मित्रावरुणा	३२३
बट् सूर्य श्रवसा	५६९
बालिस्था देव निष्कृतम्	२७४
बण्महौ असि सूर्य	५६८
बहवः सूरचक्षसो	५०
बृहत्सुभ्रः प्रसवीता	४३९
बृहद् वरुणं मरुतां	६७
बृहस्पतिर्म आत्मा	१२५
बृहस्पते सवितः	५२७
ब्रह्म ज्ञानं प्रथमं	११२, १७१
ब्रह्म देवां अनु क्षियति	११११
ब्राह्मणादिन्द्र राधसः	९११
ब्रूमो देवं सवितारं	७१४
भग एव भगवाँ अस्तु	१७०, ७९६
भगं धियं वाजयन्तः	४२९
भग प्रणेतर्भग सत्यराधो	१६९, ७९४
भगभक्तस्य ते वयम्	४०९, ७९१
भगमुग्रोऽवसे जोहवाँति	७९२
भगस्तत्क्ष चतुरः	८०७
भगस्ते हस्तमग्रहीत	८०५
भगस्य नावमा रोह	६२३
भगेन मा शांशपेन	८०१
भगो युनक्त्वाशिषो	८००
भद्रा अश्वा हरितः	५४९
भद्रासि रात्रि चमघो	१०५९
भद्राहं नो मध्यंदिने	१०३०
भवा मित्रो न शेष्यो	८३३

८२६	मृग्य त्वा नारातये	५९१	मित्रस्य चर्षणीधृतो	१९०	यथा सूर्यश्च चन्द्रश्च	९९५
२७९	भूयः स्वर्गोऽरिव भूमना	५९३	मित्रा तना न रथ्या	३४८	यथा सूर्यो नक्षत्राणां	६१७
१८६	मृगोमहि त्वा वयम्	७८२	मित्राय पञ्च येमिरे	१९२	यथाहश्च रात्री च	१०१८
२१६	पुथ माधवश्च	९३२	मित्रावरुणयोर्भाग स्थ	३९६	यथाहान्यनुपूर्वं भवन्ति	७०५
२०३	तो अस्या अन आसीद्	६३६	मित्रावरुणयोस्त्वा प्रशास्त्रोः	३८०	यदद्य कच्च वृत्रहन्	६०३
२३०	मदस होत्रादनु	९२५	मित्रावरुणौ वृष्ट्याधिपती	३९१	यदद्य त्वा पुरुषदुत	७६८
७२९	मदः पितृ कृतुना	९०८	मित्रो अंहोच्चिदादुह	२६५	यदद्य सूर उदिते	४४
७७९	मो आदित्यो नमसा	१८९	मित्रो जनान् यातयति	१८५	यदद्य सूर्य ब्रवोऽनागा	५५७
१३१	मृता मित्रावरुणा	३५०	मित्रो देवेष्वायुषु	१९३	यदद्या रात्रि सुभगे	१०५०
१६८	मृदे ज्योतिर्विभ्रतं	५७७	मित्रो नो अत्यंहति	८६	यदयातं शुभस्पती	६४१
७२३	मृदे त्रीणामवोऽस्तु	१०४	मुञ्चन्तु मा शपथ्याद्	९९१	यदक्षिना पृच्छमानौ	६४०
२८६	मृदे वो महतामवो	७२, ८८	मूर्धा भुवो भवति नक्तम्	६६४	यदाविर्यदपीच्यं	८४
३२३	मो अत्र महिना	२१७	मूर्धाहं रयीणां मूर्धा	१२१	यदि जाग्रद्यदि स्वप्न	५९९
५६९	मृग्य पु मातरः	१२	मेयन्तु ते वह्नयो येभिः	९२७	यदीदं मातुर्यदि वा	८८२
२७४	मो त्वा मित्रावरुणौ	३९३	य इन्द्र इन्द्रियं दधुः	५०२	यदेदेनमदधुर्यज्ञियासो	६६३
५६८	मृग्यद्रुतकतू	२९१	य इमा विश्वा जातानि	४६०	यद् गोपावददितिः शर्म	३१६
५०	मृग्यमृग्यमुद् वृहो	७३६	य इमे उभे अहनी	४५९	यद् देवाः शर्म शरणं	८१
४३९	मृग्यमृग्यमृग्यो	७५५	य उपरिष्टाज्जुहति	६२४	यद् त्यद् वां पुरुमीळहस्य	२१४
६७	मृग्यमृग्यमृग्यमृग्यं	७६३	य एनमादिदेशति	७६५	यद् त्यन्मित्रावरुणा वृताद्	२१३
१२५	मृग्य त्वा क्रव्यादाभि	९९६	यं यज्ञं नयथा नरः	१९	यद् बंहिष्ठं नातिविधे	२४७
५२७	मृग्य त्वा दभन्तसलिले	१४१	यः पूर्व्याय वेधसे	८३४	यद् यामं चक्रुर्निखनन्तो	८८०
१२, १७१	मृग्योऽस्तुः सिधेदयं	९२	यजामहे वां महः	२२९	यद् वः श्रान्ताय सुन्वते	९०
११११	मृग्यो मृचा रिपूणां	९३	यजातवेदो भुवनस्य	६६३	यद् वो देवाश्चक्रम	५८१
९११	मृग्यो हेतिर्विस्वतः	१०१	यज्ञैः संमिष्टाः पृषतीभिः	९२०	यं देवा अंशुमाप्याययन्ति	६८४
७१४	मृग्यो प्राणो हार्धन्मो	१२९	यज्ञो देवानां प्रत्येति	११०	यं देवाऽऽजनयन्त	६६७
७०, ७९६	मृग्यो मित्रावरुणा	२५१	यज्ञो हीळो वो अन्तरः	६६	यन्नूनमश्यां गतिं	२५७
४२९	मृग्योऽस्तुः परिपन्थिनो	६४३	यत् किं चेदं पतयति	१०४१	यमादित्यासो अद्भुहः	७०
१६९, ७९४	मृग्यो भदे तस्करो	१०३६	यत् त आत्मनि तन्वां	५१७	यमु पूर्वमहुवे तमिदं	९२६
०९, ७९१	मृग्यो यो नो वरुण	३७	यत् ते देवा अकृण्वन्	१०८५	यं परिहस्तमभिभः	७०२
७९२	मृग्यो पनं वरुणो वा	३८३	यत् प्राण क्रतावागते	९६६	ययोरोजसा स्कमिता	८७७
८०७	मृग्यो वयं हवामहे	१९९	यत्र ब्रह्मविदो यान्ति	९९४	यश्चिकेत त सुक्रतुः	२६१
८०५	मृग्यो न यं शिम्या गोषु	१९६	यत्रा चक्रुरमृता	६३१	यश्चिद्धि त इत्या भगः	४०८
६२३	मृग्योऽस्तुः पृथिवीं	१८४	यत्रा वदेते अवरः	६७५	यस्मा अरासत क्षयं	७५
८०१	मृग्योऽस्तुः पृथिवीं	१९५	यत्रा समुद्रः स्कमितो	४८१	यस्मै पुत्रासो अदितेः	१०६
८००	मृग्योऽस्तुः पृथिवीं	१९४	यत् त्वा तुरीयमृगुभिः	९१६	यस्य ते पूषन्तसख्ये	७३०
५४४	मृग्योऽस्तुः पृथिवीं	२९७	यत् त्वा सूर्य स्वर्मानुः	५५६	यस्य ते विश्वा भुवनानि	५७८
१०५९	मृग्योऽस्तुः पृथिवीं	८१६	यथा नो मित्रो वरुणो	२०२	यस्य त्यन्महिर्त्वं	७८०
१०३०	मृग्योऽस्तुः पृथिवीं	३३३	यथा प्रसूता सवितुः	१००१	यस्य त्री पूर्णा मधुना	८२७
८१३	मृग्योऽस्तुः पृथिवीं	४२	यथा शाम्याकः प्रपतन्	१०४८	यस्य प्रयागमन्वन्त्य	४४९

यस्यायं विश्व आर्यो	११९	यूयं राजानः कं	७१	रात्रि मातरुषसे नः	१०४०
यस्येदं प्रदिशि यद्	८७८	यूयमुग्रा मरुतः	१८१	रात्रीभिरस्मा अहभिः	१००९
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेषु	८६३	ये चिद्धि मृत्युबन्धवः	६९	रात्री माता नभः पिता	१०९०
या गुह्यग्या सिनीवाली	१०९७	ये ते त्रिरहन्त्सवितः	४४६	रात्री व्यख्यदायती	१००३
या त इन्द्र तनूरप्सु	१४६	ये ते पन्थाः सवितः	४१९	रात्र्यै कृष्णं पिङ्गाक्षम्	१०१४
याति देवः प्रवता याति	४११	ये ते रात्रि नृचक्षसो	१०३९	राया वयं ससवाऽसो	३७८
या ते अप्रा गोओपशा	७४७	ये ते रात्र्यनङ्गाहः	१०४६	राया हिरण्यया मतिः	४८
या देवीः पञ्च प्रदिशो	९६८	येन वृक्षां अभ्यभवो	८०२	रायो धारास्याघृणे	७६१
याद्राध्यं वरुणो योनिम्	४२७	येन सूर्य ज्योतिषा	५७३	रायो बुध्नः संगमनो	४७९
या धर्तारि रजसो	२८७	येना पावक चक्षसा	५३९	रुचिरसि रोचोऽसि	१५४
या धारयन्त देवाः	३४२	येऽमावास्यां रात्रिमुदस्थुः	१०१७	रुजश्च मा वेनश्च मा	१११
यानि नक्षत्राणि दिवि	११२९	ये मूर्धानः क्षितीनाम्	९४	रेवद् वयो दधाथे	२२१
यां देवाः प्रतिनन्दन्ति	१०७५	ये रात्रिमनुतिष्ठन्ति	१०४३	रैभ्यासीदनुदेयी	६३२
या प्लीहानं शोषयति	३८६	यो अद्य सेन्यो वधो	३९०	वचो दर्धप्रसङ्गानि	३६३
यां पूषन् ब्रह्मचोदर्नी	७४६	यो अद्य स्तेन आयति	१०६०	वज्रापवसाध्यः कीर्तिः	६८८
यावन्तो मा सपत्नानाम्	६१८	यो अन्धो यः पुनःसरो	८०३	वयमु त्वा पथस्पते	७३९
यावन्मात्रमुषसो न	६७७	यो अस्मै हविषाविधत्	७५२	वयं मित्रस्यावसि	२६६
यावया वृक्यं वृकं	१००८	योऽथर्वाणं पितरं	१७७	वरुणः प्राविता भुवन्	२०१
या विश्वतनीन्द्रमसि	१०९४	यो नः कश्चिद् रिरिक्षति	६०	वरुणं वो रिशादसम्	२५५
या वो माया अभिद्रुह	३६	यो नः पूषन्नघो वृको	७१९	वरुणं तं आदित्यवन्तम्	१६४
या सुबाहुः स्वहगुरिः	१०९३	यो नो भद्राहमकरः	१११७	वरुणं तं आदित्यवन्तम्	१०५४
यास्ते पूषन्नावो अन्तः	७७३	यो ब्रह्मणे सुमतिम्	३१९	वरुणं तं आदित्यवन्तम्	१०५४
यास्ते राके सुमतयः	१०८४	यो मित्राय वरुणाय	२०७	वरुणं तं आदित्यवन्तम्	१०५४
युक्तेन मनसा वयं	४९५	यो राजभ्य ऋतनिभ्यो	३२	वरुणं तं आदित्यवन्तम्	१०५४
युक्त्वाय सविता देवान्	४९६	यो वां गर्तं मनसा	३३४	वरुणं तं आदित्यवन्तम्	१०५४
युजते मन उत युजते	४४७	यो वां यज्ञैः शशमानो	२१९	वरुणं तं आदित्यवन्तम्	१०५४
युजन्ति ब्रध्नमरुषं	११६	यो विश्वाभि विपश्यति	७३४	वरुणं तं आदित्यवन्तम्	१०५४
युजानः प्रथमं मनः	४९४	योऽस्मान् द्वेष्टि ये वयं	६८३	वरुणं तं आदित्यवन्तम्	१०५४
युनक्तु देवः सविता	५२६	यो होताऽऽसीत् प्रथमो	६६२	वरुणं तं आदित्यवन्तम्	१०५४
युयोता शरमस्सदौ	५८	रक्षा माकिर्नो अघशंस	१०३५	वरुणं तं आदित्यवन्तम्	१०५४
युवं वज्राणि पीवसा	२२२	रक्षोहणं वलगहनं	८५६	वरुणं तं आदित्यवन्तम्	१०५४
युवं ह्यप्रराजावसीदतं	३७७	रक्षोहणो वो वलगहनः	८५८	वरुणं तं आदित्यवन्तम्	१०५४
युवं दक्षं धृतव्रत	९१२	रथं युजते मरुतः	२५२	वरुणं तं आदित्यवन्तम्	१०५४
युवं नो येषु वरुण	२६०	रथीतमं कपर्दिनम्	७६०	वरुणं तं आदित्यवन्तम्	१०५४
युवं मित्रेणं जनं	२६७	राकामहं सुहवां	१०८३	वरुणं तं आदित्यवन्तम्	१०५४
युवा यज्ञैः प्रथमा गोभिः	२२०	राजानावनभिमुहा	२३४	वरुणं तं आदित्यवन्तम्	१०५४
युवाभ्यां मित्रावरुणा	२५८	रातिः सप्तर्षिं महे	५०६	वरुणं तं आदित्यवन्तम्	१०५४
युवोर्हि मातादितिः	३७६	रात्रिरात्रिमरिष्यन्तः	१०४७	वरुणं तं आदित्यवन्तम्	१०५४
युष्मे देवा अपि ष्मसि	७९	रात्रिः केतुना जुषताः	१०१६	वरुणं तं आदित्यवन्तम्	१०५४

१०४०	विष्णु पुंश्वली स्तनयितुः	१०२४	विष्णोः क्रमोऽसि० अप्सु	८७३	शुचिरपः सूयवमा	३३
१००१	वि नः सहस्रं शुद्धो	५६०	विष्णोः क्रमोऽसि० यज्ञ	८७१	शुची ते चक्रे यात्या	६३८
१०२०	वि न्यो वाजसातये	७४२	विष्णोः क्रमोऽसि० ओषधी	८७२	शृण्वन्तं पूषणं वयम्	७५६
१००३	वि नृष्वारया तुद	७४४	विष्णो रराटमसि विष्णोः	८५५	शैशिरावेनं मासौ	९६४
१०१४	वि नृकारं हवामहे	४०५, ५०८	विष्णोर्नु कं प्रा वोचं वीर्याणि	८६१	शैशिरेण ऋतुना देवाः	९४५
३७८	वि नृज्योतिषा स्वः	५९०	विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्र वोचं	८२४	शैशिरौ मासौ गोप्तरौ	९६३
४८	वि नृजमान उपसाम्	५६३	वि सुपर्णो अन्तरिक्षाणि	४१५	श्रद्धा पुंश्वली मित्रो	१०२१
७६१	वि नृज् बृहत् पिबतु	५८७	वृषभं वाजिनं वयं	१०८०	श्रायन्त इव सूर्य	६०४
४७९	वि नृज् बृहत् सुभृतं	५८८	वृष्टिद्यावा रीत्यापा	२८३	श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यौ	१०६७
१५४	वि नृज एष दिवो मध्य	११४	वेद वै रात्रि ते नाम	१०४४	षष्टिश्च षट् च रेवति	१०३३
१२१	वि नृज् मर्द्रपविश्च	१२४	वैवस्वतः कृणवद् भागधेयं	८८१	स आर्तवानां पाशान्मा	९७०
२२१	वि नृज् वाचं कीस्तासो	३०७	वैश्वानरं कवयो यज्ञियासो	६७१	स एव सं भुवनानि	८९५
६३२	वि नृज् दधुः शरदं	५१	वैश्वानरं विश्वहा दीदिवांसं	६७२	सं या दानूनि येमथुः	३५२
३६३	वि नृज् स्तस्ते स्वाहा	८७९	व्यसे अधि शर्म तत्	७४	सं वर्चसा पयसा	६९३, ७००
६८८	वि नृज् स्तस्ते स्वाहा	१११	व्यस्यै मित्रावरुणौ	३८९	सं व सृजत्वर्चमा	८१५
७३९	वि नृज् स्तस्ते स्वाहा	१११८	व्रतं कृणुतामिर्ब्रह्मणामिः	१६६	संवत्सरं शशयाना	८८८
२६६	वि नृज् स्तस्ते स्वाहा	६७०	व्रतेन स्थो ध्रुवक्षेमा	२९६	संवत्सरस्य प्रतिमां	१०७६
२०१	वि नृज् स्तस्ते स्वाहा	२९३	शंसा मित्रस्य वरुणस्य	३२४	संवत्सराय पर्यायिणीं	८८६
२५५	वि नृज् स्तस्ते स्वाहा	५७४	शकधूमं नक्षत्राणि यद्	१११६	संवत्सराय स्वाहा	८८४
१६४	वि नृज् स्तस्ते स्वाहा	४२१	शकवरी स्थ पशवो मोप	१३३	संवत्सरोऽसि परिवत्सरोऽसि	८८५
१०५४	वि नृज् स्तस्ते स्वाहा	४५६	शशिध पूर्धि प्र यंसि च	७२६	संस्तृष्टां वसुभी रुद्रैः	१०९५
९४१	वि नृज् स्तस्ते स्वाहा	४४८	शं नो भव चक्षसा	५७९	सखाय आ नि षीदत	४०६
३६९	वि नृज् स्तस्ते स्वाहा	६०९	शं नो मित्रः शं वरुणः	६०५	सखासावस्मभ्यमस्तु	५३१
८४१	वि नृज् स्तस्ते स्वाहा	५७६	शमिता नो वनस्पतिः	५०३	स घा नो देवः सविता	४७५, ५२१
९४०	वि नृज् स्तस्ते स्वाहा	३०२	शम्या ह नाम दधिषे	१०५८	सजूर्देवेन सवित्रा सजुः	५९५
६२७	वि नृज् स्तस्ते स्वाहा	२९८	शर्म वमैतदा हरास्यै	११०२	स घाता स विधर्ता	७०६
२५३	वि नृज् स्तस्ते स्वाहा	२७६	शश्वदि वः सुदानवः	९७	संदानं वो बृहस्पतिः	५३३
१६	वि नृज् स्तस्ते स्वाहा	१३४-१३८	शश्वन्तं हि प्रचेतसः	९८	सप्त चक्रान् वहति	८९३
४६६	वि नृज् स्तस्ते स्वाहा	१०२	शारदावेनं मासौ	९६०	सप्त त्वा हरितो रथे	५४१
९५८	वि नृज् स्तस्ते स्वाहा	८७६	शारदेन ऋतुना देवा	९४३	स बुध्न्यादाष्टु जनुषो	१७५
९५७	वि नृज् स्तस्ते स्वाहा	८२१	शारदौ मासौ गोप्तरौ	९५९	समभिरभिना गत	५१५
९५४	वि नृज् स्तस्ते स्वाहा	८६९	शिवां रात्रिमनुसूर्यं च	१०५६	समज्जन्तु विश्वे देवाः	६५८
९५३	वि नृज् स्तस्ते स्वाहा	८७०	शिवा नारीयमस्तमागन्	८०२	समध्वरायोषसो नमन्त	७९७
८४५	वि नृज् स्तस्ते स्वाहा	८७४	शीर्ष्णः शीर्ष्णो जगतः	५६६	समानमेतदुदकम्	६२९
४१३	वि नृज् स्तस्ते स्वाहा	८६८	शुक्रेषु ते हरिमाणं	५४५	समाववर्ति विष्टितो	४२५
७३	वि नृज् स्तस्ते स्वाहा	८६७	शुकं ते अन्यद् यजतं	७७१	समित् तमघमश्रवद्	६१
१०, ९८०	वि नृज् स्तस्ते स्वाहा	८६६	शुकश्च शुचिश्च प्रेष्मावृत्	९३३	समुद्र ईशे सवतामभिः	१०००
१५	वि नृज् स्तस्ते स्वाहा	८६५	शुक्रोऽसि आजोऽसि	१५३	समु पूर्णा गमेमहि	७५०
५४०	वि नृज् स्तस्ते स्वाहा	८७५	शुचा विद्धा व्योषया	३८७	समु वां यज्ञं महयं	३२६

(१४८)

समृद्धिरोज आकृतिः	८८९	सिंहस्य रात्र्युशती	१०५५	सोमः प्रथमो विविदे	६५१
सं पूषन्नध्वनस्तिर	७१८	सिनीवालि पृथुष्टुके	१०९२	सोमस्त्वा पात्वोषधीभिः	९९१
सं पूषन् विदुषा नय	७४९	सिनीवाली सुकपदां	९	सोमस्यांशो युधां पते	६८१
सं मा सिञ्चन्तु मरुतः	७८९	सुगः पन्था अमृक्षरः	१८	सोमो ददद् गन्धर्वाय	६५१
सम्राजा उग्रा वृषभा	२५०	सुगो हि वो अयमन्	२६	सोमो वधूयुरभवद्	६३५
सम्राजा या घृतयोनी	२८०	सुत्रामाणं पृथिवीं	१३	सोऽर्यमा स वरुणः	८१४
सम्राजावस्य भुवनस्य	२४९	सुनावमा रुहेयम्	१४	सोऽहोरात्रयोः पाशान्मा	१०७४
सम्राज्ञी श्वशुरे भव	६५७	सुप्रावीरस्तु स क्षयः	४५	स्तीर्णं बर्हिः सुष्टरीमा	१५
स रत्नं मर्त्यो वसु	१०	सुमङ्गलारियं वधूः	६४४	स्तोमस्य नो विभावरी	१०५७
सवितः श्रेष्ठेन रूपेण	५२५	सुषदा पश्चाद् देवस्य	५१३	स्तोमा आसन् प्रतिधयः	६३४
सविता ते शरीराणि	५११	सुषुमा यातमद्रिभिः	२१०	स्तोमेन हि दिवि देवासो	६६८
सविता ते शरीरेभ्यः	५०९	सुष्टुतिः सुमतीवृधो	५०५	स्मदभीशु कशावन्तां	३६७
सविता पुनातु	५१०	सुसंदशं त्वा वयं	५८६	खधास्तु मित्रावरुणा	३२४
सविता प्रसवानाम्	५१८	सुहवमग्ने कृत्तिका	११२५	खयंभूरसि श्रेष्ठो	५२२
सविता यन्त्रैः पृथिवीम्	४८०	सूक्तवाकं प्रथममादिद्	६६६	खराडसि सपत्नहा	८५७
सवितासि सत्यप्रसवः	४९३	सूर्य एकाकी चरति	९७७	खस्तितं मे सुप्रातः	११११
सवितुस्त्वा प्रसव उत्पुनामि	४८६	सूर्य नावमारुक्षः	१५९	खस्ति नो अस्त्वभयं नो	११३४
सवित्रा प्रथमेऽहन्	५३०	सूर्य ते यावापृथिवी	६२०	खस्त्यद्योषसो दोषसश्च	१३१
सवित्रा प्रसवित्रा	५२९	सूर्य यत् ते तपस्तेन	६११	खासदसि सूषा अमृतो	११८
सवित्रे त्व ऋभुमते	५१६	सूर्य यत् ते तेजस्तेन	६१५		
सवित्रे स्वाहा	४९२	सूर्य यत् तेऽर्चिस्तेन	६१३	हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसं	५५५
स वेद सुष्टुतीनाम्	७८१	सूर्य यत् ते शोचिस्तेन	६१४	हविष्पान्तमजरं	६५९
स वै रात्र्या अजायत	१०१९	सूर्य यत् ते हरस्तेन	६१२	हस्त आधाय सविता	४९८
स संवत्सरमूर्ध्वो	८९०	सूर्यरश्मिर्हरिकेशः	४७७	हिरण्यनिर्णिगयो अस्य	४४५
स सूर्य प्रति पुरो न	५५९	सूर्यश्चक्षुषामधिपतिः	६१६	हिरण्यपाणिमृतये	४०३
सखश्चिद्धि समृतिस्त्वेषी	३१८	सूर्याभ्यां स्वाहा	६२२	हिरण्यपाणिः सविता	४१७
सहस्र सहस्यश्च	९३६	सूर्याया वहतुः प्रागात्	६३२	हिरण्यरूपमुषसो व्युष्टौ	४४६
स हि दिवः स पृथिव्या	१७४	सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः	५९४	हिरण्यरूपा उषसो	३७९
स हि रत्नानि दाशुषे	४५४	सूर्यो दिवोदक्रामत्	६२१	हिरण्यस्तूपः सवितः	४८४
सा नो अद्य यस्या वयं	१००६	सूर्यो देवामुषसं	५४८	हिरण्यहस्तो असुरः	४१८
सा पश्चात् पाहि सा पुरः	१०४२	सूर्यो नो दिवस्पातु	५८२	हैमन्तेन ऋतुना देवाः	९४४
सा मा सत्योक्तिः परि	५७१	सूर्यो मा यावापृथिवीभ्यां	६१९	हैमनावेनं मासौ	९६१
सावीर्हि देव प्रथमाय	५२२	सूर्यो माहः पात्वग्निः	१३०	हैमनौ मासौ गोप्तरौ	

॥ इति अदितिः, आदित्याश्च समाप्ताः ॥



दैवत-संहिता ।

(१०)

विश्वे देवाः

संपादक

पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर
साहित्यवाचस्पति, गीतालंकार
अध्यक्ष- स्वाध्याय-मण्डल

[स्व. नारायणजी पुरुषोत्तम विश्वस्तनिधिके बंबई निवासी विश्वस्तोने
संपूर्ण 'दैवत-संहिता' के मुद्रणके लिये १५०००) रु०
दिये, इस धनके भागसे यह विभाग मुद्रित हुआ है ।]

स्वा ध्या य-म ण्ड ल, पा र डी

संवत् २०१६, शक १८८१, सन् १९५९

प्रकाशक :

वसन्त श्रीपाद सातवलेकर, बी. ए.,

स्वाध्याय-मण्डल, भारत मुद्रणालय,

पोस्ट- 'स्वाध्याय मण्डल (पारडी)'

पारडी (जि. सुरत)

द्वितीय वार

मूल्य ५) रु.

मुद्रक :

वसन्त श्रीपाद सातवलेकर, बी. ए.,

स्वाध्याय-मण्डल, भारत मुद्रणालय,

पोस्ट- 'स्वाध्याय-मण्डल (पारडी)'

पारडी (जि. सुरत)



विश्वेदेवा देवताका परिचय

यह एक देवता नहीं है

'विश्वेदेवाः' नामकी कोई एक देवता नहीं है। इसके अतिरिक्त पद 'विश्वे देवाः, सर्वे देवाः, नानादेवताः, देवदेवतयं' इस तरह अनेक हैं। इन पदोंसे ही 'सब देवों' का बोध होता है। जहां मंत्रमें या सूक्तमें एकसे अधिक देवता आते हैं, और प्रत्येक देवताका पृथक् निर्देश करनेकी संभावना नहीं होती, वहाँके अनेक देवताओंका मिलकर निदर्शक नाम 'विश्वेदेवाः' है। 'अनेक देवता' ऐसा भी इसको हम समझ सकते हैं। अतः जिन मंत्रोंमें या सूक्तोंमें अनेक देवता आते हैं, उनका देवता 'विश्वेदेवाः' समझा जाता है, उदाहरण के लिये देखिए—

इन्द्रायो बृहस्पतिं मित्राग्निं पूषणं भगम् ।
आदित्यान् मारुतं गणम् ॥ (ऋ. १।१४।३)
यह एक मन्त्रमें नौ देवताएँ हैं, इसलिये नौ देवताओंका संक्षेप करने के स्थानपर 'विश्वेदेवाः' देवता कहा है।
अब देवताओंकी इकट्ठी प्रार्थना करनेके समयमें भी 'विश्वेदेवाः' देवता मानी जाती है। वहाँ सब देव ऐसा अर्थ समझा जाता है, जैसा—

विश्वे देवास आ गत शृणुता म इमं हवम् ।
(ऋ. २।४१।१३)

यहाँ सब देवोंकी इकट्ठी प्रार्थना है। यहाँ किसी एक देवका निर्देश नहीं है। जहाँ गणदेवोंकी प्रार्थना होती है, वहाँ सब गण देवोंको सामूहिकरूपसे 'विश्वेदेवा' कहा जाता है। यशु, रुद्र, आदित्य, मरुत ये सब गण देव हैं। ये संघ देव कहते हैं।

अथर्ववेदमें 'नाना देवतयं, मन्त्रोक्ताः देवताः, बहु देवताः, नाना देवताः' ऐसे अनेक नाम देवताओंमें आते हैं। इन सबका अर्थ 'अनेक देवता' इतना ही है। अर्थात् अनेक देवताओंका बोधक यह पद है। यह कोई एक देवता

नहीं। इस सूक्तमें जो अनेक देवता होंगे, वेही दूसरे सूक्तमें होंगे ऐसी भी बात नहीं। परन्तु सर्वत्र अनेक देवता मन्त्रमें वा सूक्तमें होंगे, यही साम्य यहाँ है।

विश्वेदेवाके विषयमें ब्राह्मण ग्रंथोंका
निर्वचन

विश्वेदेवा देवताके संबन्धमें ब्राह्मण ग्रंथोंमें अनेक प्रकारके विवेचन मिलते हैं, उन्हें अब देखिये—

एते वै सर्वे देवा यद्विश्वेदेवाः ।

(कौ. ब्रा. ४।१४; ५।२)

एते वै विश्वेदेवा यत्सर्वे देवाः ।

(गो. ब्रा. उ. १।२०)

रश्मयो ह्यस्य (सूर्यस्य) विश्वेदेवाः ।

(श. ब्रा. ३।१।२।६; १२)

तस्य (सूर्यस्य) ये रश्मयस्ते विश्वेदेवाः ।

(श. ब्रा. ४।३।१।२६)

एते वै विश्वेदेवा रश्मयः । (श. ब्रा. २।३।१।७)

एते वै रश्मयो विश्वेदेवाः । (श. ब्रा. १।२।४।१।६)

(प्राणा वै) विश्वेदेवाः । (वा. य. ३।८।१।५)

(श. ब्रा. १।४।२।२।३७)

ऋतवो विश्वेदेवाः ।

(वा. य. १।२।६।१)

(श. ब्रा. ७।१।१।४३)

इन्द्राग्नी वै विश्वेदेवाः । (श. ब्रा. २।४।४।१।३; ३।१।२।१।४)

अथ यदेनं (अग्निं) एकं सन्तं बहुधा विहरन्ति

तदस्य वैश्वदेवं रूपम् । (ऐ. ब्रा. ३।४)

श्रोत्रं विश्वेदेवाः । (श. ब्रा. ३।२।२।१।३)

ता (दिशः) उ विश्वेदेवाः ।

(जै. उ. ब्रा. २।२।४; २।१।१।५)

स (प्रजापतिः) विश्वान्देवान्सृजत तान्

विक्षूपादधात् । (श. ब्रा. ६।१।२।१)

दिशो हैतद्यजुरेतद्वै विश्वेदेवाः वैश्वानराः ।

(श. ब्रा. ६।५।२।६)

तस्य (प्रजापतेः) विश्वे देवाः पुत्राः ।

(श. ब्रा. ६।३।१।१७)

वैश्वदेवो हि वैश्यः ।

(तै. ब्रा. २।७।२।२)

विष्णु विश्वेदेवाः ।

(श. ब्रा. १०।४।१।९)

विशो विश्वेदेवाः । (श. ब्रा. २।४।३।६; ३।९।१।१६; ५।५।१।१०)

वैश्वदेव्यो वै प्रजाः ।

(तै. ब्रा. १।६।२।५; १।७।१०।२)

पशवो वै वैश्वदेवम् ।

(कौ. ब्रा. १।६।३)

वैश्वदेवो वा अश्वः ।

(श. ब्रा. १।३।२।५।४; तै. ब्रा. ३।९।२।४; ३।९।१।११)

वैश्वदेवी वै गौः ।

(गो. ब्रा. उ. ३।१९)

वैश्वदेवं अन्नम् ।

(तै. ब्रा. १।६।१।१०)

विश्वेषां वा एतद्देवानां रूपं यत्करम्भाः ।

(तै. ब्रा. ३।८।१४।४)

सर्वमिदं विश्वेदेवाः ।

(श. ब्रा. ३।९।१।१४; ४।४।१।९; १८)

सर्वं वै विश्वेदेवाः ।

(श. ब्रा. १।७।४।२२; ३।९।१।१३; ४।२।२।३; ५।५।२।१०)

विश्वेदेवा एव सर्वम् ।

(गो. ब्रा. पू. ५।१५)

अनन्ता विश्वेदेवाः ।

(श. ब्रा. १।४।६।१।११)

विश्वे वै देवा देवानां यशस्वितमाः ।

(श. ब्रा. १।३।१।२।८; तै. ब्रा. ३।८।७।२)

बृहस्पतिर्विश्वेदेवैरुद्रक्रामत् ।

(ऐ. ब्रा. १।२४)

वैश्वदेवं तृतीयसवनम् ।

(ऐ. ब्रा. ६।१५; श. ब्रा. १।७।३।१६; ४।४।१।११; जै. उ. १।३।७।४)

अथैनं उदीच्यां दिशि विश्वेदेवा ... अभ्यर्चिचन् वैराज्याय ।

(ऐ. ब्रा. ८।१४)

विश्वे त्वा देवा उत्तरतोऽभिषिञ्चन्त्वानुष्टुभेन छन्दसा ।

(तै. ब्रा. २।७।१।५।५)

विश्वेदेवा देवताके संबंधमें ब्राह्मण ग्रंथोंमें इस तरहके वचन मिलते हैं। यहाँ प्रथम ही 'सर्वे देवाः' सब देव विश्वेदेव हैं, ऐसा कहा है, अर्थात् जितने भी देव हैं वे सब विश्वेदेव हैं। कोई देव इनमेंसे छूटा नहीं है। आगे सूर्यके किरण विश्वेदेव हैं ऐसा कहा है। किरण अथवा प्रकाशके किरण जितने भी हैं वे

सबके सब विश्वेदेव हैं। आगे प्राण और ऋतुको विश्वेदेवा कहा है। क्योंकि प्राण भी अनेक हैं और ऋतु भी बहुत हैं। इन्द्र और अग्नि विश्वेदेव हैं। अग्नि एक होते हुए भी उसको अनेक नामोंसे पुकारते हैं, इसलिये वे सब रूप विश्वेदेव हैं। श्रोत्र विश्वेदेव हैं, क्योंकि सब दिशाएं ही श्रोत्र हैं और दिशा अनेक होनेके कारण उसे विश्वेदेव कहा है, वह ठीक ही है। प्रजापतिने सब देव उत्पन्न किये, वे विश्वेदेव हैं। प्रजापतिके जो पुत्र देव हैं, वे विश्वेदेव हैं। वैश्य तथा प्रजाजन भी विश्वेदेव हैं। सब पशु भी विश्वेदेव हैं। गौ और घोड़ा भी विश्वेदेव हैं। विश्वेदेव अनन्त हैं और यह सब जो भी इस विश्वमें है, वह सब विश्वेदेव ही है।

इस तरह सभी विश्व अर्थात् विश्वके अन्तर्गत पदार्थ मात्र हैं वे सब विश्वेदेव हैं। इसमें कोई वस्तु छूटी नहीं है। यही बात 'विश्वेदेवाः' पदसे भी समझमें आ सकती है। इस विश्वमें जो भी पदार्थ हैं, ये सब 'देव' हैं अतः वे 'विश्वेदेव' कहलाते हैं, यह ठीक ही है। अब तैत्तिरीय देवोंके विषय में यहाँ प्रसंगानुसार कुछ कहना चाहिये—

तैत्तिरीय देवताएँ

तैत्तिरीय देवताओंका उल्लेख निम्नलिखित मंत्रोंमें है—

(मनुवैवस्वतः । विश्वेदेवाः । पुर उष्णिक् ।)

इति स्तुतासो असथा रिशादसो ये स्थ त्रयश्च त्रिंशच्च ।

मनोर्देवा यज्ञियासः ॥ (ऋ. ८।३।१२)

ये त्रिंशति त्रयस्परो देवासो बर्हिशासन् ।

विदन्नह द्वितासनन् ॥ (ऋ. ८।२।८।११)

(गाथिनो विश्वामित्रः । अग्निः त्रिष्टुप्)

ऐभिरग्ने सरथं याव्यर्वाङ् नानारथं वा विभनो ह्यधाः ।

पत्नीवतः त्रिंशतं त्रींश्च देवाननुष्वधमा वह मादयस्व ॥ (ऋ. ३।६।१९)

(प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः । अनुष्टुप्)

श्रुष्टीवानो हि दाशुषे देवा अग्ने विचेतसः ।

तान्रोहिदश्च गिर्वणस्त्रयस्त्रिंशतं आवह ॥ (ऋ. १।४।५।१२)

(भृग्वंगिराः । त्रिवृत् । अनुष्टुप्)

त्रयस्त्रिंशद्देवतास्त्रीणि च वीर्याणि प्रियायमाणा

जुगुपुरप्स्वन्तः । अस्मिंश्चन्द्रे अधि यद्विरण्यं तेनार्यं

कृणवद्वीर्याणि ॥ (अथर्व. १।१२।७।१०)

(गोपथः । रात्रिः । अनुष्टुप्)

द्वौ च ते विशतिश्च ते रात्र्येकादशावमाः ।

तेभिर्नो अथ पायुभिः नु पाहि दुहितार्दिवः ॥

(अथर्व. १९।४७।५)

त्रया देवा एकादश त्रयस्त्रिंशः सुराधसः ।

दूरस्पतिपुरोहिता देवस्य सवितुः सवे ।

देवा देवैरवन्तु मा ॥

(वा. य. २०।११)

इन सात मंत्रोंमें ३३ देवताओंका स्पष्ट उल्लेख है ।

त्रयः त्रिंशत् देवाः ।

त्रिंशति त्रयः परः देवासः ॥

त्रिंशतं त्रीन् च देवान् ।

त्रिंशतः त्रयः त्रिंशतं ॥

त्रयस्त्रिंशत् देवताः ।

देवाः त्रयस्त्रिंशः ॥

द्वौ + विशतिः च + एकादश ।

ये सब उल्लेख ३३ देवोंकी गणना कर रहे हैं । 'तीन और दस' अथवा 'तीस और तीन' इस तरह गणना ऊपरके मंत्रोंमें दीखती है । एक मंत्रमें $२+२०+११=३३$ ऐसी गणना । तीन और तीसमें भी एक देव मुख्य और दस देव उसके अगले ऐसी गणना है । वही बात $२+२०+११=३३$ में है । तब देव मुख्य और दस दसके तीन देवगण मिलकर तैंतीस होते हैं ।

तैंतीस देवोंमें 'तीन बार एकादश' अथवा 'एकादश' बार $११ \times ३=३३$ ऐसी देवोंकी गणना ऊपर दिये एक मंत्रमें की है । इससे ये तीन तरहके देवगण, ग्यारहकी संख्यामें एकत्र गण होनेसे, तैंतीस बने हैं । इससे खोज करनेवालेको पता चलेगा, अन्तरिक्ष और बुलोकमें ग्यारह ग्यारह देवगणोंका क्या है, ऐसा पता लगता है । इसके सूचक निम्नलिखित हैं—

तीन गुणा ग्यारह देव

(हिरण्यस्तूप आंगिरसः । अश्विनौ । जगती)

या नासत्या त्रिभिरेकादशैरिह देवेभिर्यातं मधुपेय-

अश्विना । प्रायुस्तारिष्टं नो रपांसि मृक्षतं सेधतं द्वेषः

स्यतं सचाभुवा ॥ (ऋ. १।३४।११; वा. य. ३४।४७)

(पुरुच्छेपो देवोदासिः । विश्वदेवाः । त्रिष्टुप्)

देवासो दिव्येकादश स्थ पृथिव्यामध्ये-

कादश स्थ । अप्सुक्षितो महिनैकादश स्थ ते

देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम् ॥ (ऋ. १।१३९।११)

(भृग्वंगिराः । त्रिवृत् । अनुष्टुप्)

ये देवा दिव्येकादश स्थ० ये देवा अन्तरिक्ष

एकादश स्थ० । ये देवा पृथिव्यामेकादश स्थ ते

देवासो हविरिदं जुषध्वम् ॥ (अथर्व. १९।२७।११-१३)

(श्यावाश्व आत्रेयः । अश्विनौ । त्रिष्टुप्)

विश्वेदैवैस्त्रिभिरेकादशैरिहाङ्गिरमरुद्धिर्भृगुभिः सचा-

भुवा । सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं पिबतमश्विना ॥

(ऋ. ८।३५।३)

(नाभाकः काण्वः । अग्निः । महापंक्तिः)

अग्निस्त्रीणि त्रिधातून्याक्षेति विदथा कविः ।

स त्रैरेकादशां इह यक्षच्च पिप्रयच्च नो विप्रो दूतः

परिष्कृतः । नभन्तामन्यके समे ॥ (ऋ. ८।३९।९)

(मेध्यः काण्वः । अश्विनौ । त्रिष्टुप्)

युवां देवास्त्रय एकादशासः सत्याः सत्यस्य ददशे

पुरस्तात् । अस्माकं यज्ञं सवनं जुषाणा पातं सोममश्विना

दीयमी ॥ (ऋ. ८।५७।२)

(कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः । त्रिष्टुप्)

तव त्वे सोम पवमान निष्ये विश्वे देवास्त्रय एका-

दशासः । दश स्वधाभिरग्निं सानो ज्वये मृजन्ति त्वा

नयः सप्त यद्वाहीः ॥ (ऋ. ९।९२।४)

इन सात मंत्रोंमें तैंतीस देवोंकी गणना की है । 'त्रिभिः एकादशैः देवैः । त्रीन् एकादशान् । त्रयः एकादशासः ।' तीन गुणे ग्यारह देव हैं यह बात इन मंत्रोंसे सिद्ध होती है ।

ये तैंतीस देव 'दिवि एकादश, अन्तरिक्षे एकादश, पृथिव्यामेकादश' इस तरह आकाशमें, अन्तरिक्षमें और भूमिपर ग्यारह ग्यारह हैं, ऐसा विवरण उक्त मंत्रोंमें ही किया है । इससे तैंतीस देव कहां कैसे रहते हैं, इसका पता लगता है । इन ग्यारह देवोंमें भी एक मुख्य और दस गौण अर्थात् उस एकके साथ या अधीन कार्य करते हैं । पृथ्वीपर अग्नि, अन्तरिक्षमें वायु और बुलोकमें सूर्य ये तीन देव संभवतः मुख्य होंगे और इनमेंसे प्रत्येकके अधीन दस दस देव रहते होंगे । पर ऐसा भी दीखता है कि अग्नि आदि देव इन तैंतीस देवोंकी अपने स्थान पर बिठलाकर लाते हैं, इस विषयमें मन्त्रभाग देखिए—

(६)

अग्ने ! पत्नीवतः त्रिशतं त्रिंश देवान् आवह ॥

(ऋ. ३।६।९)

अग्ने ! निर्वणः त्रयस्त्रिंशतं आवह ॥

(ऋ. १।४५।२)

अग्निः तीन एकादशान् यक्षत् ॥

(ऋ. ८।३९।९)

‘हे अग्ने ! तैत्तीस देवोंको और उनकी पत्नियोंको साथ ले आओ ।’ इसी तरह अश्विदेव भी तैत्तीस देवोंको लाते हैं—

हे अश्विना ! त्रिभिः एकादशैर्देवैः आयातं ॥

(ऋ. १।३४।११)

‘हे अश्विदेवो ! तैत्तीस देवोंके साथ यहां आओ ।’ यहां ये अग्नि और अश्विदेव तैत्तीस देवोंको अपने साथ लाते और यज्ञमें हविर्भाग लेते हैं। अश्वी अपने रथपर तैत्तीस देवोंको रखकर लाते हैं, इसी तरह अग्नि भी अपने रथपर रखकर उन सब देवोंको लाते हैं। इस विषयमें निम्न लिखित मन्त्र भाग देखने योग्य है—

ऐभिः अग्ने सरथं याहि अर्वाङ् नाना-रथं वा ॥

(ऋ. ३।६।९)

‘हे अग्ने ! इन तैत्तीस देवोंको अपने रथपर बिठलाकर अथवा नाना रथोंपर बिठलाकर यहां ले आओ ।’ यह मन्त्र निःसंदेह विचार करने योग्य है। तैत्तीस देवोंकी खोजमें यह सहायक होनेवाला है। तीन हजार तीनसौ तीस और नौ देव हैं, ऐसा भी निम्नलिखित मन्त्रमें कहा है—

(गाथिनो विश्वामित्रः । अग्निः । त्रिष्टुप्)

त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं त्रिंशच्च देवा

नव चासपर्यन् । औक्षन् घृतैरस्तृणन् वर्धिरस्मा आदि-

क्षोतारं न्यसादयन्त ॥

(ऋ. ३।९।९)

तीन हजार तीनसौ तीस और नौ देव अग्नि की पूजा करते हैं। यहाँ $३३३० + ९ = ३३३९$ देव हैं ऐसा कहा है।

१ ब्रह्म = महा सूर्य

३ अग्नि-वायु-सूर्य

३३ उक्त तीन देवोंके साथ दस मिलकर तैत्तीस देव

३३३ विश्वेदेवाः

३३३९ विश्वेदेवाः

बादके ३३३ और ३३३९ वे देव भी उन ३३ देवोंके साथ कार्य करनेवाले उपदेव हैं। इस तरह देवोंकी संख्याकी वृद्धि होकर तैत्तीस कोटी अथवा तैत्तीस करोड़ देवताएं मानी गयी

हैं। कहते हैं कि मानव-शरीरमें तैत्तीस करोड़ अणु जीवमात्राएं हैं। अणुजीवमात्रा (Cells) यही जीवनका अतिसूक्ष्म पिण्ड है। ये अणुपिण्ड करोड़ोंकी संख्यामें शरीरमें रहते हैं, प्रत्येक अणुपिण्डमें विश्वके सब लोकलोकान्तरके अंश रहते हैं और वे (स्पेक्ट्रम्) वर्ण विभाजक यन्त्रसे देखे और पहचाने भी जाते हैं। इससे जो विश्वमें है वह पिण्डमें है और जो पिण्डमें है वह विश्वमें है, इस वैदिक सिद्धान्तकी पुष्टी होती है। इसलिए विश्वान्तर्गत तैत्तीस देवताएं शरीरमें कहां हैं, इसकी खोज करना अनिवार्य है। विश्वान्तर्गत तैत्तीस देवताएं शरीरमें हैं, इसमें संदेह नहीं है, परन्तु सबकी सब कहां रहती हैं, इसका पता वैदिक वाङ्मयसे नहीं लगता है। कुछ थोड़े देवोंके विषयमें ऐतरेयोपनिषद्में कहा है—

अग्निर्वाग्भूत्वा मुखं प्राविशत्,

वायुः प्राणो भूत्वा नासिके प्राविशत्,

आदित्यश्चक्षुर्भूत्वा अक्षिणी प्राविशत्,

दिशः श्रोत्रं भूत्वा कर्णौ प्राविशन्,

ओषधिवनस्पतयो लोमानि भूत्वा त्वचं

प्राविशन्,

चन्द्रमा मनो भूत्वा हृदयं प्राविशत्,

मृत्युरपानो भूत्वा नाभिं प्राविशत्,

आपः रेतो भूत्वा शिस्नं प्राविशन् ।

(ऐ. उ. २।५)

कौनसा देव मानव शरीरमें अथवा प्राणि शरीरमें आकर कहां रहा है, इसका वर्णन यहां किया है, इस वर्णनसे निम्न लिखित तालिका बनती है—

विश्वान्तर्गत- देवता	शरीरान्तर्गत- देवतांश	शरीरमें- स्थान
अग्नि	वाक्	मुख
वायु	प्राण	नासिका
आदित्य	चक्षु	नेत्र
दिश	श्रोत्र	कर्ण
औषधि	केश	त्वचा
चन्द्रमा	मन	हृदय
मृत्यु	अपान	नाभि
आप	रेत	शिस्न

इस तरह यह तालिका बनी है। वेदके मंत्रोंमें भी यह विषय है—

जीवमात्राएँ
तेसूक्ष्म पिण्ड
हैं, प्रत्येक
है और वे
माने भी जाते
पिण्डमें है वह
है। इसलिए
खोज करना
है, इसमें
इसका पता
लौकिक विषयमें

व
विश्वम्,

उ. २।५)
आकर कहाँ
लेम्न लिखित

शरीरमें-
स्थान
मुख
नासिका
नेत्र
कर्ण
त्वचा
हृदय
नाभि
शिरः
मि भी वह

संसिद्धो नाम ते देवा ये संभारान् समभरन् ।
सर्वं संसिच्य मर्त्यं देवाः पुरुषमाविशन् ॥ १३ ॥
पूर्वं कृत्वा मर्त्यं देवाः पुरुषमाविशन् ॥ १८ ॥
ते कृत्वाऽऽज्यं देवाः पुरुषमाविशन् ॥ १९ ॥
या आपो याश्च देवता या विराड् ब्रह्मणा सह ।
शरीरं ब्रह्म प्राविशत् शरीरेऽधि प्रजापतिः ॥ ३० ॥
सूर्यश्चक्षुर्वीर्यं प्राणं पुरुषस्य वि भेजिरे ।
यथास्येतरमात्मानं देवाः प्रायच्छन्नश्रये ॥ ३१ ॥
मसाद्वै विद्वान् पुरुषमिदं ब्रह्मेति मन्यते ।
सर्वा ह्यस्मिन्देवता गावो गोष्ठ इवासते ॥ ३२ ॥

(अथर्व. ११।८)

‘जो देव शरीर बनानेका संभार इकट्ठा करते हैं, वे संसिच्य
सर्व देव मर्त्य देहकी सब सामग्री यथा स्थान इकट्ठी करके
सर्व देहमें घुस गये हैं। इस मर्त्य गृहको बना कर सब देव
इसमें प्रविष्ट हुए हैं। रेतका घी बनाकर ये देव पुरुषमें प्रविष्ट
हुए हैं। आप, विराट्, अन्य देवता ब्रह्मके साथ शरीरमें प्रविष्ट
हुए हैं। शरीर पर प्रजापति अधिष्ठाता हुआ है। सूर्य चक्षु
प्राण, वायु प्राण हुआ, और ये मनुष्यके शरीरमें विभक्त
रहे हैं। इससे भिन्न अन्य अवयव अन्य देव बने हैं।
इससे ज्ञानी इस पुरुषको ब्रह्म कहते हैं। सब देवताएँ, गौर्व
गोशालामें रहनेके समान, इस शरीरमें रहती हैं।’

यहां स्पष्ट कहा है कि, गौर्व गोशालामें रहनेके समान सब
देवताएँ इस शरीरमें रहती हैं, ‘सर्वाः देवताः’ का अर्थ
तैत्तिरीय देवता ही हैं। देखिये—

यस्य त्रयस्त्रिंशद्देवा अंगे सर्वे समाहिताः ॥ १३ ॥
यस्य त्रयस्त्रिंशद्देवा अंगे गात्रा विभेजिरे ॥ २७ ॥

‘इसके शरीरमें तैत्तिरीय देव शरीरके सब अवयवोंमें समा
हित हुए हैं। इसके शरीरके सब गात्रोंमें ये तैत्तिरीय देव विभक्त
रहे हैं।’ इस तरह शरीरमें तैत्तिरीय देव अवयव बनकर
वर्णन है। इस वर्णनमें तैत्तिरीय देवता शरीरके गात्रोंमें
वर्णन स्पष्ट है। मन्त्रमें इस विषयका जो अधिक वर्णन
है वह ऐसा है—

स्मिन् भूमिरन्तरिक्षं द्यौर्यस्मिन् अध्याहिता ।
पितृस्थानि च सूर्यो वातस्तिष्ठन्त्यार्पिताः ॥ १२ ॥
अमृतं च सृष्टुश्च पुरुषेऽधि समाहिते ।
यस्य नाड्यः पुरुषेऽधि समाहिताः ॥ १५ ॥
प्रादित्याश्च रुद्राश्च वसवश्च समाहिताः ॥ २१ ॥

यस्य भूमिः प्रमान्तरिक्षमुतोदरम् ।
दिवं यश्चक्रे मूर्धान्मृ० ॥ ३२ ॥
यस्य सूर्यश्चक्षुश्चन्द्रमाश्च पुनर्णवः ।
अग्निं यश्चक्रे आस्यमृ० ॥ ३३ ॥
यस्य वातः प्राणापानौ चक्षुरंगिरसोऽभवन् ॥
दिशो यश्चक्रे प्रज्ञानीः ० ॥ ३४ ॥ (अथर्व. १०।७)

‘जिसमें भूमि-अन्तरिक्ष-यु ये तीन लोक हैं। जिसमें
अग्नि, चन्द्रमा, सूर्य, वायु ये देव रहते हैं, जहां अमृत और
मृत्यु हैं। नदियाँ नाडीरूपसे जहां रहती हैं। जहां वसु, रुद्र
और आदित्य रहे हैं, युलोक सिर है, अन्तरिक्ष पेट है और
भूमि जिसके पांव हुए हैं। सूर्य चक्षु, चन्द्रमा मन और अग्नि
मुख बना है। वायु प्राण और अपान, चक्षु अंगिरस और
दिशायें ज्ञान साधन कर्ण यहां बने हैं।’

यह वर्णन परमात्माके विश्वशरीरका और जीवशरीरका
समानतया वर्णन है। परमात्माका शरीर विश्व है और जीवका
शरीर यह पिण्ड शरीर है, पर दोनों जगह ये तैत्तिरीय देव हैं।
परमात्म शरीरमें पूर्ण रूपसे और जीवशरीरमें अंश रूपसे ये
देवताएँ रहती हैं। इनका मन्त्रोक्त वर्णन और देखिये—

दश साकं अजायन्त देवा देवेभ्यः पुरा ॥ ३ ॥
प्राणापानौ चक्षुः श्रोत्रं अक्षितिश्च क्षितिश्च या ।
व्यानोदानौ वाङ्मनस्ते वा आकृतिं आवहन् ॥ ४ ॥
इन्द्रादिन्द्रः सोमात्सोमो अग्नेरग्निरजायत ।
त्वष्टा ह जज्ञे त्वष्टुर्धातुर्धाताऽजायत ॥ ९ ॥
ये त आसन् दश जाता देवा देवेभ्यः पुरा ।
पुत्रेभ्यो लोकं दत्त्वा कस्मिंस्ते लोक आसते ॥ १० ॥

(अथर्व. ११।८)

दस देवोंसे दस देव-पुत्र उत्पन्न हुए। प्राण, अपान, चक्षु,
श्रोत्र, अक्षिति, क्षिति, व्यान, उदान, वाणी, मन ऐसे वे दस
देवपुत्र दस देवोंसे उत्पन्न हुए हैं। इन्द्रसे इन्द्र, सोमसे सोम,
अग्निसे अग्नि, त्वष्टासे त्वष्टा, और धातासे धाता ये पुत्र हुए
हैं। ये दस देवपुत्र बड़े देवोंसे उत्पन्न हुए हैं। इन पुत्रोंको स्थान
देकर वे देव अपने स्थानमें गये।

पितृस्थानीय देवोंने पुत्ररूपी देवोंको शरीररूपी क्षेत्र निर्माण
करके दिया और वे अपने स्थानमें गये। यही इन सभी मंत्रों
का अतिस्पष्ट कथन है। तैत्तिरीय देव शरीरमें आकर रहे हैं, ऐसा
मंत्रमें कहा भी है, परन्तु गणना करनेके समय आठ देवोंके ही
नाम दिये हैं। उपनिषद्में भी ६।७ देवोंके नाम हैं और अन्य

वेद मंत्रोंमें भी ८११० देवोंके नाम गिनाये हैं। अन्य देवोंके नाम और स्थान नहीं लिखे, इसलिये अन्य देवोंके अंश शरीरमें नहीं आये, ऐसा नहीं माना जा सकता; क्योंकि तैत्तिरीय देवोंका निवास शरीरमें हुआ है ऐसा स्पष्ट कथन पूर्वोक्त मंत्रोंमें है, इतना ही नहीं, परन्तु त्रिलोकी अंश रूपसे शरीरमें रहती है ऐसा भी ऊपरके मंत्रोंमें कहा है। जब पूर्ण रूपसे त्रिलोकीका अंश शरीरमें आया है, तब तो उस त्रिलोकीके सभी देव शरीरमें आगये हैं, इसमें संदेह नहीं रह सकता। परन्तु सब तैत्तिरीय देवोंके नाम और स्थान शरीरमें कहाँ और कैसे हैं, यह वैदिक वाङ्मयमें किसी स्थानमें लिखा नहीं मिलता। इसकी खोज होना अत्यंत आवश्यक है। अब ऊपरके मंत्रोंके आधारसे शरीरमें जो देवोंके स्थान निश्चित हुए वे ये हैं, उनकी तालिका इस तरह बनती है—

विश्वमें देवता	शरीरमें देवता
बुलोक	सिर
सूर्य, अंगिरस	नेत्र
आदित्य	नेत्र
अग्नि	मुख
दिशा	कान
अन्तरिक्षलोक	उदर, पेट
चन्द्रमा	मन
रुद्र, वायु	प्राण अपान
विद्युत्	जाठर अग्नि
नदियाँ	नाडियाँ
वृक्ष	केश
वसु, अग्नि	उष्णता
पृथ्वी	पांव

इस तरह यह तालिका तैत्तिरीय देवताएं विश्वमें और उनके पुत्र रूप देव शरीरमें कैसे कहाँ हैं, इस संबन्धका ज्ञान देनेके लिये विशुद्ध रूपसे तैयार करनी चाहिये। बड़े प्रयत्नसे यह साध्य हो सकती है, क्योंकि वैदिक साहित्यमें इसका संपूर्ण वर्णन कहीं भी नहीं है। थोड़े देवताओंका वर्णन वेदमंत्रों और उपनिषदोंमें है, वैदिक समयमें गुरु अपने शिष्यको यह देवविद्या पढ़ाता होगा, इस लिये उस समय थोड़ेसे संकेत मात्र उल्लेख जो इस समय वेदमंत्रों और उपनिषदोंमें आये हैं, उतने पर्याप्त होते होंगे। परन्तु अब यह गुप्तविद्या बताने-वाला कोई गुरु नहीं रहा है, इसलिये विशेष खोजपूर्वक यह ज्ञान तालिका बद्ध करके रखना चाहिये।

शरीरमें देवताओंका स्थान

मनुष्यके पृष्ठवंशमें हड्डियोंकी माला है। इनमें दो हड्डियोंके टुकड़ोंकी जो संधि है, वहाँ मज्जाकी ग्रंथी है। सिरसे लेकर गुदातक ये मज्जा केन्द्र ३३ हैं। इनमें गुदाके पासके १० अलग अलग नहीं हैं, परन्तु अन्य मज्जाग्रंथियाँ पृथक् पृथक् हैं और मानसिक ध्यान द्वारा प्रत्येक ग्रंथीको उत्तेजित किया जा सकता है।

योग साधनमें इनमेंसे आठ चक्र योगानुष्ठानके लिये लिये हैं। योगी लोग ध्यानसे देवताकी उपासना इन चक्रोंमें करते हैं और ग्रंथियोंको उत्तेजित करते हैं। ये ग्रंथियाँ उत्तेजित होनेसे उनमेंसे विशेष रस निकलता है, यह रस शरीरमें शोषित होनेसे दीर्घ जीवन, आरोग्य, बल, वीर्य, ज्ञानवर्धन आदि लाभ होते हैं। इसी तरह अन्य मज्जा केन्द्रोंमें जो देवतांश रहते हैं, उनके ज्ञानसे और ध्यानसे मनुष्यका लाभ होना संभव है। पाचन शक्तिका प्रदीप्त होना, रुधिराभिसरण ठीक होना, विचार और स्मरणकी शक्तिका विकास, ब्रह्मचर्यका साधन, ऊर्ध्वरेता बनना, जीवन दीर्घ होना, मृत्युको दूर रखना, नारोग रहना आदि अनेक लाभ इससे होनेकी संभावना है।

पृष्ठवंशके इन केन्द्रोंके विशेष मालिश करनेसे भी लाभ होते हैं। इस विद्याका नाम 'किरोपॉट्रिक चिकित्सा' है। पर यह विद्या तब साध्य होगी जब प्रत्येक मज्जा केन्द्रकी शक्तिका अर्थात् देवताका यथावत् ज्ञान होगा। इसलिये इन ३३ देवताओंके ३३ केन्द्रोंका शरीरमें स्थान, कार्य और देवतासंबन्ध जानना अत्यंत आवश्यक है।

इस ज्ञानसे व्यक्तिका हित है और वैदिक मंत्रोंसे जो अध्यात्मका अनुभव लेना है, वह इसी अनुष्ठानसे हो सकता है। अर्थात् अध्यात्म ज्ञान केवल गप्पे मारनेसे नहीं हो सकता, परन्तु विश्वव्यापक परम पिता परमात्माके अंशसे जो यह जीव अमृतपुत्र हुआ है, उसमें पितृतुल्य सब शक्तियाँ हैं, उनको जानना, देखना और उनका उपयोग करके अपनी शक्तिका विकास करना चाहिये। यही अनुष्ठान है। योगी लोग यह करते ही हैं। वही अन्योंको पूर्णरूपसे करना चाहिये। अध्यात्म-ज्ञानका प्रत्यक्ष फल यही है।

शरीरमें सिरका भाग बुलोक है, छाती और पेट अन्तरिक्ष-लोक है, और गुदा मूत्राशयसे नीचेका सब भाग भूलोक है। इन तीन लोकोंमेंसे प्रत्येकमें एक एक देवता मुख्य है और उसके साथ दस देवतायें सहायक हैं। इनका स्थान पृष्ठवंशके

विश्वदेव कितने हैं ?

अब हम इस बातका विचार करते हैं कि विश्वदेवा देवताके अन्दर जो मन्त्र समाविष्ट हुए हैं उनमें कितने देवोंका अन्तर्भाव हुआ है और जिन यजुर्वेदके अध्यायोंमें नाना देवताओंके उद्देश्यसे हविर्भाग देनेका वर्णन है, उनमें कितनी देवताएँ लिखी हैं। इनका प्रथम प्रकरणशः विचार करेंगे। प्रथम निघण्टुके पञ्चम अध्यायमें पृथ्वी स्थानीय देवताएं ५२, अन्तरिक्ष स्थानीय देवताएं ६८ और युस्थानीय देवताएं ३१ इस तरह १५१ देवतायें लिखी हैं, उनके स्थानानुकूल भाव ये हैं—

पृथ्वी स्थानीय ५२ देवतायें

(निघण्टु ५।१)

१ अग्निः = जो हवनके लिये तथा पकानेके लिये जलाया जाता है।

२ जातवेदाः = जिससे वेद प्रकट हुए वह यज्ञाग्नि।

३ वैश्वानरः = सब मानवोंको यज्ञमार्गपर चलानेवाला अग्नि।

(निघण्टु ५।२)

४ द्रविणोदाः = धन देनेवाला यज्ञाग्नि

५ इध्मः = समिधाओंसे प्रदीप्त होनेवाला

६ तनू-न-पात् = शरीरको न गिरानेवाला, (तनू-नपात्)

सूर्यरूपी शरीरका पुत्र विद्युत्, उसका पुत्र अग्नि, सूर्यका पोता, गौका पोता घी, (गौ-दूध-घी), घी

७ नराशंसः = मनुष्यों द्वारा प्रशंसित यज्ञाग्नि

८ इळः = (इडः) स्तुत्य अग्नि

९ बर्हिः = दर्भ, आसन

१० द्वारः = द्वार, यज्ञशालाके द्वार

११ उषासानक्ता = उषःकाल और रात्रीका समय

१२ दैव्याहोतारा = अग्नि और वायु, दिव्य होता

१३ तिस्रो देवीः = भारती, इळा, सरस्वती ये तीन देवियाँ

१४ त्वष्टा = बढई, विश्वरचनाका कार्य करनेवाला

१५ वनस्पतिः = वनस्पति, यूप, समिधा, लकड़ी

१६ स्वाहाकृतयः = स्वाहाकारपूर्वक आहुति देना।

(निघण्टु ५।३)

१७ अश्वः = घोडा

१८ शकुनिः = पक्षी, कर्पिजल

मन्त्रकेन्द्र हैं। इन केन्द्रोंके अधीन शरीरके सब व्यापार हैं। इनके प्रत्येक देवता, उसका अंश शरीरमें कहां रहता है, कहां उसका क्या कार्य चल रहा है, उसको स्वाधीन कैसा करना चाहिये, उत्तेजित कैसा करना चाहिये, उत्तेजनासे और लाभ होते हैं, इत्यादि सब ज्ञान इस देव-विद्यासे जाना जाता है। योगमें जो गुप्त विद्या है वह यही विद्या है। यह विद्या गुप्त रखते रखते अब लुप्त ही हुई, उसकी खोज करना आजके खोजकर्ताओंका कार्य है। तैत्तिरीय देवताओंका ज्ञान और स्थान अपने शरीरमें जानना चाहिये। यही अध्यात्मविद्या है और यही योगसाधनका भाग है। योगी लोग आज भी आठ मज्जाकेन्द्रों और वहांके आठ देवताओंको जानते और उनका अनुष्ठान ध्यानद्वारा करके लाभ करते हैं। पर इसको वे अतिगुप्त रखते हैं। हमें उसकी शास्त्रीय-रूपसे खोज करनी चाहिये। तैत्तिरीय देवताओंका ज्ञान वैद्योंको भी होना चाहिये। पर वे शरीरके विश्वव्यापी देवताओंका ज्ञान है। इस ज्ञानसे ही रोग चिकित्सा होती है। आजकल मृत्तिकाचिकित्सा, जलचिकित्सा, अग्निचिकित्सा, सूर्यकिरण-चिकित्सा, विद्युच्चिकित्सा, रेणुचिकित्सा आदि अनेक चिकित्साएँ प्रचलित हैं। ये सब चिकित्साएँ देवताओंके यथार्थ ज्ञानसे और उपयोगसे होती हैं। इससे ज्ञात हुआ कि योगी अपने अन्दर ३३ देवताओंका प्रभाव करता है और उनको उत्तेजित करके अन्दरही अन्दरसे निघण्टु ग्रंथियोंके प्राप्त करके नीरोग बनकर दीर्घायु होता है। इसी तरह वैद्य इनही देवताओंके गुणधर्म जानकर उनसे रोग प्रसारकी चिकित्साएँ करके अपने रोगियोंके रोग दूर करके उनको अपमृत्युसे बचाकर दीर्घायु बनाता है। आजकल लोक अग्नि सिद्ध करके उसमें विशिष्ट औषधियोंके प्रयोग द्वारा इन ही तैत्तिरीय देवताकी प्रसन्नता प्राप्त करके भूमि-रोग दूर करते हैं। इस तरह ये सब इन तैत्तिरीय देवोंके साथ अपना सम्बन्ध जोड़ रहे हैं और लाभ भी उठा रहे हैं। तैत्तिरीय देवोंकी यही वेदविद्या है। आज यह पूर्ण रूपसे हमारे हस्तगत नहीं है। पर इस ढंगसे प्रयत्न करनेपर यह कभी न कभी हस्तगत हो सकती है। इसलिए ये तैत्तिरीय देव विश्वमें कौनसे और कहां हैं, वे मानव शरीरमें या प्राणीके शरीरमें कहां हैं और यज्ञमें उनका सम्बन्ध क्या है इसका पता लगाना चाहिये।

१ (दै. विश्वे देवा)

(१०)

१९ मण्डूकाः = मेंढक, जलजन्तु

२० अक्षाः = पासे (खेलनेके)

२१ ग्रावाणः = सोम कूटनेके पत्थर

२२ नराशंसः = वीरोंकी, नरोंकी जिसमें प्रशंसा की जाती है वह यज्ञ

२३ रथः = रथ, गाड़ी, वाहन

२४ दुन्दुभिः = ढोल, चर्मवाद्य

२५ ह्युधिः = तर्कस, बाणोंकी धैली

२६ हस्तघ्नः = दस्ताना

२७ अभीशवः = लगाम

२८ धनुः = धनुष्य

२९ ज्या = धनुष्यकी डोरी

३० ह्युः = बाण

३१ अश्वजनी = चाबूक

३२ उलूखलं = उखली

३३ वृषभः = बैल, (गायका भी उपलक्षण)

३४ द्रुघणः = काष्ठकी गदा, घन

३५ पितुः = अन्न

३६ नद्यः = नदियां

३७ आपः = जल

३८ औषधयः = औषधियां

३९ रात्रिः = रात्री

४० अरण्यानी = वनश्री, अरण्य

४१ श्रद्धा = श्रद्धा

४२ पृथिवी = भूमि

४३ अप्वा = भय, रोग, दुःख

४४ अग्नायी = अग्निकी ज्वाला

४५ उलूखलमुसले = उखली और मुसली

४६ हविर्धानो = हवि और उसका पात्र, छाज

४७ द्यावापृथिवी = धु और पृथिवी

४८ विपाट्-श्रुतुद्री = इस नामकी दो नदियां

४९ आर्नी = धनुष्यकी दोनों कोटियां, दो नोकें

५० शुनासीरौ = हल और हलसे खींची जानेवाली नाली, रेखा

५१ देवी जोष्टी = सुख देनेवाली देवता

५२ देवी ऊर्जाहुती = बल देनेवाली आहुति देवता ।

अन्तरिक्ष स्थानीय ६८ देवताएं

(निघण्टु ५।४)

१ वायुः = वायु

२ वरुणः = वरुण, जलदेव

३ रुद्रः = गर्जना करनेवाला विद्युद्देव

४ इन्द्रः = विद्युद्देव

५ पर्जन्यः = मेघ, वृष्टी

६ बृहस्पतिः = बड़ा पालक मेघ

७ ब्रह्मस्पतिः = बड़ा पालक मेघ

८ क्षेत्रस्य पतिः = खेतका पालक, मेघ

९ वास्तोष्पतिः = घरका पालक, मेघ

१० वाचस्पतिः = वाणीका रक्षक, मेघ

११ अपां न पात् = जलोंको न गिरानेवाला

१२ यमः = वायु

१३ मित्रः = वायु, प्राणवायु, मेघ

१४ कः = सुखदायी, वायु, मेघ, जल

१५ सरस्वान् = बहनेवाला वायु, मेघ

१६ विश्वकर्मा = सब कर्म करने करानेवाला, वायु

१७ तार्क्ष्यः = पक्षीके समान संचार करनेवाला वायु

१८ मन्युः = क्रोध, उत्साह बढ़ानेवाला वायु, उत्साह

१९ दधिष्ठा = वायु, मेघ

२० सविता = प्रेरक वायु

२१ त्वष्टा = सुखानेवाला, वायु

२२ वातः = वायु, गन्ध लानेवाला वायु

२३ अग्निः = विद्युत्का अग्नि

२४ वेनः = प्रकाश, किरण समूह

२५ असुनीतिः = प्राणवायु

२६ ऋतः = जल, जलभरा मेघ

२७ इन्द्रुः = चन्द्रमा, सोम, पर्वतपर उगनेवाला सोम

२८ प्रजापतिः = पर्जन्य, वायु

२९ अहिः = मेघ, जो बढ़ता रहता है वह मेघ

३० अहिर्बुध्न्यः = मेघ, सूक्ष्म भापवाला मेघ

३१ सुपर्णः = किरण जिसपर पड़े ऐसा मेघ

३२ पुरुरवा = गर्जनेवाला मेघ

(निघण्टु ५।५)

३३ श्येनः = पक्षी

३४ सोमः = सोमवर्ष्ती

३५ चन्द्रमाः = चन्द्र

३६ मृत्युः = मारनेवाला, काल

३७ विश्वानरः = विश्वका नेता, वायु

३८ धाता = धारक वायु

३९ विधाता = धारक वायु

४० मरुतः = मरने तक प्राणरूप से कार्य करनेवाला वायु

४१ रुद्राः = प्राणवायु

४२ ऋभवः = कारीगर, वायु

४३ अङ्गिरसः = अंगोंमें कार्य करनेवाला रस, संचालक व्यान वायु

४४ पितरः = पितर

४५ अथर्वाणः = स्थिरता रखनेवाला प्राण पितर

४६ भृगवः = भृगु, प्राण

४७ आप्याः = प्राप्तव्य, प्राण

४८ अदितिः = उषा

४९ सरमा = मेघगर्जना, वाणी

५० सरस्वती = स्रोत, झरना

५१ वाक् = वाणी, मेघगर्जना

५२ अनुमती = चतुर्दशी युक्त पूर्णिमा, एक कला जिसमें कम है ऐसी पूर्णिमा

५३ राका = पूर्णिमा, पूर्णचन्द्रमा युक्त

५४ सिनीवाकी = चतुर्दशी युक्त अमावास्या, इस दिन थोड़ासा चन्द्रमा दीखता है

५५ कुहूः = जिस अमावास्यामें चन्द्रमा नहीं दीखता

५६ यमी = रात्री

५७ उर्वशी = विद्युत्, रात्री

५८ पृथिवी = विस्तृत रात्री

५९ इन्द्राणी = विद्युत्प्रभा

६० गौरी = विजलीकी श्वेत रोशनी

६१ गौः = जल देनेवाली मेघपंक्ति

६२ धेनुः = जल देनेवाली मेघपंक्ति

६३ अन्न्या = जल देनेवाली मेघपंक्ति

६४ पथ्या = अन्तरिक्ष, अवकाश, मार्ग देनेवाला अवकाश

६५ स्वस्ति = रहनेका उत्तम स्थान, कल्याण

६६ उषाः = उषःकाल

६७ हला = जल वृष्टी, अन्न उत्पन्न करनेवाली वृष्टी

६८ रोदसी = गर्जना करनेवाली विद्युत्।

द्युस्थानीय ३१ देवताएँ

(निघण्टु ५।६)

१ अश्विनौ = आधीरात्रीके पश्चात् आकाशमें उदय होनेवाले दो नक्षत्र

२ उषाः = उषःकाल

३ सूर्यः = सूर्य, प्रभा

४ वृषाकपायी = बलवान् जलशोषक सूर्य

५ सरण्यू = त्वष्टृपत्नी, विद्युत्प्रभा

६ त्वष्टा = त्वष्टा, विद्युत्, सूक्ष्म करनेवाला

७ सविता = उदयके पूर्वका सूर्य जिसका सूक्ष्म अंश क्षितिजपर दीख रहा है

८ भगः = अधोदित सूर्य

९ सूर्यः = पूर्णोदित सूर्य

१० पूषा = किरणोंसे पुष्ट हुआ एक प्रकारका सूर्य

११ विष्णुः = सूर्य (पूर्ण प्रकाशित)

१२ विश्वानरः = तीसरे प्रहरका सूर्य

१३ वरुणः = चतुर्थ प्रहरका सूर्य

१४ केशी = क्षितिजपर पहुंचा हुआ किरणोंवाला सूर्य

१५ केशिनः = अस्त होनेवाला किरणमात्रावाशिष्ट सूर्य

१६ वृषाकपिः = अस्त हुआ सूर्य

१७ यमः = अस्तंगत सूर्य

१८ अजएकपात् = जिसका एक ही किरण दीखता हो ऐसा सूर्य

१९ पृथिवी = बड़ा व्यापक ब्रूलोक

२० समुद्रः = नीला आकाश, जो समुद्र जैसा दीखता है

२१ दध्यङ् = मेघच्छादित आकाश जिससे किंचित् वृष्टी होती हो

२२ अथर्वा = शान्त आकाश, अचल सूर्य

२३ मनुः = सूर्य (जिसकी प्रहमाला एक रेषामें आगयी हो) जो मन्वंतर करता है

२४ आदित्याः = सूर्य किरण

२५ सप्त ऋषयः = सूर्यके सात किरण, सात नक्षत्र (सप्तर्षि)

२६ देवाः = नक्षत्र, ग्रह, किरण

२७ विश्वेदेवाः = सब देव, किरण

२८ साध्याः = सूर्यरश्मी, किरण

२९ वसवः = सूर्यरश्मी, किरण

३० वाजिनः = सूर्यरश्मी, किरण

३१ देवपत्न्यः = देवोंकी दीप्तियाँ, शक्तियाँ।

इस तरह पृथ्वी स्थानमें ५२ + अन्तरिक्ष स्थानमें ६८ + और बुस्थानमें ३१ मिलकर १५१ देवताएं निघण्टुमें गिनी हैं। इनमें कुछ पुनरुक्त हैं, परन्तु उनका अर्थ स्थानभेदसे पृथक् करके बोध लेना उचित है।

द्वादश आदित्य

इस स्थानपर निघण्टु ५।६ में दिये बुस्थानीय देवताओंके नाम ३१ दिये हैं। इनमें बारह आदित्योंके नाम हैं।

त्वष्टा, सविता, भग, सूर्य, पूषा, विष्णु, विश्वानर, वरुण, केशी (केशिनः), वृषाकपि, यम, अज-एकपात्।

ये द्वादश आदित्योंके नाम हैं। 'केशी' और 'केशिनः' ये दो नाम किरणोंकी न्यूनता और अधिकतासे हैं, इसलिये ये एकके ही मानना योग्य है।

द्वादश आदित्य ये सूर्य उदयसे सूर्य अस्त होने तकके सूर्यके हैं, तथा सूर्यास्तके पश्चात् भी जो प्रकाश रहता है उसका इनमें अन्तर्भाव हुआ है, ऐसा इनके अर्थोंसे प्रतीत होता है।

शतपथ ब्राह्मणमें कहा है कि, द्वादश आदित्य वर्षके १२ महिने हैं। शतपथका यह अर्थ लेनेसे ये पद प्रतिदिनके सूर्यके मानना असंभव होता है। अतः यदि इन पदोंके ये अर्थ रखते हुए इनके साथ १२ महिनोंकी संगति लगानी है, तब तो हमें उत्तरीय ध्रुवके पास ही जाकर वहां इन द्वादश आदित्योंका साक्षात्कार करना होगा। क्योंकि वहीं एक एक महिनेतक एक एक आदित्यकी स्थिति रहती है।

अर्थात् उषा एक महिना रहती है यह पाठक 'उषा देवता' की भूमिकामें देख सकते हैं, उसके पश्चात् सूर्यके कुछ किरण दीखनेकी दशा करीब एक मास तक रह सकती है। इसी तरह बारहों आदित्य प्रत्येक एक एक मास रहकर एक वर्षकी पूर्ति करते हैं। यह स्थिति भूमंडलपर किसी भी अन्य स्थानमें नहीं है। अतः यदि बारह आदित्य बारह महिनोंके दर्शक हैं, तब तो यह स्थिति उत्तरीय ध्रुवके समीपकी ही है। हमारे यहां ये बारह आदित्य एक ही दिनमें अपना साक्षात् दर्शन देते हैं। हमारे एक दिनकी आदित्यकी बारह प्रकारकी अवस्थाएं उत्तरीय ध्रुवके पास ३६५ दिनोंमें दीखती हैं और प्रत्येक स्थितिके लिये करीब करीब एक मास लगता है।

यहां सूर्य उदयसे पुनः सूर्य उदय तक ये १२ आदित्य आते हैं। पर यहां इन आदित्योंका १२ महिनोंके साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। 'यम' नाम उस आदित्यका है जिसमें आदित्यकी अस्तके बादकी स्थिति है। 'यम' पदका अर्थ 'युगल' है। अर्थात् यह स्थिति दो मास रहनी चाहिये क्योंकि 'यम' का अर्थ ही 'दो' है।

उत्तरीय ध्रुवके पास ही पूरे दो महिनोंकी बड़ी गहरी रात्री होती है जहां बिलकुल सूर्य दर्शन नहीं होता। वस्तुतः वहां छः मास सूर्य दर्शन नहीं होता, परन्तु उन छः महिनोंमें ये दो महिने ऐसे होते हैं कि जिसको गहरी निशा कह सकते हैं, शेष ४ महिनोंमें कुछ न कुछ प्रकाश रहता है अर्थात् यह प्रकाश सूर्यबिंब न दीखते हुए ही आता है।

'यम' पदकी सार्थकता वर्षके उन दो महिनोंके साथ है कि जिनमें सूर्य और प्रकाश बिलकुल नहीं होता। उषाके सूक्तोंमें बड़ी अंधेरी रात्रीका जो वर्णन दीखता है वह भी यहीं सार्थ होना संभव है।

इस विचारसे यह सिद्ध होता है कि जो शतपथने बारह आदित्योंके साथ बारह महिनोंका सम्बन्ध जोड़ दिया है वह उत्तरीय ध्रुवके प्रदेशमें प्रतिवर्ष दीखनेवाली स्थिति है। समझ लीजिये कि सूर्य उदय हो रहा है, एक अंश, सूर्यका चौथा भाग क्षितिजपर आगया है तो वह चौथा भाग वैसा का वैसा ही क्षितिजपर एक मास तक दीखता रहेगा। इसका अर्थ बिलकुल उतना ही नहीं अपितु एक मासके बाद एक दो अंश ऊपर चढ़ेगा। यह प्रतिदिन इतना थोड़ा ऊपर चढ़ेगा कि प्रतिदिन उसके चढ़नेका पता तक नहीं लगेगा। यहां हमारे देशमें एक घण्टेका उषःकाल रहता है। एक घण्टेमें यहाँ उषः काल समाप्त होता है और सूर्य ऊपर आने लगता है। उत्तरीय ध्रुवके पास यह उषःकाल एक मास तक रहता है। एक मास उषःकाल होनेके बाद सूर्यका उदय होता है। आगेकी सूर्यकी अवस्थायें भी इसी तरह एक एक मासमें बढ़ती जाती हैं।

इसीलिये सूर्यकी एक अवस्था एक मास रहनेके कारण एक एक आदित्यका नाम एक एक मासको दिया गया और बारह आदित्योंके बारह महिने माने गये।

यहां एक बात ध्यानमें रखनी चाहिये, वह यह कि जैसा हमारे देशमें मध्याह्नमें सूर्य आकाशके मध्यमें बिलकुल विरपर आता है वैसा उत्तरीय ध्रुवके प्रदेशमें कभी नहीं आता। अधिकसे अधिक सूर्यका ऊपर चढ़ना वहां उतना ही होता है

गहरी रात्रि
वस्तुतः वहां
हीनोमें ये दो
सकते हैं,
अर्थात् यह

के साथ है
षाके सूक्तोंमें
यहीं सार्थ

यथने वारह
दिया है वह
है । समस्त

र्यका चौथा
सा का वैसा
अर्थ बिल-

क दो अंश
घटेगा कि
यहां हमारे

यहाँ उषः
। उत्तरीय
। एक मास

की सूर्यकी
हैं ।
कारण एक

और बारह

कि जैसा

कुल सिरपर
ता । अधि-
ही होता है

This image shows a blank, aged, cream-colored page, likely an endpaper or flyleaf of a book. The paper has a slightly textured appearance with some minor creases and discoloration, characteristic of old paper. The left edge of the page is bound, and a small portion of the adjacent page is visible on the right.

विष्णु हमारे इस प्रदेशमें सेवरेके नौ-दस बजे तक होता है।
 वन, वही सूर्यकी ऊपर चढनेकी परिसीमा है। यहां तक सूर्य
 गया तो उसको 'विष्णु' नाम मिलता है। यह विष्णु
 मास तक रहता है। उसके पश्चात् वह नीचे उतरने लगता
 है और एक एक मासतक उसको अन्यान्य नाम प्राप्त होते हैं।
 इस तरह बारह महिनेके बारह सूर्य 'ठीक एक मास तक
 एक वही सूर्यकी स्थिति' रहनेसे उत्तरीय ध्रुवप्रदेशमें ही
 रहते हैं। किसी अन्य स्थानमें सूर्य एक मास तक एक ही
 स्थितिमें रहता ही नहीं।

ई पुराणोंमें प्रतिमास सूर्यका न्यूनाधिक उष्णता मान
बारह महिनोंके बारह सूर्य माने हैं । पर रात्रीमें सूर्य
नहीं रहता, इस बातको वे भूल गये दीखते हैं ।
रात्रि ध्रुवमें रात्री और दिनका कोई भेद ही नहीं है, वहां
तेरे एक मास तक एक प्रकारका सूर्य अपने इर्द गिर्द प्रद-
क्षिप्त करता हुआ देखनेवालेको दीखता है । दूसरे मासमें उससे
अधिक प्रकाशवाला, इस तरह बारह महिने दीखता
है । 'यम' संज्ञक युगल महिने पूर्ण अंधेरेके हैं इसी-
लिए युगल कहलाते और वह सूर्यकी ही एक स्थिति मानी

तो महिने रात्रीके, उदयपूर्वकी उषाका एक मास और अस्त-
पश्चात् अर्धसमयका एक मास, ऐसे चार महिने सूर्यदर्शन विल-
म्ब नहीं होता, शेष ८ महिने न्यून वा अधिक सूर्य दर्शन
होते हैं इसमें भी २ मास कम शेष ६ मास सूर्य दर्शन होता
है। इसीलिये अदितिके ८ पुत्र कहे हैं। जिन आठ महिनोमें
अधिक सूर्य दर्शन या सूर्यप्रकाश होता है, वे ८ आदित्य
वाको 'मार्तण्ड' अर्थात् (मृत-अण्ड) जिनमें सूर्य
अण्ड मरा पड़ा रहता है अर्थात् दीखता नहीं।

अधिक विचार करें। ध्रुवकी प्रत्यक्ष स्थिति है। पाठक

अथ संहिताके ३० वें तथा काण्वसंहिताके ३४ वें
परमेश्वर नरमेधके १८४ अर्पण १७३ देवताओंके उद्देश्यसे
(मंत्र ५) १ ब्रह्म, २ क्षत्र, ३ मरुत् ४ तपस्, ५ तमस्,
६ वायु, ७ पाप्मा, ८ आक्रया, ९ काम, १० अतिकुष्ठ,
११, १२ गीत, १३ धर्म, १४ नरिष्ठा, १५ नर्म, १६ हस,
१७ अन्द, १८ प्रमद, १९ मेधा, २० धैर्य, २१ तपस्, २२
२३ रूप, २४ शुभ, २५ शरव्या, २६ हेति, २७ कर्म,
२८ श्रुति, २९ मृत्यु, ३० अन्तक, ३१ नदी, ३२ ऋक्षीका, ३३
३४ गंधर्व-अप्सरस्, ३५ प्रयुज, ३६ सर्प-देव-जन,

३७ अय, ३८ ईर्यता, ३९ पिशाच, ४० यातुधान, ४१ संधि,
४२ गेह, ४३ आर्ती, ४४ निर्ऋति, ४५ आराधि, ४६ निष्कृति,
४७ संज्ञान, ४८ प्रकामोद्य, ४९ वर्ण, ५० बल, ५१ उत्साद,
५२ प्रसुद्ध, ५३ द्वार, ५४ स्वप्न, ५५ अधर्म, ५६ पवित्र, ५७
प्रज्ञान, ५८ आशिक्षा, ५९ उपशिक्षा, ६० मर्यादा, ६१ अर्म
६२ जव ६३ पुष्टि, ६४ वीर्य, ६५ तेजस्, ६६ इरा, ६७
कीलाल, ६८ भद्र, ६९ श्रेयस्, ७० आध्यक्ष, ७१ भा, ७२ प्रभा,
७३ ब्रध्नस्य विष्टपं, ७४ वर्षिष्ठं नाकं, ७५ देवलोक, ७६ मनुष्य-
लोक, ७७ सर्वलोक, ७८ अवन्ततिवध, ७९ मेध, ८० प्रकाम,
८१ ऋत्वि, ८२ वैरहल्य, ८३ विविक्ति, ८४ औपद्रष्टव्य, ८५
बल, ८६ भूमन्, ८७ प्रिय, ८८ अरिष्टि, ८९ स्वर्ग, ९० वर्षिष्ठ
नाक, ९१ मन्थु, ९२ क्रोध, ९३ योग, ९४ शोक, ९५ क्षेम,
९६ उत्कूल-निकूल, ९७ वपु, ९८ शील, ९९ निर्ऋति, १००
यम, १०१ यम, १०२ अथर्वा, १०३ संवत्सर, १०४ परिवत्सर,
१०५ इदावत्सर, १०६ इद्रवत्सर, १०७ वत्सर, १०८ संवत्सर,
१०९ ऋभु, ११० साध्य, १११ सरस्, ११२ उपस्थावरा, ११३
वैशन्ता, ११४ नड्वला, ११५ पार, ११६ अवार, ११७ तीर्थ,
११८ विषम, ११९ स्वन, १२० गुहा, १२१ सानु, १२२
पर्वत, १२३ बीभत्सा, १२४ वर्ण, १२५ तुला, १२६ पश्चा-
दोष, १२७ विश्व भूत, १२८ भूति, १२९ अभूति, १३०
आर्ति, १३१ वृद्धि, १३२ संशर, १३३ अक्षराज, १३४ कृत,
१३५ त्रेता, १३६ द्वापर, १३७ आस्कंद, १३८ मृत्यु, १३९
अन्तक, १४० क्षुध, १४१ दुष्कृत, १४२ पाप्मा, १४३ प्रति-
श्रुतक, १४४ घोष, १४५ अन्त, १४६ अनंत, १४७ शब्द,
१४८ महस्, १४९ क्रोश, १५० अवस्वर, १५१ वन, १५२
अन्यतोऽरण्य, १५३ नर्म, १५४ हास्य, १५५ यादस्, १५६
महस्, १५७ महस् १५८ महस्, १५९-१६१ नृत्त, १६२
आक्रन्द, १६३ अग्नि, १६४ पृथिवी, १६५ वायु, १६६ अन्त-
रिक्ष, १६७ बुलोक, १६८ सूर्य, १६९ नक्षत्र, १७० चन्द्रमाः,
१७१ अहः, १७२ रात्री, १७३ प्रजापति ।

यद्यपि ये १७३ देवताएं यहाँ हैं, तथापि इनमें कई पुनरुक्त हैं, अतः उनको पृथक् करनेसे १६० के करीब ये देवतायें होती हैं। इनमें अन्तिम कुछ थोड़ी अन्य अन्तरिक्ष आदि स्थानकी हैं, शेष सब पृथ्वीपरकी ही हैं। कुछ कालवाचक हैं, कुछ गुणवाचक हैं, कुछ स्थानवाचक हैं।

वा० यजुर्वेदमें अनेक अध्यायोंमें अनेक देवताओंका उल्लेख है, उनमें अध्याय १८; २२; २४; २५; २९ और ३९ में अनेक देवताएं हैं, पर इनमें बहुतसी देवताएं पूर्वस्थानमें दी हैं। इन

सब देवताओंका यहां पुनः पुनः निर्देश करनेकी कोई आवश्यकता नहीं है ।

निघण्टुमें कही देवताएं अनेक हैं, उनमें पृथ्वी, अन्तरिक्ष और युस्थानमें जो ग्यारह ग्यारह देवताएं हैं, वे स्थूल अक्षरोंमें मुद्रित की हैं । तथापि उनमें मतभेदके लिये बड़ा स्थान है, अतः यहां तक यह ३३ देवताओंका प्रश्न अनिर्णीतसा ही आजतक रहा है ऐसा हम यहां कह सकते हैं ।

जो तो ८ वसु, ११ रुद्र व १२ आदित्य मिलकर ३१ और इन्द्र और प्रजापति मिलकर ३३ देव शतपथानुसार मानते हैं, वे पृथ्वीपर ११, अन्तरिक्षमें ११ और युलोकमें ११ बता नहीं सकते । उनके मतसे अन्तरिक्षमें ११ प्राण माने जायेंगे तो और बारहवां इन्द्र वहां आकर बैठता है और युलोकमें उनके मतसे १२ आदित्य मानने पड़ते हैं और वसु तो केवल आठ ही पृथ्वी पर रह जाते हैं, पर वे भी पृथ्वीपर नहीं हैं, जो वे ८ गिनते हैं । इस तरह इस गिनतीमें तीन स्थानोंमें ग्यारहकी व्यवस्था नहीं होती । अतः जो मन्त्र तीन स्थानोंमें ग्यारह ग्यारह देवताएं हैं, ऐसा कहते हैं, उनकी गिनती कुछ और ही होगी और शतपथकी कुछ और ही है ।

हमारे मतसे पृथ्वीपर ११, अन्तरिक्षमें ११ और युस्थानमें ११ यह जो गणना वेद मन्त्रोंमें दीखती है वह गणना अभी-तक किसी भी वैदिक ग्रंथमें स्पष्टतया नहीं बतायी है । उसकी खोज करनी चाहिये । हमने इस विषयमें बहुत ही खोज की, पर अभीतक उसकी व्यवस्था ठीक तरह समझमें नहीं आयी । अर्थात् यह खोज अधूरी ही रही है । जो सुविज्ञ पाठक वेदकी खोज करते हैं, वे इन ३३ देवताओंके ग्यारह ग्यारह विभागोंकी खोज करें और उनको तीनों विभागोंमें यथास्थान निश्चित करके बतावें । इसी तरह इन तीनों देवताओंमें ये सब तीन चार सौ देवताएं किस तरह अन्तर्भूत होती हैं अर्थात् किस एक मुख्य देवताके साथ कितनी देवताएं माननी चाहिये, इसका भी निश्चय होना चाहिये ।

यहां एक कठिनता भी है । पूर्वोक्त निघण्टुकी देवताओंमें पृथ्वी देवता पृथ्वी-अन्तरिक्ष-यु इन तीनों स्थानोंमें लिखी है । अर्थात् पृथ्वीस्थानको छोड़कर अन्य दोनों स्थानोंमें इसका अर्थ 'विस्तृत स्थान' इतना ही है । इस तरह पुनरुक्त देवता नामोंका निश्चय होना संभव है । वा. यजु. अ. ३० में भी कई देवता नाम पुनरुक्त हैं । संभवतः उन का भी ऐसा ही निर्णय होगा ।

यजुर्वेदके कुछ देवता

अब हम यहां यजुर्वेदके कुछ देवताओंके नाम देते हैं— (अ. १।२०) आपिः (प्राप्त करनेवाला), स्वापिः (उत्पत्ति रीतिसे प्राप्त करनेवाला), अपिजः (पुनः पुनः उत्पन्न होनेवाला), क्रतुः (यज्ञ), वसुः (निवास हेतु), अहर्पतिः (दिनका स्वामी), मुग्धः (मोह उत्पन्न करनेवाला), मुग्धः चैनंशिनः (मुग्ध होकर नाशको प्राप्त होनेवाला), विनंशिनः आन्त्याय (अन्त्य स्थानमें रहनेवाला विनाशकर्ता), अन्त्यः भौवनः (अन्तिम भुवनमें रहनेवाला), भुवनस्पतिः (भुवनोंका पति), अधिपतिः (मुख्य स्वामी) । ये १२ देवताएं वा. य. अ. ९ में हैं ।

(अ. २२) बाईसवें अध्यायमें निम्नलिखित देवताएं हैं— (इसमें अग्न्यादि प्रसिद्ध देवताओंको छोड़ा है इतना पाठक स्मरण रखें)— अपां मोद, हिंकार, हिंकृत, क्रन्दत्, अवक्रन्द, प्रोथत्, प्रप्रोथ, गन्ध, घ्रात, निविष्ट, उपविष्ट, सन्दिता, वल्गत्, आसीन, शयान, स्वपत्, जाग्रत्, कूजत्, प्रबुद्ध, विजृम्भमाण, विचृत, संहान, उपस्थित, आयन, प्रायण । (अ. २१।७)

यहां आसीन (बैठनेवाला), शयान (सोनेवाला) इत्यादि पद प्राणियोंकी अवस्थाओंके वाचक हैं, और ये यहाँ देवता वाचक पद हैं यह ध्यानमें रखना योग्य है ।

इसी तरह अगली कण्डिकामें निम्नलिखित देवताओंके नाम हैं— यत्, धावत्, उद्राव, उद्रुत, शूकार, शूकृत, विषण, उरिथ, जव, बल, विवर्तमान, विवृत्, विधून्वान, विधूत, शुश्रूषमाण, शृण्वत्, ईक्षमाण, ईक्षित, वीक्षित, निमेष, (अति सः) खानेवाला, (पिबति सः) पीनेवाला, (मूत्रं करोति सः) मूत्र करनेवाला, (कुर्वत्) करनेवाला, कृत । (२२।८)

ये नाम प्राणियोंकी अवस्थाओंके हैं । ये इस अध्यायमें घोडेकी अवस्थाएं करके वर्णन किया है । परन्तु सब प्राणियोंके लिये ये पद लग सकते हैं । ये सब पृथ्वीस्थानीय देवता हैं ।

इस तरहकी अन्य देवतायें पाठक इस विभागमें देख सकते हैं ।

निघण्टुमें गिनाये देवताओंका उपयोग मंत्रोंमें देखकर भी उनका निर्णय हो सकता है । वह कार्य जिस समय इन मंत्रोंका अर्थ हम करेंगे, उस समय होना संभव है । इस छोटीसी भूमिका में वह नहीं हो सकता ।

देवतासम्बन्धी विचार

देव कितने हैं ? वे जड़ हैं या चेतन ? कहाँ रहते और क्या करते हैं ? इत्यादि प्रश्न वेद-स्वाध्यायीके समक्ष उपस्थित होते हैं। समाधान न होनेपर उस विचारको व्यग्र करते हैं। वेदके देवता-सम्बन्धी निर्णयके लिये ही निरुक्तके दैवत-व्यवस्था सृष्टि हुई है और निरुक्त-निर्माणके अन्य प्रयोजनोंके लिये देवता-विनिर्णय भी एक प्रयोजन कहा गया है। यथा—
(१) अथाऽपि याज्ञे दैवतेन बहवः प्रदेशा भवन्ति । तदेतेनोपेक्षितव्यम् ॥ (निरु. १।६।१७)

और याज्ञ कर्ममें देवतासम्बन्धी बहुतसे भाग होते हैं वे निरुक्तशास्त्रसे ही जानने योग्य हैं ।

कर्म-प्रकरणमें अनेक देव प्रस्तुत होते हैं उनका सम्यक्-विचार निरुक्तशास्त्रसे ही होता है ।

वे वेदव्युलिङ्गशा अत्र स्म इति । (निरु. १।६।१७)

यदि देवता-ज्ञानके अभिमानी यह कहें कि लिङ्गसे देवताका ज्ञान होता है और हम उन लिङ्गों (चिह्नों, संकेतों) को जानते हैं निरुक्तकी क्या आवश्यकता ? तो वे सुने—

इन्द्रं न त्वा शवसा देवता वायुं पृणन्तीति शयुलिङ्गं चेन्द्रलिङ्गं चाग्नेये मन्त्रे ॥ (निरु. १।६।१७)

'इन्द्रं न त्वा' इस अभिदेवताके मंत्रमें वायु और इन्द्रका उल्लेख पाया जाता है ।

अग्निरिव मन्यो त्विषितः सहस्वेति तथाऽग्निर्मा-
न्यो मन्त्रे ॥

(निरु. १।६।१७)

'अग्निरिव मन्यो' इस मन्यु-देवताके मंत्रमें अग्निका उल्लेख पाया जाता है । अतः केवल लिङ्ग-ज्ञान दैवत-ज्ञानका साधन नहीं, निरुक्त-ज्ञानकी भी आवश्यकता है ।

(२) निघण्टुकमिदं देवता-नाम, प्राधान्येनेदमिति ॥ (निरु. १।६।२०)

निरुक्तमें देवता-नाम दो प्रकारके हैं, नैघण्टुक और प्राधान्य ।

यद्यन्यदैवते मन्त्रे निपतति, नैघण्टुकं तत् ॥ (निरु. १।६।२०)

यदि मन्त्र अन्य देवताके मन्त्र में आ पड़ता है वह नैघण्टुक कहलाता है ।

यानि नामानि प्राधान्यस्तुतीनां देवतानां, तदुपरिष्ठाद् व्याख्या-
यानि नैघण्टुकानि नैगमानीह । (निरु. १।६।२०)

और जो नाम प्राधान्य-स्तुतिवाले देवताओंके हैं उनका नाम दैवत है । उनको हम आगे कहेंगे । यहाँ नैघण्टुक और नैगम नाम कहते हैं, उनकी व्याख्या करते हैं ।

उपर्युक्त समग्र वाक्योंसे यह प्रतीत होता है कि निघण्टुशास्त्र में जितने नाम पढ़े गये हैं वे मुख्यतः देवता-नाम हैं । तथा निघण्टु और निरुक्त हमें देवता निर्णय सम्बन्धमें कुछ न कुछ बता सकते हैं ।

दैवता-ज्ञान दुरुह है । इस विषयमें निरुक्तकार यास्क कहते हैं—

शाकपूणिः संकल्पयाञ्चके, सर्वा देवता जाना-
मीति । तस्मै देवतोभयलिङ्गा प्रादुर्बभूव । तां न
जज्ञे । तां पप्रच्छ, विविदिषाणि त्वेति ॥

(निरु. २।२।८)

शाकपूणि आचार्यके मनमें अहंकार उत्पन्न हुआ और उन्होंने विचारा कि 'मैं सब देवताएँ जानता हूँ ।' उनके आगे एक 'उभय-लिङ्ग देवता' आ खड़ी हुई । उसको वे नहीं जान सके । उन्होंने उसे पूछा 'मैं तुझे जानना चाहता हूँ ।'

हमें वेदकी देवताओंका विचार करना है क्योंकि वे ही संसारमें कार्य कर रही हैं परन्तु वे शाकपूणि-जैसे नैरुक्ताचार्य के लिये भी दुर्ज्ञेय हैं ।

यास्क महर्षिने देवता-सम्बन्धमें जो कुछ लिखा है, उसका सार यह है— (निरुक्त । दैवत-काण्ड)

अथातो दैवतम् । तद् यानि नामानि प्राधा-
न्यस्तुतीनां देवतानां तद् दैवतमित्याचक्षते ॥

अब यहाँसे आगे दैवत प्रकरण चलेगा । जो नाम प्राधान्य स्तुतिवाली देवताओंके हैं उन्हींका एक नाम दैवत है । ऐसा आचार्य लोग कहते हैं । मंत्रोंकी देवताएँ प्रधान और अप्रधान दो प्रकारकी हैं । और वे प्रधान और अप्रधानरूपसे एक मंत्रमें भी स्तुत होती हैं ।

सैषा देवतोपपरीक्षा । यत्काम ऋषिर्यस्यां
देवतायामार्थपत्यमिच्छन् स्तुतिं प्रयुङ्क्ते,
तदैवतः स मन्त्रो भवति ।

वह यह देवता-सम्बन्धी विचार किया जाता है । जिस देवताकी कामनासे प्रेरित होकर ऋषि (स्तोता) जिस देवतामें अपनी अर्थ-सिद्धि चाहता हुआ स्तुतिका

प्रयोग करता है उस देवतावाला वह मन्त्र होता है।
तात्पर्य यह कि, स्तोता जिस देवताकी स्तुति करता है,
स्तुतिवाले मन्त्र (वाक्य) की वही देवता होती है। मन्त्रोंके
विषय देवता कहलाते हैं अतः देवता-भेदसे—

**तास्त्रिविधा ऋचः । परोक्षकृताः, प्रत्यक्षकृताः
आध्यात्मिक्यश्च ।**

ये तीन प्रकारकी ऋक् हैं। परोक्षकृता, प्रत्यक्षकृता,
और आध्यात्मिकी।

**तत्र परोक्षकृताः सर्वाभिर्नामविभक्तिभिर्यु
ज्यन्ते प्रथमपुरुषैश्चाख्यातस्य ॥ १ ॥**

‘इन्द्रो दिव इन्द्र ईशे पृथिव्याः’ (ऋ. १०।८९।१०)

‘इन्द्रमिद् गाथिनो बृहत्’ (ऋ. १।७।१)

परोक्ष रूपसे की हुई स्तुतियों, जिनमें आराध्य देव सम्मुख
नहीं होता, नामकी समग्र विभक्तियोंसे युक्त और प्रथम पुरुषकी
क्रियामें होती हैं। जैसे ‘इन्द्र ही दिव् और इन्द्र ही पृथिवीका
शासक है,’ ‘हे गायको! इन्द्रको ही बृहत् साम गाओ’
इत्यादि।

**अथ प्रत्यक्षकृता मध्यमपुरुषयोगास्त्वमिति
चैतेन सर्वनाम्ना ।**

‘त्वमिन्द्र । बलादधि’ (ऋ. १०।१५३।२)

‘वि न इन्द्र । मृधो जहि’ (ऋ. १०।१५२।४)

प्रत्यक्षकृता स्तुतियों मध्यमपुरुषमें होती हैं और त्वं, यूयम्
आदि सर्वनामसे युक्त। जैसे— ‘हे इन्द्र । तू बलसे उत्पन्न हुआ
है,’ ‘हे इन्द्र । तू हमारे शत्रुओंको मार दे’ इत्यादि।

**अथापि प्रत्यक्षकृताः स्तोतारो भवन्ति, परोक्ष-
कृतानि स्तोतव्यानि ॥**

‘मा चिदन्यद् वि शंसत’ (ऋ. ८।१।१)

परन्तु कहीं कहीं प्रत्यक्षरूपमें स्तोता प्रस्तुत होते हैं और
स्तोतव्य परोक्ष में आ जाते हैं। जैसे ‘हे सखा लोगो! इन्द्रसे
भिन्नकी प्रशंसा मत करो।’

तात्पर्य यह कि कहीं आप सर्वत्र प्रत्यक्षकृता ऋक्को देवता
ही न समझ लें, वे स्तोताओंके लिये भी प्रयुक्त होती हैं।

**आध्यात्मिक्यश्च उत्तमपुरुषयोगाः । अहमिति
चैतेन सर्वनाम्ना । यथैतदिन्द्रो वैकुण्ठी, लवसूक्तं,
वागामृणीयमिति ।**

आध्यात्मिकी स्तुतियों उत्तमपुरुषमें और अहं (मैं) इस
सर्वनामसे युक्त। इनके उदाहरण— इन्द्र, वैकुण्ठ, लव और
वागामृणीय सूक्त हैं।

निरुक्तकारने मन्त्रोंका वर्गीकरण करके वेद-वर्णित देवताओंका
ज्ञान सरल बना दिया है।

**अपि ह्यदेवता देवतावत्स्तूयन्ते, यथाश्वप्रभृती-
न्योषधिपर्यन्तानि ॥ ४ ॥**

और अदेवताएं भी देवता-सदृश स्तुति प्राप्त करती हैं।
जैसे— घोड़ेसे लेकर ओषधि-पर्यन्त पदार्थ।

अतः देवताविषयक विचार करनेमें, स्तुतिके कारण, इन्हें
देवता नहीं मान लेना चाहिये।

माहाभाग्याद् देवताया एक आत्मा बहुधा स्तूयते ।

कहीं कहीं ऐश्वर्याधिक्यके कारण एक ही देवता बहुत नाम
और कार्यसे स्तुति प्राप्त करती है। अर्थात् एक होने पर भी
अनेक नाम और अनेक कार्य उसके बताये जाते हैं वास्तवमें
उसका आत्मा (शरीर) अनेक नहीं होता। ऐसे स्थलोंपर नाम
और कार्य भिन्न होनेसे उन्हें अनेक देवता नहीं मान लेना चाहिये।

एकस्याऽऽत्मनोऽन्ये देवाः प्रत्यङ्गानि भवन्ति ।

कहीं-कहीं एक शरीरवाली देवताके अनेक देव प्रत्यङ्ग बन
कर आते हैं। अर्थात् भिन्न होने पर भी शरीरके अङ्ग-समान
वर्णित होते हैं।

ऐसे स्थलोंपर एकत्ववादसे देवोंके अनेकत्वमें बाधा नहीं
पड़ती।

तिस्र एव देवता इति नैरुक्ताः । अग्निः पृथिवी-

स्थानो, वायुर्वेन्द्रो वा अन्तरिक्षस्थानः सूर्यो युस्थानः ॥

तीन ही देवताएँ हैं ऐसा निरुक्त-मतानुयायी मानते हैं।

अग्नि पृथिवी स्थानमें, वायु वा इन्द्र अन्तरिक्ष स्थानमें, सूर्य
यु-स्थानमें।

तासां महाभाग्याद् एकैकस्या अपि बहूनि नाम-

धेयानि भवन्ति । अपि वा कर्म-पृथक्त्वात् । यथा-

होताऽध्वर्युर्व्रह्मोद्गाता- इत्यपि एकस्य सतः ।

उन तीनोंके ऐश्वर्यके कारण, एक एक देवताके बहुत नाम
होते हैं। अथवा कर्मवैभिन्न्यसे अनेक नाम पड़ते हैं जैसे एक

होने पर भी कार्यभेदसे वही मनुष्य कभी होता, कभी अश्व
और कभी ब्रह्मा या उद्गाता भी कहलाता है।

अथाकारचिन्तनं देवतानाम् ।

अब देवताओंके आकारका विचार करेंगे, वे मनुष्यसदृश हैं
अथवा मनुष्यसे भिन्न आकारवाली ?

पुरुष-विधाः स्युरित्येकम् । चेतनावद् हि स्तुतयो

भवन्ति, तथाऽभिधानानि ।

मनुष्य-सदृश शरीर और ज्ञानवाली हैं ऐसा एक मत है।

क्योंकि उनकी स्तुतियाँ चेतन प्राणियोंके समान हैं और नाम भी।

देवताओंका

वप्रभृती-

करती हैं।

कारण, इन्हें

या स्तुते।

ता बहुत नाम

होने पर भी

ते हैं वास्तवमें

स्थलोंपर नाम

लेना चाहिये।

भवन्ति।

प्रत्यङ्ग बन

अज्ञ-समान

में बाधा नहीं

पृथिवी-

गुस्थानः ॥

मानते हैं।

यानमें, सूर्य

नाम-

त। यथा-

सतः।

के बहुत नाम

हैं जैसे एक

कभी अर्चु

मनुष्यसदृश हैं

स्तुतयो

एक मत है।

और नाम भी।

सर्वादि चेतनके जैसे गुण-कर्म होते हैं वैसे इन देवताओंके भी अतः ये भी मनुष्य-सदृश देहवाली हैं।

अपुरुष-विद्याः स्युरित्यपरम् । अपि तु यद् दृश्यते ।

अपुरुषविद्यं तत् । तद्यथा-अग्निर्वायुरादित्यः पृथिवी चन्द्रमा इति ।

'पुरुष-भिन्न आकारवाली हैं' ऐसा दूसरा मत है। क्योंकि

जो कुछ दीखता है वह पुरुष (मनुष्य) से भिन्न आकृतिवाला

है अग्नि, वायु, आदित्य (सूर्य), पृथिवी और चन्द्रमा ।

अपि वा उभय-विद्याः स्युः । अपि वा पुरुष-विद्याना-

मेव सतां कर्मात्मान एते स्युः । यथा यज्ञो यजमानस्य ।

अथवा दोनों प्रकारकी हैं। अथवा पुरुष-सदृश मानें तो

यज्ञो अचेतन देवताओंको चेतन देवताओंका कर्म मान लेंगे।

यज्ञो भी देवता और यजमान भी देवता हों तो यज्ञ यज-

मानका कर्म माना जाता है। इस प्रकार माननेमें कोई दोष

स्थित नहीं होगा।

अतः एव देवता इत्युक्तं पुरस्तात् । तासां भक्तिसाह-

चर्यं व्याख्यास्यामः ।

तब ही देवता हैं ऐसा पहले कह चुके हैं। उनके भक्ति

साहचर्य कहेंगे।

अथैतान्यादित्यभक्तीनि । अयं लोकः, प्रातःसवनं,

वर्षा, गायत्री, त्रिवृत्-स्तोमो, रथन्तर साम । ये च

देवगणाः समाप्ताः प्रथमे स्थाने । अग्रायी-

पृथिवी-इला इति स्त्रियः । अथाऽस्य कर्म, वहनं च हविषां,

आवाहनं च देवतानां, यच्च किञ्चिद् दार्ष्टिं विषयिकं

अग्निर्भवति तत् । अथास्य संस्तविका देवा इन्द्रः,

सोमो, वरुणः, पर्जन्यः, ऋतवः ।

अग्नि के भक्तिनाम कहते हैं। पृथिवी ही इसका लोक,

सवन ही सवन, वसन्त ही ऋतु, गायत्री ही छन्द, त्रिवृत्

स्तोम, रथन्तर ही इसका साम है। पृथिवी स्थानमें पठित

हो इसके साथी हैं। अग्रायी, पृथिवी और इला ये

हविःका वहन, देवताओंका आवाहन और जो कुछ

आता है वह सब अग्निका कर्म। और इन्द्र, सोम, वरुण,

और ऋतु ये इसके साथ स्तोतव्य (स्तुति-भागी) देव हैं।

अथैतान्द्रभक्तीनि । अन्तरिक्षलोको, माध्यन्दिनं

सवनं, प्रीष्मच्छिष्टम्, पञ्चदश स्तोमो, बृहत् साम । ये

देवगणाः समाप्ताः मध्यमे स्थाने । याश्च

अथाऽस्य कर्म, रसाऽनुप्रदानं, वृत्रवधः, या च का

देवैः (विश्वे देवा)

च बलकृतिरिन्द्रकर्मैव तत् । अथाऽस्य संस्तविका देवाः ।

अग्निः, सोमो, वरुणः, पूषा, बृहस्पतिर्ब्रह्मण-

स्पतिः-पर्वतः, कुत्सो-विष्णुर्वायुः ।

ये इन्द्रभक्ति नाम हैं जो इन्द्रके साथ पढ़े जाते हैं। अन्त-

रिक्ष ही लोक, माध्यन्दिन ही सवन, प्रीष्म ऋतु, त्रिष्टुप् छन्दः,

पञ्चदश स्तोम, बृहत् ही साम । मध्यम स्थानमें पठित देवगण

ही साथी। मध्यम स्थानमें पठित स्त्रियाँ ही इसकी स्त्रियाँ।

रसका देना, वृत्रका वध और जो कुछ बलका काम है वह

इन्द्रका कर्म। और अग्नि, सोम, वरुण, पूषा, बृहस्पति,

ब्रह्मणस्पति, पर्वत, कुत्स, विष्णु और वायु ये देव इन्द्रके साथ

स्तुति प्राप्त करनेवाले हैं।

अथैतान्यादित्यभक्तीनि । असौ लोकः, तृतीयसवनं,

वर्षा, जगती, सप्तदशः स्तोमो, वैरूपं साम । ये च देव-

गणाः समाप्ताः उत्तमे स्थाने । याश्च स्त्रियः ।

अथाऽस्य कर्म, रसाऽऽदानं, रश्मिभिश्च रसधारणं, यच्च

किञ्चित् प्रवह्नितां-आदित्यकर्मैव तत् । चन्द्रमसा,

वायुना, संवत्सरेण- इति संस्तवः ।

ये आदित्यसम्बन्धी नाम हैं। यौ लोक, तृतीय-सवन ही

सवन, वर्षा ऋतु, जगती छन्दः, सप्तदश स्तोम, वैरूप साम ।

यु-स्थानी देवगण साथी और वहाँ पढ़ी गई स्त्रियाँ स्त्रियाँ हैं।

रसका आकर्षण करना, किरणोंसे रसका धारण तथा जो कुछ गुप्त

(अकथित) कर्म है वह इसका कर्म है। चन्द्रमा वायु और

संवत्सरके साथ इसका स्तवन होता है।

एतेष्वेव स्थाने व्यूहेषु- ऋतुछन्दःस्तोम- पृष्ठस्य

भक्तिशेषमनुकल्पयति ।

इन तीन स्थानोंमें ही ऋतु, छन्दः, स्तोम और पृष्ठ (साम)

की शेष कल्पनाएँ कर लेनी चाहिये।

यास्क महर्षिने तीन स्थानोंके तीन व्यूह बनाये हैं और वे

समग्र देवता, छन्द, ऋतु आदिको उन्हींमें बाँट देना चाहते

हैं। यह क्रम उनका अपना नहीं, वेदसे लिया हुआ है। प्रमाण

के लिए दो एक मन्त्र उद्धृत करता हूँ।

(१) वसवस्त्वा कृष्वन्तु गायत्रेण छन्दसाऽत्रिरखद्-
रुद्रास्त्वा कृष्वन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसा ... आदित्यास्त्वा

कृष्वन्तु जागतेन छन्दसा ... ॥ (यजु० ११।५८)

इस मंत्रमें वसु रुद्र और आदित्योंके साथ गायत्री, त्रिष्टुप्

और जगतीका सम्बन्ध स्पष्ट है। ये देवगण क्रमसे पृथिवी,

अन्तरिक्ष और यौ-लोकके हैं, अतः इन लोकोंके साथ भी इन

छन्दोंका सम्बन्ध है।

अग्नेर्भागोऽसि, दीक्षाया आधिपत्यं, ब्रह्म स्पृतं, त्रिवृत्
स्तोम इन्द्रस्य भागोऽसि, विष्णोराधिपत्यं क्षत्रं स्पृतं
पञ्चदशः स्तोमो, नृचक्षसां भागोऽसि, धातुराधि-
पत्यं, जनित्रं स्पृतं, सप्तदशः स्तोमा ००० ॥

(यजु० १४।२४)

यहां अग्नि, इन्द्र और नृचक्षस् (आदित्यों) के साथ त्रिवृत्, पञ्चदश और सप्तदश स्तोमोंका सम्बन्ध स्पष्ट है। प्रथम मंत्रमें वसुका अर्थ अग्नि, रुद्रका अर्थ इन्द्र और आदित्यका अर्थ सूर्य लें तो दोनों मंत्र निरुक्तके तीन व्यूहोंको बहुत कुछ प्रमाणित कर देते हैं। इसी प्रकार ऋतु और पृष्ठसम्बन्धी मंत्र भी बहुत हैं जो प्रयोजन न होनेसे यहां नहीं लिखे जाते।

अन्तमें देवत-काण्डकी भूमिकाका उपसंहार करते हुए ऋषि लिखते हैं—

इतीमा देवता अनुकान्ताः ॥ (निरु० ७।३।१३)

इस प्रकार ये देवताएँ कह दी गईं।

निरुक्तकारने सम्पूर्ण देवताओंकी व्याख्या अपने ढंगसे की है। उन्होंने सारे देवोंको तीन स्थानोंमें बाँट दिया है यथा—

अग्निः पृथिवीस्थानः । तं प्रथमं व्याख्यास्यामः ।
(निरु० ७।४)

अग्नि पृथिवी-स्थानी देव है, उसकी प्रथम व्याख्या करेंगे। परन्तु वेदमें अग्नि शब्द केवल पृथिवीस्थ अग्निका ही वाचक नहीं, अतः उन्हें कहना पड़ा।

स न मन्येताऽयमेवाऽग्निरिति । अप्येते उत्तरे ज्योतिषी
अग्नी उच्येते ॥ (निरु० ७।४)

कोई ऐसा न मान ले कि यह पृथिवीस्थ अग्नि ही अग्नि है, मध्यम और उत्तम स्थानवाले देव भी अग्नि कहलाते हैं।

अन्तमें कहा—

यस्तु सूक्तं भजते, यस्मै हविर्निरुप्यतेऽयमेव सोऽग्निः ।

निपातमेवैते उत्तरे ज्योतिषी अनेन नामधेयेन भजते ॥

(निरु० ७।४)

जो अग्नि सूक्तका सेवन करता, जिसके निमित्त हवि दिया जाता है वह यही पृथिवीस्थ अग्नि है। अन्तरिक्ष और बु-लोकस्थ ज्योतिषी गौरवरूपसे अग्नि नाम धारण करती हैं।

अग्निका दूसरा नाम 'जातवेदाः' है। उसके विषयमें भी ऐसा ही कहते हैं—

स न मन्येताऽयमेवाऽग्निरिति । अप्येते उत्तरे ज्योतिषी
जातवेदसी उच्येते ।...यस्तु सूक्तं भजते यस्मै हविर्निरु-
प्यतेऽयमेव सोऽग्निर्जातवेदाः । निपातमेवैते उत्तरे
ज्योतिषी एतेन नामधेयेन भजते ॥ (निरु० ७।५)

अर्थात् अन्तारिक्षस्थ और बुलोकस्थ देव भी जातवेदाः हैं, परन्तु मुख्यतया जातवेदाः यह अग्नि ही है।

वैश्वानर, द्रविणोदा आदि नामोंपर भी यास्क ऋषिका ऐसा ही मत है। यास्कके मतसे जातवेदाः वैश्वानर आदि नामवाले भिन्न देव नहीं हैं, पृथिवी पर इस अग्निके ही ये नाम हैं, इनको भिन्न-भिन्न देव नहीं मानना चाहिये। अग्नि और पृथिवीसे सम्बद्ध नामोंकी व्याख्या करके मध्यम स्थानकी ओर चलते हैं—

अथ मध्यस्थाना देवताः । तासां वायुः

प्रथमगामी भवति ।

(निरु० १०।१)

अब मध्यस्थानी देवोंकी व्याख्या करते हैं। उनमें वायु प्रथम है।

इस प्रकरणके देखनेसे पता चलता है कि इन्द्र मित्र वरुण रुद्रादि नाम वायुके ही हैं। मरुत्, रुद्र, ऋभु, पितर आदि गणनाम वायु-समूहके प्रतीत होते हैं। आदिति, सरमा, सरस्वती, इन्द्राणी आदि स्त्रियोंके नाम मध्यस्थानमें होनेवाली वाणी है। उषा आदि प्रत्यक्ष स्त्रीवाचक नामोंको छोड़कर शेष नाम उस वाणी (गर्जना) के ही हैं।

मध्यस्थानके पश्चात् महर्षि युस्थानकी ओर बढ़ते हैं—

**अथातो युस्थाना देवताः । तासामश्विनौ प्रथमा-
ऽऽगामिनौ भवतः ॥**

(निरु० १२।१)

अब हम यु-स्थानी देवताओंका वर्णन करेंगे। उनमें अश्विनौ प्रथम श्रेणीमें आनेवाले हैं।

ये अश्विनौ कौन हैं ? यह प्रश्न जगत्के सम्मुख आज भी जटिल है। यास्कके मतमें मध्यम और उत्तम दोनों स्थानोंके देव मिलकर जिनमें उत्तम स्थानके देव आदित्यकी प्रधानता रहती है, अश्विनौ कहलाते हैं।

तयोः काल ऊर्ध्वमधरात्रात् प्रकाशीभावस्यानुविष्टमम्
अनुत्तमो भागो हि मध्यमः । ज्योतिर्भाग
आदित्यः ।

(निरु० १२।१)

उनका समय आधी रातके पश्चात् प्रकाशके प्रवेश होनेपर आरम्भ होता है। उसका अन्धकारयुक्त भाग मध्यम देव और प्रकाशमय भाग आदित्य है।

वायु और आदित्य अश्विनौ हैं। वास्तवमें आधी रातके पश्चात् सूर्य प्राची दिक्में अपनी आभा दर्शाने लगता है। सूर्य उस अवस्थामें अश्विनौ नामसे प्रसिद्ध होता है।

सविता, भग, सूर्य, विष्णु आदि नाम उस आदित्य (सूर्य) के ही हैं। ये नाम काल और कार्यके भेदसे पड़े हैं। उषा, सूर्या, वृषाकपायी, सरण्यू नाम आदित्यके प्रकाश (आभा) के हैं।

इन पदार्थोंके ये नाम कैसे पड़े हैं और वेदके किन मंत्रोंके

जातेवेदाः हैं,

ऋषिका ऐषा

दि नामवाले

राम हैं, इनको

और पृथिवीसे

चलते हैं—

वायुः

(१०११)

वायु प्रथम है।

मित्र वरुण

पितर आदि

मा, सरस्वती,

ली वाणी है।

नाम उस

हते हैं—

प्रथम—

(१२११)

उनमें अश्विनौ

आज भी

दोनों स्थानोंके

प्रधानता

विष्टम्भ

तिर्माग

(१२११)

प्रवेश होनेपर

यम देव और

आधी रातके

लगता है। सूर्य

आदित्य (सूर्य)

हैं। उषा,

(आमा) के हैं।

किन् मंत्रोंके

विचार पर ऐसा अर्थ करना पड़ा है, यह विस्तृत व्याख्या
मित्रों ही देखिये।

गुप्तानके देवगण —

ब्रह्मातो **गुप्तानां देवगणाः** । तेषामादित्याः प्रथमा-

गामिनो भवन्ति ।

अब हम गु-स्थानी देवगणका वर्णन करेंगे उनमें आदित्य-

प्रथम आते हैं। आदित्य, सप्त-ऋषि, विश्वेदेव, साध्य,

आदि देव-गण सूर्यकी किरणोंके नाम हैं।

बड़े देवोंकी गणना तीनमें हो या अधिकमें, नैरुक्त लोग

अधिक देव माननेको उद्यत नहीं। वसु और आदित्य

अग्नि-अर्चियोंमें समाविष्ट हो जाते हैं और

गण वायु-दलमें। इस प्रकार वसु, रुद्र और आदित्योंकी

भिन्न सत्ता नहीं रहती। कई लोग विश्वे देवको सर्वे देव

उक्त उनकी आदित्य-गणके सदृश कोई संख्या नहीं मानते।

गु-स्थानी देवगणमें विश्वे देव और साध्योंकी गणना

वे आदित्यादि गणसे भिन्न गण हैं। वेदकी शैलीसे भी

प्रतीत होता है—

वसुस्त्वा धूपयन्तु गायत्रेण छन्दसाऽङ्गिरस्वद्, रुद्रा-

स्त्वा धूपयन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसाऽङ्गिरस्वद्, आदित्यास्त्वा

धूपयन्तु जागतेन छन्दसाऽङ्गिरस्वद्, विश्वे त्वा देवा

वैश्वानरा धूपयन्त्वानुष्टुभेन छन्दसाऽङ्गिरस्वदिन्द्रस्त्वा

धूपयन्तु, वरुणस्त्वा धूपयन्तु, विष्णुस्त्वा धूपयन्तु ॥

(यजु. ११।६०)

वे विश्वे देव वसु, रुद्र और आदित्यसे भिन्न हैं तथा

गणके पुत्र हैं। क्योंकि उन्हें अनेकत्र वैश्वानर कहा गया

वे सूर्यके रश्मि हों तो भी वसु रुद्र और आदित्यसे पृथक्

माने जायेंगे।

३३ की संख्या

विश्वे देव तैत्तिरीय हैं—

(१) नहि वो अस्त्यर्मको देवासो न कुमारकः ।
विश्वे सतोमहान्त इत् ॥ १ ॥

(२) इति स्तुतासो असथा रिशादसो,
ये स्य प्रयश्च त्रिंशच्च ।

मनोर्देवा यज्ञियासः ॥ २ ॥

(३) ये देवास इह स्थन विश्वे वैश्वानरा उत ।
असभ्यं शर्म सप्रयो गवेऽश्वाय यच्छत ॥ ४ ॥

(ऋ० ८।३०)

(४) ये त्रिंशति त्रयस्परौ देवासो बर्हिःसदन् ।
विद्वज्जह द्वितासनन् ॥ १ ॥

(ऋ० ८।२८)

(५) ये देवासो दिव्येकादश स्थ,

पृथिव्यामध्येकादश स्थ,

अप्सुक्षितो महिनैकादश स्थ,

ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम् ॥ (ऋ० १।१३९।११,

यजु० ७।१९)

इन मंत्रोंकी देवता विश्वे देव हैं। ये तैत्तिरीय हैं और दिव्य
अन्तरिक्ष और पृथिवीपर ग्यारह-ग्यारहकी संख्यामें रहती हैं।

अब सिद्ध हो गया कि ये विश्वे देव सम्पूर्ण देव नहीं हैं किन्तु
वसु आदिसे पृथक् ३३ की संख्यामें रहते हैं।

विश्वे देवकी संख्या ३३३९ है—

त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं त्रिंशच्च देवा नव चासपर्यन् ।

औक्षन् ष्टतैरस्तृणन् बर्हिःस्मा आदिदधोतारं न्यसादयन्त ॥

(ऋ० ३।९।९; १०।५२।६; यजु० ३३।७)

ऋ० ३।९।९ में इस मंत्रकी देवता अग्नि है, अन्यत्र विश्वे
देव देवता हैं। विचारणीय प्रश्न है कि ये विश्वे देव ३३ हैं या

३३३९ हैं अथवा विश्वेदेव ३३ हैं और सर्वे देव ३३३९

अथवा विश्वे देवका सर्वत्र सर्वे देव ही अर्थ है और वे ३३ या

३३३९ दोनोंमें हो सकते हैं। विश्वे देव ३३ हैं और वे ही

३३३९ भी, तो परस्पर विरोध आयेगा। यदि सम्पूर्ण देव

३३ की संख्यामें हैं और वे ३३३९ की संख्यामें भी, तो

विरोध है। हाँ, यदि हम विश्वे देव ३३ और सम्पूर्ण देव

३३३९ माने तो कुछ संगति लग सकती है। निरुक्तकारने

विश्वे देवाः का अर्थ 'सर्वे देवाः' किया है, परन्तु

उनके मतमें 'देवाः' यह भी गण है। यह सूर्य रश्मिका नाम

है तब 'सर्वे देवाः' विश्वे देवाः का पर्याय नाम होगा अर्थ

तो आदित्य रश्मि ही लेना पड़ेगा। वे शाकपूणि आचार्यका

मत उद्धृत करते हैं—

'यत् किंचिद् बहुदेवतं तद् वैश्वदेवानां स्थाने युज्यते ।

यदेव विश्वलिङ्गमिति शाकपूणिः ॥' (निरुक्त १२।४)

अर्थात् बहुत देवतावाला मंत्र विश्वे देवके स्थानमें पढ़ा
जाता है जब अन्य विश्वे देवयुक्त गायत्र मंत्र न मिले।

यद्यपि यास्क इसके विरोधी हैं तथापि यह सम्भव है कि
सर्वे-देवताके मंत्र विश्वे-देवताके बनाये गये हों। तब ३३३९
संख्याके मंत्र सर्वे-देवताके हैं ऐसा मानना पड़ेगा।

पुराणोंमें विश्वे देव अन्य देवोंसे पृथक् हैं। ब्राह्मणमें भी,

'रश्मयो ह्यस्य (सूर्यस्य) विश्वे देवाः' (श०

३।९।२।६) इत्यादि स्थलोंमें विश्वे देव पृथक् हैं और वे सूर्यके

रश्मि (किरण) हैं।

यह देवता-विषय बहुत गहन तथा और अधिक मननीय

है क्योंकि यह अनुसन्धान अन्तिम नहीं है।

‘विश्वे देवाः’ के मंत्रोंके संबंधमें विचार

वेदोंमें उपलब्ध देवताओंके वर्णनपरक विभिन्न सूक्त पठ लेनेसे स्पष्टतया प्रतीत होता है कि वे सभी देव असाधारण क्षमतासे युक्त होते हैं तथा वे अत्यन्त सफलतापूर्वक जनताकी लगातार सेवा करते हुए लोगोंकी अटल, अडिग एवं अविचल भक्ति और उपासना प्राप्त करनेमें बड़ी स्पृहणीय और विराट् सफलता प्राप्त कर लेते हैं। वेद मन्त्रोंमें अतीव लोकप्रिय नेता, कार्यकर्ता, स्वयंसेवक या प्रभुका बड़ा ही प्रभावोत्पादक एवं सजीव चित्रण देखने मिलता है। जनता एवं उपासकों, भक्तों और अनुयायियोंकी रक्षा करनेका गुरुतर कार्य भार सुचारुरूपसे प्रचलित रखकर समूची बुराइयों और सारे दुश्मनों, विरोधियों एवं स्वार्थी शत्रुओंको पराभूत कर विनष्ट करने या मार भगानेसे वैदिक सुकवि और द्रष्टा ऋषि देवोंके निकटतम संपर्कमें रहनेके लिए बड़े समुत्सुक दीख पड़ते हैं और उन्हें आदर-पूर्वक समीप बुलाकर सोम आदि वस्तुओंके प्रदानसे भली-भाँति सुखागत कर उनके पराक्रमों तथा गुणोंका सुन्दर ढंगसे वर्णन करते हुए उनकी सराहना करते हैं। वेदमन्त्रोंके द्रष्टा किस भाँति देवताओंको समीप आनेके लिए निमन्त्रण देते हैं या देवोंका आवाहन करते हैं यह निम्न मन्त्रोंमें देखने योग्य है।

ओमासश्चर्षणीधृतो विश्वे देवास आ गत।

(ऋ. १।३।८)

‘ हे संरक्षणकर्ता तथा मानवोंके धारण करनेहारे सभी देवों ! इधर आओ । ’

विश्वे देवासो ... सुतमा गन्त तूर्णयः ।

(ऋ. १।३।८)

‘ हे समूचे देवों ! हमने जो सोमरस निचोड़ रखा है उसके निकट शीघ्रतापूर्वक चले आओ । ’ क्योंकि हम—

विश्वान् देवान् हवामहे । (ऋ. १।२३।१०)

‘ सभी देवोंको इधर उपस्थित रहनेके लिये बुलाते हैं । ’

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं ... अवसे ह्रमहे वयम् ।

(ऋ. १।८९।५)

‘ उस प्रभुत्व प्रस्थापित करनेवाले एवं स्थावर जंगमके अधिपति तुल्य इन्द्रको हम अपने संरक्षणार्थ बुलाते हैं । ’

... विश्वे नो देवा अवसा गमन्निह ।

(ऋ. १।८९।७)

‘ सारे देव हमारे समीप संरक्षणकी आयोजना लेकर पहुँच जायें । ’

त्रितः ... देवान् हवत ऊतये । (ऋ. १।१०।५।१७)

‘ त्रित ऋषि अपने संरक्षणार्थ देवोंको बुलाता है । ’

त आदित्या आ गता सर्वतातये भूत देवा वृत्र-तूर्येषु शंभुवः ॥

(ऋ. १।१०।६।२)

‘ वे विख्यात अदितिके पुत्रों । सबके द्वारा विस्तारित कार्यके लिए आ पहुँचो और हे द्योतमान एवं देवतारूपी ! हमारे शत्रु-वधोंके कार्योंमें हितकारक बनो । ’

इन्द्रं कुत्सो वृत्रहणं ... ऋषिरव्हदूतये ।

(ऋ. १।१०।६।६)

‘ कुत्स ऋषिने वृत्रके वध करनेहारे इन्द्रको अपने संरक्षणके लिए बुलाया । ’

उप नो देवा अवसा गमन्त्वङ्गिरसां सामभिः

स्तूयमानाः ।

(ऋ. १।१०।७।२)

‘ अंगिरसोंके सामोंसे प्रशंसित होते हुए देव हमारे पास संरक्षण योजनासे युक्त हो पधारें । ’

धृतवता आदित्या ... आरे मत् कर्त ... आग ।

शृण्वतो नो ... देवा भद्रस्य विद्वां अवसे हुवे वा ॥

(ऋ. २।२९।११)

‘ हे व्रतधारी आदित्यो ! अपराध, दोषको मुझसे दूर कर दो और मैं तुम्हारी की हुई अच्छी बातको जानता हुआ सुनते हुए तुम देवतारूपी अदितिके पुत्रोंको संरक्षण कार्यको अच्छी तरह निभानेके लिए इधर बुलाता हूँ । ’

विश्वे देवास आगत शृणुता म ह्रमं हवम् ।

एदं बर्हिर्नि षीदत ॥ (ऋ. २।४१।१३, ६।५३।७)

‘ सारे देवों ! इधर आओ, मेरी इस पुकारको सुन लो, और इस कुशासन पर बैठ जाइए । ’

... देवासः पूषरातयः । विश्वे मम धृता हवम् ।

(ऋ. २।४१।१५)

‘सभी देव जिनकी दें पृथीकारक होती हैं मेरी इस
जुआको चुन लें।’

सूकेभिर्वो वचोमिर्देवजुष्टैरिन्द्रा न्वग्नी अवसे
हुवध्वे ॥ (ऋ. ५।४५।४)

‘हे इन्द्र एवं अग्नि ! तुम्हें मैं देवोंसे स्वीकृत तथा भली-
भाँति कहे वचनोंसे संरक्षणके लिए बुलाता हूँ।’

इन उपर्युक्त मन्त्रोंसे वैदिक ऋषियोंके अन्तस्तलमें देवोंके
अस्थिती लालसा किस भाँति जागृत थी सो अत्यन्त स्पष्ट

होता । तथा और भी देखिए—

सुगावो देवाः सदना अकर्म य आजग्मेदः
सवनं जुषाणाः । भरमाणा वहमाना हवीः

परस्मे घत्त वसवो वसूनि ॥ (वा. यजु. ८।१८)

‘हे देवतागण । आपके लिए हम सुखदायक घर बना चुके
हैं। तुम इस सवनका सेवन या स्वीकार करते हुए इधर आने

लगे, सबको बसानेवाले देवो ! हविर्भागोंको भरपूर देते हुए
तुम्हें इष्ट स्थानमें पहुँचाते हुए हमारे लिए धन भाण्डारोंको

संग्रह कर दो।’

आ नो विश्वे सजोषसो देवासो गन्तनोप नः ।

वसवो रुद्रा अवसे न आगमञ्छृण्वन्तु मरुतो
हवम् ॥ (ऋ. ८।५४) [वाल. ६] ३

‘सभी देव मिलजुलकर हमारे लिए समीप आ जायँ, वसु-
देवों हमारे संरक्षणके लिए आवें तथा मरुत्वीर भी हमारी

रक्षा कर लें।’

ययमिदं वः सुदानवः क्षियन्तो यान्तो अध्वन्ना ।

देवा वृधाय ह्रमहे ॥ (ऋ. ८।८३।६)

‘हे अच्छे दान शूर देवो ! हम तो घरमें रहते हुए या मार्ग-
परसे आगमन करते हुए तुम्हें ही वृद्धिका कार्य करनेके लिए

इस प्रकार देवोंको बुलाकर वैदिक मन्त्रोंके दर्शन करनेहारे
निम्नस्थानी कवि उनसे वैसी प्रार्थना करते हैं तथा अपनी

अभिप्रेक्षाओंको किस तरह उनके सम्मुख पेश करते हैं यह निम्न
विशेष देखने योग्य है—

विश्विस्पृशं यज्ञमस्माकमश्विना जीराध्वरं
रुणुतं सुममिष्टये ।

‘हे अश्विनो ! तुम दोनों हमारे यज्ञको बुरोको छूनेवाला
आति उच्च कोटिका तथा शीघ्र हिसारहित होनेवाला बना

दो और हमारा इच्छित सिद्ध हो जाय इस हेतु सुखका निर्माण
कर डालो।’

उपह्वये सुहवं मारुतं गणं पावकमृष्वं सख्याय
शंभुवम् । रायस्पोषं सौश्रवसाय धीमहि... ॥

(ऋ. १०।३६।७)

‘मैं पवित्रतामय वायुमंडलका सृजन करनेहारे एवं तेजस्वी
वीर मरुतोंके दलको अपने निकट बुलाता हूँ ताकि मित्रताके

लिए वह सुखदायक प्रतीत होवे और हम उत्कृष्ट कर्ति पानेके
लिए धनसंपदाको बढ़ानेके ढंग सोचते हैं।’

यद् वो देवा ईमहे तद् ददातन ।

जैत्रं क्रतुं रयिमद् वीरवद्यशस्तद् देवानामवो

अद्या वृणीमहे । (ऋ. १०।३६।१०)

‘हे देवो ! हम तुमसे जो मांगते हैं उसे दे डालो; वीरतायुक्त,
धनसंपन्न यश एवं जयिष्णु कार्यक्रम हमें मिल जाय; अतः आज

हम देवोंके उस संरक्षणके ढंगको अपने लिए चुन लेते हैं।’

ये सवितुः सत्यसवस्य विश्वे मित्रस्य व्रते
वरुणस्य देवाः । ते सौभगं वीरवद् गोमदप्रो

दधातन द्रविणं चित्रमस्मे ॥ (ऋ. १०।३६।१३)

‘जो सारे देव सत्यके प्रेरणकर्ता सविता एवं मित्र तथा
वरुणके निर्दिष्ट, व्रतके अनुकूल कार्य करते हैं वे हमें वीरता

पूर्ण, गोधन संकुल अच्छे ऐश्वर्यवाले कार्य और अनूठा धन
दे डालें।’

यूयं हि ष्ठा सुदानव इन्द्रज्येष्ठा अभिद्यवः ।

कर्ता नो अध्वन्ना सुगं गोपा अमा ॥ (ऋ. ६।५१।१५)

‘हे देवो ! तुम तो सचमुच चतुर्दिक् द्योतमान एवं अच्छे
दान शूर हो तथा तुममें इन्द्र प्रमुख है; मार्गपरसे यात्रा करते

समय मिलजुलकर रक्षा करनेवाले तुम देव हमारे लिए सुखका
प्रबन्ध कर डालो।’

आत्मरक्षाका भाव मानवमें किस तीव्रतासे उमड़ पड़ता है
यह निम्न मंत्रमें दीख पड़ता है—

अवन्तु मामुषसो जायमाना अवन्तु मा सिन्धवः
पिन्वमानाः । अवन्तु मा पर्वतासो ध्रुवासोऽवन्तु

मा पितरो देवहूतो ॥ (ऋ. ६।५२।४)

‘प्रतिदिन उत्पन्न होते हुए उषःकाल मुझको बचाएँ प्रति-
पल जलसे पूर्ण होती हुई नदियाँ मेरी रक्षा करें, अटल रूपसे

खडे पहाड मेरा संरक्षण करें तथा देवोंको बुलानेमें पितर अपने संरक्षणकी छत्रछायामें सुझें रख दें ।'

द्यावा नो अद्य पृथिवी अनागसो मही त्रायेतां
सुविताय मातरा । उषा उच्छन्त्यप बाधता-
मघं स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ॥ (ऋ. १०।३५)

'आज हमें दोष रहित, महान् एवं मातृतुल्य द्यावापृथिवी सुरक्षित रखें ताकि हमारी भलाई हो जाए; उदित होती हुई उषा पापको दूर कर दे और हम चाहते हैं कि भलीभाँति धनकने-वाला अग्नि हितकारक बने ।'

नू देवासो वरिवः कर्तना नो भूत नो विश्वे-
ऽवसे सजोपाः । समस्मे इपं वसवो ददीरन्
यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ (ऋ. ७।४८।४)

'हे देवो ! हमारे लिए तुम धनसंपदाका निर्माण करो, और तुम सभी मिलकर हमारी रक्षा करनेके लिए कटिबद्ध रहो; हे वसुओ ! हमें तुम अन्नसामग्री भलीभाँति देते रहो और कल्याण कारण साधनोंसे हमेशा हमारे संरक्षणका गुरुतर कार्यभार संपन्न करो ।'

विश्वे देवा मम शृण्वन्तु यज्ञियाः ... ।

मा वो वचांसि परिचक्ष्याणि वोचं सुम्नेषु
इत् वो अन्तमा मदेम ॥ (ऋ. ६।५२।१४)

'मेरे कथनको सभी यज्ञमें बैठने योग्य देव सुनलें; मैं कभी निन्दनीय वचन तुम्हारे लिए न कहूँ और तुम्हारे किये सुख-कारक प्रबंधोंमें हम तुम्हारे अत्यन्त निकटवर्ती होकर आनन्दित बनें ।'

स्तीर्णे बर्हिषि समिधाने अग्नौ सूक्तेन महा
नमसा विवासे । अस्मिन् नो अद्य विदधे
यजत्रा विश्वे देवा हविषि मादयध्वम् ॥

(ऋ. ६।५२।१७)

'दर्भमय आसनके बिछानेपर और अग्निके भलीभाँति प्रदीप्त होनेपर बड़े सूक्तसे एवं नमनसे मैं उपासन करता हूँ । आज हमारे इस यज्ञमें उपस्थित होकर सारे तुम पूजनीय देव हमारे दिये हुए इस हविके परिणामस्वरूप हर्षित बनें ।'

इदं देवा शृणुत ये यज्ञिया स्थ... पाशे स बद्धो
दुरिते नि युज्यताम् यो अस्माकं मन इदं
दिनस्ति ॥ (अथर्व. २।१२।२)

'हे देवो ! जो तुम यजनीय हो तो इस मेरे वचनको सुन लो; जो कोई हमारे इस मनको हिसित करे अर्थात् कष्ट दे वह फंदमें बँधा जाकर बुराईमें गिर जाय ।'

देवोंका निम्नलिखित वर्णन देखने योग्य है—

नहि वो अस्त्यर्भको देवासो न कुमारकः ।
विश्वे सन्तो महान्त इत् ॥ (ऋ. ८।३०।१)

'हे देवो ! तुममें कोई न छोटा शिशु है न बालक अपितु सारे ही निश्चयपूर्वक बड़े हैं ।'

यथा वशन्ति देवास्तथेदसत् तदेषां नकिरा
मिनत् । अरावा चन मर्त्यः ॥ (ऋ. ९।१८।४)

'जैसे देव इच्छा करते हैं वैसे ही निश्चयपूर्वक बन जाता है । उनके इस सामर्थ्यको न कोई विनष्ट कर पाता है, कृपण मानव भी इनके सामने झुक जाते हैं ।'

सदा देवा अरेपसः । (सामवेद ४४२)

'देव हमेशा निर्दोष रहते हैं ।'

इसी कारण इन देवोंकी मनःपूर्वक प्रशंसा की जाती है । देवोंके संरक्षणका परिणाम निम्न मंत्रमें बताया है—

ऋते स विन्दते युधः सुगेभिर्यात्यध्वनः ।
अर्यमा मित्रो वरुणः सरातयो यं प्रायन्ते स
जोषसः ॥ (ऋ. ८।२७।१७)

'जिसकी रक्षाका भार हाथमें दान लेकर मित्र, वरुण एवं अर्यमा मिलकर उठाते हैं वह बिना युद्ध ठाने धन पाता है और सुगम साधनोंसे मार्गका अन्त पा लेता है अर्थात् मार्गपर यातायात करनेमें उसे तनिक भी कठिनाई नहीं प्रतीत होती है ।' इसी कारण उनकी सराहना की जाती है ।

अस्ति हि वः सजात्यं रिशादसो देवासो अस्या-
प्यम् । प्र ण पूर्वस्मै सुविताय वोचत मक्षू सुज्ञाय
नव्यसे ॥ (ऋ. ८।२७।१०)

'हे शत्रुविध्वंसक देवो ! तुममें सचसुच बंधुता एवं सजाती-यताके भाव विद्यमान हैं इसलिए अब हमसे शीघ्र भली भाँति कहदो कि पूर्वकालीन भलाई एवं नये ढंगके सुखको पानेके लिए हम क्या करें ।'

वि नो देवासो अद्रुहोऽछिद्रं शर्म यच्छत ।
न यद् दुराद्वसवो नू चिदन्तितो वरूथमादध्वन्ति ॥ (ऋ. ८।१७।१२)

‘हो न करनेहारे एवं सबको बसानेवाले हे देवो ! हमें
वचनको सुन
तु कष्ट दे वह
नहीं दूरसे या समीपसे ही आक्रान्त करनेका साहस कर
ले।’

देवदेवं वोऽवसे देवदेवमभिष्टये । देवदेवं हुवेम
वाजसातये गृणन्तो देव्या धिया ॥ (ऋ. ८।२७।१३)

‘अपनी रक्षाके लिए तुममेंसे प्रत्येक देवको हम बुलाते हैं,
अपनी इच्छा पूर्ण हो इसलिए हर एक देवको निमंत्रित करते हैं
और योतमान बुद्धिशक्तिसे निष्पादित स्तोत्रोंमें प्रशंसा करते
हैं। अन्तर्गत हो इस हेतुसे प्रति देवको हम समीप आनेके
लिए विनति करते रहें।’

देवा सो हि ष्मा मनवे समन्यवो विश्वे साकं
सरातयः । ते नो अद्य ते अपरं तुचे तु नो
भवन्तु वरिवो विदः ॥ (ऋ. ८।२७।१४)

‘सारे देव तो अपने साथ देन लेकर और एक विचारवाले
और तथा एकत्रित रूपसे मनुको दान देते हैं और हमारी
रक्षा है कि वे आज हमारे लिए और हमारी सन्तानके लिए
अपने धनके दाता बनें।’

‘विश्वे देवा’ सूक्तोंके स्मरणीय वाक्य

वैदिक कवि विभिन्न देवोंकी स्तुति करते हुए उनसे क्या
आशा रखते हैं तथा उनके सम्मुख किस तरह अपनी आव-
श्यकताओंका विवरण करते हुए अपनी महत्वपूर्ण एवं शाश्वतिक
आशा प्रस्तुत करते हैं, इस विषयपर निम्न मंत्रांशोंसे पर्याप्त
जान पड़ता है और साथ ही वैदिक सूक्तों एवं मंत्रोंके दर्शन-
सौन्दर्यके जीवन विषयक दृष्टिकोणको भी अत्यधिक प्रस्फुट
रूपमें बड़ी भारी सहायता मिल सकती है।

धनुओं तथा बुराईयोंको सुदूर भगाकर सुख एवं भलाईकी
प्राप्ति मानवमात्रका प्रमुख उद्देश्य है और वैदिक सूक्तोंमें
यही एक प्रबलतम झाँकी हमें देखने मिलती है। दुश्मनों
के बुराईयोंके मटियामेट होनेपर आर्थिक सुस्थितिका सुप्रबंध
आयनकारक ढंगसे करके सुदीर्घ जीवनका सुदीर्घ कालतक इष्ट-
तुल्य एवं पुत्र-पौत्रों समेत उपभोग लेना भी मानवका दूसरा
प्रमुख उद्देश्य है और इसकी भी झलक वेदमंत्रोंमें
होती है। अस्तु, वेदके ही शब्दोंमें वैदिक

ऋषियोंकी अदम्य लालसासे परिचित होनेके लिए निम्न वचनों-
की ओर ध्यान देना चाहिए।

ते असभ्यं शर्म यंसन्नमृता मर्त्येभ्यः ।

बाधमाना अप द्विषः ॥ (ऋ. १०।९०।३)

‘(ते अमृताः) वे अमरपनका उपभोग लेनेवाले देव
(मर्त्येभ्यः असभ्यं) मरणशील हम मानवोंको, (द्विषः अप
बाधमानाः) द्वेष करनेवालोंको दूर मार भगाते हुए (शर्म
यंसन्) सुखका प्रदान करें।’

ऊतये हवामहे । रथं न दुर्गात् विश्व-
स्मान्नो अंहसो निष्पवर्तन ॥ (ऋ. १।१०६।१९)

‘हम संरक्षणार्थ देवों तथा दिव्य दल बलको बुलाते हैं और
जिस प्रकार बीड़ स्थानमेंसे या दुर्गम जगहसे रथको खींच
बाहर निकालते हैं उसी तरह, हे देवो ! हमें समूचे पाप या
कष्टमेंसे पूर्णतया बाहर निकाल हमारा बेड़ा पार कर दो।’

यूयं द्वेषांसि सनुतयुयोत ... अद्या च नो
मृलयत अपरं च ॥ (ऋ. २।२९।२)

‘तुम द्वेषोंको गुप्तस्थानमें भेजकर हमसे दूर करो और आज
तथा बादमें भी सुख देते रहे।’

यूयं नो स्वस्ति दधात । (ऋ. २।२९।३)

‘देवा यूयमिदापयः स्थ ते मृलयत नाधमा-
नाय मह्यम् ... मा युष्मावत्स्वापिपु श्रमिष्म ।
(ऋ. २।२९।४)

‘तुम हमारे कल्याणका प्रबंध करो; हे देवो ! तुम ही सच-
मुच हमारे आप्त हो और ऐसे वे तुम याचना करनेवाले मुझको
सुख दे दो, क्योंकि तुम्हारे जैसे आसोंके मौजूद होनेपर हमें
थकावट न होने पाय।’

आरे पाशा आरे अघानि देवा । (ऋ. २।२९।५)

‘हे देवो ! फँदे और पाप हमसे दूर रहें।’ अर्थात् कभी
जालों तथा पापोंके चँगुलमें हम न फँस जायें।

यच्छन्तु नो मरुतः शर्म भद्रम् । (ऋ. ३।५४।२०)

‘वीर मरुत हमें कल्याणकारक सुखका प्रदान करें।’

अवन्तु नः । मरुतो मृलयन्तु नः ।

(ऋ. १।२३।१२)

‘वीर मरुत हमारी रक्षा करें और हमें सुख दे दें।’

देवा नो ... सदमित् वृधे असन् ... रक्षितारो
दिवे दिवे । (ऋ. १।८९।१)

‘प्रतिदिन रक्षाका कार्य सुचारुरूपसे चलाते हुए देव हमेशा हमारे संवर्धनार्थ चेष्टाशील रहें ।’

मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसा
गमन्निह । (ऋ. १।८९।७)

‘मननशील तथा विद्वानोंके दृष्टिकोणको साथ रखनेवाले सभी देव हमारे लिए संरक्षणकी आयोजना बनाकर इधर पधारें ।’

देवानां सख्यमुप सेदिमा वयं देवा न आयुः
प्रतिरन्तु जीवसे । (ऋ. १।८९।१२)

‘हम देवोंकी मित्रताको प्राप्त करें और हमारा जीवन अक्षुण्ण रूपसे प्रचलित रहे इसलिए देव हमारी आयुष्य रेखाको बड़ा दें ।’

... विश्वा द्वेषांसि सनुतयुयोत ... (ऋ. १०।१००।९)

‘सभी द्वेषभावोंको हमसे दूर करो ।’

आरे देवा द्वेषो अस्मद्युयोतन ... (ऋ. १०।६३।१२)

‘हे देवो ! द्वेषभावको हमसे हटा दो ।’

गोभिः ध्याम यशसो जनेष्वा ।

सदा देवास इत्या सचेमहि ॥ (ऋ. १०।६४।११)

‘हम गोधनसे युक्त होकर जनतामें यशस्वी बन जायें और हे देवो ! हमेशा हम अन्नसे युक्त रहें ।’

... उरुणः शर्म यच्छता स्वस्तये । (ऋ. १०।६३।१२)

‘हमारे हितके लिए विशाल सुख दे डालो ।’

ते ... अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त सुपथा
स्वस्तये । (ऋ. १०।६३।७)

‘ऐसे वे देवो ! तुम भयरहित सुखका प्रदान करो और भलाई ही जाय इसलिए हमारे लिए सुगम एवं सुन्दर मार्ग बना दो अर्थात् हमें बाँहड सडकोंपर न चलना पड़े ।’

मा प्र गाम पथो वयं ...

मान्तः स्थुर्नो अरातयः । (ऋ. १०।५७।१)

‘हम मार्ग छोड़कर दूर भटकते न चलें और हमारे शत्रुओंको अन्दर स्थान न मिले । अर्थात् हम मार्गभ्रष्ट न हों तथा शत्रु हमारे भीतर जगह न पा सकें ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए ।’

विश्वे नो देवा अवसागमन्तु ।

विश्वमस्तु द्रविणं वाजो अस्मे । (ऋ. १०।३५।१३)

‘सभी देव संरक्षणकी आयोजना साथ लेकर हमारे निकट पहुँच जायें और समूचा द्रव्य एवं बल हमारे लिए रहे ।’

मा दुर्विदत्रा निर्ऋतिर्न ईशत ... (ऋ. १०।३६।२)

‘बुरे ज्ञानवाली पीडा हमपर शासन न करें ।’ ज्ञानका दुरुपयोग करनेवाली बुरी मनोवृत्तिका शासन या प्रभुत्व प्रस्थापित न होने पाय ।

अवन्तु नो अमृतासस्तुरासः (ऋ. ५।४२।५)

‘अमरपनको प्राप्त हुए देव त्वरापूर्वक कार्य करनेवाले बनकर हमारी रक्षा करें ।’

देवोदेवः सुहवो भूतु मह्यं । मा नो माता
पृथिवी दुर्मतौ धातु । (ऋ. ५।४२।१६)

‘मेरे लिए हर एक देव सुगमतापूर्वक बुलानेयोग्य बन जाय और हमें भूमाता दुर्बुद्धिमें न रखें ।’

सदा सुगः पितुमाँ अस्तु पन्था । (ऋ. ३।५४।२१)

‘मार्ग हमेशा सुखपूर्वक तथा अन्न युक्त रहें ।’ यह अभिलाषा तो यात्रियों एवं विदेशोंमें जानेवाले लोगोंके अन्तर्गतमें ही जागृत हुआ करती है और वैदिक कवि यात्रा करनेके अभ्यस्त थे ऐसा स्पष्ट होता है ।

अरिष्टाः स्याम तन्वा सुवीराः । (अथर्व. ५।३।५)

वयं सुषखायो भवेम तरन्तो विश्वा दुरिता
स्याम । (ऋ. १०।३१।१)

‘हम लोग अच्छे वीर एवं अक्षीण और निर्दोष शरीरवाले बनें, सभी बुराइयोंको लौघते चलें ।’



दैवत--संहिता ।

(ऋग्यजुःसामाथर्वणां संहितानां सर्वान् मन्त्रान् दैवतानुसारेण संगृह्य निर्मिता ।)

१० विश्वे देवाः ।

॥ १ ॥ (ऋ० १।३।७-९)

(१-३) मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री ।

ओमासथर्षणीधृतो	विश्वे देवास आ भत	। दाश्वांसो दाशुषः सुतम्	*७
विश्वे देवासो अप्तुरः	सुतमा गन्त तूर्णयः	। उस्मा इव स्वसराणि	८
विश्वे देवासो अस्त्रिध	एहिमायासो अद्रुहः	। मेधं जुषन्त वह्नयः	९ ३

॥ २ ॥ (ऋ० १।१४।१-१२)

(४-१८) मेघातिथिः । काण्वः । गायत्री ।

ऐभिरग्ने दुवो गिरो	विश्वेभिः सोमपीतये	। देवेभिर्याहि यक्षि च	१
आ त्वा कर्णा अहूषत	गुणन्ति विप्र ते धियः	। देवेभिरग्ने आ गहि	२ ५
इन्द्रवायु बृहस्पतिं	मित्राग्निं पूषणं भगम्	। आदित्यान् मारुतं गुणम्	+३
प्र वो भ्रियन्त इन्द्रवो	मत्सरा मादयिष्णवः	। द्रप्सा मध्वश्चमूषदः	४
ईक्षते त्वामवस्यवः	कर्णासो वृक्तवर्हिषः	। हविष्मन्तो अरंकृतः	५
धृतपृष्ठा मनोयुजो	ये त्वा वहन्ति वह्नयः	। आ देवान्तसोमपीतये	६
तान् यजत्राँ ऋतावृधो	ऽग्ने पत्नीवतस्कृधि	। मध्वः सुजिह्व पायय	७ १०
ये यजत्रा य ईड्या	स्ते ते पिवन्तु जिह्वया	। मधोरग्ने वषट्कृति	८
आकीं सूर्यस्य रोचनाद्	विश्वान् देवाँ उपबुधः	। विप्रो होतेह वक्षति	९
विश्वेभिः सोम्यं मध्व	ग्ने इन्द्रेण वायुना	। पिबा मित्रस्य धामभिः	१०
त्वं होता मनुर्हितो	ऽग्ने यज्ञेषु सीदसि	। सेमे नो अध्वरं यज	११
पुक्ष्वा ह्यरुषी रथे	हरितो देव रोहितः	। तामिर्देवाँ इहा वह	१२ १५

* ऋ. १,३,७ = वा० य० ७,३३ । + ऋ० १,१४,३ = वा० य० ३३,४५ ।

१ दै. (विश्वे देवाः)

॥ ३ ॥ (ऋ० १।२३।१०-१२)

विश्वान् देवान् हवामहे मरुतः सोमपीतये । उग्रा हि पृश्निमातरः १०
जयतामिव तन्यतु—मरुतामेति धृष्णुया । यच्छुभं याथना नरः ११
हस्काराद् विद्युतस्पर्श—तो जाता अवनतु नः । मरुतो मृळयन्तु नः १२

॥ ४ ॥ (ऋ० १।८९।१-१०)×

(१९-३७) गोतमो राह्वगणः । १-५, ७ जगती; ६ विराट्-स्थाना; ८-१० त्रिष्टुप् ।

आ नो मद्राः कर्तवो यन्तु विश्वतो ऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः ।
देवा नो यथा सदुमिद् वृधे अस—नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे १
देवानां मद्रा सुमतिर्कजयतां देवानां रातिरभि नो नि वर्तताम् ।
देवानां सुख्यमुप सेदिमा वयं देवा न आयुः प्र तिरन्तु जीवसे २
तान् पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदिति दक्षमस्त्रिधम् ।
अर्यमणं वरुणं सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मर्यस्करत् ३
तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत् पिता द्यौः ।
तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुव—स्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम् ४
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ५
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ६
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानो विदथेषु जग्मयः ।
अग्निजिह्वा मनवः सरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसा गमन्निह ७
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः ८
शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसे तनूनाम् ।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तौः ९
अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्ष—मदितिर्माता स पिता स पुत्रः ।
विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् +१०

× ऋ० १।८९।१-१० = वा० य० २५, १४-२३; ✽ ऋ० १।८९।१० = अथर्व. ७, ६, १;

+ ऋ० १।८९।६, ८ = सा० १८७४-७५ ।

विश्वे देवाः ।

१६-४५]

॥ ५ ॥ (क्र० ११९०।१-९) × गायत्री; ९ अनुष्टुप् ।

ऋजुनीती नो वरुणो मित्रो नयतु विद्वान् । अर्यमा देवैः सजोषाः १
 ते हि वस्वो वसवानास्ते अप्रमूरा महोभिः । व्रता रक्षन्ते विश्वाहा २ ३०
 ते असभ्यं शर्म यंसन्नमृता मर्त्येभ्यः । बाधमाना अप द्विषः ३
 वि नः पथः सुविताय चियन्तिवन्द्रो मरुतः । पुषा भगो वन्द्यासः ४
 उत नो धियो गोअग्राः पूषन् विष्णवेवयावः । कर्तो नः स्वस्तिमतः ५
 मधु वातां क्रतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ६
 मधु नक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवं रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता ७ ३५
 मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुर्मा अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः ८
 शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा । शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुक्रमः ९ ३७

॥ ६ ॥ (क्र० ११२०५।१-१९)

(१८-५६) त्रित आप्त्यः, कुत्स आङ्गिरसो वा । पङ्क्तिः; ८ यवमध्या महाबृहती; १९ त्रिष्टुप् ।

चन्द्रमा अप्सवन्तरा सुपर्णो धावते दिवि ।
 न वो हिरण्यनेमयः पदं विन्दन्ति विद्युतो वित्तं मे अस्य रौदसी +१
 अर्थमिद् वा उ अर्थिन आ जाया युवते पतिम् ।
 तुजाते वृष्ण्यं पर्यः परिवाय रसं दुहे वित्तं मे अस्य रौदसी २
 मोषु देवा अदः स्वर्गं रव पादि दिवस्परि ।
 मा सोम्यस्य शंभुवः शूने भूम कदा चन वित्तं मे अस्य रौदसी ३ ४०
 यज्ञं पृच्छाम्यवमं स तद् दूतो वि वोचति ।
 कं क्रतुं पूर्व्यं गतं कस्तद् बिभर्ति नूतनो वित्तं मे अस्य रौदसी ४
 अमी ये देवाः स्थनं त्रिष्वारौचने दिवः ।
 कद् वं क्रतुं कदनृतं कं प्रत्ता व आहुतिर्वित्तं मे अस्य रौदसी ५
 कद् वं क्रतस्य धर्णसि कद् वरुणस्य चक्षणम् ।
 कर्दर्यम्णो महस्पथाऽति क्रामेम दूढयो वित्तं मे अस्य रौदसी ६
 अहं सो अस्मि यः पुरा सुते वदामि कानि चित् ।
 तं मा व्यन्त्याध्योऽहं वृको न तृष्णजं मृगं वित्तं मे अस्य रौदसी ७
 सं मा तपन्त्यभितः सपत्नीरिव पश्येव ।
 मृषो न शिश्ना व्यदन्ति माध्यः स्तोतारं ते शतक्रतो वित्तं मे अस्य रौदसी ८ ४५

× क्र० १,२०,६-९ = वा० य० १३,२७ = २९; ३६,९ । + वा० य० ३३,९०; अथर्व. १८,४,८९; सा० ४१७

- अमी ये सप्त रश्मयस्तत्रा मे नाभिरातता ।
 त्रितस्तद् वेदापत्यः स जामित्वाय रेभति वित्तं मे अस्य रोदसी ९
 अमी ये पञ्चोक्षणो मध्ये तस्थुर्महो दिवः ।
 देवत्रा नु प्रवाच्य सध्रीचीना नि वावृतु—वित्तं मे अस्य रोदसी १०
 सुपर्णा एत आसते मध्य आरोधने दिवः ।
 ते संधन्ति पथो वृकं तरन्तं यद्वर्तीरपो वित्तं मे अस्य रोदसी ११
 नव्यं तदुक्थ्यं हितं देवासः सुप्रवाचनम् ।
 ऋतमर्पन्ति सिन्धवः सत्यं तातान् सूर्यो वित्तं मे अस्य रोदसी १२
 अग्ने तव त्यदुक्थ्यं देवेष्वस्त्याप्यम् ।
 स नः सुतो मनुष्वदा देवान् यक्षि विदुष्टरो वित्तं मे अस्य रोदसी १३ ५०
 सुतो होता मनुष्वदा देवाँ अच्छा विदुष्टरः ।
 अग्निर्हव्या सुषूदति देवो देवेषु मेधिरो वित्तं मे अस्य रोदसी १४
 ब्रह्मा कृणोति वरुणो गातुविदुं तमीमहे ।
 व्यूणोति हृदा मतिं नव्यो जायतामृतं वित्तं मे अस्य रोदसी १५
 असौ यः पन्था आदित्यो दिवि प्रवाच्यं कृतः ।
 न स देवा अतिक्रमे तं मर्तासो न पश्यथ वित्तं मे अस्य रोदसी १६
 त्रितः कूपेऽवहितो देवान् हवत उतये ।
 तच्छ्रुत्वा बृहस्पतिः कृष्वन्नहूरणादुरु वित्तं मे अस्य रोदसी १७
 अरुणो मां सकृद् वृकः पथा यन्तं दुदर्श हि ।
 उज्जिहीते निचाय्या तष्टेव पृष्ट्यामयी वित्तं मे अस्य रोदसी १८ ५५
 एनाङ्गुषेण वयमिन्द्रवन्तो ऽभि प्याम वृजने सर्ववीराः ।
 तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता—मर्दितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः १९ ५६

॥ ७ ॥ (ऋ० १।१०६।१-७)

(५७-६६) कुत्स आङ्गिरसः । जगती; ७ त्रिष्टुप् ।

- इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमूतये मारुतं शर्धो अर्दितिं हवामहे ।
 रथं न दुर्गाद् वसवः सुदानवो विश्वसान्नो अहंसो निष्पिपर्तन १
 त आदित्या आ गता सर्वतातये भूत देवा वृत्रतूर्येषु शंभुवः । रथं न दुर्गाद् २
 अत्रन्तु नः पितरः सुप्रवाचना उत देवीपुत्रे ऋतावृधा । रथं न दुर्गाद् ३ ५९

विश्वे देवाः ।

[४६-७३]

नराशंसं वाजिनं वाजयन्निह क्षयद्वीरं पूषणं सुम्नैरीमहे । रथं न दुर्गाद् ० ४ ६०
 बृहस्पते सदमिन्नः सुगं कृधि शं योर्यत् ते मनुहितं तदीमहे । रथं न दुर्गाद् ० ५
 इन्द्रं कुत्सो वृत्रहणं सचीपतिं क्राटे निवाळह ऋषिरह्णदूतये । रथं न दुर्गाद् ० ६
 देवैर्नो देव्यदितिर्नि पातु देवस्त्राता त्रायतामप्रयुच्छन् ।
 तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता—मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ७ ६३

॥ ८ ॥ (ऋ० १।१०७।१-३) त्रिष्टुप् ।

यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्न—मदित्यासो भवता मृलयन्तः ।
 आ वोऽर्वाचीं सुमतिर्विवृत्या—दुंहोश्चिद्या वरिवोवित्तरासत्
 उप नो देवा अवसा गंस—न्त्वङ्गिरसां सामभिः स्तयमानाः ।
 इन्द्र इन्द्रियैर्मरुतो मरुद्भि—रादित्यैर्नो अदितिः शर्म यंसत् २ ६५
 तन्न इन्द्रस्तद् वरुणस्तदुग्नि—स्तदर्यमा तत् सविता चनो धात् ।
 तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता—मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ३ ६६

॥ ९ ॥ (ऋ० १।१२१।१-१५)

(६७-९६) कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । (इन्द्रो वा) । त्रिष्टुप् ।

कदित्या नूः पात्रं देवयतां श्रवद् गिरां अङ्गिरसां तुरण्यन् ।
 प्र यदानङ्गिश आ हर्म्यस्यो—रु क्रैसते अध्वरे यजत्रः १
 स्तम्भीद्वा द्यां स धरुणं प्रषाय—दृभुर्वाजाय द्रविणं नरो गोः ।
 अनु स्वजां महिषश्चक्षत त्रां मेनामश्चस्य परि मातरं गोः २
 नक्षद्वमरुणीः पूर्य राट् तुरो विशामङ्गिरसामनु धून् ।
 तक्षद् वज्रं नियुतं तस्तम्भद् द्यां चतुष्पदे नर्याय द्विपादे ३
 अस्य मदं स्वयं दा क्रताया—पीवृतमुस्त्रियाणामनीकम् ।
 यद् प्रसर्गे त्रिककुम्भिवर्त—दप दुहो मानुषस्य दुरो वः ४ ७०
 तस्य पयो यत् पितरावनीतां राधः सुरेतस्तुरणं भुरण्यु ।
 शुचि यत् ते रेक्ण आर्यजन्त सबर्दुधायाः पर्य उस्त्रियायाः ५
 अध प्र जज्ञे तरणिर्ममत्तु प्र रोच्यस्या उषसो न सूरः ।
 इन्दुर्यैभिराष्ट स्वेदुहव्यैः सुवेण सिञ्चञ्जरणाभि धाम ६
 सिध्मा यद् वनधितिरपस्यात् सूरौ अध्वरे परि रोधना गोः ।
 यद् प्रभासि कृत्व्या अनु धू—ननर्विशे पश्चिषे तुराय ७ ७३

अष्टा महो दिव आदो हरीं इह द्युम्नासाहमभि योधान उत्सम् ।
 हरिं यत् ते मन्दिनं दुक्षन् वृधे गोरमसमद्रिभिर्वाताप्यम् ८
 त्वमायसं प्रति वर्तयो गोर्दिवो अश्मानमुपनीतमृष्वो ।
 कुत्साय यत्र पुरुहूत वन्वञ्जुष्णमनन्तैः परियासि वधैः ९
 पुरा यत् सूरस्तमसो अपीते स्तमद्रिवः फलिगं हेतिमस्य ।
 शुष्णस्य चित् परिहितं यदोजो दिवस्परि सुग्रथितं तदादः १०
 अनु त्वा मही पाजसी अचक्रे द्यावाक्षामा मदतामिन्द्र कर्मन् ।
 त्वं वृत्रमाशयानं सिरासु महो वज्रेण सिष्वपो वराहुम् ११
 त्वमिन्द्र नयो याँ अवो नृन् तिष्ठा वातस्य सुयुजो वहिष्ठान् ।
 यं ते काव्य उशना मन्दिनं दाद् वृत्रहणं पार्यं ततश्च वज्रम् १२
 त्वं सूर्यो हरितो रामयो नृन् भरच्चक्रमेतशो नायामिन्द्र ।
 प्रास्य पारं नवति नाव्यानामपि कर्तमवर्तयोऽयं ज्युन् १३
 त्वं नो अस्या इन्द्र दुर्हणायाः पाहि वज्रिवो दुरितादभीके ।
 प्र नो वाजान् रथ्योऽश्वबुध्या निषे यन्धि श्रवसे सूनृतायै १४
 मा सा ते अस्सत् सुसतिर्वि दसद् वाजप्रमहः समिषो वरन्त ।
 आ नो भज मधवन् गोष्वर्यो मंहिष्ठास्ते सधमादः स्याम १५

॥ १० ॥ (क्र० १।१२२।१-१५) त्रिष्टुप् ; ५-६ विराड् रूपा ।

प्र वः पान्तं रघुमन्यवोऽन्धो यज्ञं रुद्राय मीळहुषे भरध्वम् ।
 दिवो अस्तोष्यसुरस्य वीरैरिपुध्येवं मरुतो रोदस्योः १
 पत्नीव पूर्वहूति वावृध्या उपासानक्ता पुरुधा विदाने ।
 स्तरीनात्क्रं व्युतं वसाना सूर्यस्य श्रिया सुदृशी हिरण्यैः २
 ममत्तु नः परिज्मा वसर्हा ममत्तु वातो अपां वृषण्वान् ।
 शिशितीमिन्द्रापर्वता युवं नस्तन्नो विश्वे वरिवस्यन्तु देवाः ३
 उत त्या मे यशसा श्वेतनायै व्यन्ता पान्तौ शिजो हुवध्यै ।
 प्र वो नपातमपां कृणुध्वं प्र मातरा रास्पिनस्यायोः ४
 आ वो रुवण्युमौ शिजो हुवध्यै घोषेव शंसमर्जुनस्य नशे ।
 प्र वः पूष्णे दावन् आँ अच्छा वोचेय वसुतातिमग्नेः ५

विश्वे देवाः ।

अथाः ७४-९८]

८

९

०

१

२

३

४

५

१

२

३

४

५

श्रुतं मे मित्रावरुणा हवेमो—त श्रुतं सदेने विश्वतः सीम् ।

श्रोतुं नः श्रोतुरातिः सुश्रोतुः सुक्षेत्रा सिन्धुरङ्घ्रिः

स्तुषे सा वा वरुण मित्र राति—र्गवां शता पृक्षयामेषु पत्रे ।

श्रुतरथे प्रियरथे दधानाः सद्यः पुष्टिं निरुन्धानासौ अगमन्

अस्य स्तुषे महिमघस्य राधः सचा सनेम नहुषः सुवीराः ।

जनो यः पत्रेभ्यो वाजिनीवा—नश्वावतो रथिनो मह्यं सूरिः

जनो यो मित्रावरुणावभिधु—गपो न वां सुनोत्यक्ष्णयाधुक् ।

स्वयं स यक्ष्मं हृदये नि धत्त आप यदीं होत्राभिर्ऋतावा

स वार्धतो नहुषो दंसुजुतः शर्धस्तरो नरां गूर्तश्रवाः ।

विसृष्टरातिर्याति बाळहसृत्वा विश्वासु पृत्सु सदाभिच्छरः

अध गमन्ता नहुषो हवै सूरः श्रोता राजानो अमृतस्य मन्द्राः ।

नभोजुवो यन्निरवस्य राधः प्रशस्तये महिना रथवते

एतं शर्धं धाम यस्य सूर—रित्यवोचन् दशतयस्य नंशे ।

युम्नानि येषु वसुताती रारन् विश्वे सन्वन्तु प्रभृथेषु वाजम्

मन्दामहे दशतयस्य धासे—द्विर्यत् पञ्च विभ्रतो यन्त्यन्ना ।

किमिष्टाश्च इष्टरश्मिरेत ईशानासस्तरुष क्रञ्जते नृन्

हिरण्यकर्णं मणिग्रीवमर्ण—स्तन्नो विश्वे वरिवस्यन्तु देवाः ।

अयो गिरः सद्य आ जग्मुषीरो—स्त्राश्चाकन्तुभयेष्वसे

चत्वारो मा मशशरस्य शिश्व—स्त्रयो राज्ञ आयवसस्य जिष्णोः ।

रथो वा मित्रावरुणा दीर्घाप्साः स्यूमगभस्तिः सरो नाद्यौत्

॥ ११ ॥ (ऋ० १।१३२।१, ११)

(९७-९८) परुच्छेपो देवोदासिः । १ अत्यष्टिः, ११ त्रिष्टुप् । x

अस्तु श्रौषट् पुरो अग्निं धिया दध आ नु तच्छर्धो दिव्यं वृणीमह

इन्द्रवायु वृणीमहे ।

यद्वं क्राणा विवस्वति नाभां सदायि नव्यसी ।

अध प्र स्र न उप यन्तु धीतयो देवाँ अच्छा न धीतयः

ये देवासो दिव्येकादश स्थ पृथिव्यामध्येकादश स्थ ।

अप्सुक्षितो महिनैकादश स्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम्

x ऋ० १, १३९, ११ = वा० य० ७, १९ ।

६

७

८

९ ९०

१०

११

१२

१३

१४ ९५

१५ ९६

१

११ ९८

॥ १२ ॥ (ऋ० १।१६४।१-४१)

(९९-१३९ . दीर्घतमा औचथ्यः । त्रिष्टुप्. १२, १५, २३, २९, ३६, ४१ जगती ।

अस्य वामस्य पलितस्य होतुस्तस्य आता मध्यमो अस्त्यश्वः ।
तृतीयो आता घृतपृष्ठो अस्यात्रापश्यं विश्वपतिं सप्तपुत्रम् १
सप्त युञ्जन्ति रथमेकचक्रमेको अश्वो वहति सप्तनामा ।
त्रिनाभिं चक्रमजरमनर्व यध्रेमा विश्वा भुवनाधि तस्थुः २ १००
इमं रथमधि ये सप्त तस्थुः सप्तचक्रं सप्त वहन्त्यश्वाः ।
सप्त स्वसारो अभि सं नवन्ते यत्र गवां निहिता सप्त नाम ३
को ददर्श प्रथमं जायमानमस्थन्वन्तं यदनस्था विभर्ति ।
भूम्या असुरसृगात्मा कं स्वित् को विद्रांसमुप गात् प्रष्टुमेतत् ४
पाकः पृच्छामि मनसाविजानन् देवानामेना निहिता पदानि ।
वत्से वष्कयेऽधि सप्त तन्तून् ततिरे कवय ओतवा उ ५
अचिकित्वाश्चिकितुषश्चिदत्र कवीन् पृच्छामि विद्वाने न विद्वान् ।
वि यस्तस्तम्भ षष्ठिमा रजांस्यजस्य रूपे किमपि सिदेकम् ६
इह ब्रवीतु य ईमङ्ग वेदास्य वामस्य निहितं पदं वेः ।
शीर्ष्णः क्षीरं दुहते गावो अस्य वविं वसाना उदकं पदापुः ७ १०५
माता पितरमृत आ वभाज धीत्यग्रे मनसा सं हि जग्मे ।
सा बीभत्सुर्गर्भरसा निविद्धा नमस्वन्त इदुपवाकभीयुः ८
युक्ता माताऽऽसीद् धुरि दक्षिणाया अतिष्ठद् गर्भो वृजनीष्वन्तः ।
अमीमेद् वत्सो अनु गामपश्यद् विश्वरूप्यं त्रिषु योजनेषु ९
तिस्रो मातृस्त्रीन् पितृन् बिभ्रदेकं ऊर्ध्वस्तस्थौ नेमव ग्लापयन्ति ।
मन्त्रयन्ते दिवो अमुष्यं पृष्ठे विश्वविदं वाचमविश्वमिन्वाम् १०
द्वादशारं नहि तज्जराय वर्वति चक्रं परि द्यामृतस्य ।
आ पुत्रा अग्रे मिथुनासो अत्र सप्त शतानि विश्वतिश्च तस्थुः ११
पञ्चपादं पितरं द्वादशाकृतिं दिव आहुः परे अर्धे पुरीषिणम् ।
अथेमे अन्य उपरे विचक्षणं सप्तचक्रे षष्ठर आहुरपितम् १२ ११०
पञ्चारे चक्रे परिवर्तमाने तस्मिन्ना तस्थुर्भुवनानि विश्वा ।
तस्य नाक्षस्तप्यते भूरिभारः सनादेव न शीर्यते सनाभिः १३ १११

[विश्वे देवाः]

[१९-१२५]

१

सर्गेमि चक्रमजरं वि वावृत उत्तानायां दश युक्ता वहन्ति ।

सूर्यस्य चक्षु रजसैत्यावृतं तस्मिन्नापिता भुवनानि विश्वा १४

साकंजानां समथमाहुरेकजं षळिद् यमा ऋषयो देवजा इति ।

तेषामिष्टानि विहितानि धामशः स्थात्रे रैजन्ते विकृतानि रूपशः १५

स्त्रियः सतीस्तां उ मे पुंस आहुः पश्यदक्षणां वि चैतदुन्धः ।

कुरियः पुत्रः स ईमा चिकेत यस्ता विजानात् स पितुष्पितासत् १६

अवः परेण पर एनावरेण पदा वत्सं विभ्रती गौरुदस्थात् ।

सा कद्रीची कं स्विदर्थं परागात् कं स्वित् सूते नहि यूथे अन्तः १७ ११५

अवः परेण पितरं यो अस्या—नुवेदं पर एनावरेण ।

कवीयमानः क इह प्र वोचद् देवं मनः कुतो अधि प्रजातम् १८

ये अर्वाश्चस्तां उ पराच आहु—र्ये पराश्चस्तां उ अर्वाच आहुः ।

इन्द्रश्च या चक्रथुः सोम तानि धुरा न युक्ता रजसो वहन्ति १९

द्वा सुपर्णा सुयुजा सखाया समानं वृक्षं परि षस्वजाते ।

तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्व—त्यनश्नन्नन्यो अभि चाकशीति २०

यत्रा सुपर्णा अमृतस्य भाग—मर्निमेषं विदथाभिस्वरन्ति ।

इनो विश्वस्य भुवनस्य गोपाः स मा धीरः पाकमत्रा विवेश २१

यस्मिन् वृक्षे मध्वदः सुपर्णा निविशन्ते सुवते चाधि विश्वे ।

तस्येदाहुः पिप्पलं स्वाद्वप्रे तन्नोन्नशद्यः पितरं न वेद २२ १२०

यद् गायत्रे अधि गायत्रमाहितं त्रैष्टुभाद् वा त्रैष्टुभं निरतक्षत ।

यद् वा जगज्जगत्याहितं पदं य इत् तद् विदुस्ते अमृतत्वमानशुः २३

गायत्रेण प्रति मिमीते अर्क—मर्केण साम त्रैष्टुभेन वाकम् ।

वाकेन वाकं द्विपदा चतुष्पदा ऽक्षरेण मिमते सप्त वाणीः २४

जगता सिन्धुं दिव्यस्तभायद् रथंतरे सूर्य पर्यपश्यत् ।

गायत्रस्य समिधस्तिष्ठ आहु—स्ततो मद्वा प्र रिरिचे महित्वा २५

उप ह्वये सुदुर्वा धेनुमेतां सुहस्तो गोधुगुत दोहदेनाम् ।

श्रेष्ठं सुवं सविता साविषन्नो ऽभीद्वो धर्मस्तदु षु प्र वोचम् २६

हिङ्कृष्वती वसुपत्नी वसूनां वत्समिच्छन्ती मनसाभ्यागात् ।

दुहामश्विभ्यां पयो अघ्नयेयं सा वर्धतां महते सौमगाय २७ १२५

२ [दे० विश्वेदेवाः]

गौरमीमेदनु वत्सं मिषन्तं मूर्धानं हिङ्ङ्कृणोन्मातवा उ ।
 सूकाणं घर्ममभि वावशाना मिमाति मायुं पयते पयोभिः
 अयं स शिङ्क्ते येन गौरभीवृता मिमाति मायुं ध्वसनावधि श्रिता ।
 सा चित्तिभिर्नि हि चकार मर्त्यं विद्युद् भवन्ती प्रति वत्रिमौहत
 अनच्छये तुरगात् जीवमेजद् ध्रुवं मध्य आ पस्त्यानाम् ।
 जीवो मृतस्य चरति स्वधाभिर्मर्त्यो मर्त्येना सयौनिः
 अपश्यं गोपामनिपद्यमानमा च परां च पृथिभिश्चरन्तम् ।
 स सुध्रीचीः स विषूचीर्वसान आ वरीवर्ति भुवनेष्वन्तः
 य ई चकार न सो अस्य वेद य ई ददर्श हिरुगिन्नु तस्मात् ।
 स मातुर्योना परिवीतो अन्तर्बहुप्रजा निर्ऋतिमा विवेश
 द्यौर्म पिता जनिता नाभिरत्र बन्धुर्मे माता पृथिवी महीयम् ।
 उत्तानयोश्चम्वोऽर्योर्निरन्तरत्रा पिता दुहितुर्गर्भमाधात्
 पृच्छामि त्वा परमन्तं पृथिव्याः पृच्छामि यत्र भुवनस्य नाभिः ।
 पृच्छामि त्वा वृष्णो अश्वस्य रेतः पृच्छामि वाचः परमं व्योम
 इयं वेदिः परो अन्तः पृथिव्या अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः ।
 अयं सोमो वृष्णो अश्वस्य रेतो ब्रह्मायं वाचः परमं व्योम
 सप्तार्धगर्भा भुवनस्य रेतो विष्णोस्तिष्ठन्ति प्रदिशा विधर्मणि ।
 ते धीतिभिर्मनसा ते विपश्चितः परिभुवः परि भवन्ति विश्वतः
 न वि जानामि यदिवेदमस्मि निण्यः संनद्धो मनसा चरामि ।
 यदा मार्गन् प्रथमजा क्रतुस्यादिद् वाचो अश्रुवे भागमस्याः
 अपाङ् प्राडैति स्वधया गृभीतो ऽमर्त्यो मर्त्येना सयौनिः ।
 ता शश्वन्ता विषूचीना विपन्ता न्यून्यं चिक्युर्न नि चिक्युरन्यम्
 क्रुचो अक्षरे परमे व्योमन् यस्मिन् देवा अधि विश्वे निषेदुः ।
 यस्तन्न वेद किमुचा करिष्यति य इत् तद् विदुस्त इमे समासते
 सूयवसाद् भगवती हि भूया अथो वयं भगवन्तः स्याम ।
 अद्वि तृणमघ्न्ये विश्वदानीं पिव शुद्धमुदकमाचरन्ती
 गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी ।
 अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन्

२८ ११६

२९

३०

३१

३२ १३०

३३

३४

३५

३६

३७ १३५

३८

३९

४०

४१ १३९

॥ १३ ॥ (ऋ० १।१८६।१-११)

(१४०-१५०) अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । त्रिष्टुप् ।

आ न इळाभिर्विदथे सुशस्ति विश्वानरः सविता देव एतु ।
अपि यथा युवानो मत्संथा नो विश्वं जगदभिपित्वे मनीषा
आ नो विश्व आस्का गमन्तु देवा मित्रो अर्यमा वरुणः सजोषाः ।

१ १४०

भुवन् यथा नो विश्वे वृधासः करन्त्सुषाहा विथुरं न शवः
प्रेष्ठो वो अतिथिं गृणीषे ऽग्निं शस्तिभिस्तुर्वणिः सजोषाः ।

२

असद् यथा नो वरुणः सुकीर्तिरिषश्च पर्षदरिगूर्तः सूरिः
उप व एषे नमसा जिगीषो पासानक्ता सुदुधैव धेनुः ।

३

समाने अहन् विमिमनो अर्कं विष्टुरूपे पयसि सस्मिन्नूधन्
उत नोऽर्हिर्वुध्न्योऽइ मयस्कः शिशुं न पिप्युषीव वेति सिन्धुः ।

४

येन नपातमपां जुनाम मनोजुवो वृषणो यं वहन्ति

५

उत न ई त्वष्टा गन्त्वच्छा स्मत् सूरिभिरभिपित्वे सजोषाः ।

आ वृत्रहेन्द्रश्चर्षणिप्रास्तुविष्टमो नरां न इह गम्याः

६ १४५

उत न ई मतयोऽश्वयोगाः शिशुं न गावस्तरुणं रिहन्ति ।

तमी गिरो जनयो न पत्नीः सुरभिष्टमं नरां नसन्त

७

उत न ई मरुतो वृद्धसेनाः सद् रोदसी समनसः सदन्तु ।

एषदश्वासोऽवनयो न रथा रिशादसो मित्रयुजो न देवाः

८

प्र नु यदैषां महिना चिकित्रे प्र युञ्जते प्रयुजस्ते सुवृक्ति ।

अथ यदैषां सुदिने न शरुर्विश्वमेरिणं प्रुपायन्तु सेनाः

९

प्रो अश्विनाववसे कृणुध्वं प्र पूषणं स्वतवसो हि सन्ति ।

अद्वेषो विष्णुर्वातं क्रभुक्षा अच्छा सुम्नाय ववृतीय देवान्

१०

इयं सा वो अस्मे दीधितिर्यजत्रा अपिप्राणी च सदनी च भूयाः ।

नि या देवेषु यतते वसूयुर्विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्

११ १५०

॥ १४ ॥ (ऋ० १।२९।१-७)

(१५१-५७) कूर्मो गात्समदो, गृत्समदो वा । त्रिष्टुप् ।

धृत्वता आदित्या इषिरा अरे मत् कर्त रहस्वरिवागः ।

गृण्वतो वो वरुण मित्र देवा भद्रस्य विद्रा अवसे हुवे वः

१ १५१

यूयं देवाः प्रमतिर्युयमोजो यूयं द्वेषांसि सनुतयुयोत ।
 अभिसत्तारो अभि च क्षमध्वमद्या च नो मृळयतापरं च
 किम् नु वः कृणवामापरिण किं सनेन वसव आप्येन ।
 यूयं नो मित्रावरुणादिते च स्वस्तिमिन्द्रामरुतो दधात
 ह्ये देवा युयमिदापर्यः स्थ ते मृळत नाधमानाय मह्यम् ।
 मा वो रथो मध्यमवाळते भून्मा युष्मावत्स्वापिषु श्रमिष्म
 प्र व एको मिमय भूर्यागो यन्मा पितेव कितवं शशास ।
 आरे पाशा आरे अघानि देवा मा मार्धि पुत्रे विमिव ग्रभीष्ट
 अर्वाञ्चो अद्या भवता यजत्रा आ वो हार्दि भयमानो व्ययेयम् ।
 त्राध्वं नो देवा निजुरो वृकस्य त्राध्वं कर्तादवपदो यजत्राः
 माहं मघोनो वरुण प्रियस्य भूरिदान्न आ विदं शूनमापेः ।
 मा रायो राजन्त्सुयमादवे स्थां वृद्ध वदेम विदथे सुवीराः

॥ १५ ॥ (ऋ० २।३।१-७)

(१५८-६७) गृत्समद (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । जगती, ७ त्रिष्टुप् ।
 अस्माकं मित्रावरुणावतं रथमादित्यै रुद्रेर्वसुभिः सचाश्रुवा ।
 प्र यद् वयो न पप्तन्वस्मन्स्परि श्रवस्यवो हृषीवन्तो वनर्षदः
 अध स्मा न उदवता सजोषसो रथं देवासो अभि विश्व वाजयुम् ।
 यदाश्वः पद्याभिस्तित्रतो रजः पृथिव्याः सानौ जङ्घनन्त पाणिभिः
 उत स्य न इन्द्रो विश्वचर्षणिर्दिवः शर्धेन मारुतेन सुक्रतुः ।
 अनु नु स्थात्यवृकाभिरूतिभी रथं महे सनये वाजसातये
 उत स्य देवो भुवनस्य सक्षणिस्त्वष्टाग्रभिः सजोषा जूजुवद् रथम् ।
 इळा भगो बृहद्विवात रोदसी पूषा पुरंधिरश्विनावधा पती
 उत त्ये देवी सुभगो मिथूदृशो पासानक्ता जगतामपीजुवा ।
 स्तुपे यद् वा पृथिवि नव्यसा वचः स्थातुश्च वयस्त्रिवया उपस्तिरे
 उत वः शंसमुशिजामिव इमस्यर्हिर्बुध्न्योऽज एकपादुत ।
 त्रित ऋभुक्षाः सविता चनो दधेऽपां नपादाशुहेमा धिया शर्मि
 एता वो वश्युद्यता यजत्रा अतक्षन्नायवो नव्यसे सम् ।
 श्रवस्यवो वाजं चक्रानाः सप्तिर्न रथ्यो अहं धीतिमश्याः

[विश्व देवाः ।]

॥ १६ ॥ (ऋ० २।४।१३-१५) गायत्री ।

विश्वे देवास आ गत शृणुता म इमं हवम् । एदं बर्हिर्नि षीदत
तीव्रो वो मधुर्मा अयं शुनहोत्रेषु मत्सरः । एतं पिबत काम्यम्
इन्द्रज्येष्ठा मरुद्गणा देवासः पूषरातयः । विश्वे मम श्रुता हवम्

१३ १६५

१४

१५ १६७

॥ १७ ॥ (ऋ० ३।२०।१,५)

(१६८-६९) गायत्री कौशिकः । त्रिष्टुप् ।

अग्निमुषसमश्विना दधिकां व्यष्टिषु हवते वह्निरुक्थैः ।
सुज्योतिषो नः शृण्वन्तु देवाः सजोषसो अध्वरं वावशानाः
दधिकामग्निमुषसं च देवी बृहस्पतिं सवितारं च देवम् ।
अश्विना मित्रावरुणा भगं च वसून् रुद्रां आदित्यां इह हुवे

१

५ १६९

॥ १८ ॥ (ऋ० ३।५४।१-२२)

(१७०-२२१) प्रजापतिर्वैश्वामित्रः, प्रजापतिर्वाच्यो वा । त्रिष्टुप् ।

इमं महे विदध्याय शूषं शश्वत् कृत्व ईड्याय प्र जभ्रुः ।
शृणोतु नो दम्येभिरनीकैः शृणोत्वग्निर्दिव्यैरजस्रः
महिं महे दिवे अर्चा पृथिव्यै कामो म इच्छश्चरति प्रजानन् ।

१ १७०

ययोर्हि स्तोमै विदथेषु देवाः संपर्यवो मादयन्ते सचायोः

२

युवोर्कृतं रोदसी सत्यमस्तु महे षु णः सुविताय प्र भूतम् ।

३

इदं दिवे नमो अग्ने पृथिव्यै संपर्यामि प्रयसा यामि रत्नम्

उतो हि वां पूर्या आविविद्र ऋतावरी रोदसी सत्यवाचः ।

नराश्चिद् वां समिथे शरसातौ ववन्दिरे पृथिवि वेविदानाः

४

को अद्वा वेदु क इह प्र वोचद् देवां अच्छा पथ्याइ का समैति ।

दहंश्च एषामवमा सदांसि परेषु या गुह्येषु व्रतेषु

५

कविर्नृचक्षा अभि षीमचष्ट क्रतस्य योना विघृते मदन्ती ।

नाना चक्राते सदनं यथा वेः समानेन क्रतुना संविदाने

६ १७५

समान्या विर्युते दूरेअन्ते ध्रुवे पदे तस्थतुर्जागरूके ।

उत स्वसारा युवती भवन्ती आहुं ब्रुवाते मिथुनानि नाम

७

विश्वेदेते जनिमा सं विविक्तो महो देवान् विश्रती न व्यथेते ।

एजद् ध्रुवं पत्यते विश्वमेकं चरत् पतत्रि विषुणं वि जातम्

८ १७७

सनां पुराणमध्यैम्यारा—न्महः पितुर्जनि तुर्जामि तन्नः ।
 देवासो यत्र पनितार एवै—रुरौ पथि व्युते तस्थुरन्तः ९
 इमं स्तोमं रोदसी प्र ब्रवी—म्यृदुदराः शृणवन्नग्निजिह्वाः ।
 मित्रः सम्राजो वरुणो युवान आदित्यासः कवयः पप्रथानाः १०
 हिरण्यपाणिः सविता सुजिह्व—स्त्रिरा दिवो विदथे पत्यमानः ।
 देवेषु च सवितः श्लोकमश्रे—रादुस्मयमा सुव सर्वतातिम् ११ १८०
 सुकृत सुपाणिः स्ववाँ कृतावाँ देवस्त्वष्टावसे तानि नो धात् ।
 पुष्पवन्तं क्रभवो मादयध्व—मूर्ध्वग्रावाणो अध्वरमतष्ट १२
 विद्युद्रथा मरुतं कष्टिमन्तो दिवो मर्यां कृतजाता अयासः ।
 सरस्वती शृणवन् यज्ञियासो धाता रयिं सहवीरं तुरासः १३
 विष्णुं स्तोमासः पुरुदस्ममर्का भगस्येव कारिणो यामनि गमन् ।
 उरुक्रमः कंकुहो यस्य पूर्वा—र्न मर्धन्ति युवतयो जनित्रीः १४
 इन्द्रो विश्वैर्वीर्यैः पत्यमान उभे आ पप्रौ रोदसी महित्वा ।
 पुरंदुरो वृत्रहा धृष्णुपेणः संगृभ्यां न आ भरा भूरि पश्वः १५
 नासत्या मे पितरां बन्धुपृच्छां सजात्यमश्विनोश्चारु नाम ।
 युवं हि स्थो रयिदौ नो रयीणां दात्रं रक्षेथे अकवैरदब्धा १६ १८५
 महत् तद् वः कवयश्चारु नाम यद्ध देवा भवथ विश्व इन्द्रे ।
 सखं क्रभुभिः पुरुहूत प्रियेभि—रिमां धियं सातये तक्षता नः १७
 अर्यमा णो अदितिर्यज्ञियासो ऽदब्धानि वरुणस्य व्रतानि ।
 युयोत नो अनपत्यानि गन्तोः प्रजावान् नः पशुमाँ अस्तु गातुः १८
 देवानां दूतः पुरुध प्रसूतो ऽनांगान् वोचतु सर्वताता ।
 शृणोतु नः पृथिवी द्यौरुतापः सूर्यो नक्षत्रैरुर्वन्तरिक्षम् १९
 शृण्वन्तु नो वृषणः पर्वतासो ध्रुवक्षेमास इळया मदन्तः ।
 आदित्यैर्नो अदितिः शृणोतु यच्छन्तु नो मरुतः शर्म भद्रम् २०
 सदा सुगः पितुमाँ अस्तु पन्था मध्वा देवा ओषधीः सं पिपृक्त । २१ १९०
 भगो मे अग्रे सख्ये न मृध्या उद् रायो अश्यां सदनं पुरुक्षोः
 स्वदस्व हव्या समिषो दिदी ह्यस्मद्यक् सं मिमीहि श्रवांसि । २२ १९१
 विश्वाँ अग्रे पृत्सु ताञ्जेषि शत्रू—नहा विश्वाँ सुमना दीदिही नः

॥ १९ ॥ (ऋ० ३।५।१-२२)

[१०८-२०४]

विश्वे देवाः ।

- ९ उपसः पूर्वा अध यद् व्यूषु—महद् वि जज्ञे अक्षरं पदे गोः
 ० व्रता देवानामुप नु प्रभूषन् महद् देवानामसुरत्वमेकम् १
 १ १८० मो षू णो अत्र जुहुरन्त देवा मा पूर्वे अग्रे पितरः पदुजाः ।
 २ पुराण्योः सन्नोः केतुरन्त—महद् देवानामसुरत्वमेकम् २
 ३ वि मे पुरुत्रा पतयन्ति कामाः शम्यच्छा दीद्ये पूर्याणि ।
 ४ समिद्धे अग्रावृतमिद् वंदेम महद् देवानामसुरत्वमेकम् ३
 ५ समानो राजा विभृतः पुरुत्रा शयै शयासु प्रयुतो वनानु ।
 ६ १८५ अन्या वत्सं भरति क्षेति माता महद् देवानामसुरत्वमेकम् ४ १९५
 ७ आक्षित पूर्वास्वपरा अनुरुत् सद्यो जातासु तरुणीष्वन्तः ।
 ८ अन्तर्वतीः सुवते अग्रवीता महद् देवानामसुरत्वमेकम् ५
 ९ शयुः परस्तादध नु द्विमाता ऽबन्धनश्चरति वत्स एकः ।
 ५ मित्रस्य ता वरुणस्य व्रतानि महद् देवानामसुरत्वमेकम् ६
 ६ १८५ द्विमाता होता विदथेषु सग्रा—लन्वग्रं चरति क्षेति बुधः ।
 ७ प्र रण्यानि रण्यवाचो भरन्ते महद् देवानामसुरत्वमेकम् ७
 ८ शरस्येव युध्यतो अन्तमस्य प्रतीचीनं ददृशे विश्वमायत् ।
 ९ अन्तर्मतिश्चरति निष्पिधं गो—महद् देवानामसुरत्वमेकम् ८
 ० नि वैवेति पलितो दूत आ—स्वन्तर्महांश्चरति रोचनेन ।
 १ वर्षषि विभ्रदुभि नो वि चष्टे महद् देवानामसुरत्वमेकम् ९ २००
 २ विष्णुर्गोपाः परमं पाति पार्थः प्रिया धामान्यमृता दधानः ।
 ३ अग्निष्ठा विश्वा भुवनानि वेद महद् देवानामसुरत्वमेकम् १०
 ४ नाना चक्राते यम्याऽवर्षषि तयोरन्यद् रोचते कृष्णमन्यत् ।
 ५ १९० श्यावी च यदरुषी च स्वसारौ महद् देवानामसुरत्वमेकम् ११
 ६ माता च यत्र दुहिता च धेनू संवर्द्धे धापयते समीची ।
 ७ १९१ कृतस्य ते सदसीले अन्त—महद् देवानामसुरत्वमेकम् १२
 ८ अन्यस्या वत्सं रिहती मिमाय कया भुवा नि दधे धेनुरुधः ।
 ९ कृतस्य सा पर्यसापिन्वतेळा महद् देवानामसुरत्वमेकम् १३ २०४

पद्या वस्ते पुरुषा वपूँ—व्यूध्वा तस्थौ त्र्यविं रेहिहाणा ।
 ऋतस्य सन्न वि चरामि विद्वान् महद् देवानामसुरत्वमेकम् १४ २०५
 पदे इव निहिते दुस्मे अन्तस्तयोरन्यद् गुह्यमाविरन्यत् ।
 सध्रीचीना पथ्याइ सा विषूची महद् देवानामसुरत्वमेकम् १५
 आ धेनवो धुनयन्तामशिश्वीः सवर्दुधाः शशया अप्रदुग्धाः ।
 नव्यानव्या युवतयो भवन्ती—महद् देवानामसुरत्वमेकम् १६
 यदुन्यासु वृषभो रोरवीति सो अन्यस्मिन् यूथे नि दधाति रेतः ।
 स हि क्षपावान्तस भगः स राजा महद् देवानामसुरत्वमेकम् १७
 वीरस्य नु स्वइव्यं जनासः प्र नु वोचाम विदुरस्य देवाः ।
 षोळ्हा युक्ताः पञ्चपञ्चा वहन्ति महद् देवानामसुरत्वमेकम् १८
 देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपः पुषोष प्रजाः पुरुधा जजान ।
 इमा च विश्वा भुवनान्यस्य महद् देवानामसुरत्वमेकम् १९ २१०
 मही समैरच्चम्वा समीची उभे ते अस्य वसुना न्यष्टे ।
 शृण्वे वीरो विन्दमानो वसूनि महद् देवानामसुरत्वमेकम् २०
 इमां च नः पृथिवीं विश्वधाया उप क्षेति हितमित्रो न राजा ।
 पुरःसदः शर्मसदो न वीरा महद् देवानामसुरत्वमेकम् २१
 निष्पिष्वरीस्त ओपधीरुतापो रथि त इन्द्र पृथिवी विभर्ति ।
 सखायस्ते वामभाजः स्याम महद् देवानामसुरत्वमेकम् २२ २११

॥ २० ॥ (ऋ० ३।५६।१-८)

न ता मिनन्ति मायिनो न धीरा व्रता देवानां प्रथमा ध्रुवाणि ।
 न रोदसी अद्रुहा वेद्याभिर्न पर्वता निनमे तस्थिवांसः १
 षड् भारौ एको अचरन् विभर्त्युत वर्षिष्ठमुप गाव आगुः ।
 तिस्रो महीरुपरास्तस्थुरत्या गुहा द्वे निहिते दश्येका २ २१५
 त्रिपाजस्यो वृषभो विश्वरूप उत व्युधा पुरुध प्रजावान् ।
 त्र्यनीकः पत्यते माहिनावा—न्तस रेतोधा वृषभः शश्वतीनाम् ३
 अभीक आसां पदवीरवो—ध्यादित्यानामहे चारु नाम ।
 आपश्चिदस्मा अरमन्त देवीः पृथग् व्रजन्तीः परि षीमवृञ्जन् ४ २१७

विश्वे देवाः ।

१०५-२२९]

त्री पञ्चस्था सिन्धवस्त्रिः कवीनामुत त्रिमाता विदथेषु सम्राट् ।
 ऋतावरीर्योषणास्तिस्रो अप्यास्त्रिरा दिवो विदथे पत्यमानाः ५
 त्रिरा दिवः सवितर्वार्योणि दिवेदिव आ सुव त्रिर्नो अहः ।
 त्रिधातुं राय आ सुवा वसन्ति भगं त्रातर्धिषणे सातये धाः ६
 त्रिरा दिवः सविता सौषवीति राजाना मित्रावरुणा सुपाणी ।
 आपश्चिदस्य रोदसी चिदुर्वी रत्नं भिक्षन्त सवितुः सुवायं ७ २२०
 त्रिरुत्तमा दूणशा रोचनानि त्रयो राजन्त्यसुरस्य वीराः ।
 ऋतावान इषिरा दूळभासस्त्रिरा दिवो विदथे सन्तु देवाः ८ २२१

॥ २१ ॥ (ऋ० ३।८।८)

(२२२-२८) गायिनो विश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

आदित्या रुद्रा वसवः सुनीथा द्यावाक्षामा पृथिवी अन्तरिक्षम् ।
 सजोषसो यज्ञमवन्तु देवा ऊर्ध्वं कृण्वन्त्वध्वरस्य केतुम् ८ २२२

॥ २२ ॥ (ऋ० ३।५७।१-६)

प्र मे विविक्कां अविदन्मनीषां धेनुं चरन्तीं प्रयुतामगोपाम् ।
 सद्यश्चिद् या दुदुहे भूरिं धासेरिन्द्रस्तदग्निः पनितारो अस्याः १
 इन्द्रः सु पूषा वृषणा सुहस्ता दिवो न प्रीताः शंशयं दुदुहे ।
 विश्वे यदस्यां रणयन्त देवाः प्र वोऽत्र वसवः सुममंश्याम् २
 या जामयो वृष्णा इच्छन्ति शक्तिं नमस्यन्तीर्जानते गर्भमस्मिन् ।
 अच्छा पुत्रं धेनवो वावशाना महश्चरन्ति बिभ्रतं वपूषि ३ २२५
 अच्छा विवक्मि रोदसी सुमेके ग्राव्णो युजानो अध्वरे मनीषा ।
 इमा उ ते मनवे भूरिवारा ऊर्ध्वा भवन्ति दर्शता यजत्राः ४
 या ते जिह्वा मधुमती सुमेधा अग्ने देवेषूच्यते उरुची ।
 तयेह विश्वा अवसे यजत्रा ना सादय पायया चा मधूनि ५
 या ते अग्ने पर्वतस्येव धारासंश्रन्ती पीपयद् देव चित्रा ।
 तामसम्यं प्रमतिं जातवेदो वसो राखं सुमतिं विश्वजन्याम् ६ २२८

॥ २३ ॥ (ऋ० ४।५५।१-१०)

(२२९-३८) वामदेवो गौतमः । त्रिष्टुप्, ८-१० गायत्री ।

को वस्त्राता वसवः को वरुता द्यावाभूमी अदिते त्रासीथां नः
 सहीयसो वरुण मित्र मर्तात् को वोऽध्वरे वरिवो धाति देवाः १ २२९
 ३ दे. (विश्वे देवाः)

प्र ये धामानि पुन्याण्यर्चान् वि यदुच्छान् वियोतारो अमूराः ।
 विधातारो वि ते दधुरजसा ऋतधीतयो रुरुचन्त दुस्साः २ २३०
 प्र पस्त्याइमदिति सिन्धुमर्कैः स्वस्तिमीळे सख्याय देवीम् ।
 उभे यथा नो अहनी निपात उषासानक्ता करतामदब्धे ३
 व्यर्यमा वरुणश्चेति पन्था—मिषस्पतिः सुवितं गातुमग्निः ।
 इन्द्राविष्णू नृवदु षु स्तवाना शर्म नो यन्तममवद् वरुथम् ४
 आ पर्वतस्य मरुतामवांसि देवस्य त्रातुरत्रि भगस्य ।
 पात् पतिर्जन्यादंहसो नो मित्रो मित्रियादुत न उरुष्येत् ५
 नू रौदसी अहिना बुध्न्येन स्तुवीत देवी अप्येभिरिष्टैः ।
 समुद्रं न संचरणे सनिष्यवो घर्मस्वरसो नद्योइ अप वन् ६
 देवैर्नो देव्यदितिर्नि पातु देवस्त्राता त्रायतामप्रयुच्छन् ।
 नहि मित्रस्य वरुणस्य धासि—मर्हामसि प्रमियं सान्वशेः ७ २३५
 अग्निरीशे वसव्यस्या—ऽग्निर्महः सौभगस्य । तान्यस्मभ्यं रासते ८
 उपो मघोन्या वह स्रुते वार्या पुरु । अस्मभ्यं वाजिनीवति ९
 तत् सु नः सविता भगो वरुणो मित्रो अर्यमा । इन्द्रो नो राधसा गमत् १० २३८

॥ २४ ॥ (ऋ० ५।२६।९)

(२३९) वसूयव आत्रेयः । गायत्री ।

एदं मरुतो अश्विना मित्रः सीदन्तु वरुणः । देवासः सर्वथा विशा ९ २३९

॥ २५ ॥ (ऋ० ५।४१।१-२०)

(२४०-२३) भौमोऽत्रिः । त्रिष्टुप्, १६-१७ अतिजगती, २० एकपदा विराट् ।

को नु वा मित्रावरुणावृतायन् दिवो वा महः पार्थिवस्य वा दे ।
 ऋतस्य वा सदसि त्रासीथां नो यज्ञायते वा पशुषो न वाजान् १ २४०
 ते नो मित्रो वरुणो अर्यमायु—रिन्द्रं ऋभुक्षा मरुतो जुषन्त ।
 नमोभिर्वा ये दधते सुवक्ति स्तोमं रुद्राय मीळहुषे सजोषाः २
 आ वां येष्ठाऽश्विना हुवध्वै वातस्य पत्नम् रथ्यस्य पुष्टौ । ३
 उत वा दिवो असुराय मन्म प्रान्धासीव यज्यवे भरध्वम् ४ २४३
 प्र सक्ष्णो दिव्यः कण्वहोता त्रितो दिवः सजोषा वातो अग्निः ।
 पूषा भगः प्रभृथे विश्वभोजा आर्जि न जग्मुराश्वतमाः

विश्वे देवाः ।

मन्त्रः २३०-२५७]

२ २३०

३

४

५

६

७ २३५

८

९ २३८

१० २३९

११

१२ २४०

१३

१४

१५

१६

प्र वो रयिं युक्ताश्च भरध्वं राय एषेऽवसे दधीत धीः ।

सुशेव एवैरौशिजस्य होता ये व एवा मरुतस्तुराणाम्

प्र वो वायुं रथयुजं कृणुध्वं प्र देवं विप्रं पनितारमकैः ।

इषुध्वं क्रतुसापः पुरंधीर्वस्त्रीर्नो अत्र पत्नीरा धिये धुः

उप व एषे वन्द्येभिः शूषैः प्र यही दिवश्चितयद्भिरकैः

उषासानक्ता विदुषीव विश्वमा हां वहतो मर्त्याय यज्ञम्

अभि वो अर्चे पोष्यावतो नृन् वास्तोष्पतिं त्वष्टारं रराणः ।

धन्या सजोषा धिषणा नमोभिर्वनस्पतीरोषधी राय एषे

तुजे नस्तने पर्वताः सन्तु स्वैतवो ये वसवो न वीराः ।

पनित आप्त्यो यजतः सदा नो वर्धान्नः शंसं नर्यो अभिष्टौ

वृष्णो अस्तोषि भूम्यस्य गर्भं त्रितो नपातमपां सुवृक्ति ।

गृणीते अग्निरतरी न शूषैः शोचिष्केशो नि रिणाति वना

कथा महे रुद्रियाय ब्रवाम कद् राये चिकितुषे भगाय ।

आप ओषधीरुत नोऽवन्तु द्यौर्वना गिरयो वृक्षकेशाः

शृणोतु न ऊर्जा पतिगिरः स नमस्तरीयां इषिरः परिज्मा ।

शृण्वन्त्वापः पुरो न शुभ्राः परि सुचो बबृहाणस्याद्रैः

विदा चिन्नु महान्तो ये व एवा ब्रवाम दस्मा वार्यं दधानाः ।

वयश्चन सुभ्वः आवं यन्ति शुभा मर्तमनुयतं वधसैः

आ दैव्यानि पार्थिवानि जन्माऽपश्चाच्छा सुमखाय वोचम् ।

वर्धन्तां द्यावो गिरश्चन्द्राग्रा उदा वर्धन्तामभिषाता अर्णाः

पदेपदे मे जरिमा नि धायि वरूत्री वा शुक्रा या पायुभिश्च ।

सिषक्तु माता मही रसा नः सत् सूरिभिर्ऋजुहस्तं ऋजुवर्निः

आ दक्षिणं नमसा सुदानूनेवया मरुतो अच्छौक्तौ प्रश्रवसो मरुतो अच्छौक्तौ ।

नोऽहिर्बुध्न्यो रिषे धादुस्माकं भूदुपमातिवर्निः

चिन्नु प्रजायै पशुमत्यै देवासो वनते मर्त्यो व आ देवासो वनते मर्त्यो वः ।

शिवां तन्वो धासिमस्या जरां चिन्मे निर्ऋतिर्जग्रसीत

देवाः सुमतिमूर्जयन्तीमिषमश्याम वसवः शसा गोः ।

सुदानुर्मूर्जयन्ती देवी प्रति द्रवन्ती सुविताय गम्याः

५

६

२४५

७

८

९

१०

११

२५०

१२

१३

१४

१५

१६

२५५

१७

१८

२५७

अभि न इळा यूथस्य माता स्मन्नदीभिर्वशी वा गृणातु ।
उर्वशी वा बृहद्दिवा गृणाना ऽभ्यूर्वाणा प्रभूथस्यायोः
सिषक्तु न ऊर्जन्यस्य पुष्टेः

१९

२०

२५९

॥ २६ ॥ (क्र० ५।४२।१-१०, १२-१८) त्रिष्टुप्, १७ एकपदा विराट् ।

प्र शंतमा वरुणं दीधिती गी—मित्रं भगमदिति नूनमश्याः ।
पृषद्योनिः पञ्चहोता शृणोत्व—तूर्तपन्था असुरो मयोभुः
प्रति मे स्तोममदितिर्जगृभ्यात् सूनुं न माता हृद्यं सुशेवम् ।
ब्रह्म प्रियं देवहितं यदस्त्य—हं मित्रे वरुणे यन्मयोभु
उदीरय कवितमं कवीना—मुनचैनमभि मध्वा घृतेन ।
स नो वसन्ति प्रयता हितानि चन्द्राणि देवः सविता सुवाति
समिन्द्र णो मनसा नेपि गोभिः सं सूरिभिर्हरिवः सं स्वस्ति ।
सं ब्रह्मणा देवहितं यदस्ति सं देवानां सुमत्या यज्ञियांनाम्
देवो भगः सविता रायो अंश इन्द्रो वृत्रस्य संजितो धनानाम् ।
क्रमुक्षा वाजं उत वा पुरंधि—रवन्तु नो अमृतांसस्तुरासः
मरुत्वतो अप्रतीतस्य जिष्णो—रजूर्यतः प्र ब्रवामा कृतानि ।
न ते पूर्वं मघवन् नापरासो न वीर्यं नृतनः कश्चनापं
उपं स्तुहि प्रथमं रत्नधेयं बृहस्पतिं सनितारं धनानाम् ।
यः शंसते स्तुवते शंभविष्ठः पुरुवसुरागमञ्जोहुवानम्
तवोतिभिः सचमाना अरिष्ठा बृहस्पते मघवानः सुवीराः ।
ये अश्वदा उत वा सन्ति गोदा ये वस्रदाः सुभगास्तेषु रायः
विसर्माणं कृणुहि वित्तमेपां ये भुञ्जते अपृणन्तो न उक्थैः ।
अपव्रतान् प्रसवे वावृधानान् ब्रह्मद्विपः सूर्याद् यावयस्व
य ओहते रक्षसो देववीता—वचक्रेभिस्तं मरुतो नि यात ।
यो वः शर्मा शशमानस्य निन्दात् तुच्छयान् कामान् करते सिष्विदानः
दमूनसो अपसो ये सुहस्ता वृष्णः पत्नीर्नद्यो विभवतृष्टाः ।
सरस्वती बृहद्दिवा त राका दशस्यन्तीर्वरिवस्यन्तु शुभ्राः
प्र स्र महे सुशरणां मेधां गिरं भरे नव्यसीं जायमानाम् ।
य आहना दुहितुर्वक्षणासु रूपा मिनानो अकृणोदिदं नः

१

२६०

२

३

४

५

६

२६५

७

८

९

१०

१२

२७०

१३

२७१

विश्वे देवाः ।
१५८-२८५]

प्र सुष्टुतिः स्तनयन्तं रुवन्तं—मिळस्पतिं जरितनूनमश्याः ।
 यो अन्दिमाँ उदनिमाँ इयतिं प्र विद्युता रोदसी उक्षमाणः
 एषः स्तोमो मारुतं शर्धो अच्छा रुद्रस्य सूनूर्युवन्नूरुदश्याः ।
 कामो राये हवते मा स्वस्त्यु—पं स्तुहि पृषदश्वाँ अयासः
 प्रैषः स्तोमः पृथिवीमन्तरिक्षं वनस्पतीरोषधी राये अश्याः ।
 देवोदेवः सुहवो भूतु मध्यं मा नो माता पृथिवी दुर्मतौ घात
 उरौ देवा अनिवाधे स्याम

१४

१५

१६

१७ २७५

समश्चिनोरवसा नूतनेन मयोभुवा सुप्रणीती गमेम ।
 आ नो रयिं वहतमोत वीरा—ना विश्वान्यमृता सौमंगानि

१८ २७६

॥ २७ ॥ (ऋ० ५।४।१-१७) त्रिष्टुप्, १६ एकपदा विराट् ।

आ धेनवः पर्यसा तूर्यथ्या अमर्धन्तीरुप नो यन्तु मध्वा ।
 महो राये बृहतीः सप्त विप्रो मयोभुवो जरिता जोहवीति
 आ सुष्टुती नमसा वर्तयध्वै द्यावा वाजाय पृथिवी अमृध्रे ।
 पिता माता मधुवचाः सुहस्ता भरेभरे नो यशसावविष्टाम्
 अर्धयवश्चकृवांसो मधूनि प्र वायवे भरत चारु शुक्रम् ।
 होतैव नः प्रथमः पाह्यस्य देव मध्वो ररिमा ते मदाय
 दश क्षिपो युञ्जते बाहू अद्रिं सोमस्य या शमितारा सुहस्ता ।
 मध्वो रसं सुगर्भस्तिर्गिरिष्ठां चनिश्चदद् दुदुहे शुक्रमंशुः
 असावि ते जुजुषाणाय सोमः क्रत्वे दक्षाय बृहते मदाय ।
 हरी रथे सुधुरा योगे अर्वा—गिन्द्र प्रिया कृणुहि हूयमानः
 आ नो महीमरमतिं सजोषा धां देवी नमसा रातहव्याम् ।
 मधोर्मदाय बृहतीमृतज्ञा—माग्रे वह पथिभिर्देवयानैः
 अञ्जन्ति यं प्रथयन्तो न विप्रा वपावन्तं नाग्निना तपन्तः ।
 पितुर्न पुत्र उपसि प्रेष्ठ आ घर्मो अग्निमृतयन्नसादि
 अच्छा मही बृहती शतमा गी—दूतो न गन्त्वश्विना हुवध्वै ।
 मयोभुवा सरथा यातमर्वा—गन्तं निधिं धुरमाणिर्न नाभिम्
 प्र तव्यसो नमउक्तिं तुरस्या—ऽहं पूष्ण उत वायोरादिक्षि ।
 या राधसा चोदितारा मतीनां या वाजस्य द्रविणोदा उत त्मन्

१

२

३

४ २८०

५

६

७

८

९ २८५

आ नामभिर्मरुतो वक्षि विश्वा—ना रूपेभिर्जातवेदो हुवानः ।
 यज्ञं गिरौ जरितुः सुष्टुतिं च विश्वे गन्त मरुतो विश्व ऊती १०
 आ नो दिवो बृहतः पर्वतादा सरस्वती यजता गन्तु यज्ञम् ।
 हवै देवी जुजुषाणा घृताचीं शग्मां नो वाचमुशती शृणोतु ११
 आ वेधसं नीलपृष्ठं बृहन्तं बृहस्पतिं सदेने सादयध्वम् ।
 सादद्योनिं दम आ दीदिवसं हिरण्यवर्णमरुपं सपेम १२
 आ धर्णसिर्बृहदित्रो रराणो विश्वेभिर्गन्त्वोमभिर्हुवानः ।
 ग्रा वसान् ओषधीरमृध—स्त्रिधातुशृङ्गो वृषभो वयोधाः १३
 मातुष्पदे परमे शुक्र आयो—र्विपन्थवो रास्पिरासो अग्मन् ।
 सुशेव्यं नमसा रातहव्याः शिशुं मृजन्त्यायवो न वासे १४ २९०
 बृहद् वयो बृहते तुभ्यमग्ने धियाजुरो मिथुनासः सचन्त ।
 देवोदेवः सुहवो भूतु मद्यं मा नो माता पृथिवी दुर्मतौ धातु १५
 उरौ देवा अनिवाधे स्याम १६
 समश्चिनोरवसा नूतनेन मयोभुवा सुप्रणीती गमेम ।
 आ नो रयिं वहतमोत वीरा—ना विश्वान्यमृता सौभंगानि १७ २९१

॥ २८ ॥ (क्र० ५।४४।१-१५)

(२९४-३०८) काश्यपोऽवत्सारः (१० क्षत्र-मनस-एवावद-यजत-सग्नि-अवत्साराः, ११ विश्ववार-
 यजत-मायी-अवत्साराः, १२ अवत्सारेण सह सदापृण-यजत-बाहुवृक्त-श्रुतवित्-
 तर्थाः, १३ सुतंभरश्च) । जगती, १४-१५ त्रिष्टुप् ।

तं प्रलथां पूर्वथा विश्वथेमथा ज्येष्ठतांति बर्हिषदं स्वर्विदम् ।
 प्रतीचीनं वृजनं दोहसे गिरा ऽऽशुं जयन्तमनु यासु वर्धसे १
 श्रिये सुदृशीरुपरस्य याः स्व—र्विरोचमानः ककुभांमचोदते ।
 सुगोपा असि न दभाय सुक्रतो परो मायाभिर्कृत आस नाम ते २ २९५
 अत्यं हविः संचते सच्च धातु चा—ऽरिष्टगातुः स होता सहोभरिः ।
 प्रसर्षाणो अतुं बर्हिर्वृषा शिशु—र्मध्ये युवाजरो विसुहा हितः ३
 प्र व एते सुयुजो यामन्निष्टये नीचीरमुष्मै यम्य क्रतावृधः ।
 सुयन्तुभिः सर्वशासैरभीशुभिः क्रिविर्नामानि प्रवणे मुषायति ४
 संजर्धराणस्तर्भुभिः सुतेगृभं वयाकिनं चित्तगर्भासु सुस्वरुः ।
 धारवाकेष्वृजुगाथ शोभसे वर्धस्व पत्नीरभि जीवो अश्वरे ५ २९८

[२८६-३११]

विश्वे देवाः ।

०

१

२

३

४

५

६

७

८

९

१०

११

१२

१३

१४

१५

यादृगेव ददृशे तादृगुच्यते सं छायायां दधिरे सिधयाप्स्वा ।

महीमसभ्यमुरुषामुरु जयौ बृहत् सुवीरमनपच्युतं सहः

वेत्यगुर्जनिवान् वा अति स्पृधः समर्यता मनसा सूर्यः कविः ।

प्रंसं रक्षन्तं परिं विश्वतो गय—मस्माकं शर्म वनवत् स्वावसुः

ज्यायांसमस्य यतुनस्य केतुनं ऋषिस्वरं चरति यासु नाम ते ।

यादृश्मिन् धायि तमपस्ययां विदुद् य उ स्वयं वहते सो अरं करत्

समुद्रमासामव तस्ये अग्रिमा न रिण्यति सर्वनं यस्मिन्नायता ।

अत्रा न हार्दिं ऋवणस्य रेजते यत्रा मतिर्विद्यते पूतवन्धनी

स हि क्षत्रस्य मनसस्य चित्तिभि—रेवावदस्य यजतस्य सध्रैः ।

अवत्सारस्य स्पृणवाम रण्वभिः शविष्ठं वाजं विदुषां चिदर्ध्वम्

स्येन आसामर्दितिः कक्षयोर् मदीं विश्ववारस्य यजतस्य मायिनः ।

समन्यमन्यमर्थयन्त्येतवे विदुर्विषाणं परिपानमन्ति ते

सदापृणो यजतो वि द्विषो वधीद् बाहुवृक्तः श्रुतवित् तयो वः सचा ।

उभा स वरा प्रत्येति भाति च यदीं गुणं भजते सुप्रयावभिः

सुतंभरो यजमानस्य सत्पति—विश्वासासूधः स धियामुदञ्चनः ।

मर्द् धेनू रसवच्छिन्त्रिये पयोऽनुब्रुवाणो अध्येति न स्वपन्

यो जागार तमृचः कामयन्ते यो जागार तमु सामानि यन्ति ।

यो जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्यौकाः

अग्निर्जागार तमृचः कामयन्ते अग्निर्जागार तमु सामानि यन्ति ।

अग्निर्जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्यौकाः

॥ २९ ॥ (ऋ० ५।४५।१-११)

(३०९-१९) सदापृण आत्रेयः । त्रिष्टुप् ।

विदा दिवो विष्यन्नद्रिमुक्थै—रायत्या उपसो अर्चिनो गुः ।

अपावृत व्रजिनीरुत् स्वर्गाद् वि दुरो मानुषीर्देव आवः

वि सूर्यो अमतिं न श्रियं सादो—वाद् गवां माता जानती गात् ।

धन्वर्णसो नद्यः खादोअर्णाः स्थणैव सुमिता दृहत द्यौः

अस्मा उक्थाय पर्वतस्य गर्भो महीनां जनुषे पूर्याय ।

वि पर्वतो जिहीत साधत् द्यौ—राविवांसन्तो दसयन्त भूमं

६

७ ३००

८

९

१०

११

१२ ३०५

१३

१४

१५ ३०८

१

२ ३१०

३ ३११

सुक्तेभिर्वो वचोभिर्देवजुष्टै—रिन्द्रा न्वग्नी अवंसे हुवध्वै ।
 उक्थेभिर्हिष्मा कवयः सुयज्ञा आविवांसन्तो मरुतो यजन्ति ४
 एतो न्वग्ध सुध्वोऽ भवाम् प्र दुच्छुनां भिनवामा वरीयः ।
 आरे द्वेषांसि सनुतदधामा—ऽयाम् प्राञ्चो यजमानमच्छ ५
 एता धियं कृणवामा सखायो ऽप या मातां ऋणुत व्रजं गोः ।
 यया मनुर्विशिशिप्रं जिगाय यया वणिग्वङ्कुरापा पुरीषम् ६
 अनूनोदत्र हस्तयतो अद्रि—रार्चन् येन दश मासो नवग्वाः ।
 ऋतं यती सरमा गा अविन्दद् विश्वानि सत्याङ्गिराश्चकार ७ ३१५
 विश्वे अस्या व्युपि माहिनायाः सं यद् गोभिरङ्गिरसो नवन्त ।
 उत्स आसां परमे सधस्थं ऋतस्थं पथा सरमा विदद् गाः ८
 आ सूर्यो यातु सप्ताश्वः क्षेत्रं यदस्योर्विया दीर्घयाथे ।
 रघुः श्येनः पतयदन्धो अच्छा युवा कविर्दीदयद् गोषु गच्छन् ९
 आ सूर्यो अरुहच्छुक्रमणो ऽयुक्त यद्वरितो वीतपृष्ठाः ।
 उद्रा न नावमनयन्त धीरा आशृण्वतीरापो अर्वागतिष्ठन् १०
 धियं वो अप्सु दधिषे स्वर्पा ययातरन् दश मासो नवग्वाः ।
 अया धिया स्याम देवगोपा अया धिया तुतुर्यामात्यंहः ११ ३१९

॥ ३० ॥ (ऋ० ५।४६।१-८)

(३२०-२७) प्रतिक्षत्र आत्रेयः । (७-८ देवपत्न्यः) । जगती; २, ८ त्रिष्टुप् ।

हयो न विद्रा अयुजि स्वयं धुरि तां वहामि प्रतरणीमवस्युवम् ।
 नास्या वश्मि विमुचं नावृतं पुनर्विद्वान् यथः पुरएत ऋजु नैषति १ ३२०
 अग्र इन्द्र वरुण मित्र देवाः शर्धः प्र यन्त मारुतो विष्णो ।
 उभा नासत्या रुद्रो अध गाः पूषा भगः सरस्वती जुषन्त २
 इन्द्राग्नी मित्रावरुणादिति स्वः पृथिवीं द्यां मरुतः पर्वता अपः ।
 हुवे विष्णुं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं भगं नु शंसं सवितारमूतये ३
 उत नो विष्णुरुत वातो अस्त्रिधो द्रविणोदा उत सोमो मयस्करत् ।
 उत क्रमव उत राये नो अश्विनो—त त्वष्टेत विश्वानु मंसते ४
 उत त्यन्नो मारुतं शर्ध आ गमद् दिविक्षयं यजत बहिरासदे । ५ ३२४
 बृहस्पतिः शर्म पूषो नो यमद् वरुथ्यं वरुणो मित्रो अर्यमा

४

५

६

७

८

९

०

१

२

३

४

५

६

७

८

उत त्ये नः पर्वतासः सुशस्तयः सुदीतयो नद्यस्त्रामणे भुवन् ।

भगो विभक्ता शवसावसा गमदुरुव्यचा अदितिः श्रोतु मे हवम्

देवानां पत्नीरुशतीरिवन्तु नः प्रावन्तु नस्तुजये वाजसातये ।

याः पार्थिवासो या अपामर्षि व्रते ता नो देवीः सुहवाः शर्म यच्छत

उत प्रा व्यन्तु देवपत्नीरिन्द्राण्यग्राय्यश्विनी राट् ।

आ रोदसी वरुणानी शृणोतु व्यन्तु देवीर्य ऋतुर्जनीनाम्

॥ ३१ ॥ (ऋ० ५।४७।१-७)

(३२८-३४) प्रतिरथ आत्रेयः । त्रिष्टुप् ।

प्रयुञ्जती दिव एति जुवाणा मही माता दुहितुर्वोधयन्ती ।

अविवासन्ती युवतिर्मनीषा पितृभ्य आ सदेने जोहुवाना

अजिरासस्तदप ईयमाना आतस्थिवांसो अमृतस्य नाभिम् ।

अन्तास उरवो विश्वतः सी परि द्यावापृथिवी यन्ति पन्थाः

उक्षा समुद्रो अरुषः सुपर्णः पूर्वस्य योनिं पितुरा विवेश ।

मध्ये दिवो निहितः पृश्निरश्मा वि चक्रमे रजसस्पात्यन्तौ

चत्वार ई विभ्रति क्षेमयन्तो दश गर्भं चरसे धापयन्ते ।

त्रिधातवः परमा अस्य गावो दिवश्चरन्ति परि सद्यो अन्तान्

इदं वपुर्निवचनं जनासश्चरन्ति यन्नघस्तस्थुरापः ।

द्वे यदी विभृतो मातुरन्ये इहेह जाते यम्याइ सर्वन्धू

वि तन्वते धियो अस्मा अपांसि वस्त्रा पुत्राय मातरो वयन्ति ।

उपप्रक्षे वृषणो मोदमाना दिवस्पथा वध्वो यन्त्यच्छ

तदस्तु मित्रावरुणा तदग्रे शं योरस्मभ्यमिदमस्तु शस्तम्

अशीमहि गाधमुत प्रतिष्ठां नमो दिवे बृहते सादनाय

॥ ३२ ॥ (ऋ० ५।४८।१-५)

(३३५-३९) प्रतिभानुरात्रेयः । जगती ।

कदु प्रियाय धाम्ने मनामहे स्वर्क्षत्राय स्वयंशसे महे वयम् ।

अमेन्यस्य रजसो यदुभ्र आ अपो वृणाना वितनोति मायिनी

ता अक्षत वयुनं वीरवक्षणं समान्या वृतया विश्वमा रजः ।

अपो अपाचीरपरा अपैजते प्र पूर्वाभिस्तिरते देवयुर्जनः

४ दे. (विश्वे देवाः)

आ प्रावभिरहन्त्येभिरक्तुभिर्वरिष्ठं वज्रमा जिघर्ति मायिनि ।
 शतं वा यस्य प्रचरन्त्स्वे दमे संवर्तयन्तो वि च वर्तयन्नाहा
 तामस्य रीतिं परशोरिव प्रत्यनीकमुख्यं भुजे अस्य वर्षसः ।
 सचा यदि पितुमन्तामिव क्षयं रत्नं दधाति भरहूतये विशे
 स जिह्वया चतुरनीक ऋज्जते चारु वसानो वरुणो यतन्नरिम् ।
 न तस्य विद्म पुरुषत्वता वयं यतो भगः सविता दाति वार्यम्

॥ ३३ ॥ (ऋ० ५।४९।१-५)

(३४०-४४) प्रतिप्रभ आत्रेयः, (५ तृणपाणिः) । त्रिष्टुप् ।

देवं वो अद्य सवितारमेधे भगं च रत्नं विभजन्तमायोः ।
 आ वो नरा पुरुभुजा ववृत्यां दिवेदिवे चिदश्विना सखीयन्
 प्रति प्रयाणमसुरस्य विद्रा—न्त्सूक्तैर्देवं सवितारं दुवस्य ।
 उप ब्रवीत नमसा विज्ञान—ज्येष्ठं च रत्नं विभजन्तमायोः
 अदत्रया दयते वार्याणि पूषा भगो अदितिर्वस्त उस्तः ।
 इन्द्रो विष्णुर्वरुणो मित्रो अग्नि—रहानि भद्रा जैनयन्त दुस्माः
 तन्नो अनर्वा सविता वरुथं तत् सिन्धव इषयन्तो अनु गमन् ।
 उप यद् वोचै अध्वरस्य होता रायः स्याम पतयो वाजरत्नाः
 प्र ये वसुभ्य ईवदा नमो दु—र्ये मित्रे वरुणे सूक्तवाचः ।
 अवैत्वभ्वं कण्ठता वरीयो दिवस्पृथिव्योरवसा मदेम

॥ ३४ ॥ (ऋ० ५।५०।१-५)

(३४५-६०) स्वस्त्यात्रेयः । अनुष्टुप्, ५ पङ्क्तिः ।

विश्वो देवस्य नेतु—र्मतो वुरीत सख्यम् । विश्वो राय इषुष्यति द्युमं वृणीत पुष्यसे १
 ते ते देव नेत—र्ये चेमां अनुशसे । ते राया ते ह्याइपृचे सचेमहि सचथ्यैः २
 अतो न आ नृनर्तिथी—नतः पत्नीर्दिशस्यत । ३
 आरे विश्वं पथेष्ठां द्विषो युंयोतु यूयुविः
 यत्र वह्निरभिहितो दुद्रवद् द्रोण्यः पशुः । नृमणा वीरपस्त्वो ऽर्णा धीरेव सनिता ४
 एष ते देव नेता रथस्पतिः शं रायिः ।
 शं राये शं स्वस्तय इषःस्तुतो मनामहे देवस्तुतो मनामहे

[विश्वे देवाः]

॥ ३५ ॥ (ऋ० ५।५।१-३, ८-१५)

१-३ गायत्री; ८-१० उष्णिक्; ११-१३ जगती त्रिष्टुप्; १४-१५ अनुष्टुप् ।

३ अये सुतस्य पीतये विश्वैरुर्मभिरा गहि । देवेभिर्हव्यदातये १ ३५०
 ऋतवीतय आ गत सत्यधर्माणो अध्वरम् । अयेः पिबत जिह्या २
 ४ विप्रैर्विप्र सन्त्य प्रातर्यावभिरा गहि । देवेभिः सोमपीतये ३
 सजृविश्वेभिर्देवेभि रश्विभ्यामुषसा सजृः । आ याह्यग्रे अत्रिवत् सुते रण ८
 ५ सजृमित्रावरुणाभ्यां सजृः सोमेन विष्णुना । आ याह्यग्रे अत्रिवत् सुते रण ९
 सजृरादित्यैर्वसुभिः सजृरिन्द्रेण वायुना । आ याह्यग्रे अत्रिवत् सुते रण १० ३५५
 स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः ।

स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुनां ११

स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहे सोम स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः । १२

वृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तये आदित्यासो भवन्तु नः १३

विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये । १४

देवा अवन्तवृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः १५

स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति । १६

स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि १७

स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव । पुनर्ददुताम्रता जानता सं गमेमहि १८ ३६०

॥ ३६ ॥ (ऋ० ६।१।९, ११)

(३६१-६२) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

प्रोतये वरुणं मित्रमिन्द्रं मरुतः कृष्वावसे नो अद्य ।

प्र पूषणं विष्णुमग्निं पुरंधिं सवितारमोषधीः पर्वतांश्च ९

नम आ वाचमुप याहि विद्वान् विश्वेभिः सूनो सहसो यजत्रैः ।

ये अग्निजिह्वा ऋतसाप आसुर्ये मनुं चक्रुरुपरं दसाय ११ ३६२

॥ ३७ ॥ (ऋ० ६।४।१-१५)

(३६३-४२५) ऋजिश्वा भारद्वाजः । त्रिष्टुप्, १५ शकरी ।

स्तुषे जनं सुव्रतं नव्यसीभिर्गीर्भिर्मित्रावरुणा सुम्रयन्ता ।

त आ गमन्तु त इह श्रुवन्तु सुक्षत्रासो वरुणो मित्रो अग्निः १

विशोविश ईज्यमध्वरे ष्वदसक्रतुमरति युवत्योः ।

दिवः शिशुं सहसः सूनुमग्निं यज्ञस्य केतुभरुषं यजध्वै २ ३६४

अरुषस्य दुहितरा विरूपे स्तुभिरन्या पिपिशे सरो अन्या ।
 मिथस्तुरा विचरन्ती पावके मन्म श्रुतं नक्षत क्रुच्यमाने
 प्र वायुमच्छा बृहती मनीषा बृहद्रथि विश्ववारं रथप्राप्तम् ।
 द्युतद्यामा नियुतः पत्यमानः कविः कविर्मियक्षसि प्रयज्यो
 स मे वपुच्छदयदुश्चिनोर्यो रथो विरुक्मान् मनसा युजानः ।
 येन नरा नासत्येष्यध्यै वर्तियार्थस्तनयाय त्मने च
 पर्जन्यवाता वृषभा पृथिव्याः पुरीषाणि जिन्वतमप्यानि ।
 सत्यश्रुतः कवयो यस्य गीर्भिर्जगतः स्यातर्जगदा कृणुध्वम्
 पावीरवी कन्या चित्रायुः सरस्वती वीरपत्नी धियं धात् ।
 ग्राभिरच्छिद्रं शरणं सजोषा दुराधर्षं गृणते शर्म यंसत्
 पथस्पथः परिपति वचस्या कामेन कृतो अभ्यानल्लर्कम् ।
 स नो रासच्छुरुधश्चन्द्राग्रा धियं धियं सीषधाति प्र पूषा
 प्रथमभाजं यशसं वयोधां सुपाणिं देवं सुगमं स्तिमृभ्वम् ।
 होता यक्षद् यजतं पस्त्याना मग्निस्त्वष्टारं सुहवं विभावा
 भुवनस्य पितरं गीर्भिराभी रुद्रं दिवा वर्धया रुद्रमक्तौ ।
 बृहन्तमृष्वमजरं सुषुम्न मृधग्धुवेम कविर्नैषितासः
 आ युवानः कवयो यज्ञियासो मरुतो गन्त गृणतो वरस्याम् ।
 अचित्रं चिद्धि जिन्वथा वृधन्त इत्था नक्षन्तो नरो अङ्गिरस्वत्
 प्र वीराय प्र तवसे तुराया ऽजा यूथेव पशुरक्षिरस्तम् ।
 स पिस्पृशति तन्वि श्रुतस्य स्तुभिर्न नाकं वचनस्य विषः
 यो रजांसि विममे पार्थिवानि त्रिश्चिद् विष्णुर्मनवे बाधिताय ।
 तस्य ते शर्मन्नुपदुद्यमाने राया मदेम तन्वाइ तना च
 तन्नोऽर्हिर्बुध्न्यो अद्भिरकैस्तत् पर्वतस्तत् सविता चनो धात् ।
 तदोषधीभिर्नामि रातिषाचो भगः पुरंधिर्जिन्वतु प्र राये
 नृ नो रयि रथ्यं चर्षणिप्रां पुरुवीरं मह क्रतस्य गोपाम् ।
 क्षयं दाताजरं येन जना न्तस्पृधो अदेवीरभि च क्रमाम्
 विश्व आदेवीरभ्यश्नवाम

३

३६५

४

५

६

७

८

३७०

९

१०

११

१२

१३

३७५

१४

१५

३७७

॥ ३८ ॥ (ऋ० ६।५०।१-१५) त्रिष्टुप् ।

३	३६५	हुवे वाँ देवीमर्दिंति नमोभिर्मृळीकाय वरुणं मित्रमग्निम् ।	
४		अभिषदामर्यमणं सुशेवं त्रातृन् देवान्तसंवितारं भगं च	१
५		सुज्योतिषः सूर्यं दक्षपितृन् ननागास्त्वे सुमहो वीहि देवान् ।	
६		द्विजन्मानो य ऋतसापः सत्याः सर्वन्तो यजता अग्निजिह्वाः	२
७		उत द्यावापृथिवी क्षत्रमुरु बृहद् रोदसी शरणं सुषुम्ने ।	
८	३७०	महस्करथो वरिवो यथा नो ऽस्मे क्षयाय धिषणे अनेहः	३ ३८०
९		आ नो रुद्रस्य सूनवो नमन्तामद्या हुतासो वसवोऽधृष्टाः ।	
१०		यदीमर्भे महति वा हितासो बाधे मरुतो अहाम देवान्	४
११		मिम्यक्ष येषु रोदसी नु देवी सिषक्ति पूषा अभ्यर्धयज्वा ।	
१२	३७१	श्रुत्वा हवं मरुतो यद्ध याथ भूमा रेजन्ते अध्वनि प्रवित्ते	५
१३		अभि त्यं वीरं गिर्वणसमर्चेन्द्रं ब्रह्मणा जरितुर्नवेन ।	
१४		श्रवदिद्वमुप च स्तवानो रासद् वाजो उप महो गृणानः	६
१५		ओमानमापो मातृषीरमृक्तं धातं तोकाय तनयाय शं योः ।	
१६		यूयं हि ष्ठा भिषजो मातृतमा विश्वस्य स्थातुर्जगतो जनित्रीः	७
१७		आ नो देवः संविता त्रायमाणो हिरण्यपाणिर्यजतो जगम्यात् ।	
१८	३७५	यो दत्तवाँ उषसो न प्रतीकं व्यूर्णते दाशुषे वार्याणि	८ ३८५
१९		उत त्वं सूनो सहसो नो अद्या देवाँ अस्मिन्ध्वरे ववृत्त्याः ।	
२०		स्यामहं ते सदमिद् रातौ तव स्यामग्नेऽवसा सुवीरः	९
२१	३७५	उत त्या मे हवमा जगम्यातं नास्त्या धीभिर्युवमङ्ग विप्रा ।	
२२		अत्रि न महस्तमसोऽमुमुक्तं तूर्वेतं नरा दुरितादुर्भीके	१०
२३		ते नो रायो द्युमतो वाजवतो दातारो भूत नृवतः पुरुक्षोः ।	
२४		दशस्यन्तो दिव्याः पार्थिवासो गोजाता अप्या मृळता च देवाः	११
२५	३७७	ते नो रुद्रः सरस्वती सजोषा मीळहुष्मन्तो विष्णुर्मृळन्तु वायुः ।	
२६		ऋभुक्षा वाजो दैव्यो विधाता पर्जन्यावाता पिप्यतामिषं नः	१२
२७		उत स्य देवः संविता भगो नो ऽपां नपादवतु दानु पप्रिः ।	
२८		त्वष्टा देवेभिर्जनिभिः सजोषा द्यौर्देवेभिः पृथिवी समुद्रैः	१३ ३९०

उत नोऽर्हिर्बुध्न्यः शृणो—त्वज एकपात् पृथिवी समुद्रः ।
 विश्वे देवा क्रतावृधो हुवानाः स्तुता मन्त्राः कविश्रस्ता अवन्तु
 एवा नपातो मम तस्य धीमि—भरद्वाजा अभ्यर्चन्त्यकैः ।
 ग्रा हुतासो वसवोऽधृष्टा विश्वे स्तुतासो भूता यजत्राः

१४

१५ ३९२

॥ ३९ ॥ (ऋ० ६।५।१-१६) त्रिष्टुप्, १३-१५ उष्णिक्, १६ अनुष्टुप् ।

उदु त्यच्चक्षुर्महि मित्रयोराँ एति प्रियं वरुणयोरदब्धम् ।
 ऋतस्य शुचिं दर्शतमनीकं रुक्मो न दिव उदिता व्यद्यौत्
 वेदु यस्त्रीणि विदथान्येषां देवानां जन्म सनुतरा च विप्रः ।
 ऋजु मर्तेषु वृजिना च पश्यन्नाभि चष्टे सरो अर्थ एवान्
 स्तुष उ वो मह ऋतस्य गोपा—नदिति मित्रं वरुणं सुजातान् ।
 अर्यमणं भगमदब्धधीती—नच्छा वोचे सध्न्यः पावकान्
 रिशादसः सत्पताँरदब्धान् महो राज्ञः सुवसनस्य दातृन् ।
 यूनेः सुक्षत्रान् क्षयतो दिवो नृ—नादित्यान् याम्यदिति दुवोयु
 द्यौऽग्निपतः पृथिवि मातरधु—गग्ने आतर्वसवो मुळता नः ।
 विश्व आदित्या अदिते सजोषां अस्मभ्यं शर्म बहुलं वि यन्त
 मा नो वृकाय वृक्ये समसा अघायते रीरधता यजत्राः ।
 यूयं हि ष्ठा रथ्यो नस्तनूनां यूयं दक्षस्य वचसो बभूव
 मा व एनो अन्यकृतं भुजेम मा तत् कर्म वसवो यच्चयध्वे ।
 विश्वस्य हि क्षयथ विश्वदेवाः स्वयं रिपुस्तन्वं रीरिषीष्ट
 नम इदुग्रं नम आ विवासे नमो दाधार पृथिवीमुत द्याम् ।
 नमो देवेभ्यो नम ईश एषां कृतं चिदेनो नमसा विवासे
 ऋतस्य वो रथ्यः पूतदक्षा—नृतस्य पस्त्यसदो अदब्धान् ।
 ताँ आ नमोभिरुचक्षसो नृन् विश्वान्व आ नमे महो यजत्राः
 ते हि श्रेष्ठवर्चसस्त उ न—स्तिरो विश्वानि दुरिता नयन्ति ।
 सुक्षत्रासो वरुणो मित्रो अग्नि—ऋतधीतयो वक्मराजसत्याः
 ते न इन्द्रः पृथिवी क्षाम वर्धन् पूषा भगो अदितिः पञ्च जनाः ।
 सुशर्माणः स्ववसः सुनीथा भवन्तु नः सुत्रात्रासः सुगोपाः

१

२

३ ३९५

४

५

६

७

८ ४००

९

१०

११ ४०३

३९१-४२१]

नू सन्नानं दिव्यं नंशि देवा भारद्वाजः सुमतिं याति होता ।

आसानेभिर्यजमानो मियेधैर्देवानां जन्म वसुयुर्ववन्द १२

अप त्यं वृजिनं रिपुं स्तेनमग्रे दुराध्यम् । दुविष्टमस्य सत्पते कृधी सुगम् १३ ४०५

प्राणः सोम नो हि कै सखित्वनाय वावशुः । जही न्यत्रिणं पुंणि वृको हि षः १४

युयं हि ष्ठा सुदानव इन्द्रज्येष्ठा अभिद्यवः । कर्ता नो अध्वन्ना सुगं गोपा अमा १५

अपि पन्थामगन्महि स्वस्तिगामनेहसम् । येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु १६ ४०८

॥ ४० ॥ (ऋ० ६।५२।१-१७) त्रिष्टुप्, ७-१२ गायत्री, १४ जगती ।

न तद् दिवा न पृथिव्यानु मन्ये न यज्ञेन नोत शमीभिराभिः ।

उज्जन्तु तं सुभ्वः पर्वतासो नि हीयतामति याजस्य यष्टा १

अति वा यो मरुतो मन्यते नो ब्रह्म वा यः क्रियमाणं निनित्सात् ।

तपुषि तस्मै वृजिनानि सन्तु ब्रह्मद्विषमभि तं शौचतु द्यौः २ ४१०

किमङ्ग त्वा ब्रह्मणः सोम गोपां किमङ्ग त्वाहुरभिशस्तिपां नः ।

किमङ्ग नः पश्यसि निद्यमानान् ब्रह्मद्विषे तपुषि हेतिमस्य ३

अवन्तु मामुपसो जायमाना अवन्तु मा सिन्धवः पिन्वमानाः ।

अवन्तु मा पर्वतासो ध्रुवासो ऽवन्तु मा पितरो देवहूतौ ४

विश्वदानीं सुमनसः स्याम पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम् ।

तथा करद् वसुपतिर्वसूनां देवाँ ओहानोऽवसागमिष्ठः ५

इन्द्रो नेदिष्ठमवसागमिष्ठः सरस्वती सिन्धुभिः पिन्वमाना ।

पर्जन्यो न ओषधीभिर्मयोभु रग्निः सुशंसः सुहवः पितेव ६

विश्वे देवास आ गत शृणुता म इमं हवम् । एदं बर्हिर्नि षीदत ७ ४१५

यो वो देवा घृतस्नुना हव्येन प्रतिभूषति । तं विश्व उप गच्छथ ८

उप नः सूनवो गिरः शृण्वन्त्वमृतस्य ये । सुमृच्छीका भवन्तु नः ९

विश्वे देवा क्रतावृध क्रतुभिर्हवनश्रुतः । जुषन्तां युज्यं पर्यः १०

स्तोत्रमिन्द्रो मरुद्गणस्त्वष्टमान् मित्रो अर्यमा । इमा हव्या जुषन्त नः ११

इमं नो अग्ने अध्वरं होतर्वयुनशो यज । चिकित्वान् दैव्यं जनम् १२ ४२०

विश्वे देवाः शृणुतेमं हवं मे ये अन्तरिक्षे य उप द्यवि ष्ठा ।

ये अग्निजिह्वा उत वा यजत्रा आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वम् १३ ४२१

विश्वे देवा मम शृण्वन्तु यज्ञिया उभे रोदसी अपां नपाञ्च मन्म ।
 मा वो वचांसि परिचक्ष्याणि वोचं सुमेध्विद् वो अन्तमा मदेम १४
 ये के च ज्मा मुहिनो अहिमाया दिवो जज्ञिरे अपां सधस्ये ।
 ते अस्मभ्यमिषये विश्वमायुः क्षप उसा वरिवस्यन्तु देवाः १५
 अग्नीपर्जन्याववतं धियं मे ऽस्मिन् हवै सुहवा सुष्टुति नः ।
 इळामन्यो जनयद् गर्भमन्यः प्रजावतीरिष आ धत्तमस्से १६
 स्तीर्णे बहिषि समिधाने अग्नौ सूक्तेन महा नमसा विवासे ।
 अस्मिन् नो अद्य विदथे यजत्रा विश्वे देवा हविषि मादयध्वम् १७ ४२५

॥ ४१ ॥ (ऋ० ७।३४।१-१५, १८-२५)

(४२६-५०८) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । द्विपदा विराट्, २२-२५ त्रिष्टुप् ।

प्र शुक्रैतु देवी मनीषा अस्मत् सुतष्टो रथो न वाजी १
 विदुः पृथिव्या दिवो जनित्रं शृण्वन्त्यापो अध क्षरन्तीः २
 आपश्चिदस्मै पिन्वन्त पृथ्वी-वृत्रेषु शूरा मंसन्त उग्राः ३
 आ धूर्वस्मै दधाताश्वा-निन्द्रो न वृज्री हिरण्यवाहुः ४
 अभि प्र स्थाताहैव यज्ञं यातेव पद्मन् त्मना हिनोत ५ ४३०
 त्मना समत्सु हिनोत यज्ञं दधात केतुं जनाय वीरम् ६
 उदस्य शुष्माद् भानुर्नार्ति विभर्ति भारं पृथिवी न भूमं ७
 ह्वयामि देवा अयातुरग्रे साधन्नुतेन धियं दधामि ८
 अभि वो देवी धियं दधिध्वं प्र वो देवत्रा वाचं कृणुध्वम् ९
 आ चष्ट आसां पाथो नदीनां वरुण उग्रः सहस्रचक्षाः १० ४३५
 राजां राष्ट्रानां पेशो नदीनां मनुत्तमस्मै क्षत्रं विश्वायुं ११
 अविष्टो अस्मान् विश्वासु विक्ष्व-द्युं कृणोत शंसं निनित्सोः १२
 व्येतु दिद्युद् द्विषामश्नैवा युयोत विष्वग्रपस्तनूनाम् १३
 अवीन्नो अग्निर्हव्यान्नमोभिः प्रेष्टो अस्मा अधायि स्तोमः १४
 सजृद्वैवेभिर्पां नपातं सखायं कृध्वं शिवो नो अस्तु १५ ४४०
 उत न एषु नृषु श्रवो धुः प्र राये यन्तु शर्धन्तो अर्यः १६
 तपन्ति शत्रुं स्वर्णं भूमा महासेनासो अमेभिरेषाम् १७
 आ यन्नः पत्नीर्गमन्त्यच्छा त्वष्टा सुपाणिर्दधातु वीरान् २० ४४३

वेधे देवाः ।

४२२-४५७]

प्रति नः स्तोमं त्वष्टा जुषेत स्यादुस्मे अरमतिर्वसुयुः
 ता नो रासन् रातिषाचो वसू न्या रोदसी वरुणानी शृणोतु ।
 वरुणीभिः सुशरणो नो अस्तु त्वष्टा सुदत्रो वि दधातु रायः
 तन्नो रायः पर्वतास्तन्न आप स्तद् रातिषाच ओषधीरुत द्यौः ।
 वनस्पतिभिः पृथिवी सजोषा उभे रोदसी परि पासतो नः
 अनु तदुर्वी रोदसी जिहाता मनु द्युक्षो वरुण इन्द्रसखा ।
 अनु विश्वे मरुतो ये सहासो रायः स्याम धरुणं धियध्वै
 तन्न इन्द्रो वरुणो मित्रो अग्नि राप ओषधीर्वनिनो जुषन्त ।
 शर्मन्स्याम मरुतामुपस्थं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

२१

२२ ४४५

२३

२४

२५ ४४८

॥ ४२ ॥ (ऋ० ७।३५।१-१५) त्रिष्टुप् ।

शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या ।
 शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रावपुषणा वाजसातौ
 शं नो भगः शम्भु नः शंसो अस्तु शं नः पुरंधिः शम्भु सन्तु रायः ।
 शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु
 शं नो धाता शम्भु धर्ता नो अस्तु शं न उरुची भवतु स्वधार्मिः ।
 शं रोदसी वृद्धती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु
 शं नो अग्निज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शम् ।
 शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभि वातु वातः
 शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृश्ये नो अस्तु ।
 शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः
 शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः ।
 शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलापः शं नस्त्वष्टा आभिरिह शृणोतु
 शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शम्भु सन्तु यज्ञाः ।
 शं नः स्वरुणां मितयो भवन्तु शं न प्रस्वः शम्भुस्तु वेदिः
 शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु ।
 शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शम्भु सन्त्वार्षः
 शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः ।
 शं नो विष्णुः शम्भु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्भुस्तु वायुः

१

२ ४५०

३

४

५

६

७ ४४५

८

९ ४५७

५ [दे० विश्वेदेवाः]

शं नो देवः सविता त्रायमाणः	शं नो भवन्तूषसो विभातीः ।	
शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः	शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शुंभुः	१०
शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु	शं सरस्वती सह धीभिरस्तु ।	
शमभिषाचः शमु रातिषाचः	शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः	११
शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु	शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः ।	
शं नः ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः	शं नो भवन्तु पितरो हवेषु	१२ ४६०
शं नो अज एकपाद् देवो अस्तु	शं नोऽहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः ।	
शं नो अपां नपात् पेरुरस्तु	शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा	१३
आदित्या रुद्रा वसवो जुषन्ते	दं ब्रह्म क्रियमाणं नवीयः ।	
शृण्वन्तु नो दिव्याः पार्थिवासो	गोजाता उत ये यज्ञियासः	१४
ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां	मनोर्यजत्रा अमृतां क्रतुज्ञाः ।	
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य	यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	+ १५ ४६१

॥ ४३ ॥ (ऋ० ७।३६।१-९)

प्र ब्रह्मैतु सदनादृतस्य	वि रश्मिभिः ससृजे सूर्यो गाः ।	
वि सानुना पृथिवी संस्र उर्वी	पृथु प्रतीक्रमध्येधे अग्निः	१
इमां वा मित्रावरुणा सुवृकित	मिषं न कृण्वे असुरा नवीयः ।	
इनो वामन्यः पदवीरदब्धो	जनं च मित्रो यतति ब्रुवाणः	२ ४६५
आ वातस्य ध्रजतो रन्त इत्या	अपीपयन्त धेनवो न सदाः ।	
महो दिवः सदेने जायमानो	ऽर्चिक्रदद् वृषभः सस्मिन्नूधन्	३
गिरा य एता युनजद्वरीं त	इन्द्रं प्रिया सुरथा शूर धायू ।	
प्र यो मन्युं रिरिक्षतो मिना	त्या सुकृतुमयमणं ववृत्याम्	४
यजन्ते अस्य सख्यं वयश्च	नमस्विनः स्व क्रतस्य धामन् ।	
वि पृक्षो वावधे नृभिः स्तवान	इदं नमो रुद्राय प्रेष्ठम्	५
आ यत् साकं यशसो वावशानाः	सरस्वती सप्तथी सिन्धुमाता ।	
याः सुष्वयन्त सुदुधाः सुधारा	अभि स्वेन पयसा पीप्यानाः	६
उत त्ये नो मरुतो मन्दसाना	धियं तोकं च वाजिनोऽवन्तु ।	
मा नः परि ख्यदक्षरा चर	न्त्यवीवृधन् युज्यं ते रयिं नः	७ ४७०

+ ऋ० ७, ३५, १-१५ = अथर्व० १९, १०, १-१०; ११, १-५ ।

प्र वो महीमरमतिं कृणुध्वं प्र पूषणं विदुध्यं न वीरम् ।
भगं धियोऽवितारं नो अस्याः सातौ वाजं रातिपाचं पुरंधिम्
अच्छायं वो मरुतः श्लोक एत्वच्छा विष्णुं निषिक्तपामवोभिः ।
उत प्रजायै गृणते वयो धुर्य्यं पात स्वस्तिभिः सदा नः

॥ ४४ ॥ (ऋ० ७।३७।१-८)

आ वो वाहिष्ठो बहतु स्तवध्यै रथो वाजा ऋभुक्षणो अमृक्तः ।
अभि त्रिपुष्टैः सर्वनेषु सोमैर्मदे सुशिप्रा महभिः पृणध्वम्
युयं ह रत्नं मघवत्सु धत्थ स्वर्दशं ऋभुक्षणो अमृक्तम् ।
सं यज्ञेषु स्वधावन्तः पिबध्वं वि नो राधांसि मतिभिर्दयध्वम्
उवोचिथ हि मघवन् दुष्णं सहो अर्भस्य वसुनो विभागे ।
उभा तै पूर्णा वसुना गर्भस्ती न सूनृता नि यमते वसव्यां
त्वमिन्द्र स्वयंशा ऋभुक्षा वाजो न साधुरस्तमेभ्युक्ता ।
वयं नु तै दाश्वासः स्याम ब्रह्म कृण्वन्तो हरिवो वसिष्ठाः
सनितासि प्रवतो दाशुषे चिद् याभिर्विवेषो हर्यश्च धीभिः ।
ववन्मा नु ते युज्याभिरुती कदा न इन्द्र राय आ दशस्येः
वासयसीव वेधसस्त्वं नः कदा न इन्द्र वचसो बुबोधः ।
अस्तं तात्या धिया रयि सुवीरं पृक्षो नो अर्वा न्युहीत वाजी
अभि यं देवी निर्ऋतिश्चिदीशे नक्षन्त इन्द्रं शरदः सुपृक्षः ।
उप त्रिवन्धुर्जरदष्टिमेत्यस्ववेशं यं कृण्वन्त मतीः
आ नो राधांसि सवितः स्तवध्या आ रायो यन्तु पर्वतस्य रातौ ।
सदा नो दिव्यः प्रायुः सिषक्तु युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

॥ ४५ ॥ (ऋ० ७।३९।१-७)

ऊर्ध्वो अग्निः सुमतिं वस्वो अश्रेत् प्रतीची जूर्णिर्देवतातिमेति ।
भेजाते अद्री रथ्यैव पन्था—मृतं होता न इषितो यजाति
प्र वावृजे सुप्रया बहिरेषा—मा विष्पतीं वीरिणं इयाते ।
विशामक्तोरुषसः पूर्वहूतौ वायुः पूषा स्वस्तये नियुत्वान्
जमया अत्र वसवो रन्त देवा उरावन्तरिक्षे मर्जयन्त शुभ्राः ।
अर्वाक् पथ उरुजयः कृणुध्वं श्रोता दूतस्य जग्मुषो नो अस्य

ते हि यज्ञेषु यज्ञियांस ऊमाः सधस्थं विश्वे अभि सन्ति देवाः ।
तां अध्वर उग्रतो यक्ष्यमे श्रुष्टी भगं नासत्या पुरंधिम
आग्ने गिरीं दिव आ प्रथिव्या मित्रं वह वरुणमिन्द्रमग्निम् ।
आर्यमणमदितिं विष्णुमेषां सरस्वती मरुतो मादयन्ताम्
ररे हव्यं मतिभिर्यज्ञियांनां नक्षत् कामं मर्त्यानामसिन्वन् ।
धाता रयिमविदुस्यं सदासां संक्षीमहि युज्येभिर्तु देवैः
नू रोदसी अभिष्टुते वसिष्ठैः कृतावानो वरुणो मित्रो अग्निः ।
यच्छन्तु चन्द्रा उपमं नो अर्कं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

॥ ४६ ॥ (७१८०१-६) +

ओ श्रुष्टिर्विदुष्याइ समेतु प्रति स्तोमं दधीमहि तुराणाम् ।
यदद्य देवः सविता सुवाति स्यामांस्य रत्तिनो विभागे
मित्रस्तन्नो वरुणो रोदसी च द्युभक्तमिन्द्रो अर्यमा ददातु ।
दिदेष्टु देव्यदिति रेकर्णो वायुश्च यन्नियुवैते भगश्च
सेदुग्रो अस्तु मरुतः स शुष्मी यं मर्त्यं पृषदश्वा अवाथ ।
उतेमग्निः सरस्वती जुनन्ति न तस्य रायः पर्येतास्ति
अयं हि नेता वरुण कृतस्य मित्रो राजानो अर्यमापो धुः ।
सुहवा देव्यदितिरनर्वा ते नो अंहो अति पर्षन्नरिष्टान्
अस्य देवस्य मीळ्हृषो वया विष्णोरिषस्य प्रभृथे हविभिः
विदे हि रुद्रो रुद्रियं महित्वं यासिष्टं वर्तिरश्विनाविरावत्
मात्रं पूषन्नाघृण हरस्यो वरुत्री यद् रातिपाचश्च रासन् ।
मयोभ्रुवो नो अर्वन्तो नि पान्तु वृष्टिं परिज्मा वातो ददातु

॥ ४७ ॥ (क्र० ७१८११) जगती । ×

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना ।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम

॥ ४८ ॥ (क्र० ७१८११-६) त्रिष्टुप् ।

प्र ब्रह्माणो अङ्गिरसो नक्षन्त प्र क्रन्दनुर्नभन्यस्य वेतु ।
प्र धेनवं उदुप्रतो नवन्त युज्यातामद्रीं अध्वरस्य पेशः

+ क्र० ७,४०,७ = क्र० ७,३९,७ । × क्र० ७१८११ = अथर्व० ३।१६।१

विश्व देवाः ।

४८४-५०७]

४

५

६

७

१

२

३

४

५

६

७

८

९

१०

सुगस्ते अग्ने सनवित्तो अध्वा युक्ष्वा सुते हरितो रोहितश्च ।
 ये वा सन्नरुषा वीरुवाहो हुवे देवानां जनिमानि सत्तः
 सप्त वो यज्ञं महयन् नमोभिः प्र होता मन्द्रो रिरिच उपाके ।
 यजस्व सु पूर्वणीक देवाना यज्ञियांमरमतिं ववृत्याः
 यदा वीरस्य रेवतो दुरोणे स्योनशीरतिथिराचिकेतत् ।
 सुप्रीतो अग्निः सुधितो दम आ स विशे दाति वार्यमिथ्यै
 इमं नो अग्ने अध्वरं जुषस्व मरुत्स्विन्द्रै यशसं कृधी नः ।
 आ नक्ता बर्हिः सदतामुषासो शन्ता मित्रावरुणा यजेह
 एवाग्निं सहस्यं वसिष्ठो रायस्कामो विश्वप्सन्यस्य स्तौत् ।
 इषं रयिं पप्रथद् वाजमस्मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

॥ ४९ ॥ (ऋ० ७।४३।१-५)

प्र वो यज्ञेषु देवयन्तो अर्चन् द्यावा नमोभिः पृथिवी इषध्वै ।
 येषां ब्रह्माण्यसमानि विप्रा विश्वग्नियन्ति वनिनो न शाखाः
 प्र यज्ञ एतु हेत्वो न सप्ति रुद्यच्छध्वं समनसो घृताचीः ।
 स्तृणीत बर्हिरध्वराय साधूध्वा शोचीषि देवयून्यस्थुः
 आ पुत्रासो न मातरं विभृत्राः सानौ देवासो बर्हिषः सदन्तु ।
 आ विश्वाची विदुध्यामनक्त्वग्ने मा नो देवताता मृधस्कः
 ते सीषपन्त जोषमा यजत्रा ऋतस्य धाराः सुदुघा दुहानाः ।
 ज्येष्ठो वो अद्य मह आ वसन्ता मा गन्तन् समनसो यतिष्ठ
 एवा नो अग्ने विक्ष्वा दशस्य त्वयो वयं सहसावन्नास्काः ।
 राया युजा सधमादो अरिष्टा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

॥ ५० ॥ (ऋ० ७।४४।१) जगती ।

दधिका वः प्रथममश्विनोषसं मग्निं समिद्धं भगमूतये हुवे ।
 इन्द्रं विष्णुं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं मादित्यान् द्यावापृथिवी अपः स्वः

॥ ५१ ॥ (ऋ० ७।४८।४) त्रिष्टुप् ।

न देवासो वरिवः कर्तना नो भूत नो विश्वेऽवसे सजोषाः ।
 समस्मे इषं वसवो ददीरन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

॥ ५२ ॥ (ऋ० ७।५०।३) जगती ।

यच्छलमलौ भवति यन्नदीषु यदोषधीभ्यः परि जायते विषम् ।
विश्वे देवा निरितस्तत् सुवन्तु मा मां पथेन रपसा विदुत् त्सरुः

३ ५०८

॥ ५३ ॥ (ऋ० ८।२५।१०-१२)

(५०९-५११) विश्वमना वैयश्वः । उष्णिक् ।

उत नो देव्यदिति—रुष्यतां नासत्या । उरुष्यन्तु मरुतो वृद्धशंसः १०
ते नो नावमुरुष्यत दिवा नक्तं सुदानवः । अरिष्यन्तो नि पायुभिः सचेमहि ११ ५१०
अघ्नते विष्णवे वय—मरिष्यन्तः सुदानवे । श्रुधि स्वयावन्तिसन्धो पूर्वचित्तये १२ ५११

॥ ५४ ॥ (ऋ० ७।२७।१-२२)

(५१२-५२) मनुर्वैवस्वतः । प्रगाथः = (विषमा बृहती+समा सतोबृहती) ।

अग्निरुक्थे पुरोहितो ग्रावाणो बर्हिरध्वरे ।
ऋचा यामि मरुतो ब्रह्मणस्पतिं देवाँ अग्नो वरेण्यम् १
आ पशुं गांसि पृथिवीं वनस्पतीं—नुपासा नक्तमोषधीः ।
विश्वे च नो वसवो विश्ववेदसो धीनां भूत प्रावितारः २
प्र स्र न एत्वध्वरोऽग्ने ऽग्ना देवेषु पूर्यः ।
आदित्येषु प्र वरुणे धृतव्रते मरुत्सु विश्वमानुषु ३
विश्वे हि ष्मा मनवे विश्ववेदसो भुवन् वृधे रिशादंसः ।
अरिष्टेभिः पायुभिर्विश्ववेदसो यन्ता नोऽवृकं छर्दिः ४ ५१५
आ नो अघ समनसो गन्ता विश्वे सजोषसः ।
ऋचा गिरा मरुतो देव्यदिते सदनं पस्त्ये महि ५
अभि प्रिया मरुतो या वो अक्षया हव्या मित्र प्रयाथनं ।
आ बर्हिरिन्द्रो वरुणस्तुरा नर आदित्यासः सदन्तु नः ६
वयं वो वृक्तबर्हिषो हितप्रयस आनुषक् ।
सुतसोमासो वरुण हवामहे मनुष्वदिद्वाग्रयः ७
आ प्र यातु मरुतो विष्णो अश्विना पूषन् माकीनया धिया ।
इन्द्र आ यातु प्रथमः सनिष्युभिर्वृषा यो वृत्रहा गृणे ८
वि नो देवासो अद्रुहो ऽच्छिद्रं शर्म यच्छत ।
न यद् दूराद् वसवो नू चिदन्तितो वरुथमादधर्षति ९ ५१०

विश्वे देवाः ।

पन्नाः ५०८-५३४ ।

३

५०८

अस्ति हि वः सजात्यै रिशादसो देवासो अस्त्याप्यम् ।

प्र णः पूर्वस्मै सुविताय वोचत मक्षू सुम्नाय नव्यसे

१०

इदा हि व उपस्तुति—मिदा वामस्य भक्त्यै ।

उप वो विश्ववेदसो नमस्यु—राँ असृक्ष्यन्यामिव

११

उदु ष्य वः सविता सुप्रणीतयो ऽस्थादूर्ध्वो वरेण्यः ।

नि द्विपादश्चतुष्पादो अर्थिनो ऽविश्रन् पतयिष्णवः

१२

देवदेवं वोऽवसे देवदेवमभिष्टये ।

देवदेवं हुवेम वाजसातये गृणन्तो देव्या धिया

१३

देवासो हि ष्मा मनवे समन्यवो विश्वे साकं सरातयः ।

ते नो अय ते अपरं तुचे तु नो भवन्तु वरिवोविदः

१४ ५२५

प्र वः शंसाम्यद्रुहः संस्थ उपस्तुतीनाम् ।

न तं धूर्तिर्वरुण मित्र मर्त्य यो वो धामभ्योऽविधत्

१५

प्र स क्षयं तिरते वि महीरिषो यो वो वराय दाशति ।

प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्पर्य—रिष्टः सर्व एधते

१६

ऋते स विन्दते युधः सुगेभिर्यात्यध्वनः ।

अर्यमा मित्रो वरुणः सरातयो यं त्रायन्ते सजोषसः

१७

अज्ञे चिदस्मै कृणुथा न्यञ्चनं दुर्गे चिदा सुसरणम् ।

एषा चिदस्मादुशनिः परो नु सास्त्रेधन्ती वि नश्यतु

१८

यदुद्य सूर्य उद्यति प्रियक्षत्रा ऋतं दुध ।

यन्निमुचि प्रबुधि विश्ववेदसो यद् वा मध्यंदिने दिवः

१९ ५३०

यद् वाभिपित्वे असुरा ऋतं यते छुर्दियेम वि द्राशुषे ।

वयं तद् वो वसवो विश्ववेदसु उप स्थेयाम मध्य आ

२०

यदुद्य सूर उर्दिते यन्मध्यंदिन आतुचि ।

वामं धृत्थ मनवे विश्ववेदसो जुह्वानाय प्रचेतसे

२१

वयं तद् वः सम्राज आ वृणीमहे पुत्रो न बहुपाय्यम् ।

अश्याम तदादित्या जुह्वतो हवि—र्येन वस्योऽनशामहे

२२ ५३३

ये त्रिंशति त्रयस्पुरो देवासो बहिरासदन् । विदन्नह द्वितासन्नन्

१ ५३४

॥ ५१ ॥ (ऋ० ८।२८।१-५) गायत्री, ४ पुरउष्णिक् ।

वरुणो मित्रो अर्यमा स्मद्रातिषाचो अग्रयः । पत्नीवन्तो वर्षट्कृताः
ते नो गोपा अपाच्यास्त उदुक्त इत्था न्यक् । पुरस्तात् सर्वया विशा
यथा वशन्ति देवास्तथेदसत् तदेषां नकिरा मिनत् । अरावा चन मर्त्यैः
सप्तानां सप्त ऋष्टयः सप्त द्युम्नान्येषाम् । सप्तो अधि श्रियो धिरे

२ ५३५
३
४
५ ५३८

॥ ५६ ॥ (ऋ० ८।२९।१-१०)

(कश्यपो वा मारीचः) । द्विपदा विराट् ।

वभ्रुरेको विषुणः सूनरो युवाङ्ग्यङ्क्ते हिरण्ययम् ।
योनिमेक आ संसाद द्योतनो ऽन्तर्देवेषु मेधिरः
वाशीमेको विभर्ति हस्त आयसीमन्तर्देवेषु निधुविः ।
वज्रमेको विभर्ति हस्त आर्हितं तेन वज्राणि जिघ्रते
तिग्ममेको विभर्ति हस्त आयुधं शुचिरुग्रो जलापभेषजः
पथ एकः पीपाय तस्करो यथा एष वेद निधीनाम्
त्रीण्येकं उरुगायो वि चक्रमे यत्र देवासो मदन्ति ।
विभिर्द्वा चरत एकया सह प्र प्रवासेव वसतः
सदो द्वा चक्राते उपमा दिवि सम्राजा सर्पिरासुती ।
अर्चन्त एके महि साम मन्वत तेन सूर्यमरोचयन्

१। २ ५४०
३
४ २।
५
६ ३।
७ ५४५
८ ४।
९
१० ५४८

॥ ५७ ॥ (ऋ० ८।३०।१-४)

१ गायत्री, २ पुरउष्णिक्, ३ बृहती, ४ अनुष्टुप् ।

नहि वो अस्त्यर्भको देवासो न कुमारकः । विश्वे सतोमहान्त इत्
इति स्तुतासो असथा रिशादसो ये स्थ त्रयश्च त्रिंशच्च । मनोर्देवा यज्ञियासः
ते नस्त्राध्वं तैऽवत् त उ नो अधि वोचत ।
मा नः पथः पित्र्यान्मानवाधे दूरं नैष्ट परावतः
ये देवास इह स्थन् विश्वे वैश्वानरा उत ।
अस्मभ्यं शर्म सप्रथो गवेऽश्वाय यच्छत

१
२ ५५०
३
४ ५५१

॥ ५८ ॥ (ऋ० ८।५४ [वाल० ६] ३-४)

(५५३-५४) मातरिश्वा काण्वः । प्रगाथः = (विषमा बृहती+समा सतोबृहती)

आ नो विश्वे सजोषसो देवासो गन्तनोष नः ।
वसवो रुद्रा अवसे न आ गमञ्छुष्वन्तु मरुतो हवम्

३ ५५३

पूषा विष्णुर्हवन्तं मे सरस्वत्यवन्तु सप्त सिन्धवः ।

आपो वातः पर्वतासो वनस्पतिः शृणोतु पृथिवी हवम्

४ ५५४

॥ ५९ ॥ (ऋ० ८।१८ [वाल० १०] । १-३)

(५५५-१७) मेध्यः काण्वः । (१ ऋत्विजो वा) । त्रिष्टुप् ।

यमृत्विजो बहुधा कल्पयन्तः सचेतसो यज्ञमिमं वहन्ति ।

यो अनूचानो ब्राह्मणो युक्त आसीत् का स्वित् तत्र यजमानस्य संवित्

१ ५५५

एक एवाग्निर्बहुधा समिद्ध एकः सूर्यो विश्वमनु प्रभूतः ।

एकैवोषाः सर्वमिदं वि भा—त्येकं वा इदं वि बभूव सर्वम्

२

ज्योतिष्मन्तं केतुमन्तं त्रिचक्रं सुखं रथं सुषदं भूरिवारम् ।

चित्रामघा यस्य योगेऽधिजज्ञे तं वा हुवे अति रिक्तं पिबध्वे

३ ५५७

॥ ६० ॥ (ऋ० ८।६९।११ [पूर्वार्धः])

(५५८) प्रियमेध आङ्गिरसः । पंक्तिः ।

अपादिन्द्रो अपादग्निर्विश्वे देवा अमत्सत ।

११ ५५८

॥ ६१ ॥ (ऋ० ८।८३।१-९)

(५५९-६७) कुसीदी काण्वः । गायत्री ।

देवानामिदवो महत् तदा वृणीमहे वयम् । वृष्णामसभ्यमृतये

१

ते नः सन्तु युजः सदा वरुणो मित्रो अर्यमा । वृधासश्च प्रचेतसः

२ ५६०

अति नो विष्पिता पुरु नौभिरपो न पर्षथ । यूयमतस्य रथ्यः

३

वामं नो अस्त्वर्यमन् वामं वरुण शंस्यम् । वामं ह्यवृणीमहे

४

वामस्य हि प्रचेतस ईशानासो रिशादसः । नेमादित्या अघस्य यत्

५

वयमिद् वः सुदानवः क्षियन्तो यान्तो अध्वन्ना । देवा वृधाय हूमहे

६

अधि न इन्द्रैषां विष्णो सजात्यानाम् । इता मरुतो अश्विना

७ ५६५

प्र भ्रातृत्वं सुदानवो ऽध्वं द्विता समान्या । मातुर्गर्भे भरामहे

८

युयं हि ष्ठा सुदानव इन्द्रज्येष्ठा अभिद्यवः । अघा चिद् व उत ब्रुवे

९ ५६७

॥ ६२ ॥ (ऋ० १०।३१।१-११)

(५६८-७९) कवप पेल्लषः । त्रिष्टुप् ।

आ नो देवानामुप वेतु शंसो विश्वेभिस्तुरैरवसे यजत्रः ।

तेभिर्वयं सुषखायो भवेम तरन्तो विश्वा दुरिता स्याम

१ ५६८

६ तै. (विश्वे देवाः)

परि चिन्मर्तो द्रविणं ममन्या—दृतस्य पथा नमसा विवासेत् ।
 उत खेन क्रतुना सं वदेत्—श्रेयांसं दक्षं मनसा जगृभ्यात्
 अधायि धीतिरसंसृगमंशा—स्तीर्थे न दुस्समुप यन्त्युमाः ।
 अभ्यानश्म सुवितस्य शूषं नवेदसो अमृतानामभूम
 नित्यश्वाकन्यात् स्वपतिर्दमूना यस्मा उ देवः संविता जजान ।
 भगो वा गोभिर्यमेमनज्यात् सो अस्मै चारुश्छदयदुत स्यात्
 इयं सा भूया उपसामिव क्षा यद्ध क्षुमन्तः शवसा समायन् ।
 अस्य स्तुतिं जेतुमिक्षमाणा आ नः शग्मास उप यन्तु वाजाः
 अस्येदेषा समतिः पप्रथाना ऽभवत् पूव्या भूमना गौः ।
 अस्य सनीळा असुरस्य योनौ समान आ भरणे विभ्रमाणाः
 किं स्विद्वनं क उ स वृक्ष आस यतो द्यावापृथिवी निष्ठतक्षुः ।
 संतस्थाने अजरे इत ऊती अहानि पूर्वीरुपसो जरन्त
 नैतावदेना परो अन्यदे—स्त्युक्षा स द्यावापृथिवी विभर्ति ।
 त्वचं पवित्रं कृणुत स्वधावान् यदीं सूर्यं न हरितो वहन्ति
 स्तेगो न क्षामत्येति पृथ्वीं मिहं न वातो वि हं वाति भूमं ।
 मित्रो यत्र वरुणो अज्यमानो ऽग्निर्वने न व्यसृष्ट शोकम्
 स्तरीर्यत् स्रत सद्यो अज्यमाना व्यथिरव्यथीः कृणुत स्वगोपा ।
 पुत्रो यत् पूर्वः पित्रोर्जनिष्ठ शम्यां गौर्जगार यद्ध पृच्छान्
 उत कण्वं नृषदः पुत्रमाहु—रुत श्यावो धनमादत्त वाजी ।
 प्र कृण्णाय रुशदपिन्वतोध—ऋतमत्र नकिरस्मा अपीपेत्

॥ ६३ ॥ (ऋ० १०।३३।१)

प्र मा युयुज्रे प्रयुजो जनानां वहामि स्म पूषणमन्तरेण ।
 विश्वे देवासो अघ मामरक्षन् दुःशासुरागादिति घोषं आसीत्

॥ ६४ ॥ (ऋ० १०।३५।१-१४)

(५८०-६०७) लुशो घानाकः । जगती, १३-१४ त्रिष्टुप् ।

अबुध्रमु त्य इन्द्रवन्तो अग्रयो ज्योतिर्भरन्त उपसो व्युष्टिषु ।
 मही द्यावापृथिवी चैततामपो ऽद्या देवानामव आ वृणीमहे

[विश्वे देवाः]

		दिवस्पृथिव्योश्च आ वृणीमहे मातृन्तिसन्धून् पर्वताञ्छर्यणावतः ।	
२		अनागास्त्वं सूर्यमुषासमीमहे भद्रं सोमः सुवानो अद्या कृणोतु नः	२
३	५७०	द्यावा नो अद्य पृथिवी अनागसो मही त्रायेतां सुविताय मातरा ।	३
४		उषा उच्छन्त्यप वाधतामघं स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे	४
५		इयं न उस्मा प्रथमा सुदेव्यं रेवत् सनिभ्यो रेवती व्युच्छतु ।	५
६		आरे मन्थुं दुर्विद्वत्स्य धीमहि स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे	६
७		प्र याः सिस्रते सूर्यस्य रश्मिभिर्ज्योतिर्भरन्तीरुषसो व्युष्टिषु ।	७
८		भद्रा नो अद्य श्रवसे व्युच्छत स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे	८
९		अनमीवा उषस आ चरन्तु न उदग्रयो जिहतां ज्योतिषा बृहत् ।	९
१०		आयक्षातामश्विना तूतुर्जिं रथं स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे	१०
११		श्रेष्ठं नो अद्य सवितर्वरेण्यं भागमा सुव स हि रत्नधा असि ।	११
१२	५७५	रायो जनित्रीं धिषणासुषं ब्रुवे स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे	१२
१३		पिपर्तु मा तद्वत्स्यं प्रवाचनं देवानां यन्मनुष्याः अमन्महि ।	१३
१४		विश्वा इदुस्ताः स्पृष्टुर्देति सूर्यः स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे	१४
१५		अद्रेषो अद्य बर्हिषः स्तरीषणि प्राव्णां योगे मन्मनः साधं ईमहे ।	१५
१६		आदित्यानां शर्मणि स्था भुरण्यसि स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे	१६
१७		आ नो बर्हिः संधमादे बृहादिवि देवाँ ईळे सादयां सप्त होतृन् ।	१७
१८		इन्द्रं मित्रं वरुणं सातये भगं स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे	१८
१९	५७८	त आदित्या आ गता सर्वतातये वृधे नो यज्ञमवता सजोषसः ।	१९
२०		बृहस्पतिं पूषणमश्विना भगं स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे	२०
२१		तन्नो देवा यच्छत सुप्रवाचनं छुर्दिरादित्याः सुभरं नृपाय्यम् ।	२१
२२	५७९	पक्षे तोकाय तनयाय जीवसे स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे	२२
२३		विश्वे अद्य मरुतो विश्वं ऊनी विश्वे भवन्त्वग्रयः समिद्धाः ।	२३
२४		विश्वे नो देवा अवसा गमन्तु विश्वमस्तु द्रविणं वाजो अस्मे	२४
२५	५८०	यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं त्रायध्वे यं पिपृथात्यंहः ।	२५
२६		यो वो गोपीथे न भयस्य वेद ते स्याम देववीतये तुरासः	२६

॥ ६५ ॥ (ऋ० १०।३६।१-१४)

उषासानक्ता बृहती सुपेशसा द्यावाक्षामा वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 इन्द्रं हुवे मरुतः पर्वता अप आदित्यान् द्यावापृथिवी अपः स्वः १
 द्यौश्च नः पृथिवी च प्रचेतस क्रतावरी रक्षतामहसो रिषः ।
 मा दुर्विदत्रा निर्ऋतिर्न ईशत तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे २ ५९५
 विश्वस्मान्नो अदितिः पात्वंहसो माता मित्रस्य वरुणस्य रेवतः ।
 स्वर्वज्ज्योतिरमृकं नशीमहि तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे ३
 ग्रावा वदन्नप रक्षांसि सेधतु दुष्ण्वग्र्यं निर्ऋतिं विश्वमत्रिणम् ।
 आदित्यं शर्म मरुतामशीमहि तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे ४
 एन्द्रो बर्हिः सदिदतु पिन्वतामिळा बृहस्पतिः सामभिर्ऋको अर्चतु ।
 सुप्रकेतं जीवसे मन्म धीमहि तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे ५
 दिविस्पृशं यज्ञमस्माकमश्विना जीराध्वरं कणुतं सुम्नामिष्टये ।
 प्राचीनरश्मिमाहुतं घृतेन तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे ६
 उप ह्वये सुहवं मारुतं गणं पावकमुष्वं सख्यायं शंशुवम् ।
 रायस्पोषं सौश्रवसायं धीमहि तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे ७ ६००
 अपां पेरुं जीवधन्यं भरामहे देवाव्यं सुहवमध्वरश्रियम् ।
 सुरश्मिं सोममिन्द्रियं यमीमहि तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे ८
 सनेम तत् सुसनिता सनिस्त्वभिर्व्यं जीवा जीवपुत्रा अनागसः ।
 ब्रह्मद्विपो विष्णुगेनो भरेरत तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे ९
 ये स्था मनोर्यज्ञियास्ते शृणोतन् यद् वो देवा ईमहे तद् ददातन ।
 जैत्रं क्रतुं रयिमद् वीरवद्यशस्तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे १०
 महदद्य महतामा वृणीमहे ऽवो देवानां बृहतामनर्वणाम् ।
 यथा वसु वीरजातं नशांमहे तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे ११
 महो अग्नेः समिधानस्य शर्मण्यनागा मित्रे वरुणे स्वस्तये ।
 श्रेष्ठे स्याम सवितुः सवीमनि तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे १२ ६०५
 ये सवितुः सत्यसवस्य विश्वे मित्रस्य व्रते वरुणस्य देवाः ।
 ते सौभगं वीरवद् गोमदमो दधातन् द्रविणं चित्रमस्मे १३ ६०६

सविता पश्चात्तात् सविता पुरस्तात् सवितोत्तरात्तात् सविताधुरात्तात् ।
सविता नः सुवतु सर्वतांति सविता नो रासतां दीर्घमायुः

१४ ६०७

॥ ६६ ॥ (क्र० १०।५२।१-६)

(६०८-१३) सौवीकोऽग्निः । त्रिष्टुप् ।

विश्वे देवाः शास्तन मा यथेह होता वृतो मनवै यन्निपद्यं ।

प्र मे व्रत भागधेयं यथा वो येन पथा हव्यमा वो वहानि

अहं होता न्यसीदुं यजीयान् विश्वे देवा मरुतो मा जुनन्ति ।

अहरहरश्चिनाध्वर्यवं वां ब्रह्मा समिद् भवति साहुतिर्वाम्

अयं यो होता किरु स यमस्य कमप्युहे यत् समञ्जन्ति देवाः ।

अहरहर्जायते मासिमास्य—था देवा दधिरे हव्यवाहम्

मां देवा दधिरे हव्यवाह—मपम्लुक्तं बहु कृच्छ्रा चरन्तम् ।

अग्निर्विद्वान् यज्ञं नः कल्पयाति पञ्चयामं त्रिवृतं सप्ततन्तुम्

आ वो यक्ष्यमृतत्वं सुवीरं यथा वो देवा वरिवः कराणि ।

आ बाह्वोर्वज्रमिन्द्रस्य धेया—मथेमा विश्वाः पृतना जयाति

त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं त्रिशच्च देवा नवं चासपर्यन् ।

औक्षन् घृतैरस्तृणन् बहिरैस्मा आदिद्धोतारं न्यसादयन्त

॥ ६७ ॥ (क्र० १०।५६।१-७)

(६१४-२०) बृहदुक्तो वामदेव्यः । त्रिष्टुप्, ४-६ जगती ।

इदं त एकं पुर ऊं त एकं तृतीयेन ज्योतिषा सं विशस्व ।

संवशने तन्वोश्चारुरेधि प्रियो देवानां परमे जनित्रे

तनूष्टे वाजिन् तन्वो नयन्ती वाममस्मभ्यं धातु शर्म तुभ्यम् ।

अहुतो महो धरुणाय देवान् दिवीव ज्योतिः स्वमा मिमीयाः

वाज्यसि वाजिनेना सुवेनीः सवितः स्तोमं सवितो दिवै गाः ।

सवितो धर्मं प्रथमानु सत्या सवितो देवान्तसवितोऽनु पत्नं

सहिभ्र एषां पितरश्चनेशिरे देवा देवेष्वंदधुरपि क्रतुम् ।

समविष्यचुरुत यान्यत्विषु—रैषां तनूषु नि विविशुः पुनः

सहोभिर्विश्वं परि चक्रमू रजः पूर्वा धामान्यमिता मिमानाः ।

तनूषु विश्वा भुवना नि यैमिरे प्रासारयन्त पुरुध प्रजा अनु

द्विधा सुनवोऽसुरं स्वविदुः—मास्थापयन्त तृतीयेन कर्मणा ।
स्वां प्रजां पितरः पितृभ्यः सह आवरेष्वदधुस्तन्तुमातृतम्
नावा न क्षोदः प्रादिशः पृथिव्याः स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा ।
स्वां प्रजां बृहदुक्त्यो महित्वा ऽऽ वरेष्वदधादा परेषु

॥ ६८ ॥ (ऋ० १०।५७।१-६)

(६२१-२६) बन्धुः श्रुतबन्धुर्गौपायनाः । गायत्री ।

मा प्र गां पृथो वयं मा यज्ञादिन्द्र सोमिनः । मान्तः स्थुर्नो अरातयः
यो यज्ञस्य प्रसाधनं—स्तन्तुर्देवेष्वततः । तमाहुतं नशीमहि
मनो न्वा हुवामहे नाराशंसेन सोमैः । पितृणां च मन्मभिः
आ त एतु मनः पुनः कृत्वे दक्षाय जीवसे । ज्योक् च सूर्यं दृशे
पुनर्नः पितरो मनो ददातु दैव्यो जनः । जीवं त्रात सचेमहि
वयं सोम व्रते तव मनस्तनूषु विश्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि

॥ ६९ ॥ (ऋ० १०।६१।१-२७)

(६२७-६०) नामानेदिष्टो मानवः । त्रिष्टुप् ।

इदमित्था रौद्रे गूर्तवंचा ब्रह्म कृत्वा शच्यामन्तराजौ ।
क्राणा यदस्य पितरा मंहनेष्ठाः पर्षत् पृथगे अहन्ना सप्त होतृन्
स इद् दानाय दभ्याय वन्व—ञ्च्यानः सदैरमिमीत वेदिम् ।
तूर्वयाणो गूर्तवंचस्तमः क्षोद्रो न रेत इत ऊति सिञ्चत्
मनो न येषु हवनेषु तिग्मं विपः शच्या वनुथो द्रवन्ता ।
आ यः शर्याभिस्तुविनुष्णो अस्या—ऽश्रीणीतादिशं गर्भस्तौ
कृष्णा यद् गोष्वरुणीषु सीदद् दिवो नपाताश्विना हुवे वाम् ।
वीतं मे यज्ञमा गतं मे अन्नं ववन्वांसा नेषमस्मृतधू
प्रथिष्ट यस्य वीरकर्ममिष्ण—दनुष्ठितं नु नयो अपौहत् ।
पुनस्तदा बृहति यत् कनाया दुहितुरा अनुभृतमनुर्वा
मुध्या यत् कर्त्तव्यमभवदुर्भाके कामं कृष्णाने पितरि युवत्याम् ।
मनानग्रेतो जहतुर्वियन्ता सानौ निषिक्तं सुकृतस्य योनौ
पिता यत् स्वां दुहितरमधिष्कन् क्षमया रेतः संजग्मानो नि पिञ्चत् ।
स्वाध्याऽजनयन् ब्रह्म देवा वास्तोष्पतिं व्रतपां निरतक्षन्

[विश्वे देवाः ।]

६

स ई वृषा न फेनमस्यद्राजौ सदा परैदपं दुभ्रचेताः ।

८

७

६२०

सरत् पदा न दक्षिणा परावृड् न ता नु मे पृशन्थो जगृभ्रे
मक्षू न वह्निः प्रजाया उपब्धि रग्नि न नृग उप सीदुदुधः ।

९

६३५

सनितेध्मं सनितोत वाजं स धर्ता जज्ञे सहसा यवीयुत्
मक्षू कनायाः सख्यं नवग्वा ऋतं वदन्त ऋतयुक्तिमगमन् ।

१०

१

द्विर्वहसो य उप गोपमागु रदक्षिणासो अच्युता दुदुक्षन्
मक्षू कनायाः सख्यं नवीयो राधो न रेत ऋतमित् तुरण्यन् ।

११

२

शुचि यत् ते रेकण आयजन्त सवर्दुधायाः पर्य उस्त्रियायाः
पश्वा यत् पश्वा वियुता बुधन्ते ति ब्रवीति वृक्ती रराणः ।

१२

४

वसोर्वसुत्वा कारवोऽनेहा विश्वं विवेष्टि द्रविणमुप क्षु

५

६२५

तदिन्वस्य परिपदानो अगमन् पुरु सदन्तो नार्पदं विभित्सन् ।

१३

६

६२६

वि शुष्णस्य संग्रथितमनर्वा विदत् पुरुप्रजातस्य गुहा यत्
भगौ ह नामोत यस्य देवाः स्वर्ण ये त्रिषधस्थे निषेदुः ।

१४

६४०

१

अग्निर्ह नामोत जातवेदाः श्रुधी नो होतऋतस्य होताधुक्
उत त्या मे रौद्रावर्चिमन्ता नासत्याविन्द्र गूर्तये यजध्वै ।

१५

२

मनुष्वद् वृक्तवर्हिषे रराणा मन्दू हितप्रयसा विश्वु यज्यु
अयं स्तुतो राजा वन्दि वेधा अपश्च विप्रस्तरति स्वसेतुः ।

१६

३

स कक्षीवन्तं रेजयत् सो अग्नि नेमि न चक्रमवतो रघुद्रु
स द्विवन्धुर्वैतरणो यष्टा सवर्धु धेनुमस्वै दुहध्वै ।

१७

४

६३०

सं यन्मित्रावरुणा वृञ्ज उक्थै ज्यैष्ठेभिर्यमणं वरुथैः
तद्वन्धुः सूरिर्दिवि ते धियंघा नाभानेर्दिष्टो रपति प्र वेनन् ।

१८

५

सा नो नाभिः परमास्य वा घाऽहं तत् पश्वा कतिथश्चिदास
इयं मे नाभिरिह मे सधस्थः मिमे मे देवा अयमास्मि सर्वैः ।

१९

६४५

६

द्विजा अहं प्रथमजा ऋतस्येदं धेनुरदुहजायमाना
अधासु मन्द्रो अरतिर्विभावा ऽव स्यति द्विवर्तनिर्वनेषाट् ।

२०

७

६३३

ऊर्ध्वा यच्छेणिर्न शिशुर्दन् मक्षू स्थिरं शैवृधं सूत माता
अधा गाव उपमाति कनाया अनु श्रान्तस्य कस्य चित् परैयुः ।

२१

६४७

शुधि त्वं सुद्रविणो नस्त्वं या काश्चघ्नस्य वावृधे सूनृताभिः

अध त्वमिन्द्र विद्वद्युस्मान्	महो राये नृपते वज्रबाहुः ।	
रक्षा च नो मघोनः पाहि सुरी	ननेहसस्ते हरिवो अभिष्टौ	२२
अध यद् राजाना गविष्टौ	सरत् सरण्युः कारवे जरण्युः ।	
विप्रः प्रेष्ठः स ह्येषां बभूव	परां च वक्षदुत पर्षदेनान्	२३
अधा न्वस्य जेन्यस्य पुष्टौ	वृथा रेभन्त ईमहे तद् नु ।	
सरण्युरस्य सूनुरश्चो	विप्रश्चासि श्रवसश्च सातौ	२४ ६५०
युवोर्यदि सख्यायासे	शर्धाय स्तोमं जुजुषे नमस्वान् ।	
विश्वत्र यस्मिन्ना गिरः समीचीः	पूर्वीव गातुर्दाशत् सूनृतायै	२५
स गृणानो अद्भिर्देववानिति	सुबन्धुर्नमसा सूक्तैः ।	
वर्धेदुक्त्यैर्वचोभिरा हि नूनं	व्यध्वैति पयस उस्त्रियायाः	२६
त ऊ पु णो महो यजत्रा	भूत देवास ऊतये सजोषाः ।	
ये वाजा अनयता वियन्तो	ये स्था निचेतारो अमूराः	२७ ६५३

॥ ७० ॥ (ऋ० १०।३।१-७)

(१-६ अङ्गिरसो वा) । ५ अनुष्टुप् ; प्रगाथः = (६ बृहती ७ सतोबृहती) ।

ये यज्ञेन दक्षिणया समक्ता	इन्द्रस्य सख्यममृतत्वमान्श ।	
तेभ्यो भद्रमङ्गिरसो वो अस्तु	प्रति गृभ्णीत मानवं सुमेधसः	१
य उदाजन् पितरो गोमयं वस्वृ	तेनाभिन्दन् परिवत्सरे वल्गम् ।	
दीर्घायुत्वमङ्गिरसो वो अस्तु	प्रति गृभ्णीत मानवं सुमेधसः	२ ६५५
य क्रतेन सूर्यमारोहयन् दिव्य	प्रथयन् पृथिवी मातरं वि ।	
सुप्रजास्त्वमङ्गिरसो वो अस्तु	प्रति गृभ्णीत मानवं सुमेधसः	३
अयं नाभा वदति वल्गु वो गृहे	देवपुत्रा ऋषयस्तच्छृणोतन ।	
सुब्रह्मण्यमङ्गिरसो वो अस्तु	प्रति गृभ्णीत मानवं सुमेधसः	४
विरूपास इदृष्यस्त इद् गम्भीरवेपसः ।		
ते अङ्गिरसः सूनवस्ते अग्नेः परि जज्ञिरे		५
ये अग्नेः परि जज्ञिरे	विरूपासो दिवस्परि ।	
नवग्वो नु दशग्वो अङ्गिरस्तमः	सचा देवेषु मंहते	६
इन्द्रेण युजा निः सृजन्त वाघतो	व्रजं गोमन्तमश्विनम् ।	
सहस्रं मे ददतो अष्टकर्ण्यः	श्रवो देवेष्वकृत	७ ६६०

॥ ७१ ॥ (ऋ० १०।६३।१-१४, १७)

(६६१-९१) गयः स्नातः । जगती, १७ त्रिष्टुप् ।

परावतो ये दिधिषन्त आप्यं मनुप्रीतासो जनिमा विवस्वतः ।
 युयातेयं नहुष्यस्य बर्हिषि देवा आसन्ते ते अधि ब्रुवन्तु नः । १
 विश्वा हि वो नमस्यानि वन्द्या नामानि देवा उत यज्ञियानि वः ।
 ये स्य जाता अदितेरस्यस्परि ये पृथिव्यास्ते म इह श्रुता हवम् २
 येभ्यो माता मधुमत् पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्विबर्हाः ।
 उक्थशुष्मान् वृषभरान्तस्वभसस्ताँ आदित्याँ अनु मदा स्वस्तये ३
 नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद् देवासो अमृतत्वमानशुः ।
 ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वृष्मणिं वसते स्वस्तये ४
 सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययु रपरिहृता दधिरे दिवि क्षयम् ।
 ताँ आ विवासु नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्याँ अदितिं स्वस्तये ५ ६६५
 को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे देवासो मनुषो यतिष्ठन् ।
 को वोऽध्वरं तुविजाता अरं करद् यो नः पर्षदत्यंहः स्वस्तये ६
 येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः समिद्धाग्निर्मनसा सप्त होत्राभिः ।
 त आदित्या अमयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त सुपथा स्वस्तये ७
 य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः ।
 ते नः कृतादकृतादेनसस्पर्यद्या देवासः पिपृता स्वस्तये ८
 भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहेऽहोमुचं सुकृतं दैव्यं जनम् ।
 अग्निं मित्रं वरुणं सातये भगं द्यावापृथिवी मरुतः स्वस्तये ९
 सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम् ।
 दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये १० ६७०
 विश्वे यजत्रा अधि वोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिहुतः ।
 सत्यया वो देवहूत्या हुवेम शृण्वतो देवा अर्वसे स्वस्तये ११
 अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रामघायतः ।
 आरे देवा द्वेषो अस्मद् युयोतनोरुणः शर्म यच्छता स्वस्तये १२
 अरिष्टः स मर्तो विश्व एधते प्र प्रजार्भिर्जायते धर्मेणस्परि ।
 यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये १३ ६७३

७ [दे० विश्वदेवाः]

यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हिते धने ।
 प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसि—मरिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये
 एवा प्लतेः सुनुरवीवृधद् वो विश्व आदित्या अदिते मनीषी ।
 ईशानासो नरो अमर्त्येना—ऽस्तावि जनो दिव्यो गर्येन

१४

x १७ ६७५

॥ ७२ ॥ (ऋ० १०।६४।३-१६) जगती; १२, १६ त्रिष्टुप् ।

कथा देवानां कतमस्य यामनि सुमन्तु नाम शृण्वतां मनामहे ।
 को मृळाति कतमो नो मयस्करत् कतम ऊती अभ्या ववर्तति
 क्रतूयन्ति क्रतवो हृत्सु धीतयो वेनन्ति वेनाः पतयन्त्या दिशः ।
 न मर्हिता विद्यते अन्य एभ्यो देवेषु मे अधि कामा अयंसत
 नरा वा शंसं पूषणमगोह्य—मग्निं देवेद्वमभ्यर्चसे गिरा ।
 सूर्यामासा चन्द्रमसा यमं दिवि त्रितं वातमुषसमकतुमश्विनां
 कथा कविस्तुवीरवान् कया गिरा बृहस्पतिर्वावृधते सुवृक्षिताभिः ।
 अज एकपात् सुहवैर्भिरुक्कभि—रहिः शृणोतु बुध्योऽहं हवीमनि
 दक्षस्य वादिते जन्मनि व्रते राजाना मित्रावरुणा विवाससि ।
 अतूर्तपन्थाः पुरुरथो अर्यमा सप्तहोता विष्टरूपेषु जन्मसु
 ते नो अर्वन्तो हवनश्रुतो हवं विश्वे शृण्वन्तु वाजिनो मितद्रवः ।
 सहस्रसा मेधसाताविव त्मना महो ये धनं समिथेषु जग्निरे
 प्र वो वायुं रथयुजं पुरैधिं स्तोमैः कृणुध्वं सख्याय पूषणम् ।
 ते हि देवस्य सवितुः सर्वामनि क्रतुं सचन्ते सचितः सचेतसः
 त्रिः सप्त सुसा नद्यो महीरपो वनस्पतीन् पर्वतां अग्निमतये ।
 कुशानुमस्तृन् तिष्यं सधस्थ आ रुद्रं रुद्रेषु रुद्रियं हवामहे
 सरस्वती सरयुः सिन्धुरुर्मिभिर्—महो महीरवसा यन्तु वक्षणीः ।
 देवीरापो मातरः सुदयित्न्वो घृतवत् पयो मधुमन्नो अर्चत
 उत माता बृहद् दिवा शृणोतु न—स्त्वष्टा देवेभिर्जनिभिः पिता वचः ।
 ऋभुक्षा वाजो रथस्पतिर्भगो रण्वः शंसः शशमानस्य पातु नः
 रण्वः संदृष्टौ पितुमाँ इव क्षयो भद्रा रुद्राणां मरुतामुपस्तुतिः ।
 गोभिः प्याम यशसो जनेष्वा सदा देवास इळया सचेमहि

१

२

३

४

५ ६८०

६

७

८

९

१० ६८५

११ ६८६

x ऋ० १०, ६३, १७ = ऋ० १०, ६४, १७ ।

[विश्वे देवाः ।

६७४-६९९]

१४

यां मे धियं मरुत इन्द्र देवा अददात वरुण मित्र यूयम् ।

१२

तां पीपयत पर्यसेव धेनुं कुविद् गिरो अधि रथे वहाथ

१७

६७५

कुविद्ग प्रति यथा चिदस्य नः सजात्यस्य मरुतो बुबोधथ ।

१३

नामा यत्र प्रथमं संनसामहे तत्र जामित्वमर्दितिर्दधातु नः

ते हि द्यावापृथिवी मातरा मही देवी देवाञ्जन्मना यज्ञिये इतः ।

उभे विभृत उभयं भरीमभिः पुरु रेतोसि पितृभिश्च सिञ्चतः

१४

वि वा होत्रा विश्वमश्नोति वार्यं बृहस्पतिररमतिः पनीयसी ।

ग्रावा यत्र मधुषुदुच्यते बृहदवीवशन्त मतिभिर्मनीषिणः

१५ ६९०

एवा कविस्तुवीरवाँ ऋतज्ञा द्रविणस्युर्द्रविणसश्चकानः ।

उक्थेभिरत्र मतिभिश्च विप्रो ऽपीपयद् गयो दिव्यानि जन्म

१६ ६९१

॥ ७३ ॥ (ऋ० १०।६५।१-१५)

(६९२-७२०) वसुकर्णो वासुकः । जगती, १५ त्रिष्टुप् ।

अग्निरिन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा वायुः पूषा सरस्वती सजोषसः ।

आदित्या विष्णुर्मरुतः स्वर्बृहत् सोमो रुद्रो अदितिर्ब्रह्मणस्पतिः

१

इन्द्राग्नी वृत्रहत्येषु सत्पती मिथो हिंन्वाना तन्वाँऽ समौकसा ।

अन्तरिक्षं मह्या पप्रुरोजसा सोमो घृतश्रीर्महिमानमीरयन्

२

तेषां हि मद्धा महतामनर्वणां स्तोमाँ इर्यमृतज्ञा ऋतावृधाम् ।

ये अप्सवमर्णवं चित्रराधसस्ते नो रासन्तां महये सुमित्र्याः

३

स्वर्णरमन्तरिक्षाणि रोचना द्यावाभूमी पृथिवी स्कम्भुरोजसा ।

पृक्षा इव महयन्तः सुरातयो देवाः स्तवन्ते मनुषाय सूरयः

४ ६९५

मित्राय शिक्ष वरुणाय दाशुषे या सम्राजा मनसा न प्रयुच्छतः ।

ययोर्धाम धर्मेणा रोचते बृहद् ययोरुभे रोदसी नाधसी वृतौ

५

या गौर्वर्तेनि पर्येति निष्कृतं पयो दुहाना व्रतनीरवारतः ।

सा प्रब्रुवाणा वरुणाय दाशुषे देवेभ्यो दाशद्विषा विवस्वते

६

दिवक्षसो अग्निजिह्वा ऋतावृध ऋतस्य योनिं विमृशन्त आसते ।

यां स्कभित्व्यप आ चक्रुरोजसा यज्ञं जनिन्वी तन्वीँ नि मामृजुः

७

परिक्षिता पितरा पूर्वजावरी ऋतस्य योना क्षयतः समौकसा ।

द्यावापृथिवी वरुणाय सव्रते घृतवत् पयो महिषाय पिन्वतः

८ ६९९

*

पर्जन्यावातां वृषभा पुरीषिणेन्द्रवायुवरुणो मित्रो अर्यमा ।
 देवाँ आदित्याँ अदितिं हवामहे ये पार्थिवासो दिव्यासो अप्सु ये
 त्वष्टारं वायुमृभवो य ओहते दैव्या होतारा उषसं स्वस्तये ।
 बृहस्पतिं वृत्रखादं सुमेधसंमिन्द्रियं सोमं धनसा उ ईमहे
 ब्रह्म गामश्च जनयन्त ओषधीर्वनस्पतीन् पृथिवीं पर्वताँ अपः ।
 सूर्यं दिवि रोहयन्तः सुदानव आर्या व्रता विसृजन्तो अधि क्षमि
 भुज्युमंहसः पिपृथो निरंश्विना इयावँ पुत्रं वधिमत्या अजिन्वतम् ।
 क्रमद्युवं विमदायोहथुर्युवं विष्णाप्वँ विश्वक्रायावँ सृजथः
 पावीरवी तन्यतुरेकपादुजो दिवो धर्ता सिन्धुरापः समुद्रियः ।
 विश्वे देवासः शृणवन् वचांसि मे सरस्वती सह धीभिः पुरंध्या
 विश्वे देवाः सह धीभिः पुरंध्या मनोर्यजत्रा अमृतां ऋतज्ञाः ।
 रातिषाचो अभिषाचः स्वर्विदुः स्वर्गिरो ब्रह्म सूक्तं जुषेरत
 देवान् वसिष्ठो अमृतान् ववन्दे ये विश्वा भुवनाभि प्रतस्थुः ।
 ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

९ ७००

१०

११

१२

१३

१४ ७०५

* १५ ७०६

॥ ७४ ॥ (ऋ० १०।६६।१-१४)

देवान् हुवे बृहच्छ्रवसः स्वस्तये ज्योतिष्कृतो अध्वरस्य प्रचेतसः ।
 ये वावृधुः प्रतरं विश्ववेदस इन्द्रज्येष्ठासो अमृतां ऋतावृधः
 इन्द्रप्रसृता वरुणप्रशिष्टा ये सूर्यस्य ज्योतिषो भागमानुशुः ।
 मरुद्गणे वृजने मन्मं धीमहि माघोने यज्ञं जनयन्त सूरयः
 इन्द्रो वसुभिः परिं पातु नो गयमादित्यैर्नो अदितिः शर्म यच्छतु ।
 रुद्रो रुद्रेभिर्देवो मृळयाति नस्त्वष्टां नो ग्रामिः सुविताय जिन्वतु
 अदितिर्द्यावापृथिवी ऋतं महदिन्द्राविष्णू मरुतः स्वर्बृहत् ।
 देवाँ आदित्याँ अवसे हवामहे वसन् रुद्रान्तसंवितारं सुदंससम्
 सरस्वान् धीभिर्वरुणो धृतव्रतः पूषा विष्णुर्महिमा वायुरश्विना ।
 ब्रह्मकृतो अमृता विश्ववेदसः शर्म नो यंसन् त्रिवरूथमंहसः
 वृषा यज्ञो वृषणः सन्तु यज्ञिया वृषणो देवा वृषणो हविष्कृतः ।
 वृषणा द्यावापृथिवी ऋतावरी वृषा पर्जन्यो वृषणो वृषस्तुभः

१

२

३

४

५

६

* ऋ० १०, ६५, १५ = ऋ० १०, ६६, १५ ।

[विश्व देवाः ।]

अग्नीषोमा वृषणा वाजसातये पुरुप्रशस्ता वृषणा उप ब्रुवे ।
 यावीजिरे वृषणो देवयज्यया ता नः शर्म त्रिवरुथं वि यंसतः
 धृतव्रताः क्षत्रिया यज्ञनिष्कृतो बृहद्दिवा अध्वराणामभिध्रियः ।
 अग्निहोतार क्रतुसापो अद्भुहो ऽपो असृजन्ननु वृत्रतूर्ये
 द्यावापृथिवी जनयन्नाभि व्रता ऽऽप ओषधीर्वनिनानि यज्ञिया ।
 अन्तरिक्षं स्वरा पप्रुतये वशं देवासस्तन्वीडे नि मामृजुः
 धर्तारो दिव क्रभवः सुहस्ता वातापर्जन्या महिषस्य तन्यतोः ।
 आप ओषधीः प्र तिरन्तु नो गिरो भगो रातिर्वाजिनो यन्तु मे हवम्
 समुद्रः सिन्धु रजो अन्तरिक्षमज एकपात् तनयितुरर्णवः ।
 अहिर्बुध्न्यः शृणवद् वचांसि मे विश्वे देवास उत सूरयो मम
 स्याम वो मनवो देववीतये प्राश्नं नो यज्ञं प्र णयत साधुया ।
 आदित्या रुद्रा वसवः सुदानव इमा ब्रह्म शस्यमानानि जिन्वत
 दैव्या होतारा प्रथमा पुरोहित क्रतस्य पन्थामन्वेमि साधुया ।
 क्षेत्रस्य पतिं प्रतिवेशमीमहे विश्वान् देवां अमृतां अप्रयुच्छतः
 वसिष्ठासः पितृवद् वाचमक्रत देवां ईळाना ऋषिवत् स्वस्तये ।
 ग्रीता इव ज्ञातयः काममेत्या ऽस्मे देवासोऽसर्व धनुता वसु

॥ ७१ ॥ (क्र० १०।९२।१-१५)

(७११-३५) शार्यातो मानवः । जगती ।

यज्ञस्य वो रथ्यं विश्वपतिं विशां होतारमक्तोरतिथिं विभावसुम् ।
 शोचञ्छुष्कासु हरिणीषु जम्भुरद् वृषां केतुर्यजतो द्यामशायत
 इममञ्जस्पामुभये अकृण्वत धर्माणमग्निं विदधस्य साधनम् ।
 अक्तं न यद्बुधसः पुरोहितं तनूनपातमरुषस्य निसते
 बलस्य नीथा वि पुणेश्व मन्महे वया अस्य प्रहुता आसुरत्तवे ।
 यदा घोरासो अमृतत्वमाशता दिजनस्य दैव्यस्य चर्किरन्
 क्रतस्य हि प्रसितिद्यौरु व्यचो नमो मद्यारमतिः पर्नीयसी ।
 रुद्रो मित्रो वरुणः सं चिकित्रिरे ऽथो भगः सविता पूतदक्षसः
 प्र रुद्रेण ययिनां यन्ति सिन्धवस्तिरो महीमरमतिं दधन्विरे ।
 येभिः परिजमा परियन्नुरु जयो वि रोरुवज्जठरे विश्वमुक्षते

क्राणा रुद्रा मरुतो विश्वकृष्टयो दिवः श्येनासो असुरस्य नीळयः ।
 तेभिश्चष्टे वरुणो मित्रो अर्यमेन्द्रो देवेभिरर्वशेभिरर्वशः ६
 इन्द्रे भुजं शशमानास आशत सरो दशीके वृषणश्च पौंस्ये ।
 प्र ये न्वस्यार्हणा ततक्षिरे युजं वज्रं नृपदनेषु कारवः ७
 सरश्चिदा हरितो अस्य रीरमदिन्द्रादा कश्चिद् भयते तवीयसः ।
 भीमस्य वृष्णो जठरादभिश्चसो दिवेदिवे सहुरिः स्तन्नवाधितः ८
 स्तोमं वो अद्य रुद्राय शिकसे क्षयद्वीराय नमसा दिदिष्टन ।
 येभिः शिवः स्ववा एवयावभिर्दिवः सिषक्ति स्वयंशा निकामभिः ९
 ते हि प्रजाया अभरन्त वि श्रवो बृहस्पतिर्वृषभः सोमजामयः ।
 यज्ञैरथवा प्रथमो वि धारयद् देवा दक्षैर्मृगवः सं चिकित्रिरे १० ७३०
 ते हि द्यावापृथिवी भूरिरेतसा नराशंसश्चतुरङ्गो यमोऽदितिः ।
 देवस्त्वष्टा द्रविणोदा क्रमुक्षणः प्र रोदसी मरुतो विष्णुरहिरे ११
 उत स्य न उशिजामुर्विया कविर्हरिः शृणोतु बुध्योऽहवीमनि ।
 सूर्यामासा विचरन्ता दिविक्षिता धिया शमीनहुषी अस्य बौधतम् १२
 प्र नः पूषा चरथं विश्वदैव्यो ऽपां नपादवतु वायुरिष्टये ।
 आत्मानं वस्यो अभि वातमर्चत तदश्विना सुहवा यामनि श्रुतम् १३
 विशामासामभयानामधिक्षितं गीर्भिरु स्वयंशसं गृणीमसि ।
 ग्राभिर्विश्वाभिरदितिमनर्वणमक्तोर्युवानं नृमणा अधा पतिम् १४
 रेभदत्र जुनुषा पूर्वो अङ्गिरा ग्रावाण ऊर्ध्वा अभि चक्षुरध्वरम् ।
 येभिर्विहाया अभवद् विचक्षणः पार्थः सुमेकं स्वधितिर्वनन्वति १५ ७३५

॥ ७६ ॥ (क्र० १०।९३।१-१५)

(७३६-५०) तान्वः पार्थः । प्रस्तारपङ्क्तिः २-३, १३ अनुष्टुप् ; ९ अक्षरैः पङ्क्तिः ;

११ न्यङ्कुसारिणी, १५ पुरस्ताद्वृहती ।

महिं द्यावापृथिवी भूतमुर्वी नारीं यद्ही न रोदसी सदै नः ।

तेभिर्नः पातं सद्यस एभिर्नः पातं शूषणि १

यज्ञेयं स मर्त्यो देवान्तसंपर्यति । यः सुमैर्दीर्घश्रुत्तम आविवासात्येनान् २

विश्वेषामिरज्यवो देवानां वारमहः । विश्वे हि विश्वमहसो विश्वे यज्ञेषु यज्ञियाः ३

ते द्या राजानो अमृतस्य मन्द्रा अर्यमा मित्रो वरुणः परिज्मा ।

कद् रुद्रो नृणां स्तुतो मरुतः पूषणो भगः ४ ७३९

मन्त्राः ७२६-७५२]

विश्वे देवाः ।

उत नो नक्तमपां वृषण्वसु सूर्यामासा सदेनाय सधन्या ।

सचा यत् साधेषा—महिर्बुधेषु बुध्यः

५ ७४०

उत नो देवावश्विना शुभस्पती धामभिर्मित्रावरुणा उरुव्यताम् ।

महः स राय एषते ऽति धन्वेव दुरिता

६

उत नो रुद्रा चिन्मृळतामश्विना विश्वे देवासो रथस्पतिर्भगः ।

ऋभुर्वाजं ऋभुक्षणः परिज्जमा विश्ववेदसः

७

ऋभुर्ऋभुक्षा ऋभुर्विधतो मद आ ते हरीं जूजुवानस्य वाजिना ।

दुष्टं यस्य साम चिद् ऋधग् यज्ञो न मानुषः

८

कृषी नो अहयो देव सवितः स च स्तुषे मघोनाम् ।

सहो न इन्द्रो वह्निभिर्न्येषां चर्षणीनां चक्रं रश्मि न योयुवे

९

एषु द्यावापृथिवी धातं मह—दुस्मे वीरेषु विश्वचर्षणि श्रवः ।

पृक्षं वाजस्य सातये पृक्षं रायोत तुर्वणे

१० ७४५

एतं शंसमिन्द्रास्मयुष्टं कूचित् सन्तं सहसावन्नभिष्टये सदा पाह्यभिष्टये ।

मेदतां वेदतां वसो

११

एतं मे स्तोमं तना न सूर्यं द्युतद्यामानं वावृधन्त नृणाम् ।

संवनेन नाक्षयं तष्टेवानपच्युतम्

१२

वावर्त येषां राया युक्तैषां हिरण्ययी ।

नेमधिता न पौस्या वृथैव विष्टान्ता

१३

प्र तद् दुःशीमे पृथवाने वेने प्र रामे वोचमसुरे मघवत्सु ।

ये युक्त्वाय पञ्च शता—स्मयु पथा विश्राव्येषाम्

१४

अधीन्वत्र समतिं च सप्त च । सद्यो दिदिष्ट तान्वः सद्यो दिदिष्ट पार्थ्यः

सद्यो दिदिष्ट मायवः

१५ ७५०

॥ ७७ ॥ (ऋ० १०।१००।१-१२)

(७५१-६२) दुवस्युर्वान्दनः । जगती, १२ त्रिष्टुप् ।

इन्द्र इह्यं भवन् त्वावदिद् भुज इह स्तुतः सुतपा वोधि नो बुधे ।

देवेभिर्नः सविता प्रावतु श्रुत—मा सर्वतातिमदिति वृणीमहे

१

मराय सु भरत भागमृत्विगं प्र वायवे शुचिपे क्रन्ददिष्टये ।

गौरस्य यः पर्यसः पीतिमानश आ सर्वतातिमदिति वृणीमहे

२ ७५२

आ नो देवः सविता साविषद् वयं ऋजूयते यजमानाय सुन्वते ।

यथा देवान् प्रतिभूषेम पाकवदा सर्वतातिमदिति वृणीमहे ३

इन्द्रो अस्मे सुमना अस्तु विश्वहा राजा सोमः सुवितस्याध्येतु नः ।

यथायथा मित्रधितानि संदधु—रा सर्वतातिमदिति वृणीमहे ४

इन्द्र उक्थेन शवसा परुर्दधे बृहस्पते प्रतरीतास्यायुषः ।

यज्ञो मनुः प्रमतिर्नः पिता हि क—मा सर्वतातिमदिति वृणीमहे ५ ७५५

इन्द्रस्य नु सुकृतं दैव्यं सहो ऽग्निर्गृहे जरिता मेधिरः कविः ।

यज्ञश्च भूद् विदथे चारुरन्तम आ सर्वतातिमदिति वृणीमहे ६

न वो गुहा चक्रम भूरि दुष्कृतं नाविष्ट्यं वसवो देवहेळनम् ।

माकिर्नो देवा अनृतस्य वर्षस आ सर्वतातिमदिति वृणीमहे ७

अपामीवां सविता साविषन्त्यग् वरीय इदप सेधन्त्वद्रयः ।

ग्रावा यत्र मधुषुदुच्यते बृह—दा सर्वतातिमदिति वृणीमहे ८

ऊर्ध्वो ग्रावा वसवोऽस्तु सोतरि विश्वा द्वेषांसि सनुतर्युयोत ।

स नो देवः सविता पायुरीडय आ सर्वतातिमदिति वृणीमहे ९

ऊर्जी गावो यवसे पीवो अत्तन ऋतस्य याः सदर्ने कोशे अङ्ध्वे ।

तनूरेव तन्वो अस्तु भेषज—मा सर्वतातिमदिति वृणीमहे १० ७६०

ऋतुग्रावा जरिता शश्वतामव इन्द्र इद् भद्रा प्रमतिः सुतावताम् ।

पूर्णमूर्धदिव्यं यस्य सिकतय आ सर्वतातिमदिति वृणीमहे ११

चित्रस्ते भानुः क्रतुप्रा अभिष्टिः सन्ति स्पृध्वो जरणिप्रा अष्टृष्टाः ।

रजिष्ठया रज्या पश्व आ गो—स्तूतूर्पति पर्यग्रं दुवस्युः १२ ७६२

॥ ७८ ॥ (ऋ० १०।१०।११-१२)

(७६३-७८) बुधः सौम्यः । (ऋत्विजो वा) । त्रिष्टुप्; ४, ६ गायत्री; ५ बृहती; ९-१२ जगती ।

उद्ध्व्यध्वं समनसः सखायः समग्निमिन्ध्वं बृहवः सनीळाः ।

दुधिक्राममिमुषसं च देवी—मिन्द्रावतोऽवसे नि ह्वे वः १

मन्द्रा कृणुध्वं धिय आ तनुध्वं नावमरित्रपरणीं कृणुध्वम् ।

इष्कृणुध्वमायुधारं कृणुध्वं प्राञ्चं यज्ञं प्र णयता सखायः २

युनक्त सीरा वि युगा तनुध्वं कृते योनौ वपतेह बीजम् ।

गिरा च श्रुष्टिः सर्भरा असन्नो नदीय इत् सृण्यः पक्रमेयात् ३ ७६५

विश्वे देवाः ।

७५१-७७९]

सीरां युञ्जन्ति कवयो युगा वि तन्वते पृथक् । धीरां देवेषु सुमया ४
निराहावान् कृणोतन् सं वरत्रा दधातन ।

सिञ्चामहा अवतमुद्रिणं वयं सुषेकमनुपक्षितम् ५

इष्कृताहावमवतं सुवरत्रं सुषेचनम् । उद्रिणं सिञ्चे अक्षितम् ६

प्रीणीताश्चान् हितं जयाथ स्वस्तिवाहं रथमित् कृणुध्वम् ।

द्रोणाहावमवतमश्मचक्रमसत्रकोशं सिञ्चता नृपाणम् ७

व्रजं कृणुध्वं स हि वो नृपाणो वर्म सीव्यध्वं बहुला पृथूनि ।

पुरः कृणुध्वमायसीरधृष्टा मा वः सुसोच्चमसो दंहता तम् ८ ७७०

आ वो धिर्यं यज्ञियां वर्त ऊतये देवां देवीं यज्ञतां यज्ञियामिह ।

सा नो दुहीयद् यवसेव गत्वी सहस्रधारा पर्यसा मही गौः ९

आ तू विश्व हरिमीं द्रोणस्थे वाशींभिस्तक्षताश्मन्मयीभिः ।

परि ष्वजध्वं दशं कक्ष्याभि रूमे धुरौ प्रति वह्निं युनक्त १०

उमे धुरौ वह्निरापिब्दमानो ऽन्तर्योनेव चरति द्विजानिः ।

वनस्पतिं वन आस्थापयध्वं नि षू दधिध्वमखनन्त उत्सम् ११

कष्टन्नरः कपृथमुद् दधातन चोदयत खुदत वाजसातये ।

निष्टिग्न्यः पुत्रमा च्यावयोतय इन्द्रं सबाध इह सोमपीतये १२ ७७४

॥ ७९ ॥ (क्र० १०१०९।१-७)

(७७५-८१) जुहूर्ब्रह्मजाया, ब्राह्मः ऊर्ध्वनाभा वा । त्रिष्टुप्, ६-७ अनुष्टुप् ।

तैऽवदन् प्रथमा ब्रह्मकिल्बिषे ऽकूपारः सलिलो मातरिश्वा ।

वीळुहरास्तप उग्रो मयोभू रापो देवीः प्रथमजा क्रतेन १ ७७५

सोमो राजा प्रथमो ब्रह्मजायां पुनः प्रायच्छदहणीयमानः ।

अन्वर्तिता वरुणो मित्र आसी दुग्निहोता हस्तगृह्णा निनाय २

हस्तेनैव ग्राह्य आधिरस्या ब्रह्मजायेयमिति चेदवोचन् ।

न दूताय प्रह्ये तस्थ एषा तथा राष्ट्रं गुपितं क्षत्रियस्य ३

देवा एतस्यामवदन्त पूर्वे सप्तऋषयस्तपसे ये निषेदुः ।

भीमा जाया ब्राह्मणस्योपनीता दुर्धा दधाति परमे व्योमन् ४

ब्रह्मचारी चरति वेविषद् विषः स देवानां भवत्येकमङ्गम् ।

तेन जायामन्विन्दद् बृहस्पतिः सोमैर्न नीता जुह्वी न देवाः ५ ७७९

८ दै. (विश्वे देवाः)

पुनर्वै देवा अददुः पुनर्मनुष्या उत । राजानः सत्यं कृष्णाना ब्रह्मजायां पुनर्ददुः ६
पुनर्दायं ब्रह्मजायां कृत्वा देवैर्निकिल्बिषम् । ऊर्जं पृथिव्या भक्त्वार्यो रुगायमुपासते ७

॥ ८० ॥ (ऋ० १०।११।१-१०)

(७८२-९१) सध्रिवैरूपो, घर्मो वा तापसः । त्रिष्टुप्, ४ जगती ।

घर्मा समन्ता त्रिवृतं व्यापतु—स्तयोर्जुष्टिं मातरिश्वा जगाम ।
दिवस्पयो दिधिषाणा अवेपन् विदुर्देवाः सहसामानमर्कम् १
तिस्रो देष्ट्राय निर्रैतीरुपासते दीर्घश्रुतो वि हि जानन्ति वह्नयः ।
तासां नि चिक्युः कवयो निदानं परेषु या गुह्येषु व्रतेषु २
चतुष्कपर्दा युवतिः सुपेशा घृतप्रतीका वयुनानि वस्ते ।
तस्यां सुपर्णा वर्षणा नि षेदतु—र्यत्र देवा दधिरे भागधेयम् ३
एकः सुपर्णः स समुद्रमा विवेश स इदं विश्वं भुवनं वि चष्टे ।
तं पाकेन मनसापश्यमन्तित—स्तं माता रेळिह स उ रेळिह मातरम् ४
सुपर्ण विप्राः कवयो वचोभि—रेकं सन्तं बहुधा कल्पयन्ति ।
छन्दांसि च दधतो अश्वरेषु ग्रहान्सोमस्य भिमते द्वादश ५
षट्त्रिंशश्च चतुरः कल्पयन्त—छन्दांसि च दधत आद्वादशम् ।
यज्ञं विमाय कवयो मनीष क्रक्सामाभ्यां प्र रथं वर्तयन्ति ६
चतुर्दशान्ये महिमानो अस्य तं धीरा वाचा प्र णयन्ति सप्त ।
आमानं तीर्थं क इह प्र वोच—द्येन पथा प्रपिबन्ते सुतस्य ७
सहस्रधा पञ्चदशान्युक्था यावद् द्यावापृथिवी तावदित् तत् ।
सहस्रधा महिमानः सहस्रं यावद् ब्रह्म विष्टितं तावती वाक् ८
कश्छन्दसां योगमा वेदु धीरः को धिषण्यां प्रति वाचं पपाद ।
कमृत्विजामष्टमं शूरमाहु—हरी इन्द्रस्य नि चिकाय कः स्मित ९
भूम्या अन्तं पर्येकं चरन्ति रथस्य धूषु युक्तासो अस्थुः ।
श्रमस्य दायं वि भजन्त्येभ्यो यदा यमो भवति हर्म्ये हितः १०

॥ ८१ ॥ (ऋ० १०।१२।१-८)

(७९२-९९) शैलूषिः कुलमलबर्हिषो, वामदेव्योऽहोमुग्वा । उपरिष्ठाद्बृहती, ८ त्रिष्टुप् ।

न तमंहो न दुरितं देवासो अष्ट मर्त्यम् ।
सजोषसो यमर्यमा मित्रो नयन्ति वरुणो अति द्विषः १

[विश्व देवाः ।

क्रमाः ७८०-८०५]

६	७८०	तद्धि वयं वृणीमहे वरुण मित्रार्यमन् ।	
७	७८१	येना निरहंसो यूयं पाथ नेथा च मर्त्यमति द्विषः	२
		ते नूनं नोऽयमूतये वरुणो मित्रो अर्यमा ।	
		नरिष्ठा उ नो नेषणि पशिष्ठा उ नः पर्षण्यति द्विषः	३
		यूयं विश्वं परि पाथ वरुणो मित्रो अर्यमा ।	
१		युष्माकं शर्मणि प्रिये स्याम सुप्रणीतयोऽति द्विषः	४ ७९५
		आदित्यासो अति सिधो वरुणो मित्रो अर्यमा ।	
२		उग्रं मरुद्भ्रीं रुद्रं हुवेमेन्द्रमग्निं स्वस्तयेऽति द्विषः	५
		नेतार ऊ षु णस्तिरो वरुणो मित्रो अर्यमा ।	
३		अति विश्वानि दुरिता राजानश्चर्षणीनामति द्विषः	६
		शुनमसभ्यमूतये वरुणो मित्रो अर्यमा ।	
४	७८५	शर्म यच्छन्तु सप्रथं आदित्यासो यदीमहे अति द्विषः	७
५		यथा ह त्यद् वंसवो गौर्यं चित् पदि पिताममुञ्चता यजत्राः ।	
		एवो ष्वस्ममुञ्चता व्यंहः प्र तार्यग्ने प्रतरं न आयुः	८ ७९९

॥ ८२ ॥ (क्र० १०१२८१-९)

(८००-८०८) विहव्य आङ्गिरसः । त्रिष्टुप्, ९ जगती ।

६		ममाग्ने वर्चो विहवेर्वस्तु वयं त्वेन्धानास्तन्वं पुषेम ।	
७		मह्यं नमन्तां प्रदिशश्चतस्रस्त्वयाध्यक्षेण पृतना जयेम	१ ८००
८		मम देवा विहवे सन्तु सर्व इन्द्रवन्तो मरुतो विष्णुरग्निः ।	
		ममान्तरिक्षमुलोकमस्तु मह्यं वातः पवतां कामे अस्मिन्	२
९	७९०	मयि देवा द्रविणमा यजन्तां मय्याशीरस्तु मयि देवहूतिः ।	
		दैव्या होतारो वनुषन्त पूर्वे ऽरिष्ठाः स्याम तन्वा सुवीराः	३
०	७९१	मह्यं यजन्तु मम यानि हव्या ऽऽकूतिः सत्या मनसो मे अस्तु ।	
		एनो मा नि गां कतमच्चनाहं विश्वे देवासो अग्निं वोचता नः	४
		देवीः षष्ठ्वीरुरु नः कृणोत विश्वे देवास इह वीरयध्वम् ।	
		मा हासहि प्रजया मा तनूभिर्मा रंधाम द्विषते सौम राजन्	५
१	७९२	अग्ने मन्युं प्रतिनुदन् परेषा मदेब्धो गोपाः परि पाहि नस्त्वम् ।	
		प्रत्यञ्चो यन्तु निगुतः पुनस्ते इमैषां चित्तं प्रबुधां वि नैशत्	६ ८०५

धाता धातॄणां भुवनस्य यस्पति—देवं त्रातारमभिमातिषाहम् ।
 इमं यज्ञमश्विनोभा बृहस्पति—देवाः पान्तु यजमानं न्यर्थात्
 उरुव्यचां नो महिषः शर्मं यंस—दस्मिन् हवें पुरुहूतः पुरुक्षुः
 स नः प्रजायै हर्यश्च मृळये—न्द्र मा नो रीरिषो मा परा दाः
 ये नः सपत्ना अप ते भवन्तिव—न्द्राग्निभ्यामव वाधामहे तान् ।
 वसवो रुद्रा आदित्या उपरिस्पृशं मोग्रं चेत्तारमधिराजमक्रन्

७

८

९ ८०८

॥ ८३ ॥ (ऋ० १०।१३७।१-७)

(८०९-१५) [सप्तर्षयः]- १ भरद्वाजः, २ कश्यपः, ३ गोतमः, ४ अत्रिः, ५ विश्वामित्रः, ६ जमदग्निः,
 ७ वसिष्ठः । अनुष्टुप् ।

उत देवा अवहितं देवा उन्नयथा पुनः । उतागश्चक्रुषं देवा देवा जीवयथा पुनः १
 द्वाविमौ वातौ वात आ सिन्धोरा परावतः । दक्षं ते अन्य आ वात परान्यो वातु यद् रपः २
 आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद् रपः । त्वं हि विश्वभेषजो देवानां दूत ईर्यसे ३
 आ त्वागमं शन्तातिभि—रथो अरिष्टतातिभिः । दक्षं ते भद्रमाभार्ष परा यक्षमं सुवामि ते ४
 त्रायन्तामिह देवा—स्त्रायतां मरुतां गणः । त्रायन्तां विश्वा भूतानि यथायमरपा असत् ५
 आप इद्वा उ भेषजी—रापो अमीवचातनीः । आपः सर्वस्य भेषजी—स्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् ६
 हस्ताभ्यां दशशाखाभ्यां जिह्वा वाचः पुरोगवी ।

८१०

अनामयित्तुभ्यां त्वा ताभ्यां त्वोप स्पृशामसि

७ ८१५

॥ ८४ ॥ (ऋ० १०।१४१।१-६)

(८१६-२१) अग्निस्तापसः । अनुष्टुप् ।

अग्ने अच्छा वदेह नः प्रत्यङ् नः सुमना भव ।
 प्र नो यच्छ विशस्पते धनुदा असि नस्त्वम् १
 प्र नो यच्छ त्वर्यमा प्र भगः प्र बृहस्पतिः । प्र देवाः प्रोत सूनृता रायो देवी ददातु नः २
 सोमं राजानमवसे ऽग्नि गीर्भिर्हवामहे । आदित्यान् विष्णुं सूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिम् ३
 इन्द्रवायु बृहस्पतिं सुहवेह हवामहे । यथा नः सर्व इज्जनः संगत्यां सुमना असत् ४
 अर्यमणं बृहस्पति—मिन्द्रं दानाय चोदय । वातं विष्णुं सरस्वतीं सवितारं च वाजिनम् ५
 त्वं नो अग्ने अग्निभि—र्ब्रह्मा यज्ञं च वर्धय । त्वं नो देवतातये रायो दानाय चोदय ६

८१०

८११

॥ ८५ ॥ (ऋ० १०।१५।५)

(८१२) शिरिम्बिठो भारद्वाजः । अनुष्टुप् ।

परीमे गार्मनेषत् पर्यग्निमहृषत् । देवेष्वक्रत श्रवः क इमाँ आ दधर्षति

५ ८१२

॥ ८६ ॥ (ऋ० १०।१५७।१-५) ×

(८२३-२७) भुवन आप्त्यः, साधनो वा भौवनः । द्विपदा त्रिष्टुप् ।

इमा नु कं भुवना सीषधामे—न्द्रश्च विश्वे च देवाः

यज्ञं च नस्तन्वं च प्रजां चा—ऽऽदित्यैरिन्द्रः सह चीकलपाति

आदित्यैरिन्द्रः सर्गणो मरुद्धि—रसाकं भूत्थविता तनूनाम्

हत्वाय देवा असुरान् यदायन् देवा देवत्वमभिरक्षमाणाः

प्रत्यश्चर्मकर्मनयञ्छचीभि—रादित् स्वधामिषिरां पर्यपश्यन्

॥ ८७ ॥ (ऋ० १०।१६५।१-५)

(८२८-३२) नैर्ऋतः कपोतः । त्रिष्टुप् ।

देवाः कपोतं हषितो यदिच्छन् दूतो निर्ऋत्या इदमाजगाम ।

तस्मा अर्चाम कृण्वाम निष्कृतिं शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे

शिवः कपोतं हषितो नो अस्त्व—नागा देवाः शकुनो गृहेषु ।

अग्निर्हि विप्रो जुषतां हविर्नः परि हेतिः पक्षिणी नो वृणक्तु

हेतिः पक्षिणी न दभात्यस्मा—नाष्ट्र्यां पदं कृणुते अग्निधाने ।

शं नो गोभ्यश्च पुरुषेभ्यश्चास्तु मा नो हिंसीद्विह देवाः कपोतः

यदुल्लेको वदति मोघमेतद् यत् कपोतः पदमग्नौ कृणोति ।

यस्य दूतः प्रहित एष एतत् तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे

क्रुचा कपोतं नुदत प्रणोद—मिधं मदन्तः परि गां नयध्वम् ।

संयोपर्यन्तो दुरितानि विश्वा हित्वा न ऊर्जं प्र पतात् पतिष्ठः

॥ ८८ ॥ (ऋ० १०।१६७।३)

(८३३) विश्वामित्र-जमदग्नी । जगती ।

सोमस्य राज्ञो वरुणस्य धर्मेणि बृहस्पतेरनुमत्या उ शर्मेणि ।

तवाहमद्य मघवन्नुपस्तुतौ धातुर्विधातः कलशौ अभक्षयम्

॥ ८९ ॥ (ऋ० १०।१८१।१-३)

(८३४-३६) १ प्रथो वासिष्ठः, २ सप्रथो भारद्वाजः, ३ घर्मः सौर्यः । त्रिष्टुप् ।

प्रथश्च यस्य सप्रथश्च नामा—ऽऽनुष्टुभस्य हविषो हविर्यत् ।

धातुर्द्युतानात् सवितुश्च विष्णो रथन्तरमा जभारा वसिष्ठः

X वा० य० २५, ४६; अथर्व० २०, ६३, १-३; १२४, ४-६; सा० ४५२, १११०-१२ ।

अविन्दन्ते अतिहितं यदासीद् यज्ञस्य धाम परमं गुहा यत् ।
धातुर्द्युतानात् सवितुश्च विष्णोर्भरद्वाजो बृहदा चक्रे अग्नेः
तेऽविन्दन् मनसा दीध्याना यजुः षक्नं प्रथमं देवयानम् ।
धातुर्द्युतानात् सवितुश्च विष्णोरा सूर्यादभरन् धर्मभेते

॥ ९० ॥ (ऋ० १०।१८४।१-२)

(८३७-३८) त्वष्टा गर्भकर्ता, विष्णुर्वा प्राजापत्यः । अनुष्टुप् ।

विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिशतु । आ सिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते ।
गर्भं धेहि सिनीवाल्लि गर्भं धेहि सरस्वति । गर्भं ते अश्विनौ देवा वा धत्तां पुष्करस्रजा २

॥ ९१ ॥ [८३९-७६] (वा० य० २।१२-१३, १८)

एतं ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे । तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव १२
मनो जुतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञं समिमं दधातु ।
विश्वे देवास इह मादयन्तामोऽम्प्रतिष्ठ १३ ८४०
संस्त्रवमागा स्थेषा बृहन्तः प्रस्तरेष्ठाः परिधेयाश्च देवाः ।
इमां वाचमभि विश्वे गृणन्त आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादध्वम् १८ ८४१

॥ ९२ ॥ (वा० य० ४।११)

दैवीं धियं मनामहे सुमृडीकामभिष्टये वर्चोधां यज्ञवाहसं सुतीर्था नो असद्वशे ।
ये देवा मनोजाता मनोयुजो दक्षकतवस्ते नोऽवन्तु ते नः पान्तु तेभ्यः स्वाहा ११ ८४२

॥ ९३ ॥ (वा० य० ५।३०, ३५)

इन्द्रस्य स्यूरसीन्द्रस्य ध्रुवोऽसि । ऐन्द्रमसि वैश्वदेवमसि
ज्योतिरसि विश्वरूपं विश्वेषां देवानां समित् ३० ८४४

॥ ९४ ॥ (वा० य० ६।१९, २४)

घृतं घृतपावानः पिबतु वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा ।
दिशः प्रदिश आदिशो विदिशो उदिशो दिग्भ्यः स्वाहा १९ ८४५
विश्वेषां देवानां भागधेयीं स्थ २४ ८४६

॥ ९५ ॥ (वा० य० ७।२१)×

विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्य एष ते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः २१ ८४७

× वा० य० ७।१२, १९, ३३-३४ = दै० [विश्वे देवाः] २९४, ९८, १, १६५, ३१५; वा० य० ८, ८ ।

[विश्व देवाः]

॥ ९६ ॥ (वा० य० ८।१५, १९, ४७, ५७-५८)

समिन्द्र णो मनसा नेषि गोभिः सः सूरिभिर्मघवन्तसः स्वस्त्या ।

सं ब्रह्मणा देवकृतं यदस्ति सं देवानां सुमतौ यज्ञियानां स्वाहा ।

यँर आवह उशतो देव देवास्तान् प्रेरय स्वे अग्ने स्वधस्यै ।

जक्षिवांसः पपिवांसश्च विश्वेऽसु घर्मः स्वरातिष्ठतानु स्वाहा ।

विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जगच्छन्दसं गृह्णामि

विश्वे देवा अंशुषु न्युप्तः ५७। विश्वे देवाश्चमसेषुन्नीतः

॥ ९७ ॥ (वा० य० ९।३३)

विश्वे देवा द्वादशाक्षरेण जगतीमुदजयँस्तामुज्जेषम्

॥ ९८ ॥ (वा० य० ११।५८, ६०, ६५)

विश्वे त्वा देवा वैश्वानराः कृण्वन्त्वानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वद्

विश्वे त्वा देवा वैश्वानरा धूपयन्त्वानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वद्

विश्वे त्वा देवा वैश्वानरा आच्छन्दन्त्वानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वत्

॥ ९९ ॥ (वा० य० १२।७०)

घृतेन सीता मधुना समज्यतां विश्वेदेवैरनुमता मरुद्भिः ।

ऊर्जस्वती पयसा पिन्वमानास्मान्त्सीते पयसाभ्याववृत्स्व

॥ १०० ॥ (वा० य० १४।७, २०, २६)

सजृक्कृतुभिः सजृक्विधाभिः सजृक्विश्वेदेवैः सजृक्देवैर्वयोनाधैरग्रये त्वा वैश्वानराया-
श्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा

अग्निदेवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा

देवतादित्या देवता मरुतो देवता विश्वे देवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता
वरुणो देवता

ऋभुणां भागोऽसि विश्वेषां देवानामाधिपत्यं भूतं स्पृतं त्रयस्त्रिंशः स्तोमः

॥ १०१ ॥ (वा० य० १५।१४, ५४)

अधिपत्यासि बृहती दिग्विश्वे ते देवा अधिपतयो बृहस्पतिर्हेतीनां प्रतिधर्ता

त्रिणवत्रयस्त्रिंशो त्वा स्तोमौ पृथिव्याः श्रयतां वैश्वदेवाग्निमारुते उक्थे

अव्यथायै त्तभीताः शाक्वरैर्वते सामनी प्रतिष्ठित्या अन्तरिक्षं ऋषयस्त्वा

प्रथमजा देवेषु दिवो मात्रया वरिष्णा प्रथन्तु विधर्ता चायमाधिपतिश्च

ते त्वा सर्वे संविदाना नाकस्य पृष्ठे स्वर्गे लोके यजमानं च सादयन्तु

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते ससृजेथामयं च ।
अस्मिन्सधस्थे अद्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत
॥ १०२ ॥ (वा० य० १७।७३)

*५४ ८६२

आजुह्वानः सुप्रतीकः पुरस्तादग्ने स्वं योनिमासीद साधुया ।
अस्मिन्सधस्थे अद्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत
॥ १०३ ॥ (वा० य० १८।७६) +

७३ ८६३

धामच्छदुभिरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः । सचेतसो विश्वे देवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे ७६
॥ १०४ ॥ (वा० य० २०।११)

८६४

त्रया देवा एकादश त्रयस्त्रिंशः सुरार्धसः ।
बृहस्पतिपुरोहिता देवस्य सवितुः सवे । देवा देवैरवन्तु मा
॥ १०५ ॥ (वा० य० २१।१७)

११ ८६५

उषे यद्वा सुपेक्षसा विश्वे देवा अमर्त्याः । त्रिष्टुप् छन्द इहेन्द्रियं पष्टवाङ् गौरियो दधुः १७
॥ १०६ ॥ (वा० य० २२।५, २८)

८६६

विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं प्रोक्षामि सर्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं प्रोक्षामि
विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा

५

x२८ ८६८

॥ १०७ ॥ (वा० य० २४।२७, ४०)

विश्वेभ्यो देवेभ्यः पृषतान् २७। खड्गो वैश्वदेवः विश्वेषां देवानां पृषतः ४० ८७०
॥ १०८ ॥ (वा० य० २५।५-६) *

पार्श्व विश्वेषां देवानामुत्तरम् ५। विश्वेषां देवानां प्रथमा कीकसा ६ ८७१
॥ १०९ ॥ (वा० य० २७।२२)

६

अग्ने स्वाहा कृणुहि जातवेद इन्द्राय हव्यम् । विश्वे देवा हविरिदं जुषन्ताम् २२ ८७२
॥ ११० ॥ (वा० य० २९।६०)

२२ ८७२

विश्वेभ्यो देवेभ्यो जागतेभ्यः सप्तदशेभ्यो वैरूपेभ्यो द्वादशकपालः ६० ८७४

६० ८७४

* वा० य० १८, ६१ ।

+ वा० य० १८, ३१; ३३, ४४, ५२-५३, ७७, ९१, ९४; ३४, ५३ = दै० [विश्वे देवाः] ४८२, ५९४, ४९१, ४९७, ५९६-६७, ३९१ ।

x वा० य० ३९, १३ । ॥ वा० य० २५।१४-२३, ४३ = दै० [विश्वे देवाः] १९-२८, ८२७ ।

॥ १११ ॥ (वा० य० ३६।१७) +

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव
शान्तिः सा मा शान्तिरेधि

१७ ८७५

॥ ११२ ॥ (वा० य० ३९।६)

विश्वे देवा द्वादशे

६ ८७६

॥ ११३ ॥ (अथर्व० १।९।१-२) ❀

(८७७-१०४३) अथर्वा । १ वसवः, इन्द्रः, पूषा, वरुणः, मित्रः, अग्निः, आदित्याः, विश्वे देवाः;
२ देवाः, सूर्यः, अग्निः, हिरण्यं । त्रिष्टुप् ।

अस्मिन् वसु वसवो धारयन्तिवन्द्रः पूषा वरुणो मित्रो अग्निः ।
इममादित्या उत विश्वे च देवा उत्तरस्मिन् ज्योतिषि धारयन्तु
अस्य देवाः प्रदिशि ज्योतिरस्तु सूर्यो अग्निरुत वा हिरण्यम् ।
सपत्ना अस्मदधरे भवन्तूत्तमं नाकमधि रोहयेमम्

१

२ ८७८

॥ ११४ ॥ (अथर्व० १।१५।१-४)

सिन्धवः, (वाताः, पतत्रिणः) । अनुष्टुप्, २ भुरिकपथ्या पङ्क्तिः ।

सं सं संवन्तु सिन्धवः सं वाताः सं पतत्रिणः ।
इमं यज्ञं प्रदिवो मे जुषन्तां संस्राव्येण हविषा जुहोमि
इहैव हवमा यात म इह सैस्त्रावणा उतेमं वर्धयता गिरः ।
इहेतु सर्वो यः पशुरस्मिन् तिष्ठतु या रायिः
ये नदीनां संस्रवन्त्युत्सासः सदुमक्षिताः । तेभिर्मे सर्वैः संस्रावैर्धनं सं स्रावयामसि ३
ये सर्पिषः संस्रवन्ति क्षीरस्य चोदुक्स्थं च । तेभिर्मे सर्वैः संस्रावैर्धनं सं स्रावयामसि ४

१

२ ८८०

८८२

॥ ११५ ॥ (अथर्व० १।२७।१-४)

(स्वस्त्ययनकामः) । चन्द्रमाः, इन्द्राणी च । अनुष्टुप्, १ पथ्यापङ्क्तिः ।

अमूः पारे पृदाकुस्त्रिषप्ता निर्जरायवः ।
तासां जरायुर्भिर्यमक्ष्याइवपि व्ययामस्यघ्रायोः परिपन्थिनः
विषूच्येतु कृन्तती पिनाकमिव बिभ्रती ।
विष्वक् पुनर्भुवा मनोऽसमृद्धा अघ्रायवः

१

२ ८८४

+ अथर्व १।९।१, १४ = दै० [विश्वे देवाः] १०६२, १०८२ । ❀ अथर्व १, २, ३-४ = दै० [अग्निः] २१४२-४३ ।
१ [दै० विश्वे देवाः]

न बृहवः समंशकन् नार्भका अभि दाधृषुः । वेणोरद्वा इवाभितोऽसमृद्धा अघायवः ३ ८८५
प्रेतं पादौ प्र स्फुरन्तं वहतं पृणतो गृहान् । इन्द्राण्येतु प्रथमाजीतामुषिता पुरः ४ ८८६

॥ ११६ ॥ (अथर्व० २।३४।१-५)

१ पशुपतिः, २ देवाः, ३ अग्निः विश्वकर्मा, ४ वायुः प्रजापतिः, ५ आर्शाः । त्रिष्टुप् ।
य ईशे पशुपतिः पशूनां चतुष्पदामुत यो द्विपदाम् ।
निष्क्रीतः स यज्ञियं भागमेतु रायस्पोषा यजमानं सचन्ताम् १
प्रमुञ्चन्तो भुवनस्य रेतो गातुं धत्त यजमानाय देवाः ।
उपाकृतं शशमानं यदस्थात् प्रियं देवानामप्येतु पार्थः २
ये बृध्यमानमनु दीध्याना अन्वैक्षन्त मनसा चक्षुषा च ।
अग्निष्ठानग्रे प्र मुमोक्तु देवो विश्वकर्मा प्रजया संरराणः ३
ये ग्राम्याः पशवो विश्वरूपा विरूपाः सन्तो बहुधैकरूपाः ।
वायुष्ठानग्रे प्र मुमोक्तु देवः प्रजापतिः प्रजया संरराणः ४ ८९०
प्रजानन्तः प्रति गृह्णन्तु पूर्वे प्राणमङ्गैभ्यः पर्याचरन्तम् ।
दिवं गच्छ प्रति तिष्ठा शरीरैः स्वर्गं याहि पृथिभिर्देवयानैः ५ ८९१

॥ ११७ ॥ (अथर्व० ३।३।२-३, ५-६) +

२ इन्द्रः, ३ वरुणः सोमः इन्द्रः, ५ इन्द्राग्नी, विश्वे देवाः, ६ इन्द्रः । त्रिष्टुप्, ३ चतुष्पदा
भुरिक्पङ्क्तिः, ५-६ अनुष्टुप् ।

दुरे चित् सन्तमरुषास इन्द्रमा च्यावयन्तु सखाय विप्रम् ।
यद् गायत्री बृहतीमर्कमस्मै सौत्रामण्या दधृषन्त देवाः २
अञ्चस्त्वा राजा वरुणो ह्वयतु सोमस्त्वा ह्वयतु पर्वतेभ्यः ।
इन्द्रस्त्वा ह्वयतु विड्भ्य आभ्यः श्येनो भूत्वा विश आ पतेमाः ३
ह्वयन्तु त्वा प्रतिजनाः प्रति मित्रा अवृषत । इन्द्राग्नी विश्वे देवास्ते विशि क्षेममदीधरन् ५
यस्ते हवँ विवदेत् सजातो यश्च निष्टयः । अपाञ्चमिन्द्र तं कृत्वाथेममिहाव गमय ६ ८९५

॥ ११८ ॥ (अथर्व० ३।४।१-२, ४-७) ✽

इन्द्रः, २ पञ्च प्रदिशः, ४ अश्विनौ, मित्रावरुणौ, विश्वे देवाः, मरुतः, ५ द्यावापृथिवी ।
त्रिष्टुप्, १ जगती ४-५ भुरिक् ।

आ त्वा गन् राष्ट्रं सह वर्चसोर्दिहि प्राड् विशां पतिरेकुराट् त्वं वि राज ।
सर्वास्त्वा राजन् प्रदिशो ह्वयन्तुपसद्यो नमस्यो भवेह १ ८९६

+ अथर्व० ३, ३, १, ४ = दै० [अग्निः] २१५९ । दै० [अश्विनौ] ६७२ । ✽ अथर्व० ३, ४, ३ = दै० [अग्निः] २१६० ।

त्वां विशो वृणतां राज्याय त्वामिमाः प्रदिशः पञ्च देवीः ।

वर्षमन् राष्ट्रस्य ककुदिं श्रयस्व ततो न उग्रो वि भञ्जा वसूनि

२

अश्विना त्वाग्ने मित्रावरुणोभा विश्वे देवा मरुतस्त्वा ह्वयन्तु ।

अधा मनो वसुदेयाय कृणुष्व ततो न उग्रो वि भञ्जा वसूनि

४

आ प्र द्रव परमस्याः परावतः शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् ।

तदयं राजा वरुणस्तथाह स त्वायमहत् स उपेदमहि

५

इन्द्रेन्द्र मनुष्याहुः परेहि सं ह्यज्ञास्था वरुणैः संविदानः ।

स त्वायमहत् स्वे सधस्थे स देवान् यक्षत् स उ कल्पयाद् विशः

६

९०५

पृथ्या रेवतीर्वहधा विरूपाः सर्वाः संगत्य वरीयस्ते अक्रन् ।

तास्त्वा सर्वाः संविदाना ह्वयन्तु दशमीमुग्रः सुमना वशेह

७

९०६

॥ ११९ ॥ (अथर्व० ३।८।१-६)

१ मित्रः, पृथिवी, वरुणः, वायुः, अग्निः; २ धाता, सविता, इन्द्रः, त्वष्टा, अदितिः; ३ सोमः, सविता, आदित्यः, अग्निः; ४ विश्वे देवाः, ५-६ सामनस्यम् । त्रिष्टुप्; २, ६ जगती;

४ चतुष्पदा विराड् बृहतीगर्भा । अनुष्टुप् ।

यातु मित्र क्रतुभिः कल्पमानः संवेशयन् पृथिवीमुस्त्रियाभिः ।

यस्मभ्यं वरुणो वायुरग्निर्वहद् राष्ट्रं संवेशयं दधातु

१

राता रातिः संवितेदं जुषन्तामिन्द्रस्त्वष्टा प्रति हर्यन्तु मे वचः ।

देवीमदितिं शूरपुत्रां सजातानां मध्यमेष्टा यथासानि

×२

सोमं सवितारं नमोभिर्विश्वानादित्यां अहमुत्तरत्वे ।

समधिर्दीदायद् दीर्घमेव सजातैरिन्द्रोऽप्रतिब्रुवद्भिः

३

ससाथ न परो गमाथेर्यो गोपाः पुष्टपतिर्व आजत् ।

समे कामायोप कामिनीर्विश्वे वो देवा उपसंयन्तु

४

९०५

मो मनांसि सं व्रता समाकृतीर्नमामसि । अमी ये विव्रता स्थन् तान् वः सं नमयामसि

५

मृग्यामि मनसा मनांसि मम चित्तमनु चित्तेभिरेत ।

मृगेषु हृदयानि वः कृणोमि मम यातमनुवर्तमानं एतं

६

९०७

॥ १२० ॥ (अथर्व० ३।१०।१, ५-७, ११-१३) *

एका, १ घेनुः, ५ एकाष्टका, ६ जातवेदाः, पशवः, ७ राज्ञिः, यज्ञाः, ११ देवाः, १२ इन्द्रः, देवाः, १३ प्रजापतिः । अनुष्टुप्; ५-६, १२ त्रिष्टुप्; ७ त्र्यवसाना षट्पदा विराड्गर्भातिजगती ।

मृगा ह व्युवास सा घेनुरभवद् यमे । सा नः पर्यस्वती दुहामुत्तरामुत्तरां समाम्

१

९०८

३, ८, २ = दै० [अदितिः०] ७०८। * अथर्व० ३।१०, २-४, ८-१० = दै० [अदितिः] ७०९, ८८७, ९४९, १०१५-७७।

वानस्पत्या ग्रावाणो घोरमक्रत हविष्कृण्वन्तः परिवत्सरीणम् ।	
एकाष्टके सुप्रजसः सुवीरा वयं स्याम पतयो रयीणाम्	५ ९०९
इडायास्पदं घृतवत् सरीसृपं जातवेदः प्रति हव्या गृभाय ।	
ये ग्राम्याः पशवो विश्वरूपास्तेषां सप्तानां मयि रन्तिरस्तु	६ ९१०
आ मां पुष्टे च पोषे च रात्रिं देवानां सुमतौ स्याम ।	
पूर्णा देवैः परा पत सुपूर्णा पुनरा पत । सर्वान् यज्ञान्संभुज्जतीषमूर्जे न आ भर	७
इडया जुह्वतो वयं देवान् घृतवता यजे । गृहानलुभ्यतो वयं सं विशेमोष गोमतः	११
एकाष्टका तपसा तप्यमाना जजान गर्भं महिमानमिन्द्रम् ।	
तेन देवा व्यसिहन्तु शत्रून् हन्ता दस्यूनामभवच्छचीपतिः	१२
इन्द्रपुत्रे सोमपुत्रे दुहितारिं प्रजापतेः । कामानस्माकं पूरय प्रति गृह्णाहि नो हविः	१३ ९१४

॥ १२१ ॥ (अथर्व० ३।१५।१-८)

(पण्यकामः) । विश्वे देवाः, इन्द्राग्नी । त्रिष्टुप्, १ भूरिक्, ४ व्यवसाना षट्पदा

बृहतीगर्भा विराडत्यष्टिः ५ विराड्जगती, ७ अनुष्टुप्, ८ निचृत् ।

इन्द्रमहं वणिजं चोदयामि स न ऐतुं पुरता नो अस्तु ।	
नुदन्नरार्तिं परिपन्थिनं मृगं स ईशानो धनदा अस्तु मह्यम्	१ ९१५
ये पन्थानो बहवो देवयाना अन्तरा द्यावापृथिवी संचरन्ति ।	
ते मां जुषन्तां पर्यसा घृतेन यथा क्रीत्वा धनमाहराणि	२
इध्मेनाग्न इच्छमानो घृतेन जुहोमि हव्यं तस्से बलाय ।	
यावदीशे ब्रह्मणा वन्दमान इमां धियं शतसेयाय देवीम्	३
इमामग्ने शरणि मीमृषो नो यमध्वानमगाम दूरम् ।	
शुनं नो अस्तु प्रपणो विक्रयश्च प्रतिपणः फलिनं मा कृणोतु ।	
इदं हव्यं संविदानौ जुषेथां शुनं नो अस्तु चरितमुत्थितं च	४
येन धनेन प्रपणं चरामि धनेन देवा धनमिच्छमानः ।	
तन्मे भूयो भवतु मा कनीयोऽग्ने सातघ्नो देवान् हविषा नि षेध	५
येन धनेन प्रपणं चरामि धनेन देवा धनमिच्छमानः ।	
तस्मिन् म इन्द्रो रुचिमा दधातु प्रजापतिः सविता सोमो अग्निः	६ ९१०
उप त्वा नमसा वयं होतवैश्वानर स्तुमः । स नः प्रजास्वात्मसु गोषु प्राणेषु जागृहि	
विश्वाहा ते सदमिद् भरेमाश्वायेव तिष्ठते जातवेदः ।	७ ९११
रायस्पोषेण समिषा मदन्तो मा ते अग्ने प्रतिवेशा रिषाम	८

॥ १२२ ॥ (अथर्व० ५।८।१-९) x

नातादैवत्यः १-२ अग्निः, ३ विश्वे देवाः, ४-९ इन्द्रः । अनुष्टुप्, २ ज्यवसाना षट्पदा जगती, ३-४ भुरिक्पथ्यापङ्क्तिः, ६ आस्तारपङ्क्तिः, ७ द्र्युष्णिग्गर्भा पथ्यापङ्क्तिः, ९ ज्यवसाना षट्पदा द्र्युष्णिग्गर्भा जगती ।

१०९

११०

११४

११५

१ अग्ने तौ इह मादय सर्व आ यन्तु मे हवम् ।
याहि मे हवमिदं करिष्यामि तच्छृणु ।

२ ऐन्द्रा अतिसरा आकूतिं सं नमन्तु मे । तेभिः शकेम वीर्यं जातवेदस्तनूवशिन् ।
सुतो देवा अदेवः संश्रिकीर्षति ।

३ तस्याग्निर्हव्यं वाक्षीद्वै देवा अस्य मोषं गुर्ममैव हवमेतन् ।
११५ धावतातिसरा इन्द्रस्य वचसा हत ।

४ वृक इव मथीत स वो जीवन्मा मौचि प्राणमस्यापि नह्यत ।
५ पुरोदधिरे ब्रह्माणमपभूतये । इन्द्र स ते अधस्पदं तं प्रत्यस्यामि मृत्यवे ।
६ प्रुदेवपुरा ब्रह्म वर्माणि चक्रिरे ।

७ यानं परिपाणं कृण्वाना यदुपोचिरे सर्वं तदरसं कृधि ।
११५ त्वावतिसराश्चकार कृणवच्च यान् ।

८ तानिन्द्र वृत्रहन् प्रतीचिः पुनरा कृधि यथामुं तूणहां जनम् ।
९ उवाचनं लब्ध्वा चक्रे अधस्पदम् । कृण्वेहमधरांस्तथामूलंश्चतीभ्यः समाभ्यः ।
१२० तानिन्द्र वृत्रहन्नुग्रो मर्माणि विध्य । अत्रैवैनानभि तिष्ठेन्द्र मेघेहं तव ।

१२१ त्वेन्द्रा रभामहे स्याम सुमतौ तव ।

॥ १२३ ॥ (अथर्व० ६।३।१-३)

१ इन्द्रापूषणौ, अदितिः, मरुतः, अपां नपात्, सिन्धवः, विष्णुः, द्यौः, २ द्यावापृथिवी, ग्रावा, सोमः, सरस्वती, अग्निः, ३ अश्विनौ, उषासानक्ता, अपां नपात्, त्वष्टा । जगती, १ पथ्यावृहती ।

१ पातं न इन्द्रापूषणादितिः पान्तु मरुतः ।
अपां नपात् सिन्धवः सप्त पातन् पातु नो विष्णुरुत द्यौः ।

२ पातां नो द्यावापृथिवी अभिष्टये पातु ग्रावा पातु सोमो नो अंहसः ।
पातु नो देवी सुभगा सरस्वती पात्वग्निः शिवा ये अस्य पायवः ।

३ पातां नो देवाश्विना शुभस्पती उषासानक्ता न उरुष्यताम् ।
अपां नपादभिहृती गर्यस्य चिद् देव त्वष्टर्वर्धय सर्वतातये ।

११०

१११

x अथर्व० ५, ८, १-३ = दै० [अग्निः] २१६३-६५ ।

॥ १२४ ॥ (अथर्व० ६।४।१-३) +

१ त्वष्टा, पर्जन्यः, ब्रह्मणस्पतिः, अदितिः; २ अंशः, भगः, वरुणः, मित्रः, अर्यमा, अदितिः, मरुतः; ३ अश्विनौ, द्यौष्पिता । पथ्यावृहती, २ संस्तारपङ्क्तिः, ३ त्रिपदा विराङ्गायत्री ।
 त्वष्टा मे दैव्यं वचः पर्जन्यो ब्रह्मणस्पतिः । पुत्रैर्भ्रातृभिरदितिर्नु पातु नो दुष्टं त्रायमाणं सहः १
 अंशो भगो वरुणो मित्रो अर्यमादितिः पान्तु मरुतः ।

अप तस्य द्वेषो गमेदभिहुतो यावयच्छत्रुमन्तितम् २
 धिये समश्चिना प्रावतं न उरुष्या णं उरुज्मन्नप्रयुच्छन् । द्यौश्चिपितर्यावयं दुच्छुना या ३

॥ १२५ ॥ (अथर्व० ६।५।३)

अग्निः, सोमः, ब्रह्मणस्पतिः । अनुष्टुप् ।

यस्य कृण्मो हविर्गृहे तमग्ने वर्धया त्वम् । तस्मै सोमो अधि ब्रवदयं च ब्रह्मणस्पतिः ३ १३८

॥ १२६ ॥ (अथर्व० ६।४०।१-३)

१ द्यावापृथिवी, सोमः, सविता, अन्तरिक्षं, सप्तऋषयः; २ सविता, इन्द्रः; ३ इन्द्रः ।

१-२ जगती, ३ अनुष्टुप् ।

अभयं द्यावापृथिवी इहास्तु नोऽभयं सोमः सविता नः कृणोतु ।

अभयं नोऽस्तुर्वैऽन्तरिक्षं सप्तऋषीणां च हविषाऽभयं नो अस्तु १

अस्मै ग्रामाय प्रदिशश्चतस्र ऊर्जं सुभूतं स्वस्ति सविता नः कृणोतु ।

अशत्र्विन्द्रो अभयं नः कृणोत्वन्यत्र राज्ञामभि यातु मन्युः २ १४०

अनमित्रं नो अधरादनमित्रं न उत्तरात् । इन्द्रानमित्रं नः पश्चादनमित्रं पुरस्कृधि ३ १४१

॥ १२७ ॥ (अथर्व० ६।६२।१-३)

रुद्रः, वैश्वानरः, वातः, द्यावापृथिवी । त्रिष्टुप् ।

वैश्वानरो रश्मिर्भिनः पुनातु वातः प्राणेनेषिरो नमोभिः ।

द्यावापृथिवी पर्यसा पर्यस्वती क्रतावरी यज्ञिये नः पुनीताम् १

वैश्वानरीं सूनृतामा रभध्वं यस्या आशास्तन्वो वीतपृष्ठाः ।

तया गृणन्तः सधमादेषु वयं स्याम पतयो रयीणाम् २

वैश्वानरीं वर्चस आ रभध्वं शुद्धा भवेन्तः शुचयः पावकाः ।

इहेडया सधमादुं मदन्तो ज्योक् पश्येम सूर्यमुच्चरन्तम् ३ १४४

॥ १२८ ॥ (अथर्व० ६।६४।१-३)

सामनस्यम्, १ विश्वे देवाः । अनुष्टुप्, (त्रिष्टुप्) ।

सं जानीध्वं सं पृच्यध्वं सं वो मनोसि जानताम् । देवा भागं यथा पूर्वं संजानाना उपासते १ १४५

+ अथर्व० ६, ४, १-२, ३ = दै० [अदितिः] ७०४, ८०८ । दै० [अश्विनौ] ६७३ ।

वैश्व देवाः ।

२

389

934

2

3

2

१३८

२

३ ९५०

7

2

१४०

१४१

3

३ १५३

2

3

२ १५५

588

३ ९५६

२४५

2

१ १५७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इमं वीरमनु हर्षध्वमुग्रमिन्द्रं सखायो अनु सं रभध्वम् ।
ग्रामजितं गोजितं वज्रबाहुं जयन्तमजम् प्रमृणन्तमोजसा

×३ ९५८

॥ १३३ ॥ (अथर्व० ६।९९।१-३)

इन्द्रः, सोमः, सविता च । अनुष्टुप्, ३ भुरिग्वृहती (सौम्या सावित्री) ।

अभि त्वेन्द्र वरिमतः पुरा त्वाहूणादुवे । ह्याम्युग्रं चेत्तारं पुरुणामानमेकजम् १
यो अद्य सेन्यो वधो जिघांसन् न उदीरते । इन्द्रस्य तत्र बाहू समन्तं परि दद्वः २ ९६०
परि दद्व इन्द्रस्य बाहू समन्तं त्रातुस्त्रायतां नः । देव सवितः सोम राजन्त्सु मनसं मा कृणु स्वस्तये ३ ९६१

॥ १३४ ॥ (अथर्व ७।७०।१-५)

इयेनः, देवाः १ त्रिष्टुप्, २ अतिजगतीगर्भा जगती, ३-५ अनुष्टुप्
(३ पुरःककुम्भती) ।

यत् किं चासौ मनसा यच्च वाचा यज्ञैर्जुहोति हविषा यजुषा ।
तन्मृत्युना निर्ऋतिः संविदाना पुरा सत्यादाहुतिं हन्त्वस्य १
यातुधाना निर्ऋतिरादु रक्षस्ते अस्य मन्त्वन्तेन सत्यम् ।
इन्द्रेपिता देवा आज्यमस्य मथन्तु मा तत् सं पादि यदसौ जुहोति २
अजिराधिराजौ इयेनौ संपातिनाविव । आज्यं पृतन्यतो हतां यो नः कश्चाभ्यघायति ३
अपाञ्चौ त उभौ बाहू अपि नह्याम्यास्यम् । अग्नेर्देवस्य मन्युना तेन तेऽवधिषं हविः ४ ९६५
अपि नह्यामि ते बाहू अपि नह्याम्यास्यम् । अग्नेर्घोरस्य मन्युना तेन तेऽवधिषं हविः ५ ९६६

॥ १३५ ॥ (अथर्व० ७।९८।१)

इन्द्रः, विश्वे देवाः । विराट् ।

सं बर्हिर्क्तं हविषा घृतेन समिन्द्रेण वसुना सं मरुद्भिः ।
सं देवैर्विश्वदेवैर्भिरक्तमिन्द्रं गच्छतु हविः स्वाहा

१ ९६७

॥ १३५ ॥ (अथर्व० १२।१५।५-६) +

मन्त्रोक्ताः । ५ जगती; ६ त्रिष्टुप् ।

अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे ।
अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु
अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं पुरो यः ।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु

५

६ ९६९

× अथर्व० ६, ९७, २ = दै० [अदितिः०] ३०४ । + अथर्व० १९, १५, १ = दै० [इन्द्रः] ५६० ।

॥ १३७ ॥ (अथर्व० १९।१६।१-२)

मन्त्रोक्ताः । १ अनुष्टुप् ; २ ज्यवसाना सप्तपदा बृहतीगर्भातिशकरी ।

असपत्नं पुरस्तात् पश्चान्नो अभयं कृतम् । सविता मां दक्षिणत उत्तरान्मां शचीपतिः १ ९७०
दिवो मादित्या रक्षन्तु भूम्यां रक्षन्त्वग्नयः ।

इन्द्राग्नी रक्षतां मां पुरस्तादुश्विनावभितः शर्मं यच्छताम् ।

तिरश्चीनध्या रक्षतु जातवेदा भूतकृतो मे सर्वतः सन्तु वर्मे २ ९७१

॥ १३८ ॥ (अथर्व० १९।१७।१-१०)

मन्त्रोक्ताः । १-४ जगती; ५, ७, १० अतिजगती; ६ भुरिक्; ९ पञ्चपदाऽतिशकरी ।

अग्निर्मां पातु वसुभिः पुरस्तात् तस्मिन् क्रमे तस्मिन् श्रेये तां पुरं प्रैमि ।

स मां रक्षतु स मां गोपायतु तस्मां आत्मानं परिं ददे स्वाहा १

वायुर्मान्तरिक्षेणैतस्यां दिशः पातु तस्मिन् क्रमे० । स मां रक्षतु० २

सोमो मां रुद्रैर्दक्षिणाया दिशः पातु तस्मिन् क्रमे० । स मां रक्षतु० ३

वरुणो मादित्यैरेतस्यां दिशः पातु तस्मिन् क्रमे० । स मां रक्षतु० ४ ९७२

सूर्यो मां द्यावापृथिवीभ्यां प्रतीच्या दिशः पातु० । स मां रक्षतु० ५

आपो मौषधीमतीरेतस्यां दिशः पातु तासु क्रमे तासु श्रेये तां पुरं प्रैमि ।

ता मां रक्षन्तु ता मां गोपायन्तु ताभ्यं आत्मानं परिं ददे स्वाहा ६

विश्वकर्मा मां सप्तऋषिभिर्हृदीच्या दिशः पातु तस्मिन् क्रमे० । सा मां रक्षतु० ७

इन्द्रो मां मरुत्वानेतस्यां दिशः पातु तस्मिन् क्रमे० । स मां रक्षतु० ८

प्रजापतिर्मां प्रजननवान्सह प्रतिष्ठाया ध्रुवायां दिशः पातु० । स मां रक्षतु० ९ ९८०

बृहस्पतिर्मां विश्वेदेवैरूर्ध्वायां दिशः पातु तस्मिन् क्रमे० । स मां रक्षतु० १० ९८१

॥ १३९ ॥ (अथर्व० १९।१८।१-१०)

मन्त्रोक्ताः । १, ८ साम्नी त्रिष्टुप् ; २-६ आर्च्यनुष्टुप्, (५ सम्राडाच्यनुष्टुप्);

७, ९-१० (द्विपदा) प्राजापत्या त्रिष्टुप् ।

अग्निं ते वसुवन्तमृच्छन्तु । ये मां घायवः प्राच्यां दिशोऽभिदासात् १

वायुं तेऽन्तरिक्षवन्तमृच्छन्तु । ये मां घायव एतस्यां दिशोऽभिदासात् २

सोमं ते रुद्रवन्तमृच्छन्तु । ये मां घायवो दक्षिणाया दिशोऽभिदासात् ३

वरुणं त आदित्यवन्तमृच्छन्तु । ये मां घायव एतस्यां दिशोऽभिदासात् ४ ९८५

सूर्यं ते द्यावापृथिवीवन्तमृच्छन्तु । ये मां घायवः प्रतीच्यां दिशोऽभिदासात् ५

अपस्त ओषधीमतीरिच्छन्तु । ये मां घायव एतस्यां दिशोऽभिदासात् ६ ९८७

१० दै. (विश्वे देवाः)

विश्वकर्माणं ते सप्तऋषिवन्तमृच्छन्तु । ये माघायव उदीच्या दिशोऽभिदासात् ७
 इन्द्रं ते मरुत्वन्तमृच्छन्तु । ये माघायव एतस्यां दिशोऽभिदासात् ८
 प्रजापतिं ते प्रजननवन्तमृच्छन्तु । ये माघायवो ध्रुवायां दिशोऽभिदासात् ९ ११०
 बृहस्पतिं ते विश्वदेववन्तमृच्छन्तु । ये माघायव ऊर्वायां दिशोऽभिदासात् १० १११

॥ १४० ॥ (अथर्व० १९।१९।१-११)

चन्द्रमाः, मन्त्रोक्ताश्च । पङ्क्तिः, १,२,९ भुरिगृहती; १० स्वरान्; २,४-८,११ अनुष्टुप्गर्भा ।

मित्रः पृथिव्योदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः ।
 तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु १
 वायुरन्तरिक्षेणोदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत० २
 सूर्यो दिवोदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत० ३
 चन्द्रमा नक्षत्रैरुदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत० ४ ११५
 सोम ओषधीभिरुदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत० ५
 यज्ञो दक्षिणाभिरुदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत० ६
 समुद्रो नदीभिरुदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत० ७
 ब्रह्म ब्रह्मचारिभिरुदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत० ८
 इन्द्रो वीर्यैर्द्विजोदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत० ९ १०००
 देवा अमृतैर्नोदक्रामन्तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत० १०
 प्रजापतिः प्रजाभिरुदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत० ११ १००१

॥ १४१ ॥ (अथर्व० १९।२०।१-४)

बहुदेवत्यम् । १ त्रिष्टुप्; २ जगती; ३ पुरस्ताद्बृहती; ४ अनुष्टुप्गर्भा ।

अप न्यधुः पौरुषेयं वधं यमिन्द्राग्नी धाता सविता बृहस्पतिः ।
 सोमो राजा वरुणो अश्विनां यमः पूषाऽस्मान् परि पातु मृत्योः १
 यानि चकार भुवनस्य यस्पतिः प्रजापतिर्मातरिश्वा प्रजाभ्यः ।
 प्रदिशो यानि वसते दिशश्च तानि मे वर्माणि बहुलानि सन्तु २
 यत् ते तनूष्वनहन्त देवा द्युराजयो देहिनः । इन्द्रो यच्चक्रे वर्म तदस्मान् पातु विश्वतः ३ १००५
 वर्म मे द्यावापृथिवी वर्माहर्वम सूर्यः । वर्म मे विश्वे देवाः क्रन् मा मा प्रापत् प्रतीचिका ४ १००६

॥ १४२ ॥ (अथर्व० १९।२३।१-२९)

लोकाः चन्द्रमाश्च । १ आसुरी गायत्री; २-७; २०, २३, २७ दैवी त्रिष्टुप्; ८, १०-१२, १४-१६ प्राजापत्या
गायत्री, १७, १९, २४-२५, २९ दैवी पंक्तिः; ९, १३, १८, २१, २६, २८ दैवी जगती; (१-२९ एकावसानाः) ।

आथर्वणानां चतुर्चमेभ्यः स्वाहा १। पञ्चर्चमेभ्यः स्वाहा २। षष्ठ्येभ्यः स्वाहा ३
सप्तर्चमेभ्यः स्वाहा ४। अष्टर्चमेभ्यः स्वाहा ५। नवर्चमेभ्यः स्वाहा ६
दशर्चमेभ्यः स्वाहा ७। एकादशर्चमेभ्यः स्वाहा ८
द्वादशर्चमेभ्यः स्वाहा ९। त्रयोदशर्चमेभ्यः स्वाहा १०। चतुर्दशर्चमेभ्यः स्वाहा ११
पञ्चदशर्चमेभ्यः स्वाहा १२। षोडशर्चमेभ्यः स्वाहा १३। सप्तदशर्चमेभ्यः स्वाहा १४ १०२०
अष्टादशर्चमेभ्यः स्वाहा १५। एकोनविंशतिः स्वाहा १६। विंशतिः स्वाहा १७
महत्काण्डाय स्वाहा १८। तृचेभ्यः स्वाहा १९। एकर्चमेभ्यः स्वाहा २०
क्षुद्रेभ्यः स्वाहा २१। एकानृचेभ्यः स्वाहा २२। रोहितेभ्यः स्वाहा २३
११५ सूर्याभ्यां स्वाहा २४। त्रात्याभ्यां स्वाहा २५। प्राजापत्याभ्यां स्वाहा २६
५ विषासह्यै स्वाहा २७। मङ्गलिकेभ्यः स्वाहा २८। ब्रह्मणे स्वाहा २९ १०३५

॥ १४३ ॥ (अथर्व० १९।२४।१-८)

ब्रह्मणस्पतिः, बहुदैवत्यम् । अनुष्टुप्; ४-६, ८ त्रिष्टुप्; ७ त्रिपदाऽऽर्वी गायत्री ।

येन देवं सवितारं परि देवा अधारयन् । तेनेमं ब्रह्मणस्पते परि राष्ट्राय धत्तन १
परीममिन्द्रमार्युषे महे क्षत्राय धत्तन । यथैनं जरसे नयां ज्योक् क्षत्रेऽधि जागरत् २
१००१ परीमं सोमनार्युषे महे श्रोत्राय धत्तन । यथैनं जरसे नयां ज्योक् श्रोत्रेऽधि जागरत् ३
परि धत्त धत्त नो वर्चसेमं जरामृत्युं कृणुत दीर्घमार्युः ।

बृहस्पतिः प्रायच्छद् वास एतत् सोमाय राज्ञे परिधातुवा उ ४
जरां सु गच्छ परि धत्स्व वासो भवा गृष्टीनामभिशस्तिपा उ ।

शतं च जीवं शरदः पुरुची रायश्च पोषमुपसंव्ययस्व ५ १०४०
परीदं वासो अधिथाः स्वस्तयेऽभूर्वापीनामभिशस्तिपा उ ।

शतं च जीवं शरदः पुरुचीर्वस्रानि चारुर्वि भजासि जीवन् ६
योगेयोगे त्वस्तरं वाजेवाजे हवामहे । सखाय इन्द्रमूतये ७
१००५ हिरण्यवर्णो अजरः सुवीरो जरामृत्युः प्रजया सं विशस्व ।
१००६ तदुभिराह तदु सोम आह बृहस्पतिः सविता तदिन्द्रः ८ १०४३

॥ १४४ ॥ (अथर्व० ५।३।३-६)×

(१०४३-४७) बृहद्विवोऽथर्वा । ३-४ देवाः, ५ द्रविणोदाः, ६ देवीः । त्रिष्टुप् ।

मम देवा विहवे सन्तु सर्व इन्द्रवन्तो मरुतो विष्णुरग्निः ।

ममान्तरिक्षमुरुलोकमस्तु मह्यं वातः पवतां कामायास्मै

मह्यं यजन्तां मम यानीष्टाकूतिः सत्या मनसो मे अस्तु ।

एनो मा नि गां कतमच्चनाहं विश्वे देवा अभि रक्षन्तु मेह

मयि देवा द्रविणमा यजन्तां मय्याशीरस्तु मयि देवहूतिः ।

दैवा होतारः सनिषन्न एतदरिष्टाः स्याम तन्वासुवीराः

दैवीः षडुर्वारु नः कृणोत विश्वे देवास इह मादयध्वम् ।

मा नो विददभिमा मो अशस्तिर्मा नो विदद् वृजिना द्वेष्या या

॥ १४५ ॥ (अथर्व० १।१६।१-४)

(१०४८-५१) चातनः । आग्निः, इन्द्रः, वरुणः, (२-४ दधत्यं सीसम्) । अनुष्टुप्, ४ ककुम्भती अनुष्टुप् ।

येमावास्यां रात्रिमुदस्थुर्वाजमत्त्रिणः । अग्निस्तुरीयो यातुहा सो अस्मभ्यमग्निं ब्रवत् १

सीसायाध्याह वरुणः सीसायाग्निरुपावति । सीसे म इन्द्रः प्रायच्छत् तदङ्ग यातुचातनम् २

इदं विष्कन्धं सहत इदं बाधते अत्त्रिणः । अनेन विश्वा ससहे या जातानि पिशाच्याः ३ १०५०

यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पूरुषम् । तं त्वा सीसेन विध्यामो यथा नोऽसो अवीरहा ४ १०५१

॥ १४६ ॥ (अथर्व० १।१९।१-४)

(१०५२-९०) ब्रह्मा । ईश्वरः, (१ इन्द्रः, २ दैवीः मनुष्येषवः, ३ रुद्रः, ४ देवाः) । अनुष्टुप्,

२ पुरस्ताद्बृहती, ३ पथ्यापङ्क्तिः ।

मा नो विदन् विव्याधिनो मो अभिव्याधिनो विदन् ।

आराच्छरव्या अस्मद् विषूचीरिन्द्र पातय

विष्वश्चो अस्मच्छरवः पतन्तु ये अस्ता ये चास्याः ।

दैवीर्मनुष्येषवो ममामित्रान् वि विध्यत

यो नः सो यो अरणः सजात उत निष्ट्यो यो अस्मां अभिदासति ।

रुद्रः शरव्यैतान् ममामित्रान् वि विध्यत

यः सपत्नो योऽसपत्नो यश्च द्विषन्छपाति नः ।

देवास्तं सर्वे धूर्वन्तु ब्रह्म वर्म ममान्तरम्

× अथर्व० ५, ३, ७, ९-१० = दै० [सोमः] ११८७; दै० [अदितिः०] ७१०; दै० [रुद्रः] १५५ ।

+ अथर्व० १, १९, ३ = दै० [रुद्रः] ११२ ।

॥ १४७ ॥ (अथर्व० १।२६।१-२) *

१ देवाः, २ इन्द्रः, भगः, सविता गायत्री; २ त्रिपदा एकावसाना सास्त्री त्रिष्टुप्,
४ एकावसाना पादनिचृत् ।

आरेऽसावस्मदस्तु हेतिर्देवासो असत् । आरे अश्मा यमस्यथ १
सखासावस्मभ्यमस्तु रातिः सखेन्द्रो भगः सविता चित्रराधाः २ १०५७

॥ १४८ ॥ (अथर्व० ३।२३।१-६)

चन्द्रमाः, योनिः, द्यावापृथिवी । अनुष्टुप्, ५ उपरिष्ठाद् भुरिगृहती, ६ स्कंधोग्रीवी गृहती ।

येन वेहद् बभूविथ नाशयामसि तत् त्वत् । इदं तदन्यत्र त्वदप दूरे नि दध्मसि १
आ ते योनिं गर्भं एतु पुमान् वाणं इवेषुधिम् ।

आ वीरोऽत्र जायतां पुत्रस्ते दर्शमास्यः २
पुमांसं पुत्रं जनय तं पुमाननु जायताम् ।

भवासि पुत्राणां माता जातानां जनयाश्च यान् ३ १०६०
यानि भद्राणि बीजान्युषभा जनयन्ति च । तैस्त्वं पुत्रं विन्दस्व सा प्रसूधेनुका भव ४

कृणोमि ते प्राजापत्यमा योनिं गर्भं एतु ते ।
विन्दस्व त्वं पुत्रं नारि यस्तुभ्यं शमसच्छमु तस्मै त्वं भव ५

यासां द्यौः पिता पृथिवी माता समुद्रो मूलं वीरुधां बभूव ।
तास्त्वा पुत्रविद्याय दैवीः प्रावन्त्वोपधयः ६ १०६३

॥ १४९ ॥ (अथर्व० ६।५५।१) जगती ।

ये पन्थानो बहवो देवयानां अन्तरा द्यावापृथिवी संचरन्ति ।
तेषामज्यानि यतमो वहाति तस्मै मा देवाः परि धत्तेह सर्वे १ १०६४

॥ १५० ॥ (अथर्व० ६।११४।१-३) अनुष्टुप् ।

देवा देवहेडनं देवासश्चक्रुमा वयम् । आदित्यास्तस्मान्नो यूयमृतस्यर्तेन मुञ्चत १ १०६५

स्यर्तेनादित्या यज्ञत्रा मुञ्चतेह नः । यज्ञं यद् यज्ञवाहसः शिक्षन्तो नोपशेकिम २
सता यज्ञमानाः सुचाज्यानि जुह्वतः । अक्रामा विश्वे वो देवाः शिक्षन्तो नोप शेकिम ३ १०६७

॥ १५१ ॥ (अथर्व० ७।२४।१)

इन्द्रः, अग्निः, विश्वे देवाः, मरुतः, सविता, प्रजापतिः, अनुमतिः । त्रिष्टुप् ।

यन् इन्द्रो अखेनद् यदग्निर्विश्वे देवा मरुतो यत् स्वर्काः ।
तदुस्मभ्यं सविता सत्यधर्मा प्रजापतिरनुमतिर्नि यच्छात् १ १०६८

अथर्व० १, २६, ३-४ = दै० [मरुतः] ४३०-३१ ।

॥ १५२ ॥ (अथर्व० १९।९।१-१४)

(शान्तातिः ?) । शान्तिः, बहुदेवत्यम् । अनुष्टुप् ; १ विराडुरोबृहती ; ५ पञ्चपदा पठ्यापंक्तिः ;
९ पञ्चपदा ककुम्भती ; १२ त्र्यवसाना सप्तपदाष्टिः ; १४ चतुष्पदा संकृतिः ।

शान्ता द्यौः शान्ता पृथिवी शान्तमिदमुर्वीन्तरिक्षम् ।

शान्ता उदन्वतीरापः शान्ता नः सन्त्वोषधीः १

शान्तानि पूर्वरूपाणि शान्तं नो अस्तु कृताकृतम् ।

शान्तं भूतं च भव्यं च सर्वमेव शमस्तु नः २ १०७०

इयं या परमेष्ठिनी वाग्देवी ब्रह्मसंशिता । ययैव संसृजे घोरं तयैव शान्तिरस्तु नः ३

इदं यत् परमेष्ठिनं मनो वां ब्रह्मसंशितम् । येनैव संसृजे घोरं तेनैव शान्तिरस्तु नः ४

इमानि यानि पञ्चैन्द्रियाणि मनःषष्ठानि मे हृदि ब्रह्मणा संशितानि ।

यैरेव संसृजे घोरं तैरेव शान्तिरस्तु नः ५

शं नो मित्रः शं वरुणः शं विष्णुः शं प्रजापतिः ।

शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो भवत्वर्धमा ६

शं नो मित्रः शं वरुणः शं विवस्वांछमन्तकः ।

उत्पाताः पार्थिवान्तरिक्षाः शं नो दिविचरा ग्रहाः ७ १०७५

शं नो भूमिर्वेप्यमाना शमुल्का निर्हतं च यत् । शं गावो लोहितक्षीराः शं भूमिरिव तीर्थतीः ८

नक्षत्रमुल्कामिहतं शमस्तु नः शं नोऽभिचाराः शम्बु सन्तु कृत्याः । ९

शं नो निखाता वल्गाः शमुल्का देशोपसर्गाः शम्बु नो भवन्तु ९

शं नो ग्रहाश्चान्द्रमसाः शमादित्यश्च राहुणा । शं नो मृत्युर्धूमकेतुः शं रुद्रास्तिग्मतैजसः १०

शं रुद्राः शं वसवः शमादित्याः शमग्रयः । शं नो महर्षयो देवाः शं देवाः शं बृहस्पतिः ११

ब्रह्म प्रजापतिर्धाता लोका वेदाः संस्रक्पयोऽग्रयः ।

तैर्मे कृतं स्वस्त्ययनमिन्द्रो मे शर्म यच्छतु ब्रह्मा मे शर्म यच्छतु । १२ १०८०

विश्वे मे देवाः शर्म यच्छन्तु सर्वे मे देवाः शर्म यच्छन्तु

यानि कानि चिच्छान्तानि लोके संस्रक्पयो विदुः । १३

सर्वाणि शं भवन्तु मे शं मे अस्त्वभयं मे अस्तु

पृथिवी शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिर्द्यौः शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः

शान्तिर्विश्वे मे देवाः शान्तिः सर्वे मे देवाः शान्तिः शान्तिः शान्तिः शान्तिभिः ।

ताभिः शान्तिभिः सर्वशान्तिभिः शमयामोऽहं यदिह घोरं यदिह क्रूरं

यदिह पापं तच्छान्तं तच्छिवं सर्वमेव शमस्तु नः १४ १०८१

॥ १५३ ॥ (अथर्व० १९।४३।१-८)

ब्रह्म, बहुदैवत्यम् । व्यवसाना शंकुमती पथ्यापङ्क्तिः ।

ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह ।

अग्निं तत्र नयत्वग्निर्मेधा दधातु मे । अग्नये स्वाहा १

ब्रह्मविदो० वायुर्मा तत्र नयतु वायुः प्राणान् दधातु मे । वायवे स्वाहा २

ब्रह्मविदो० सूर्यो मा तत्र नयतु चक्षुः सूर्यो दधातु मे । सूर्याय स्वाहा ३ १०८५

ब्रह्मविदो० चन्द्रो मा तत्र नयतु मनश्चन्द्रो दधातु मे । चन्द्राय स्वाहा ४

ब्रह्मविदो० सोमो मा तत्र नयतु पयः सोमो दधातु मे । सोमाय स्वाहा ५

ब्रह्मविदो० इन्द्रो मा तत्र नयतु बलमिन्द्रो दधातु मे । इन्द्राय स्वाहा ६

ब्रह्मविदो० आपो मा तत्र नयन्त्वमृतं मोषं तिष्ठतु । अद्भ्यः स्वाहा ७

ब्रह्मविदो० ब्रह्मा मा तत्र नयतु ब्रह्मा ब्रह्म दधातु मे । ब्रह्मणे स्वाहा ८ १०९०

॥ १५४ ॥ (अथर्व० २।१२।१-८)

(१०९१-९८) भरद्वाजः । १ द्यावापृथिवी, अन्तरिक्षम्, २ देवाः, ३ इन्द्रः, आदित्या-
वसवोऽङ्गिरसः पितरः, ५ सोम्यासः पितरः, ६ मरुतः, ७ यमसादनम्,

ब्रह्म, ८ अग्निः । त्रिष्टुप्, २ जगती, ७-८ अनुष्टुप् ।

द्यावापृथिवी उर्व० अन्तरिक्षं क्षेत्रस्य पत्न्युरुगायोऽद्भुतः ।

उतान्तरिक्षमुरु वातगोपं त इह तप्यन्तां मयि तप्यमाने १

इदं देवाः शृणुत ये यज्ञिया स्थ भरद्वाजो मह्यमुक्थानि शंसति ।

पाशे स बद्धो दुरिति नि युज्यतां यो अस्माकं मन इदं हिनस्ति २

इदमिन्द्र शृणुहि सोमप यत् त्वा हृदा शोचता जोहवीमि ।

वृश्वाभि तं कुलिशेनेव वृक्षं यो अस्माकं मन इदं हिनस्ति ३

अशीतिभिस्तिष्ठसृभिः सामगेभिरादित्येभिर्वसुभिरङ्गिरोभिः ।

इष्टापूर्तमवतु नः पितृणामासुं ददे हरसा दैव्येन ४

द्यावापृथिवी अनु मा दीधीथां विश्वे देवासो अनु मा रभध्वम् ।

अङ्गिरसः पितरः सोम्यासः पापमार्छित्वपकामस्य कर्ता ५ १०९५

अतीव यो मरुतो मन्यते नो ब्रह्म वा यो निन्दिषत् क्रियमाणम् ।

तपूषि तस्मै वृजिनानि सन्तु ब्रह्मद्विषं द्यौरभिसंतपाति ६ १०९६

* अथर्व० २, १२, ४ = दै० [अदितिः०] १६७ ।

सप्त प्राणानष्टौ मन्यस्तांस्तै वृश्चामि ब्रह्मणा । अया यमस्य सादुनमग्निदूतो अरंकृतः ७
आ दधामि ते पदं समिद्धे जातवेदसि । अग्निः शरीरं वेवेष्टुसु वागपि गच्छतु ८ १०९८

॥ १५५ ॥ (अथर्व० २।१८।३-५)

(१०९९-११०१) शम्भुः । द्यावापृथिव्यादयो देवाः । त्रिष्टुप्, ५ भुरिक् ।
त्वमीशिषे पशूनां पार्थिवानां ये जाता उत वा ये जनित्राः ।
मेमं प्राणो हासीन्मो अपानो मेमं मित्रा वधिपुर्मो अमित्राः ३
द्यौष्ट्वा पिता पृथिवी माता जरामृत्युं कृणुतां संविदाने ।
यथा जीवा अदितेरुपस्थे प्राणापानाभ्यां गुपितः शतं हिमाः ४ ११००
इममग्र आयुषे वर्चसे नय प्रियं रेतो वरुण मित्रराजन् ।
मातेवासा अदिते शर्म यच्छ विश्वे देवा जरदष्टिर्यथासत् ५ ११०१

॥ १५६ ॥ (अथर्व० २।३६।४, ६, ८) +

(११०१-४) पतिवेदनः । ४ इन्द्रः, ६ धनपतिः, ८ औषधिः । ४ त्रिष्टुप्, ६ अनुष्टुप्, ८ निचृत्पुरउज्जिक् ।
यथाखुरो मघत्रंश्चारुरेष प्रियो मृगाणां सुषदा बभूव ।
एवा भगस्य जुष्टेयमस्तु नारी संप्रिया पत्याविराधयन्ती ४
आ क्रन्दय धनपते वरमामनसं कृणु । सर्वं प्रदक्षिणं कृणु यो वरः प्रतिक्राम्यः ६
आ ते नयतु सविता नयतु पतिर्यः प्रतिक्राम्यः । त्वमस्यै धेह्योषधे ८ ११०४

॥ १५७ ॥ (अथर्व० ३।१९।१-८)

(११०५-२०) वसिष्ठः । विश्वे देवाः, चन्द्रमाः, इन्द्रः । अनुष्टुप्, १ पथ्याबृहती, ३ भुरिबृहती,
५ त्रिष्टुप्, ६ ज्यवसाना षट्पदा त्रिष्टुप्ककुम्भतीगर्भातिजगती,
७ विराडास्तारपङ्क्तिः, ८ पथ्यापङ्क्तिः ।

संशितं म इदं ब्रह्म संशितं वीर्यं बलम् ।
संशितं क्षत्रमजरमस्तु जिष्णुर्येषामस्मि पुरोहितः १ ११०५
समहमेषां राष्ट्रं स्यामि समोजो वीर्यं बलम् ।
वृश्चामि शत्रूणां बाहूननेन हविषाहम् २
नीचैः पद्यन्तामधरे भवन्तु ये नः सूरि मघवानं पृतन्यान् । ३
क्षिणामि ब्रह्मणामित्रानुन्नयामि स्वानहम्
तीक्ष्णीयांसः परशोरप्रेस्तीक्ष्णतरा उत । ४ ११०८
इन्द्रस्य वज्रात् तीक्ष्णीयांसो येषामस्मि पुरोहितः

+ अथर्व० २, ३६, १, ३ = दै० [अग्निः] २३३२-४० । अथर्व० २, ३६, २ = दै० [सोमः०] १२४३ ।

अथर्व० २, ३६, ५, ७ = दै० [अदितिः०] ६२३, ७९९ ।

श्वे देवाः ।

१०९७-१११९]

१० विश्व देवाः ।

एषामहमायुधा सं स्याम्येषां राष्ट्रं सुवीरं वर्धयामि ।

एषां क्षत्रमजरमस्तु जिष्ण्वेऽेषां चित्तं विश्वेऽवन्तु देवाः ५

उद्धर्षन्तां मघवन् वाजिनान्युद् वीराणां जयतामेतु घोषः ।

पृथग् घोषा उलुल्यः केतुमन्त उदीरताम् । देवा इन्द्रज्येष्ठा मरुतो यन्तु सेनया ६ १११०

प्रेता जयता नर उग्रा वः सन्तु बाहवः ।

तीक्ष्णेष्वोऽबलधन्वनो हतोग्रायुधा अबलानुग्रवाहवः ७

अवसृष्टा परा पत शरव्ये ब्रह्मसंशिते ।

जयामित्रान् प्र पद्यस्व जह्येषां वरवरं मामीषां मोचि कश्चन ८ १११२

॥ १५८ ॥ (अथर्व० ३।२१।१-६)

वर्चः, बृहस्पतिः, विश्वे देवाः । अनुष्टुप्, १ विराट् त्रिष्टुप्, पञ्चपदा परानुष्टुप् विराडतिजगती,
४ ज्यवसाना षट्पदा जगती ।

उष्णिक् ।

हस्तिवर्चसं प्रथतां बृहद् यशो अदित्या यत् तन्वः संबभूव ।

तत् सर्वे समदुर्महमेतद् विश्वे देवा अदितिः सजोषाः १

मित्रश्च वरुणश्चेन्द्रो रुद्रश्च चेततु । देवासो विश्वधायसस्ते माञ्जन्तु वर्चसा २

येन हस्ती वर्चसा संबभूव येन राजा मनुष्येष्वप्सन्तः ।

येन देवा देवतामग्र आयन् तेन मामद्य वर्चसाग्ने वर्चस्विनै कृणु ३ १११५

यत् ते वर्चो जातवेदो बृहद् भवत्याहुतेः ।

यावत् सूर्यस्य वर्च आसुरस्य च हस्तिनः ।

तावन्मे अश्विना वर्च आ धत्तां पुष्करस्रजा ४

यावच्चतस्रः प्रदिशश्चक्षुर्यावत् समश्नुते ।

तावत् समैत्विन्द्रियं मयि तद्धस्तिवर्चसम् ५

हस्ती मृगाणां सुषदांमतिष्ठावान् बभूव हि ।

तस्य भगेन वर्चसाभि पिश्वामि मामहम् ६ १११८

॥ १५९ ॥ (अथर्व० ११।११।५-६) ×

बहुदैवत्यम् । त्रिष्टुप् ।

ये देवानामृत्विजो यज्ञियासो मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः ।

ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५ १११९

× अथर्व० १९, ११, १-४ = दै० [विश्वे देवाः] ४५९-६२ ।

११ दै. (विश्वे देवाः)

तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने शं योरसभ्यमिदमस्तु शस्तम् ।

अशीमहि गाधमुत प्रतिष्ठां नमो दिवे बृहते सादनाय

६ ११२०

॥ १६० ॥ (अथर्व० १९।२२।१-२१)

(११२१-४१) अङ्गिराः । मन्त्रोक्ताः । १ साम्युष्णिक्, ३, १३ प्राजापत्या गायत्री; ४, ७, ११, १७ देवी जगती; ५, १२-१३ देवी त्रिष्टुप्; २, ६, १४-१६, २० देवी पङ्क्तिः, ८-१० आसुरी जगती; १८ आसुर्यनुष्टुप्; २१ चतुष्टुप् (१-२० एकावसानाः) ।

आङ्गिरसानामाद्यैः पञ्चानुवाकैः स्वाहा	१	षष्ठाय स्वाहा	२
सप्तमाष्टमाभ्यां स्वाहा	३	नीलनखेभ्यः स्वाहा	४
हरितेभ्यः स्वाहा	५	क्षुद्रेभ्यः स्वाहा	६
पर्यायिकेभ्यः स्वाहा	७	प्रथमेभ्यः स्वाहा	८
द्वितीयेभ्यः शङ्खेभ्यः स्वाहा	९	तृतीयेभ्यः शङ्खेभ्यः स्वाहा	१० ११२०
उपोत्तमेभ्यः स्वाहा	११	उत्तमेभ्यः स्वाहा	१२
उत्तरेभ्यः स्वाहा	१३	ऋषिभ्यः स्वाहा	१४
शिखिभ्यः स्वाहा	१५	गणेभ्यः स्वाहा	१६
महागणेभ्यः स्वाहा	१७	सर्वेभ्योऽङ्गिरोभ्यो विदगणेभ्यः स्वाहा	१८
पृथक्सहस्राभ्यां स्वाहा	१९	ब्रह्मणे स्वाहा	२० ११४०

ब्रह्मज्येष्ठा संभृता वीर्याणि ब्रह्माग्रे ज्येष्ठं दिवमा ततान ।

भूतानां ब्रह्मा प्रथमोत जज्ञे तेनार्हति ब्रह्मणा स्पर्धितुं कः

* २१ ११४१

॥ १६१ ॥ (अथर्व० ४।८।१-७)

(११४२-४९) अथर्वाङ्गिराः । चन्द्रमाः, आपः, राज्याभिषेकः, १ राजा, २ देवाः, ३ विश्वरूपः, ४-५ आपः । अनुष्टुप्; १, ७ भुरिक्, त्रिष्टुप्, ३ त्रिष्टुप्, ५ विराट् प्रस्तारपङ्क्तिः ।

भूतो भूतेषु पय आ दधाति स भूतानामधिपतिर्बभूव ।

तस्य मृत्युश्चरति राजस्यं स राजा राज्यमनु मन्यतामिदम्

१

अभि प्रेहि मापं वेन उग्रश्चेत्ता संपत्तहा ।

आ तिष्ठ मित्रवर्धन तुभ्यं देवा अधि ब्रवन्

२

आतिष्ठन्तं परि विश्वे अभूषंष्ट्रियं वसानश्चरति स्वरोचिः ।

महत् तद् वृष्णो असुरस्य नामा विश्वरूपो अमृतानि तस्थौ

३ ११४४

× अथर्व० १९।२२।२१ = अथर्व० १९, २३, ३०

११२०-११५७]

वेधे देवाः ।

व्याघ्रो अधि वैयाघ्रे वि क्रमस्व दिशो महीः ।

विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्त्वापो दिव्याः पर्यस्वतीः

४ ११४५

या आपो दिव्याः पर्यसा मदन्त्यन्तरिक्ष उत वा पृथिव्याम् ।

तासां त्वा सर्वासामपामभि पिञ्चामि वर्चसा

५

अभि त्वा वर्चसासिचन्नापो दिव्याः पर्यस्वतीः ।

यथासौ मित्रवर्धनस्तथा त्वा सविता करत्

६

एना व्याघ्रं परिषस्वजानाः सिंहं हिंन्वन्ति महते सौभगाय ।

समुद्रं न सुभुवस्तस्थिवांसं मर्मज्यन्ते द्वीपिनमप्स्वन्तः

७ ११४८

॥ १६२ ॥ (अथर्व० ७।११८।१)

चन्द्रमाः, वरुणः, देवः । त्रिष्टुप् ।

मर्माणि ते वर्मणा छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनामु वस्ताम् ।

उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु

१ ११४९

॥ १६३ ॥ (अथर्व० ६।१२३।१-५)

(११५०-५४) भृगुः । त्रिष्टुप्, ३ द्विपदा सामान्यनुष्टुप्, ४ एकावसाना
द्विपदा प्राजापत्या भुरिगनुष्टुप् ।

एतं सधस्थाः परि वो ददामि यं शैवधिमावहाज्ञातवेदाः ।

१ ११५०

अन्वागन्ता यजमानः स्वस्ति तं स जानीत परमे व्योमिन्

जानीत स्मैनं परमे व्योमिन् देवाः सधस्था विद लोकमत्र ।

२

अन्वागन्ता यजमानः स्वस्तीष्टापूतं स्म कृणुताविरस्मै

३

देवाः पितरः पितरो देवाः । यो अस्मि सो अस्मि

४

स पचामि स ददामि स यजे स दुत्तान्मा यूषम्

राजन् प्रति तिष्ठ तत्रैतत् प्रति तिष्ठतु । विद्धि पूर्वस्य नो राजन्तस् देव सुमनां भव ५ ११५४

॥ १६४ ॥ (अथर्व० १९।२७।१-१५)

(११५५-६९) भृग्वङ्गिराः । त्रिवृत्, चन्द्रमाश्च । अनुष्टुप्; ३, ९ त्रिष्टुप्; १० जगती (?);
११ आचर्षुष्णिक्; १२ आचर्षुनुष्टुप्; १३ साम्नी त्रिष्टुप् (११-१३ एकावसानाः)

पात्वृषभो वृषा त्वा पातु वाजिभिः । वायुष्टा ब्रह्मणा पात्विन्द्रस्त्वा पात्विन्द्रियैः १

पात्वोषधीभिर्नक्षत्रैः पातु सूर्यः । माञ्ज्यस्त्वा चन्द्रो वृत्रहा वातः प्राणेन रक्षतु २

पृथिवीस्त्रीण्यन्तरिक्षाणि चतुरः समुद्रान् ।

स्तोमं त्रिवृत् आप आहुस्तास्त्वा रक्षन्तु त्रिवृता त्रिवृद्धिः

३ ११५७

त्रीन्नाकांस्त्रीन्समुद्रांस्त्रीन् ब्रध्नांस्त्रीन् वैष्टपान् । त्रीन् मातरिश्च नस्त्रीन्सूर्यान् गोमृन् कल्पयामि ते ४
घृतेन त्वा समुक्षाम्यग्र आज्येन वर्धयन् । अग्नेश्चन्द्रस्य सूर्यस्य मा प्राणं मायिनो दमन् ५
मा वः प्राणं मा वोऽपानं मा हरो मायिनो दमन् । भ्राजन्तो विश्ववेदसो देवा दैव्येन धावत ६
प्राणेनाग्निं सं सृजति वातः प्राणेनः संहितः । प्राणेन विश्वतोमुखं सूर्यं देवा अजनयन् ७
आयुषाऽऽयुः कृता जीवायुष्मान् जीव मा मृथाः । प्राणेनात्मन्वता जीव मा मृत्योरुदङ्गा वशम् ८
देवानां निहितं निधिं यमिन्द्रोऽन्वविन्दत् पृथिभिर्देवयानैः ।

आपो हिरण्यं जुगुप्सुर्वृद्धिस्तास्त्वा रक्षन्तु त्रिवृता त्रिवृद्धिः ९
त्रयस्त्रिंशद् देवतास्त्रीणि च वीर्याणि प्रियायमाणा जुगुप्सुस्वर्गन्तः ।

अस्मिंश्चन्द्रे अधि यद्विरण्यं तेनायं कृणवद् वीर्याणि १०

ये देवा दिव्येकादश स्थ ते देवासो हविरिदं जुषध्वम् ११

ये देवा अन्तरिक्ष एकादश स्थ ते देवासो हविरिदं जुषध्वम् १२

ये देवा पृथिव्यामेकादश स्थ ते देवासो हविरिदं जुषध्वम् १३

असपत्नं पुरस्तात् पश्चान्नो अभयं कृतम् । सविता मा दक्षिणत उत्तरान्मा शचीपतिः १४

दिवो मादित्या रक्षन्तु भूम्या रक्षन्त्वग्रयः ।

इन्द्राग्नी रक्षता मा पुरस्तादश्विनावभितः शर्म यच्छताम् ।

तिरश्चीन्ध्या रक्षतु जातवेदा भूतकृतो मे सर्वतः सन्तु वर्म १५

॥ १६५ ॥ (अथर्व० ६।१०।१-३)

(११७०-७८) शन्तातिः । १ पृथिवी, श्रोत्रं, वनस्पतिः, अग्निः, २ प्राणः, अन्तरिक्षं, वयः, वायुः, ३ द्यौः, चक्षुः, नक्षत्राणि, सूर्यः । द्वैपदम्, १ साम्नी त्रिष्टुप्, २ प्राजापत्या बृहती, ३ साम्नी बृहती ।

पृथिव्यै श्रोत्राय वनस्पतिभ्योऽग्नयेऽधिपतये स्वाहा १

प्राणायान्तरिक्षाय वयोभ्यो वायवेऽधिपतये स्वाहा २

दिवे चक्षुषे नक्षत्रेभ्यः सूर्यायाधिपतये स्वाहा ३

॥ १६६ ॥ (अथर्व० ६।१९।१-३)

चन्द्रमाः, १ देवजनाः, मनवः, विश्वा भूतानि, पवमानः, २ पवमानः, ३ सविता ।

गायत्री, १ अनुष्टुप् ।

पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनवो धिया । पुनन्तु विश्वा भूतानि पवमानः पुनातु मा १

पवमानः पुनातु मा क्रत्वे दक्षाय जीवसे । अथो अरिष्टतातये २

उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च । अस्मान् पुनीहि चक्षसे ३

॥ १६७ ॥ (अथर्व० ६।९३।१-३)

१ यमो मृत्युः शर्वः, २ भवः शर्वः, ३ विश्वे देवाः मरुतः अग्नीषोमौ वरुणः वातपर्जन्यौ । त्रिष्टुप् ।

यमो मृत्युरवमारो निर्ऋतो बभ्रुः शर्वोऽस्ता नीलशिखण्डः ।

देवजनाः सेनयोत्तस्थित्रांसस्ते अस्माकं परि वृज्जन्तु वीरान्

मनसा होमैर्हरसा घृतेन शर्वायास्त्र उत राज्ञे भवाय ।

नमस्येभ्यो नम एभ्यः कृणोम्यन्यत्रास्मदुधविषा नयन्तु

त्रायध्वं नो अघविषाभ्यो वधाद् विश्वे देवा मरुतो विश्ववेदसः ।

अग्नीषोमा वरुणः पूतदक्षा वातापर्जन्ययोः सुमतौ स्याम

॥ १६८ ॥ (अथर्व० ६।५३।१-२)×

(११७९-८०) बृहच्छुक्रः । १ द्यौः, पृथिवी, शुक्रः, सोमः, अग्निः, वायुः, सविता, भगः, २ वैश्वानरः, १ जगती, २ त्रिष्टुप् ।

द्यौश्च म इदं पृथिवी च प्रचेतसौ शुक्रो बृहन् दक्षिणया पिपर्तु ।

अतु खधा चिकितां सोमो अग्निर्वायुर्नः पातु सविता भगश्च

पुनः प्राणः पुनरात्मा न ऐतु पुनश्चक्षुः पुनरसुर्न ऐतु ।

वैश्वानरो नो अदब्धस्तनूपा अन्तस्तिष्ठाति दुरितानि विश्वा

॥ १६९ ॥ (अथर्व० ६।६३।१-३)*

(११८१-८३) द्रुहणः । १ निर्ऋतिः, २ यमः, ३ मृत्युः । जगती, २ अतिजगतीगर्भा ।

यत् ते देवी निर्ऋतिराबन्ध दामं ग्रीवास्त्रविमोक्षयं यत् ।

तत् ते वि ष्याम्यायुषे वर्चसे बलायादोमदमन्त्रमद्वि प्रसूतः

नमोऽस्तु ते निर्ऋते तिग्मतेजोऽयस्मयान् वि चृता बन्धपाशान् ।

यमो मह्यं पुनरित् त्वां ददाति तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे

अयस्मये द्रुपदे वैधिष इहाभिहितो मृत्युभिर्ये सहस्रम् ।

यमेन त्वं पितृभिः संविद्वान उत्तमं नाक्रमधि रोहयेमम्

॥ १७० ॥ (अथर्व० ६।१०३।१-३)

(११८४-८६) उच्छोचनः । इन्द्राग्नीः १ बृहस्पतिः सविता मित्रो अर्यमा भगो अश्विनौ; २-३ इन्द्रोऽग्निः; अनुष्टुप् ।

तान् वो बृहस्पतिः सुदानं सविता करत् । सुदानं मित्रो अर्यमा सुदानं भगो अश्विनौ १

तान्मात्सर्मवमानथो सं द्यामि मध्यमान् । इन्द्रस्तान् पर्यहार्दाम्ना तानग्ने सं द्या त्वम् २ ११८५

ये युधमायन्ति केतून् कृत्वानीकशः । इन्द्रस्तान् पर्यहार्दाम्ना तानग्ने सं द्या त्वम् ३ ११८६

× अथर्व० ६, ५३, ३ = दै० [अदितिः०] ७०० । अथर्व० ६, ६३, ४ = दै० [अग्निः] १७१६ ।

॥ १७१ ॥ (अथर्व० ६।१२०।१-३)

(११८७-८९) कौशिकः । अन्तरिक्षं, पृथिवी, द्यौः, अग्निः । १ जगती, २ पङ्क्तिः, ३ त्रिष्टुप् ।

यदुन्तरिक्षं पृथिवीमुत द्यां यन्मातरं पितरं वा जिहिंसिम ।

अयं तस्माद् गार्हपत्यो नो अग्निरुदिन्नयाति सुकृतस्य लोकम् १

भूमिर्मातादितिर्नो जनित्रं भ्रातान्तरिक्षमभिशस्त्या नः ।

द्यौर्नः पिता पित्र्याच्छं भवाति जामिमृत्वा मावं पत्सि लोकात् २

यत्रा सुहार्दः सुकृतो मदन्ति विहाय रोगं तन्वः स्वायाः ।

अश्लोणा अङ्गैरहुताः स्वर्गे तत्र पश्येम पितरौ च पुत्रान् ३ ११८९

॥ १७२ ॥ (अथर्व० १४।२।५३-५८)

(११९०-९५) सूर्या सावित्री । अनुष्टुप् ।

बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन् । वर्चो गोषु प्रविष्टं यत् तेनेमां सं सृजामसि ५३ ११९०

बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन् । तेजो गोषु प्रविष्टं यत् तेनेमां सं सृजामसि ५४

बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन् । भगो गोषु प्रविष्टो यस्तेनेमां सं सृजामसि ५५

बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन् । यशो गोषु प्रविष्टं यत् तेनेमां सं सृजामसि ५६

बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन् । पयो गोषु प्रविष्टं यत् तेनेमां सं सृजामसि ५७

बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन् । रसो गोषु प्रविष्टो यस्तेनेमां सं सृजामसि ५८ ११९५

॥ १७३ ॥ [११९३-९८] (अथर्व० २०।१२८।५)

ये च देवा अयजन्ताथो ये च परादुदिः । सूर्यो दिवमिव गत्वाय मघवा नो वि रण्शते ५ ११९६

॥ १७४ ॥ (अथर्व० २०।१३५।४, १०)

वी मे देवा अक्रंसताध्वर्यो क्षिप्रं प्रचर । सुसत्यमिद् गवामस्यसि प्रखुदसि ४

देवा ददुत्वासुरं तद् वो अस्तु सुचेतनम् । युष्माँ अस्तु दिवेदिवे प्रत्येव गृभायत १० ११९८

देवाः ।

॥ १७५ ॥ (ऋ० १।२७।१३)

(११९९) आजीगर्तिः शुनःशेपः स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः । त्रिष्टुप् ।

नमो महद्भ्यो नमो अर्भकेभ्यो नमो युवभ्यो नम आशिनेभ्यः ।

यजाम देवान् यदि शक्नवाम मा ज्यायसः शंसमा वृक्षि देवाः १३ ११९९

११८७-१२०७]

देवाः ।

॥ १७६ ॥ (ऋ० ११४५।१० [उत्तरार्धः]) ।

(१२००) प्रस्कण्वः काण्वः । (सुदानवः देवाः) । अनुष्टुप् ।

अयं सोमः सुदानवस्तं पात तिरोअह्वयम्

१० १२००

॥ १७७ ॥ (ऋ० ११९४।८ [त्रयः पादाः])

(१२०१) कुत्स आङ्गिरसः । जगती ।

पूर्वो देवा भवतु सुन्वतो रथो ऽस्माकं शंसो अभ्यस्तु दुह्यः ।

तदा जानीतोत पुण्यता वचः

८ १२०१

॥ १७८ ॥ (ऋ० ११६४।५०)

(१२०२) दीर्घतमा औचथ्यः । त्रिष्टुप् ।

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः

५० १२०२

॥ १७९ ॥ (ऋ० ७।१०४।११)

(१२०३) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

परः सो अस्तु तन्वाङ् तना च तिस्रः पृथिवीरधो अस्तु विश्वाः ।

प्रति शुष्यतु यशो अस्य देवा यो नो दिवा दिप्सति यश्च नक्तम्

११ १२०३

॥ १८० ॥ (ऋ० ८।६३।१२)*

(१२०४) प्रगाथः काण्वः । त्रिष्टुप् ।

अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतो सजोषाः ।

यः शंसते स्तुवते धारि पञ्च इन्द्रज्येष्ठा अस्माँ अवन्तु देवाः

१२ १२०४

॥ १८१ ॥ (ऋ० ८।८०।१०)

(१२०५) एकद्युर्नौधसः । त्रिष्टुप् ।

अवीवृधद् वो अमृता अमन्दी दैक्युर्देवा उत याश्च देवीः ।

तस्माँ उ राधः कणुत प्रशस्तं प्रातर्मक्षु धियावसुर्जगम्यात्

१० १२०५

॥ १८२ ॥ (ऋ० १०।५१।२,४,६,८)

(१२०६-११) सौचीकोऽग्निः । त्रिष्टुप् ।

को मा ददर्श कतमः स देवो यो मे तन्वो बहुधा पर्यपश्यत् ।

काह मित्रावरुणा क्षियन्त्यग्नेर्विश्वाः समिधो देव्यानीः

होत्रादुहं वरुण विभ्यदायं नेदेव मा युनजन्नत्र देवाः ।

२

तस्मै मे तन्वो बहुधा निविष्टा एतमर्थं न चिकेताहमग्निः

४ १२०७

* वा० य० ३३,५० ।

अग्नेः पूर्वे भ्रातरो अर्थमेतं रथीवाध्वानमन्वावरीवुः ।
तस्माद्धिया वरुण दूरमायं गौरो न क्षेमोरविजे ज्यायाः
प्रयाजान् मे अनुयाजोश्च केवला—नूर्जस्वन्तं हविषो दत्त भागम् ।
धृतं चापां पुत्रं चोषधीना—मग्नेश्च दीर्घमायुरस्तु देवाः

॥ १८३ ॥ (ऋ० १०।५३।४-५)

तदद्य वाचः प्रथमं मंसीय येनासुरा अभि देवा असीम ।
ऊर्जीद उत यज्ञियासः पञ्च जना मम होत्रं जुषध्वम्
पञ्च जना मम होत्रं जुषन्तां गोजाता उत ये यज्ञियासः ।
पृथिवी नः पार्थिवात् पात्वंहसो ऽन्तरिक्षं दिव्यात् पात्वस्मान्

॥ १८४ ॥ (ऋ० १०।७१।१-९)

(१११२-२०) बृहस्पतिलौक्यः, बृहस्पतिराङ्गिरसो वा, आदितिर्दाक्षायणी वा । अनुष्टुप् ।

देवानां नु वयं जाना प्र वोचाम विपन्यया । उक्थेषु शस्यमानेषु यः पश्यादुत्तरे युगे १
ब्रह्मणस्पतिरेता सं कर्मार इवाधमत् । देवानां पूर्वे युगे ऽसतः सदजायत २
देवानां युगे प्रथमे ऽसतः सदजायत । तदाशा अन्वजायन्त तदुत्तानपदुस्परि ३
भूर्जज्ञ उत्तानपदो भुव आशा अजायन्त । अदितेर्दक्षो अजायत दक्षाददितिः परि ४ १११५
अदितिर्हर्जनिष्ट दक्ष या दुहिता तव । तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतवन्धवः ५
यद्देवा अदः सलिले सुसंरब्धा अतिष्ठत । अत्रा वो नृत्यतामिव तीव्रो रेणुरपायत ६
यद्देवा यतयो यथा भुवनान्यपिन्वत । अत्रा समुद्र आ गूळह—मा सूर्यमजभर्तन ७
अष्टौ पुत्रासो अदिते—ये जातास्तन्वस्परि । देवा उप प्रैत् सप्तभिः परा मार्ताण्डमास्यत् ८
सप्तभिः पुत्रैरदिति—रुप प्रैत् पूर्वं युगम् । प्रजायै मृत्यवे त्वत् पुनर्मार्ताण्डमाभरत् ९ १११०

॥ १८५ ॥ (ऋ० १०।८५।१७)

(११११) सूर्या सावित्री ऋषिका । अनुष्टुप् ।

सूर्यायै देवेभ्यो मित्राय वरुणाय च । ये भूतस्य प्रचेतस इदं तेभ्योऽकरं नमः १७ ११२१

॥ १८६ ॥ (ऋ० १०।९८।१-१२)

(११२२-३३) देवापिराष्टिषेणः (वृष्टिकामः) । त्रिष्टुप् ।

बृहस्पते प्रति मे देवतामिहि मित्रो वा यद्वरुणो वासि पूषा ।
आदित्यैर्वा यद्वसुभिर्मरुत्वा—न्तस पर्जन्यं शतनवे वृषाय

आ देवो दूतो अजिरश्चिकित्वान् त्वद्देवापे अभि मामगच्छत् ।

प्रतीचीनः प्रति मामा ववृत्स्व दधामि ते द्युमतीं वाचमासन्

अस्मे धेहि द्युमतीं वाचमासन् बृहस्पते अनमीवामिषिराम् ।

यया वृष्टिं शतंनवे वनाव दिवो द्रप्सो मधुमाँ आ विवेश

आ नो द्रप्सा मधुमन्तो विशन्तिव—न्द्रं देह्यधिरथं सहस्रम् ।

नि षीद होत्रमृतुथा यजस्व देवान् देवापे हविषा सपर्य

आर्ष्टिषेणो होत्रमृषिर्निषीदन् देवापिर्देवसुमतिं चिकित्वान् ।

स उत्तरस्मादधरं समुद्र—मपो दिव्या असृजद्वर्ष्यां अभि

अस्मिन्समुद्रे अध्येत्तरस्मि—न्नापो देवेभिर्निवृता अतिष्ठन् ।

ता अद्रवन्नार्ष्टिषेणेन सृष्टा देवापिना प्रेषिता मृक्षिणीषु

यदेवापिः शतंनवे पुरोहितो होत्राय वृतः कृपयन्नदीधेत्

देवश्रुतं वृष्टिवनिं रराणो बृहस्पतिर्वाचमस्मा अयच्छत्

यं त्वा देवापिः शुशुचानो अग्र आर्ष्टिषेणो मनुष्यः समीधे ।

विश्वेभिर्देवैरनुमद्यमानः प्र पर्जन्यमरिया वृष्टिमन्तम्

त्वां पूर्व ऋषयो गीर्भिरायन् त्वामध्वरेषु पुरुहूत विश्वे ।

सहस्राण्यधिरथान्यस्मे आ नो यज्ञं रोहिदुश्चोप याहि

एतान्यग्रे नवतिर्नव त्वे आहुतान्यधिरथा सहस्रा ।

तेभिर्वर्धस्व तन्वः शूर पूर्वी—दिवो नो वृष्टिमिषितो रिरीहि

एतान्यग्रे नवतिं सहस्रा सं प्र यच्छ वृष्ण इन्द्राय भागम् ।

विद्वान् पथ ऋतुशो देवयाना—नप्यौलानं दिवि देवेषु धेहि

अग्रे वाधस्व वि मृधो वि दुर्गहा ऽपामीवामप रक्षांसि सेध ।

अस्मात् समुद्राद् बृहतो दिवो नो ऽपां भूमानमुप नः सृजेह

॥ १८७ ॥ [१२३४-६३] (वा० य० १।८)

देवानामसि वह्नितम् सस्मितम् पप्रितम् जुष्टतमं देवहूतमम्

॥ १८८ ॥ (वा० य० २।७, २१)

नमो देवेभ्यः

देवा गातुविदो गातुं विच्चा गातुमित । मनसस्पत इमं देव यज्ञं स्वाहा वार्ते धाः

॥ १८९ ॥ (वा० य० ८, २१ = अथर्व० ७, ९७, ७-८ ।

१२ [दे० विश्वे देवाः]

२

३

४ १२२५

५

६

७

८

९ १२३०

१०

११

१२ १२३३

८ १२३४

७ १२३५

१२३६

॥ १८९ ॥ (वा० य० ६।११)

स्वाहा देवेभ्यो देवेभ्यः स्वाहाः

११ १२३७

॥ १९० ॥ (वा० य० ७।३, १२, १७, २२, २६)

देवेभ्यस्त्वा मरीचिपेभ्यः

*३।

देवास्त्वा शुक्रपाः प्रणयन्तु

१२

देवास्त्वा मन्थिपाः प्रणयन्तु

१७ १२४०

देवेभ्यस्त्वा देवाव्यं यज्ञस्याऽऽयुषे गृह्णामि २२। देवानामुत्क्रमणमसि

२६ १२४१

॥ १९१ ॥ (वा० य० ८।१८, २७, ४३, ६०)

सुगा वो देवाः सदेना अकर्म य आजग्मेदः सर्वनं जुषाणाः ।

*१८

भरमाणा वहमाना हवीः ष्यस्मे धत्त वसवो वसूनि स्वाहा

२७

देवानां समिदासि

इडे रन्ते हव्ये काम्ये चन्द्रे ज्योतेऽदिते सरस्वति महि विश्रुति ।

४३ १२४५

एता ते अघ्न्ये नामानि देवेभ्यो मा सुकृतं ब्रूतात्

देवान् दिवमगन् यज्ञस्ततो मा द्रविणमष्टु मनुष्यान् न्तर्क्षमगन् यज्ञस्ततो

मा द्रविणमष्टु पितृन् पृथिवीमगन् यज्ञस्ततो मा द्रविणमष्टु यं कं च

६० १२४६

लोकमगन् यज्ञस्ततो मे भद्रमभूत्

॥ १९२ ॥ (वा० य० ९।३५-३६)

विश्वदैवनेत्रेभ्यो देवेभ्यः पश्चात् सद्भ्यः स्वाहा

३५

ये देवा विश्वदैवनेत्राः पश्चात् सदस्तेभ्यः स्वाहा

३६ १२४८

॥ १९३ ॥ (वा० य० १५।५०)

तं पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भर्तृभिरुत वा हिरण्यैः ।

नाकं गृह्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीयं पृष्ठे अधि रोचने दिवः

५० १२४९

॥ १९४ ॥ (वा० य० १७।५६)

दैव्याय धर्त्रे जोष्टे देवश्रीः श्रीमनाः श्रुतपयाः ।

५६ १२५०

परिगृह्य देवा यज्ञमायन् देवा देवेभ्यो अघ्न्यन्तो अस्थुः

॥ १९५ ॥ (वा० य० १८।६०)

एतं जानाथ परमे व्योमन् देवाः सधस्या विद रूपमस्य ।

६० १२५१

यदागच्छात् पृथिभिर्देवयानैरिष्टापूर्त्ते कृणवाथाविरसै

॥ १९६ ॥ (वा० य० १९।१२)

यज्ञमर्तन्वत भेषजं भिषजाश्विना । वाचा सरस्वती भिषगिन्द्रायेन्द्रियाणि दधतः १२ १२५२

॥ १९७ ॥ (वा० य० २०।१४)

यद् देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम् ।

अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वहंसः १४ १२५३

॥ १९८ ॥ (वा० य० २१।५३)

देवा देवानां भिषजा होताराविन्द्रमश्विना ।

वषट्कारैः सरस्वती त्विषिं न हृदये मतिः होतृभ्यां दधुरिन्द्रियं वसुवने
वसुधेयस्य व्यन्तु यज ५३ १२५४

॥ १९९ ॥ (वा० य० २६।१९)

अनु वीरैरनु पुष्यास्म गोभिरन्वश्चैरनु सर्वेण पुष्टैः ।

अनु द्विपदानु चतुष्पदा वयं देवा नो यज्ञमृतुथा नयन्तु १९ १२५५

॥ २०० ॥ (वा० य० २८।११)

देवा आज्यपा जुषाणा इन्द्र आज्यस्य व्यन्तु ११ १२५६

॥ २०१ ॥ (वा० य० २९।२०)

देवा इदस्य हविरद्यमायन् यो अर्वन्तं प्रथमो अध्यतिष्ठत् २० १२५७

॥ २०२ ॥ (वा० य० ३१।१४-१५, २१)

यत् पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमर्तन्वत । वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्भविः १४

सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।

देवा यद्यज्ञं तन्वाना अवधन् पुरुषं पशुम् १५

रुचं ब्राह्मं जनयन्तो देवा अग्रे तदब्रुवन् ।

यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात् तस्य देवा असन् वशे २१ १२६०

॥ २०३ ॥ (वा० य० ३३।७, ४८, ८९)

त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं त्रिंशच्च देवा नवं चासपर्यन् ।

औक्षन् घृतैरस्तृणन् वहिरस्मा आदिद्धोतारं न्यसादयन्त ७

अस इन्द्र वरुण मित्र देवाः शर्धः प्र यन्त मारुतोत विष्णो ।

वृषा नासत्या रुद्रो अध माः पूषा भगः सरस्वती जुषन्त ४८

प्रेतु ब्रह्मणस्पतिः प्र देव्येतु सूनृता ।

अच्छा वीरं नर्यं पङ्क्तिराधसं देवा यज्ञं नयन्तु नः ८९ १२६३

*

लिङ्गोक्ताः ।

॥ २०४ ॥ (ऋ० १।१३६।६-७)

(१२६४-६५) परुच्छेपो देवोदासिः । ६ अत्यष्टिः, ७ त्रिष्टुप् ।

नमो दिवे बृहते रोदसीभ्यां मित्राय वोचं वरुणाय मीळहुषे सुमृळीकाय मीळहुषे ।

इन्द्रमग्निमुप स्तुहि द्युक्षमर्यमणं भगम् ।

ज्योग्जीवन्तः प्रजया सचेमहि सोमस्योती सचेमहि

६

ऊती देवानां वयमिन्द्रवन्तो मंसीमहि स्वयंशसो मरुद्भिः ।

अग्निर्मित्रो वरुणः शर्म यंसन् तदश्याम मघवानो वयं च

७ १२६५

॥ २०५ ॥ (ऋ० २।३२।८)

(१२६६) गुत्समदः (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पञ्चाद्) भार्गवः शौनकः । अनुष्टुप् ।

या गुङ्गूर्या सिनीवाली या राका या सरस्वती ।

इन्द्राणीमह ऊतये वरुणानीं स्वस्तये

८ १२६६

॥ २०६ ॥ (ऋ० १०।१४।७-९)

(१२६७-६९) वैवस्वतो यमः । (पितरो वा) । त्रिष्टुप् ।

प्रेहि प्रेहि पथिभिः पूर्येभि र्यत्रा नः पूर्वे पितरः परेयुः ।

उमा राजाना स्वधया मदन्ता यमं पश्यासि वरुणं च देवम्

७

सं गच्छस्व पितृभिः सं यमेनैष्टापतेन परमे व्योमन् ।

हित्वायावद्यं पुनरस्तमेहि सं गच्छस्व तन्वा सुवर्चाः

८

अपैत वीत वि च सर्पतातो ऽस्मा एतं पितरो लोकमकन् ।

अहोभिरद्भिरक्तुभिर्व्यक्तं यमो ददात्यवसानमस्मै

९ १२६९

॥ २०७ ॥ [१२७०-१३९३] (वा० य० १।१२, १४)

पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवः उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।

देवीरापो अग्रेगुवो अग्रेपुवोऽग्र इममद्य यज्ञं नयताग्रे यज्ञपतिं सुधातुं यज्ञपतिं

१२ १२७०

देवयुवम्

शर्मास्यवधूतं रक्षोऽवधूता अरातयोऽदित्यास्त्वगंसि प्रति त्वादितिर्वेत्तु ।

अद्रिरसि वानस्पत्यो ग्रावांसि पृथुबुधः प्रति त्वादित्यास्त्वग्वेत्तु

१४ १२७१

॥ २०८ ॥ (वा० य० २।२, ५, १५, २०, २२, ३२)

कृष्णोऽस्याखरेष्टोऽग्र्ये त्वा जुष्टं प्रोक्षामि वेदिरसि बर्हिषे त्वा जुष्टं प्रोक्षामि

१ १२७२

बर्हिरसि सुग्भ्यस्त्वा जुष्टं प्रोक्षामि

समिदसि सूर्यस्त्वा पुरस्तात् पातु कस्याश्चिदुभिशस्त्यै ।

सवितुर्बाहू स्थ ऊर्णम्रदसं त्वा स्तृणामि स्वासस्थं देवेभ्य आ त्वा वसवो रुद्रा
आदित्याः सन्दन्तु

अग्नीषोमयोरुज्जितिमनूजैषं वाजस्य मा प्रसवेन प्रोहामि ।

अग्नीषोमौ तमपनुदतां योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मो वाजस्यैनं प्रसवेना-
प्रोहामि ।

इन्द्राभ्योरुज्जितिमनूजैषं वाजस्य मा प्रसवेन प्रोहामि । इन्द्राग्नी तमपनुदतां० १५

अग्नेऽदब्धायोऽशीतम पाहि मां दिव्योः पाहि प्रसित्यै पाहि दुरिष्ट्यै पाहि
दुरन्न्या अविषं नः पितुं कृणु ।

सुषदा योनौ स्वाहा वाङ्मये संवेशपतये स्वाहा सरस्वत्यै यशोभग्न्यै स्वाहा २० १२७५

सं वहिरिङ्क्ता हविषा घृतेन समादित्यैर्वसुभिः सं मरुद्भिः ।

समिन्द्रो विश्वदेवेभिरिङ्क्तां दिव्यं नमो गच्छतु यत् स्वाहा

नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय

नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे

नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो

देष्मैतद्वः पितरो वासु आर्धत्त

॥ २०९ ॥ (वा० य० ३।५, ९-१०)

भूर्भुवः स्वुद्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिष्णा ।

तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे

अग्निर्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ।

अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।

ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा

सज्जदेवेन सवित्रा सज्ज रात्र्येन्द्रवत्या । जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा ॥

सज्जदेवेन सवित्रा सज्जरुषसेन्द्रवत्या । जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा

॥ २१० ॥ (वा० य० ४।७, २३)

आर्क्षत्यै प्रयुजेऽग्नये स्वाहा मेधायै मनसेऽग्नये स्वाहा दीक्षायै तपसेऽग्नये स्वाहा

सरस्वत्यै पूष्णेऽग्नये स्वाहा ।

आपो देवीर्वृहतीर्विश्वशम्भुवो धावापृथिवी उरो अन्तरिक्ष ।

बृहस्पतये हविषा विधेम स्वाहा

७ १२८१

शुक्रं त्वा शुक्रेण क्रीणामि चन्द्रं चन्द्रेणामृतममृतेन ।
सग्मे ते गोरस्मे ते चन्द्राणि तपसस्तनूरसि प्रजापतेर्वर्णः परमेण पशुना क्रीयसे
सहस्रपोषं पुषेयम्

२६ १२८१

॥ २११ ॥ (वा० य० ५।२, ७, ९)

अग्नेर्जनित्रमसि वृषणौ स्थ उर्वश्यस्यायुरसि पुरुरवा असि ।
गायत्रेण त्वा छन्दसा मन्थामि त्रैष्टुभेन त्वा छन्दसा मन्थामि जागतेन त्वा
छन्दसा मन्थामि

२

अशुरशुष्टे देव सोमाप्यायतामिन्द्रायैकधनविदे ।
आ तुभ्यमिन्द्रः प्यायतामा त्वमिन्द्राय प्यायस्व ।
आप्याययासान्तसखीन्तसन्त्या मेधया स्वस्ति ते देव सोम सुत्यामशीय ।
एष्टा रायः प्रेषे भगाय क्रतुमृतादिभ्यो नमो द्यावापृथिवीभ्याम्
तप्तायनी मेऽसि वित्तायनी मेऽस्यवतान्मा नाथितादवतान्मा व्यथितात् ।
विदेदुग्निर्नभो नामाग्ने अङ्गिर आयुना नाम्नेहि योऽस्यां पृथिव्यामसि

७

यत् तेऽनाधृष्टं नाम यज्ञियं तेन त्वा दधे विदेदुग्निर्नभो नामाग्ने अङ्गिर आयुना
नाम्नेहि यो द्वितीयस्यां पृथिव्यामसि यत् तेऽनाधृष्टं नाम यज्ञियं तेन त्वा
दधे विदेदुग्निर्नभो नामाग्ने अङ्गिर आयुना नाम्नेहि यस्तृतीयस्यां
पृथिव्यामसि यत् तेऽनाधृष्टं नाम यज्ञियं तेन त्वा दधे ।

अनु त्वा देववीतये

९ १२८५

॥ २१२ ॥ (वा० य० ६।७, २, १५-१६, १८, २०-२१, २३, २६)

उपावीरस्युप देवान् दैवीर्विशः प्रागुरुशिजो वह्नितमान् ।
देवं त्वष्टृर्वसु रम हव्या ते स्वदन्ताम्
देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
अग्नीषोमाभ्यां जुष्टं नियुनज्मि ।
अद्भ्यस्त्वौषधीभ्योऽनु त्वा माता मन्यतामनु पितानु भ्राता सगर्भ्योऽनु सखा सयूध्यः ।
अग्नीषोमाभ्यां त्वा जुष्टं प्रोक्षामि
मनस्त आप्यायतां वाक्त आप्यायतां प्राणस्त आप्यायतां चक्षुस्त आप्यायतां
श्रोत्रं त आप्यायताम् ।

७

९

यत् ते क्रूरं यदास्थितं तत् त आप्यायतां निष्टायतां तत् ते शुध्यतु शमहोभ्यः ।
ओषधे त्रायस्व स्वर्धिते मैत्रं हिंसीः

१५ १२८८

देवाः ।

१२८२-१२९६]

१० विश्वे देवाः ।

रक्षसां भागोऽसि निरस्तं रक्ष इदमहं रक्षोऽभितृष्टामीदमहं रक्षोऽववाध
इदमहं रक्षोऽधमं तमो नयामि ।

धृतेन द्यावापृथिवी प्रोणुवाथा वायो वे स्तोकानामग्निराज्यस्य वेतु स्वाहा
स्वाहाकृते ऊर्ध्वनभसं मारुतं गच्छतम्

१६

सं ते मनो मनसा सं प्राणः प्राणेन गच्छताम् ।

रेहस्यमिष्टा श्रीणात्वापस्तवा समरिणन् वातस्य त्वा ध्राज्यै पूष्णो रश्म्या
ऊष्मणो व्यथिषत् प्रयुतं द्वेषः

१८ १२९०

ऐन्द्रः प्राणो अङ्गे अङ्गे निदीध्यदैन्द्र उद्वानो अङ्गे अङ्गे निधीतः

१

देव त्वष्टृभूरिं ते सथ संमेतु सलक्ष्मा यद्विष्टुरूपं भवाति ।

देवत्रा यन्तमवसे सखायोऽनु त्वा माता पितरो मदन्तु

२०

समुद्रं गच्छ स्वाहाऽन्तरिक्षं गच्छ स्वाहा देव संवितारं गच्छ स्वाहा

मित्रावरुणौ गच्छ स्वाहाऽहोरात्रे गच्छ स्वाहा छन्दांथसि गच्छ स्वाहा

द्यावापृथिवी गच्छ स्वाहा यज्ञं गच्छ स्वाहा सोमं गच्छ स्वाहा दिव्यं

नमो गच्छ स्वाहाऽग्निं वैश्वानरं गच्छ स्वाहा मनो मे हार्दि यच्छ दिवं

ते धूमो गच्छतु स्वर्ज्योतिः पृथिवीं भस्मनापृण स्वाहा

२१

हविष्मतीरिमा आपो हविष्माँर आविवासति ।

हविष्मान् देवो अध्वरो हविष्माँर अस्तु सूर्यः

२३

सोमं राजन् विश्वास्त्वं प्रजा उपावरोह विश्वास्त्वां प्रजा उपावरोहन्तु ।

शृणोत्वग्निः समिधा हवै मे शृण्वन्त्वापो धिषणाश्च देवीः ।

श्रोता ग्रावाणो विदुषो न यज्ञं शृणोतु देवः संविता हवै मे स्वाहा

२६ १२९४

॥ २१३ ॥ (वा० य० ७।२-३, १५, १८, २०, २२, २३, २७-२८, ४५-४७) +

मधुमतीर्न इषस्कृधि यत् ते सोमादाभ्यं नाम जागृवि तस्मै ते सोम

सोमाय स्वाहा स्वाहोर्वृन्तरिक्षमन्वेमि

२ १२९५

स्वाङ्कृतोऽसि विश्वेभ्य इन्द्रियेभ्यो दिव्येभ्यः पार्थिवेभ्यो मनस्त्वाष्टु स्वाहा

त्वा सुभव सूर्याय देव्येभ्यस्त्वा मरीचिपेभ्यो देवांथो यस्मै त्वेडे तत्

सत्यमुपरिपुता भजेन हतोऽसौ फट् प्राणाय त्वा व्यानाय त्वा

३ १२९६

+ वा० य० ७, ३९-४० = दै० [इन्द्रः] १८७१, २४३ ।

स प्रथमो बृहस्पतिश्चिकित्वाँस्तस्मा इन्द्राय सुतमाजुहोत स्वाहा ।

तुम्पन्तु होत्रा मध्वो याः स्विष्टा याः सुप्रीताः सुहुता यत् स्वाहायाड्भीत् १५ ११९७

सुप्रजाः प्रजाः प्रजनयन् परीह्यभि रायस्पोषेण यजमानम् ।

सञ्जमानो दिवा पृथिव्या मन्थी मन्थिशोचिषा निरस्तो मर्को मन्थिनोऽधिष्ठानमसि १८

उपयामगृहीतोऽस्याग्रयणोऽसि स्वाग्रयणः ।

पाहि यज्ञं पाहि यज्ञपतिं विष्णुस्त्वामिन्द्रियेण पातु त्वं पाह्यभि सर्वनानि पाहि २०

उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा बृहद्वते वयस्वत उक्थाव्यं गृह्णामि

यत् त इन्द्र बृहद्वयस्तस्मै त्वा विष्णवे त्वेष ते योनिरुक्थेभ्यस्त्वा देवेभ्यस्त्वा

देवाव्यं यज्ञस्याऽऽयुषे गृह्णामि

२२ १३००

मित्रावरुणाभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्याऽऽयुषे गृह्णामीन्द्राय त्वा देवाव्यं यज्ञस्याऽऽयुषे

गृह्णामीन्द्राग्निभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्याऽऽयुषे गृह्णामीन्द्रावरुणाभ्यां त्वा देवाव्यं

यज्ञस्याऽऽयुषे गृह्णामीन्द्राबृहस्पतिभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्याऽऽयुषे गृह्णामीन्द्रा-

विष्णुभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्याऽऽयुषे गृह्णामि

२३

प्राणाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व व्यानाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्वोदानाय मे

वर्चोदा वर्चसे पवस्व वाचे मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व क्रतुदक्षाभ्यां मे वर्चोदा

वर्चसे पवस्व श्रोत्राय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व चक्षुर्भ्यां मे वर्चोदसौ

वर्चसे पवेथाम्

२७

आत्मने मे वर्चोदा वर्चसे पवस्वौजसे मे वर्चोदा वर्चसे पवस्वाऽऽयुषे मे वर्चोदा

वर्चसे पवस्व विश्वाभ्यो मे प्रजाभ्यो वर्चोदसौ वर्चसे पवेथाम्

२८

रूपेण वो रूपमभ्यागां तुथो वो विश्ववैदा विभजतु ।

ऋतस्य पथा प्रेतं चन्द्रदक्षिणा वि स्वः पश्य व्युन्तरिक्षं यतस्व सदस्यैः ४५

ब्राह्मणमद्य विदेयं पितृमन्तं पैतृमत्यमृषिर्माणेयं सुधातुदक्षिणम् ।

असद्राता देवत्रा गच्छत प्रदातारमाविशत ४६ १३०५

अग्नये त्वा मह्यं वरुणो ददातु सोऽमृतत्वमशीयाऽऽयुर्दुत्र एधि मयो मह्यं प्रतिग्र-

हीत्रे रुद्राय त्वा मह्यं वरुणो ददातु सोऽमृतत्वमशीय प्राणो दात्र एधि

वयो मह्यं प्रतिग्रहीत्रे बृहस्पतये त्वा मह्यं वरुणो ददातु सोऽमृतत्वमशीय

त्वग्दात्र एधि मयो मह्यं प्रतिग्रहीत्रे यमाय त्वा मह्यं वरुणो ददातु

सोऽमृतत्वमशीय हयो दात्र एधि वयो मह्यं प्रतिग्रहीत्रे

४७ १३०६

[१२९७-१३१५]

॥ २१४ ॥ (वा० य० ८।९, ५४-५९)

उपयामगृहीतोऽसि बृहस्पतिसुतस्य देव सोम त इन्द्रोरिन्द्रियावृतः पत्नीवृतो
ग्रहो२ ऋध्यासम् ।

अहं परस्तादुहमवस्ताद्यदुन्तरिक्षं तदु मे पिताभूत् ।

अहं सूर्यमुभयतो ददर्शाहं देवानां परमं गुहा यत्

परमेष्ठ्यभिधीतः प्रजापतिर्वाचि व्याहृतायामन्धो अच्छेतः ।

सविता सन्यां विश्वकर्मा दीक्षायौ पुषा सोमक्रयण्याम्

इन्द्रश्च मरुतश्च क्रयायोपोत्थितोऽसुरः पण्यमानो मित्रः क्रीतो विष्णुः शिपिविष्ट

उरावासन्नो विष्णुर्नरन्धिषः

प्रोह्यमाणः सोम आगतो वरुण आसन्ध्यामासन्नोऽग्निराग्नीध्र इन्द्रो हविर्धानेऽथ-

र्वोपावह्रियमाणः

विश्वे देवा अंशुषु न्युप्तो विष्णुराप्रीतपा आप्यायमानो यमः सूयमानो

विष्णुः सम्भ्रियमाणो वायुः पूयमानः शुक्रः पूतः शुक्रः क्षीरश्रीर्मन्थी

सक्तुश्रीः

विश्वे देवाश्चमसेषूनीतोऽसुहोमायोद्यतो रुद्रो हूयमानो वातोऽभ्यावृतो नृचक्षाः

प्रतिख्यातो भक्षो भक्ष्यमाणः पितरो नाराशंसाः

सन्नः सिन्धुरवभृथायोद्यतः समुद्रोऽभ्यवह्रियमाणः सलिलः प्रप्लुतो ययोरोजसा

स्कमिता रजांसि वीर्येभिर्वीरतमा शर्विष्ठा । या पत्येते अप्रतीता सहोभि-

विष्णू अग्नं वरुणा पूर्वहूतौ

॥ २१५ ॥ (वा० य० ९।९-१२, २४, ३१-३६)

जवो यस्ते वाजिनिहिता गुहा यः श्येने परीतो अचरच्च वाते ।

तेन नो वाजिन् बलवान् बलेन वाजजिच्च भव समने च पारयिष्णुः ।

वाजिनो वाजजितो वाजंश्च सरिष्यन्तो बृहस्पतेर्भागमवजिघ्रत

देवस्याहं संवितुः सवे सत्यसंवसो बृहस्पतेरुत्तमं नाकं रुहेयम् ।

देवस्याहं संवितुः सवे सत्यसंवस इन्द्रस्योत्तमं नाकं रुहेयम् ।

देवस्याहं संवितुः सवे सत्यप्रसंवसो बृहस्पतेरुत्तमं नाकं मरुहम् ।

देवस्याहं संवितुः सवे सत्यप्रसंवस इन्द्रस्योत्तमं नाकं मरुहम्

+ वा० य० ८।६० = दै० [विश्वे देवाः] १२४६ ।

१३ [दै० विश्वे देवाः]

* अथर्व० ६, ९२, २ पाठभेदेन ।

१० १३१५

बृहस्पते वाजं जय बृहस्पतये वाचं वदत बृहस्पतिं वाजं जापयत ।

इन्द्र वाजं जयेन्द्राय वाचं वदतेन्द्रं वाजं जापयत ११

एषा वः सा सत्या संवार्गभूयया बृहस्पतिं वाजमजीजपताजीजपत बृहस्पतिं वाजं
वनेस्पतयो विमुच्यध्वम् ।

एषा वः सा सत्या संवार्गभूययेन्द्रं वाजमजीजपताजीजपतेन्द्रं वाजं १२

वाजस्येमां प्रसवः शिश्रिये दिवमिमा च विश्वा भुवनानि सम्राट् ।

अदित्सन्तं दापयति प्रजानन्तस नो रयिथ सर्ववीरं नियच्छतु स्वाहा २४

अग्निकोक्षरेण प्राणमुदजयत् तमुजेषमश्विनौ द्व्यक्षरेण द्विषदो मनुष्यानुदजयतां

तानुजेषं विष्णुस्त्र्यक्षरेण त्रीँलोकानुदजयत् तानुजेषं सोमश्चतुरक्षरेण

चतुष्पदः पशुनुदजयत् तानुजेषम् ३१

पूषा पञ्चाक्षरेण पञ्च दिश उदजयत् ता उज्जेषं सविता षडक्षरेण षडनुद-

जयत् तानुजेषं मरुतः सप्ताक्षरेण सप्त ग्राम्यान् पशुनुदजयँस्तानुजेषं

बृहस्पतिरष्टाक्षरेण गायत्रीमुदजयत् तामुजेषम् ३२ १३१०

मित्रो नवाक्षरेण त्रिवृतं स्तोममुदजयत् तमुजेषं वरुणो दशाक्षरेण विराजमुद-

जयत् तामुजेषमिन्द्र एकादशाक्षरेण त्रिष्टुभमुदजयत् तामुजेषं विश्वे देवा

द्वादशाक्षरेण जगतीमुदजयँस्तामुजेषम् ३३

वसवस्त्रयोदशाक्षरेण त्रयोदशं स्तोममुदजयँस्तमुजेषं रुद्राश्चतुर्दशाक्षरेण

चतुर्दशं स्तोममुदजयँस्तमुजेषमादित्याः पञ्चदशाक्षरेण पञ्चदशं

स्तोममुदजयँस्तमुजेषमदितिः षोडशाक्षरेण षोडशं स्तोममुदजयत्

तमुजेषं प्रजापतिः सप्तदशाक्षरेण सप्तदशं स्तोममुदजयत् तमुजेषम् ३४

एष ते निर्ऋते भागस्तं जुषस्व स्वाहाऽग्निनेत्रेभ्यो देवेभ्यः पुरःसद्भ्यः स्वाहा

यमनेत्रेभ्यो देवेभ्यो दक्षिणासद्भ्यः स्वाहा विश्वदेवनेत्रेभ्यो देवेभ्यः पश्चा-

त्सद्भ्यः स्वाहा मित्रावरुणनेत्रेभ्यो वा मरुत्नेत्रेभ्यो वा देवेभ्य उत्तरासद्भ्यः

स्वाहा सोमनेत्रेभ्यो देवेभ्य उपरिसद्भ्यो दुर्वस्वद्भ्यः स्वाहा ३५

ये देवा अग्निनेत्राः पुरःसदस्तेभ्यः स्वाहा ये देवा यमनेत्रा दक्षिणासदस्तेभ्यः

स्वाहा ये देवा विश्वदेवनेत्राः पश्चात्सदस्तेभ्यः स्वाहा ये देवा मित्रा-

वरुणनेत्रा वा मरुत्नेत्रा वोत्तरासदस्तेभ्यः स्वाहा ये देवाः सोमनेत्रा

उपरिसदो दुर्वस्वन्तस्तेभ्यः स्वाहा ३६ १३१४

॥ २१६ ॥ (वा० य० १०।५, ९, २१, २३, २८, ३१)

सोमस्य त्विषिरसि तवेव मे त्विषिर्भूयात् ।

अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा सवित्रे स्वाहा सरस्वत्यै स्वाहा पूष्णे स्वाहा
 बृहस्पतये स्वाहेन्द्राय स्वाहा घोषाय स्वाहा श्लोकाय स्वाहाऽशाय स्वाहा
 भगाय स्वाहाऽर्यम्णे स्वाहा

५ १३२५

आविर्मर्या आवित्तो अग्निर्गृहपतिरावित्त इन्द्रो वृद्धश्रवा आवित्तौ मित्रावरुणौ
 धृतव्रतावचित्तः पूषा विश्ववेदा आवित्ते द्यावापृथिवी विश्वशम्भुवावा-
 वित्तादितिरुशर्मा

९

इन्द्रस्य वज्रोऽसि मित्रावरुणयोस्त्वा प्रशास्त्रोः प्रशिषा युनज्मि ।

अव्यथायै त्वा स्वधायै त्वाऽरिष्टो अर्जुनो मरुतां प्रसवेन जयापाम मनसा
 समिन्द्रियेण

२१

अग्नये गृहपतये स्वाहा सोमाय वनस्पतये स्वाहा मरुतामोजसे स्वाहेन्द्रस्ये-
 न्द्रियाय स्वाहा ।

२ १३१०

पृथिवि मातर्मा मां हिंसीमो अहं त्वाम्

२३

अभिभूरस्येतास्ते पञ्च दिशः कल्पन्तां ब्रह्मस्त्वं ब्रह्माऽसि सविताऽसि सत्यप्रसवो
 वरुणोऽसि सत्यौजा इन्द्रोऽसि विश्वौजा रुद्रोऽसि सुशेवः ।

बहुकारं श्रेयस्करं भूयस्करेन्द्रस्य वज्रोऽसि तेन मे रध्य

२८

अश्विभ्यां पच्यस्व सरस्वत्यै पच्यस्वेन्द्राय सुत्राम्णे पच्यस्व ।

वायुः पूतः पवित्रेण प्रत्यङ्कसोमो अतिस्रुतः । इन्द्रस्य युज्यः सखा

३१ १३३०

॥ २१७ ॥ (वा० य० ११।५८, ६६)

वसवस्त्वा कृण्वन्तु गायत्रेण छन्दसाङ्गिरस्वद् ध्रुवासि पृथिव्यसि धारया मरिचि
 प्रजाथं रायस्पोषं गौपत्यं सुवीर्यं सजातान् यजमानाय रुद्रास्त्वा
 कृण्वन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वद् ध्रुवास्यन्तरिक्षमसि धारया मरिचि प्रजाथं
 रायस्पोषं गौपत्यं सुवीर्यं सजातान् यजमानायादित्यास्त्वा कृण्वन्तु
 जागतेन छन्दसाङ्गिरस्वद् ध्रुवासि द्यौरसि धारया मरिचि प्रजाथं रायस्पोषं
 गौपत्यं सुवीर्यं सजातान् यजमानाय विश्वे त्वा देवा वैश्वानराः
 कृण्वन्त्वानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वद् ध्रुवासि दिशोऽसि धारया मरिचि प्रजाथं
 रायस्पोषं गौपत्यं सुवीर्यं सजातान् यजमानाय

५८ १३३१

आकूतिमग्निं प्रयुज्थं स्वाहा मनो मेधामग्निं प्रयुज्थं स्वाहा चित्तं विज्ञातमग्निं
प्रयुज्थं स्वाहा वाचो विधृतिमग्निं प्रयुज्थं स्वाहा प्रजापतये मनवे
स्वाहाऽग्नये वैश्वानराय स्वाहा

६६ १३३२

॥ २१८ ॥ (वा० य० १२।४५, ५४, ७४)

अपेत वीत वि च सर्पतातो येऽत्र स्थ पुराणा ये च नूतनाः ।

अदाद्यमोऽवसानं पृथिव्या अक्रन्निमं पितरो लोकमस्मै

४५

लोकं पृण छिद्रं पृणार्थो सीद ध्रुवा त्वम् ।

इन्द्राग्नी त्वा बृहस्पतिरस्मिन् योनावसीपदन्

५४

सजूरब्दो अयवोभिः सजरूपा अरुणीभिः ।

सजोषसावश्विना द२सोभिः सजूः सूर एतशेन सजूर्वैश्वानर इड्या घृतेन स्वाहा ७४ १३३५

॥ २१९ ॥ (वा० य० १३।२, ३८)

अपां पृष्ठमसि योनिरग्नेः समुद्रमभितः पिन्वमानम् ।

वर्धमानो महार आ च पुष्करे दिवो मात्रया वरिष्णा प्रथस्व

२

सम्यक् स्रवन्ति सरितो न धेना अन्तर्हृदा मनसा पयमानाः ।

घृतस्य धारा अभिचाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्ये अग्नेः

३८ १३३७

॥ २२० ॥ (वा० य० १४।९-१०, १७-१९, २३-२६)

मूर्धा वयः प्रजापतिश्छन्दः क्षत्रं वयो मयन्दं छन्दो विष्टम्भो वयोऽधि-

पतिश्छन्दो विश्वकर्मा वयः परमेष्ठी छन्दो बस्तो वयो विवलं छन्दो

वृष्णिर्वयो विशालं छन्दः पुरुषो वयस्तन्द्रं छन्दो व्याघ्रो वयोऽनाधृष्टं

छन्दः सिधो वयश्छदिश्छन्दः पष्ठवाड् वयो बृहती छन्द उक्षा वयः

ककुप् छन्दः ऋषभो वयः सतोबृहती छन्दः

९

अनड्वान् वयः पङ्क्तिश्छन्दो धेनुर्वयो जगती छन्दस्त्र्यविर्वयस्त्रिष्टुप् छन्दो

दित्यवाड् वयो विराट् छन्दः पश्चाद्विर्वयो गायत्री छन्दस्त्रिवत्सो वय उष्णिक्

छन्दस्तुर्यवाड् वयोऽनुष्टुप् छन्दो लोकं ता इन्द्रम्

१०

आयुर्मे पाहि प्राणं मे पाह्यपानं मे पाहि व्यानं मे पाहि चक्षुर्मे पाहि श्रोत्रं मे

पाहि वाचं मे पिन्व मनो मे जिन्वाऽऽत्मानं मे पाहि ज्योतिर्मे यच्छ

१७ १३४०

मा छन्दः प्रमा छन्दः प्रतिमा छन्दो अस्त्रिवयश्छन्दः पङ्क्तिश्छन्द उष्णिक्

छन्दो बृहती छन्दोऽनुष्टुप् छन्दो विराट् छन्दो गायत्री छन्दस्त्रिष्टुप्

१८ १३४१

छन्दो जगती छन्दः

पृथिवी छन्दोऽन्तरिक्षं छन्दो द्यौश्छन्दः समाश्छन्दो नक्षत्राणि छन्दो वाक्
छन्दो मनश्छन्दः कृषिश्छन्दो हिरण्यं छन्दो गौश्छन्दोऽजाश्छन्दोऽश्वश्छन्दः १९
आशुस्त्रिवृद्धान्तः पञ्चदशो व्योमा सप्तदशो धरुणं एकविंशः प्रतूर्तिरष्टादश-
स्तपो नवदशोऽभीवर्त्तः सविंशो वर्चो द्वाविंशः सम्भरणस्त्रयोविंशो
योनिश्चतुर्विंशो गर्भाः पञ्चविंश ओजस्त्रिणवः क्रतुरेकत्रिंशः प्रतिष्ठा
त्रयस्त्रिंशो ब्रह्मस्य विष्टपं चतुस्त्रिंशो नाकः षट्त्रिंशो धिंवर्त्तोऽष्टाच-
त्वारिंशो धर्त्रं चतुष्टोमः

२३

अग्नेर्भागोऽसि दीक्षाया आधिपत्यं ब्रह्म स्पृतं त्रिवृत्स्तोम इन्द्रस्य भागोऽसि
विष्णोराधिपत्यं क्षत्रं स्पृतं पञ्चदश स्तोमो नृचक्षसां भागोऽसि धातुराधि-
पत्यं जनित्रं स्पृतं सप्तदश स्तोमो मित्रस्य भागोऽसि वरुणस्याधिपत्यं
दिवो वृष्टिर्वातं स्पृतं एकविंश स्तोमः

२४

वसूनां भागोऽसि रुद्राणामाधिपत्यं चतुष्पात् स्पृतं चतुर्विंश स्तोम आदित्यानां
भागोऽसि मरुतामाधिपत्यं गर्भा स्पृताः पञ्चविंश स्तोमोऽदित्यै भागोऽसि
पूष्ण आधिपत्यमोजं स्पृतं त्रिणव स्तोमो देवस्य सवितुर्भागोऽसि
बृहस्पतेराधिपत्यं समीचीर्दिशं स्पृताश्चतुष्टोम स्तोमः

२५ १३४५

यवानां भागोऽस्ययवानामाधिपत्यं प्रजा स्पृताश्चतुश्चत्वारिंश स्तोमं क्रभूणां
भागोऽसि विश्वेषां देवानामाधिपत्यं भूतं स्पृतं त्रयस्त्रिंश स्तोमः

२६ १३४६

॥ २२१ ॥ (वा० य० १५३-१९)

षोडशी स्तोम ओजो द्रविणं चतुश्चत्वारिंश स्तोमो वर्चो द्रविणम् ।

अग्नेः पुरीषमस्यप्सो नाम तां त्वा विश्वे अभिगृणन्तु देवाः ।

स्तोमपृष्ठा घृतवर्तीह सीद प्रजावदस्मे द्रविणायजस्व

३

एवश्छन्दो वरिश्छन्दः शम्भूश्छन्दः परिभूश्छन्द आच्छच्छन्दो मनश्छन्दो
व्यचश्छन्दः सिन्धुश्छन्दः समुद्रश्छन्दः सरिरं छन्दः ककुप्छन्दस्त्रिकुप्छन्दः
काव्यं छन्दो अङ्कूपं छन्दोऽक्षरपङ्क्तिश्छन्दः पदपङ्क्तिश्छन्दो विष्टारप-
ङ्क्तिश्छन्दः क्षुरोभ्रजश्छन्दः

४

आच्छच्छन्दः प्रच्छच्छन्दः संयच्छन्दो वियच्छन्दो बृहच्छन्दो रथन्तरञ्छन्दो
निकायश्छन्दो विवधश्छन्दो गिरश्छन्दो भ्रजश्छन्दः सस्तुप्छन्दोऽनुष्टु-
प्छन्द एवश्छन्दो वरिश्छन्दो वयश्छन्दो वयस्कृच्छन्दो विष्पर्धाश्छन्दो
विशालं छन्दश्छदिश्छन्दो दूरोहणं छन्दस्तन्द्रं छन्दो अङ्काङ्गं छन्दः

५ १३४९

रश्मिना सत्याय सत्यं जिन्व प्रेतिना धर्मेना धर्मं जिन्वान्वित्या दिवा दिवं
जिन्व सन्धिनान्तरिक्षेणान्तरिक्षं जिन्व प्रतिधिना पृथिव्या पृथिवीं जिन्व
विष्टम्भेन वृष्ट्या वृष्टिं जिन्व प्रवयाहाहर्जिन्वानुया रात्र्या रात्रौ जिन्वोशिजा
वसुभ्यो वसुञ्जिन्व प्रकृतेनादित्येभ्य आदित्याञ्जिन्व

६ १३५०

तनुना रायस्पोषेण रायस्पोषं जिन्व ससर्पेण श्रुताय श्रुतं जिन्वैडेनौषधी-
भिरोषधीजिन्वोत्तमेन तनूभिस्तनूजिन्व वयोधसाधीतेनाधीतं जिन्वाभिजिता
तेजसा तेजो जिन्व

७

प्रतिपदसि प्रतिपदे त्वानुपदस्यनुपदे त्वा सम्पदसि सम्पदे त्वा तेजोऽसि
तेजसे त्वा

८

त्रिवृदसि त्रिवृते त्वा प्रवृदसि प्रवृते त्वा विवृदसि विवृते त्वा सवृदसि सवृते
त्वाक्रमोऽस्याक्रमाय त्वा संक्रमोऽसि संक्रमाय त्वोत्क्रमोऽस्युत्क्रमाय
त्वोत्क्रान्तिरस्युत्क्रान्त्यै त्वाधिपतिनोर्जोर्जी जिन्व

९

राश्यसि प्राची दिग् वसवस्ते देवा अधिपतयोऽग्निहेतीनां प्रतिधर्ता त्रिवृत्
त्वा स्तोमः पृथिव्याः श्रयत्वाज्यमुक्थमव्यथायै स्तम्नातु रथन्तरः
साम प्रतिष्ठित्या अन्तरिक्षं ऋषयस्त्वा प्रथमजा देवेषु दिवो मात्रया
वरिम्णा प्रथन्तु विधर्ता चायमधिपतिश्च ते त्वा सर्वे संविदाना नाकस्य
पृष्ठे स्वर्गे लोके यजमानं च सादयन्तु

१०

विराडसि दक्षिणा दिग् रुद्रास्ते देवा अधिपतय इन्द्रो हेतीनां प्रतिधर्ता
पञ्चदशस्त्वा स्तोमः पृथिव्याः श्रयतु प्र उगमुक्थमव्यथायै स्तम्नातु
बृहत्साम प्रतिष्ठित्या०

११ १३५१

सम्राडसि प्रतीची दिगादित्यास्ते देवा अधिपतयो वरुणो हेतीनां प्रतिधर्ता
सप्तदशस्त्वा स्तोमः पृथिव्याः श्रयतु मरुत्वतीयमुक्थमव्यथायै स्तम्नातु
वैरूपः साम प्रतिष्ठित्या०

१२

स्वराडस्युदीची दिङ्मरुतस्ते देवा अधिपतयः सोमो हेतीनां प्रतिधर्तैकविंश-
शस्त्वा स्तोमः पृथिव्याः श्रयतु निष्केवल्यमुक्थमव्यथायै स्तम्नातु
वैराजः साम प्रतिष्ठित्या०

१३ १३५२

अधिपत्यसि बृहती दिग् विश्वे ते देवा अधिपतयो बृहस्पतिर्हेतीनां प्रतिधर्ता
त्रिणवत्रयस्त्रिंशौ त्वा स्तोमौ पृथिव्याः श्रयतां वैश्वदेवाग्निमारुते उक्थे
अव्यथायै स्तम्नीताः शाक्वरैरवते सामनी प्रतिष्ठित्या० १४

अयं पुरो हरिकेशः सूर्यरश्मिस्तस्य रथगृत्सश्च रथौजाश्च सेनानीग्रामण्यौ ।
पुञ्जिकस्थला च क्रतुस्थला चाप्सरसौ दुङ्क्ष्णवः पशवो हेतिः पौरुषेयो वधः
प्रहेतिस्तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च
नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः १५

अयं दक्षिणा विश्वकर्मा तस्य रथस्वनश्च रथेचित्रश्च सेनानीग्रामण्यौ ।
मेनका च सहजन्त्या चाप्सरसौ यातुधाना हेती रक्षांसि प्रहेतिस्तेभ्यो० १६ १३६०

अयं पश्चाद्विश्वव्यचास्तस्य रथप्रोतश्चासमरथश्च सेनानीग्रामण्यौ ।
प्रम्लोचन्ती चानुम्लोचन्ती चाप्सरसौ व्याघ्रा हेतिः सर्पाः प्रहेतिस्तेभ्यो० १७

अयमुत्तरात् संयद्रसुस्तस्य तार्क्ष्यश्चारिष्टनेमिश्च सेनानीग्रामण्यौ ।
विश्वाची च घृताची चाप्सरसावापो हेतिर्वातुः प्रहेतिस्तेभ्यो नमो अस्तु० १८

अयमुपर्यर्वाग्वसुस्तस्य सेनजिच्च सुषेणश्च सेनानीग्रामण्यौ ।
उर्वशी च पूर्वचित्तिश्चाप्सरसाववस्फूर्जन् हेतिर्विद्युत् प्रहेतिस्तेभ्यो नमो अस्तु० १९ १३६३

॥ २२२ ॥ (वा० य० १७।४८, ५२) +

यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारो विशिखा इव ।
तन्न इन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु
यस्य कुर्मो गृहे हविस्तमग्ने वर्धया त्वम् । तस्मै देवा अधिब्रुवन्नयं च ब्रह्मणस्पतिः ५२ १३६५

॥ २२३ ॥ (वा० य० १८।३७)

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि ३७ १३६६

॥ २२४ ॥ (वा० य० २०।३, १३, १७-१८)

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायामि पिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्याया-
नाद्यायामि पिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभि पिञ्चामि ३ १३६७

+ वा० य० १७, ४९ = ऋ० ६, ७२, १८; दै० [विश्वे देवाः] ११४९, सा० १८७० ।

लोमानि प्रयतिर्मम त्वङ् म आनतिरागतिः ।

मांसं म उपनतिर्वस्वस्त्रि मज्जा म आनतिः

१३

यद् ग्रामे यदरण्ये यत् सभायां यदिन्द्रिये ।

यच्छुद्धे यदर्थे यदेनश्चकुमा वयं यदेकस्याधि धर्मेणि तस्यावयजनमसि

१७

यदापो अघ्न्या इति वरुणेति शपामहे ततो वरुण नो मुञ्च ।

अवभृथ निचुम्पुण निचेरुरसि निचुम्पुणः ।

अव देवैर्देवकृतमेनोऽयक्ष्यव मर्त्यैर्मर्त्यकृतं पुरुरावणो देव रिषस्पाहि

१८ १३००

॥ २२५ ॥ (वा० य० २१।४१-४३, ६०-६१) ×

होता यक्षदुश्चिनौ छागस्य वपाया मेदसो जुषताः हविर्होतयर्ज ।

होता यक्षत् सरस्वतीं मेघस्य वपाया मेदसो जुषताः हविर्होतयर्ज ।

होता यक्षदिन्द्रमृषभस्य वपाया मेदसो जुषताः हविर्होतयर्ज

४१

होता यक्षदुश्चिनौ सरस्वतीमिन्द्रः सुत्रामाणमिमे सोमाः सुरामाणश्छागैर्न

मेघैर्ऋषभैः सुताः शष्पैर्न तोक्मभिर्लज्जैर्महस्वन्तो मदरा मासरेण परिष्कृताः

शुक्राः पर्यस्वन्तोऽमृताः प्रस्थिता वो मधुश्चतुस्तानश्चिना सरस्वतीन्द्रः

सुत्रामा वृत्रहा जुषन्ताः सोम्यं मधु पिबन्तु मदन्तु व्यन्तु होतयर्ज

४२

होता यक्षदुश्चिनौ छागस्य हविष आत्तामद्य मध्यतो मेद उद्धृतं पुरा द्वेषोभ्यः

पुरा पौरुषेय्या गृभो घस्ता नूनं घासे अज्राणां यवसप्रथमानाः सुमत्क्षराणां

शतरुद्रियाणामग्निवात्तानां पीवोपवसनानां पार्श्वतः श्रोणितः शितामत

उत्सादतोऽङ्गादङ्गादवत्तानां करत एवाश्चिना जुषताः हविर्होतयर्ज

४३

सूपस्था अद्य देवो वनस्पतिरभवदुश्चिभ्यां छागेन सरस्वत्यै मेघेणेन्द्राय

ऋषभेणाक्षस्तान् मेदस्तः प्रति पचतागृभीषतावीवृधन्त पुरोडाशैरपुश्चिना

सरस्वतीन्द्रः सुत्रामा सुरासोमान्

६०

त्वामद्य ऋष आर्षेय ऋषीणां नपादवृणीतायं यजमानो बहुभ्य आ सङ्गतेभ्य

एष मे देवेषु वसु वार्यायक्ष्यत इति ता या देवा देव दानान्यदुस्तान्यस्मा

आ च शास्वा च गुरस्वेषितश्च होतरसि भद्रवाच्याय प्रेषितो मानुषः

६१ १३७५

सूक्तवाकाय सूक्ता ब्रूहि

× वा० य० २१, २३-२८ = ६० [अदितिः०] ९४०-९४५ ।

॥ २२६ ॥ (वा० य० २३।८, १३, १८-२०, २६-२७, ६३)

वसवस्त्वाञ्जन्तु गायत्रेण छन्दसा रुद्रास्त्वाञ्जन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसाऽऽदित्यास्त्वाञ्जन्तु
जामतेन छन्दसा ।

भूर्भुवःस्वर्लाजीश्छाचीश्न्यव्ये गव्ये एतदन्नमत्त देवा एतदन्नमद्वि प्रजापते ८
वायुष्ट्वा पचतैरवत्वासितग्रीवश्छागैर्न्यग्रोधश्चमसैः शलमलिर्वृद्ध्या ।

एष स्य राथ्यो वृषा पद्भिश्चतुर्भिरेदगन् ब्रह्माऽकुण्णश्च नोऽवतु नमोऽग्नये १३

प्राणाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा ।

अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन ।

ससस्त्यश्चकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् १८

गणानां त्वा गणपतिः हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिः हवामहे निधीनां
त्वा निधिपतिः हवामहे वसो मम ।

आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् १९

ता उमौ चतुरः पदः संप्रसारयाव स्वर्गे लोके प्रोर्णवाथां वृषा वाजी रेतोधा
रेतो दधातु २० १३८०

ऊर्ध्वमेनामुच्छ्रापय गिरौ भारः हरन्निव । अथास्यै मध्यमेधताः शीते वार्ते पुनन्निव २६

ऊर्ध्वमेनमुच्छ्रायतादिरौ भारः हरन्निव । अथास्यै मध्यमेजतु शीते वार्ते पुनन्निव २७

सुभूः स्वयम्भूः प्रथमोऽन्तर्महत्पुर्णवे ।

दधे ह गर्भमृत्वियं यतो जातः प्रजापतिः ६३ १३८३

॥ २२७ ॥ (वा० य० ६६।१-२)

अग्निश्च पृथिवी च सन्नते ते मे सं नमतामदो वायुश्चाऽन्तरिक्षं च सन्नते ते
मे सं नमतामद आदित्यश्च द्यौश्च सन्नते ते मे सं नमतामद आपश्च वरुणश्च
सन्नते ते मे सं नमतामदः ।

सप्त सप्तसदो अष्टमी भूतसाधनी सकामाँर अध्वनस्कुरु संज्ञानमस्तु मेऽमुना १

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनैभ्यः ।

ब्रह्मराज्न्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च ।

प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृध्यतामुप मादो नमतु २ १३८५

१४ [दे० विश्वे देवाः]

अग्निमद्य होतारमवृणीतायं यजमानः पचन् पक्तीः पचन् पुरोडाशं बध्नन्निन्द्राय
छागम् ।

सूपस्था अद्य देवो वनस्पतिरभवदिन्द्राय छागेन ।

अघत्तं मेदुस्तः प्रति पचताग्रभीदवीवृधत् पुरोडाशेन । त्वामद्य ऋषे

२३

देवो वनस्पतिर्देवमिन्द्रं वयोधसं देवो देवमवर्धयत् ।

द्विपदा छन्दसेन्द्रियं भगमिन्द्रे वयो दधद् वसुवने वसुधेयस्य वेतु यज

४३ १३८०

॥ २२९ ॥ (वा० य० २२।४७)

ब्राह्मणासः पितरः सोम्यासः शिवे नो द्यावापृथिवी अनेहसा ।

पूषा नः पातु दुरितादृतावृधो रक्षा मार्किनो अघशंस ईशत

४७ १३८८

॥ २३० ॥ (वा० य० ३२।१५) ×

मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः ।

मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा

१५ १३८९

॥ २३१ ॥ (वा० य० ३५।३, ११) ❀

वायुः पुनातु सविता पुनात्वग्नेर्भ्राजसा सूर्यस्य वर्चसा ।

वि मुच्यन्तामुस्त्रियाः

३ १३९०

अपाघमप किल्बिषमप कृत्यामपो रपः । अपामार्गं त्वमस्सदप दुःष्वग्न्यं सुव ११ १३९१

॥ २३२ ॥ (वा० य० ३६।१)

ऋचं वाचं प्र पद्ये मनो यजुः प्र पद्ये सामं प्राणं प्र पद्ये चक्षुः श्रोत्रं प्र पद्ये ।

वागोजः सहौजो मयि प्राणापानौ

१ १३९२

॥ २३३ ॥ (वा० य० ३८।४, १५)

अश्विभ्यां पिन्वस्व सरस्वत्यै पिन्वस्वेन्द्राय पिन्वस्व ।

स्वाहेन्द्रवत् स्वाहेन्द्रवत् स्वाहेन्द्रवत्

४

स्वाहा पूष्णे शरसे स्वाहा ग्रावभ्यः स्वाहा प्रतिरवेभ्यः ।

स्वाहा पितृभ्य उर्ध्वबर्हिभ्यो घर्मपावभ्यः स्वाहा द्यावापृथिवीभ्यां

१५ १३९४

स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः

× वा० य० ३३, ५७-५८ = दे० [अदितिः०] १९६; सा० ८४७; दे० [अश्विनौ] ३ । वा० य० ३४, ४६ = दे० [विश्वे देवाः] ८०८ ।

* वा० य० ३५, ४ = दे० [आयुर्वेद०] ३०५ ।

देवाः ।

[१३८६-१४०२]

१० विश्व देवाः ।

(१०७)

॥ २३४ ॥ (सा० २९९)

(१३९५-९७) वामदेवो गौतमः । बहुः । बृहती ।

^{१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २}
त्वष्टा नो देव्यं वचः पजन्यो ब्रह्मणस्पतिः ।^{२ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २}
पुत्रैर्भ्रातृभिरदितिर्नु पातु नो दुष्टं त्रामणं वचः

२९९ १३९५

॥ २३५ ॥ (सा० ५९१) एकपाज्जगती ।

^{३ १ २ २ ३ ३ २}
इमं वृषणं कृणुतेकमिन्माम्

५९१ १३९६

॥ २३६ ॥ (सा० ६११) महापङ्क्तिः ।

^{१ १ ३ १ २ २ १ २ २ ३ २}
यशो मा द्यावापृथिवी यशो मेन्द्रबृहस्पती ।^{२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २}
यशो भगस्य विन्दतु यशो मा प्रतिमुच्यताम् ।^{३ २ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २}
यशसाऽस्याः संसदाऽहं प्रवदिता स्याम्

६११ १३९७

॥ २३७ ॥ (सा० ३६८)

(१३९८) त्रित आप्त्यः । अनुष्टुप् ।

^{३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २}
अमी ये देवा स्थन मध्य आ रोचने दिवः ।^{१ २ ३ २ ३ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २}
कद्र क्रतं कदमृतं का प्रत्ना व आहुतिः

३६८ १३९८

॥ २३८ ॥ (सा० ४४२)

(१३९९) त्रसदस्युः । द्विपदा विराट् ।

^{२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २}
सदा गावः शुचयो विश्वधायसः सदा देवा अरेपसः

४४२ १३९९

॥ २३९ ॥ (सा० ४५३)

(१४००) कवष पेलूषः । द्विपदा विराट् ।

^{२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ ३ १ २ ३ १ २}
वि सुतयो यथा पथा इन्द्र त्वद्यन्तु रातयः

४५३ १४००

॥ २४० ॥ (सा० ४५५)

(१४०१) आत्रेयः । द्विपदा विराट् ।

^{३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २}
ऊर्जा मित्रो वरुणः पिन्वतेडाः पीवरीमिषं कृणुही न इन्द्र

४५५ १४०१

॥ २४१ ॥ (सा० १५०३-४) *

(१४०२-३) अग्निस्तापसः । अनुष्टुप् ।

^{२ ३ १ २ ३ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २}
अग्ने विश्वेभिरभिर्जोषि ब्रह्म सहस्कृत ।^{१ २ ३ २ ३ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २}
ये देवत्रा य आयुषु तेभिर्नो महया गिरः

१५०३ १४०२

* सा १५०५ = दे० [विश्वेदेवाः] ८२१ ।

(१०८)

देवत-संहितायाम्

[विश्वे देवाः ।

^१ प्र स ^{२२ ३ १ २ ३ १} विश्वेभिरग्निभिरग्निः स यस्य ^{२२ ३ १ २} वाजिनः ।
^{१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३} तनये ^{३ १ २} तौके अस्मदा सम्यङ्वाजैः ^{३ १ २} परीवृतः

१५०४ १४०३

॥ २४२ ॥ (सा० १८७२)

(१४०४) पायुर्भारद्वाजः । अनुष्टुप् ।

^{२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३} या नः ^{२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३} स्वोऽरणो यश्च ^{२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३} निष्ठयो जिघांसति ।
^{३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} देवास्तं सर्वं धूर्वन्तु ब्रह्म वर्म ममान्तरं शर्म वर्म ममान्तरम्

१८७२ १४०४

नानादेवताः ।

॥ २४३ ॥ (वा० य० ९२०)

आपये स्वाहा स्वापये स्वाहा ऽपिजाय स्वाहा कर्तवे स्वाहा वसवे स्वाहा
 ऽहर्पतये स्वाहा ऽह्वे मुग्धाय स्वाहा मुग्धाय वैनःशिनाय स्वाहा
 विनःशिनाय आन्त्यायनाय स्वाहा ऽन्त्याय भौवनाय स्वाहा भुवनस्य पतये स्वाहा
 ऽधिपतये स्वाहा ॥ २० ॥

१४०५-१६

॥ २४४ ॥ (वा० य० १०५)

अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा सवित्रे स्वाहा सरस्वत्यै स्वाहा पूष्णे स्वाहा
 बृहस्पतये स्वाहा न्द्राय स्वाहा घोषाय स्वाहा श्लोकाय स्वाहा ऽःशाय स्वाहा
 भगाय स्वाहा ऽर्यणे स्वाहा ॥ ५ ॥

१४१७-१८

॥ २४५ ॥ (वा० य० ११६०, ६१)

वसवस्त्वा धूपयन्तु गायत्रेण छन्दसाङ्गिरस्वद् रुद्रास्त्वा धूपयन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वद्
 दादित्यास्त्वा धूपयन्तु जागतेन छन्दसाङ्गिरस्वद् विश्वे त्वा देवा वैश्वानरा धूपयन्त्वानुष्टुभेन
 छन्दसाङ्गिरस्वद् दिन्द्रास्त्वा धूपयन्तु वरुणस्त्वा धूपयन्तु विष्णुस्त्वा धूपयन्तु ॥ ६० ॥

१४१९-२५

वसवस्त्वाऽऽच्छन्दन्तु गायत्रेण छन्दसाङ्गिरस्वद् रुद्रास्त्वाऽऽच्छन्दन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वद्
 दादित्यास्त्वाऽऽच्छन्दन्तु जागतेन छन्दसाङ्गिरस्वद् विश्वे त्वा देवा वैश्वानरा
 आच्छन्दन्त्वानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वत् ॥ ६५ ॥

१४३६-३९

॥ १४६ ॥ (वा० य० १४।२८-३१)

१४०३

प्रजास्तुवत प्रजा अधीयन्त प्रजापतिरधिपतिरासीत् तिसृभिरस्तुवत ब्रह्मासृज्यत ब्रह्मणस्पति-
पतिरासीत् पञ्चभिरस्तुवत भूतान्यसृज्यन्त भूतानां पतिरधिपतिरासीत् सप्तभिरस्तुवत सप्त
भिर्यसृज्यन्त धाताऽधिपतिरासीत् ॥२८॥ १४४०-४३

288c-83

१४०४

भिरस्तुवत पितरोऽसृज्यन्तादितिरधिपत्यासी—देकादशभिरस्तुवत ऋतवोऽसृज्यन्तार्तवा अधि-
 प आसं—स्त्रयोदशभिरस्तुवत मासा असृज्यन्त संवत्सरोऽधिपतिरासीत् पञ्चदशभिरस्तुवत
 असृज्यन्तेन्द्रोऽधिपतिरासीत् सप्तदशभिरस्तुवत ग्राम्याः पञ्चवोऽसृज्यन्त बृहस्पतिरधिपति-
 र्भवत् ॥२९॥

٢٨-٨٨٨٨

शमिस्तुवत शूद्रार्यावसृज्येतामहोरात्रे अधिपत्नी आस्ता—मेकविंशत्यास्तुवतैकशफाः पशवो
ज्यन्त वरुणोऽधिपतिरासीत् त्रयोविंशत्यास्तुवत क्षुद्राः पशवोऽसृज्यन्त पूषाऽधिपतिरासीत्
विंशत्यास्तुवतारण्याः पशवोऽसृज्यन्त वायुरधिपतिरासीत् सप्तविंशत्यास्तुवत द्यावापृथिवी
वसवो रुद्रा आदित्या अनुव्यायँस्त एवाधिपतय आसन् ॥ ३० ॥ १४४९-५३

१४४९-५३

304-26

शतयास्तुवत वनस्पतयोऽसृज्यन्त सोमोऽधिपतिरासी—देकत्रिंशतास्तुवत प्रजा असृज्यन्त
 यथायवाश्चाधिपतय आसँ—स्त्रयास्त्रिंशतास्तुवत भूतान्यशाम्यन् प्रजापतिः परमेष्ठ्याधिपतिरा-
 ॥३१॥ १४५४-५६

१४५४-५६

॥ २४७ ॥ (वा० य० १८, १६-१८, २१)

३१७-१८

सोमश्च म॒ इन्द्रश्च मे॒ सविता च॑ म॒ इन्द्रश्च मे॒ सरस्वती च॑ म॒ इन्द्रश्च मे॒
बृहस्पतिश्च॑ म॒ इन्द्रश्च मे॒ यज्ञेन॑ कल्पन्ताम् ॥१६॥

५

वरुणश्च म॒ इन्द्रश्च मे॒ धा॒ता च॒ म॒ इन्द्रश्च मे॒ त्वष्टा॑ च॒ म॒ इन्द्रश्च मे॒
विश्वे॑ च॒ मे॒ दे॒वा इन्द्रश्च मे॒ य॒ज्ञेन॑ कल्पन्ताम् ॥ १७ ॥

ॐ नमः

चो च म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ ऽन्तरि॑क्षं च म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ द्यौश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ समा॑श्च म॒ इन्द्र॑श्च मे॒
 षाणि च म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ दिश॑श्च म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ य॒ज्ञेन॑ कल्पन्ताम् ॥१८॥

३२९-३५

धर्मश्च मे ऽर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मे ऽश्वमेधश्च मे पृथिवी च मे
दितिश्च मे द्यौश्च मे ऽङ्गुलयः शक्रवर्यो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥२२॥

१४५७.-८५

॥ २४८ ॥ (वा० य० २२।५-८, २०, २२-३४)

प्रजापतये त्वा जुष्टं प्रोक्षामीन्द्राग्निभ्यां त्वा जुष्टं प्रोक्षामि वायवे त्वा जुष्टं प्रोक्षामि
विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं प्रोक्षामि सर्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं प्रोक्षामि ।

यो अर्वन्तं जिघांसति तमभ्यमीति वरुणः ॥५॥

१४८६-९१

अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा ऽपां मोदाय स्वाहा सवित्रे स्वाहा वायवे स्वाहा
विष्णवे स्वाहेन्द्राय स्वाहा बृहस्पतये स्वाहा मित्राय स्वाहा वरुणाय स्वाहा

॥६॥ १४९२-१५०१

हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहा ऽवक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा
प्रप्रोथाय स्वाहा गुन्धाय स्वाहा प्राताय स्वाहा निर्विष्टाय स्वाहो पविष्टाय स्वाहा
सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहा ऽऽसीनाय स्वाहा श्यानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा
जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृताय स्वाहा
संशानाय स्वाहो पस्थिताय स्वाहा ऽऽयनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा ॥७॥ १५०२-२५
यते स्वाहा धावते स्वाहो द्वावाय स्वाहो दुताय स्वाहा शूकाराय स्वाहा शूकृताय स्वाहा
निषण्णाय स्वाहो स्थिताय स्वाहा जवाय स्वाहा बलाय स्वाहा विवर्तमानाय स्वाहा
विबृत्ताय स्वाहा विधून्वानाय स्वाहा विधूताय स्वाहा शुश्रूषमाणाय स्वाहा
शृण्वते स्वाहेक्षमाणाय स्वाहेक्षिताय स्वाहा वीक्षिताय स्वाहा निमेषाय स्वाहा
यदत्ति तस्मै स्वाहा यत् पिबति तस्मै स्वाहा यन्मूत्रं करोति तस्मै स्वाहा कुर्वते स्वाहा
कृताय स्वाहा ॥८॥ १५१६-५०

काय स्वाहा कस्मै स्वाहा कतमस्मै स्वाहा स्वाहा ऽऽधिमाधीताय स्वाहा मनः
प्रजापतये स्वाहा चित्तं विज्ञाताया ऽदित्यै स्वाहा ऽदित्यै मह्यै स्वाहा ऽदित्यै
सुमृडीकायै स्वाहा सरस्वत्यै स्वाहा सरस्वत्यै पावकायै स्वाहा सरस्वत्यै बृहत्यै स्वाहा
पूष्णे स्वाहा पूष्णे प्रपथ्याय स्वाहा पूष्णे नरन्धिषाय स्वाहा त्वष्ट्रे स्वाहा
त्वष्ट्रे तुरीपाय स्वाहा त्वष्ट्रे पुरुषाय स्वाहा विष्णवे स्वाहा विष्णवे निभूयपाय स्वाहा
विष्णवे शिपिविष्टाय स्वाहा ॥२०॥ १५५१-७१

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्युः शूर इषव्यो ऽतिव्याधी महारथो
जायतां दोग्ध्रीं धेनुर्वोढानड्नाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः समेयो युवांस्य
यजमानस्य वीरो जायतां निक्वामेनिकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलंवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां
योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥२२॥ १५७२

१५७३-७९

१५८०-९९

१५९९-१६०३

१६०४-२१

१६७७-३३

१६३२-५४

၃၆၄၄-၆၆

असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विशुवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा
गुणपतये स्वाहा ऽभिभुवे स्वाहा ऽधिपतये स्वाहा शुषाय स्वाहा
संस्प्राय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लुचाय स्वाहा
दिवा पतयते स्वाहा ॥३०॥

१६६७-८०

मधवे स्वाहा माधवाय स्वाहा शुक्राय स्वाहा शुचये स्वाहा नभसे स्वाहा
नभस्याय स्वाहे षाय स्वाहो र्जाय स्वाहा सहसे स्वाहा सहस्याय स्वाहा
तपसे स्वाहा तपस्याय स्वाहा ऽहसस्पतये स्वाहा ॥३१॥

१६८१-९३

वाजाय स्वाहा प्रसवाय स्वाहा ऽपिजाय स्वाहा कर्तवे स्वाहा स्युः स्वाहा
मुधे स्वाहा व्यश्रुविने स्वाहा ऽन्त्याय स्वाहा ऽन्त्याय भौवनाय स्वाहा
भुवनस्य पतये स्वाहा ऽधिपतये स्वाहा प्रजापतये स्वाहा ॥३२॥

१६९४-१७०५

आयुर्यज्ञेन कल्पतां स्वाहा प्राणो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा ऽपानो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा
व्यानो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा दानो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा समानो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा
चक्षुर्यज्ञेन कल्पतां स्वाहा श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां स्वाहा वाग्यज्ञेन कल्पतां स्वाहा
मनो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा ऽऽत्मा यज्ञेन कल्पतां स्वाहा ब्रह्मा यज्ञेन कल्पतां स्वाहा
ज्योतिर्यज्ञेन कल्पतां स्वाहा सूर्यज्ञेन कल्पतां स्वाहा पूष्टं यज्ञेन कल्पतां स्वाहा
यज्ञो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा ॥३३॥

१७०६-११

एकस्मै स्वाहा द्वाभ्यां स्वाहा शताय स्वाहे कशताय स्वाहा व्युष्ट्यै स्वाहा
स्वर्गाय स्वाहा ॥३४॥

१७१२-२७

॥ २४९ ॥ (वा० य० २४।१-४०)

अथस्तूपरो गौमृगस्ते प्राजापत्याः कृष्णग्रीव आग्नेयो रराटे पुरस्तात्
सारस्वती मेघधस्ताद्वन्वो राश्विनावधोराभौ बाह्वोः सौमापौष्णः श्यामो नाभ्यां
सौर्ययामौ श्वेतश्च कृष्णश्च पार्श्वयोस्त्वाष्टौ लोमशसक्थौ सक्थ्यो वीयव्यः श्वेतः पुच्छ
इन्द्राय स्वपस्याय वेह द्वैष्णवो वामनः ॥१॥

१७२८-३७

रोहितो धूम्ररोहितः कर्कन्धुरोहितस्ते सौम्या बभ्रुररुणबभ्रुः शुक्रबभ्रुस्ते वारुणाः
शितिरन्ध्रोऽन्यतः शितिरन्ध्रः समन्तशितिरन्ध्रस्ते सावित्राः शितिबाहुरन्यतः शितिबाहुः
समन्तशितिबाहुस्ते बार्हस्पत्याः पृषती क्षुद्रपृषती स्थूलपृषती ता मैत्रावरुण्यः ॥२॥
शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये
कर्णा यामा अवलिता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ॥३॥

१७३८-४९

१७४३-४७

१६६७-८०

पृश्निस्त्रिश्चिन्तपृश्निरुध्वपृश्निस्ते मारुताः फल्गूलोहितोर्णी पलक्षी ताः सारस्वत्यः
सीहाकर्णः शुण्ठाकर्णोऽध्यालोहकर्णस्ते त्वाष्ट्राः कृष्णग्रीवः शितिकक्षोऽञ्जिसक्थस्त ऐन्द्रायाः
कृष्णाञ्जिरल्पाञ्जिर्महाञ्जिस्त उपस्याः ॥ ४ ॥

१७४८-५२

१६८१-९३

विश्वे वैश्वदेव्यो रोहिण्यस्त्र्यव्यो वाचे ऽविज्ञाता अदित्यै सरूपा धात्रे
वत्सतयो देवानां पत्नीभ्यः ॥ ५ ॥

१७५३-५७

१७४१-१७०५

कृष्णग्रीवा आग्नेयाः शितिभ्रवो वसूनाः रोहिता रुद्राणां
अवरोकिण आदित्यानां नभोरूपाः पार्जन्याः ॥ ६ ॥

१७५८-६२

१७०६-१७११

ऋषभो वामनस्त ऐन्द्रावैष्णवा उन्नतः शितिवाहुः शितिपृष्ठस्त ऐन्द्राबार्हस्पत्याः
रूपा वाजिनाः कल्मषा आग्निमारुताः श्यामाः पौष्णाः ॥ ७ ॥

१७६३-६७

१७१२-१७१७

ऐन्द्राया द्विरूपा अग्नीषोमीया वामना अनङ्गाह आग्नावैष्णवा वृशा मैत्रावरुण्यो
वत्सत एन्यो मैत्र्यः ॥ ८ ॥

१७६८-७२

१७२८-१७३३

कृष्णग्रीवा आग्नेया बभ्रवः सौम्याः श्वेता वायव्याः अविज्ञाता अदित्यै
धात्रे वत्सतयो देवानां पत्नीभ्यः ॥ ९ ॥

१७७३-७८

१७३८-१७४३

मौमा धुम्ना आन्तरिक्षा बृहन्तो दिव्याः शबला वैद्युताः सिध्मास्तारकाः ॥ १० ॥

१७७९-८३

१७४३-१७४८

वसन्तायालभते श्वेतान् ग्रीष्माय कृष्णान् वर्षाभ्यो ऽरुणाञ्छरदे
हेमन्ताय पिशङ्गाञ्छिशिराय ॥ ११ ॥

१७८४-८९

१७४८-१७५३

वयो गायत्र्यै पञ्चावयस्त्रिष्टुभे दित्यवाहो जगत्यै त्रिवत्सा अनुष्टुभे
वाहे उष्णिहे ॥ १२ ॥

१८९०-९४

१७४३-१७४८

विराज उक्षाणो बृहत्या ऋषभाः ककुभे ऽनङ्गाहः पङ्क्त्यै
वोऽतिच्छन्दसे ॥ १३ ॥

१९९५-९९

१७४३-१७४८

कृष्णग्रीवा आग्नेया बभ्रवः सौम्या उपध्वस्ताः सावित्रा वत्सतयः सारस्वत्यः
पौष्णाः पृश्नयो मारुता बहुरूपा वैश्वदेवा वृशा द्यावापृथिवीयाः ॥ १४ ॥

१८००-१८०७

१५ दे० [विश्वे देवाः]

उक्ताः सञ्चरा एतां ऐन्द्राग्राः कृष्णा वारुणाः पृश्नयो मारुताः कायास्तूपराः ॥ १५ ॥

१८०८-१८१२

अग्रयेऽनीकवते प्रथमजानालभते मरुद्भ्यः सान्तपनेभ्यः सवात्स्यान् मरुद्भ्यो
गृहमेधिभ्यो वर्षिकहान् मरुद्भ्यः क्रीडिभ्यः ससृष्टान् मरुद्भ्यः स्वतवद्भ्यो
ऽनुसृष्टान् ॥ १६ ॥

१८१३-१७

उक्ताः सञ्चरा एतां ऐन्द्राग्राः प्राशुङ्गा माहेन्द्रा
बहुरुपा वैश्वकर्मणाः ॥ १७ ॥

१८१८-२१

धूम्रा बभ्रुनीकाशाः पितृणां सोमवतां बभ्रवो धूम्रनीकाशाः पितृणां बर्हिषदां
कृष्णा बभ्रुनीकाशाः पितृणामग्निष्वात्तानां
कृष्णाः पृषन्तस्त्रैयम्बकाः ॥ १८ ॥

१८२२-२५

उक्ताः सञ्चरा एताः शुनासीरीयाः श्वेता वायव्याः
श्वेताः सौर्याः ॥ १९ ॥

१८२६-२९

वसन्ताय कपिञ्जलानालभते ग्रीष्माय कलविङ्कान्
वर्षाभ्यस्तित्तिरीञ्छरदे वर्तिका हेमन्ताय ककरा
ञ्छिशिराय विककरान् ॥ २० ॥

१८३०-३५

समुद्राय शिशुमारानालभते पर्जन्याय मण्डूकान् नद्भ्यो मत्स्यान् मित्राय कुलीपयान्
वरुणाय नाकान् ॥ २१ ॥

१८३६-४०

सोमाय हंसानालभते वायवे बलाका इन्द्राग्निभ्यां कुश्वान् मित्राय मद्गून्
वरुणाय चक्रवाकान् ॥ २२ ॥

१८४१-४५

अग्रये कुटरुनालभते वनस्पतिभ्य उलूका नग्नीषोमाभ्यां चाषा नश्विभ्यां मयूरां
मित्रावरुणाभ्यां कुपोतान् ॥ २३ ॥

१८४६-५०

सोमाय लवानालभते त्वष्ट्रे कौलीकान् गोषादीर्देवानां पत्नीभ्यः कुलीकां देवजामिभ्यो
ऽग्रये गृहपतये पारुष्णान् ॥ २४ ॥

१८५१-५५

अह्वे पारावतानालभते रात्र्यै सीचापू रंहोरात्रयोः सन्धिभ्यो जतू मर्सेभ्यो दात्यौहा
न्तसैवत्सराय महतः सुपर्णान् ॥ २५ ॥

१८५६-६१

१८०८-१९२२]

१५ ॥

८-१८१२

८१३-१७

८१८-२१

८२२-२५

८२६-२९

८३०-३५

८३६-४०

८४१-४५

८४६-५०

८५१-५५

८५६-५९

भूम्या आखूनालभते ऽन्तरिक्षाय पाङ्क्त्रान् दिवे कशान् दिग्भ्यो नकुलान्
 भुवनवान्तरदिशाभ्यः ॥ २६ ॥

१८६२-६६

भूम्य ऋश्यानालभते रुद्रेभ्यो रुरुनादित्येभ्यो न्यङ्कून् विश्वेभ्यो देवेभ्यः पृषता-
 न्त्साध्येभ्यः कुलुङ्गान् ॥ २७ ॥

१८६७-७१

मित्राणाम् परस्वत आलभते मित्राय गौरान् वरुणाय महिषान्
 बृहस्पतये गवयान् स्त्वष्ट्र उष्ट्रान् ॥ २८ ॥

१८७२-७६

प्रापतये पुरुषान् हस्तिन आलभते वाचे प्लुषीं श्वक्षुषे मशका-
 न्छोत्राय भृङ्गाः ॥ २९ ॥

१८७७-८०

प्रापतये च वायवे च गोमृगो वरुणायारण्यो मेषो
 न्याय कृणो मनुष्यराजाय मर्कटः शार्दूलाय रोहि-
 ष्यभय गवयी
 विश्वेभ्यो नाय वतिक्रा नीलङ्गोः कर्मिः समुद्राय शिशुमारो
 विमवते हस्ती ॥ ३० ॥

१८८१-९०

पुः प्राजापत्य उलो हलिक्ष्णो वृषदुः शस्ते धात्रे दिशां कङ्को
 रुद्राऽऽग्नेयी कलविङ्को लोहिताहिः पुंकरसादस्ते त्वाष्ट्रा वाचे क्रुञ्चः ॥ ३१ ॥

१८९१-९८

गोमाय कुलुङ्ग आरण्योऽजो नकुलः शका ते पौष्णाः क्रोष्टा मायो-
 रिन्द्रस्य गौरमृगः
 न्यङ्कुः कक्कटस्तेऽनुमत्यै प्रतिश्रुतायै चक्रवाकः ॥ ३२ ॥

१८९९-१९०४

गौरी वलाका शार्गः सृजयः श्याण्डकस्ते मैत्राः सरस्वत्यै शारिः पुरुषवाक्
 शविद् भौमी शार्दूलो वृकः पृदाकुस्ते मन्यवे
 सरस्वते शुकः पुरुषवाक् ॥ ३३ ॥

१९०५-१९१०

पूर्णः पार्जन्य आतिर्विहसो दर्विदा ते वायवे बृहस्पतये वाचस्पतये पैङ्गराजो
 लज्ज आन्तरिक्षः प्लवो मधुर्मत्स्यस्ते नदीपतये
 गोमापृथिवीयः कूर्मः ॥ ३४ ॥

१९११-१९१६

गोमागश्चन्द्रमसो गोधा कालका दार्वाघाटस्ते वनस्पतीनां
 शक्रवाकः सावित्रो हंसो वातस्य नाक्रो मकरः कुलीपयस्तेऽकूपारस्य
 शल्यकः ॥ ३५ ॥

१९१७-२२

एण्यहो मण्डूको मूर्षिका तित्तिरिस्ते सर्पाणां लोपाश आश्विनः कृष्णो रात्र्या
ऋक्षो जतूः सुषिलीका त इतरजनानां जहका वैष्णवी ॥ ३६ ॥

१९२३-२८

अन्यवापोऽर्धमासानां मृशयो मयूरः सुपर्णस्ते गन्धर्वाणां मपामुद्रो मासां कश्यपो
रोहित कुण्डुणाचीं गोलत्तिका तेऽप्सरसां मृत्यवेऽसितः ॥ ३७ ॥

१९२९-३४

वर्षाहूर्कतूनां माखुः कशो मान्थालस्ते पितृणां बलायाजगरो वसनां कपिञ्जलः
कपोत उलूकः शशस्ते निर्ऋत्यै वरुणायारण्यो मेषः ॥ ३८ ॥

१९३५-४०

श्वित्र आदित्यानां मुष्टो घृणीवान् वार्धनसस्ते मत्या अरण्याय सूमरो रुरु रौद्रः
क्वयिः कुटुरुर्दात्यौहस्ते वाजिनां कामाय पिकः ॥ ३९ ॥

१९४१-४६

खड्गो वैश्वदेवः श्वा कृष्णः कर्णो गर्दभस्तरक्षुस्ते रक्षसा मिन्द्राय सुकरः

सिंहो मारुतः कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते शरव्यायै विश्वेषां देवानां पृषतः ॥ ४० ॥

१९४७-५२

॥ २५० ॥ (वा० य० २५।१-९)

शादै दुद्धि रवकां दन्तमूलैर्मृदं बस्वैस्तेगान् दष्टाभ्यां सरस्वत्या अग्रजिह्वं
जिह्वाया उत्सादमवक्रन्देन तालु वाजं हनुभ्यामप आस्येन वृषणमाण्डाभ्यां
मादित्यां शमश्रुभिः पन्थानं भ्रूभ्यां द्यावापृथिवी वर्तोभ्यां विद्युतं कनीनकाभ्यां
शुक्लाय स्वाहा कृष्णाय स्वाहा पार्याणि पक्षमाण्यवार्या इक्षवोऽवार्याणि पक्षमाणि
पार्या इक्षवः ॥ १ ॥

१९५३-७२

वातं प्राणेनाऽपानेन नासिके उपयामधरेणौष्ठेन सदुत्तरेण प्रकाशेनान्तरं
मनूकाशेन बाह्यं निवेष्ट्यं मूर्ध्ना स्तनयितुं निर्वाधेनाऽशनिं मस्तिष्केण
विद्युतं कनीनकाभ्यां कर्णाभ्यां श्रोत्रं श्रोत्राभ्यां कर्णौ तेदुनीमधरकण्ठेनाऽपः
शुष्ककण्ठेन चित्तं मन्याभि रदिति शीर्ष्णा निर्ऋतिं निर्जर्जल्येन शीर्ष्णा
सैक्रोशैः प्राणान् रेष्माणं स्तुपेन ॥ २ ॥

१९७३-९०

मशकान् केशैरिन्द्रं स्वपसा वहैन बृहस्पतिं शकुनिसादेन कूर्मञ्छफै

राक्रमणं स्थूराभ्यामृक्षलाभिः कपिञ्जलाञ्जवं जङ्घाभ्यामध्वानं बाहुभ्यां
जाम्बीलेनारण्यमग्निमतिरुग्भ्यां पूषणं दोभ्यामश्विनावसाभ्यां रुद्रं रोराभ्याम् ॥ ३ ॥

१९९१-२००१

१९२३-२०१४]

वे देवाः ।

१९२३-२८

१९२९-३४

१९३५-४०

१९४१-४६

४० ॥

१९४७-५२

५८

णि

१९५३-७२

१९७३-९०

॥३॥

१९९१-२००३

१० विश्व देवाः ।

पक्षति—वायोर्निपक्षति—रिन्द्रस्य तृतीया सोमस्य चतुर्थ्य—दित्यै पञ्चमी—
रुद्रायै षष्ठी मरुतां सप्तमी बृहस्पतेरष्टम्य—र्यग्नो नवमी धातुर्दशमी—
न्द्रस्यैकादशी वरुणस्य द्वादशी यमस्य त्रयोदशी ॥ ४ ॥

२००४-२०१६

रुद्राग्न्योः पक्षतिः सरस्वत्यै निपक्षति—मित्रस्य तृतीया
चतुर्थी निर्ऋत्यै पञ्चम्यु—ग्रीषोमयोः षष्ठी सर्पाणां सप्तमी
र्यग्नो नवमी त्वष्टुर्दशमी—न्द्रस्यैकादशी
वरुणस्य द्वादशी यमस्य त्रयोदशी द्यावापृथिव्योर्दक्षिणं पार्श्वं
विषां देवानामुत्तरम् ॥ ५ ॥

२०१७-२१

मरुतां रुद्रा विष्वेषां देवानां प्रथमा कीकसा रुद्राणां द्वितीया
दित्यानां तृतीया वायोः पुच्छ—मग्रीषोमयोर्भासदौ
श्रोणिभ्या—मिन्द्राबृहस्पती ऊरुभ्यां
वरुणावल्गाभ्या—माक्रमणं स्थूराभ्यां बलं कुष्टाभ्याम् ॥ ६ ॥

२०२२-४२

वनिष्ठुना ऽन्धाहीन्त्स्थूलगुदया सर्पान् गुदाभि—विहृतं आन्त्रै—रपो वस्तिना
माण्डाभ्यां वाजिनं शेपेन प्रजां रेतसा चापान् पित्तेन प्रदरान् पायुना
माच्छकपिण्डैः ॥ ७ ॥

२०४३-५३

क्रोडो ऽदित्यै पाजस्यं दिशां जत्रवो ऽदित्यै भुस—
मूतान् हृदयौपशेना—ऽन्तरिक्षं पुरीतता नभ उदर्येण चक्रवाकौ मतस्नाभ्यां
वृक्काभ्यां गिरीन् प्लाशिभि—रूपलान् प्लीहा
कान् क्लोमभि—ग्लौभिर्गुल्मान् हिराभिः स्रवन्ती—हृदान् कुक्षिभ्यां
मुदरेण वैश्वानरं भस्मेना ॥ ८ ॥

२०५४-७०

नभ्यां घृतं रसेना—ऽपो यूष्णा मरीचिर्विष्टुड्भि—नीहारमूष्मणा
वसया मुष्वा अश्रुभि—हृदुनीर्दूषीकाभि—रस्ना रक्षांसि चित्राण्यङ्गै—
निषत्राणि रूपेण पृथिवीं त्वचा जुम्बकाय स्वाहा ॥ ९ ॥

२०७१-८३

॥ २५१ ॥ (वा० य० २९।५८-६०)

कृष्णग्रीवः सारस्वती मेघी बभ्रुः सौम्यः पौष्णः श्यामः शित्तिपृष्ठो बार्हस्पत्यः
वैश्वदेव ऐन्द्रोऽरुणो मारुतः कल्मष ऐन्द्राग्रः संहितो
सावित्रो वारुणः कृष्ण एकशितिपात् पेतवः ॥ ५८ ॥

२०८४-९४

अग्रयेऽनीकवते रोहिताञ्जिरनद्वा नधोरांमौ सावित्रौ पौष्णौ रजतनांभी
वैश्वदेवौ पिशङ्गौ तूपरौ मारुतः कल्माष आग्नेयः कृष्णोऽजः सारस्वती मेधी
वारुणः पेतवः ॥५९॥

२०९५-२१००

अग्रये गायत्राय त्रिवृते रथन्तरायाष्टाकपाल इन्द्राय त्रैष्टुभाय पञ्चदशाय
बाहतायैकादशकपालो विश्वेभ्यो देवेभ्यो जागतेभ्यः सप्तदशेभ्यो वैरूपेभ्यो द्वादशकपालो
मित्रावरुणाभ्यामानुष्टुभाभ्यामेकविंशाभ्यां वैराजाभ्यां पयस्या बृहस्पतये पाङ्क्ताय
त्रिणवायं शाक्वराय चरुः सवित्र औष्णिहाय त्रयस्त्रिंशाय रैवताय द्वादशकपालः
ग्राजापत्यश्चरु रदित्यै विष्णुपत्न्यै चरु रग्रये वैश्वानराय द्वादशकपालोऽनुमत्या
अष्टाकपालः ॥६०॥

२१०३-२११२

॥ २५२ ॥ (वा० य० ३०।५-२२)

ब्रह्मणे ब्राह्मणं क्षत्राय राजन्यं मरुद्भ्यो वैश्यं तपसे शूद्रं तमसे तस्करं
नारकाय वीरहणं पाप्मने क्लीब माक्रयाया अयोगं कामाय पुंश्चल
मतिक्रुष्टाय मागधम् ॥५॥

२११३-२२

नृत्ताय सूतं गीताय शैलूपं धर्माय सभाचरं नरिष्ठायै भीमलं नर्माय रेभः
हसाय कारि मानन्दाय स्त्रीपुखं प्रमदे कुमारीपुत्रं मेधायै रथकारं
धैर्याय तक्षानम् ॥६॥

२१२३-२२

तपसे कौलालं मायायै कर्मारः रूपाय माणिकारः शुभे वपः शरव्याया ह्युकारः
हेत्यै धनुष्कारं कर्मणे ज्याकारं दिष्टाय रज्जुसर्जं मृत्यवे मृगयु
मन्तकाय श्वनिनम् ॥७॥

२१३३-४२

नदीभ्यः पौञ्जिष्ठ मृक्षीकाभ्यो नैषादं पुरुषव्याघ्राय दुर्मदं
गन्धर्वाप्सरोभ्यो व्रात्यं प्रयुग्भ्य उन्मत्तः सर्पदेवजनेभ्योऽप्रतिपद
मयेभ्यः कितव मीर्यताया अकितवं पिशाचेभ्यो विदलकारीं
यातुधानेभ्यः कण्टकीकारीम् ॥८॥

२१४३-५२

सन्धये जारं गेहायोपपति मात्यै परिवित्तं निर्ऋत्यै परिविविदान मराध्या एदिषिषुःपति
निष्कृत्यै पेशस्कारी संज्ञानाय स्मरकारी प्रकामोद्यायोपसदं
वर्णायानुरुधं वलायोपदाम् ॥९॥

२१५३-६२

१५-११०१

लो

०३-११११

१११३-११

११२३-३१

वृकारः

११३३-४१

११४३-५१

विषुःपति

११५३-६१

विश्वे देवाः । कुब्जं प्रमुदे वामनं द्वाभ्यः सामः स्वप्नायान्धमधर्माय वधिरं
वित्राय भिषजं प्रज्ञानाय नक्षत्रदुर्शमाशिक्षायै प्रश्निनमुपशिक्षाया अभिप्रश्निनं
विदायै प्रश्नविवाकम् ॥१०॥

२१६३-७२

मैभ्यो हस्तिपं जवायाश्चपं पुष्ट्यै गोपालं वीर्यायाविपालं तेजसेऽजपालं
मिरायै कीनाशं कीलालाय सुराकारं भद्राय गृहपः श्रेयसे वित्तध-
माध्यक्ष्यायानुक्षत्तारम् ॥११॥

२१७३-८२

दावाहारं प्रभाया अग्न्येधं ब्रध्नस्य विष्टपायाभिपेत्तारं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारं
लोकाय पेक्षितारं मनुष्यलोकाय प्रकरितारः सर्वेभ्यो लोकेभ्य उपसेत्तार-
मवक्रत्यै वधायोपमन्थितारं मेधाय वासःपल्पूलीं प्रक्रामाय रजयित्रीम् ॥१२॥

२१८३-९२

स्तेनहृदयं वैरहत्याय पिशुनं विविक्त्यै क्षत्तारमौषद्रष्ट्रायानुक्षत्तारं
पायानुचरं भुम्ने परिष्कन्दं प्रियाय प्रियवादिनमरिष्ट्या अश्वसादः
लोकाय भागदुधं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारम् ॥१३॥

२१९३-२२०२

यस्येयस्तापं क्रोधाय निसरं योगाय योक्तारः शोकायाभिसर्तारं क्षेमाय विमोक्तारं
मुकुलनिकुलेभ्यस्त्रिष्ठिनं वपुषे मानस्कृतः शीलायाञ्जनीकारी निर्ऋत्यै कोशकारीं
पायाम् ॥१४॥

२२०३-१२

यमसुमथर्वभ्योऽवतोकाः संवत्सराय पर्यायिणीं परिवत्सरायाविजाता-
मिदावत्सरायातीत्वरीमिद्वत्सरायातिष्कद्वरीं वत्सराय विजर्जराः संवत्सराय पलिकनी-
मभ्योऽजिनसन्धः साध्येभ्यश्चर्ममम् ॥१५॥

२२१३-२२२२

मैभ्यो धैवरमुपस्थावराभ्यो दाशं वैशन्ताभ्यो बैन्दं नड्वलाभ्यः शौष्कलं
मागारमवाराय केवर्ती तीर्थेभ्य आन्दं विषमेभ्यो मैनालः स्वनेभ्यः पर्णिकं
मैभ्यः किरातः सानुभ्यो जम्भकं पर्वतेभ्यः किम्पूरुषम्

२२२३-३४

सुसायै पौलकसं वर्णीय हिरण्यकारं तुलायै वाणिजं पश्चादुषाय ग्लाविनं
मैभ्यो भूतेभ्यः सिध्मलं भूत्यै जागरणमभूत्यै स्वपनमात्यै जनवादिनं
मैभ्यो अपगल्भः संश्रारय प्रच्छिदम् ॥१७॥

२२३५-४४

अक्षराजाय कितवं कृतायाऽऽदिनवदुर्षं त्रेतायै कल्पिनं द्वापरायाधिकल्पिनं—
 —मास्कन्दाय सभास्थाणुं मृत्यवे गोव्यच्छ—मन्तकाय गोघातं क्षुधे यो गां
 विकृन्तन्तं भिक्षमाण उपतिष्ठति दुष्कृताय चरकाचार्यं पाप्मने सैलगम् ॥१८॥ २२४५-५४
 प्रतिश्रुत्काया अर्तनं घोषाय भष—मन्ताय बहुवादिनं—मनन्ताय सूकः शब्दायाडम्बराघातं
 महसे वीणावादं क्रोशाय तूणवध्म—मवरस्पराय शङ्खध्मं वनाय वनप—
 —मन्यतोरण्याय दावपम् ॥१९॥ २२५५-६४

नर्माय पुँश्चलः हसाय कारिं यादसे शाबल्यां ग्रामयुं गणकमभिकोशकं तान् महसे
 वीणावादं पाणिघ्नं तूणवध्मं तान् नृत्तायाऽऽनन्दाय तलवम् ॥२०॥ २२६५-७०
 अग्नये पीवानं पृथिव्यै पीठसर्पिणं वायवे चाण्डाल—मन्तरिक्षाय वःशनुतिनं
 दिवे खलतिः सूर्याय हर्यक्षं नक्षत्रेभ्यः किमिरं चन्द्रमसे किलास—महै शुक्रं पिङ्गाक्षः
 रात्र्यै कृष्णं पिङ्गाक्षम् ॥२१॥ २२७१-८०
 अथैतानष्टौ विरूपाना लभतेऽतिदीर्घं चातिह्रस्वं चातिस्थूलं चातिकृशं चातिशुक्रं
 चातिकृष्णं चातिकुलवं चातिलोमशं च । अशूद्रा अब्राह्मणास्ते प्राजापत्याः ।
 मागधः पुँश्चली कितवः कलीबोऽशूद्रा अब्राह्मणास्ते प्राजापत्याः ॥२२॥ २२८१-८२

॥ २५३ ॥ (वा० य० ३९।१-२, ११-१३)

स्वाहा प्राणेभ्यः सार्धपतिकेभ्यः । पृथिव्यै स्वाहा अग्नये स्वाहा अन्तरिक्षाय स्वाहा
 वायवे स्वाहा । दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा ॥१॥ २२८३-८९
 दिग्भ्यः स्वाहा चन्द्राय स्वाहा नक्षत्रेभ्यः स्वाहा इन्द्राय स्वाहा वरुणाय स्वाहा ।
 नाभ्यै स्वाहा पूताय स्वाहा ॥२॥ २२९०-९६
 आयासाय स्वाहा प्रायासाय स्वाहा संयासाय स्वाहा वियासाय स्वाहा द्यासाय स्वाहा ।
 शुचे स्वाहा शोचते स्वाहा शोचमानाय स्वाहा शोकाय स्वाहा ॥१॥ २२९७-२३०५
 तपसे स्वाहा तप्यते स्वाहा तप्यमानाय स्वाहा तप्ताय स्वाहा घर्माय स्वाहा ।
 निष्कृत्यै स्वाहा प्रायश्चित्त्यै स्वाहा भेषजाय स्वाहा ॥१॥ २३०६-१३
 यमाय स्वाहा अन्तकाय स्वाहा मृत्यवे स्वाहा । ब्रह्मणे स्वाहा ब्रह्महत्यायै स्वाहा
 विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा ॥१॥ २३१४-१०

विश्वे देवाः - पुनरुक्त - मन्त्रभागाः ।

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

विश्वे देवाः ।

२२४५-५४

म्वराघातं

२२५५-६४

इसे

२२६५-७०

क्षाक्षः

२२७१-८०

२२८१-८२

हा

२२८३-८९

हा

२२९०-९६

य स्वाहा ।

२२९७-२३०५

।

२३०६-१३

हा

२३१४-१०

[१] १।३।७ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । विश्वे देवाः)

विश्वे देवास आ गत ।

[१] १।४।१३ (गृत्समदः शौनकः । विश्वे देवाः)

[४] ४।५।२।७ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)

[३] १।१४।१ (मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः)

विश्वेभिः सोमपीतये ।

[इन्द्रः ४१२] ८।२।१।४ (सोमरिः काण्वः । इन्द्रः)

[१] १।१४।२ (मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः)

इन्द्रवायू बृहस्पति । आदित्यान् मारुतं गणम् ।

[८१९] १०।१४।१४ (अग्निस्तापसः । विश्वे देवाः)

इन्द्रवायू बृहस्पति ।

[अग्निः १०६५] ६।१६।२४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)

आदित्यान् मारुतं गणम् ।

[१] १।१४।५ (मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः)

वृक्तबर्हिषः ।

हविष्मन्तो अरंकृतः ।

[अश्विनौ ४००] ८।५।१७ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)

वृक्तबर्हिषो हविष्मन्तो— ।

[१] १।१४।६ (मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः)

वहन्ति प्रयांसि वीतये ।

आ देवान्सोमपीतये ।

[अग्निः १०८५] ६।१६।४४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)

वहाभि प्रयांसि वीतये ।

आ देवान्सोमपीतये ।

[१] १।१४।११ (मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः)

त्वं होता मनुर्हितो ।

सेमं नो अश्वरं यज ।

१६ दै० [विश्वे देवाः]

(अग्निः १०५०) ६।१६।९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)

त्वं ।

(अग्निः २८) १।२६।१ (शुनःशेष आजीगर्तिः । अग्निः)

सेमं ।

[१५] १।१४।१२ (मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः)

युक्ष्वा ह्यरुषी रथे हरितो देव रोहितः ।

(मरुतः २८०) ५।५६।६ (श्यावाश्व आत्रेयः । मरुतः)

युद्धं ह्यरुषी रथे युद्धं रथेषु रोहितः ।

[१६] १।२३।१० (मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः)

मरुतः सोमपीतये ।

(मरुतः ३९७) ८।९४।३ = (मरुतः ४०३) ८।९४।९

(बिन्दुः पूतदक्षो वा आङ्गिरसः । मरुतः)

[२५] १।८९।७ (गोतमो राह्वगणः । विश्वे देवाः)

विश्वे नो देवा अवसा गमन्तिह ।

(५२२) १०।३५।१३ (लुशो धानाकः । विश्वे देवाः)

विश्वे नो देवा अवसा गमन्तु ।

[३८-५५] १।१०५।१-१८ विसं मे अस्य रोदक्षी ।

[४२] १।१०५।५ (त्रित आप्यः, कुत्स आङ्गिरसो वा विश्वे देवाः)

त्रिष्वारोचने दिवः ।

(इन्द्रः २३०६) ८।६९।३ (प्रियमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)

[४५] १।१०५।८ (त्रित आप्यः, कुत्स आङ्गिरसो वा विश्वे देवाः)

सं मा तपन्त्यमितः सपत्नीरिव पशवः ।

मूषो न शिक्षा व्यदन्ति माभ्यः स्तोतारं ते शतक्रतो ॥

(इन्द्रः २५३९) १०।३३।२ (कवष ऐल्लषः । इन्द्रः)

सं मा ।

(इन्द्रः २५४०) १०।३३।३ (कवष ऐल्लषः । इन्द्रः)

मूषो न ।

[५०] १।१०५।१३ (त्रित आप्त्यः, कुत्स आङ्गिरसो वा । विश्वे देवाः)
देवेवस्थाप्यम् ।

(अश्विनौ ४६७) ८।१०।३ (प्रगाथो घौरः काण्वः । अश्विनौ)
देवेवस्थाप्यम् ।

[५१] १।१०५।१४ (त्रित आप्त्यः, कुत्स आङ्गिरसो वा ।
विश्वे देवाः)

देवाँ ।

अग्निर्हव्या सुपूदति देवो देवेषु मेघिरः ।

(अग्निः १९२८) १।१४२।११ (दीर्घतमा औचथ्यः ।
[आप्रिसूक्तं] = वनस्पतिः)

अवसृजन्नुप त्मना देवान् यक्षि वनस्पते ।

अग्निर्हव्या सुपूदति देवो देवेषु मेघिरः ।

(अग्निः १९४०) १।१८८।१० (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः ।
[आप्रिसूक्तं] = वनस्पतिः)

उप त्मन्या वनस्पते । अग्निर्हव्यानि सिध्वदत् ।

[५३] १।१०५।१६ (त्रित आप्त्यः, कुत्स आङ्गिरसो वा ।
विश्वे देवाः)

दिवि प्रवाच्यं कृतः ।

(इन्द्रः १२२६) २।२२।४ (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)
दिवि प्रवाच्यं कृतम् ।

[५७-६२] १।१०६।१-६ (कुत्स आङ्गिरसः । विश्वे देवाः)
रथं न दुर्गाद्वसवः सुदानवो विश्वस्मान्नो अंहसो निष्पिपर्तन ।

[५८] १।१०६।२ (कुत्स आङ्गिरसः । विश्वे देवाः)
त आदित्या आ गता सर्वतातये ।

(५१०) १।०।३५।११ (लुशो धानाकः । विश्वे देवाः)

[६३] १।१०६।७ (कुत्स आङ्गिरसः । विश्वे देवाः)

देवैर्नो देव्यदितिर्नि पातु देवस्त्राता त्रायतामप्रयुच्छन् ।

(२३५) ४।५५।७ (वामदेवो गौतमः । विश्वे देवाः)

[६५] १।१०७।२ उप नो देवा अवसा गमन्तु ।

(५९२) १।०।३५।१३ विश्वे नो देवा अवसा गमन्तु ।

[६५] १।१०७।२ (कुत्स आङ्गिरसः । विश्वे देवाः)

आदित्यैर्नो अदितिः शर्म यंसत् ।

(अदितिः ० ४८६) ४।५४।६ (वामदेवो गौतमः । सविता)

(७०९) १।०।६६।३ (वसुकर्णो वासुकः । विश्वे देवाः)

... .. शर्म यच्छतु ।

[६६] १।१०७।३ (कुत्स आङ्गिरसः । विश्वे देवाः)

तच्च तदर्थमा तत् सविता चनो धात् ।

(३७६) ६।४९।१४ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)

तन्नो तत् पर्वतस्तत् सविता चनो धात् ।

[७१] १।१२१।५ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । विश्वे देवाः
इन्द्रो वा)

राधः सुरेतस्तुरणे ।

शुचि यत्ते रेक्ण आयजन्त सचर्दुधायाः पय उस्त्रियायाः ।

(६३७) १।०।६१।११ (नामानेदिष्टो मानवः । विश्वे देवाः)

राधो न रेत ऋतामित् तुश्यन् ।

शुचि यत्ते रेक्ण आयजन्त ... ।

[७९] १।१२१।१३ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । विश्वे देवाः
इन्द्रो वा)

भरच्चक्रमेतशो नायमिन्द्र ।

(इन्द्रः १७०२) ५।३१।११ (अवस्युरात्रेयः । इन्द्रः)

भरच्चक्रमेतशः सं रिणाति ।

[८४, ९५] १।१२२।३, १४ तन्नो विश्वे वरिवस्यन्तु देवाः ।

[८७] १।१२२।६ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः ।
विश्वे देवाः)

श्रुतं मे मित्रावरुणा हवेमा ।

(अदितिः ० ३२९) ७।६१।५ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः ।
मित्रावरुणौ)

[९२] १।१२२।११ श्रोता राजानो अमृतस्य मन्द्राः ।

(७३९) १।०।९३।४ (तान्वः पार्थ्यः । विश्वे देवाः)

ते वा राजानो ... ।

[९७] १।१२९।१ धीतयो देवाँ अच्छा न धीतयः ।

(इन्द्रः १०३२) १।१३२।५ (परुच्छेपो दैवोदासिः । इन्द्रः)

[१०१] १।१६४।३ (दीर्घतमा औचथ्यः । विश्वे देवाः)

सस स्वसारो अभि सं नवन्ते ।

१।०।७।३ (बृहस्पतिराङ्गिरसः । ज्ञानम्)

तां सस रेभा अभि सं नवन्ते ।

[११२] १।१६४।२१ इनो विश्वस्य भुवनस्य गोपाः ।

(अदितिः ० २४) २।२७।४ (कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो
वा । आदित्यः)

देवा विश्वस्य ... ।

[१२८, १३६] १।१६४।३०, ३८ अमर्त्यो मर्त्येना सयोनिः ।

- [१२९] १।१६४।३१ (दीर्घतमा औचथ्यः । विश्वे देवाः)
= १०।१७७।३ (पतङ्गः प्राजापत्यः । मायाभेदः)
अपश्यं गोपामनिपद्यमानमा च परा च पथिभिश्चरन्तम् ।
स सधोचीः स विपूचीर्वसान आ वरीवर्ति भुवनेष्वन्तः ॥
[१३८] १।१६४।४० अथो वयं भगवन्तः स्याम ।
(अदितिः ० ७९६) ७।४१।५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । भगः)
तेन वयं ।
[१४१] १।१८६।२ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । विश्वे देवाः)
मित्रो अर्यमा वरुणः सजोषाः ।

- (अदितिः ० ३१२) ७।६०।४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ।
मित्रावरुणौ)
[१४२] १।१८६।३ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । विश्वे देवाः)
प्रेष्ठं वो अतिथिं गृणीषेऽग्निं ।
(अग्निः १४५४) ८।८४।१ (उशाना काव्यः । अग्निः)
... .. अतिथिं स्तुषे । अग्निं ... ।
[१४३] १।१८६।४ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । विश्वे देवाः)
उषासानक्ता सुदुषेव धेनुः ।
(अग्निः १९७९) ७।२।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ।
[आप्रीसूक्तं] = उषासानक्ता)

ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

- [१५२] २।२९।२ (कूर्मो गार्त्समदो गृत्समदो वा । विश्वे देवाः)
यूयं द्वेषांसि सनुतयुयोत ।
(७५९) १०।१००।९ (दुवस्युर्वान्दनः । विश्वे देवाः)
विश्वा द्वेषांसि सनुतयुयोत ।
[१५७] २।२९।७ = (अदितिः ० ३७) २।२७।१७ (कूर्मो
गार्त्समदो गृत्समदो वा । आदित्यः)
माहं मघोनो वरुण प्रियस्य भूरिदाम्न आविदं शूनमापेः ।
मा रायो राजन्सुयमादव स्यां बृहद्वदेम विदये सुवीराः ॥
[१५८] २।३१।१ (गृत्समदः शौनकः । विश्वे देवाः)
आदित्यै रुद्रैर्वसुभिः सचाभुवा ।
(अश्विनौ ५०९) ८।३५।२ (श्यावाश्व आत्रेयः । अश्विनौ)
[१६५] २।४१।३ (गृत्समदः [आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्वाद्]
भार्गवः शौनकः । विश्वे देवाः)
विश्वे देवास आ गत ।

- (१) १।३।७ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । विश्वे देवाः)
(४१५) ६।५२।७ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
[१६५] २।४१।३ (गृत्समदः शौनकः । विश्वे देवाः)
(४५२) ६।५२।७ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
विश्वे देवास आ गत शृणुता म हं हवम् ।
एदं बर्हिर्नि षीदत ॥
(अश्विनौ ५४९) ८।७३।१० (गोपवन आत्रेयः सप्तव-
ध्रिर्वा । अश्विनौ)
शृणुतं म हं हवम् ।
[१६७] २।४१।१५ इन्द्रज्येष्ठा मरुद्गणा देवासः पूवरातयः ।
विश्वे मम श्रुता हवम् ॥
(इन्द्रः ३२४८) १।२३।८ (मेधातिथिः काण्वः ।
मरुत्वानिन्द्रः)

ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

- [१६९] ३।२०।५ (गाथी कौशिकः । विश्वे देवाः)
दधिक्राममिमुषसं च देवीं हुवे ॥
(७६३) १०।१०१।१ (बुधः सौम्यः । विश्वे देवाः)
ऋत्विग् वा)
दधिक्राममिमुषसं च देवीं हुये ।
[१७०] ३।५४।१ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः, प्रजापतिर्वाच्यो वा ।
विश्वे देवाः)
शृणोतु नो दम्येभिरनीकैः ।

- (अग्निः ४६१) ३।१।१५ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
रक्षा च नो दम्येभिरनीकैः ।
[१७२] ३।५४।३ सपर्यामि प्रयसा यामि रत्नम् ।
(अग्निः ११६) १।५८।७ (नोधा गौतमः । अग्निः)
[१७४] ३।५४।५ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः, प्रजापतिर्वाच्यो वा ।
विश्वे देवाः)
को अद्धा वेद क हह प्र वोचद् ।
परेषु या गुह्येषु व्रतेषु ॥

(१२४)

१०।१२९।६ (प्रजापतिः परमेष्ठी । भाववृत्तम्)
को अद्वा ... ।

(७८३) १०।११४।२ (सध्रिवैरूपो धर्मो वा तापसः ।
विश्वे देवाः)

परेषु या — ।

[१८०] ३।५४।११ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः प्रजापतिर्वाच्यो वा ।
विश्वे देवाः)

त्रिरा दिवो विदधे पत्यमानः ।

(२१८) ३।५६।५ त्रिरा दिवो विदधे पत्यमानाः ।

[१८४] ३।५४।१५ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः प्रजापतिर्वाच्यो वा ।
विश्वे देवाः)

उमे आ पप्रौ रोदसी महित्वा ।

(इन्द्रः १४७१) ४।१६।५ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)

(अदितिः ० ३६१) ८।२५।१८ (विश्वमना वैयश्वः ।
मित्रावरुणौ)

[१८७] ३।५४।१८ अदब्धानि वरुणस्य व्रतानि ।

१।२४।१० (शुनःशेष आजीगर्तिः कृत्रिमो देवरातो
वैश्वामित्रो वा । वरुणः)

[१८९] ३।५४।२० ध्रुवक्षेमास ह्यया मदन्तः ।

(अदितिः ० १८७) ३।५९।३ (गाथिनो विश्वामित्रः ।
मित्रः)

अनमीवास ह्यया ... ।

[१९१] ३।५४।२२ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः प्रजापतिर्वाच्यो वा ।
विश्वे देवाः)

समिषो दिदीक्ष्यस्य १३ सं मिमीहि श्रवांसि ।

(अग्निः ७९१) ५।४।२ (वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः)

(इन्द्रः १८७३) ६।१९।३ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)

अस्य १३ सं मिमीहि श्रवांसि ।

[१९२-२१३] ३।५५।१-२२ महद्देवानामसुरत्वमेकम् ।

(इन्द्रः २६१७) १०।५५।४ (बृहदुक्तो वामदेव्यः । इन्द्रः)

महन्महत्या असुरत्वमेकम् ।

[२००] ३।५५।९ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः प्रजापतिर्वाच्यो वा ।
विश्वे देवाः)

अन्तर्महेश्वरति रोचनेन ।

(अग्निः १५०७) १०।४।२ (त्रित आप्त्यः । अग्निः)
अन्तर्महेश्वरसि रोचनेन ।

[२०४] ३।५५।१३ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः प्रजापतिर्वाच्यो वा ।
विश्वे देवाः)

अन्यस्या वत्सं विहती मिमाय कया भुवा नि दधे धेनुरुधः ।
(इन्द्रः २१०४) १०।२७।१४ (ऐन्द्रो वसुकः । इन्द्रः)

[२१०] ३।५५।१९ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः प्रजापतिर्वाच्यो वा ।
विश्वे देवाः)

देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपः ।

(आयुर्वेदः १९५८) १०।१०।५ (यमी वैरुखती ऋषिकः ।
यमः)

[२१२] ३।५५।२१ इमां च नः पृथिवीं विश्वधाया षप क्षेति
हितमित्रो ।

न राजा । पुरःसदः शर्मसदो न वीरा ... ।

(अग्निः २०७) १।७३।३ (पराशरः शाक्यः । अग्निः)
देवो न यः पृथिवीं ... राजा । पुरःसदः ... वीरा ... ।

[२१६] ३।५६।३ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः प्रजापतिर्वाच्यो वा ।
विश्वे देवाः)

स रेतोधा वृषभः शश्वतीनाम् ।

(आयुर्वेदः ९९०) ७।१०।१६ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः
(वृष्टिकामः), कुमार आग्नेयो वा । पर्जन्यः)

[२१८] ३।५६।५ = (१८०) ३।५४।११ त्रिरा दिवो विदधे
पत्यमानाः (११ पत्यमानः) ।

[२२०] ३।५६।७ राजाना मित्रावरुणा सुपाणी ।

(अग्निः १९३) १।७१।९ (पराशरः शाक्यः । अग्निः)

[२२२] ३।८।८ (गाथिनो विश्वामित्रः । विश्वे देवाः)

आदित्या रुद्रा वसवः सुनीथा ।

(४६२) ७।३५।१४ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । विश्वे देवाः)

आदित्या रुद्रा वसवो ज्वरन्त (इदं ब्रह्म) ।

(७१८) १०।६६।१२ (वसुकर्णो वासुकः । विश्वे देवाः)

— रुद्रा वसवः सुदानवः (इमा ब्रह्म) ।

ऋग्वेदस्य चतुर्थ मण्डलम् ।

[२२९] ४।४५।१ (वामदेवो गौतमः । विश्वे देवाः)
द्यावाभूमी अदिते त्रासीथा नः ।

(अदितिः ० ३२८) ७।६२।४ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः ।
मित्रावरुणौ)

[१११] ४।५।५।३ (वामदेवो गौतमः । विश्वे देवाः)
उमे यथा नो ब्रह्मनी निपाते ।
(आयुर्वेदः २२८५) १०।७।१ (जरत्कर्णः सर्प ऐरावतः ।
ग्रावाणः)

— ब्रह्मनी सचाभुवा ।

[११२] ४।५।५।६ समुद्रं न संचरणे सनिष्यवः ।
(इन्द्रः ८०६) १।५।६।२ (सव्य आङ्गिरसः । इन्द्रः)
[११५] ४।५।५।७ = (६३) १।१०।६।७
[११५] ४।५।५।७ नहि मित्रस्य वरुणस्य धासिम् ।
(आयुर्वेदः ९०१) १०।३०।१ (कवष ऐलषः । आपः,
अपां नपात् वा)
महीं मित्रस्य ... ।

[१३७] ४।५।५।९ (वामदेवो गौतमः । विश्वे देवाः)
उपो मघोन्था वह ।
(उषाः ११६) ५।७।९।७ (सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः)
[१३७] ४।५।५।९ अस्मभ्यं वाजिनीवति ।
(उषा ३६) १।९।२।१३ (गोतमो राहुगणः । उषा)
[२३८] ४।५।५।१० (वामदेवो गौतमः । विश्वे देवाः)
तत् सु नः सविता भगो वरुणो मित्रो अर्यमा ।
(अदितिः ० ५६) ८।१८।३ (इरिम्बिठिः काण्वः ।
आदित्याः ।
(अग्निः ३१) १।२६।४ (शुनः शेष आजीगर्तिः । अग्निः)
वरुणो मित्रो अर्यमा ।

ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलम् ।

[११] (वसूयव आत्रेयः । विश्वे देवाः)
देवासः सर्वया विना ।
(मरुतः ४०) १।३९।५ (कण्वो घौरः । मरुतः)
[११] ५।४।१।२ (भौमोऽग्निः । विश्वे देवाः)
मित्रो वरुणो अर्यमायुरिन्द्र ऋभुक्षा मरुतो जुषन्त ।
[११] ५।४।१।२ (दीर्घतमा औचथ्यः । अश्वः)
मित्रो वरुणो अर्यमायुरिन्द्र ऋभुक्षा मरुतः परि ख्यन् ।
[११] ५।४।१।६ (अत्रिभौमः । विश्वे देवाः)
प्र वो वायुं रथयुजं कृणुध्वं ... अर्कैः ।
... पुरंधीः ॥
[१८९] १०।६।७ (गयः छातः विश्वे देवाः)
प्र वो वायुं रथयुजं पुरंधि स्तोमैः कृणुध्वम् ।
[१७] ५।४।१।८ (अत्रिभौमः । विश्वे देवाः)
वनस्पतीरोषधी राय एषे ।
[१७४] ५।४।२।१६ वनस्पतीरोषधी राये अस्याः ।
[१७] ५।४।१।१० गृणीते अग्निरेतरी न शूषैः ।
(अग्निः १००९) ६।१२।४ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः ।
अग्निः)
सासाकेभिरेतरी न शूषैरग्निः ।
[१७] ५।४।१।१६ (अत्रिभौमः । विश्वे देवाः)
मा नोऽहिर्बुध्न्यो रिषे धाद् ।
[१७] ५।४।१।१७ (वसिष्ठो मैत्रावरुणः । अहिर्बुध्न्यः)

[२६२] ५।४।२।३ चन्द्राणि देवः सविता सुवाति ।
(४८८) ७।४०।१ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । विश्वे देवाः)
यदय देवः सविता सुवाति ।
[१७४] ५।४।२।१६ = (२४७) ५।४।१।८ (भौमोऽग्निः ।
विश्वे देवाः)
[२७४] ५।४।२।१६ (अत्रिभौमः । विश्वे देवाः)
देवो देवः सुहवो भूतु मह्यं मा नो माता पृथिवी दुर्मतौ धात् ।
(२९१) ५।४।३।१५ (भौमोऽग्निः । विश्वे देवाः)
[१७५] ५।४।२।१७ = (२९२) ५।४।३।१६ (भौमोऽग्निः ।
विश्वे देवाः)
उरौ देवा अनिषाधे स्याम ।
[१७६] ५।४।२।१८ (अत्रिभौमः । विश्वे देवाः)
= (२९३) ५।४।३।१७ (भौमोऽग्निः । विश्वे देवाः)
= (अश्विनौ २९१) ५।७।६।५ (अत्रिभौमः । अश्विनौ)
= (अश्विनौ २९६) ५।७।७।५ (अत्रिभौमः । अश्विनौ)
समश्विनोरवसा नूतनेन मयोभुवा सुपणीती गमेम ।
आ नो रायि वहतमोत वीराना विश्वान्यमृता सौभगानि ॥
[१८६] ५।४।३।१० (अत्रिभौमः । विश्वे देवाः)
विश्वे गन्त मरुतो विश्व ऊती ।
(५९२) १०।३५।१३ (लुशो धानाकः । विश्वे देवाः)
विश्वे अय मरुतो विश्व ऊती ।

(१२६)

देवत-संहितायां

- [२८७] ५।४३।११ (अत्रिमौमः । विश्वे देवाः)
आ नो दिवो बृहत्तः पर्वतादा ।
(अश्विनौ २९०) ५।७६।४ (अत्रिमौमः । अश्विनौ)
- [२९१] ५।४३।१५ = (२७४) ५।४२।१६
[२९२] ५।४३।१६ = (२७५) ५।४२।१७
[२९३] ५।४३।१७ = (२७६) ५।४२।१८ =
(अश्विनौ २९१) ५।७६।५ = (अश्विनौ २९६) ५।७७।५
- [३०७] ५।४४।१४ यो जागार तमृचः कामयन्ते यो
जागार तमु सामानि यन्ति । यो जागार तमयं सोम
आह ॥ (३०८) अग्निर्जागार तमृचः ...
अग्निर्जागार ... । अग्निर्जागार तमयं ... ॥
- [३०७-८] ५।४४।१४-१५ (काश्यपोऽवत्सारः । विश्वे देवाः)
तवाहमसि सख्ये न्योकाः ।
- [३१२] ५।४५।४ (सदापृण आत्रेयः । विश्वे देवाः)
इन्द्रा न्वग्नी अवसे हुवध्वै ।
(इन्द्रः ३०४८) ६।५९।३ (भारद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)
... अवसेह वज्रिणा ।
- [३१८] ५।४५।१० (सदापृण आत्रेयः । विश्वे देवाः)
आ सूर्यो अरुहच्छुक्रमर्णः ।
(अदितिः ३१२) ७।६०।४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः ।
मित्रावरुणौ)
- [३२२] ५।४६।३ (प्रतिक्षत्र आत्रेयः । विश्वे देवाः)

- स्वः पृथिवीं द्यां ... अपः ।
हुवे विष्णुं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं भगं ।
(५०६) ७।४४।१ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । दधिकाश्म्युषोः ।
मिभगेन्द्रविष्णुपूषब्रह्मणस्पत्यादित्यद्यावापृथिव्यापस्वः)
भगमूतये हुवे । इन्द्रं विष्णुं पूषणं
ब्रह्मणस्पतिं ... द्यावापृथिवी अपः स्वः ।
- [३२७] ५।४६।८ (प्रतिक्षत्र आत्रेयः । देवपत्न्यः)
आ रोदसी वरुणानी शृणोतु ।
(४४५) ७।३४।२२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । विश्वे देवाः)
- [३५०] ५।५१।१ (स्वत्यात्रेयः । विश्वे देवाः)
देवेभिर्हव्यदातये ।
(अग्निः ९२३) ५।२६।४ (वसूयव आत्रेयः । अग्निः)
- [३५१] ५।५१।२ सत्यधर्माणो अध्वरम् ।
(अग्निः १६) १।१२।७ (मेधातिथिः काण्वः । अग्निः)
सत्यधर्माणमध्वरे ।
- [३५२] ५।५१।३ (स्वस्यात्रेयः । विश्वे देवाः)
प्रातर्यावभिरा गहि । देवेभिः सोमपीतये ।
(इन्द्रः ३०९७) ८।३८।७ (श्यावाश्व आत्रेयः । इन्द्राग्नी)
प्रातर्यावभिरा गतं देवेभिः ... सोमपीतये ।
- [३५३] ५।५१।८ अश्विभ्यामुषसा सजूः ।
(अग्निः ९९) १।४४।१४ (प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः)
- [३५३-५५] ५।५१।८-१० आ यादाम्ये जत्रिवत् सुते रण ।

ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

- [३६३] ६।४९।१ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
त आ गमन्तु त इह श्रुवन्तु सुक्षत्रासो वरुणो मित्रो अग्निः ।
(आयुर्वेदः १९९१) १०।१५।५ (शङ्खो यामायनः । पितरः)
त आ गमन्तु त इह श्रुवन्तु ।
(४०९) ६।५१।१० (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
सुक्षत्रासो वरुणो मित्रो अग्निः ।
- [३६६] ६।४९।४ प्र वायुमच्छा बृहती मनीषा ।
(आयुर्वेदः १०२६) ३।३३।५ (विश्वामित्रो गाथिनः । नद्यः)
प्र सिन्धुमच्छा बृहती मनीषा ।
- [३६७] ६।४९।५ येन नरा नासत्येषध्वै वर्तिर्याथस्तनयाय-
स्मने च ।
(अश्विनौ २०४) १।१८३।३ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः ।
अश्विनौ)

- [३७२] ६।४९।१० बृहन्तमृष्वमजरं सुपुत्रम् ।
(इन्द्रः १२८८) ३।३२।७ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
बृहन्तमृष्वमजरं युवानम् ।
- [३७४] ६।४९।१२ प्र वीराय प्र तवसे तुराय ।
(इन्द्रः २०११) ६।३२।१ (सुहोत्रो भारद्वाजः इन्द्रः)
महे वीराय ... ।
- [३७५] ६।४९।१३ यो रजांसि विममे पार्थिवानि ।
१।१६०।४ (दीर्घतमा औचथ्यः । द्यावापृथिवी)
वि यो ममे रजसी सुकृत् ।
- [३७६] ६।४९।१४ तत् पर्वतस्तत् सविता चनो धाद ।
(६६) १।१०७।३ तदर्यमा तत् सविता ... ।
- [३८१] ६।५०।४ अथा हुतासो वसवोऽष्टधाः ।
(३९२) ६।५०।१५ आ हुतासो वसवोऽष्टधाः ।

[१४] ६।५०।७ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
विश्वस्य स्थातुर्जगतो जनित्रीः ।

(अदितिः ० २१०) ७।६०।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः ।
मित्रावरुणौ)

विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च गोपाः ।

(६६८) १०।६३।८ (गयः स्नातः । विश्वे देवाः)
... .. जगतश्च मन्तवः ।

[१५] ६।५०।८ आ नो देवः सविता त्रायमाणः ।

(४५८) ७।२५।१० (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । विश्वे देवाः)
शं नो देवः ।

[१५] ६।५०।८ न्युणुते दाशुषे वार्याणि ।

(उषा १२५) ५८०।६ (सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः)
न्युण्वतो दाशुषे ... ।

[१६] ६।५०।९ उत त्वं सूनो सहसो नो अथ ।

(अग्निः ११७) १।५८।८ (नोधा गौतमः । अग्निः)
अच्छिद्रा सूनो ... ।

[१७] ६।५०।१३ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)

भगो ... । त्वष्टा देवेभिर्जनिभिः सजोषाः ।

(३८५) १०।६४।१० (गयः स्नातः । विश्वे देवाः)

त्वा देवेभिर्जनिभिः पिता वचः । ... भगो ।

[१८] ६।५०।१५ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)

एवा भरद्वाजा अभ्यर्चन्त्यकैः ।

(इन्द्रः २१८५) ७।२३।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)

एवा ... वसिष्ठसो अभ्यर्चन्त्यकैः ।

[१९] ६।५१।२ ऋजु मर्तेषु वृजिना च पश्यन् ।

(अग्निः ६४३) ४।१।१७ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)

[२०] ६।५१।५ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)

विश्व आदित्या अदिते सजोषाः ।

(६७५) १०।६३।१७ = १०।६४।१७ (गयः स्नातः ।

विश्वे देवाः)

... .. अदिते मनीषी ।

[२१] ६।५१।५ अस्मभ्यं शर्म बहुलं वि यन्त ।

(मरुतः २७३) ५।५५।९ (श्यावाश्व आत्रेयः । मरुतः)

... वि यन्तन ।

[२२] ६।५१।७ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)

एव नो अन्यकृतं भुजेम मा तत्कर्म वसवो यच्चयध्वे ।

(अदितिः ४२) ७।५२।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । आदित्याः)

नो भुजमान्यजातमेनो मा तत्कर्म वसवो यच्चयध्वे ।

[४००] ६।५१।८ नमो दाधार पृथिवीमुत धाम् ।

(अदितिः ० १८५) ३।५९।१ (विश्वामित्रो गायिनः । मित्रः)
मित्रो दाधार ... ।

[४०१] ६।५१।१० = (३६३) ६।४९।१ सुक्षत्रासो वरुणो
मित्रो अग्निः ।

[४०७] ६।५१।१५ यूयं हि ष्ठा सुदानवः ।

(अदितिः ० ९०८) १।१५।२ (मेधातिथिः काण्वः ।

[ऋतवः] = मरुतः)

(५३७) ८।८३।९ (कुषीदी काण्वः । विश्वे देवाः)

[४०७] ६।५१।१५ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)

इन्द्रज्येष्ठा अभिद्यवः ।

(५६७) ८।८३।९ (कुसीदी काण्वः । विश्वे देवाः)

[४०८] ६।५१।१६ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)

स्वस्तिगामनेहसम् ।

(इन्द्रः २३१८) ८।६९।१६ (प्रियमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)

[४११] ६।५२।३ ब्रह्मद्विषे तपुषि हेतिमस्य ।

(इन्द्रः १२५४) ३।३०।१७ (विश्वामित्रो गायिनः । इन्द्रः)

[४१३] ५।५२।५ पश्येम तु सूर्यमुच्चरन्तम् ।

(इन्द्रः १५९१) ४।२५।४ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)

पश्यात् सूर्यं ... ।

[४१५] ६।५२।७ = (१६५) २।४१।१३

[४२०] ६।५२।१२ इमं नो अग्ने अध्वरम् ।

(अग्निः ७३७) ५।४।८ (वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः)

अस्माकमग्ने अध्वरम् ।

[४२०] ६।५२।१२ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)

चिकित्स्वान् दैव्यं जनम् ।

(अग्निः १३५१) ८।४४।९ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)

[४२१] ६।५२।१३ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)

आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वम् ।

(इन्द्रः ३१७१) ६।६८।११ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ।

इन्द्रावरुणौ)

... .. मादयेथाम् ।

(आयुर्वेदः १०८४) १०।१७।८ (देवश्रवा यामायनः । सरस्वती)

... .. मादयस्व ।

[४२४] ६।५२।१६ अग्नीपर्जन्याववतं धियं मे ।

(सोमः १२२१) २।४०।५ (गृत्समदः शौनकः । सौमापूषणौ)

सौमापूषणाववतं धियं मे ।

[४२५] ६।५२।१७ स्तीर्णे बर्हिषि समिधाने अग्नौ ।

(अग्निः ६८५) ४।६।४ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

[४४५] ७३४।२२ = (३२७) ५।४६।८

आ रोदसी वरुणानो शृणोतु ।

[४४८] ७३४।२५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । विश्वे देवाः) =

(मरुतः ३६९) ७।५६।२५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मरुतः)

तन्न इन्द्रो वरुणो मित्रो अग्निराप ओषधीर्वनितो जुषन्त ।

शर्मन्स्याम मरुतामुपस्थे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥

(७१५) १०।६३।९ (वसुकर्णो वासुकः । विश्वे देवाः)

आप ओषधीर्वनितानि यज्ञिया ।

[४५८] ७३५।१० = (३८५) ६।१०।८

देवः सविता त्रायमाणः ।

[४६२] ७३५।१४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । विश्वे देवाः)

आदित्या रुद्रा वसवो जुषन्त ।

(आयुर्वेदः २२६६) ३।८।८ (गाथिनो विश्वामित्रः ।

यूपाः, विश्वे देवा वा)

... रुद्रा वसवः सुनीथा ।

(७१८) १०।६६।१२ (वसुकर्णो वासुकः । विश्वे देवाः)

— वसवः सुदानवः ।

दिव्याः पार्थिवासो गोजाता उत ये यज्ञियासः ।

(१२११) १०।५३।५ (अग्निः सौचीकः । देवाः)

गोजाता ... ।

पार्थिवात् पार्थिवात् ... दिव्यात् ... ।

[४६३] ७३५।२५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । विश्वे देवाः)

देवानां ... मनोर्यजत्रा अमृता क्रतज्ञाः ।

ते नो रासन्तामुरुगायमघ ।

(७०५) १०।६५।१४ (वसुकर्णो वासुकः । विश्वे देवाः)

देवाः ... मनोर्यजत्रा अमृता क्रतज्ञाः ।

(७०६) १०।६५।१५ = १०।६६।१५

(वसुकर्णो वासुकः । विश्वे देवाः)

देवान् ... । ते नो रासन्तामुरुगायमघ ।

[४६५] ७३६।२ जनं च मित्रो यतति ब्रुवाणः ।

(अदितिः ० १८५) ३।५९।१ (गाथिनो विश्वामित्रः । मित्रः)

मित्रो जनान् यातयति ब्रुवाणः ।

[४७७] ७३७।५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । विश्वे देवाः)

कदा न इन्द्र राय आ दशस्येः ।

(इन्द्रः ९९०) ८।९७।१५ (रेभः काश्यपः । इन्द्रः)

[४८४] ७३९।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । विश्वे देवाः)

ते हि यज्ञेषु यज्ञियास ऊमाः ।

(मरुतः ४१४) १०।७७।८ (स्युमरश्मिर्भागवः । मरुतः)

[४८७] ७३९।७ = ७।४०।७ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । विश्वे देवाः)

नू रोदसी अभिष्टुते वसिष्ठैर्कृतावानो वरुणो मित्रो अग्निः ।

यच्छन्तु चन्द्रमा उपमं नो अर्कं यूयं पात स्वस्तिभिः सदानः ॥

(अदितिः ० ५६०) ७।६२।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । सूर्यः)

कृतावानो वरुणो मित्रो अग्निः ।

यच्छन्तु चन्द्रा उपमं नो अर्कं ॥

[४८८] ७।४०।१ यद्य देवः सविता सुवाति ।

(२६२) ५।४२।३ चन्द्राणि देवः सविता सुवाति ॥

[४९१] ७।४०।४ सुहवा देव्यदितिरनर्वा ।

(सोमः १२२२) २।४०।६ (गृत्समदः शौनकः । अदितिः)

अवतु देव्य ... ।

[४९२] ७।४०।५ विष्णोरेषस्य प्रभृये हविर्भिः ।

(मरुतः २०९) २।३४।११ विष्णोरेषस्य प्रभृयो हवामहे ।

[४९५] ७।४२।१ प्र ब्रह्माणो अङ्गिरसो नश्नन्त ।

(अदितिः ० ४३) ७।५२।३ तुरण्यवोऽङ्गिरसो नश्नन्त ।

[४९७] ७।४२।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । विश्वे देवाः)

समु वो यज्ञं महयन् नमोभिः ।

(अदितिः ० ३२६) ७।६१।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)

समु वां यज्ञं महयं ... ।

[४९९] ७।४२।५ इमं नो अग्ने अध्वरं जुषस्व ।

(अग्निः ७९७) ५।४।८ (वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः)

अस्माकमग्ने अध्वरं जुषस्व ।

ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम् ।

[५१०] ८।२५।११ (विश्वमना वैयश्वः । विश्वे देवाः)

अरिष्यन्तो नि पायुभिः सचेमहि ।

(अग्निः ४०२) २।८।६ (गृत्समदः शौनकः । अग्निः)

अरिष्यन्तः सचेमह्यभि ध्याम ।

[११४] ८।२७।३ (मनुर्वैवस्वतः । विश्वे देवाः)

मरुतसु विश्वभानुषु ।

(अग्निः २४५०) ४।१।३ (वामदेवो गौतमः । अग्नि-
वरुणश्च)

[११५] ८।२७।४ यन्ता नोऽवृकं छर्दिः ।

(उषाः १८) १।४८।१५ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
प्र नो यच्छतादवृकं पृथु च्छर्दिः ।

[११६] ८।२७।१० देवासो अस्त्याप्यम् ।

(५०) १।१०५।१३ देवेष्वस्त्याप्यम् ।

[११७] ८।२७।१३ देवंदेवं वोऽवसे देवंदेवं... देवंदेवं हुवेम ।

(इन्द्रः ३०६) ८।१२।१९ (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)
देवंदेवं वोऽवसे इन्द्रम् ।

[११८] ८।२७।१३ देवंदेवं हुवेम वाजसातये ।

(इन्द्रः १७४१) ५।३५।६ (प्रभूवसुराजिरसः । इन्द्रः)
पूर्व्यं हवन्ते वाजसातये ।

[११९] ८।२७।१६ प्र स क्षयं तिरस्ते वि महीरिषो यो वो
वराय दाशति ।

(मरुतः ३८४) ७।५९।२ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मरुतः)

[१२०] ८।२७।१६ प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्पति ।

६।७०।३ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । द्यावापृथिवी)

[१२१] ८।२७।१६ अरिष्टः सर्वं पृथते ।

१।४१।२ (कण्वो घौरः । वरुणमित्रार्यमणः)

[१२२] ८।२७।१७ अर्यमा मित्रो वरुणः सरातयो ।

(अग्निः २४६) १।७९।३ (गोतमो राहुगणः । अग्निः)
अर्यमा ... परिजमा ।

[१२३] ८।२७।१९ यदद्य सूर्य उद्यति ।

(अदितिः ० ४४) ७।६६।४ यदद्य सूर उदिते ।

[१२४] ८।२७।२१ यदद्य सूर उदिते ।

(अदितिः ० ४४) ७।६६।४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः)

[१२५] ८।२८।२ वरुणो मित्रो अर्यमा ।

(अग्निः ३१) १।२६।४ (शुनःशेष आजीगर्तिः । अग्निः)

[१२६] ८।२८।५ सप्तो अग्निः श्रियो धिरे ।

(अग्निः ४०१) २।८।५ (गृत्समदः शौनकाः । अग्निः)

विश्वो अग्निः श्रियो दधे ।

[१२७] ८।२९।२ अन्तर्देवेषु मेधिरः ।

१७ दै० [विश्वे देवाः]

(५१) १।२०५।१४ देवो देवेषु मेधिरः ।

[५४७] ८।२९।९ सम्राजा सर्पिरासुती ।

(अदितिः ० २०३) १।१३६।१ (परुच्छेपो देवोदासिः ।
मित्रावरुणौ)

— घृतासुती ।

[५४९] ८।३०।१ अर्भको देवासो न कुमारकः ।

(इन्द्रः २३१७) ८।६९।१५ (प्रियमेध आजिरसः ।

इन्द्रः)

अर्भको न कुमारकः ।

[५५१] ८।३०।३ त उ नो अग्नि वोचत ।

(मरुतः १०७) ८।२०।२६ (सोमरिः काण्वः । मरुतः)
तेना नो अग्नि वोचत ।

[५८८] ८।६९।११ (प्रियमेध आजिरसः । [अर्धर्च] विश्वे देवाः,
[उत्तरार्धः] वरुणः)

विश्वे देवा अमरसत । वरसं संशिश्वरीरिव ।

(सोमः ११५) ९।१३।३ (असितः काश्यपो देवलो वा ।
पवमानः सोमः)

विश्वे ।

(सोमः ४०१) ९।६१।१४ (अमहीयुराजिरसः । पवमानः
सोमः)

वरसं ।

[५६०] ८।८३।२ (कुसीदी काण्वः । विश्वे देवाः)

वरुणो मित्रो अर्यमा ।

(अग्निः ३१) १।२६।४ (शुनःशेष आजीगर्तिः । अग्निः)

[५६१] ८।८३।३ यूयमृतस्य रथ्यः ।

(अदितिः ० ५२) ७।६६।१२ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्यः)

[५६२] ८।८३।४ वामं नो अस्त्वर्यमन् वामं वरुण शंस्यम् ।

(अदितिः ० ६८) ८।१८।२१ (इरिम्बिठिः काण्वः ।
आदित्याः)

अनेहो मित्रार्यमन् नृवद् वरुण शंस्यम् ।

[५६७] ८।८३।९ यूयं हि ष्ठा सुदानवः ।

(अदितिः ० ९०८) १।१५।२ (मेधातिथिः काण्वः ।

[ऋतवः] मरुतः)

(४०७) ६।५१।१५ (ऋजिष्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)

ऋग्वेदस्य दशमं मण्डलम् ।

[५६९] १०।३।१।२ (कवष ऐलूषः । विश्वे देवाः)

ऋतस्य पथा नमसा विवासेत् ।

(अग्निः २८४) १।१२८।२ (परुच्छेपो दैवोदासिः ।

अग्निः)

... नमसा हविष्मता ।

[५७४] १०।३।१।७ (कवष ऐलूषः । विश्वे देवाः)

किं स्विद्वनं क उ स वृक्ष आस यतो आवापृथिवी निष्टतक्षुः ।

१०।८।१।४ (विश्वकर्मा भौवनः । विश्वकर्मा)

[५७५] १०।३।१।८ नैतावदेना परो अन्यदस्ति ।

(इन्द्रः २५११) १०।२।७।२ (ऐन्द्रो वसुकः । इन्द्रः)

श्रव इदेना परो — ।

[५८१] १०।३।५।२ (लुशो धानाकः । विश्वे देवाः)

दिवस्पृथिव्योरव आ वृणीमहे ।

... भद्रं सोमः ... ।

२।२६।२ (गृत्समदः शौनकः । ब्रह्मणस्पतिः)

... भद्रं मनः ... । ब्रह्मणस्पतेरव आ वृणीमहे ।

[५८२-९१] १०।३।५।३-१२ स्वस्वामिं समिधानमीमहे ।

[५८५] १०।३।५।६ आयुक्षातामश्विना तूतुर्जि रथम् ।

(अश्विनौ १६३) १।१५।७।१ (दीर्घतमा औचथ्यः ।

अश्विनौ)

... यातवे रथम् ।

[५८९] १०।३।५।१० इन्द्रं मित्रं वरुणं सातये भगम् ।

(६६९) १०।६।३।९ (गयः प्लातः । विश्वे देवाः)

अग्निं मित्रं ... ।

[५९०] १०।३।५।११ त आदित्या आ गता सर्वतातये ।

(५८) १।१०६।२ (कुत्स आङ्गिरसः । विश्वे देवाः)

[५९१] १०।३।५।१२ पथे तोकाय तनयाय जीवसे ।

३।५३।१८ (गाथिनो विश्वामित्रः । रथाङ्गानि)

बलं तोकाय ... ।

[५९२] १०।३।५।१३ विश्वे अद्य मरुतो विश्व ऊती ।

(२८६) ५।४३।१० (भौमोऽग्निः । विश्वे देवाः)

विश्वे गन्त मरुतो ... ।

[५९३] १०।३।५।१३ विश्वे नो देवा अवसा गमन्तु ।

(२५) १।८९।५ (गोतमो राट्मणः । विश्वे देवाः)

... अवसा गमन्तिह ।

[५९३] १०।३।५।१४ (लुशो धानाकः । विश्वे देवाः)

यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं ।

(६७४) १०।६।३।१४ (गयः प्लातः । विश्वे देवाः)

[५९४] १०।३।६।१ आवाक्षामा वरुणो मित्रो अयमा ।

(अग्निः ७१) १।३६।४ (कण्वो घौरः । अग्निः)

देवासस्त्वा वरुणो ... ।

[५९४] १०।३।६।१ = (५०६) ७।४४।१

इन्द्रं... आदित्यान् आवापृथिवी अपः स्वः ।

[५९५-६०५] १०।३।६।२-१२ तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे ।

अहं होता न्यसीदं यजीयान् ।

[६०९] १०।५।२।२ (सौचीकोऽग्निः । विश्वे देवाः)

(अग्निः ७६०) ५।१।६ (बुधगविष्टिरावात्रेयौ । अग्निः)

[६१०-११] १०।५।२।३-४ अथा (४मां) देवा दधिरे

हव्यवाहम् ।

(अग्निः ११६२) ७।११।४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । अग्निः)

[६१२] १०।५।२।५ अथेमा विश्वाः पृतना जयाति ।

(इन्द्रः २३५१) ८।९६।७ (तिरश्चीराङ्गिरसः, युतानो वा मारुतः । इन्द्रः)

... जयासि ।

[६१३] १०।५।२।६ (सौचीकोऽग्निः । विश्वे देवाः)

त्रीणि शता त्री सहस्राण्याग्निं त्रिंशच्च देवा नव चासपर्यन् ।
औक्षन् घृतैरस्तृणन् बर्हिरस्मा आदिद्धोतारं न्यसादयन्त ॥

(अग्निः ५०८) ३।९।९ (गाथिनो विश्वामित्रः । अग्निः)

[६१८] १०।५।६।५ (बृहदुक्त्यो वामदेव्यः । विश्वे देवाः)

तनूषु विश्वा भुवना नि येमिरे ।

(इन्द्रः १६१) ८।३।६ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)

इन्द्रे ह विश्वा— ।

[६२०] १०।५।६।७ स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा ।

(अग्निः ३६२) १।१८९।२ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । अग्निः)

[६२३] १०।५।७।३ वितृणां च मन्मभिः ।

८।४१।२ (नाभाकः काण्वः । वरुणः)

[३२४] १०।५७।४ ज्योक् च सूर्ये दशे ।

(आयुर्वेदः ८६८) १।२३।२१ (मेधातिथिः काण्वः ।

आपः)

(आयुर्वेदः ८८५) १०।९।७ (त्रिशिरास्त्वष्ट्रः, सिन्धुद्वीप

आम्बरीषो वा । आपः)

[३२७-३८] १०।६।१।१०-११ (नामानेदिष्टो मानवः । विश्वे देवाः)

मक्षू कनायाः सख्यं नवग्वाः (११ नवीयः) ।

[३२८] १०।६।१।११ शुचि यत् ते रेक्ण आयजन्त सबर्दु-
चायाः पय उस्त्रियायाः ।

(७१) १।१२।१।५ (कर्क्षीवान् दैर्घतमस औशिजः ।

विश्वे देवा इन्द्रो वा)

[३२८] १०।६।१।२२ रक्षा च नो मघोनः पाहि सूरिन् ।

(इन्द्रः ७९६) १।५४।११ (सव्य आङ्गिरसः । इन्द्रः)

[३३०] १०।३।१।७ व्रजं गोमन्तमश्विनम् ।

(सोमः ११६४) १०।२।५।५ (ऐन्द्रो विमदः, प्राजा-
पत्यो वा, वासुक्रो वसुकृद्वा । सोमः)

[३३०] १०।६।२।७ श्रवो देवेष्वकृत ।

(इन्द्रः ६१२) ८।६।५।१२ (प्रगाथः काण्वः । इन्द्रः)

[३३४] १०।६।३।४ (गयः स्नातः । विश्वे देवाः)

देवासो अमृतत्वमानशुः ।

(अग्निः १६२३) १०।५।३।१० (देवाः । अग्निः)

येन देवासो — ।

[३३८] १०।६।३।८ विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः ।

(३८४) ६।५०।७ विश्वस्य स्थातुर्जगतो जनित्रीः ।

[३३९] १०।६।३।९ = (५८९) १०।३।५।१०

अग्निं (१० इन्द्रं) मित्रं वरुणं सातये भगं ।

[३४३] १०।६।३।१३ अरिष्टः स मर्तो विश्व एधते ।

१।४।१।२ (कण्वो घौरः । वरुणमित्रार्यमणः)

अरिष्टः सर्व एधते ।

[३४३] १०।६।३।१३ प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्पति ।

६।७०।३ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । यावापृथिवी)

[३४४] १०।६।३।१४ = (५९३) १०।३।५।१४ यं देवासोऽवथ

वाजसातौ यं ।

[३४५] १०।६।३।१७ = १०।६।३।१७ (गयः स्नातः । विश्वे

देवाः)

एवा स्नातेः सुसुरवीवृद्धो विश्व आदित्या अदिते मनीषी ।

ईशानासो नरो अमर्त्येनास्तावि जनो दिव्यो गयेन ।

[६७५] १०।६।३।१७ विश्व आदित्या अदिते मनीषी ।

(३९७) ६।५।१।२ विश्व आदित्या अदिते सजोषाः ।

[६७९] १०।६।४।४ (गयः स्नातः । विश्वे देवाः)

कविः ... । अदिः शृणोतु बुध्यो हवीमनि ।

(७३२) १०।९।२।१२ (शार्यातो मानवः । विश्वे देवाः)

कविरहिः ... ।

[६८२] १०।६।४।७ प्र वो वायुं रथयुजं पुरंधि ।

(२४५) ५।४।१।६ (भौमोऽग्निः । विश्वे देवाः)

... रथयुजं कृणुध्वं । ... पुरंधीः ।

[६८५] १०।६।४।१० त्वष्टा देवेभिर्जनिभिः पिता वचः ।

(३९०) ६।५०।१।३ त्वष्टा देवेभिर्जनिभिः सजोषाः ।

[६८६] १०।६।४।११ रणवः संष्टौ पितुर्मां हव क्षयः ।

(अग्निः ३३२) १।१४।४।७ (दीर्घतमा औचथ्यः । अग्निः)

[६९०] १०।६।४।१५ (गयः स्नातः । विश्वे देवाः)

प्रावा यत्र मधुषुदुच्यते बृहद् ।

(७५८) १०।१००।८ (दुवस्युर्वान्दनः । विश्वे देवाः)

[६९२] १०।६।५।२ (वसुकर्णो वासुकः । विश्वे देवाः)

अग्निरिन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा ।

(अग्निः ७१) १।३६।४ (कण्वो घौरः । अग्निः)

देवासस्त्वा वरुणो ... ।

[६९२] १०।६।५।१ आदित्या विष्णुर्मरुतः स्वर्बृहत् ।

(७१०) १०।६।६।४ इन्द्राविष्णू मरुतः ... ।

[६९८] १०।६।५।७ दिवक्षसो अग्निजिह्वा कृतावृधः ।

(अग्निः ९९) १।४४।१।४ (प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः)

सुदानवोऽग्निजिह्वा कृतावृधः ।

[७००] १०।६।५।९ (वसुकर्णो वासुकः । विश्वे देवाः)

देवा आदित्या अदिति हवामहे ।

(७१०) १०।६।६।४ देवा आदित्या अवसे हवामहे ।

[७०५] १०।६।५।१४ = (४६३) ७।३।५।१५

मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः ।

[७०६] १०।६।५।१५ = १०।६।६।१५ (वसुकर्णो वासुकः ।

विश्वे देवाः)

देवान् वसिष्ठो अमृतान् ववन्दे ये विश्वा भुवनाभि प्रतस्थुः ।

ते नो रासन्तासुरुगायमय यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥

[७०६] १०।६।५।१५ = (४६३) ७।३।५।१५

ते नो रासन्ता० ... सदा नः ।

- [७०९] १०६६३ = (६५) ११०७२
आदित्येनो अदितिः शर्म यच्छतु (१ यंसत) ।
- [७१०] १०६६४ = (६९२) १०६५१ (वसुकर्णो वासुकः ।
विश्वे देवाः)
- [७१०] १०६६४ = (७००) १०६५२
- [७१५] १०६६९ आप ओषधीर्वनिनानि यज्ञिया ।
(४४८) ७३४१५ आप ओषधीर्वनिनो जुषन्त ।
(मरुतः ३६९) ७५६१५ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । मरुतः)
- [७१८] १०६६१२ आदित्या रुद्रा वसवः सुदानवः ।
(२२२) ३८८८ आदित्या रुद्रा वसवः सुनीथा ।
- [७१९] १०६६१३ दैव्या होतारा प्रथमा पुरोहित ।
(अग्निः १९४८) २३१७ (गृत्समदः शौनकः । [आप्री-
सूक्त] देव्या होतारौ प्रचेतसौ)
... प्रथमा विदुष्टरः ।
- [७१९] १०६६१३ ऋतस्य पन्थामन्वेमि साधुया ।
(उषा ७४) ११२४३ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः ।
उषाः)
- [७२६] १०९२३ (शार्यातो मानवः । विश्वे देवाः)
तेमिश्चष्टे वरुणो मित्रो अर्यमा ।
(अग्निः ७१) १३६४ (कण्वो घौरः । अग्निः)
देवासस्त्वा वरुणो ... ।
- [७२७] १०९२३ सूरौ इक्षीके वृषणश्च पौंस्ये ।
(इन्द्रः ३१५१) ४४१६ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रा-
वरुणौ)
- [७३२] १०९२१२ = (६७९) १०६४४
- [७३६] १०९३१ (तान्वः पार्थ्यः । विश्वे देवाः)
महि धावापृथिवी भूतमुर्वी ।
(इन्द्रः ३१६४) ६६८४ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः ।
इन्द्रावरुणौ)
महित्वा धौश्च पृथिवी भूतमुर्वी ।
- [७३९] १०९३४ ते धा राजानो अमृतस्य मन्द्राः ।
(९२) ११२२११ श्रोता राजानो अमृतस्य ... ।
- [७३९] १०९३४ अर्यमा मित्रो वरुणः परिउमा ।
(अग्निः २४३) १७९३ (गोतमो राहुगणः । अग्निः)
- [७४१] १०९३६ महः स राय एषते ।
(अग्निः ३५३) ११४९१ (दीर्घतमा औचथ्यः । अग्निः)

- [७४६] १०९३११ सदा पाह्यभिष्टये ।
(इन्द्रः १००८) ११२९९ (परच्छेपो दैवोदासिः । इन्द्रः)
सदा पाह्यभिष्टिभिः ।
- [७५०-६१] १०१००१-११ (दुवस्युर्वान्दनः । विश्वे देवाः)
आ सर्वतातिमदितिं वृणीमहे ।
- [७५८] १०१००८ = (६९०) १०६४१५
प्रावा यत्र मधुपुदुच्यते बृहद् ।
- [७५९] १०१००९ विश्वा द्वेषांसि सनुतयुयोत ।
(१५२) २१२९२ यूयं द्वेषांसि ... ।
- [७६३] १०१०११ (बुधः सौम्यः । विश्वे देवाः, ऋत्विजो वा)
दधिक्रामग्निमुषसं च देवीम् ।
(१६९) ३१२०५ (गाथी कौशिकः । विश्वे देवाः)
- [७७१] १०१०१९ सा नो दुहीयद्यवसेव गत्वी सहस्रधारा
पयसा मही गौः ।
(इन्द्रः ३१५०) ४४१५ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रावरुणौ)
- [७८३] १०११४२ = (१७४) ३५४५
परेषु या गुह्येषु व्रतेषु ।
- [७९२] १०१२६१ (शैलूषिः कुत्सलबर्हिषो, वामदेव्योऽ-
होमुग्वा । विश्वे देवाः)
न तमंहो न दुरितं ।
२१२३५ (गृत्समदः शौनकः । ब्रह्मणस्पतिः)
- [७९३] १०१२६२ वरुणमित्रार्थमन् ।
(अदितिः ० २७४) ५६७१ (यजत आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
- [७९४-९८] १०१२६३-७ वरुणो मित्रो अर्यमा ।
(अग्निः ३१) ११२६४ (शुनःशेष आजोगर्तिः । अग्निः)
(अदितिः ० ५६) ८१८३ (इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्यः)
- [७९८] १०१२६७ शर्म यच्छन्तु सप्रथ आदित्यासो यदीमहे ।
(अदितिः ० ५६) ८१८३ (इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्यः)
... ... यदीमहे ।
- [७९९] १०१२६८ यथा ह त्यद्वसवो गौर्यं चित्पदि
षिताममुञ्चता यजत्राः ।
एवो वसन्मुञ्चता व्यंहः प्र तार्यन्ते प्रतरं न आयुः ॥
(अग्निः ७३९) ४१२१६ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
- [८०७] १०१२८८ इन्द्र मा नो रीरिषो मा परा दाः ।
(इन्द्रः ८५४) ११०४८ (कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्रः)
मा नो वधीरिन्द्र मा परा दाः ।

- [१८] १०।१४।३ (अग्निस्तापसः । विश्वे देवाः)
अग्निं गोभिर्हवामहे ।
(अग्निः १२१९) ८।११।६ (वत्सः काण्वः । अग्निः)
[१९] १०।१४।४ इन्द्रवायू वृहस्पतिं सुहवेह ।
(६) १।१४।३ (मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः)
... मित्राग्निं ।
[२०] १०।१४।६ ब्रह्म यज्ञं च वर्धय ।
(इन्द्रः ६१) १।१०।४ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
ब्रह्म ... यज्ञं च वर्धय ।
[२१] १०।१५।५ (भुवन आप्त्यः, साधनो वा भौमः ।
विश्वे देवाः)
आदित् स्वधामिषिरां पर्यपश्यन् ।
(मरुतः १९१) १।१६।८ अगस्त्यो मैत्रावरुणिः ।
(मरुतः)
[२२] १०।१६।१ (नैऋतः कपोतः । विश्वे देवाः)
शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ।
(सोमः १२२३) ६।७४।१ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः ।
सौमारुद्रौ)
शं नो भूतं द्विपदे— ।
[२३] १०।१८।१-३ (१ प्रथो वासिष्ठः, २ सप्रथो
भारद्वाजः, ३ धर्मः सौर्यः । विश्वे देवाः)
धातुर्धुतानात् सवितुश्च विष्णोः ।

- [१२०२] १।१६४।५० (दीर्घतमा औचथ्यः । साध्याः)=
१०।९०।१६ (नारायणः । पुरुषः)
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥
[१२११] १०।५३।५ (सौचीकोऽग्निः । देवाः)
गोजाता उत ये यज्ञियासः ।
(४६२) ७।३५।१४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । विश्वे देवाः)
[१२११] १०।५३।५ (सौचीकोऽग्निः । देवाः)
पृथिवी नः पार्थिवात् पारवंहसोऽन्तरिक्षं दिव्यात् पावसात् ।
(इन्द्रः ३३००) ७।१०४।२३ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ।
पृथिव्यन्तरिक्षे [उत्तरार्धः])
[१२१३-१४] १०।७२।२-३ असतः सदजायत ।
[१२२१] १०।८५।१७ (सूर्यासावित्री ऋषिका । देवाः)
मित्राय वरुणाय च ।
(सोमः ९३९) ९।१००।५ (रेभसूनु काश्यपौ ।
पवमानः सोमः)
[१२६४] १।१३६।६ (परच्छेपो दैवोदासिः । लिङ्गोक्ताः)
मित्राय वोचं वरुणाय मीढुषे सुमृळीकाय मीढुषे ।
(इन्द्रः १००२) १।१२९।३ (परच्छेपो दैवोदासिः ।
इन्द्रः)
मित्राय वोचं वरुणाय सप्रथः सुमृळीकाय सप्रथः ।

दैवतसंहितायां विश्वे-देवाऽन्तर्गता देवताः (१) ऋग्वेदमन्त्राणाम् ।

अंशः
अक्तुः
अक्षरम्
अग्निः
अग्नि-जिह्वा
अग्नि-दीपयः
अग्नी-पर्जन्यौ
अग्निवायुआदित्यपदाधानवेत्तारः
अग्निवायुसूर्याः
अग्नी-षोमौ
अग्न्यादित्ययोः अनुवेत्ता व्यतिहारेण वा
उपासकः
अङ्गिराः-रसः
अज एकपात्
अतिथिः
अत्रयः
अथर्वा
आदितिः
अद्रिः
अद्री (पत्नी-यजमानौ)
अध्वरः
अनात्मज्ञः (तत्परिदेवनम्)
अनुमतिः
अन्तरिक्षम्
अपां नपात्
अप्याः
अभिषाचः
अर्णवः
अर्यमा
अर्वन्तः
अश्वः-श्वाः

अश्विना
असुरः
अ (रतृ)-स्तारः
अहः
अद्विर्बुध्न्यः
अहोरात्रे
आत्मज्ञान- अज्ञाने
आत्रेयः प्रतिक्षत्रः
आदित्यः
आदित्य सत्यं दुर्ज्ञेयम्
आदित्याः
आपः
इन्द्रवः
इन्द्रः
इन्द्राग्नौ
इन्द्रापर्वतौ
इन्द्रापूर्षणौ
इन्द्रामरुतौ
इन्द्रावरुणौ
इन्द्रवायू
इन्द्राविष्णू
इन्द्रा-सोमौ
इन्द्राणी
इळा
इळाः (भूमिस्थाना देवताः)
उक्षणः पञ्च
उर्वशी
उलूका
उषाः
उषासानक्ते
ऋतवः
ऋत्विजः

ऋभवः
ऋभुक्षाः-क्षणः
ऋषयः (पञ्च)
ऋषयः (सप्त)
ओषधयः- धीः
ककुदः
कण्वः
कपोतः
कृशानुः
क्षत्रस्य पतिः
शयः
गायत्रम् (साम)
गिरयः
गुह्यः
गौः
गोजाताः
गोयाम्ना (तान्वदिदक्षा)
गोरूपेण आदित्यरश्मिसमूहः गोरूपिणी
आहुतिः वा
गो- सवितारौ (मेघवायू वा)
माः (देवपत्न्यः, पत्नीः)
प्रावाणः
घर्मः
घर्मा
चक्रम्
चन्द्रमाः
जगत् (साम)
जनाः पञ्च
ज (निः)-नयः
जिह्वा
जीवात्म-परमात्मानौ

निर्ऋतिः

निशाः

नौः (दैवी)

पतयः, सत्यस्य

पत्नीः [माः, देवपत्नीः]

पन्थाः

परमात्मा (आदित्यः वा)

परमेश्वरस्य अविषयत्वम्

पर्जन्यवाता

पर्वतः-तासः

पशुः

पार्थिवाः

पितरः

पुरन्धिः

पूषा

पृथिवी

पृथ्विः

प्रजापतिः

प्रदिशः

प्रमतिः (अग्नेः)

प्रवाचनम् (देवानाम्)

प्रश्नाः

प्रश्नप्रतिवचनानि

बर्हिः

बृहत्

बृहदुक्त्यः

बृहस्पतिः

ब्रह्मा

ब्रह्मा

ब्रह्मजाया

ब्रह्मणस्पतिः

भगः

भवित्रम्

भूतानि

भूमिः

भृगवः

मदः

मनः (मन आवर्तनम्)

मनीषा

मनीषिणः

मनुष्याः

मन्म

मरुतः

मही

माता

मित्रः

मित्रावरुणा

मेघः

यजमानब्रह्माणौ

यजुः

यज्ञः

यमः

रथः

रथन्तरं साम

रश्मयः (सूर्यस्य, आदित्यस्य वा)

राका

राजानः

रातिषाचः

रायः

रुद्रः-द्राः

रुद्रियः

रोदसी (एकवचनम्) (रुद्रस्य पत्नी)

रोदसी (द्विवचनम्) (द्यावापृथिवी)

वत्सः

वनस्पतिः

वना

वनिनः

वरुणः

वसवः

वाक्

वाजः-जाः

वाजी [वृहदुक्त्यपुत्रः]

वाजिनः [अग्नि-वायु-सूर्याः]

वातः

वातापर्जन्या

वायुः

वास्तोष्पतिः

विद्युत्

विद्वान् पथः

विधाता

(१३६)

विट् (श्) सर्वा
विश्वे देवाः
विष्णुः
वृकः (अरुणः)
वृषस्तुभः
वृष्टिः
वेदिः
व्रजिनीः
व्रतानि
शंसः
शमी (गोत्वेन निरूपिता)
शम्भुः
शरीरम्
शर्यणावन्तः
संवत्सरः
संसारः

सत्यस्य पतयः (पतयः सत्यस्य)
समुद्रः
सरमा
सरयुः
सरस्वती (नदी)
सरस्वती (वाक्)
सविता
साम
सिनीवाली
सिन्धुः-न्धवः
सुकृतानि, सुकृताम् (सुकृतां सुकृतानि)
सुतम्भरः (ऋषिः)
सुपर्णः
सुमतिः, आदित्यानाम्
सुहवानि देवानाम्
सूनुता

सूर्यः
सूर्यामासा
सोमः
सोमजामयः
सोमसूर्यचक्रभ्रमणानि
स्तोता
स्तोमः (देवस्तुतिः)
स्वः
स्वधावान् (प्रश्नोत्तराणि)
स्वरूपां मितयः
स्वस्तिः
हविष्कृतः
हस्तौ
होता
होतारा दैव्या

विश्वे-देवाऽन्तर्गतानां देवतानां गुणबोधकपदानि ।

अंशः ५, ४२, ५; २६४

अक्तुः १०, ६४, ३; ६७८ । १०, १४, ९; १२६९

अक्षरम् १, १६४, २४; १२२ । ३, ५५, १; १९२

अर्कम् १२२

गायत्रम् १२२

त्रैष्टुभम् १२२

महत् १९२

वाकम् १२२

अग्निः १, १४, १-१२; ४-१५ । १०५, ४, १३-१४; ४१, ५०-
५१ । १०६, १; ५७ । १०७, ३; ६६ । १२२, ३, ५;
८४, ८६ । १३९, १; ९७ । १६४, १, ११; ९९, १०९ ।
१८६, ३; १४२ । ३, २०, १, ५; १६८-६९ । ५४, १,
३, १९, २१-२२; १७०, १७२, १८८, १९०-९१ । ५५,
२-१०; १९३-२०१ । ८, ८; २२२ । ५७, १, ४-६; २२३,
२२६-२८ । ४, ५५, ४, ७-८; २३२, २३५-३६ । ५, ४१,
४, १०; २४३, २४९ । ४२, ३; २६२ । ५, ४३, ६, १०,
१३-१५, २८२, २८६, २८९-९१ । ४४, ३-५, ८, १४-१५;
२९६-९८, ३०१, ३०७-८ । ४५, ४; ३१२ । ४६, २, ४,
३२१, ३२३ । ४७, ७; ३४४ । ४८, १, ४-५; ३३५, ३३८-
३९ । ४९, ३; ३४२ । ५०, ४; ३४८ । ५१, १-३, ८-१०,

१३-१४; ३५०, ३५३-५५, ३५८-५९ । ६, २१, ९; ३६१ ।
६, ४२, १-२, ९; ३६३-६४, ३७१ । ५०, १, ९; ३७८, ३८६ ।
५१, ५, १०, १३; ३९५, ४०२, ४०५ । ५२, ५-६, १२, १७;
४१३-१४, ४२०, ४२५ । ७, ३४, ८, १४, २५, ४३३, ४३९,
४४८ । ३५, ४; ४५२ । ३६, १; ४६४ । ३९, १, ४-७;
४८१, ४८४-८७ । ४०, ३; ४९० । ४१, १; ४९४ । ४२, २-६;
४९६-५०० । ४३, २-३, ५, ५०२-३, ५०५ । ४४, १; ५०६ ।
८, २७, १-३; ५१२-१४ । २८, २-३; ५३५-३६ । २९, १;
५४० । ८, ५८, २; ५५६ । ६९, ११; ५५८ । १०,
३१, १०; ५७७ । ३५, १, ३-१३; ५८०, ५८२-९२ ।
३६, ६, १२; ५९९, ६०५ । ५२, ३-४, ६; ६१०-११,
६१३ । ५६, १; ६१४ । ५७, २; ६२२ । ६१-६२, १४,
१७, २०-२१; ६३५, ६४०, ६४३, ६४६-४७ । ६३, ९;
६६९ । ६४, ३-४, ८; ६७८-७९, ६८३ । ६५, १; ६९१ ।
६६, ४, १३; ७१०, ७१९ । १०, ९२, १-४, ११, १४;
७२१-२४, ७३१, ७३४ । १००, ६; ७५६ । १०१, १; ७६३ ।
१०९, १-२; ७७५-७६ । ११४, ४; ७८५ । १२६, ५, ८;
७९६, ७९९ । १२८, १-२, ६; ८००-१, ८०५ । १४१, १;
३, ६; ८१६, ८१८, ८२१ । १६५, २; ८२९ । १८१, २;
८३५ । १०, ९८, ८-१२; १२२९-१२३३ । १, १३६, ६-७;
१२६४-६५ ।

अग्निदेवताया गुणबोधकपदानि ।

अक्तोः अतिथिः	७२१	अरिष्टगातुः	२९६	कृच्छ्रा चरन्	६११
अगोष्ठाः	६७८	अरुषः	३६४	केतुः	१९३
अजरः	२९६	अवमः	४१	केतुः अध्वरस्य	२२२
अजस्पाः	७२२	अश्वाः अग्नेः-		केतुः यजतः	७२१
अजस्रः	१७०	अरुषाः	४२६	केतुः यज्ञस्य	३६४
अतिथिः	४९८	रोहितः	४९६	क्रिविः	२९७
अतिथिः अक्तोः	७२१	वीरवाहाः	४९६	गोः निषिधं अन्तः चरन्	१९९
अतिथिः प्रेष्ठः	१४१	हरितः	४९६	गोपाः	२०१, ५३६, ८०५
अदन्धः	८०५	असिन्वन्	४८६	माः वसानः	२८९
अदमकतुः	३६४	आक्षित् पूर्वांशु	१९६	घृतपृष्ठः	९३
अधासु मन्द्रः	६४६	आततः तन्तुः देवेषु	६२२	घृतेन आहुतः	५२९
अधिक्षित्, अभयानां विशाम्	७३४	आश्वत्तमाः	२४३	अतुरनीकः	३३२
अध्यक्षः	८००	आहुतः	६२२	चरन् अन्वप्रम्	१९८
अरुक्	६४०	आहुतः घृतेन	५९३	चरन् बहुकृच्छ्रा	६११
अवरस्य केतुः	२२२	इध्मं सनिता	६३५	चारः	७५६
अनीकैः (युक्तः) दिव्यैः दम्भेभिः	१७०	इन्द्रवान्	५८०	चारु वसानः	३३९
अनूक्त, अपरा	१९६	इन्द्रस्य सुकृतम्	७५६	चिकित्वान् दैन्यं जनम्	४२०
अतः चरन्, गोः निषिधम्	१९९	इषस्पतिः	२३२	जरिता	७५६
अन्तः चरन्, महान् रोचनेन	२००	ईज्यः	१७०, ३६४	जर्भुरत् हरिणीषु	७२१
अन्तमः	१९९, ७५६	ईशे महः सौभगस्य	२३६	जातः शम्भ्यां पित्रोः	५७७
अन्तर्मतिः	१९९	ईशे वसव्यस्य	२३६	जातवेदाः	२२८, २८६, ६४०
अन्वप्रं चरन्	१९८	उग्रः	७७५	जीवः	२९८
अप-म्लुक्तः	६११	उदक्तः	५३६	ज्योतिरनीकः	४९२
अपरा अनूक्त	१९६	उपब्दिः	६३५	तनूनपात्	७२२
अपाच्याः	५३६	उषसः पुरोहितः	७२२	तन्तुः देवेषु आततः	६२२
अपा नपात्	८५	ऋजुगाथः	२९८	तपः	७७५
अबन्धनः	१९७	ऋतं महत्	७१०	तुर्वणिः शस्तिभिः	१४२
अमोशवः अग्नेः-	२९७	ऋतर्षातिः	४०२	तृतीयः भ्राता (आदित्यस्य)	२९
ऋतावृधः	२९७	ऋतस्य होता	६४०	त्रितः	२४३
यम्यः	२९७	ऋतावान्	४८७	त्रिधातु श्रृंगः	२८९
सर्वशासाः	२९७	एकः	१९७	त्रिवृत्	६११
सुयन्तवः	२९७	एकः एव	५५६	दधानः प्रिया अमृता धामानि	२०१
सुयुजः	२९७	ओमभिः विश्वेभिः हुवानः	२८९	दस्मः	३४२
यम्यः	२८९	ओषधीः वसानः	२८९	दिनः शिशुः	३६४
अतिः	६४६	कण्वहोता	२४३	दिवः सज्जोषाः	२४३
अरतिः युवत्योः	३६४	कविः	६७९, ७५६	दिव्यः	२४३
अरि यतन्	३३९	कवीनां कवितमः	२६२	दूतः	४१, २००
१८ दै. (विश्वे देवाः)				दूतः देवानाम्	१८८

(१३८)

देवत-संहितायाम्

देवः	१५, ५१	प्रेष्ठः	४३९	वपूंषि बिभ्रत् नः अभिविचष्टे	२००
देवानां कृतः	१८८	प्रेष्ठः अतिथिः	१४१	वयाकिनं (सोमं) सञ्जर्भुराणः	२९८
देवेन्द्रः	६७८	बर्हिः अनु प्रसर्त्तणः	२९६	वयोधाः	२८९
दैव्यं सहः	७५६	बहुधा समिद्धः	५५६	वराः (व० व०)	६२०
द्योतनः	५४०	बुधः	१९८	वरुणः	३३९
द्रविणोदाः	३२३, ७३१	बृहदिवः	२८९	वर्षसः (पष्ठी)	३३८
द्विबन्धुः	६४३	भगः	३३२	वषट्कृताः (व० व०)	५३५
द्विमाता	१९७, १९८	भद्रः	३४२	वसर्हा	८४
द्विवर्तनिः	६४६	भर्गः इनाम यस्य	६४०	वसव्यस्य ईशे	२३६
धनदाः	८१६	भ्राता	३९७	वसानः ओषधीः	२८९
धर्णसिः	२८९	भ्राता तृतीयः (आदित्यस्य)	९९	वसानः माः	२८९
धर्ता प्रजायाः	६३५	मतिः	१९९	वसानः चारु	३३९
धर्मन्	७२२	मध्यमः	७८५	वसुः	२२८, ३५८
धामन्	३३५	मध्ये हितः	२९६	वसुपतिः वसूनाम्	४१३
नराशंसः	६०	मनुर्हितः	१४	वसूनां वसुपतिः	४१३
पञ्चयामः	६११	मन्द्रः अधासु	६४६	वह्निः	१६८, ३४८
पत्नीवान्	५३५	मन्युं परेषां प्रतिमुदन्	८०५	वाजं सनिता	६३५
परस्तात् शयुः	१९७	महः सौमगस्य ईशे	२३६	वाजी	६०
पलितः	२००	महत् ऋतम्	७१०	विदथस्य साधनम्	७१२
पुत्रः पूर्वः	५७७	महान् रोचनेन अन्तः चरन्	२००	विदथेषु सम्राट्	१९८
पुरन्धिः	३६१	महे (चतु०)	३३५	विदथ्यः	१७०
पुरस्तात्	५३६	मेधिरः	५१, ५४०, ७५६	विदुष्टरः	५०, ५१
पुष्त्रा	१९५	यजतः केतुः	७२१	विप्रः	५, १२, ३५२
पुरुष प्रसूतः	१८८	यज्ञः	४१, ७५६	विभावसुः	७२१
पुरोहितः	५१२, ७१९	यज्ञस्य केतुः	३६४	विभावा	३७१, ६४६
पुरोहितः उषसः	७२२	यज्ञस्य प्रसाधनः	६२२	विभृतः	१९५
पुर्वणीकः	४९७	यज्ञस्य रथ्यः	७२१	विशस्पतिः	८१६
पूर्वः पुत्रः	५७७	यतन् अरिम्	३३९	विशां अभयानां अधिक्षित्	७३४
पूर्वासु आक्षित्	१९६	यवीयुत्	६३५	विशां विशपतिः	७२१
प्रजायाः धर्ता	६३५	यष्टा	६४३	विशां होता	७२१
प्रतिमुदन् परेषां मन्युम्	८०५	यह्वः	७२२	विशपतिः विशाम्	७२१
प्रथमः	७१९	युवत्योः अरतिः	३६४	विश्वभोजः	२४३
प्रथमा पुरोहितः	७१९	युवा	२९६	विश्वानरः	१००
प्रयुतः	१९५	रथ्यः यज्ञस्य	७२१	विश्वानरः	२०१
प्रसर्त्तणः बर्हिः अनु	२९६	रराणः	२८९	विश्वानरः	२०१
प्रसाधनः यज्ञस्य	६२२	राजा	१९५	विश्वानरः	२०१
प्रसूतः	१८८	रोचनेन महान् अन्तः चरन्	२००	विश्वानरः	२०१
प्रसूतः पुरुष	१८८	वक्त्रराजसत्यः	४०२	विश्वानरः	२०१
प्राचीनरश्मिः	५९९	वत्सः	१९७	विश्वानरः	२०१
प्रियः	३३५	वनेषाट्	६४६	विश्वानरः	२०१

२००	वृषा	२९६, ७२१	संपतिः	४०५	सुधितः	४९८
२०८	वैतरणः	६४३	सनिता इध्मम्	६३५	सुपर्णः	७८५
२८९	वैद्युतं तेजः	३३५	सनिता वाजम्	६३५	सुप्रीतः	४९८
६२०	वैद्युताग्निः	३३५	सन्त्यः	३५२	सुमनाः	१९१, ८१६
३३९	वैश्वानरः	३५८	सप्ततन्तुः	६११	सुशंसः	४१४
३३८	शक्तिः अग्नेः-		समानः	१९५	सुशेव्यः	२९०
५३५	मायिनी	३३५	समिधानः ४२५, ५८२-५९१, ६०५		सुखरुः	२९८
८४	वृणाना	३३५	समिद्धः १९४, ५०६, ५९२		सुहवः	४१४
२३६	शम्यां पित्रोः जातः	५७७	समिद्धः बहुधा	५५६	सूनुः सहसः	३६४, ३८६
२८९	शयुः परस्तात्	१९७	सम्राट् विदथेषु	१९८	सौभगस्य ईशे	२३६
२८९	शस्त्रिभिः तुर्वाणिः	१४२	सर्वताता	१८८	स्थिरः	६४३
३३९	शिशुः	२९६	सविता	३३२	स्वक्षत्रः	३३५
३, ३५८	शिशुः दिवः	३६४	सहः दैव्यम्	७५६	स्वयशः	३३५
४१३	शुक्लासु शोचन्	७२१	सहसः सूनुः	३६४, ३८६	हरिणीषु जर्भुरत्	७२१
४१३	शेवधः	६४६	सहसावन्	५०५	हव्यवाट्	६१०, ६११
८, ३४८	शोचन् शुक्लासु	७५१	सहस्यः	५००	हव्याद्	४३९
६३५	शोचिष्केशः	२४९	सहोभरिः	२९६	हितः विस्तुहा मध्ये	२९६
६०	श्रेष्ठवर्चाः	४०२	साधनं विदथस्य	७२२	हुवानः	२८६
७२२	सक्षणः	२४३	सादन् योनिं आ	५४०	हुवानः विश्वेभिः ओमभिः	२८९
१९८	सचा	३३८	सुकृतं इन्द्रस्य	७५६	होता १२, १४, ५१, १९८, २९६, ३७१,	
१७०	सजोषाः	१४२, २४३	सुक्षत्रः	३६३, ४०२	६१३, ६४०, ७७६	
५०, ५१	सज्जभुराणः सुतेष्टुभं वयाकिनम्	२९८	सुजिह्वः	१०	होता विशाम्	७२१
२, ३५२	सत्तः	५०, ५१	सुद्रविणः	६४७		

१९५	अग्निजिह्वा ३, ५७, ५, २२७		अग्नि-वायु-आदित्यपदाधानवेत्तारः १, १६४, २३; १२१
८१६	उरुर्वा	२२७	(सवनत्रय-छन्दस्त्रय-विधानं वा ।)
७३४	मधुमती	२१७	गायत्रे अधि गायत्रम्-अग्निपदम् ।
७२१	सुमेधा	२२७	त्रैष्टुभात् त्रैष्टुभं पदम्-वायुपदम् ।
७२१	अग्निदीप्तयः ३, ५७, ४; २२६		जगति आहितं जगत्-आदित्यपदम् ।
७२१	ऊर्ध्वाः	२२६	अग्निवायुसूर्याः ३, ५६, ८; २२१ । १०, ६६, १०; ७१६ ।
२४३	दर्शता	२२६	१०, ११४, २; ७८३
१००	भूरिवाराः	२२६	इषिराः २२१
२०१	यजत्राः	२२६	ऋतावानः २२१
५९२	अग्नीपर्जन्यौ ६, ५२, १६;	४२४	दूळभासः २२१
२०१	अन्यः इळां जनयत् [अग्निः]	४२४	निर्ऋतिः तिष्ठः ७८३
२९६	अन्यः गर्भं जनयत् [पर्जन्यः]	४२४	वाजिनः ७१६
७७५	सुहवा	४२४	अग्नीषोमौ १०, ६६, ७; ७१३
२८९			

(१४०)

देवत-सहितायाम्

पुरुप्रशस्ता वृषणा ७१३
 अग्न्यादित्ययोः अनुवेत्ता व्यतिहारेण वा उपासकः । १,१६४,
 १८; ११६
 कवीयमानः ११३
 अङ्गिराः-रसः ५,४५,५-८; ३१३-१६ । ७,४२,१,४९५ ।
 १०,६१,१०; ६३६ । १०,६२,१-६; ६५४-६५९ ।
 १०,९२,२५; ७३५
 अग्नेः सूनवः ६५८
 अग्नेः परि जङ्गिरे ६५९
 अच्युताः ६३६
 अदक्षिणासः ६३६
 ऋतं वदन्तः ६३६
 ऋषयः ६५८
 गम्भीरवेपसः ६५८
 जनुषा पूर्वः ७३५
 जङ्गिरे अग्नेः परि ६५९
 द्विर्बर्हसः ६३६
 नवग्वाः ३१५,६३३
 पितरः ६५४-६५७
 पूर्वः जनुषा ७३५

यज्ञेन दक्षिण्या समक्ताः ६५४
 विरूपासः ६५८,६५९
 विश्वे ३१६
 सखायः ३१४
 सुध्यः ३१३
 सुमेधसः ६५४-६५७
 सूनवः अग्नेः ६१८
 अज एकपात् २,३१,६; १६३ । ६,५०,१४; ३९१ ।
 ७,३५,१३; ४६१ । १०,६४,४; ६७९ । १०,६५,१३;
 ७०४ । ६६,११; ७१७
 दिवः धर्ता ७०४
 धर्ता दिवः ७०४
 अतिथिः ५,५०,३; ३४७
 अत्रयः ८,२९,१०; ५४८
 अर्चन्तः ५४८
 महि साम मन्वत ५४८
 सूर्य रोचयन् ५४८
 अथ व १०,९२,१०; ७३०
 प्रथमः ७३०

अग्निदेवताया उपमासूची ।

अक्तुं न यहम् ७२२
 अग्निवत् ३५३-५५
 आग्निं न २४३
 पितुमन्तं क्षयं इव ३३८
 पर्वतस्य धारा इव २२८
 पिता इव ४१४
 प्रति परशोः इव ३३८
 आश्वः शिशुं न २९०
 युध्यतः शूरस्य इव १९९
 ऊर्ध्वा ध्रेणिः न ६४६

पुरोहितं अरुषस्य निंसते ।
 अग्ने आ याहि, सुते रण ।
 प्रमृषे प्र जग्मुः ।
 भरद्वाजे विशे रत्नं दधाति ।
 असश्नन्ती प्रमतिः ।
 अग्निः सुशंसः सुहवः ।
 अस्य तां रीतिम् (पश्यामि) ।
 सुशेव्यं वासे नमसा मृजन्ति ।
 अन्तमस्य प्रतीचीनं ददृशे विश्वमायत् ।
 शिशुः मक्षू दन् ।

मिति: १,८९,३,१०; २१,२८ । १०५,१९; ५६ । १०६,
१,७, ५७,६३ । १०७,२-३; ६५-६६ । २,२९,३; १५३,
५५,१८,२०; १८७,१८९ । ४,५५,१,३,७; २२९ ।
३१,२३५ । ५,४२,१-२; २६०-२६१ । ४६,३,६;
३२,३२५ । ४२,३; ३४२ । ५१,११,१४; ३५६,३५२ ।
५०,१; ३७८ । ५१,३-५,११; ३९५-२७,४०३ । ७,
१५,१; ४५७ । ३९,५; ४८५ । ४०,२,४; ४८१,४९१ ।
८२५,१०; ५०२ । २७,५; ५१६ । १०,३६,३; ५९६ ।
३३,५,१०,१७; ६६५,६७०,६७५ । ६४,५,१३; ६८०,
१८८ । ६५,१,९; ६९२,७०० । ६६,३-४; ७०९-१० ।
११,११,१४; ७३१,७३४ । १००,१-११; ७५१-६१ ।

अदितिर्देवताया गुणबोधकपदानि ।

सर्वा ४९१
सन्ध्याः ३२५
सुषु ३९६
सो २३५,३५६,३७८,४८९,४९१,५०२,५१६
सन्ध्या २३१
सो ५१६
स मित्रस्य ५९६
स वरुणस्य ५९६
सो १८७
सो ७५१-७६१
सो ६७०
सो ६७०
सो ४९१
सो विभूतिमत्त्वं सकलजगदात्मत्वं वा २८

अदितिर्देवताया उपमासूची ।

सो माता २६१ प्रति मे स्तोमं जगृभ्यात् ।
सो ७,३५,३; ४५१

(पत्नीयजमानौ) ७,३९,१; ४८१ । ४२,१; ४९५

अद्री देवताया उपमासूची ।

सो इव पन्थाम् ४८१ मेजाते अद्री ऋतम् ।
सो ८,२७,३; ५१४

सो (तत्परिदेवनम्) १,१६४,३७; १३५
सो १३५

मनसा (युक्तः) १३५

संनद्धः १३५

अनुमतिः १०,१६७,३; ८३३

अन्तरिक्षम् ३,५४,१९; १८८ । ३,८,८; २२२ । ५,४२,
१६; २७४ । ७,३५,५; ४५३ । १०,६६,११; ७१७ ।
१२८,९; ८०१ । ५१,५; १२११

सह १८८

उरुलोकः ८०१

रजः ७१७

अपी नपात् १,१२२,४; ८५ । १८६,५; १४४ । २,३१,
६; १६३ । ५,४१,१०; २४९ । ६,५०,१३; ३९० ।
५२,१४; ४२२ । ७,३४,१५, ४४० । ३५,१३; ४६१ ।
१०,९२,१३; ७३३

आशुहेमा १६३

गर्भः वृष्णः भूम्यस्य २४९

दातु ३९०

पप्रिः ३९०

पेरुः ४६१

विश्वदेव्यः ७३३

वृष्णः भूम्यस्य गर्भः २४९

शिवः ४४०

सखा ४४०

अप्याः ७,३५,११; ४५२

अभिषाचः ७,३५,११; ४५९

अर्णवः १०,६६,११; ७१७

अर्यमा १,८९,३; २१ । २०,१-३,९; २९-३१,३७ ।

१०५,६; ४३ । १०७,३; ६६ । १८६,२; १४१ । ३,५४,
१८; १८७ । ४,५५,४,६; २३२,२३८ । ५,४१,२;
२४१ । ४६,५; ३२४ । ६,५०,१; ३७८ । ५१,३;
३९५ । ५२,११; ४१९ । ७,३५,२; ४५० । ३६,४;
४६७ । ३९,५; ४८५ । ४०,२,४; ४८९,४९१ । ८,२७,
१७; ५२८ । २८,२-३; ५३५-३६ । ८३,२,४; ५६०,
५६२ । १०,३२,४; ५७१ । ३६,१; ५९४ । ६१,१७;
६४३ । ६४,५; ६८० । ६५,१,९; ६९२,७०० ।
९२,६; ७२६ । ९३,४; ७३९ । १२६,१-७; ७९२-९८ ।
१४१,२; ८१७ । १,१३६,६; १२६४ ।

(१४१)

अर्यमा देवताया गुणबोधकपदानि ।

(मित्रावरुणाभ्यां सहितत्वेन बहुवचम् ।)

अतूर्तपन्थाः	६८०
अपबाधमानाः द्विषः	३०
अपाच्याः	५३६
अप्रमूराः	३०
अमृताः	३०
अमृतस्य मन्द्राः	७३९
गोपाः	५३६
चर्षणीनां राजा	७९७
युक्षः	१२६४
द्विषः अपबाधमानाः	३०
नेता	७९७
पुरुजातः	४५०
पुस्तथः	६८०
प्रचेतसः	५६०
मन्द्राः	७३९
महः (षष्ठी)	४३
यज्ञियः	१८७
गुजः	५६०
राजानः अमृतस्य	७३९
राजा चर्षणीनाम्	७९७
वसवानाः	३०
वस्वः	३०
वृषासः	५६०
शम्	३७
सजोषसः	१४१, ५२८
सप्तहोता	६८०
सरातयः	५२८
सुकतुः	४६७
सुशेवः	३७८
स्मद्रातिषाचः	५३५
अर्वन्तः	७, ३९, १२; ४६० । १०, ६४, ६; ६८१
मितद्रवः	६८१
वाजिनः	६८१
विश्वे	६८१
हवनश्रुतः	६८१

उपमासूची ।

मेघसातौ इव ६८१ त्मना सहस्रसाः ।

अश्वः-श्वाः १, २६४, २-३; १००-१०१ । १०, ११४, १०;

७२१

एकः १००

सप्त १०१

सप्तनामा १००

रथस्य धूर्षु युक्तासः ७९१

अश्विनौ १, ८९, ३-४; २१-२२ । १२२, ४-५; ८५-८६ ।
 १८६, १०; १४२ । २, ३१, ४; १६१ । ३, २०, १, ५;
 १६८-६९ । ५४, १६; १८५ । ५७, २; २२४ । ५, २६,
 ९; २३९ । ४१, ३; २४२ । ४२, १८; २७६ । ४३, ८,
 १७; २८४, २९३ । ४६, २, ४; ३२१, ३२३ । ४९, १ ।
 ३४० । ५१, ८, ११; ३५३, ३५६ । ६, ४९, ५; ३६७ ।
 ५०, १०; ३८७ । ७, ३५, ४; ४५२ । ३९, ४; ४८४ ।
 ४०, ५; ४९२ । ४१, १; ४९४ । ४६, १; ५०६ । ८, २५,
 १०; ५०९ । २७, ८; ५१९ । २९, ८; ५४६ । ८३, ७;
 ५६५ । १०, ३५, ६; ५८५ । ३६, ६; ५९२ । ५२, २;
 ६०९ । ६१, ३-४, १५; ६२९-३०, ६४१ । ६४, ३; ६७८ ।
 ६५, १२; ७०३ । ६६, ५; ७७१ । ९२, १३; ७३३ ।
 ९३, ५-७; ७४०-४२ । १२८, ७; ८०६ । १८४, २; ८३८

अश्विनौ देवताया गुणबोधकपदानि ।

अदब्धा	१८५
अपां वृषण्वसू	७४०
अमृता	२७६
अर्विमन्ता	६४१
उभा	८०६
चार ययोः नाम	१८५
दिवः नपाता	६३०
देवौ	७४१, ८३८
द्रवन्ता हवनेषु तिग्मम्	६२९
द्वा	५४६
धिष्ण्या	२२
नपाता दिवः	६३०
नरा	३४०, ३६७, ३८७
नाम ययोः चारु	१८५

वसत्या	३२१, ३६७, ३८७; ४८४; ५०९, ६४१
रती	१६१
पान्ता	८५
वितरा	१८५
मुमुजा	३४०
मुक्कसजा	८३८
मुमुपृच्छा	१८५
मन्द	६४१
मोमुवा	२८४
मेश	२४२
अश्विनोः-	
तूतुजिः	५८५
मनसा युजानः	३६७
विरुक्मान्	३६७
विदौ रयीणाम्	१८५
रयीणां रयिदौ	१८५
राणा वृक्तबर्हिषे	६४१
रा	७४२
रौद्रौ	६४१
रिप्रा	३८७
वृक्तबर्हिषे रराणा	६४१
वृषणा	२२४
वृषणसू अपाम्	७४०
व्यन्ता	८५
वृमस्पती	७४१
सराधा	२८४
मुहवा	७३३
मुहस्ता	२२४
वनेषु द्रवन्ता	६२९
वितप्रयसा	६४१

अश्विनौ देवताया उपमासूची ।

रुराणिः न नाभिम्	२८४ यातं अर्वाग् गन्तं निधिम् ।
दूतः न	२८४ शान्तमा गीः गन्तु हुवध्यै ।
प्रवासा इव	५४६ प्र वसतः ।
मनः न	६२९ येषु हवनेषु तिग्मम् ।
ववन्वांसा न	६३० इषं अस्मृतधू ।

असुरः ५, ४१, ३; २४२ । १०, ५६, ६; ६१९

दिवः २४२

स्वर्विद् ६१९

उपमासूची ।

अन्धांसि इव २४२ असुराय मन्म प्र भरध्वम् ।

अस्तारः (अस्तु) १०, ६४, ८; ६८३

अहः १०, १४, ९; १२६९

अहिर्बुध्न्यः १, १८६, ५; १४४ । २, ६१, ६; १६३ । ४,

५५, ६; २३४ । ५, ४१, १६; २५५ । ६, ४९, १४; ३७६ ।

५०, १४; ३९१ । ७, ३५, १३; ४६१ । १०, ६४, ४; ६७९ ।

६९, ११; ७१७ । ९२, १२; ७३२ । ९३, ५; ७४० ।

उपमातिवनिः २५५

कविः ७३२

अहोरात्रे १, १२२, ४; ८५ । ३, ५५, ११, १५; २०२, २०६ ।

४, ५१, ३; २३१ । ६, ४९, ३; ३६५

अदब्धे २३१

अन्यत् गुह्यं अन्यत् आविः २०६

अन्यत् रोचते अन्यत् कृष्णम् २०२

अन्या स्तुभिः पिपिशे सूरः अन्या ३६५

अरुषस्य दुहितरा ३६५

अरुषी २०२

अहनी २३१

ऋच्यमाने ३६५

नाना वपुषि चक्राते २०२

पथ्या २०६

पदे दस्मे अन्तः निहिते इव २०६

पावके ३६५

मातरा ८५

मिथस्तुरा ३६५

विचरन्ती ३६५

विरूपे ३६५

विषूची २०६

श्यावी २०२

सध्रीचीना २०६

स्वसारौ २०२

उपमासूची ।

पदे इव निहिते २०६ दस्मे अन्तः ।

(१४४)

आत्मज्ञानाज्ञाने १,१६४,३९; १३७
जीवात्मनः परमार्थिकं रूपम् (सायनाचार्याः)
आत्रेयः (ऋषिः) प्रतिक्षत्रः ५,४६,१; ३२०
विद्वान् ३२०

उपमासूची ।

हयः न ३२० विद्वान् अयुजि स्वयं धुरि ।

आदित्यः १,१०५,१६; ५३ । १२२,३; ८४ । १६४,
१,७-८; १०,३१,३३; ९९,१०५-६,१०८,१२९,१३१ ।
३,५५,१४; २०५ । ५,४१,९; २४८ । ६,५१,१; ३२३ ।
१०,६१,१८; ६४४ । ६६,१३; ७१९ । १०९,१; ७७५

आदित्यदेवताया गुणबोधकपदानि ।

अकूपारः	७७५
अदब्धः	३२३
अनिपद्यमानः	१२९
अनीकम्	७०
आचरन् पथिभिः	१२९
आप्लवः	२४८
ऋतः	२०५,३२३
गोपाः	१२२
चक्षुः ल्यत्	३९३
चम्बोः उत्तानयोः योनिः	१३१
ल्यत् चक्षुः	३९३
दर्शतः	३९३
नर्यः	२४८
पथिभिः आचरन्	१२२
पनितः	२४८
परिउमा	८४
पलितः	९९
पिता	१०६,१३१
पुरोहितः प्रथमः	७१९
प्रथमः पुरोहितः	७१९
प्रियः मित्रयोः वरुणयोः	
यज्ञत्रः	२४८,३२३
योनिः उत्तानयोः चम्बोः	१३१
वसानः विषूचीः	१२२
वसानः सध्रीचीः	१२२
वामः	९९,१०५

विः	१०५
विश्वपतिः	९९
विषूचीः वसानः	१२९
शुचिः	३९३
सध्रीचीः वसानः	१२२
सप्तपुत्रः	९९
होता	९९

आदित्यसत्यम् (दुर्ज्ञेयम्) [परमेश्वरस्य अविषयत्वम्,
सायनाचार्याः ।] १,१६४,४-६; १०२-१०४
आदित्याः १,१४,३-४; ६-७ । १०६,२; ५८ । १०७,१-२;
६४-६५ । २,२९,१; १५१ । ३१,१; १५८ । ३,१०,५;
१६९ । ५४,१०,२०; १७९,१८९ । ८,८; २२२ । ५,
५१,१०,१२; ३५५,३५७ । ६,५०,११; ३८८ । ५१,
४-५; ३९६-९७ । ७,३५,६,१४; ४५४,४६२ । ४४,१;
५०६ । ८,२७,३,६,२२; ५१४,५१७,५३३ । ८३,५,८;
५६३,५६६ । १०,३५,९,११-१२; ५८८,५९०-९१ । १०,
३६,१; ५९३ । ६३,३,५,७,१३,१७; ६६३,६६५,६६७,
६७३,६७५ । ६५,१,९; ६९२,७०० । ६६,३४,११;
७०९-१०,७१८ । १२६,५,७; ७९६,७९८ । १२८,१;
८०८ । १४१,३; ८१८ । १५७,२-३; ८२४-२५ । ९८,१;
१२२२

आदित्यानां गुणबोधकपदानि ।

अग्निजिह्वाः	१७९
अदब्धाः	३९६
अद्रिबर्हाः	६६३
अपरिहृता	६६५
इषिराः	१५१
ईशानासः वामस्य	५६३
उक्थशुष्माः	६६३
ऋदूदराः	१७९
कवयः	१७९
क्षयन्तः	३९६
तुराः	५१७
दातारः सुवसनस्य	३९६
दिव्याः देवाः	३८८,७००
देवाः दिव्याः	३८८,७००
धृतव्रताः	१५१

रः	३९६, ५१७
प्रधानाः	१७९
पितृसः	५६३
सुमतः पयः येभ्यः माता पिन्वते	६६३
रः	३९६
मानः	१७९, ३९६
मानः	३९६
दशादसः	२९६, ५६३
वर्षदः	१५८
स्य ईशानासः	५६३
धे	३९७, ६७५
भराः	६६३
वस्यवः	१५८
वोषसः	५९०
भतयः	३९६
भजः	१७९, ५३३, ६६५
भराः	३९६
भानवः	५६६, ७१८
भवनस्य दातारः	३९६
भयः	६६५
भयसः	६६३
भविन्तः	१५८

आदित्यानां उपमासूची ।

भः न ५३३ बहुपाय्यं आ वृणीमहे ।
 भः ३, ५४, १९; १८८ । ५५, २२;
 ११३ । ५६, ४, ७; २१७, २२० ।
 ५, ४१, ११-१२; २५०-५१ । ४६, ३;
 १२२ । ६, ५०, ७; ३८४ । ७, ३४,
 २३, २३, २५; ४२७-२८, ४४६,
 ४४८ । ३५, ८; ४५६ । ४४, १; ५०६ ।
 ८, ५४, ४; ५५४ । १०, ३६, १; ५९४ ।
 ६४, ८-९; ६८३-६८४ । ६५, १३;
 ७०४ । ६६, १०; ७१६ । १०९, १;
 ७७५ । १३७, ६; ८१४ । १४, ९;
 १२६९ ।

आपो देवताया गुणबोधक-
पदानि ।

भेः बबुहाणस्य परि सुचः २५१
 भोवचतनीः ८१४
 १९ दै. (विश्वे देवाः)

क्षरन्तीः	४२७
जगतः विश्वस्य जनित्रीः	३८४
जनित्रीः विश्वस्य स्थातुः जगतः	३८४
देवीः	२१७, ६८४, ७७५
परि सुचः बबुहाणस्य अद्रेः	२५१
पृथक् व्रजन्तीः	२१७
पृथ्वीः	४२८
प्रथमजाः	७७५
बबुहाणस्य अद्रेः परि सुचः	२५१
भिषजः	३८४
भेषजीः	८१४
भेषजीः सर्वस्य	८१४
महीः	६८३
मातरः	६८४
मातृतमाः	३८४
मानुषीः	३८४
विश्वस्य जगतः जनित्रीः	३८४
विश्वस्य स्थातुः जनित्रीः	३८४
व्रजन्तीः पृथक्	२१७
शुभ्राः	२५१
समुद्रियः	७०४
सर्वस्य भेषजीः	८१४
सूदयित्वः	६८४
स्थातुः विश्वस्य जनित्रीः	३८४

उपमासूची ।

पुरो न २५१ शुभ्राः आपः शृण्वन्तु ।

इन्द्रवः १, १४, ४; ७

चमूषदः ७

द्रप्साः ७

मत्सराः ७

मध्वः ७

मादयिष्णवः ७

इन्द्रः १, १४, ३-४, १०, ६-७, १३ ।

८९, ५-६; २३-२४ । ९०, ४, ९; ३२,

३७ । १०५, ८; ४५ । १०६, १, ६;

५७, ६२ । १०७, २-३; ६५-६६ ।

१२१, १-१५; ६७-८१ । १६४, ३३;

१३१ । १८६, ६-८; १४५-४७ ।

२, ३१, ३; १६० । ३, ५५, १७; २०८

[पर्जन्यात्मा] । १८ [कालात्मा],
 २०-२२; २०९, २११-१३ । ५७, १-
 ३; २२३-२२५ । ४, ५५, ७, १०;
 २३५, २३८ । ५, ४१, २; २४१ ।
 ४२, ४-६, १३; २६३-६५, २७१ ।
 ४३, ५; २८१ । ४४, १-२; २९४-२५ ।
 ४५, १, ४; ३०९, ३१२ । ४६, २; ३२१ ।
 ४८, ३; ३३७ [सूर्यरूपः] उत्तरार्धस्य
 वा । ४९, ३; ३४२ । ५१, १०, १४;
 ३५५, ३५९ । ६, २१, २, ११; ३६१-
 ३६२ । ५०, ६; ३८३ । ५१, ११;
 ४०३ । ५२, ६, ११; ४१४, ४१९ ।
 ७, ३४, ३-४; ४२८-२९ । ३५, ५-६;
 ४५३-५४ । ३६, ४; ४६७ । ३७,
 ३-८; ४७१-८० । ३९, ४-५; ४८४-
 ८५ । ४०, २; ४८९ । ४१, १; ४९४ ।
 ४२, ५; ४९९ । ४४, १; ५०३ । ८,
 २७, ६, ८; ५१७, ५१९ । २९, ४;
 ५४२ । ६९, ११; ५५८ । ८३, ७;
 ५६५ । १०, ३१, १; ५६८ । ३५,
 १०; ५८९ । ३६, १, ५; ५९४, ५९८ ।
 ५२, ५; ६१२ । ५७, १; ६२१ । ६१,
 ११-१३, १५, २१-२२; ६३७-६३९,
 ६४१, ६४७-४८ । ६३, ९, १४; ६६९,
 ६७४ । ६४, ७, १०, १२; ६८२, ६८५,
 ६८७ । ६५, १, १०; ६९२, ७०१ ।
 ६६, ३, ६; ७०९, ७१२ । ७२, ५-८, १४;
 ७२५-७२८, ७३४ । ७३, ८-२, ११;
 ७४३-४४, ७४६ । १००, १-२, ५-६,
 ११-१२, ७५१-५२, ७५५-५६, ७६१-
 ६२ । १०१, १, १२; ७६३, ७७४ ।
 १२६, ५; ७९६ । १२८, २, ७-८;
 ८०१, ८०६-८०७ । १४१, ५; ८२० ।
 १५७, १-३; ८२३-२५ । १६७, ३;
 ८३३ । ९८, १; १२२२ । १, १३६,
 ६-७; १२६४-१२६५ ।

इन्द्रदेवताया गुणबोधकपदानि ।

अहोमुक् ६६९
 अजूर्यन् २६५

अद्रिवस्	७६	जुजुषाणः	२८१	पर्जन्यः	७१२
अद्रि विष्यन्	३०९	जुजुवानः	७४३	पर्जन्यात्मा इन्द्रः	२०८
अनर्वा	६३२	ज्येष्ठतातिः	१२४	पात्रं नृन्	६७
अन्यासु रोरवीति	१०८	तराणिः	७२	पायुः	४८०
अप्रतीतः	२६५	तरुणः	१४६	पिता १३१ (उत्तरार्धः),	७५५
अप्रयुच्छन्	२३५	तवीयान्	७२८	पुरन्दरः	१८४
अभिमातिषाहः	८०६	तस्थुषःपतिः	२३	पुरन्धिः	२६४, ४८४, ६८२
अभिष्टिः	७६२	तुरः-रासः	२६४, ५१७	पुरुक्षुः	८०७
अमृतः	२६४	तुरणः	७१	पुरुहूतः	७५, १८६, ८०७
अरुणीः राट्	६९	तुरः विशाम्	६९	प्रतीचीनः	२९४
अर्यः	८१	तुविष्टमः	१४५	प्रथमः	५१९
अवः शश्वताम्	७६१	त्राता	२३५, ८०६	प्रमतिः	७५५
अहा वि वर्तयन्	३३७	त्रिककुम्भः	७०	प्रमीतः सुतावताम्	७६१
अहा सं वर्तयन्	३३७	त्रितः	१६३	बर्हिषद्	२९४
आशुः	२९४	त्रिबन्धुः	४७२	भगः	२०८
आहनाः	२७१	दस्मः	३४२	भद्रः	३४२
ईशानः	२३	दिव्यः	४८०	भरः	७५२
उरुव्यचाः	८०७	देवः	४५३	भीमः	७२८
ऋते ते नाम	२९५	देवानां शंसः	५६८	भुवनस्य पतिः	८०६
ऋभुः	६८	दैव्यः जनः	६६९	मघवा ८१, २८५, ४७५, ७५१, ८३३	७५५
ऋभुक्षाः १६३, २४१, २६४, ४७६,		धनानां सजितः	२६४	मनुः	७५५
६८५, ७४३		धाता धातृणाम्	८०६	मरुत्वान्	२९५, १२२१
ऋभुभिः सखा	१८६	धातृणां धाता	८०६	महः-हे (चतु०)	२७१
कारुः	६३८	धियंजिन्वः	२३	महिषः	६८
कालात्मा इन्द्रः	२१९	धृष्णुषेणः	१८४	मायाभिः परः	२९५
ऋतुप्राः	७६२	नरः गोः	६८	मिनानः रूपा वक्षणाष्ट	२७१
ऋतुप्रावा	७६१	नरां सुरभिष्टमः	१४६	यजत्रः	६७, ५६८
क्षमावान्	२०८	नर्यः	७८	यज्ञः	७५५
गिर्वणः	२८३	नाम ऋते ते	२४५	योनिः उत्तानयोः चम्बोः	१३१
गृणानः	२८३	नार्षदः	६३२	रजसस्पतिः	४५३
गोः नरः	६८	नि दधाति रेतः अन्यस्मिन् यूथे	२०८	रथः इन्द्रस्य-	६७४
घ्नन् वृत्राणि	५४२	नृपतिः	६४८	अरिष्यन्	६७४
चम्बोः उत्तानयोः योनिः	१३१	नृन् पात्रम्	६७	प्रातर्यावा	६८९
चर्षणिप्राः	१४५	पतिः	७३४	रथयुक्	६३८
चित्रभानुः	७६२	पतिः जगतः तस्थुषः च	२३	रराणः	६९
जगतः पतिः	२३	पतिः भुवनस्य	८०६	राट् अरुणीः	२०८, २२९
जनः दैव्यः	६६९	पत्यमानः विश्वैः वीर्यैः	१८४	राजा	२७१
जयन्	२९४	परः मायाभिः	२९५	रूपा मिनानः वक्षणाष्ट	२०८
जरिता	७६१	परिज्मा	७२५	रेतः नि दधाति अन्यस्मिन् यूथे	२०८
जिष्णुः	२६५, ४५३			रोरवीति अन्यासु	

७१२	सुखासु हृषा मिनानः	२७१	सखा ऋभुभिः	१८६	रजिष्ठया रज्या पञ्च आ गोः ७६२ सुतूर्पति
२०८	सः इन्द्रस्य-		सचित्	६८२	पर्यग्रं दुवस्युः ।
६७	पार्यः	७८	सचेताः	६८२	मूषः न शिश्रा ४५ व्यदन्ति मा आध्यः ।
४८०	मन्दी	७८	सजितः धनानाम्	२६४	राधः न ६३७ रेतः ऋतमित् तुरण्यन् ।
७५५	वृत्रहा	७८	सहसः सृनुः	३६२	शर्मसदः न वीराः २१२ पुरःसदः
१८४	हस्ते बिभर्ति	५४२	सहसावान्	७४४	(मरुतः) ।
६८२	हस्तः	६४८	साधुः	४७६	सपत्नीः इव ४५ पर्ववः अभितः तपन्ति ।
८०७	हस्तः	४२९	सुकृतः	६६९	स्वर् न ६३९ त्रिषधस्ये देवाः निषेदुः ।
८०७	हस्तः	८०	सुकृतुः	१६०, २९५	हितमित्रः न राजा २१२ उप क्षेति
२९४	हस्तः	३२	सुगोपाः	२९५, ४०३	पृथिवीम् ।
५१९	हस्तः	७४४	सुतपाः	७५१	इन्द्र-अग्नी । ५, ४६, ३; ३२२ । ७, ३५
७५५	हस्तः वसुत्वा	६३८	सुतावतां प्रमतिः	७६१	१; ४४९ । १०, ६५, २; ६९३ ।
७६१	हस्तः वसोः	६३८	सुत्रात्राः	४०३	१२८, ९; ८०८ ।
२९४	हस्तः विन्दमानः	२११	सुनीथः	४०३	तन्वा समोकसा मिथः हिन्वाना
२०८	हस्तः	२६४	सुमेधाः	७०१	वृत्रहल्येषु सत्पती ६९३
३४२	हस्तः प्रमदः (संबो०)	८१	सुरभिष्टमः नराम्	१४६	सत्पती वृत्रहल्येषु समोकसा तन्व ।
७५२	हस्तः	३६२	सुशरणः	२७१	हिन्वाना मिथः ६९३
७९८	हस्तः वसूनि	२११	सुशर्मा	४०३	इन्द्रा-पर्वता १, १२२, ३; ८४
८०६	हस्तः सतयन् अहा	३३७	सुहवः	६६९	इन्द्रा-पूषणा ७, ३५, १; ४४९
५१, ८३३	हस्तः शां तुरः	६९	सूनुः सहसः	३६२	इन्द्रा-मरुतः २, २९, ३; १५३
७५५	हस्तः चर्षणिः	१६०	सूरः	७३, ७९	इन्द्रा-वरुणा ७, ३५, १; ४४९
१, १२२	हस्तः शयायाः	२१२	स्तवानः	३८३	रातहव्या ५४९
२७१	हस्तः वीर्यैः पत्यमानः	१८४	स्तुतः	७५१	इन्द्र-वायु १, १३९, १; ९७ । १०, ६५,
६८	हस्तः अद्रिम्	३०९	स्वयशाः	४७६	९; ७०० । १४१, ४; ८१९
२९५	हस्तः विधैः पत्यमानः	१८४	स्वर्विद्	२९४	पुरीषिणा ७००
२७१	हस्तः विधैः पत्यमानः	२९४	स्वर्विरोचमानः	२९५	वृषभा ७००
६७, ५६८	हस्तः	७०१	स्ववान्	४०३	सुहवा ८१९
७५५	हस्तः	५४२	हरिवान्	२६३, ४७६, ६४८	इन्द्रा-विष्णु ४, ५५, ४; २३२ । १०, ६६
१३१	हस्तः	२७	हरी इन्द्रस्य-		४; ७१०
४५३	हस्तः	२०८	धायू	४६७	इन्द्रा-सोमा ७, ३५, १; ४४९
६७४	हस्तः	२०८	प्रिया	४६७	इन्द्राणी २, ३२, ८; १२६६
६७४	हस्तः	२२५, ५१९, ७२८	वाजिना	७०३	इळा ३, ५५, १४; २०५ । ५, ४१, १२-
६८२	हस्तः देवानाम्	५६८	सुरथा	४६७	२०; २५८-२५९ । १०, ३६, ५;
६३८	हस्तः	६२	हर्यश्वः	४७७, ८०७	५०८ ।
६९	हस्तः	४५	हस्ते वज्रं बिभर्ति	५४२	अभ्युर्वाना २५८
८, २२१	हस्तः	७६१	हिरण्यबाहुः	४२९	उर्वशी २५८
२७१	हस्तः	४६७	ह्रयमानः	२८१	ऊर्ध्वा तस्थौ २०५
२०८	हस्तः	३३७	इन्द्रदेवताया उपमासुची ।		गुणाना २५८
२०८	हस्तः		उषसः न सूरः ७१ प्र रोचि अस्याः ।		त्र्यवि रेहिहाणा २०५

(१४८)

पद्या	२०५
पुरुषा वपुषि वस्ते	२०५
बृहद्दिवा	२५८
रेरिहाणा त्र्यविम्	२०५
इळाः(भूमिस्थानाःदेवताःसायनाचार्याः)	
१,१८६,१; १४०	
उक्षाणः पञ्च १,१०५,१०; ४७	
महो दिवः मध्ये तस्थुः ४७	
उर्वशी ५,४१,१९-२०; २५८-२५९।	
[देवसंघः मरुद्गणः वा]	
अभ्यूर्णाना आयोः प्रमृथस्य	
गुणाना बृहद्दिवा २५८	
उल्लङ्घः १०,१६५,४; ८३१	
उषाः १,९०,७; ३५। ३,२०, १,५;	
१६८-१६९। ५५,१; १९२। ४,	
५५,२; २३७। ५,४५,१-२; ३०९-	
३१०। ४७,१; ३२८। ४८,२; ३३६।	
५१,८; ३५३। ६,५२,४; ४१२।	
७,३५,१०; ४५८। ३९,१; ४८१।	
४२,५; ४९९। ८,२७,२; ५१३।	
५८,२; ५५६। १०,३५,२-६; ५८१-	
५८५। १०,६४,३; ६७८। १०१,	
१; ७६३।	
उषादेवताया गुणबोधकपदानि।	
अत्कं व्युतं वसाता	८३
अनमीवाः	५८५
अपरा	३३६
अपाची	३३६
आ विवासन्ती	३२८
उच्छन्ती	५८३
उष्ठा	५८३
एका एव इदं सर्वं विभाति	५५६
गवां माता	३१०
जानती	३१०
जायमाना	४१२
जूर्णिः	४८१
जोहुवाना पितृभ्यः आ	३२८
दुहितुः बोधयन्ती	३२८
देवी	१६९, ७६३

पितृभ्यः आ जोहुवाना	३२८
पूर्वाः	१९२
प्रतीची	४८१
प्रथमा	५८३
प्रयुज्जती	३२८
बोधयन्ती दुहितुः	३२८
भद्राः	५८४
मघोनी	२३७
मनीषा	३२८
मही	३२८
माता	३२८
युवतिः	३२८
रेवती	५८३
वसाना व्युतं अत्कम्	८३
वाजिनीवती	२३७
विभाति एका एव इदं सर्वम्	५५६
विभातीः	४५८
व्युतं अत्कं वसाना	८३
श्रिया सूर्यस्य सुदृशी	८३
सिखते सूर्यस्य रश्मिभिः	५८४
सुदृशी सूर्यस्य श्रिया	८३
सूनुता	२३७
सूर्यस्य रश्मिभिः सिखते	५८४
उषासानक्ते १,१२२,२; ८३। १८६,	
४; १४३। २,३१,५; १६२। ४,५५,	
३; २३१। ५,४१,७; २४६। १०,	
३६,१; ५९४।	
गुणबोधकपदानि ।	
अदब्धे	२३१
अपीजुवा जगताम्	१६२
जगतां अपीजुवा	१६२
पुरुधा विदाने	८३
बृहती	५९४
मिथुदृशा	१६२
यह्वी	२४६
विदाने पुरुधा	८३
विदुषी विश्वम्	२४६
विश्वं विदुषी	२४६
सुपेक्षसा	५२४
सुभगे	१६२

उपमासूची ।	
पत्नी इव ८३ पूर्वहृति वावृधयै ।	
ऋतवः १,१६४,१५; ११३। ५,४६,	
८; ३२७	
गुणबोधकपदानि ।	
ऋतुः जनीनाम्	३२७
ऋषयः	११३
जनीनां ऋतुः	३२७
देवजाः	११३
यमाः षट्	११३
षट् यमाः	११३
साकंजानां सप्तथं एकजम्	११३
ऋत्विजः ७,४३,२; ५०२। ८,५८,१;	
५५५। १०,१०१,१-११; ७६३-७३।	
गुणबोधकपदानि ।	
अनुचानः	५५५
कल्पयन्तः यज्ञं बहुधा	५५५
कवयः	७६६
धीराः	७६६
वहवः	७६३
बहुधा यज्ञं कल्पयन्तः	५५५
ब्राह्मणः	५५५
यज्ञं बहुधा कल्पयन्तः	५५५
युक्तः	७६३-७३
सखायः	५५५
सचेतसः	७६३
सनीलाः	७६३
समनसः	७६३
उपमासूची ।	
अन्तः योना इव ७७३ चरति द्विजानि ।	
यवसा इव गत्वी ७७१ सा नः दुहीयत ।	
हेत्वः न सप्तिः ५०२ यज्ञः प्र एतु ।	
ऋभवः ३,५४,१२,१८; १८१,१८७।	
५,४२,१२; २७०। ४६,४; ३२३।	
५१,१३; ३५८। ७,३५,१२; ४६०।	
३६,८; ४७१। ३७,१-२; ४७३-	
४७४। १०,९३,७; ७४२। ६५,१०;	
७०१। ६६,१०; ७१६।	

गुणबोधकपदानि ।

सप्तः	२७०
अष्टमः	१८१
नवमः	४७३-४७४
दशमः	२७०
धर्तारः	७१६
शत्रुः	३५८
दिवः	७१६
अश्विनः	४७१
अश्विनः	१८१
अश्विनः	१८७
अश्विनः	४७१
अश्विनः	४७१
अश्विनः	४७३
अश्विनः	३२३
अश्विनः	४६०
अश्विनः	४७३
अश्विनः	२७०, ७०१, ७१६
अश्विनः	४७४
अश्विनः	४७४
अश्विनः	१, १८६, १०; १४९ । ५, ४१, २; २४१ ।
अश्विनः	४२, ५; २६४ । ६, ५०, १२; ३८९ । १०, ६४, १०;
अश्विनः	१८५ । १०, ९२, ११; ७३१ । ९३, ७-८; ७४२-७४३ ।

गुणबोधकपदानि ।

अश्विनः	२६४
अश्विनः	२६४
अश्विनः	३८९
अश्विनः	२६४
अश्विनः	२६४, ३८९
अश्विनः	३८९
अश्विनः	७४२
अश्विनः (पञ्च)	५, ४४, १२; ३०५
अश्विनः	३०५
अश्विनः	३०५
अश्विनः	३०५
अश्विनः	३०५
अश्विनः	३०५

पञ्च नामानि ५, ४४, १०; ३०३

१ एवावदः, २ क्षत्रः, ३ मनसः, ४ यजतः, ५ सध्निः च ।

त्रयाणां नामानि- ५, ४४, ११; ३०४

१ मायी, २ यजतः, ३ विश्ववारः च ।

ऋषयः (सप्त) १०, १०९, ४; ७७८

तपसे ये निषेदुः ७७८

पूर्वे ७७८

सप्त ७७८

ओषधीः-धयः १, ९०, ६; ३४ । ३, ५४, २१; १२० । ५५,

२२; २१३ । ५७, ३; २२५ । ५, ४१, ८, ११; २४७,

२५० । ४२, १३; २७४ । ६, २१, २, ३६१ । ४९,

१४; ३७६ । ५२, ६; ४१४ । ७, ३४, २३, २५; ४४६,

४४८ । ३५, ५, ७; ४५३, ४५५ । ८, २७, २; ५१३ ।

१०, ६६, १०; ७१६ ।

गुणबोधकपदानि ।

जामयः	२२५
धेनवः	२२५
नमस्यन्तीः	२२५
पुत्रं वावशानाः	२२५
प्रस्वः	४५५
माध्वीः	३४
वावशानाः पुत्रम्	२२५
ककुदः ३, ५४, १४;	१८३
जनित्रीः	१८३
युवतयः	१८३
कण्वः (ऋषिः)	१०, ३१, ११; ५७८
कृष्णः	५७८
नृषदः पुत्रः	५७८
पुत्रः नृषदः	५७८
वाजी	५७८
श्यावा	५७८
कपोतः	१०, १६५, १-५; ८२८-३२
इषितः	८२८-८२९
दूतः निर्ऋत्याः	८२८
निर्ऋत्याः दूतः	८२८
शकुनः	८२९
शिवः	८२९

(१५०)

कृशानुः १०,६४,८; ६८३

क्षेत्रस्य पतिः १०,६६,१३; ७१९

गयः १०,६४,१६; ६९१

ऋतज्ञाः	६९१
कविः	६९१
चकानः द्रविणसः	६९१
द्रविणसः चकानः	६९१
द्रविणस्युः	६९१
विप्रः	६९१
तुवीरवान्	६९१

गायत्रम् (साम) १,१६४,२५; १२३

गिरयः ५,४१,११; २५०

वृक्षकेशाः २५०

गुङ्गः २,३२,८; १२६६

गौः (गावः) १,१६४,१७,२६-२९,४०; ११५,१२४-२७, १३८ । ७,३५,१२; ४६० । १०,६५,६; ६९७ । १००, १०; ७६० ।

गुणबोधकपदानि ।

अध्या	१२५,१३८
अधिष्ठिता ध्वसनौ	१२७
अभीवृत्ता येन (वत्सेन)	१२७
अधिष्ठिता पयः दुहा	१२५
आचरन्ती	१३८
इच्छन्ती वत्सम्	१२५
दुहा पयः अधिष्ठिताम्	१२५
दुहाना पयः	६९७
धेनुः	१२४
ध्वसनौ अधिष्ठिता	१२७
धर्मं सूक्ताणं वावशाना	१२६
पयः दुहा अधिष्ठिताम्	१२५
पयः दुहाना	६९७
प्रभुवाणा	६९७
भगवती	१३८
वत्सं इच्छन्ती	१२५
(वत्सेन) येन अभीवृत्ता	१२७
वसुपत्नी	१२५

वावशाना सूक्ताणं धर्मम्	१२६
वियुत् भवन्ती	१२७
व्रतनीः	६९७
सुदुघा	१२४
सूयवसाद्	१३८
सूक्ताणं धर्मं अभि वावशाना	१२६
द्विष्कृण्वती	१२५

गोजाताः ७,३५,१४; ४६२

गोयाञ्चा (तान्व-दिदिक्षा) १०,२३,१५; ७५०

गोरूपेण आदित्यरश्मिसमूहः गोरूपिणी आहुतिः वा । १,१६४, १७; ११५

कद्रीची ११५

वत्सं अवः परेण पदा विभ्रती ११५

गो सवितारौ वा मेघवायू १,१६४,२६; १२४

‘ गो ’ पदानि-

धेनुः १२४

सुदुघा १२४

‘ सवितृ ’ पदानि-

अभीष्टः १२४

गोधुक् १२४

धर्मः १२४

सुहस्तः १२४

मा, माः (देवपत्न्यः) पत्नीः च ५,४१,६; २४१ । ४१,१२; २७० । ४३,६; २८२ । ४६,२,७-८; ३२१,३२६-३२७ । ५०,३; ३४७ । ६,४९,७; ३६९ । ५०,१३,१५; ३१०,३९२ । ७,३४,२०,२२-२३; ४४३, ४४५-४४६ । ३५,६; ४५४ । १०,६४,१०; ६८५ । ६६,३; ७०३ । ९२,१४; ७१४ । ८,८०,१०; १२०५ ।

गुणबोधकपदानि ।

अष्टाष्टाः	३२२
अपां व्रते (वर्तमानाः)	३२६
अरमतिः	२८२
इष्टुध्यवः	२४५
उशतीः	३२६
ऋतज्ञा	२८२
ऋतसापः	२४५
मा	२८२

माः	३२१, ३६९, ३९२, ४५४, ७०९, ७३४
जनयः	३२७, ३९०, ६८५
दशस्यन्तीः	२७०
देवपत्नीः	३२७
पत्नीनामानि—	३२७
अमायी	३२७
अश्विनी	३२७
इन्द्राणी	३२७, १२६६
रोदसी	३२७, ४४५
वरुणानी	३२७, ४४५
देवी	२८९
देवीः	३२६, १२०५
पत्नीः	२४५, ४४३
पार्थिवासः	३२६
पुरन्धीः	२४५
पत्नीः वृष्णः	२७०
वृहती	२८२
मही	२८२
राट्	३२७
रातहव्या	२८२
रातिषाचः	४४५
वरुत्रीः	४४५
ससवः	३९२
वलीः	३४७
विश्वतष्टाः	२७०
विश्वाः	७३४
वृष्णः पत्नीः	२७०
गुप्ताः	२७०
मुहवाः	३२६
स्तुतासः	३९२
हुतासः	३९२
भागः १, ८९, ४; २२ । ७, ३५, ७; ४५५ । १०, ३६, ४; ५९७ । ६४, १५; ६९० । ९२, १५; ७३५ । १००, ८-९; ७५८-७५९ ।	
अद्रयः	७५८
ऊर्वा-ध्वीः	७३५, ७५९

मधुसुद्ध	६२०, ७५८
मयोभुवः	२२
सौमसुतः	२२

घर्मः ५, ४३, ७; २८३ = घर्म पात्रम् ।
१०, १८१, ३; ८३६ । = हविः ।

उपमासूची ।

पितुः न पुत्रः उपसि प्रेष्ठः २८३ घर्मः अग्नि आ असादि । वपावन्तं न २८३ अग्निना तपन्तः अजन्ति । घर्मा १०, ११४, १; ७८२ = अग्निः आदित्यश्च । चक्रम् १०, १६४, २, ११; १००, १०९	
अग्निः	१०९
अजरम्	१००
अनर्वम्	१००
जराय न	१०९
त्रिनाभि	१००
द्वादशारम्	१०९
विश्वा भुवना यत्र अधि तस्थुः	१००
सप्त शतानि विंशतिश्च पुत्राः मिथुनासः अत्र तस्थुः १०९	
चन्द्रमाः १, १०५, १; ३८ । १०, ६४, ३; ६७८ । ९२, १४; ७३४ ।	
अक्तोः युवा	७३४
युवा अक्तोः	७३४
सुपर्णः	३८
जगत् (साम)	१, १६४, २५; १२३
जनाः पञ्च ६, ५१, ११; ४०३ । १०, ५३, ४-५; १२१०-११	
ऊर्जादिः	१२१०
गोजाताः	१२११
यज्ञियासः	१२१०-१२११
सुगोपाः	४०३
सुनीथाः	४०३
सुशर्माणः	४०३
स्ववसः	४०३
जनयः (जनिः)	१०, ६४, १०; ६८५
जिह्वा	१०, १३७, ७; ८१५
वाचः पुरोगवी	८१५
जीवात्म-परमात्मानौ	१, १६४, २०; ११८

(१५२)

द्वा सखाया समानं वृक्षं परि षस्वजाते	११८
सयुजा	११८
सुपर्णा	११८
जीवात्मा-सादु पिप्पलं अन्ति ।	११८
परमात्मा-अनश्नन् अभि चाकशीति ।	११८
तत्त्वविद्	११४
कविः	११४
तनयितुः	१०,६६,११; ७१७
तन्यतुः	१०,६५,१३; ७०४
पावीरवी	७०४
तार्क्ष्यः	१,८९,६; २४
अरिष्टनेमिः	२४
तिष्यः	१०,६४,८; ६८३
त्वष्टाः	१,१८६,६; १४५ । २,३१,४; १६१ । ३,५४,१२; १८१ । ५५,१२; २१० । ५,४१,८; २४७ । ४६,४; ३२३ । ६,४९,९; ३७१ । ५०,१३; ३२० । ५२,११; ४१९ । ७,३४,२०-२२; ४३३-४४५ । ३५,६; ४५४ । ८,२८,३; ५४१ । १०,६४,१०; ६८५ । ६६,३; ७०९ । ९२,११; ७३१ । १८४,१; ८३७ ।

त्वष्टादेवताया गुणबोधकपदानि ।

अरमतिः	४४४
ऋतावान्	१८१
ऋभवा	३७१
देवः	१८१, २१०, ३७१, ७३१
देवेषु अन्तः निधुविः	५४१
निधुविः देवेषु अन्तः	५४१
पस्त्यानां यजतः	३७१
पिता	६८५
पोष्यावान्	२४७
प्रजाः विविधाः जजान	५१०
प्रजाः विविधाः पुषोष	५१०
प्रथममाक्	३७१
विभ्रत् आयसीं वाशीं हस्ते	५४३
भुवनस्य सक्षणिः	१६१
यजतः पस्त्यानाम्	३७१
यशः	३७१

वयोधाः	३७१
वसूयुः	४४४
वाशीं हस्ते विभ्रत्	५४३
विश्वरूपः	२१०
सक्षणिः भुवनस्य	१६१
सविता	२१०
सुकृत्	१८१
सुगभस्तिः	३७१
सुदत्रः	४४५
सुपाणिः	१८१, ३७१, ४४३
सुशरणः	४४५
सुहवः	३७१
स्ववान्	१८१
दक्षः	१,८९,३; २१
अस्त्रिधः	२१
दक्षिकाः	३,२०,१,५; १६८-१६९ । ७,४४,१; ५०६ । १०,१०१,१; ७६३ ।
दिव्याः	७,३५,११,१४; ४५९,४६२
दिशः (वा मेघाः)	३,५५,१६; २०७
अप्रदुग्धाः	२०७
अशिथ्वीः	२०७
धेनवः	२०७
नव्यानव्याः	२०७
भवन्तीः	२०७
युवतयः	२०७
शशयाः	२०७
सबर्दुघाः	२०७
दीधितिः	१,१८६,११; १५०
अपिप्राणी	१५०
यजत्रा	१५०
वसूयुः	१५०
सदनी	१५०
देवः	१,१०६,७; ६३
अप्रयुच्छन्	६३
देवगण-संघः वा	१,१२२,८; ८९ । ५,४१,२०; २५९ । ६, ५१,१२; ४०४ । ७,४२,२; ४९६ । १०,५७,५; ६२५

गुणबोधकपदानि ।

जनः	८९
जनः दैव्यः	६२५
जनिमा देवानाम्	४९६
जन्म देवानाम्	४०४
देवानां जनिमा	४९६
देवानां जन्म	४०४
दैव्यः जनः	६२५
पञ्चभ्यः वाजिनीवान्	८९
महिमघः	८९
महां सूरिः	८९
वाजिनीवान् पञ्चभ्यः	८९
सूरिः अश्वावतः रथिनः मध्यम्	८९
देवाः [' विश्वे देवाः ' द्रष्टव्यम्]	
देवानां देवाः	७, ३१, १५; ४६३
अमृताः	४६३
ऋतज्ञाः	४६३
मनोः यजत्राः	४६३
यज्ञियानां देवानां यज्ञियाः	४६३
सो देवः ५, ४२, १६; २७४। ४३, १५;	
२९१। ८, २७, १३; ५२४	
सुहवः	२७४, २९१
वपस्वीः [' माः ' द्रष्टव्यम्]	
सो ५, ४१, १८; २५७। १०, १४१, २;	
८१७	
दवन्ती	२५७
सृळ्यन्ती	२५७
सुदानुः	२५७
तोः (तिस्रः)	३, ५६, ५; २१८
अप्याः	२१८
ऋतावरीः	२१८
शेषणाः	२१८
विद्ये दिवः त्रिः आ पत्यमानाः २१८	
तोः (षट्)	१०, १२८, ५; ८०४
देहात्मनो (देहात्म-जीवात्मनो-	
सायनाचार्याः) १, १६४, ३८; १३६	
देहः-	
आत्मा-	
न्ये नि चिक्युः अन्यं न नि चिक्युः	
अमर्त्यः, मर्त्येन सयोनिः	
२० दै० [विश्वे देवाः]	

स्वधा	स्वधया शुभीतः
देहात्मनो-वियन्ता, विषूचीना, शश्वन्ता,	
१३६	
द्यौः १, ८९, ४; २२। ९०, ७; ३५।	
१०५, १९; ५६। १०६, ७; ६३।	
१०७, ३; ६६। १६४, २, ३३; १०७,	
१३१। ३, ५४, २ ३, १९; १७१-	
१७२, १७८, १८८। ५५, १२-१३;	
२०३-२०४। ५, ४१, ११; २५०।	
४३, २; २७८। ४५, २-३; ३१०-११।	
४६, ३; ३२२। ६, ५०, १३; ३९०।	
५१, ५; ३२७। ५२, २; ४१०। ७,	
३४, २३; ४४६। ४३, १; ५०१।	
१०, ३६, २; ५९५। ५६, ३; ६१६।	
६३, १०; ६७०।	

द्यौर्देवताया गुणबोधकपदानि ।

अनेहाः	६७०
अन्यस्याः वत्सं रिहती	२०४
उरु	१७८
ऋतावरी	५९५
जनिता	१३१, १७८
दक्षिणायाः धुरि युक्ता	१०७
दुहिता	१८८
धेनुः	२०४
पन्थाः व्युतः	१७८
पिता २२, ३५, १३१, १७८, २७८, ३९७	
प्रचेतसः	५९५
बन्धुः	१३१
महः	१७१, १७८
माता	१०७
युक्ता दक्षिणायाः धुरि	१०७
रिहती अन्यस्याः वत्सम्	२०४
व्युतः पन्थाः	१७८
सुमिता	३१०

उपमासूची ।

स्थूणा इव ३१० द्यौः सुमिता हंहत ।	
द्यावापृथिवी (रोदसी) १, १०५, १-१८;	
३८-५५। १०६, ३; ५९। २, ३१, ४;	
१६१। ३, ५४, ३-४, ६-१०; १७२-	

७३, १७५-७९। ५५, १२, २०; २०३,	
२११। ५६, १, ७; २१४, २२०।	
३, ८, ८; २२२। ५७, ४; २२६। ४,	
५५, १, ३, ६; २२९, २३१, २३४। ५,	
४३, २; २७८। ४९, ५; ३४४। ५१,	
११; ३५६। ६, ५०, ३; ३८०। ५२,	
१४; ४२२। ७, ३४, २३-२४; ४४६-	
४४७। ७, ३५, ३, ५; ४५१, ४५३।	
३९, ७; ४८७। ४०, २; ४८९।	
४४, १; ५०६। १०, ३५, १-३; ५८०-	
५८२। ३६, १; ५९४। ६३, ९; ६६९।	
६४, १४; ६८९। ६५, ८; ६९९।	
६६, ४, ६; ७१०, ७१२। २२,	
११-१२; ७३१-७३२। ९३, १, १०;	
७३६, ७४५। १, १३६, ६; १२६४।	

द्यावापृथिवी (रोदसी)

देवताया गुणबोधकपदानि ।

अदितिः	२२९
अद्रुहा	२१४
अमृत्रे	२७८
उभे १११, २३१, ४२२, ४४६, ६८९	
उर्वी	२२०, ४४७, ७३६
ऋतस्य योना	१७५, ६९९
ऋतावरी	१७३, ७१२
ऋतावृध्वा	५९
क्षयतः समोकसा	६९९
चम्वा	२११
जागरूके	१७६
दूरेअन्ते	१७६
देवपुत्रे	५९
देवान् बिभ्रती	१७७
देवी	५९
द्यावाक्षामा	२२२, ५९४
द्यावाभूर्मा	२२९
धिषणे	३८०
धेनु	२०३
परिक्षिता	६९९
पितरा	६९९
पिता माता	२७८

पूर्वजावरी	६९९
विभ्रती देवान्	१७७
बृहती	४५१
भवन्ती	१७६
भूरिरेतसा	७३१
मदन्ती	१७५
मधुवचा	२७८
मही २११, ५८०, ५८२, ६८९, ७३६	
मातरा	५८२, ६८९
मिथुनानि नाम	१७६
यशसौ	२७८
युवती	१७३
योना ऋतस्य	१७५, ६९९
रोदसी ३८.५५, २१४, २२०, २२६, २८४, ३८०, ४४६, ७३६, १२६४	
वरुणाय सत्रते	६९९
विष्टते	१७५
विद्युते	१७३
वृषणा	७१२
शमीनहुषी	७३२
संविदाने	१७५
सबर्दुधे	२०३
समान्या	१७६
समीची	२०३, २११
समोकसा क्षयतः	६९९
सत्रते वरुणाय	६९९
सुमेके	२२६
सुषुम्ने	३८०
सुहस्ता	२७८
स्वसारा	१७६

द्यावापृथिवी (रोदसी)

देवताया उपमासूची ।

नारी यही न ७३६ रोदसी सदे नः ।
यथा वेः १७५ नाना चक्राते सदनम् ।
समुद्रं न सञ्चरणे सनिष्यवः २३४ स्तुर्वीत
देवी अप्येभिः इष्टैः ।
द्यु-पृथिवी-अन्तरिक्षम् १०, ११४, २;
७८३

तिस्रः निर्ऋतिः

७८३

धर्ता ७, ३५, ३; ४५१
धर्मः १०, ५६, ३; ६१६
धाता ३, ५४, १३; १८२ । ७, ३५, ३;
४५१ । १०, १६७, ३; ८३३ । १८१,
१-३; ८३४-३६ । १८४, १; ८३७
धिषणा ३, ५६, ६; २१९ । ५, ४१.८;
२४७ । १०, ३५, ७; ७८६ ।

जनित्री रायः ५८६

धन्या २४७

रायः जनित्री ५८६

धीः ७, ३४, ९; ४३४

देवी ४३४

धियः ७, ३५, ११; ४५९ । १०, ६५,
१३-१४; ७०४-७०५ ।

धेनुः ३, ५७, १; २२३

अगोपाः २२३

चरन्ती २२३

पनितारः अस्याः इन्द्रः अग्निश्च २२३

प्रयुता २२३

मनीषा २२३

धेनवः ५, ४३, १; २७७ । ७, ३६, ३;
४६६ । ४२, १; ४९५ ।

अमर्धन्तीः २७७

उदयुतः ४९५

तूण्यर्थाः २७७

पयसा मध्वा (युक्ताः) २७७

बृहतीः २७७

मध्वा पयसा (युक्ताः) २७७

मयोभुवः २७७

सप्त २७७

सूदाः ४६६

नक्तम् १, ९०, ७; ३५ । ७, ४२, ५;
४९९ । ८, २७, २; ५१३ ।

नक्षत्राणि ३, ५४, १९; १८८

नद्यः ५, ४१, १४; २५३ । ४२, १२;
२६३ । ४३, १; २७७ । ४५, २; ३१० ।

४६, ६; ३२५ । ७, ३६, ६; ४६९ ।

१०, ६४, ८; ६८३ ।

अभिषाताः २५३

अर्णाः २५३

खादोअर्णाः ३१०

गिरः २५३

चन्द्राग्राः २५३

त्रिःसप्त ६८३

द्यावः २५३

धन्वर्णसः ३१०

पत्नीः वृष्णः २७०

पयसा स्वेन पीप्यानाः ४६९

पीप्यानाः स्वेन पयसा ४६९

यशसः ४३९

वावशानाः ४६९

विभ्वतष्टाः २६३

वृष्णः पत्नीः २७०

सस्त्राः ६८३

सुदीतयः ३२५

सुदुघाः ४६९

सुधाराः ४६९

नमः ६, ५१, ८-९; ४००-४०१

नरः ('नृ' बहुवचनम्) ५, ५०, ३; ३४७

नराशंसः ७, ३५, २; ४५० । १०, ६४, ३;
६७८ । ९२, ११; ७३१ ।

चतुरङ्गः ७३१

शंसः ४५०

नामानेदिष्टः (मन्त्रद्रष्टा) १०, ६१, ११;
६४५

निशाः = व्रजिनीः ५, ४५, १; ३०९

निर्ऋतिः ५, ४१, १६; २५५ । १०, ३६, २;
५९५ । ११४, २; ७८३

तिस्रः ७८३

दुर्विदत्रा ५९५

नौः (देवा) १०, ६३, १०; ६७०

अनागाः ६७०

अस्वन्ती ६७०

देवी ६७०

स्वरित्रा ७, ३५, १२; ४६०

पतयः सत्यस्य ७, ३५, १२; ४६०

पत्नीः [' देवपत्नीः (माः) ' द्रष्टव्यम्]

२५३	३, ५४, २१; १९० । ५, ५१,
२५३	१४-१५, ३५९-३६० । ६, ५१, १६;
३१०	४०८ ।
२५३	अनेहाः ४०८
२५३	पथ्या ३५९
६८३	पितृमान् १९०
२५३	तेवती ३५९
३१०	सुगः १९०
२७०	स्वस्तिगा ४०८
४६९	उपमासूची ।
४६९	विचन्द्रमसौ इव ३६० पन्थां स्वस्ति
४६९	अनु चरंम ।
२६३	आरमा (आदित्यः वा) १, १६४, २१-
२७०	११, ३१; ११९-१२०, १२९
६८३	अनिपद्यमानः १२९
३२५	आचरन् पथिभिः १२९
४६९	तः ११९
४६९	गोपाः १२९
००-४०१	गोपाः विश्वस्य भुवनस्य ११९
०, ३, ३४७	गौरः ११९
०, ६४, ३;	गतिभिः आचरन् १२९
७३१	नेता १२०
४५०	भुवनस्य विश्वस्य गोपाः ११९
६१, ११;	अब्दः १२०
३, ३०९	वसानः विषूचीः १२९
०, ३६, २;	वसानः सध्रीचीः १२९
७८३	विषूचीः वसानः १२९
५९५	सध्रीचीः वसानः १२९
६७०	सुपर्णाः ११९-१२०
६७०	आस्य अविषयत्वम् १, १६४,
६७०	१०९-१०५ ।
६७०	१, १६४, ३३; १३१ । ५, ४२,
६७०	१-१४; २७१-२७२ । ६, ५२, ६;
६७०	१४ । ७, ३५, १०; ४५८ । ३६, ३;
६७०	१४२, १; ४९५ । १०, ६६, ६;
१२, ४६०	११ । ९५, ५; ७२५ ।
द्रष्टव्यम्]	विदमान् २७२
	अदनाः २७१
	विस्ती २७२

उक्षमाणः रोदसी विद्युता	२७२
उदनिमान्	२७२
कन्दस्तुः	४९५
गर्भः दुहितुः	१३१
जठरे रोदवत्	७२५
जायमानः दिवः सदाने	४६६
दिवः सदाने जायमानः	४६६
दुहितुः गर्भः	१३१
पिता	१३१ (उत्तरार्धः)
महे (चतु०)	२७१
मिनानः रूपा वक्षणासु	२७१
रुवन्	२७२
रूपा मिनानः वक्षणासु	२७१
रोदसी उक्षमाणः विद्युता	२७२
रोदवत् जठरे	७२५
वक्षणासु रूपा मिनानः	२७१
विद्युता रोदसी उक्षमाणः	२७२
वृषभः	४६६
सुशरणः	२७१
स्तनयन्	२७२
पर्जन्यवाता ६, ४९, ६; ३६८। ५०, १२;	
३८९। १०, ६५, ९; ७००। ६६, १०;	
७१६ ।	
पुरीषिणा	७००
वृषभा	३६८, ७००
पर्वतः-तासः ३, ५४, २०; १८९ ।	
५६, १; २१४ । ४, ५५, ५; २३३ ।	
५, ४१, ९; २४८ । ४५, ३; ३११ ।	
४६, ३, ६; ३२२, ३२५ । ६, २३, ९;	
३६१ । ४९, १४; ३७६ । ५२, १, ४;	
४०२, ४१२। ७, ३४, २३; ४४६। ३५,	
८; ४५६ । ३७, ८; ४८० (पर्वतः) ।	
८, ५४, ४; ५५४। १०, ३५, २; ५८१ ।	
३६, १; ५९४ । ६४, ८; ६८३ ।	
गुणबोधकपदानि ।	
इळया मदन्तः	२०
तस्थिवांसः	२१४
ध्रुवक्षेमासः	२०
ध्रुवयः	४५६

ध्रुवासः	४१२
मदन्तः इळया	२०
वसवो न वीराः	२४८
सुभवः	४०९
सुशस्तयः	३२५

उपमासूची ।

वसवः न वीराः २४८ पर्वताः स्वै-
तवः सन्तु ।

पशुः ८, २७, २; ५१३	
पार्थिवाः ७, ३५, ११, १४; ४५९, ४६२	
पितरः १, १०९, ३; ५९ । ३, ५२, २;	
१९३ । ६, ५२, ४; ४१२। ७, ३५, १२;	
४६० । १०, ५६, ४, ६; ६१७, ६१९ ।	
५७, ३, ५; ६२३, ६२५ । १०, १४,	
७-९; १२६७-१२६९	
पदज्ञाः	१९३
पूर्व	१९३
सुप्रवाचनाः	५९
पुरन्धिः ७, ३५, २; ४५० । ३९, ४;	
४८४ । १०, ६५, १३; ७०४	
पूषा १, १४, ३-४; ६-७ । ८९, ५-६;	
२३-२४ । ९०, ४-५; ३२-३३ ।	
१०६, ४; ६० । १२२, ५; ८६ ।	
१८६, १०; १४९ । २, ३१, ४; १६१ ।	
३, ५७, २; २२४ । ५, ४१, ४;	
२४३ । ४३, ९; २८५ । ४६, २-३, ५;	
३२१-३२२, ३२४ । ४९, ३; ३४२ ।	
५१, ११; ३५६ । ६, २१, २; ३६१ ।	
४९, ८; ३७० । ५०, ५; ३८२ । ५१,	
११; ४०३ । ७, ३५, ९; ४१७ । ३६,	
८; ४७१ । ३९, २; ४८२ । ४०, ६;	
४९३ । ४१, १; ४९४ । ४४, १;	
५०६ । ८, २७, ८; ५१९ । २९, ६;	
५४४ । ५४, ४; ५५४ । १०, ६४,	
३, ७; ६७८, ६८२ । ६५, १; ६२२ ।	
६६, ५; ७११ । ९२, १३; ७३३ ।	
९८, १; १२२२ ।	
पूषादेवताया गुणबोधकपदानि ।	
अदन्धः	२३
अध्यर्धयज्वा	३८२

(१५६)

अनर्वाणः	३५६
अर्कः	३७०
असुरः	३५६
आघृणिः	४९३
कण्वहोता	२४३
क्षयद्वीरः	६०
चोदिता मतीनाम्	२८५
चोदिता वाजस्य	२८५
तव्यसः (षष्ठी)	२८५
तुरः	२८५
त्रितः	२४३
दिवः	२४३
दिव्यः	२४३
द्रविणोदाः	२८५
निधीनां वेदः	५४४
नियुत्वान्	४८२
पथः पीपाय	५४४
पथस्पथः परिपतिः	३७०
परिपतिः पथस्पथः	३७०
पायुः	२३
पीपाय पथः	५४४
पुरन्धिः	१६१
मतीनां चोदिता	२८५
रक्षिता वेदसां वृधे	२३
वन्धः	३२
वाजस्य चोदिता	२८५
विदध्यः	४७१
विश्वदेव्यः	७३३
विश्वभोजः	२४३
विश्ववेदाः	२४
वीरः	४७१
वृधे वेदसां रक्षिता	२३
वेदसां वृधे रक्षिता	२३
सक्षणः	२४३
सचित्	६८१
सचेताः	६८२
सजोषाः	२४३

पूपादेवताया उपमासूची ।

यथा वेदसां असत् वृधे रक्षिता २३ पूषा

स्वस्तये पायुः ।	
पृथिवी १,८९,४; २२।९०,७; ३५।	
१०५,१९; ५६।१०६,७; ६३।	
१०७,३; ६६।१६४,८-९, ३३;	
१०६-१०७,१३१।३,५४,२-४,१९;	
१७१-१७३,१८८। ५५,१२-१३,	
२२; २०३-२०४,२१३। ३,८,८;	
२२२। ५,४२,१६; २७४।४३,२;	
१५; २७८,२९१।४६,३; ३२२।	
६, ५०, १३-१४; ३९०-३९१।	
५१,५,११; ३९७,४०३।७,३४,	
२३, ४४६।३५,३; ४५१।३६,१;	
४६४।४३,१; ५०१। ८,२७,२;	
५१३।५४,४; ५५४।१०,२६,२;	
५९५।५३,२; ६१५। ६३,१०;	
६९०। १०,५३,५; १२११।	

गुणबोधकपदानि ।

अधुक्	३२७
अपिन्वत ऋतस्य पयसा	२०३
इळा	२०४
उरुची	४५१
उर्वी	४६४
ऋतस्य पयसा अपिन्वत	२०४
ऋतावरी	५९५
गर्भरसा निविद्धा	१०६
गौः	१०७
तनूः तन्वं नयन्ती	६१५
दक्षिणा	१०७
दुहिता	१३१
नयन्ती तन्वं तनूः	६१५
निविद्धा गर्भरसा	१०६
पार्थिवं रजः	३५
प्रचेतसः	५९५
बन्धुः	१३१
बीभत्सुः	१०६
मधुमत्	३५
मही	१३१

माता २२, १०६-१०७, १३१, २०३,
२७४, २९१, ३९७ ।

रजः पार्थिवम्	३५
विश्वरूपम्	१०७
सुगोपाः	४०३
सुत्रात्राः	४०३
सुत्रामा	६७०
सुशर्मा	४०३
स्व (सु+अ) वस्	४०३
पृश्निः	७, ३५, १३; ४६१
देवगोपाः	४६१
प्रजापतिः	१०, १८४, १; ८३७
प्रदिशः	७, ३५, ८; ४५६
चतस्रः	४५६
प्रमतिः (अग्नेः)	३, ५७, ६; २२८
असश्चन्ती	२२८
चित्रा	२२८
विश्वजन्त्या	२२८
सुमतिः	२२८

उपमासूची ।

पर्वतस्य इव धारा २२८ असश्चन्ती ।	
प्रवाचनम् (देवानाम्) १०, ३५, ८; ५८७	
ऋतस्य प्रवाचनम्	५८७
प्रश्नाः १०, ११४, ९; ७९०	
प्रश्न-प्रतिवचनानि १, १६४, ३४-३५;	
१३२-१३३ ।	
बर्हिः	७, ३९, २; ४८१
बृहत्	१०, १८१, १; ८३५
बृहदुक्थः	१०, ५६, ७; ६९०

उपमासूची ।

नावा न क्षोदः ६२० प्रदिशः पृथिव्याः	
स्वस्तिभिः अति दुर्गाणि विश्वा ।	
बृहस्पतिः १, १४, ३-४; ६-७। ८९, ६;	
२४। ९०, ९; ३७। १०५, १७; ५४।	
१०६, ५; ६१। ३, २०, ५; १६१।	
५, ४२, ७-९; २६६-२६८। ४३, १२;	
२८८। ४६, ५, ३४४। ५१, ११;	
३५७। १०, ३५, ११; ५९०। ३६,	
५; ५६८। ६४, ४, १५; ६७९, ६९०,	

୪୦୩ । ୭, ୩୫, ୧; ୫୫୦ । ୩୬, ୮;
 ୫୭୧ । ୩୯, ୫; ୫୮୫ । ୫୦, ୧;
 ୫୮୯ । ୫୧, ୧; ୫୯୫ । ୫୫, ୧;
 ୫୯୬ । ୧୦, ୩୧, ୫; ୫୭୧ । ୩୫,
 ୧୦-୧୧; ୫୮୯-୫୯୦ । ୬୩, ୯;
 ୬୬୯ । ୬୫, ୧୦; ୬୮୫ । ୬୬, ୧୦;
 ୭୧୬ । ୯୩, ୫, ୭; ୭୩୯, ୭୫୧ ।
 ୧୫୧, ୧; ୮୧୭ । ୧, ୧୩୬, ୬;
 ୧୨୬୫ ।

अविता धियः ४७

९०, ४५; ३२-३३ । १०६, १, ५७ ।
 १०७, २; ६५। १२२, १; ८२। १८६,
 ८-९; १४७-१४८। २, ३१, ३; १६०।
 ४१, १५; १६७ । ३, ५४, १३, २०;
 १८२, १८९ । ५५, २१; २१२ । ४,
 ५५, ५; २३३ । ५, २६, ९; २३९ ।
 ४१, २, ५, ११, १३-१४, १६, २०;
 २४१, २४४, २५०, २५२-५३, २५५,
 २५९ । ४२, १०, १५; २६९, २७३ ।
 ४३, १०; २८३ । ४५, ४; ३१२ ।
 ४६, २-३, ५; ३२१-३२२, ३२४ ।
 ६, २१, ९; ३६१ । ४३, ६, ११-१२;
 ३६८, ३७३-३७४ । ५०, ४-५, ११;
 ३८१-३८२, ३८८ । ५१, २, ११;
 ४१०, ४१९ । ७, ३४, १८-१९,
 २४-२५; ४४१-४४२, ४४७-४४८ ।
 ३५, ९; ४५७। ३६, ७, ९; ४७०, ४७२।
 ३९, ३, ५; ४८३, ४८५। ४०, ३; ४९०।
 ४२, ५; ४९९ । ८, २५, १०-११;
 ५०९-५१० । १७, १, ३, ५, ८, १२,
 १५-१६; ५१२, ५१४, ५१६, ५१९,
 ५२३, ५२६-५२७ । २८, ५; ५३८।
 ५४, १; ५५३ । ८३, ७; ५६५ ।
 १०, ३५, १३; ५९२ । ३६, ४, ७;
 ५९७, ६०० । ५२, २; ६०९ । ६३,
 ९, १४; ६६२, ६७४ । ६४, ११-१३;
 ६८६-८८ । ६५, १; ६९२ । ६६,
 २४, ७०८-७१०। ९२, ५-६, ९, ११;
 ७२५-७२६, ७२९, ७३१। ९३, ४, ९;
 ७३९, ७४४ । १२६, ५; ७२६ ।
 १२८, २; ८०१ । १३७, ५; ८१३ ।
 १५७, ३; ८२५ । १, १३६, ७,
 १२६५ ।

‘मरुतः’ देवताया
 गुणबोधकपदानि ।

अग्निजिह्वा:	२५
अद्भुतः	५२६
अधृष्टा:	३८१
अयासः	१८२, २७३

अरिष्यन्तः	५१०
असुरस्य नील्यः	७२६
अस्त्रिधः	२१
इत्था वृधन्तः	३७३
उग्राः	१६
ऋतजाताः	१८२
ऋष्टयः सप्त तेषाम्	५३८
ऋष्टिमन्तः	१८२
ऋष्वः	६००
एवयावः	३३, ७२२
एवाः	२५२
कवयः	३६८, ३७३
काणाः	७२६
गणः मरुताम्	८१३
गणः मारुतः	६००
गोजाताः	३८८
जगतः स्थाता	३६८
जाताः विद्युतः अतः परि	१८
तवसः	३७४
तुरासः	१८२, ३७४
तुराणां एवाः	२४४
दधानाः वार्यम्	२५२
दस्माः	२५२
दिवः मर्याः	१८२
दिवः स्येनासः	७२६
दिविक्षयः	३२४
द्युन्नानि सप्त तेषाम्	५३८
नक्षन्तः	३७३
नरः	१७, ३७३
नील्यः असुरस्य	७२६
परि जाताः विद्युत अतः	१८
पावकः	६००
पुरःसदः	२१२
पूषणः	७३९
पृश्निमातरः	१६, २७
पृषदधाः-श्वासः	२५, १४७, २७३, ४२०
मनवः	२५
मन्दसानाः	४७०
मरुतां गणः	८१३

मरुद्गणः	१६७, ७०८
मर्याः दिवः	१८२
महान्तः	२५०, २५२
महासेनासः	४४२
माघोनः	७०८
मारुतः गणः	६००
मारुतं शर्धः	५७, २७३, ३२१
मित्रयुजः	८, १०७
यजतम्	३२४
यज्ञियासः	१८२, ३७३
ययिन्-यी	७२५
युवानः	३७३
युवन्यवः	२७३
रथाः (रथवन्तः)	८, १४७
रायस्पोषः	६००
रिशादसः	८, १४७
रुद्रः	७२५
रुद्राः	६८६, ७०९, ७२६
रुद्रस्य सूनवः	२७३, ३८१
रुद्रियः	२५०
वन्द्यासः	३२
वयश्चन	२५२
वसवः	३८१
वहयः	७४४
वाजिनः	४७०
वार्यं दधानाः	२५२
विदयेषु जगमयः	२५
विद्युद्गथाः	१८१
विश्वे	४४७
विश्वकृष्टयः	७२६
विश्वभानवः	५१४
वीरः	३७४
वृजनः	७०८
वृद्धशवसः	५०९
वृद्धसेनाः	१४७
शम्भू	६००
शर्धः मारुतम्	५७, २७३, ३२१
शर्मसदः	२१२
शुभंयावानः	२५
शुभ्राः	४८३

७७, ७०८	विनासः दिवः	७२६
१८२	विषः सप्त तेषाम्	५३८
५०, २५२	अश्रुतः	३६८
४४२	विषः	५३८
७०८	विषः ऋषयः युमानि प्रियः तेषाम्	५३८
६००	विषः	१४७
३, ३२१	विषः	४४७
८, १०७	विषः	२५५, ५१०
३२४	विषः	५५३
२, ३७३	विषः	२५२
७२५	विषः	२५३
३७३	विषः	६००
२७३	विषः	२७३, ३८१
८, १४७	विषः	२५
६००	विषः	३६८
८, १४७	विषः	४५७
७२५	विषः	३८१
०९, ७९६	विषः	३८१

उपमासूची ।

३, ३८१	विषः इव ८२ दिवः अस्तोषि असुरस्य	
२५०	विषः ।	
३२	विषः इव १७ तन्यतुः मरुतां एति ।	
२५२	विषः इव क्षयः ६८६ रण्वः संदृष्टौ ।	
३८१	विषः इव पशुरक्षिः अस्तम् ३७४ प्र	
७४४	विषः इव तुराय अज ।	
४७०	विषः न नाकम् ३७४ स पिस्पृशति	
२५२	विषः तन्वि श्रुतस्य ।	
२५	विषः	
१८१	विषः	
४४७	विषः	
७२६	विषः	
५१४	विषः	
३७४	विषः	
७०८	विषः	
५०९	विषः	
१४७	विषः	
६००	विषः	
३, ३२१	विषः	
२१२	विषः	
२५	विषः	
४८३	विषः	

१; ९७। १८६, २; १४१। २, २९, १;	
१५१। ३, ५४, १०; १७२। ५५, ६;	
१९७। ४, ५५, १, ५, ७, १०; २२९,	
२३३, २३५, २३८। ५, २६, ९; २४१।	
४१, २; २४१। ४२, १-२; २६०-२६१।	
४६, २, ५; ३२१, ३२४। ४९, ३, ५;	
३४२, ३४४। ६, २१, ९; ३६१। ४९, १;	
३६३। ५०, १; ३७८। ५१, ३, १०;	
३९५, ४०२। ५२, ११; ४१९। ७,	
३६, २; ४६५। ३९, ५, ७; ४८५, ४८७।	
४०, २, ४; ४८९, ४९१। ८, २७, ६,	
१५, १७; ५१७, ५२६, १२८। २८,	
२-३; ५३५-५३६। ८३, २; ५६०।	
१०, ३१, ९; ५७६। ३५, १०; ५८९।	
३६, १, १२-१३; ५९४, ६०५-६०६।	
६३, ९; ६६९। ६४, १२; ६८७।	
६५, १, ५, २; ६९२, ६९६, ७००। ९२,	
६; ७२६। ९३, ४; ७३९। १०९, २;	
७७६। १२६, १-७; ७९२-७९८।	
८१, १७; १२२१। ९८, १; १२२२।	
१, १३६, ६-७; १२६४-१२६५।	
मित्रस्य धामानि १, ८९, ३; २१	

अन्वर्तिता	७५६
अपबाधमानाः द्विषः	३०
अप्रमूराः	३०
अमृताः	३०
अमृतस्य राजानः	७३९
ऋतधीतिः	४०२
ऋतावान्	४८७
गोपाः	५३६
चर्षणीनां राजा	७९७
जनं यतति	४६५
दस्सः	३४२
दिव्यं शर्धः	९७
द्विषः अपबाधमानाः	३०
नेता	७९७
प्रचेतसः	५६०
ब्रुवाणः	४६५
भद्रः	३४२

मन्त्राः	७३९
यतति जनम्	४६५
युजः	५६०
राजानः अमृतस्य	७३९
राजा चर्षणीनाम्	७९७
वक्त्रराजसत्यः	४०२
वसवानाः	३०
वस्त्रः	३०
विद्वान्	२९
वृधासः	५६०
शम्	३७
शर्धः दिव्यम्	९७
श्रेष्ठवर्चाः	४०२
सजोषसः	५२८
सत्यसवः	६०६
सम्राट्	६९६
सरातयः	५२८
सुक्षत्रः	३६३, ४०२
स्मद्रातिषाचः	५३५

मित्रावरुणौ १, १२२, ६, २-१०, १५;	
८७, ९०-९१, ९६। २, २९, ३; १५३।	
३१, १; १५८। ३, २०, ५; १६९।	
५६, ७; २२०। ५, ४१, १, २४०।	
४६, ३; ३२२। ४७, ७; ३३४। ५१,	
९, १४; ३५४, ३५९। ६, ४९, १;	
३६३। ७, ३५, ४, ४५२। ३६, २;	
४६५। ४१, १; ४९४। ४२, ५;	
४९९। ८, २९, ९; ५४७। १०, ६१,	
१७, २३, २५; ६४३, ६४९, ६५१।	
९३, ६; ७४१। ५१, २; १२०६।	

मित्रावरुणौ देवताया
गुणबोधकपदानि ।

असुरा	४६५
उपमा	५४७
उशन्ता	४९९
दिवि द्वा सदः चक्रांते	५४७
राजाना	३३०, ६४९
शुभस्पती	७४१
सम्राजा दिवि	५४७

(१६०)

सर्पिरासुती	५४७
सुपाणी	२२०
सुम्रयन्ता	६६३

उपमासूची ।

इषं न ४६५ सुवृत्तिं कृण्वे ।
धन्वा इव ७४१ दुरिता अति एति ।
गातुः पूर्वी इव ६५१ सूनुतायै दाशत् ।
वयः न १५८ वस्मनस्परि प्र पत्तन् ।
पशुषः वाजान् न २४० त्रासीथां नः ।
सूरः न ९६ रयूम गमस्तिः रथः अयौत् ।
मेघः १, १६४, २६; १२४ । (मेघलक्षणा-
धेनुः) १६४, ३२; १३० । मध्यस्थानः
वायुर्वा ।

धेनुः	१२४
परिवातः मातुः योनौ	
बहुप्रजा	१३०
मातुर्योनौ परिवातः	१३०
सुदुघा	१२४
यजमान-ब्रह्माणौ १०, ११४, ३; ७८४	
वृषणा	७८४
सुपर्णा	७८४
यजुः १०, १८१, ३; ८३६	
यज्ञः ७, ३४, ५-७; ४३०-४३२ ।	
३५, ७; ४५५ । ४२, २; ५०२ ।	
१०, ६६, ६; ७२२ । ११४, ६-७;	
७८७-७८८ ।	
आप्नानः	७८८
केतुः	४३१
तीर्थः	७८८
वीरः	४३१

देवतारहितमन्त्रे

गुणबोधकपदानि ।

जीराध्वरः	५९९
दिविस्पृक्	५९९

उपमासूची ।

पृथिवी न भूम ४३२ भारं बिभर्ति ।
यमः १०, ६४, ३, ६७८ । ९२, ११;

७३१ । १६५, ४; ८३१ । १४, ७-९;
१२६७-१२६९ ।

कपोतः यस्य दूतः	८३१
दिवि (-स्थः)	६७८
दूतः यस्य कपोतः	८३१
मदनं स्वधया	१२६७
मृत्युः	८३१
राजा	१२६७
स्वधया मदनं	१२६७

रथः १, १६४, २-३; १००-१०१

एकचक्रः	१००
एकः सप्तनामा अश्वः यं वहति	१००
सप्त अश्वः यं वहन्ति	१०१
सप्तचक्रः	१०१
सप्तनामा एकः अश्वः यं वहति	१००
सप्त युजन्ति	१००

रथन्तरं साम १, १६४, २५; १२३।१०,
१८१, १; ८३४ ।

रश्मयः (सूर्यस्य, आदित्यस्य वा) १,
९०, ८; ३६। १०५, ९, ११; ४६, ४८।
१६४, ३, ७, १६; १०१, १०५, ११४।
१६४, २२-२२, ३६; ११९-१२०,
१३४ । ५, ४४, ४; २९७ । ४७, २;
३२९ (सूर्यो देवता) ।

गुणबोधकपदानि ।

आजिरासः	३२२
अनन्तासः	३२९
अप ईयमानाः	३२९
अभीशवः	२९७
अमृतस्य नाभिं आ तस्थिवांसः	३२२
अर्धगर्भाः	१३४
आ तस्थिवांसः अमृतस्य नाभिम्	३२९
ईयमानाः अपः	३२९
उखः	३२९
ऋतावृधः	२९७
गावः	३६
पन्थाः	३२९
परिभुवः	१३४

भुवनस्य रेतः

मध्वदः	१३४
माध्वीः	१२०
यम्यः	३६
रेतः भुवनस्य	१३४
विपश्चितः	१३४
सप्त	४६, १३४
सर्वशासाः	२९७
सुपर्णाः	४८, ११९-१२०
सुयन्तवः	२९७
सुयुजः	२९७
स्त्रियः सतीः पुंसः आहुः	११४
राका ५, ४२, १२; २७० । २, ३२, ८; १२६६ ।	
दशस्यन्ती	२७०
वृहद्दिवा	२७०
शुभ्राः	२७०

राजानः १०, १०९, ६; ७८०

सख्यं कृष्णानाः ७८०

रातिषाचः ७, ३५, ११; ४५९। ४०, ६;
४९३ [देवपत्न्यः] ।

रायः ७, ३५, २; ४५०
रुद्रः-द्राः १, १२२, ३; ८१। १, ३१, १;
१५८ । ३, २०, ५; १६९। ८, ८;
२२२ । ५, ४१, २; २४१ । ४६, २;
३२१। ५१, १३; ३५८। ६, ४३, १०;
३७२। ५०, १२; ३८९। ७, ४०, ५;
४२२ । ४१, १; ४९४। ८, १९, ५;
५४३। ५४, ३; ५५३। १०, ६१, १-२;
६२७-६२८। ६४, ८; ६८३। ६५, १;
६२२ । ६६, ३-४, १२; ७०९-७१०,
७१८ । ९२, ९; ७२९ । ९३, ४, ७;
७३२, ७४२ x । १२६, ५; ७९६ ।
१२८, ९; ८०८

' रुद्रः ' देवताया गुणबोधकपदानि ।

अजरः	३७१
अप्याः	३८८
आयुधं तिग्मं हस्ते बिभ्रत्	५४३

x अत्र ' रुद्रा ' इतिपदं वर्तते । द्विवचनत्वात् अश्विनोः विशेषणम् ।

१३४	५४३, ७९६
१२०	३७२
३६	७२९
२२७	६२८
१३४	६२८
१३४	४५४
४६, १३४	५४३
२९७	५४३
११९-१२०	६२८
२९७	६२८
२९७	६२८
११४	७३९
२, ३२, ८	४६८
२७०	३७२
२७०	५४३
२७०	३७२
१९, ६, ७८०	३७२
७८०	८२, २४१
१९, ४०, ६	७५२
५, २, ४५०	६२८
१२, ३१, १	६२८
१९, ८, ८	७२९
१, ४६, २	७२९
६, ४३, १०	५४३
७, ४०, ५	७२९
८, २९, ५	७२९
०, ६१, १-२	३७२
८३, ६५, १	४६८
७०९-७१०	७३९
१३, ४, ७	७२९
५, ७९६	५४३
३७२	
३८८	
५४३	

उपमासूची ।

न ६२८ रेत इत ऊति सिञ्चत ।
 १०, ६४, ८; ६८३
 (एकवचनम्-रुद्रस्य पत्नी) । ६,
 ५०, ५; ३८१ । १०, ९२, ११; ७३१ ।
 ३८२
 (द्विवचनम्-यावापृथिवी इत्यर्थे) ।
 ['यावापृथिवी' द्रष्टव्यम्]
 २१ दै० [विश्वे देवाः]

वत्सः (गोः)	१, १६४, २९; १२७
वनस्पतिः	१, ९०, ८; ३६ । ५, ४१, ८; २४७ । ४२, १६; २७४ । ७, ३४, २३; ४४६ । ८, २७, २; ५१३ । ५४, ४; ५५४ । १०, ६४, ८; ६८३
मधुमान्	३६
वना	५, ४१, ११; ६५०
वनिनः	७, ३४, २५; ४४८ । ३५, ५; ४५३
वरुणः	१, ८९, ३; २१ । ९०, १-३, ९; २९-३१, ३७ । १०५, ६, १५, १९; ४३, ५२, ५६ । १०६, १, ७; ५७, ६३ । १०७, ३; ६६ । १२२, ७; ८८ । १८६, २-३; १४१-१४२ । २, २९, १, ७; १५१, १५७ । ३, ५४, १०, १८; १७९, १८७ । ५५, ६; १९७ । ४, ५५, १, ५, ७, १०; २२९, २३२- २३३, २३५, २३८ । ५, २६, ९; २३९ । ४१, २; २४१ । ४२, १-२; २६०- २६१ । ४६, २, ५; ३२१, ३२४ । ४९, ३, ५; ३४२, ३४४ । ६, २१, ९; ३६१ । ४२, १; ३६३ । ५०, १; ३७८ । ५१, ३, १०; ३९५, ४०२ । ७, ३४, १०-११, २४-२५; ४३५-४३६, ४४७- ४४८ । ३५, ६; ४५४ । ३६, २; ४६५ । ३२, ५, ७; ४८५, ४८७ । ४०, २, ४; ४८९, ४९१ । ८, २७, ३, ६-७, १५, १७; ५१४, ५१७-५१८, ५२६, ५२८ । २८, २-३; ५३५-५३६ । ८३, २, ४; ५६०, ५६२ । १०, ३१, ९; ५७६ । ३५, १०; ५८९ । ३६, १, १२-१३, ५९४, ६०५-६०६ । ६१, २४, २६; ६५०, ६५२ । ६३, ९; ६६९ । ६४, १२; ६८७ । ६५, १, ५, ९; ६९२, ६९६, ७०० । ६६, ५; ७११ । ९२, ६; ७२६ । ९३, ४; ७३९ । १०२, १-२; ७७५-७७६ । १२६, १-७; ७९२- ९८ । १६७, ३; ८३३ । ५१, ४, ६; १२०७-१२०८ । ८५, १७; १२२१ ।

९८, १; १२२२ । १, १३६, ६-७;
१२६४-६५ । १०, १४, ७; १२६७

वरुणदेवताया
गुणबोधकपदानि ।

अदब्धः	४६५
अदब्धानि व्रतानि यस्य	१८७
अनुतं क्षत्रं अस्य	४३६
अन्वर्तिता	७७६
अपबाधमानः द्विषः	३१
अपाच्यः	५३६
अप्रमूराः महोभिः	३०
अमृतः	३१
अरिगूर्तः	१४२
इनः	४६५
इन्द्रसखा	४४७
इषः पर्वत	१४२
उग्रः	४३५
ऋजुनीतिः	२९
ऋतधीतिः	४०२
ऋतस्य नेता	४९१
ऋतावान्	४८७
क्षत्रं अनुतं (विश्वायु) अस्य	४३६
गातुवित्	५२
गृणानः	६५२
गोपाः	५३६
चर्षणीनां राजा	७९७
दस्मः	३४२
दाश्वान्	६९६
देवः	१२६७
देववान्	६५२
युक्षः	४४७
द्विषः अपबाधमानः	३१
धृतव्रतः	५१४, ७११
नदीनां पेशः	४३६
नव्यः	५२
नेता	७९७
नेता ऋतस्य	४९१
पतिः	२३३
पदवीः	४६५
पर्वत इषः	१४२

(१६२)

पेशः नदीनाम्	४३६
प्रचेताः	५६०
भद्रः	३४२
मदन् स्वधया	१२६७
मन्द्रः	७३९
महोभिः अप्रमूराः	३०
मीढ्वान्	१२६४
युजः	५६०
राजा ४९१, ७३९, ८३३, १२६७	
राजा चर्षणीनाम्	७९७
राजा राष्ट्राणाम्	४३६
राष्ट्राणां राजा	४३६
वक्मराजसत्यः	४०२
वसव नः	३०
वसुः	३०
विप्रः	६५०
विश्वायु क्षत्रं अस्य	४३६
वृधः	५६०
व्रतानि अदब्धानि अस्य	१८७
शम्	३७
श्रेष्ठवर्चाः	४०२
सजोषाः	५२८
सत्यसवः	६०६
सम्राट्	६९६
सरण्युः अस्य सूनुः अश्वः	६५०
सरस्वान्	७११
सलिलः	७७५
सहस्रचक्षाः	४३५
सुकीर्तिः	१४२
सुक्षत्रः	३६३, ४०२
सुबन्धुः	६५२
सुरातिः	५२८
सुशंसः	४५४
सूरिः	१४२
स्मद्रातिषाचः	५३६
स्वधया मदन्	१२६७

उपमासूची ।

अग्निः वने न ५७६ शोकं व्यसृष्ट ।
वसवः १, १०६, १-६, ५७-६२, ३१,

१, १५८ । ३, २०, ५; १६९ । ८, ८;
२२२ । ५७, ४; २२४ । ४, ५५, १;
२२२ । ५, ४१, १८; २५७ । ४९, ५;
३४४ । ५१, १०; ३५५ । ६, ५०, ११;
३८८ । ५१, ५; ३९७ । ७, ३५, ६,
१४; ४५४, ४६२ । ३९, ३; ४८३ ।
४८, ४; ५०७ । ८, ५४, ३; ५५३ ।
१०, ६६, ३-४, १२; ७०९-७१०,
७१८ । १००, ७, ९; ७५७, ७५९ ।
१२६, ८; ७९९ । १२८, २; ८०८ ।
१०, ९८, १; १२२२

गुणबोधकपदानि ।

जमयाः	४८३
देवाः	३८८, ४८३
पार्थिवासः	३८८
सुदानवः	५७-६२, ७१८
सुनीथाः	२२२

उपमासूची ।

रथं न दुर्गात् ५७-६२ अहसः नः
निष्पिपत्तेन ।

वाक् १, १६४, ४१; १३९ । ७, ३६, ७;
७४०

अक्षरा	४७०
अष्टापदी	१३९
एकपदी	१३९
गौरीः	१-९
चतुष्पदी	१३९
चरन्ती	४७०
तक्षती सलिलानि	१३९
द्विपदी	१३९
नवपदी	१३९
बभ्रुवृषी	१३९
सलिलानि तक्षती	१३९
सहस्राक्षरा	१३९

वाजः-जाः १०, ३१, ५; ५७२ । ६४,
१०; ६८५ । ९३, ७; ७४२

उपमासूची ।

उषसां इव क्षा ५७२ इयं (स्तुतिः) भूयाः ।
वाजी (वृहदुक्थपुत्रः) १०, ५६, १-३;

६१४-६१६
वाजिनः (अग्नि-वायु-सूर्याः) १०, ६६,
१०; ७१६
वातः १, ८९, ४; २२ । ९०, ६; ३४ ।
१२२, ३; ८४ । १८६, १०; १४९ ।
५, ४१, ४; २४३ । ४६, ४; ३२३ ।
६, ५०, १२; ३८९ । ७, ३५, ४, ९;
४५२, ४५७ । ३६, ३; ४६६ । ४०,
६; ४९३ । ८, ५४, ४; ५५४ । १०,
३१, ९; ५७६ । ६४, ३; ६७८ ।
१२८, २; ८०१ । १३७, २-३; ८१०.
८११ । १४१, ५; ८२०

गुणबोधकपदानि ।

अपां वृषण्वान्	८४
अस्त्रिधः	३२३
आश्वत्थतमः	२४३
इषिरः	४५२
कण्वहोता	२४३
त्रितः	२४३, ६७८
दिवः	२४३
दिव्यः	२४३
दूतः देवानाम्	८११
देवानां दूतः	८११
ध्रजत्	४९३
परिजमा	३८९
मीढ्वान्	८१०
वातौ द्वौ	८११
विश्वमेघजः	२४३
विश्वभोजः	२४३
सक्षणिः	२४३
सजोषाः	१०, ६३, १०; ७१६
वाता-पर्जन्या	७१६
महिषस्य तन्यतोः	६-७, १३ ।
वायुः १, १४, ३-४, १०; ६९, १२४, १३०	
१६४, १, २६, ३२; ९९, १२४, १३०	
(मध्यस्थानः वायुः) ५, ४१, २, ६,	
१२; २४१, २४५, २५१ । ४२, १;	
२६० । ४३, ३, ९; २७९, २८५ ।	
५१, १०, १२; ३५५, ३५७, ४९, ४;	

३६६ । ७, ३९, २; ४८२ । ४०, २;
४८९ । १०, ५६, १; ६१४ । ६४, ७;
६८२ । ६५, १; ६९२ । ६६, ५; ७११ ।
९२, १३; ७३३ । ९३, ४, ७; ७३९,
७४२ । १००, २; ७५२ । १०९, १;
७७५ । ११४, १; ७८२

वायुः-गुणबोधकपदानि ।

अतृप्तपन्थाः	२६०
अमीढः	१२४
अश्वः	९९
अमुरः	२६०
(आदित्यस्य) मध्यमः भ्राता	९९
आयुः	२४५
अपिरः	२५१
अर्वा पतिः	२५१
अविः	३६६
अददिष्टिः	७५२
अयुक्	१२४
अमः	१२४
चोदिता मतीनाम्	२८५
चोदिता वाजस्य	२८५
अयान्	२८५
अः	२८५
अतः	२४५-२७५
अतयामा	३६६
अनिगादाः	२८५
अस्तरीयान्	२५१
अयुता	३६६
अयुवान्	४८२
अवहोता	२६०
अयमानः	३६६
अनिता	२४५
अजिमा	२५१, ७३९, ७४२
अरिवातः मातुर्योनौ	१३०
अश्वोनिः	२६०
अयुः	३६६
अयुजाः	१२०
अदधिः	३६६
अता मध्यमः आदित्यस्य	९९

मतीनां चोदिता	२८५
मध्यमः भ्राता अस्य (आदित्यस्य)	९९
मयोभूः	२६०
मातरिश्वा	७७५, ७८२
मातुर्योनौ परिवीतः	१३०
रथप्राः	३६६
रथयुक्	२४५
वाजस्य चोदिता	२८५
विप्रः	२४५
विश्ववारः	३६६
विश्ववेदाः	७४२
शुचिपाः	७५२
सचित्	६८२
सुचेताः	६८२
सुहस्तः	१२४
वास्तोष्पतिः ५, ४१, ८; २४७ । १०, ६१, ७-९; ६३३-६३५	
दभ्रचेताः	६३४
व्रतपाः	६३३

उपमासूची ।

वृषा न फेनं अस्यत् आजौ ६३४ स्मत् आ परैदप ।	
वियुत्	१, १६४, २९; १२७
विद्वान् पथः	५, ४६, १; ३२०
पुर एता	३२०
विधाता ६, ५०, १२; ३८९ । १०, १६७, ३; ८३३	
विट् (श्) सर्वा- ५, २६, ९, २३९ । ८, २८, ३; ५३६	
देवाः ['विश्वे' इति उपपदरहितनिर्देशः ।] १, ८९, १-२, ८-९; १९-२०, २६-२७ । ९०, १-३; २९-३१ । १०५, ३, ७, १२-१४, १७; ४०, ४२-४४, ४९- ५१, ५४ । १०६, २, ७; ५८, ६३ । १०७, २; ६५ । १२२, ५, ७; ८६, ८८ । १३९, १, ११; ९७-९८ । १६४, १०; १०८ । १८६, १०-११; १४९- १५० । २, २९, १-६; १५१-१५६ । ३१, २, ७; १५३, १६४ । ३, २०, १;	

१६८ । ५४, २, ५, २१; १७१, १७४, १९० । ५५, १-२२; १९२-२१३ । ५६, १; २१४ । ४, ५५, १-२; २२९- २३० । ५, २६, ९; २३९ । ४१, १७; २५६ । ४२, १७; २७५ । ४३, १६; २९२ । ४६, २; ३२१ । ४९, ५; ३४४ । ५०, ३; ३४७ । ५१, १३; ३५८ । ६, ४९, १४; ३७६ । ५०, १-२, ९, ११, १३; ३७८-७९, ३८६, ३८८, ३९० । ५१, ६, ८-९, १२, १५; ३९८, ४००-४०१, ४०४, ४०७ । ५२, ५, १५; ४१३, ४२३ । ७, ३४, १, ८-९, १२-१३, १५, १८-१९; ४२६, ४३३- ४४, ४३७-४८, ४००-४२ । ३५, ११; ४५९ । ३९, ६; ४८६ । ४०, १; ४८८ । ४२, २-३, ६; ४९६-४९७, ५०० । ४३, १-५; ५०१-५०५ । ८, २, २७, १, ९-११, १८; ५२१, ५२०-२२, ५२९ । २८, १, ४; ५३४, ५२७ । ८३, १, ३, ६, ९; ५५९, ५६१, ५६४, ५६७ । १०, ३५, १, १०, १२, १४; ५८०, ५८९, ५९१, ५९३ । ३६, २-१२; ५९५-६०५ । ५२, ३-६; ६१०-६१३ । ५६, २-४; ६१५-६१७ । ६१, ७; २७; ६३३, ६५३ । १०, ६२, ७; ६६० । ६३, १-२, ४, ८, १२, १४; ६६१-६२, ६६४, ६६८, ६७२, ६७४ । ६४, १-२, १०-१२, १४, ६७६-७७, ६८५-८७, ६८९ । ६५, ३-४, ७, ९, ११, १५, ५९४-९५, ६९८; ७००, ७०२, ७०६ । ६६, १-२, ४, ६, ८-९, १४; ७०७- ८, ७१०, ७१२, ७१४-१५, ७२० । ९२, ६, १०; ७२६, ७३० । ९३, २; ७३७ । १००, १, ३, ७; ७५१, ७५३, ७५७ । १०२, ३-७; ७७७-८१ । ११४, १-३; ७८२-८४ । १२६, १, ८; ७९२, ७९९ । १२८, २-३, ७; ८०१- २, ८०६ । १३७, १, ५; ८०९, ८१३ । १४१, २; ८१७ । १५५, ५; ८२२ ।	
---	--

(१६४)

१५७, ४-५; ८२६-८२७। १६५, १-३; ८२८-३०। १, २७, १३; ११९९। ४५, १०; १२००। ९४, ८; १२०१। १६४, ५०; १२०२। ७, १०४, ११; १२०३। ८, ६३, १२; १२०४। ८०, १०; १२०५। १०, ५१, २, ४, ६, ८; १२०६-९। ५३, ४-५; १२१०-११। ७२, १-९; १२१२-२०। ८५, १७; १२२१। ९८, ४, ६; १२२५, १२२७। १, १३६, ७; १२६५

विश्वेदेवाः ।

[' विश्वे ' इति उपपदसहितनिर्देशः ।]
१, ३, ७-९; १-३। १४, १-१२; ४-१५। २३, १०; १६। ८९, ७; २५। १२१, १-२५; ६७ ८१ [इन्द्रः वा] । १२२, ३, ११-१४; ८४, ९२-९५। १८६, २-४; १४१-१४३। २, ४१, १३-१५; १६५-६७। ३, ५४, १७; १८६। ५७, २, ५; २२४, २२७। ४, ४४, ६, २९९। ४५, ११; ३१९। ४६, ६; ३३३। ५१, १-३, ८, १३, ३५०-५३, ३५८। ६, २१, ११; ३६२। ४९, १५; ३७७। ५०, १४-१५; ३९१-३९२। ५१, ७। ३९९। ५२, ७-८, १०, १३-१४, १७; ४१४-१५, ४१७, ४२१-२२, ४२५। ७, ३५, ११; ४१९। ३९, ४; ४८४। ४८, ४; ५०७। ५०, ३; ५०८। ८, २७, २, ४५, ११, १४, १९-२१; ५२३, ५१५-१६, ५२५, ५२५, ५३०-३२। ३०, १-४; ५४९-५२। ५४, ३; ५५३। ६९, ११; ५५८। १०, ३१, १-३, ६; ५६८-७०, ५७३। ३३, १; ५७९। ३५, १३; ५९२। ३६, १३; ६०६। ४२, १-२; ६०८-९। ६३, ६, ११; ६६६, ६७१। ६५, १३-१४; ७०४-७०५। ६६, ५, ११, १३; ७११, ७१७, ७१९। ९३, ३, ७; ७३८, ७४२। १२८, २, ४-५; ८०१, ८०१-४। १५७, १; ८१३। ९८, ८; १२२९

' देवाः ' ' विश्वे देवाः ' च

उभयोः मिलित्वा

गुणबोधकपदानि ।

अग्निजिह्वाः २५, ३६२, ३७९,

४२१, ६२८

अग्निहोतारः ७१४

अजस्राः २३०

अदब्धाः-सः ४०१, १९

अदब्धधीतयः ३६५

अदितेः अद्भ्यः परि पृथिव्या जाताः ६६२

अदितेः अष्टौ पुत्रासः १११९

अद्भुतः ३, ५२०, ७१४

अधृष्टाः ३९२

अध्वन् यान्तः ५६४

अध्वरं वावशानाः १६८

अध्वरस्य प्रचेतसः ७०७

अध्वराणां अभिश्रियः ७१४

अनर्वाणः ६०४, ६७४

अनागसः ६६४

अनिमिषन्तः ६६४

अन्तरिक्षे स्थ ४२१

अपः जनयन्तः ७०२

अपबाधमानाः द्विषः ३२

अपरीतासः १९

अपिप्राणी सदनी वसूयुः च १५०

अप्तुरः २

अप्याः ३८८

अप्रमूराः महोभिः ३०

अप्रयुच्छन्तः ७१९

अप्रायुवः १९

अप्सु एकादश ९८

अप्सु देवाः ७००

अभिक्षत्तारः १५२

अभियवः ४०७, ५६७

अभिश्रियः अध्वराणाम् ७१४

अभिषाचः ७०५

अमूराः २३०

अमृताः ३१, ६५३, ७०५-७, ७११,

७१२, १२०७

अमृतबन्धवः

अमृतस्य राजानः १२१६

अमृतस्य सूनवः ९२

अर्भकः न अस्ति ४१७

अर्भकाः ५४९

अर्यः ११९९

अर्वन्तः १२५

अर्वाश्चः ४९३

अर्हणाः १५६

अश्वं जनयन्तः ६६४

अष्टौ अदितेः पुत्रासः ७०२

असुराः १२१९

अस्त्रिधः ५३१

अहिमायाः ३

आपयः ६६४

आर्या व्रता विसृजन्तः १५४

आशिनाः ७०२

इन्द्रज्येष्ठाः १६७, ४०७, ५६७, ७०७,

१२०४

इन्द्रप्रसूताः ७०८

ईड्याः ११

ईशानासः ९४

ईशिरे भुवनस्य ६६८

ईळाः १४०

उद्भिदः १९

उपस्थ ४११

उरुचक्षसः ४०१

उशनतः ४८४

उषर्बुधः १२

ऊमाः ४८४

ऋतज्ञाः ७०५

ऋतधीतयः २३०, ३५१

ऋतसापः ३६२, ३७९, ७१४

ऋतुभिः हवनश्रुतः ४१८

ऋतस्य गोपाः ३९५

ऋतस्य धाराः दुहानाः ५०४

ऋतस्य परस्यसदः ४०१

ऋतस्य रथ्यः ४७१, ५६१

१२१६	वृद्धः १०, ३९१, ४१८, ६९४,	पृथिव्याः अदितेः	६६२	निचेतारः	६५३
९२	६२८, ७०७	ज्योतिष्कृताः	७०७	निरुन्धानासः	८८
४१७	वृद्धाः १७९	ज्योतीरथाः	६६४	नृचक्षसः	६६४
५४९	एकादश अप्सु	तनूनां रथ्यः	३९८	पत्नीवन्तः	१०
११९९	एकादश दिवि	तुराः-रासः ४०८, ५६८, ५९३		पर्वतासः	१२०४
१२५	एकादश पृथिव्याम्	तुविजाताः	६६६	पर्वतान् जनयन्तः	७०२
४९३	विमायासः	तूर्णयः	३	पार्थिवासः	३८८, ७००
१५६	विमासः	त्रयः च त्रिशत् च	५५०	पावकाः	३९५
६६४	विषयीः जनयन्तः	त्रातारः	३७८	पुत्रासः अदितेः अष्टौ	१२१९
७०२	विषयः १७९, १८६	त्रिशति परः त्रयः	५३४	पुष्टिं दधानाः प्रियरथे	८८
१२१९	विशस्ताः	त्रिषु स्थन	४२	पूतदक्षाः	४०१
५३१	विराकः न	त्रीणि शता त्री सहस्राणि त्रिशत् च ६१३		पूषरातयः	१६७
३	विषयः	दक्षपितरः	३७९	पृथिवीं जनयन्तः	७०२
६६४	विश्वियाः	दक्षस्य रथ्यः	३९८	पृथिव्या एकादश	९८
१५४	विषयः	दधानाः पुष्टिं प्रियरथे	८८	पृश्निमातरः	२५
७०२	विषयः	दशस्यन्तः	३८८	पृषदश्वाः	२५
११९९	विषयः जनयन्तः	दस्माः	२३०	प्रचेतसः	६६८, १२२१
६७, ७०७,	विषयः	दाश्वांसः	२	प्रचेतसः अध्वरस्य	७०७
७०८	विषयः	दिवक्षसः	६२८	प्रयुजः जनानाम्	५७९
११	विषयः ऋतस्य	दिवः मध्ये तस्थुः	४७	प्रातर्यावीणः	३५२
९४	विषयः सारसः	दिवि एकादश	९८	प्रावितारः	५१३
६६८	विषयः सन्नाः	दिवि सूर्य रोहयन्तः	७०२	प्रियक्षत्राः	५२०
१४०	विषयः शीघृतः	दिवेदिवे रक्षितारः	१९	बृहन्तः	६०४
१९	विषयः सन्नाधसः	दिव्याः	३८८, ७००	बृहच्छ्रवसः	७०७
४११	विषयः मन्तवः विश्वस्य	दीधितिः विश्वेषां देवानाम्	१५०	बृहद्दिवा	७१४
४०१	विषयः विदधेषु	दीर्घश्रुतः	७८३	ब्रह्म	७०२
४८४	विषयः	दुहानाः ऋतस्य धाराः	५०४	ब्रह्मकृताः	७११
१२	विषयः देव्यः	दैव्यः जनः	६२५, ६३२	भद्राः	१९, १२१६
४८४	विषयः अपः	द्यविस्थ	४२१	भुवना ईशिरे	१२२१
७०५	विषयः अश्वम्	द्विजन्मानः	३७९	मध्ये तस्थुः महो दिवः	४७
३०, ३५१	विषयः ओषधीन्	द्विषः अपबाधमानाः	३१	मनवः	२५
७९, ७१४	विषयः गाम्	धृतव्रताः	१५१, ७१४	मनुप्रीतासः	६६१
४१८	विषयः पर्वतान्	न अर्भकः	५४९	मनोः यज्ञत्राः	७०५
३९५	विषयः पृथिवीम्	न कुमारकः	५४९	मनोः यज्ञियाः	६०३
५०४	विषयः ब्रह्म	नभोजुवः	९२	मन्तवः विश्वस्य स्थातुः जगतश्च	६६८
४०१	विषयः वनस्पतीन्	नरः	४०१	मन्त्राः	३९१
७१, ५६१	विषयः प्रयुजः	नाम येषां चास महत्	१८६	मन्त्राः	९२
	विषयः अद्भ्यः परि	नामानि विश्वा येषां नमस्यानि,		मयोभुवः	४९३
		यज्ञियानि, वन्यानि	६६२	महयन्तः	६९५

(१६६)

महान्तः	६०४, ६७४, ११९९
महिमघः	८९
महोभिः अप्रमूराः	३०
मेहनाः	१२०४
यजताः	३७९
यजत्राः	१०-११, २६, १५६, १६४, ३९२, ३९८, ४०१, ४२१, ४२५, ५०४, ६५३, ६७१, ७९९
यजत्राः मनोः	७०५
यज्ञानिष्कृतः	७१४
यज्ञियाः १८७, २६३, ४८४, ५५०, ७१२	
यज्ञियाः मनोः	६०३
यज्ञियाः यज्ञेषु	७३८
यज्ञेषु यज्ञियाः	७३८
यान्तः अध्वन्	५६४
युज्याः	४८६
युवानः	१४०, ११२९
रक्षितारः दिवेदिवे	१९
रथ्यः ऋतस्य	४०१, ५६१
रथ्यः तनूनाम्	३९८
रथ्यः दक्षस्य	३९८
रथ्यः वचसः	३९८
राजानः	९२
रातिषाचः	३७६, ७०५
रिशादसः	५१५, ५२१, ५५०
रुद्राः	१२०४
रोहयन्तः दिवि सूर्यम्	७०२
वचसः रथ्यः	३९८
वनस्पतीन् जनयन्तः	७०२
वन्द्याः	२४६
वरिवोविदः	५२५
वरुणप्रशिष्टाः	७०८
वशाः	७२६
वसवः	५७-६२, २२२, ३९२, ३९७, ३९९, ५१३, ५२०, ५३१, ७५७
वसवानाः	३०
वस्रः	३०
वह्यः	३, ७८३
वावशानाः अध्वरम्	१६८
विदथेषु जगमयः	२५

विधातारः	२३०
वियांतारः	२३०
विश्वाः	४०१
विश्वमहसः	७३८
विश्वदेवाः	३९९, ४५९
विश्ववेदसः	५१३, ५१५, ५२२, ५३०, ५३१-५३२, ७०७, ७११, ७४२
विश्वेषां देवानां दीधितिः	१५०
विस्वजन्तः आर्या व्रता	७०२
वृत्रहल्ये भरद्वातौ सजोषाः	१२०४
वृधासः	१४१
वृषणः	७१२
वृषासः	५५९
वैश्वानराः	५५२
व्रता विस्वजन्तः आर्या	७०२
शम्भुवः	४०, ५८
शुभंयावानः	२५
शूषाः	२४६
श्रुतरथे पुष्टिं दधानाः	८८
सजोषसः	१६८, ५१६, ५५३, ६५३
सजोषसः वृत्रहल्ये भरद्वातौ	१२०४
सतो महान्तः	५४९
सत्याः	३७९
सत्यधर्माणः	३५१
सधन्यः	३९५
सनिष्यवः	२३४
सपर्यवः	१७१
समनसः	५०४, ५१६
समन्यवः	५२५
सरातयः	५२५
सर्वे	८०१
सामभिः स्तूयमानाः	६५
सुकृतः	६६९
सुजाताः	३९५
सुज्योतिषः	१६८, ३७९
सुदानवः	५७-६२, ४०४, ५६४, ५६७, ७०२, १२००
सुदुषाः	५०४
सुमित्र्यः	६२४

सुमृळीकाः	४१७
सुरातयः	६९५
सुव्रताः	३६३
सुसंरब्धाः	१२१७
सूनवः अमृतस्य	४१७
सूरयः	६९५, ७१७
सूरचक्षसः	२५
सूर्य दिवि रोहयन्तः	७०२
स्तुताः	३९१-३९२
स्तूयमानाः सामभिः	६५
स्थातुः मन्तवः विश्वस्य	६६८
स्वतवसः	१४९
स्वर्गिरः	७०५
स्वर्वन्तः	३७९
स्वर्विदः	७०५
स्वाध्यः	६३३
हवनश्रुतः ऋतुभिः	४१७
हुवानाः	३९१
‘देवाः, विश्वे देवाः’ च देवतानां उपमासूची ।	
उक्षा इव स्वसराणि २ सुतं आ गन्त तूर्णयः ।	
ऋषिवत् ७२० देवान् स्वस्त्ये ईळानाः ।	
कर्मारः इवः १२१३ ब्रह्मणस्पतिः समधमत ।	
गौरः न क्षेप्रः १२०८ अविजे जयायाः ।	
यथा ह त्यत् गौर्यं चित् पदि धिताममुद्यत् ।	
७३९ एवमु वसवः अस्मत् अर्हं विमुद्यत् ।	
तीर्थे न ५७० ऊमाः दस्मं उपयन्ति ।	
दिवि इव ज्योतिः ६१५ स्वं आ मिमीया ।	
नौभिः अपः न ५६१ विष्पिता पुरु अति पर्वथ ।	
पयसा इव धेनुम् ६८७ मे धियं पीपयत् ।	
पिता इव कितवम् १५५ यूयं मा शशास ।	
पितृवत् ७२० वसिष्ठासः वाचं अकृत ।	
पुत्रासः न मातरं विभृत्राः ५०३ देवाः आ सन्दन्तु ।	
पृक्षाः इव ६२५ महयन्तः देवाः मनुष्या स्तवन्ते ।	

४१७ इव ज्ञातयः ७२० अस्मे वसु कामं
 अव धनुत ।
 ६१५ भुवनानि यतयः १२१८ समुद्र अत्र
 ३६३ आ गूळहं सूर्य अजभर्तन ।
 १२१७ सुधत् ५१ सत्तः होता विदुष्टः ।
 ४१७ तः न वाजी ४२६ शुका देवी प्र एतु ।
 १५, ७१७ तः इव अध्वानम् १२०८ भ्रातरः अर्थ-
 २५ मतं अन्वावरीयुः ।
 ७०२ गुपितं क्षत्रियस्य ७७७ न दृताय
 ३९१-३९२ प्रहो तस्य एषा ।
 ६५ तिनः न शाखाः ५०१ ब्रह्माणि विप्राः
 ६६८ विष्वक् वि यन्ति ।
 १४९ इव १५५ मा माधि पुत्रे प्रभीष्ट ।
 ७०५ तः व तृष्णजं मृगम् ४०० तं आध्यः यन्तिः
 ३७९ तः न रथ्यः १६४ यजत्रा धीतिं अश्याः ।
 ७०५ तः न ४४२ तपन्ति शत्रुं भूमा ।
 ६३३ तः १,९०,५,९; ३३,३७ । १६४,
 ४१७ १६; १३४ । १८६, १०; १४९ ।
 ३९१ ३,५४,१४; १८३। ५५, १०; २०१।
 १,४६,२-४; ३२१-३२३ । ४९,३;
 ३४२ । ५१,९; ३५४ । ६,२१,९;
 १६१ । ४९,१३; ३५५ । ५०,१२;
 १८९ । ७,३५,९; ४५७ । ३६,९;
 ४७२ । ३२,५; ४८५ । ४०,५; ४९२।
 ४४,१; ५०६ । ८,२५,१२; ५११ ।
 १७,८; ५१९ । २९,७; ५४५। ५४,४;
 ५५४ । ८३,७; ५६५ । १०,६५,१;
 ३९२ । ६६,५; ७११ । ९२,११;
 ७३१ । १२८,२; ८०१ । १४१,३,
 ५८१८,८२० । १८१,१-३; ८३४-
 ८३६ । १८४,१; ८३७ ।
 'विष्णुः' - गुणबोधकपदानि ।
 अक्षन् ५११
 अद्वेषः १४९
 चक्रमः १४९, १८३
 उरुगायः ५४५
 एषः हविर्भिः ४९२
 गोपाः २०१
 त्रीणि विचक्रमे ५४५

दधानः प्रिया अमृता धामानि २०१
 दस्मः ३४२
 देवः ४९२
 धामानि प्रिया अमृता दधानः २०१
 पाति परमं पाथः २०१
 पुरुदस्मः १८३
 भद्रः ३४२
 भुवनानि विश्वा वेद २०१
 महिमा ७११
 मीढ्वान् ३८९, ४९२
 विचक्रमे त्रीणि ५४५
 वेद विश्वा भुवनानि २०१
 शम् ३७
 सिन्धुः ५११
 सुदानुः ५११
 स्वयावा ५११
 हविर्भिः एषः ४९२
 वृकः (अरुणः) १,१०५,१८; ५५ ।
 अरुणः ५५

उपमासूची ।

तष्टा इव पृष्ठयामयी ५५ उज्जिहीति
 निचाय्य ।
 वृषस्तुभः १०,६६,६; ७१२
 वृष्टिः १,१६४,९,३३; १०७,१३१
 गर्भः १०७, १३१
 नाभिः १३१
 पुत्रः १०७
 वत्सः १०७
 वेदिः ७,३५,७; ४४५। १०,११४,३;
 ७८४
 धृतप्रतीका ७८४
 चतुष्कपर्दा ७८४
 युवतिः ७८४
 वयुनानि वस्ते ७८४
 वस्ते वयुनानि ७८४
 सुपेशा ७८४
 व्रजिनीः (निशाः) ५,४५,१; ३०९
 व्रतानि ७,३५,२; ४५७

शंसः ७,३५,२; (प्र. पा.) ४५०। २;
 (तृ. पा.) ४५०। १०,३१,१; ५६८
 शंसः = नराशंसः । (४५०)
 सत्यस्य सुयमस्य शंसः (४५०)
 देवानां शंसः
 शमी (गोत्वेन निरूपिता) १०,३१,
 १०; ५७७
 शम्भुः । ७,३५,१०; ४५८
 शरीरम् १,१६४,३०; १२८
 अनत् १२८
 जीवम् १२८
 तुरगात् १२८
 परस्यानां मध्ये आ ध्रुवं (शेते) १२८
 शये १२८
 शर्याणावन्तः १०,३५,२; ५८१
 संवत्सरः १, १६४, ३, १०, १२-१४;
 १०१, १०८, ११०-११२ । ३, ५६,
 २-५; २१५-२१८

गुणबोधकपदानि ।

अक्षः भूरिभारः १११
 अजरम् ११२
 अपितं सप्तचक्रे षडरे ११०
 आवृतं रजसा ११२
 चक्षुः सूर्यस्य ११२
 चक्रम् १११-११२
 त्रिपाजस्यः २१६
 त्रिमाता २१८
 त्र्यनीकः २१६
 त्र्युधा प्रजावान् २१६
 द्वादशाकृतिः ११०
 पञ्चपादः ११०
 पञ्चारः १११
 पिता ११०
 पुरीषी ११०
 पुरुधा २१६
 प्रजावान् त्र्युधा २१६
 माहिनावान् २१६
 रजसा आवृतम् ११२
 रेतोधाः शश्वतीनाम् २१६

(१६८)

देवत-सहितायाम्

विचक्षणम्	११०
विदथेषु सम्राट्	२१८
विश्वरूपः	२१६
वृषभः	२१६
शश्वतीनां रेतोधाः	२१६
षळरम्	११०
सनाभिः	१११
सनेमि	११२
सप्तचक्रम्	११०
सम्राट् विदथेषु	२१८
सूर्यस्य चक्षुः	११२
संसारः १, १६४, ३२; १३०	
परिवीतः मातुर्योनौ	१३०
बहुप्रजा	१३०
मातुर्योनौ परिवीतः	१३०
सत्यस्य पतयः (पतयः सत्यस्य) ७,	
३५, १२; ४६०	
समुद्रः ६, ५०, १३-१४; ३९०-३९१।	
७, ३५, १३; ४६१। १०, ६६, ११;	
७१७	
सरमा ५, ४५, ७-८; ३१५-३१६	
सरयुः १०, ६४, ९; ६८४	
मही	६८४
वक्षणी	६८४
सरस्वती (नदी) १, ८९, ३; २१। ३,	
५४, १३; १८२। ५, ४२, १२; २७०।	
४३, ११; २८७। ४६, २; ३२१।	
६, ५०, १२; ३८९। ५२, ६; ४१४।	
७, ३५, ११; ४५२। ३६, ६; ४६९।	
४०, ३, ६; ४२०, ४९३। ८, ५४, ४;	
५५४। १०, ६४, ९; ६८४। ६५, १,	
१३; ६९२, ७०४। १४१, ५; ८२०।	
१८४, २; ८३८। २, ३२, ८; १२६६	
गुणबोधकपदानि ।	
उशती शग्मा वाचम्	२८७
घृताची	२८७
जुजुषाणा हवम्	२८७
दशस्यन्ती	२७०
पिन्वमाना	४१४

बृहद्दिवा	२७०
मयस्करत्	२१
मही	६८४
मीळहुषी	३८९
यजता	३८७
वक्षणी	६८४
वरुत्री	४२३
वाचं शग्मां उशती	२८७
शग्मां वाचं उशती	२८७
शुभ्रा	२७०
सप्तथी	४६२
सिन्धुमाता	४६२
सुभगा	२१
हवं जुजुषाणा	२८७
सरस्वती (वाक्) ६, ४९, ७; ३६९।	
७, ३९, ५; ४८५।	
कन्या	३६९
चित्रायुः	३६९
पावीरवी	३६२
वीरपत्नी	३६९
सविता १, १०६, ७; ६३। १०७, ३;	
६६। १६४, २६; १२४। १८६, १;	
१४०। २, ३१, ६; १६३। ३, २०, ५;	
१६९। ५४, ११; १८०। ५५, १९;	
२१०। ५६, ६-७; २१९, २२०। ४,	
५५, १०; २३८। ५, ४२, ३, ५; २६२,	
२६४। ४६, ३; ३२२। ४८, ५,	
३३२। ४९, १-२, ४; ३४०-३४१,	
३४३। ५०, १-२, ४-५; ३४५,	
३४३, ३४८-३४९। ६, २१, ९; ३६१।	
४९, १४; ३७६। ५०, १, ८, १३;	
३७८, ३८५, ३९०। ७, ३२, १०;	
४५८। ३७, ८; ४८०। ४०, १;	
४८८। ८, २७, १२; ५२३। १०, ३१,	
४; ५७१। ३५, ७; ५८६। ३६,	
१२-१४; ६०५-६०७। ६४, ७;	
६८२। ६६, ४; ७१०। ९३, ९;	
७४४। १००, १, ३, ८-९; ७५१,	
७५३, ७५८-७५९। १२८, ७; ८०६।	

१४१, ५; ८२०। १८१, १-३; ८३४.	
८३६	
सविता-गुणबोधकपदानि ।	
अनर्वा	३४३
अप्रयुच्छन्	६३
अभिमातिषाहः	८०६
अभीद्धः	१२४
असुरः	३४१
आयोः ज्येष्ठं रत्नं विभजन्	३४१
आयोः रत्नं विभजन्	३४०
ईड्यः	७५२
उषसो न प्रतीकम्	३८५
ऊर्ध्वः	५२३
कवीनां कवितमः	२६२
गोधुक्	१२४
घर्मः	१२४
जजान पुरुधा प्रजाः	२१०
ज्येष्ठं रत्नं आयोः विभजन्	३४१
त्राता	६३, ८०६
त्रायमाणः	३८५
त्रिः आ पत्यमानः विदथे	१८०
त्वष्टा	२१०
दत्रवान्	३८५
देवः ६३, १४०, १६९, ११०, २६२,	
३४०-३४१, ३४५, ३४९, ३८५,	
३२०, ४५८, ४८८, ६८९, ७४४,	
७५३, ७५९	
द्युतानः	८३६
घातृणां धाता	८०६
नुमणाः	३४८
नेता	३४५, ३४९
पतिः भुवनस्य	८०६
पायुः	७५२
पुपोष पुरुधा प्रजाः	२१०
प्रजाः पुरुधा जजान	२१०
प्रजाः पुरुधा पुपोष	८०६
भुवनस्य पतिः	३८५
यजतः	५८६
रत्नधा	३४०-३४१
रत्नं विभजन् आयोः	

१-३; ८३४.

पदानि ।

३४३

६३

८०६

१२४

३४१

३४१

३४०

७५९

३८५

५१३

२६२

११४

११४

११०

३४१

६३, ८०६

३८५

१८०

११०

३८५

१०, २६२,

४९, ३८५,

८९, ७४४,

८३६

८०६

३४८

३४५, ३४९

८०६

७५९

११०

११०

११०

८०६

३८५

५८६

३४०-३४१

रत्नी	४८८
रघुस्पतिः	३४९
वरुण्यः	५२३
बाजी	८२०
विद्ये त्रिः आ पत्यमानः	१८०
विभजन् आयोः रत्नम्	३४०
विभजन् आयोः रत्नं ज्येष्ठम्	३४१
विश्वानरः	१४०
विश्वरूपः	२१०
सत्यसवः	६०६
सुजिह्वः	१८०
सुदंसस्	७१०
सुहस्ताः	१२४
हिरण्यपाणिः	१८०

उपमासूची ।

मः न प्रतीकम् ३८५ सविता देवः ।	
मिन ७४४ चर्षणीनां चक्रं नि योयुवे	
म १, १६४, २५; १२३	
मोवाली १०, १८४, २; ८३८ । २,	
१२, ८; १२६६	
मन्धवः १, ९०, ६; ३४ । १०५,	
११, १९; ४९, ५६ । १०६, ७; ६३ ।	
१०७, ३; ६६ । १२२, ६; ८७ ।	
१, ५६, ५; २१८ । ४, ५५, ३; २३१ ।	
१, ४९, ४; ३४३ । ६, ५२, ४, ६;	
११२, ४१४ । ७, ३५, ८; ४५६ ।	
६, ५४, ४; ५५४ । १०, ३५, २;	
५८१ । ६४, ९; ६८४ । ६५, १३;	
४०४ । ६६, ११; ७१० । ९२, ५;	
५५	

गुणबोधकपदानि ।

इषयन्तः	३४३
ग्री षधस्थाः	२१८
देवी	२३१
मिन्वमानाः	४१२
मही	६८४
मातरः	५८१
वसुणीः	६८४
श्रीवरातिः	८७

१२ दै० [विश्वे देवाः]

सप्त	५५४
सुश्रोतुः	८७
सुकृतानि सुकृतां ७, ३५, ४; ४५२	
सुतम्भरः (ऋषिः) ५, ४४, १३; ३०६	
उदञ्चनः	३०६
ऊधः विश्वासां धियाम्	३०६
विश्वासां धियां ऊधः	३०६
सत्पतिः	३०६
सुमतिः आदित्यानाम् १, १०७, १; ६४	
अर्वाची	६४
वरिवोवित्तरा	६४

सुपर्णः १०, ११४, ४-५; ७८५-८६
 सुहवानि देवानाम् ७, ३५, ३; ४५१
 तृनुता १०, १४१, २; ८१७
 सूर्यः १, ९०, ८; ३६ । १०५, १२; ४९ ।
 १०६, ७; ६३ (सविता वा) । १६४, २५;
 १२३ । २, ३१, ६; १६३ [सूर्यः
 सायनाचार्याः] । ३, ५४, ६; १७५ ।
 ५५, ६-७; १९७-१९८ । ५, ४४, ४,
 ७-१०; २९७, ३००-३०३ । ४५,
 १-२, ९-१०; ३०९-३१०, ३१७-
 ३१८ । ४७, ३-७; ३३०-३३४ ।
 ४८, ३; ३३७ । इन्द्रात्मा सूर्यः] ।
 ४९, ३; ३४२ । ६, ५०, २; ३७९ ।
 ५१, १-२; ३९३-३९४ । ५२, ५;
 ४१३ । ७, ३५, ८; ४५६ । ३६, १;
 ४६४ । ४४, १; ५०६ । १०, ३१, ९;
 ५७६ । ३५, २, ८; ५८१, ५८७ ।
 ५६, १-२, ७; ६१४-६१५, ६२० ।
 ६४, ३; ६७८ । १०, ९२, ७, १४; ७२७,
 ७३४ । ११४, १; ७८२ । १४१,
 ३; ८१८ । १८१, ३; ८३६ । १, १३६,
 ६; १२६४

सूर्यः- गुणबोधकपदानि ।

अगुः	३००
अजः	१६३
अन्वग्रं चरति	१९८
अप्रयुच्छन्	६३

अबन्धनः	१९७
अरुषः	३३०
अर्कः	७८२
अर्यः	३९४
अश्मा	३३०
अहा विवर्तयन्	३३७
अहा संवर्तयन्	३३७
उक्षा	३३०
उच्चरन्	४१३
उरुचक्षाः	४५६
उस्रः	३४२
एकः	५५६
एकपात्	१६३
एकः वत्सः	१९७
कविः	१७५, ३००, ३१७
चरति अन्वग्रम्	१९८
जनित्रं परमं संवेशनम्	६१४
जनिवान्	३००
ज्योतिः तृतीयम्	६१४
ज्योतिः दिवि	६१५
तृतीयं ज्योतिः	६१४
त्राता	६३
दिवि ज्योतिः	६१५
दिवो मध्ये निहितः	३३०
देवः	६३, ३०९
देवानां जन्म सनुतः वेद	३२४
द्यौः	३३४, १२६४
द्विमाता	१९७-१९८
निहितः मध्ये दिवः	३३०
नृचक्षाः	१७५
परमं जनित्रं संवेशनम्	६१४
पश्यन् मर्तेषु ऋजु वृजिना	३९४
पुरुस्तात् शयुः	१९७
पृश्निः	३३०
बुधः	१९८
बृहन्	३३४, १२६४
मधुमान्	३६
युवा	३१७
१ धुः	३१७

वत्सः एकः	१९७
विदयानि त्रीणि वेद	३९४
विदधेषु सम्राट्	१९८
विप्रः	३९४
विवर्तयन् अहो	३३७
विश्वं अनु प्रभूतः	५५६
विश्वाः उक्षाः स्पष्टव एति	५८७
वृजिना पश्यन् मर्तेषु ऋजु	३२४
वृषा	३३३
वेद देवानां सनुतः जन्म	३९४
शयुः परस्तात्	१९७
श्येनः	३१७
संवर्तयन् अहो	३३७
संवेशनं परमं जनित्रत्	६१४
सप्ताश्वः	३१७
समुद्रः	३३०
समुद्रः आसां स्तुतीनाम्	३०२
सम्राट् विदधेषु	१९८
सहसामानः	७८२
सुपर्णः	३३०
सुमहः	३७९
सूरः	३२४, ७२७
स्तुतीनां आसां समुद्रः	३०२
स्तेगः	५७६
खः	३०९
खावसुः	३००
होता	१९८

उपमासूची ।

अमर्ति न ३१० श्रियं वि सात् ।
उद्गातृ नावम् ३१८ धीराः तं अनयन्त ।
रुक्मः न दिवः ३९३ उदिता व्ययौत ।
सूर्यामासा १०, ६४, ३; ६७८ । २२, १२; ७३२ । ९३, ५; ७४०
दिविक्षिता ७३२
विचरन्ता ७३२
सदनाय सधन्या ७३२
सोमः १, १४, ४ (इन्द्रवः), ७, १०, १३ । ८९, ३; २१ । २, ४१, १४; १६६ । ५, ४३, ४; २८० । ४६, ४; ३२३ ।

५१, ९, १२; ३५४, ३५७ । ६, ५१, १४; ४०६ । ५२, ३; ४११ । ७, ३५, ७, ४५५ । ११, १; ४९४ । ८, २९, १; ५३२ । १०, ३५, २; ५८१ । ३६, ८; ६०१ । ५२, २; ६०९ । ५७, ६; ६२६ । ६१, १६; ६४२ । ६५, १, २, १०; ६९२, ६९३, ७०१ । १००, ४; ७५४ । १०९, १-२; ७७५-७७६ । १२८, ५; ८०४ । १४१, ३; ८१८ । १६७, ३; ८३३ । १, ४५, १०; १२०० । १३६, ६; १२९४

सोमदेवताया

गुणबोधकपदानि ।

अंशुः	२८०
अजि हिरण्यम्	५३९
अध्वरथीः	६०१
अपां पेरुः	६०१
अभिषक्तिपाः	४११
अहणीयमानः	७७६
आहुतिः देवानाम्	६०९
इन्द्रवः	७
इन्द्रियः	६०१
गिरिष्ठाः	२८०
गोपाः ब्रह्मणः	४११
घृतश्रीः	६२३
चमूपदः	७
जीवधन्यः	६०१
तिरो अह्वयः	१२००
तीव्रः	१६३
देवानां आहुतिः	६०२
देवान्यः	६०१
द्रप्सः	७
पतिः भुवनस्य	३५७
बभ्रुः	५३९
ब्रह्मा	६०९
ब्रह्मणः गोपाः	४११
भुवनस्य पतिः	३५७
मत्सरः-राः	१६६, ७

मधुमान्	१६६
मधु सोम्यम्	१३
मध्वः	७
मध्वः रसः	२८०
मयोभू	७७५
मादयिष्णवः	७
युवा	५३२
राजा	६४२, ७५४, ७७६, ८०४, ८३३

विप्रः	६४२
विपुणः	५३९
वि सेतुः	६४२
वेधाः	६४२
शुकः	२८०
समिद्	६०९
सुरश्मिः	६०१
सुवानः	५८१
सुहवः	६०१
सूनरः	५३९
सोम्यं मधु	१३
स्तुतः	६४२
हिरण्ययं अजि	५३९

उपमासूची ।

नेमिं न चक्रं अर्वातो
रघुद्रु ६४२ कक्षीवन्तं रेजयत् ।
सोमजामयः १०, ९२, १०; ७३०
सोमसूर्यचक्रमणानि १, १६४, १९; ११७

उपमासूची ।

धुरा न युक्ताः ११७ तानि रजसः वहन्ति ।
स्तोता १०, १३७, ४; ८१२
स्तोमः (देवस्तुतिः) १०, ९३, १२-१४; ७४७-७४९

उपमासूची ।

तना न सूर्ये ७४७ मे स्तोमं बाधन्त ।
तष्टा इव अनपच्युतम् ७४७ मे स्तोमं ।
वाधन्त ।
नेमधिता न पौस्या ७४८ राया युक्ता
हिरण्ययी वावर्त ।
वृथा इव विष्टान्ता ७४८ हिरण्ययी वावर्त ।

१६६	नवन न अङ्ग्यम् ७४७ मे स्तोमं
१३	वावृधन्त ।
७	तः १०, ३६, १; ५९४ । ६५, १; ६९२ ।
२८०	६६, ४; ७१०
७७५	वृहत् ६२२, ७१०
७	तथावान् (प्रश्नोत्तराणि) १०, ३१, ७-९;
५३२	५७४-५७६
७७६, ८०४,	

स्वरूपां मितयः	७, ३५, ७; ४५५
स्वस्तिः	४, ५५, ३; २३१
हविष्कृतः	१०, ६६, ६; ७१२
वृषणः	७१२
हस्तौ	१०, १३७, ७; ८१५
अनामयित्नु	८१५
दशशाखौ	८१५

होता ७, ३९, १; ४८१ । १०, ३५, १०;	
५८९ । ६४, १५; ६९०	
इषितः	४८१
सप्त	५८९
होतारा दैव्या	१०, ६६, १३; ७१९
पुरोहिता	७१९
प्रथमा	७१९

विश्वे-देवाऽन्तर्गता देवताः

(२) यजुर्वेद-मन्त्राणाम् ।

५३९	अग्निः १०, ५; १३२५
१३	अक्षरपंक्तिः छन्दः १५, ४; १३४८
६४२	असाः १०, २८; १३२९
५३९	अग्निः ८, १९; ८४९ । १४, ७, २०;
	८१८-८५९ । १५, ५४; ८६२ । १७,
	७३; ८६३ । १८, ७६; ८६४ । २७,
	५२; ८७३ । ८, २७; १२४४ । १५,
	५० । १२४९ । १७, ५६; १२५० ।
	१०, १४; १२५३ । ३३, ७; १२६१ ।
	३३, ४८; १२६२ । ३, ९-१०; १२७९-
	१२८० । ४, ७; १२८१ । ५, २, ९;
	१२८३, १२८५ । ६, १६, २१, २६;
	१२८९, १२९२, १२९४ । ९, ३१;
	१३१९ । १०, ५, ९, २३; १३२५,
	१३२६, १३२८ । ११, ६६; १३३२ ।
	१५, १५, ५२; १३५९, १३६५ । १८,
	३७; १३६६ । २१, ६१; १३७५ ।
	२३, १३; १३७७ । २६, १; १३८४ ।
	२८, २३; १३८६ । ३२, १५; १३८९ ।
	३५, ३; १३९०
	अंगिराः १२८५
	अनाधृष्टं ते नाम १२८५
	असितप्रविः १३७७

आकृति प्रयुक्	१२८१
आकृति प्रयुक्	१३३२
आयुः	१२८५
ऋषिः	१३७५
ऋषीणां नपात्	१३७५
गृहपतिः	१३२६, १३२८
चित्तं प्रयुक्	१३३२
जातवेदाः	८७३
जोष्टा	१२५०
ज्योतिः	१२७९
तपस् दीक्षा	१२८१
दीक्षा तपः	१२८१
देवः	८६४, १२८५, १३७५
देवता	८५९
देवानां समिद्	१२४४
दैव्यः	१२५०
धर्ता	१२५०
धामच्छद्	८६४
नभः नाम	१२८५
पुरः (स्थः)	१३५९
पूषा सरस्वती	१२८३
प्रयुक् आकृतिम्	१२८१, १३३२
प्रयुक् चित्तम्	१३३२

प्रयुक्त मनः मेधाम्	१३३२, १२८१
प्रयुक्त वाचो विधृतिम्	१३३२
प्रयुक्त विज्ञानम्	१३३२
मनः मेधां प्रयुक्	१२८१, १३३२
मेधां मनः प्रयुक्	१२८१, १३३२
वर्चः	१२७९
वाचो विधृतिं प्रयुक्	१३३२
विज्ञानं प्रयुक्	१३३२
वैश्वानरः	८५८, १२९२, १३३२
सजूः रात्र्या	१२८०
सजूः सवित्रा	१२८०
सरस्वती पूषा	१२८१
सूर्यरश्मिः	१३५९
हरिकेशः	१३५९
होता	१३७५
अग्निः (भूः)	३, ५; १२७८
अग्निः (सोमः)	८, ५६; १३१०
अग्नीषोमौ	२, १५; १२७४ । ६, ९;
	१२८७
अग्नेः पुरीषम्	१५, ३; १३४७
अग्नेः भागः	१४, २४, १३४४
अघ्न्या नामानि	८, ४३, १२४५

*

(१७९)

अदितिः	१२४५	अनुष्टुप् छन्दः १४, १०, १८; १३३९,
इडा	१२४५	१३४१ । १५, ५; १३४९
काम्या	१२४५	अन्तरिक्षम् ३६, १७; ८७५ । ४, ७;
चन्द्रा	१२४५	१२८१ । ६, २१; १२९२ । ७, २;
ज्योता	१२४५	१२९५ । २६, १; १३८४
मही	१२४५	अन्तरिक्षं छन्दः १४, १९; १३४२ ।
रत्ना	१२४५	१५, ६; १३५०
विश्रुतिः	१२४५	अन्तर्यामः ग्रहः ७, २७; १३०२
सरस्वती	१२४५	अन्धः (सोमः) ८, ५४; १३०८
हव्या	१२४५	अपानः २३, १८; १३७८
अङ्गाङ्गं छन्दः	१५, ५; १३४९	अपामार्गः ६५, ११; १३९१
अङ्कुपं छन्दः	१५, ४; १३४८	अब्दः १२, ७४; १३३५
अजा	४, २६; १२८९	अयवोभिः सजूः १३३५
अजाः छन्दः	१४, १९; १३४२	अर्यमा १०, ५; १३२५
अथर्वा (सोमः)	८, ५६; १३१०	अर्वा २९, २०; १२५७
अदितिः ९, ३४; १३२२ । १०, ९;		अवभृथः २०, १८; १३७०
१३२६ । १४, ४८; १३६४		निचुम्पुणः १३७०
अदित्यै भागः १४, २३; १३४९		निचेरुः १३७०
अधरारणिः ५, ४; १२८३		अश्वः २३, १३, १८-२०; १३७७
अधिपतिः १५, १०; ८६१		१३७८-८० X
अधिपतिः छन्दः १४, ९; १३३८		अश्वः (दक्षिणा) ७, ४७; १३०६
अधीतम् १५, ७; १३५१		अश्वः छन्दः १४, १९; १३४२
अध्वरः ६, २३; १२९३		अश्वकः १३७८
तपसः तनूः १२८२		गणपतिः गणानाम् १३७९
प्रजापतेः वर्णः १२८२		गणानां गणपतिः १३७९
उरुशर्वा १३२६		गर्भधः १३७९
उर्वशी १२८३		निधीनां निधिपतिः १३७९
देवः १२९३		प्रियाणां प्रियपतिः १३७९
हविष्मान् १२९३		राथ्यः १३७७
अनः (शकटम्) १, ८; १२३४		रेतोधाः १३८०
देवानां वहितमम् १२३४		वाजी १३८०
देवानां जुष्टतमम् १२३४		वृषा १३७७, १३८०
देवानां देवहृतमम् १२३४		हयः १३०६
देवानां पप्रितमम् १२३४		अश्वस्तुतिः ९, ९; १३१४
वहितमं देवानाम् १२३४		अश्विनौ १४, ७; ८५८ । १९, १२;
वहितमं सन्नितमम् १२३४		१२५२ । २१, ५३; १२५४ । ३३, ४८;
अनाधृष्टः छन्दः १४, ९; १३३८		१२६२ । ६, ९; १२८७ । ९, ३१;
अनुपद १५, ८; १३५२		१३१९ । १०, ३१; १३३० । १२, ७४;

१३३५ । २१, ४१-४३, ६०; १३७९.
१३७४ । २८, ४; १३९३

गुणबोधकपदानि ।

अध्वर्यु	८५८
उभा	१२६९
दंसोभिः सजूः	१३३५
नासत्या	१२६२
मिषजा	१२५२, १२५४
अष्टाचत्वारिंशः विवर्तः १४, २३; १३४३	
अष्टादशः प्रतूर्तिः १४, २३; १३४३	
असुः (सोमः) ८, ५८; १३१२	
असुरः (सोमः) ८, ५५; १३०९	
अस्थि [वसु] २०, १३; १३६८	
असीवयः छन्दः १४, १८; १३४१	
अहः १५, ६; १३५०	
अहोरात्रे ६, २१; १२९२	
आक्रमः १५, ९; १३५३	
आग्नीध्रम् ५, ३०; ८४३	
वैश्वदेवम् ८४३	
आग्रयणः ७, २४; १२९९ । २८; १३०३	
आच्छच्छन्दः १५, ४-५; १३४८४९	
आज्यम् ५, ३५; ८४४ । ५, २; १२८३	
ज्योतिः ८४४	
विश्वरूपम् ८४४	
विश्वेषां देवानां समिद्ध ८४४	
आयुः १२८३	
आत्मा प्रजापतिरूपेण ८, ९; १३०७	
आदित्यः ३१, २१; १२६० । १५, १७;	
१३६१ । २६, १; १३८४	
पश्चात् (स्यः) १२६०	
विश्वव्यचाः १३६१	
आदित्याः १४, २०; ८५९ । १५, १	
१२७३ । २२; १२७६ । २, ६४;	
१३२२ । ११, ५८; १३३१ । १३, ८	
१३७६ । १५, ६; १३५०	
देवता ८५९	
आदित्यानां भागः १४, २५; १३४५	

X शतपथ-ब्राह्मणतः एतेषां मन्त्राणां देवता ' ईश्वरः ' ।

०; १२७१.	दिशः ६, १९; ८४५	१३६४ । २०, ३, ४१-४२, ६०,	निधिपतिः निधीनाम् १३७९
३	आपः ६, २४; ८४६ । ३६, १७; ८७५ ।	१३६७, १३७१-७२, १३७३ । २८,	निधीनां निधिपतिः १३७९
ने ।	१, १२; १२७० । ४, ७; १२८१ ।	२३; १३८६ । ४३; १३८७ । ३२,	प्रियपतिः प्रियाणाम् १३७९
	६, २३, २६; १२९३, १२९४ । २०,	१५; १३८९ । ३८, ४; १३९३	प्रियाणां प्रियपतिः १३७९
८५८	१८; १३७०, २६, १; १३८४	देवः ८६४, १३८७	रेतोधाः १३७९
१२६२	अग्नेगुवः १२७०	देवता ८५९	वाजी १३७९
१३३५	अग्नेपुवः १२७०	धामच्छद् ८६४	वृषा १३७९
१२६२	देवीः १२७०, १२८१	बृहद्वा १३००	उक्थम् १५, १०; ८६१
५२, १२५४	बृहतीः १२८१	मघवान् ८४८	वैश्वदेवाग्निमास्ते उक्थे ८६१
२३; १३४३	भागधेयीः ८४६	वयस्वान् १३००	उक्थ्यम् ७, २८; १३०३
३; १३४३	विश्वेषां देवानाम् १२९३	वयोधाः १३८७	उक्थ्यग्रहः ७, २२; १३००
१८; १३१२	विश्वशम्भुवः १२८१	विश्वौजाः १३२९	उखा ११, ५८, ६०, ६५; ८५४-५६,
५; १३०९	विश्वेषां देवानां भागधेयीः ८४३	बृहदश्रवाः १३२६	११, ५८; १३३१
३; १३६८	शान्तिः ८७५	सुत्रामा १३३०, १३७२, १३७४	ध्रुवा अन्तरिक्षम् १३३१
८; १३४१	हविष्मतीः १२९३	इन्द्रः मरुतश्च ८, ५५; १३०९ [सोमः]	ध्रुवा दिशः १३३१
६; १३५०	अभिचारिकम् ७, १८; १२९८	इन्द्रः ८, ५६; १३१० [सोमः]	ध्रुवा द्यौः १३३१
१; १२९२	भुवः ५, २; १२८३	इन्द्राग्नी २, १५; १२७४ । ७, २३;	ध्रुवा पृथिवी १३३१
९; १३५३	आज्यम् १२८३	१३०१; १२, ५४; १३३४	उत्क्रमः १५, ५; १३५३
३०; ८४३	वशीः ८, ६०; १२४६	उपमासूची ।	उत्क्रान्तिः १५, ५; १३५३
८५३	गन्धिनं ग्रहः ७, २७; १३०२	कुमाराः विशिखाः इव १७, ४८; १३६४	उत्तरारणिः ५, २; १२८३
२८; १३०३	वहनीयः २, ५; १२७३	यत्र बाणाः संपतन्ति ।	पुरुखाः १२८३
१३४८-४९	पमः २, १; १२७२	इन्द्रावृहस्पती ७, २३; १३०१	उदीची दिक् सम्राट् १५, १३; १३५७
२; १२८३	अमये जुष्टः १२७२	इन्द्रावरुणी ७, २३; १३०१	उद्दिशः ६, १९; ८४५
८४४	आखरेष्टः १२७२	इन्द्राविष्णू ७, २३; १३०१	उद्गाता* २३, २७; १३८२
८४४	कृष्णः १२७२	इन्द्रस्य भागः १४, २४; १३४४	
८४४	जुष्टः अमये १२७२	इष्टका १४, ७; ८५८ । २०; ८५९ ।	उपमासूची ।
१२८३		२६; ८६० । १५, १४; ८६१ । ५४;	गिरौ भारं हरन् इव २३, २७; १३८२ ।
९; १३०७		८६२ । १ + १४, ९-१०, १७-१९, २३-	ऊर्ध्व एवं उच्छ्रयतात् ।
१५, १७;		२६; १३३८-४६ । १५, ३-१९;	शीते वाते पुनन् इव २३, २७; १३८२ ।
४		१३४७-६३	मध्वं एजतु ।
१२६०		अधिपत्नी ८६१	उपभूत २, १५; १२७४
१३६१		बृहती दिक् ८६१	उपांशुः ग्रहः ७, ३, १२९६, २७; १३०२
३ । २, ५;		ईश्वरः २३, १९-२०; १३७९-८०x	उपांशुसवनम् (ग्रहः) ७, ३; १२९६ ।
१, २, ४;		गणपतिः गणानाम् १३७९	२७; १३०२
१, १३, ८;		गणानां गणपतिः १३७९	उपावीः ६, ७; १२८६
०		गर्भघः १३७९	तृणविशेषः १२८६
८५९			
५५; १३४५			

+ अतोऽनन्तरं ' इष्टका ' आरोपित देवतानां नामानि स्वतन्त्रतया संगृहीतानि वर्तन्ते ।

x ' उवट-महीधर-भाष्यकारमते एतयोः मन्त्रयोः ' अश्वः ' देवता । शतपथब्राह्मणतः ' ईश्वरः ' देवता ।

* शतपथब्राह्मणमते अत्र देवता ' राष्ट्रश्रीः ' ।

(१७४)

उर्वशी	५,२; १२८३
अधरारणिः	१२८३
उल्लखलम्	१,१४; १२७१
अद्रिः	१२७१
प्रावा	१२७१
पृथुवुध्नः	१२७१
वानस्पत्यः	१२७१
उषा	१२,७४; १३३५
सजूः अरुणीभिः	१३३५
उपासानक्ते	२१,१७; ८६६
यह्नी	८६६
सुपेशसा	८६६
उष्णिक् छन्दः	१४,१०; १३३९ । १४,१८; १३४१
ऋक् (वाक्)	३६,१; १३९२
ऋतवः १३,७; ८५८ । २,३२; १२७७	
षट्	१२७७
घोरः (हेमन्तः)	१२७७
जीवः (वर्षाः)	१२७७
मन्युः (शिशिरः)	१२७७
रसः (वसन्तः)	१२७७
शोषः (ग्रीष्मः)	१२७७
स्वधा (शरद्)	१२७७
पितृणां स्वरूपभूताः	१२७७
ऋभवः	१४,२६; ८६०
ऋभूणां भागः	१४,२६; १३४६
ऋषयः	१५,१०; ८६१
एकत्रिंशः ऋतुः	१४,२३; १३४३
एकविंशः धरुणः	१४,२३; १३४३
एवः छन्दः १५,४-५; १३४८-१३४९	
ऐन्द्रवायवः ग्रहः	७,२७; १३०२
ओषधयः	३६,१७; ८७५
ओषधयः	१५,७; १३५१
ओषधिः	६,१५; १२८८
ककुप् छन्दः १४,९; १३३८ । १५,४; १३४८	
काव्यं छन्दः	१५,४; १३४८
कुम्भं प्रति वचनम्	२०,१७; १३६९
ऋषिः छन्दः	१४,१९; १३४२

कृष्णाजिनम्	१,१४; १२७१
आदित्याः त्वक्	१२७१
शर्म	१२७१
क्षुरो भ्रजः छन्दः	१५,४; १३४८
शर्माः पञ्चविंशः	१४,२३; १३४३
गायत्री छन्दः १४,१०; १३३९ । १८; १३४१	
गिरः छन्दः	१५,५; १३४९
गार्हपत्यः अग्निः	२,२०; १२७५
अदब्धायुः	१२७५
अशीतमः	१२७५
गौः छन्दः	१४,१९; १३४२
गौः (दक्षिणा)	७,४७; १३०६
ग्राः (देवपत्न्यः)	३२,४; १२६२
ग्रन्थिः	५,३०; ८४३
इन्द्रस्य ध्रुवः	८४३
ग्रहः (सोमपात्रम्) ७,२१; ८४७ । ८, ४७; ८५० । ७,१२; १२३९ । १७; १२४० । २२; १२४१ । ३; १२९६	
मन्थिग्रहः	१२४०
प्रावाणः ६,२६; १२९४ । ३८,१५; १३९४	
उपमासूची ।	
विदुषः न यज्ञम् ६,२६; १२९४ शृणोतु मे हवम् ।	
घोषः	१०,५; १३२५
चक्षुः	३६,१; १३२२
चतुर्विंशः योनिः	१४,२३; १३४३
चतुष्टोमः धर्मम्	१४,२३; १३४३
चतुर्विंशः ब्रध्नस्य विष्टपम्	१४,२३; १३४३
चत्वारिंशः स्तोमः	१५,३; १३४७
चन्द्रमाः १४,२०; ८५९ । २,२१; १२३६ । २३,१३; १३७७	
अकृष्णः	१३७७
देवः	१२३६
देवता	८५२
ब्रह्मा	१३७७
मनसस्पतिः	१२३६

चर्म	१०,५; १३२५
सोमस्य त्विषिः	१३२५
उपमासूची ।	
तव इव १०,५; १३२५ मे त्विषिः स्यात् ।	
चात्वालः (अग्निः) ७,२६; १२४२	
५,९; १२८५	
देवानां उत्क्रमणम्	१२४२
छदिः छन्दः १४,९; १३३८ । १५,५; १३४९	
छन्दांसि	६,२१; १२१२
जगती छन्दः १४,१०,१८; १३३९, १३४१	
जनित्रं अग्नेः	५,२; १२८३
शकलम्	१२८३
जुहुः	२,१५; १२७४
तनवः (तनुभिः)	१५,७; १३५१
तन्त्रं छन्दः १४,९; १३३८ । १५,५; १३४९	
तृणम्	६,७; १२८६
उपावीः	१२८६
तेजः	१५,७-८; १३५१-५२
त्रयस्त्रिंशः प्रतिष्ठा	१४,२३; १३४३
त्रयोविंशः सम्भरणः	१४,२३; १३४३
त्रिककुप् छन्दः	१५,४; १३४८
त्रिणव ओजः	१४,२३; १३४३
त्रिवृत्	१५,९; १३५३
त्रिवृत् आशुः	१४,२३; १३४३
त्रिष्टुप् छन्दः १४,१०-१८; १३३९, १३४१	
त्वक्	२०,१३; १३६८
आगतिः	१३६८
आनतिः	६,७; १२८६
त्वष्टा	१२८६
देवः	१३०४, १३०६
दक्षिणाः ७,४५,४७; १३०४, १३०६	
दक्षिणाग्निः	२,२०; १२७५
संवेशपतिः	१२७५
दक्षिणा दिक् (विराट्)	१५,११; १३५५
दर्मा (वृषणौ)	५,२; १२८३

विश्वः ६, १९; ८४५
 बुद्धिः ९, ११-१२; १३१६-१३१७
 श्रोत्रं छन्दः १५, ५; १३४९
 वाः ४, ११; ८४२ । १४, ७; ८५८ ।
 १०, ११; ८६५ । २, ७-११; १२३५-
 १६ । ६, ११; १२३७ । ७, ३, १२,
 १७; १२३८-१२४० । ८, १८;
 १२४३ । ९, ३५-३६; १२४७-४८ ।
 १५, ५०; १२४९ । १७, ५६; १२५० ।
 १८, ६०; १२५१ । १९, १२; १२५२ ।
 १०, १४; १२५३ । २६, १९;
 १२५५ । १८, ११; १२५६ । २९, २०;
 १२५७ । ३१, १४-१५, २१; १२५८-
 १२६० । ३३, ७, ४८, ८९; १२६१-
 १२६३ । ७, २२; १३०० । ९, ३५-
 ३६; १३२३-१३२४ । १७, ५२;
 १३६५ । २१, ६१; १३७५ । २३, ८;
 १३७६ । २६, २; १३८५ । २९, ४७;
 १३८८

गुणबोधकपदानि ।

अग्निनेत्राः १३२३
 आज्यपाः १२५६
 उत्तरासदः १३२३
 उपरिसदः १३२३
 ऋतावृधः १३८८
 गात्रविदः १२३६
 लुषाणाः १२५६
 त्रयाः एकादश ८६५
 त्रयस्त्रिंशः ८६५
 त्रीणि शता त्री सहस्राणि त्रिंशत्
 नव च १२६१
 दक्षिणतवः ८४२
 दक्षिणासदः १३२३
 सुवस्वन्तः १३२३
 परमे व्योमन् १२५१
 पश्चात्सदः १३२३
 पुरासदः १३२३
 बृहस्पतिपुरोहिताः ८६५
 मनोजाताः ८४२

मनोयुजः ८४२
 मन्थिपाः १२४०
 मरीचिपाः १२३८
 मरुनेत्राः १३२३
 यमनेत्राः १३२३
 वयोनाधाः ८५८
 विश्वदेवनेत्राः १२४७, १२४८;
 १३२३
 शुक्रपाः १२३९
 सधःस्थाः १२५१
 सुराधसः ८६५
 सोमनेत्राः १३२३
 अनेहसा १३८८
 विश्वशंभुवौ १३२६
 शिवे १३८८
 द्यावापृथिवी ४, ७; १२८१ । ९, ७;
 १२८४ । ३, १६, २१; १२८९,
 १२९२ । १०, ९; १३२६ । २९, ४७;
 १३८८ । ३८, १५; १३९४
 द्यौः ३६, १७; ८७५ । २६, १; १३८४ ।
 १५, ६; १३५०
 द्यौ छन्दः १४, १९; १३४२
 द्वाविंशः वर्चः १४, २३; १३४३
 द्वेषः ६, १८; १२९०
 धर्मः १५, ६; १३५०
 घाता ३२, १५; १३८९
 धिषणाः ६, २६; १२९४
 देवीः १२९४
 धीः ४, ११; ८४२
 दैवी ८४२
 यज्ञवाहस् ८४२
 वर्चोधाः ८४२
 सुतीर्था ८४२
 सुमृडोका ८४२
 ध्रुवम् ७, २८; १३०३
 नक्षत्राणि छन्दः १४, १९; १३४२
 नभः ६, २१; १२९२
 दिव्यम् १२९२
 नवदशः तपः १४, २३; १३४३
 निकायः छन्दः १५, ५; १३४९

निर्कृतिः ९, ३५; १३२३
 नृचक्षाः सोमः ८, ५८; १३६२
 नृचक्षसां भागः १४, २४; १३४४
 न्यग्रोधः २३, १३; १३७७
 पंक्तिः छन्दः १४, १०, १८; १३३९,
 १३४१
 पञ्चदश भान्तः १४, २३; १३४३
 पदपंक्तिः छन्दः १५, ४; १३४८
 पयः ३८, ५; १३९३
 परमात्मा २३, ६३; १३८३
 प्रथमः १३८३
 सुभूः १३८३
 स्वयम्भूः १३८३
 परमेष्ठी (सोमः) ८, ५४; १३०८
 परमेष्ठी छन्दः १४, ९; १३३८
 परिभूः छन्दः १५, ४; १३४८
 पर्जन्यः १५, १९; १३६३
 अर्वाविषुः १३६३
 उपरि १३६३
 वैष्णव्यौ १२७०
 पवित्रे (दभौ) १, १२; १२७०
 पशुः ६, २, १५; १२८७, १२८८
 पितरः २, ३२; १२७७ । १२, ४५;
 १३३३ । २९, ४७; १३८८ । ३५,
 १५; १३९४ ।
 ऊर्ध्वबर्हिषः १३९४
 धर्मपावानः १३९४
 सोम्यासः १३८८
 पितरः नाराशंसः (सोमः) ८, ५, १३१२
 पुरुषः (जगद्बीजम्) ३१, १४-१५;
 १२५८-१२५९ । १३, ३८; १३३७
 मध्ये अग्नेः १३२७
 वेतसः १३२७
 हिरण्ययः १३२७

उपमासूची ।

सरितः न १३, ३८; १३३७ घेनाः
 सम्यक् सवन्ति ।
 पुरुरवाः (उत्तरारतिः) ५, २; १२८३

(१७६)

देवत-संहिता

पुष्करपत्रम्	१३, २; १३३६	प्रमा	१४, १८; १३४१	अक्षः (सोमः)	८, ५८; १३१२
अग्नेः योनिः	१३३६	प्रवृत्	१५, ९; १३५३	भगः ३३, ४८; १३६२। १०, ५; १३२५	८, ६
अपां पृष्ठम्	१३३६	प्रस्तरः	२, ५; १२७३	भुवः (वायुः)	३, ५; १२७८
पुष्करे वर्धमानः	१३३६	ऊर्णमृदाः	१२७३	भूः (अग्निः)	३, ५; १२७८
पूतभृदाहवनीयौ	७, २८; १३०३	स्वासस्थः	१२७३	भ्रजः छन्दः	१५, ५; १३४९
पूषा ३३, ४८; १२६२। ६, ९; १२८७।		प्राची दिक् राज्ञी	१५, १०; १३५४	भ्रजा	२०, १३; १३५८
९, ३२; १३२०। १०, ५, ९; १३२५-		प्राणः २३, १८; १३७८। ३६, १;		आनतिः	१३५८
१३२६। १८, ३७; १३६६। २०, ३;		१३९२		मनः	३६, १; १३९२
१३६७। २९, ४७; १३८८। ३५, १५;		बर्हिः २, १; १२७२। २, २२; १२७३		मनः छन्दः १४, १९; १३४२। १५, ४;	
१३९४		जुष्टं सुभ्यः	१२७२	१३४८	
विश्ववेदाः	१३२६	विवलं छन्दः	१४, ९; १३३८	मन्थी	७, १८; १२९८
पूषा (सोमः)	८, ५४; १३०८	बृहत् छन्दः	१५, ५; १३४९	मन्थी (सोमः)	८, ५७; १३११
पृथिवी ३६, १७; ८७५। ३, ५; १२७८।		बृहती छन्दः १४, ९, १८; १३३८,		मयन्दं छन्दः	१४, ९; १३३८
५, ९; १२८५। १०, २३; १३२८।		१३४१		मरुतः १२, ७०; ८५७। १४, २०; ८५९।	
१५, ६; १३१०। २६, १; १३८४		बृहती दिक् अधिपत्नी १५, १४; १३५८		३३, ४८; १२६२। २, २२; १२७६।	
अष्टमी	१३८४	बृहस्पतिः २, १२-१३; ८३९-८४०।		९, ३२; १३२०। १०, २१, २३;	
तप्तायनी	१२८५	१४, २०; ८५८। १५, १०; ८६१।		१३२७-१३२८	
देवयजनी	१२७८	१८, ७६; ८६४। ४, ७; १२८१।		देवता	८५२
भूः	१२७८	९, १०-१२, ३२; १३१५-१३१७,		मारुतं शर्धः	१२६२
भूतधाघनी	१३८४	१३२०। १०, ५; १३२५। १२,		मा छन्दः	१४, १८; १३४१
माता	१३२८	५४; १३३४। १७, ४८; १३६४		मांसम्	२०, १३; १३७८
वित्तायनी	१२८५	देवः	८६४	उपनतिः	१३७८
पृथिवी छन्दः	१४, १९; १३४२	देवता	८५८	मित्रः ३३, ४८; १२६२। ९, ३३; १३११	
प्रच्छत् छन्दः	१५, ५; १३४९	धामच्छद्	८६४	मित्रः (सोमः)	८, ५१; १३०९
प्रजापतिः ९, २४, ३४; १३१८, १३२२।		प्रतिधर्ता हेतीनाम्	८६१	मित्रस्य भागः	१४, २४; १३४१
१३, ९; १३२६। १२, ६६; १३३२।		हेतीनां प्रतिधर्ता	८६१	मित्रावरुणौ ६, २१; १२९२। ७, २३;	
२३, ८, ६३; १३७६, १३८३। ३२,		ब्रह्मणस्पतिः ३३, ८९; १२६३। १७, ५२;		१३०१। १०, ९, २१; १३२६-१३२७	
१५; १३८९		१३६५		धृतव्रतौ	१३२६
प्रजान्	१३१८	ब्रह्मा २, १२; ८३९। १८, ७६; ८६४।		मैत्रावरुणं ग्रहः	७, २७; १३०२
मनुः	१३३२	३६, १७; ८७५। १०, २८; १३२९		यजमानः (स्फ्यः) १०, २८; १३२९	
वाजस्य प्रसवः	१३१८	देवः	८६४	अभिभूः	१३२९
सम्राट्	१३१८	धामच्छद्	८६४	बहुकारः	१३२९
प्रजापतिः (सोमः)	८, ५४; १३०८	ब्राह्मणः	७, ४६; १३०५	भूयस्करः	१३२९
प्रजापतिः छन्दः	१४, ९; १३३८	आर्षेयः	१३०५	श्रेयस्करः	१३२९
प्रतिपद्	१५, ८; १३५२	ऋषिः	१३०५	यजमान-आशीः	३, ५; १२७८
प्रतिमा	१४, १८; १३४१	पितृमान्	१३०५	उपमासूची ।	
प्रतिरवाः	३८, १५; १३९४	पैतृमत्यः	१३०५	यौः इव भूम्ना ३, ५; १२७८ अहं	
प्रतीची दिक् सम्राट्	१५, १२; १३५६	सधातुदाक्षिणः	१३०५	भूयासम् ।	
प्रदिशः	६, १९; ८४५	ब्राह्मणाः	२९, ४७; १३८८	पृथिवी इव वरिष्णा ३, ५; १२७८ अहं	
				भूयासम् ।	

८; १३११ ५; १३१५ ५; १३७८ ५; १३७८ ५; १३७९ ३; १३५८ १; १३१२ २। १५, ४।	सुः (मनः) ३६, १; १३९२ ज्ञाः ८, ६०; १२४६। ६, २१; १२९२। १५, १८; १३६२ उत्तरात्र १३६२ संयद्रसुः १३६२ स्ता १८, ३७; १३६६ मः १२, ४५; १३३३ मः (सोमः) ८, ५७; १३११ मस्यः मृत्याः १२, ४५; १३३३ नूतनाः १३३३ पुराणाः १३३३ मानां भागः १४, २६; १३४६ मः (प्राणः) ३६, १; १३२२ मः १, १४; १२७१। ६, १६; १२८९ सुः ५, ३०; ८४३ इन्द्रस्य स्यूः ८४३ मः १०, २१; १३२७ इन्द्रस्य वज्रः १३२७ मन्तरं छन्दः १५, ५; १३४९ मिः १५, ६; १३५० मस्योपः १५, ७; १३५१ मः ३३, ४; १२६२। १०, २८; १३२९ मुखोवाः १३२९ मः (सोमः) ८, ५८; १३१२ मः १४, २०; ८५९। २, ५; १२७३। १, ३४; १३२२। ११, ५८; १३३१। १३, ८; १३७६ देवता ८५९ मः ७, ३; १२३८ मैकं पृणा १२, ५४; १३३४ मुवाः १३३४ मैमानि २०, १३; १३६८ प्रयतिः १३६८ मस्यतिः २१, ६०; १३७४ सुपस्याः १३७४ देवः १३७४ मस्यतयः ३६, १७; ८७५। ९, १२; १३१७। २८, ४३; १३८७
--	--

वपाश्रपण्यौ ६, १६; १२८२ वयः छन्दः १५, ५; १३४९ वयस्कृत छन्दः १५, ५; १३४९ वरिवः छन्दः १५, ४; १३४८ १५, ५; १३४९ वरुणः १४, २०; ८५९। ३३, ४८; १२६२। ९, ३३; १३२१। १०, २८; १३२९। २०, १८; १३७०। २६, १; १३८३। ३२, १५; १३८९ देवता ८५९ सत्यौजाः १३२९ वरुणः (सोमः) ८, ५६; १३१० वसा ६, १९; ८४५। ६, १८; १२९० अन्तरिक्षस्य हविः ८४५ रेट् १२९० वसवः १४, २०; ८५९। ८, १८; १२४३। २, ५, २२; १२७३, १२७६। ९, ३४; १३२२। ११, ५८; १३३१। २३, ८; १३७६। १५, ६; १३५० देवता ८५९ भरमाणाः १२४३ वहमानाः १२४३ वसूनां भागः १४, २५; १३४५ वाक् ३६, १; १३९२ वाक् कल्याणी २६, २; १३८५ वाक् छन्दः १४, १९; १३४२ वातः १४, २०; ८५९ देवता ८५९ वातः (सोमः) ८, ५८; १३१२ वायुः २३, १३; १३७७। २६, १; १३८४। ३२, १५; १३८९। ३५, ३; १३९० ऊर्ध्वनभाः १२८९ दक्षिणा १३६० मास्तः १२८९ विश्वकर्मा १३६० वायुः (भुवः) २, ५; १२७८। ६, १६;

१२८९। १५, १६; १३६० वायुः (सोमः) ८, ५७; १३११ वावाताX २३, २६; १३८१
--

उपमासूची ।

गिरौ भारं हरन् इव १३८१ ऊर्ध्वा एनां उच्छापय । शीते वाते पुनन् इव १३८१ अस्यै मध्यं एधताम् । वासस् (दक्षिणा) ७, २७; १३०६ विदिशः ६, १९; ८४५ विधर्ता १५, १४; ८६१ विधाः १४, ७; ८५८ विधृती (तृणद्वयम्) २, ५; १२७३ वियत् छन्दः १५, ५; १३४९ विराट् छन्दः १४, १०, १८; १३३९, १३४१ विवधः छन्दः १५, ५; १३४३ विवृत् १५, ९; १३५३ विशालं छन्दः १४, ९; १३३८। १५ ५; १३४९ विश्वकर्मा (सोमः) ८, ५४; १३०८ विश्वे देवाः २, १३, १८; ८४०-८४१। ५, ३०, ३५; ८४३-८४४। ६, १९, २४; ८४५-८४६। ७, २१; ८४७। ८, १९, ४७, ५७; ८४९-८५१। ८, ५८; ८५२। ९, ३३; ८५३। १०, ५८, ६०, ६५; ८५४-८५६। १२, ७०; ८५७। १४, ७, २०, २६; ८५८-८६०। १५, १४, ५४; ८६१-८६२। १७, ७३, ८६३। १८, ७६; ८६४। २१, १७; ८६६। २२, ५, २८; ८६७-८६८। २४, २७, ८७०। २५, ५-६; ८७१- ८७२। २७, ५२; ८७३। २९, ६०; ८७४। ३६, १७; ८७५। ३९, ६; ८७६। २, २२; १२७६। ९, ३३; १३२१। ११, ५८; १३३१। ३६, १; १३९२। ३८, १५; १३९४

X शतपथब्राह्मणमते अत्र देवता ' श्रीः '
२३ दे० [विश्वे देवाः]

गुणबोधकपदानि ।		विष्णुधर्माः छन्दः		समिद्ध	
अधिपतयः	८६१	वृषणौ (दभौ)	५, २; १२८३	समुद्रः	२, ५; १२७३
अनुमताः	८५७	वृष्टिः	१५, ६; १३५०	समुद्रः (सोमः)	६, २१; १२९२
अमर्त्याः	८६६	वेदिः	२, १; १२७२	समुद्रः छन्दः	८, ५९; १३१३
उशन्तः	८४९	बर्हिषे जुष्टा	१२७२	सम्पत्	१५, ४; १३४८
गृणन्तः	८४१	वैश्वानरः	१२, ७४; १३३५	सरस्वती	१९, २२; १२५२ । २१, ५३; १२५४ । ३३, ४८; १२६२ । २, २०; १२७५ । १०, १३; १२२५, १३३० । १८, ३७; १३६६ । २०, ३; १३६७ । २१, ४१-४३, ६०; १३७१-७४ । ३८, ४; १३९३
घृतपावानः	८४५	सजूः इडया	१३३५	भिषक्	१२५२
जक्षिवांसः	८४९	सजूः घृतेन	१३३५	यशोभगिनी	१२७५
जागताः	८७४	व्यचः छन्दः	१५, ४; १३४८	वाचा	१२५२
पपिवांसः	८४९	व्यानः	२३, १८; १३७८	सरिरं छन्दः	१५, ४; १३४८
परिधेयाः	८४१	शाकलम् (अग्नेः जनित्रम्)	५, २; १२८३	सर्वम्	३६, १७; ८७५
प्रस्तरेष्ठाः	८४१	शाकलम्	७, १८; १२९८	शान्तिः	८७५
बृहन्तः	८४१	शम्	६, १५; १२४८	सलिलः (सोमः)	८, ५९; १३१३
वसापावानः	८४५	शम्भूः छन्दः	१५, ४; १३४८	सविता	२, १२-१३; ८३९-४० । ६, ९, २१, २६; १२८७, १२९२, १२९४ । ९, १०, ३२; १३१५ । १३२० । १०, ५, २८; १३२५, १३२९ । १८, ३७; १३६६ । २०, ३; १३६७ । ३५, ३; १३९०
वैरूपाः	८७४	शल्मलिः	२३, १३; १३७०	देवः	८३९, १२८७, १२९२, १२९४ । १३१५, १३६६-६७
वैश्वानराः	८५४-८५६, १३३१	शान्तिः	३६, १७; ८७५	सत्यप्रसवं	१३१५, १३२९
शान्तिः	८७५	शान्तिमन्त्राः	३६, १; १३९२	सत्यसवः	१३१५
संखवभागाः	८४१	शुक्रः (सोमः)	८, ५७; १३११	सविता (सोमः)	८, ५४; १३०८
सचेतसः	८६४	शुक्रामन्थिनौ	७, १७; १२४०	सवितुः भागः	१४, २५; १३४५
सप्तदश	८७४	शुक्रामन्थिनौ (ग्रहः)	७, २७; १३०२	सविशः अभीवर्तः	१४, २३; १३४३
सर्वे	८६७	श्री (राष्ट्रश्रीः)	२३, २६-२७	सवृत्	१५, ९; १३५३
सीताः	८५७	१३८१-८२		सामनी	१५, १०; ८६१
स्थेषाः	८४१	श्रुतम्	१५, ७; १३५१	शाकरैर्वते	८६१
विश्वे देवाः (सोमः)	८, ५७-५८; १३११-१३१२	श्रोत्रम्	३६, १; १३९२	सिन्धुः (सोमः)	८, ५९; १३१३
विष्टारपंक्तिः छन्दः	१५, ४; १३४८	श्लोकः	१०, ५; १३२५	सिन्धुः छन्दः	१५, ४; १३४८
विष्णुः	३३, ४; १२६२ । ७, २२; १३०० । ९, ३१; १३१२	षट्त्रिंशः नाकः	१४, २३; १३४३	सीता	१२, ७०; ८५७
विष्णुः (सोमः)	८, ५७; १३११	षोडशी स्तोमः	१५, ३; १३४७		
विष्णुः आप्रीतपाः (सोमः)	८, ५७; १३११	संयत् छन्दः	१५, ५; १३४९		
विष्णुः नरन्धिषः (सोमः)	८, ५५; १३०९	संस्तुप् छन्दः	१५, ५; १३४९		
विष्णुः शिपिविष्टः (सोमः)	८, ५५; १३०९	संक्रामः	१५, २; १३५३		
विष्णुवरुणौ (सोमः)	८, ५९; १३१३	सतोबृहती छन्दः	१४, ९; १३३८		
अप्रतीतौ	१३१३	सत्यम्	१५, ६; १३५०		
पूर्वद्वतौ	१३१३	सदः	५, ३०; ८४३		
वीरतमौ	१३१३	ऐन्द्रम्	८४३		
शविष्ठौ	१३१३	सप्तदशः व्योमा	१४, २३; १३४३		
		समाः छन्दः	१४, १९; १३४२		

* एतयोः मन्त्रयोः सर्वानुक्रमण्यां ' वावाता ' ' उद्गाता ' देवते निर्दिष्टे । उपमानानि तत्र द्रष्टव्यानि ।

अनुमता विश्वैः देवैः	८५७
ऊर्जस्वती	८५७
पयसा पिन्वमाना	८५७
भुता	३३, ८९; १२६३
देवी	१२६३
सः	१२, ७४; १३३५
सज्जः एतशेन	१३३५
सः	१४, २०; ८५९। ३, ९-१०;
१२७९-८०। ६, २३; १२९३। ३५,	
३; १३९०	
जुषाणः	१२८०
ज्योतिः	१२७९
देवता	८५९
सज्जः रात्र्या	१२८०
सज्जः सवित्रा	१२८०
सः (स्वः)	३, ५; १२७८
हविष्मान्	१२७८
सः	८, ५७-५८; ८५१-५२। ७, २९;
१२४१। ४, २६; १२८२। ५, ७;	
१२८४। ६, २१, २६; १२९२,	
१२९४। ७, २; १२९५। ८, ९, ५४;	
१३०७-८। ९, ३१; १३१९। १०, ५,	

२३, ३१; १३२५, १३२८, १३३० ।

गुणबोधकपदानि ।

अंशुः	१२८४
अंशुषु न्युप्तः	८५१
अतिस्तुतः	१३३०
अमृतम्	१२८२
इन्दुः	१३०७
इन्द्रस्य युज्यः सखा	१३३०
इन्द्रियावान्	१३०७
उर्जातः चमसेषु	८५२
चन्द्रः	१२८२
चमसेषु उर्जातः	८५२
देवः	१२८४, १३०७
देवाव्यः	१२४१
न्युप्तः अंशुषु	८५१
पत्नीवान्	१३०७
पवित्रेण पूतः	१३३०
प्रस्थब्	१३३०
बृहस्पतिसुतः	१३०७
राजा	१२९४
वनस्पतिः	१३२८
वायुः	१३३०

शुक्रम्	१२८२
सखा इन्द्रस्य	१३३०
सोमविक्रयी	४, २६; ११८२
सोमांशुः	७, ३; १२९६
स्तोमः	१४, २६; ८३०
त्रयस्त्रिंशः	८६०
स्तोमौ	१५, १०; ८६१
त्रिणव त्रयस्त्रिंशौ	८६१
स्फ्यः	१०, २; १३२९
इन्द्रस्य वज्रम्	१३२९
खर् (सूर्यः)	३, ५; १२७८
खधितिः	६, १५; १२८८
खरुः	६, २१; १२२२
हिरण्यम् (दाक्षिणा)	७, ४७; १३०६
हिरण्यं छन्दः	१४, १९; १३४२
हृदयम् (पशु)	६, १८; १२९०
होतारा दैव्या	२१, ५३; १२५४
होत्राः	७, १५; १२९७
मध्वः	१२९७
सुप्रीताः	१२९७
सुहुताः	१२९७
खिष्टाः	१२९७

विश्वे-देवाऽन्तर्गता देवताः

(३) अथर्ववेद-मन्त्राणाम् ।

६, ४, २; ९३६	
सः १, २, १-२; ८७७-८७८। २,	
१४, ३; ८८९। ३, ८, १, ३; ९०२,	
१०४। ३, १५, ३-६, ८; ९१७-२०,	
१२२। ५, ८, १, ३; ९२३, ९२५। ६,	
३, २; ९३३। ५, ३; ९३८। ७३, १-२;	
१११-५२। ९७, १; ९५७। ७, ७०, ४-५;	
९६५-९६६। ९, १६, २; ९७१ (बहु-	
वचनम्)। १९, १७, १; ९७२। १८, १,	

९८२। २४, ८; १०४३। ५, ३, ३,	
१०४४। १, १६, १-२; १०४८-४९।	
७, २४, १; १०६८। १९, ९, ११-१२;	
१०७३-८० (बहुवचनम्)। ४३, १,	
१०८३। २, १२, ८; १०९८। २८, ५;	
११०१। ३, २२, ३; १११५। १९, ११,	
६; ११२०। २७, ५, ७, १५; ११५९,	
११६१, ११६९ (बहुवचनम्)। ६, १०, १;	
११७०। ५, ३, १; ११७९। १०३, २-	

३; ११८५-८६। १२०, १; ११८७

गुणबोधकपदानि ।

अधिपतिः	११७०
अभिभूः	९५७
आज्येन वर्धयन्	११५९
इद्धः सजातैः	९०४
गार्हपत्यः	११८७
घोरः	९६६
जातवेदाः	१०९८

(१८०)

तुरीयः	१०४८
देवः	८८९, ९६५
प्रजया संरराणः	८८९
यातुहा	१०४८
वर्धयन् आज्येन	११५९
वसुवान्	९८२
विश्वकर्मा	८८९
संरराणः प्रजया	८८९
सजातैः इन्द्रः	९०४

उपमासूची ।

तिष्ठते अश्वाय इव ९२२ विश्वाहा ते इत्
सदं भरेम ।
अग्नीषोमा ६, ९३, ३; ११७८
अंगिरसः २, १२, ४-५; १०९४-९५
आजिरसानां आद्याः पञ्चाशुवाकाः १९,
२२, १; ११२१
अदितिः ३, ८, २; ९०३ । ६, ३१, १;
९३२ । ६, ४, १-२; ९३५-९३६ ।
६८, २; ९४९ । २, २८, ५; ११०१ ।
३, २२, १; १११३ । ६, १२, २;
११८८

गुणबोधकपदानि ।

जनित्रम्	११८८
देवी	९०३
मध्यमेष्ठाः सजातानाम्	९०३
शरपुत्रा	९०३
सजातानां मध्यमेष्ठाः	९०३

उपमासूची ।

माता इव ११०१ अस्मै शर्म यच्छ ।
अनुमतिः ७, २४, १; १०६८
अन्तकः १९, ९, ७; १०७५
अन्तरिक्षम् ६, ४०, १; ९३९ । १९, १५,
५; ९६८ । १७, २; ९७३ । १९, २;
९९३ । ५, ३, ३; १०४४ । १९, ९,
१, १४; १०६९, १०८२ । २, १२, १;
१०९१ । १९, २७, ३; ११५७
[बहुवचनम्] । ६, १०, २; ११७१ ।
१२०, १-२; ११८७-८८

गुणबोधकपदानि ।

उरु	१०६९, १०९१
उरुलोकः	१०४४
त्रीणि	११५७
भ्राता	११८८

अपां नपात् ६, ३, १, ३; ९३२, ९३४
अभिचाराः १९, ९, ९; १०७७
अमृतम् १९, १९, १०; १००१
अर्यमा ६, ४, २; ९३६ । १९, ९, ६;
१०७४ । ६, १०३, १; ११८४
अश्विना ३, ४, ४; ८९८ । ६, ३, ३;
९३४ । ४, ३; ९३६ । १९, १६, २;
९७१ । २०, १; १००३ । ३, २२, ४;
१११६ । १९, २७, १५; ११६९ । ६;
१०३, १; ११८४

देवाः ९३४
पुष्करस्रजा १११६
शुभस्पती ९३४
अष्टर्चाः १९, २३, ५; १०११
अष्टादशर्चाः १९, २३, १५; १०२१
अहः १०, २०, ४; १००६
आदित्यः १९, ९, १०; १०७८
आदित्याः १, ९, १; ८७७ । ३, ८, ३;
९०४ । ६, ४८, १; ९४८ । ७४, ३;
९५६ । १९, १६, २; ९७१ । १७, ४;
९७५ । ६, ११४, १-२; १०६५-६६ ।
१९, ९, ११; १०७९ । २, १२, ४;
१०९४ । २, २७, १५; ११६९

गुणबोधकपदानि ।

अहणीयमानाः	९५६
उग्राः	९५६
यजत्राः	१०६६
यज्ञवाहसः	१०६६

उपमासूची ।

यथा आदित्याः अहणीयमानाः वसुभिः
मरुद्भिः संबभूवुः ९५६ एवा इह इमान्
जनान् संमनसः कृधि ।
आपः ६, ६२, १; ९४२ । ६८, २; ९४९ ।
१९, १७, ६; ९७७ । १८, ६; ९८७ ।

९, १; १०६९ । ४३, ७; १०८९ ।
४, ८, १-७; ११४२-४८ । १९, २७,
३; ११५७ । २७, ९; ११६३

गुणबोधकपदानि ।

इषिरः	९४२
उदन्वतीः	१०६९
ओषधीमतीः	९७७, ९८७
त्रिवृतः	११५७
दिव्याः	११४५-४७
पयस्वतीः	११४५, ११४७
परिष [स] खजानाः व्याघ्रं सिंहम्	११४८

उपमासूची ।

सुसुवः समुद्रं न ११४८ अप्सु अन्तः
तस्थिवांसं द्विपिनं मर्मज्यन्ते ।
आशाः १९, १५, ६; ९६९
सर्वाः ९६९
आशीः २, ३४, ५; ८९१ । १९, २४, ५-
६; १०४०-४१ । २७, ८; ११६२
इन्द्रः १, ९, १; ८७७ । ३, ३, २-३, ६;
८९२-९३, ८९५ । ४, १; ८९६ । ८, ९;
९०३ । १०, १२; ९१३ । १५, १, ६;
९१५, ९२० । ५, ८, २, ४-९; ९२४,
९२६-३१ । ६, ४०, २-३; ९४०-४१ ।
९७, १, ३; ९५७-९५८ । ९९, १-३;
९५९-९६१ । ७, ९८, १; ९६७ ।
१९, १६, १; ९७० । १७, ८; ९७३ ।
१८, ८; ९८९ । १९, ९; १००० ।
२०, ३; १००५ । २४, २, ७-८; १०३७,
१०४२-४३ । १, १६, २; १०४९ ।
१९, १; १०५२ । २६, २; १०५७ ।
७, २४, १; १०६८ । १९, ९, ६; १०८८ ।
१०७४, १०८० । ४३, ६; १०८८ ।
२, १२, ३; १०९३ । २, ३६, ४; ११०१ ।
३, १९, १-८; ११०५-१२ । १९, २७,
१, ९; ११५५, ११६३ । १०३, २-३;
११८५-८६ । २०, १२८, ५; ११९६

गुणबोधकपदानि ।

अभिभूः	९५७
अरातिं नुदन्	९१५
ईशानः	९१५
उग्रः	९३१, ९५८-९५९
उपसथः	८९६
एकजः	९५९
एकराट्	८९६
ओजसा प्रमृणम्	९५८
गोजितः	९५८
ग्रामाजितः	९५८
चेत्ता	९५९
जयन्	९५८
तवस्तरः	१०४२
दस्यूनां हन्ता	९१३
दूरे चित् सन्	८९२
धनदाः	९१५
नमस्यः	८२६
नुदन् अरातिम्	९१५
पुरएता	९१५
पुरुनामा	९५९
प्रमृणन् ओजसा	९५८
मघवान् ११०२, १११०, ११९६	९७९, ९८९
मघत्वान्	९१३
महिमा	९१३
राजा	८९६
वज्रबाहुः	९५८
वणिक्	९१५
विप्रः	८२२
विशाम्पतिः	८९६
वीरः	९५८
वृजहा	९१९, ९३१
शचीपतिः	९१३, ९७०
सखा	१०५७
हन्ता दस्यूनाम्	९१३

उपमासूची ।

अभि वृकः इव ९२६ (शत्रुं) मथनीत ।
आखरः मृगाणां सुषदा बभूव १०२
नारी संश्रिया अविराधयन्ती अस्तु ।

यथा इन्द्रः अधस्पदं चक्रे ९३० तथा अहं

अमृन् अधरान् कण्वे ।

कुलिशेन इव वृक्षम् १०९३ तं वृश्चामि ।

इन्द्राग्नी ३, ३, ५; ८९४ । १९, १६, २;

९७१ । २०, १; १००३ । २७, १५;

११६९ । ६, १०३, १-३; ११८४-८६

इन्द्राणी १, २७, १-४; ८८३-८८६

उपमासूची ।

वेणोः अद्वा इव ८८५ अभितः अद्यायवः

असमृद्धाः ।

इन्द्रापूषणा ६, ३, १; ९३२

इन्द्रियाणि १९, ९, ५; १०७३

पञ्च १०७३

ब्रह्मणा संशितानि १०७३

मनः षष्ठानि १०७३

संशितानि ब्रह्मणा १०७३

ईश्वरः १, १९, १-४; १०५२-१०५५

उत्तमाः १९, २२, १२; ११३२

उत्तराः १२, २२, १३; ११३३

उत्पाताः १९, ९, ७; १०७५

पार्थिवान्तरिक्षाः १०७५

उपोत्तमाः १९, २२, ११; ११३१

उरुगायः २, १२, १; १०९१

अद्भुतः १०९१

उल्का १९, ९, ८-९; १०७६-७७

उषासानका ६, ३, ३; ९३४

ऋषभः १९, २७, १; ११५५

ऋषयः १९, २२, १४; ११३४

एकर्चाः १९, २३, २०; १०२६

एकादशर्चाः १९, २३, ८; १०१४

एकानृचाः १९, २३, २२; १०२८

एकाष्टका ३, १०, ५; ९०९ । १०, १२-

१३; ९१३-२१४

गुणबोधकपदानि ।

इन्द्रपुत्रा	९१४
दुहिता प्रजापतेः	९१४
प्रजापतेर्दुहिता	९१४
सोमपुत्रा	९१४

एकोनविंशतिः १९, २३, १६; १०२२

ओषधयः १९, १९, ५; ९९६ । ३, २३,

६; १०६३ । १९, ९, १, १४; १०६९,

१०८२ । २, ३६, ८; ११०४ [एक व.]

गुणबोधकपदानि ।

दैवीः	१०६३
यासां द्यौः पिता	१०६३
यासां पृथिवी माता	१०६३
यासां समुद्रः मूलम्	१०६३
वीरुधः	१०६३

कृताकृतम् १९, ९, २; १०७०

कृत्याः १९, ९, ९; १०७७

क्षुद्राः १९, २३, २१; १०२७ । २२, ६;

११२६

क्षेत्रस्य पानी २, १२, १; १०९१

गणाः १९, २२, १६; ११३६

गावः १९, ९, ८; १०७६ । १४, २, ५-३-

५८, ११९०-११९५

लोहित क्षीराः १०७६

ग्रहाः १९, ९, ७, १०; १०७५, १०७८

चान्द्रमसाः १०७८

दिविचराः १०७५

ग्रावा ६, ३, २; ९३३

चक्षुः ६, १०, ३; १०७२

चन्द्रमाः चन्द्रः वा १, २७, १-४; ८८३-

८६ । १९, १९, ४; ९९५ । ३, २३, १-६;

१०५८-३३ । १९, ४३, ४; १०८६

(चन्द्रः) । ३, १९, १-८; ११०५-

१२ । ४, ८, १-७; ११४२-४८ । ७,

११८, १; ११४९ । १९, २७, २; ११५६

(चन्द्रः) । ५, २७, १-२५; ११५५-६२ ।

६, १९, १-३; ११७३-७५

गुणबोधकपदानि ।

राजा	११४९
वृजहा	११५६
सोमः	११४९
चतुर्ध्वजः	१९, २३, १; १००७
चतुर्दशर्चाः	१९, २३, ११; १०१७

जरिमा २,२८,३; १०९२
जातवेदाः ३,१०,६; ९१० । १५,८;
२२२ । ५,८,२; ९२४ । १८,१६,१;
९७१ । ३,२२,४; २११६ । १९,२७,
१५; ११६२

तृचाः १९,२३,१९; १०२५
तृतीयाः शंखाः १९,२२,१०; ११३०
त्रयोदशर्चाः १९,२३,१०; १०१६
त्रिवृत् १९,२७,१-१५; ११५९-
११६९
त्वष्टा ३,८,२; ९०३ । ६,३,३; ९३४।
६,४,१; ९३५

देवः ९३४
दक्षिणाः (दानानि) १९,१९,६; ९९७
दधत्यं सीसम् १,१६,२-४; १०४९-५१
दर्वा ३,१०,७; ९११

गुणबोधकपदानि ।

पूर्णा ९११
यज्ञान् सम्भुजती ९११
सम्भुजती यज्ञान् ९११
सुपूर्णा ९११
दशर्चाः १९,२३,७; १०१३
दिवा १९,१५,६; ९६९ । १६,१९,३;
९९४

दिशः १९,२०,२; १००४
देवाः [पश्य ' विश्वे देवाः ' ।]
देवजनाः ६,१९,१; ११७३ ।
९३,१; ११७६

देवताः १९,२७,१०; ११६४
त्रयस्त्रिंशत् ११६४

देवयानाः पन्थानः ३,१५,२; ९१६
देशोपसर्गाः १९,९,९; १०७७
द्यौः ६,३,१; ९३२ । १९,९,१,१४;
१०६९,१०८२ । २,२८,४; ११००।
१९,११,६; ११२०। २७,३; ११५७।
६,१०,३; ११७२। ५३,१; ११७९।
१२०,१-२; ११८७-११८८

गुणबोधकपदानि ।

तिष्ठः ११५७
पिता ११८७,११८८

प्रचेताः ११७२
बृहत् सादनम् ११२०
शान्ता १०६९
सादनं बृहत् ११२०
द्यावापृथिवी ३,४,५; ८९९ । ६,३,२;
९३३ । ४०,१; ९३९ । ६२,१;
९४२ । १९,१५,५; ९६८ । १७,
५; ९७६ । २०,४; १००६ । ३,२३,
१-६; १०५८-६३ । २, १२, १,५;
१०९१,१०९५ । २,२८,४; ११००

गुणबोधकपदानि ।

उभे ८९९,९६८
ऋतावरी ९४२
पयसा पयस्वती ९४२
यज्ञिये ९४२
शिवे ८९९
संविदाने ११००

द्यौष्पिता ६,४,३; ९३७
द्वादशर्चाः १९,२३,९; १०१५
द्वितीयाः शङ्खाः १९,२२,९; ११२९
धनपतिः २,३६,६; ११०३
घाता ३,८,२; ९०३ । १९,२०,१;
१००३ । १९,९,१२; १०८०

धूमकेतुः १९,९,१०; १०७८
धेनुः ३,१०,१; ९०८
नक्तम् १९,१५,६; ९६९

नक्षत्राणि १९,१९,४; ९९५। १९,९,९;
१०७७ (एकवचनम्) । ६,१०,३;
११७२

उल्काभिहतम् १०७७
नद्यः १९,१९,७; ९९८
नवर्चाः १९,२३,६; १०१२
नाकाः १९,२७,४; ११५८
त्रयः ११५८
निखाताः १९,९,९; १०७७
वल्गाः १०७७

निर्ऋतिः ७,७०,१-२; ९६२-९६३ ।
६,६३,१-२; ११८१-११८२
देवी ११८१

निर्हतम् १९,९,८; १०७३
नीलनखाः १९,२२,४; ११२४
पञ्चदशर्चाः १९,२३,१२; १०१८
पञ्चर्चाः १९,२३,२; १००८
पतत्रिणः १,१५,१-४; ८७९-८८२
पत्नी क्षेत्रस्य २,१२,१; १०९१
पर्यायिकाः १९,२२,७; ११२७
पर्जन्यः ६,४,१; ९३५
पवमानः ६,१९,१-२; ११७३-११७४
पशवः ३,१०,६; ९१०

गुणबोधकपदानि ।

ग्राम्याः ९१०
विश्वरूपाः ९१०
सप्त ९१०
पशुपतिः २,३४,१, ८८७
पितरः २,१२,४-५; १०९४-९५
सोम्यासः १०९५

पूर्वा रूपाणि १९,९,२; १०७०
पूर्वा १,९,१; ८७७ । १९,२०,१;
१००३
पृथक् सहस्रौ १९,२२,१९; ११३९
पृथिवी ३,८,१; ९०२ । १९,१९,१;
९९२। १९,९,१,१४; १०६९, १०८२।
२,२८,४; ११०० । १९, २७, ३;
११५७ [बहुवचनम्] । ६, १, १;
११७० । ५३,१; ११७९ । १२०,१;
११८७

गुणबोधकपदानि ।

तिष्ठः ११५७
प्रचेताः ११७२
माता १०६९
शान्ता १०७७
प्रजाः १९,१९,११; १००२
प्रजापतिः ३,१०,१३; ९१४ । १५,६;
९२० । ६,६८,२; ९४२ । १९,१७,
९; ९८० । १८,९; ९९० । १९,
११; १००२ । १९,२०,२; १००४ ।
७,२४,१; १०६८ । १९,९,६,११;
१०७४, १०८०

गुणबोधकपदानि ।

पतिः भुवनस्य	१००४
प्रजननवान्	९८०,९९०
भुवनस्य पतिः	१००४
सत्यधर्मा	१०६८
जापतेः दुहिता	३,१०,१३; ९१४
इन्द्रपुत्रा	९१४
सोमपुत्रा	९१४
धर्मः (शंखाः)	१९,२२,८; ११२८
दिशः ३,४,२; ८९७ । १९,२०,२;	१००४
देवीः	८९७
पञ्च	८९७
राजापत्यौ	१९,२३,२६; १०३२
माणः १९,२७,७; ११६१ । ६,१०,२;	११७१
हस्तपतिः ६,७३,१-२; ९५१-९५२ ।	१९,१७,१०; ९८१ । १८,१०; ९९१ ।
१०,१; १००३ । २४,४,८; १०३९,	१०४३ । १९,९,६,११; १०७४,
१०७९ । ३,२२,१-६; १११३-१८ ।	६,१०३,१; ११८४ । १४,२,५३-
५८; ११९०-९५	विश्वदेवान्
विश्वदेवान्	९९१
त्रयः	१९,२७,४; ११५८
ब्रह्मा १९,१९,८; ९९९ । २३,	१९; १०३५ । ९,१२; १०८०
(ब्रह्मा) । ४३,८; १०९० (ब्रह्मा) । २,	१२,६-७; १०९६-९७ । १९-२२,
१०-२१; ११४०-११४१ (ब्रह्मा)	विचारिणः
१९,१९,८; ९९९	वृणस्पतिः ६,४,१; ९३५ । ५,३; ९३८ ।
७४,१; ९५४ । १९,२४,१; १०३६	५,४,२; ९३६ । ७४,१-२;
१५४-९५५ । १,२६,२; १०५७ ।	६,५३,१; ११७९ । १०३,१; ११८४
६,९३,२; ११७७	१९,२,२; १०७०

भूतम्	१९,९,२; १०७०
भूतानि विश्वा	६,१९,१; ११७३
भूतकृतः १९,१६,२; ९७१ । २७,१५;	११६२
भूमिः १९,९,८; १०७६ । ६,१२०,	२; ११८०
तीर्थतीः	१०७६
माता	११८०
वेप्यमान्त	१०७६
मङ्गलिकाः	१९,२३,२८; १०३४
मनः	१९,९,४; १०७२
परमेष्ठिन्	१०७२
ब्रह्मसंशितम्	१०७२
मनवः	६,१९,१; ११७३
मनुष्येष्वः	१,१९,२; १०५३
अस्ताः	१०५३
अस्याः	१०५३
दैवीः	१०५३
विश्वध्वजः	१०५३
शरवः	१०५३
मरुतः ३,४,४; ८९८ । ६,३,१; ९३१ ।	६,४,२; ९३६ । ६,७४,३; ९५६ ।
७,९८,१; ९६७ । ५,३,३; १०४४ ।	७,२४,१; १०६८ । २,१२,६;
१०९६ । ३,१२,६; १११० । ६,९३,	३; ११७८
इन्द्रवन्तः	१०४४
विश्ववेदसः	११७८
स्वर्काः	१०६८
महर्षयः	१९,९,११; १०७९
देवाः	१०७९
महाकाण्डः	१९,२३,१८; १०२४
महागणाः	१९,२२,१७; ११३७
मातरिश्वा १२,२०,२; १००४ । १९,	२७,४; ११५८ [बहुवचनम्] ।
त्रयः	११५८
मित्रः १,९,१; ८७७ । ३,८,१; ९०२ ।	६,४,२; ९३६ । १९,१९,१; ९९२ ।
१९,९,६-७; १०७४-७५ । २,२८,५;	

११०१ । ३,२२,२; १११४ । ६,	१०३,१; ११८४
मित्रराजा	११०१
मित्रावरुणा ३,४,४; ८९८ । १९,११,	६; ११२०
उभा	८९८
मृत्युः १९,९,१०; १०७८ । ६,९३,१;	११७६ । ६,६३,२-३; ११८२-८३
अधमारः	११७६
निर्ऋतः	११७६
बभ्रुः	११७६
यज्ञः ३,१०,७; ९११ (बहुवचनम्) ।	६,९७,१; ९५७ । १९,१९,६; ९९७
अभिभूः	९५७
यमः १९,२०,१; १००३ । ६,९३,१;	११७६ । ६,६३,२-३; ११८२-८३
मृत्युः	११८२
यमस्य सादनम्	२,१२,७; १०९७
योनिः	३,२३,१-६; १०५८-६३
उपमासूची ।	
बाणः इव इषुधिम् १०५९ पुमान् गर्भः	ते योनि आ एतु ।
राजा ३,४,६-७; ९००-९०१ । ४,८,	१; ११४२ । ६,९३,२; ११७७
राज्याभिषेकः ४,८,१-७; ११४२-४८	
उपमासूची ।	
सुभुवः समुद्रं न ११४८ अप्सु अन्तः	तस्थिवासं द्वीपिनं मर्मज्यन्ते ।
रात्रिः	३,१०,७; ९११
राहुः	१९,९,१०; १०७८
रुद्राः ६,६८,१; ९४८ । १९,१७,३;	९७४ । १९,१९,३; १०५४ (रुद्रः) ।
१९,९,१०,११; १०७८-७९ । ३,	२२,२; १११४ (रुद्रः) । ६,९३,१-३;
११७६-७८	
तिग्मतैजसः	१०७८
रोहिताः	१९,२३,२३; १०२९
लोकाः	१९,९,१२; १०८०

(१८४)

वनस्पतयः १९,९,१४; १०८२ । ६,
१०,१; ११७०
वयांसि ६,१०,२; ११७१
वरुणः १,९,१; ८७७।३,३; ८९३।
४,५; ८९९।८,१; ९०२ । ६,४,२;
९३६ । ६८,३; ९५० । ७३,१-२;
९५१-९५२ । १९,१७,४; ९७५ ।
१८,४; ९८५ । २०,१; १००३ ।
१,१६,२; १०४९ । १९,९,६-७
१८७४-७५ । २,२८,५; ११०१ ।
३,२२,२; १११४ । ७,११८,१;
११४९ । ६,९३,३; ११७८

गुणबोधकपदानि ।

आदित्यवान् ९८५
पूतदक्षः ११७८
मित्रराजा ११०१
राजा ८९३,८९९,१००३
वर्चः ३,२२,१-६; १११३-१८
वसवः १,९,१; ८७७।६,६८,१; ९४८।
७३,१-२; ९५१-९५२ । ७४,३;
९५६ । ७,९८,१; ९६७ (वसुः) ।
१९,१७,१; ९७२। ९,११; १०७९ ।
२,१२,४; १०९४
वाक् १९,९,३; १०७१
देवी १०७१
परमेष्ठिनी १०७१
ब्रह्मसंशिता १०७१
घातः १,१५,१-४; ८७९-८८२ (वाताः) ।
६,६२,१; ९४२। ५,३,३; १०४४ ।
१९,२७,२; ११५६। २७,२; ११६१
वृत्रहा ११५६
वातगोषम् २,१२,१; १०९१
वातापर्जन्यौ ६,९३,३; ११७८
वायुः २,३४,४; ८९०।३,८,१; ९०२ ।
६,६८,१; ९४८। १९,१७,२,९७३।
१८,२; ९८३। १९,२; ९९३। ४३,
२, १०८४ । २७,१; ११५५ । ६,
१०,२; ११७१ । ५३,१; ११७९
अधिपतिः ११७१

अन्तरिक्षवान् ९८३
देवः ८९०
प्रजया संरराणः ८९०
प्रजापतिः ८९०
संरराणः प्रजया ८९०

वास्तोष्पतिः ६,७२,३; ९५३
विंशतिः १९,२३,१७; १०२३
विदग्गणाः १९,२२,१८; ११३८
सर्वे अङ्गिरसः ११३८
विवस्वान् १९,९,७; १०७५
विश्वकर्मा १९,१७,७; ९७८। १८,७,
९८८
सप्तऋषिवान् ९८८

विश्वे देवाः १,९,१; ८७७ । ३,३,५;
८९४ । ३,४,४; ८९८ । ३,८,४;
९०५। ७,८,१; ९६७। १९,१०,१०;
९८१। १९,२०,४; १००६। ५,३,
४,६; १०४५, १०४७। ६,११४,३;
१०६७ । ७,२४,१; १०६८ । १९,
९,१२,१४; १०८०, १०८२ । २,
१२,५; १०९५ । २८,५; ११०१ ।
३,१९,१-८; ११०५-१२ । ३,२२,
१-५; १११३-१८ । ६,१२३, १-५;
११५०-५४ । ६,९३,३; ११७८ ।
१४,२,५३-५८; ११९०-९५

[विश्वे देवाः केवलेन ' देवाः इति ' पदेन
निर्देशः] । १,९,२; ८७८ । २,३४,
२; ८८८। ३,३,२; ८९२ । ३,१०,
७,११-१२; ९११-९१३ । ३,१५,
५-६; ९१९-९२० । ५,८,३; ९२५ ।
६,६४,१-३; ९४५-९४७। ६,९७,१;
९५७ । ७,७०,२; ९६३ । १९,
१९,१०; १००१। २०,३; १००५ ।
२४, १; १०३६ । ५, ३, ३, ५;
१०४४, १०४६। १,१९,४; १०५५ ।
१, २६, १; १०५६ । ६, ५५, २;
१०६४। ६,११४,१; १०६५। १९,
९, ११-१२, १४; १०७९, १०८०,
१०८२ । २,१२,२; १०९२ । ३,
२२,२; १११४ । ११, ११, ५;

१११९ । ४,८,२; ११४३ । ७,
११८,१; ११४९। १९,२७,६,७;
११६०-६१ । १९,२७,११-१३;
११६५-६७। २०,१२८,५; ११९६।
२०,१३५,४,१०; ११९७-९८

गुणबोधकपदानि ।

अन्तरिक्षे एकादश ११६६
अमृताः १११९
इन्द्रज्येष्ठाः १११०
इन्द्रेष्ठिताः ९६३
ऋतज्ञाः १११९
ऋत्विजः देवानाम् १११९
एकादश अन्तरिक्षे ११६६
एकादश दिवि ११६५
एकादश पृथिव्याम् ११६७
दिवि एकादश ११६५
देवानां ऋत्विजः १११९
देहिनः १००५
बुराजयः १००५
पृथिव्यां एकादश ११६७
भ्राजन्तः ११६०
मनोः यजत्राः १११९
महर्षयः १०७९
यजत्राः मनोः १११९
यज्ञियासः १११९
विश्वदेवाः ९६७
विश्वधायसः १११४
विश्ववेदसः ११६०, ११७८

उपमासूची ।

यथा पूर्वे संजानानाः देवाः भागं उपासते
९४५ तथा मनांसि सं जानताम् ।
यथा अहं विश्वाः पृतनाः अमि असानि
९५७ एवा विधेम अमिहोत्रा इदं हविः ।
विश्वरूपः ४,८,३; ११४४
विश्वा भूतानि ६,१९,१; ११७१
विषासहिः १९,२३,२७; १०३३
विष्णुः ६,३,१; ९३२। ५,३,३; १०४४।
१९,९,६; १०७४

विषयम्	१९, १९, ९; १०००
वृषा	१९, २७, १; ११५५
मेदाः	१९, २, १२; १०८०
वैश्वानरः	३, १५, ७; ९२१ । ६, ६२, १; ९४२ । ६, ५३, २; ११८०
अदध्यः	११८०
तनूपाः	११८०
वैश्वानरी	६, ६२, २-३; ९४३-९४४
इडा	९४४
वृषाः	१९, २७, ४; ११५८
त्रयः	११५८
वायौ	१९, २३, २५; १०३१
शंखाः तृतीयाः	१९, २२, १०; ११३०
शंखाः द्वितीयाः	१९, २२, ९; ११२९
(शंखाः) प्रथमाः	१९, २२, ८; ११२८
सचीपतिः	१९, २७, १४; ११६८
तर्वः	६, ९३, १-२; ११७६-११७७
अस्ता	११७६
नीलशिखण्डः	११७६
शान्त्यः	१९, ९, १४; १०८२
शान्तानि	१९, ९, १३; १०८१
शिखिनः	१९, २२, १५; ११३५
शुकः	६, ५३, १; ११७९
वृहन्	११७९
येनः	७, ७०, ३; ९६४
अजिराधिराजौ	९६४
संपातिनौ	९६४

उपमासूची ।

अजिराधिराजौ सम्पातिनौ रयेनौ

इव ९६४

यः कश्च नः अभि अघायति ।

श्रोत्रम्	६, १०, १; ११७०
घृचाः	१९, २३, ३; १००९
पृष्ठः	१९, २२, २; ११२२
पोडशर्चाः	१९, २३, १३; १०१९
सप्तश्रयः	६, ४०, १; ९३९ । १९, १७, ७; ९७८ । १९, ९, १२; १०८०
सप्तदशर्चाः	१९, २३, १४; १०२०
सप्तर्चाः	१९, २३, ४; १०१०
सप्तमाष्टमौ	१९, २२, ३; ११२३

२४ दै० [विश्वे देवाः]

समुद्रः १९, १२, ७; ९३८ । १९, २७, ३-४; ११५७-११५८

चत्वारः ११५७

त्रयः ११५८

सरस्वती ६, ८, २; ९३३

देवी ९३३

सुभगा ९३३

सविता ३, ८, २-३; ९०३-९०४ ।

३, १५, ६; ९२० । ६, ४०, १-२;

९३९-९४० । ६, ६८, १, ३; ९४८,

९५० । ९९, ३; ९६१ । १९, १६, १;

९७० । २०, १; १००३ । २४, १, ८;

१०३६, १०४३ । १, २३, २; १०५७ ।

७, २४, १; १०६८ । १९, २७, ४;

११६८ । ६, १९, ३; ११७५ । ६,

५३, १; ११७२ । ६, १०३, १; ११८४

चित्रराधा १०५७

देवः १०३६

सत्यधर्मा १०३८

सादनं यमस्य २, १२, ७; १०९७

सामगाः २, १२, ४; १०९४

तिस्रः अशीत्यः १०९४

सामनस्यम् ३, ८, ५-६; ९०६-९०७ ।

६, ६४, १-३; ९४५-९४७ । ६, ७४,

१-३; ९५४-९५६

उपमासूची ।

यथा अहणीयमानाः उप्राः आदित्या

वसुभिः मरुद्भिः संबभूवुः ९५६ एवा

इमान् जनान् इह संमनसः कृधि ।

यथा पूर्वे संजानानाः देवाः भागं उपासते

९४५ तथा सं वः मनांसि जानताम् ।

सिन्धवः १, १५, १-४; ८७९-८८१ ।

६, ३, १; ९३२

सप्त ९३२

सीसं दधत्यम् १, १६, २-४; १०४९-५१

उपमासूची ।

यथा नः अवीरहा असः १०५१ (तथा)

त्वा सीसेन विध्यामः ।

सूर्यः १, ९, २; ८७८ । ६, ६२, ३;
९४४ । १९, १७, ५; ९७६ । १८, ५;
९८६ । १९, ३; ९२४ । २०, ४;
१००६ । ४३, ३; १०८५ । २७, २, ४,
७; ११५६, ११५८ [बहुवचनम्],
११६१ । ६, १०, ३; ११७२

गुणबोधकपदानि ।

अधिपतिः ११७२

गोप्तारः त्रयः ११५८

त्रयः गोप्तारः ११५८

द्यावापृथिवीवान् ९८६

विश्वतोमुखः ११६१

सूर्यौ १९, २३, २४; १०३०

सोमः ३, ३, ३; ८९३ । ८, ३; ९०४ ।

१५, ६; ९२० । ६, ३, २; ९३३ ।

५, ३; ९३८ । ४०, १; ९३९ । ६८,

१, ३; ९४८, ९५० । ७३, १-२; ९५१-

९५२ । २७, १; ९५७ । ९९, ३;

९६१ । १९, १७, ३; ९७४ । १८, ३;

९८४ । १९, ५; ९९६ । २०, १;

१००३ । २४, ३-४, ८; १०३८-३९,

१०४३ । ४३, ५; १०८७ । ७, ११८,

१; ११४९ । १९, २७, २; ११५६ ।

६, ५३, १; ११७२

गुणबोधकपदानि ।

अभिभूः ९५७

राजा ९४८, ९५०, १००३, १०३९,

११४२

रुद्रवान् ९८४

स्तोमः १९, २७, ३; ११५७

त्रिवृत् ११५७

स्वर्गः ६, १२०, ३; ११८९

हरिताः १९, २२, ५; ११२५

हिरण्यम् १, ९, २; ८७८

होतारः ५, ३, ५; १०४६

दैवाः १०४६

विश्वे-देवाऽन्तर्गता देवताः

(४) सामवेद-मन्त्राणाम् ।

अग्निः	१५०३-४; १४०२-३	गावः	४४२; १३९९	द्यावापृथिवी	६११; १३९७
सहस्रकृत	१४०२	विश्वधायसः शुचयः	१३९९	पर्जन्यः	२९९; १३९५
अमयः विश्वे	१५०३-४, १४०२-३	त्वष्टा	२९९; १३९५	ब्रह्मणस्पतिः	२९९; १३९५
आदितिः	२९९; १३९५	देवाः	३६८, ४४२, १८७२; १३९८-	मित्रः	४५५; १४०१
इन्द्रः	४५३, ४५५; १४००-१४०१		९९, १४०४	वरुणः	४५५; १४०१
इन्द्रबृहस्पती	६११; १३९७	अरेपसः	१३९९	विश्वे देवाः	५९१, १३९६

(५) विश्वे-देवाऽन्तर्गता यजुर्वेदीय

नाना-देवताः ।

अंशः	१०, ५; १४२६	अग्नीषोमौ	१४, ८, २३; १७६९, १८४८।	अनन्तः	३०, १९; २२५८
अंहसस्पतिः	२२, ३१; १६९३		२५, ५; २०२२	अनुमतिः	२४, ३२; १९०३। २९, ६०;
अकूपारः	२४, ३५; १९२१	अङ्गुलयः	१८, २२; १४८५	२११२	
अक्षराजः	३०, १८; २२४५	अतिक्रुष्टः	३०, ५; २१२२	अनुष्टुम्	२४, १२; १७९३
अग्निः १०, ५; १४१७। १८, १६;		अतिच्छन्दः	२४, १३; १७९९	अन्तः	३०, १९; २२५७
१४५७। १८, २२; १४७५। २२,		अत्ति यत्	२२, ८; १५४६	अन्तकः	३०, ७, १८; २१४२, २२५१।
६, २७; १४९२, १६९२। २४, २, ६,		अथर्वाणः	३०, १५; २२१४	३९, १३; २३१५	
९, १४, २३, ३१; १७९९, १७५८,		आदितिः १४, २९; १४४४। १८, २२;		अन्तरम्	२५, २; १९७७
१७७३, १८००, १८४६, १८९४।		१४८३। २२, २०; १५५७। २४,		अन्तरिक्षम्	१८, १८; १४७०। २२,
२५, ३-४; २०००, २००४। २९,		५, ९; १७५५, १७७६। २५, २, ४, ८;		२७, २९; १६२५, १६५६। २४, १०।	
५८-६०; २०८४, २१००, २१०३।		१९८८, २००८, २०५५, २०५७।		२६, ३४; १७८०, १८६३, १९१४।	
३०, २१; २२७१। ३९, १; २२८५		२९, ६०; २११०		२५, ८; २०५९। ३०, २१; २२७४।	
अग्निः अनीकवान् २४, १६; १८१३।		आदितिः मही २२, २०; १५५८		३९, १; २२८६	
२९, ५९; २०९५		आदितिः सुमृडीका २२, २०; १५५९		अन्त्यः	२२, ३२; १७०१
अग्निः गृहपतिः २४, २४; १८५५		अधर्मः ३०, १०; २१६५		अन्त्यः मौवनः ९, २०; १४१४। २२,	
अग्निः वैश्वानरः २९, ६०; २१११		अधिपतिः ९, २०; १४१६। २२, ३०,		३२; १७०२	
अग्रामरुतः २४, ७; १७६६		३२; १६७४, १७०४		अन्धाह्वयः	२५, ७; २०४४
अग्रविष्णु २४, ८; १७७०		अध्वा २५, ३; १९९८		अन्यतोरण्यम्	३०, १९; २२६४

अपानः २२, २३, ३३; १५७४, १७०८
 अपां मोदः २२, ६; १४९४
 अपिजः ९, २०; १४०७ । २२, ३२;
 १६९६
 अपसरसः २४, ३७; १९३३
 अभिभूः २२, ३०; १६७३
 अभूतिः ३०, १७; २२४१
 अभ्रः २२, २६; १६०६
 अयवाः १४, ३१; १४५५
 अयाः ३०, ८, २१४९
 अरण्यम् २२, ३९, १९४३ । २५, ३;
 १९९९
 अराधि ३०, ९; २१५७
 आरिष्टिः ३०, १३; २२००
 अर्कः १८, २२; १४७७
 अर्णवः २२, २५; १६०१
 अर्धमासाः २२, २८; १६३४ । २४,
 ३७; १९२९
 अर्माः ३०, ११; २१७३
 अर्यमा १०, ५; १४२८ । २५, ४, २०१२
 अर्वाची दिक् २२, २४, २७; १५८१,
 १५८३, १५८५, १५८७, १५८९,
 १५९१, १६३१
 अवक्रातिः ३०, १२; २१९०
 अवका २५, १; १९५४
 अवक्रन्दः २२, ७; १५०५ । २५, १;
 १९५९
 अवस्परः ३०, १९, २२६२
 अववर्षत् २२, २६; १६१२
 अवस्फूर्जत् २२, २६; १६१०
 अवाची दिक् २२, २४; १५९०
 अवान्तरदिशः २४, २६; १७६६
 अवारः ३०, १६; २२२८
 अवार्याः २५, १; १९७०-७१
 अवशानिः २५, २; १९८१
 अविनौ १४, १, ३, २३, ३६; १७३१,
 १७४३, १८४९, १९२५ । २५, ३;
 २००२
 अयमेधः १८, २२; १४८०
 अयुः २२, ३०; १६६७

अहः (१) २४, २५, ३६; १८५६,
 १९२३ । ३०, २१; २२७९
 अहर्पतिः ९, २०; १४१०
 अहर सुधः ९, २०; १४११
 अहोरात्रे १४, ३०; १४४९
 अहोरात्राणि २२, २८; १६३३
 अहोरात्रयोः सन्धयः २४, २५; १८५८
 आक्रमणम् २५, ३, ६; १९९५, २०४१
 आक्रया ३०, ५; २१२०
 आत्मा २२, ३३; १७१६
 आदित्याः ११, ६०, ६५; १४३१,
 १४३८ । १४, ३०; १४५३ । २२,
 २८; १६४६ । २४, ६, २७, ३९;
 १७६१, १८६९, १९४१ । २५, १, ६;
 १९६२, २०३५
 आधि आधीतः २२, २०; १५५४
 आध्यक्ष्यः ३०, ११; २१८२
 आनन्दः ३०, ६, २०; २१२९, २२७०
 आन्त्यायनः विंशती ९, २०; १४१३
 आपः २२, २५, २९; १५९९, १६६१ ।
 २४, २१, ३७; १८३८, १९३१ । २५,
 १-२, ५, ७, ९; १९६१, १९८३,
 २०२०, २०४७, २०७३ । ३९, २;
 २२९३
 आपिः ९, २०; १४०५
 आयनः २२, ७; १५२४
 आयासः ३९, ११; २२९७
 आयुः २२, ३३; १७०६
 आर्तवाः १४, २६; १४४५ । २२, २८,
 १६३८
 आर्तिः ३०, ९, १७; २१५४, २२४२
 आशाः २२, २७; १६२९
 आशिक्षा ३०, १०; २१७०
 आसीनः २२, ७; १५१४
 आस्कन्दः ३०, १८; २२४९
 इतरजनाः २४, ३६; १९२७
 इदावत्सरः ३०, १५; २२१७
 इद्वत्सरः ३०, १५; २२१८
 इन्द्रः १०, ५; १४२३ । ११, ६०;
 १४३३ । १४, २९; १४४७ । १८,

१६-१८; १४५७-७४ । २२, ६, २७;
 १४९८, १६२४ । २४, १, ३२, ४०;
 १७३६, १९०२, १९४९ । २५, ३-५,
 ८; १९९२, २००६, २०१४, २०२७,
 २०५४ । २९, ५८, ६०; २०९०,
 २१०४
 इन्द्राणी २५, ४; २००९
 इन्द्रामी २२, ५; १४८७ । २४, ४, ८,
 १५, १७, २२; १७५१, १७६८,
 १८०९, १८१९, १८४३ । २५, ५;
 २०१७ । २९, ५८; २०९२
 इन्द्रावृहस्पती २४, ७; १७६४ । २५,
 ६; २०३९
 इन्द्राविष्णु २४, ७; १७६३
 इरा ३०, ११; २१७८
 इषः २१, ३१; १६८७
 ईक्षमाणः २२, ८; १५४२
 ईक्षितः २२, ८; १५४३
 ईर्यता ३०, ८; २१५०
 ईशानः २४, २८; १८७२
 उग्रं वर्षत् २२, २६; १६१३
 उत्कूलनिकूलाः ३०, १४; २२०८
 उत्थितः २२, ८; १५३३
 उत्सादः २५, १; १९५८
 उत्सादाः ३०, १०; २१६२
 उदकम् २२, २१; १५९४
 उदानः २२, ३३; १७१०
 उदीची २२, २४; १५८६
 उद्गृहीतः २२, २६; १६१६
 उद्गृह्णन् २२, २६; १६१५
 उद्भावः २२, ८; १५२८
 उद्भुतः २२, ८; १५२९
 उद्यासः ३९, ११; २३०१
 उपयामः २५, २; १९७५
 उपलाः २५, ८; २०६४
 उपविष्टः २२, ८; १५११
 उपशिक्षा ३०, १०; २१७१
 उपस्थावराः ३०, १६; २२२४
 उपस्थितः २२, ७; १५२३

(१८८)

उर्वी	२२, २७; १६३०
उषा:	२४, ४; १७५२
उष्णिह्	२४, १२; १७९४
ऊर्जः	२२, ३१; १६८८
ऊर्ध्वा दिक्	२२, २४; १५८८
ऋक्षीकाः	३०, ८; २१४४
ऋतवः २२, २८; १६३७। २४, ३८;	
१९३५	
ऋतिः	३०, १३; २१९३
ऋभवः	३०, १५; २२२१
ऋषभः	२४, ३०; १८८६
एकः	२२, ३४; १७२२
एकशतम्	२२, ३४; १७२५
ओषधयः २२, २८-२९; १६५४,	
१६६२	
औषधप्रथम्	३०, १३; २१९६
कः २२, २०; १५५१। २४, १५;	
१८१२। २२, २०; १५५२	
ककुभ्	२४, १३; १७९७
कतमः	२२, २०; १५५३
कपिजलाः	२५, ३; १९२६
कर्णौ	२५, २; १९८४
कर्म	३०, ७; २१३९
कामः २४, ३९; १९४६। ३०, ५; २१२१	
कीलालः	३०, ११; २१७९
कुर्वत्	२२, ८; १५४९
कूजत्	२२, ७; १५१७
कूप्याः	२२, २५; १५९८
कूर्माः	२५, ३; १९९४
कृत्माः	२५, ७; २०५३
कृतः २२, ८; १५५०। ३०, १८; २२४६	
कृष्णः	२५, १; १९६८
कतुः ९, २०; १४०८। २२, ३२;	
१६९७	
कन्दत्	२२, ७; १५०४
कुक्षौ	२५, ६; २०३८
कोधः	३०, १४; २२०४
कोशः	३०, १८; २२६१
क्षत्रम्	३०, ५; २११४
क्षिप्रश्चयः	२८, ३०; १८८७

क्षुब्ध्	३०, १८; २२५२
क्षेमः	३०, १४; २२१७
गणपतिः	२२, ३०; १६७२
गणश्रीः	२२, ३०; १६७१
गन्धः	२२, ७; १५०८
गन्धर्वाः	२४, ३७; १९३०
गन्धर्वाप्सरसः	३०, ८; २२४६
गायत्री	२४, १२; १७९०
गिरयः	२५, ८; २०६३
गीतम्	३०, ६; २१२४
गुल्माः	२५, ८; २०६६
गुहाः	३०, १६; २२३२
गेहम्	३०, ९; २१५४
ग्रीष्मः २४, ११, २०; १७८५, १८३१	
घर्मः १८, २२; १४७६। ३९, १२;	
२३१०	
घृतम्	२५, ९; २०७२
घोषः १०, ५; १४२४। ३०, १९; २२५६	
प्रातः	२२, ७; १५०३
चक्रवाकौ	२५, ८; २०६१
चक्षुः २२, २३, ३३; १५७६, १७१२।	
२४, २२; १८७९	
चन्द्रः २२, २८-३०; १६११, १६५९,	
१६७७। ३९, २; २२९१	
चन्द्रमाः २४, ३५; १९१७। ३०, २१;	
२२७८	
चराचराणि	२२, २९; १६६५
चापाः	२५, ७; २०५१
चित्तम्	२५, २; १९८७
चित्तं विज्ञाता	२२, २०; १५५६
चित्राणि	२५, ९; २०८०
जगती	२४, १२; १७९२
जम्बुकः	२५, ९; २०८३
जवः २२, ८; १५३४। २५, ३; १९९७।	
३०, ११; २१७४	
जाग्रत्	२२, ७; १५१६
जाम्बुतः	२५, ८; २०५८
ज्योतिः २२, ३०, ३३; १६७८, १७१८	
तपस् २२, ३०; १६९१। ३०, ५, ७;	
२११६, २१३३। ३९, १२; २३०६	

तपस्यः	२२, ३०; १६९२
तप्तः	३९, १२; २३०२
तप्यत्	३९, १२; २३०७
तप्यमानः	३९, १२; २३०८
तमस्	३०, ५; २११७
तारकाः	२४, १०; १७८३
तिष्ठन्त्यः	२२, २५; १५९५
तीर्थानि	३०, १६; २२२९
तुरीपः त्वष्टा	२२, २०; १५६७
तुला	३०, १७; २२३७
तेजस्	३०, ११; २१७७
तेदनी	२५, २; १९८५
त्वष्टा १८, १७; १४६६। २२, २०;	
१५६६। २४, १, ४, २४, २८, ३१;	
१७३४, १७५०, १८५२, १८७६,	
१८९५। २५, ५; २०२६	
त्वष्टा तुरीपः	२२, २०; १५६७
त्वष्टा पुरुषः	२२, २०; १५६८
त्रिष्टुभ्	२४, १२; १७९१
त्रेता	३०, १८; २२४७
त्र्यम्बकः	२४, १८; १८२५
दक्षिणा दिक्	२२, २४; १५८९
दितिः	१८, २२; १४८३
दिवा पतयत्	२२, ३०; १६८०
दिशः १८, १८, २२; १४७४, १४८५।	
२२, २७; १६२८। २४, २६, ३१;	
१८६५, १८९३। २५, ८; २०५६।	
३९, २; २२९०	
दिष्टम्	३०, ७; २१४०
दुष्कृतम्	३०, १८; २२५३
देवाः सर्वे	२२, ५; १४९०
देवजामयः	२४, २४; १८५४
देवानां पत्न्यः २४, ५, ९, २४; १७५७,	
१७७८, १८५३	
देवलोकः	३०, १२; २१८७
द्यौः १८, १८, २२; १४७१, १४८४।	
२२, २७, २२; १६२७, १६५७। २४,	
१०, २६; १७८१, १८६४। २५, ८;	
२०६२। ३०, ११; २२७५। ३९, ११	
२२८८	

१६९५
 १३०९
 १३०७
 १३०८
 १३१७
 १७८३
 १५९५
 १३२९
 १५६७
 १३२७
 १३७७
 १९८५
 १३२०
 १८३१
 १८७३
 १५६७
 १५६८
 १७९१
 १३४७
 १८१५
 १५८१
 १४८३
 १६८०
 १४८५
 १६३१
 १०५६
 १४८०
 १३५३
 १४९०
 १८५४
 १७५७
 १४८७
 १४८८
 १५७१४
 १५८५
 १३९, ११

वायुविही २२, २८; १६४० । २४,
 १४, ३४; १८०७, १९१६। २५, १, ५;
 १९६५, २०३० । ३९, १३; २३२०
 २२, ३४; १७२३
 ३०, १८; २२४८
 ३०, १०; २१६५
 ३०, ६; २१२५
 वाता १४, २८; १४४३ । १८, १७;
 १४६४ । २४, ५, ९, ३१; १७५६,
 १७७६, १८९२ । २५, ४, २०१३
 वायुः २२, १५; १६००
 वायुः २२, ८; १५२७
 वायुः २२, २६; १६०५
 वायुः ३०, ६; २१३२
 वायुः १८, १८; १४७३ । २२, २८-
 १९, १६३२, १६६० । २५, ९;
 १०८१ । ३०, २१; २२७७ । ३९, २;
 १२९२
 वायुः २२, २८; १६३३
 वायुः ३०, १६; २२२६
 वायुः ३०, ८; २१४३
 वायुः २२, ३४; १९१५
 वायुः २२, ३१; १६८५। २५, ८; २०६०
 वायुः २२, ३१; १६८६
 वायुः २२, ८; १५६५
 वायुः ३०, ६; २१२६
 वायुः ३०, ६, २०; २१२७, २२६५
 वायुः ३०, १२; २१८६
 वायुः ३९, २; २२९५
 वायुः ३०, ५; २११८
 वायुः २५, २; १९७४
 वायुः २२, ८; १५६५
 वायुः २२, ८; १५४५
 वायुः २२, ३८; १९३९। २५, २, ५;
 १९८९, २०२१ । ३०, २, १४;
 २१५६, २२११
 वायुः २२, ७, १५१०
 वायुः २५, २; १९७२
 वायुः २२, ८; १५३२

निष्कृतिः ३०, ९; २१५८ । ३९, १२;
 २३११
 नीलङ्गुः २४, ३०; १८८८
 नीहारः २३, २६; १६२१ । २५, ९;
 २०७५
 नृत्तम् ३०, ६, २०; २१२३, २२६९
 पञ्क्तिः २४, १३; १७२८
 पतिः भुवनस्य ९, २०; १४१५
 पतिः भूतानाम् १४, २८; १४४२
 पन्थाः २५, १; १९६४
 पञ्चोद्यः २२, ७; १५०७
 परमेष्ठी १४, ३१; १४५६
 परिष्ठावाः २२, २९; १६६४
 परिवत्सरः ३०, १५; २२१६
 पर्जन्यः २४, ३, ६, २१, ३४; १७४७,
 १७६२, १८३७, १९११
 पर्वताः ३०, १६; २२१४
 पवित्रम् ३०, १०; २१३८
 पशुपतिः रुद्रः २४, ३; १७४४
 पश्चादोषः ३०, १७; २२३८
 पाप्मा ३०, ५, १८; २११९, २२५४
 पारम् ३०, १६; २२२७
 पार्थाः २५, १; १९६९, १९७२
 पावका सरस्वती २२, २०; १५६१
 पितरः २४, ३८; १९३६
 पितरः अग्निष्वात्ताः २४, १८; १८२४
 पितरः बर्हिषदः २४, १८; १८२३
 पितरः सोमवन्तः २४, १८; १८२२
 पिबति यत् २२, ८; १५४७
 पिशाचाः ३०, ८; २१५१
 पुरुषः त्वष्टा २२, २०; १५६८
 पुरुष व्याघ्रः ३०, ८; २१४४
 पुष्टिः ३०, ११; २१०५
 पुष्पाणि २२, २८; १६५२
 पूतः ३९, २; २२९६
 पूषा १०, ५; १४२१ । १४, ३०; १४५१ ।
 १८, १६; १४६१ । २२, २०; १५६३ ।
 २४, ७, १४, ३२; १७६७, १८०४,
 १९०० । २५, ३, ५, ७; २००१,

२०२५, २०४३ । २९, ५८-५९;
 २०८७, २०९७
 पूषा नरन्ध्रः २२, २०; १५६५
 पूषा प्रपथ्यः २२, २०; १५६४
 पृथिवी १८, १८, २२; १४६९, १४८१ ।
 २२, २७, २९; १६२४, १६५५। २५,
 ९; २०८२ । ३०, २१; २२७२ । ३९,
 १; २२८४
 प्रकामः ३०, १२; २१९२
 प्रकामोद्यः ३०, ९; २१६०
 प्रजा २५, ७; २०५०
 प्रजापतिः १४, २८, ३१; १४४०,
 १४५६। २२, ५, ३०, १४८६, १७०५।
 २४, १, २२-३१; १७२८, १८७७,
 १८८१, १८९१ । २९, ६०; २१०९।
 ३०, २२; २२८१-८२
 प्रज्ञानम् ३०, १०; २१६२
 प्रतिश्रुतका २४, ३२; १९०४। ३०, १२;
 २२१५
 प्रतीची दिक् २२, २४; १५८४
 प्रदराः २५, ७; २०५२
 प्रपथ्यः पूषा २२, २०; १५६४
 प्रबुद्धः २२, ७; १५१९
 प्रभा ३०, १२; २१८४
 प्रमद् ३०, ६; २१३०
 प्रमुद् ३०, १०; २१६४
 प्रयुजः ३०, ८; २१४७
 प्रसवः २२, ३२; १६९५
 प्राची दिक् २२, २४; १५८०
 प्राणः १८, २२; १४७९। २२, ३३, ३३;
 १५७३, १७०७
 प्राणाः २५, २; १९९०
 प्राणाः साधिपतिकाः ३९, १; २२८३
 प्रायणः २२, ७; १५२५
 प्रायश्चित्तिः ३९, ११; २३१२
 प्रायासः ३९, ११; २२९८
 प्रियः ३०, १३; २१९२
 प्रुष्णत् २२, २६; १६१७
 प्रुष्वाः २२, २६; १६१९। २५, ९; २०७७
 प्रोथत् २२, ७; १५०६

(१२०)

फलानि २२, २८; १६५३
बलम् २२, ८; १५३५ । २४, ३८;
१९३७ । २५, ६; २०४२ । ३०, ९,
१३; २१६२, २१९७
बाह्यः २५, २; १९७८
बीभत्सा ३०, १७; २२३५
बृहती २४, १३; १७९६
बृहती सरस्वती २२, २०; १५६२
बृहस्पतिः १०, ५; १४२२ । १४, २९;
१४४८ । १८, १६; १४६२ । २२, ६;
१४९९ । २४, २, २८; १७४१, १८७५
बृहस्पतिः (वाचस्पतिः) २४, ३४;
१९१३ । २५, ३-४; १९९३, २०११ ।
२९, ५८, ६०; २०८८, २१०७
ब्रह्मस्य विष्टपम् ३०, १२; २१९७
ब्रह्म २२, २२; १५७२ । ३०, ५; २११३ ।
३९, १३; २३१७
ब्रह्महत्या ३९, १३; २३१८
ब्रह्मणस्पतिः १४, २८; १४४१
ब्रह्मा २२, ३३; १७१७
भगः १०, ५; १४२७
भद्रा ३०, ११; २१८०
भा ३०, १२; २१८३
भुवनस्य पतिः ९, २०; १४१५ । २२, ३२;
१७०४
भूतानि विश्वा ३०, १७; २२३९
भूतानां पतिः १४, २८; १४४२
भूतिः ३०, १७; २२४०
भूमन् ३०, १३; २१९८
भूमिः २४, १०, २३, ३३; १७७९,
१८६२, १९०८
भेषजम् ३९, १२; २३१३
भौवनः आन्त्यः ९, २०; १४१४ । २२,
३२; १७०३
मंहस् ३०, १९-२०; २२६०, २२६८
मतिः २४, ३९; १९४२
मधुः २२, ३१; १६८१
मनः २२, २३, ३३; १५७९, १७१५
मनः प्रजापतिः २२, २०; १५५५

मनुष्यराजः २४, ३०; १८८४
मनुष्यलोकः ३०, १२; २१८८
मन्युः २४, ३३; १९०९ । ३०, १४;
२२०३
मरीचिः २५, ९; २०७४
मरुतः १८, १७; १४६७ । २२, २८;
१६४७ । २४, ४, १४-१५, ४०;
१७४८, १८०५, १८११, १९५० ।
२५, ४, ६; २०१०, २०३२ । २९, ५८-
५९; २०९१, २०९९ । ३०, ५; २११५
मरुतः क्रीडिनः २४, १६; १८१६
मरुतः गृहमेधिनः २४, १६; १८१५
मरुतः सान्तपनाः २४, १६; १८१४
मरुतः स्वतवसः २४, १६; १८१७
मर्यादा ३०, १०; २१७२
मलिम्लुचः २२, ३०; १६७९
मशकाः २५, ३; १९९१
मही आदितिः २२, २०; १५५८
महेन्द्रः २४, १७; १८२०
माधवः २२, ३१; १६८२
माया ३०, ७; २१३४
मायुः २४, ३२; १९०१
मासाः २२, २८; १६३६ । २४, २५,
३७; १८५२, १९३२
मित्रः १८, १७; १४६३ । २२, ६;
१५०० । २४, ८, २१-२२, २८, ३३;
१७७२, १८३९, १८४४, १८७३,
१९०६ । २५, ५; २०१९
मित्रावरुणा २४, २, ८, २३; १७४२,
१७७१, १८५० । २५, ६; २०४० ।
२९, ६०; २१०६
मुग्धं अहः ९, २०; १४११
मुग्धः वैतंशिनः ९, २०; १४१२
मूर्त्तं करोति यत् २२, ८; १५४८
मूर्धन् २२, ३२; १६९९
मूलानि २२, २८; १६४२
मृत्युः २४, ३७; १९३४ । ३०, ७,
१८; २१४१, २२५० । ३९, १३;
२३१६

मृद् २५, १; १९५५
मेघः २२, २६; १६०७
मेघः ३०, १२; २१९१
मेघा ३०, ६; २१३१
मोदः अपाम् २२, ६; १४९४
यज्ञः २२, ३३; १७२१
यन् २२, ८; १५६६
यमः २४, ३, ३०; १७४५, १८८३ ।
२५, ४; २०१६ । ३०, १४-१५;
२२१२-१३ । ३२, १३; २३१४
यमी २२, ५; २०२९
यवाः १४, ३१; १४५५
यातुधानाः ३०, ८; २१५२
यादस् (दः) ३०, २०; २२६७
योगः ३०, १४; २२०५
रक्षांसि २४, ४०; १९४८ । २५, ६;
२०७९
रश्मयः २२, २८; १८४३
रात्रिः २४, २५, ३६; १८५७, १९१६ ।
३०, २१; २२८०
रुद्रः २४, ३९; १९४४ । २५, ३; २००३
रुद्रः पशुपतिः २४, ३; १७४४
रुद्राः ११, ६०, ६५; १४३०, १४३७ ।
१४, ३०; १४५३ । २२, २८; १६४५ ।
२४, ३, ६, ७; १७४६, १७६०,
१८६८ । २५, ६; २०३४
रूपम् ३०, ७; २१३५
रेष्मन् (ष्मा) २५, २; १९९०
लोकः स्वर्गः ३०, १३; २२०१
लोकाः सर्वे ३०, १२; २१८९
३०, १५; २२१९
वत्सरः ३०, १९; २२६३
वनम् ३०, १९; १६५१
वनरूपतयः २२, २८-२९; १६६३ । २४, २३, ३५; १८४७,
१९१८ ३०, १४; २२०९
वपुस् (पुः) ३०, १४; २२०९
वरुणः ११, ६०; १४३४ । २४, ५;
१४५० । १८, १७; १४६४ । २२, ५;
९; १४९१, १५०१ । २४, २, १५,

१; १९५५
 ६; १६०७
 २; २१९१
 ६; २१३१
 ६; १४९४
 ३; १७२१
 ८; १५२६
 ५, १८८३।
 ०, १४-१५;
 २३१४
 ५; २०२९
 ३१; १४५५
 ८; २१५२
 ०; २२६७
 ४; २२०५
 १। २५, ६;
 ८; १३३३
 ७, १९२६।
 ३; २००३
 ३; १७४४
 ०, १४३७।
 ८; १६४५।
 १, १७६०,
 ४
 ७; २१३५
 २; १९९०
 ३; २२०१
 २; २१८९
 ५; २२१९
 २; २२६३
 २; १६५१,
 १८४७,
 ४, २२०९
 १, १४, ३०।
 ४। २२, ५,
 ४, १, १५,
 ४, १, १५,

विधृतिः २५, ९; २०७१
 विनंशी आन्त्यायनः ९, २०; १४१३
 विभूः २२, ३०; १६६९
 वियासः ३९, ११; २३००
 विराट् २४, १३; १७९५
 विवर्तमानः २२, ८; १५३६
 विवध्वान् २२, ३०; १६७०
 विविक्रिः ३०, १३; २१९५
 विवृत्तः २२, ८; १५३७
 विश्वकर्मा २४, १७; १८२१
 विश्वे देवाः ११, ६०, १५; १४३२,
 १४३९। १८, १७; १४६८। २२, ५;
 १४८९। २२, २८; १६४८। २४,
 ५, १४, २७, ४०; १७५३, १८०६,
 १८७०, १९४७, १९५२। २५, ५-६;
 २०३१, २०३३। २९, ५८-६०;
 २०८९, २०९८, २१०५। ३९, १३;
 २३१९
 विश्वानि भूतानि ३०, १७; २२३९
 विषमाः ३०, १६; २२३०
 विष्णुः ११, ६०; १४३५। २२, ६;
 १४९७। २४, १, ३६; १७३७,
 १९२८। २५, ५; २०२४। २२, २०;
 १५६९
 विष्णुः निभूयपः २२, २०; १५७०
 विष्णुः शिपिविष्टः २२, २०; १५७१
 विरहुतः २५, ७; २०४६
 वीक्षितः २२, ८; १५४४
 वीर्यम् ३०, ९; २१७६
 वृषणः २५, १, ७; १९६२, २०४८
 वैनंशिनः मुग्धः ९, २०; १४१२
 वैरहत्यः ३०, १३; २१९४
 वैशन्ताः ३०, १६; २२२५
 वैश्वानरः २५, ८; २०७०
 वैश्वानरः अग्निः २९, ६०; २१११
 वैश्वानराः विश्वे देवाः ११, ६०, ६५;
 १४३२, १४३९
 व्यञ्जुविन् २२, ३२; १७००
 व्यानः २२, २३, ३३; १५७५, १७०९

व्यूद्धिः ३०, १७; २२४३
 व्यूद्धिः २२, ३४; १७२६
 शक्वरयः १८, २२; १४८५
 शतम् २२, ३४; १७२४
 शब्दः ३०, १९; २२५९
 शयानः २२, ७; १५१५
 शरद् २४, ११, २०; १७८७, १८३३
 शरव्या २४, ४०; १९५१। ३०, ७;
 २१३७
 शाखाः २२, २८; १६५०
 शब्दः २५, १, १९५३
 शार्दूलः २४, ३०; १८८५
 शिपिविष्टः विष्णुः २२, २०; १५७१
 शिशिरः २४, ११, २०; १७८९, १८३५
 शीकायत् २२, २६; १६१८
 शीघ्रं वर्षत् २२, २६; १६१४
 शीनः २५, ९; २०७६
 शीलम् ३०, १९; २२१०
 शुक् (च) ३९, ११; २३०२
 शुक्रः २२, ३१; १६८३
 शुक्रः २५, १; १९६७
 शुचिः २२, ३१; १६८४
 शुनासीरः २३, १९; १८१७
 शुभम् ३०, ७; २१३६
 शुश्रूषमाणः २२, ८; १५४०
 शृकारः २२, ८; १५३०
 शृकृतः २२, ८; १५३१
 शृषः २२, ३०; १६७५
 शृष्वत् २२, ८; १५४१
 शोकः ३०, १४; २२०६। ३९, ११;
 २३०५
 शोचत् ३९, ११; २३०३
 शोचमानः ३९, ११; २३०४
 श्रेयस् ३०, ११; २१८१
 श्रोत्रम् २२, २३, ३३; १५७७, १७१३।
 २४, २९; १८८०। २५, २; १९८३
 श्लोकः १०, ५; १४२५
 संयासः ३९, ११; २२९९
 संवत्सरः १४, २९; १४४६। २२, २८;

(१२२)

१६३९। २४, २५; १८६०। ३०, १५;
२२१५, २२२०

संशरः ३०, १७; २२४४

संसर्पः २२, ३०; १६७६

संहानः २२, ७; १५२२

सन्ध्याः उक्ताः [पूर्व मंत्रोक्ताः] २४, १५,
१७, १९; १८०८, १८१८, १८२६

संज्ञानम् ३०, ९; २१५९

सत् २५, २; १९७६

सन्दिदतः २२, ७; १५१२

सन्ध्याः अहोरात्रयोः २४, २५; १८५८

सन्धिः ३०, ९, २१५३

समाः १८, १८; १४७२

समानः २२, ३३; १७११

समुद्रः २२, २५; १६०२। २४, २१, ३०;
१८३६, १८८९। २५, ८; २०६९

सरांसि ३०, १६; २२२३

सरखान् २४, ३३; १२१०

सरखती १०, ५; १४२०। १८, १६;
१४६०। २२, २०; १५६०। २४, १,

४, १४, ३३, १७३०, १७४९, १८०३,
१९०७। २५, १, ५; १९५७, २०१८।

२९, ५८, ५९; २०८५, २१०१

सरखती पावका २२, २०; १५६१

सरखती बृहती २२, २०; १५६२

सरिरः २२, २५; १६०३

सरीसृपाः २२, २९; १६६६

सर्पाः २४, ३६; १९२४। २५, ५, ७;
२०२३, २०४५

सर्पदेवजनाः ३०, ८; २१४८

सर्वे लोकाः ३०, १२; २१८९

सविता १०, ५; १४१९। १८, १६;
१४५९। २२, ६; १४९५। २४, २,

१४, ३५; १७४०, १८०२, १९१९।
२९, ५८, ६०; २०९३, २१०८

सहस् (हाः) २२, ३१; १६८९

सहस्यः २२, ३१; १६९०

साध्याः २४, २७; १८७१। ३०, १५;
२२२२

सानूनि ३०, १६; २२३३

समृद्धीका आदितिः २२, २०; १५५३

सूयाः २२, २५; १५९९

सूर्यः १८, २२; १४७८। २२, २८, २९;
१६४२, १६५८। २४, १९, ३३;

१८२९, १९०५। ३०, ३१; २२७६।
३९, १; २२८२

सूर्य-यमौ २४, १; १७३३

सोमः १०, ५; १४१८। १४, ३१;
१४५४। १८, १६; १४५८। २२, ६,

२७; १४९३, १६२३। २४, २, ९, १४,
२२, २४, ३२; १७३८, १७७४,

१८०१, १८४१, १८५१, १८९९।

२५, ४; २००७। २९, ५८; २०८६

सोमपूषणौ २४, १; १७३२

स्तनयत् २२, २६; १६०९

स्तनयितुः २५, १; १९८०

स्तेगाः २५, १; १९५६

स्यन्दमानाः २२, २५; १५९७

स्रवन्त्यः २२, २५; १५९६। २५, ८;
२०६७

खनाः ३०, १६; २२३१

खपत् २२, ७; १५१६

स्वप्नः ३०, १०; २१६६

स्वर् २२, ३२-३३; १६९८, १७१९

स्वर्गः २२, ३४; १७३७

स्वर्गः लोकः ३०, १३; २२०१

स्वापिः ९, २०; १४०६

ह्रस्वः ३०, ६, २०; २१२८, २२६६

हिङ्कारः २२, ७; १५०२

हिङ्कृतः २२, ७; १५०३

हिमवान् २४, ३०; १८९०

हेतिः ३०, ७; २१३८

हेमन्तः २४, ११, २०; १७८८, १८३४

हृदाः २५, ८; २०६८

द्वादुनीः २२, २६; १६२०। २५, २;
२०७८

हीः २४, ३५; १९२२

विश्वे-देवादेवता-मन्त्राणां वर्णानुक्रमसूची ।

१८; २०८६
१; १७३२
६; १६०९
१; १९८०
१; १९५६

१५; १५९७
६; १५,८५

६; २२३१

७; १५१६

१०; २१६६

१८; १७१९

१४; १७३७

१३; २२०१

१०; १४०६

२८; २२६६

७; १५०९

७; १५०३

३०; १८९०

७; २१३८

०८८; १८३४

८; २०६८

१; २५,२५

३५; १९२९

अश्विन्या स्वाहा	१४२६
अश्विन्या देव सोम	१२८४
अश्विन्या भगो वरुणो मित्रो	९३६
अश्विन्या स्वहा	१६९३
अश्विन्या कितवम्	२२४५
अश्विन्या देवाः ३२१, १२६२	
अश्विन्या कूटस्थ	१८४६
अश्विन्या गायत्र्या त्रिष्टुते	२१०३
अश्विन्या गृहपतये पारुष्णान्	१८५५
अश्विन्या गृहपतये स्वाहा	१३२८
अश्विन्या त्वा मह्यं वरुणो ददातु	१३०६
अश्विन्या नीकवते प्रथमजान्	१८१३
अश्विन्या नीकवते रोहितान्	२०९५
अश्विन्या पीवानम्	२२७१
अश्विन्या वैश्वानराय द्वादशकपालः	२१११
अश्विन्या स्वाहा १४१७, १४९२, १६२२, २२८५	
अश्विन्या वसुवन्तमृच्छन्तु	२८२
अश्विन्या भ्याम्	२०००
अश्विन्या होतारमवृणीत	१३८६
अश्विन्या समक्षिना दधिकां	१६८
अश्विन्या वरुणो मित्रो अर्यमा	६९२
अश्विन्या वसव्यस्य	२३६
अश्विन्या पुरोहितो	५१२
अश्विन्या क्षत्रेण प्राणमुदजयत्	१३१९
अश्विन्या तमृचः कामयन्ते	३०८
अश्विन्या त्रिज्योतिर्ज्योतिरमिः स्वाहा	१२७२
अश्विन्या देवता वातो देवता	८५२
अश्विन्या पातु वसुभिः पुरस्तात्	२७२
अश्विन्या पृथिवी च सज्जते	१३८४
अश्विन्या म इन्द्रश्च मे	१४५७
अश्विन्या मे	१४७५
अश्विन्या पञ्चान्याववतं धियं मे	४२४
२५ दै. (विश्वे देवाः)	

अमीषोमयोरुज्जितिमनूजेषं	१२७४
अमीषोमयोर्भासदी	२०३७
अमीषोमयोः षष्ठी	२०२२
अमीषोमाभ्यां चापान्	१८४८
अमीषोमा वृषणा वाजसातये	७१३
अमे अच्छा वदेह नः	८१६
अमे तव त्यदुक्थ्यं	५०
अमेऽदब्धायोऽशीतम पाहि	१२७५
अमेः पक्षतिः	२००४
अमेः पूर्वं भ्रातरो अर्थमेतं	१२०८
अमे बाधस्व वि मृधो वि दुर्गहा	१२३३
अमे मन्युं प्रतिनुदन् परेषाम्	८०५
अमेर्जनित्रमसि वृषणौ स्थ	१२८३
अमेर्भागोऽसि दीक्षाया आधिपत्यं	१३४४
अमे विश्वेभिरमिभिः	१४०२
अमे सुतस्य पीतये	३५०
अमे स्वाहा कृणुहि जातवेदः	८७३
अमे विष्णवे वयम्	५११
अङ्गुलयः शक्वरयो दिशश्च मे	१४८५
अचिकित्वाञ्चिकितुषश्चिदत्र	१०४
अच्छा मही बृहती शंतमा गीः	२८४
अच्छायं वो मरुतः श्लोक एतु	४७२
अच्छा विवकिम रोदसी सुमेके	२२६
अजिराधिराजौ श्येनौ	२६४
अजिरासस्तदप ईयमानाः	३२९
अजे चिदस्मै कृणुथा न्यञ्चनं	५२९
अजन्ति यं प्रथयन्तो न विप्राः	२८३
अनिकुष्टाय मागधम्	२१२२
अति धावतातिसरा	९२६
अति नो विष्पिता पुरु	५६१
अति वा यो मरुतो मन्यते नो	४१०
अतीव यो मरुतो मन्यते नो	१०९६
अतो न आ नूनतिथीन्	३४७

अत्यं हविः सज्जते सज्ज धातु च	२९६
अत्रैनानिन्द्र वृत्रहन्	९३१
अथर्वभ्योऽवतोक्ता	२२१४
अथैतानष्टौ विरूपानालभते	२२८१
अदत्रया दयते वार्याणि	३४२
अदितिः शीर्ष्णा	१९८७
अदितिर्वापृथिवी ऋतं महद्	७१०
अदितिर्वापृथिवीरन्तरिक्षम्	२८
अदितिर्वापृथिवीरन्तरिक्षम् दक्ष या	१२१६
अदितिश्च मे	१४८२
अदितिः शमश्रु वपतु	९४९
अदित्यै पञ्चमी	२००८
अदित्यै पाजस्यम्	२०५५
अदित्यै भसत्	२०५७
अदित्यै मह्यं स्वाहा	१५५८
अदित्यै विष्णुपत्न्यै चरुः	२११०
अदित्यै सुमृङ्गीकायै स्वाहा	१५५९
अदित्यै स्वाहा	१५५७
अद्भ्यस्त्वा राजा वरुणो ह्यतु	८९३
अद्भ्यः स्वाहा १५९२, १६६१, २२९३	
अद्भ्यो मत्स्यान्	१८३८
अद्भ्यो अथ बर्हिषः स्तरीमणि	५८८
अथ गमता नहुषो हवं सूरैः	९२
अथ त्वमिन्द्र विद्वयस्मान्	६४८
अथ प्र जज्ञे तरणिर्ममतु	७२
अथ यद् राजाना गविष्ठौ	६४९
अथ स्मा न उदवता सजोषसो	१५९
अथा गात्र उपमाति कनायाः	६४७
अथा न्वस्य जेन्यस्य पुष्टौ	६५०
अथायि धीतिरसस्त्रमंशाः	५७०
अथासु मन्द्रो अरतिर्विभावा	६४६
अधि न इन्द्रैषां	५६५

अधिपतये स्वाहा	१४१६, १६७४,
१७०४	
अधिपन्त्यसि बृहती दिग्	८६१, १३५८
अधीन्वन्न सप्ततिं च	७५०
अधोरामः सावित्रो	२०९३
अधोरामो सावित्रो	२०९६
अध्वर्यवश्चक्रवांसो मधूनि	२७९
अध्वानं बाहुभ्याम्	१२९८
अनच्छेये तुरगात् जीवम्	१२८
अनङ्गवान् वयः पङ्क्तिश्छन्दो	१३३९
अनङ्गाहः पङ्क्त्यै	१७३८
अनन्ताय मूकः	२२५८
अनमित्रं नो अधराद्	९४१
अनमीवा उषस आ चरन्तु नः	५८५
अनु तदुर्वी रोदसी जिहाताम्	४४७
अनु त्वा मही पाजसी अचके	७७
अनुमत्या अष्टाकिपालः	२११२
अनु वीरैरनु पुष्यास्म	१२५५
अनूकाशेन बाह्यं	१९७८
अनूनोदत्र हस्तयतो अद्रिः	३१५
अन्तकाय गोघातम्	२२५१
अन्तकाय श्वनिनम्	२१४२
अन्तकाय स्वाहा	२३१५
अन्तरिक्षं च म इन्द्रश्च मे	१४७०
अन्तरिक्षं पुरीतता	२०५९
अन्तरिक्षाय पाङ्कत्रान्	१८६३
अन्तरिक्षाय वःशनर्तिनम्	२२७४
अन्तरिक्षाय स्वाहा	१६२६, १६५६,
२२८६	
अन्ताय बहुवादिनम्	२२५७
अन्त्याय भौवनाय स्वाहा	१४१४,
१७०२	
अन्त्याय स्वाहा	१७०१
अन्धाहोन्स्त्थलुदया	२०४४
अन्यत एन्यो मैत्र्यः	१७७२
अन्यतोरण्याय दावपम्	२२६४
अन्यवापोऽर्धमासानाम्	१९२९
अन्यस्या वत्सं रिहती मिमाय	२०४
अप आस्येन	१९६१
अप त्वं वृजिनं रिपुम्	४०५

अप न्यधुः पौरुषेयं वधं	१००३
अपः शुष्ककण्ठेन	१९८५
अपश्यं गोपामनिपद्यमानम्	१२९
अपस्त ओषधीमतीर्क्षच्छन्तु	९८७
अपाघमप किल्बिषमप	१३९१
अपाह् प्राङ्गति स्वधया गृभीतो	१३६
अपां चतुर्थी	२०२०
अपाञ्चौ त उभौ बाहू	९६५
अपादिन्द्रो अपादग्निः	५५८
अपानाय स्वाहा	१५७४
अपानेन नासिके	१९७४
अपानो यज्ञेन कल्पताः स्वाहा	१७०८
अपामीवां सविता साविषन्त्यग्	७५८
अपामीवामप विश्वामनाहुतिम्	६७२
अपामुद्रो	१९३१
अपां पृष्ठमसि योनिरग्नेः	१३३६
अपां परं जीवधन्यं भरामहे	६०१
अपां मोदाय स्वाहा	१४९४
अपिजाय स्वाहा	१४०७, १६९६
अपि नह्यामि ते बाहू	९६६
अपि पन्थामगन्महि	४०८
अपेत वीतं वि च सर्पतातो	१२६९,
१३३३	
अपो यूष्णा	२०७३
अपो वस्तिना	२०४७
अबुध्रसु ल्य इन्द्रवन्तो अग्नयो	५८०
अभयं द्यावापृथिवी इहास्तु नो	९३९
अभयं नः करत्यन्तरिक्षम्	९६८
अभयं मित्रादभयममित्राद्	९६९
अभि त्वं वीरं गिर्वणसमर्च	३८३
अभि त्वा वर्चसासिचन	११४७
अभि त्वेन्द्र वरिमतः	९५९
अभि न इळा यूथस्य माता	२५८
अभि प्र स्थाताहेव यज्ञं	४३०
अभि प्रिया मरुतो या वो	५१७
अभि प्रेहि माप वेनः	११४३
अभिभुवे स्वाहा	१६७३
अभिभूरस्येतास्ते पञ्च दिशः	१३२९
अभिभूर्यज्ञो अभिभूरग्निः	९५७
अभि यं देवी निर्ऋतिश्चिदीशो	४७९

अभि वो अर्चं पौष्यावतो नूनं	२४७
अभि वो देवीं धियं दधिचम्	४३४
अभीक आसी पदवीरबोधि	२१७
अभूत्यै स्वपनम्	२२४१
अभ्राय स्वाहा	१६०६
अमी ये देवा स्थन	४२, १४९८
अमी ये पञ्चोक्षणो	४७
अमी ये सप्त रश्मयः	४६
अमी ये युधमायन्ति	११८६
अमूः पारे पृदाक्वः	८८३
अयं यो होता किं स यमस्य	६१०
अयं स शिङ्क्ते येन गौरभीवृता	१२७
अयं सोमः सुदानवः	१२००
अयं स्तुतो राजा वन्दि वेधाः	६४२
अयं हि नेता वरुण ऋतस्य	४९१
अयं दक्षिणा विश्वकर्मा तस्य	१३६०
अयं नाभा वदति वल्गु वो गृहे	६५७
अयमुत्तरात् संयद्रसुस्तस्य	१३६२
अयमुपर्यर्वाग्वसुस्तस्य	१३६३
अयं पश्चाद्विश्वयचास्तस्य	१३६१
अयं पुरो हरिकेशः सूर्यरश्मिः	१३५९
अयस्मये दुपदे बेधिष इह	११८३
अयेभ्यः कितवम्	२१४९
अरण्याय समरो	१९४३
अराध्या एदिधिषुः पतिम्	२१५७
अरिष्टः स मर्तो विश्व एधते	६७३
अरिष्टया अश्वसाद	२२००
अरुणाञ्छरदे	१७८७
अरुणो मा सकृद् वृकः	५५
अरुषस्य दुहितरा विरूपे	३६५
अर्कश्च मे	१४७७
अर्चन्त एके महि साम	५४८
अर्णवाय स्वाहा	१६०१
अर्थमिद् वा उ अर्थिनः	३९
अधर्माय बधिरम्	२१६७
अर्धमासेभ्यः स्वाहा	१६३५
अर्मेभ्यो हस्तिपम्	२१७३
अर्यमणं बृहस्पतिम्	८१०
अर्यमा गो अदितिर्यज्ञियासो	१८७

नृन् २४७	वर्चस्वो स्वाहा १४२८	अष्टा महो दिव आदो हरी इह ७४	आग्ने गिरो दिव आ पृथिव्याः ४८५
वम् ४३४	वर्चस्वो नवमी २०१२	अष्टौ पुत्रासो अदितेः १२१२	आग्नेयः कृष्णप्रावः २०८४
२१७	वर्चस्यै दिशो स्वाहा १५८१, १५८३, १५८५, १५८७, १५८९, १५९१, १६३१	असपत्नं पुरस्तात् पश्चाच्चो ९७०, ११६८	आग्नेयः कृष्णोऽजः २१००
२२४१		असवे स्वाहा १६६७	आ प्रावभिरह्न्येभिरवतुभिः ३३७
१६०६		असावि ते जुजुषाणाय सोमः २८१	आङ्गिरसानामाद्यैः ११२१
४२, १४९८	वर्चो अथा भवता यजत्रा १५६	असौ यः पन्था आदित्यो ५३	आ चष्ट आसां पाथो नदीनां ४३५
४७	वर्ज आन्तरिक्षः १९१४	अस्ति हि वः सजात्यं रिशादसो ५२१	आच्छच्छन्दः प्रच्छच्छन्दः १३४९
४६	वर्जस्यै वधायोपमन्थितारं २१९०	अस्तु श्रौषट् पुरो अग्निं ९७	आजुह्वानः सुप्रतीकः पुरस्ताद् ८६३
११८६	वर्कां दन्तमूलैः १९५४	अस्ना रक्षार्थसि २०७२	आ त एतु मनः पुनः ६२४
८८३	वर्कन्दाय स्वाहा १५०५	अस्मा उक्थाय पर्वतस्य गर्भः ३११	आतिर्वाहसो दर्विदा ते वायवे १२१२
स्य ६१०	वर्कन्देन तालु १९५९	अस्माकं मित्रावरुणावतं रथम् १५८	आतिष्ठन्तं परि विश्वे अभूषन् ११४४
वृता १२७	वन्तु नः पितरः सुप्रवाचना ५९	अस्मिन्समुदे अध्येतरस्मिन् १२२७	आ तू षिष्व हरिर्मो द्रोक्ष्ये ७७२
१२००	वन्तु मामुषसो जायमाना ४१२	अस्मिन् वसु वसवो धारयन्तु ८७७	आ ते नयतु सविता नयतु ११०४
गाः ६४२	वः परेण पर एनावरेण ११५	अस्मे धेहि धुमतीं वाचमासन् १२२४	आ ते योनिं गर्भ एतु १०५२
४९१	वः परेण पितरं यो अस्य ११६	अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो १२०४	आत्मने मे वर्चोदा वर्चसे १३०३
१३६०	वरस्वराय शङ्खध्वम् २२६२	अस्मै ग्रामाय प्रदिशश्चतस्रः ९४०	आत्मा यज्ञेन कल्पताः स्वाहा १७१६
गृहे ६५७	वलिमा रौद्राः १७४६	अस्य देवस्य मीळुषो वयाः ४९२	आ त्वा कणा अहूषत ५
१३६१	ववर्षते स्वाहा १६१२	अस्य देवाः प्रदिशि ज्योतिः ८७८	आ त्वा गन् राष्ट्रं सह वर्चसा ८९६
१३६३	वसुष्ठा परा पत शरव्ये १११२	अस्येदेषा सुमतिः पप्रथाना ५७३	आ त्वागमं शन्तातिभिः ८१३
१३६१	वसुर्जते स्वाहा १६१०	अस्य मदे स्वयं दा ऋताय ७०	आथर्वणानां चतुर्ऋचेभ्यः स्वाहा १००७
मः १३५९	वस्यै दिशो स्वाहा १५९०	अस्य वामस्य पलितस्य ९९	आ दधामि ते पदं १०९८
११८३	वाराय केवर्त २२२८	अस्य स्तुषे महिमघस्य राधः ८९	आदित्यांश्च श्मश्रुभिः १९६३
२१४९	वार्था इक्षवो १९७०	अहं सो अस्मि यः पुरा ४४	आदित्यानां तृतीया २०३५
१९४३	वार्थाणि पक्ष्माणि १९७१	अहं होता न्यसीदं यजीयान् ६०९	आदित्या रुद्रा वसवः सुनीथाः २२२
२१५७	वर्जिता आदित्यै १७५५, १७७६	अहं गृभ्णामि मनसा मनांसि ९०७	आदित्या रुद्रा वसवो जुषन्त ४६२
६७३	वर्जन्ते अतिहितं यदासीद् ८३५	अहर्पतये स्वाहा १४१०	आदित्यासो अति स्त्रिधो ७९६
२१००	वर्जितो अस्मान् विश्वासु विश्व ४३७	अहोरात्रयोः सन्धिभ्यो १८५८	आदित्यास्त्वाऽऽच्छन्दन्तु जागतेन १४३८
१७८७	वर्जितो अग्निर्हव्यान्नमोभिः ४३९	अहोरात्रेभ्यः स्वाहा १६३४	आदित्यास्त्वा धूपयन्तु जागतेन १४३१
५५	वर्जितो वो अमृता अमन्दीद् १२०५	अहे पारावतानालभते १८५६	आदित्येभ्यः स्वाहा १६४६
३६५	वर्जितो मस्तिष्केण १९८१	अहे मुग्धाय स्वाहा १४११	आदित्येभ्यो न्यङ्कून् १८६२
१४७७	वर्जितो मस्तिष्कभिः सामगोभिः १०९४	अहे शुक्रं पिङ्गाक्षम् २२७९	आदित्यैरिन्द्रः सगणो मरुद्भिः ८२५
५४८	वर्जितो मे १४८०	आकीं सूर्यस्य रोचनाद् १२	आ देवो दूतो अजिरश्चिक्त्वान् १२२३
१६०१	वर्जितो गोमृगस्ते १७२८	आकूतिमग्निं प्रयुजस् स्वाहा १३३२	आ देव्यानि पार्थिवानि जन्म २५३
३९	वर्जिता त्वाग्ने मित्रावरुणोभा ८९८	आकूलै प्रयुजेऽग्नये स्वाहा १२८१	आ धर्णसिर्वाहद्विो रराणो २८९
२१६७	वर्जितावसाभ्याः २००२	आ क्रन्दय धनपते ११०३	आ धूर्ध्वस्मै दधाताश्चान् ४२९
१६३५	वर्जित्यां पच्यस्व सरस्वत्यै १३३०	आक्रमणं स्थूराभ्याम् १२९५, २०४१	आ धेनवः पयसा तूर्ण्यर्था २७७
२१७३	वर्जित्यां पिन्वस्व सरस्वत्यै १३९३	आक्रयाया अयोगं २१२०	आ धेनवो धुनयन्तामाशिश्वीः २०७
८१०	वर्जित्यां मयूरान् १८४९	आक्षित् पूर्वास्वपरा अनूरुत् १९६	आध्यक्षायांनुक्षत्तारम् २१८२
१८७	वर्जित्यां स्वाहा १०११	आखुः कशो मान्थालस्ते १९३६	आ न इलाभिर्विदधे सुशस्ति १४०
	वर्जित्यां चैभ्यः स्वाहा १०२१		

(१९६)

आनन्दाय तलवम्	२२७०
आनन्दाय स्त्रीषखं	२१२९
आ नामभिर्मरुतो वक्षि विश्वान्	२८६
आ नो अद्य समनसो	५१६
आ नो दिवो बृहतः पर्वतादा	१८७
आ नो देवः सविता त्रायमाणो	३८५
आ नो देवः सविता साविपद् वयः	७५३
आ नो देवानामुप वेतु शंसो	५६८
आ नो द्रप्सा मधुमन्तो विशन्तु	११२५
आ नो बर्हिः सधमादे बृहद्वि	५८९
आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो	१९
आ नो महीमरमर्ति सजोषाः	२८२
आ नो राधांसि सवितः स्तवध्वै	४८०
आ नो रुद्रस्य सूनवो नमन्ताम्	३८१
आ नो विश्व आस्का गमन्तु देवाः	१४१
आ नो विश्वे सजोषसो	५५३
आप इद् वा उ भेषजीः	८१४
आपये स्वाहा	१४०५
आ पर्वतस्य मरुतामवांसि	२३३
आ पशुं गासि पृथिवीं वनस्पतीन्	५१३
आपश्चिदस्मै पिबन्त पृथ्वीः	४२८
आ पुत्रासो न मातरं विभृत्राः	५०३
आपो मौषधीमतीरेतस्या दिशः	९७७
आ प्र द्रव परमस्याः परावतः	८९९
आ प्र यात मरुतो विष्णो	५१९
आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसो	१५७२
आ मा पुष्टे च गोषे च	९११
आ यत् साकं यशमो वावशानाः	४६९
आयनाय स्वाहा	१५२४
आ यज्ञः पत्नीर्गमन्त्यच्छा	४४३
आयमगन्तसविता क्षुरेण	९४८
आ यातु मित्र ऋतुभिः कल्पमानः	९०२
आयासाय स्वाहा	२२९७
आयुर्मे पाहि प्राणं मे पाहि	१३४०
आयुर्थेन कल्पता स्वाहा	१७०६
आ युवानः कवयो यज्ञियासो	३७३
आयुषाऽऽयुःकृतां जीवायुष्मान्	११६२
आरण्योऽजो नकुलः शक्रा	१९००
ओरेऽसावस्मदस्तु हेतिः	१०१६

आर्तिवेभ्यः स्वाहा	१६३८
आर्त्यै जनवादिनं	२२४२
आर्त्यै परिवितं	२१५५
आर्ष्टिषेणो होत्रमृषिर्निषीदन्	१२२६
आ वात वाहि भेषजं	८११
आ वातस्य ध्रजतो रन्त इत्या	४६६
आ वां येष्ठाऽश्विना हुवध्वै	२४२
आविर्मर्या आवितो अग्निः	१३२६
आ वेधसं नीलपृष्ठं बृहन्तं	२८८
आ वो धियं यज्ञियां वर्त ऊतये	७७१
आ वो यक्ष्यमृतत्वं सुवीरं	६१२
आ वो रुवण्युमौशिजो हुवध्वै	८६
आ वो वाहिष्ठो बहवु स्तवध्वै	४७३
आशाभ्यः स्वाहा	१६२९
आशिक्षायै प्रश्निनम्	२१७०
आशुस्त्रिवृद्भान्तः पञ्चदशो व्योमा	१३४३
आश्विनावधोराभौ बाहोः	१७३१
आसीनाय स्वाहा	१५१४
आ सुष्टुती नमसा वर्तयध्वै	२७८
आ सूर्यो अरुहच्छुक्रमणो	३१८
आ सूर्यो यातु सप्ताश्वः	३१७
आस्कन्दाय सभास्थाणुं	२२४९
इड्या जुह्वतो वयं देवान्	९१२
इडायास्पदं धृतवत् सरीसृपं	९१०
इडे रन्ते हव्ये काम्ये चन्द्रे	१२४५
इति चिन्तु प्रजायै पशुमत्यै	२५६
इति स्तुतासो असथा रिशादसो	५५०
इदं यत् परमेष्ठिनं मनः	१०७२
इदं वपुर्निवचनं जनासः	३३२
इदं विष्कन्धं सहते	१०५०
इदं त एकं पर ऊत एकं	६१४
इदं देवाः शृणुत ये यज्ञिया	१०९२
इदमित्था रौद्रं गूर्तवचा	६२७
इदमिन्द्र शृणुहि सोमप	१०९३
इदावत्सरायातीत्वरीम्	२२१७
इदा हि व उपस्तुतिं	५२२
इद्वत्सरायातिष्कद्वरीं	२२१८
इध्मेनाग्र इच्छमानो धृतेन	९१७
इन्द्रः स्वपसा वहेन	१९९२

इन्द्र उक्थेन शवसा परुद्धे	७५५
इन्द्रं कुत्सो वृत्रहणं शचीपतिं	६२
इन्द्रज्येष्ठा मरुद्गणाः	१६७
इन्द्र दृह्य मघवन् त्वावदिद् भुजे	७५१
इन्द्रं ते मरुत्वन्तमृच्छन्तु	९८९
इन्द्रपुत्रे सोमपुत्रे दुहितासि	९१४
इन्द्रप्रसूता वरुणप्रशिष्टा	७०८
इन्द्रमहं वणिजं चोदयामि	९१५
इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमृतये	५७
इन्द्रवायू वृहस्पतिं	६, ८१९
इन्द्रश्च मरुतश्च कयाय	१३०९
इन्द्रः सु पूषा वृषणा सुहस्ता	२२४
इन्द्रस्त्वा धूपयतु	१४३३
इन्द्रस्य कोडो	२०५४
इन्द्रस्य गौरमृगः	१९०२
इन्द्रस्य तृतीया	२००६
इन्द्रस्य नु सुकृतं दैव्यं सहः	७५६
इन्द्रस्य वज्रोऽसि मित्रावरुणयोः	१३२७
इन्द्रस्य सूर्यसीन्द्रस्य	८४३
इन्द्रस्यैकादशी	२०१४, २०२७
इन्द्राग्निभ्यां कुञ्चान्	१८४३
इन्द्राग्निभ्यां त्वा जुष्टं प्रोक्षामि	१४८७
इन्द्राग्नी मित्रावरुणादिति स्वः	३२९
इन्द्राग्नी वृत्रहत्येषु सत्पती	६९३
इन्द्रावन्तोः पक्षतिः	२०१७
इन्द्राग्न्यै षष्ठी	२००९
इन्द्रावृहस्पती ऊरुभ्यां	२०३१
इन्द्राय त्रैष्टुभाय पञ्चदशाय	२१०४
इन्द्राय सूकरः	१९४९
इन्द्राय स्वपसाय वेहद्	१७३६
इन्द्राय स्वाहा १४२२, १४९८, १६२४	९२४
इन्द्रा याहि मे हवमिदं	६६०
इन्द्रेण युजा निः सृजन्त वाघतो	९००
इन्द्रेन्द्र मनुष्याः परेहि	७२७
इन्द्रे भुजं शशमानास आशत	७५४
इन्द्रो अस्मे सुमना अस्तु विश्वहा	४१४
इन्द्रो नेदिष्ठमवसागमिष्ठः	२७९
इन्द्रो मा मरुत्वानेतस्या दिशः	७०९
इन्द्रो वसुभिः परि पातु नो गयम्	७०९

७५५	इन्द्रो विश्वैर्वीर्यैः पत्यमानः	१८४	उत ग्ना व्यन्तु देवपत्नीः	३२७	उदीरय कवितमं कवीनाम्	२६२
६२	इन्द्रो वीर्येणोदक्रामत्	१०००	उत ल्यन्नो मास्तं शर्ध आ गमद्	३२४	उदु ल्यच्छुर्महि मित्रयोरां	३९३
१६७	इमं रथमधि ये सप्त तस्थुः	१०१	उत त्या मे यशसा श्वेतनाथै	८५	उदु ष्य वः सविता सुप्रणीतयो	५२३
मुजे ७५१	इमं वीरमनु हर्षध्वम्	२५८	उत त्या मे रौद्रावर्चिमन्ता	६४१	उदृहीताय स्वाहा	१६१६
९८९	इमं वृषणं कृणुतैकमिन्माम्	१३९६	उत त्या मे हवमा जग्म्यातं	३८७	उदृहते स्वाहा	१६१५
९१४	इमं स्तोमं रोदसी प्र ब्रवीमि	१७९	उत त्ये देवी सुभगे मिथूहशा	१६२	उद्धन्तां मघवन् वाजिनानि	१११०
७०८	इमं नो अग्ने अध्वरं जुषस्व	४९९	उत त्ये नः पर्वतासः सुशस्तयः	३२५	उद्वुध्यध्वं समनसः सखायः	७६३
९१५	इमं नो अग्ने अध्वरं होतः	४२०	उत त्ये नो मरुतो मन्दसाना	४७०	उद्वुध्यस्वामि प्रतिजागृहि	८६२
५७	इममग्न आयुषे वर्चसे नय	११०१	उत त्वं सूनो सहसो नो अया	३८६	उद्यासाय स्वाहा	२३०१
६, ८१९	इममग्नस्पामुभये अकृण्वत	७२२	उत देवा अवहितं	८०९	उद्द्राताय स्वाहा	१५२९
१३०९	इमं महे विदध्याय शृषं	१७०	उत द्यावापृथिवी क्षत्रमुरु	३८०	उद्द्रावाय स्वाहा	१५२८
२२४	इमां वा मित्रावरुणा सुवृक्तिं	४६५	उत न ई त्वष्टा गन्त्वच्छा	१४५	उन्नत ऋषभो वामनस्त	१७६३
१४३३	इमां च नः पृथिवीं विश्वधायाः	२१२	उत न ई मतोऽश्वयोगाः	१४६	उन्नतः शितिवाहुः शितिपृष्ठः	१७६४
२०५४	इमानि यानि पञ्चेन्द्रियाणि	१०७३	उत न ई मरुतो वृद्धसेनाः	१४७	उप त्वा नमसा वयं होतः	९२१
१९०२	इमा नु कं भुवना सीषधाम	८२३	उत न एषु नृषु श्रवो धुः	४४१	उपध्वस्ताः सावित्राः	१८०२
२००६	इमामग्ने शरणिं मीमृषो नो	९१८	उत नो देवावधिना शुभस्पती	७४१	उप नः सूनवो गिरः	४१७
७५६	इयं या परमेष्ठिनी वाग्देवी	१०७१	उत नो देव्यदितिः	५०९	उप नो देवा अवसा गमन्तु	६५
योः १३२७	इयं वेदिः परो अन्तः पृथिव्याः	१३३	उत नो धियो गोअग्राः	३३	उपयामगृहीतोऽसि वृहस्पतिः	१३०७
८४३	इयं सा भूया उषसामिव क्षा	५७२	उत नो नक्तमपां वृषण्वसू	७४०	उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा	१३००
४, २०२७	इयं सा वो अस्मे दीधितिर्यजत्राः	१५०	उत नो रुद्रा चिन्मृलतामधिना	७४२	उपयामगृहीतोऽस्याप्रयणो	१२९९
१८४३	इयं न उसा प्रथमा सुदेव्यं	५८३	उत नो विष्णुस्त वातो अस्त्रिधो	३२३	उपयाममधेरणौष्ठन	१९७५
मि १४८७	इयं मे नाभिरिह मे सधस्थम्	६४५	उत नोऽहिर्बुध्न्यो मयस्कः	१४४	उपलान् प्लीहा	२०६४
स्वः ३२९	इरायै कीनाशं	२१७८	उत नोऽहिर्बुध्न्यः शणोतु	३९१	उप व एषे नमसा जिगीषा	१४३
६९३	इर्यताया अकितवं	२१५०	उत माता वृहद् दिवा शणोतु नः	६८५	उप व एषे वन्द्येभिः शृषैः	२४६
२०१७	इषाय स्वाहा	१६८७	उत वः शंसमुशिशामिव इमसि	१६३	उपविष्टाय स्वाहा	१५११
२००९	इष्कृताहावमवतं	७६८	उत स्य देवः सविता भगो नः	३९०	उपशिक्षाया अभिप्रश्नितं	२१७१
२०३१	इह ब्रवीतु य ईमङ्ग वेद	१०५	उत स्य देवो भुवनस्य सक्षणिः	१६१	उप स्तुहि प्रथमं रत्नधेयं	२६६
य २१०४	इहेदसाथ न परो गमाथेर्यो	९०५	उत स्य न इन्द्रो विश्वचर्षणिः	१६०	उपस्थावराभ्यो दाशं	२२२४
१९४९	इहैव स्त माप याताध्यस्मत्	९५३	उत स्य न उशिशामुर्विया कविः	७३२	उपस्थिताय स्वाहा	१५२३
१७३६	इहैव हवमा यात म इह	८८०	उतो हि वां पूव्या आविविद्रे	१७३	उप ह्ये सुदुघां धेनुमेतां	१२४
१८, १६२४	ईक्षमाणाय स्वाहा	१५४२	उत्कूलानिकूलेभ्यस्त्रिष्टिनं	२२०८	उप ह्ये सुहवं मास्तं गणं	६००
९२४	ईक्षिताय स्वाहा	१५४३	उत्तमेभ्यः स्वाहा	११३२	उपावीरस्युप देवान् दैवीः	१२८६
माघतो ६६०	ईक्षते त्वामवस्यवः	८	उत्तरेभ्यः स्वाहा	११३३	उपोत्तमेभ्यः स्वाहा	११३१
९००	ईक्षानाय परस्वत आलभते	१८७२	उत्थिताय स्वाहा	१५३३	उमाभ्यां देव सवितः	११७५
शत ७२७	उक्ताः सन्नराः १८०८, १८१८, १८२६		उत्सादेभ्यः कुब्जं	२१६३	उमे धुरौ वहिरापिन्दमानो	७७३
वेधहा ७५४	उक्षाणो बृहत्या	१७९६	उदकाय स्वाहा	१५९४	उरुव्यचा नो महिषः शर्म यंसद्	८०७
४१४	उक्षा समुद्रो अरुषः सुपर्णः	३३०	उदस्य शुष्माद् भानुर्नर्ति	४३२	उरौ देवा अनिबाधे स्याम २७५, २९२	१६३०
शः २७९	उषं वर्षते स्वाहा	१६१३	उदानो यज्ञेन कल्पताः स्वाहा	१७१०	उर्व्यै दिशे स्वाहा	१८९२
गयम् ७०९	उत कृण्वं नृषदः पुत्रमाहुः	५७८	उदीच्यै दिशे स्वाहा	१५८६		

उबोचिथ हि मघवन् देष्णं	४७५
उषसः पूर्वा अध यद् व्यूषुः	१९२
उषासानक्ता बृहती सुपेशसा	५९४
उषे गह्वी सुपेशसा	८६६
उषो मघोन्या वह	२३७
उष्ट्रो घृणीवान् वाग्नीनसस्ते	१९४२
ऊती देवानां वयमिन्द्रवन्तो	१२६५
ऊर्ज गावो यवसे पीवो अत्तन	७६०
ऊर्जा मित्रो वरुणः पिन्वत	१४०१
ऊर्जाय स्वाहा	१६८८
ऊर्ध्वमेनमुच्छ्रयताक्षिरौ	१३८२
ऊर्ध्वमेनामुच्छ्रापय गिरौ	१३८१
ऊर्ध्वयै दिशे स्वाहा	१५८८
ऊर्ध्वो अग्निः सुमतिं वस्वो अश्रेत्	४८१
ऊर्ध्वो प्रावा वसवोऽस्तु सोतरि	७५९
ऋक्षलाभिः कपिञ्जलान्	१९९६
ऋक्षीकाभ्यो नैषादं	२१४४
ऋक्षो जतूः सुषिलीका	१९२७
ऋचं वाचं प्र पथे मनो यजुः	१३९२
ऋचा कपोतं नुदत प्रणोदम्	८३२
ऋचो अक्षरे परमे व्योमन्	१३७
ऋजुनीती नो वरुणो	२९
ऋतधीतय आ गत	३५१
ऋतये स्तेनहृदयं	२१९३
ऋतस्यैतानादित्या यजत्रा	१०६६
ऋतस्य वो रथ्यः पूतदक्षान्	४०१
ऋतस्य हि प्रसितिव्यौरु व्यचो	७२४
ऋतुभ्यः स्वाहा	१६३७
ऋते स विन्दते युधः	५२८
ऋभुभ्योऽजिनसन्धः	२२२१
ऋभुर्ऋभुक्षा ऋभुर्विधतो मदः	७४३
ऋभूर्णां भागोऽसि विश्वेषां देवानाम्	८६०
ऋदयो मयूरः सुपर्णस्ते	१९३०
ऋषभाः ककुभे	१७९७
ऋषमाय गवयी	१८८६
ऋषिभ्यः स्वाहा	११३४
एक एवाग्निर्वहृधा समिद्धः	५५६
एकत्रिंशतास्तुवत प्रजाः	१४५५
एकयास्तुवत प्रजा अधीयन्त	१४४०

एकैर्भ्यः स्वाहा	१०२६
एकविंशत्यास्तुवतैकशफाः	१४५०
एकशताय स्वाहा	१७२५
एकः सुपर्णः स समुद्रमा विवेश	७८५
एकस्मै स्वाहा	१७२२
एकादशभिरस्तुवत ऋतवो	१४४५
एकादशर्चैर्भ्यः स्वाहा	१०१४
एकानृचैर्भ्यः स्वाहा	१०१८
एकाष्टका तपसा तप्यमाना	९१३
एकोनविंशतिः स्वाहा	१०२२
एव्यहो	१९२३
एतं शर्धं धाम यस्य सूरः	९३
एतं शंसमिन्द्रास्मयुष्ट्वं कूचित्	७४६
एतं सधस्थाः परि वो ददामि	११५०
एतं जानाथ परमे व्योमन्	१२५१
एतं ते देव सवितर्यज्ञं	८३९
एतं मे स्तोमं तना न सूर्ये	७४७
एता ऐन्द्राभाः १७६८, १८०९, १८१९	
एता धियं कृणवामा सखायो	३१४
एतान्यग्ने नवतिं सहस्रा	१२३२
एतान्यग्ने नवतिर्नव त्वे	१२३१
एता वो वश्म्युद्यता यजत्राः	१६४
एताः शुनासीरायाः	१८२७
एतो न्वय सुध्यो भवाम	३१३
एदं मरुतो अश्विना	२३९
एनाङ्गूपेण वयमिन्द्रवन्तो	५६
एना व्याघ्रं परिषस्वजानाः	११४८
एन्द्रो बर्हिः सीदतु पिन्वतामिळा	५९८
एवश्छन्दो वरिवश्छन्दः	१३४८
एवा कविस्तुवीरवाँ ऋतज्ञा	६९१
एवाग्निं सहस्यं वसिष्ठो	५००
एवा नपातो मम तस्य धीभिः	३९२
एवा नो अग्ने विक्वा दशस्य	५०५
एवा प्लतेः सूनुरवीवृधद् वो	६७५
एष ते देव नेता	३४९
एष ते निरृते भागस्तं जुषस्व	१३२३
एषः स्तोमो मारुतं शर्धो अच्छा	२७३
एषा वः सा सत्या संवागभूद्	१३१७
एषामहमायुधा सं स्यामि	११०९

एह यातु वरुणः सोमो	९५१
ऐन्द्रः प्राणो अङ्गे अङ्गे निदीध्यद्	१२९१
ऐन्द्राग्नः संहितो	२०९२
ऐन्द्रोऽरुणो	२०९०
ऐभिरग्ने दुवो गिरो	४
ऐषु यावापृथिवी धातं महद्	७४५
ओमानमापो मानुषीरमृक्तं	३८४
ओमासश्चर्षणीधृतो	१
ओ श्रुष्टिर्विदध्या समेतु	४८८
ओषधीभ्यः स्वाहा	१६५४, १६६२
औपद्रष्ट्यायानुक्षत्तारं	२१९६
कतमस्मै स्वाहा	१५५३
कथा कविस्तुवीरवान् कया गिरा	६७९
कथा दाशेम नमसा सुदानून्	२५५
कथा देवानां कतमस्य यामनि	६७६
कथा महे रुद्रियाय ब्रवाम	२५०
कदित्था नूः पात्रं देवयतां	६७
कदु प्रियाय धाम्ने मनामहे	३३५
कद् व ऋतस्य धर्णसि	४३
कपृच्छरः कपृथमुद् दधातन	७७४
कपोत उल्लूकः शशस्ते	१२३९
कर्णाभ्यां श्रोत्रं	१९८३
कर्णा यामा	१७४५
कर्मणे ज्याकारं	२१३९
कलविद्धो लोहिताहिः	१८९६
कल्माषा आग्निमास्तुताः	१७५
कविर्नुक्षचा अभि षीमचष्ट	१७५
कश्छन्दसां योगमा वेद धीरः	७९०
कस्मै स्वाहा	१५५१
कामाय पिकः	१२४६
कामाय पूँश्चलम्	२१२१
काय स्वाहा	१५५१
कायास्तूपराः	१८१२
किं सिवद्वनं क उ स वृक्ष आस	५७४
किमङ्ग त्वा ब्रह्मणः सोम गोपां	४११
किमू नु वः कृणवामापरेण	१५३
कीलायाय सुराकारं	२१७९
कुर्वते स्वाहा	१५४९
कुलीका देवजामिभ्यो	१८५४

कुविदङ्ग प्रति यथा चिदस्य नः ६८८	कोष्ठा मायोः १९०१	घृतेन सीता मधुना समज्यतां ८५७
१५१ कूजते स्वाहा १५१८	कवायिः कुटुर्दात्यौहस्ते १२४५	घोषाय मधम् २२५६
१२९१ कूप्याभ्यः स्वाहा १५९८	क्षत्राय राजन्यं २११४	घोषाय स्वाहा १४२४
२०९२ कूर्माञ्छफैः १९९४	क्षिप्रयेनाय वर्तिका १८८७	घ्राताय स्वाहा १५०२
२०९० कूर्माञ्छकीपण्डैः २०५३	क्षुदेभ्यः स्वाहा १०१७, ११२६	चक्रवाकौ मतस्नाभ्यां २०६१
४ कृकवाकुः सावित्रो १९१९	क्षुधे यो गां विक्रन्तन्तं २२५२	चक्षुर्यज्ञेन कलताः स्वाहा १७१२
७४५ कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते १९५१	क्षेमाय विमोक्तारम् २२०७	चक्षुषे मशकान् १८७९
३८४ कृणोमि ते प्राजापत्यम् १०६२	खड्गो वैश्वदेवः १९४७	चक्षुषे स्वाहा १५७६
१ कृताय स्वाहा १५५०	खड्गो वैश्वदेवः विश्वेषां देवानां ८७०	चतुर्दशर्चभ्यः स्वाहा १०१७
४, १६६२ कृतायाऽऽदिनवदर्श २२४६	गणपतये स्वाहा १६७२	चतुर्दशान्ये महिमानो अस्य ७८८
२१९६ कृधी नो अद्भ्यो देव सवितः ७४४	गणश्रिये स्वाहा १६७१	चतुष्कपर्दा युवतिः सुपेशा ७८४
१५५३ कृष्णग्रीव आग्नेयो रराटे १७२९	गणानां त्वा गणपतिः हवामहे १३७९	चत्वार ई विभ्रति क्षेमयन्तो ३३१
गिरा ६७९ कृष्णग्रीवः शितिकक्षो १७५९	गणेभ्यः स्वाहा ११३६	चत्वारो मा मशशारस्य शिश्वः ९६
२५५ कृष्णग्रीवा आग्नेयाः १७५८, १७७३, १८००	गन्धर्वाप्सरसोभ्यो ब्राह्म्यं २१४६	चन्द्रमसे किलासम् २२७८
६७६ कृष्णाजिरत्पाञ्जः १७५२	गन्धाय स्वाहा १५०८	चन्द्रमा अप्सवन्तरा ३८
२५० कृष्णान् वर्षाभ्यो १७८६	गर्म धेहि सिनीवालि ८३८	चन्द्रमा नक्षत्रैरुदकामत् २९५
६७ कृष्णाः पृषन्तस्त्रैयम्बकाः १८२५	गायत्रेण प्रति मिमोते अर्कम् १२२	चन्द्राय स्वाहा १६४१, १६५९, १६७७, २२२१
३३५ कृष्णा बभ्रुनीकाशाः १८२४	गिरा य एता युनजद्वरी त ४६७	चराचरेभ्यः स्वाहा १६६५
४३ कृष्णा भौमा १७७९	गिरीन् प्लाशिभिः २०६३	चाषान् पित्तेन २०५१
७७४ कृष्णा यद् गोष्वरुणीषु सीदद् ६३०	गीताय शैलूषं २१२४	चित्तं मन्याभिः १९८६
१२३९ कृष्णा वारुणाः १८१०	गुहाभ्यः किरातः २२३२	चित्रस्ते भानुः क्रतुप्रा अभिष्टिः ७६२
१९८३ कृष्णाय स्वाहा १९६८	गेहायोपपतिम् २१५४	चित्राण्यज्ञैः २०८०
१७४५ कृष्णो रात्र्याः १९२६	गोधा कालका दार्वाघाटस्ते १९१८	जगता सिन्धुं दिव्यस्तभायद् १२३
२१३९ कृष्णोऽस्याखरेष्ठाऽग्नये त्वा १२७२	गोभिष्ट्वा पात्स्वभो वृषा त्वा ११५५	जनो यो मित्रावरुणावभिष्टुगु ९०
१८९६ हो अद्वा वेद क इह प्र वोचद् १७४	गोषादीर्देवानां पत्नीभ्यः १८५३	जयतामिव तन्यतुः १७
१७६६ हो ददर्श प्रथमं जायमानम् १०२	गौरमीमेदनु वत्सं मिषन्तं १२६	जरां सु गच्छ परि धत्स्व १०४०
१७५ हो नु वां मित्रावरुणावृतायन् २४०	गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षति १३९	जवं जङ्घाभ्याम् १९९७
७९० हो मा ददर्श कतमः स देवो १२०६	ग्लौभिर्गुल्मान् २०६६	जवाय स्वाहा १५३४
१५५२ हो वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ ६६६	ग्रामण्यं गणकमभिकोशकं २२६८	जवायाश्वपं २१७४
१९४६ हो वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ ६६६	ग्रावाणः सोम नो हि कं ४०६	जवो यस्ते वाजिन्निहितो १३१४
२१२१ हो वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ ६६६	ग्रावा वदन्नप रक्षांसि सेधतु ५९७	जहका वैष्णवी १९२८
१५५१ हो वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ ६६६	ग्रावा वदन्नप रक्षांसि सेधतु ५९७	जाग्रते स्वाहा १५१७
१८१२ हो वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ ६६६	ग्रावा वदन्नप रक्षांसि सेधतु ५९७	जानीत स्मैनं परमे व्योमन् ११५१
५७४ हो वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ ६६६	ग्रावा वदन्नप रक्षांसि सेधतु ५९७	जाम्बलेनारण्यम् १९९९
४११ हो वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ ६६६	ग्रावा वदन्नप रक्षांसि सेधतु ५९७	जिह्वाया उत्सादम् १९५८
१५३ हो वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ ६६६	ग्रावा वदन्नप रक्षांसि सेधतु ५९७	जीमूतान् हृदयोपशेन २०५८
२१७९ हो वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ ६६६	ग्रावा वदन्नप रक्षांसि सेधतु ५९७	जुम्बकाय स्वाहा २०८३
१५४९ हो वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ ६६६	ग्रावा वदन्नप रक्षांसि सेधतु ५९७	जमया अत्र वसवो रन्त देवाः ४८३
१८५४ हो वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ ६६६	ग्रावा वदन्नप रक्षांसि सेधतु ५९७	

ज्यायांसमस्य यतुनस्य केतुना ३०१
ज्योतिरसि विश्वरूपं ८४४
ज्योतिर्यज्ञेन कल्पता १७१८
ज्योतिषे स्वाहा १६७८
ज्योतिष्मन्तं केतुमन्तं त्रिचक्रं ५५७
त आदित्या आ गता सर्वतातये ५८,
५९०
त ऊ पु णो महो यजत्राः ६५३
तत् सु नः सविता भगः २३८
तदय वाचः प्रथमं मसोय १२१०
तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने ३३४, ११२०
तदिन्वस्य परिषद्धानो अगमन् ६३९
तद्धि वयं वृणीमहे ७९३
तद्वन्धुः सूरिर्दिवि ते धियंधा ६४४
तनूष्टे वाजिन् तन्वं नयन्ती ६१५
तन्तुना रायस्पोषेण रायस्पोषं १३५१
तच्च इन्द्रस्तद् वरुणस्तदग्निः ६६
तच्च इन्द्रो वरुणो मित्रो अग्निः ४४८
तन्नो अनर्वा सविता वरुणं ३४३
तन्नो देवा यच्छत सुप्रवाचनं ५९१
तन्नो रायः पर्वतास्तत्र आपः ४४६
तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं २२
तन्नोऽहिर्बुध्न्यो अद्भिरकैः ३७६
तपन्ति शत्रुं स्वर्ण भूमा ४४२
तपसे कौलालं २१३३
तपसे शूद्रं २११६
तपसे स्वाहा १६९१, २३०६
तपस्याय स्वाहा १६९२
तप्तायनी मेऽसि वित्तायनी मे १२८५
तप्ताय स्वाहा २३०९
तप्यते स्वाहा २३०७
तप्यमानाय स्वाहा २३०८
उपसे तस्करं २११७
तमीशानं जगत्तस्तस्थुषस्पतिं २३
तं पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः १२४९
तं प्रतनथा पूर्वथा विश्वथेमथा २९४
तवोतिभिः सचमाना आरिष्टा २६७
तां वो देवाः सुमतिमूर्जयन्तीम् २५७
ता अन्तत वयुनं वीरवक्षणं ३३६
ता उभौ चतुरः पदः संप्रसारय १३८०

ता नो रासन् रातिषाचो वसूनि ४४५
तान् पूर्वया निविदा ह्रमहे वयं २१
तान् यजत्रां ऋतावृधः १०
तामस्य रीति परशोरिव प्रति ३३८
तिग्ममेको बिभर्ति हस्त आयुधं ५४३
तिसृभिरस्तुवत ब्रह्मासृज्यत १४४१
तिस्रो दिवतिष्ठः पृथिवीः ११५७
तिस्रो देष्ट्राय निर्ऋतीरुपासते ७८३
तिस्रो मातृस्त्रीन् पितृन् बिभ्रदेकः १०८
तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा १५९५
तीक्ष्णीयांसः परशोरमेः ११०८
तीर्थेभ्य आन्दं २२२९
तीव्रो वो मधुमां अयं १६६
तुजे नस्तने पर्वताः सन्तु २४८
तुभ्यं पयो यत् पितरावनीतां ७१
तुर्यवाह उष्णिहे १७९४
तुलायै वाणिजं २२३७
तृचेभ्यः स्वाहा १०२५
तृतीयेभ्यः शङ्खेभ्यः स्वाहा ११३०
ते अस्मभ्यं शर्म यंसन् ३१
तेगान् दष्ट्राभ्याम् १९५६
ते घा राजानो अमृतस्य मन्त्राः ७३९
तेजसेऽजपालम् २१७७
ते ते देव नेतर्ये ३४६
तेदनीमधरकण्ठेन १९८४
ते न इन्द्रः पृथिवी क्षाम वर्धन् ४०३
ते नः सन्तु युजः सदा ५६०
ते नन्नाध्वं तेऽवत ५५१
ते नूनं नोऽयमृतये ७९४
ते नो अर्वन्तो हवनश्रुतो हवं ६८१
ते नो गोपा अपाच्याः ५३६
ते नो नावमुच्यत ५१०
ते नो मित्रो वरुणो अर्यमायुः २४१
ते नो रायो युमतो वाजवतो ३८८
ते नो रुद्रः सरस्वती सजोषाः ३८९
तेऽवदन् प्रथमा ब्रह्मकित्विषे ७७५
तेऽविन्दन् मनसा दीध्याना ८३६
तेषां हि महा महतामनर्वणां ६९४
ते सीषपन्त जोषमा यजत्राः ५०४

ते हि व्यावापृथिवी भूरिरेतसा ७३१
ते हि व्यावापृथिवी मातरा मही ६८९
ते हि प्रजया अभरन्त विश्रवः ७३०
ते हि यज्ञेषु यज्ञियास ऊमाः ४८४
ते हि श्रेष्ठवर्चसस्त उ नः ४०९
ते हि वसो वसवानाः ३०
त्मना समत्सु हिनेत यज्ञं ४३१
त्रयस्त्रिंशतास्तुवत भूतानि १४५६
त्रयस्त्रिंशद् देवतास्त्रीणि च ११६४
त्रया देवा एकादश ८६५
त्रयोदशभिरस्तुवत मासाः १४४६
त्रयोदशर्चेभ्यः स्वाहा १०१६
त्रयोविंशत्यास्तुवत क्षुद्राः १४५१
त्रायध्वं नो अघविषाभ्यो वधात् ११७८
त्रायन्तामिह देवाः ८१३
त्रितः कृपेऽवहितो ५४
त्रिपाजस्यो वृषभो विश्वरूपः २१६
त्रिरा दिवः सवितर्वीर्याणि २१९
त्रिरा दिवः सविता सोषवीति २२०
त्रिरुत्तमा दूणशा रोचनानि २११
त्रिवत्सा अनुष्टुभे १७९३
त्रिवृदसि त्रिवृते त्वा १२५३
त्रिः सप्त सखा नद्यो महीरथो ६८३
त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं ६१३,
१२६१
त्रीण्येक उरुगायो वि चक्रमे ५४५
त्रीजाकांस्त्रीन्तस्मदांस्त्रीन् ११५८
त्री षष्ठ्या सिन्धवस्त्रिः कवीनाम् ११८
त्रेतायै कल्पिनं २२४७
त्र्यवयो गायत्र्यै १७९०
त्वं सूर्यो हरितो रामयो नृन् ७९
त्वं होता मनुर्हितो १४
त्वं नो अग्ने आग्निभिः ८११
त्वं नो अस्या इन्द्र दुर्हणायाः ८०
त्वमायसं प्रति वर्तयो गोः ७५
त्वमिन्द्र नर्यो याँ अवो नृन् ७८
त्वमिन्द्र स्वयशा ऋमुक्षाः ४७६
त्वमीशिषे पशूनां पार्थिवानां १०९९
त्वष्टा च म इन्द्रश्च मे १४६६
त्वष्टा नो दैव्यं वचः १३९५

७३१	त्वष्टा मे दैव्यं वचः	९३५	देवं वो अय सवितारमेधे	३४०	देवो वनस्पतिर्देवमिन्द्रं	१३८७
६८९	त्वष्टारं वायुमृभवो य ओहते	७०१	देवंदेवं वोऽवसे	५२४	दैवीः षडुर्वारु नः कृणोत	१०४७
७३०	त्वष्टुर्दशमी	१०२६	देवलोकाय पोशितारं	२१८७	दैवीं धियं मनामहे	८४१
४८४	त्वष्ट्र उष्ट्रान्	१८७६	देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपः	२१०	दैव्याय धर्त्रे जौष्ट्रे देवश्रीः	१२५०
४०२	त्वष्ट्रे कौलीकान्	१८५२	देवस्य त्वा सवितुः । अश्विनोः	१३६७	दैव्या होतारा प्रथमा पुरोहित	७१९
३०	त्वष्ट्रे तुरीपाय स्वाहा	१५६७	देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे	१२८७	द्यावा नो अय पृथिवी अनागसो	५८२
४३१	त्वष्ट्रे पुरुषपाय स्वाहा	१५६८	देवस्य त्वा सवितुः । सरस्वत्यै	१३६६	द्यावापृथिवी अनु मा दीधीयां	१०९५
१४५६	त्वष्ट्रे स्वाहा	१५६६	देवस्याहः सवितुः सवे	१३१५	द्यावापृथिवी उर्वन्तरिक्षं	१०९१
११६४	त्वा विशो वृणतां राज्याय	८९७	देवा अमृतेनोदकामंस्तां	१००१	द्यावापृथिवी जनयन्नभि व्रता	७१५
८६५	त्वामय ऋष आर्षेय ऋषीणां	१३७५	देवा आज्यपा जुषाणाः	१२५६	द्यावापृथिवीभ्याः स्वाहा	१६४०,
१४४६	त्वां पूर्व ऋषयो गोभिरायन्	१२३०	देवा इदस्य हविरयमायन्	१२५७	२३२०	
१०१६	त्वाष्ट्रौ लोमशसक्त्यौ सक्त्यो	१७३४	देवा एतस्यामवदन्त पूर्वे	७७८	द्यावापृथिवीयः कूर्मः	१९१६
१४५१	दक्षस्य वादिते जन्मनि व्रते	६८०	देवाः कपोत इषितो यदिच्छन्	८२८	द्यावापृथिवी वर्तमान्यां	१९६५
११७८	दक्षिणायै दिशे स्वाहा	१५८२	देवा गातुविदो गातुं	१२३६	द्यावापृथिव्योर्दक्षिणं पार्श्वं	२०३०
८१३	दक्षिणां वः प्रथममश्विनोषसम्	५०६	देवा ददत्वासुरं तद् वो अस्तु	११९८	द्यौर्मै पिता जनिता नाभिरत्र	१३१
५४	दक्षिकामग्निमुषसं च देवीं	१६९	देवा देवानां भिषजा	१२५४	द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः	८७५
२१६	रमूनसो अपसो ये सुहस्ताः	२७०	देवानां युगे प्रथमे	१२१४	द्यौश्च नः पृथिवी च प्रचेतसः	५२५
२१९	रा क्षिणो युजते बाहू अद्रिं	२८०	देवानां समिदसि	१२४४	द्यौश्च म इदं पृथिवी च प्रचेतसौ	११७९
२२०	राशर्चभ्यः स्वाहा	१०१३	देवानां दूतः पुरुष प्रसूतो	१८८	द्यौश्च म इन्द्रश्च मे	१४७१
२११	दिरभ्यः स्वाहा	१६२८, २२९०	देवानां निहितं निधि यमिन्द्रो	११६३	द्यौश्च मे	१४८४
१७९३	दिरभ्यो नकुलान्	१८६५	देवानां नु वयं जाना	१२१२	द्यौष्ट्वा पिता पृथिवी माता	११००
१२५३	देतिश्च मे	१४८३	देवान् दिवमगन् यज्ञस्ततो मा	१२४६	द्यौष्पितः पृथिवि मातरधृग्	३९७
६८३	दित्यवाहो जगत्यै	१७९२	देवान् वसिष्ठो अमृतान् ववन्दे	७०६	द्वादशर्चभ्यः स्वाहा	१०१५
६१३	देवं वृक्षाभ्यां	२०६२	देवान् हुवे बृहन्वृषसः स्वस्तये	७०७	द्वादशारं नहि तज्जराय	१०९
५४५	दिवक्षसो अग्निजिह्वा ऋतावृधः	६९८	देवानामसि वह्निमयः	१२३४	द्वापरायाधिकल्पिनम्	२२४८
११५८	दिवस्पृथिव्योरव आ वृणीमहे	५८१	देवानामिदवो महत्	५५९	द्वाभ्याः स्वाहा	१७२३
२१८	देवा पतयते स्वाहा	१६८०	देवानामुत्क्रमणमसि	१२४२	द्वाभ्यः सामः	२१६५
२२४७	देविस्पृशं यज्ञमस्माकमश्विना	५९९	देवानां पत्नीरुशतीरवन्तु नः	३२६	द्वाविमौ वातौ वातः	८१०
१७९०	देवे कशान्	१८६४	देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां	२०	द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया	११८
७९	देवे खलतिः	२२७५	देवाः पितरः पितरो देवाः	११५२	द्वितीयेभ्यः शङ्खेभ्यः स्वाहा	११२९
१४	देवे चक्षुषे नक्षत्रेभ्यः	११७२	देवा यज्ञमतन्वत भेषजं	१२५२	द्विधा सूनवोऽसुरं स्वर्दिदम्	६१९
८११	देवे स्वाहा	१६२७, १६५७, २२८८	देवासो हि ष्मा मनवे समन्यवो	५२५	द्विमाता होता विदथेषु सम्राड्	१९८
८०	देवो मादित्या रक्षन्तु	९७१, ११६९	देवास्त्वा मन्थिपाः प्रणयन्तु	१२४०	द्विरूपा अग्नीषोमीया	१७६९
७५	दिशश्च म इन्द्रश्च मे	१४७४	देवास्त्वा शुक्रपाः प्रणयन्तु	१२३२	द्यौर्दिवा दिव ऋभवः सुहस्ता	७१६
७८	दिशां कङ्को	१८९४	देवीः षडुर्वारु नः कृणोत	८०४	धर्माय सभाचरं	२१२५
४७६	दिशां जत्रवो	२०५६	देवेभ्यस्त्वा देवाव्यं यज्ञस्य	१२४१	धाता च म इन्द्रश्च मे	१४६५
१०९९	दिशाय रज्जुसर्जं	२१४०	देवेभ्यस्त्वा मरीचिपेभ्यः	१२३८	धाता धातृणां भुवनस्य यस्पतिः	८०६
१४६६	दिशाय चरकाचार्यं	२२५३	देवैर्नो देव्यदितिर्नि पातु	६३, २३५	धाता रातिः सवितेर्दं जुषन्ताम्	९०३
१३९५	दि चित् सन्तमरुषास इन्द्रम्	८९२	देवो भगः सविता रायो अंशः	२६४	धातुर्दशमी	२०१३
	२६ दै. (विश्वे देवाः)				धामच्छदमिरिन्द्रो ब्रह्मा	८६४

धार्याभ्यः स्वाहा १६००
 धावते स्वाहा १५२७
 धियं वो अप्सु दधिषे स्वर्षा ३१९
 धिये समञ्चिना प्रावतं न ९३७
 धुङ्क्वा आग्नेयी १८९५
 धूमाय स्वाहा १६०५
 धूम्रा आन्तरिक्षा १७८०
 धूम्रान् वसन्तायालभते १७८४
 धूम्रा बभ्रुनीकाशाः १८२२
 धृतव्रता आदित्या इषिरा १५१
 धृतव्रताः क्षत्रिया यज्ञनिष्कृतो ७१४
 धेनवोऽतिच्छन्दसे १७९९
 धैर्याय तक्षाणम् २१३२
 नक्षत्रमुल्काभिहतं शमस्तु नः १०७७
 नक्षत्राणि च म इन्द्रश्च मे १४७३
 नक्षत्राणि रूपेण २०८१
 नक्षत्रिभ्यः स्वाहा १६३३
 नक्षत्रेभ्यः किर्मिरं २२७७
 नक्षत्रेभ्यः स्वाहा १६३२, १६६०, २२९२
 नक्षत्रवमरुणीः पूर्व्यं राट् ६९
 नड्वलाभ्यः शौक्लं २२२६
 न तमहो न दुरितं ७९२
 न तद् दिवा न पृथिव्यानु मन्ये ४०९
 न ता मिनन्ति मायिनो न धीराः २१४
 नदीभ्यः पौञ्छिष्ठम् २१४३
 न बहवा समशक्नु ८८५
 नभ उदयेण २०६०
 नभसे स्वाहा १६८५
 नभस्याय स्वाहा १६८६
 नभोरुपाः पार्जन्याः १७४७, १७६२
 नम इदुयं नम आ विवासे ४००
 नमो दिवे बृहते रोदसीभ्यां १२६४
 नमो देवेभ्यः १२३५
 नमो महद्भ्यो अर्भकेभ्यो नमो ११९९
 नमो वः पितरो रसाय १२७७
 नमोऽस्तु ते निर्ऋते तिमतेजो ११८२
 नरा वा शंसं पूषणमगोह्यम् ६७८
 नराशंसं वाजिनं वाजयज्ञिह ६०
 नरिष्ठायै भीमलं २१२६

नर्माय पुंश्चल २२६५
 नर्माय रेभ २१२७
 नवदशभिरस्तुवत शूद्रायौ १४४९
 नवभिरस्तुवत पितरोऽसृज्यन्त १४४४
 नवर्चेभ्यः स्वाहा १०१२
 नवविंशत्यास्तुवत वनस्पतयो १४५४
 न वि जानामि यदिवेदमस्मि १३५
 न वो गुहा चक्रम भूरि दुष्कृतं ७५७
 नव्यं तदुक्थ्यं हितं ४९
 न हि वो अस्यर्भको ५४९
 नाके राजन् प्रति तिष्ठ तत्र ११५४
 नाको मकरः कुलीपयः १९२१
 नाना चक्राते यम्या वपूषि २०२
 नाभ्यै स्वाहा २२९५
 नारकाय वीरहणं २११८
 नावा न क्षोदः प्रदिशः पृथिव्याः ६२०
 नासत्या मे पितरा बन्धुपृच्छा १८५
 नित्यश्चाकन्यात् स्वपतिदेमूना ५७१
 निमेषाय स्वाहा १५४५
 निराहोवान् कृणोतन ७६७
 निर्ऋतिं निर्जर्जयेन १९८८
 निर्ऋत्यै कोशकारी २२११
 निर्ऋत्यै पञ्चमी २०२१
 निर्ऋत्यै परिविविदानम् २१५६
 निविष्टाय स्वाहा १५१०
 नि वेवेति पलितो दूत आसु २००
 निवेष्ट्यं मुष्मि १९७९
 निषण्णाय स्वाहा १५३२
 निष्कृत्यै पेशस्कारी २१५८
 निष्कृत्यै स्वाहा २३११
 निष्पिध्वरीस्त ओषधीरुतापो २१३
 नीचैः पयन्तामधरे भवन्तु ११०७
 नीलज्ञोः कृमिः १८८८
 नीलनखेभ्यः स्वाहा ११२४
 नीहारसूम्णणा २०७५
 नीहाराय स्वाहा १६२१
 नू देवासो वरिवः कर्तना नो ५०७
 नू नोरयिं रथ्यं चर्षणिप्रां ३७७
 नू म आ वाचमुप याहि विद्वान् ३६२

नू रोदसी अभिष्टुते वसिष्ठैः ४८७
 नू रोदसी अहिना बुध्यन्ते २३४
 नू सन्नानं दिव्यं नंशि देवाः ४०४
 नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा ६६४
 नृत्ताय सूतं २१२३
 नेतार ऊ पु णस्तिरो ७९७
 नैतावदेना परो अन्यदस्ति ५७५
 पञ्च जना मम होत्रं जुषन्तां १२११
 पञ्चदशभिरस्तुवत क्षत्रम् १४४७
 पञ्चदशर्चेभ्यः स्वाहा १०१८
 पञ्चपादं पितरं द्वादशाकृति ११०
 पञ्चभिरस्तुवत भूतान्यसृज्यन्त १४४२
 पञ्चर्चेभ्यः स्वाहा १००८
 पञ्चारे चक्रे परिवर्तमाने १११
 पञ्चावयस्त्रिष्टुभे १७९१
 पञ्चविंशत्यास्तुवतारण्याः १४५२
 पत्नीव पूर्वहृतिं वावृध्या ८३
 पथ एकः पीपाय तस्करो ५४४
 पथस्पथः परिपतिं वचस्या ३७०
 पथ्या रेवतीर्बहुधा विरूपाः ९०१
 पदे इव निहिते दस्मे अन्तः २०६
 पदेपदे मे जरिमा नि धायि २५४
 पद्या वस्ते पुरुषा वपूषि २०५
 पन्यान् भूभ्यां १९६४
 परः सो अस्तु तन्वा तना च १२०३
 परमेष्ठ्यभिधीतः प्रजापतिः १३०८
 परावतो ये दिधिषन्त आप्यं ६६१
 परिक्षिता पितरा पूर्वजावरी ६९९
 परि चिन्मर्तो द्रविणं ममन्याद् ५६९
 परि दद्य इन्द्रस्य बाहू २६१
 परि धत्त धत्त नो वर्चसेमं १०३९
 परिह्वेभ्यः स्वाहा १६६४
 परिवत्सरायाविजाताम् २२१६
 परीदं वासो अधिथाः स्वस्तये १०४१
 परीमं सोममायुषे महे १०३८
 परीममिन्द्रमायुषे महे १०३७
 परीमं गामनेषत ८२१
 पर्जन्यवाता वृषभा पृथिव्या ३६८
 पर्जन्याय मण्डूकान् १८३७

४८७	पर्जन्यावाता वृषभा पुरीषिणा	७००	पूर्वो देवा भवतु सुन्वतो रथो	१२०१	प्रजापतिर्मा प्रजननवान्त्सह	९८०
२३४	पर्यायिकेभ्यः स्वाहा	११२७	पूषणं वनिष्ठुना	२०४३	प्रज्ञानाय नक्षत्रदर्शम्	२१६९
४०४	पर्वतेभ्यः किम्पूरुषम्	२२३४	पूषणं दोर्भ्याम्	२००१	प्र तद् दुःशीमे पृथ्वाने वेने	७४९
६६४	पवमानः पुनातु मा कृत्वे	११७४	पूषा च म इन्द्रश्च मे	१४६१	प्र तव्यसो नमउक्तिं तुरस्य	२८५
२१२३	पवित्राय भिषजं	२१६८	पूषा पञ्चाक्षरेण पञ्च दिशः	१३२०	प्रति नः स्तोमं त्वष्टा जुषेत	४४४
७९७	पवित्रे स्थो वैष्णव्यो सवितुर्वः	१२७०	पूषा विष्णुर्हवनं मे सरस्वति	५५४	प्रतिपदसि प्रतिपदे त्वा	१३५२
५७५	पश्वादोषाय ग्लाविनं	२२२८	पूषे नरन्धिषाय स्वाहा	१५६५	प्रति प्रयाणमधुरस्य विद्वान्	३४१
१२११	पश्वा यत् पश्वा विद्युता बुधन्त	६३८	पूषे प्रपथ्याय स्वाहा	१५६४	प्रति मे स्तोममदितिर्गृभ्यात्	२६१
१४४७	पृष्ठवाहो विराजः	१७९५	पूषे स्वाहा	१४२१, १५६३	प्रतिश्रुत्काया अर्तनं	२२५५
१०१८	पाकः पृच्छामि मनसाविजानन्	१०३	पूषो नवमी	२०२५	प्रतिश्रुत्कायै चक्रवाकः	१९०४
११०	पातं न इन्द्रापूर्णा	९३२	पृच्छामि त्वा परमन्तं पृथिव्याः	१३२	प्रतीच्यै दिशे स्वाहा	१५८४
१४४२	पातां नो देवाधिना शुभरुपती	९३४	पृथक्सहस्राभ्यां स्वाहा	११३९	प्रत्यञ्चमर्कमनयञ्चर्चाभिः	८२७
१००८	पातां नो द्यावापृथिवी अभिष्टये	९३३	पृथिवी च म इन्द्रश्च मे	१४६९	प्रथमभाजं यशसं वयोधां	३७१
१११	पाप्मने क्लीवम्	२११९	पृथिवी च मे	१४८१	प्रथमा ह व्युवास सा धेनुः	९०८
१७९१	पाप्मने सैलगम्	२२५४	पृथिवी छन्दोऽन्तरिक्षं छन्दो	१३४२	प्रथमेभ्यः स्वाहा	११२८
१४५२	पाराय मार्गारम्	२२२७	पृथिवी त्वचा	२०८२	प्रथश्च यस्य सप्रथश्च नाम	८३४
८३	पार्या इक्षवः	१९७२	पृथिवी शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः	१०८२	प्रथिष्ट यस्य वीरकर्ममिष्टद्व	६३१
५४४	पार्याणि पक्षमाणि	१९६९	पृथिव्यै पीठसर्पिणं	२२७२	प्रदरान् पायुना	१०५२
३००	पार्थं विधेष्वां देवानामुत्तरम्	८७१	पृथिव्यै श्रोत्राय वनस्पतिभ्यो	११७०	प्र नः पूषा चरयं विश्वदेव्यो	७३३
९०१	पावीरवी कन्या चित्रायुः	३६९	पृथिव्यै स्वाहा १६२५, १६५५, २२८४		प्र नु यदेषां महिना चिकित्ते	१४८
२०६	पावीरवी तन्यतुरेकपादजो	७०४	पृथ्व्यो मारुताः	१८०५, १८११	प्र नो यच्छत्वर्थमा	८१७
२५४	पिता यत् स्वां दुहितरमधिष्कन्	६३३	पृथ्विस्तिरश्चीनपृथ्विः	१७४८	प्र परत्यामदिति सिन्धुमर्कैः	२३१
२०५	पिद्वो न्यङ्कः कक्कटस्ते	१९०३	पृथ्वी क्षुद्रपृथ्वी स्थूलपृथ्वी	१७४२	प्रप्रोथाय स्वाहा	१५०७
१९६४	पिपर्तु मा तदृतस्य प्रवाचनं	५८७	पृथ्वी हेमन्ताय	१७८८	प्रबुद्धाय स्वाहा	१५१९
१२०३	पिशङ्गाञ्छिशिराय	१७८९	पृथ्वी मरुतः पृथ्वीमातरः	२५	प्र ब्रह्माणो अङ्गिरसो नक्षन्त	४९५
१३०८	पिशोचेभ्यो विदलकारी	२१५१	पृष्ठं यज्ञेन कल्पताः स्वाहा	१७२०	प्र ब्रह्मैतु सदानादृतस्य	४६४
६६१	पुनः प्राणः पुनरात्मा न ऐतु	११८०	पौष्णः श्यामः	२०८७	प्रभाया अग्न्येधं	११८४
६९९	पुनन्तु मा देवजनाः	११७३	पौष्णौ रजतनाभी	२०९७	प्र भ्रातृत्वं सुदानवो	५६६
५६९	पुनर्दाय ब्रह्मजायां	७८१	प्रकासाय रजयित्रीम्	२१९२	प्रमदे कुमारीपुत्रं	२१३०
२६१	पुनर्नः पितरो मनो	६२५	प्रकामोद्यायोपसदं	२१६०	प्र मा युयुजे प्रयुजो जनानां	५७९
१०३९	पुनर्वै देवा अद्दुः	७८०	प्रकाशेनान्तरम्	१९७७	प्रमुञ्चन्तो भुवनस्य रेतो	८८८
१६६४	पुमांसं पुत्रं जनय	१९६०	प्रजा रेतसा	२०५०	प्रमुदे वामनं	२१६४
२२१६	पुरा यत् सूरस्तमसो अपातेः	७६	प्रजानन्तः प्रति गृह्णन्तु पूर्वं	८९१	प्र मे विविक्वाँ अविदन्मनीषां	२२३
१०४१	पुरुषमृगश्चन्द्रमसो	१९१७	प्रजापतये च वायवे च	१८८१	प्र यज्ञ एतु हेत्वो न साप्तिः	५०२
१०३८	पुरुषव्याघ्राय दुर्मदं	२१४५	प्रजापतये त्वा जुष्टं प्रोक्षामि	१४८६	प्र याः सिंखते सूर्यस्य रश्मिभिः	५८४
१०३७	पुष्करसादस्ते त्वाष्ट्रा	१८९७	प्रजापतये पुरुषान् हस्तिनः	१८७७	प्रयाजान् मे अनुयाजान् केवलान्	१२०९
८२१	पुष्ट्यै गोपालं	२१७५	प्रजापतये स्वाहा	१७०५	प्रयुग्म्य उन्मत्तः	२१४७
३६८	पुष्ट्यैभ्यः स्वाहा	१६५२	प्रजापतिं ते प्रजननवन्तमृच्छन्तु	९९०	प्रयुजती दिव एति ब्रुवाणा	३२८
१८३७	पुष्ट्याय स्वाहा	२२२६	प्रजापतिः प्रजाभिरुदकामत्	१००२	प्र ये धामानि पूर्याण्यर्चान्	२३०

२६* दै० [विश्वे देवाः]

प्र ये वसुभ्य ईवदा नमो दुः	३४४
प्र रुद्रेण ययिना यन्ति सिन्धवः	७२५
प्र व एको मिमय भूर्यागो	१५५
प्र व एते सुयुजो यामज्ञिष्ठये	२९७
प्र वः पान्तं रघुमन्यवोऽन्धो	८२
प्र वः शोसाम्यद्बुधः	५२६
प्र वायुमच्छा बृहती मनीषा	३६६
प्र वावृजे सुप्रया बहिरेषाम्	४८२
प्र वीराय प्र तवसे तुराय	३७३
प्र वो भ्रियन्त इन्दवो	७
प्र वो महीमरमतिं कृणुध्वं	४७१
प्र वो यज्ञेषु देवयन्तो अर्चन्	५०१
प्र वो रयिं युक्ताश्वं भरध्वं	२४४
प्र वो वायुं रथयुजं कृणुध्वं	२४५
प्र वो वायुं रथयुजं पुरंधिं	६८२
प्र शंतमा वरुणं दीधिति गीः	२६०
प्र शुक्रैतु देवी मनीषा	४२६
प्र सक्ष्णो दिव्यः कण्वहोता	२४३
प्र स क्षयं तिरते वि महीरिषो	५२७
प्रसवाय स्वाहा	१६९५
प्र स विश्वेभिरग्निभिः	१४०३
प्र सुष्टुतिः स्तनयन्तं स्वन्तम्	२७२
प्र सू न एत्वध्वरो	५१४
प्र सू महे सुशरणाय मेधां	२७१
प्राच्यै दिशे स्वाहा	१५८०
प्राजापत्यश्चरः	२१०९
प्राजापत्याभ्यां स्वाहा	१०३२
प्राणश्च मे	१४७९
प्राणाय मे वर्चोदा वर्चसे	१३०२
प्राणाय स्वाहा	१५७३
प्राणाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा	१३७८
प्राणायान्तरिक्षाय वयोभ्यो	११७१
प्राणेनाग्निं सं सृजति वातः	११६१
प्राणो यज्ञेन कल्पताः स्वाहा	१७०७
प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे	४९४
प्रायणाय स्वाहा	१५२५
प्रायश्चित्त्यै स्वाहा	२३१२
प्रायासाय स्वाहा	२२९८
प्राशस्त्य माहेन्द्रा	१८२०

प्रियाय प्रियवादिनम्	२१९९
प्रीणीताश्चान् हितं जयाथ	७६२
प्रुणते स्वाहा	१६१७
प्रुष्वा अश्रुभिः	२०७७
प्रुष्वाभ्यः स्वाहा	१६१९
प्रेतं पादौ प्र स्फुरतं	८८६
प्रेता जयता नर उग्रा वः	११११
प्रेष्ठं वो अतिथिं गृणीषे	१४२
प्रेहि प्रेहि पथिभिः पूर्येभिः	१२६७
प्रेतु ब्रह्मणस्पतिः प्र देव्येतु	१२६३
प्रेषः स्तोमः पृथिवीमन्तरिक्षं	२७४
प्रो अश्विनाववसे कृणुध्वं	१४२
प्रोतये वरुणं मित्रमिन्द्रं	३६१
प्रोथते स्वाहा	१५०६
प्रोह्यमाणः सोम आगतो	१३१०
प्लवो मद्रुर्मत्स्यस्ते नदीपतये	१९१५
प्लीहाकर्णः शुण्ठाकर्णौ	१७५०
फलेभ्यः स्वाहा	१६५३
फलगूलोहितोर्णी पलक्षी	१७४९
बलस्य नीथा वि पणेश्च मन्महे	७२३
वभ्रवः सौम्याः	१७७४, १८०१
वभ्रवो धूम्रनीकाशाः	१८२३
वभ्रुकानवान्तरदिशाभ्यः	१८६६
वभ्रुररुणवभ्रुः शुक्रवभ्रुः	१७३२
वभ्रुरेको विष्णुण सूनरो	५३९
वभ्रुः सौम्यः	२०८६
बलं कुष्टाभ्याम्	२०४२
बलाय स्वाहा	१५३५
बलायाजगरो	१९३७
बलायानुचरं	२१२७
बलायोपदाम्	२१६२
बहुरूपा वैश्वकर्मणाः	१८२१
बहुरूपा वैश्वदेवाः	१८०६
बीभत्सायै पौलकसं	२२३५
बृहद् वयो बृहते तुभ्यमग्ने	२९१
बृहन्तो दिव्याः	१७८१
बृहस्पतये गवयान्	१८७५
बृहस्पतये पाङ्क्ताय	२१०७
बृहस्पतये वाचस्पतये	१९१३

बृहस्पतये स्वाहा	१४२२, १४९९
बृहस्पतिः शकुनिसादेन	१९९३
बृहस्पतिनावसृष्टां । तेजो गोषु	११९१
बृहस्पतिनावसृष्टां । पयो गोषु	११९४
बृहस्पतिनावसृष्टां । भगो गोषु	११९२
बृहस्पतिनावसृष्टां । यशो गोषु	११९३
बृहस्पतिनावसृष्टां । रसो गोषु	११९५
बृहस्पतिनावसृष्टां । वर्चो गोषु	११९०
बृहस्पतिं ते विश्वदेववन्तमृच्छन्तु	९९१
बृहस्पतिर्मा विश्वेदेवैरुध्वियाः	९८१
बृहस्पतिश्च म इन्द्रश्च मे	१४६२
बृहस्पते प्रति मे देवतामिहि	१२२२
बृहस्पतेरष्टमी	२०११
बृहस्पते वाजं जय बृहस्पतये	१३१६
बृहस्पते सदमिन्नः सुगं कृधि	६१
ब्रध्नस्य विष्टपायाभिषेक्तारं	२१८५
ब्रह्म गामश्वं जनयन्त ओषधीः	७०२
ब्रह्मचारी चरति वेविषद् विषः	७७९
ब्रह्मज्येष्ठा संभृता वीर्याणि	११४१
ब्रह्मणस्पतिरेता सं कर्मारः	१२१३
ब्रह्मणे ब्राह्मणं	२११३
ब्रह्मणे स्वाहा १०३५, ११४०, २३१७	
ब्रह्म प्रजापतिर्धाता लोका	१०८०
ब्रह्म ब्रह्मचारिभिरुदकामव	९९९
ब्रह्महत्यायै स्वाहा	२३१८
ब्रह्मा कृणोति वरुणो	५१
ब्रह्मा यज्ञेन कल्पताः स्वाहा	१७१७
ब्राह्मणमय विदेयं पितृमन्तं	१३०५
ब्राह्मणासः पितरः सोम्यासः	१३८८
भगाय स्वाहा	१४२७
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः	२६
भद्राय गृहपते	२१८०
भराय सु भरत भागमृत्वियं	७५१
भरोष्विन्द्रं सुहवं हवामहे	६६९
भर्गो ह नामोत यस्य देवाः	६४०
भायै दार्वारहारम्	२१८३
भुज्युमंहसः पिपृथो निरश्विना	७०३
भुवनस्य पतये स्वाहा १४१५, १७०३	
भुवनस्य पितरं गीर्भिराभिः	३७१

२, १४९९	भूतो भूतेषु पय आ दधाति	११४२	मरुताः सप्तमी	२०१०	मा वः प्राणं मा वोऽपानं	११६०
१९९३	भूत्ये जागरणम्	२२४०	मरुताः स्कन्धा	२०३२	मासां कश्यपो	१९३२
गोषु ११९१	भूमिर्मातादितिर्नो जनित्रं	११८८	मरुत्वतो अप्रतीतस्य जिष्णोः	२३५	मा सा ते अस्मत् सुमतिर्वि	८१
गोषु ११९४	भूमे परिष्कन्दं	२१९८	मरुद्भ्यः क्रीडिभ्यः	१८१६	मासेभ्यः स्वाहा	१६३६
गोषु ११९२	भूम्या अन्तं पर्येके चरन्ति	७३१	मरुद्भ्यः सान्तपनेभ्यः	१८१४	मासेभ्यो दाल्यौहान्	१८५९
गोषु ११९३	भूम्या आखूनालभते	१८६२	मरुद्भ्यः स्वतवद्भ्यो	१८१७	माहं मघोनो वरुण प्रियस्य	१५७
गोषु ११९५	भूर्जज्ञ उत्तानपदो	१२१५	मरुद्भ्यः स्वाहा	१६४७	मित्रः पृथिव्योदकामत्	९२२
गोषु ११९०	भूर्भुवः स्वयैरिव भूम्ना	१२७८	मरुद्भ्यो गृहमेधिभ्यो	१८१५	मित्रश्च म इन्द्रश्च मे	१४६३
छन्दु ९९१	मेषजाय स्वाहा	२३१३	मरुद्भ्यो वैश्यं	२११५	मित्रश्च वरुणश्चेन्द्रो रुद्रश्च	१११४
९८१	मक्षू कनायाः सख्यं नवग्वा	६३६	मर्मणि ते वर्मणा छादयामि	११४९	मित्रस्तजो वरुणो रोदसी च	४८९
१४६२	मक्षू कनायाः सख्यं नवीयो	६३७	मर्यादायै प्रश्रविवाकम्	२१७२	मित्रस्य तृतीया	२०१२
१२२२	मक्षू न वहिः प्रजाया उपचिदः	६३५	मलिम्लुचाय स्वाहा	१६७९	मित्राय कुलीपयान्	१८३२
२०११	मङ्गलिकेभ्यः स्वाहा	१०३४	मशकान् कैशैः	१९९१	मित्राय गौरान्	१८७३
१३१६	मण्डूको मूषिका तित्तिरस्ते	१९२४	महत्काण्डाय स्वाहा	१०२४	मित्राय मदगून्	१८४४
६१	मधवे स्वाहा	१६८१	महत् तद् वः कवयश्चारु नाम	१८६	मित्राय शिक्ष वरुणाय दाशुषे	६२६
२१८५	मधु नक्तमुतोषसो	३५	महदय महतामा वृणीमहे	६०४	मित्राय स्वाहा	१५००
मीः ७०१	मधुमतीर्न इषस्कृधि यत् ते	१२२५	महसे वीणावादं	२२६०	मित्रावरुणाभ्यां कपोतान्	१८५०
मेषः ७७९	मधुमात्रो वनस्पतिः	३६	महागणेभ्यः स्वाहा	११३७	मित्रावरुणाभ्यां त्वा देवाव्यं	१३०१
११४१	मधु वाता ऋतायते	३४	महि द्यावापृथिवी भूतमुर्वी	७३६	मित्रावरुणाभ्यामानुष्टुभाभ्यां	२१०६
१११३	मध्या यत् कर्त्तव्यमभवदभीके	६३२	महि महे दिवे अर्चा पृथिव्यै	१७१	मित्रावरुणावरुणाभ्याम्	२०४०
२११३	मनसा होमैर्हरसा धृतेन	११७७	महिम्न एषां पितरश्चनेशिरे	६१७	मित्रो नवाक्षरेण त्रिवृतः	१३२१
०, २३१७	मनसे स्वाहा	१५७९	मही समैरचम्व्वा समीची	२११	मिष्यक्ष येषु रोदसी नु देवी	३८२
१०८०	मनस्त आप्यायतां वाक्	१२८८	महो अग्नेः समिधानस्य शर्मणि	६०५	मुग्धाय वैनः शिनाय स्वाहा	१४१२
९९९	मनुष्यराजाय मर्कटः	१८८४	मह्यं यजन्तां मम यानीष्टा	१७४५	मूर्धा वयः प्रजापतिश्छन्दः	१३३८
२३१८	मनुष्यलोकाय प्रकरितारः	२१८८	मह्यं यजन्तु मम यानि हव्या	८०३	मूर्ध्ने स्वाहा	१६९९
५१	मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य	८४०	मागधः पुँश्चली कितवः	२२८२	मूलेभ्यः स्वाहा	१६४९
१७१७	मनो न येषु हवनेषु तिग्मं	६२९	मा छन्दः प्रमा छन्दः प्रतिमा छन्दः	१३४१	मृत्यवे गोव्यच्छम्	२२५०
१३०५	मनो न्वा हुवामहे	६२३	माता च यत्र दुहिता च धेनू	२०३	मृत्यवे मृगयुम्	२१४१
१३८८	मनो यज्ञेन कल्पताः स्वाहा	१७१५	माता पितरमृत आ बभाज	१०६	मृत्यवेऽसितः	१९३४
१४२७	मन्दामहे दशतयस्य धासेः	९४	मतुष्पदे परमे शुक्र आयोः	२९०	मृत्यवे स्वाहा	२३१६
२६	मन्द्रा कृणुध्वं धिय आ तनुध्वं	७६४	मात्र वृषज्ञाष्टण इरस्यो	४९३	मदं बस्वैः	१९५५
२१८०	मन्यवेऽयस्तापं	२२०३	माधवाय स्वाहा	१६८२	मेधाय स्वाहा	१६०७
७५१	ममत्तु नः परिज्मा वसर्हा	८४	मा नो विदन् विव्याधिनो	१०५२	मेदस्वता यजमानाः	१०६७
६६९	मम देवा विहवे सन्तु सर्वे	८०१, १०४४	मा नो वृकाय वृक्ये समस्मा	३९८	मेधां मे वरुणो ददातु	१३८९
६४०	ममाग्ने वचो विहवेष्वास्तु	८००	मां देवा दधिरे हव्यवाहम्	६११	मेधाय वासः पत्पूली	२१९१
२१८३	मयि देवा द्रविणमा यजन्तां	८०२, १०४६	मा प्र गाम पथो वयं	६२१	मेधायै रथकारं	२१३१
७०३	मयुः प्राजापत्यः	१८९१	मायायै कर्मारः	२१३४	मो षु देवा अदः खः	४०
१७०३	मरीचिर्विप्रुडभिः	२०७४	मारुतः कल्माषः	२०९१, २०९९	मो षू णो अत्र जुहुरन्त देवाः	१२३
३७१	मारुतश्च म इन्द्रश्च मे	१४६७	मा व एनो अन्यकृतं भुजेम	३९९	य ई चकार न सो अस्य वेद	१३०

य ईश्वरे भुवनस्य प्रचेतसो	६६८
य ईशे पशुपतिः पशूनां	८८७
य उदाजन पितरो गोमयं वसु	६५५
य ऋतेन सूर्यमारोहयन् दिवि	६५६
य ओहते रक्षसो देववीतौ	२६९
यः सपत्नो योऽसपत्नो	१०५५
यन्मलमलौ भवति यन्नदीषु	५०८
यजन्ते अस्य सख्यं वयश्च	४६८
यज्ञं च नस्तन्वं च प्रजां च	८२४
यज्ञं पृच्छाम्यवमं	४१
यज्ञस्य वो रथ्यं विश्वपतिं विशां	७२१
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः	१२०२
यज्ञेयज्ञे स मर्यो	७३७
यज्ञो दक्षिणाभिरुदकामत्	९२७
यज्ञो देवानां प्रत्येति सुमन्	६४
यज्ञो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा	१७२१
यते स्वाहा	१५२६
यत् किं चासौ मनसा यच्च	९६२
यत् ते तन्मृष्यन्त देवाः	१००५
यत् ते देवी निर्ऋतिरावबन्ध	११८१
यत् ते वचो जातवेदो	१११६
यत् पिबति तस्मै स्वाहा	१५४७
यत् पुरुषेण हविषा देवाः	१२५८
यत्र बाणाः सम्पतन्ति	१३६४
यत्र ब्रह्मविदो० । आपो मा तत्र	१०८९
यत्र ब्रह्मविदो० । इन्द्रो मा तत्र	१०८८
यत्र ब्रह्मविदो० । चन्द्रो मा तत्र	१०८६
यत्र ब्रह्मविदो० । ब्रह्मा मा तत्र	१०९०
यत्र ब्रह्मविदो यान्ति	१०८३
यत्र ब्रह्मविदो० । वायुर्मा तत्र	१०८४
यत्र ब्रह्मविदो० । सूर्यो मा तत्र	१०८५
यत्र ब्रह्मविदो० । सोमो मा तत्र	१०८७
यत्र वह्निरभिहितो	३४८
यत्रा सुपर्णा अमृतस्य भागम्	११९
यत्रा सुहार्दः सुकृतो मदन्ति	११८९
यथाखरो मघवंश्चरुरे प्रियो	११०२
यथादित्या वसुभिः संबभूवुः	९५६
यथा वशन्ति देवास्तथेदसत्	५३७
यथा ह त्वद् वसवो गौर्यं चित्	७९९

यथेन्द्र उद्गाचनं लब्ध्वा	९३०
यथेसां वाचं कल्याणोमावदानि	१३८५
यदात्ति तस्मै स्वाहा	१५४६
यदथ सूर उदिते	५३२
यदथ सूर्य उद्यति	५३०
यदन्तरिक्षं पृथिवीमुत यां	११८७
यदन्यासु वृषभो रोरवीति	२०८
यदसावमुतो देवाः	९२५
यदापो अधन्या इति वरुणेति	१३७०
यदा वीरस्य रेवतो दुरोगे	४९८
यदि नो गां हंसि	१०५१
यदि प्रेयुर्देवपुरा ब्रह्म	९२८
यदुल्लूको वदति मोषमेतद्	८३१
यद् गायत्रे अधि गायत्रमाहितं	१२१
यद् ग्रामे यदरण्ये यत् सभायां	१३६९
यद्देवा अदः सलिले	१२१७
यद्देवा देवहेडनं देवासः १०६५, १२५३	
यद्देवापिः शतनवे पुरोहितो	१२२८
यद्देवा यतयो यथा	१२१८
यद् वाभिपित्वे असुरा ऋतं यते	५३१
यं त्वा देवापिः शुशुचानो अग्ने	१२२९
यं देवासोऽवथ वाजसातौ ५२३, ६७४	
यज्ञ इन्द्रो अखनद् यदग्निः	१०६८
यन्मूत्रं करोति तस्मै स्वाहा	१५४८
यममी पुरोदधिरै	९२७
यमस्य त्रयोदशी	२०१६
यमाय कृष्णो	१८८३
यमाय यमसूम्	२२१३
यमाय स्वाहा	२३१४
यमायासूम्	२२१२
यमृत्विजो बहुधा कल्पयन्तः	५५५
यमो मृत्युरघमारो निर्ऋत्यो	११७६
यम्यै त्रयोदशी	२०२९
यवानां भागोऽस्ययवानामाधिपत्यं	१३४६
यशो मा यावापृथिवी	१३९७
यस्ते हवं विवदत्	८९५
यस्मिन् वृक्षे मध्वदः सुपर्णा	१२०
यस्य कुर्मो गृहे हविस्तमग्ने	१३६५
यस्य कृष्णो हविर्गृहे	९३८

या आपो दिव्याः पयसा	११४६
या आवह उशतो देव	८४९
या गुड्गूर्या सिनीवाली	१२६६
या गौर्वर्तनि पर्येति निष्कृतं	६९७
या जामयो वृष्ण इच्छन्ति शक्ति	२२५
यातुधाना निर्ऋतिरादु रक्षस्ते	९६३
यातुधानेभ्यः कण्टकीकारीम्	२१५२
या ते अग्ने पर्वतस्येव धारा	२२८
या ते जिह्वा मधुमती सुमेधा	२२७
यादसे शावत्यां	२२६७
यादृगेव ददृशे तादृगुच्यते	२९९
यानसावतिसरांश्चकार	२२९
यानि कानि चिच्छन्तानि	१०८१
यानि चकार भुवनस्य यस्पतिः १००४	
यानि भद्राणि बीजानि	१०३१
यां मे धिर्यं मरुत इन्द्र देवाः	६८७
यावच्चतस्रः प्रदिशश्चक्षुः	१११७
यासां यौः पिता पृथिवी माता	१०६३
युक्ता माताऽऽसीद् धुरि दक्षिणायाः	१०७
युक्ष्वा ह्यरुषी रथे	१५
युनक्त सीरा वि युगा तनुध्वं	७६५
युवोर्ऋतं रोदसी सत्यमस्तु	१७९
यवोर्यदि सख्यायास्मे	६५१
यूयं विश्वं परि पाथ	७२५
यूयं ह रतनं मघवस्तु धृत्य	४७४
यूयं हि ष्ठा सुदानवः ४०७, ५६७	
यूयं देवाः प्रमतिर्यूयमोजो	१५२
ये अग्नेः परि जज्ञिरे	६५९
ये अर्वाञ्चवस्तां ल पराच आहुः	११७
ये के च उमा महिनो अहिमाया	४२१
ये प्राम्याः पशवो विश्वरूपाः	८९०
ये च देवा अयजन्ताथो	११९६
ये त्रिंशति त्रयस्परो	५३४
ये देवा अग्निनेत्राः पुरःसदस्तेभ्यः १३४४	
ये देवा अन्तरिक्ष एकादश स्थ	११६६
ये देवा दिव्येकादश स्थ	११६५
ये देवाः पृथिव्यामेकादश स्थ	११६७
ये देवानामृत्विजो यज्ञियासो	११११
ये देवानां यज्ञिय यज्ञियानां	४६१

११४३	वे देवा विश्वदेवनेत्राः	१२४८	रात्र्यै कृष्णं पिङ्गाक्षम्	२२८०	वसुणाय चक्रवाकान्	१८४५
८५९	वे देवास इह स्थान	५५२	रात्र्यै सीचापूः	१८५७	वसुणाय नाकान्	१८४०
१२६६	वे देवासो दिव्येकादश स्थ	९८	रिशदसः सत्पतारदन्धान्	३९६	वसुणाय महिषान्	१८७४
६९७	वे नदीनां संखवन्ति	८८१	रुचं ब्राह्मं जनयन्तो देवाः	१२६०	वसुणाय स्वाहा	१५०१, १२९४
२२५	येन देवं सवितारं परि	१०३६	रुद्रं रोराम्याम्	२००३	वसुणायारण्यो मेघः	१८८२, १९४०
९६३	येन धनेन प्रपणं चरामि	९१९, ९२०	रुद्राणां द्वितीया	२०३४	वसुणो मादित्यैरेतस्या दिशः	९७५
११५२	येन वेहद् बभूविथ	१०५८	रुद्रास्त्वाऽऽच्छन्दन्तु त्रैष्टुभेन	१४३७	वसुणो मित्रो अर्यमा	५३५
२२८	येन हस्ती वर्चसा संवभूव	१११५	रुद्रास्त्वा धूपयन्तु त्रैष्टुभेन	१४३०	वर्णाय हिरण्यकारं	२२३६
२२७	ये नः सपत्ना अप ते भवन्तु	८०८	रुद्रेभ्यः स्वाहा	१६४५	वर्णायानुरुधं	२१६१
२२६७	येनावपत् सविता क्षुरेण	९५०	रुद्रेभ्यो रुहन्	१८६८	वर्म मे द्यावापृथिवी	१००६
२९९	ये पन्थानो बहवो देवथानाः	९१६, १०६४	रुद्र रौद्रः	१९४४	वर्षते स्वाहा	१६११
९२९	ये बध्यमानमनु दीध्यानाः	८८९	रूपाय मणिकारं	२१३५	वर्षाभ्यस्तित्तिरीन्	१८३२
१०८१	येभ्यो माता मधुमत् पिन्वते पयः	६६३	रूपेण वो रूपमभ्यागां तुथो	१३०४	वर्षाहृक्कृतानाम्	१९३५
ते: १००४	येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः	६६७	रेभदत्र जनुषा पूर्वा अङ्गिरा	७३५	वर्षिष्ठाय नाकाय परि	२१८६, २२०२
१०३१	येऽमावास्यां रात्रिमुदस्थुः	१०४८	रेष्माणं स्तुपेन	१९९०	वल्गते स्वाहा	१५१३
६८७	ये यजत्रा य ईज्याः	११	रोहिण्यस्त्रयवथो वाचे	१७५४	वल्मीकान् क्लोमभिः	२०६५
१११७	ये यज्ञेन दक्षिणया समक्ता	६५४	रोहिता रुद्राणां	१७६०	वशा द्यावापृथिवीयाः	१८०७
ता १०६३	ये सर्पिषः संखवन्ति	८८२	रोहितेभ्यः स्वाहा	१०२९	वशा मैत्रावरुण्योः	१७७१
क्षिणायाः	ये सवितुः सत्यसवस्य विश्वे	६०६	रोहितो धूमरोहितः	१७३८	वसन्ताय कपिञ्जलानालभते	१८३०
१०७	ये स्था मनोर्यज्ञियास्ते शृणोतन	६०३	रोहितं कुण्डूणाची गोलत्तिका	१९३३	वसवस्त्रयोदशाक्षरेण त्रयोदश	१३२२
१५	यो अथ सेन्यो वधो	९६०	लोकं पृण छिद्रं पृणथो	१३३४	वसवस्त्वा कृण्वन्तु गायत्रेण	१३३१
७६५	यो अर्चन्तं जिघांसति	१४९१	लोपाश आश्विनः	१९२५	वसवस्त्वाऽऽच्छन्दन्तु गायत्रेण	१४३६
१७२	योगाय योक्तारं	२२०५	लोमानि प्रयतिर्मम त्वज्जा	१३६८	वसवस्त्वाञ्जन्तु गायत्रेण छन्दसा	१३७६
६५१	योगेयोगे तवस्तरं	१०४२	वज्रमेको बिभर्ति हस्त आदितं	५४२	वसवस्त्वा धूपयन्तु गायत्रेण	१४२९
७७४	यो जागर तमृचः कामयन्ते	३०७	वत्सतयः सारस्वत्यः	१८०३	वसवे स्वाहा	१४०९, १६६८
७७, ५६७	यो नः स्त्रो यो अरणः सजातः	१०५४	वत्सतयो देवानां पत्नीभ्यः	१७५७, १७७८	वसिष्ठासः पितृवद् वाचमक्रत	७२०
१५२	यो नः स्वोऽरणो यश्च	१४०४	वत्सराय विजर्जरा	२२१९	वसुभ्य ऋश्यानालभते	१८६७
६५९	योनिमेक आ ससाद द्योतनो	५४०	वनस्पतिभ्य उल्लकान्	१८४७	वसुभ्यः स्वाहा	१६४४
११७	यो यज्ञस्य प्रसाधनः	६२२	वनस्पतिभ्यः स्वाहा	१६५१, १६६३	वसूनां कपिञ्जलः	१९३८
या ४२३	यो रजांसि विममे पार्थिवानि	३७५	वनाय वनपम्	२२६३	वसूनां भागोऽसि रुद्राणामाधिपत्यं	१३४५
८९०	यो वः शुष्मो हृदयेषु	९५२	वपुषे मानस्कृतं	२२०९	वाग्यज्ञेन कल्पतां स्वाहा	१७१४
११९६	यो वो देवा घृतस्तुना	४१६	वयं वो वक्तुर्वर्हिषो	५१८	वाचे कुक्षः	१८९८
५३४	रक्षसां भागोऽसि निरस्तं	११८९	वयं सोम व्रते तव	६२६	वाचे प्लुषीन्	१८७८
भ्यः १३२४	रुणः संहृष्टौ पितुमां इव क्षयो	६८६	वयं तद् वः सम्राज आ वृणीमहे	५३३	वाचे स्वाहा	१५७८
११६६	रे हव्यं मतिभिर्यज्ञियानां	४८६	वयमिद् वः सुदानवः	५६४	वाजं हनुभ्याम्	१९६०
११६५	रिमिना सत्याय सत्यं जिन्व	१३५०	वरुणं त आदित्यवन्तमृच्छन्तु	९८५	वाजस्येमां प्रसवः शिश्रिये	१३१८
११६७	रिमिभ्यः स्वाहा	१६४३	वरुणश्च म इन्द्रश्च मे	१४६४	वाजाय स्वाहा	१६९४
१११९	राजा राष्ट्रानां पशो नदीनाम्	४३६	वरुणस्त्वा धूपयन्तु	१४३४	वाजिनं शेपेन	२०४९
४६१	रात्र्यसि प्राची दिग्गवसवस्ते	१३५४	वरुणस्य द्वादशी	२०१५, २०२८	वाज्यासि वाजिनेना सुवेनीः	६१६

(२०८)

वातं प्राणेन	१२७३
वाताय स्वाहा	१६०४
वानस्पत्या ग्रावाणो घोषमकृत	९०९
वामना अनड्वाह आग्रावैष्णवाः	१७७०
वामं नो अस्त्वयमन्	५६२
वामस्य हि प्रचेतसः	५६३
वायवे चाण्डालम्	२२७३
वायवे त्वा जुष्टं प्रोक्षामि	१४८८
वायवे बलाकाः	१८४२
वायवे स्वाहा	१४९६, २२८७
वायव्यः श्वेतः पुच्छे	१७३५
वायुं तेऽन्तरिक्षवन्तमृच्छन्तु	९८३
वायुः पुनातु सविता पुनातु	१३९०
वायुरन्तरिक्षेणोदकामत	९९३
वायुर्मान्तरिक्षेणैतस्या दिशः	९७३
वायुष्ट्वा पचतैरवत्वसितप्रीवः	१३७७
वायोः पुच्छम्	२०३६
वायोर्निपक्षतिः	२००५
वारुणः कृष्ण एकशितिपात् पेतवः	२०९४
वारुणः पेतवः	२१०२
वार्यः स्वाहा	१५९३
वावर्तं येषां राया	७४८
वाशमीको विभर्ति हस्ते	५४१
वासयसीव वेधसस्त्वं नः	४७८
विंशतिः स्वाहा	१०२३
विचृताय स्वाहा	१५२१
विजृम्भमाणाय स्वाहा	१५२०
वि तन्वेते धियो अस्मा अपांसि	३३३
विदा चिन्तु महान्तो येव एवा	२५२
विदा दिवो विष्यन्नद्रिमुक्यैः	३०९
विदुः पृथिव्या दिवो जनित्रं	४२७
वियुतं कनीनकाभ्यां	१९६६, १९८२
वियुद्रथा मरुत ऋष्टिमन्तो	१८२
वियोतमानाय स्वाहा	१६०८
विधूताय स्वाहा	१५३९
विधूतानाय स्वाहा	१५३८
विश्रुतिं नाभ्या	२०७१
विनःशिन आन्त्यायनाय स्वाहा	१४१३
वि नः पथा सुविताय	३२

वि नो देवासो अद्भुतो	५२०
विप्रेभिर्विप्र सन्त्य	३५२
विभिर्द्वा चरत एकया सह	५४६
विभुवे स्वाहा	१६६९
वि मे पुरुत्रा पतयन्ति कामाः	१९४
वियासाय स्वाहा	२३००
विराडसि दक्षिणा दिग् रुद्रास्ते	१३५५
विरूपास इष्टयस्ते	६५८
विवर्तमानाय स्वाहा	१५३६
विवस्वते स्वाहा	१६७०
विविक्त्यै क्षत्तारम्	२१९५
विवृत्ताय स्वाहा	१५३७
विशामासामभयानामाधिक्षितं	७३४
विशोविश ईड्यमध्वरेषु	३६४
विश्वकर्माणं ते सप्तऋषिवन्तमृच्छन्तु	९८८
विश्वकर्मा मा सप्तऋषिभिः	९७८
विश्वदानो सुमनसः स्याम	४१३
विश्वदेवनेत्रेभ्यो देवेभ्यः	१२४७
विश्वस्मान्नो अदितिः पात्वंहसो	५३६
विश्वान् देवान् हवामहे	१६
विश्वाहा ते सदमिद् भरेम	९२२
विश्वा हि वो नमस्यामि वन्या	६६२
विश्वे अद्य मरुतो विश्व ऊती	५९२
विश्वे अस्या व्युषि माहिनायाः	३१६
विश्वे च मे देवा इन्द्रश्च मे	१४६८
विश्वे त्वा देवा वैश्वानरा आच्छन्दन्तु	८५६, १४३९
विश्वे त्वा देवा वैश्वानराः कृण्वन्तु	८५४
विश्वे त्वा देवा वैश्वानरा धूपयन्तु	८५५, १४३२
विश्वेदेते जनिमा सं विविक्तो	१७७
विश्वे देवा अशुषु न्युप्तः	८५१, १३११
विश्वे देवा ऋतावृधः	४१८
विश्वे देवा द्वादशाक्षरेण	८५३
विश्वे देवा द्वादशे	८७६
विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये	३५८
विश्वे देवा मम शृण्वन्तु यज्ञियाः	४२२
विश्वे देवाश्चयसेषूज्जितः	८५२, १३१२
विश्वे देवाः शास्तन मा यथेह	६०८

विश्वे देवाः शृणुतेमं हवं मे	४२१
विश्वे देवाः सह धीभिः पुरंध्या	७०५
विश्वे देवास आ गत	१६५, ४१५
विश्वे देवासो अप्तुरः	२
विश्वे देवासो अस्त्रिधः	३
विश्वेभिः सोम्यं मधु	१३
विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्य एष ते	८४७
विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जगच्छन्दसं	८५०
विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं	८६७, १४८२
विश्वेभ्यो देवेभ्यः पृषतान्	८६९, १८७०
विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा	८६८, १६४८, १३१९
विश्वेभ्यो देवेभ्यो जागतेभ्यः	८७४, २१०५
विश्वेभ्यो भूतेभ्यः सिध्मलं	२१३९
विश्वे यजत्रा अधि वोचतोतये	६७१
विश्वेषां देवानामुत्तरम्	२०३१
विश्वेषां देवानां पृषतः	१९५२
विश्वेषां देवानां प्रथमा	८७२, २०३३
विश्वेषां देवानां भागधेयी स्थ	८४६
विश्वेषामिरज्यवो देवानां	७३८
विश्वे हि ष्मा मनवे विश्ववेदसो	५१५
विश्वो देवस्य नेतुर्मर्तो	३४५
विषमेभ्यो मैनालः	२२३०
विषासह्यै स्वाहा	१०३३
वि षा होत्रा विश्वमश्नोति वार्यं	६९०
विषूर्च्युतं कृन्तती	८८४
विष्णवे निभूयपाय स्वाहा	१५७०
विष्णवे शिपिविष्टाय स्वाहा	१५७१
विष्णवे स्वाहा	१४९७, १५६९
विष्णुं स्तोमासः पुरुदस्मर्काः	१८३
विष्णुर्गोपाः परमं पाति पाथः	२०१
विष्णुर्योनिं कल्पयतु	८३७
विष्णुस्त्वा धूपयतु	१४३५
मिष्णारेष्टमी	२०१४
विष्वच्चो अस्मच्छरवः	१०५३
विसर्माणं कृणुहि वित्तमेषां	२६८
वि सूर्यो अमर्ति न श्रियं सादा	३१०
वि सुतयो यथा पथा	१४००

विहृत आन्त्रैः	२०४६	शं नो अभिज्योतिरनीको अस्तु	४५२	शीलायाञ्जनीकारि	२२१०
वीक्षिताय स्वाहा	१५४४	शं नो अज एकपाद् देवो अस्तु	४६१	शुकरूपा वाजिनाः	१७६५
वीणावादं पाणिघ्नं तूणवधं	२२६९	शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः	४५७	शुक्रं त्वा शुक्रेण क्रीणामि	१२८२
वीमे देवा अर्कसत	११९७	शं नो ग्रहाश्चान्द्रमसाः	१०७८	शुक्राय स्वाहा	१६८३
वीरस्य नु स्वद्वयं जनासः	२०९	शं नो देवः सविता त्रायमाणः	४५८	शुक्लाय स्वाहा	१९६७
वीर्याविपालं	२१७६	शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु	४५९	शुचये स्वाहा	१६८४
वृषणमाण्डाभ्याम्	१९६२, २०४८	शं नो यावापृथिवी पूर्वहृतौ	४५३	शुचे स्वाहा	२३०२
वृषदं शस्ते धात्रे	१८९३	शं नो धाता शमु धर्ता नो अस्तु	४५१	शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो	१७४३
वृषा यज्ञो वृषणः सन्तु यज्ञियाः	७१२	शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु	४५०	शुनमस्मभ्यमूतये	७९८
वृष्णो अस्तोषि भूम्यस्य गर्भं	२४९	शं नो भूमिर्वैप्यमाना	१०७६	शुभे वपः	२१३६
वेत्यग्रजनिवान् वा अति स्पृधः	३००	शं नो मित्रः शं वरुणः	३७	शुश्रूषमाणाय स्वाहा	१५४०
वेद यज्ञीणि विदधान्येषां	३९४	शं नो मित्रः शं वरुणः शं विवस्वान्	१०७५	शूकाराय स्वाहा	१५३०
वैकङ्कतेनेध्मेन देवेभ्यः	९२३	शं नो मित्रः शं वरुणः शं विष्णुः	१०७४	शूकृताय स्वाहा	१५३१
वैरहत्याय पिशुनं	२१९४	शबला वैद्युताः	१७८९	शूरस्येव युध्यतो अन्तमस्य	१९९
वैशन्ताभ्यो बैन्दं	२२२५	शब्दायाडम्बराघातं	२२५९	शूषाय स्वाहा	१६७५
वैश्वदेवौ पिशङ्गौ तूपरौ	२०९८	शयानाय स्वाहा	१५१५	शृणोतु न ऊर्जा पतिर्गिरः सः	२५१
वैश्वानरं भस्मना	२०७०	शयुः परस्तादध नु द्विमाता	१९७	शृण्वते स्वाहा	१५४१
वैश्वानरीं वर्चस आ रभध्वं	९४४	शरदे वर्तिका	१८३३	शृण्वन्तु नो वृषणः पर्वतासो	१८९
वैश्वानरीं सूतृतामा रभध्वं	९४३	शरव्याया इषुकारः	२१३७	शोकाय स्वाहा	२३०५
वैश्वानरो रश्मिभिर्नः पुनातु	९४२	शर्मास्यवधूतः रक्षोऽवधूता	१२७१	शोकायाभिसतीरं	२२०६
वैष्णवो वामनः	१७३७	शाखाभ्यः स्वाहा	१६५०	शोचते स्वाहा	२३०३
व्ययमा वरुणश्चेति पन्थाम्	२३२	शादं दद्विः	१९५३	शोचमानाय स्वाहा	२३०४
व्यस्तुविने स्वाहा	१७००	शान्ता यौः शान्ता पृथिवी	१०६९	श्यामाः पौष्णाः	१७६७, १८०४
व्याघ्रो अधि वैयाघ्रे	११४५	शान्तानि पूर्वरूपाणि शान्तं	१०७०	श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते	१७४४
व्यानाय स्वाहा	१५७५	शार्गः सृजयः शयाण्डकस्ते मैत्राः	१९०६	श्येन आसामदितिः कक्ष्यो मदो	३०४
व्यानो यज्ञेन कल्पताः स्वाहा	१७०९	शार्दूलाय रोहिद्	१८८५	श्रिये सुदशीरुपरस्य याः स्वः	२९५
व्युष्ट्यै स्वाहा	१७२६	शार्दूलो वृकः पृदाकुस्ते मन्यवे	१९०३	श्रुतं मे मित्रावरुणा हवेमा	८७
व्युद्धया अल्पगल्भः	२२४३	शिखिभ्यः स्वाहा	११३५	श्रयसे वित्तधम्	२१८१
व्येतु दिद्युद् द्विषामशेवा	४३८	शितिपृष्ठो बार्हस्पत्यः	२०८८	श्रेष्ठं नो अद्य सवितर्वरेण्यं	५८६
वज्रं कृणुध्वं स हि वो नृपाणो	७७०	शितिबाहुरन्यतः शितिबाहुः	१७४१	श्रोत्रं यज्ञेन कल्पताः स्वाहा	१७१३
वात्याभ्यां स्वाहा	१०३१	शितिभ्रवो वसूनाः	१७५९	श्रोत्राय भृजाः	१८८०
शं रुद्राः शं वसवः	१०७९	शितिरेन्द्राऽन्यतः शितिरेन्द्रः	१७४०	श्रोत्राय स्वाहा	१५७७
शतमिन्तु शरदो अन्ति देवाः	२७	शिल्पा वैश्वदेवो	१७५३	श्लोकाय स्वाहा	१४२५
शताय स्वाहा	१७२४	शिल्पो वैश्वदेवः	२०८९	श्वा कृष्णः कर्णो गर्दभः	१९४८
शो न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः	४४२	शिवः कपोत इषितो नो अस्तु	८२२	श्वाविद् भौमी	१९०८
शो न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु	४५४	शिशिराय विककरान्	१८३५	श्वित्र आदित्यानाम्	१९४१
शो नः सत्यस्य पतयो भवन्तु	४६०	शीकायते स्वाहा	१६१८	श्वेता अवरोकिण आदित्यानां	१७६१
शो नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु	४५६	शीघ्रं वर्षते स्वाहा	१६१४	श्वेता वायव्याः	१७७५, १८२८
शो नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः	४५५	शीनं वसया	२०७६	श्वेताः सौर्याः	१८२९

श्वेतान् ग्रीष्माय १७८५
 षट्त्रिंशश्च चतुरः कल्पयन्तः ७८७
 षट्चैभ्यः स्वाहा १००९
 षड् भाराँ एको अचरन् बिभर्ति २१५
 षष्ठाय स्वाहा ११२२
 षोडशैभ्यः स्वाहा १०१९
 षोडशी स्तोम ओजो द्रविणं १३४७
 स इद् दानाय दभ्याय वन्वन् ६२८
 स ई वृषा न फेनमस्यदाजौ ६३४
 संयासाय स्वाहा २२९९
 संवत्सराय पर्यायिणीं २२१५
 संवत्सराय पलिकनीम् २२२०
 संवत्सराय महतः सुपर्णां १८६१
 संवत्सराय स्वाहा १६३९
 सं वः पृच्यन्तां तन्वः ९५४
 सं वो मनोसि सं व्रता ९०६
 सञ्जराय प्रच्छिदम् २२४४
 संशितं म इदं ब्रह्म ११०५
 सञ्जराय स्वाहा १६७६
 सं सं स्रवन्तु सिन्धवः ८७९
 सञ्जराभागा स्थेषा बृहन्तः ८४१
 सञ्जराय स्वाहा १५२२
 सखासावस्मभ्यमस्तु रातिः १०५७
 स गुणानो अङ्घ्रिदैववानिति ६५२
 संक्रोशः प्राणान् १९८९
 सं गच्छस्व पितृभिः सं यमेन १२६८
 स जिह्वया चतुरनीक ऋज्जते ३३९
 सजूरब्दो अयवोभिः १३३५
 सजूरालितैर्वसुभिः ३५५
 सजूर्जुतुभिः सजूर्विधाभिः ८५८
 सजूर्देवेन सवित्रा सजुः १२८०
 सजूर्देवोभिरपां नपातं ४४०
 सजूर्मित्रावरुणाभ्यां ३५४
 सजूर्विधेभिर्देवैभिः ३५३
 संजर्मुंराणस्तृभिः सुतेष्टुभं २९८
 सं जानीध्वं सं पृच्यध्वं ९४५
 संज्ञपनं वो मनसोऽथो ९५५
 संज्ञानाय स्मरकारौ २१५९
 सत्तो होता मनुष्वदा ५१

सदा गावः शुचये विश्वधायसः १३९९
 सदापृणो यजतो वि द्विषो वधीद् ३०५
 सदा सुगः पितुर्मां अस्तु पन्था १९०
 सदुत्तरेण १९७६
 सदो द्वा चक्राते उपमा ५४७
 स द्विवन्धुवैतरणो यष्टा ६४३
 सना पुराणमध्यम्यारात् १७८
 सनितासि प्रवतो दाशुषे चिद् ४७७
 सनेम तत् सुसनिता सनित्वभिः ६०२
 सनेमि चक्रमजरं वि वावृत ११२
 सं ते मनो मनसा सं प्राणः १२९०
 संदानं वो बृहस्पतिः ११८४
 सन्दिताय स्वाहा १५१२
 सन्धये जारं २१५३
 सन्नः सिन्धुरवभृथाय १३१३
 स पचामि स ददामि स यजे ११५३
 सप्तदशभिरस्तुवत ग्राम्याः पशवः १४४८
 सप्तदशैभ्यः स्वाहा १०२०
 सप्त प्राणानष्टौ मन्यस्तांस्ते १०९७
 सप्तभिः पुत्रैरदितिः १२२०
 सप्तभिरस्तुवत सप्त ऋषयः १४४३
 सप्तमाष्टमाभ्यां स्वाहा ११२३
 सप्त युजन्ति रथमेकचक्रम् १००
 सप्तचैभ्यः स्वाहा १०१०
 सप्तविंशत्यास्तुवत व्यावापृथिवी १४५३
 सप्तानां सप्त ऋष्टयः ५३८
 सप्तार्धगर्भा भुवनस्य रेतो १३४
 सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः १२५९
 स प्रथमो बृहस्पतिश्चिकित्वान् १२९७
 समध्विनोरवसा नूतनेन २७६, २९३
 समहमेषां राष्ट्रं स्यामि ११०६
 समानी व आकूतिः समाना ९४७
 समानो मन्त्रः समितिः समानी ९४६
 समानो यज्ञेन कल्पता स्वाहा १७११
 समानो राजा विभृतः पुरुत्रा १२५
 सामान्या विद्युते दूरेअन्ते १७६
 समाश्च म इन्द्रश्च मे १४७२
 समिदसि सूर्यस्त्वा पुरस्तात् १२७३
 समिन्द्र णो मनसा नेषि २६३, ८४८

समुद्रं गच्छ स्वाहाऽन्तरिक्षं १२९९
 समुद्रः सिन्धू रजो अन्तरिक्षम् ७१७
 समुद्रमासामव तस्थे अग्रिमा ३०९
 समुद्रमुदरेण २०६९
 समुद्राय शिशुमारानालभते १८३६
 समुद्राय शिशुमारो १८८९
 समुद्राय स्वाहा १६०९
 समुद्रो नदीभिरुदकामत् ९९८
 समु वो यज्ञं महयन् नमोभिः ४९७
 स मे वपुच्छदयदक्षिनोर्यो ३६७
 सं परमान्तसमवमानथो ११८५
 सं बर्हिर्क्तं हविषा घृतेन ९६७
 सं बर्हिर्हृक्ता हविषा घृतेन ११७६
 सं मा तपन्यमितः ४५
 सम्यक् स्रवन्ति सरितो न धेनाः १३३७
 सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुः ६६५
 सम्राडसि प्रतीची दिशादित्यास्ते १३५६
 सरस्वतीश्च म इन्द्रश्च मे १४६०
 सरस्वती सरयुः सिन्धुरुर्मिभिः ६८४
 सरस्वते शुकः पुरुषवाक् १९१०
 सरस्वत्या अग्रजिह्वं १९५७
 सरस्वत्यै निपक्षतिः २०१८
 सरस्वत्यै पावकायै स्वाहा १५६१
 सरस्वत्यै बृहत्यै स्वाहा १५६१
 सरस्वत्यै शारिः पुरुषवाक् १९०७
 सरस्वत्यै स्वाहा १४२०, १५६०
 सरस्वान् धीभिर्वरुणो धृतव्रतः ७११
 सरिराय स्वाहा १६०३
 सरीसृपेभ्यः स्वाहा १६६६
 सरूपा धात्रे १७५६, १७७७
 सरोभ्यो धैवरम् २२२३
 सर्वदेवजनेभ्योऽप्रतिपदम् २१४८
 सर्पाणां सप्तमी २०४५
 सर्पान् गुदाभिः २०४५
 सर्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं प्रोक्षामि १४९०
 सर्वेभ्योऽङ्गिरोभ्यो विदगणेभ्यः १११८
 सर्वेभ्यो लोकेभ्य उपसेक्तारं ११८९
 सविता च म इन्द्रश्च मे १४५९
 सविता पश्चातात् सविता पुरस्तात् ६०७

१२९१	सवित्र औष्णिहाय त्रयस्त्रिंशाय ११०८	सूर्याय हर्यक्षं २२७६	स्वदस्व हव्या समिषो दिदीहि १९१
७१७	सवित्रे स्वाहा १४१९, १४१५	सूर्यायै देवेभ्यो मित्राय १२२१	स्वनेभ्यः पर्णकं २२३१
३०१	स त्राघतो नहुषो दंसुजुतः ९१	सूर्यो दिवोदकामत् ९९४	स्वपते स्वाहा १५१६
२०६९	सहसे स्वाहा १६८९	सूर्यो मा यावापृथिवीभ्यां २७६	स्वप्रायान्धम् २१६६
१८३६	सहस्याय स्वाहा १६९०	सेदुग्रो अस्तु मरुतः स शुष्मी ४९०	स्वराडस्युदीची दिङ्मरुतस्ते देवाः १३५७
१८८९	सहस्रधा पञ्चदशान्युक्था ७८९	सोम ओषधीभिर्दकामत् ९९६	स्वर्गाय लोकाय भागदुर्धं २२०१
१६०१	स हि क्षत्रस्य मनसस्य चित्तिभिः ३०३	सोम राजन् विधास्त्वं प्रजाः १२९४	स्वर्गाय स्वाहा १७२७
९९८	सहोभिर्विश्वं परि चक्रमूर् रजः ६१८	सोमं राजानमवसे ८१८	स्वर्णरमन्तरिक्षाणि रोचना ६९५
४९७	साकंजानां सप्तथमाहुरेकजं ११३	सोमं ते रुद्रवन्तमृच्छन्तु ९८४	स्वर्गज्ञेन कल्पतां स्वाहा १७१२
३६७	साध्येभ्यः कुलङ्गान् १८७१	सोमश्च म इन्द्रश्च मे १४५८	स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहे ३५७
११८५	साध्येभ्यश्चर्मम्रम् २२२२	सोमस्त्वा पात्वोषधीभिर्नक्षत्रैः ११५६	स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः २४
९६७	सानुभ्यो जम्मकं २२३३	सोमस्य चतुर्थी २००७	स्वस्ति नो मिमातामश्विना भगः ३५६
११७३	सारस्वती मेघी २०८५, २१०१	सोमस्य त्विषिरसि तवेव १३२५	स्वस्ति पन्थामनु चरेम ३६०
४५	सारस्वती मेघ्यधस्ताद्धन्वोः १७३०	सोमस्य राज्ञो वरुणस्य धर्मणि ८३३	स्वस्ति मित्रावरुणा ३५९
१३३७	सिंहो मारुतः १९५०	सोमाय कुलङ्गः १८९९	स्वाङ्कृतोऽसि विश्वेभ्य इन्द्रियेभ्यो १२९६
६६५	सिध्मास्तारकाः १७८३	सोमाय लवानालभते १८५१	स्वाहा चित्तं विज्ञाताय १५५६
१३५६	सिषक्तु न ऊर्ज्व्यस्य पुष्टः २५९	सोमाय स्वाहा १४१८, १४९३, १६२३	स्वाहा देवेभ्यो देवेभ्यः १२३७
१४६०	सीरा युजन्ति कवयो ७६६	सोमाय हृत्सानालभते १८४१	स्वाहाऽऽधिमाधीताय १५५४
६८४	सीसायाथाह वरुणः १०४९	सोमो मा रुद्रैर्दक्षिणाया दिशः २७४	स्वापये स्वाहा १४०६
१९१०	सुकृत् सुपाणिः स्वर्वा ऋतावा १८१	सोमो राजा प्रथमो ब्रह्मजायां ७७६	स्वाहा पूष्णे शरसे स्वाहा १३९४
१९५७	सुगस्ते अग्ने सनवित्तो अध्वा ४९६	सौमापौष्णः श्यामो नाभ्यां १७२२	स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः २२८३
२०१८	सुगा वो देवाः सदाना अकर्म १२४३	सौरी बलाका १९०५	स्वाहा मनः प्रजापतये १५५५
१५६१	सुज्योतिषः सूर्य दक्षपितृन् ३७९	सौर्ययामौ श्वेतश्च कृष्णश्च १७३३	स्विध्मा यद् वनधितिरपस्यात् ७३
१५६१	सुतभरो यजमानस्य सत्पतिः ३०६	स्तनयते स्वाहा १६०९	हृत्सो धातस्य १९२०
१९०७	सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं ६७०	स्तनयितुं निर्वाधिन १९८०	हत्वाय देवा असुरान् यदायन् ८२६
०, १५६०	सुपर्ण विप्राः कवयो वचोभिः ७८६	स्तम्भीद्ध वां स धरुणं पुषायद् ६८	हये देवा यूयमिदापयः स्थ १५४
तः ७११	सुपर्णः पार्जन्यः १९११	स्तरीयेत् सूत सद्यो अज्यमाना ५७७	हयो न विद्वाँ अयुजि स्वयं धुरि ३२०
१६०३	सुपर्णा एत आसते ४८	स्तीर्णे बर्हिषि समिधाने अग्नौ ४२५	हरितेभ्यः स्वाहा ११२५
१६६६	सुप्रजाः प्रजाः प्रजनयन् परीहि १२९८	स्तुष उ वो मह ऋतस्य गोपान् ३९५	हविष्मतीरिमा आपो १२९३
१७७७	सुभूः स्वयम्भूः प्रथमो १३८३	स्तुषे जनं सुव्रतं नव्यसीभिः ३६३	हसाय कारिम् २१२८, २२६६
२२२३	सुलोभिर्वो वचोभिर्देवजुष्टैः ३१२	स्तुषे सा वां वरुण मित्र रातिः ८८	हस्काराद् विद्युत्स्परि १८
२१४८	सूयाभ्यः स्वाहा १५९९	स्तेगो न क्षामत्येति पृथ्वी ५७६	हस्ताभ्यां दशशाखाभ्यां ८१५
२०२३	सुपस्था अद्य देवो वनस्पतिः १३७४	स्तोत्रमिन्द्रो मरुद्गणः ४१९	हस्तिवर्चसं प्रथतां बृहद् यशो १११३
२०४५	सुयवसाद् भगवती हि भूयाः १३८	स्तोमं वो अद्य रुद्राय शिक्वसे ७२२	हस्ती मृगाणां सुषदाम् १११८
१४१०	सुराश्विदा हरितो अस्य रीरमद् ७२८	स्त्रियः सतीस्ताँ उ मेपुंस आहुः ११४	हस्तेनैव ग्राह्य आधिरस्या ७७७
१११८	सूर्य ते यावापृथिवीवन्तमृच्छन्तु ९८६	स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा १५९७	हिङ्काराय स्वाहा १५०२
११८९	सूर्यश्च मे १४७८	स्याम वो मनवो देववीतये ७१८	हिङ्कृष्वती वसुपत्नी वसूनां १२५
१४५९	सुराभ्यां स्वाहा १०३०	स्रवन्तीभ्यः स्वाहा १५९६	
१०७	सूर्याय स्वाहा १६४९, १६५८, २२८९	स्वः स्वाहा १६९८	

(२१२)

विश्व-देवादेवता-समाप्ति

हिक्कृताय स्वाहा	१५०३	हुवे सोमं सवितारं नमोभिः	१०४	होत्रादहं वरुण विभ्यदायं	१२०७
हिमवते हस्ती	१८९०	हेतिः पक्षिणी न दभाल्यस्मान्	८३०	हदान् कुक्षिभ्याम्	२०६८
हिरण्यकर्णं मणिप्रीवमर्णः	९५	हेत्यै धनुष्कारं	२१३८	ह्वाहुनीभ्यः स्वाहा	१६१०
हिरण्यपाणिः सविता सुजिह्वः	१८०	हेमन्ताय ककरान्	१८३४	हादुनीर्दृषीकाभिः	२०७८
हिरण्यवर्णो अजरः सुवीरो	१०४३	होता यक्षदक्षिणौ छागस्य वपायाः	१३७२	न्हियै शल्यकः	१९२२
हिराभिः स्रवन्तीः	२०६७	होता यक्षदक्षिणौ छागस्य हविषः	१३७३	ह्यन्तु त्वा प्रतिजनाः	८९४
हुवे वो देवीमदिति नमोभिः	३७८	होता यक्षदक्षिणौ सरस्वतीमिन्द्रः	१३७२	ह्यामि देवाँ अयातुरमे	४३३

इति विश्वे-देवादेवता समाप्ता ।



१२०७
१०५८
१५१०
१००८
१९११
८९४
४१३

१३५१



गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पुस्तक-वितरण की तिथि नीचे अंकित है।

इस तिथि सहित १५ वें दिन तक यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए। अन्यथा ५ नये पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

२०/२००

29 JUN 1965

२०/२६

२०/२००

Stock Verification-2024

